

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

709

७०९

क्रम संख्या

काल नं०

स्वतः

सुधर्म

श्रीराधकन्द विद्यागमसंघे

भगवत्सुधर्मस्वामिप्रणीत

श्रीमद्भगवतीसूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति.)

मूल अने अनुवादसहित

पंचम अंग-तृतीय खंड

शतक ७-१५

मेरक-श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंद.

अनुवादक अने संशोधक—

पंडित भगवानदास हरखचंद दोशी

गुजरात विद्यापीठ

अमदावाद.

Publisher Narhari Dwarkadas Parekh Mahamatra Gujrat Vidyapith, Ahmedabad.

Printer Ramchandra Yeau Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 26-28, Kolbat Lane, Bombay.

संपादकीय निवेदन.

जिनागमप्रकाशननी योजनामा भगवतीसूत्रना प्रथमना बे खंडो प्रकाशित थई गया छे, अने त्वार पछी लगभग चार वर्षे आ सुतीय खंड प्रकाशित थाय छे. प्रथमना बे खंडो मूळ अने टीकाना अनुवाद साथे पं० बेचरदास जीवराज दोशी पासे संशोधन करावी श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंद द्वारा संस्थापित जिनागमप्रकाशक सभाना मानद कार्यवाहक महेता मनसुखलाल रवजीभाईए प्रकाशित करी हता, परन्तु त्वार पछी पंडित बेचरदास गूजरात पुरातत्त्वमंदिरमा नियोजित थवाथी अने महेता मनसुखलाल रवजीभाई सद्गत थवाथी आ कार्य बन्ध पड्युं. त्वार पछी केटला एक समय गया बाद श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंदे गूजरात पुरातत्त्वमंदिरना आचार्य श्रीजिनविजयजी द्वारा आ काम मने सौंथुं. उपरना बन्धे खंडोमा मूळ अने टीका अनुवाद सहित होवाथी अधिक विस्तार अने टाईपोनी विविधता होवाथी आगळ छपावानी मुस्कली हती, तेमज टीका अने टीकाना अनुवादनी पण बड्ड उपयोगिता जणाती नहोती, तेथी आ श्रीजा खंडमा मात्र मूळ अने तेनो अनुवाद सातमा शतकथी आरंभी पंदरमा शतक सुधी आपवामा आवेल छे. मूळ सूत्रमा ज्यां ज्यां बीजा सूत्रोना पाठोनी भलामण करेली छे त्यां ते ते स्थळे ते ते सूत्रोना स्थळोनी पाना—पंक्तीवार सूचना करवामा आवी छे. एक सविस्तर विषयानुक्रम आपवामा आव्यो छे, अने मूळना अनुवादने स्पष्ट करवा माटे स्थळे स्थळे टिप्पणो पण आपवामा आव्यां छे.

आ ग्रन्थना संशोधनमा नीचेनी प्रतोनी उपयोग करवामा आव्यो छे.

क. भगवतीसूत्र मूळ (डहेलाना उपाश्रयनो भंडार) जुनी अने प्रायः शुद्ध.

ख. भगवतीसूत्र सटीक (डहेलाना उपाश्रयनो भंडार) अशुद्ध.

ग. भगवतीसूत्र सटीक (शांतिसागरनो उपाश्रय) नवी अने प्रायः शुद्ध.

घ. भगवतीसूत्र सटीक (आगमोदयसमिति मुद्रित).

ङ. भगवतीसूत्र सटीक (बाबुधनपतसिंगजी प्रकाशित).

ते सिवाय मुनिमहाराज श्रीहंसविजयजीना ज्ञानभंडारमाथी भगवती मूळनी ताडपत्रनी अपूर्ण प्रत शतक १३ थी मळी छे.

उपरनी प्रतोने अनुसरीने दशमा शतक सुधी आवश्यक पाठान्तरो लेवामा आव्या छे, पण पाछळथी आचार्य श्रीजिनविजयजीनी सूचना प्रमाणे पाठान्तर न लेता मूळ पाठने संशोधित करवामा ते प्रतिओनो उपयोग करेलो छे.

अनुवाद मूळ पाठने अनुसरीनेज करवामा आव्यो छे, अने तेने स्पष्ट करवा माटे वधाराना शब्दो [] कोष्टकमा आपेला छे.

मूळ पाठमा सूत्रनो विभाग नथी, पण अहिं प्रश्न अने उत्तरनी एक सूत्रमा गणना करी सूत्र विभाग करवामा आव्यो छे. अवान्तर प्रश्नने जूदा सूत्र तरीके न गणतां तेज सूत्रमा तेनी गणना करी लीधी छे. ते सिवाय ज्यां प्रश्न नथी, परन्तु चरित्र के वर्णनात्मक भाग छे त्यां पण सरलताथी समजवा खातर सूत्रनो विभाग करी छे. प्रत्येक उद्देशकमा सूत्रना अंको तेने प्रारंभे मूकवामा आव्या छे अने तेनो अनुवाद पण तेनी नीचे ते सूत्रनो अंक मूकी आपवामा आवेल छे.

विषयविभागनी स्पष्टता खातर दरेक पानानी पाळ उपर (मार्जिनमा) विषय अथवा प्रश्न सूचित करेल छे.

आ पुस्तक पूर्ण थया पछी छेवटे तेनी प्रस्तावना तथा शब्दकोश आपवा धारणा छे. चोथा खंडमा आ ग्रन्थ समाप्त थरो.

आ पुस्तकना संशोधनमा जे जे महाशयोए हस्तलिखित प्रतो आपी सक्रिय सहाय करी छे ते माटे तेओनो कृतज्ञतापूर्वक आभार मानुं छुं.

छेवटे आ ग्रन्थना संशोधनमा के तेना अनुवादमा अज्ञान अने प्रमादथी अशुद्धि के दोषो रखा होय ते माटे क्षमा याची सुन्न थापकने सूचित करवा प्रार्थना करी विरसुं छुं.

श्रीजिनविद्यापिमंदिर
कोनारबरोड—अमदावाद
भागवार मुद्रि परिभा.

भगवानदास दोशी.

विषयानुक्रम.

शतक ७ उद्देशक १. पृ० १-३.

जीव परमेश्वरों कहां क्यारे आहारक अने क्यारे अनाहारक होय ?—जोक संस्मान.—अनगोपासकने ऐयांपथिकी के सांपराधिकी किना कने ?—प्रतापिचार.—कबेरहित बीजनी गति.—हुंजी जीव दुःखनी व्याप्त होय.—उपयोगरहित अनगारने ऐयांपथिकी के सांपराधिकी किना ?—अनगारने सहीच वाचभोजन.—निर्दोष पानभोजन.—श्रेयातिकान्तादि पानभोजन.—शस्त्रातीतादि पानभोजन.

शतक ७ उद्देशक २. पृ० ७-११.

सिंहासुं प्रत्याख्यान करारने करारक दुःखप्रत्याख्यान अने करारक दुःखप्रत्याख्यान नाम.—सा हेतुनी दुःखप्रत्याख्यान नाय ?—सा हेतुनी सुप्रत्याख्यान नाय ?—प्रत्याख्यान.—मूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—वैशामूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—उत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—वैशोत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.—हुं जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी छे बगेरे प्रभ.—हुं नारको मूलगुणप्रत्याख्यानी छे बगेरे.—मूलगुणप्रत्याख्यानी बगेरेहुं अल्पबहुल.—पंचेन्द्रिय तिर्यचोहुं अल्पबहुल.—मनुष्यहुं अल्पबहुल.—जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी छे ? बगेरे प्रभ.—नारक अने पंचेन्द्रिय तिर्यचो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी.—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी बगेरेहुं अल्पबहुल.—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी बगेरे जीवो.—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी बगेरेहुं अल्पबहुल.—जीवो संयत, असंयत अने संयतासंयत.—जीवो हुं प्रत्याख्यानी छे बगेरे.—प्रत्याख्यानी बगेरेहुं अल्पबहुल.—जीवी शाश्वत के अशाश्वत ?—नारको शाश्वत के अशाश्वत ?

शतक ७ उद्देशक ३. पृ० १२-१५.

बनस्पतिकार क्यारे अल्पाहारी अने क्यारे महाहारी होय ?—प्रीधमां अल्पाहारी छतां पुष्पित अने फलित कैम होय ?—मूल, कन्द अने बीज बीतपोताना जीवनी व्याप्त छे ?—बनस्पति की रीते आहार करे ? अनन्तजीव बनस्पति की रीते आहार करे ?—कृष्णकेत्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीलकेत्यावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ?—नीलकेत्यावाळो महाकर्मवाळो अने कापोतकेत्यावाळो अल्पकर्मवाळो होय ?—वेदना ते निर्जरा नथी.—नारकोने वेदना ते निर्जरा नथी.—जे वेदुं ते निर्जनुं नथी.—जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी.—जेने वेदशे तेने निर्जरशे नहि.—जे वेदानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.—नारकोने वेदना अने निर्जरानो समय भिन्न छे.—नारको शाश्वत अने अशाश्वत छे.

शतक ७ उद्देशक ४. पृ० १६.

जीवोना प्रकार.—संग्रह गाथा.

शतक ७ उद्देशक ५. पृ० १७.

केचर जीवोना मोनिसंग्रह.

शतक ७ उद्देशक ६. पृ० १८-२२.

नारकायुवनी बन्ध.—नारकायुवहुं वेदन.—नारकोना महावेदनाहुं वेदुं.—अक्षुरकुमारना महावेदनाहुं वेदन.—पृथिवीकायिकनां तिविध वेदनाहुं वेदन.—आयुवनी बन्ध.—कर्कशवेदनीय कर्म.—कर्कशवेदनीय कर्मना हेतुओ.—नारकोने कर्कशवेदनीय कर्म.—अकर्कश वेदनीय कर्म.—अकर्कशवेदनीय कर्मना हेतुओ.—नारकोने अकर्कशवेदनीय कर्म संघाय छे ?—सातावेदनीय कर्म.—सातावेदनीय कर्मना हेतुओ.—असातावेदनीय कर्म.—असातावेदनीय कर्मना हेतुओ.—संशुदीयना भारतवर्षना आ अणसर्पिणीनां दुःखमाहुःषमा कालने विषे आकारनाप्रत्यक्षतर.—हाहाभूतकाक.—भयंकर वात.—मलिन हाहाओ.—अधिक शीत अने ताप.—अरसविरसादि भेषो.—ग्रामादिनां रक्षक मनुष्य, पशु, पाक्षिओको नाश.—कनस्पतिओको नाश.—पर्वतादिओको नाश.—मनुष्यहुं सख्य.—मनुष्यओ आकारनाप्रत्यक्षतर.—मनुष्योना आहार.—ते मनुष्यो मरीने क्या बघे ?—ते पिहादि मरीने क्या बघे ?—कनाहा बरी मरीने क्या बघे ?

शतक ७ उद्देशक ७. पृ० २३-२६.

सुख अन्वयने किना.—ऐयांपथिकी किना कामवासुं कारण.—काम कपी के अकपी ?—सन्धित के अन्धित ?—जीव के अजीव ?—जीवोने काम कपी के अजीवोवे होय ?—जोको कपी के अकपी ?—जोको सन्धित के अन्धित ?—जोको जीव के अजीव ?—जोको जीवोने होय के अजीवोने होय ?—जीवोना प्रकार.—कामनीयना प्रकार.—जीवो कामी के भोगी ?—नारको कामी के भोगी होय ?—पृथिवीकाय, वेदमिदय, सेन्द्रमिदय अने चरमिदय

जीवो कामी के भोगी होय ?—अल्पबहुल—छद्मस्थ मनुष्य—अधोवशिकानी—परमावशिकानी—केवलज्ञानी—असंज्ञी जीवो अकामपूर्वक वेदना वेदे ?—समर्थ छाता अकाम वेदना वेदे ?—समर्थ छाता पण अकामपूर्वक वेदना केम वेदे ?—समर्थ तीरेच्छापूर्वक वेदना वेदे ?—समर्थ तीरेच्छापूर्वक वेदाने केम वेदे ?

शतक ७ उद्देशक ८. पृ० २७—२८.

छद्मस्थ मनुष्य केवल संयम बडे सिद्ध थयो ?—हस्ति अने कुंथुनो जीव समान छे ?—पापकर्म दुःखरूप छे ?—दशसंज्ञाओ—मारकोने दस प्रकारनी वेदना—हाथी अने कुंथुने समान अप्रत्याख्यान किया—आघातकर्म आहार करनार साधु शुं बांधे ?

शतक ७ उद्देशक ९. पृ० २९—३५.

असंभूत साधु बहारना पुद्गलोने ग्रहण कयां शिवाय एकवर्णवालुं एक रूप विकुर्ववा समर्थ छे ?—महाशिलाकंटक संग्राम—महाशिलाकंटक शशी कहेवाय छे ?—महाशिलाकंटकमां केटला मन्म प्राणमेनो मंहार भजे ?—मरीने तेओ कयां उत्पन्न थयां ?—रथमुशल संग्राम—कोनो जय अने कीवो पराजय ?—रथमुशल संग्राम शशी कहेवाय छे ?—मनुष्योको संहार—तेओ मरीने कयां उत्पन्न थया ?—शुं युद्धमां हणाएला स्वर्गे जाय ?—ते वात मिथ्या छे—नागनो पौत्र वरुण—तेनी रथमुशल संग्राममां जबानी तैयारी—वरुणनो अभिप्रद—युद्धमां वरुणने सकुत प्रहार—वरुणनुं युद्धमांवी पाछा फरनुं—तेनुं सर्वप्राणतिपातादिविरमण—गंधोदक तथा पुद्गलपृष्ठि—वरुण मरीने कयां गयो ?—वरुण देवलोकषी ध्यवी मोक्षे जशे—वरुणनो मित्र मरीने कयां गयो ?—वरुणनो मित्र त्यांषी कयां जशे ?

शतक ७ उद्देशक १०. पृ० ३६—४०.

अन्यतीर्थिको—पंचास्तिकाय विषे संदेह—गीतमने प्रश्न—गीतमनो उत्तर—कालोदायीनुं आगमन—कालोदायिना प्रश्नो—पुद्गलास्तिकायने विषे कर्म लागे ?—पापकर्म अशुभविपाकसहित होय ?—पापकर्मो अशुभविपाकसंयुक्त केम होय ?—कल्याण कर्मो कल्याणफलसंयुक्त होय—कल्याण कर्मो कल्याण विपाकफलसहित केम होय ?—अमिकायनो समारंभ करनार बे पुद्गलमां कोण महाकर्मवालो होय ?—अचित्त पुद्गलो प्रकाश करे ?—कया पुद्गलो प्रकाश करे ?

शतक ८ उद्देशक १. पृ० ४१—५५.

पुद्गलनो परिणाम—प्रयोगपरिणत पुद्गलो—प्रथमदंडक—एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो—यावत् पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो—नैरयिकप्रयोगपरिणत—तिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत—जलचरादिप्रयोगपरिणत—मनुष्यप्रयोगपरिणत—देवप्रयोगपरिणत—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकप्रयोगपरिणत—द्वितीयदंडक—सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रयोगपरिणत—बेहन्द्रियादिप्रयोगपरिणत—रत्नप्रभादिनैरयिकप्रयोगपरिणत—संमूर्च्छिमजलचरादिप्रयोगपरिणत—संमूर्च्छिममनुष्यादिप्रयोगपरिणत—असुरकुमारादिप्रयोगपरिणत—सर्वाथसिद्धदेवप्रयोगपरिणत—तृतीयदंडक—सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रयोगपरिणत—रत्नप्रभादिनैरयिकप्रयोगपरिणत—जलचरादि तिर्यंचप्रयोगपरिणत—मनुष्यप्रयोगपरिणत—असुरकुमारादिदेवप्रयोगपरिणत—चतुर्थ दंडक—पंचम दंडक—षष्ठ दंडक—सप्तम दंडक—अष्टम दंडक—नवम दंडक—मिश्रपरिणत पुद्गलो—मिश्रपरिणत पुद्गलोने विषे नव दंडक—विस्मसापरिणत पुद्गलो—एकद्रव्यपरिणाम—मनःप्रयोगादिपरिणत—आरंभसत्यमनःप्रयोगादिपरिणत—आरंभसृष्टामनःप्रयोगादिपरिणत—सत्यवाक्यप्रयोगादिपरिणत—औदारिकादिकायप्रयोगपरिणत—औदारिककायप्रयोगपरिणत—औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत—वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत—वैक्रियमिश्रकायप्रयोगपरिणत—आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत—आहारकमिश्रकायप्रयोगपरिणत—कर्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत—मिश्रपरिणत—सत्यम-नोमिश्रपरिणत—विस्मसापरिणत—वर्ण, गन्ध, रस अने स्पर्शपरिणत—संस्थानपरिणत—बे द्रव्योको परिणाम—मनःप्रयोगादिपरिणत—मिश्रपरिणत बे द्रव्यो—विस्मसापरिणत बे द्रव्यो—त्रण द्रव्योको परिणाम—मनःप्रयोगादिपरिणत त्रण द्रव्यो—चार द्रव्योको परिणाम—मनःप्रयोगादिपरिणत चार द्रव्यो—पांच, छ, यावत् अनन्त द्रव्योको परिणाम—अल्पबहुल.

शतक ८ उद्देशक २. पृ० ५६—७६.

आशीविष—जातिआशीविष—वृत्तिकआशीविषना विषनो विषय—मंडूकआशीविषना विषनो विषय—उरगना विषनो विषय—मनुष्यजातिआशीविषना विषनो विषय—कर्माशीविष—गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यंचकर्माशीविष—गर्भजमनुष्यकर्माशीविष—भवनवासीकर्माशीविष—अपर्याप्तदेवकर्माशीविष—वानव्यन्तर, वैमानिक, कल्पोपजक, यावत् सहस्रारदेवलोकपर्यन्तकर्माशीविष—अपर्याप्तसौधमादिदेवो कर्माशीविष—छद्मस्थ दस स्थानकोने न जाने—ज्ञानना प्रकार—आभिनियोधिकज्ञानना प्रकार—मतिअज्ञान—अवग्रह—श्रुतअज्ञान—विभंगज्ञान—ज्ञानी अने अज्ञानी—नैरयिको, असुरकुमारो, पृथिविकायिक, बेहन्द्रिय, तेन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो ज्ञानी के अज्ञानी ?—वानव्यन्तर, ज्योतिषिको अने वैमानिको ज्ञानी के अज्ञानी ?—सिद्धो ज्ञानी के अज्ञानी ?—निरयगतिक, तिर्यंचगतिक, मनुष्यगतिक, सिद्धगतिक, सेन्द्रिय, एकेन्द्रियादि, अनिन्द्रिय, सकायिक, पृथिवीकायिकादि, त्रसकायिक, कायरहित, सूक्ष्म जीवो, बादर जीवो, पर्याप्त जीवो, पर्याप्त नैरयिकादि, पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, पर्याप्त मनुष्यो, अपर्याप्त जीवो, अपर्याप्तनैरयिकादि, अपर्याप्त पृथिवीकायिकादि, अपर्याप्त बेहन्द्रियादि, अपर्याप्त मनुष्य, अपर्याप्त वानव्यन्तर, ज्योतिषिक, वैमानिक, नोपर्याप्तनोअपर्याप्त जीवो, निरयभवस्थ, तिर्यंचभवस्थ, मनुष्यभवस्थ, देवभवस्थ, अभवस्थ, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिक, संज्ञी जीवो, असंज्ञी जीवो अने नोसंज्ञीनोअसंज्ञी जीवो ज्ञानी के अज्ञानी होय ?—लक्षिणा प्रकार—ज्ञानलक्षिण—अज्ञानलक्षिण—दर्शनलक्षिण—चारित्र्यलक्षिण—चारित्र्याचारित्र्यलक्षिण—वीर्यलक्षिण—इन्द्रियलक्षिण—ज्ञानलक्षिणवाला ज्ञानी के अज्ञानी होय ?—ज्ञानलक्षिणरहित—आभिनियोधिकज्ञानलक्षिण—आभिनियोधिकलक्षिणरहित—अवधिज्ञानलक्षिणक जीवो—अवधिज्ञानलक्षिणरहित—मनःपर्यवज्ञानलक्षिणक—मनःपर्यवज्ञानलक्षिणरहित—केवलज्ञानलक्षिणक—केवलज्ञानलक्षिणरहित—अज्ञानलक्षिणक—अज्ञानलक्षिणरहित—मत्यज्ञान अने श्रुताज्ञानलक्षिणरहित—विभंगज्ञानलक्षिणक अने विभंगज्ञानलक्षिणरहित—दर्शनलक्षिणक—दर्शनलक्षिणरहित—मिथ्यादर्शनलक्षिणक—मिश्रदृष्टिलक्षिणक—चारित्र्यलक्षिणक—सामायिकादिचारित्र्यलक्षिणक अने अलक्षिणक—चारित्र्याचारित्र्यलक्षिणक अने अलक्षिणक

बिम्बक.—शान्तिबिम्बक अने अलम्बिक.—बालवीर्य, पंडितवीर्य अने बालपंडितवीर्यलम्बिक अने अलम्बिक.—इन्द्रियलम्बिक अने अलम्बिक.—धोत्र-
न्द्रियादिकलम्बिक अने अलम्बिक—साकारउपयोगवाळा.—आभिनिकोधिकारिसाकारउपयोगवाळा.—मतिअज्ञानादिसाकारोपयोगवाळा जीवो.—अनाकारोप-
योगवाळा जीवो.—सयोगी जीवो.—सकेद्य जीवो.—हृत्वादिरेष्यावाळा.—सकषायी जीवो.—अकषायी जीवो.—वेदसहित अने वेदरहित जीवो.—आहारक
जीवो.—अनाहारक.—आभिनिकोधिक ज्ञाननो विषय.—भुतज्ञाननो विषय.—अवधिज्ञाननो विषय.—मनःपर्यवज्ञाननो विषय.—केवलज्ञाननो विषय.—
अतिअज्ञाननो विषय.—भुतअज्ञाननो विषय.—विभंगज्ञाननो विषय.—ज्ञानी ज्ञानीपणे क्या सुधी रहे ?—आभिनिकोधिकारि दशनो स्थितिकाळ.—आभिन-
िकोधिक ज्ञानना पर्यायो.—भुतज्ञानादिना पर्यायो.—विभंगज्ञानना पर्यायो.—पांच ज्ञानना पर्यायोतुं अल्पबहुल.—मत्यादि ऋण अज्ञानोना पर्यायोतुं अल्पबहुल.
—पांच ज्ञान अने ऋण अज्ञानना पर्यायोतुं अल्पबहुल.

शतक ८ उद्देशक ३. पृ० ७७-७८.

वृक्षना प्रकार.—संख्यातजीवी वृक्ष.—असंख्यातजीवी वृक्ष.—एकबीजवाळा.—अनन्तजीवी वृक्ष.—कोइ जीवना वे, ऋण के संख्यात खंड क्या
होय तो तेनी बनेनो भाग जीवप्रदेशवी स्पृष्ट होय ?—जीवप्रदेशोने छात्रादिषी पीडा थाय ?—पृथिवीओ.

शतक ८ उद्देशक ४. पृ० ७९.

पांच क्रियाओ.

शतक ८ उद्देशक ५. पृ० ८०-८३.

आजीविकना प्रश्नो—जेणे सामायिक करेछें छे एवा श्रावकना भांड-पात्रादि वस्तु कोइ अपहरण करे तो ते भांडने शोधे के अभांडने शोधे ?—अपहृत
भांड अभांड थाय तो ते पोताना भांडने शोधे छे एम केम कहेवाय ?—ममत्वभावतुं प्रत्याख्यान कर्तुं नथी माटे एम कहेवाय.—ए प्रमाणे कोइ तेनी झीने
सेवे तो ते झीने सेवे छे के अझीने सेवे छे ?—प्रत्याख्यानथी झी ते अझी थाय ?—जो एम थाय तो तेनी झीने सेवे छे एम केम कहेवाय ?—प्रेमबन्धन
अविच्छिन्न छे माटे एम कहेवाय ?—श्रावक स्थूल प्राणातिपाततुं प्रत्याख्यान केवी रीते करे ?—अतीतकाळसंबन्धी प्राणातिपातना प्रतिक्रमणना भांगा.—
वर्तमान प्राणातिपातना संबन्धे भांगा.—अनागत प्राणातिपातना प्रत्याख्यान संबन्धे भांगा.—स्थूल मृषावादानुं प्रत्याख्यान अने तेना भांगा.—यावत्
स्थूल परिग्रहना भांगा.—आजीविकनो सिद्धान्त.—आजीविकना चार भ्रमणोपासको.—श्रावकोने वर्ज्य पद्व कर्मादानो.—देवलोक.

शतक ८ उद्देशक ६. पृ० ८४-८८.

संयतने निर्दोष अद्यानादिषी प्रतिलाभता शुं फल थाय ?—एकान्त निर्जरा थाय.—सदोष अद्यानादिषी प्रतिलाभता शुं फल थाय ?—बणी निर्जरा अने
अल्प पापकर्मनो बन्ध थाय.—असंयतने आहारशी प्रतिलाभता शुं फल थाय ?—एकान्त पापकर्म थाय.—निर्मन्थने बे पिंड ग्रहण करवा माटे उपनिमन्त्रण-
त्रण पिंड, यावत् दश पिंडतुं उपनिमन्त्रण.—बे पात्रतुं उपनिमन्त्रण.—आराधक अने विराधक—(आलोचना जैनी पासे करवानी होय ते) स्थविरो मूक थाय.—
(आलोचना करनार) निर्मन्थ मूक थाय.—पछी स्थविरो काळ करे.—निर्मन्थ काळ करे—संप्राप्त निर्मन्थना चार आलापक.—निहारभूमि के विहारभूमि
तरक जता (निर्मन्थ).—ग्रामानुग्राम विहार करता (निर्मन्थ).—आराधक निर्मन्थी.—आराधक होवातुं कारण.—बळता बीपकमां शुं बळे छे ?—ज्योति
बळे छे.—बळता घरमां शुं बळे छे ?—ज्योति बळे छे.—परना एक औदारिक शरीरने आश्रयी जीवने क्रिया.—नारकने क्रिया.—असुरकुमारने क्रिया.—
एक जीवनी औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिक जीवोनी एक औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकादिने क्रिया.—जीवोने औदारिक शरीरोने
आश्रयी क्रिया.—नैरयिकोने क्रिया.—जीवने वैक्रियशरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकने वैक्रिय शरीरने आश्रयी क्रिया.—मनुष्यने जीव पेठे क्रियाओ
होय.—वैमानिकोने कामेण शरीरोने आश्रयी क्रियाओ.

शतक ८ उद्देशक ७. पृ० ८९-९२.

अन्यतीर्थिको अने स्थविरोनो संवाद.—अन्यतीर्थिकोए स्थविरोने कर्णु के तमे असंयत अने एकान्त बाल छो.—स्थविरो पूछे छे के अने शापी
असंयत अने बाल छीए ?—अन्यतीर्थिको त्रिविधे त्रिविधे असंयत होवातुं कारण कहे छे अने स्थविरो तेनो उत्तर आपे छे—इत्यादि.

शतक ८ उद्देशक ८. पृ० ९३-१००.

शुक्रप्रत्यनीक.—गतिप्रत्यनीक.—समूहप्रत्यनीक.—अनुकंपाप्रत्यनीक.—भुतप्रत्यनीक.—भावप्रत्यनीक.—व्यवहार.—व्यवहारतुं फल.—ऐर्यापथिक
अने सांपरायिकबन्ध.—ऐर्यापथिकबन्धना खामी.—ऐर्यापथिक कर्म वेदरहित जीव बांधे.—स्त्रीपश्चात्कृतादि जीव बांधे.—ऐर्यापथिक कर्मसंबन्धे
भांगा.—ऐर्यापथिक कर्मसंबन्धे सादि सपर्यवसितादि मंग.—'ऐर्यापथिक कर्म शुं देशपी देशने बांधे' इत्यादि प्रश्न.—उत्तर—सर्वथी सर्वने बांधे छे.—
सांपरायिक कर्मबन्धना खामी.—स्त्री वगेरे बांधे.—स्त्रीपश्चात्कृतादि बांधे.—सांपरायिक कर्म बांध्युं, बांधे छे अने बांधशे ते संबन्धे भांगा.—सादिसपर्य-
वसितादि भांगा.—(सांपरायिक कर्म) देशपी देशने बांधे ?—कर्मप्रकृतिथो.—परिषदो.—परिषदोको कर्मप्रकृतिथोमां समवतार.—वेदनीय कर्ममां
समवतार.—दर्शनमोहनीय कर्ममां समवतार.—चारित्रमोहनीय कर्ममां समवतार.—अन्तराय कर्ममां समवतार.—सप्तविधकर्मबन्धकने परिषदो.—अष्ट-
विधकर्मबन्धकने परिषदो.—बह्विधकर्मबन्धकने परिषदो.—एकविधकर्मबन्धक वीतराग छयस्थने परिषदो.—एकविधकर्मबन्धक सयोगिकेवलीने परिषदो.—कर्म-
बन्धरहित अयोगिकेवलीने परिषदो.—जंबूद्वीपमां सूर्य दूर छठां पासे केम देखाय छे ?—सूर्यो सर्वत्र उंचाइमां सरखा छे ?—तेजना प्रतिपातपी दूर छठां
पासे देखाय छे.—तेजना अभिलापपी पासे छठां दूर देखाय छे.—अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे ? इत्यादि प्रश्न.—अतीत क्षेत्रने प्रकाशे छे ? इत्यादि प्रश्न-
वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे.—स्पृष्ट क्षेत्रने प्रकाशित करे छे.—अतीत क्षेत्रने उद्घोषित करे छे ? इत्यादि.—सूर्यनी क्रिया वर्तमान क्षेत्रमां कराय छे.—
सूर्य स्पृष्ट क्रियाके करे छे.—केटलं क्षेत्र उंचे तपावे छे ?—मनुष्योत्तर पर्वतनी अंतरना चन्द्रादि देवो शुं ऊर्ध्वे लोकमां उत्पन्न भवेला छे ?—मनुष्योत्तर
पर्वतनी चंद्रादि देवो ऊर्ध्वे लोकमां उत्पन्न भवेला छे ?—इन्द्रस्वान केटला काळसुधी उपपातविरहित छे ?

शतक ८ उद्देशक ९. पृ० १०१-११७.

बन्ध.—विज्ञानबन्ध.—असादि विज्ञानबन्ध.—धर्मास्तिकायनो असादि विज्ञानबन्ध.—असादि विज्ञानबन्धो काळ.—सादि विज्ञानबन्ध, बन्धनप्रत्ययिकबन्ध.—आजन्मप्रत्ययिकबन्ध.—परिणामप्रत्ययिकबन्ध.—प्रयोगबन्ध.—अज्ञानपनबन्ध.—आज्ञानबन्ध.—वेदबन्ध.—उपबन्ध.—समुच्चयबन्ध.—संज्ञनबन्ध.—देशसंज्ञनबन्ध.—सर्वसंज्ञनबन्ध.—शरीरबन्ध.—पूर्वप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध.—मनुष्यप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध.—छात्रप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयशी थाय छे ?—एकेन्द्रिय-औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध देस के सर्वबन्ध छे ?—एकेन्द्रिय-औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो काळ.—एकेन्द्रिय.—पृथिवीकायिक.—औदारिक शरीर-बन्धना अन्तरनो काळ.—एकेन्द्रिय.—पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय.—पंचेन्द्रिय तिर्यचना औदारिकशरीरबन्धनुं अन्तर.—एकेन्द्रियऔदारिक शरीरना प्रयोगबन्धनुं अन्तर.—पृथिवीकायिकऔदारिकशरीरबन्धनुं अन्तर.—औदारिक शरीरना सर्वबन्धक, देशबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.—वैक्य-शरीरप्रयोगबन्ध.—वायुकायिकएकेन्द्रियशरीरप्रयोगबन्ध के सेवी भिन्न एकेन्द्रियशरीरप्रयोगबन्ध ?—वैक्यशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयशी थाय छे ?—वायुकायिकवैक्यशरीरप्रयोगबन्ध.—नैरयिकवैक्यशरीरप्रयोगबन्ध.—तिर्यचयोनिवैक्यशरीरप्रयोगबन्ध.—देशबन्ध अने सर्वबन्ध.—वैक्यशरीर-प्रयोगबन्धकाळ.—वायुकायिकवैक्यशरीरप्रयोगबन्धो काळ.—रजप्रभानैरयिकवैक्यशरीरप्रयोगबन्धकाळ.—वैक्यशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—वायुकायिक वैक्यशरीरप्रयोगबन्धान्तर.—तिर्यचपंचेन्द्रियवैक्यशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—वायुकायिक वैक्यशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—रजप्रभानारक वैक्य-शरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—अक्षुरकुमार, नागकुमार, यावत्—सहस्रार देसो.—आनतदेववैक्यशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—वैक्यकल्पसीत.—अक्षुरी-पपातिक.—अल्पबहुत्व.—आहारकशरीरप्रयोगबन्ध.—आहारकशरीरप्रयोगबन्ध मनुष्य के से किय प्रीजाने होय ?—आहारकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयशी होय ?—देशबन्ध अने सर्वबन्ध.—आहारकशरीरप्रयोगबन्धो काळ.—अन्तर.—देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.—तैजसशरीरप्रयोगबन्ध.—एकेन्द्रिय, यावत् पर्याप्त सर्वायसिद्ध.—तैजसशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयशी थाय ?—देशबन्ध के सर्वबन्ध ?—सर्वबन्ध नबी.—तैजसशरीरप्रयोगबन्धो काळ.—तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—कर्मणशरीरप्रयोगबन्ध.—ज्ञानावरणीय कर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयशी थाय छे ?—दर्शनावरणीय कर्मणशरीरप्रयोगबन्ध.—सातावेदनीय.—असातावेदनीय.—मोहनीय.—नारकायुष.—तिर्यचयोमिकायुष.—मनुष्या-युष.—देवायुष.—शुभनाथ.—अशुभनाथ.—उबगोत्र.—नीबगोत्र.—अन्तराय.—ज्ञानावरणीयनो देशबन्ध के सर्वबन्ध ?—ज्ञानावरणीय कर्मणशरीर-प्रयोगबन्धो काळ.—ज्ञानावरणीय कर्मणशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—देशबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.—आयुषकर्मना देशबन्धक अने अबन्धक-भीषोनुं अल्पबहुत्व.—औदारिकशरीरना सर्वबन्ध साथे वैक्यशरीरबन्धनो संबन्ध.—आहारक शरीरबन्धनो संबन्ध.—तैजसशरीरनो संबन्ध.—देश-बन्धक के सर्वबन्धक ?—कर्मणशरीरनो संबन्ध.—औदारिक शरीरना देशबन्ध साथे वैक्य शरीरनो संबन्ध.—वैक्य शरीरना सर्वबन्ध साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.—देशबन्ध साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.—आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.—आहारक शरीरना देशबन्ध साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.—औदारिक शरीरनो देशबन्धक के सर्वबन्धक ?—वैक्यशरीरनो बन्धक के अबन्धक ?—कर्मणशरीरनो बन्धक के अबन्धक ?—देशबन्धक के सर्वबन्धक ?—कर्मण शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरबन्धकनो संबन्ध.—शरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.

शतक ८ उद्देशक १०. पृ० ११८-१२४.

'श्रीक ज भेय छे' इत्यादि अष्टादशिकोनुं मन्तव्य.—'श्रीकसंपन्न छे पण भुतसंपन्न नबी' इत्यादि चतुर्थी.—देशभाराधक, देशभिराधक, सर्वाभाराधक अने सर्वभिराधक.—आराधनाना प्रकार.—ज्ञानाराधना.—दर्शनााराधना.—उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट दर्शनााराधनानो संबन्ध.—उत्कृष्ट दर्शनााराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध.—उत्कृष्ट ज्ञानाराधक केटला भव पछी मोक्षे जाय ?—उत्कृष्ट दर्शनााराधक क्यारे मोक्षे जाय ?—उत्कृष्ट चारित्राराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—ज्ञाननी मध्यभाराधना आराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—दर्शन अने चारित्रनी मध्यभाराधनानो आराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—ज्ञाननी जषन्थ आराधनानो आराधक क्यारे मोक्षे जाय ?—ए प्रमाणे दर्शनााराधना अने चारित्राराधना.—पुद्गलपरिणामना प्रकार.—वर्णपरिणाम, गन्धपरिणाम, रसपरिणाम अने स्पर्शपरिणाम.—संस्थानपरिणाम.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश, वे प्रदेशो, यावत् अनन्त प्रदेशो हुं प्रत्य छे, इत्यदि प्रश्न.—सोकाकाश अने एक जीवना प्रदेशो.—कर्मप्रकृति.—नैरयिक यावत् वैमानिकोने कर्मप्रकृति.—ज्ञानावरणीय कर्मना अभिभागपरिच्छेद.—नैरयिक जीवनो एक एक प्रदेश केटला ज्ञानावरणीय कर्मना परिच्छेदोधी आवेष्टित छे ?—एक एक जीवनो एक एक प्रदेश दर्शनावरणीयना केटला अभिभाग परिच्छेदोधी वेष्टित छे ?—ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीयनो संबन्ध.—ज्ञानावरणीय अने वेदनीयनो संबन्ध.—ज्ञानावरणीय अने मोहनीय कर्मनो संबन्ध.—ज्ञाना-वरणीय अने आयुषकर्मनो संबन्ध.—ए प्रमाणे दर्शनावरणीयादिनो वेदनीयादि साथे संबन्ध.—जीव पुद्गली के पुद्गल ?—नैरयिको पुद्गली के पुद्गल ?—सिद्धो पुद्गली के पुद्गल ?

शतक ९ उद्देशक १-३०. पृ० १२५-१२७.

जंबूद्वीप.—जंबूद्वीपसां चन्द्रोनु प्रकाश.—लवणसमुद्रसां चन्द्रोनु प्रकाश.—घातकिंबंध, कालोदसमुद्र, पुष्करवर्द्वीप, अन्यन्तर पुष्करार्थ अने पुष्करोद-समुद्रना केटला चन्द्रो प्रकाशित थाय छे ?—अज्ञापीष अन्तर्द्वीपो.

शतक ९ उद्देशक ३१. पृ० १२८-१३७.

कैवल्यादिवादे सांभळ्या सिवाय कोई जीवने धर्मनो बोध थाय के नहि इत्यादि प्रश्न.—बोधि—सम्यग्दर्शनो अनुभव करे के नहि ?—तेनो हेतु.—ए प्रमाणे प्रप्रज्याने स्त्रीकारे के नहि ?—तेनो हेतु.—प्रज्ञावर्ष.—प्रज्ञावर्षनासरो हेतु.—संयम.—संयमनो हेतु.—संवर.—संवरनो हेतु.—अप्रतिबोधिक-ज्ञान.—आमिनिबोधिकज्ञाननो हेतु.—भुतज्ञान.—अप्रतिबोध अने मनःपर्यवज्ञान.—केवलज्ञान.—धर्मबोध, सुदृष्टप्रत्यक्षधी अनुभव बनेरे.—केवल्यादिनां चक्रव सांभळ्या सिवाय कोई धर्मोदिनो अनुभव करे तेनो हेतु.—कैवल्यादिनां चक्रव सांभळ्या सिवाय सम्यक्साधिनो बोधि.—विशेषज्ञाननो उपरिष्ठ.—ज्ञान-

वर्द्धमयी प्राप्ति.—वारिजनो लीकार.—अवधिज्ञाननी उत्पत्ति.—केत्या.—ज्ञान.—मनोयोगी इत्यादि.—संघर्षण.—संस्थान.—उंचाई.—आयुष.—वेद.—
 पुस्तकवेदादि.—कषाय.—संज्ञकनकोवादि.—अभ्यवसायो.—प्रशस्त अभ्यवसाय.—गारक, तिर्यक, देव अने मनुष्यमयोधी मुक्ति.—अन्तानुबंध्यादिकषायनो
 क्तव.—अभ्युक्त केवली कर्षोपदेय न करे.—प्रशस्त्या न आवे.—सिद्ध धाय.—उर्ध्व, अधो अने तिर्यग्लोकमां होय.—उर्ध्वलोकमां वृत्त वैताक्यमां होय —
 कर्षोकेक असाधिकां होय.—तिर्यग्लोकमां पंद्र कर्मभूमिमां होय.—जे एक समये केटला होय ?—केवल्यादि पासेधी धर्म सांमखीने कोई धर्ममे पासे अने
 कोई धर्ममे न पासे इत्यादि.—केवल्यादि पासेधी धर्म अवश्य करीने सम्यग्दर्शनादि पुक्त जीवने अवधिज्ञानवादिनी प्राप्ति.—केत्या.—काव.—योग.—वेद.—
 उत्पत्तिलेव के लीगवेद होय ?—अविदादि.—उत्पत्तायी के अकषायी ?—उपशांत के लीगकषायी ?—केटला कषाय होय ?—अभ्यवसायो.—असोप-
 केव.—प्रशस्त्या आवे.—तेजा शिष्यो पण प्रशस्त्या आवे.—प्रशिक्ष्यो पण प्रशस्त्या आवे.—सिद्ध धाय.—शिष्यो पण सिद्ध धाय.—प्रशिक्ष्यो पण सिद्ध धाय.—
 हुं जे कर्षोकेकमां होय इत्यादि.—एक समययमां संस्था.

शतक ९ उद्देशक ३२. पृ० १३८-१६१.

वाणित्यप्राम.—गांगेयना प्रश्नो.—नैरयिको सान्तर के निरंतर उत्पन्न धाय छे ?—असुरकुमार.—पृथ्वीकायिको.—वेदद्विप्रियो यावत् वैमानिको.—नैर-
 यिको अने यावत् वाणित्यकुमारसुं सान्तर अने निरन्तर च्यवन.—पृथ्वीकायिकादिनुं सान्तर के विरंतर च्यवन.—वेदद्विवादि.—उद्योतिविक.—प्रवेशनक.—
 नैरयिक प्रवेशनक.—एक नैरयिक.—जे नैरयिक.—त्रण नैरयिको.—एकसंयोगी सात विकल्पो.—द्विकसंयोगी बेंतालीश विकल्पो.—त्रिकसंयोगी पांतीश
 विकल्पो.—चार नैरयिको.—द्विकसंयोगी त्रैसठ विकल्पो.—त्रिकसंयोगी विकल्पो.—चतुःसंयोगी पांतीश विकल्पो.—पांच नैरयिक.—द्विकसंयोगी ८५ विक-
 ल्पो.—त्रिकसंयोगी २१० विकल्पो.—चतुःसंयोगी १४० विकल्पो.—पंचसंयोगी २१ विकल्पो.—छ नैरयिको.—द्विकसंयोगी १०५ विकल्पो.—त्रिकसंयोगी
 विकल्पो.—चतुःसंयोग अने पंचसंयोग.—छ संयोगी विकल्पो.—सात नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—त्रिकसंयोग, चतुःसंयोग, पंचसंयोग अने छ-
 संयोग.—सप्तसंयोगी विकल्पो.—आठ नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—यावत् षट्संयोगी विकल्पो.—सप्तसंयोगी विकल्पो.—नव नैरयिको.—द्विक-
 संयोगी विकल्पो.—दश नैरयिको.—द्विकसंयोगादि विकल्पो.—संख्यात नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—त्रिकसंयोगी विकल्पो.—असंख्यात नैरयिको.—
 द्विकसंयोगादि विकल्पो.—उत्कृष्ट प्रवेशनक.—द्विकसंयोग.—त्रिकसंयोग.—चतुःसंयोग.—पंचसंयोग.—षट्संयोग.—सप्तसंयोग.—नैरयिकप्रवेशनक-
 अल्पबहुत्व.—तिर्यकप्रवेशनक प्रकार.—एक तिर्यचयोनिक.—जे तिर्यचयोनिक.—यावत् असंख्याता तिर्यको.—उत्कृष्ट तिर्यचयोनिकप्रवेशनक.—तिर्यचयोनिक-
 प्रवेशनकाल्पबहुत्व.—एक मनुष्य.—जे मनुष्यो.—दश मनुष्यो.—संख्याता मनुष्यो.—असंख्याता मनुष्यो.—उत्कृष्ट मनुष्यप्रवेशनक.—मनुष्यप्रवेशनक-
 अल्पबहुत्व.—देव प्रवेशनकना प्रकार.—एक देव.—जे देवो.—उत्कृष्ट देवप्रवेशनक.—देवप्रवेशनकनुं अल्पबहुत्व.—सर्व प्रवेशनकनुं अल्पबहुत्व.—नैरयि-
 कोनी सान्तर अने निरन्तर उत्पाद अने उद्दत्तना.—विद्यमान नैरयिको उत्पन्न आब के अविद्यमान ?—सद् नैरयिको उद्दत्त छे के असद् ?—सद् नैरयिकादिना
 उत्पाद अने उद्दत्तना संबन्धे प्रश्न.—सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्दत्तनानो हेतु.—आप स्वयं जाणो छो के असत्यं जाणो छो ?—नैरयिको स्वयं उपजे छे
 के असत्यं उपजे छे ?—असुरकुमारो.—पृथिवीकायिको.—गांगेय भगवान् महावीरने सर्वज्ञ माने छे, अने वीक्षा ग्रहण करी निर्वाण पासे छे.

शतक ९ उद्देशक ३३. पृ० १६२-१८४.

माहाणकुंडप्राम.—ऋषभदत्त.—देवानंदा.—महावीरस्वामी समोसर्वा.—बहुशालक चैत्य.—देवानंदाना स्तनमांथी दूधनी धार केम छूटी ?—पुत्रना
 जेहनी दूधनी धार छूटी.—ऋषभदत्ते प्रशस्त्या लीधी.—देवानंदानी प्रशस्त्या.—सत्रियकुंडप्राम.—जमालिनुं वर्णन.—माहाणकुंडप्राम.—बहुशाल चैत्य.—
 जमालि भगवंत महावीरनो उपदेश सांभळी वीक्षा ग्रहण करवा ह्छे छे.—मातापिताने पोतानी इच्छायुं निवेदन.—जमालिनी मातानो शोक.—मातापिता
 अने जमालीयो संवाद.—मातापिता.—जीवित चपल छे, मनुष्य संबंधी काम भोगो अज्ञुषि अने अशाश्वत छे इत्यादि जमालिनुं कथन.—हिरण्यादिनो उप-
 श्लेष कर इत्यादि मातापितासुं कथन.—हिरण्यादि अनिल्य अने अशाश्वत छे एयुं जमालिनुं कथन.—निर्मन्थ प्रवचन सत्य छे पण दुष्कर छे एयुं
 मातापितासुं कथन.—कायरने दुष्कर छे, पण धीर पुरुषने दुष्कर नयी एयुं जमालिनुं कथन.—वीक्षानी अनुमति.—जमालिनी वीक्षा.—आवस्ती नगरी.—
 कोष्ठक चैत्य.—चंपानगरी.—पूमीभद्र चैत्य.—निर्मन्थ प्रवचन उपर जमालिनी अग्रदा.—क्रियमाण अकृत छे एषो जमालिनो मिथ्यावाद.—भगवान् गौत-
 मना जमालिने प्रश्नो.—लोक शाश्वत छे के अशाश्वत ?—जीव शाश्वत छे के अशाश्वत ?—उत्तर आपवासुं जमालिनुं असामर्थ्य.—भगवान् महावीरना
 उत्तरो.—लोक शाश्वत छे.—लोक अशाश्वत छे.—जीव शाश्वत छे.—जीव अशाश्वत छे.—किल्बिषिक देवनी स्थिति.—किल्बिषिक देवोनो निवास.—कया
 कर्मवी किल्बिषिकदेवप्रसे उपजे ?—किल्बिषिक देवो मरीने क्या उपजे ?

शतक ९ उद्देशक ३४. पृ० १८५-१८७.

पुरुषने हणतो पुरुषने हणे के नोपुरुषने हणे ?—पुरुष अने नोपुरुषनो घात करे.—अश्वने हणतो अश्वने हणे के नोअश्वने हणे ?—अमुक व्रतने
 हणतो तेने हणे के बीजा व्रतने पण हणे ?—ऋषिने हणतो ऋषिनेज हणे के बीजाने हणे ?—पुरुषने हणनार पुरुषना वैरथी बन्धाय के नोपुरुषना
 वैरथी पण बन्धाय ?—ऋषिना वैरथी के नोऋषिना वैरथी बन्धाय ?—पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकने आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ?—अप्यायिक
 पृथिवीकायिकने ग्रहण करे ?—अप्यायिक अप्यायिकने ग्रहण करे अने मूके ?—तेजःकायिक पृथिवीकायादिकने ग्रहण करे अने मूके ?—पृथिवीकायिकादिकने
 क्रियाओ.—वायुकायिकने क्रिया.

शतक १० उद्देशक १. पृ० १८८-१९०.

पूर्वादि दिशाओ.—दिशाओना प्रकार.—दिशाओना दश नाम.—ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—आभेयी दिशा.—याम्या दिशा.—शरीरना
 प्रकार.—औदारिक शरीरना प्रकार.

शतक १० उद्देशक २. पृ० १९१-१९२.

कषायभावमां रहेला साधुने ऐर्यापयिकी क्रिया के सांपरायिकी क्रिया लगे ?—अकषायभावमां वर्तता साधुने ऐर्यापयिकी के सांपरायिकी क्रिया ?—
 ऐर्यापयिकी अथवा सांपरायिकी क्रियानो हेतु ?—योगि.—वेदानामा प्रकार.—नैरयिकोने वेदाना.—भिष्णुप्रतिमा.—भारावना.

शतक १० उद्देशक ३. पृ० १९३-१९५.

राजगृह नगर.—देव आत्मशक्तिधी चार पांच देवावासोने उल्लेखे ?—अल्पदिक देव महदिक देवनी बचे थईने जाय ?—समदिक देव समदिक देवनी बचोवक थईने जाय ?—मोह पमाडीने जई शके के ते सिवाय जाय ?—मोह पमाडीने जाय के जईने मोह पमाडे ?—महदिक देव अल्पदिक देवनी बचे थईने जाय ?—महदिक देव अल्पदिकने मोह पमाडीने जाय के ते सिवाय जाय ?—महदिक देव मोह पमाडीने जाय के जईने मोह पमाडे ?—असुरकुमार देवसंबन्धे पूर्वोक्त प्रश्नो.—अल्पदिक देव महदिक देवनी बचे ? थईने जाय ?—समदिक देव समदिक देवनी बचे थईने जाय ?—अल्पदिक देवी महदिक देवनी बचे थईने जाय ?—महदिक वैमानिक देवी अल्पदिक वैमानिक देवनी बचे थईने जाय ?—अल्पदिक देवी महदिक देवनी बचे थईने जाय ?—एम समदिक देवीनो समदिक देवीनी साथे आलापक.—महदिक वैमानिक देवीनो अल्पदिक देवीनी साथे आलापक.—महदिक देवी मोह पमाडीने जाय के ते सिवाय जाय ?—दोडता घोडाने 'खु खु' शब्द केम थाय छे ?—भाषाना चार प्रकार.

शतक १० उद्देशक ४. पृ० १९६-१९८.

वाणिज्यग्राम.—दुतिपलाश चैत्य.—इयामहस्ती अनगर.—चमरेन्द्रने प्रायस्त्रिंशक देवो छे ?—प्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध.—बलीन्द्रने प्रायस्त्रिंशक देवो.—तेनो हेतु.—धरणेन्द्रने प्रायस्त्रिंशक देवो.—शक्रेन्द्रने प्रायस्त्रिंशक देवो.—ईशानेन्द्रने प्रायस्त्रिंशक देवो.—सनत्कुमारने प्रायस्त्रिंशक देवो.

शतक १० उद्देशक ५. पृ० १९९-२०४.

राजगृह नगर.—गुणशील चैत्य.—चमरेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—अग्रमहिषीओनो परिवार.—चमरेन्द्र पोतानी सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे ?—हेतु.—चरेन्द्रना सोमलोकपालने पहराणीओ.—सोमलोकपाल पोतानी सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे ?—यमने अग्रमहिषीओ.—बलीन्द्रने अग्रमहिषीओ. बलीन्द्रना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.—धरणेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—धरणना लोकपाल कालवालने अग्रमहिषीओ.—भूतानेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—भूतानेन्द्रना लोकपालने अग्रमहिषीओ.—कालेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—सुरूपेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—पूर्णभद्रने अग्रमहिषीओ.—राक्षसना इन्द्र भीमने अग्रमहिषीओ.—ए प्रमाणे किन्नरेन्द्र, सत्पुरुषेन्द्र, अतिक्रियेन्द्र अने गीतरतीन्द्रने अग्रमहिषीओ.—चन्द्र, अंगारग्रह अने शक्रे अग्रमहिषीओ.—शक्रे सुधर्मा सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे ?—शक्रेना लोकपाल सोम, ईशानेन्द्र अने ईशानना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.

शतक १० उद्देशक ६. पृ० २०५.

शक्रेनी सुधर्मा सभा क्यां छे ?—शक्रे केनी श्रद्धि अने केवा सुखवाडो छे ?

शतक १० उद्देशक ७-३४. पृ० २०६.

अज्यावीश अन्तर्हीपो.

शतक ११ उद्देशक १. पृ० २०७-२१३.

उत्पल एकजीवी छे के अनेकजीवी छे ?—जीवो उत्पलमां क्यांथी आवीने उपजे छे ?—एक समयमां केटला उपजे ?—प्रतिसमय काठबामां आवे तो क्यारे खाली थाय ?—शरीरनी अवगाहना.—ज्ञानावरणीयादि कर्मना बन्धक.—आयुष कर्मना बन्धक.—ज्ञानवरणीयादि कर्मना वेदक.—ज्ञानावरणादि कर्मना उदयवाळा.—उदीरक के अनुदीरक ?—कृष्णादिलेरयावाळा.—सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि के मिश्रदृष्टि ?—ज्ञानी के अज्ञानी ?—मनोयोगी, बचनयोगी के काययोगी ?—साकारउपयोगी के अनाकारउपयोगी ?—शरीरना उर्णादि.—उच्छ्वासक निःश्वासक के अनुच्छ्वासकनिःश्वासक ?—आहारक के अनाहारक ?—सर्वविरति, अविरति के देशविरति ?—सक्रिय के अक्रिय ?—सप्तविधबन्धक के अष्टविधबन्धक ?—आहारादि संज्ञाओ.—कषाय.—वेद.—वेदना बन्धक.—संज्ञी के असंज्ञी ?—सेन्द्रिय के अनिन्द्रिय ?—उत्पलनो जीव उत्पलपणे क्यांमुधी रहे ?—उत्पलनो जीव पृथिवीमां आवी उत्पलमां आवे ल्यारे केटलो काल गमनागमन करे ?—उत्पलनो जीव बनस्पतिमां जईने पुनः उत्पलमां आवे ल्यारे केटलो काल गमनागमन करे ?—उत्पलनो जीव भेइन्द्रियमां जईने उत्पलपणे उपजे ल्यारे केटलो काल जाय ?—पञ्चेन्द्रिय तिर्यक थईने उत्पलमां आवे ल्यारे केटलो काल जाय ?—आहार.—आयुष.—समुद्रघात.—च्यवन.—सर्व जीवोनु उत्पलपणे उपजवुं.

शतक ११ उद्देशक २. पृ० २१४.

शास्त्रक.

शतक ११ उद्देशक ३. पृ० २१५.

पलाश.

शतक ११ उद्देशक ४. पृ० २१६.

कुम्भिक.

शतक ११ उद्देशक ५. पृ० २१७.

नादीक.

शतक ११ उद्देशक ६. पृ० २१८.

पद्म.

शतक ११ उद्देशक ७. पृ० २१९.

कविता.

शतक ११ उद्देशक ८. पृ० २२०.

कविता.

शतक ११ उद्देशक ९. पृ० २२१-२२७.

इतिहासपुर.—शिवराज.—शिवभद्रपुत्र.—शिवराजानो संकल्प.—शिवभद्रनो राज्याभिषेक.—शिवराजनी प्रमज्या.—शिवराजविंनो अभिप्रह.—शिवराजविंनो विभंगज्ञान.—शिवराजविंनो 'सात द्वीप अने सात समुद्र छे' एवो अभ्यवसाय.—शिवराजविंसमत सात द्वीप अने सात समुद्रसंबन्धे प्रश्न.—महावीरसहित अने वर्णारिसहित द्रव्यो.—लक्षणसमुद्रमां द्रव्यो.—धातुकिखंडमां द्रव्यो.—शिवराजविंनुं कथन यथार्थ नथी.—'असंख्यात द्वीपसमुद्रो छे' एवुं महावीरस्वामीनुं कथन.—शिवराजविंनुं संकित यनुं.—शिवराजविंनो महावीर स्वामी पासे आबवानो संकल्प.—शिवराजविंनुं महावीरस्वामी पासे आगमन.—शिवराजविंनी वीक्षा.

शतक ११ उद्देशक १०. पृ० २२८-२३३.

लोकना प्रकार.—क्षेत्रलोकना प्रकार.—अधोलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.—तिर्यक्क्षेत्रलोक.—ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.—अधोलोकनुं संस्थान.—तिर्यक्लोकनुं संस्थान.—ऊर्ध्वलोकनुं संस्थान.—लोकनुं संस्थान.—भूलोकनुं संस्थान.—शुं अधोलोक जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—शुं तिर्यक्लोक जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—शुं अलोकाकाश जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—शुं अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमां जीवो छे—इत्यादि.—तिर्यक्लोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे—इत्यादि.—लोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो होय ?—अलोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो होय ?—द्रव्यादिनी अपेक्षाए अधोलोक दिनु विचार.—लोकनो विस्तार.—अलोकनो विस्तार.—लोकना एक आकाशप्रदेशमां जीवना प्रदेशो परस्पर संबद्ध छे अने एक बीजाने पीडा उत्पन्न करे ?—एक आकाशप्रदेशमां जघन्य अने उत्कृष्ट पदे रहेछा जीवप्रदेशो तथा सर्वजीवोनुं अल्पबहुत्व.

शतक ११ उद्देशक ११. पृ० २३४-२४७.

धातुज्यप्राम.—दूतिप्रलायक चैत्य.—कलना प्रकार.—प्रमाणकाल.—इतिहासपुर.—बलराज.—प्रभावती राणी.—वासगृह.—सप्या.—महास्व—प्रने जोई प्रभावतीनुं जागजुं.—सिंहनुं वर्णन.—सिंहने स्वप्नमां जोईने जागी.—बलराजानुं क्षयनगृहतरफ आबजुं.—स्वप्ननुं फल.—प्रभावती देवी स्वप्न फलने स्वीकारे छे.—व्यायामशाळा अने ज्ञानगृहप्रवेश.—स्वप्नपाठकोने बोलाबवानी आशा.—स्वप्नपाठकोने स्वप्नना फलनो प्रश्न.—गर्भनुं रक्षण.—पुत्रजन्म.—वधामणी.—पुत्रजन्ममहोत्सव.—पुत्रनुं नाम पाडजुं.—पांच धाव वडे पुत्रनुं पालन.—महाबल कुमारने भणवा मोकलवो.—महाबलनुं पाणिग्रहण.—प्रीतिदान.—धर्मधोष अनगारनुं आगमन.—महाबलनुं बंदन करवा माटे जजुं.—वीक्षानी रजा मागवी.—महाबलकुमारने राज्याभिषेक अने वीक्षा.—ब्रह्मदेवलोकमां उपजनुं अने त्याची ध्यवी सुदर्शनश्रेष्ठीपणे उपजनुं.—सुदर्शन श्रेष्ठीने जातिस्मरण.—सुदर्शन श्रेष्ठीनी प्रवज्या.

शतक ११ उद्देशक १२. पृ० २४८.

आत्मिकानगरी.—शंखवनचैत्य.—ऋषिभद्रप्रमुख भ्रमणोपासको.—भ्रमणोपासकोनो वार्तालाप.—देवलोकमां देवोनी स्थिति.—जघन्य स्थिति.—उत्कृष्ट स्थिति.—देवोनी स्थिति.—ऋषिभद्रपुत्र अनगारिकपथाने देवाने समर्थ छे ?—ऋषिभद्र पुत्र देवलोकधी ध्यवी कथां जरो ?—सिद्धिपद पामरो.—वृष्टांत.

शतक १२ उद्देशक १. पृ० २५२-२५६.

आत्मिकानगरी.—शंखप्रमुख भ्रमणोपासको.—शंखनी उत्पला स्त्री.—पुष्कलि भ्रमणोपासक.—शंखनो संकल्प—अशनादिनो आहार करता पाक्षिक पोषण केवो मने भ्रमस्कर नथी.—भोजन माटे शंखभ्रमणोपासकने बोलाववा योग्य छे.—पुष्कलि शंखने बोलाववा जाय छे.—शंखे कथुं के—आहारनो आस्वाद केता पोषणनुं पालन करनुं मने योग्य नथी.—शंखनो महावीरस्वामिने बंदन करवानो संकल्प.—शंख भगवंतने बंदन करवा जाय छे.—बीजा भ्रमणोपासको पण बांदा जाय छे.—शंखनी निन्दा न करो.—जागरिकाना प्रकार.—कोषधी व्याकुल थयेलो जीव शुं बांधे ?—मानी जीव शुं बांधे ?—शंख प्रमज्या ग्रहण करवा समर्थ छे ?

शतक १२ उद्देशक २. पृ० २५७-२६०.

कोशाम्बी नगरी.—उदायन राजा.—जयंती भ्रमणोपासिका.—जयंती मृगावतीसहित भगवंतने बंदन करवा जाय छे.—जयंतीना प्रश्नो.—जीवो शापी भारेपशुं पामे ?—भ्रमणपशुं स्वाभाविक छे के परिणामजन्य छे ?—सर्व भ्रमणजीवो मोक्ष जरो ?—तो शुं लोक भ्रमणरहित थरो ?—सूतापशुं सारं के जागतापशुं सारं ?—संबलपशुं सारं के दुर्बलपशुं सारं ?—दक्षत्व सारं के आळसुपशुं सारं ?—भोत्रेन्द्रियवधार्तं शुं करे ?—जयंतीए प्रमज्या ग्रहण करी.

शतक १२ उद्देशक ३. पृ० २६१.

दुधिवीजोना प्रकार.—प्रथम दुधिवीजा नाम अने गोत्र.

शतक १२ उद्देशक ४. पृ० २६२-२७४.

जे परमाणुओ एकरूपे एकठा थईने शुं थाय ?—अण परमाणुओ.—चार परमाणुओ.—पांच परमाणुओ.—छ परमाणुओ.—सात परमाणुओ.—आठ परमाणुओ.—नव परमाणुओ.—दस परमाणुओ.—संख्याता परमाणुओ.—असंख्याता परमाणुओ.—अनन्त परमाणुओ.—अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तों.—पुद्गलपरिवर्तना प्रकार.—नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्तों.—एक नैरयिके औदारिकपुद्गलपरिवर्तों.—असुरकुमारने औदारिकपुद्गलपरिवर्तों.—एक नैरयिके वैकि-

અપુદ્ગલપરિવર્ત. — નૈરયિકોને પુદ્ગલપરિવર્ત. — એક નૈરયિકને નૈરયિકપણામાં ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત. — એક નૈરયિકને અસુરપણામાં ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત. — એક નૈરયિકને પૃથિવીકાયપણામાં ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત. — એક અસુરકુમારને નૈરયિકપણામાં ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત. — એક નૈરયિકને નૈરયિકપણામાં વૈક્રિય-પુદ્ગલપરિવર્ત. — નૈરયિકને પૃથિવીકાયિકપણામાં વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્ત. — નૈરયિકોને નૈરયિકપણામાં કેટલા ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત વ્યતીત થયા છે ? — નૈરયિકોને પૃથિવીકાયિકપણામાં ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત. — ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત શા હેતુથી કહેવાય ? — ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્તનો નિષ્પત્તિકાલ. — ઔદારિકાધિપુદ્ગલપરિવર્તકાલનું અલ્પબહુત્વ. — પુદ્ગલપરિવર્તનું અલ્પબહુત્વ.

શતક ૧૨ ઉદ્દેશક ૫. પૃ. ૨૭૫-૨૭૮.

પ્રાણાતિપાત ઘેરે કેટલા ઘર્ણાદિયુક્ત છે ? — કોષાદિ કેટલા ઘર્ણાદિસહિત છે ? — માન ઘેરે કેટલા ઘર્ણાદિયુક્ત છે ? — માયા. — ક્રોધ. — રાગ દ્વેષ ઘેરે કેટલા ઘર્ણાદિયુક્ત છે ? — પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિ કેટલા ઘર્ણાદિયુક્ત છે ? — ચાર પ્રકારની મતિ. — અવગ્રહાદિ. — ડાચ. નાદિ કેટલા ઘર્ણાદિયુક્ત છે ? — સત્તમ અવકાશાન્તર. — સત્તમ તનુવાત. — નૈરયિકોને ઘર્ણાદિ. — પૃથિવીકાયિકો. — મનુષ્યો. — ઘાણવ્યન્તરાદિ. — ધર્માસ્તિકાયાદિ. — જ્ઞાનાવરણાદિ. — કૃષ્ણકૈ-શ્યાદિ. — સમ્યગ્દષ્ટ્યાદિ. — ઔદારિકાદિ શરીર. — સાકારોપયોગ અને અનાકારોપયોગ. — સર્વદ્રવ્યો. — ગર્ભમાં ઉત્પન્ન થતો જીવ. — જીવ અને જગત્ કર્મથી વિવિધરૂપે પરિણમે છે ?

શતક ૧૨ ઉદ્દેશક ૬. પૃ. ૨૭૯-૨૮૧.

રાહુ ચન્દ્રને ઘસે છે ? — રાહુ દેવનું ઘર્ષન. — રાહુના નામો. — રાહુના વિમાનો. — રાહુ આવતો કે જતો ચન્દ્રના પ્રકાશને ઘસે છે. — રાહુના પ્રકાર. — રાહુ ચન્દ્રને અને સૂર્યને ઘસે છે ? — શા હેતુથી ચન્દ્રને સધી — શોભાયુક્ત કહેવાય છે ? — શા હેતુથી સૂર્યને આદિત્ય કહેવાય છે ? — ચન્દ્રને અમ્મમહિ-પિઓ. — સૂર્ય અને ચન્દ્ર કેવા પ્રકારના કામમોગો મોગવે છે ?

શતક ૧૨ ઉદ્દેશક ૭. પૃ. ૨૮૨-૨૮૫.

લોકનું મહત્ત્વ. — નરકપૃથિવી. — આ જીવ રક્ષપ્રમાના એક એક નરકાવાસમાં પૃથિવીકાયિકાદિપણે ઉત્પન્ન થયો છે ? — સર્વ જીવો. — શર્કરાપ્રમાના નરકાવાસમાં પૃથિવીકાયિકાદિપણે ઉત્પન્ન થયો છે ? — તમા પૃથિવી. — સત્તમ પૃથિવીમાં પૂર્વે ઉત્પન્ન થયો છે ? — અસુરકુમાર. — પૃથિવીકાયિકાવાસમાં પૂર્વે ઉત્પન્ન થયો છે ? — વૈદિન્દ્રિયાવાસમાં પૂર્વે ઉત્પન્ન થયો છે ? — સનરકુમાર કલ્પમાં. — પ્રૈવેચકવિમાનાવાસમાં. — અનુસર વિમાનાવાસમાં. — આ જીવ સર્વ જીવોના માતા-પિતા इत्यादि संबन्धरूपे ઉત્પન્ન થયો છે ? — સર્વ જીવો આ જીવના માતા इत्यादि संबन्धरूपે ઉત્પન્ન થયા છે ? — આ જીવ સર્વ જીવના શત્રુરૂપે ઉત્પન્ન થયો છે ? — સર્વ જીવો. — આ જીવ સર્વ જીવના રાજા સરીકે ઉત્પન્ન થયેલ છે ? — આ જીવ સર્વ જીવોના દાસરૂપે ઉત્પન્ન થયેલ છે ? — સર્વ જીવો.

શતક ૧૨ ઉદ્દેશક ૮. પૃ. ૨૮૬-૨૮૭.

મહાશક્તિવાલો દેવ મરીને માત્ર બે શરીરવાળા નામોમાં ઉપજે ? — નાગના જન્મમાં અર્ચિત — પૂજિત થાય ? — બે શરીરવાળા મથિમાં ઉત્પન્ન થાય ? — બે શરીરવાળા વૃક્ષમાં ઉત્પન્ન થાય ? — વાનર ઘેરે જીવો રક્ષપ્રમામાં ઉત્પન્ન થાય ? — સિંહ ઘેરે પણ નૈરયિકપણે ઉપજે ? — કાક ઘેરે.

શતક ૧૨ ઉદ્દેશક ૯. પૃ. ૨૮૮-૨૯૩.

દેવોના અવ્યદેવાદિપ્રકાર. — અવ્યદ્રવ્યદેવાદિ કહેવાનું કારણ. — નરદેવ. — ધર્મદેવ. — દેવાધિદેવ. — ભાવદેવ. — અવ્યદ્રવ્યદેવો કયાંથી આવીને ઉપજે ? — નરદેવો કયાંથી આવીને ઉપજે ? — રક્ષપ્રમાદિમાંથી કહ નરકપૃથિવીથી આવી ઉપજે ? — શું મન્નવાસીઆદિ દેવોમાંથી કયા દેવોથી આવી ઉપજે ? — ધર્મદેવ કયાંથી આવી ઉપજે ? — દેવાધિદેવ કયાંથી ઉપજે ? — રક્ષપ્રમાદિ નરકપૃથિવીમાંથી કહ નરકપૃથિવીથી આવી ઉપજે ? — દેવોમાં સર્વ વૈમાનિક દેવોથી આવીને ઉપજે ? — ભાવદેવો કયાંથી આવી ઉપજે ? — અવ્યદ્રવ્યદેવની સ્થિતિ. — નરદેવની સ્થિતિ. — ધર્મદેવની સ્થિતિ. — દેવાધિદેવની સ્થિતિ. — ભાવદેવની સ્થિતિ. — અવ્યદ્રવ્યદેવની ચિકુર્વણાશક્તિ. — દેવાધિદેવની ચિકુર્વણાશક્તિ. — ભાવદેવની ચિકુર્વણાશક્તિ. — અવ્યદ્રવ્યદેવો મરણ પામી કયાં જાય ? — નરદેવ મરણ પામી કયાં ઉપજે ? — ધર્મદેવ મરણ પામી કયાં જાય ? — ધર્મદેવો કયા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય ? — દેવાધિદેવો મરણ પામી કયાં જાય ? — ભાવદેવ મરણ પામી કયાં જાય ? — અવ્યદ્રવ્યદેવોની સ્થિતિ. — અવ્યદ્રવ્યદેવને કેટલા કાલનું અંતર હોય ? — નરદેવને પરસ્પર કેટલું અન્તર હોય ? — ધર્મદેવને પરસ્પર કેટલું અન્તર હોય ? — દેવાધિદેવનું અન્તર — ભાવદેવનું અન્તર. — અવ્યદ્રવ્યદેવાદિનું પરસ્પર અલ્પબહુત્વ. —

શતક ૧૨ ઉદ્દેશક ૧૦. પૃ. ૨૯૪-૩૦૦.

આત્માના પ્રકાર. — દ્રવ્યાત્મા અને કષાયાત્માનો સંબન્ધ. — દ્રવ્યાત્મા અને યોગાત્માનો સંબન્ધ. — દ્રવ્યાત્મા અને ઉપયોગાત્માનો સંબન્ધ. — દ્રવ્યાત્માનો જ્ઞાનાત્માની સાથે સંબન્ધ. — દર્શનાત્મા સાથે સંબન્ધ. — ચારિત્રાત્મા સાથે સંબન્ધ. — વીર્યાત્મા. — કષાયાત્મા અને યોગાત્માનો સંબન્ધ. — કષાયાત્મા અને દર્શનાત્માનો સંબન્ધ. — દ્રવ્યાત્મા ઘેરેનું અલ્પબહુત્વ. — આત્મા જ્ઞાનસ્વરૂપ છે કે અન્યસ્વરૂપ છે ? — નૈરયિકોનો આત્મા. — પૃથિવીકાયિકોનો આત્મા. — આત્મા દર્શનરૂપ છે કે તેથી અન્ય છે ? — નૈરયિકોનો આત્મા. — રક્ષપ્રમા પૃથિવી સદ્સ્વરૂપ છે કે અસદ્સ્વરૂપ છે ? — શર્કરાપ્રમા. — સૌધર્મદેવલોક. — પ્રૈવેચકવિમાન. — એક પરમાણુ સદ્સ્વરૂપ છે કે અસદ્સ્વરૂપ છે ? — ત્રિપ્રદેશિક સ્કન્ધ — શા હેતુથી સદ્સ્વરૂપ છે इत्यादि. — ત્રિપ્રદેશિક સ્કન્ધના આત્મા — આદિ તેર ભાંગા. — શા હેતુથી ત્રિપ્રદેશિકસ્કન્ધના 'આત્મા' इत्यादि ભાંગા થાય છે ? — ચતુષ્પ્રદેશિકસ્કન્ધના ૧૯ ભાંગાઓ. — શા હેતુથી 'આત્મા' इत्यादि રૂપ છે. — પંચપ્રદેશિકસ્કન્ધના ૨૨ ભાંગાઓ. — શા હેતુથી આત્મા इत्याદિરૂપ છે ?

શતક ૧૩ ઉદ્દેશક ૧. પૃ. ૩૦૧-૩૦૬.

નરકપૃથિવી. — રક્ષપ્રમાને વિષે નરકાવાસો. — સંખ્યાતા યોજન વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં એક સમયે નારકાદિનો ઉત્પાદ. — એક સમયે નારકાદિની હદ્વર્તના. — રક્ષપ્રમામાં નારક જીવોની સત્તા. — અસંખ્યયોજનવાળા નરકાવાસોમાં નારકાદિનો ઉત્પાદ. — શર્કરાપ્રમામાં નરકાવાસો. — વાલ્કાપ્રમામાં નરકાવાસો. — પંકપ્રમામાં નરકાવાસો. — ધૂમપ્રમામાં નરકાવાસો. — સમપ્રમામાં નરકાવાસો. — સત્તમ નરકમાં નરકાવાસો. — રક્ષપ્રમામાં સંખ્યાતા યોજન-વિસ્તારવાળા નરકાવાસોમાં સમ્યગ્દષ્ટિ ઘેરેની ઉત્પાદ. — સમ્યગ્દષ્ટિ ઘેરેની હદ્વર્તના. — સમ્યગ્દષ્ટિ ઘેરેથી અવિરહિત હોય. — સત્તમ નરકમાં સમ્યગ્દષ્ટિ-

अग्रे उपजे !—कृष्णादिकेश्यावाळा धरने कृष्णलेश्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय !—नीललेश्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय !—तेनो हेतु.—रूपोत्पत्त्या-
वाळा नारकोमां उपजे !

शतक १३ उद्देशक २. पृ० ३०७—३१०.

देवीना प्रकार.—भवनवासी देवोना प्रकार—असुरकुमारना आवासो.—असुरकुमारमां उत्पाद.—उद्वर्तना.—नागकुमारादिना आवासो.—ज्ञानव्यं-
तर देवीना आवास.—एकसमये वानव्यंतर देवोना उत्पाद.—उयोत्थिक देवोना विमानावास.—सौधमं देवलोकां विमानावास.—एकसमये सौधमं
मां विने सहकार सुधी देवोना उत्पाद.—भानत भने प्राणत देवलोकां विमानावास.—प्रेचेयक.—अनुत्तर विमानो.—पांच अनुत्तरमां एक समये देवोना
उत्पादादि.—असुरकुमारावासमां सम्पद्दृष्ट्यादि उपजे !—कृष्णादिकेश्यावाळा धरने कृष्णलेश्यावाळा देवोमां उत्पन्न थाय !

शतक १३ उद्देशक ३. पृ० ३११.

नारको अनन्तराहारी होय भने त्सार बाद अनुक्रमे परिचारणा करे !

शतक १३ उद्देशक ४. पृ० ३१२—३२३.

मरकटपृथिवी.—नैरयिकद्वार.—स्पर्शद्वार.—प्रणिधिद्वार.—निरयान्तद्वार.—लोकमध्यद्वार.—अधोलोकमध्य.—ऊर्ध्वलोकमध्य.—तिर्यग्लोकमध्य.—
विद्या—विद्याप्रवहद्वार.—ऐन्द्री विद्या कर्माणी नीकळे छे !—आग्नेयी.—श्राम्या—दक्षिण.—नैऋती.—ऊर्ध्वदिशा.—तमादिशा.—लोक.—अस्तिकायप्रव-
र्तनद्वार.—धर्मास्तिकायवडे जीवोनुं प्रवर्तन.—अधर्मास्तिकायवडे प्रवर्तन.—आकाशास्तिकायवडे प्रवर्तन.—जीवास्तिकायवडे प्रवर्तन.—पुद्गलास्तिकायवडे
प्रवर्तन.—अस्तिकायप्रवेशस्पर्शनाद्वार.—धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश धर्मास्तिकायादि द्रव्यना केटला प्रदेशोवडे स्पर्शाय !—अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.—
आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.—जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.—
पुद्गलास्तिकायना संख्याता प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना अर्हय प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो.—कालनो एक समय.—धर्मास्तिकाय द्रव्य.—अध-
र्मास्तिकाय.—अवगाढद्वार.—उर्ध्व धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां बीजा धर्मास्तिकायादिना केटला प्रदेश अवगाढ होय !—अधर्मास्तिकायनो
एक प्रदेश.—आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.—जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना
त्रण प्रदेशो.—एक अद्वासमय.—एक धर्मास्तिकाय.—एक अधर्मास्तिकाय.—पृथिवीकायिक.—अपकायिक.—अस्तिकायनिषेदनद्वार.—धर्मास्तिकायादि
त्रण द्रव्यमां विसवाने समर्थ थाय !—बहुसमद्वार.—लोकनो बक्रभाग.—संस्थानद्वार.

शतक १३ उद्देशक ५. पृ० ३२४.

नैरयिको तुं सचिताहारी छे, अचिताहारी छे के मित्राहारी छे ?

शतक १३ उद्देशक ६. पृ० ३२४—३२९.

नारको सांतर के निरन्तर उपजे !—असुरकुमारना चमरेन्द्रनो चमरचंच नामे आवास.—चमरेन्द्र चमरचंच नामे आवासमां रहे छे !—चंपानगरी.—
पूर्णभद्र चैत्य.—सिन्धुसौवीर देश.—वीतभय.—उदायन राजा.—प्रभावती देवी.—पोताना भाणेज केशीकुमारने राज्याभिषेक करवानो उदायननो
संकल्प.—केशीकुमारनो राज्याभिषेक.—उदायननी वीक्षा भने मुक्ति.—अभिषिक्तुमारनो उदायनने विवे वैराजुबन्ध भने तेनुं वीतभय नगरधी नीकळी
जनुं.—अभिषिक्तो असुरकुमारमां उत्पाद.

शतक १३ उद्देशक ७. पृ० ३३०—३३४.

भाषा.—भाषा आत्मस्वरूप छे के तेथी अन्य छे !—रूपी के अरूपी !—सचित के अचित !—जीवस्वरूप के अजीवस्वरूप !—जीवोने भाषा
के अजीवोने भाषा होय !—भाषा क्यारे कहेवाय !—भाषा क्यारे मेदाय !—भाषाना प्रकार.—जन.—मन आत्मा छे के तेथी अन्य छे !—मन क्यारे
होय !—मन क्यारे मेदाय !—मनना प्रकार.—काय आत्मा छे के तेथी अन्य !—रूपी के अरूपी !—काय क्यारे होय !—काय क्यारे मेदाय !—कायना
प्रकार.—मरणना प्रकार.—आवीचिक मरणना प्रकार.—द्रव्यावीचिक मरणना प्रकार.—नैरयिक द्रव्यावीचिक मरण.—श्लेष्मावीचिक मरण.—नारक
श्लेष्मावीचिक मरण.—अवधि मरण.—द्रव्यावधि मरण.—नैरयिक द्रव्यावधि मरण शा हेतुधी कहेवाय छे !—आत्यन्तिक मरण.—द्रव्यात्यन्तिक
मरण.—नैरयिक द्रव्यात्यन्तिक मरण धापी कहेवाय छे !—बालमरणना प्रकार.—पंडितमरण.—गात्रोपगमन.—अक्षप्रत्याह्वयन.

शतक १३ उद्देशक ८. पृ० ३३५.

कर्मप्रकृति.

शतक १३ उद्देशक ९. पृ० ३३५—३३७.

वैश्विक शक्तिधी कोई शोरकापी बाधिली घटीका केहने एवारूपे गमन करे !—केटला रूपो विकुर्वा शके ?—हिरण्यनी पेटी केहने गमन करे !—बड-
बाणुकीनी पेठे गमन करे !—बल्लोकानी पेठे गमन करे !—बीजंजीवक पक्षीनी पेठे गमन करे !—बिडालक पक्षीनी पेठे गमन करे !—जीवंजीवक पक्षीनी
पेठे गमन करे !—हंस पेठे गति करे !—समुद्रवाजसना आकारे गति करे !—बकहस्त पुष्पनी जेम गति करे !—रत्नहस्त पुष्पनी पेठे गमन करे !—बिस-
—वृणाशिका.—बनखंड.—पुष्करिणीना आकारे आकाशमां गमन करे !—केटला रूपो विकुर्वा !—मायासहित के माकारहित विकुर्वा ?

शतक १३ उद्देशक १०. पृ० ३३८.

समुद्रास.

शतक १४ उद्देशक १. पृ० ३३९-३४२.

भावितारमा अनगार जेणे चरम देवावासजुं उलंघन कर्तुं छे अने परम देवावासने प्राप्त थयो मथी ते मरीने कयां उपजे ?—असुरकुमारावास.—नारकोनी क्षीप्र गति.—नारको अनन्तरोपपन्न, परंपरोपपन्न के अनन्तरपरंपरानुपपन्न छे ?—अनन्तरोपपन्न नारको आश्रयी आयुषनो बन्ध.—परंपरोपपन्न नैरयिकोने आश्रयी आयुषनो बन्ध.—अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको.—अनन्तर निर्गतादि नैरयिको.—नारको अनन्तर निर्गतादि केम कहेवाय छे ?—अनन्तर निर्गतादिने आश्रयी आयुषनो बन्ध.—परंपरनिर्गत.—अनन्तरपरंपरानिर्गत.—अनन्तर खेदोपपन्न बगेरे.

शतक १४ उद्देशक २. पृ० ३४३-३४४.

उन्मादना प्रकार.—नारकोनो उन्माद.—नारकोने शा हेतुथी उन्माद होय ?—असुरकुमारोने उन्माद.—इन्द्र वृष्टि करे ?—इन्द्र वृष्टि केकी रीते करे ?—शुं असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे ?—ईशानेन्द्रादि तमस्काय करे ?—असुरकुमार तमस्काय करे ?—शा हेतुथी तमस्काय करे ?

शतक १४ उद्देशक ३. पृ० ३४५-३४६.

महाकाय देव भावितारमा अनगारनी बन्धे थईने जाय ?—महाकाय असुरकुमार भावितारमा अनगारनी बन्धे थईने जाय ?—नारकोमां सत्कारादि विनय होय छे ?—असुर कुमारोमां सत्कारादि विनय.—पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां सत्कारादि विनय होय छे ?—अल्पश्रद्धिवाळो महाश्रद्धिवाळा देवनी बन्धे थईने जाय ?—समानश्रद्धिवाळो देव समानश्रद्धिवाळा देवनी बन्धे थईने जाय ?—बन्धे थईने जनार देव शस्त्र प्रहार करीने जाय के कयां शिवाय जाय ?—प्रथम शस्त्र प्रहार कयां पछी जाय के गया पछी शस्त्र प्रहार करे ?—नारको केवा प्रकारना पुद्गलपरिणामने अनुभव छे ?

शतक १४ उद्देशक ४. पृ० ३४७-३४८.

पुद्गलपरिणाम.—अतीत कालने विषे एक समयमां पुद्गलनो परिणाम.—वर्तमान काले पुद्गलपरिणाम.—अनागत काल.—पुद्गलस्कन्ध.—अतीत वर्तमान अने अनागतकाले जीवपरिणाम.—परमाणुपुद्गल शाश्वत के अशाश्वत ?—परमाणु चरम के अचरम ?—सामान्य परिणाम.

शतक १४ उद्देशक ५. पृ० ३४८-३५१.

नारक अग्निकायना मध्य भागमां गमन करे ?—असुरकुमारो.—एकेन्द्रियो.—बेइन्द्रियो.—पंचेन्द्रिय तिर्यंच अग्नि बन्धे थईने जाय ?—नारको दश स्थानोने अनुभव करे छे.—असुरकुमारो.—पृथिवीकायिको.—बेइन्द्रियो.—तेइन्द्रियो.—चतुरिन्द्रिय जीवो.—पंचेन्द्रिय तिर्यंचो.—महर्दिक देव बहाराणा पुद्गलोने ग्रहण कयां शिवाय पर्वतादिने उलंघी शके ?—बहाराणा पुद्गलोने ग्रहण करी पर्वतादिने उलंघवा समर्थ छे.

शतक १४ उद्देशक ६. पृ० ३५२-३५३.

नारकोने आहार, परिणाम, योनि, स्थिति बगेरे.—नारको वीचि अने अवीचिद्रव्यनो आहार करे छे.—ज्यारे इंद्र भोग भोगववा इच्छे ल्यारे ते शुं करे ?—ईशानेन्द्र भोग भोगववा इच्छे ल्यारे ते केकी रीते भोगवे ?

शतक १४ उद्देशक ७. पृ० ३५४-३५७.

केवलज्ञाननी अप्राप्तिथी खिन्न थयेला गीतमस्यामिने आश्वासन.—अनुत्तरोपपातिक देवो जाणे छे अने जुए छे ?—तुल्यता.—द्रव्यतुल्य.—क्षेत्रतुल्य.—कालतुल्य.—मधुतुल्य.—भावतुल्य.—औदयिकादिभावबन्धे तुल्य.—संस्थानतुल्य.—आहारनो ल्यागी अनगार मूर्छित थई आहार करे अने पछी मरण-समुत्पात करी आनासक्त थई आहार करे ?—शा हेतुथी एम कहेवाय छे ?—लवसत्तम देवो.—अनुत्तरोपपातिक देवो.—केटल्लं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तर देवदणे उत्पन्न थाय ?

शतक १४ उद्देशक ८. पृ० ३५८-३६१.

रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभाजुं अन्तर.—शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभाजुं अन्तर.—सप्तम नरकपृथिवी अने अलोकजुं अन्तर.—रत्नप्रभा अने ज्योतिषिकजुं अन्तर.—ज्योतिषिक अने सौधर्म—ईशानदेशलोकजुं अन्तर.—सौधर्म—ईशान अने सनत्कुमार—माहेन्द्रजुं अन्तर.—सनत्कुमार—माहेन्द्र अने महादेव-लोकजुं अन्तर.—महालोक अने लान्तानुं अन्तर.—लान्तक अने महाशुक्रजुं अन्तर.—अनुत्तरविमान अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीजुं अन्तर.—ईषत्प्राग्भारा अने अलोवजुं अन्तर.—शालवृक्ष मरीने कयां जसे ?—शालयष्टिका.—उंबरयष्टिका मरण पायी कयां जसे ?—अंबड परित्राजक.—अव्याबाध देव.—इन्द्र-कोइना मथाने तरवारथी कापी कर्मद्वलमां नांके तो पण तेने जरा पण दुःख न थाय.—जुंभक देवो.—जुंभक देवो थाथी कहेवाय छे ?—जुंभक देवोना प्रकार.—जुंभक देवो कयां रहे छे ?—जुंभक देवोनी स्थिति.

शतक १४ उद्देशक ९. पृ० ३६२-३६४.

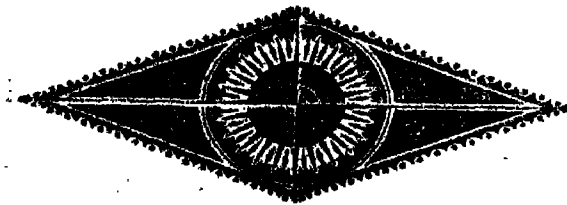
जे भावितारमा अनगार पोतानी कर्मलेश्याने जणतो नथी ते सशरीर जीवने जाणे छे ?—रूपी पुद्गल स्कन्धो प्रकाशित थाय छे ?—जे पुद्गलो प्रकाशित थाय छे ते केटला छे ?—नैरयिकोने आत्त-सुखोत्पादक पुद्गलो होता नथी.—असुरकुमारने आत्त पुद्गलो.—पृथिवीकायिकोने आत्त अने अनात्त पुद्गलो.—नारकोने इष्ट के अमिष्ट पुद्गलो होय छे ?—महर्दिक देवजुं हजार रूपो विकुर्वाणे हजार भाषा बोलवानुं सामर्थ्य.—एक भाषा के हजार भाषा ?—सूर्यनो अर्थ.—सूर्यनी प्रभा ए शुं छे ?—श्रमणोना सुखनी तुल्यता.

शतक १४ उद्देशक १०. पृ० ३६५-३६६.

केवलज्ञानी छपस्थने जाणे.—सिद्ध पण छपस्थने जाणे.—केवली अवधिज्ञानीने जाणे.—केवलज्ञानी बोले ?—केवलीनी पेठे सिद्ध बोले के नहि ?—केवलज्ञानीनी पेठे सिद्ध केम न बोले ?—केवलज्ञानी आख उचाडे अने मीचे ?—केवलज्ञानी रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे ?—सिद्ध पण रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे ?—केवली शर्कराप्रभांने जाणे ?—केवली सौधर्मादि कल्पने जाणे ?—प्रवेयकादिने जाणे ?—ईश्वरप्राग्भारा पृथिवीने जाणे ?—परमाणुपुल्लने जाणे ?—

शतक १५. पृ० ३६७-४०२.

आवस्तीनगरी.—कोष्ठक चैत्य.—हालाहला कुंभारण.—गोशालकनुं संघसहित हाहाहला कुंभारणने घेर आगमन.—गोशालकने छ दिशाचरोनुं आवी मळनुं.—आवस्ती नगरीमां चणां माणसो कहे छे के 'गोशालक पोताने जिन कहतो विचरे छे' ते केम मानी दाखय ?—भगवंते कहेलो गोशालकनो वृत्तान्त.—मंडिक पिता.—भद्रा जी.—शरण प्राम.—गोबहुल ब्राह्मण.—गोशालक नाम.—भगवान् महावीरे मातापिता देवलो क गया पछी दीक्षा लीधी.—प्रथम वर्षे अस्थिमाममां चातुर्मास.—बीजा वर्षे राजपुद्ग. नगर.—प्रथम मासक्षमणना पारणाने दिवसे विजयगाथापतिना घेर भगवंतनो प्रवेश.—विजय गृहपतिने घेर पांच दिवसुं प्रगट यजुं.—गोशालकनुं विजय गृहपतिने घेर आगमन.—बीजुं मासक्षमण.—भगवंतनो बीजा मासक्षमणना पारणाने दिवसे आनंद गृह-पतिना घेर प्रवेश.—त्रीजुं मासक्षमण.—त्रीजा मासक्षमणना पारणाने दिवसे सुनन्द गृहपतिना घेर प्रवेश.—कोष्ठाक सन्निवेश.—बहुल ब्राह्मण.—चतुर्थ मासक्षमणना पारणाने दिवसे बहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश.—भगवंते करेलो गोशालकनो शिष्यतरीके स्वीकार.—भगवंतनो गोशालक साथे सिद्धार्थ दामधी कुंमप्राम तरफ विहार अने मार्गमां तलना छोडनुं जोनुं.—गोशालकनो भगवंत महावीरने प्रथ.—तलनो छोड नीपजशे के नहि ?—गोशालकनुं भगवंतनी बातने मिथ्या करवा माटे तलना छोडने उखेडी नाखनुं.—गोशालकने वेद्यायन बालतपस्वीनो समागम, तेमने गोशालकनुं उपहासपूर्वक कथन.—तेमनुं गोशालक उपर तेजोलेइयानुं मूकनुं.—शीतलेइया मूकी भगवंते करेलुं गोशालकनुं रक्षण.—भगवंते गोशालकने तेजोलेइयाप्राप्तनो विधि बताव्यो.—भगवंतनुं गोशालकनी साथे सिद्धार्थप्राम तरफ प्रयाण अने भगवंतना बचनने मिथ्या करवा माटे तलना छोडनी गोशालकनी तपस.—गोशालकनो परिवर्तवाद्स्वीकार अने भगवंतनी तेनुं जूदा पचनुं.—गोशालकने तेजोलेइयानी प्राप्ति.—गोशालकना छ दिशाचरो शिष्य भया अने ते हवे जिनतरीके विचरना लाव्यो.—गोशालक जिन नथी एजुं भगवंतनुं कथन.—उपरनुं कथन सांभळी गोशालकने गुस्से थवो.—आनंदने गोशालकनो समागम, भगवंतने बाळी भस्म करतानी तेणे आपेली धमकी, ते माटे तेणे कहेलुं वणिकीनुं दृष्टान्त.—गोचरीधी पाछा फरतां आनंदनुं गोशालके आपेली धमकीनुं भगवंतने निवेदन.—गोशालक तपोजन्य तेजोलेइयावडे बाळी भस्म करवा समर्थ छे ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.—भगवंते आनंदने कहुं के तुं गौतमादि मुनिथीने कहे के गोशालकनी साथे कंड पण वादविवाद न करे.—भगवंत प्रति गोशालकनो उपालंभ.—गोशालकनो गोशालकपणे इनकार.—गोशालकनुं पोतानुं स्वरूपनिवेदन अने ते द्वारा स्वमत प्रदर्शन.—चौराशी लाक्ष महाकल्पनुं प्रमाण.—सात दिव्य भवान्तरित सात मनुष्य भवो.—सात शरीरान्तरप्रवेश.—प्रथम शरीरप्रवेश.—द्वितीय शरीरप्रवेश.—तृतीय शरीरप्रवेश.—चतुर्थ शरीरप्रवेश.—पंचम शरीरप्रवेश.—षष्ठ शरीरप्रवेश.—सप्तम शरीरप्रवेश.—भगवन्ते कहुं के हे गोशालक ! तुं तारा आत्माने छुपावे छे.—गोशालकना भगवंतने आक्रोशयुक्त बचनो कहेवा.—सर्वांनुभूति अनगारनुं गोशालकने सत्य कथन.—गोशालके सर्वांनुभूति अनगारने बाळी भस्म कर्यां.—सुनक्षत्र अनगारनुं गोशालकने कथन.—गोशालके सुनक्षत्र अनगारने पण बाळया.—गोशालकनो भगवंत प्रति श्रीजी वारनो आक्रोश.—गोशालके भगवंतनो बध करवा माटे शरीरमांथी तेजोलेइया बहार काडी.—तेजोलेइया गोशालकना शरीरमां पेठी.—'तुं तारा तपना तेजधी पराभूत थइ छ सासने अन्ते काळ करीश' एजुं गोशालकने भगवंतनुं कथन.—आवस्ती नगरीना जनोनो भगवंत अने गोशालकना सम्यग्वाचित्वसंबन्धे प्रवाद.—श्रमणोर् गोशालकने प्रश्नो पूछी निरुत्तर कर्षो.—निरुत्तर थवाथी गोशालकनुं गुस्से यजुं अने तेना केटला एक शिष्योनुं भगवंतने आश्रयी रहेवुं.—गोशालकनुं भगवंत पाउंची हाहाहला कुंभारणने घेर अजुं.—तेजोलेइयानुं सामर्थ्य.—चार प्रकारना पानक.—अपानकना चार प्रकार.—स्थालपाणी.—त्वचापाणी.—शींगनुं पाणी.—हृदपाणी.—आजीविकोपासक अयंपुलकनो गोशालकनी पासे जवानो संकल्प.—अयंपुलकनुं आगमन, गोशालकनी विचित्र अवस्था जोइ पाखुं जवुं, स्वधिरोए अयंपुलने पाछा बोलावी तेना मनना संकल्पनुं निवेदन अने तेना मननुं समाधान.—अयंपुलनुं गोशालक पासे आगमन.—गोशालकवडे अयंपुलना संकल्पनुं निवेदन अने तेना मननुं समाधान.—पोताना मरण वाद वेहने उत्सवपूर्वक बहार काढवा संबन्धे गोशालकनी भलामण.—गोशालकने सम्यक्त्व यजुं, 'हुं जिन नथी' एम पोतानी वास्तविक स्थिति प्रकाशित करवी, तेनो पश्चात्ताप अने 'महावीर जिन छे' एजुं निवेदन.—'मने काळधर्म पागेली जाणी मा-रवाबा पगने दोरबावती बांधी चसडजो अने मुखमां थुंजो तथा हुं जिन नथी एम उदघोषणा करता मारा शरीरने निशपूर्वक बहार काढजो' एवी गोशा-लकनी पोताना शिष्योने भलामण.—आजीविक स्वधिरोनुं हाहाहला कुंभारणना द्वार बन्ध करी आवस्तीने आळेखी गोशालकना कथा प्रमाणे करवुं.—मंडिक-ग्राम.—आनकोष्ठक चैत्य.—मालुकावन.—भगवंत महावीरना शरीरमां पीडाकारी रोगनुं यजुं.—'भगवंत रोगनी पीडाथी छपस्थावस्थामां कालधर्म पामशे' एवी सिंह अनगारनी आर्षाका.—भगवंतनुं सिंह अनगारने बोलावनुं.—भगवंतनुं सिंहाना मनोगत भावनुं कथन.—भगवंतनुं रेवती श्राविका पारोथी बीजोरापाकनुं मंगावनुं.—सर्वांनुभूति मरण पामी कर्षा गया ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.—सुनक्षत्र अनगार काळ करी कर्षा गया ?—गोशालक काळ करी कर्षा यवो ?—गोशालक देवलो कधी च्यवी कर्षा जशे ?—महापद्म अने देवसेन नाम पाडवानुं कारण.—महापद्म.—देवसेन.—विमलवाहन नाम पाडवानुं कारण.—विमलवाहननुं भ्रमण निर्धन्योनी साथे अनायेंपणुं.—सुमंगल अनगार.—विमलवाहन सुमंगल अनगार उपर रथ चलावी पाडी नाखसे.—सुमंगल अनगार विमलवाहनने तपना तेजधी भस्म करसे.—सुमंगल अनगार काळ करी कर्षा जशे ?—विमलवाहन मरण पछी कर्षा जशे ?—हवे त्यांधी च्यवी मनुष्य-वेह धारण करी सम्यग्दर्शन पामशे.—केवलज्ञान-दर्शन सरपज यशे.—दृढप्रतिज्ञ केवली थई चणा वरस सुची चारित्र्य पाळी मोक्षे जशे.



ભગવત્સુધર્મસ્વામિપ્રણીત ભગવતીસૂત્ર.

સત્તમં સયં.

૧. ૧ આહાર ૨ ચિરતિ ૩ સ્થાવર ૪ જીવા ૫ પક્ષી ૬ આઠ ૭ અણગારે ।
૮ છત્રમથ ૯ અસંવૃત ૧૦ અજ્ઞાતિથિ દસ સત્તમંમિ સય ॥

પદમો ઉદ્દેસો.

૨. [પ્ર૦] તેણં કાલેણં તેણં સમયણં જાવ યવં વદાસી-જીવે ણં મંતે ! કં સમયમણાહારપ મથદ ? [૩૦] ગોયમા !

સસમ શતક.

૧. [ઉદ્દેશસંગ્રહ-] ૧ આહાર, ૨ ચિરતિ, ૩ સ્થાવર, ૪ જીવ, ૫ પક્ષી, ૬ આયુષ્, ૭ અણગાર, ૮ છત્રમથ, ૯ અસંવૃત, અને ૧૦ અન્યતીર્થિક-૯ સંબન્ધે સાતમાં શતકમાં દશ ઉદ્દેશકો છે.

[પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં આહાર-આહારક અને અનાહારક ઇત્યાદિ વિષે હકીકત છે, બીજા ઉદ્દેશકમાં ચિરતિ-પ્રત્યાહવાનસંબંધી વર્ણન છે, ત્રીજા ઉદ્દેશકમાં સ્થાવર-વનસ્પતિ વગેરેની વક્તવ્યતા છે, ચોથા ઉદ્દેશકમાં જીવ-સંસારી જીવની પ્રરૂપણા છે, પાંચમાં ઉદ્દેશકમાં પક્ષી-લેખરજીવોની હકીકત છે, છઠ્ઠા ઉદ્દેશકમાં આયુષ્ વગેરેની હકીકત છે, સાતમાં ઉદ્દેશકમાં અણગાર-સાધુ વગેરેની હકીકત છે, આઠમાં ઉદ્દેશકમાં છત્રમથ મનુષ્યાદિની હકીકત છે, નવમાં ઉદ્દેશકમાં અસંવૃત-પ્રમત્તસાધુવગેરેની વક્તવ્યતા છે, અને દશમાં ઉદ્દેશકમાં કાલોદાયિ-પ્રમુક્ષ અન્યતીર્થિકસંબન્ધી વક્તવ્યતા છે.]

પ્રથમ ઉદ્દેશક.

૨. [પ્ર૦] તે કાલે અને તે સમયે (ગૌતમ ઇન્દ્રભૂતિ) યાવત્ ૯ પ્રમાણે બોલ્યા-હે ભગવન્ ! જીવ (પરમવમાં જતા) કયે સમયે અનાહારક (આહાર નહિ વાસ્તવ) હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! (પરમવમાં) પ્રથમ સમયે જીવ કદાચ આહારક હોય અને કદાચ અના-

આહારક અને
અનાહારક.

૨. આહારના બે પ્રકાર છે-૧ આમોગનિર્વૃત્તિ (ઇન્દ્રાપૂર્વક મહાન કષ્ટવેલો) આહાર અને ૨ અનામોગનિર્વૃત્તિ (ઇન્દ્રાક્રિયા અનામોગપણે મહાન કષ્ટવેલો) આહાર. તેમાં આમોગનિર્વૃત્તિ આહાર વિષય સમયે હોય છે, પરંતુ અનામોગનિર્વૃત્તિ આહાર ઉત્પત્તિના પ્રથમસમયથી પ્રારંભી અન્તસમય સુધી પ્રતિષ્ઠા સત્તર હોય છે, જુઓ-(પ્રજ્ઞા. પ. ૨૧, પ. ૪૧૮.)

૧ જ્યારે જીવ મરણ પામી કંડુગતિથી પરબ્રહ્મમાં પ્રવેશ કર્યે ત્યારે આહારક હોય છે, પરંતુ જ્યારે વક્તવ્યતા પ્રકાશિત થાય છે ત્યારે અનાહારક હોય છે અને પાંચ સમયે આહારક હોય છે, જ્યારે ત્રણ સમયે ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે પ્રથમના બે

पहले समय स्थि आहारय स्थि अणाहारय, वितिय समय स्थि आहारय स्थि अणाहारय, ततिय समय स्थि आहारय स्थि अणाहारय, चउत्थे समय नियमा आहारय । एवं दंडको । जीवा य एगिदिया य चउत्थे समय, सेसा ततिय समय ।

३. [प्र०] जीवे णं भंते ! कं समय सव्वप्पाहारय भवति ? [उ०] गोयमा ! पडमसंमयोववणय वा चउत्थसमय भवत्यो वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारय भवह । दंडको भाणिमब्बो जाव वेमाणिआणं ।

४. [प्र०] किसंठिय णं भंते ! लोय पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! सुपरदुगसंठिय लोय पन्नसे, हेट्टा विच्छिन्ने, जाव उणिय उडुमुंगगागरसंठिय, तंत्तिं च णं सासयंसि लोगंसि हेट्टा विच्छिन्नंसि जाव उणिय उडुमुंगगागरसंठियंसि उप्पन्नान-दंसणयरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ पासइ, अजीवे वि जाणइ पासइ; तन्नो पच्छा सिज्जति, जाव भंतं करेइ ।

५. [प्र०] संमणोवासयस्स णं भंते ! सामाहयकडस्स समणोवासय अच्छमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति । [प्र०] से केणट्टेणं जाव संपराइया ? [उ०] गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाहयकडस्स समणोवासय अच्छमाणस्स भाया अहिगरणी भवइ, आयाऽहिगरणयत्थियं च णं तस्स नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ; से तेणट्टेणं जाव संपराइया ।

हारक होय, बीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, त्रीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, परन्तु चोथे समये अवश्य आहारक होय. ए प्रमाणे (*नारक इत्यादि चोवीस) दंडक (पाठ) कहेवा. सामान्य जीवो अने एकेन्द्रियो चोथे समये आहारक होय छे, अने (एकेन्द्रिय शिवाय) बाकीना जीवो त्रीजे समये आहारक होय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जीव कये समये सौथी अल्प आहारवालो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! उत्पन्न थतां प्रथम समये अने भवने (जीवितने) छेछे समये; आ समये जीव सौथी अल्प आहारवालो होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी दंडक कहेयो.

लोकसंस्थान.

४. [प्र०] हे भगवन् ! लोकतुं संस्थान (आकार) केवा प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठक—शरायना आकार जेवो कहेछो छे. ते नीचे विस्तीर्ण-पहोळो यावत् उपर ऊर्ध्व (उभा) मृदंगना आकारे संस्थित छे. नीचे विस्तीर्ण यावत् उपर ऊर्ध्व मृदंगना आकारे रहेछा ते शाश्वत लोकमां उत्पन्न थयेछा ज्ञान अने दर्शनने धारण करनार अरिहंत जिन केवलज्ञानी जीवोने पण जाणे छे अने जुए छे, अजीवोने पण जाणे छे अने जुए छे, ल्यार पछी सिद्ध थाय छे, यावत् (सर्व दुःखो) अंत करे छे.

ऐर्यापथिकी अने सांपरायिकी क्रिया.

५. [प्र०] हे भगवन् ! श्रमणना उपाश्रयमां रहीने सामायिक करनार श्रमणोपासकने (श्रावकने) शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण साम्परायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुयी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! श्रमणना उपाश्रयमां रही सामायिक करनार श्रावकनो आत्मा अधिकरण (कषायना साधनो) युक्त छे, तेथी तेने आत्माना (पोताना) अधिकरण निमित्ते ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे, ते हेतुयी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे.

१ तितिय स्स । २-समसोववणय क; अकिन् पुस्सके बहुवा; तकारवटितः पाठ उपलभ्यते, यथा—किसंठिये, सुप्रतिष्ठका, (७, १, ४) चउत्थ पूर्व संस्कृतप्रकृतौ तकारो न विद्यते तथापि तकारः; यथा—अवमर्थः, इण्टे, तिण्टे; सामायिक, सामाहय, सामासिध; वैरथिक, वैरहय, वैरसिध । ३ तंत्तिं व-घ । ४-वासगस्स घ । ५ संपराइया स्स ।

समये अनाहारक होय छे, अने त्रीजे समये आहारक होय छे, ज्यारे वार समये परमवमां उत्पन्न थाय छे, ल्यारे आदिना त्रय समये अनाहारक होय छे, अने चोथे समये आहारक होय छे. त्रय समयनी विप्रहगति आ प्रमाणे थाय छे—प्रसनाधीनी बहार विदिसामां रहेको कोइ जीव ज्यारे अधोलोककी ऊर्ध्वलोकमां प्रसनाधीनी बहार विदिसामां उत्पन्न थाय ल्यारे ते अवश्य प्रथम समये विशेषिणी समभेणिमां आवे, बीजे समये प्रसनाधीमां प्रवेश करे, त्रीजे समये ऊर्ध्वलोकमां आय, अने चोथे समये लोकनाही बहार अइ उत्पत्तिस्थाने उपजे. अहीं आदिना त्रय समये विप्रह गति होय छे. अन्य आचार्य एय कहे छे के वार समयनी पण विप्रहगति संभव छे—जेम कोई जीव अधोलोकमां प्रसनाधीनी बहार विदिसामांकी ऊर्ध्वलोकमां प्रसनाधीनी बहार विदिसामां उत्पन्न थाय ल्यारे त्रय समय पूर्वनी पेटे जाणवा; चोथे समये प्रसनाधीनी बहार नीकळी समभेणिमां आवे, अने पांचमे समये उत्पत्तिस्थाने उत्पन्न थाय. तेमां आदिना वार समये विप्रह गति होय छे, अने तेमां ते अनाहारक होय छे; पण सूत्रमां आ बात वतावी नथी, कारण के प्रायः आवी रीते कोई जीव उपजती नथी. जुओ—(अ. टी. प. २८७-२).

* २. सात नारकोनो एक दंडक, अल्लरादि दश भुवनपतिना दश दंडक, पृथ्यादि पांच स्थावरना पांच दंडक, वैरन्द्रिय, तेहन्द्रिय, चउत्थिन्द्रियना त्रय दंडक, गर्भज तिर्यक अने गर्भज सनुष्यनो एक एक दंडक, व्यन्तर उजोत्थिविक अने वैमानिकनो एक एक दंडक—ए रीते चोवीस दण्डको जाणवा.

† जे नारकादि त्रस जीवो मरीने प्रसने विने उत्पन्न थाय, तेनुं प्रसनाधीनी बहार जहुं आबु न थाय माटे ते त्रीजे समये अवश्य आहारक होय. जेम, कोइ मर्यादि जीव भरतक्षेत्रना पूर्वभागकी ऐरवतक्षेत्रना पश्चिमभागकी नीचे मरकमां उत्पन्न थाय, ते एक समये भरतना पूर्वभागकी पश्चिमभाग तरफ जाय, बीजे समये ऐरवतना पश्चिमभाग तरफ जाय अने त्रीजे समये मरकमां जाय. जुओ (अ. टी. प. २८६-२).

‡ अहीं शराव-चपणीआने उंछुं वाळी तेमां उपर कलस नूकेलो होय तेनुं शराव लेनुं, केमके ते शिवाय केवल शरावनी थाये लोकसंस्थाननुं सादर्य वटी सकरुं नथी. जुओ—(अ. टी. प. २८९-२).

१. [प्र०] समजोवासयस्स णं भंते ! पुब्बामेव तसपाणसमारंभे पञ्चफलाय भवइ, पुडविसमारंभे अपञ्चफलाय भवइ, से य पुडविं खणमाणे अण्णचरं तसं पाणं विहिंसेजा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ? [उ०] णो तिण्ढे समढ्ढे, नो कल्लु से तस्स अतिवायाय आउट्ठति ।

७. [प्र०] समजोवासयस्स णं भंते ! पुब्बामेव वणस्सारसमारंभे पञ्चफलाय, से य पुडविं खणमाणे अण्णचरस्स वणस्सस्स सुळं विहेजा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ? [उ०] णो तिण्ढे समढ्ढे, नो कल्लु से तस्स अइवायाय आउट्ठति ।

८. [प्र०] समजोवासय णं भंते ! तद्दाकवं समणं वा माहणं वा कासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-आहम-साहमेणं पडिलाभेमाणे किं लप्पइ ? [उ०] गोयमा ! समजोवासय णं तद्दाकवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे तद्दाकवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पायति, समाहिकारय णं तंमेव समाहिं पडिलभइ ।

९. [प्र०] समजोवासय णं भंते ! तद्दाकवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ? [उ०] गोयमा ! जीवियं चयति, सुचयं चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहर, बोहिं बुज्जर; तभो पच्छा सिज्जति, जाव अंतं करेति ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पञ्जायति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

११. [प्र०] कंहं णं भंते ! अकम्मस्स गती पञ्जायति ? [उ०] गोयमा ! निस्संगयाय, निरंगणयाय, गतिपरिणामेणं, बंधणछेयणयाय, निरिंधणयाय, पुब्बप्यजोगेणं अकम्मस्स गती पञ्जायति ।

१२. [प्र०] कंहं णं भंते ! निस्संगयाय, निरंगणयाय, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पञ्जायति ? [उ०] से जहानामय केइ पुरिसे सुळं तुंबं निच्छिडुं निरुवहयं आणुपुब्बीय परिक्कम्मेमाणे परिक्कम्मेमाणे दम्भेहि य कुसेहि य वेढेर, वेढेत्ता अट्ठहिं महियालेवेहिं लिपाइ, लिपित्ता उण्ढे दलयति, भूतिं भूतिं सुळं समाणं अस्थाहमतारंभंपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेजा, से

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे त्रसजीवोना वधनुं प्रत्याख्यान होय अने पृथ्वीकायना वधनुं प्रत्याख्यान न होय, ते पृथ्वीने खोदता जो कोई त्रस जीवनी हिंसा करे तो हे भगवन् ! तेने ते व्रतमां अतिचार लागे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नहीं. कारण के ते (श्रावक) तेनो वध करवा प्रवृत्ति करतो नहीं.*

७. [प्र०] हे भगवन् ! श्रमणोपासके पूर्वे वनस्पतिना वधनुं प्रत्याख्यान कर्तुं होय, ते पृथिवीने खोदता कोई एक वृक्षना मूळने छेदी नाखे तो तेने ते व्रतनो अतिचार लागे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नहीं. कारण के ते तेना (वनस्पतिना) वध माटे प्रवृत्ति करतो नहीं.

८. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना (उत्तम) श्रमण या ब्राह्मणने प्रासुक (अचित्त-निर्जीव) अने एषणीय (दोपरहित इच्छा धोस्य) अदान, पान, खादिम अने खादिम आहार बडे प्रतिलाभता-सत्कार करता श्रमणोपासकने शो लाभ थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने यावत् प्रतिलाभतो श्रमणोपासक तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने समाधि उत्पन्न करे छे, अने समाधि करनार (श्रावक) ते समाधिने प्राप्त करे छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तथारूप श्रमणने यावत् प्रतिलाभतो श्रमणोपासक शेनो त्याग करे ? [उ०] हे गौतम ! जीवितनो (जीव-मनिर्वाहना कारणभूत अज्ञादिनो) त्याग करे, दुस्सज वस्तुनो त्याग करे, दुर्लभ वस्तुने प्राप्त करे, बोधि-सम्यग्दर्शननो अनुभव करे, त्थार पछी सिद्ध थाय, यावत् (सर्व दुःखनो) अंत करे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति स्त्रीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! हा, स्त्रीकाराय.

११. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति केवी रीते स्त्रीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी, गतिना परिणामथी, बंधननो छेद थवाथी, निरिंधन थवाथी-कर्मरूप इन्धनथी मुक्त थवाथी अने पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्त्रीकाराय छे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी अने गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्त्रीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक पुरुष छिद्र विनाना, नहि भांगेला सुका तुंबडाने क्रमपूर्वक अत्यंत संस्कार करीने डाभ अने कुश बडे बीटे, त्थार पछी तेने माटीना आठ लेपथी लीपे, लीपीने तापमां सुकवे, ज्यारे ते तुंबडुं अत्यंत सुकाय त्थारे ताग विनाना अने न तरी शकाय तेवा पुरुष-

व्रतातिचार.

कर्मरहित जीवनी गति.

१ जावतते-प्रवर्तते इत्यर्थः । २ श्रावक इति । ३ दुःखयं इति । ४ 'कंहं णं, कइणं, कइणं, कइणं, कइ णं' इत्येवं विकल्पात्मकानि बहुधा कल्पानि उपलब्धान्ते, परमत्र 'कंहं णं' इत्येकमेकमेव पाठो न्यस्तः । ५ निरिंधणयाय क विना अन्धत्त । ६ पक्खत्ता क । ७ 'बंधणछेयणयाय निरिंधणयाय पुब्बप्यजोगेणं' इत्यधिकः पाठः क विना अन्धत्त । ८ परिक्कम्मेमाणे इति । ९ भूयं भूयं इति । १० अपोरसिचंसि क विनाऽन्धत्त ।

६. * सामान्यरीते देवविरति श्रावकने संकल्पपूर्वक हिंसां प्रत्याख्यान होय छे, तेवीं अर्धं सुधी ते जेनी हिंसां प्रत्याख्यान कर्तुं होय तेनी संकल्पपूर्वक हिंसा करवा प्रवृत्ति न करे त्थीं सुधी तेने ते व्रतमां होष लागतो नहीं.

८. † ब्राह्मणं कस्म सुधी- (उपा० अ. १५. गा. १५-१४).

बुद्धं गोयमा ! से तुंवे तेसि अट्टण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताय, मारियत्ताय, गुरुसंमारियत्ताय सलिलसलमतिवत्ता अहे अर-
णितलपरद्वारेण मवह ? हंता, मवह । अहे णं से तुंवे तेसि अट्टण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं अरणितलमतिवत्ता उण्वि सल-
लतलपरद्वारेण मवह ? हंता, मवह । एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाय, निरंगणयाय, गइपरिणामेणं अकम्मस्स गती पञ्चायति ।

१३. [प्र०] कहं णं भंते ! बंधणछेदणयाय अकम्मस्स गइ पञ्चत्ता ? [उ०] गोयमा ! से जहानामय कलसिबलिया इ
वा, मुग्गसिबलिया इ वा, माससिबलिया इ वा, सिबलिसिबलिया इ वा, परंडमिजिया इ वा उण्हे दिवा सुक्का समाणी
फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ।

१४. [प्र०] कहं णं भंते ! निरिधेणयाय अकम्मस्स गती ? [उ०] गोयमा ! से जहानामय धूमस्स इधणविप्यमुक्कस्स
उहं वीससाय निव्वाघाएणं गती पवत्तति, एवं खलु गोयमा ! ।

१५. [प्र०] कहं णं भंते पुव्वप्यओगेणं अकम्मस्स गती पंतत्ता ? [उ०] गोयमा ! से जहानामय कंडस्स कोदंडविप्यमु-
क्कस्स लक्खामिमुह्ठी निव्वाघाएणं गती पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्यओगेणं अकम्मस्स गती पञ्चायते, एवं खलु
गोयमा ! नीसंगयाय, निरंगणयाय, जाव पुव्वप्यओगेणं अकम्मस्स गती पञ्चत्ता ।

१६. [प्र०] दुक्खी णं भंते ! दुक्खेणं फुडे, अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? [उ०] गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी
दुक्खेणं फुडे ।

१७. [प्र०] दुक्खी णं भंते ! नेरतिप दुक्खेणं फुडे, अदुक्खी नेरतिप दुक्खेणं फुडे ? [उ०] गोयमा ! दुक्खी नेरतिप
दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरतिप दुक्खेणं फुडे । एवं दंडओ, जाव वेमाणियाणं । एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१ दुक्खी
दुक्खेणं फुडे, २ दुक्खी दुक्खं परियायइ, ३ दुक्खी दुक्खं उदीरेइ, ४ दुक्खी दुक्खं वेदेति, ५ दुक्खी दुक्खं निज्जेरेति ।

प्रमाणथी अधिक (उंडा) पाणीमां तेने नाखे, हे गौतम ! खरेखर ते तुंबहुं माटीना आठ लेप वडे गुरु थयेलुं होवापी, भारे थवापी अने
अधिक वजन वालुं होवापी पाणीना उपरना तलीआने छोडी नीचे पृथिवीने तलीए जइ बेसे ? हा बेसे. हवे ते माटीना आठ लेपनो क्षय
थाय त्यारे ते तुंबहुं पृथिवीना तळने छोडी पाणीना तळ उपर आवीने रहे ? हा रहे. ए प्रमाणे हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी अने
गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! बंधननो छेद थवाथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक बटा-
णानी शिंग, मगनी शिंग, अडदनी शिंग, सिबलिनी (शेमळानी) शिंग अने एरंडानुं फल तडके मुक्या होय अने सुकाय त्यारे ते फुटीने
(तेमांना बीज) पृथ्वीनी एक बाजुए जाय; ए प्रमाणे हे गौतम ! बंधननो छेद थवाथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! निरिधन (कर्मरूप इन्धनथी मुक्त) थवाथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम !
इन्धनथी छूटेला धूमनी गति स्वामाविक रीते प्रतिबन्ध शिवाय उंचे प्रवर्ते छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! [निरिधनपणाथी—कर्मरूप इन्धनथी मुक्त
थवाथी कर्मरहित जीवनी गति प्रवर्ते छे.]

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वना प्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक धनुषथी
छूटेला बाणनी गति प्रतिबन्ध शिवाय लक्ष्यना सन्मुख प्रवर्ते छे, तेम हे गौतम ! पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे,
हे गौतम ! ए प्रमाणे निःसंगताथी, नीरागताथी, यावत् पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

दुःखी जीव दुःखथी
व्याप्त होय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! * दुःखी जीव दुःखथी व्याप्त—वद होय के अदुःखी—दुःखरहित जीव दुःखथी व्याप्त होय ! [उ०] हे
गौतम ! दुःखी जीव दुःखथी व्याप्त होय, पण दुःखरहित जीव दुःखथी व्याप्त न होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! दुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय के अदुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय ! [उ०] हे गौतम ! दुःखी नारक
दुःखथी व्याप्त होय, पण दुःखरहित नारक दुःखथी व्याप्त न होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने बिषे दंडक कहेवो. ए प्रमाणे पांच दंडक
जाणवा—१ दुःखी दुःखथी व्याप्त छे, २ दुःखी दुःखने ग्रहण करे छे, ३ दुःखी दुःखने उदीरे छे, ४ दुःखी दुःखने वेदे छे, ५ दुःखी
दुःखनी निर्जरा करे छे.

१ मट्टियालेवेणं क विनाऽन्वय । २ सुक्का क । ३ निरंघणयाय क विनाऽन्वय ।

१६. * दुःखना कारणभूत निप्यात्वादि कर्म पण दुःख कहेवायछे.—टीका.

१८. [प्र०] अंगारदोषं भवेत् । अंगारदोषं गच्छमाणस्त वा, विट्टमाणस्त वा, निशीयमाणस्त वा, क्षुप्टमाणस्त वा, अंगारदोषं भवेत् । पडिगाहं कंबलं पायपुच्छं गण्डमाणस्त वा, निविश्वमाणस्त वा तस्तं भवेत् । किं इरियावहिया किरिया कज्जर, संपराहया किरिया कज्जर ? [उ०] गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जर, संपराहया किरिया कज्जर । [प्र०] से केण्डेण ? [उ०] गोयमा ! जस्तं भं कोह-माण-माया-लोमा बोच्छिजा भवन्ति तस्तं भं इरियावहिया किरिया कज्जर, नो संपराहया किरिया कज्जर ; जस्तं भं कोह-माण-माया-लोमा अवोच्छिजा भवन्ति तस्तं भं संपराहया किरिया कज्जर, नो इरियावहिया किरिया कज्जर ; अहासुसं रीयमाणस्त इरियावहिया किरिया कज्जर, उस्तुसं रीयमाणस्त संपराहया किरिया कज्जर ; से भं उस्तुसमेव रियति से तेण्डेण ।

१९. [प्र०] अहं भवेत् । सारंगालस्त, सधूमस्त, संजोयणादोसदुदुस्त पाण-भोयणस्त के अट्टे पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! जे भं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-साहम-साहमं पडिगाहेसा मुच्छिप, गिजे, गडिप, अज्जोववणे आहारं आहारेति, एस भं गोयमा ! सारंगाले पाण-भोयणे । जे भं निग्गंथे वा, निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-साहम-साहमं पडिगाहेसा महयाअप्यसियं कोहकिलामं करेमाणे आहारं आहारेति, एस भं गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे । जे भं निग्गंथे वा जाव पडिगाहेसा गुणुपायणहेउं अज्जवणेणं सडि संजोएसा आहारं आहारेति, एस भं गोयमा ! संजोयणादोस-दुदु पाण-भोयणे । एस भं गोयमा ! सारंगालस्त, सधूमस्त, संजोयणादोसदुदुस्त पाण-भोयणस्त अट्टे पन्नसे ।

२०. [प्र०] अहं भवेत् । वीतिगालस्त, वीयधूमस्त, संजोयणादोसविप्यमुक्कस्त पाण-भोयणस्त के अट्टे पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! जे भं निग्गंथे वा जाव पडिगाहेसा अमुच्छिप जाव आहारेति, एस भं गोयमा ! वीतिगाले पाण-भोयणे । जे भं निग्गंथे निग्गंथी वा जाव पडिगाहेसा जो महयाअप्यसियं जाव आहारेति, एस भं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे । जे भं निग्गंथे निग्गंथी वा जाव पडिगाहेसा अहा लज्जं तहा आहारं आहारेति, एस भं गोयमा ! संजोयणादोसविप्यमुक्के पाण-भोयणे । एस भं गोयमा ! वीतिगालस्त, वीयधूमस्त, संजोयणादोसविप्यमुक्कस्त पाण-भोयणस्त अट्टे पन्नसे ।

२१. [प्र०] अहं भवेत् । सेसातिकंतस्त, कालातिकंतस्त, मग्गातिकंतस्त, पमाणातिकंतस्त पाण-भोयणस्त के अट्टे पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! जे भं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-साहम-साहमं अणुग्गप सूरिप पडिगाहेसा

१८. [प्र०] हे भगवन् ! उपयोग (आत्मजागृति, सावधानता) शिवाय गमन करता, उभा रहता, बेसता अने सूता, तेमज उपयोग शिवाय वस्त्र, पात्र, कान्बल अने पादप्रोच्छन्नक (रजोहरण) ने ग्रहण करता ने मुक्ता अनगर (साधु) ने हे भगवन् ! ऐर्यापथिकी क्रिया ज्जमे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे । [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुपी ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ व्युच्छिन्न—क्षीण यथा छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे, पण सांपरायिकी क्रिया लागती नथी । जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ व्युच्छिन्न यथा नथी तेने सांपरायिकी क्रिया लागे छे, पण ऐर्यापथिकी क्रिया लागती नथी । सूत्रने अनुसारे वर्तता साधुने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे, अने सूत्रविरुद्ध वर्तनारने सांपरायिकी क्रिया लागे छे, ते [उपयोग रहित साधु] सूत्र विरुद्ध वर्ते छे ते माटे हे गौतम ! [तेने सांपरायिकी क्रिया लागे छे ।]

१९. [प्र०] हे भगवन् ! अंगारदोषसहित, धूमदोषसहित अने संयोजनादोष वडे दुष्ट पानभोजननो शो अर्थ कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ निर्मन्थ-साधु या साध्वी प्रासुक अने एषणीय अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने ग्रहण करी मूर्च्छित, गृद्ध, प्रथित अने आसक्त यइने आहार करे तो हे गौतम ! ए अंगारदोषसहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ साधु या साध्वी प्रासुक एषणीय अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने ग्रहण करी अत्यंत अप्रीतिपूर्वक क्रोधपी खिन्न यइने आहार करे तो हे गौतम ! ए धूमदोषसहित पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् [आहारने] ग्रहण करीने गुण (खाद) उत्पन्न करवा माटे बीजा पदार्थ साथे संयोग करीने आहार करे तो हे गौतम ! ए संयोजनादोष वडे दुष्ट पानभोजन कहेवाय. हे गौतम ! ए प्रकारे अंगारदोष, धूमदोष अने संयोजना-दोषपी दुष्ट पानभोजननो अर्थ कखो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! हवे अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित अने संयोजनादोषरहित पानभोजननो शो अर्थ कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! जे कोइ निर्मन्थ-कि निर्मन्थी यावत् [आहारने] ग्रहण करीने मूर्च्छरहित यावत् आहार करे, ते हे गौतम ! अंगारदोषरहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ निर्मन्थ के निर्मन्थी यावत् ग्रहण करीने अत्यंत अप्रीतिपूर्वक यावत् आहार न करे, हे गौतम ! ए धूमदोषरहित पानभोजन कहेवाय. जे कोइ निर्मन्थ के निर्मन्थी यावत् ग्रहण करीने जेवो प्राप्त याय तेवो आहार करे [परन्तु खाद माटे बीजा साथे संयोग न करे], हे गौतम ! ए संयोजनादोषरहित पानभोजन कहेवाय. आ अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित अने संयोजनादोषरहित पानभोजननो अर्थ कखो छे.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! हवे क्षेत्रातिक्रान्त, कालातिक्रान्त, मार्गातिक्रान्त अने प्रमाणातिक्रान्त पानभोजननो शो अर्थ कखो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ साधु या साध्वी प्रासुक अने एषणीय अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने सूर्य उग्या पहेल्य ग्रहण करी सूर्य

ऐर्यापथिकी अने सांपरायिकी क्रिया.

सर्वोप पानभोजन.

निर्दोष पानभोजन.

क्षेत्रातिक्रान्त पानभोजन.

१-कंबलं क्क । २-विच्छिज्ज क्क । ३-संपरायिकी क्क । ४-पडिगाहेसा, पडिगाहेसा, पडिगाहेसा, पडिगाहेसा, पडिगाहेसा, पडिगाहेसा, पडिगाहेसा । ५-असण-पाण-साहम-साहमं । ६-अणुग्गप-सूरिप । ७-एसणिज्जं क्क ।

उग्राय सूरिण आहारं आहारेति, एस णं गोयमा ! किञ्चातिक्रान्ते पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथो वा जाव साहमं पढमाय पोरि-
सीय पडिग्गाहेसा पच्छिमं पोरिसि उवायणावेसा आहारं आहारेह, एस णं गोयमा ! कालातिक्रान्ते पाण-भोयणे । जे णं
निग्गंथो वा जाव साहमं पडिग्गाहिता परं अइजोयणमेराय धीइकमावहसा आहारमाहारेह, एस णं गोयमा ! मग्गातिक्रान्ते
पाण-भोयणे । जे णं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा फासु-एसणिजं जाव साहमं पडिग्गाहिता परं बत्तीसाय कुकुडिअंडगपमाणमे-
साणं कवल्लणं आहारं आहारेह, एस णं गोयमा ! पमाणाइकंते पाण-भोयणे । अट्ट कुकुडिअंडगपमाणमेसे कवले आहारं
आहारेमाणे अप्पाहारे, तुवालस कुकुडिअंडगपमाणमेसे कवले आहारं आहारेमाणे अबहोमोयरिया, सोलस कुकुडिअंडगपमा-
णमेसे कवले आहारं आहारेमाणे तुभागप्पसे, खेउव्वीसं कुकुडिअंडगपमाणे जाव आहारं आहारेमाणे ओमोदरिया, बत्तीसं
कुकुडिअंडगमेसे कवले आहारं आहारेमाणे पमाणपसे, एत्तो एकेण वि षोसेणं ऊणगं आहारं आहारेमाणे समणे निग्गंथे नो
पकामरसभोईत्ति वत्तव्वं सिया । एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्रान्तस्स, कालातिक्रान्तस्स, मग्गातिक्रान्तस्स, पमाणातिक्रान्तस्स पाण-
भोयणस्स अट्टे पक्षसे ।

२२. [प्र०] अह भंते ! सत्थातीयस्स, सत्थपरिणामियस्स, एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियेस्स पाण-भोयणस्स के
अट्टे पक्षसे ? [उ०] गोयमा ! जेणं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निष्किञ्चसत्थमुसले धवगयमाला-वन्नग-विलेवणे धवगयसुयचइयच-
त्तदेहं, जीवविप्पजहं, अकयं, अकारियं, असंकप्पियं, अणाहयं, अकीयकडं, अणुदिट्ठं, नवकोडीपरिसुद्धं, दसदोसविप्पमुकं, उगम-
सु-प्यायणेसणासुपरिसुद्धं, वीतिंगालं, वीतधूमं, संजोयणादोसविप्पमुकं, सुरसुरं, अच्चवच्चवं, अदुयं, अबिलंबियं अपरिसाडिं,
अक्कलोवज्जण-वैणाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं, संजमभारवहणदुयाए विलमिध पंन्नगभूयणं अप्पाणेणं आहारे आहारेति,
एस णं गोयमा ! सत्थातीयस्स, सत्थपरिणामियस्स जाव पाण-भोयणस्स अयमट्टे पक्षसे । सेवं भंते, सेवं भंते ! सि ।

सत्तमसए पढमो उद्देशो समत्तो ।

उग्या पछी खाय, हे गीतम ! ए क्षेत्रातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् खादिम आहारने पहेला पहोरमां ग्रहण करी
छेला पहोर सुवी राखीने पछी तेनो आहार करे, हे गीतम ! आ कालातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् खादिम
आहारने ग्रहण करीने अर्धयोजननी मर्यादाने ओळंगी पछी खाय, हे गीतम ! ए मार्गातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु के साध्वी
प्रासुक अने एषणीय यावत् खादिम आहारने ग्रहण करीने कुकडीना इंडाप्रमाण बत्तीशथी अधिक कवल्ल खाय, हे गीतम ! ए प्रमाणाति-
क्रान्त पानभोजन कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र आठ कवल्लनो आहार करनार साधु अल्पाहारी कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र
बार कवल्लनो आहार करनार साधुने कांइक न्यून अर्ध उनोदरिका कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र सोल कोळीआनो आहार करनार
साधु द्विभागप्राप्त—अर्धाहारी कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र चोवीश कवल्लना आहार करनार साधुने उनोदरिका कहेवाय. कुकडीना
इंडाप्रमाण मात्र बत्तीश कवल्लनो आहार करनार साधु प्रमाणप्राप्त—प्रमाणसर भोजन करनार कहेवाय. तेथी एक पण कवल्ल ओछो आहार
करनार साधु 'प्रकामरसभोजी—अत्यन्त मधुरादि रसनो भोक्ता' ए प्रमाणे न कही शक्या. हे गीतम ! ए प्रमाणे क्षेत्रातिक्रान्त, कालातिक्रान्त,
मार्गातिक्रान्त अने प्रमाणातिक्रान्त पानभोजननो अर्थ कइयो छे.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! शस्त्रातीत (अग्निवगेरे शस्त्रथी उतरेलो), शस्त्रपरिणामित (अग्निवगेरे शस्त्रथी परिणाम पाभेलो—अचित्त
करायेलो), एषित (एषणा दोषथी रहित), व्येषित (विविध या विशेषतः एषणादोषथी रहित) सामुदायिक—मिक्षारूप पान भोजननो शो
अर्थ कइयो छे ? [उ०] हे गीतम ! कोइ साधु या साध्वी जे शस्त्र अने मुशलादिरहित छे, तेम पुष्पमाला अने चन्दनना विलेपन रहित छे
तेओ कृम्यादि जन्तु रहित, निर्जीव, [साधुने माटे] नहि करेल, नहि करावेल, नहि संकल्पेल, अनाहृत—आमन्त्रण रहित, नहि खरीदेल,
औदेशिक रहित, नवकोटि विशुद्ध, शंकितादि दशदोष रहित, उद्गम अने उत्पादनैषणाना दोषथी विशुद्ध, अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित,
संयोजनादोषरहित, सुरसुरके चपचप शब्द रहित पणे, बहु उतावळथी नहि तेम बहु धीमेथी नहि, [आहारना] कोइ भागने छोड्या शिवाय,
गाडानी धरीना मेलनी पेटे के व्रण उपरना लेपनी पेटे, केवल संयमना निर्वाहने माटे, संयमना भारने वहन करवा अर्थ जेम साप बिल्लां
पेसे तेम पोते आहार करे, हे गीतम ! ए शस्त्रातीत, शस्त्रपरिणामित यावत् पानभोजननो अर्थ कइयो छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भग-
वन् ! ते एमज छे, [एम कही गीतम ! यावत् विचरे छे].

सप्तम शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१ कडवीसं ख । २ ऊनोदरिए ख, ओमोदरिए ख । ३ एकेण ख । ४ गासेणं ख । ५ समुदा-ख-ग । ६ अपरिसाडी ख ।
७-वणदुयं ख । ८-गभूयणं ख ।

२२ * १ हणे २ हयावे ३ हणताने अनुमोदे, ४ राधि ५ रंधावे, ६ रांधताने अनुमोदे, ७ खरीद करे ८ खरीद करवे अने
९ खरीद करताने अनुमोदे. † कुओ—(पिडनिर्मुफि, गा. ५२०.) ‡ उद्गमएषणाना आभाकमादि १६ दोष छे, कुओ—(पिडनिर्मुफि, गा. १२-१३).
§ उत्पादनैषणाना धात्रीपिडादि १६ दोष छे, कुओ—(पिडनिर्मुफि, गा. ४०८-४०९).

बितीओ उद्देशो.

१. [प्र०] से जूणं भंते ! सद्यपाणेहिं, सद्यभूरहिं, सद्यजीवेहिं, सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणस्स सुपञ्चकक्षायं भवति, दुपञ्चकक्षायं भवति ? [उ०] गोयमा ! सद्यपाणेहिं, जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणस्स सिय सुपञ्चकक्षायं भवति, सिय दुपञ्चकक्षायं भवति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धर-सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं जाव सिय दुपञ्चकक्षायं भवति ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणस्य णो एवं अभिसमन्नागयं भवति-इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तत्ता, इमे थावरा, तस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणस्स नो सुपञ्चकक्षायं भवति, दुपञ्चकक्षायं भवति । एवं खलु से दुपञ्चकक्षारं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणे नो सधं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ । एवं खलु से सुसाधारं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-पडिहय-पञ्चकक्षायपावकम्मे, सकिरिय, असंबुडे, एगंतवडे, एगंतबाले यावि भवति । जस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवइ-इमे जीवा इमे अजीवा, इमे तत्ता इमे थावरा, तस्स णं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणस्स सुपञ्चकक्षायं भवति, नो दुपञ्चकक्षायं भवति । एवं खलु से सुपञ्चकक्षारं सद्यपाणेहिं जाव सद्यसत्तेहिं पञ्चकक्षायमिति वदमाणे सधं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ । एवं खलु से सद्यधादी सद्यपाणेहिं, जाव सद्यसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पञ्चकक्षायपावकम्मे, सकिरिय, संबुडे, एगंतपंडिय यावि भवति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धर-जाव सिय दुपञ्चकक्षायं भवति ।

द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! 'सर्व प्राणोमां, सर्व भूतोमां, सर्व जीवोमां अने सर्व सत्त्वोमां में [हिंसानुं] प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे बोलनारने सुप्रत्याख्यान थाय के दुप्रत्याख्यान थाय ? [उ०] हे गौतम ! 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे बोलनारने कदाच सुप्रत्याख्यान थाय अने कदाच दुप्रत्याख्यान थाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुपी कहो छे के-सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां यावत् कदाच दुप्रत्याख्यान थाय ? [उ०] हे गौतम ! 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे बोलनार जेने आवा प्रकारनुं ज्ञान न होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे" तेने-सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे कहेनारने-सुप्रत्याख्यान न थाय, पण दुप्रत्याख्यान थाय. ए रीते खरेखर ते दुप्रत्याख्यानी 'सर्व प्राणिओमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' एम बोलतो सत्य भाषा बोलतो नथी, असत्य भाषा बोले छे. ए प्रमाणे ते मृषावादी सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां त्रिविधे त्रिविधे असंयत-संयमरहित, अविरत-विरतिरहित, जेणे पापकर्मनो त्याग के प्रत्याख्यान कर्तुं नथी एवो, सक्रिय-कर्मबन्ध-सहित, संवररहित, एकान्त दण्ड एटले हिंसा करनार अने एकान्त अन्न छे. सर्व प्राणोमां यावत् 'सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे बोलनार जेने आहुं ज्ञान पयुं होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे," तेने-सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' ए प्रमाणे बोलनारने-सुप्रत्याख्यान थाय, दुप्रत्याख्यान न थाय. ए प्रमाणे खरेखर ते सुप्रत्याख्यानी 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्तुं छे' एम बोलतो सत्य भाषा बोले छे, मृषा भाषा बोलतो नथी. ए रीते ते सुप्रत्याख्यानी, सत्य-भाषी, सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां त्रिविधे त्रिविधे संयत, विरति युक्त, जेणे पापकर्मनो घात ने प्रत्याख्यान कर्तुं छे एवो, अक्रिय-कर्मबन्धरहित, संवरयुक्त एकान्त पंडित पण छे. हे गौतम ! ते हेतुपी एम कहेवाय छे के यावत् कदाच दुप्रत्याख्यान थाय.

सुप्रत्याख्यान अने दु-
प्रत्याख्यान.

दुप्रत्याख्यान थाय.

सुप्रत्याख्यान थाय.

२. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! पञ्चक्खाणे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पञ्चक्खाणे पञ्चसे, तं जहा—मूलगुण-पञ्चक्खाणे य उत्तरगुणपञ्चक्खाणे य ।

३. [प्र०] मूलगुणपञ्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पञ्चसे, तं जहा—सर्वमूलगुणपञ्च-क्खाणे य देशमूलगुणपञ्चक्खाणे य ।

४. [प्र०] सर्वमूलगुणपञ्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पञ्चसे, तं जहा—सद्धानो पाणाद्वायाओ वेरमणं, जाव सद्धानो परिग्गहाओ वेरमणं ।

५. [प्र०] देशमूलगुणपञ्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पञ्चसे, तं जहा—थूलाओ पाणा-द्वायाओ वेरमणं, जाव थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

६. [प्र०] उत्तरगुणपञ्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पञ्चसे, तं जहा—सत्तुत्तरगुणपञ्च-क्खाणे य देशुत्तरगुणपञ्चक्खाणे य ।

७. [प्र०] सत्तुत्तरगुणपञ्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! दसविहे पञ्चसे, तं जहा—

“अणागयमंरुक्तं कोडीसहितं नियन्टियं खेव ।

सौगारमणागारं पैरिमाणकडं निरवसेसं ॥

साकेयं खेव अज्ञाप पञ्चक्खाणं भवे दसहा ।”

प्रत्याख्यान.

२. [प्र.] हे भगवन् ! केटला प्रकारे पञ्चक्खाण कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारे पञ्चक्खाण कहुं छे. ते आ प्रकारे—मूलगुण-पञ्चक्खाण अने उत्तरगुणपञ्चक्खाण.

मूलगुणप्रत्याख्या-
नना प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! मूलगुणपञ्चक्खाण केटला प्रकारनुं कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलगुण प्रत्याख्यान बे प्रकारनुं कहुं छे, ते आ प्रकारे—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यान अने देशमूलगुणप्रत्याख्यान.

सर्वमूलगुणप्रत्या-
ख्यानना प्रकार.

४. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान पांच प्रकारे कहुं छे; ते आ प्रमाणे—सर्व प्राणातिपातथी विराम पामवो, यावत् सर्व मृषावादथी विराम पामवो.

देशमूलगुणप्रत्या-
ख्यानना प्रकार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! देशमूलगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! देशमूलगुणप्रत्याख्यान पांच प्रकारे कहुं छे; ते आ प्रमाणे—स्थूलप्राणातिपातथी विरमण, यावत् स्थूलमृषावादथी विरमण.

उत्तरगुणप्रत्याख्या-
नना प्रकार.

६. [प्र०] हे भगवन् ! उत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! [उत्तरगुणप्रत्याख्यान] बे प्रकारे कहुं छे; ते आ प्रमाणे—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान अने देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान.

सर्वोत्तरगुणप्रत्या-
ख्यानना प्रकार.

७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान दश प्रकारे कहुं छे; ते आ प्रमाणे—१ अनागत, २ अतिक्रान्त, ३ कोटिसहित, ४ नियन्त्रित, ५ साकार, ६ अनाकार, ७ कृतपरिमाण, ८ निरवशेष, ९ संकेत, १० अद्धा प्रत्याख्यान. ए रीते प्रत्याख्यान दश प्रकारे कहुं छे.

७. सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानना दश प्रकारनुं स्वरूप—१ अविध्यमां जे तप करवानो छे ते पूर्वे करवो ते अनागत तप. जेम, पर्युपणा पर्व आबधे ल्यारे गुर्वादिनी वेयावन्न करवाथी तप करवामां अडचण थरो एम समजी प्रथम तप करवो. २ पूर्वे करवानो तप पछी करवो ते अतिक्रान्त तप. जेम, पर्युपणापर्वमां गुर्वादिनी वेयावन्न करवा निमित्ते तप थद शक्यो नथी एम धारी ते तप पछी करवो. ३ एक तप जे दिवसे पूरो थाय तेज दिवसे भीषो तप करवो, ए रीते प्रत्याख्याननी जादि अने अन्त कोडी मेरुववी ते कोटिसहित तप. ४ नियमित दिवसे विप्र आम्वा छता अवश्य तप करवो ते नियन्त्रित तप. ५ महत्तशकारादि आकार-अपवाद-पूर्वक तप करवो ते साकार तप. ६ महत्तराकारादि आकार शिवाय तप करवो ते निराकार तप. ७ दसि (एक सधे एकवार पात्रमा पडेल वाजादि), कयल, गृह, चीज इत्यादिनुं परिमाण करवुं ते परिमाण तप. ८ नार प्रकारमा आहारनो त्याग करवो ते निरवशेष तप. ९ सुष्टि इत्यादि संकेतपूर्वक तप करवो ते संकेत तप. १० कालनुं प्रमाण करी पौह्यादि तप करवो ते अद्धा तप. ज्यो—(म. टी. प. २१९.)

૮. દેશોત્તરગુણપચ્ચક્ષાણે નં મંતે ! કતિવિદે પચ્ચે ? [૩૦] ગોયમા ! સપ્તવિદે પચ્ચે, તં જહા—૧ દિસિદ્ધયં, ૨ અભોગપરિભોગપરિમાણં, ૩ અનર્થદંડવિરમણં, ૪ સામાય્યં, ૫ દેસાવગાસિયં, ૬ પોસહોવવાસો, ૭ અતિહિસંભિમાગો, અપચ્ચિમમારખંતિયસંલેહણાઘ્રુસણાઽઽરાહનાતા ।

૯. [૩૦] જીવા નં મંતે ! કિં મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણી, અપચ્ચક્ષાણી ? [૩૦] ગોયમા ! જીવા મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી ચિ, ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણી ચિ, અપચ્ચક્ષાણી ચિ ।

૧૦. [૩૦] નેરહયા નં મંતે ! કિં મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી ?—પુચ્છા [૩૦] ગોયમા ! નેરહયા નો મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, નો ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણી, અપચ્ચક્ષાણી; ઇવં જાવ ચ્ચઉરિન્દ્રિયા, પંચિન્દ્રિયતિરિક્ષજોખિયા મણુસ્સા ય જહા જીવા, વાણમંતર—જોહસિય—વેમાખિયા જહા નેરહયા ।

૧૧. [૩૦] ઇપ્પસિ નં મંતે ! જીવાણં મૂલગુણપચ્ચક્ષાણીણં, ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણીણં, અપચ્ચક્ષાણીણ ય કયરે કયરેહિતો જાવ વિલેસાહિયા વા ? [૩૦] ગોયમા ! સદ્ધત્થોવા જીવા મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણી અસંલેહજગુણા, અપચ્ચક્ષાણી અણંતગુણા ।

૧૨. [૩૦] ઇપ્પસિ નં મંતે ! પંચિન્દ્રિયતિરિક્ષજોખિયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સદ્ધત્થોવા જીવા પંચિન્દ્રિયતિરિક્ષજોખિયા મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણી અસંલેહજગુણા, અપચ્ચક્ષાણી અસંલિહજગુણા ।

૧૩. [૩૦] ઇપ્પસિ નં મંતે ! મણુસ્સાણં મૂલગુણપચ્ચક્ષાણીણં—પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સદ્ધત્થોવા મણુસ્સા મૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, ઉત્તરગુણપચ્ચક્ષાણી સંલેહજગુણા, અપચ્ચક્ષાણી અસંલેહજગુણા ।

૧૪. [૩૦] જીવા નં મંતે ! કિં સદ્ધમૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, દેસમૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, અપચ્ચક્ષાણી ? [૩૦] ગોયમા ! જીવા સદ્ધમૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, દેસમૂલગુણપચ્ચક્ષાણી, અપચ્ચક્ષાણી ચિ ।

૮. [૩૦] હે મગવન્ ! દેશોત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાન કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! દેશોત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાન સાત પ્રકારે કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—૧ દિગ્ગત, ૨ ઉપભોગપરિભોગપરિમાણ, ૩ અનર્થદંડવિરમણ, ૪ સામાયિક, ૫ દેશાવકાશિક, ૬ પોષધો-પવાસ, ૭ અતિથિસંભિમાગ અને અપચ્ચિમમારણાન્તિક-સંલેહણાજોષણાઽઽરાધના.

દેશોત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાનના પ્રકાર.

૯. [૩૦] હે મગવન્ ! જીવો શું મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની કે અપ્રત્યાહ્યાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જીવો મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની પણ છે, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની પણ છે અને અપ્રત્યાહ્યાની પણ છે.

જીવો મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની-વગેરે.

૧૦. [૩૦] હે મગવન્ ! નારકજીવો શું મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની છે ? इत्यादि प्रश्न. [૩૦] હે ગૌતમ ! નારકો મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની નથી, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની નથી, પણ અપ્રત્યાહ્યાની છે. એ પ્રમાણે યાવત્ ચ્ચઉરિન્દ્રિય જીવો જાણવા. પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ અને મનુષ્યો જેમ જીવો કહ્યા તેમ જાણવા. વાનમંતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક દેવો જેમ નારકો કહ્યા તેમ જાણવા.

શું નારકો મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની इत्यादि છે ?

૧૧. [૩૦] હે મગવન્ ! મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની અને અપ્રત્યાહ્યાની જીવોમાં કોણ કોનાથી યાવત્ વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની જીવો સૌથી થોડા છે, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની અસંલેહગુણ છે, અને અપ્રત્યાહ્યાની અનંત-ગુણ છે.

મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની વગેરેનું અલ્પબહુત્વ.

૧૨. [૩૦] હે મગવન્ ! એ (પૂર્વે કહેલા) જીવોમાં પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવોનો પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવો સર્વથી થોડા છે, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની અસંલેહગુણ છે, અને અપ્રત્યાહ્યાની અસંલેહગુણ છે.

પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોનું અલ્પબહુત્વ.

૧૩. [૩૦] હે મગવન્ ! એ જીવોમાં મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની વગેરે મનુષ્યોનો પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! મૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની મનુષ્યો સર્વથી થોડા છે, ઉત્તરગુણપ્રત્યાહ્યાની મનુષ્યો સંલેહગુણ છે, અને અપ્રત્યાહ્યાની મનુષ્યો અસંલેહગુણ છે.

મનુષ્યનું અલ્પબહુત્વ.

૧૪. [૩૦] હે મગવન્ ! શું જીવો સર્વમૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની છે, દેશમૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની છે કે અપ્રત્યાહ્યાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જીવો સર્વમૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની છે, દેશમૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની છે, અને અપ્રત્યાહ્યાની પણ છે.

જીવો સર્વમૂલગુણપ્રત્યાહ્યાની વગેરે.

* વિશેષ માટે જુઓ—(ઉપાસક ૦ ૫, ૬-૧.)

૮. † અપચ્ચિમ—જેના પછી કીંચી સંલેહના નથી ઇટલે સૌથી છેલ્લી, મારણાન્તિક—મરણકાલે, સંલેહના—શરીર અને કષાયાદિને ક્રુશ કરનાર તપવિશેષ—નો જોષણા—સીકારકરવા—વહે આરાધન કરતું તે અપચ્ચિમમારણાન્તિકસંલેહનાજોષણાઽઽરાધના. દેશોત્તરગુણમાં દિગ્ગતાદિ સાત ગુણની ગણના કરી, અને આ સંલેહનાની ગણના ન કરી તેનું કારણ એ છે કે દિગ્ગતાદિ સાત ગુણો અર્થસ દેશોત્તરગુણરૂપ છે, અને આ સંલેહનાનો નિયમ નથી, કેમકે તે દેશોત્તરગુણવાલાને દેશોત્તરગુણ અને સર્વોત્તરગુણવાલાને સર્વોત્તરગુણરૂપ છે, તે પણ દેશોત્તરગુણવાલાને પણ અન્તે કરવા યોગ્ય છે એમ જણાવવા આટલી સંલેહના કરી. જુઓ—(મ. ઈ. ૫, ૧૧૦-૧૧).

૧ મ. ૫.

१५. [प्र०] नेरइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरइया नो सङ्गमूलगुणपञ्चकलाणी, नो देसमूलगुणपञ्चकलाणी, अपञ्चकलाणी । एवं जाव चउरिदिया ।

१६. [प्र०] पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो सङ्गमूलगुणपञ्चकलाणी, देसमूलगुणपञ्चकलाणी वि, अपञ्चकलाणी वि । मणुस्सा जहा जीवा, धाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरइया ।

१७. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं सङ्गमूलगुणपञ्चकलाणीणं, देसमूलगुणपञ्चकलाणीणं, अपञ्चकलाणीणं य कवरे कवरेहितो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सङ्गत्योवा जीवा सङ्गमूलगुणपञ्चकलाणी, देसमूलगुणपञ्चकलाणी असंखेज्जगुणा, अपञ्चकलाणी अणंतगुणा । एवं अप्पाबहुगाणि तिञ्चि वि जहा पढमिल्लए दंडप; नवरं सङ्गत्योवा पंचिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपञ्चकलाणी, अपञ्चकलाणी असंखेज्जगुणा ।

१८. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सङ्गउत्तरगुणपञ्चकलाणी, देसुत्तरगुणपञ्चकलाणी, अपञ्चकलाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा सङ्गउत्तरगुणपञ्चकलाणी वि तिञ्चि वि । पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं खेव, सेसा अपञ्चकलाणी, जाव वेमाणिया ।

१९. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं सङ्गउत्तरगुणपञ्चकलाणीणं ? [उ०] अप्पाबहुगाणि तिञ्चि वि जहा पढमे दंडप, जाव मणुस्साणं ।

२०. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं संजया, असंजया, संजयासंजया ? [उ०] गोयमा ! जीवा संजया वि, असंजया वि, संजयासंजया वि तिञ्चि वि, एवं जहेव पञ्चवणाए तहेव भाणियच्चं जाव वेमाणिया, अप्पाबहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियच्चं ।

२१. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं पञ्चकलाणी, अपञ्चकलाणी, पञ्चकलाणापञ्चकलाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा पञ्चकलाणी वि तिञ्चि वि, एवं मणुस्सा वि तिञ्चि वि, पंचिदियतिरिक्खजोणिया आइल्लविरइया, सेसा सधे अपञ्चकलाणी, जाव वेमाणिया ।

नारक.

१५. [प्र०] नारकोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नारको सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे.

पंचेन्द्रियतिर्यच.

१६. [प्र०] पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचेन्द्रियतिर्यचो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे अने अप्रत्याख्यानी छे. जेम जीवो कहा तेम मनुष्यो जाणवा. जेम नारको कहा तेम वानमंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिको जाणवा.

सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी विगेरेनुं अल्पबहुत्व.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनाथी यावत् विशेषपाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सर्वथी थोडा छे, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. ए प्रमाणे त्रणे (जीव, पंचेन्द्रियतिर्यच अने मनुष्यना) अल्पबहुत्वो प्रथम दंडकमां [सू० ११, १२, १३] कहाप्रमाणे जाणवा, परंतु सर्वथी थोडा पंचेन्द्रिय तिर्यचो देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, अने अप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यचो असंख्यगुण छे.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी विगेरे जीवो.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी छे, देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानी छे, के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी विगेरे त्रणे प्रकारना छे. पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने मनुष्यो ए प्रमाणे छे. बाकीना वैमानिक सुचीना जीवो अप्रत्याख्यानी छे.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी विगेरेनुं अल्पबहुत्व.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी, देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनाथी यावत् विशेषपाधिक छे ? [उ०] त्रणे अल्पबहुत्वो प्रथम दंडकमां कहा प्रमाणे यावत् मनुष्योने जाणवा.

संयत, असंयत, अने देशसंयत.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो संयत छे, असंयत छे के संयतासंयत (देश संयत) छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो संयत पण छे, असंयत पण छे, अने संयतासंयत पण छे—ए त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे जेम पञ्चवणामां कहुं छे ते प्रमाणे यावत् वैमानिकोने अहीं कहेवुं, तेम अल्पबहुत्व पण त्रणेनुं कहेवुं.

प्रत्याख्यानी विगेरे.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो प्रत्याख्यानी छे, अप्रत्याख्यानी छे, के प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी (देशप्रत्याख्यानी) छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो प्रत्याख्यानी विगेरे त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे मनुष्यो पण त्रणे प्रकारना छे. पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिक्को प्रथमभंगरहित छे. बाकीना वैमानिक सुचीना सर्व जीवो अप्रत्याख्यानी छे.

१ चकलाणी अ-अ । २ तिञ्चि वि ख । ३ मणुस्साणं अ । ४ असंजया अ । ५ वि एवं ति-अ । ६ मणुस्साण वि अ ।

२०. * प्रश्ना० पद. ३, प. १३७-२ सू. ७०.

२२. [प्र०] वयसि णं भंते ! जीवाणं पञ्चकलाणीणं जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पञ्चकलाणी, पञ्चकलाणापञ्चकलाणी असंखेज्जगुणा, अपञ्चकलाणी अणंतगुणा । पंधिदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पञ्चकलाणापञ्चकलाणी, अपञ्चकलाणी असंखेज्जगुणा । मणुस्सा सव्वत्थोवा पञ्चकलाणी, पञ्चकलाणापञ्चकलाणी संखेज्जगुणा, अपञ्चकलाणी असंखेज्जगुणा ।

२३. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुब्बद्द—जीवा सिय सासया, सिय असासया ? [उ०] गोयमा ! दब्बट्टयाप सासया, भावट्टयाप असासया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुब्बद्द—जाव सिय असासया ।

२४. [प्र०] नेरया णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] एवं जहा जीवा तहा नेरया वि, एवं जाव वेमाणिया जाव सिय सासया, सिय असासया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

सप्तमस्य द्वितीयो उद्देशो समाप्तः ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रत्याख्यानी विगरे जीवोमां यावत् कोण विशेषाधिकं छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रत्याख्यानी जीवो सौथी थोडा छे, प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. देशप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सर्वथी थोडा छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे. प्रत्याख्यानी मनुष्यो सर्वथी थोडा छे, देशप्रत्याख्यानी संख्यातगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे.

प्रत्याख्यानी विगरेणुं
अल्पबहुत्व.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कट्ठो छो के कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे ? [उ०] द्रव्यनी अपेक्षाए जीवो शाश्वत छे, अने पर्यायनी अपेक्षाए जीवो अशाश्वत छे; ते हेतुथी एम कट्ठं छुं के यावत् कथंचित् अशाश्वत छे.

शाश्वत, अने
अशाश्वत जीवो.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] जेम जीवो कट्ठा तेम नारको पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको पण जाणवा; यावत् कथंचित् शाश्वत अने कथंचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कट्ठी गौतम यावत् विचरे छे.]

नारको शाश्वत
अने अशाश्वत.

सप्तम शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

ततिओ उद्देशो

१. [प्र०] वणस्सइकाइया णं भंते ! किं कालं सव्वप्पाहारणा वा, सव्वमहाहारणा वा भवंति ? [उ०] गोयमा ! पाउस-वरिसारसेसु णं पत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारणा भवंति, तदाणंतरं च णं सरए, तयाणंतरं च णं हेमंते, तदाणंतरं च णं वसंते, तदाणंतरं च णं गिम्हे, गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारणा भवंति ।

२. [प्र०] जइ णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारणा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ? [उ०] गोयमा ! गिम्हासु णं वहवे उस्सिणजोणिया जीवा य, पोग्गला य वणस्सइकाइयात्ताए विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति; एवं खल्लु गोयमा ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, जाव चिट्ठंति ।

३. [प्र०] से णूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा ? [उ०] इंता, गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा ।

४. [प्र०] जइ णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सतिकाइया आहारंति, कम्हा परिणामंति ? [उ०] गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति; कंदा कंद-जीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा, तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति, एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको कया काले सौथी अल्पआहारवाळा होय छे, अने कया काले सौथी महाआहारवाळा होय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रावृड् ऋतुमां-श्रावण भाद्रवा मासमां, अने वर्षा ऋतुमां-आसो कारतक मासमां वनस्पतिकायिक जीवो सौथी महाआहारवाळा होय छे, ल्यार पछी शरद् ऋतुमां, ल्यार पछी हेमंत ऋतुमां, ल्यार पछी पसंत ऋतुमां अने ल्यार बाद ग्रीष्म ऋतुमां [अनुक्रमे] अल्प आहारवाळा होय छे. ग्रीष्म ऋतुमां सर्वथी अल्पआहारवाळा होय छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ग्रीष्म ऋतुमां वनस्पतिकायिक जीवो सौथी अल्प आहारवाळा होय तो ते घणा वनस्पतिकायिको ग्रीष्ममां पांदडावाळा, पुष्पवाळा, फलवाळा, लीला छम दीपता, अने वननी शोभा वडे अत्यंत सुशोभित केम होय छे ? [उ०] हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतुमां घणा उष्णयोनिवाळा जीवो अने पुद्गलो वनस्पतिकायिको उपजे छे, विशेष उपजे छे, वचे छे, विशेष वृद्धि पामे छे; ए कारणथी हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतुमां घणा वनस्पतिकायिको पांदडावाळा, पुष्पवाळा यावत् होय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, कंदो कन्दना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे ? [उ०] हे गौतम ! मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जो मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे, तो वनस्पतिकायिक जीवो कैथी रीते आहार करे, अने कैथी रीते परिणमावे ? [उ०] हे गौतम ! मूले मूलना जीवथी व्याप्त छे, अने ते पृथिवीना जीव साथे संबद्ध (जोडा-येल) छे, माटे वनस्पतिकायिक जीवो आहार करे छे, अने तेने परिणमावे छे. ए प्रमाणे यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे, अने ते फलना जीव साथे संबद्ध छे, माटे ते आहार करे छे, अने तेने परिणमावे छे.

वनस्पतिकाय अत्या-
हारी बने महाहारी.

ग्रीष्ममां अत्याहारी
उत्तां पुष्पित अने
फलित केम होय ?

मूले मूलना जीवथी
व्याप्त छे.

वनस्पति की रीते
आहार करे ?

५. [प्र०] अह मंते ! आलुप, मूलप, सिंगवेरे, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किंदिया, छिरिया, छीरबिरालिया, कण्ठकंदे, वज्रकंदे, सूरणकंदे, खेळुडे, अहमहसुल्या, पिंडहलिहा, लोहिणी, ह्यीह, थिरुगा, मुग्गपणी, अस्सकणी, सीहकणी, सीहंडी, मुसुंडी, जेयावने ताह्यगारा सधे ते अणंतजीवा विविहसता ? [उ०] हंता, गोयमा ! आलुप, मूलप जाव अणंतजीवा विविहसता ।

६. [प्र०] सिय मंते ! कण्ठलेसे नेरइय अप्पकम्मतराय, नीललेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] हंता, सिया । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुब्बइ—कण्ठलेसे नेरइय अप्पकम्मतराय, नीललेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] गोयमा ! ठित्ति पडुब्ब, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराय ।

७. [प्र०] सिय मंते ! नीललेसे नेरइय अप्पकम्मतराय, काउलेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] हंता, सिंया । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुब्बइ—नीललेसे अप्पकम्मतराय, काउलेसे नेरइय महाकम्मतराय ? [उ०] गोयमा ! ठित्ति पडुब्ब, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराय । एवं असुरकुमारे वि; नवरं तेउलेसा अम्महिया, एवं जाव वेमाणिया, जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियत्ताओ, जोइसियस्स न मण्णइ । जाव सिय मंते ! पण्ठलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराय, सुकलेस्से वेमाणिए महाकम्मतराय ? हंता, सिंया । से केणट्टेणं ? सेसं जहा नेरइयस्स, जाव महाकम्मतराय ।

८. [प्र०] से नूनं मंते ! जा वेदणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सा वेदणा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुब्बइ—जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेदणा ? [उ०] गोयमा ! कम्म वेदणा, णोकम्म निज्जरा, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव न सा वेदणा ।

९. [प्र०] हे भगवन् ! आलु (बटाटा) मूला, आदु, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किट्टिका, छिरिया, छीरविदारिका, यज्र-कंद, सूरणकंद, खेळुडा, आर्द्रभद्रमोथ, पिंडहरिद्रा, रोहिणी, ह्यीह, थिरुगा, मुद्गपर्णी, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सीहंडी, मुसुंडी अने तेवा प्रकारनी बीजी वनस्पतिओ शुं अनन्त जीववाळी अने भिन्न भिन्न जीववाळी छे ? [उ०] हे गौतम ! आलु (बटाटा) मूला यावत् अनन्त जीववाळी अने भिन्न भिन्न जीववाळी छे.

अनन्तजीव वनस्पति.

६. [प्र०] हे भगवन् ! कदाच कृष्णलेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हा, गौतम ! कदाच होय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के—कृष्णलेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते यावत् महाकर्मवाळो होय.

कृष्णलेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो होय.

७. [प्र०] हे भगवन् ! कदाच नीललेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने कापोतलेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हा, गौतम ! कदाच होय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ए प्रमाणे कहो छो के—नीललेइयावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने कापोतलेइयावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! ने यावत् महाकर्मवाळो होय. ए प्रमाणे असुरकुमारोने विषे पण जाणवुं, परन्तु तेओने एक तेजोलेइया अधिक होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक देवो पर्यन्त जाणवुं. जेने जेटली लेइयाओ होय तेने तेठली कहेवी, पण ज्योतिष्क देवोने न कहेवुं, यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! कदाच पशालेइयावाळो वैमानिक अल्पकर्मवाळो अने शुक्ललेइयावाळो वैमानिक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, कदाच होय. [प्र०] ते शा हेतुथी ! [उ०] बाकीनुं जेम नारकने कणुं तेम जाणवुं, यावत् महाकर्मवाळो होय.

नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो, अने कापोतलेइयावाळो अल्पकर्मवाळो.

८. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर जे वेदना ते निर्जरा, अने जे निर्जरा ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन्, एम शा हेतुथी कहो छो के—जे वेदना ते निर्जरा अने जे निर्जरा ते वेदना न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! वेदना कर्म छे, अने निर्जरा नोकर्म छे, ते हेतुथी यावत् ते वेदना न कहेवाय.

वेदना ते निर्जरा नथी.

१ मूलप ख । २ किंदिया घ । ३ खेळुडे क । ४ अहइ अह-घ । ५ सिय ख । ६-सियस्स णं न ख । ७ सिय ख ।

६. *कृष्णलेइया अत्यन्त अगुण परिणामरूप होवाथी अने तेनी अपेक्षाए नीललेइया कंडेक शुभ परिणामरूप होवाथी सामान्यतः कृष्णलेइयावाळो बहु-कर्मो अने नीललेइयावाळो अल्पकर्मवाळो होय, परन्तु कदाच आयुष्नी स्थितिनी अपेक्षाथी कृष्णलेइयावाळो अल्पकर्मवाळो अने नीललेइयावाळो महाकर्मवाळो होय. जेम के कृष्णलेइयावाळो नारक जेणे पोताना आयुष्नी घणी स्थिति क्षय करेकी छे तेने घणा कर्मनो क्षय थयो होय, तेनी अपेक्षाए कोइ पांचमी नरकपृथ्वीमां सत्तरसागरोपमना आयुष्णवाळो नीललेइयावाळो जीव जे हवणाज उत्पन्न थयो होय तेने पोताना आयुष्नी स्थितिनी बधारे क्षय नहि कर्वां होवाथी घणा कर्म बाकी होय, तेथी ते महाकर्मवाळो होय. जुओ-म. टी. प. १०१-१.

७. † ज्योतिष्कने तेजो लेइया शिवाय बीजी अन्य लेइया नहि होवाथी अन्यलेइयासापेक्ष ते अल्पकर्मवाळो के महाकर्मवाळो न कहेवाय. जुओ-म. टी. प. १०१-१.

८. ‡ उद्यमप्राप्त कर्मतुं वेदनुं-अनुभव करवो ते वेदना, अने वेदित कर्मनो क्षय थयो ते निर्जरा, एटले वेदना कर्मनी धती होवाथी तेने कर्म कणुं, कर्म वेदित कणुं एटले तेने कर्म न कही सकाय, तेथी नोकर्मनी निर्जरा थाय छे, माटे निर्जराने नोकर्म कणुं छे. जुओ-(म. टी. प. १०१-१.)

९. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ? णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुब्बइ—नेरइयाणं जा वेयणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ! नेरइयाणं कम्म वेदणा, णोकम्म निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१०. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु, जं निज्जरिंसु तं वेदेंसु ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुब्बइ—जं वेदेंसु नो तं निज्जरेंसु, जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदेंसु, नोकम्मं निज्जरिंसु, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु । [प्र०] नेरइयाणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरेंसु ? [उ०] एवं नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ।

११. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरेंति, जं निज्जरेंति तं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुब्बइ—जाव नो तं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति, एवं नेरइया वि, जाव वेमाणिया ।

१२. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति, जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ! [प्र०] से केणट्ठेणं जाव णो तं वेदिस्संति ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति, एवं नेरइया वि, जाव वेमाणिया ।

१३. [प्र०] से णूणं भंते ! जे वेदणासमप से निज्जरासमप, जे निज्जरासमप से वेदणासमप ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं एवं बुब्बइ—जे वेयणासमप न से निज्जरासमप, जे निज्जरासमप न से वेदणासमप ? [उ०] गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति, अन्नम्मि समयं वेदेंति, अन्नम्मि समयं निज्जरेंति, अन्ने से वेदणासमप, अन्ने से निज्जरासमप, से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमप, न से निज्जरासमप ।

नारकोने वेदना ते निर्जरा नथी.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने जे वेदना छे ते निर्जरा कहेवाय, अने जे निर्जरा छे ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के नारकोने जे वेदना ते निर्जरा न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! नारकोने वेदना छे ते कर्म छे, अने निर्जरा छे ते नोकर्म छे, ते हेतुथी एम कहं छुं के हे गौतम ! यावत् निर्जरा ते वेदना न कहेवाय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा.

जे वेद्युं ते निर्जयुं नथी.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर जे वेद्युं ते निर्जयुं, अने जे निर्जयुं ते वेद्युं ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहेवाय छे के जे वेद्युं ते निर्जयुं नथी, जे निर्जयुं ते वेद्युं नथी ? [उ०] हे गौतम ! कर्म वेद्युं, अने नोकर्म निर्जयुं, ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् ते वेद्युं नथी. [प्र०] हे भगवन् ! नारकोए जे वेद्युं ते निर्जयुं ? [उ०] पूर्वे कक्षा प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको पण जाणवा.

जे वेदे छे तेने निर्जरतो नथी.

११. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर जेने वेदे छे तेने निर्जरे छे, अने जेने निर्जरे छे तेने वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहेवाय छे के यावत् जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी, जेने निर्जरे छे तेने वेदतो नथी. [उ०] हे गौतम ! कर्मने वेदे छे अने नोकर्मने निर्जरे छे; ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के यावत् [जेने निर्जरे छे] तेने वेदतो नथी. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा.

जेने वेदशे तेने निर्जरशे नहि.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जेने वेदशे तेने निर्जरशे, अने जेने निर्जरशे तेने वेदशे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के यावत् तेने वेदशे नहि ? [उ०] हे गौतम ! कर्मने वेदशे अने नोकर्मने निर्जरशे, ते हेतुथी यावत् जेने [वेदशे] तेने निर्जरशे नहि.

जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय छे, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! जे समये वेदे छे ते समये निर्जरा करतो नथी, जे समये निर्जरा करे छे ते समये वेदतो नथी, अन्य समये वेदे छे, अन्य समये निर्जरा करे छे, वेदनानो समय भिन्न छे अने निर्जरानो समय भिन्न छे; ते हेतुथी यावत् वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.

१४. [प्र०] नेरह्याणं भंते ! जे वेदणासमय से निज्जरासमय, जे निज्जरासमय से वेदणासमय ? [उ०] गोयमा ! जो सिक्खे समये । [प्र०] से केणट्टेणं एवं बुद्धर—नेरह्याणं जे वेदणासमय न से निज्जरासमय, जे निज्जरासमय न से वेदणासमय ? [उ०] गोयमा ! नेरह्याणं जं समयं वेदेति जो तं समयं निज्जरेति, जं समयं निज्जरेति जो तं समयं वेदेति, अज्झमि समयं वेदेति, अज्झमि समयं निज्जरेति, अजे से वेदणासमय, अजे से निज्जरासमय, से तेणट्टेणं जाव न से वेदणासमय, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१५. [प्र०] नेरह्याणं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धर—नेरह्याणं सिय सासया, सिय असासया ? [उ०] गोयमा ! अब्बोच्छित्तिनयदुयाए सासया, अब्बोच्छित्तिनयदुयाए असासया, से तेणट्टेणं जाव सिय सासया, सिय असासया; एवं जाव वेमाणिया, जाव सिय असासया । सेवं भंते !, सेवं भंते ! ति ।

सत्तमसए ततिओ उद्देशो समचो ।

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने जे वेदनानो समय छे, ते निर्जरानो समय छे, अने निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा कारणथी कहो छो के नारकोने जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! नारको जे समये वेदे छे ते समये निर्जरा करता नथी, अने जे समये निर्जरा करे छे ते समये वेदता नथी, अन्य समये वेदे छे अने अन्य समये निर्जरा करे छे, तेओनो वेदनानो समय जूदो छे, अने निर्जरानो समय जूदो छे; ते हेतुथी यावत् निर्जरानो समय ते वेदनानो समय नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

नारकोने वेदना अने निर्जरानो समय विषय छे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! कथंचित् शाश्वत छे, अने कथंचित् अशाश्वत पण छे [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी एम कहो छो के नारको कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! अब्बोच्छित्तिनय—(द्व्यार्थिकनय—)नी अपेक्षाए शाश्वत छे, अने अब्बोच्छित्तिनयनी (पर्यायनयनी) अपेक्षाए अशाश्वत छे; ते हेतुथी यावत् कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको यावत् कथंचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

नारको शाश्वत अने अशाश्वत.

सप्तमशतके तृतीय उद्देशक समाप्त.

चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहं नयरे जाव एवं वयासि—कतिविहा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! छविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तं जहा—पुंढविकाइया, एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा, मिच्छत्त-किरियं वा ।

^१ [जीवा छविह पुढवी जीवाण "डिती भवट्टिती" काये ।
निहेचण अणगारे किरिया सम्मत्त-मिच्छत्तां ॥]

सेवं भंते ! सेवं भंते ! स्ति ।

सत्तममए चउत्थो उद्देशो समत्तो ।

चतुर्थ उद्देशक.

जीवोना प्रकार.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् ए प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! संसारी जीवो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! संसारी जीवो छ प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिक विगेरे. ए प्रमाणे जेम *जीवाभिगमसूत्रमां कहुं छे तेम सम्य-क्त्वक्रिया अने मिथ्यावक्रियासुधी अहां जाणवुं.

संमहगाथा.

† [१ जीवोना छ प्रकार, २ पृथिवीना छ प्रकार, ३ पृथिवीना भेदोनी स्थिति—आयुप्, ४ भवस्थिति, ५ सामान्यकाय स्थिति ६ निर्लेपना—खाली थयानो काळ, ७ अनगारसंबंधी हकीकत, ८ सम्यक्त्वक्रिया अने मिथ्यावक्रिया.] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

सप्तम शतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

१ पुढविकाइया ख । २ [] एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठो वाचनान्तरे उपलभ्यते, स च टीकाकारेण व्याख्यातः । ३ डिति भ-ख । ४-तिका-ख । ५-च्छत्तं च्छत्ते क ।

१ * (जीवाभिगम. प. १३९. सू. १००—१०४.)

† वाचनान्तरमां भावेजी संमह गाथानो अर्थ [] आ कोष्ठकमां भाप्यो छे.

पंचमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एव वयासी-खह्यरपंचिन्द्रियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिविहे जोणीसंगहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! तिधिहे जोणीसंगहे पण्णसे, तं जहा-अंडया, पोयया, समुच्छिमा; एवं जहा जीवाभिगमे, जाव 'नो चेव णं ते विमाणे वीतीवपञ्जा, एमहालया णं गोयमा ! ते विमाणा पन्नता' ।

जोणीसंगह-लेसा दिट्ठी नाणे य जोग-उयओगे ।
उववाय-ट्टिति-समुग्घाय-ववण-जाती-कुल-विहीओ ॥

सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

सत्तमसयस्स पंचमो उद्देशो समत्तो ।

पञ्चम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गीतम] यावत् ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! खेचर पंचेन्द्रिय तिर्थचोनो योनिसंग्रह केटलां प्रकारे खेचरनो योनिसंग्रह-कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनो योनिसंग्रह त्रण प्रकारे कह्यो छे; ते आ प्रमाणे-अंडज, गोतज अने संग्गुच्छिम. जेम *जीवाभिगम सूत्रमां कह्यो छे ते प्रमाणे यावत् 'ते विमानोने उल्लंघी न शक्के, एटला मोटा ते विमानो कहा छे' ल्यां सुवी रावं जाणवुं.

[१ योनिसंग्रह, २ लेस्या; ३ दृष्टि-सम्यक्, मिश्र अने मिध्यात्वदृष्टि, ४ ज्ञान, ५ योग, ६ उपयोग, ७ उपपात-उत्पन्न थयुं, ८ स्थिति-आयुष, ९ समुद्घात, १० ध्यवन, ११ जातिकुलकोटी].

हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

सत्तम शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

१ कतिविहे णं जो- घ । २ [] एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठो वाचनान्तरे उपलभ्यते ।

१. * (जीवाभिगम. प. १३२-१३७. सू. ९६-९९)

† वाचनान्तरमा आवेली संग्रहगाथानो अर्थ आ [] कोष्ठकमां आप्यो छे.

छटो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वंयासी-जीवे णं भंते ! जे भविण नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेति, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, उववजे नेरइयाउयं पकरेइ ? [उ०] गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववजे नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारसु वि, एवं जाव वेमाणिएसु ।

२. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविण नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ. उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, उववजे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? [उ०] गोयमा ! णो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववजे वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेति । एवं जाव वेमाणिएसु ।

३. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविण नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए महावेयणे, उववज्जमाणे महावेदणे, उववजे महावेदणे ? [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेयणे; अहे णं भंते ! उववजे भवति तथो पच्छा एगंतदुक्खं वेयणं वेयति, आहण सायं ।

४. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविण असुरकुमारसु उववज्जित्तए पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे; अहे णं उववजे भवइ तथो पच्छा एगंतसातं वेयणं वेदेति, आहण असायं । एवं जाव धणियकुमारसु ।

षष्ठ उद्देशक.

नारकायुपतो बंध.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गीतम] यावत् ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! जे जीव नारकने विपे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमां रहीने नारकतुं आयुप् बांधे ? त्यां-नारकमां उत्पन्न थतो नारकतुं आयुप् बांधे ? के त्यां उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप् बांधे ? [उ०] हे गीतम ! आ भवमां रहीने नारकतुं आयुप् बांधे, पण त्यां उत्पन्न थता नारकतुं आयुप् न बांधे, अने उत्पन्न थइने पण नारकतुं आयुप् न बांधे, ए प्रमाणे असुरकुमारोमां अने यावत् वैमानिकोमां जाणवुं.

नारकायुपतुं वेदन.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव नारकने विपे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमां रही नारकतुं आयुप् वेदे, त्यां उत्पन्न थता नारकतुं आयुप् वेदे, के त्यां उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप् वेदे ? [उ०] हे गीतम ! आ भवमां रही नारकतुं आयुप् न वेदे, पण उत्पन्न थता अने उत्पन्न थइने नारकतुं आयुप् वेदे, ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमां पण जाणवुं.

नारकमां महावेदनातुं वेदन.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव नारकमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय, त्यां उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय, के उत्पन्न थता पछी महावेदनावाळो होय ? [उ०] हे गीतम ! कदाच ते आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; कदाच उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे, त्यार पछी एकान्त दुःखरूप वेदनाने वेदे छे, अने क्वचित् सुखने वेदे छे.

असुरकुमारमां महावेदनातुं वेदन.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव असुरकुमारमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संवन्धी प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! ते कदाच आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्यार पछी एकान्त सुखरूप वेदनाने वेदे छे, अने कदाच दुःखने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारने विपे जाणवुं.

५. [प्र०] जीवे णं मंते ! जे भविष्य पुढबिकारएसु उचवज्जित्तए पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्यवेयणे; एवं उचवज्जमाने वि, अहे णं उचवजे भवति तओ पच्छा वेमायाए वेयणं वेदेति । एवं जाव मणुस्सेसु, याणमंतर-जोइसिय-वेमाणियसु जहा असुरकुमारसु ।

६. [प्र०] जीवा णं मंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया ? [उ०] गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ।

७. [प्र०] अत्थि णं मंते ! जीवाणं ककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! हंता, अत्थि ।

८. [प्र०] कहं णं मंते ! जीवाणं ककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवाएणं, जाव मिच्छादंसणस-हेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवाणं ककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

९. [प्र०] अत्थि णं मंते ! नेरइयाणं ककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] एवं वेव, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१०. [प्र०] अत्थि णं मंते ! जीवाणं अककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

११. [प्र०] कहं णं मंते ! जीवा अककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं, जाव परिग्ग-हवेरमणेणं, कोहविभेणेणं, जाव मिच्छादंसणसहविभेणेणं; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

१२. [प्र०] अत्थि णं मंते ! नेरइयाणं अककसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे । एवं जाव वेमाणिया; नवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ।

१३. [प्र०] अत्थि णं मंते ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

१४. [प्र०] कहं णं मंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए; बहूणं पाणाणं, जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए, असौयणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपिहणयाए, अपरियावणयाए; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति; एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव पृथिवीकायमा उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संबन्धी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रहेलो ते कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; ए प्रमाणे उत्पन्न थतां पण महावेदनावाळो होय के अल्पवेदनावाळो होय, पण उयारे ते उत्पन्न थाय छे ल्यार पछी ते विविध प्रकारे वेदनाने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्योमां जाणवुं. जेम असुरकुमारोने विषे [सू. ४] कहुं तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो विषे जाणवुं.

पृथिवीकायमा वि-
विध वेदनासुं वेदन.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो आभोगथी-जाणपणे आयुषूनो बंध करे के अनाभोगथी-अजाणपणे आयुषूनो बंध करे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो आभोगथी आयुषूनो बन्ध न करे, पण अनाभोगथी आयुषूनो बन्ध करे. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा.

आयुषूनो बन्ध-

७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने कर्कशवेदनीय-दुःखपूर्वक भोगववा योग्य कर्मो-बंधाय छे ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

कर्कशवेदनीय कर्मो-
कर्कशवेदनीय कर्मोना
हेतुओ.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने कर्कशवेदनीय कर्मो केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपात-जीवहिंसाथी, यावत् मिथ्यादर्शन-शल्यथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने कर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के नारकोने कर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वे कहुवा प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

नारकोने कर्कशवेद-
नीय कर्मो.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने अकर्कशवेदनीय-सुखपूर्वक भोगववा योग्य कर्मो-बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

अकर्कशवेदनीय कर्मो-
अकर्कशवेदनीय कर्मो-
ना हेतुओ.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कर्मो केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपातविरमणथी, यावत् परिग्रहविर-मणथी; क्रोधनो त्याग करवाथी, यावत् मिथ्यादर्शनशल्यनो त्याग करवाथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने अकर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परंतु मनुष्योने जेम जीवोने [सू. ११.] कहुं तेम जाणवुं.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने सातावेदनीय कर्म बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

सातावेदनीय कर्मो.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने सातावेदनीय कर्म केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणोने विषे अनुकंपाथी, भूतोने विषे अनुकंपाथी, जीवोने विषे अनुकंपाथी, सत्त्वोने विषे अनुकंपाथी, घणा प्राणोने यावत् सत्त्वोने दुःख न देवाथी, शोक नहि उपजाववाथी, खेद नहि उत्पन्न करवाथी, वेदना न करवाथी, नहि मारवाथी तेम परिताप नहि उपजाववाथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवो सातावेदनीय कर्मो बांधे छे. ए प्रमाणे नारकोने पण जाणवुं; यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

सातावेदनीय कर्मोना
हेतुओ.

१५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं असायावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता अत्थि ।

१६. [प्र०] क्हं णं भंते ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! परदुक्खणयाप, परसोयणयाप, परजूरणयाप, परतिप्पणयाप, परपिट्ठणयाप, परपरियावणयाप; बहूणं पाणाणं, जाव सत्ताणं दुक्खणयाप, सोयणयाप जाव परियावणयाप; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एवं नेरइयाण वि, एवं जाव बेमाणियाणं ।

१७. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसत्पिणीए दुंसमदुसमाए समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? [उ०] गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भंभाभूए, कोलाहलगभूए; समयानुभावेण य णं खर-फरुस-धूलिमइला, दुविसइहा, थाडला, भयंकरा, वाया संवट्टगा य धाहंति; इह अभिक्खं धूमाहंति य दिसा समंता रओसला, रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा, समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छंति, अहियं सूरिया तवइस्संति; अनुत्तरं च णं अभिक्खणं बहवे अरसमेहा, विरसमेहा, खारमेहा, खसमेहा, खट्टमेहा, अग्गिमेहा, विज्जुमेहा, विसमेहा, असणिमेहा; अपिवणिज्जोदगा [अजवणिज्जोदया] वाहि-रोग-वेदणोदीरणापरिणामसलिला, अमणुक्कपाणियागा, चंडानिलपट्टयतिक्खधारानिवायपउरं वासं वासिहंति; जे णं भारहे वासे गामाऽऽगर-नगर-खेड-कवड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-ऽऽसमगयं जणवयं, चउप्पय-गबेलप, खहयरे पक्खिसंघे, गामा-ऽऽरन्न-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वह्नि-तण-पद्ययग-हरितो-सहि पवालं-कुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विदंसेहंति, पद्यय-गिरि-डोंगर-उंथल-भंदिमादीए य वेयट्टगिरिबज्जे विगावेहंति, सलिलबिल-गंहु-दुग्गविसमनिण्णु-धयाइं च गंगा-सिंधुज्जाइं समीकरेहंति ।

१८. [प्र०] तीसे णं समाए भारहवासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति ? [उ०] गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालभूया, मुंमुुरभूया, छारियभूया, तत्तकवेह्यभूया, तत्तसमजोतिभूया, धूलिबहुला, रेणुबहुला, पंकवहुला, पणगवहुला, चलणिवहुला, बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुंभिकमा यावि भविस्सति ।

असातावेदनीय कर्म.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने असातावेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

असातावेदनीय-
कर्मोना देहभो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने असातावेदनीय कर्म केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! वीजाने दुःख देवाथी, वीजाने शोक उपजाववाथी, वीजाने खेद उपपन्न करवाथी, वीजाने पीडा करवाथी, वीजाने मारवाथी, वीजाने परिताप उपपन्न करवाथी, तेम घणां प्राणोने यावत् मारवोने दुःख देवाथी, शोक उपजाववाथी, यावत् परिताप उपपन्न करवाथी, ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने असातावेदनीय कर्म बंधाय छे. ए प्रमाणे नारकोने, यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

हाहाभूत काळ.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जंबुद्दीपनामे द्वीपमां भारतवर्षने विपं आ अवसर्पिणीमां दुःपमादुःपमा काळ-च्छट्टो आरो ज्यारे अत्यंत उत्कट अवस्थाने प्राप्त थसे ल्यारे भारतवर्षने आकारभावप्रत्यवतार (आकार अने भावोने आविर्भाव) केव प्रकारे थसे ? [उ०] हे गौतम ! हाहाभूत (जे काळे दुःखी लोको 'हा हा' शब्द करसे), भंभाभूत (जे काळे दुःखार्त पशुओ 'भां भां' शब्द करसे), अने कोलाहलभूत (ज्यारे दुःखपीडित पक्षाओ कोलाहल करसे) एवो काळ थसे. काळना प्रमावथी घणा कठोर, धूळथी मेटा, असल, अनुचित अने भयंकर वायु, तेमज संघर्तक वायु थसे. आ काळे वारंवार चारे बाजूए धूळ उडती होवाथी रजथी मलिन अने अंधकारवडे प्रकाशरहित दिशाओ धूमाडा जेवी झांसी देखासे. काळनी रुक्षताथी चन्द्रो अधिक शीतता आपसे अने सूर्यो अत्यंत तपसे. बळी वारंवार घणा खगव रसवाळा, विरुद्ध रसवाळा, खारा, खान्तरमान पाणिवाळा, [खाटा पाणिवाळा] अग्निनां पेटे दाहक पाणिवाळा, विजळी युक्त, अशान्मेघ-करावगेरेने पाडनार (पर्यतने भेदनारा,) विपमेघो-झेरी पाणिवाळा-नहि पीवालायक पाणिवाळा, [निर्वाह न थइ शके तेवा पाणिवाळा], व्याधि, रोग अने वेदना उपपन्न करनार पाणिवाळा, मनने न रुचे तेवा पाणिवाळा मेघो तीक्ष्ण धाराना पडवा डेव पुष्कळ वरससे. जेथी भारत वर्षमां ग्राम, आकार, नगर, खेड, कयंठ, मडंय, द्रोणमुख, पट्टन अने आश्रममां रहेल मनुष्यो, चोपगा-गायो घेटा-अने आकाशमां गमन करता पक्षि-ओना टोळओ; तेमज गाम अने अरण्यमां चाळता त्रस जीवो तथा बहु प्रकारना वृक्षो, गुल्मो, लताओ, वेळडीओ, घास, पर्यगो-शेरडी वगेरे, धरो वगेरे, ओपधी-शाळिवगेरे, प्रवालो अने अंकुरादि तृणवनस्पतिओ नाश पामसे. वैताळ्य शिवाय पर्यतो, गिरिओ, डुंगरो, धूळना उंचा स्थळे, रज विनानी भूमिओ नाश पामसे. गंगा अने सिन्धुनदी शिवाय पाणिना झराओ, खाडाओ, दुर्गम अने विपम भूमिमां रहेला उंचा अने नीचा स्थळो सग्या थसे.

भयंकर वात.

मलिन दिशाओ.

अधिकशीत अने ताप.

भरस विरसादि मेघो.

ग्रामादिमां रहेला म-
नुष्य पशु पक्षाओनी
नाश.

वनस्पतिओनी नाश.

पर्वतादिनी नाश.

भूमिनुं खर.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! [ते काळे] भारतवर्षनी भूमिने केवो आकारभावप्रत्यवतार थसे ? [उ०] हे गौतम ! ते काळे अंगार जेवी, मुंमुंर-छाणाना अग्नि जेवी, भस्मीभूत, तपी गयेला कटाह (कडाया) जेवी, ताप वडे अग्निना सरखी, धडुधूळवाळी बहुर-जवाळी, वट्टकीचडवाळी, वट्टमेवाळवाळी, घणाकादववाळी अने पृथ्वी उपर रहेला घणा प्राणिओने चालवुं मुस्कळ पडे एवी भूमि थसे.

१ असायावे-घ । २-यावियणि-घ । ३ दुद्दीवे भं-ख । ४ उत्सपि-घ । ५ दुसमदुसमाए-घ, दुसमदुसमाए क । ६ भंभाभूए ख । ७ कोलाहलभूए ख । ८ वाहंति कविनाऽन्यत्र । ९ धूमाहंति घ । १०-उच्छक-घ । ११-अहिमा-घ । १२-गह-ख । १३ मुंमुंरभूया घ । १४ दोन्दिमा य भ घ ।

१९. [प्र०] तीसे जं मंते ! समाप भारदे वासे मणुयाणं केरिसप आगारभावपडोयारे भविस्सह ? [उ०] गोयमा ! मणुया भविस्संति डुरुवा, दुग्गा, दुग्गंधा, डुरसा, डुफासा, अणिद्धा, अकंता, जाव अमणामा, हीणस्सरा, हीणस्सरा, अणि-डुस्सरा, जाव अमणामस्सरा, अणादेज्जययणपच्चायाया, निहज्जा, कूड-कवड-कलह-धं-बंध-वेरनिरया, मज्जायातिकमप्यहाणा, अकज्जनिचुज्जता, गुरुनियोय-विणयरहिया य, विकलरूवा, परूढनह-केस-मंसु-रोमा, काला, खर-फरस-झामवच्चा, फुट्टिसिरा, कविल-पलियकेसा, बहुणहारसंपिण्ड-दुहंसणिज्जरूवा, संकुडियवलीतरंगपरिवेडियंगमंगा, जरापरिणतध थेरगनरा, पविरलपरि-सडियदंतसेही, उम्भडघड(य)मुहा [उम्भडघाडामुहा,] विसमणयणा, वंकनासा, वंक[ग]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छ-कंसरा-मिभूया, खर-तिक्खनख-कंडूइयविकखयतणू, दहु-किडिभ-सिज्ज-कुडियफरसच्छवी, विसलंगा, टोलागति-विसमसंधिबंधण-डकुडुअट्टिगविभत्त-दुग्गला कुसंधयण-कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्टाणासण-कुसेज्ज-दुग्गोइणो, असुइणो, अणेगवाहिपरिपी-लियंगमंगा, खलंत-वेम्मलगती, निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ट-नट्टेया, अभिक्खणं सीय-उण्ह-खर-फरसवायविज्ज-डियमल्लिणपंसुरयगुडियंगमंगा, बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, ओसन्नं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्टा, उक्को-सेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-थीसतिवासपरमाउसो, पुत्त-नत्तुपरियालपणय[परिपालण]बहुला गंगा-सिंधूओ महानदीओ, वेयहं च पद्धयं निस्साए वायत्तरिं 'निओदा वीयं बीयामेत्ता विलघासिणो भविस्संति ।

२०. [प्र०] ते जं मंते ! मणुया कं आहारं आहारोहंति ? [उ०] गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समयेणं गंगा-सिंधूओ महानदीओ रंहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जलं बोज्जिहंति, से वि य णं जले बहुमच्छ-कच्छभाइत्ते, णो चैव णं आउवहुले भविस्सति । तए णं ते मणुया सूरग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य विलेहंतिो निद्धाहंति, निद्धाइत्ता विलेहंतिो मच्छ-कच्छमे थलाइं गाहंति, गाहित्ता सियायवत्तंसिपहिं मच्छ-कच्छपहिं एकवीसं वाससहस्साइं विसि कप्पेमाणो विहरिस्संति ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ते काले भारतवर्षमां मनुष्यो नो केवो आकारभावप्रत्यवतार थरो ? [उ०] हे गौतम ! खरावरूपवाळा, खराववर्णवाळा, दुर्गंधवाळा, दुष्टरसवाळा, खरावस्पर्शवाळा, अनिष्ट, अमनोज्ञ, मनने न गमे तेवा, हीनस्वरवाळा, दीनस्वरवाळा, अनिष्टस्वरवाळा, यावत् मनने न गमे तेवा खरवाळा, जेना वचन अने जन्म अप्राहा छे एवा, निर्लेज्ज, कूट कपट कलह वध बंध अने वैरमां आसत्त, मर्यादातुं उल्लंघन करवामां मुख्य, अकार्य करवामां नित्य तत्पर, मातपितादिनो अवश्य करवा योग्य विनयरहित, बेडोळ रूपवाळा, जेना नख, केश, दाढी, मूळ अने रोम थधेला छे एवा, काळा, अत्यंत कठोर, श्यामवर्णवाळा, छूटा केशवाळा, धोळा केशवाळा, बहु स्नायुयी बांधेल होवाने लीधे दुर्दर्शनीय रूपवाळा, जेओना प्रत्येक अंग वांका अने वलीतरंगोथी-करचन्दीओथी व्याप्त छे एवा, जरा-परिणत (वृद्धावस्थायुक्त) वृद्धपुरुष जेवा, छूटा अने सडी गयेला दांतनी श्रेणिवाळा, घटना जेवा भयंकर मुखवाळा [भयंकर छे घाटा (डोकनी पाछळनो भाग), अने मुख जेओना एवा] विपमनेत्रवाळा, वांकी नासिकावाळा, वांका अने वलिओथी विकृत थयेला, भयंकर मुखवाळा, खस अने खरजथी व्याप्त, कठण अने तीक्ष्ण नखो वडे खजवाळवाथी विकृत थयेला, दहु (दराज) किडिभ (एक जातनो कोट) अने सिध्म (कुष्ठ विशेष, करोळीआ) वाळा, फाटीगयेळ अने कठोर चामडीवाळा, विचित्रअंगवाळा, उट्टादिना जेनी गतिवाळा, [खराव आकृतिवाळा], सांधाना विपम बंधनवाळा, योग्यस्थाने नहि गोठवायेला छूटा देखाना हाडकावाळा, दुर्बल, खरावसंधयणवाळा, खरावप्रमाणवाळा, खरावसंस्थानवाळा, खरावरूपवाळा, खराव स्थान अने आसनवाळा, खरावशय्यावाळा, खरावभोजनवाळा, जेओनां प्रत्येक अंग अनेक व्याधिओथी पीडित छे एवा, रखलनायुक्त विह्वलगतिवाळा, उत्साहरहित, सत्वरहित, विकृतचेष्टावाळा, तेजरहित, वारंवार शीत, उष्ण तीक्ष्ण अने कठोर पवनवडे व्याप्त, जेओना अंग धूळवडे मलिन अने रजवडे व्याप्त छे एवा, बहु क्रोध, मान अने मायावाळा, बहु लोभवाळा, अशुभ दुःखना भागी, प्रायः धर्मसंज्ञा अने सम्यक्त्वथी भ्रष्ट, उत्कृष्ट एक हाथ प्रमाण शरीरवाळा, सोळ अने वीश वरसना परम आयुषवाळा, पुत्र पौत्रादि परिवारमां अत्यंत झेहवाळा [घणा पुत्रपौत्रादिनुं पालनकरनाग], बीजना जेवा, बीजमात्र एवा [मनुष्योना] बहोतेर कुटुंबो गंगा, सिन्धु महानदीओ अने वैताळा पर्यंतनो आश्रय करीने विलमां रहेनारा थशे.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते मनुष्यो केवा प्रकारनो आहार करशे ? [उ०] हे गौतम ! ते काले अने ते समये रथना मार्गप्रमाण विस्तारवाळी गंगा अने सिन्धु ए महानदीओ रथनी धरीने पेसवाना छिद्र जेटळा भागमां पाणिने बहेशे, ते पाणि घणां मांछळां अने काचवा बगेरेथी भरेळुं हशे, पण तेमां घणुं पाणि नहि होय. त्यारे ते मनुष्यो सूर्य उग्या पछी एक मुहूर्तनी अंदर अने सूर्य आथम्या पछी एक मुहूर्तमां पौतपोताना विलोथी बाहेर नीकळ्शे अने मांछळां अने काचवा बगेरेने जमीनमां डाटशे, टाड अने तडका वडे बपाइ गयेलां मांछळां अने काचवा बगेरेथी एकवीश हजार वर्ष सुधी आजीविका करता तेओ (मनुष्यो) त्यां रहेशे.

मनुष्यो नो आहार-

२१. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला, निग्गुणा, निम्मेरा, निप्यक्खण-पोसहोवघासा ओसणं मांसाहारा, मच्छाहारा, लोहाहारा, कुणिमाहारा कालमासे कालं किञ्चा कहिं गच्छिहिंति, कहिं उववज्जिहिंति ? [उ०] गोयमा ! ओसंभं नरग-तिरिक्खजोणिपसु उववज्जिहिंति ।

२२. [प्र०] ते णं भंते ! सीहा, वग्घा, वगा, धीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा, निस्सीला तद्देव जाव कहिं उववज्जिहिंति ? [उ०] गोयमा ! ओसंभं नरग-तिरिक्खजोणिपसु उववज्जिहिंति ।

२३. [प्र०] ते णं भंते ! ढंका, कंका, विलका, महुगा, सिही, निस्सीला तद्देव जाव ओसंभं नरग-तिरिक्खजोणिपसु उववज्जिहिंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! प्ति ।

सत्तमस्स सयस्स छट्ठो उद्देशो समत्तो ।

ते मनुष्यो मरीने क्यां जशे ?

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शीलरहित, निर्गुण, मर्यादारहित, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासरहित, प्रायः मांसाहारी, मत्स्याहारी, मधनो आहार करनारा, मृत शरीरनो आहार करनारा ते मनुष्यो मरणसमये काल करीने क्यां जशे ? [उ०] हे गौतम ! प्रायः नारक अने तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थशे.

ते सिंहादि मरीने क्यां जशे ?

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते सिंहो, बाघो, वृको, दीपडाओ, रिंछो, तरक्षो, शरभो ते प्रमाणे निःशील एवा यावत् क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! प्रायः नारक अने तिर्यंचयोनिमां उत्पन्न थशे.

कागडा वगेरे मरीने क्यां जशे ?

२३. [प्र०] हे भगवन् ! ते कागडाओ, कंको, विलको, जलवायसो, मयूरो निःशील एवा ते प्रमाणे यावत् [क्यां उत्पन्न थशे ?] [उ०] प्रायः नारक अने तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थशे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे]

सातमां शतकमां छट्ठो उद्देशक समाप्त.

सप्तमो उद्देशो.

१. [प्र०] संबुडस्स णं भंते ! अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स, जाव आउत्तं तुयहमाणस्स, आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा, निक्खिबमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जर, संपराइया किरिया कज्जर ? [उ०] गोयमा ! संबुडस्स णं अणगारस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जर, णो संपराइया । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-संबुडस्स णं जाव नो संपराइआ किरिया कज्जर ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा बोच्छिआ भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जर, तहेव जाव उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जर; से णं अहासुत्तमेव रीयइ, से तेणट्टेण गोयमा ! जाव नो संपराइआ किरिया कज्जर ।

२. [प्र०] रूवी भंते ! कामा, अरूवी कामा ? [उ०] गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ।

३. [प्र०] सच्चित्ता भंते ! कामा, अच्चित्ता कामा ? [उ०] गोयमा ! सच्चित्ता वि कामा, अच्चित्ता वि कामा ।

४. [प्र०] जीवा भंते ! कामा, अजीवा भंते ! कामा ? [उ०] गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ।

५. [प्र०] जीवाणं भंते ! कामा, अजीवाणं कामा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ।

६. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! कामा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! बुविहा कामा पन्नत्ता, तं जहा सहा य, रुवा य ।

७. [प्र०] रूवी भंते ! भोगा, अरूवी भोगा ? [उ०] गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ।

सप्तम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! उपयोग(सावधानता)पूर्वक गमन करता, यावत् उपयोगपूर्वक सूता-आच्छोटा के उपयोगपूर्वक वस्त्र, पात्र, कंबल अने पादप्रोच्छनक(रजोहरण)ने ग्रहण करता अने मूकता संवृत-संवरयुक्त साधुने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! संवरयुक्त यावत् ते अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, सांपरायिकी क्रिया न लागे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छे के संवरयुक्त साधुने यावत् सांपरायिकी क्रिया न लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ नष्ट थया होय तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, तेमज यावत् सूत्रविरुद्ध चालनारने सांपरायिकी क्रिया लागे; ते संवरयुक्त अनगार सूत्र प्रमाणे वर्ते छे, ते हेतुथी हे गौतम ! तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया न लागे.

संवृत अनगारने क्रिया

ऐर्यापथिकी क्रिया लागवाने कारण.

काम अने भोग.

२. [प्र०] हे भगवन् ! कामो रूपी छे के अरूपी छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो रूपी छे, पण हे आयुप्मान् भ्रमण ! कामो अरूपी नथी.

काम रूपी के अरूपी ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! कामो सचित्त छे के अचित्त छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे.

सचित्त के अचित्त ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! कामो जीव छे के अजीव छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो जीव पण छे अने अजीव पण छे.

जीव के अजीव ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! कामो जीवोने होय छे के अजीवोने होय छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो जीवोने होय छे, पण अजीवोने कामो होला नथी.

जीवोने के अजीवोने ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! कामो केटला प्रकारे कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो बे प्रकारे कहा छे, जेमके शब्दो अने रूपो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो रूपी छे के अरूपी छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो रूपी छे, पण अरूपी नथी.

भोगो रूपी के अरूपी ?

८. [प्र०] सचित्ता भंते ! भोगा, अचित्ता भोगा ? [उ०] गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ।
 ९. [प्र०] जीवा णं भंते ! भोगा ?—पुच्छा [उ०] गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ।
 १०. [प्र०] जीवाणं भंते ! भोगा, अजीवाणं भोगा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा ।
 ११. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! भोगा पञ्चत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा भोगा पञ्चत्ता, तं जहा—गंधा, रसा, फासा ।
 १२. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पञ्चत्ता, तं जहा—सदा, रुवा, गंधा, रसा, फासा ।
 १३. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं कामी, भोगी ? [उ०] गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं पुच्छ—जीवा कामी वि. भोगी वि ? [उ०] गोयमा ! सोइन्द्रिय-चक्षुदियाइं पडुच्च कामी, घाण्णिय-जिह्मिय-फासिदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव भोगी वि ।
 १४. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं कामी, भोगी ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारा ।
 १५. [प्र०] पुढविकाइयाणं पुच्छा [उ०] गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी । [प्र०] से केणट्टेणं जाव भोगी ? [उ०] गोयमा ! फासिदियं पडुच्च, से तेणट्टेणं जाव भोगी; एवं जाव वणस्सरकाइया: वेइदिया एवं चेव, नवरं जिह्मिय-फासिदियाइं पडुच्च भोगी; तेइदिया वि एवं चेव, नवरं घाण्णिय-जिह्मिय-फासिदियाइं पडुच्च भोगी ।
 १६. [प्र०] चउरिदियाणं पुच्छा [उ०] गोयमा ! चउरिदिया कामी वि, भोगी वि । [प्र०] से केणट्टेणं जाव भोगी वि ? [उ०] गोयमा ! चक्षुदियं पडुच्च कामी, घाण्णिय-जिह्मिय-फासिदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्टेणं जाव भोगी वि । अवसेसा जहा जीवा, जाव वेमाणिया ।

भोगो सचित्त के अचित्त ?
भोगी जीव के अजीव ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो सचित्त छे के अचित्त छे ? [प्र०] हे गौतम ! भोगो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे.
 ९. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवस्वरूप छे के अजीवस्वरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवस्वरूप पण छे अने अजीवस्वरूप पण छे.

भोगो जीवोने होय के अजीवोने ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवोने होय के अजीवोने होय ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवोने होय छे, पण अजीवोने भोगो होता नथी.

भोगोना प्रकार.

११. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो त्रण प्रकारना कहा छे; ते आप्रमाणे—गंध, रस अने स्पर्श.

काम-भोगना प्रकार.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! काम-भोग केटला प्रकारे कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! काम अने भोग [बन्ने मट्ठी] पांच प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श.

जीवो कामी के भोगी ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो कामी के भोगी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो कामी पण छे, अने भोगी पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे ? [उ०] हे गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय अने चक्षुने आश्रयी जीवो कामी कहैवाय छे, तेम प्राणेन्द्रिय, जिह्मेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए जीवो भोगी कहैवाय छे; ते हेतुथी हे गौतम ! जीवो यावत् भोगी पण छे.

नारको कामी अने भोगी.
पृथिवीकाय.

१४. हे भगवन् ! शुं नारको कामी छे के भोगी छे ? [उ०] पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे यावत् स्तानितयुमारोने जाणवुं.

वेइन्द्रिय ते इन्द्रिय जीवो.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकायिको कामी नथी, पण भोगी छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के पृथिवीकायिको भोगी छे ? हे गौतम ! स्पर्शनेन्द्रियने आश्रयी; ते हेतुथी तेओ यावत् भोगी छे. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको जाणवा, वेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, परन्तु तेओ जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे. तेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, पण प्राण, जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए तेओ भोगी छे.

चउरिन्द्रिय जीवो.

१६. [प्र०] चउरिन्द्रिय जीवोको प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चउरिन्द्रिय जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत् भोगी पण छे ? [उ०] ते चउरिन्द्रिय जीवो चक्षुनी अपेक्षाए कामी; प्राण, जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे; ते हेतुथी यावत् भोगी समजवा. बाकीना यावत् वैमानिक सुधीना जीवो जेम सामान्य जीवो कहा तेम जाणवा.

૧૭. [પ્ર૦] ઇવસિ ણં મંતે ! જીવાણં કામભોગીણં, નોકામીણં નોભોગીણં, ભોગીણ ય કયરે કયરેહિતો જાવ વિસેસા-
હિયા વા ? [૩૦] ગોયમા ! સહ્વત્યોવા જીવા કામભોગી, નોકામી નોભોગી અણંતગુણા, ભોગી અણંતગુણા ।

૧૮. [પ્ર૦] છુડમત્થે ણં મંતે ! મણુસે જે ભવિય અબ્બયરેસુ દેવલોપસુ દેવતાય ઉવવજ્જિસય, સે ણૂણં મંતે ! સે ક્ષીણ-
ભોગી નો પમ્મુ ઉટ્ટાણેણં, કમ્મેણં, વલેણં, વીરિયણં, પુરિસક્કાર-પરક્કમેણં વિડલાહં ભોગભોગાહં ભુંજમાણે વિહરિત્તય ? સે ણૂણં
મંતે ! ઇયમટ્ટં ઇવં વચ્છહ ? [૩૦] ગોયમા ! ણો 'તિણ્ટે સમટ્ટે, પમ્મુ ણં મંતે ! સે ઉટ્ટાણેણ વિ, કમ્મેણ વિ, વલેણ વિ, વીરિયણ
વિ, પુરિસક્કાર-પરક્કમેણ વિ અબ્બયરાહં વિપુલાહં ભોગભોગાહં ભુંજમાણે વિહરિત્તય, તમ્હા ભોગી, ભોગે પરિચ્ચયમાણે મહાનિજ્જરે,
મહાપજ્જવસાણે મવહ ।

૧૯. [પ્ર૦] આહોહિય ણં મંતે ! મણુસે જે ભવિય અબ્બયરેસુ દેવલોપસુ ? [૩૦] ઇવં ચેય, જહા છુડમત્થે જાવ મહાપ-
જ્જવસાણે મવનિ ।

૨૦. [પ્ર૦] પરમાહોહિય ણં મંતે ! મણુસે જે ભવિય તેણેવ મયગ્ગહણેણં સિજ્જિપ્પાય, જાવ અંતં કરેત્તય, સે ણૂણં મંતે !
સે ક્ષીણભોગી-? [૩૦] સેસં જહા છુડમત્થસ્સ ।

૨૧. [પ્ર૦] કેવલી ણં મંતે ! મણુસે જે ભવિય તેણેવ મયગ્ગહણેણં ? [૩૦] ઇવં જહા પરમાહોહિય, જાવ મહાપજ્જવસાણે મવહ ।

૨૨. [પ્ર૦] જે રમે મંતે ! અસન્નિણો પાણા, તં જહા—પુઠ્ઠવિકારહા જાવ વણસ્સરકારહા, છટ્ટા ય પગતિયા તસા: પપ્પ
ણં અંધા, મૂઠા, તમં પવિટ્ટા, તમપડલ-મોહજાલપડિહં છટ્ટા અકામનિકરણં વેદણં વેદન્તીતિ વત્તહં સિયા ? [૩૦] હંતા, ગોયમા !
જે રમે અસન્નિણો પાણા, જાવ પુઠ્ઠવિકારહા જાવ વણસ્સરકારહા છટ્ટા ય જાવ વેદણં વેદેતીતિ વત્તહં સિયા ।

૧૭. [પ્ર૦] હે મગલ્લ ! કામભોગી, નોકામી નોભોગી અને ભોગી જીવોમાં કયા જીવો કયા જીવોથી યાવત્ વિશેષાધિક છે ?
[૩૦] હે ગૌતમ ! કામભોગી જીવો સૌથી થોડા છે, નોકામી નોભોગી જીવો અનન્તગુણ છે, અને ભોગી જીવો અનન્તગુણ છે.

અલ્પવહુરક.

૧૮. [પ્ર૦] હે મગલ્લ ! છમ્મસ્થ મનુષ્ય જે કોઈ પણ દેવલોકમાં દેવપણે ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય છે તે ક્ષીણભોગી-દુર્બલશરીરવાળો
ઉત્થાન વઢે, કર્મ વઢે, વલ વઢે, વીર્ય વઢે અને પુરુષકાર-પરાક્રમ વઢે વિપુલ ઇવા ભોગ્ય ભોગોને ભોગવવા સમર્થ છે ? હે મગલ્લ ! મ્બરેવર
આ અર્થને આ પ્રમાણે કહો છો ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આ અર્થ યોગ્ય નથી. તે ઉત્થાન વઢે પણ, કર્મ વઢે પણ, વલવઢે પણ, વીર્ય વઢે પણ
અને પુરુષકાર-પરાક્રમ વઢે પણ કોઈ પણ વિપુલ ઇવા ભોગ્ય ભોગોને ભોગવવા સમર્થ છે, તે માટે તે ભોગી ભોગોનો ત્યાગ કરતો મહાનિર્જ-
રાવાળો અને મહાપર્યવસાન-મહાફલવાળો થાય છે.

છમ્મસ્થ મનુષ્ય-

૧૯. [પ્ર૦] હે મગલ્લ ! અધોડવધિક-નિયતક્ષેત્રના અવધિજ્ઞાનવાળો-મનુષ્ય જે કોઈ પણ દેવલોકમાં દેવપણે ઉત્પન્ન થવાને યોગ્ય
છે તે ક્ષીણભોગી પુરુષકાર-પરાક્રમવઢે વિપુલ ભોગોને ભોગવવા સમર્થ છે ? [૩૦] આ પ્રમાણે છમ્મસ્થની પેટે યાવત્ તે મહાપર્યવસાન-
મહાફલવાળો થાય છે.

અધોવધિ જ્ઞાની.

૨૦. [પ્ર૦] હે મગલ્લ ! પરમાવધિજ્ઞાની મનુષ્ય જે તેજ મવમાં સિદ્ધ થવાને યાવત્ [સર્વ દુ:ખોનો] અન્ત કરવાને યોગ્ય છે, હે
મગલ્લ ! ય્વરેવર તે ક્ષીણભોગી વિપુલ ભોગોને ભોગવવા સમર્થ છે ? [૩૦] આકીનું સર્વ છમ્મસ્થની પેટે જાણવું.

પરમાવધિ જ્ઞાની.

૨૧. [પ્ર૦] કેવલજ્ઞાની મનુષ્ય જે તેજ મવમાં સિદ્ધ થવાને યાવત્ [દુ:ખોનો] અન્ત કરવાને યોગ્ય છે તે- [વિપુલ ભોગોને
ભોગવવા સમર્થ છે ?] [૩૦] પરમાવધિજ્ઞાની પેટે જાણવું, યાવત્ તે મહાપર્યવસાન-મહાફલવાળો થાય છે.

કેવલજ્ઞાની.

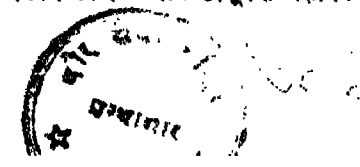
૨૨. [પ્ર૦] હે મગલ્લ ! જે આ *અસંજ્ઞી-મનરહિત પ્રાણીઓ છે, જેમકે, પૃથિવીકાયિકો યાવત્ વનસ્પતિકાયિકો અને છટ્ટા કેટલા
એક (સંમૂર્છિમ) ત્રસજીવો, જેઓ અંધ-અજ્ઞાની, મૂઠ, અજ્ઞાનાન્વચારમાં પ્રવેશ કરેલા, અજ્ઞાનરૂપ આચરણ અને મોહજાલ વઢે ઠંકાયેલા છે
તેઓ અકામનિકરણ-અનિચ્છાપૂર્વક-વેદના વેદે છે એમ કહેવાય ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! જે આ અસંજ્ઞી પ્રાણીઓ પૃથિવીકાયિકો યાવત્
વનસ્પતિકાયિકો અને છટ્ટા [સંમૂર્છિમ ત્રસો] અનિચ્છાપૂર્વક વેદના વેદે છે એમ કહેવાય.

અસંજ્ઞી જીવો અકામ-
પૂર્વક વેદના વેદે ?

૧ ઇણ્ઠે ઘ । ૨ મણુસે ઘ । ૩ મણુસે ઘ । ૪-ચિહ્નકા સ્થ ।

૧૧. * જે અસંજ્ઞી-મનરહિત પ્રાણીઓ છે, તેઓને મમ મહિ હોવાથી ઇચ્છાશક્તિ અને જ્ઞાનશક્તિને અમાલે અકામનિકરણ-અનિચ્છાપૂર્વક અજ્ઞાનપણે
વેદના-સુખદુ:ખનો અનુભવ કરે ? આલો પ્રશ્નો આવાર્થ છે, તેમા સ્વરમાં 'હા' અનુભવ કરે એમ કહ્યું છે.

૪ મ. ૫૦



૨૩. [પ્ર૦] અત્થિ ણં મંતે ! પમ્મુ વિ અકામનિકરણં વેદણં વેદેતિ ? [૩૦] હંતા, ગોયમા ! અત્થિ ।

૨૪. [પ્ર૦] કહં ણં મંતે ! પમ્મુ વિ અકામનિકરણં વેદણં વેદેતિ ? [૩૦] ગોયમા ! જે ણં નો પમ્મુ વિના પેદીવેણં અંધ-કારંસિ રૂવાહં પાસિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ પુરઓ રૂવાહં અણિજ્ઞાહંતા ણં પાસિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ મગ્ગઓ રૂવાહં અણવયવિક્ષતા ણં પાસિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ પાસઓ રૂવાહં ઈણવલોહતા ણં પાસિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ ઉહં રૂવાહં અણાલોપેતા ણં પાસિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ અહે રૂવાહં અણાલોહતા ણં પાસિત્તપ, એસ ણં ગોયમા ! પમ્મુ વિ અકામનિકરણં વેદણં વેદેતિ ।

૨૫. [પ્ર૦] અત્થિ ણં મંતે ! પમ્મુ વિ પકામનિકરણં વેદણં વેદેતિ ? [૩૦] હન્તા, અત્થિ ।

૨૬. [પ્ર૦] કહં ણં મંતે ! પમ્મુ વિ પકામનિકરણં વેદણં વેદેતિ ? [૩૦] ગોયમા ! જે ણં નો પમ્મુ સમુહસ્સ પારં ગમિ-ત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ સમુહસ્સ પારગયાહં રૂવાહં પાસિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ દેવલોગં ગમિત્તપ, જે ણં નો પમ્મુ દેવલોગગયાહં રૂવાહં પાસિત્તપ, એસ ણં ગોયમા ! પમ્મુ વિ પકામનિકરણં વેદણં વેદેતિ । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! સ્તિ ॥

સત્તમસ્સ સયસ્સ સત્તમો ઉદ્દેસઓ સમત્તો ।

સમર્થ છતાં અકામ
વેદના વેદે ?

૨૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! યું એમ છે કે સમર્થ છતાં (સંજ્ઞી છતાં) પણ જીવ અનિચ્છાપૂર્વક વેદનાને વેદે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! હા એમ છે.

સમર્થ છતાં પણ અ-
કામપૂર્વક વેદના કેમ
વેદે ?

૨૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સમર્થ છતાં પણ જીવ અનિચ્છાપૂર્વક વેદનાને કેમ વેદે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જે સમર્થ છતાં અંધકારમાં પ્રદીપ શિવાય રૂપો (પદાર્થો) જોવાને સમર્થ નથી, જે અવલોકન કર્યા શિવાય આગલ રહેલા રૂપો જોવાને સમર્થ નથી, જે અવેક્ષણ કર્યા વિના પાછલ રહેલા રૂપો જોવા સમર્થ નથી, જે આલોચન કર્યા શિવાય ઉપરના રૂપો જોવાને સમર્થ નથી, જે આલોચન કર્યા શિવાય નીચેના રૂપો જોવાને સમર્થ નથી; હે ગૌતમ ! તે આ સમર્થ છતાં પણ અનિચ્છાપૂર્વક વેદનાને વેદે છે.

સમર્થ તીવ્રેચ્છાપૂર્વક
વેદના વેદે ?

૨૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એમ છે કે સમર્થ પણ પ્રકામનિકરણ-તીવ્રેચ્છાપૂર્વક-વેદનાને વેદે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! હા વેદે.

સમર્થ તીવ્રેચ્છાપૂર્વક
વેદનાને કેમ વેદે ?

૨૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સમર્થ છતાં પણ તીવ્રેચ્છાપૂર્વક વેદનાને કેમ વેદે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જે સમુદ્રનો પાર પામવા સમર્થ નથી, જે સમુદ્રને પાર રહેલાં રૂપો જોવા સમર્થ નથી, જે દેવલોકમાં જવા સમર્થ નથી, અને જે દેવલોકમાં રહેલા રૂપોને જોવા સમર્થ નથી; હે ગૌતમ ! તે સમર્થ છતાં પણ તીવ્રેચ્છાપૂર્વક વેદનાને વેદે. હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, [એમ કહી ગૌતમ યાવદ્ વિચરે છે.]

માતમાં શતકમાં સાતમો ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૧ વેદેતિ સ્વ । ૨ દીવેણં ઘ । ૩-જ્ઞાપ્ત્તા સ્વ । ૪ અણુલો-ઘ, અણાલોહતા સ્વ । ૫-પ્યત્તા સ્વ । ૬ અણાલોચતા સ્વ ।

૨૩-૨૪. " જે સંજ્ઞી-મનસહિત-સમર્થ છે, તેઓ પણ અનિચ્છાપૂર્વક અજ્ઞાનપણે સુખદુઃખનો અનુભવ કરે ? હા તેઓ પણ કરે ? હે ભગવન્ ! જેઓ સમર્થ-ઈચ્છાશક્તિ અને જ્ઞાનશક્તિયુક્ત-છતાં તેઓ અનિચ્છાપૂર્વક અજ્ઞાનપણે શી રીતે સુખદુઃખનો અનુભવ કરે ? તેના ઉત્તરમાં કહ્યું છે કે જે સમર્થ (જોવાની શક્તિવાળો) છતાં અંધકારમાં રહેલા પદાર્થોને પ્રદીપ શિવાય જોઈ શકતો નથી, તેમ પાછલ, ડંભે, નીચે રહેલા પદાર્થોને ઉપયોગ-રૂપાલ-શિવાય જોઈ શકતો નથી, તે સમર્થ છતાં-ઈચ્છાશક્તિ અને જ્ઞાનશક્તિયુક્ત છતાં-અજ્ઞાનદશામાં સુખદુઃખનો અનુભવ કરે છે. જ્યારે અસંજ્ઞી જીવ સામાન્યને અભાવે ઈચ્છા અને જ્ઞાનશક્તિરહિત હોવાથી અનિચ્છા અને અજ્ઞાનદશામાં સુખદુઃખ વેદે છે, તેમ સંજ્ઞી ઈચ્છા અને જ્ઞાનશક્તિ હોવા છતાં તે શક્તિની પ્રવૃત્તિને અભાવે અનિચ્છા અને અજ્ઞાનદશામાં સુખ દુઃખ વેદે છે.

૨૫-૨૬. † સંજ્ઞી મનસહિત હોવા છતાં પ્રકામનિકરણ-તીવ્ર અભિલાષપૂર્વક-સુખ દુઃખને વેદે ? હા વેદે. હે ભગવન્ ! શી રીતે વેદે ? તેના ઉત્તરમાં કહ્યું છે કે જે સમુદ્રની પાર જવાને સમર્થ નથી, તેને પાર રહેલા રૂપો જોવાને સમર્થ નથી તે તીવ્ર અભિલાષપૂર્વક સુખ-દુઃખને વેદે છે. અહીં તે ઈચ્છાશક્તિ અને જ્ઞાનશક્તિ સંપન્ન છે, પરંતુ તેને પ્રાપ્ત કરવાનું સામાન્ય નથી, માત્ર તેનો તીવ્ર અભિલાષ છે, તેથી તે સુખદુઃખને વેદે છે. અસંજ્ઞી જીવો ઈચ્છા અને જ્ઞાનશક્તિને અભાવે અનિચ્છા અને અજ્ઞાનપૂર્વક સુખ-દુઃખ વેદે છે. સંજ્ઞી જીવો ઈચ્છા અને જ્ઞાનશક્તિયુક્ત હોવા છતાં ઉપયોગને અભાવે અનિચ્છા અને અજ્ઞાનપૂર્વક સુખ-દુઃખ વેદે છે. બહી સંજ્ઞી જીવો સમર્થ તેમ ઈચ્છાયુક્ત હોવા છતાં પ્રાપ્તિના સામાન્યને અભાવે માત્ર તીવ્ર અભિલાષથી સુખ દુઃખ વેદે છે.

अट्ठमो उद्देशओ ।

१. [प्र०] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं—एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देशए तहा भाणियच्चं, जाव अलमत्थु ।

२. [प्र०] से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेष जीवे ? [उ०] हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य एवं जहा 'रायणसेणरञ्जे' जाव खुद्धियं वा, महालियं वा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समे चेष जीवे ।

३. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सधे से दुक्खे, जे निज्जिभे से सुहे ? [उ०] हंता, गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे जाव सुहे । एवं जाव वेमाणियाणं ।

४. [प्र०] कति णं भंते ! सञ्जाओ पञ्चत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! दस सञ्जाओ पञ्चत्ताओ, तं जहा—आहारसञ्जा, भयसञ्जा, मेहुणसञ्जा, परिग्गहसञ्जा, कोइसञ्जा, माणसञ्जा, मायासञ्जा, लोभसञ्जा, लोगसञ्जा, ओहसञ्जा । एवं जाव वेमाणियाणं ।

५. नेरइया दसविहं वेयणं पञ्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—सीयं, उंसिणं, खुहं, पिवासं, कंडुं, परज्झं, जरं, दाहं, मयं, सोगं ।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! छद्दस्थ मनुष्य अनंत अने शाश्वत अतीत काले केवल मंयम वडे * [यावत् सिद्ध थयो ?] [उ०] ए प्रमाणे जेम प्रथम शतकना चोगा उद्देशकमां † कहं छे तेम यावत् ‡ 'अलमत्तु' पाठ सुधी कहेवुं.

छद्दस्थ मनुष्य केवल संयम वडे सिद्ध थयो ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर हस्ती अने कुंथुनो जीव समान छे ? [उ०] हा गौतम ! हस्ती अने कुंथुनो [जीव समान छे.] जेम 'रायपसेणीय' सूत्रमां कहं छे ते प्रमाणे यावत् 'खुद्धियं वा महालियं वा' ए पाठ सुधी जाणवुं.

हस्ती अने कुंथुनो जीव समान-

३. [प्र०] हे भगवन् ! नारको वडे जे पाप कर्म करायेलुं छे, कराय छे अने कराशे ते सघळुं दुःखरूप छे, अने जे निर्जाण (क्षीण) थयुं ते सुखरूप छे ? [उ०] हा, गौतम ! नारको वडे जे पाप कर्म करायुं [ते दुःखरूप छे, अने जे निर्जाण थयुं] ते यावत् सुखरूप छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

पाप कर्म दुःखरूप-

४. [प्र०] हे भगवन् ! संज्ञाओ केटली कहेली छे ? [उ०] हे गौतम ! दश संज्ञाओ कही छे. जेम, १ आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३ मथुनसंज्ञा, ४ परिग्रहसंज्ञा, ५ क्रोधसंज्ञा, ६ मानसंज्ञा, ७ मायासंज्ञा, ८ लोभसंज्ञा, ९ लोकसंज्ञा, अने १० ओघसंज्ञा. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

दश संज्ञाओ-

५. [प्र०] नारको दश प्रकारनी वेदनानो अनुभव करता होय छे; ते आ प्रमाणे—१ शीत, २ उष्ण, ३ क्षुधा, ४ पिपासा-तरस, ५ कंडू-खरज, ६ परतन्त्रता, ७ अवर, ८ दाह, ९ भय, १० शोक.

नारकोने दश प्रकारनी वेदना-

१ -शुचभव ख । २ उसीणं ख ।

१. * अवशिष्ट अंश—केवल संयम वडे, केवल ब्रह्मचर्य वडे, केवल अष्ट प्रवचनमाताओना पालन वडे सिद्ध थयो, बोध पाम्यो, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त कर्यो ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी.

† शुभो—(पृ. १३० प्र. १३९-१६३.) ‡ अवशिष्ट अंश—[प्र०] उत्पन्न ज्ञानदर्शनने धारण करनारा अरिहंत, जिन, केबली पूर्ण छे एम कहैवाय ? [उ०] हा, गौतम ! उत्पन्न ज्ञान-दर्शनने धारण करनारा अरिहंत जिन केबली अलमत्तु-पूर्ण छे एम कहैवाय.

६. [प्र०] से णूणं मंते ! हस्थिस्स य कुंथुस्स य समा वेव अपत्तककाणकिरिया कज्जति ? [उ०] इंता, गोयमा ! हस्थिस्स य कुंथुस्स य जाव कज्जति । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुब्बह जाव कज्जह ? [उ०] गोयमा ! अविरति पडुब्ब, से तेणट्टेणं जाव कज्जह ।

७. [प्र०] आहाकम्मं णं मंते ! भुंजमाणे किं बंधह, किं पकरेह, किं चिणाह, किं उवचिणाह ? [उ०] एवं जहा पढमे सय नवमे उद्देशय तहा भाणियच्चं, जाव सासय पंडिय, पंडियच्चं असासयं । सेवं मंते !, सेवं मंते ! चि ।

सातमस्स सयस्स अट्ठमो उद्देशो समाप्तो ।

हाथी अने कुंथुने
समान अपत्या-
ख्यान किया.

६. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर हाथी अने कुंथुने अपत्याख्यान क्रिया समान होय ? [उ०] हा, गौतम ! हाथी अने कुंथुने यावत् अपत्याख्यान क्रिया समान होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुर्था एम कहो छो के हाथी अने कुंथुने समान अपत्याख्यान क्रिया होय ? [उ०] हे गौतम ! अविरतिने आश्रयी, ते हेतुर्था यावत् हाथी अने कुंथुने समान अपत्याख्यान क्रिया होय.

आपाकर्म.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आधाकर्म आहारने खानार [साधु] शुं वांधे, शुं करे, शेनो चय करे अने शेनो उपचय करे ? [उ०] जेम प्रथम शतकना नयमां उद्देशकमां कह्युं छे ए प्रमाणे यावत् †पंडित शाश्वत छे, पण पंडितपणुं अशाश्वत छे' त्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे].

सातमां शतकमां आठमो उद्देशक समाप्त.

७. * पृ. २१०. प्र. १०२-१०९. † अवशिष्ट अंश—हे गौतम ! आधाकर्म आहारने खानार [साधु] आयुषकर्म शिवाय सातकर्मनी प्रकृतिओ शिथिलबंधवी बंधायेली होय तो तेनो गाह बन्ध करे छे, यावत् संसारमां भ्रमण करे छे.

‡ अवशिष्ट अंश—हे भगवन् ! अस्थिर वस्तु परावर्तन पामे, स्थिर वस्तु परावर्तन न पामे ? अस्थिर वस्तु मांगे, स्थिर न मांगे ? बालक शाश्वत छे, बालकपणुं अशाश्वत छे ? पंडित शाश्वत छे, पंडितपणुं अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! अस्थिर वस्तु परावर्तन पामे, यावत् पंडितपणुं अशाश्वत छे.

नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] असंबुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरप पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउच्चित्तप ? [उ०] णो तिण्ठे समडे ।

२. [प्र०] असंबुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरप पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं जाव--[उ०] इत्ता, पभू ।

३. [प्र०] से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति ? [उ०] गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, नो अन्नत्थगए पोग्गले जाव विउच्चति । एवं एगवन्नं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्टसए नवमे उद्देशए तहा इहा वि भाणियहं, नवरं अणगारे ईहगयं(ए)इहगए चेष पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति, सेसं तं चेष, जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलसए परिणा-
मेसए ? इत्ता, पभू । से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता, जाव नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउच्चति ।

नवमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! असंबुत-प्रमत्त साधु-बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय एकवर्णवालुं एक रूप विकुर्ववा समर्थं छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थं योग्य नर्था. असंबुत साधु-

२. [प्र०] हे भगवन् ! असंबुत साधु बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी एकवर्णवालुं एक रूप यावत् [विकुर्ववा समर्थं छे !] [उ०] हा, समर्थं छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ते साधु शुं अहीं-मनुष्य लोकमां रहेला-पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे, त्यां रहेला पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे के अन्य स्थले रहेला पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे ? [उ०] हे गौतम ! अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी विकुर्वे, पण त्यां रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी न विकुर्वे, तेम अन्यत्र रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी यावत् न विकुर्वे. ए प्रमाणे एकवर्ण अने अनेकरूप-इत्यादि चतुर्भंगी जेम *छट्टा शतकना नवमां उद्देशकमां कही छे तेम अहीं पण कहेवी; परन्तु एतलो विशेष छे के अहीं रहेलो साधु अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी विकुर्वे, बाकीनुं ते प्रमाणे यावत् 'रूक्खपुद्गलोने निद्धपुद्गलो पणे परिणमाववा समर्थं छे ? हा, समर्थं छे; हे भगवन् ! शुं अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी, यावत् अन्यत्र रहेला पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय विकुर्वे छे' त्यां सुधी जाणवुं.

१ बाहिरप ज । २ परियाइत्ता क । ३ विउच्चति क । ४ इहं इह- क ।

३. *जुओ (पृ. ३३० प्र. २-६).

४. [प्र०] णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विनायमेयं अरहया—महाशिलाकंटक संग्रामे । महाशिलाकंटकं षं मंते ! संग्रामे वदुमाणे के जइत्था, के पराजइत्था ? [उ०] गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्रे जइत्था; नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोस-लगा अट्टारस वि गणरायाणो पराजइत्था । तए णं से कोणिए राया महाशिलाकंटकं संग्रामं उवट्टियं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे संहारवेइ, सहावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! उदाइं हन्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-जोह-कलियं चाडरंगिणि सेणं सन्नाहेह, सन्नाहेत्ता मम एयमाणसियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरित्ता कोणियणं रत्ता एवं पुत्ता समाणा हट्ट-तुट्ट- जाव अंजलिं कट्टु 'एवं सामी, तहत्ति' आणाए चिणणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवपसम-तिकप्पणा—विकप्पेहिं सुनिउणेहिं एवं जहा उववाइए जाव भीमं संगामियं अउज्झं उदाइं हन्थिरायं पडिकप्पेति, हय-गय- जाव सन्नाहेति, संनाहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कर-यल- जाव कूणियस्स रत्तो तमाणसियं पच्चप्पि-णंति । तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसर, मज्जणघरं अणुप्प-विसित्ता प्हाए, कयबलिकम्मे, कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते, सच्चालंकारविभूसिए, सन्नद्ध-बद्ध-वम्मियकवप, उप्पीलियसरास-णपट्टीए, पिण्णगेवेज्ज—विमलवरबद्धचिंधपट्टे, गहियाउहप्पहरणे, संकोरिटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरबाल-वीतियंगे, मंगलजयसइकयालोए एवं जहा उववाइए जाव उवागच्छित्ता उदाइं हन्थिरायं दुरूटे । तए णं से कूणिए राया हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जहा उववाइए जाव सेयवरचामराहिं उडुडुमाणीहिं उडुडुमाणीहिं हय-गय-रहपयरजोहकलियाए

महाशिला कंटक संग्राम.

४. [प्र०] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रत्यक्ष कयुं छे, अर्हते विशेषतः जाण्युं छे के महाशिलाकंटक नामे संग्राम छे. हे भगवन् ! "महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे कोण जीत्या अने कोण हाया ? [उ०] हे गौतम ! वज्जी (इन्द्र) अने विदेहपुत्र (कूणिक) जीत्या, नव मल्लकी अने नव लेच्छकी जेओ काशी अने कोशलदेशना अटार गणराजाओ हता तेओ पराजय पाप्प्या. त्यार पट्टी—महाशिलाकंटक संग्राम विकुर्व्या पट्टी—ते कूणिक राजा महाशिला कंटक नामे संग्राम उपस्थित थण्णे जाणी पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेओने एम कहुं के हे देवानुप्रियो ! शीघ्र उदायि नामना पट्टहस्तीने तैयार करो, अने घोडा, हाथी, रथ अने योधाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार करो, तैयार करी मारी आज्ञा जल्दी पाछी आपो. त्यार बाद ते कूणिकना एम कंहवाथी ने कौटुम्बिक पुरुषो हए तुष्ट थइ यावत अंजली करीने हे स्वामिन् ! ए प्रमाणे 'जेवी आज्ञा' एम कहीने आज्ञा अने विनय वडे वचननो स्वीकार करे छे. वचननो स्वीकार करीने कुशल आचार्योना उपदेश वडे तीक्ष्ण मतिकल्पनाना विकल्पोथी । ओपपातिकमूत्रमां कव्या प्रमाणे यावद् भयंकर अने जेनीं साथे कोइ युद्ध न करी शके एवा उदायि नामना मुख्य हस्तीने तैयार करे छे; घोडा हाथी इत्यादिथी युक्त यावत् [चतुरंग सेनाने तैयार करे छे.] ते सेनाने सज्ज करीने ज्यां कूणिकराजा छे त्यां तेओ आवे छे, आर्वाने करतल [जोडीने] कूणिक राजाने ते आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार बाद ते कूणिक राजा ज्यां खानगृह छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवीने खानगृहमां प्रवेश करे छे, त्यां प्रवेश करी न्हाइ बलिकर्मे (पूजा) करी प्रायश्चित्तरूप (विघ्नोना नाश करनार) कौतुक (मपीतिलकादि) अने मंगलो करी सर्वान्कारथी विभूषित थइ, सन्नद्ध वद्ध थइ वग्नरने धारण करी वाळेला धनुर्दंडने ग्रहण करी, डोकमा आभूषण पहरी, उत्तमोत्तम चिह्नपट्ट वांधी, आयुध अने ग्रहणोने धारण करी, माथे धारण कराता कोरंटक पुष्पनीं मालावाला छत्र सहित, जेनु अंग चार चामरोना वाळ वडे वीजायलुं छे, जेना दर्शनथी मंगल अने जयशब्द थाय छे एवो (कूणिक) । ओपपातिकमूत्रमां कव्या प्रमाणे यावत् आर्वाने उदायिनामे प्रधानहस्ती उपर चढ्यो. त्यार बाद हारवडे तेनुं वक्षःस्थल टंकायेलुं होवाथी रनि उत्पन्न करतो । ओपपातिकमूत्रमां कव्या प्रमाणे वारंवार वीजाना श्वेत चामरो वडे यावत् घोडा, हाथी, रथ अने उत्तम योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनानीं साथे परिवारयुक्त, महान् सुभटोना विस्तीर्ण समूहथी न्याप्त कूणिकराजा ज्यां महाशिलाकंटक

१ जयित्था इव । २ सहावेइ इव । ३ तेणेव उवागच्छित्ता ए । ४ गच्छइ ए । ५ तेणेव उवा- ए । ६ अणुपवि-ए । ७ संकोरंट-क ।

४. * महाशिलाकंटक संग्रामनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—चम्पानगरीमां कूणिक नामे राजा हतो, तेने हल्ल अने विहल्ल नामे बे नाना भाईओ हता, ते बने हमेशा सेवनक गन्धहस्ति उपर बेसी विलास करता, ते जोइने कूणिकराजनी पत्नी पद्यावतीए अदेखाइथी तेनी पासेथी ते हस्ती लइ लेवा माटे कूणिकने कहुं. कूणिके तेओनी पासे हस्तीनी मागणी करी. ते बने भाईओ कूणिकना भयथी नासीने हस्ती अने परिवारसहित बैशाली नगरीमां पोताना मामा चेटक राजानी पासे गया. कूणिके दूत मोकली ते बने भाईओने सौपी देवानी मागणी करी, परन्तु चेटकराजाए सौपवानी ना कही. कूणिके कहेराव्युं के जो तुं ते बने भाईओने न मोकल तो युद्ध करवा तैयार था. चेटकराजाए उत्तर आप्यो हुं तैयार छुं. तेथी कूणिके पोताना कालादि दश भाईओने चेटकराजानी साथे युद्ध करवा बोलाव्या. आ बात जाणीने चेटकराजाए पण अटार गणराजाओने एकठा कय्यो. युद्ध शरु थयुं. चेटकराजने एतुं व्रत (नियम) हतुं ते दिवसमां एकवार एक बाण फेंकता, परन्तु तेनुं बाण कही निष्फल जतुं नहोतुं. कूणिकना सैन्यनो दंडनायक काल नामे तेनो भाइ हतो, ते युद्ध करता चेटकराजानी पासे गयो. चेटके तेने एक बाण वडे पाब्यो, कूणिकजुं सैन्य नाहुं, बने सैन्यो पोताने स्थाने गया. दश दिवसमां चेटकराजाए कूणिकना कालादि दश भाईओनो नाश कय्यो. अगिधारमे दिवसे कूणिके चेटकने जितवा माटे देवतुं आराधन करवा अष्टम (अणु उपवास) तप कयुं तेथी शक अने चमरेऽन्न आब्या. शक्रे कहुं के चेटक परमप्रावक छे तेथी तेने हुं मारीश नहि, पण तारं रक्षण करीश. तेथी ते शक्रे कूणिकनुं रक्षण करवा साह बज्जना जेनुं अभेय कवच कयुं अने वम रेन्द्रे बे संग्राम विकुर्व्या—महाशिलाकंटक अने रथमुशल संग्राम. जुओ—(भ. टी. प. ३१६.)

† जुओ (औप. प. ६२-१). ‡ जुओ (औप. प. ६६-२.) ¶ जुओ (औप. प. ७२-१)

चाउरंगिणीय सेनाय सद्धि संपरिबुडे, महयाभडचडगरबिंदपरिक्खसे जेणेव महासिलाकंटय संगामे तेणेव उवागच्छइ, उंवा-
गच्छिता महासिलाकंटय संगामं ओयाए । पुरओ य से सके देविंदे देवराया एगं महं अमेज्जकवयं वहरपडिरुवगं विउव्विसा
वं चिद्धइ । एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य । एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पैरा
जिणिसए । तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटक संगामं संगामेमाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्टारस वि
गणरायाणो हयमहियपवरवीरघाइय-वियडियचिंधयपडागे किच्छपाणगए विसो दिंसि पडिसेहिट्था ।

५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुधइ महासिलाकंटय संगामे ? [उ०] गोयमा ! महासिलाकंटय णं संगामे वट्टमाणे
जे तत्थ आसे वा, इत्थी वा, जोहे वा, सारही वा तणेण वा, पसेण वा, कट्टेण वा, सक्कराए वा, अभिहम्मति सधे से
जाणेइ महासिलाए अहं अभिहए, से तेणट्टेणं गोयमा ! महासिलाकंटय संगामे ।

६. [प्र०] महासिलाकंटय णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ व्हियाओ ? [उ०] गोयमा ! चउरासीइं
जणसयसाहस्सीओ व्हियाओ ।

७. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला, जाव निप्पच्चक्खाणपोसहो-ववासा, रुद्धा, परिकुविया, समरवहिया, अणुं-
संता कालमासे कालं किष्वा कहि गया, कहि उववक्का ? [उ०] गोयमा ! ओसभं नरग-तिरिक्खजोणिपसु उववक्का ।

८. [प्र०] णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विभायमेयं अरहया—रहमुसले संगामे । रहमुसले णं भंते ! संगामे
वट्टमाणे के जइत्था, के पराजइत्था ? [उ०] गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नवमल्लई, नव
लेच्छई पराजयित्था । तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्टियं, सेसं जहा महासिलाकंटय, नवरं भूयाणंदे हत्थिराया
जाव रहमुसलं संगामं ओयाए । पुरओ य से सके देविंदे देवराया, एवं तहेव जाव चिद्धति; मग्गओ य से चमरे असुरे
असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयासं किडिणपडिरुपगं विउव्विसा णं चिद्धइ । एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेति, तं
जहा—देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य । एग हत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए, तहेव जाव विसोदिसि पडिसेहिट्था ।

संग्राम छे त्या आवे छे, त्यां आर्विने ते महाशिलाकंटक संग्राममां उतर्यो, तेनी आगळ देवनो इन्द्र देवनो राजा शक्र एक मोटुं वज्रना सरखुं अमेघ
कवच (बल्लर) विकुर्वीने उभो छे. ए प्रमाणे बे इन्द्रो संग्राम करे छे, जेमके एक देवेन्द्र अने बीजो मनुजेन्द्र. हवे ते कूणिक राजा
एक हाथी वडे पण शत्रुपक्षनो पराजय करवा समर्थ छे. त्यार बाद ते कूणिके महाशिलाकंटक संग्रामने करता नवमल्लिकि अने नव-
लेच्छिकि जेओ काशी अने कोसलाना अट्टार गणराजाओ हता, तेओना महान् योद्धाओने हण्पा, घायल कर्या अने मारी नाख्या, तेओनी
चिह्नयुक्त ध्वजा अने पताकाओ पाडी नांवी, अने जेओना प्राण मुक्केलीमां छे एवा तेओने [युद्धमांथी] चारे दिशाए नसाडी मुक्या.

५. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी एम कहेवाय छे के ते महाशिलाकंटक संग्राम छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे महाशिलाकंटक
संग्राम थतो हतो त्यारे ते संग्राममां जे घोडा, हाथी, योधा अने सारथिओ तृण, काष्ठ, पांढडा के कांकरा वती हणाय त्यारे तेओ सघळा
एम जाणे के हुं महाशिलाथी हणायो, ते हेतुथी हे गौतम ! ते महाशिलाकंटक संग्राम कहेवाय छे.

महाशिला कंटक
शाथी कहेवाय छे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे तेमां केटल लाख माणसो हणायो ? [उ०] हे गौतम !
चोराशी लाख माणसो हणायो.

महाशिला कंटकमां
केटल लाख माण-
सोको संहार थयो ?
मरीने तेओ कथां
उत्पन्न थयां ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! निःशील, यावत् प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासरहित, रोपे भरायेंला, गुस्से थयेला, युद्धमां घायल थयेला,
अनुपशात एवा ते मनुष्यो कालसमये मरण पामीने कथां गया, कथां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! घणे भागे तेओ नारक अने तिर्यचयो-
निमां उत्पन्न थया छे.

८. [प्र०] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रत्यक्ष कर्युं छे, अर्हते विशेष प्रकारे जाण्युं छे के रथमुशल नामे संग्राम छे. हे भगवन् !
ज्यारे रथमुशल नामे संग्राम थतो हतो त्यारे कोनो विजय थयो, अने कोनो पराजय थयो ? [उ०] हे गौतम ! वज्जी (इन्द्र), विदेहपुत्र
(कूणिक) अने असुरेन्द्र असुर कुमारराजा चमर एओ जीत्या; नव मल्लिकि अने नव लेच्छिकि राजाओ पराजय पाव्या. त्यार बाद ते
कूणिकराजा रथमुशल संग्राम उपस्थित थयेलो जाणी [पोताना कौटुम्बिक पुरुपोने बोलावे छे]. वाकीनुं [सर्व वृत्तान्त] *महाशिलाकंटक
संग्रामनी पेटे जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के अर्ही भूतानंद नामे प्रधान हस्ती छे; यावत् ते [कूणिक] रथमुशलसंग्राममां उतर्यो.
तेनी आगळ देवेन्द्र देवराज शक्र छे. ए प्रमाणे पूर्वनी पेटे यावत् रहे छे. पाछळ असुरेन्द्र असुरकुमारनो राजा चमर एक मोटुं लोढानुं
किडीनना जेवुं कवच विकुर्वीने रहेलो छे. ए प्रमाणे खरेखर व्रण इन्द्रो युद्ध करे छे. जेमके—देवेन्द्र, मनुजेन्द्र अने असुरेन्द्र. हवे ते
कूणिक एक हाथीवडे पण शत्रुओनो पराजय करवा समर्थ छे. यावत् तेणे पूर्वे कहा प्रमाणे [शत्रुओने] चारे दिशाए नसाडी मुक्या.

रथमुशलसंग्राम.
कोनो जय अने
कोनो पराजय ?

१ तेणेव उवा- घ । २ चिद्धति घ । ३ पराजइत्तए क । ४ -मूलले ख । ५ - घ । मूललं ६ भूयाणंदे ख । ७ जयत्तए ख ।

* बुधो (घ, ४). ८. † किडिन-वांसनुं वनावेळें तापसवुं पात्र.—टीका.

९. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धं रहमुसले संगामे ? [उ०] गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे वणे एहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणकखयं, अहवहं, जणप्पमहं, जणसंवट्टकप्पं दहिरकहंमं करेमाणे सव्वओ समंता परिधावित्था, से तेणट्टेणं जाव रहमुसले संगामे ।

१०. [प्र०] रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? [उ०] गोयमा ! छण्णउत्ति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।

११. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव उववन्ना ? [उ०] गोयमा ! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छीए कुच्छिसि उववन्नाओ, एगे देवलोगेसु उववन्ने, एगे सुकुले पच्चायाए; अवसेसा ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ।

१२. [प्र०] कग्घा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियरओ साहेज्जं दलियित्था ? [उ०] गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुच्चसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए; एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रओ साहेज्जं दलियित्था ।

१३. [प्र०] बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमोइक्खति, जाव पंरुवेइ—एवं खलु बहुवे मणुस्सा अन्नयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पट्टया समाणा कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवताए उववन्तारो भवंति, से कहमेयं भंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जणं से बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खति—जाव उववन्तारो भवंति; जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवं आइक्खामि, जाव पंरुवेमि—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं, तेणं समपणं वेसाली नामं नगरी होत्था । वन्नओ, तत्थ णं वेसालीए णगरीए वरणे नामं नागनत्तुए परिवसइ, अहे जाव अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे, जाव पड्डिलाभेमाणे छट्ठं छट्ठेणं अभिखिस्सेणं तवोकम्मेणं अप्पार्णं भावेमाणे विहरति । तए णं से वरणे णागणत्तुए अन्नया कयाइं रायाभिओगेणं, गणाभिओगेणं, बल्लभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठमत्तिए अट्टमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टेत्ता

रथमुशल संग्राम
कायी कहेवाय छे ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी ते रथमुशल संग्राम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे रथमुशलसंग्राम यतो हतो त्यारे अश्वरहित, सारथिरहित, योधाओ रहित अने मुशलसहित एक रथ घणा जनसंहारने, जनवधने, जनप्रमर्दने, जनप्रलयने, तेम लोहिना कीचडने करतो चारे तरफ चारे बाजुए दोडे छे; ते कारणथी यावत् ते रथमुशलसंग्राम कहेवाय छे.

मनुष्योसो संहार.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे रथमुशल संग्राम यतो हतो त्यारे केटला लाख माणसो हणाया ? [उ०] हे गौतम ! छन्नं लाख माणसो हणाया.

सेजो मरीने क्यां
उत्पन्न थया ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! शीलरहित ते मनुष्यो यावत् क्यां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! तेमां दश हजार मनुष्यो एक माल्लीना उदरमां उत्पन्न थया, एक देवलोकमां उत्पन्न थयो, एक उत्तम कुलने विषे उत्पन्न थयो, अने बाकीना मनुष्यो घणे भागे नारक अने तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थया.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! देवना इन्द्र देवना राजा शक्रे अने असुरना इन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजाने केम सहाय आपी ? [उ०] हे गौतम ! देवनो इन्द्र देवनो राजा शक्र कूणिकराजानो पूर्यसंगतिक-पूर्यभवर्गबन्धी मित्र-हतो, अने असुरेन्द्र असुरकुमारनो राजा चमर कूणिक राजानो पर्यायसंगतिक-तापसनी अवस्थामां मित्र-हतो, तेथी हे गौतम ! ए प्रमाणे देवना इन्द्र देवना राजा शक्रे अने असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजाने सहायता आपी.

शुं युद्धमां हणायेला
खमें जाय ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के-अनेक प्रकारना संग्रामोमांना कोइ पण संग्राममां सामा (युद्ध करता) हणायेला घायल थयेला घणा मनुष्यो मरणसमये काळ करीने कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे, हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होय ? [उ०] हे गौतम ! ते बहु मनुष्यो परस्पर जे ए प्रमाणे कहे छे के-यावत् तेओ देवपणे उत्पन्न थाय छे; पण जेओए ए प्रमाणे कहुं छे तेओए ए प्रमाणे मिथ्या कहुं छे. हे गौतम ! हुं तो आ प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपणा करुं छुं. हे गौतम ! ते आ प्रमाणे-ते काळे अने ते समये वैशाली नामे नगरी हती. वर्णन. ते वैशाली नगरीमां वरणनामे नागनो पौत्र रहेतो हतो, ते धनवान्, यावत् जेनो पराभव न थइ शके एवो (समर्थ) हतो. ते श्रमणोसो उपासक, जीवाजीव तत्त्वने जाणनार, यावत् [आहारादिवडे] प्रतिलाभतो-सत्कार करतो-निरन्तर छट्ट छट्टना तप करवा वडे आत्माने वासित करतो विचरे छे. त्यार बाद ज्यारे ते नागना पौत्र वरणने राजाना अभियोगथी (आदेशथी), गणना अभियोगथी, बल्लना अभियोगथी रथमुशल संग्राममां जवा माटे आज्ञा थइ त्यारे पष्ठभक्त करनार

ते मिथ्या छे.

नागनो पौत्र वरण.

रथमुशल संग्राममां
जवामी तैयारी.

१ छन्नवर्ति क विनाइय्यव । २ मच्छिवाए क । ३ दलियित्था ख । ४ -माइक्खंति ख-ख । ५ पंरुवेति ख । ६-माहिंसु ख ।

१३. * जुओ (गीता अ. २ श्लो. ३७).

कोटुंबियपुरिसे सहावेह, सहाविता एवं वधासी-क्षिप्यामेव मो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटे आसरहं जुत्तामेव उवद्दावेह, हय-गय-
 र्हं० जाव सहाहेसा मम पयं आणसियं पच्चप्पिणह । तप णं ते कोटुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेसा क्षिप्यामेव सच्छत्तं सज्जयं जाव
 उवद्दावेहि, हय-गय-रहं० जाव सहाहेति, सहाहिता जेणेव वरुणे नागनसुप, जाव पच्चप्पिणति । तप णं से वरुणे नागनसुप जेणेव
 मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, जहा कूणिओ, जाव -पायच्छित्ते, सञ्चालंकारविभूसिप, सन्नद्ध-बन्धे सकोरंटमल्लदामेणं जाव
 वरिज्जामाणेणं, मणेगणनायक० जाव दूय-संधिपालसद्धिं संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिस्ता जेणेव वाहि-
 रिता उवद्दावसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता चाउग्घंटे आसरहं दुंरुहर, तुरुहिता हय-गय-
 रहं० जाव संपरिवुडे, महयामउच्चडगर- जाव परिच्छित्ते जेणेव र्हमुसले संगामे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता र्हमुसलं
 संगामं ओयाओ । तप णं से वरुणे नागनसुप र्हमुसलं संगामं ओयाप समाणे अयमेयारुवं अभिग्गहं अभिगेण्हर- कप्पति मे
 र्हमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुं विं पडिण्हसप, अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारुवं अभिग्गहं अभिगेण्हर,
 अभिगेण्हेसा र्हमुसलं संगामं संगामेति । तप णं तस्स वरुणस्स नागनसुपस्स र्हमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे
 सरिसप, सैरिसत्तप, सैरिसत्तप, सरिसमंडमत्तोवगरणे र्हेणं पडिरहं हहं आगप । तप णं से पुरिसे वरुणं नागनसुपं एवं
 वधासी-पहण मो वरुणा ! नागनसुया । तप णं से वरुणे नागनसुपं तं पुरिसं एवं वधासी-नो खलु मे कप्पह देवाणुप्पिया !
 पुं विं अहयस्स पहणिसप, तुमं चेव णं पुं विं पहणाहि । तप णं से पुरिसे वरुणे नागनसुपं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव
 मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसह, धणुं परामुसिता उहुं परामुसह, उहुं परामुसिता ठाणं ठाति, ठाणं ठिष्ठा आययकजाययं उहुं
 करेह, आययकजाययं उहुं करिस्ता वरुणं नागनसुपं गाढप्पहारीकरेह । तप णं से वरुणे नागसुपं तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकप
 समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसह, धणुं परामुसिता, उहुं परामुसह, उहुं परामुसिता आययकजाययं उहुं
 करेह, आययकजाययं उहुं करेस्ता तं पुरिसं एगाह्वं कूडाह्वं जीवियाओ ववरोवह । तप णं से वरुणे नागनसुपं तेणं पुरिसेणं
 गाढप्पहारीकप समाणे अस्थामे, अबले, अवीरिप, अपुरिसकारपरकमे अधारणिज्जमिति कहुं तुरप निगिण्हह, तुरप निगिण्हिता
 र्हं परावत्तेह, र्हं परावत्तिता र्हमुसलाओ संगामाओ पडिणिक्खमति, पडिनिक्खमिस्ता एगतमंतं अवक्कमह, एगतमंतं अवक्क-

ते [वरुण] अष्टमभक्तने वधारे छे, अने अष्टमभक्तने वधारीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कहुं के हे देवानु-
 प्रियो ! चारघंटावाळा अश्वरथने सामग्रीसहित हाजर करो; अने घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर-[योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार
 करो], यावत् तैयार करिने ए मारी आज्ञा पाछी आपो. ल्यार पछी ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् तेनो स्वीकार करिने छत्रसहित, ध्वजासहित
 [रथने] शीघ्र हाजर करे छे; घोडा, हाथी, रथ-[अने प्रवर योद्धाओ सहित सेनाने] यावत् तैयार करे छे; तैयार करी ज्यां नागनो
 पौत्र वरुण छे [त्यां आधी] आज्ञा पाछी आपे छे. ल्यार पछी ते नागनो पौत्र वरुण ज्यां ज्ञानगृह छे त्यां आवे छे, आवीने कूणिकनी
 पेठे यावत् कौतुक (मणीतिलकादि) अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करीने सर्वालंकारथी विभूषित थयेलो कवचने पहेरी बांधी, कोरंटनी
 माळ्ययुक्त धारणकराता छत्र वडे सहित अनेक गणनायको यावत् दूत अने संधिपालनी साथे परिवरेलो ज्ञानगृहथी बहार नीकळे छे.
 बहार नीकळीने, ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे, ज्यां चारघंटावाळो अश्वरथ छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने चारघंटावाळ अश्वरथ उपर
 चढे छे, चढीने घोडा, हाथी, रथ-[अने प्रवर योद्धावाळी सेना] साथे महान् सुभटोना समूह वडे यावत् विंटायेलो ज्यां रथमुशाल संग्राम छे
 त्यां आवे छे, अने त्यां आवी ते रथमुशाल संग्राममां उतर्यो. ज्यारे नागनो पौत्र वरुण रथमुशाल संग्राममां उतर्यो ल्यारे ते आवा प्रकारना
 आ अभिग्रहने ग्रहण करे छे-‘रथमुशाल संग्राममां युद्ध करता मने जे पहेला मारे तेने मारवो कल्पे, वीजाने मारवा कल्पे नहिं’. आवा
 प्रकारना आ अभिग्रहने धारण करी ते रथमुशाल संग्राम करे छे. ल्यार बाद रथमुशाल संग्राम करता नागना पौत्र वरुणना रथनी सामे
 तेना जेवो समानवयवाळो, समानत्वचावाळो अने समान अस्त्रशस्त्रादिउपकरणवाळो एक पुरुष रथमां बेसीने शीघ्र आच्यो. ल्यार बाद
 ते पुरुषे नागना पौत्र वरुणने एम कहुं के हि नागना पौत्र वरुण ! तुं मने प्रहार कर’. ल्यारे ते नागना पौत्र वरुणे ते पुरुषने एम कहुं
 के हि देवानुप्रिय ! ज्यां सुधी हुं प्रथम न हणाउं त्यां सुधी मारे प्रहार करवो न कल्पे, माटे पहेलां तुंज प्रहार कर’. ज्यारे ते नागना
 पौत्र वरुणे ते पुरुषने एम कहुं ल्यारे ते कुपित थयेलो क्रोधाम्निथी दीपतो धनुषूने ग्रहण करे छे, धनुषूने ग्रहण करी बाणने ग्रहण करे छे,
 बाणने ग्रहण करी अमुक स्थाने रहीने तेने कानपर्यंत लांबुं खेचे छे; लांबुं खेचीने ते नागना पौत्र वरुणने सख्त प्रहार करे छे. ल्यारबाद ते
 पुरुषथी सख्त घवायेल नागनो पौत्र वरुण कुपित थइ यावत् क्रोधाम्निथी दीपतो धनुषूने ग्रहण करे छे, धनुषूने ग्रहण करी बाणने ग्रहण करे
 छे, बाणने ग्रहण करी तेने कानपर्यंत लांबुं खेचे छे, खेचीने ते पुरुषने एक घाप पत्थरना टुकडा थाय तेम जीवितथी जूदो करे छे. हवे ते
 पुरुषथी सख्त घवायेल ते नागनो पौत्र वरुण शक्तिरहित, निर्बल, वीर्यरहित, पुरुषार्थ अने पराक्रमरहित थयेलो पोते ‘टकी नहिं शके’ एम
 संजयी घोडाओने धोमावे छे, थोभावीने रथने पाछो फेरवे छे, रथने पाछो फेरवीने रथमुशाल संग्रामथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळी एकान्त

वरुणनो अभिग्रह-

युद्धमां वरुणने सख्त प्रहार.

वरुणं युद्धमां वी पात्र करहं.

१ वरुण- घ । २ छे घ । ३ नाम वा- न । ४ हुक्क- घ । ५ र्हमुस- ख । ६ सरिसप घ । ७ सरिष्य घ ।
 ५ म० ६०

મિત્તા તુરપ નિગિણ્હર, તુરપ નિગિણ્હિત્તા રહં ઠવેર, રહં ઠવેસ્તા, રહાઓ પંચોરહર, રહાઓ પંચોરહિત્તા તુરપ મોષ્ય, તુરપ મોષ્તા તુરપ વિસજ્જેર, તુરપ વિસજ્જિત્તા વ્ખ્મસંથારણં સંથર, સંથરિત્તા વ્ખ્મસંથારણં દુરહર, વ્ખ્મસંથારણં દુરહિત્તા, પુરંથામિમુહે સંપલિયંકનિસલ્લે કરયલ-જાવ કદુ એવં વયાસી- નમોત્થુ ણં અરિહંતાણં ભગવંતાણં, જાવ સંપસાણં; નમોત્થુ ણં સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ, આરુગરસ્સ, જાવ સંપાવિડકામસ્સ, મમં ધમ્માયરિયસ્સ, ધમ્મોવદેસગસ્સ; વંદામિ ણં ભગવંતં તત્થગયં રહગપ, પાસડ મે સે ભગવં તત્થગપ, જાવ વંદતિ, નમંસતિ, વંદિત્તા, નમંસિત્તા એવં વયાસી-પુષ્ઠિ પિ મપ સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિપ થૂલપ પાણાદવાપ પચ્ચક્ષાપ જાવજ્જીવાપ, એવં જાવ થૂલપ પરિગ્ગહે પચ્ચક્ષાપ જાવજ્જીવાપ; રૂયાણિ પિ ણં અંહં તસ્સેવ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિપ સઘ્ગં પાણાતિવાયં પચ્ચક્ષામિ જાવજ્જીવાપ, એવં જહા વંદઓ, જાવ એવં પિ ણં ચરમેહિં ઝસાસ-નીસાસેહિં વોસિરિસ્સામિ સિ કદુ સન્નાહપટ્ટં મુયર, મુરત્તા સહુરુરણં કરેતિ, સહુરુરણં કરેત્તા આલોહયપડિકંતે, સમાહિપસે, આણુપુટ્ટીપ કાલગપ । તપ ણં તસ્સ વરુણસ્સ ણાગણત્તુયસ્સ એમે પિયબાલવયંસપ રહમુસલં સંગામં સંગામેમાણે એમેણં પુરિસેણં ગાહપ્પહારીકપ સમાણે અત્થામે અબલે જાવ અધારણિજ્જમિતિ કદુ વરુણં ણાગણત્તુયં રહમુસલાઓ સંગામાઓ પડિણિક્ષમમાણં પાસર, પાસિત્તા તુરપ નિગેણ્હર, તુરપ નિગેણ્હિત્તા જહા વરુણે જાવ તુરપ વિસજ્જેતિ, પંડસં-થારણં દુરહર, પંડસંથારણં દુરહિત્તા પુરંથામિમુહે જાવ અંજલિં કદુ એવં વયાસી- જાંરં ણં મંતે ! મમ પિયંબાલવયંસસ્સ વરુણસ્સ નાગણત્તુયસ્સ સીલારં, વયારં, ગુણારં, વેરમણારં, પચ્ચક્ષાણ-પોસહોવવાસારં, તારં ણં મમં પિ ભવંતુ સિ કદુ સન્ના-હપટ્ટં મુયર, મુરત્તા સહુરુરણં કરેતિ, સહુરુરણં કરેત્તા આણુપુટ્ટીપ કાલગપ । તપ ણં તં વરુણં ણાગણત્તુયં કાલગયં જાણિત્તા અહાસભિહિપહિં ઘાણમંતરેહિં દેવેહિં દિષ્ઠે સુરભિગંધો-દગવાસે વુટ્ટે, વસઘ્ગવચ્ચે કુસુમે નિવાડિપ, દિષ્ઠે ય ગીય-ગંધવ્વનિનાદે કપ યા વિ હત્થા । તપ ણં તસ્સ વરુણસ્સ ણાગણત્તુયસ્સ તં દિઘં દેવિહિં, દિઘં દેવજ્જુતિં, દિઘં દેવાણુમાગં સુણિત્તા ય પાસિત્તા ય વહુજ્જો અન્નમન્નસ્સ એવં આરુક્કર, જાવ પરુવેતિ-એવં સલુ દેવાણુપ્પિયા ! બહવે મણુસ્સા જાવ ઉવવસારો ભવંતિ ।

भागमां आवे छे, एकान्त भागमां आवी घोडाओने थोभावे छे, थोभावी रथने उभो राखे छे, उभो राखी रथयी उतरे छे, उतरीने रथयी घोडाओने छुटा करे छे, छुटा करी घोडाओने विसर्जित करे छे; विसर्जित करी डामनो संथारो पाथरे छे, डामनो संथारो पाथरी पूर्वदिशा सन्मुख ते डामना संथारा उपर बेसे छे. पूर्वाभिमुख पर्यकासने डामना मंथारा उपर बेसी हाथ जोडी यावत् ते नागनो पौत्र वरुण आ प्रमाणे बोल्यो-पूज्य अर्हतोने नमस्कार थाओ, यावत् जेओ [सिद्धिगतिने] प्राप्त थया छे. श्रमण भगवान् महावीरने नमस्कार थाओ, जे तीर्थनी आदि करनारा छे, यावत् [सिद्धिने] प्राप्त करवानी इच्छावाळा छे; जे मारा धर्माचार्य अने धर्मना उपदेशक छे. त्यां रहेला भगवानने अहीं रहेलो हुं वाहुं छुं. त्यां रहेला भगवान् मने जुओ. यावत् वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने ते [वरुण] आ प्रमाणे बोल्यो-पहेलां में श्रमण भगवान् महावीरनी पासे जीवनपर्यंत स्थूलप्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान कर्युं हतुं, ए प्रमाणे यावत् स्थूल परिग्रहनुं प्रत्याख्यान जीवनपर्यंत कर्युं हतुं, अत्यारे अरिहंत भगवान् महावीरनी पासे सर्व प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान यावज्जीव करुं छुं. ए प्रमाणे *स्कन्दकनी पेठे सर्व जाणवुं. आ शरीरनो पण छेला आसोच्छ्वासनी साथे त्याग करीश, एम धारी सन्नाहपट्ट-बस्तरने छोडे छे, बस्तरने छोडीने [बाणादिना] शल्यने बहार काढे छे, बहार काढीने आलोचना लइ प्रतिक्रान्त थइ-पडिक्की समाधिने प्राप्त थयेलो ते कालधर्म पाम्यो. हवे ते नागना पौत्र वरुणनो एक प्रिय बालमित्र रथमुशाल संप्राम करतो हतो, ज्यारे ते एक पुरुषयी सल्ल वायल थयो, त्यारे ते शक्तिरहित, वल्लरहित यावत् पोते 'टकी नहिं शके' एम समजी नागना पौत्र वरुणने रथमुशाल संप्रामथी बहार नीकळता जुए छे, जोइने ते घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने वरुणनी पेठे यावत् घोडाओने विसर्जित करे छे, अने पटना (वल्लना) संथारा उपर बेसे छे. संथारा उपर पूर्वदिशा सन्मुख बेसीने यावत् अंजली करीने आ प्रमाणे बोल्यो-हे भगवन् ! मारा प्रिय बालमित्र नागना पौत्र वरुणना जे शीलव्रतो, गुणव्रतो, विरमणव्रतो, प्रत्याख्यान अने पोपधोपवास होय ते मने पण हो, एम कही वस्तरने छोडे छे, छोडीने शल्यने काढे छे, शल्यने काढीने ते अनुक्रमे कालधर्म पाम्यो. हवे ते नागना पौत्र वरुणने मरण पामेलो जाणीने पासे रहेला वानव्यंतर देवोए तेना उपर दिव्य अने सुगंधी गंधोदकनी वृष्टि करी, पांच वर्णना फुलो तेना उपर नांख्या, तथा दिव्य गीत गान्धर्वनो शब्द पण कर्यो. त्यार बाद ते नागना पौत्र वरुणनी दिव्य देवार्द्धि, दिव्य देवद्युति अने दिव्य देवप्रभाव सांभळीने अने जोइने घणा माणसो परस्पर एम कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के-हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे घणा मनुष्यो यावत् देवलोकमां उत्पन्न थाय छे.

सर्व प्राणाति-
पातानि विरमण-

गंधोदक तथा
वृष्टि.

૧ પંચોરહમતિ ક. ૨ પુરંથામિ- ઘ. ૩ મમં સ્સ. ૪ ણં તસ્સેવ ઘ. ૫ અરિહંતાસ્સેવ ઘ. ૬ અતિયં ઘ. ૭ પડિહં-ક
વિનાસવ્વ. ૮ દુરહર ક, દુરહર ઘ. ૯ દુરહિ-સ, દુરહિ-ઘ. ૧૦ જવણં-સ. ૧૧ પ્પિય-સ. ૧૨ આણુપુટ્ટિપ ઘ ।

૧૩. *જુઓ (મ. શ. ૨. ઠ. ૧ ધ. ૨૪૪)

१४. [प्र०] वरुणे णं भंते ! नागनसुय कालमासे कालं किञ्चा कर्हि गय, कर्हि उचवन्ने ? [उ०] गोयमा ! लोहम्मे कप्ये, अरुणामे विमाने देवत्ताय उचवन्ने, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं अत्तारि पल्लिओवमाणि डिती पण्णत्ता, तत्थ णं वरुण-
त्ताय कि देवत्ताय अत्तारि पल्लिओवमाहं डिती पण्णत्ता । से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं,
सिद्धिक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिद्धिहिति, जाव अंतं करेहिति ।

१५. [प्र०] वरुणस्स णं भंते ! नागणसुयस्स पियवालवयंसय कालमासे कालं किञ्चा कर्हि गय, कर्हि उचवन्ने ?
[उ०] गोयमा ! सुकुले पञ्चायाते ।

१६. [प्र०] से णं भंते ! तभोहितो अणंतरं उच्चहिता कर्हि गच्छिहिति, कर्हि उच्चवज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! महावि-
देहे वासे सिद्धिहिति, जाव अंतं काहिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! प्ति ।

सत्तमसयस्स नवमओ उद्देशओ समत्तो ।

१४ [प्र०] हे भगवन् ! नागनो पौत्र वरुण मरणसमये मरीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म देवलोकने
विषे अरुणाभनामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थयो छे. त्यां केटलाक देवोनी आयुष्नी स्थिति चार पल्योपमनी कही छे. त्यां वरुणदेवनी पण
चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते वरुणदेव देवलोकथी आयुष्नी क्षय थवाथी, भवनो क्षय थवाथी, स्थितिनो क्षय
थवाथी—[क्यां जशे ?] [उ०] यावत् महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिने पामशे, यावत् [सर्वं दुःखोनी] अन्त करशे.

वरुण मरीने क्यां
गयो ?

वरुण देवलोकथी
क्षय थवाथी.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! नागना पौत्र वरुणनो प्रिय बालमित्र मरणसमये मरण पामीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे
गौतम ! ते कोह सुकुलमां उत्पन्न थयो छे.

वरुणनो मित्र
मरीने क्यां गयो ?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! त्यांथी मरीने तुरत ते [वरुणनो बाल मित्र] क्यां जशे ? [उ०] हे गौतम ! ते महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने
पामशे, यावत् [सर्वं दुःखोनी] अन्त करशे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, [एम कही गौतम यावत् विचरे छे]

वरुणनो मित्र
त्यांथी क्यां जशे ?

सातमा शतकनो नवमो उद्देशक समाप्त.

दसमो उद्देशो.

१. तेणं कालेणं, तेणं समपणं रायगिहे नामं नगरे होत्था, वन्नओ । गुणसिलए चेइए, वन्नओ । जाव पुढविसि-
लापंइओ, वंन्नओ । तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते वड्ढे अन्नउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई,
सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अन्नवालए, सेलैवालए, संखवालए, सुहत्थी गाहावई । तए णं तेसि अन्नउत्थियाणं
अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं, सन्नविट्ठाणं, सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु
समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, जाव आगासत्थिकायं । तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि
अत्थिकाए अजीवकाए पन्नवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं पोग्गलत्थिकायं; एणं च णं समणे
णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पन्नवेति । तत्थ णं समणे णायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पन्नवेति, तं जहा—
धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं; एणं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं
पन्नवेति । से कहमेयं मत्ते एवं ? तेणं कालेणं, तेणं समपणं समणे भगवं महावीरे जाव गुणसिलए चेइए समोसडे ।
जाव परिस्ता पडिगया । तेणं कालेणं, तेणं समपणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेघासी इंदभूर्ई णामं अणगरे
गोयमगोसे णं, एवं जहा वित्तियसए नियंतुहेसए जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त-पाणं पडिग्गाहिस्ता रायगि-
हाओ नगराओ जाव अनुरियं, अच्चवलं, असंभंतं जाव रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेसि अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईव-
यति । तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासंति, पासेत्ता अन्नमन्नं सहावेति, अन्नमन्नं सहावित्ता

दसमो उद्देशक.

१. ते काले ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणशील चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते गुणशील
चैत्यनी पासे थोडे दूर घणा अन्यतीर्थिको रहे छे. ते आ प्रमाणे—कालोदायी, शैलोदायी, सेवालोदायी, उदय, नामोदय, नर्मोदय, अन्य-
पालक, शैलपालक, संखपालक अने सुहस्ती गृहपति. त्थार पट्टी अन्य कोइ समये एकत्र आवेला, बेटेला, सुखपूर्वक बेटेला ते अन्य
तीर्थिकोनी आवा प्रकारनी आ वार्तालाप थयो—'श्रमण ज्ञातपुत्र (महावीर) पांच अस्तिकायोने प्ररूपे छे. जेमके, धर्मास्तिकाय, यावत्
आकाशास्तिकाय. तेमां श्रमण ज्ञातपुत्र चार अस्तिकाय अजीवकाय छे एम जणावे छे. जेम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति-
काय अने पुद्गलास्तिकाय. एक जीवास्तिकायने श्रमण ज्ञातपुत्र अरूपी जीवकाय जणावे छे. ते पांच अस्तिकायमां श्रमण ज्ञातपुत्रं चार
अस्तिकायने अरूपिकाय जणावे छे. जेम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने जीवास्तिकाय. एक पुद्गलास्तिकायने श्रमण
ज्ञातपुत्र रूपिकाय अने अजीवकाय जणावे छे'. ए प्रमाणे आ केम मानी शकाय ? ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर यावत्
गुणशील चैत्यमां समोसया. यावत् परिषत् [वंदन करीने] पाळी गइ. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना मोटा शिष्य
गौतमगोत्री इन्द्रभूति नामे अनगर बीजा शतकना निर्ग्रन्थोद्देशकमां कया प्रमाणे भिक्षाचर्याए भमता यथापर्याप्त भक्त पानने ग्रहण करीने
राजगृहनगर थकी यावत् त्वरारहितपणे, अचलपणे, असंभ्रान्तपणे ईर्या समित्तिने वारंवार शोधता ते अन्यतीर्थिकोनी थोडे दूर जाय छे. त्थार
ते अन्यतीर्थिको भगवान् गौतमने थोडे दूर जतां जुए छे, जोइने एक बीजाने बोलावे छे; एक बीजाने बोलावीने तेओए आ प्रमाणे कयां—

१ पट्ट घ । २ खपुस्तके नास्ति । ३ खपुस्तके नास्ति । ४ -याण मंते ! अ-घ । ५ पंचत्थि-क ।
६ असंभंते छ । ७ वीईव-ख ।

अर्थ वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा क्हा अविप्यकहा, अर्थ व णं गोयमे अम्हं अहूरस्तामंतेणं 'वीरवियह, तं खेव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमहुं पुच्छित्तप सि कहु अन्नमन्नस्त मंतिप एयमहुं पडिंत्तुणंति, एयं अहुं पडिंत्तुणित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए, अम्मोवदेसप, समणे जायपुत्ते पंचं अत्थिकाप पन्नवेति, तं जहा-धम्मत्थिकायं, जाव आगासत्थिकायं, तं खेव जाव रुविकायं अजीविकायं पन्नवेति; से कहमेयं गोयमा ! एवं ? [उ०] तप णं से भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थि सि वदामो, नैत्थिभावं अत्थि सि वदामो; अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सच्चं अत्थिभावं अत्थि सि वदामो, सच्चं नत्थिभावं नत्थि सि वयामो; तं खेयसा [वेदसा] खलु तुम्हे देवाणुप्पिया ! एयमहुं सयमेव पञ्चुवेषुह सि कहु ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-एवं, एवं । जेणेव गुणसिलप खेरप, जेणेव समणे भगवं महावीरे, एवं जहा नियंहुदेसप जाव भत्त-पाणं पडिंत्तेति, भत्त-पाणं पडिंत्तेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदर, नमंसर; वंदिता, नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव पञ्चुवासति ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिक्के या वि होत्था, कालोदाई य तं देसं इहं आगप । 'कालोदाई'सि समणे भगवं महावीरे कालोदाई एवं वयासी-से णूणं ते कालोदाई ! अन्नया कयाह एग्यओ सहियाणं, समुवागयाणं, संनिविट्ठाणं तहेव जाव से कहमेयं मन्ने एवं ? से णूणं कालोदाई ! अत्थे समट्टे ? हंता अत्थि । तं सच्चं णं एसमट्टे कालोदाई !, अहं पंचत्थिकायं पन्नवेमि, तं जहा-धम्मत्थिकायं, जाव पोग्गलत्थिकायं; तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाप अजीवत्थिकाप अजीवतया पन्नवेमि, तहेव जाव एणं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रुविकायं पन्नवेमि ।

३. [प्र०] तप णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-एयंसि णं मंते ! धम्मत्थिकायंसि, अधम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि अरुविकायंसि अजीवकायंसि चक्रिया केई आसहत्तप वा, सहत्तप वा, चिट्ठहत्तप वा, निसीहत्तप वा, तुयट्ठहत्तप वा ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे कालोदाई !, एयंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रुविकायंसि अजीवकायंसि चक्रिया केई आसहत्तप वा, सहत्तप वा, जाव तुयट्ठहत्तप वा ।

हे देवानुप्रियो ! आपणने आ कथा (पंचास्तिकायनी वात) अप्रकट-अज्ञात छे; अने आ गौतम आपणाथी थोडे दूर जाय छे, माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे आ अर्थ गौतमने पुच्छ्यो श्रेयस्कर छे. एम कही तेओ एक बीजानी पासे ए वातनो स्वीकार करे छे; स्वीकार करीने ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने तेओए भगवान् गौतमने ए प्रमाणे कहुं-हे गौतम ! तमारा धर्माचार्य, धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्र पांच अस्तिकाय प्ररूपे छे, ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकाय, यावत् आकाशास्तिकाय, यावत् रूपिकाय अजीवकायने जणावे छे. हे पूज्य गौतम ! ए प्रमाणे शी रीते होय ? ल्यारे ते भगवान् गौतमे ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कहुं-हे देवानुप्रियो ! अने अस्तिभावने नास्ति (अविद्यमान) कहेता नथी, तेम नास्तिभावने अस्ति (विद्यमान) कहेता नथी. हे देवानुप्रियो ! सर्व अस्तिभावने अस्ति कहीए छीए, अने नास्तिभावने नास्ति कहीए छीए. माटे हे देवानुप्रियो ! ज्ञान वडे तमे स्वयमेव ए अर्थनो विचार करो. एम कहीने [गौतमे] ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कहुं के ए प्रमाणे छे, ए प्रमाणे छे. हवे भगवान् गौतम ज्यां गुणशिल चैत्य छे, ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे-[त्यां आवीने] *निर्ग्रन्थोद्देशकमां कहा प्रमाणे यावत् भक्त-पानने देखाडे छे. भक्त-पानने देखाडीने श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे, वांटी, नमस्कार करी बहु दूर नहि तेम बहु पासे नहि ए प्रमाणे उपासना करे छे.

२. ते काले, ते समये श्रमण भगवान् महावीर महाकथा प्रतिपन्न-(घणा माणसोने धर्मोपदेश करवामां प्रवृत्त) हता. कालोदायी ते स्थले शीघ्र आव्यो. हे कालोदायि ! ए प्रमाणे [बोलावीने] श्रमण भगवान् महावीरे कालोदायीने आ प्रमाणे कहुं-हे कालोदायि ! अन्यदा कोई दिवसे एकत्र एकठा थयेला, आवेला, बेठेला एवा तमने पूर्वे कहा प्रमाणे [पंचास्तिकायसंबन्धे विचार थयो हतो ?] यावत् ए वात ए प्रमाणे केम मानी शकाय ? [एवो विचार थयो हतो ?] हे कालोदायि ! खरेखर आ वात यथार्थ छे ? हा, यथार्थ छे. हे कालोदायि ! ए वात सत्य छे. हुं पांच अस्तिकायनी प्ररूपणा करू छुं; जेम्के, धर्मास्तिकाय, यावत् पुद्गलास्तिकाय. तेमां चार अस्तिकाय अजीवास्तिकायने अजीवरूपे कहुं छुं. पूर्वे कहा प्रमाणे यावत् एक पुद्गलास्तिकायने रूपिकाय जणावुं छुं. ल्यारे ते कालोदायिए श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे कहुं-

३. [प्र०] हे भगवन् ! ए अरूपी अजीवकाय धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायमां बेसवाने, सुवाने, उभो रहेवाने, नींवे बेसवाने, आळोटवाने कोइ पण शक्तिमान् छे ? [उ०] आ अर्थ योग्य नथी. परन्तु हे कालोदायि ! एक रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायमां बेसवाने, सुवाने, यावत् आळोटवाने कोइपण शक्तिमान् छे.

गौतमने प्रक.

गौतमनो उत्तर.

कालोदायीनुं आगमन.

कालोदायिना प्रश्नो.

१ वीवीवतेति क । २-सुवेति च । ३ पंचत्थि-क । ४ कहमेयं मंते ! गो-घ । ५ अत्थि सि भा-ग । ६-ए एवं वदति क । ७ कालो-दाईति च । ८ कयाई च । ९ वा चिट्ठहत्तप ख । १० वा सहत्तप ख ।

११ उद्देशक (भ. श. २. उ० ५ पृ. २८१).

४. [प्र०] एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि, रुविकायंसि, अजीवकायंसि जीवाणं पावा णं कम्मा णं पावफलवि-
वागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] णो तिण्ढे सम्ढे, कालोदाई ! । एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरुविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा
पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति । एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे, समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं
वयासी—इच्छामि णं भंते ! नुम्भं अंतियं धम्मं निसामेत्तए, एवं जहा खंदए तद्देव पंडइए, तद्देव एकारस गंगारं जाव विहरइ ।

५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ णयरओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनि-
क्खमिस्सा बहिया अणवयविहारं विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए चेइए होत्था । तए णं समणे
भगवं महावीरे अन्नया कयाइ जाव समोसढे, परिस्सा जाव पडिगया । तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव
समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं
वयासी—[प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] इत्ता, अत्थि ।

६. [प्र०] क्हं णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] कालोदाई ! से जहानामए केइ
पुरिसे मणुणं थालीपागसुखं अट्टारसवज्जणाकुलं विससंमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भइए भवति,
तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरुयत्ताए, दुग्ंधत्ताए जहा महसवए, जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति; एवामेव कालोदाई !
जीवाणं पाणाइवाए, जाव मिच्छादंसणसल्ले, तस्स णं आवाए भइए भवइ, तओ पच्छा विपरिणममाणे विपरिणममाणे दुरुय-
त्ताए जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति; एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग० जाव कज्जंति ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] इत्ता, अत्थि ।

८. [प्र०] क्हं णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जन्ति ? [उ०] कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुणं
थालीपागसुखं अट्टारसवज्जणाकुलं ओसहमिस्सं भोजणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भइए भवइ, तओ पच्छा

४. [प्र०] हे भगवन् ! ए रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायने विषे जीवोना पाप-अशुभ फल-विपाकसहित पाप कर्मों लागे !
[उ०] हे कालोदायि ! ए अर्थ योग्य नहीं. परन्तु ए अरूपी जीवकायने विषे पाप फल-विपाकसहित पापकर्मों लागे छे. अहाँ
कालोदायी बोध पाभ्यो, ते श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे; वादीने, नमस्कार करीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—हे
भगवन् ! हुं तमारी पासे धर्म सांभळवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे *स्कन्दकनी पेटे तेणे प्रव्रज्या अंगीकार करी, अने ते प्रमाणे अगीयार अंगने
[भणीने] यावत् विचरे छे.

५. त्यार पछी अन्यदा कोइ दिवसे श्रमण भगवान् महावीर राजगृहनगरयी अने गुणशिल चैत्यथी नीकळी बहार देशोमां विहार करे
छे. ते काले ते समये राजगृहनामना नगरमां गुणशिल नामनुं चैत्य हतुं. त्यां अन्यदा कोई दिवस श्रमण भगवान् महावीर यावद् समोसर्पा.
यावत् परिपद् पाछी गइ. त्यार पछी ते कालोदायी अनगार अन्य कोइ दिवसे ज्यां भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रमण
भगवान् महावीरने वंदन करे छे—नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कह्युं—[प्र०] हे भगवन् ! जीवोने पापकर्मों
पाप-अशुभ फल-विपाक सहित होय ? [उ०] हा होय.

६. [प्र०] हे भगवन् ! पापकर्मों पाप-अशुभ फलविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक पुरुष सुन्दर,
स्थालीमां रांधवा वडे शुद्ध (परिपक), अट्टार प्रकारना दाळ शाकादि व्यंजनोथी युक्त, विषमिश्रित भोजन करे, ते भोजन शरुआतमां
सारुं लागे, पण त्यार पछी ते परिणाम पामतां खराबरूपणे, दुग्ंधपणे 'महास्रव' उद्देशकमां कल्ला प्रमाणे वारंवार परिणाम पामे छे. ए
प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने पापकर्मों अशुभफलविपाक संयुक्त होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण (शुभ) कर्मों कल्याणफलविपाक संयुक्त होय ? [उ०] हा, कालोदायि ! होय.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण कर्मों कल्याणफलविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक
पुरुष सुन्दर, स्थालीमां रांधवा वडे शुद्ध-परिपक, अट्टार प्रकारना [दाळ शाकादि] व्यंजनोथी युक्त औषधमिश्रित भोजन करे, ते

पुद्गलास्तिकायने
विषे कर्म लागे ?

पापकर्मों अशुभ वि-
पाकसहित होय ?

पापकर्मों अशुभ
विपाकसंयुक्त केम
होय ?

कल्याणकर्मों कल्याण-
फलसंयुक्त होय.

कल्याण कर्मों क-
ल्याण फलविपाकस-
हित केम होय ?

१ पावा णं कम्मा णं च । २ कज्जंति ? इत्ता, कज्जंति । एत्थ णं च । ३ पण्डइए ख । ४ कयाइ ख । ५ रायगिहे म—, ६ पुच्छति
छे चेइए, तए-ख । ७ कयाइ ख । ८ -वज्जणाडळं च । ९ महस्सवए क । १० जहानाम च । ११ केइ ख ।

५. * जुओ (म. श. २ उ. १ पृ. २३९). ६ † जुओ (म. श. ६ उ. ३. पृ. ९७०).

परिणममाणे सुखवत्ताय, सुवत्ताय, जाव सुहत्ताय, नो दुःखवत्ताय, भुञ्जो भुञ्जो परिणमति, पवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाववायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविषेणे, जाव मिच्छादंसणसहविषेणे, तस्स णं आवाय नो भइए मवइ, त्थो एव्हा परिणममाणे परिणममाणे सुखवत्ताय, जाव नो दुःखवत्ताय भुञ्जो भुञ्जो परिणमइ, एवं अलु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाना कम्मा जाव कज्जति ।

९. [प्र०] दो भंते ! पुरिसा सरिसया जाव सरिसमंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धि अगणिकायं समारंभंति, तत्थ णं जे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एणे पुरिसे अगणिकायं निद्धावेति, एणसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराय चेव, महाकिरियतराय चेव, महासवतराय चेव, महावेयणतराय चेव ? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराय चेव, जाव अप्पवेयणतराय चेव ? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निद्धावेति ? [उ०] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे महाकम्मतराय चेव, जाव महावेयणतराय चेव । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निद्धावेइ से णं पुरिसे अप्पकम्मतराय चेव जाव अप्पवेयणतराय चेव । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धइ-तत्थ णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराय चेव ? [उ०] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे बहुतरागं पुंडविकायं समारंभति, बहुतरागं आउकायं समारंभति, अप्पतरायं तेउकायं समारंभति, बहुतरागं वाउकायं समारंभति, बहुतरायं वणस्सइकायं समारंभति, बहुतरागं तसकायं समारंभति । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निद्धावेति, से णं पुरिसे अप्पतरायं पुंडविकायं समारंभइ, अप्पतरायं आउकायं समारंभइ, बहुतरागं तेउकायं समारंभति, अप्पतरायं वाउकायं समारंभति, अप्पतरायं वणस्सइकायं समारंभति, अप्पतरायं तसकायं समारंभति, से तेणट्टेणं कालोदायी ! जाव अप्पवेयणतराय चेव ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! अच्चिस्ता वि पोग्गला ओभासंति, उज्जोवेति, तवेति, पमासेति ? [उ०] हंता, अत्थि.

भोजन प्रारंभमां सारुं न लागे, त्थार पळी ज्यारे ते अत्थं परिणाम पामे त्थारे ते सुरूपपणे, सुवर्णपणे, यावत् सुखपणे वारंवार परिणमे छे, दुःखपणे परिणाम पामतुं नथी. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने प्राणातिपातविरमण, यावत् परिग्रहविरमण, क्रोधनो त्याग यावत् मिथ्यादर्शनशाल्यनो त्याग प्रारंभमां सारो न लागे, पण पळी ज्यारे ते परिणाम पामे त्थारे ते सुरूपपणे यावत् वारंवार परिणमे छे, पण दुःखरूपे परिणत थतो नथी. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोना कल्याण कर्मो कल्याण फलविपाकसंयुक्त होय छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! सरखा बे पुरुषो यावत् समान भांड-पात्रादिउपकरणवाळा होय, तेओ परस्पर साथे अग्निकायनो समारंभ-हिंसा करे, तेमां एक पुरुष अग्निकायने प्रकट करे, अने एक पुरुष तेने ओलवे, हे भगवन् ! आ बे पुरुषोमां कयो पुरुष महाकर्मवाळो, महाक्रियावाळो, महाआसन्नवाळो अने महावेदनावाळो होय, अने कयो पुरुष अल्पकर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय के जे पुरुष अग्निकायने प्रकटावे छे ते, के जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे ते ? [उ०] हे कालोदायि ! ते बे पुरुषमां जे पुरुष अग्निकायने प्रकटावे छे, ते पुरुष महाकर्मवाळो यावत् महावेदनावाळो होय, अने जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे छे ते पुरुष अल्पकर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शापी कहो छो के ते बे पुरुषोमां जे पुरुष [अग्निने प्रदीप्त करे छे ते महावेदनावाळो अने जे ओलवे छे ते] यावत् अल्पवेदनावाळो होय ? [उ०] हे कालोदायि ! ते बेमां जे पुरुष अग्निकायने प्रदीप्त करे छे, ते पुरुष घणा पृथिवीकायनो समारंभ करे छे, थोडा अग्निकायनो समारंभ करे छे, घणा वायुकायनो समारंभ करे छे, घणा वनस्पतिकायनो समारंभ करे छे अने घणा त्रसकायनो समारंभ करे छे. तेमां जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे छे ते पुरुष थोडा पृथिवीकायनो, थोडा अष्कायनो, थोडा वायुकायनो, थोडा वनस्पतिकायनो, थोडा त्रसकायनो अने वधारे अग्निकायनो समारंभ करे छे. ते हेतुयी हे कालोदायि ! यावत् अल्पवेदनावाळो होय.

अग्निकायनो समारंभ करतार ते पुरुषमां कोण महाकर्मवालो ?

१०. हे भगवन् ! एम छे के अचित्त पण पुद्गलो अवभास करे, उद्योत करे, तपे, प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि ! हा एम छे.

अचित्त पुद्गलो प्रकाश करे ?

११. [प्र०] कयरे णं भंते ! अचिन्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पभासंति ? [उ०] कालोदाई ! कुञ्जस्स अणगासस्स तेय—छेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता, दूरं निपतइ, देसं गता देसं निपतति, जहिं जहिं च णं सा निपतइ, तहिं तहिं णं हे अचिन्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पभासंति, पतेणं कालोदाई ! ते अचिन्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पभासंति । तव णं से कालोदाई अणगा समणं भगवं महावीरे वंदति, नमंसति, वंदिसा, नमंसित्ता बह्महिं चउत्थ—छट्ट—सुम— जाव अणगासं भावेमाणे जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सधदुक्खप्पहीणे । सेवं भंते !, सेवं भंते ! सि ।

सत्तमसतस्स दसमो उद्देशओ समत्तो.

सत्तमं सयं समत्तं ।

कया पुद्गलो
प्रकाश करे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! अचित्त च्छतां पण कया पुद्गलो अवभास करे, यावत् प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि ! श्रोधायमान थयेत्था साधुनी तेजोलिप्प्या नीक्कीने दूर जइने दूर पडे छे. देशमां (जवा योग्य स्थाने) जइने ते देशमां—स्थानमां पडे छे. ज्यां ज्यां ते पडे छे त्यां त्यां अचित्त पुद्गलो पण अवभास करे छे, यावत् प्रकाश करे छे. ते कारणथी हे कालोदायि ! ए अचित्त पुद्गलो पण अवभास करे छे, यावत् प्रकाश करे छे. ल्यार वाद ते कालोदायी अनगार श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे अने घणा चतुर्थ (उपवास), पष्ठ (बे उपवास), अष्टम (त्रण उपवास) (इत्यादि तप वडे) यावत् आत्माने वासिन करता ते प्रथम शतकमां *कालासवेसियपुत्तनी पेटे यावद् सर्वदुःखथी रहित थया. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे]

सातमा शतकनो दसमो उद्देशक समाप्त.

अट्टमं सयं.

१. १ पोग्गल २ आसीविस ३ रुक्ख ४ किरिय ५ आजीव ६ फासुक-७ मदत्ते ।
८ पडिणीय ९ वंध १० आराहणा य दस अट्टमंमि सत्ते ॥

पढमो उद्देशो.

२. [प्र०] रायगिहे जाव एव वदासी-कइविहा णं भंते ! पोग्गला पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पोग्गला पन्नत्ता, तं जहा-पभोगपरिणया, मीससापरिणया, वीससापरिणया य ।

अष्टम शतक.

१. [उद्देश संग्रह-] १ पुद्गल, २ आशीविस, ३ वृक्ष, ४ क्रिया, ५ आजीव, ६ प्रासुक, ७ अदत्त, ८ प्रत्यनीक, ९ वन्ध अने १० आराधना—ए संबंधे दश उद्देशको आठमां शतकमां छे.

[१ पुद्गलना परिणाम विषे प्रथम उद्देशक छे, २ आशीविपादि संबंधे वीजो उद्देशक छे, ३ वृक्षादि विषे वीजो उद्देशक छे, ४ कायिकीआदि क्रिया विषे चोथो उद्देशक छे, ५ आजीवक विषे पांचमो उद्देशक छे, ६ प्रासुकदानादि विषे छट्टो उद्देशक छे, ७ अदत्तादान विषे सातमो उद्देशक छे, ८ प्रत्यनीक (गुर्वादिना विद्वेपी) विषे आठमो उद्देशक छे, ९ प्रयोगवन्धादिने विषे नवमो उद्देशक छे, अने १० आराधना इत्यादिने विषे दशमो उद्देशक छे.]

प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! केठल प्रकारना पुद्गलो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अण प्रकारना पुद्गलो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ प्रयोगपरिणत (प्रयोग एटले जीवना व्यापारथी शरीरादिरूपे परिणाम पामेला), २ *मिश्रपरिणत (मिश्र-प्रयोग अने स्वभाव बन्नेना संबन्ध-थी परिणाम पामेला), अने ३ विससापरिणत (विससा-स्वभाव-थी परिणामेला)

पुद्गलो परिणाम.

१ फासुक छ । २ अट्टमंसि सए क-ग ।

२. * प्रयोगपरिणामनो ह्याग कर्मा शिवाय विससा-स्वभाव-थी परिणामान्तरने प्राप्त भयेला मृतकलेवरादि पुद्गलो ते मिश्रपरिणत कहेबाय छे; अथवा विससाथी परिणत भयेली औदारिकादि वर्णनाओ जीवना प्रयोगथी उचारै औदारिकादिशरीर बनेरै रूपे परिणत थाय ह्यारे ते पण मिश्रपरिणत कहेबाय छे. यद्यपि औदारिकादिशरीरपणे परिणाम पामेला औदारिकादि वर्णनाओ प्रयोगपरिणत कहेबाय छे, कारण के त्यां विससापरिणामनी विवक्षा नथी, पण जो विससा बने प्रयोग ए उभयपरिणामनी विवक्षा करवामां भावे तो ते मिश्रपरिणत कहेबाय छे.—टीकाकार.

१ म० ४०

૩. [પ્ર૦] પઓગપરિણયા ણં મંતે ! પોગ્ગલા કહ્વિહા પક્ષતા ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહા પક્ષતા, તં જહા—પર્ગિદિયપ-ઓગપરિણયા, બેહંદિયપઓગપરિણયા, જાવ પંચિદિયપઓગપરિણયા ।

૪. [પ્ર૦] પર્ગિદિયપઓગપરિણયા ણં મંતે ! પોગ્ગલા કહ્વિહા પક્ષતા ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહા પક્ષતા, તં જહા—પુદ-વિકાહઅપર્ગિદિયપઓગપરિણયા, જાવ ઘણસ્સહકાહઅપર્ગિદિઅપઓગપરિણયા ।

૫. [પ્ર૦] પુદવિકાહઅપર્ગિદિઅપઓગપરિણયા ણં મંતે ! પોગ્ગલા કહ્વિહા પક્ષતા ? [૩૦] ગોયમા ! વુવિહા પક્ષતા, તં જહા—સુહુમપુદવિકાહઅપર્ગિદિઅપઓગપરિણયા, બાદરપુદવિકાહઅર્ગિદિયપઓગપરિણયા ય । આઝકાહઅર્ગિદિઅપઓગપરિણયા એવં ચેવ, એવં દુયઓ મેદો જાવ ઘણસ્સહકાહઆ ય ।

૬. [પ્ર૦] બેહંદિયપઓગપરિણયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! અણેગવિહા પક્ષતા, એવં તેહંદિયપઓગપરિણયા, ચઝરિ-દિયપઓગપરિણયા વિ ।

૭. [પ્ર૦] પંચિદિયપઓગપરિણયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! ચઝવિહા પક્ષતા । તં જહા—નેરહયપંચિદિયપઓગપરિણયા, તિરિક્ષપંચિદિયપઓગપરિણતા, એવં મણુસ્સ૦, દેવપંચિદિયપરિણયા ય ।

૮. [પ્ર૦] નેરહયપંચિદિયપઓગપરિણયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સત્તવિહા પક્ષતા: તં જહા—રયણપ્પમાપુદવિનેર-અપંચિદિયપઓગપરિણતા વિ, જાવ અહેસત્તમપુદવિનેરઅપઓગપરિણતા વિ ।

૯. [પ્ર૦] તિરિક્ષજોણિયપંચિદિયપઓગપરિણયાણં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! તિવિહા પક્ષતા, તં જહા—જલચરપંચિદિય-તિરિક્ષજોણિયપઓગપરિણયા, થલચરપંચિદિય૦, સહચરપંચિદિય૦ ।

પ્રયોગપરિણત
પુદ્ગલો.
પ્રથમ દંડક.

બેહંદિયપઓ-
ગપરિણત.

બેહંદિયપઓ-
ગપરિણત.

પંચેન્દ્રિયપ-
ઓગપરિણત.

નૈરયિકપઓગ-
પરિણત.

તિર્યંચપંચેન્દ્રિય-
પઓગપરિણત.

૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે; તે આ પ્રમાણે—એકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત (એકેન્દ્રિય જીવના વ્યાપાર ત્રણે પરિણામ પામેલા), બેહંદિયપ્રયોગપરિણત, યાવત્ પંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો.

૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે. તે આ પ્રમાણે—પૃથિવીકાયિકએકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો, યાવત્ વનસ્પતિકાયિકએકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો.

૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પૃથિવીકાયિકએકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બે પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—સૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકએકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો, અને બાદરપૃથિવીકાયિકએકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો. ૫ પ્રમાણે અધ્યાયિકએકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો (બે પ્રકારે) જાણવા, ૫ પ્રમાણે યાવત્ વનસ્પતિકાયિકપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો પણ બે પ્રકારના જાણવા.

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! બેહંદિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે અનેક પ્રકારના કહ્યા છે. ૫ પ્રમાણે તેહંદિય અને ચઝરિન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો પણ જાણવા.

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે ચાર પ્રકારના કહ્યા છે. તે આ પ્રમાણે—નારકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત, તિર્યંચપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત, ૫ પ્રમાણે મનુષ્યપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત અને દેવપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! નૈરયિકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નૈરયિકપંચેન્દ્રિય-પ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો સાત પ્રકારના કહ્યા છે; તે આ પ્રમાણે—રત્નપ્રમાપૃથિવીનૈરયિકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત, અને યાવત્ નીચે સમ-નરકપૃથિવીનૈરયિકપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો.

૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તિર્યંચયોનિકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તિર્યંચયોનિક-પંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો ત્રણ પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—જલચરતિર્યંચયોનિકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત, સ્થલચરતિર્યંચ-યોનિકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત અને સ્થલચરતિર્યંચયોનિકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો.

૧ ઘણસ્સહકાહજાણ પુચ્છા, ગોયમા ! અણેગવિહા પક્ષતા ક । ૨ તિરિક્ષ એવં મ- ક । ૩ -ચરતિરિક્ષપંચિદિયજોણિય- ક ।

૩. ૧ હવે નવ દંડકદ્વારા (સુ. ૩-૨૪) પ્રયોગપરિણત પુદ્ગલોનું નિરૂપણ કરે છે—૧ સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિયથી આરંભી સર્વાર્થસિદ્ધિદેવો પર્યન્ત જીવોની વિશેષતાથી પ્રયોગપરિણત પુદ્ગલોનો પ્રથમ દંડક, ૨ તેવી રીતે સૂક્ષ્મ પૃથિવીકાયિકથી આરંભી સર્વાર્થસિદ્ધિદેવો સુધી પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તના મેદથી થીજો દંડક, ૩ ઔદારિકાદિ પાંચ શરીરની વિશેષતાથી થીજો દંડક, ૪ પાંચ હન્દ્રિયોની વિશેષતાથી ચોથો દંડક, ૫ ઔદારિકાદિ પાંચ શરીર અને સ્પર્શીદિ પાંચ હન્દ્રિયોની વિશેષતાથી પાંચમો દંડક, ૬ વર્ણ, ગન્ધ, રસ, સ્પર્શ અને સંસ્થાનની વિશેષતાથી છઠ્ઠો દંડક, ૭ ઔદારિકાદિશરીર અને વર્ણોદિની વિશેષતાથી સાતમો દંડક, ૮ હન્દ્રિયો અને વર્ણોદિની વિશેષતાથી આઠમો દંડક, અને ૯ શરીર, હન્દ્રિય અને વર્ણોદિની વિશેષતાથી નવમો દંડક. ૫ પ્રમાણે નવ દંડક જાણવા—ટીકાઓ.

१०. [प्र०] जलचरतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमजलयर०, गम्भवक्कंतियजलयर० ।

११. [प्र०] थलयरतिरिक्ख० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—चउप्पयथलयर०, परिसप्पयथलयर० ।

१२. [प्र०] खउप्पयथलयर० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमचउप्पयथलयर०, गम्भवक्कंतियखउप्पयथलयर० । एवं एयणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य । उरपरिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमा य गम्भवक्कंतिया य । एवं भुयपरिसप्पा वि, एवं खहयरा वि ।

१३. [प्र०] मणुस्सपंचिदियपओग० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्स०, गम्भवक्कंतियमणुस्स० ।

१४. [प्र०] देवपंचिदियपओग० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा—भवनवासिदेवपंचिदियपओग०, एवं जाव वेमाणिथा ।

१५. [प्र०] भवनवासिदेवपंचिदिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इसविहा पन्नत्ता, तं जहा—असुरकुमार०, जाव थणियकुमार० । एवं एतेणं अभिलावेणं अट्टुविहा वाणमंतरा, पिसाया जाव गंधव्वा । जोतिसिया पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—चंद्रविमाणजोतिसिया, जाव ताराविमाणजोहसिआ देवा । वेमाणिआ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—कप्पोवग० कप्पातीतगवेमाणिआ । कप्पोवगा दुवालसविहा पन्नत्ता, तं जहा—सोहम्मकप्पोवग० जाव अशुयकप्पोवगवेमाणिआ । कप्पातीतग० दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—गेवेज्जगकप्पातीतग० अणुसरोववातीयकप्पातीतग० । गेवेज्जगकप्पातीतग० नवविहा पन्नत्ता, तं जहा—द्वेद्विमद्वेद्विमगेवेज्जगकप्पातीतग०, जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जगकप्पातीतग० ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जलचरतिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! जलचरतिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—संमूर्छिमजलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजजलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

जलचरादिप्रयोगपरिणत

११. [प्र०] हे भगवन् ! स्थलचरतिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! स्थलचरतिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—चतुष्पदस्थलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने परिसर्पस्थलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—संमूर्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजचतुष्पदस्थलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप (पाठ) वडे परिमर्षो बे प्रकारना कहा छे—उरपरिसर्प अने भुजपरिसर्प. उरपरिसर्पो बे प्रकारना कहा छे—संमूर्छिम अने गर्भज. ए प्रमाणे भुजपरिसर्पो अने खेचरो (पक्षीओ) पण बे प्रकारना कहा छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कहा छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिममनुष्यप्रयोगपरिणत अने गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

मनुष्यप्रयोगपरिणत

१४. [प्र०] हे भगवन् ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो चार प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् वैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

देवप्रयोगपरिणत

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कहा छे. ते आ प्रमाणे—असुरकुमारप्रयोगपरिणत, यावत् स्तनितकुमारप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप वडे आठ प्रकारना वानव्यंतरो, पिशाचो यावत् गान्धर्वो कहेवा, ज्योतिषिको पांच प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—चन्द्रविमानज्योतिषिकदेव, यावत् ताराविमानज्योतिषिकदेव. वैमानिक देवो बे प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—कल्पोपपन्नकवैमानिकदेव अने कल्पातीतवैमानिक देव. कल्पोपपन्नकवैमानिक देव प्रमाणे कहा छे; सौधर्मकल्पोपन्नक, यावत् अभ्युतकल्पोपन्नक. कल्पातीतवैमानिको हे गौतम ! बे प्रकारे कहा छे; ते आ प्रमाणे—गैवेयककल्पातीतवैमानिक देव अने अनुत्तरीपपात्तिककल्पातीत वैमानिक देव. गैवेयककल्पातीत वैमानिक देवो नव प्रकारे कहा छे; ते आ प्रमाणे—अधस्तन अधस्तन (नीचेनी त्रिकमा नीचे रहेला) गैवेयककल्पातीत वैमानिक देवो, यावत् उपर उपर (उपरनी त्रिकमा उपरना) गैवेयक कल्पातीत देवो.

भवनवासि, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकप्रयोगपरिणत

१६. [प्र०] अणुसरोववाइअकप्पातीतगवेमाणिअदेवपंचिदियपयोगपरिणया ञं मंते ! पोग्गला कहविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—विजयअणुसरोववाइअ० जाव परिणया, जाव सब्वट्टुसिद्धअणुसरोववाइयदेवपंचिदिय० जाव परिणया । (दं. १.)

१७. [प्र०] सुहुमपुढविक्काइअपग्गिदिअपयोगपरिणता ञं मंते ! पोग्गला कहविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—केति अपज्जत्तगं पढमं भणंति पच्छा पज्जत्तगं । पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअ० जाव परिणता य अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअ० जाव परिणता य । बादरपुढविक्काइअपग्गिदिय० एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइभा । एक्केका दुविहा सुहुमा य बादरा य पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणिअव्वा ।

१८. [प्र०] वेइंदियपयोगपरिणताणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगवेइंदियपयोगपरिणता य अपज्जत्तग० जाव परिणया य । एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि ।

१९. [प्र०] रयणप्पभापुढविनेरइअ० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगरयणप्पभा० जाव परिणता य अपज्जत्तग० जाव परिणता य, एवं जाव अहेसत्तमा ।

२०. [प्र०] संमुच्छिमजलयरतिरिक्ख० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तग० अपज्जत्तग० । एवं गम्भवकंतिया वि । संमुच्छिमजलयरतिरिक्ख एवं चेव, एवं गम्भवकंतिया वि । एवं जाव संमुच्छिमजलयर० गम्भवकंतिया य, एक्केके पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणिअव्वा ।

२१. [प्र०] संमुच्छिममणुस्सपंचिदिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगविहा पन्नत्ता, अपज्जत्तगा चेव ।

२२. [प्र०] गम्भवकंतियमणुस्सपंचिदिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगगम्भवकंतिया वि, अपज्जत्तगगम्भवकंतिया वि ।

१६. [प्र०] अनुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे— विजयअनुत्तरौपपातिकदेवप्रयोगपरिणत, यावत् सर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत (दं. १.)

द्वितीय दंबक-
सूक्ष्मपृथिवी-
कायिकादिप्र-
योगपरिणत.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकाएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे, ? [उ०] हे गौतम ! हे प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत. आ स्थले (बीजी वाचनामां) कोइ अपर्याप्तने प्रथम कहे छे, अने पट्टी पर्याप्तने कहे छे. ए प्रमाणे बादरपृथिवीकायिकाएकेन्द्रिय, यावत् वनस्पतिकायिक कहेवा. ते वधा बवे प्रकारे छे—सूक्ष्म अने बादर, तथा पर्याप्त अने अपर्याप्त.

वेइन्द्रियादिप्र-
योगपरिणत.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! वेइन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे त्रीन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो पण जाणवा.

रत्नप्रभादि-
नैरयिकप्रयोग-
परिणत.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे यावत् नीचे रातगी नरकापृथ्वी सुधी जाणवुं.

संमुच्छिमजल-
रादिप्रयोग-
परिणत.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! संमुच्छिमजलचरतिरिक्खोनिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना क्हा छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसंमुच्छिमजलचरप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसंमुच्छिमजलचरप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे गर्भज जलचरो पण जाणवा. ए प्रमाणे संमुच्छिम तथा गर्भज चतुष्पदस्थलचर जीवो जाणवा, ए प्रमाणे यावत् संमुच्छिम तथा गर्भज खेचरो पण जाणवा; ते दरेकना पर्याप्त अने अपर्याप्त बे भेदो कहेवा.

संमुच्छिममनु-
ष्यादिप्रयोग-
परिणत.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! संमुच्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे—अपर्याप्तसंमुच्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना क्हा छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना क्हा छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत.

२३. [प्र०] असुरकुमारभवनवासिदेवाणं पुच्छा । [उ०] गौयमा ! दुविहा पञ्चता, तं जहा—पञ्चताअसुरकुमार०, अपञ्चताअसुरकुमार०; एवं जाव थणियकुमारा पञ्चतागा अपञ्चतागा य । एवं एतेणं अभिलावेणं दुयपणं भेदेणं पिसाया, जाव गंधव्वा; चंदा, जाव ताराविमाणा; सोहम्मकप्पोवगा, जावचुतो; हेट्टिमहेट्टिमगेविज्जकप्पातीत० जाव उवरिमउवरिमगेविज्ज०; विजयअणुसरोववाइअ०, जाव अपराजिअ० ।

२४. [प्र०] सव्वट्टिसिद्धकप्पातीत० पुच्छा । [उ०] गौयमा ! दुविहा पञ्चता, तं जहा—पञ्चतासव्वट्टिसिद्धअणुसरोववाइअ०, अपञ्चतासव्वट्ट० जाव परिणता वि (दं. २.).

जे अपञ्चतासुप्तमपुढविकाइअपमिदिअपयोगपरिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया । जे पञ्चतासुप्तम० जाव परिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया, एवं जाव चउरिंदिया पञ्चता; णवरं जे पञ्चतावाइरवाउकाइअपमिदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय—वेउव्विय—तेया—कम्मसरीर० जाव परिणता; सेसं तं चेव । जे अपञ्चतरयणप्पमापुढविनेरइयपंविदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय—तेया—कम्मसरीरप्पयोगपरिणया; एवं पञ्चतागा वि, एवं जाव अहेसत्तमा । जे अपञ्चतासंमुच्छिमजलयर० जाव परिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मसरीर० जाव परिणया, एवं पञ्चतागा वि । गम्मवक्कंतिअपञ्चतागा एवं चेव; पञ्चतागा णं एवं चेव । नवरं सरीरगाणि चत्तारि जहा वाइरवाउकाइआणं पञ्चतागाणं; एवं जहा जलचरेसु चत्तारि आलावगा मणिआ एवं चतुष्पद—उरपरिसप्प—भुजपरिसप्प—खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणिअव्वा । जे संमुच्छिममणुस्सपंविदियपयोगपरिणया ते ओरालिय—तेया—कम्मसरीर० जाव परिणया । एवं गम्मवक्कंतिया वि; अपञ्चतागा—पञ्चतागा वि एवं चेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि । जे अपञ्चताअसुरकुमारभवनवासि० जहा नेरइया तहेय, एवं पञ्चतागा वि; एवं दुयपणं भेदेणं जाव थणियकुमारा । एवं पिसाया, जाव गंधव्वा, चंदा, जाव ताराविमाणा, सोहम्मकप्पो०, जावचुओ; हेट्टिमहेट्टिमगेवेज्जग०, जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जग०, विजयअणुसरोववाइए, जाव सव्वट्टिसिद्धअणुसरोववाइए; एकेके णं दुयओ

२३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारभवनवासिदेवप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत; ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा. ए प्रमाणे ए अभिलाप वडे बे भेदो पिशाचो यावद् गांधर्वोना जाणवा. तेमज चन्द्रो यावत् ताराविमानो, सौधर्मकल्पोपपन्नक, यावत् अच्युत कल्पोपपन्नक, तथा नीचे नीचेनी भ्रैवेयक कल्पातीत यावत् उपर उपरना भ्रैवेयककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत, विजयअनुत्तरीपपातिक, यावत् अपराजितअनुत्तरीपपातिक.

असुरकुमारा-
दिप्रयोग-
परिणत.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्धअनुत्तरीपपातिककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! ते बे प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरीपपातिक; यावत् अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धप्रयोगपरिणत. ए [प्रमाणे बे दंडको जाणवा.]

सर्वार्थसिद्ध-
देवप्रयोग-
परिणत.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे; अने जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय पर्याप्ता जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के जे पुद्गलो पर्याप्तवाइरवाउकायिकाएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, बाकीनुं सर्व पूर्व कहा प्रमाणे जाणवुं. जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीनरकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तनारको पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत् सप्तम पृथिवी सुधी जाणवुं. जे पुद्गलो अपर्याप्तसंमूर्च्छिमजलचरप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस, अने कार्मणशरीर यावत् परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्ता [संमूर्च्छिम जलचर] पण जाणवा. गर्भजअपर्याप्त अने गर्भजपर्याप्त पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के पर्याप्तवाइरवाउकायिकनां पेटे तेओने चार शरीर होय छे. ए प्रमाणे जेम जलचरोमां चार आलापक कहेला छे तेम चतुष्पद, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचरोमां पण चार आलापक कहेवा, जे पुद्गलो संमूर्च्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे, ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे; ए प्रमाणे गर्भजअपर्याप्ता जाणवा, पर्याप्ता पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए के तेओने पांच शरीर कहेवां. जेम नैरयिको संबन्धे कहुं, तेम अपर्याप्त असुरकुमारभवनवासि देवो संबन्धे पण जाणवुं, तेम पर्याप्ता संबन्धे पण जाणवुं, ए प्रकारे ए बे भेदवडे यावत् स्तनितकुमारो पण जाणवा. ए प्रमाणे पिशाचो अने यावत् गांधर्वो जाणवा. चन्द्रो यावत् तारा विमानो, सौधर्मकल्प यावत् अच्युतकल्प, नीचेनी त्रिकमां नीचेना भ्रैवेयक यावत् उपरनी त्रिकमां उपरना भ्रैवेयक अने विजयअनुत्तरीपपातिक यावत् सर्वार्थसिद्ध. अनुत्तरीपपातिकना प्रत्येके बब्बे भेद कहेवा; यावत् जे

तृतीयदंडक.
सूक्ष्मपृथिवीकायिका-
दिप्रयोगपरिणत.

रत्नमादि-
नैरयिक प्र-
योगपरिणत.
जलचरादि-
विचप्रयोगप-
रिणत.

मनुष्यप्रयो-
गपरिणत.

असुरकुमारादि-
देवप्रयोगप-
रिणत.

મેદો ભાણિઅધ્વો, જાવ જે ય પંજ્જસાસવ્વટ્સિદ્ધઅણુસરોવવાદ્મ, જાવ પરિણતા તે વેડવિચય-તેમા-કમ્માસરીરપયોગ-પરિણયા (ડં. ૩.).

જે અપજ્જસાસુહુમપુઢવિકારઅર્પિગિદિઅપયોગપરિણતા તે ફાસિંદિઅપયોગપરિણયા । જે પજ્જસાસુહુમપુઢવિકારમં એવં એવં । જે અપજ્જસાસાવાદરપુઢવિકારમં એવં એવં, એવં પજ્જસગા વિ । એવં ચડકવણં મેદેણ જાવ વળસ્સતિકારમં । જે અપજ્જસાસાવેદિયપયોગપરિણયા તે જિમ્મિદિય-ફાસિંદિયપયોગપરિણયા, જે પજ્જસાવેદિયમં એવં એવં, એવં જાવ ચતુરિદિયા; નવરં એકેકં દિયિયં વહેયવ્વં, જાવ અપજ્જસરયણપ્પમાપુઢવિનેરયપંચિદિયપયોગપરિણતા તે સોદિય-ચક્ષિદિય-ધાણિદિય-જિમ્મિદિય-ફાસિંદિયપયોગપરિણયા । એવં પજ્જસગા વિ, એવં સવ્વે માણિઅધ્વા તિરિક્કજોણિય-મણુસ્સ-વેવા, જાવ જે પજ્જસાસવ્વટ્સિદ્ધઅણુસરોવવાદ્મ જાવ પરિણયા તે સોદિય-ચક્ષિદિય જાવ પરિણયા । (ડં. ૪.).

જે અપ્પજ્જસાસુહુમપુઢવિકારઅર્પિગિદિયઓરાલિય-તેયા-કમ્માસરીરપયોગપરિણયા તે ફાસિંદિયપ્પયોગપરિણયા । જે પજ્જસાસુહુમમં એવં એવં, યાદરઅપજ્જસા એવં એવં, એવં પજ્જસગા વિ । એવં પટેણં અમિલાવેણં જસ્સ જંતિ દિયાણિ સરી-રાણિ ય તાણિ માણિઅધ્વાણિ, જાવ જે પજ્જસાસવ્વટ્સિદ્ધઅણુસરોવવાદ્મ જાવ દેવપંચિદિયવેડવિચય-તેયા-કમ્માસરીરપ્પયોગપરિણયા તે સોદિય-ચક્ષિદિય-જાવ ફાસિંદિયપ્પયોગપરિણતા । (ડં. ૫.).

જે અપજ્જસાસુહુમપુઢવિકારઅર્પિગિદિયપયોગપરિણયા તે વજ્જઓ કાલવજ્જપરિણયા વિ, નીલ-લોહિય-હાલિદ-સુક્કિલમં; ગંધઓ સુમ્મિગંધપરિણયા વિ, દુમ્મિગંધપરિણયા વિ; રસઓ તિત્તરસપરિણયા વિ, કઙ્કયરસપરિણયા વિ, કસાયરસપરિણયા વિ, અંધિલરસપરિણયા વિ, મહુરરસપરિણયા વિ; ફાસઓ કવ્વક્કફાસપરિણયા વિ, જાવ લુપ્પક્કફાસપરિણયા વિ; સંઠાણઓ પરિ-મંડલસંઠાણપરિણયા વિ, વટ્ટ-તંસ-ચડરંસ-આયત-સંઠાણપરિણયા વિ । જે પજ્જસસુહુમપુઢવિમં એવં એવં; એવં જહાણુપુચ્ચીપ નેયવ્વં, જાવ જે પજ્જસાસવ્વટ્સિદ્ધઅણુસરોવવાદ્મ જાવ પરિણતા તે વજ્જઓ કાલવજ્જપરિણયા વિ, જાવ આયતસંઠાણપરિણયા વિ । (ડં. ૬.).

પુદ્ગલો અપર્યાપ્તસર્વાર્થસિદ્ધઅનુત્તરૌપપાતિક યાવત્ [પર્યાપ્ત સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તરૌપપાતિક-] પ્રયોગપરિણત છે, તે વૈક્રિય, તૈજસ અને કાર્મ-ગશરીરપ્રયોગપરિણત છે. એ પ્રમાણે ત્રણ દંડક કહ્યા.

પ્રથમ દંડક.

જે પુદ્ગલો અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે, જે પુદ્ગલો પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે એ પ્રમાણે [સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત] છે. જે પુદ્ગલો અપર્યાપ્તવાદરપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે પણ એજ પ્રકારે છે. જે પુદ્ગલો પર્યાપ્તવાદરપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે પણ એવાજ છે. એ પ્રમાણે ચાર મેદો યાવત્ વનસ્પતિકાયિકોના જાણવા. જે પુદ્ગલો અપર્યાપ્તવેદેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે જિહ્વાદેન્દ્રિય અને સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે. જે પર્યાપ્તવેદેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે એ પ્રમાણે જાણવા. એ પ્રકારે યાવત્ ચડરિન્દ્રિય જીવો જાણવા; પરન્તુ એક એક દેન્દ્રિય વધારવી [અર્થાત્ ત્રીન્દ્રિયજીવોને સ્પર્શેન્દ્રિય, રસેન્દ્રિય અને ગ્રાણેન્દ્રિય કહેવી, અને ચડરિન્દ્રિયજીવોને એક ચક્ષુરિન્દ્રિય વધારવી.] યાવત્ જે પુદ્ગલો અપર્યાપ્તરત્નપ્રમાપૃથિવીનારકપંચેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુરિન્દ્રિય, ગ્રાણેન્દ્રિય, જિહ્વાદેન્દ્રિય અને સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે. એ પ્રમાણે પર્યાપ્તનારકપ્રયોગપરિણત પુદ્ગલો પણ જાણવા. સર્વ તિર્યચ્યોનિકો, મનુષ્યો અને દેવો પણ એ પ્રકારે કહેવા. યાવત્ જે પુદ્ગલો પર્યાપ્તસર્વાર્થસિદ્ધઅનુત્તરૌપપાતિકદેવ-પ્રયોગપરિણત છે તે શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુરિન્દ્રિય इत्यादि યાવત્ પરિણત છે. [ડં. ૪]

પંચમ દંડક.

જે પુદ્ગલો અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિય ઔદારિક, તૈજસ અને કાર્મણશરીરપ્રયોગપરિણત છે તે સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે. જે પુદ્ગલો પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે એ પ્રમાણે [સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત] છે. અપર્યાપ્તવાદરપૃથિવીકાયિકા અને પર્યાપ્ત-વાદરપૃથિવીકાયિકા પણ એ પ્રમાણે જાણવા. એ પ્રકારે એ અમિલાપ (પાઠ) વહે જેને જેટલી દેન્દ્રિયો અને શરીરો હોય તેને તેટલાં કહેવાં. યાવત્ જે પુદ્ગલો પર્યાપ્તસર્વાર્થસિદ્ધઅનુત્તરૌપપાતિકદેવપંચેન્દ્રિય વૈક્રિય, તૈજસ અને કાર્મણશરીરપ્રયોગપરિણત છે તે શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુરિન્દ્રિય યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે. [ડં. ૫]

ષષ્ઠ દંડક.

જે પુદ્ગલો અપર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે તે વર્ણથી કાલ્પવર્ણો, નીલવર્ણો, રક્તવર્ણો, પીતલવર્ણો અને શુક્લવર્ણો પણ પરિણત છે; ગન્ધથી સુરભિગન્ધ અને દુરભિગન્ધપણે પણ પરિણત છે. રસથી તિત્તરસ, કટુકરસ, કાયાયરસ, અમ્લરસ અને મધુરસરૂપે પણ પરિણત છે; સ્પર્શથી કર્કશસ્પર્શ, યાવત્ રૂક્ષસ્પર્શરૂપે પણ પરિણત છે, અને સંસ્થાનથી પરિમંડલસંસ્થાન, વૃત્તસંસ્થાન, ત્ર્યક્ષસંસ્થાન, ચતુરક્ષ (ચોરસ) સંસ્થાન અને આયતનસંસ્થાનરૂપે પણ પરિણત છે. જે પુદ્ગલો પર્યાપ્તસૂક્ષ્મપૃથિવીકાયિકાકેન્દ્રિયપ્રયોગપરિણત છે, તે એ પ્રમાણે જાણવા. અને એ પ્રકારે સર્વ ક્રમપૂર્વક જાણવું, યાવત્ જે પુદ્ગલો પર્યાપ્ત સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તરૌપપાતિક-યાવત્ પ્રયોગપરિણત છે તે વર્ણથી કાલ્પવર્ણો પરિણત પણ છે, યાવત્ આયતનસંસ્થાન રૂપે પણ પરિણત છે. [ડં. ૬]

जे अपञ्जत्तासुहुमपुढविकाइयर्गिदियभोरालिय-तेया-कम्मासरीरप्यभोगपरिणया ते वन्नभो कालवन्नपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पञ्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुष्पीए नेयद्धं, जस्स जइ सरीराणि, जाव जे पञ्जत्तासहदुसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिदियवेउद्विय-तेया-कम्मासरीर- जाव परिणया ते वन्नभो कालवन्नपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि (दं. ७)

जे अपञ्जत्तासुहुमपुढविकाइयर्गिदियफासिदियपयोगपरिणया ते वन्नभो कालवन्नपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पञ्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुष्पीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियद्वाणि, जाव जे पञ्जत्तासहदुसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव देवपंचिदियसोतिदिय- जाव फासिदियपयोगपरिणया ते वन्नभो कालवन्नपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । (दं. ८)

जे अपञ्जत्तासुहुमपुढविकाइयर्गिदियभोरालिय-तेया-कम्मा-फासिदियपयोगपरिणया ते वन्नभो कालवन्नपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पञ्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुष्पीए जस्स जति सरीराणि इंदियाणि य तस्स तति भाणियद्वाणि, जाव जे पञ्जत्तासहदुसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिदियवेउद्विय-तेया-कम्मा-सोइंदिय- जाव फासिदियपयोगपरिणया ते वन्नभो कालवन्नपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । एवं एते नव दंडगा ।

२५. [प्र०] मीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा-एगिदिय-मीसापरिणया, जाव पंचिदियमीसापरिणया ।

२६. [प्र०] एगिदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एवं जहा पभोगपरिणतेहि नव दंडगा भणिया, एवं मीसापरिणएहि वि नव दंडगा भाणियद्वा, तहेव सद्धं निरवसेसं, नवरं अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियद्धं, सेसं तं चेव, जाव जे पञ्जत्तासहदुसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा. ए प्रकारे यथानुक्रमे जाणवुं. जेने जेटलां शरीर होय [तेने तेटलां कहेवां] यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, अने संस्थानथी यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे [दं. ७]

सप्तम दंडक.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे सर्व अनुक्रमे जाणवुं, जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी; यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानपणे परिणत छे [दं. ८]

अष्टम दंडक.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण, अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत छे. जे पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक-[एकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण तथा स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण] ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे अनुक्रमे सर्व जाणवुं. जेने जेटलां शरीर अने इन्द्रियो होय तेने तेटलां कहेवां, यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय-वैक्रिय, तैजस अने कार्मण तथा श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे अने यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत छे. ए प्रमाणे ए नव दंडको कहा.

नवम दंडक.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! मिश्रपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रियमिश्रपरिणत अने यावत् पंचेन्द्रियमिश्रपरिणत.

मिश्रपरिणत पुद्गलो

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियमिश्रपरिणतपुद्गलो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणतपुद्गलो संबन्धे नव दंडक कहा तेम मिश्रपरिणतपुद्गलो संबन्धे पण नव दंडक कहेवा, तेम बाकीनुं सर्व कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के [प्रयोगपरिणतने स्थाने] 'मिश्रपरिणत' एवो पाठ कहेवो. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकप्रयोगपरिणत छे ते यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे.

मिश्रपरिणत पुद्गलोने संबन्धे नव दंडक.

२७. [प्र०] वीससापरिणता णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पञ्जा ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पञ्जा, तं अहा—वज्रपरिणता, गंधपरिणता, रसपरिणता, फासपरिणता, संठाणपरिणता । जे वज्रपरिणता ते पंचविहा पञ्जा, तं अहा—कालवज्रपरिणता, जाव सुक्किलवज्रपरिणता । जे गंधपरिणता ते दुविहा पञ्जा, तं अहा—सुम्भिगंधपरिणया वि, दुम्भिगंधपरिणया वि; एवं अहा पंचवणाए तद्देष निरुवसेसं जाव जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वज्रओ कालवज्रपरिणया वि, जाव लुक्कफासपरिणया वि ।

२८. [प्र०] एगे भंते ! द्द्वे किं पयोगपरिणए, मीसापरिणए, वीससापरिणए ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ।

२९. [प्र०] जेदि पयोगपरिणते किं मणप्ययोगपरिणए, वंयप्ययोगपरिणए, कायप्ययोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! मणप्ययोगपरिणए वा, वंयप्ययोगपरिणए वा, कायप्ययोगपरिणए वा ।

३०. [प्र०] जदि मणप्ययोगपरिणते किं सच्चमणप्ययोगपरिणते, मोसमणप्ययोगपरिणते, सच्चामोसमणप्ययोगपरिणते, असच्चामोसमणप्ययोगपरिणते ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्ययोगपरिणते वा, मोसमणप्ययोगपरिणते वा, सच्चामोसमणप्ययोगपरिणते वा, असच्चामोसमणप्ययोगपरिणते वा ।

३१. [प्र०] जदि सच्चमणप्ययोगपरिणते किं आरंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, अणारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, सारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, असारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, समारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए, असमारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! आरंभसच्चमणप्ययोगपरिणते वा, जाव असमारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए वा ।

विस्त्रसापरि-
णतपुद्गलो.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! विस्त्रसापरिणत (स्वभावधी परिणामने प्राप्त थयेव्य) पुद्गलो केटला प्रकारना कत्था छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कत्था छे; ते आ प्रमाणे—वर्णपरिणत, गंधपरिणत, रसपरिणत, स्पर्शपरिणत अने संस्थानपरिणत. जे वर्णपरिणत पुद्गलो छे ते पांच प्रकारना कत्था छे; ते आ प्रमाणे—कालावर्णरूपे परिणत, यावत् सुक्कवर्णरूपे परिणत. जे गंधपरिणत छे ते वे प्रकारना छे; ते आ प्रमाणे—सुगंधपरिणत अने दुर्गंधपरिणत. ए प्रमाणे जेम "प्रज्ञापना पदमां कहुं छे तेम सर्व जाणतुं. यावत् जे (पुद्गलो) संस्थानधी आयतसंस्थानरूपे परिणत छे ते वर्णधी कालावर्णरूपे पण परिणत छे, यावत् रूक्षस्पर्शरूपे पण परिणत छे.

एकद्रव्य-
परिणाम.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! एक द्रव्य शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्त्रसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्त्रसापरिणत पण होय.

मनःप्रयोगादि-
परिणत.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते [एकद्रव्य] प्रयोगपरिणत होय तो शुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्प्रयोगपरिणत होय, के काय-प्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्प्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, मृपामनःप्रयोगपरिणत होय; मत्यमृपामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृपामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, मृपामनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यमृपामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृपामनःप्रयोगपरिणत होय.

आरंभसत्यम-
नःप्रयोगादिप-
रिणत.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अनारंभसत्यमनः-प्रयोगपरिणत होय, संरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असंरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, समारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के असमारंभ-सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, यावत् असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत पण होय.

१ कालावज्र-क । २-वणए क । ३ मीसप-क । ४ अइ घ । ५ बइए-घ । ६ सच्चामण-क ।

२७. * प्रज्ञा० पद १ प-१०-१

२९. † औदारिकादिकाययोगवडे मनोवगणा द्रव्यने ग्रहण करी तेने मनोयोग वडे मनपणे परिणमाव्या जे पुद्गलो ते मनःप्रयोगपरिणत कहेवाय छे, औदारिकादिकाययोग वडे भाषाद्रव्यने ग्रहणकरी वचनयोग वडे भाषारूपे परिणमावी बटार कटाता जे पुद्गलो ते वाक्प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, अने काययोग वडे ग्रहण करीने औदारिकादिशरीररूपे परिणमाव्या जे पुद्गलो ते कायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे—टीकाकार.

३०. ‡ सत्यपदार्थना चिन्तनकरवारूप मननो व्यापार ते सत्यमनःप्रयोग कहेवाय छे. कंइक सत्य अने कंइक असत्य एम मिश्रित थयेक होय ते सत्य-मृपा कहेवाय छे, अने सत्य ने असत्य बनेधी रहित ने असत्यमृपा कहेवाय छे.

३१. † आरंभ—जीवहिंसा, तेने विषे मनःप्रयोग एटले मननो व्यापार, ते वडे परिणाम पायेक जे पुद्गलो ते आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत कहेवाय छे, ए प्रमाणे बीजा पण जाणी लेवा; परन्तु विशेष ए छे के अनारंभ—जीवहिंसानो अभाव, संरंभ—वधनो संकल्प अने समारंभ—परिदाप उपजावो.—टीकाकार.

३२. [प्र०] जदि मोसमणप्ययोगपरिणते कि आरंभमोसमणप्ययोगपरिणत वा ? [उ०] एवं जहा सन्धेणं तथा मोसेण वि, एवं सन्धामोसमणप्ययोगेण वि, एवं असन्धामोसमणप्ययोगेण वि ।

३३. [प्र०] जदि बहूप्ययोगपरिणते कि सन्धबहूप्ययोगपरिणते, मोसबहूप्ययोगपरिणते ? [उ०] एवं जहा मणप्ययोगपरिणत तथा वयप्ययोगपरिणत वि, जाव असमारंभवहूप्ययोगपरिणते वा ।

३४. [प्र०] जदि कायप्ययोगपरिणते कि ओरालियसरीरकायप्ययोगपरिणते, ओरालियमीसासरीरकायप्ययोगपरिणते, वेउद्वियसरीरकायप्ययोगपरिणत, वेउद्वियमीसासरीरकायप्ययोगपरिणत, आहारगसरीरकायप्ययोगपरिणते, आहारगमीसासरीरकायप्ययोगपरिणते, कम्मासरीरकायप्ययोगपरिणते ? [उ०] गोयमा ! ओरालियसरीरकायप्ययोगपरिणते वा, जाव कम्मासरीरकायप्ययोगपरिणते वा ।

३५. [प्र०] जदि ओरालियसरीरकायप्ययोगपरिणते कि एगिन्दियओरालियसरीरकायप्ययोगपरिणते, एवं जाव पंचिन्दियओरालिय— जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! एगिन्दियओरालियसरीरकायप्ययोगपरिणते वा, बेइन्दिय— जाव परिणते वा, जाव पंचिन्दियओरालियकायप्ययोगपरिणत वा ।

३२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मृगामनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं आरंभमृगामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम सत्यमनःप्रयोगपरिणतने विषे कह्युं तेम मृगामनःप्रयोगपरिणत विषे जाणवुं. ए प्रमाणे सत्यमृगामनःप्रयोगने विषे अने असत्यामृगामनःप्रयोगने विषे पण जाणवुं.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वाक्प्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यवाक्प्रयोगपरिणत होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम मनःप्रयोगपरिणतने विषे कह्युं, तेम वचनप्रयोगपरिणतने विषे पण जाणवुं, यावत् असमारंभवचनप्रयोगपरिणत होय.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कायप्रयोगपरिणत होय तो शुं ? *औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, २ औदारिक मिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ३ वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ४ वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ५ आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ६ आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के ७ कामणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय, यावत् कामणशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय.

३५. [प्र०] जो ते (एक द्रव्य) औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, के यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय.

औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत.

औदारिककायप्रयोगपरिणत.

१ - प्ययोगपरिणत वि ग । २ मोसबव- क ।

१४. * औदारिककायप्रयोग पर्याप्ताने ज होय छे, ते बडे परिणत जे पुत्रल द्रव्य ते औदारिककायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे. ज्यारे औदारिकशरीर उत्पत्तिसमये अपूर्णवस्थामां कामेण साथे मिश्र थाय छे त्यारे ते औदारिकमिश्र कहेवाय छे, ते कायप्रयोगपी परिणत जे द्रव्य ते औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे. आ औदारिकमिश्रकायप्रयोग अपर्याप्त जीवने ज होय छे. परभवमां उत्पत्तिसमये जीव प्रथम कामेणयोग बडे आहार करे छे, त्यार पछी ज्यां-जुषी शरीर (शरीरपर्याप्ति) निष्पन्न न थाय त्यांजुषी औदारिकमिश्रयोगबडे आहार करे छे. ए प्रकारे कामेण साथे औदारिकशरीरनी मिश्रता होवाची त्यां औदारिकमिश्रकायप्रयोग जाणवो; केमके उत्पत्तिने छीधे औदारिकशरीरनी प्रधानता छे. बळी औदारिकशरीरबाळो मनुष्य, तिर्येव के बादरवायुकायिक ज्यारे वैक्रियशरीर करे त्यारे ते औदारिककाययोगने विषे बर्ततो आत्मप्रदेशोने विस्तारी वैक्रियशरीरयोग्य पुत्रुखेने ग्रहण करे, अने ज्यांजुषी ते वैक्रियशरीरपर्याप्ति पूर्ण न करे त्यांजुषी वैक्रियनी साथे औदारिकशरीरनी मिश्रता होवाची तेने औदारिकमिश्रकायप्रयोग जाणवो, केमके ते प्रारंभक होवाची तेनी (औदारिककायप्रयोगनी) प्रधानता छे. एवी रीते आहारकनी साथे औदारिकनी मिश्रता जाणवी.

† वैक्रियमिश्रकायप्रयोग देव अने नारकमां उत्पन्न थता अपर्याप्ताने होय छे; अही वैक्रियशरीरनी मिश्रता कामेणनी साथे छे. बळी लब्धिग्रन्थ वैक्रियशरीरनी त्याग करता अने औदारिकने ग्रहण करता औदारिकशरीरबाळने वैक्रियनी प्रधानता होवाची त्यां औदारिकनी साथे वैक्रियनी मिश्रता छे तेची त्यां वैक्रियमिश्रकायप्रयोग जाणवो.

‡ आहारकमिश्रकायप्रयोग औदारिकनी साथे आहारकनी मिश्रता थाय त्यारे होय छे, अने ते आहारकशरीरने त्याग करतां अने औदारिकशरीरने ग्रहण करतां होय छे. अर्थात्—ज्यारे आहारकशरीर पीताहुं कार्य समाप्त करीने पुनः औदारिकशरीरने धारण करे त्यारे आहारक शरीर प्राधान्य होवाची अने तेची औदारिकशरीरने ग्रहण करवामां व्यापार होवाची ज्यांजुषी तेनी सर्वथा त्याग न करे त्यांजुषी तेनी (आहारकशरीरनी) औदारिकनी साथे मिश्रता होय छे, तेची त्यां आहारकमिश्रकायप्रयोग जाणवो.

§ अही कामेणशरीरकायप्रयोग निग्रहप्रतिमां सर्व संसारी जीवने, अने समुद्रगत करता केसकानीने ग्रीवा, चोवा अने पांचव्यां समये होय छे.

३६. [प्र०] यदि पंचिन्द्रियओरालियसरीरकायप्रयोगपरिणते किं पुढविकाइयपंगिन्द्रिय- जाव परिणते वा, जाव वणस्सइकाइयपंगिन्द्रियओरालियकायप्रयोगपरिणते वा ? [उ०] गोयमा ! पुढविकाइयपंगिन्द्रिय- जाव परिणए वा, जाव वणस्सइकाइयपंगिन्द्रिय- जाव परिणए वा ।

३७. [प्र०] यदि पुढविकाइयपंगिन्द्रियओरालियसरीर- जाव परिणते किं सुहुमपुढविकाइय- जाव परिणए, बावरपुढविकाइय- जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयपंगिन्द्रिय- जाव परिणते वा, बावरपुढविकाइय- जाव परिणते वा ।

३८. [प्र०] यदि सुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते किं पज्जससुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते, अपज्जससुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! पज्जससुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते वा, अपज्जससुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते वा; एवं बादरा वि, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो, वेइन्द्रिय-तेइन्द्रिय-चउरिन्द्रियाणं हुयओ भेदो- पज्जसगा व अपज्जसगा य ।

३९. [प्र०] यदि पंचिन्द्रियओरालियसरीरकायप्रयोगपरिणते किं तिरिक्खजोणियपंचिन्द्रियओरालियसरीरकायप्रयोगपरिणते, मणुस्सपंचिन्द्रिय- जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! तिरिक्खजोणिय- जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिन्द्रिय- जाव परिणए वा ।

४०. [प्र०] इह तिरिक्खजोणिय- जाव परिणए किं जलयरतिरिक्खजोणिय- जाव परिणए वा, थलयर-खहचर- जाव परिणए वा ? [उ०] एवं चउक्कओ भेदो, जाव खहचराणं ।

४१. [प्र०] इह मणुस्सपंचिन्द्रिय- जाव परिणए किं संमुच्छिममणुस्सपंचिन्द्रिय- जाव परिणए, गम्भवकंतियमणुस्स- जाव परिणए ? [उ०] गोयमा ! दोसु वि ।

४२. [प्र०] इह गम्भवकंतियमणुस्स- जाव परिणए किं पज्जसगम्भवकंतिय- जाव परिणए, अपज्जसगम्भवकंतियमणुस्सपंचिन्द्रियओरालियसरीरकायप्रयोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! पज्जसगम्भवकंतिय- जाव परिणए वा, अपज्जसगम्भवकंतिय- जाव परिणए वा ।

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ।

३७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ।

३८. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य सूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय, के अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे बादरपृथिवीकायिको जाणवा. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिकना चार भेद (सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त) अने वेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, अने चउरिन्द्रिय जीवोना बे भेद पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं तिर्यचयोनिकपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! तिर्यचयोनिकऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य तिर्यचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं जलचरतिर्यचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय के स्थलचर अने खेचरयोनिककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] एवं प्रमाणे यावत् खेचरोना [संमूर्च्छिम, गर्भज, पर्याप्त अने अपर्याप्त] चार भेदो जाणवा.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं संमूर्च्छिममनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते (एक द्रव्य) [संमूर्च्छिम अने गर्भज] मनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य गर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय.

४३. [प्र०] जह ओरालियमीसासरीरकायप्यभोगपरिणय किं एगिन्द्रियओरालियमीसासरीरकायप्यभोगपरिणय, वेइन्द्रिय-जाव परिणय, जाव पंचिन्द्रियओरालिय- जाव परिणय ? [उ०] गोयमा ! एगिन्द्रियओरालिय- एवं जहा ओरालियसरीरकायप्य-योगपरिणयणं आलावगो भणियो, तहा ओरालियमीसासरीरकायप्ययोगपरिणयण वि आलावगो भणियद्वो; नवरं वायरवाउ-क्काइय-गम्भवकंतिपंचिन्द्रियतिरिक्कजोगिय-गम्भवकंतिमणुस्साणं एएसिणं पज्जत्तापज्जत्तगणं, सेसाणं अपज्जत्तगणं ।

४४. [प्र०] जह वेउद्वियसरीरकायप्ययोगपरिणय किं एगिन्द्रियवेउद्वियसरीरकायप्ययोगपरिणय, जाव पंचिन्द्रियवेउद्वियसरीर- जाव परिणय ? [उ०] गोयमा ! एगिन्द्रिय- जाव परिणय वा, पंचिन्द्रिय- जाव परिणय वा ।

४५. [प्र०] जह एगिन्द्रिय- जाव परिणय, किं वाउक्काइयएगिन्द्रिय- जाव परिणय, अवाउक्काइयएगिन्द्रिय- जाव परिणय ? [उ०] गोयमा ! वाउक्काइयएगिन्द्रिय- जाव परिणय, नो अवाउक्काइय- जाव परिणय; एवं एणं अभिलावेणं जहा 'ओगाहणसंठाणे' वेउद्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भणियद्वं, जाव पज्जत्तसद्वट्टसिद्धअणुत्तरोववातिरक-पातीयवेमाणियदेवपंचिन्द्रियवेउद्वियसरीरकायप्यभोगपरिणय वा, अपज्जत्तसद्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइअ-जाव परिणय वा ।

४६. [प्र०] जह वेउद्वियमीसासरीरकायप्ययोगपरिणय किं एगिन्द्रियमीसासरीरकायप्ययोगपरिणय जाव पंचिन्द्रिय-मीसासरीरकायप्ययोगपरिणय ? [उ०] एवं जहा वेउद्वियं तहा वेउद्वियमीसगं पि, नवरं देव-नेरइयाणं अपज्जत्तगणं, सेसाणं पज्जत्तगणं तद्वेव, जाव नो पज्जत्तसद्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव परिणय, अपज्जत्तसद्वट्टसिद्धअणुत्तरोववातिरक-पातीयदेवपंचिन्द्रियवेउद्वियमीसासरीरकायप्ययोगपरिणय ।

४७. [प्र०] जह आहारगसरीरकायप्ययोगपरिणय किं मणुस्साहारगसरीरकायप्ययोगपरिणय, अमणुस्साहारग- जाव परिणय ? [उ०] एवं जहा 'ओगाहणसंठाणे' जाव इहपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय- जाव परिणय, नो भणिद्विपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय- जाव परिणय ।

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, वेइन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! एकेन्द्रिय-औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय. जेम 'औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक कदो तेम 'औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत' नो पण आलापक कहेवो. परन्तु विशेष ए छे के 'औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक बादरवायुकायिक, गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यक् अने गर्भजमनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता एओने, अने ते शिवाय बाकीना अपर्याप्ता जीवोने कहेवो.

औदारिकमिश्रकाय-
प्रयोगपरिणत.

४४. हे भगवन् ! जो एक द्रव्य वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय के पंचेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोग-परिणत होय.

वैक्रियशरीरकाय-
प्रयोगपरिणत.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोग-परिणत होय के वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य वायुकायिकएकेन्द्रियकाय-प्रयोगपरिणत होय, पण वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत न होय. ए प्रमाणे ए अभिलाप(पाठ)थी *प्रज्ञापना सूत्रना 'अवगाहनासंस्थान' पदने विषे वैक्रियशरीरसंबन्धे कहुं छे तेम अहीं पण कहेवुं; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककल्पातीत-वैमानिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग-परिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम वैक्रियशरीरप्रयोगसंबन्धे कहुं, तेम वैक्रियमिश्रकायप्रयोगसंबन्धे पण कहेवुं; परन्तु विशेष ए छे के वैक्रियमिश्रकायप्रयोग देव अने नैरयिक अपर्याप्ताने अने बाकीना बधा पर्याप्ताने कहेवो; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकवैक्रियमिश्रकायप्रयोगपरिणत न होय, पण अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक-देवपंचेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. (४.)

वैक्रियमिश्रकाय-
प्रयोगपरिणत.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं मनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के अमनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे जेम 'प्रज्ञापनासूत्रना 'अवगाहनासंस्थान' पदने विषे कहुं छे तेम जाणवुं; यावत् ऋद्धिप्राप्त-आहारकलब्धिमान् प्रमत्त साधु सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्वाळ्य मनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत होय, पण ऋद्धिने-आहारकलब्धिने-अप्राप्त प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि संख्यातवर्षायुष्वाळ्य मनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत न होय. (५.)

आहारकशरीरकाय-
प्रयोगपरिणत.

१ जहा मीसगं पि छ । २ जाव पयोग-छ ।

४५. * प्रज्ञा० पद २१. प. ४१४-२. पं. ४.

४७. † प्रज्ञा० पद २१. प. ४२३-१. पं. १०.

४८. [प्र०] जइ आहारगमीसासरीरकायप्ययोगपरिणय किं मणुरसाहारगमीसासरीर० ? [उ०] एवं जहा आहारगं सहेय मीसगं पि निरवसेसं भाणियधं ।

४९. [प्र०] जइ कर्मासरीरकायप्ययोगपरिणय किं पंचिन्द्रियकर्मासरीरकायप्ययोगपरिणय, जाव पंचिन्द्रियकर्मासरीर-जाव परिणय ? [उ०] गोयमा ! पंचिन्द्रियकर्मासरीरकायप्ययोगपरिणय, एवं जहा 'ओगाहणसंठाणे' कम्मगस्स भेदो तहेव इहावि, जाव पञ्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरोवघाइय- जाव देवपंचिन्द्रियकर्मासरीरकायप्ययोगपरिणय, अपञ्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरो-जाव परिणय वा ।

५०. [प्र०] जइ मीसापरिणय किं मणमीसापरिणय, वयमीसापरिणय, कायमीसापरिणय ? [उ०] गोयमा ! मणमीसापरिणय वा, वयमीसा०, कायमीसापरिणय वा ।

५१. [प्र०] जइ मणमीसापरिणय किं सच्चमणमीसापरिणय वा, भोसमणमीसापरिणय वा ? [उ०] जहा पभोगपरिणय तथा मीसापरिणय वि भाणियधं निरवसेसं, जाव पञ्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरोवघाइय- जाव देवपंचिन्द्रियकर्मासरीरगमीसापरिणय वा, अपञ्जत्तसद्धट्टिसिद्धअणुत्तरोवघाइय- जाव कर्मासरीरमीसापरिणय वा ।

५२. [प्र०] जइ वीससापरिणय किं वज्रपरिणय, गंधपरिणय, रसपरिणय, फासपरिणय, संठाणपरिणय ? [उ०] गोयमा ! वज्रपरिणय वा, गंधपरिणय वा, रसपरिणय वा, फासपरिणय वा, संठाणपरिणय वा ।

५३. [प्र०] जइ वज्रपरिणय किं कालवज्रपरिणय, नील- जाव सुक्किलवज्रपरिणय ? [उ०] गोयमा ! कालवज्रपरिणय, जाव सुक्किलवज्रपरिणय ।

५४. [प्र०] जइ गंधपरिणय किं सुब्धिगंधपरिणय, दुब्धिगंधपरिणय ? [उ०] गोयमा ! सुब्धिगंधपरिणय, दुब्धिगंधपरिणय ।

५५. [प्र०] जइ रसपरिणय किं तिसररसपरिणय ?-पुच्छा [उ०] गोयमा ! तिसररसपरिणय, जाव मधुररसपरिणय ।

आहारकमिश्रकाय-
प्रयोगपरिणय.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं मनुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! जेम आहारकशरीरगंबन्धे कहुं तेम आहारकमिश्रगंबन्धे पण कहेवुं. (६)

कार्मणशरीरकाय-
प्रयोगपरिणत.

४९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे जेम "प्रज्ञापना सूत्रना 'अवगाहनामंस्थान' पदने विधे कहुं छे तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेव-पंचेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककार्मणकायप्रयोगपरिणत होय.

मिश्रपरिणत.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मिश्रपरिणत होय तो शुं मनोमिश्रपरिणत होय, वचनमिश्रपरिणत होय, के कायमिश्रपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनोमिश्रपरिणत होय, वचनमिश्रपरिणत होय, के कायमिश्रपरिणत होय.

सत्यमनोमिश्र-
परिणत.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मनोमिश्रपरिणत होय तो शुं सत्यमनोमिश्रपरिणत होय, मृषामनोमिश्रपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणत पुद्गलो संबन्धे कहुं तेम मिश्रपरिणतसंबन्धे सर्व कहेवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रियकार्मणशरीरमिश्रपरिणत होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककार्मणशरीरमिश्रपरिणत होय.

विसृष्टापरिणत.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य विसृष्टापरिणत-स्वभावपरिणत होय तो शुं ते वर्णपरिणत होय, गंधपरिणत होय, रसपरिणत होय, स्पर्शपरिणत होय के संस्थानपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वर्णपरिणत होय, गंधपरिणत होय, रसपरिणत होय, स्पर्शपरिणत होय, अने संस्थानपरिणत पण होय.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वर्णपरिणत होय तो शुं कालवर्णपणे परिणत होय, नीलवर्णपणे परिणत होय के यावत् शुक्लवर्णपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कालवर्णपणे परिणत होय, यावत् शुक्लवर्णपणे पण परिणत होय.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य गंधपणे परिणत होय तो शुं सुगंधपणे परिणत होय के दुर्गंधपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सुगंधपणे परिणत होय अने दुर्गंधपणे पण परिणत होय.

५५. [प्र०] जो ते एक द्रव्य रसपरिणत होय तो शुं तिसररसपरिणत होय ? इत्यादि [उ०] हे गौतम ! ते तिसररसपरिणत होय यावत् मधुररसपणे परिणत होय.

५६. [प्र०] जह क्खण्डफासपरिणए किं क्खण्डफासपरिणए, जाव लुक्खफासपरिणए ? [उ०] गोयमा ! क्खण्डफासपरिणए, जाव लुक्खफासपरिणए ।

५७. [प्र०] जह संटाणपरिणए— पुच्छा । [उ०] गोयमा ! परिमंडलसंटाणपरिणए वा, जाव आययसंटाणपरिणए वा ।

५८. [प्र०] दो भंते ! दह्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पओगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा; अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए; अहवा एगे पओगपरिणए एगे वीससापरिणए; अहवा एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए एवं (६) ।

५९. [प्र०] जह पओगपरिणया किं मणप्ययोगपरिणया, वहप्ययोगपरिणया, कायप्ययोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! मणप्ययोगपरिणया, वहप्ययोगपरिणया, कायप्ययोगपरिणया वा; अहवा एगे मणप्ययोगपरिणए एगे वयप्ययोगपरिणए; अहवा एगे मणप्ययोगपरिणए एगे कायप्ययोगपरिणए; अहवा एगे वयप्ययोगपरिणए एगे कायप्ययोगपरिणए ।

६०. [प्र०] जह मणप्यओगपरिणया किं सच्चमणप्ययोगपरिणया, असच्चामणप्ययोगपरिणया, सच्चामोसमणप्ययोगपरिणया, असच्चामोसमणप्ययोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्यओगपरिणया वा, जाव असच्चामोसमणप्यओगपरिणया; अहवा एगे सच्चमणप्यओगपरिणए एगे मोसमणप्ययोगपरिणए, अहवा एगे सच्चमणप्यओगपरिणए एगे सच्चामोसमणप्यओगपरिणए, अहवा एगे सच्चमणप्ययोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्ययोगपरिणए; अहवा एगे मोसमणप्ययोगपरिणए एगे सच्चामोसमणप्ययोगपरिणए; अहवा एगे मोसमणप्ययोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्ययोगपरिणए; अहवा एगे सच्चामोसमणप्ययोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्यओगपरिणए ।

६१. [प्र०] जह सच्चमणप्ययोगपरिणया किं आरंभसच्चमणप्यओगपरिणया, जाव असमारंभसच्चमणप्ययोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! आरंभसच्चमणप्ययोगपरिणया वा, जाव असमारंभसच्चमणप्यओगपरिणया वा; अहवा एगे आरंभसच्चमणप्ययोगपरिणए एगे असमारंभसच्चमणप्ययोगपरिणए ।

५६. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य स्पर्शपरिणत होय तो ते शुं कर्कशस्पर्शपरिणत हांय के यावत् रूक्षस्पर्शपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कर्कशस्पर्शपणे परिणत होय, यावत् रूक्षस्पर्शपणे पण परिणत होय.

५७. [प्र०] हे भगवन् ! एक द्रव्य संस्थानपरिणत होय तो शुं ते परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंस्थानपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत होय.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! बे द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्त्रसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्त्रसापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने बीजुं मिश्रपरिणत होय. २ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने बीजुं विस्त्रसापरिणत होय. ३ अथवा एक द्रव्य मिश्रपरिणत होय अने बीजुं विस्त्रसापरिणत होय.

बे द्रव्यो नो परिणाम.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते बे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो ते शुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते बे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय अने कायप्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं वचनप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक मनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं कायप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक वचनप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं कायप्रयोगपरिणत होय.

मनःप्रयोगादि परिणत.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते बे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के यावत् असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं मृषामनःप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ४ अथवा एक मृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ५ अथवा एक मृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ६ अथवा एक सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय.

६१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते बे द्रव्यो सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं १ आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, २ अनारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ४ असंरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ५ समारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के ६ असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते बे द्रव्यो आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, यावत् असमारंभसत्यमनः-

परिणय एगे अणारंभसञ्चमण्ययोगपरिणय। एवं एणं गंमेणं दुयासंजोएणं नेयञ्चं, सञ्चे संजोगा अत्थ जत्तिया उट्टेति ते भाणियद्वा, जाव सवट्टसिद्धगत्ति ।

६२. [प्र०] जति मीसापरिणया किं मणमीसापरिणया ? [उ०] एवं मीसापरिणया वि ।

६३. [प्र०] जइ वीससापरिणया किं वञ्जपरिणया, गंधपरिणया० ? [उ०] एवं वीससापरिणया वि, जाव अहवा एगे चउरंससंठाणपरिणय, एगे आयतसंठाणपरिणय वा ।

६४. [प्र०] तिन्नि भंते ! द्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा; अहवा एगे पयोगपरिणय दो मीसापरिणया; अहवा एगे पयोगपरिणय दो वीससापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीसापरिणय; अहवा दो पयोगपरिणया एगे वीससापरिणय; अहवा एगे मीसापरिणय दो वीससापरिणया; अहवा दो मीसापरिणया एगे वीससापरिणय; अहवा एगे पयोगपरिणय एगे मीसापरिणय एगे वीससापरिणय ।

६५. [प्र०] जइ पयोगपरिणया किं मण्ययोगपरिणया, वय्यपयोगपरिणया, काय्यपयोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! मण्ययोगपरिणया वा, एवं एक्कसंयोगो, दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियद्दो ।

६६. [प्र०] जइ मण्ययोगपरिणया किं सञ्चमण्ययोगपरिणया, असञ्चमण्ययोगपरिणया, सञ्चामोसमण्ययोगपरिणया, असञ्चामोसमण्ययोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! सञ्चमण्ययोगपरिणया वा, जाव असञ्चामोसमण्ययोगपरिणया वा; अहवा एगे सञ्चमण्ययोगपरिणय दो मोसमण्ययोगपरिणया वा । एवं दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियद्दो एत्थ वि तह्वेव, जाव अहवा एगे तंससंठाणपरिणय एगे चउरंससंठाणपरिणय एगे आयतसंठाणपरिणय वा ।

६७. [प्र०] चत्तारि भंते ! द्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा, । अहवा एगे पयोगपरिणय तिन्नि मीसा परिणया; अहवा एगे पयोगपरिणय

प्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं अनारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे ए रीते द्विक संयोगो करवा. ज्यां जेट्ठ द्विकसंयोगो थाय त्यां ते सपत्था कहेवा; यावत् सर्वार्थसिद्धवैमानिकदेव सुधी कहेवुं.

मिश्रपरिणत के द्रव्यो.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! जो बे द्रव्यो मिश्रपरिणत होय तो शुं ते मनोमिश्रपरिणत होय ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! प्रयोगपरिणत संबंधे कहुं तेम मिश्रपरिणतसंबंधे कहेवुं.

विक्षसापरिणत के द्रव्यो.

६३. [प्र०] हे भगवन् ! जो बे द्रव्यो विक्षसापरिणत होय तो शुं ते वर्णपणे परिणत होय, गन्धपणे परिणत होय ? इत्यादि [उ०] हे गौतम ! ए रीते पूर्वे कक्षा प्रमाणे विक्षसापरिणतसंबंधे पण जाणवुं, यावत् एक द्रव्य समचतुरस्रसंस्थानपणे परिणत होय अने बीजुं आयतसंस्थानपणे पण परिणत होय.

त्रण द्रव्यनो परिणाम.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय, के विक्षसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते (त्रणे द्रव्यो) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय अने विक्षसापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने बे मिश्रपरिणत होय, २ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने बे विक्षसापरिणत होय, ३ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय, ४ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने एक विक्षसापरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने बे विक्षसापरिणत होय. ६ अथवा बे मिश्रपरिणत होय अने एक विक्षसापरिणत होय. ७ अथवा एक प्रयोगपरिणत एक मिश्रपरिणत अने एक विक्षसापरिणत होय.

मनःप्रयोगपरिणत त्रण द्रव्यो.

६५. [प्र०] जो ते त्रणे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो शुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनःप्रयोगपरिणत पण होय. ए प्रमाणे एकसंयोग, द्विकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहेवो.

६६. [प्र०] जो ते त्रणे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? (इत्यादि ४ प्रश्न). [उ०] हे गौतम ! सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अथवा यावत् असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बे मृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे अहीं पण द्विकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा एक त्र्यस्र(त्रिकोण)संस्थानपणे परिणत होय, एक समचतुरस्र (चौरस) संस्थानपणे परिणत होय अने एक आयतसंस्थानपणे परिणत होय.

चार द्रव्यनो परिणाम.

६७. [प्र०] हे भगवन् ! चार द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विक्षसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते (चारे द्रव्यो) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विक्षसापरिणत होय. १ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण मिश्रपरिणत होय.

तिभिः वीससापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया दो मीसापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया दो वीससापरिणया; अहवा तिभिः पयोगपरिणया एगे मीसापरिणय; अहवा तिभिः पयोगपरिणया एगे वीससापरिणय; अहवा एगे मीससापरिणय तिभिः वीससापरिणया; अहवा दो मीससापरिणया दो वीससापरिणया; अहवा तिभिः मीसापरिणया एगे वीससापरिणय; अहवा एगे पयोगपरिणय एगे मीसापरिणय दो वीससापरिणया; अहवा एगे पयोगपरिणय दो मीसापरिणया एगे वीससापरिणय; अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीसापरिणय एगे वीससापरिणय ।

६८. [प्र०] जइ पयोगपरिणया किं मण्यपयोगपरिणया, वयपयोगपरिणया, कायपयोगपरिणया ? [उ०] एवं एणं क्रमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य द्वा भाणियद्वा दुयासंजोएणं, तियासंजोएणं, जाव दससंजोएणं, बारससंजोएणं उवजुंजिउणं जत्थ जत्तिया संजोगा उट्टंति ते सधे भाणियद्वा; एए पुण जहा नवमसए पवेसणए भणिहामो तहा उवजुंजिउण भाणियद्वा, जाव असंखेज्जा अणंता एवं चेव, नवरं एकं पदं अम्महियं, जाव अहवा अणंता परिमंडलसंठाणपरिणया, जाव अणंता आयतसंठाणपरिणया ।

६९. [प्र०] एएसिणं भंते ! पोगलानं पयोगपरिणयाणं, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाणं य कयरे कयरेहितो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सधत्थोवा पोगला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणंतगुणा, वीससापरिणया अणंतगुणा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्टमसए पढमो उद्देशो समत्तो ।

२ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण विससापरिणत होय. ३ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने बे मिश्रपरिणत होय. ४ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने बे विससापरिणत होय. ५ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय. ६ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक विससापरिणत होय. ७ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने त्रण विससापरिणत होय. ८ अथवा बे मिश्रपरिणत होय अने बे विससापरिणत होय. ९ अथवा त्रण मिश्रपरिणत होय अने एक विससापरिणत होय. १० अथवा एक प्रयोगपरिणत होय एक मिश्रपरिणत होय अने बे विससापरिणत होय. ११ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय बे मिश्रपरिणत होय अने एक विससापरिणत होय. १२ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय एक मिश्रपरिणत होय अने एक विससापरिणत होय.

६८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते चार द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो शुं मनःप्रयोगपरिणत होय ? (वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ?) [उ०] हे गौतम ! सर्व पूर्वनी पेटे जाणवुं; ए क्रमवडे पांच, छ, सात यावत् दश, संख्याता, असंख्याता, अने अनंत द्रव्योना द्विकसंयोग त्रिकसंयोग, यावत् दशसंयोग, बारसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवां अने ज्यां जेटला संयोगो थाय त्यां ते सर्व कहेवा. ए बधा संयोगो *नवम शतकना प्रवेशनकमां जे प्रकारे कहीशुं तेम उपयोगपूर्वक विचारीने कहेवा, यावत् असंख्येय अने अनंत द्रव्योनी परिणाम ए प्रमाणे जाणवो, परन्तु एक पद अधिक करीने कहेवुं; यावत् अथवा अनंत द्रव्यो परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय, यावत् अनंत द्रव्यो आयतसंस्थानपणे परिणत होय.

मनःप्रयोगपरिणत चार द्रव्यो. पांच, छ, यावत् अनंत द्रव्योनी परिणाम.

६९. [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत अने विससापरिणत ए पुद्गलोमां कया पुद्गलो कोनाथी यावद् विशेषाधिक होय छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा पुद्गलो प्रयोगपरिणत छे, तेथी मिश्रपरिणत अनंतगुण छे, अने तेथी विससापरिणत अनंतगुण छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे]

अस्यपुद्गल.

अष्टमशतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१ मीसाप-छ । २-वचं (एकासंजोएणं) दु-छ ।

६८. * भग. घ. ९. उ० १२.

बीओ उद्देशो.

१. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! आसीविसा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णसा, तं जहा— जाति-आसीविसा य कम्मआसीविसा य ।

२. [प्र०] जाइआसीविसा णं भंते ! कतिविहा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! चउविहा पण्णसा, तं जहा— विच्छुयजाति-आसीविसे, मंडुकजाइआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे ।

३. [प्र०] विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिप विसप पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसी-विसे अइभरहण्णमाणमेसं बोदिं विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तप, विसप से विसट्टयाप, जो चेव णं संपसीप करेसु वा, करेति वा, करिस्संति वा ।

४. [प्र०] मंडुकजातिआसीविस-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पभू णं मंडुकजातिआसीविसे भरहण्णमाणमेसं बोदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा । एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं जंबुहीवण्णमाणमेसं बोदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा । मणुस्सजातिआसीविसस्स वि एवं चेव, नवरं समयखेत्तण्णमाणमेसं बोदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा ।

द्वितीय उद्देशक.

आशीविष.

१. [प्र०] हे भगवन् ! *आशीविषो केटला प्रकारना कखा छे ? [उ०] हे गौतम ! आशीविषो बे प्रकारना कखा छे; ते आ प्रमाणे—जातिआशीविष अने कर्माशीविष.

जाति-आशीविष.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जातिआशीविषो केटला प्रकारना कखा छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारना कखा छे; ते आप्रमाणे— १ वृश्चिकजातिआशीविष, २ मंडुकजातिआशीविष, ३ उरगजातिआशीविष अने ४ मनुष्यजातिआशीविष.

वृश्चिक-आशी-
विषना विषनो
विषय.

३. [प्र०] हे भगवन् ! वृश्चिकजातिआशीविषना विषनो केटलो विषय कखा छे ?—अर्थात् वृश्चिकजातिआशीविषोना विषनुं सामर्थ्य केटलं छे ? [उ०] हे गौतम ! वृश्चिकजातिआशीविष अर्धभरतक्षेत्र प्रमाण शरीरने विषवडे विदलित-नाश-करवा विषयी व्याप्त करवा समर्थ छे. एटलं तेना विषनुं सामर्थ्य छे, पण संप्राप्ति-संबन्ध वडे तेओए तेम कर्युं नथी, तेओ करता नथी, अने करशे पण नहि.

मंडुक-आशी-
विषना विषनो
विषय.

४. [प्र०] मंडुकजातिआशीविषना विषनो केटलो विषय छे ? [उ०] हे गौतम ! मंडुकजातिआशीविष पोताना विषयी भरतक्षेत्र-प्रमाण शरीरने व्याप्त करवा समर्थ छे. बाकी सर्व पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् संप्राप्तिवडे तेम करशे नहि. ए प्रमाणे उरगजातिआशीविष संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के ते उरगजातिआशीविष जंबुद्वीपप्रमाण शरीरने पोताना विषयी व्याप्त करवा समर्थ छे; बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि. ए प्रमाणे मनुष्यजातिआशीविष संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के ते मनुष्यक्षेत्रप्रमाण शरीरने पोताना विषयी व्याप्त करवा समर्थ छे. बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि.

उरगजा विषनो
विषय.

मनुष्यजातिआ-
शीविषना विष-
नो विषय.

१ विसट्टमाणं क ।

१. * आशी एटले दाढा, तेमां जेओने विष होय ते प्राणीओ आशीविष कहेवाय छे. तेना बे प्रकार छे—जातिआशीविष अने कर्माशीविष. साप बीछी बगेरे जाति एटले बन्मयी आशीविष छे. कर्म एटले शापादिकधी बीजाने उपचात करनारा ते कर्माशीविष कहेवाय छे. पर्यासा पंचेन्द्रिय तिर्वय अने मनुष्यने तपस्वर्यादिकधी अथवा बीजा कोई कारणधी आशीविषकल्पि उत्पन्न थाय छे, अने तेनी तेओ शापादिकधी बीजाने भासकरवानी क्षणिकता होय छे. तेओ आशीविषकल्पिना स्वभावधी सहकार देवलोक पुषीना देवोमां उत्पन्न थाय छे, अने देवो अपर्वांत अवस्थामां पूर्वं तेने आशीविषभावनो बहुभव करेओ होवाधी कर्माशीविषकल्पिवाळा होय छे. —टीका.

५. [प्र०] अहं कम्मभासीविसे किं नेरयकम्मभासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे, मणुस्सकम्मभासीविसे, देवकम्मभासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो नेरयकम्मभासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे वि, मणुस्सकम्मभासीविसे वि, देवकम्मभासीविसे वि ।

६. [प्र०] अहं तिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे किं एगिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे, जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो एगिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे, जाव नो चउरिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे; पंचिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे ।

७. [प्र०] अहं पंचिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे किं संमुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे, गम्भवकंतिय-पंचिदियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे ? [उ०] एवं जहा वेउद्वियसरीरस्स भेदो, जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयगम्भवकंतियपंचि-दियतिरिक्खजोणियकम्मभासीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय— जाव कम्मभासीविसे ।

८. [प्र०] जदि मणुस्सकम्मभासीविसे किं संमुच्छिममणुस्सकम्मभासीविसे, गम्भवकंतियमणुस्सकम्मभासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो संमुच्छिममणुस्सकम्मभासीविसे, गम्भवकंतियमणुस्सकम्मभासीविसे; एवं जहा वेउद्वियसरीरं, जाव पज्जत्तसंखेज्जवा-साउयकम्मभूमिगम्भवकंतियमणुस्सकम्मभासीविसे, नो अपज्जत्ता— जाव कम्मभासीविसे ।

९. [प्र०] जदि देवकम्मभासीविसे किं भवणवासिदेवकम्मभासीविसे, जाव वेमाणियदेवकम्मभासीविसे ? [उ०] गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मभासीविसे, वौणमंतर—जोतिसिय—वेमाणियदेवकम्मभासीविसे वि ।

१०. [प्र०] जदि भवणवासिदेवकम्मभासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मभासीविसे, जाव थणियकुमार— जाव कम्मभासीविसे ? [उ०] गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मभासीविसे वि, जाव थणियकुमार— जाव कम्मभासीविसे वि ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! जो कर्माशीविष छे तो शुं नैरयिक कर्माशीविष छे, तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे, मनुष्य कर्माशीविष छे के देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक कर्माशीविष नथी, पण तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे, मनुष्य कर्माशीविष छे अने देव-कर्माशीविष छे.

कर्माशीविष.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जो तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे के यावत् पंचेन्द्रिय तिर्य-चयोनिक कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिकथी आरंभी यावत् चतुरिन्द्रिय तिर्यचयोनिकपर्यन्त कर्माशीविष नथी, पण पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जो पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे तो शुं संमूर्द्धिम पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे के गर्भजपंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम वैक्रियशरीरसंबन्धे जीव भेद कखो छे तेम यावत् पर्याप्त संख्यात-वर्षना आयुष्यवाळ्य गर्भज कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेल पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष होय छे, पण अपर्याप्त असंख्यातवर्षना आयुष्य-वाळ्य यावत् कर्माशीविष नथी.

गर्भजपंचेन्द्रियतिर्य-च कर्माशीविष.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जो मनुष्य कर्माशीविष छे, तो शुं संमूर्द्धिम मनुष्य कर्माशीविष छे के गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! संमूर्द्धिम मनुष्य कर्माशीविष नथी, पण गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे. जेम वैक्रियशरीरसंबन्धे जीवभेद कखो छे ते प्रमाणे यावत् पर्याप्त संख्यातवर्षना आयुष्यवाळ्य कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेल गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे पण अपर्याप्त असंख्यात वर्षना आयुष्यवाळ्य कर्माशीविष नथी.

गर्भज मनुष्य कर्माशीविष.

९. [प्र०] हे भगवन् ! जो देव कर्माशीविष छे तो शुं भवनवासी देव कर्माशीविष छे के यावत् वैमानिकदेव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! भवनवासी देव कर्माशीविष छे, वानव्यंतर देव, ज्योतिष्क देव, अने वैमानिकदेव पण कर्माशीविष छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जो भवनवासी देव कर्माशीविष छे तो शुं असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे के यावत् स्तनित-कुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमार भवनवासी देव पण कर्माशीविष छे, यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव पण यावत् कर्माशीविष छे.

भवनवासी क-र्माशीविष.

१ -शिव काव क- क । २ -भूमागम्भ- क । ३ -मंतरवेवजो- क ।

४. * प्रश्ना- २१ शरीरपद. प. ४१५-१. पं. २. ८. † प्रश्ना- २१ शरीरपद. प. ४१५-१. पं. १२.

८ भ० सू०

११. [प्र०] जदि असुरकुमार— जाव कम्मासीविसे किं पञ्जत्ताअसुरकुमारभवनवासिदेवकम्मासीविसे, अपञ्जत्ताअसुरकुमार— जाव कम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो पञ्जत्ताअसुरकुमार— जाव कम्मासीविसे, अपञ्जत्ताअसुरकुमार— जाव कम्मासीविसे; एवं जाव थणियकुमाराणं ।

१२. [प्र०] जदि घाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायघाणमंतरदेवकम्मासीविसे ? [उ०] एवं सधेसि अपञ्जत्तागणं, जोरसियाणं सधेसि अपञ्जत्तागणं ।

१३. [प्र०] जदि वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

१४. [प्र०] जह कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवग— जाव कम्मासीविसे, जाव अद्ध्यकप्पोवग— जाव कम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवग—, जाव नो अद्ध्यकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

१५. [प्र०] जह सोहम्मकप्पोवग— जाव कम्मासीविसे किं पञ्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणिय—, अपञ्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो पञ्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपञ्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, एवं जाव नो पञ्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणिय— जाव कम्मासीविसे, अपञ्जत्तासहस्सारकप्पोवग— जाव कम्मासीविसे ।

१६. दस टाणाइं छउमन्थे सध्भभावेणं न जाणति न पासति, तं जहा— १ धम्मत्थिकायं, २ अधम्मत्थिकायं, ३ आगासत्थिकायं, ४ जीवं असरीरपडिचद्धं, ५ परमाणुपोग्गलं, ६ सहं, ७ गंधं, ८ वातं, ९ अयं जिणे भविस्सइ या णवा भविस्सर,

अपर्याप्तदेवो कर्माशीविष.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जो असुरकुमार यावत् कर्माशीविष छे तो शुं पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे के अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे, ए प्रमाणे यावत् स्तमितकुमारो सुधी जाणवुं.

वानव्यन्तर.

१२. [प्र०] जो वानव्यन्तर देवो कर्माशीविष छे तो शुं पिगाच वानव्यन्तर देवो कर्माशीविष छे ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! तेओ वधा अपर्याप्तावस्थां कर्माशीविष छे, तेम सघळा ज्योतिष्को पण अपर्याप्तावस्थां कर्माशीविष छे.

वैमानिक.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! जो वैमानिक देव कर्माशीविष छे तो शुं कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे के कल्पातीन वैमानिक देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, पण कल्पातीन वैमानिक देव कर्माशीविष नथी.

कल्पोपपन्नक.

१४. [प्र०] जो कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, तो शुं सौधर्मकल्पोपपन्नक यावत् कर्माशीविष छे के यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, यावत् सहस्सारकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे; पण आनतकल्पोपपन्नक, यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष नथी.

यावत् सहस्सारपर्यन्त कर्माशीविष.

अपर्याप्त सौधर्मिक देवो कर्माशीविष.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जो सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, तो शुं पर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे के अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव यावत् कर्माशीविष छे; ए प्रमाणे यावत् पर्याप्त सहस्सारकल्पोपपन्नक देव यावत् कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त सहस्सारकल्पोपपन्नक देव यावत् कर्माशीविष छे.

छद्मस्थ दशस्थानकोने न जाणे.

१६. *छद्मस्थ (ज्ञानी) सर्वभावथी—प्रत्यक्ष ज्ञानथी आ दश वस्तुओने जाणतो नथी, तेम जोतो नथी, ते आ प्रमाणे—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीररहित (मुक्त) जीव, परमाणुपुद्गल, शब्द, गंध, वायु, आ जीव जिन थशे के नहि ?, अने आ जीव

१ —कुमार जाव क- घ । २ कुमारभवनवासीक- घ । ३ एवं थणिय-घ । ४ जाव क- ख-ग । ५ -यदेव जाव क- क । ६ सोहम्म-क ।

१६. * छद्मस्थ एटले संपूर्णज्ञान (केवलज्ञान) रहित, परन्तु आ स्थले तेनो अर्थ 'अवध्यादिविशिष्टज्ञान रहित' एवो जाणवो, केमके विशिष्ट अवधिज्ञानी अमूर्त होवाथी धर्मास्तिकायादिने जाणतो नथी, पण मूर्त होवाथी परमाण्वादिकने जाणे छे. कारण के विशिष्ट अवधिज्ञाननो विषय सर्व मूर्त द्रव्यो छे. अहीं कोइ शंका करे के छद्मस्थ परमाण्वादिने कथंचित् जाणे, पण सर्व पर्यायथी न जाणे, ते माटे सुत्रमां 'सर्वभावथी न जाणे' एम कहुं छे. तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे— एम अर्थ करवाथी दश संख्यानो नियम नहि रहे, केमके घटादि घणा पदार्थो अनन्त पर्यायरूपे छद्मस्थने जाणवा असाक्य छे, माटे सर्वभावनो अर्थ साक्षात्-प्रत्यक्ष एवो करवो. एटले अवध्यादि विशिष्टज्ञानरहित छद्मस्थ धर्मास्तिकायादि दशवस्तुने प्रत्यक्षरूपे न जाणे अने न देखे.—टीका.

૧૦. અર્થ સહસ્રબુક્ષાણં અંતં કરેસ્સતિ વા નવા કરેસ્સતિ । ય્યાણિ શ્વેષ ઉપ્વક્ષનાણ-વંસણધરે અરહા જિણે કેવલી સહ્સમાષેણં ક્ષાણદ પાસદ, તં જહા-ધમ્મત્થિકાયં, જાવ કરેસ્સતિ વા નવા કરેસ્સતિ ।

૧૭. [પ્ર૦] કતિવિદ્દે ણં મંતે ! ણાણે પળ્ણસે ? [ઉ૦] ગોયમા ! પંચવિદ્દે ણાણે પળ્ણસે, તં જહા- આમિણિબોહિયણાણે, સુયણાણે, મોહિણાણે, મળપજ્જવનાણે, કેવલણાણે ।

૧૮. [પ્ર૦] સે કિં તં આમિણિબોહિયણાણે ? [ઉ૦] આમિણિબોહિયણાણે ચ્હવિદ્દે પલ્ણસે, તં જહા-ઉગ્ગહો, ઈહા, અવાબો, ધારણા; યવં જહા 'રાયપ્પસેણદ્દહો' ણાણાણં મેવો તદ્દેવ દ્દહ માણિયલ્લો, જાવ સેસં કેવલણાણે ।

૧૯. [પ્ર૦] અજ્ઞાણે ણં મંતે ! કતિવિદ્દે પલ્ણસે ? [ઉ૦] ગોયમા ! તિવિદ્દે પલ્ણસે, તં જહા- મદ્દઅજ્ઞાણે, સુયઅજ્ઞાણે, વિમંગ્ગણાણે ।

૨૦. [પ્ર૦] સે કિં તં મદ્દઅજ્ઞાણે ? [ઉ૦] મદ્દઅજ્ઞાણે ચ્હવિદ્દે પળ્ણસે, તં જહા- ઉગ્ગહે, જાવ ધારણા ।

૨૧. [પ્ર૦] સે કિં તં ઉગ્ગહે ? [ઉ૦] ઉગ્ગહે સુવિદ્દે પલ્ણસે, તં જહા-અત્થોગ્ગહે ય વંજ્ઞણોગ્ગહે ય, યવં જહેવ આમિણિ-બોહિયનાણં તદ્દેવ, નવરં યગ્ગવિયવજ્જં જાવ નોદ્દિયધારણા । સેસં ધારણા, સેસં મદ્દઅજ્ઞાણે ।

૨૨. [પ્ર૦] સે કિં તં સુયઅજ્ઞાણે ? [ઉ૦] જં દમં અજ્ઞાણિપ્પહિં મિચ્છાદિટ્ઠિપ્પહિં જહા નંદીપ્પ, જાવ ચ્ચારિ વેદા સંગો-બંગા, સેસં સુયઅજ્ઞાણે ।

સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરશે કે નહિ?—૧ દશ સ્થાનોને ઉત્પન્ન જ્ઞાન—દર્શનને ધારણ કરનાર અર્હન્, જિન, કેવલી સર્વભાવથી—સાક્ષાત્ જ્ઞાનથી જાણે છે અને જુદા છે. જેમકે ધર્માસ્તિકાય, યાવત્ આ જીવ સર્વદુઃખોનો અન્ત કરશે કે નહિ.

જ્ઞાન.

૧૭. [પ્ર૦] હે મગલવ્ ! જ્ઞાન કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જ્ઞાન પાંચ પ્રકારે કહ્યું છે. તે આ પ્રમાણે—*આમિનિ-બોધિકજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મન:પર્યવજ્ઞાન અને કેવલજ્ઞાન.

૧૮. [પ્ર૦] હે મગલવ્ ! આમિનિબોધિક જ્ઞાન કેટલા પ્રકારે છે? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! આમિનિબોધિક જ્ઞાન ચાર પ્રકારે છે, તે આ પ્રમાણે— †અવગ્રહ, ઈહા, અપાય અને ધારણા. જેમ ‡'રાજપ્રશ્નીય' સૂત્રમાં જ્ઞાનોના પ્રકાર કહ્યા છે તેમ અહીં પણ કહેવા; યાવત્ '૧ પ્રમાણે કેવલજ્ઞાન કહ્યું' ત્યાં સુધી કહેવું.

૧૯. [પ્ર૦] હે મગલવ્ ! ††અજ્ઞાન કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! અજ્ઞાન ત્રણ પ્રકારે કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—મતિ-અજ્ઞાન, શ્રુતઅજ્ઞાન અને વિમંગ્ગજ્ઞાન.

૨૦. [પ્ર૦] હે મગલવ્ ! મતિઅજ્ઞાન કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! મતિઅજ્ઞાન ચાર પ્રકારનું છે. તે આપ્રમાણે— અવગ્રહ, યાવત્ ધારણા.

૨૧. [પ્ર૦] અવગ્રહ કેટલા પ્રકારે છે? [ઉ૦] અવગ્રહ બે પ્રકારનો કહ્યો છે. તે આ પ્રમાણે—અર્થાવગ્રહ અને ‡‡વ્યંજનાવગ્રહ—૧ પ્રમાણે જેમ †††નંદીસૂત્રમાં આમિનિબોધિકજ્ઞાન સંબંધે કહ્યું છે તેમ અહીં જાણવું. પરન્તુ ત્યાં આમિનિબોધિકજ્ઞાન પ્રસંગે અવગ્રહાદિના ††††૧૬૯—૨૦. પં. ૪. સમાનાર્થક શબ્દો કહેવા છે તે શિવાય યાવત્ નોદ્દિયધારણા સુધી કહેવું, ૧ પ્રમાણે ધારણા કહી. ૧ પ્રમાણે મતિઅજ્ઞાન કહ્યું.

૨૨. [પ્ર૦] શ્રુતઅજ્ઞાન કેવા પ્રકારનું છે? [ઉ૦] 'જે અજ્ઞાની ઇવા મિથ્યાદિટ્ઠિઓએ પ્રરુપ્પ્યું છે'—ઇત્યાદિ †††††નંદીસૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ સાંગોપાંગ ચાર વેદ તે શ્રુતઅજ્ઞાન, ૧ પ્રમાણે શ્રુતઅજ્ઞાન કહ્યું.

૧૭. * આમિ- અર્થામિમુક્ષ એટલે યથાર્થ, નિ-નિશ્ચિત, બોધ તે આમિનિબોધિક, અર્થાત્ હિન્દ્રિય અને અનિન્દ્રિયનિમિલ્લક યથાર્થ અને નિશ્ચિત બોધ તે આમિનિબોધિકજ્ઞાન. શ્રુત એટલે શ્રવણ કરવું તે દ્વારા જે જ્ઞાન થાય તે શ્રુતજ્ઞાન, હિન્દ્રિય અને મનથી શ્રુતગ્રન્થાનુસારે જે બોધ થાય તે શ્રુતજ્ઞાન. અવધિ-સર્વ મૂર્તિદ્રવ્યોની મર્યાદા-થી જે પ્રત્યક્ષ જ્ઞાન થાય તે અવધિજ્ઞાન. મનોદ્રવ્યના પર્યાય-આકારવિશેષ-નું જે જ્ઞાન તે મન:પર્યવજ્ઞાન. સર્વ દ્રવ્ય પર્યાયનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન તે કેવલજ્ઞાન.

૧૮. † રૂપાદિ અર્થનો વિશેષરહિત સામાન્ય બોધ તે અવગ્રહ, વિચિત્તમ અર્થના વિશેષ ધર્મની વિચારણા કરવી તે ઈહા, અર્થનો નિશ્ચય કરવો તે અપાય, નિશ્ચિત અર્થને સ્મૃતિ ઇત્યાદિ રૂપે ધારણ કરવો તે ધારણા. ‡ રાજપ્રશ્નીય પ. ૧૩૦-૧. પં. ૪.

૧૯. †† વિપરીત અથવા મિથ્યા જ્ઞાનને અજ્ઞાન કહે છે.

૨૧. ‡ ‡ વ્યંજનાવગ્રહ—જે વડે અર્થ પ્રકટ કરાય તે વ્યંજન, એટલે ઉપકરણેન્દ્રિય અને શબ્દારૂપે પરિણામ પામેલ દ્રવ્યનો સમૂહ. ઉપકરણેન્દ્રિય વડે પ્રાપ્ત થયેલ શબ્દાદિ વિષયોનું અવ્યક્ત જ્ઞાન તે વ્યંજનાવગ્રહ, સ્વારપદ્ધિ 'આ કાંદક છે' એવો સામાન્ય અવબોધ તે અર્થાવગ્રહ. ††† નંદીસૂત્ર. પ. ૧૬૯-૨૦. પં. ૪.

|| અવગ્રહણતા, અવધારણતા, શ્રવણતા, અવલંબનતા અને મેધા-આ પાંચ અવગ્રહના એકાર્થક શબ્દો કહ્યા છે અને ઈહાદિના પણ એકાર્થક શબ્દો કહ્યા છે તે અહીં મતિઅજ્ઞાનને વિષે કહેવા.

૨૨. ††† નંદીસૂત્ર. પ. ૧૧૪-૧. પં. ૪.

જ્ઞાનના પ્રકાર.

આમિનિબોધિક જ્ઞાનના પ્રકાર.

મતિ-અજ્ઞાન.

અવગ્રહ.

શ્રુત-અજ્ઞાન.

૨૩. [પ્ર૦] હે કિં તં વિમંગનાણે ? [૩૦] વિમંગનાણે અણેગચિદે પળ્ણસે, તં જહા—ગામસંઠિપ, નગરસંઠિપ, જાલ સલિલેસસંઠિપ, દીવસંઠિપ, સમુદ્ધસંઠિપ, વાસસંઠિપ, વાસહરસંઠિપ, પદ્મસંઠિપ, રુક્મસંઠિપ, ધૂમસંઠિપ, હૃદયસંઠિપ, ગચ્છં- ઠિપ, નરસંઠિપ, કિન્નરસંઠિપ, કિપુરિસસંઠિપ, મંહોરગસંઠિપ, ગંધલ્લસંઠિપ, ડલમસંઠિપ, પસુ-વસલ-વિહગ-વાનરણા- સંઠાણસંઠિપ પળ્ણસે ।

૨૪. [પ્ર૦] જીવાણં મંતે ! કિં નાણી અણાણી ? [૩૦] ગોયમા ! જીવા નાણી ચિ અણાણી ચિ; જે નાણી તે અત્યે- ગતિયા દુઝાણી, અત્યેગતિયા તિણાણી, અત્યેગતિયા ચડનાણી, અત્યેગતિયા ઇગનાણી । જે હુંજાણી તે આમિણિબોહિયનાણી ચ સુયનાણી ચ । જે તિણાણી તે આમિણિબોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી; અહવા આમિણિબોહિયનાણી, સુયનાણી, મળપજ્જ- વનાણી । જે ચડનાણી તે આમિણિબોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી. મળપજ્જવનાણી । જે ઇગનાણી તે નિયમા કેવલનાણી । જે અણાણી તે અત્યેગતિયા દુઝાણી, અત્યેગતિયા તિણાણી । જે દુઝાણી તે મદ્ધાણી સુયઅણાણી ચ । જે તિણાણી તે મદ્ધાણી, સુયઅણાણી, વિમંગનાણી ।

૨૫. [પ્ર૦] નેરહયા ણં મંતે ! કિં જાણી, અણાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી ચિ, અણાણી ચિ । જે નાણી તે નિયમા તિણાણી, તં જહા—આમિણિબોહિયનાણી, સુયનાણી, ઓહિનાણી । જે અણાણી તે અત્યેગતિયા દુઝાણી, અત્યેગતિયા તિણ- ઝાણી; ઇવં તિણિ અણાણાણિ મયણાપ ।

૨૬. [પ્ર૦] અસુરકુમારા ણં મંતે ! કિં નાણી, અણાણી ? [૩૦] જહેવ નેરહયા તહેવ, તિણિ નાણાણિ નિયમા, તિણિ ચ અણાણાણિ મયણાપ, ઇવં જાલ ધણિયકુમારા ।

૨૭. [પ્ર૦] પુદ્ધવિક્કાહયા ણં મંતે ! કિં નાણી, અણાણી ? [૩૦] ગોયમા ! જો નાણી, અણાણી । જે અણાણી તે નિયમા દુઝાણી—મદ્ધાણી ચ સુયઅણાણી ચ । ઇવં જાલ વળસ્સદ્ધકાહયા ।

વિમંગજ્ઞાન.

૨૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વિમંગજ્ઞાન કેવા પ્રકારનું કહ્યું છે ? [૩૦] *વિમંગજ્ઞાન અનેક પ્રકારનું કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે- પ્રામને આકારે, વર્ષ (ભારતાદિક્ષેત્ર)ને આકારે, વર્ષધરગર્વતને આકારે, પર્વતને આકારે, વૃક્ષના આકારે, સ્તૂપના આકારે, ઘોડાના આકારે, હાથીના આકારે, મનુષ્યના આકારે, કિનરના આકારે, કિપુરુપના આકારે, મહોરગના આકારે, ગંધર્વના આકારે, ઘૃપમના આકારે, પશુ, પિસય, પક્ષી અને વાનરના આકારે—૯ પ્રમાણે અનેક આકારે વિમંગજ્ઞાન કહેલું છે.

જાણી અને અજ્ઞાની.

૨૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શું જીવો જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જીવો જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે. જે જીવો જ્ઞાની છે તેમાં કેટલાક એ જ્ઞાનવાળા, કેટલાક ત્રણ જ્ઞાનવાળા, કેટલાક ચાર જ્ઞાનવાળા અને કેટલાક એક જ્ઞાનવાળા છે. જે એ જ્ઞાનવાળા છે તે મતિજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાનવાળા છે. જે ત્રણ જ્ઞાનવાળા છે તે મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અને અવધિજ્ઞાનવાળા છે, અથવા મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને મન:પર્યવજ્ઞાનવાળા છે. જે ચારજ્ઞાનવાળા છે તે મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન:પર્યવજ્ઞાનવાળા છે. જે એક જ્ઞાનવાળા છે તે અવદ્ય એક કેવલજ્ઞાનવાળા છે. જે જીવો અજ્ઞાની છે તેમાં કેટલાક એ અજ્ઞાનવાળા અને કેટલાક ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે. જે એ અજ્ઞાનવાળા છે તે મતિઅજ્ઞાન, અને શ્રુતઅજ્ઞાનવાળા છે, અને જેઓ ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે તેઓ મતિઅજ્ઞાન, શ્રુતઅજ્ઞાન, અને વિમંગજ્ઞાનવાળા છે.

નૈરયિકો.

૨૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! નારકો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નારકો જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે. તેમાં જે જ્ઞાની છે તે અવદ્ય ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે, તે આ પ્રમાણે—મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાનવાળા. જે અજ્ઞાની છે તેમાં કેટલાક † બે અજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાક ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે. ૯ પ્રમાણે ત્રણ અજ્ઞાનો ભજનાપ (વિકલ્પે) હોય છે.

અસુરકુમારો.

૨૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અસુરકુમારો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] જેમ નૈરયિકો કહ્યા તેમ અસુરકુમારો જાણવા. અર્થાત્ જેઓ જ્ઞાની છે તેઓ અવદ્ય ત્રણ જ્ઞાનવાળા હોય છે, અને જેઓ અજ્ઞાની છે તેઓ ભજનાપ ત્રણ અજ્ઞાનવાળા હોય છે. ૯ પ્રમાણે યાવત્ સ્તનિતકુમારો સુધી જાણવું.

પૃથિવીકાયિક.

૨૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પૃથિવીકાયિકો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની નથી પણ અજ્ઞાની છે, અને તે અવદ્ય એ અજ્ઞાનવાળા છે, મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની. ૯ પ્રમાણે યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સુધી જાણવું.

૧ મહોરગાંધર્વ સંઠિપ ૧ । ૨ દુયનાણી ક-ક ।

૨૩. * વિધ્યાદર્શન મોહનીય કર્મના ઉદયથી વિપરીત એવું અવધિજ્ઞાન તે વિમંગજ્ઞાન; તેનો પ્રાપ્ત માત્ર વિષય હોવાથી તે પ્રામાકારે કહેવાય છે. ૯ પ્રમાણે જીવા મેદો પણ જાણી છે. † પસય એ સ્ત્રીવાહુ જંગલી ચોપરું પ્રાણી વિશેષ.—ટીકાકાર.

૨૫. ‡ સમ્યગ્દષ્ટિ નારકોને ભવપ્રત્યય અભિજ્ઞાન હોય છે, તેથી તેઓ અવદ્ય ત્રણજ્ઞાનવાળા હોય છે. † જે અજ્ઞાની છે તેમાં કેટલાક એ અજ્ઞાનવાળા છે, કેમકે કોઈ ઇસંસી પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ નરકમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે તેઓને અપર્યાપ્તાવસ્થામાં વિમંગ ન હોવાથી એ અજ્ઞાન હોય છે, અને જો વિધ્યાદષ્ટિ ઇસી પંચેન્દ્રિય નરકમાં ઉત્પન્ન થાય તો તેઓને અપર્યાપ્તાવસ્થામાં પણ વિમંગજ્ઞાન હોય છે તેથી ત્રણ અજ્ઞાન કહ્યા છે—ટીકાકાર.

૨૮. [પ્ર૦] ચેરંદિષાણં પુષ્કા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી વિ અજ્ઞાણી વિ । જે નાણી તે નિયમા દુષ્કાણી, તં જહા—આભિ-
મિચોદિયનાણી ય સુયનાણી ય । જે અજ્ઞાણી તે નિયમા દુઅજ્ઞાણી, તં જહા—મદઅજ્ઞાણી ય સુયઅજ્ઞાણી ય । एवं તેરંદિય—ચડ-
રિદિયા વિ ।

૨૯. [પ્ર૦] પંચિદિયતિરિચ્ચજોખિયાણં પુષ્કા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી વિ અજ્ઞાણી વિ । જે નાણી તે અત્યેગદ્યા
દુષ્કાણી, અત્યેગતિયા તિષ્ઠાણી । एवं તિષ્ઠિણ નાણાણિ તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાણિ ય મયનાપ । મણુસ્સા જહા જીવા, તહેય પંચ નાણાં
તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાણિ ય મયનાપ । યાણમંતરા જહા નેરદ્યા । જોરસિય-વેમાણિયાણં તિષ્ઠિ નાણાણિ તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાણિ નિયમા ।

૩૦. [પ્ર૦] સિદ્ધાણં મંતે ! પુષ્કા । [૩૦] ગોયમા ! નાણી, નો અજ્ઞાણી: નિયમા યજ્ઞાણી કેવલનાણી ।

૩૧. [પ્ર૦] નિરયગતિયાણં મંતે ! જીવા કિં નાણી, અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી વિ અજ્ઞાણી વિ; તિષ્ઠિ નાણાં
નિયમા, તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાં મયનાપ ।

૩૨. [પ્ર૦] તિરિયગતિયાણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! દો નાણા, દો અજ્ઞાણા નિયમા ।

૨૮. [પ્ર૦] *ચેરંદિય જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે. જેઓ જ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય વે જ્ઞાનવાળા છે, તે આ પ્રમાણે—મતિજ્ઞાની અને શ્રુતજ્ઞાની. જેઓ અજ્ઞાની છે તે અવશ્ય વે અજ્ઞાનવાળા છે; તે આ પ્રમાણે—મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની. આ પ્રમાણે ત્રીન્દ્રિય અને ચરિન્દ્રિય જીવો સંબંધે પણ જાણવું.

ચેરંદિય, ત્રીન્દ્રિય
અને ચરિન્દ્રિય.

૨૯. [પ્ર૦] પંચેન્દ્રિયતિર્યચયોનિકો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે અને અજ્ઞાની પણ છે, જેઓ જ્ઞાની છે તેમાં કેટલાક વે જ્ઞાનવાળા, અને કેટલાક ત્રણ જ્ઞાનવાળા છે, આ પ્રમાણે ત્રણ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાપ (વિકલ્પે) જાણવાં. જીવોની પેઠે મનુષ્યોને પાંચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાપ હોય છે. નેરયિકોને કહ્યું (સ્. ૨૫.) તેમ વાનવ્યંતરોને જાણવું. જ્યોતિપિકો અને વૈમાનિકોને અવશ્ય ત્રણ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે.

પંચેન્દ્રિયતિર્યચો.

મનુષ્યો જીવોની પેઠે.
વાનવ્યંતર, જ્યોતિ-
પિકો અને વૈમાનિકો.

૩૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! સિદ્ધો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સિદ્ધો જ્ઞાની છે પણ અજ્ઞાની નથી, તેઓ અવશ્ય વેક કેવલજ્ઞાનવાળા છે.

સિદ્ધો.

૩૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નિરયગતિક—નરકગતિમાં જતા જીવો શું જ્ઞાની હોય છે કે અજ્ઞાની હોય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે જ્ઞાની પણ હોય છે અને અજ્ઞાની પણ હોય છે, [જેઓ જ્ઞાની છે] તેઓને અવશ્ય ત્રણ જ્ઞાન હોય છે અને [જે અજ્ઞાની છે તેઓને] ત્રણ અજ્ઞાન મજનાપ હોય છે.

નિરયગતિક.

૩૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! તિર્યચગતિક—તિર્યચગતિમાં જતા જીવો—શું જ્ઞાની હોય છે કે અજ્ઞાની હોય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને અવશ્ય વે જ્ઞાન અને વે અજ્ઞાન હોય છે.

તિર્યચગતિક.

૧ નાણા ઘ । ૨ અજ્ઞાણા ઘ ।

૨૮. * ચેરંદિયાદિ જીવોમાં પૂર્વજ્ઞાનુષ્ મનુષ્ય કે તિર્યચ ઔપદામિકસમ્યગદષ્ટિ ઉપશમ સમ્યક્સ્વ વમતો ઉત્પન્ન ધાય ત્યારે તેને અપર્યાપ્તાવસ્થાપ સાક્ષાદન સમ્યગ્દર્શન હોય છે. તે અવશ્યથી વેક સમય, અને ઉત્કૃષ્ટ છ આચલિકા સુધી રહે છે, ત્યાં સુધી તે જ્ઞાની કહેવાય છે. ત્યાર પછી તે મિથ્યાત્વને પ્રાપ્ત થાય છે ત્યારે તે અજ્ઞાની કહેવાય છે.

૨૯. † ૧ ગતિ, ૨ હન્દ્રિય, ૩ કાય, ૪ સૂક્ષ્મ, ૫ પર્યાપ્ત, ૬ ભવસ્થ, ૭ ભવસિદ્ધિક, ૮ સંજ્ઞી, ૯ લલિધ, ૧૦ ઉપયોગ, ૧૧ લેશ્યા, ૧૨ કષાય, ૧૩ વેદ, ૧૪ આહાર, ૧૫ જ્ઞાન, ૧૬ ગોચર (વિષય), ૧૭ કાલ, ૧૮ અંતર, ૧૯ અત્પવહુત્વ અને ૨૦ પર્યાય—આ વીણ દ્વારો અહીં વિવક્ષિત છે. તેમાં પ્રથમ ગતિદ્વારે વિષે નિરયગતિ દ્વાર કહે છે. નિરય—નરકને વિષે ગતિ—ગમન જેઓનું છે તેઓ નિરયગતિક કહેવાય છે એટલે સમ્યગદષ્ટિ કે મિથ્યાદષ્ટિ, જ્ઞાની કે અજ્ઞાની પંચેન્દ્રિય તિર્યચ અને મનુષ્ય નરકમાં ઉત્પન્ન થવા વાળા અન્તર ગતિમાં વર્તતા હોય તે નિરયગતિક સમજવા, તે માટે અહીં નિરયશબ્દની સાથે ગતિપ્રહણ કરેલ છે. નિરયગતિકને—જો તે જ્ઞાની હોય તો તેને—ત્રણ જ્ઞાન અવશ્ય હોય છે, કેમકે તેને અધિજ્ઞાન મજપ્રત્યક્ષ હોવાથી તે અન્તર ગતિમાં પણ હોય છે, અને તેઓને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાપ હોય છે, કેમકે અસંજ્ઞી પંચેન્દ્રિય તિર્યચ નરકમાં જાય ત્યારે અપર્યાપ્તાવસ્થાપ વિભંગજ્ઞાન ન હોવાથી તેને વે અજ્ઞાન હોય છે, અને મિથ્યાદષ્ટિ સંજ્ઞીને ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે, કારણકે તેને મજપ્રત્યક્ષ વિભંગજ્ઞાન હોય છે. —ટીકા.

૩૨. ‡ તિર્યચગતિમાં જતાં વેક અન્તરાલ ગતિમાં વર્તતા હોય તે તિર્યચગતિક જીવો જાણવા; તેને વે જ્ઞાન અને વે અજ્ઞાન હોય છે, કેમકે સમ્યગદષ્ટિ જીવો અધિજ્ઞાનથી પચ્ચા પછી મતિશ્રુતજ્ઞાનસહિત તિર્યચગતિમાં જાય છે, તેથી તેને વે જ્ઞાન હોય છે, અને મિથ્યાદષ્ટિ જીવો વિભંગજ્ઞાનથી પચ્ચા પછી તિર્યચ-ગતિમાં જાય છે માટે તેને વે અજ્ઞાન હોય છે. —ટીકા.

३३. [प्र०] मनुष्यगत्या णं भंते ! जीवा किं नाणी, अज्ञाणी ? [उ०] गोयमा ! तिञ्चि नाणाहं भयणाए, दो अज्ञाणाहं नियमा । देवगतिया जहा निरयगतिया ।

३४. [प्र०] सिद्धगतिया णं भंते० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

३५. [प्र०] सहंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अज्ञाणी ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि नाणाहं, तिञ्चि अज्ञाणाहं भयणाए ।

३६. [प्र०] पंचिदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा पुढविकाइया, बेइदिय—तेइदिय—चउरिंदियाणं दो नाणा, दो अज्ञाणा नियमा । पंचिदिया जहा सहंदिया ।

३७. [प्र०] अण्णदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? । [उ०] जहा सिद्धा ।

३८. [प्र०] सकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अज्ञाणी ? [उ०] गोयमा ! पंच नाणाणि तिञ्चि अज्ञाणाहं भयणाए । पुढविकाइया जाव यणस्सइकाइया नो नाणी, अज्ञाणी, नियमा दुअज्ञाणी, तं जहा—मतिअज्ञाणी य सुयअज्ञाणी य । तसकाइया जहा सकाइया ।

मनुष्यगतिक-

३३. [प्र०] हे भगवन् ! *मनुष्यगतिक—मनुष्यगतिमां जता जीवो—शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए (विकल्पे) त्रण ज्ञान होय छे अने अवश्य बे अज्ञान होय छे. †देवगतिक—देवगतिमां जता जीवो—निरयगतिकनी पेटे (सू० ३१.) जाणवा.

सिद्धगतिक-

३४. [प्र०] हे भगवन् ! †सिद्धगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] तेओ सिद्धनी पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

सेन्द्रिय-

३५. [प्र०] हे भगवन् ! †सेन्द्रिय—इन्द्रियवाळा—जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

एकेन्द्रियादि-

३६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! †पृथिवीकायिकनी पेटे (सू० २७.) [एकेन्द्रियजीवो] जाणवा. बेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवोने अवश्य बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे. पंचेन्द्रिय जीवो सेन्द्रियजीवोनी पेटे (सू० ३५.) जाणवा.

अनिन्द्रिय-

३७. [प्र०] हे भगवन् ! †अनिन्द्रिय—इन्द्रियरहित—जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] तेओ सिद्धनी पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

सकायिक जीवो-

पृथिवीकायिकादि-

त्रसकायिक-

३८. [प्र०] हे भगवन् ! सकायिक जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक [जीवो ज्ञानी नथी पण अज्ञानी होय छे, अने ते अवश्य बे अज्ञानवाळा होय छे, ते आ प्रमाणे—मनिअज्ञानवाळा अने श्रुतअज्ञानवाळा. त्रसकायिक जीवो सकायिक जीवोनी पेटे जाणवा.

३३. * मनुष्यगतिमां जता अंतराल गतिए वर्तना होय ते अहीं मनुष्यगतिक जाणवा, तेमांनो केटलाक जीवो जे ज्ञानी छे ते तीर्थकरनी पेटे अवधिज्ञान साथे ज मनुष्यगतिमां जाय छे, अने केटलाक तेने छोडीने जाय छे, माटे तेओने त्रण अथवा बे ज्ञान होय छे. जे अज्ञानी छे तेओ विभंगज्ञानथी पञ्चा पछी मनुष्यगतिमां उत्पन्न थाय छे; माटे अवश्य तेने बे अज्ञान होय छे. † देवगतिमां जता अंतराल गतिए वर्तता जीवो नरकगतिकनी पेटे जाणवा. केमके जे ज्ञानी देवगतिमां जाय छे, तेओने भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवायुषेने प्रथम समयेज उत्पन्न थाय छे, तेथी नारकोनी पेटे तेओने त्रण ज्ञान अवश्य होय छे. जेओ अज्ञानी छे अने असंही थकी देवगतिमां उत्पन्न थाय छे, तेओने अपर्यामावस्थामां विभंगज्ञाननो अभाव होवाथी बे अज्ञान होय छे. जे अज्ञानी संही थकी आर्वा देवगतिमां उत्पन्न थाय छे तेने भवप्रत्यय विभंगज्ञान होवाथी त्रण अज्ञान होय छे.—टीका.

३४. † अहीं अन्तरगतिना अभावथी सिद्ध अने सिद्धगतिकनो भेद नथी, पण गतिद्वारना क्रमने लीधे तेनो जूरो निर्देश कर्या छे.—टीका.

३५. † इन्द्रियद्वारने विषे सेन्द्रिय एटले इन्द्रियना उपयोगवाळा, ते ज्ञानी अने अज्ञानी बन्ने प्रकारना छे. तेमां ज्ञानीने चार ज्ञान भजनाए होय छे, एटले बे, त्रण के चार ज्ञान होय छे; पण तेओने केवलज्ञान होतुं नथी, केमके ते अतीन्द्रियज्ञान छे. अहीं बे इत्यादि ज्ञानो कहेला छे ते छभिनी अपेक्षाए जाणवा, उपयोगनी अपेक्षाए सर्वने एकज ज्ञान होय छे. अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे—एटले कश्चित् बे के त्रण अज्ञान होय छे.—टीका.

३६. † पृथिवीकायिकनी पेटे एकेन्द्रियजीवो मिथ्यादृष्टि होवाथी अज्ञानी छे अने ते बे अज्ञानवाळा छे. बेइन्द्रियादिक जीवोने बे ज्ञान होय छे, केमके तेमां साखादन गुणस्थानकनो संभव छे. ते शिवाय बीजाने बे अज्ञान होय छे.—टीका.

३७. † अनिन्द्रिय एटले इन्द्रियना उपयोगरहित केवलज्ञानी, तेओने सिद्धनी पेटे एक केवल ज्ञान होय छे.—टीका.

३८. † काय एटले आदरिकादिशरीर अथवा पृथिव्यादि छ काय, ते बडे सहित ते सकायिक, तेओ केवली पण होय, तेथी सकायिक सम्यग्दृष्टिने पांच ज्ञान अने मिथ्यादृष्टिने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.—टीका.

३९. [प्र०] अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

४०. [प्र०] सुहुमा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा पुढविकाइया ।

४१. [प्र०] बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

४२. [प्र०] नोसुहुमा नोबादरा णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

४३. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

४४. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा नियमा, जहा नेरइया, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जहा एगिदिया । एवं जाव चउरिदिया ।

४५. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

४६. [प्र०] अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए ।

४७. [प्र०] अपज्जत्ता णं भंते ! नेरतिया किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा नियमा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिदिया ।

३९. [प्र०] हे भगवन् ! *कायरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धोनीं पेटे (सू० ३०.) तेओ जाणवा. कायरहित जीवो.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! †सूक्ष्म जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] पृथिवीकायिकोनी पेटे (सू० २७.) जाणवा. सूक्ष्म जीवो.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ‡बादरजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] †सकायिक जीवोनी पेटे (सू० ३८.) जाणवा. बादर जीवो.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! ‡नोसूक्ष्म नोबादर जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] सिद्धोनीं पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! ‡पर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] †सकायिक जीवोनी पेटे (सू० ३८.) जाणवा. पर्याप्त जीवो.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त †नैरयिको शुं ज्ञानी छे ? के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे. जेम नैरयिको माटे कइं तेम यावत् स्तनितकुमार देवो माटे जाणवुं. पृथिवीकायिको एकेन्द्रियनीं पेटे (सू० ३६.) जाणवा. ए प्रमाणे यावत् चउरिदियजीवो जाणवा. पर्याप्त नैरयिकादि.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त †पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, मनुष्यो सकायिकनीं पेटे (सू० ३८.) जाणवा. वानव्यंतरो, ज्योतिपिको अने वैमानिको नैरयिकनीं पेटे (सू० २५.) जाणवा. पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक्. पर्याप्त मनुष्यो.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे. अपर्याप्त जीवो.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त †नैरयिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने अवश्य त्रण ज्ञान छे अने त्रण अज्ञान छे, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार देवो जाणवा. जेम एकेन्द्रियो संयन्धे (सू० ३६.) कइं तेम अपर्याप्त पृथिवीकायिकथी आरंभी वनस्पतिकायिक पर्यन्त कहेवुं. अपर्याप्त नैरयिकादि. अपर्याप्त पृथिवीकायिकादि.

३९. * जेओने पूर्वे कहेल काय एटले औदारिकादि शरीर अथवा पृथिव्यादिकाय नथी ते अकायिक एटले सिद्ध कहेवाय छे.—टीका.

४०. † सूक्ष्मद्वारने बिषे सूक्ष्म जीवो पृथिवीकायिकनीं पेटे सिध्यादृष्टि होबाथी तेओने ते अज्ञान होय छे.

४१. ‡ सकायिक जीवोनीं पेटे बादर जीवो केवलज्ञानी पण होय छे, माटे तेओने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

४३. † पर्याप्तद्वारने बिषे पर्याप्त जीवो केवलज्ञानी पण होय छे, माटे ते सकायिकनीं जेम पूर्वे कथा प्रमाणे जाणवा.—टीका.

४४. § असंखी थकी आवेला नारकोने अपर्याप्तावस्थामां विभंगनो अभाव होय छे अने पर्याप्त अवस्थामां ओओने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे.—टीका.

४५. § पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां अवधिज्ञान के विभंग ज्ञान केटलाकने होय अने केटलाकने न होय माटे त्रण ज्ञान के त्रण अज्ञान, अथवा ते ज्ञान के ते अज्ञान तेओने होय छे.—टीका.

૪૮. [પ્ર૦] ચેદ્દિયાણં પુચ્છા । [૩૦] દ્વો નાણા, દ્વો અજ્ઞાણા નિયમા । एवं आव पंचिदियतिरिक्खज्जोगियाणं ।

૪૯. [પ્ર૦] અપજ્જત્તગા ણં મંતે ! મણુસ્સા કિં નાણી અજ્ઞાણી ? [૩૦] તિચ્છિ નાણાહં મયખાપ, દ્વો અજ્ઞાણાહં નિયમા ।
વાણમંતરા જહા નેરહયા । અપજ્જત્તગાણં જોરહસિય—વેમાણિયાણં તિચ્છિ નાણા, તિચ્છિ અજ્ઞાણા નિયમા ।

૫૦. [પ્ર૦] નોપજ્જત્તગા નોઅપજ્જત્તગા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી ? [૩૦] જહા સિદ્ધા ।

૫૧. [પ્ર૦] નિરયમવત્થા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અજ્ઞાણી ? [૩૦] જહા નિરયગતિયા ।

૫૨. [પ્ર૦] તિરિયમવત્થા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અજ્ઞાણી ? [૩૦] તિચ્છિ નાણા, તિચ્છિ અજ્ઞાણા મયખાપ ।

૫૩. [પ્ર૦] મણુસ્સમવત્થા ણં ? [૩૦] જહા સકારહયા ।

૫૪. [પ્ર૦] દેવમવત્થા ણં મંતે ! ? [૩૦] જહા નિરયમવત્થા । મમવત્થા જહા સિદ્ધા ।

૫૫. [પ્ર૦] મવસિદ્ધિયાણં મંતે ! જીવા કિં નાણી ? [૩૦] જહા સકારહયા ।

અપર્યાપ્ત ચેદ્દિયાદિ.

૪૮. [પ્ર૦] અપર્યાપ્ત ચેદ્દિય જીવો જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની ? [૩૦] તેઓને *વેજ્ઞાન અને વે અજ્ઞાન અવશ્ય હોય છે. ૧ પ્રમાણે યાવત્ પંચેન્દ્રિય નિર્યંચયોનિક સુધી જાણવું.

અપર્યાપ્ત મનુષ્ય.

અપર્યાપ્ત જ્ઞાનવ્યંતર
જ્યોતિષિક અને
વૈમાનિક.

૪૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અપર્યાપ્ત મનુષ્ય શું જ્ઞાની હોય છે કે અજ્ઞાની હોય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને †ત્રણ જ્ઞાન મજનાઈ હોય છે અને અવશ્ય વે અજ્ઞાન હોય છે. નૈરયિકોની પેટે (સૂ. ૪૭.) ‡વાનવ્યંતરોને જાણવું. તથા §અપર્યાપ્ત જ્યોતિષિકો અને વૈમાનિકોને ત્રણ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન અવશ્ય હોય છે.

નોપર્યાપ્ત નોઅ-
પર્યાપ્ત જીવો.

૫૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! †નોપર્યાપ્ત અને નોઅપર્યાપ્ત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ સિદ્ધની પેટે (સૂ. ૩૦.) જાણવા.

નિરયમવત્થ.

૫૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! †નિરયમવત્થ જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ નિરયગતિકની પેટે (સૂ. ૩૧.) જાણવા.

તિરિયમવત્થ.

૫૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! †તિરિયમવત્થ જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓને ત્રણ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાઈ છે.

મણુષ્યમવત્થ.

૫૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મણુષ્યમવત્થ જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ સકાયિકની પેટે (સૂ. ૩૮.) જાણવા.

દેવમવત્થ.

અમવત્થ.

૫૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવમવત્થ જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ નિરયમવત્થની પેટે (સૂ. ૫૧.) જાણવા. અમવત્થ—મવમાં નહિ રહેનારા [શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ] સિદ્ધોની પેટે (સૂ. ૩૦.) જાણવા.

મવસિદ્ધિક.

૫૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મવસિદ્ધિક—મવ્ય જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ ‡સકાયિકની પેટે (સૂ. ૩૮.) જાણવા.

૪૮. * અપર્યાપ્ત ચેદ્દિયાદિક-માના કાંઈકને સાસ્વાદન સમ્યગ્દર્શનનો સંભવ હોવાથી વે જ્ઞાન અને વાકીનાને વે અજ્ઞાન હોય છે.

૪૯. † સમ્યગ્દષ્ટિ મનુષ્યને અપર્યાપ્તવસ્થામાં તીર્થકરાદિની પેટે અવધિજ્ઞાનનો સંભવ છે તેથી ત્રણ જ્ઞાન મજનાઈ હોય છે, પણ સિધ્ધાદષ્ટિને વિભંગ હોવું નથી માટે અવશ્ય વે અજ્ઞાન હોય છે.

‡ અપર્યાપ્ત વ્યન્તરો નારકોની પેટે અવશ્ય ત્રણ જ્ઞાનવાળા, વે અજ્ઞાનવાળા કે ત્રણ અજ્ઞાનવાળા જાણવા, કેમકે અસંજી થકી ઉત્પન્ન થયેલા તે વિષે અપર્યાપ્તવસ્થાએ વિભંગજ્ઞાનનો અભાવ છે.

§ જ્યોતિષિક અને વૈમાનિકને વિષે સંજીથી જ આવીને ઉત્પન્ન થાય છે, માટે તેઓને અપર્યાપ્તવસ્થામાં પણ મવપ્રત્યય અવધિ કે વિભંગનો અવશ્ય સદ્ભાવ હોવાથી ત્રણ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે.—ટીકા.

૫૦. † નોપર્યાપ્ત અને નોઅપર્યાપ્ત એટલે પર્યાપ્તભાવ અને અપર્યાપ્તભાવના અભાવથી સિદ્ધ જીવો જાણવા, કેમકે તેઓ પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્તનામ કર્મથી રહિત છે.—ટીકા.

૫૧. ‡ નિરયમવત્થ એટલે નરકગતિને વિષે ઉત્પત્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા, અને નિરયગતિક એટલે નરકગતિમાં જતાં અંતરાલ્પગતિમાં વસતા, પણ ઉત્પત્તિસ્થાનને નહિ પ્રાપ્ત થયેલા—એટલો તફાવત છે. તેઓ નિરયગતિકની પેટે ત્રણ જ્ઞાનવાળા અને વે કે ત્રણ અજ્ઞાનવાળા જાણવા.—ટીકા.

૫૫. ‡ મવ્ય જીવો સકાયિકની પેટે પાંચ જ્ઞાનવાળા કે ત્રણ અજ્ઞાનવાળા મજનાઈ હોય છે.

५६. [प्र०] अभवसिद्धिषाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो ज्ञानी, अज्ञानी, तिभि अज्ञाणार्हं मयणाए ।
५७. [प्र०] नोभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सिद्धा ।
५८. [प्र०] सजीणं पुच्छा । [उ०] जहा सहंदिद्या । असजी जहा बेहंदिद्या । नोसजी नोअसजी जहा सिद्धा ।
५९. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! लब्धि पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा लब्धि पणत्ता, तं जहा- १ ज्ञानलब्धि, २ दंसणलब्धि, ३ चरित्तलब्धि, ४ चरित्ताचरित्तलब्धि, ५ दानलब्धि, ६ लाभलब्धि, ७ भोगलब्धि, ८ उवभोगलब्धि, ९ वीरि-
लब्धि, १० हंदिद्यलब्धि ।
६०. [प्र०] ज्ञानलब्धि णं भंते ! कतिविहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पणत्ता, तं जहा- आभिणिबोहियणा-
लब्धि, जाव केवलणाणलब्धि ।
६१. [प्र०] अज्ञानलब्धि णं भंते ! कतिविहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पणत्ता, तं जहा-महअज्ञानलब्धि,
सुयअज्ञानलब्धि, विभंगनाणलब्धि ।
६२. [प्र०] दंसणलब्धि णं भंते ! कतिविहा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पणत्ता, तं जहा-सम्मदंसणलब्धि,
मिच्छादंसणलब्धि, सम्मामिच्छादंसणलब्धि ।

५६. [प्र०] हे भगवन् ! अभवसिद्धिक-अभव्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी पण
अज्ञानी छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अभवसिद्धिक.

५७. [प्र०] हे भगवन् ! नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धोनी
पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

नोभवसिद्धिक-
नोअभवसिद्धिक.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! संज्ञिजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सेन्द्रियनी पेटे (सू० ३५.) जाणवा.
असंज्ञिजीवो बेइन्द्रियनी पेटे (सू० २८.) जाणवा. नोसंज्ञि-नोअसंज्ञिजीवो सिद्धोनी पेटे (सू० ३०.) जाणवा.

संज्ञिजीवो.
असंज्ञि जीवो.
नोसंज्ञि नोअसंज्ञि
जीवो.
लब्धिना प्रकार.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! लब्धि केटला प्रकारे कही छे ? [उ०] हे गौतम ! *लब्धि दस प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे—१ ज्ञान-
लब्धि, २ दर्शनलब्धि, ३ चारित्रलब्धि, ४ चारित्राचारित्रलब्धि, ५ दानलब्धि, ६ लाभलब्धि, ७ भोगलब्धि, ८ उपभोगलब्धि, ९ वीर्य-
लब्धि अने १० इन्द्रियलब्धि.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ
प्रमाणे— आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि, यावत् केवलज्ञानलब्धि.

ज्ञानलब्धि.

६१. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञानलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ
प्रमाणे— मतिअज्ञानलब्धि, श्रुतअज्ञानलब्धि अने विभंगज्ञानलब्धि.

अज्ञानलब्धि.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ
प्रमाणे—सम्यग्दर्शनलब्धि, मिथ्यादर्शनलब्धि अने सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि.

दर्शनलब्धि.

१ पाणुक्-क ।

५९. * लब्धि-ते ते प्रतिबन्धक कर्मना क्षयादिकधी आत्माने ज्ञानादिगुणनो लाभ थवो, तेना दस प्रकार छे—१ तथाविध ज्ञानावरण कर्मना क्षय के
क्षयोपशमधी मयासंभव पांच प्रकारना ज्ञाननो लाभ थवो ते ज्ञानलब्धि. २ सम्यक्, मित्र के मिथ्याश्रद्धानरूप आत्मानो परिणाम ते दर्शनलब्धि. ३ चारित्र-
मोहनीय कर्मना क्षय, उपशम के क्षयोपशमधी थयेलो आरमपरिणाम ते चारित्रलब्धि. ४ अप्रत्याख्यानावरण कषायना क्षयोपशमधी थयेलो देशविरतिरूप आत्म-
परिणाम ते चारित्राचारित्रलब्धि. ५ वन्तराय कर्मना क्षय के क्षयोपशमधी उत्पन्न थयेली दानादि ५ लब्धिओ. अही भोग अने उपभोगमा एटलो विशेष छे
के एकवार मात्र जेनो उपयोग थइ शके एवा आहारादिने भोग कहेवाय छे अने वारंवार जेनो उपयोग थइ शके एवा वस्त्र-भवनादि पदार्थने उपभोग कहेवाय
छे. १० मतिज्ञानावरणकर्मना क्षयोपशमधी प्राप्त थयेल भावेन्द्रियोनो तथा एकेन्द्रियादि जातिनामकर्म अने पर्याप्तनामकर्म उदयधी द्रव्येन्द्रियोनो लाभ थवो ते
इन्द्रियलब्धि.—टीका.

६२. † १ मिथ्यात्वमोहनीयकर्मना उपशम, क्षय के क्षयोपशमधी थएल श्रद्धानरूप आत्मपरिणाम ते सम्यग्दर्शनलब्धि, २ अशुद्ध मिथ्यात्वपुद्गलना
वैदनीय वएल विपर्ययरूप जीवपरिणाम ते मिथ्यादर्शनलब्धि, अने ३ अर्थ विशुद्ध मिथ्यात्व पुद्गलना वैदनीय उत्पन्न थएल मिथ्यरूप जीवपरिणाम ते
सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि.

૬૩. [પ્ર૦] ચરિત્તલક્ષી ણં મંતે ! કતિવિહા પળ્ણતા ! [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહા પળ્ણતા, તં જહા— સામાયિકચરિ-
ત્તલક્ષી, હેદોપસ્થાપનીયલક્ષી, પરિહારવિશુદ્ધિલક્ષી, સૂક્ષ્મસંપરાયલક્ષી, મહાવજ્રાયચરિત્તલક્ષી ।

૬૪. [પ્ર૦] ચરિત્તાચરિત્તલક્ષી ણં મંતે ! કતિવિહા પળ્ણતા ? [૩૦] ગોયમા ! યગાગારા પળ્ણતા, एवं जाव उवभोग-
लक्षी यगगारा पल्लता ।

૬૫. [પ્ર૦] ધીરિયલક્ષી ણં મંતે ! કતિવિહા પળ્ણતા ? [૩૦] ગોયમા ! તિવિહા પળ્ણતા, તં જહા—બાલવીરિયલક્ષી,
પંડિયવીરિયલક્ષી, બાલપંડિયવીરિયલક્ષી ।

૬૬. [પ્ર૦] ઇન્દ્રિયલક્ષી ણં મંતે ! કતિવિહા પળ્ણતા ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહા પળ્ણતા, તં જહા—સોન્દ્રિયલક્ષી,
જાવ ફાસિન્દ્રિયલક્ષી ।

૬૭. [પ્ર૦] નાણલક્ષિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાણી અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી, નો અજ્ઞાણી । અત્યેગતિયા ડુજ્ઞાણી
एवं पंच नाणां भयणाय ।

ચારિત્રલલ્લિધ.

૬૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ચારિત્રલલ્લિધ કેટલા પ્રકારની કહી છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ચારિત્રલલ્લિધ પાંચ પ્રકારની કહી છે, તે આ
પ્રમાણે—^૧ સામાયિકચારિત્રલલ્લિધ, ^૨ હેદોપસ્થાપનીયચારિત્રલલ્લિધ, ^૩ પરિહારવિશુદ્ધિકચારિત્રલલ્લિધ, ^૪ સૂક્ષ્મસંપરાયચારિત્રલલ્લિધ અને
^૫ યથાહ્યાતચારિત્રલલ્લિધ.

ચારિત્રાચારિત્ર-
લલ્લિધ.

૬૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ચારિત્રાચારિત્રલલ્લિધ કેટલા પ્રકારની કહી છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! એક પ્રકારની કહી છે, એ પ્રમાણે
[દાન લલ્લિધ], યાવત્ ઉપમોગલલ્લિધ પળ્ણ એક પ્રકારની કહી છે.

વીર્યલલ્લિધ.

૬૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વીર્યલલ્લિધ કેટલા પ્રકારની કહી છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વીર્યલલ્લિધ ત્રણ પ્રકારની કહી છે, તે આ પ્રમાણે—
બાલવીર્યલલ્લિધ, પંડિતવીર્યલલ્લિધ અને બાલપંડિતવીર્યલલ્લિધ.

ઇન્દ્રિયલલ્લિધ.

૬૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઇન્દ્રિયલલ્લિધ કેટલા પ્રકારની કહી છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ઇન્દ્રિયલલ્લિધ પાંચ પ્રકારની કહી છે, તે આ
પ્રમાણે— શ્રોત્રેન્દ્રિયલલ્લિધ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયલલ્લિધ.

જ્ઞાનલલ્લિધવાળા
જ્ઞાની કે અજ્ઞાની ?

૬૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્ઞાનલલ્લિધવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે પણ અજ્ઞાની
નથી. કેટલા એક બેજ્ઞાનવાળા છે; એ પ્રમાણે તેઓને પાંચ જ્ઞાન ભજનાવે હોય છે.

૧-વિશુદ્ધ-છ । ૨-સંપરાગલ-ક ।

૬૩. * (૧) હિંસાદિ સાવચ યોગથી વિરતિ તે સામાયિકચારિત્ર, તેના બે પ્રકાર છે—હત્વર અને યાવત્કથિક. હત્વર એટલે અલ્પકાલિન, તે હત્વર સામા-
યિક પહેલા અને છેલ્લા તીર્થકરના તીર્થને વિષે પ્રથમ ધીક્ષા લેનારને હોય છે. યાવત્કથિક એટલે યાવજીવ, તે ચારિત્ર મધ્યમ વાવીશ તીર્થકરના તીર્થને વિષે વર્ત-
માન સાધુઓને હોય છે; કેમકે તેઓ ઋજુ અને પ્રાજ્ઞ હોવાથી તેઓને ચારિત્રમાં દોષનો સંભવ નથી તેથી તેઓને પ્રથમથી જ યાવત્કથિક સામાયિકચારિત્ર હોય
છે. અહીં કોઈ શંકા કરે કે હત્વરસામાયિકવાળા સાધુએ યાવજીવ સાવચ યોગની પ્રતિજ્ઞા લીધેલી હોવાથી અને ફરીથી હેદોપસ્થાપનીય ચારિત્ર લેવામાં પૂર્વના ચા-
રિત્રનો ત્યાગ થતો હોવાથી પ્રતિજ્ઞાનો ભંગ કેમ ન થાય ? તેનું ઉત્તર એ છે કે હેદોપસ્થાપનીય ચારિત્રમાં પણ સાવચયોગનો ત્યાગ હોવાથી પ્રતિજ્ઞાનો ભંગ થતો નથી,
પણ તે ચારિત્રની વિશેષ શુદ્ધિ થવાથી નામમાત્રનો ભેદ થાય છે. (૨) હેદોપસ્થાપનીય-પૂર્વના ચારિત્રપર્યાયનો છેદ કરીને પુનઃ મહાવ્રતોને અંગીકાર કરવા તે,
તેના બે પ્રકાર છે—સાતિચાર અને નિરતિચાર. હત્વરસામાયિકવાળા પ્રથમ ધીક્ષિતને પુનઃ મહાવ્રતોનું આરોપણ કરે, અથવા બીજા તીર્થકરના સાધુઓ બીજા તીર્થ-
કરના તીર્થમાં પ્રવેશ કરે ત્યારે તેને નિરતિચાર ચારિત્ર હોય છે, જેમ શ્રીપાર્થનાથના સાધુઓ મહાવીર સ્વામીના તીર્થમાં આવી પંચ મહાવ્રત ધર્મનો સ્વીકાર
કરે. મહાવ્રતનો મૂલથી ભંગ કરનાર સાધુ પુનઃ મહાવ્રતનો સ્વીકાર કરે તે સાતિચાર. (૩) પરિહારવિશુદ્ધિચારિત્ર—જેમાં તપો વિંદેશપથી આત્માની વિશુદ્ધિ
થાય તે, તેના બે પ્રકાર છે—નિવિંદેશમાનક અને નિવિંદેશકાયિક. જેમ કે—નવ સાધુનો એક ગચ્છ હોય છે, તેમાં ચાર તપ કરનારા, ચાર વૈયાઠ્ઠ્ય (સેવા)
કરનારા અને એક વાચનાચાર્ય (ગુરુ) હોય છે. ચાર તપ કરનારા સાધુઓ નિવિંદેશમાનક અને ચાર વૈયાઠ્ઠ્ય કરનારા અને વાચનાચાર્યને નિવિંદેશકાયિક કહેવાય
છે. તેમાં નિવિંદેશમાનકનો જઘન્ય તપ આ પ્રમાણે છે—પ્રીમ ઋતુમાં જઘન્ય એક ઉપવાસ, મધ્યમ બે ઉપવાસ, અને ઉત્કૃષ્ટ ત્રણ ઉપવાસ, શિશિર ઋતુમાં
જઘન્ય બે ઉપવાસ, મધ્યમ ત્રણ ઉપવાસ અને ઉત્કૃષ્ટ ચાર ઉપવાસ, અને વર્ષાઋતુમાં જઘન્ય ત્રણ ઉપવાસ, મધ્યમ ચાર ઉપવાસ અને ઉત્કૃષ્ટ પાંચ ઉપવાસ
અને પાર્ણ આર્યવીલ કરવાનું હોય છે. કલ્પસ્થિતો (ચાર વૈયાઠ્ઠ્ય કરનારા અને એક વાચનાચાર્ય) પ્રતિ દિવસ આર્યવીલ કરે છે. આ પ્રમાણે છ માસ સુધી તપ
કર્યા પછી તપ કરનારા વૈયાઠ્ઠ્ય કરે છે અને વૈયાઠ્ઠ્ય કરનારા છ માસ પર્યન્ત તપ કરે છે. ત્યારપછી વાચનાચાર્ય પણ એ પ્રમાણે છ માસ સુધી તપ કરે છે અને
તેમાંથી એક ગુરુ થાય છે, બાકીના સર્વ સાધુઓ તેનું વૈયાઠ્ઠ્ય કરે છે. એ પ્રમાણે અઠાર માસનો કલ્પ પૂરો થયા પછી તેઓ ગચ્છમાં આવે છે કે જિન કલ્પનો
સ્વીકાર કરે છે. પરિહારવિશુદ્ધિ ચારિત્રને પ્રહણ કરવાની ઇચ્છાવાળા તીર્થકર કે કેવલજ્ઞાની પાસે તે ચારિત્રને પ્રહણ કરી શકે છે, અથવા જેને તીર્થકર કે કેવલ-
જ્ઞાનીની પાસે પૂર્વે ચારિત્ર પ્રહણ કર્યું હોય એવા સાધુની પાસે પણ પ્રહણ કરે છે. (૪) સૂક્ષ્મસંપરાય—જ્યાં માત્ર સૂક્ષ્મ-સ્વલ્પ, સંપરાય-કષાય, લોભાદિનો ઉદ્ભવ
છે તે સૂક્ષ્મસંપરાય. તેના બે પ્રકાર છે—વિશુદ્ધમાનક અને સંક્લિષ્ટમાનક. તેમાં વિશુદ્ધમાનકચારિત્ર ક્ષપકથેણી અને ઉપશમથેણિએ ચઢનારને હોય છે, અને
સંક્લિષ્ટમાનક ઉપશમથેણીથી પઢનારને હોય છે. (૫) યથાહ્યાત-સર્વથા કષાયોદયનો અભાવ જે ચારિત્રને વિષે હોય તે યથાહ્યાત. તેના બે પ્રકાર છે.
ઉપશમક-કષાયોનો ઉપશમ કરનાર અને ક્ષપક-કષાયોનો ક્ષય કરનાર.—ટીકા.

૬૪. † ચારિત્રાચારિત્રલલ્લિધ એટલે દેશવિરતિલલ્લિધ, અહીં મૂલગુણ, ઉત્તરગુણ અને તેના મેદોની વિવેકા કર્યા ક્ષિયાય બીજા અપ્રત્યાહ્યાનાવરણકષાયન
ક્ષયોપશમજન્ય પરિણામમાત્રની વિવેકા કરેલી હોવાથી આ લલ્લિધ એક પ્રકારે કહી છે—ટીકા.

૬૫. ‡ ૧ જેથી બાલ-સંયમરહિત અજ્ઞાની—ની અસંયમ-અજ્ઞાનપૂર્વક કદાચુદ્ધાનમાં પ્રવૃત્તિ થાય તે બાલવીર્યલલ્લિધ; તે ચારિત્રનોહના ઉદયથી અને વીર્યાન્ત-
રાયના ક્ષયોપશમથી પ્રકટ થાય છે. ૨ જેમાં સંયમને વિષે પ્રવૃત્તિ થાય તે પંડિતવીર્યલલ્લિધ, અને જેથી દેશવિરતિમાં પ્રવૃત્તિ થાય તે બાલપંડિતવીર્યલલ્લિધ.—ટીકા.

૧૮. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાળી અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નો નાળી, અજ્ઞાણી । અત્યેગતિયા ડુઅજ્ઞાણી, તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાં મયણાય ।

૧૯. [પ્ર૦] આમિણિબોહિયનાળલક્ષીયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાળી અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અજ્ઞાણી । અત્યેગતિયા ડુઅજ્ઞાણી, અત્તારિ નાળાં મયણાય ।

૨૦. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાળી, અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાળી ધિ અજ્ઞાણી ધિ । જે નાળી તે નિયમા યગનાળી—કેવલનાળી । જે અજ્ઞાણી તે અત્યેગતિયા ડુઅજ્ઞાણી, તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાં મયણાય । एवं સુયનાળલક્ષીયા ધિ । તસ્સ અલક્ષીયા ધિ જહા આમિણિબોહિયનાળસ્સ અલક્ષીયા ।

૨૧. [પ્ર૦] ઓહિનાળલક્ષીયાળં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અજ્ઞાણી । અત્યેગતિયા તિષ્ઠાળી, અત્યેગતિયા અજ્ઞાણી । જે તિષ્ઠાળી તે આમિણિબોહિયનાળી, સુયનાળી, ઓહિનાળી । જે અજ્ઞાણી તે આમિણિબોહિયનાળી, સુયનાળી, ઓહિનાળી, મળપજ્ઞવનાળી ।

૨૨. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષિયાળં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાળી ધિ અજ્ઞાણી ધિ । एवं ઓહિનાળવજ્ઞાં અત્તારિ નાળાં તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાં મયણાય ।

૨૩. [પ્ર૦] મળપજ્ઞવનાળલક્ષિયાળં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અજ્ઞાણી । અત્યેગતિયા તિષ્ઠાળી, અત્યેગતિયા અજ્ઞાણી । જે તિષ્ઠાળી તે આમિણિબોહિયનાળી, સુયનાળી, મળપજ્ઞવનાળી । જે અજ્ઞાણી તે આમિણિબોહિયનાળી, સુયનાળી, ઓહિનાળી, મળપજ્ઞવનાળી ।

૨૪. [પ્ર૦] તસ્સ અલક્ષીયાળં પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! નાળી ધિ, અજ્ઞાણી ધિ; મળપજ્ઞવનાળવજ્ઞાં અત્તારિ નાળાં, તિષ્ઠિ અજ્ઞાણાં મયણાય ।

૨૫. [પ્ર૦] કેવલનાળલક્ષિયા ણં મંતે ! જીવા કિં નાળી અજ્ઞાણી ? [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અજ્ઞાણી । નિયમા યગનાળી—કેવલનાળી ।

૨૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની નથી પણ અજ્ઞાની છે. કેટલા એક વેઅજ્ઞાનવાળા છે, અને તેઓને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાઈ હોય છે.

જ્ઞાનલઘ્વિરહિત.

૨૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આમિણિબોધિકજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની હોય છે, પણ અજ્ઞાની નથી. કેટલાએક વેજ્ઞાનવાળા છે, તેઓને ચાર જ્ઞાન મજનાઈ હોય છે. [૧૬૯૯ કેટલાએક ત્રણજ્ઞાનવાળા અને કેટલાએક ચારજ્ઞાનવાળા હોય છે.]

આમિણિબોધિક-જ્ઞાનલઘ્વિ.

૨૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આમિણિબોધિકજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે. જેઓ જ્ઞાની છે તેઓ અવશ્ય એક કેવલજ્ઞાની છે; જેઓ અજ્ઞાની છે તેમાં કેટલાક વેઅજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાક ત્રણ અજ્ઞાનવાળા છે; ૧૬૯૯ તેઓને મજનાઈ ત્રણ અજ્ઞાન હોય છે. ૧ પ્રમાણે *શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિવાળા પણ જાણવા. શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો આમિણિબોધિકલઘ્વિરહિત જીવોની પેટે જાણવા.

આમિણિબોધિક-લઘ્વિરહિત.

૨૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અવધિજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે, પણ અજ્ઞાની નથી. તેઓમાં કેટલાક ત્રણજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાક ચારજ્ઞાનવાળા છે; જેઓ ત્રણજ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિબોધિકજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન અને અવધિજ્ઞાનવાળા છે. જેઓ ચારજ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિબોધિકજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન:પર્યવજ્ઞાનવાળા છે.

અવધિજ્ઞાન-લઘ્વિક જીવો.

૩૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અવધિજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે, ૧ પ્રમાણે તેઓને અવધિજ્ઞાન શિવાય ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાઈ હોય છે.

અવધિજ્ઞાનલઘ્વિ-રહિત.

૩૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! મન:પર્યવજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે, પણ અજ્ઞાની નથી; તેમાં કેટલાક ત્રણજ્ઞાનવાળા છે અને કેટલાક ચારજ્ઞાનવાળા છે. જે ત્રણ જ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની અને મન:પર્યવજ્ઞાની છે, અને જેઓ ચાર જ્ઞાનવાળા છે તેઓ આમિણિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની અને મન:પર્યવજ્ઞાની છે.

મન:પર્યવજ્ઞાન-લઘ્વિક.

૩૨. [પ્ર૦] મન:પર્યવજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની પણ છે અને અજ્ઞાની પણ છે, તેઓને મન:પર્યવજ્ઞાન શિવાય ચાર જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાન મજનાઈ છે.

મન:પર્યવજ્ઞાન-લઘ્વિરહિત.

૩૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! કેવલજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જીવો શું જ્ઞાની છે કે અજ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ જ્ઞાની છે પણ અજ્ઞાની નથી. તેઓ અવશ્ય એકકેવલજ્ઞાનવાળા છે.

કેવલજ્ઞાન-લઘ્વિક.

૩૦. * આમિણિબોધિકલઘ્વિવાળાની પેટે (સુ. ૧૯) શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિવાળા જાણવા, ૧૬૯૯ તેઓ જ્ઞાની જ હોય છે, અને તેઓને ચાર જ્ઞાન મજનાઈ હોય છે. શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો આમિણિબોધિકલઘ્વિરહિત જીવોની પેટે (સુ. ૩૦) જાણવા, ૧૬૯૯ તેઓ જ્ઞાની અથવા અજ્ઞાની હોય છે, જો જ્ઞાની હોય તો તેને માત્ર એક કેવલજ્ઞાન હોય છે અને અજ્ઞાની હોય તો ત્રણ અજ્ઞાન મજનાઈ હોય છે. પરન્તુ જ્ઞ-જ્ઞ-જ્ઞ પ્રતિમા “તસ્સ અલક્ષિયા જહા આમિણિબોહિયનાળસ્સ લક્ષિયા” પૂર્વો પાઠ છે, (શ્રુતજ્ઞાનલઘ્વિરહિત જીવો આમિણિબોધિકલઘ્વિવાળાની પેટે જાણવા) પણ ૧ પાઠ અર્થની દૃષ્ટિથી સંગત લાગતો નથી. જ્ઞ પ્રતિમા આ પાઠ નથી, માત્ર જ્ઞ પ્રતિમા ‘અલક્ષિયા’ ૧ પાઠ છે, અને તે અર્થની સાથે સંગત લાગતો હોવાથી તે પાઠ કાયમ રાખી તેને અનુસારે અનુવાદ કરેલો છે—સંપોષક.

७६. [प्र०] तस्स अलक्षियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अज्ञाणी वि । केवलनाणवज्जाहं चत्तारि नाणाहं तिस्सि अज्ञाणाहं भयणाए ।

७७. [प्र०] अज्ञाणलक्षियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अज्ञाणी । तिस्सि अज्ञाणाहं भयणाए ।

७८. [प्र०] तस्स अलक्षियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अज्ञाणी । पंच नाणाहं भयणाए, जहा अज्ञाणस्स लक्षिया अलक्षिया य भणिया एवं मइअज्ञाणस्स सुयअज्ञाणस्स य लक्षिया अलक्षिया य भाणियहा । विभंगनाणलक्षियाणं तिस्सि अज्ञाणाहं नियमा । तस्स अलक्षियाणं पंच नाणाहं भयणाए, दो अज्ञाणाहं नियमा ।

७९. [प्र०] दंसणलक्षिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अज्ञाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अज्ञाणी वि, पंच नाणाहं तिस्सि अज्ञाणाहं भयणाए ।

८०. [प्र०] तस्स अलक्षिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अज्ञाणी ? [उ०] गोयमा ! तस्स अलक्षिया नत्थि । सम्मा-दंसणलक्षियाणं पंच नाणाहं भयणाए । तस्स अलक्षियाणं तिस्सि अज्ञाणाहं भयणाए ।

८१. [प्र०] मिच्छादंसणलक्षिया णं भंते ! पुच्छा । [उ०] तिस्सि अज्ञाणाहं भयणाए । तस्स अलक्षियाणं पंच नाणाहं, तिस्सि य अज्ञाणाहं भयणाए । सम्मामिच्छादंसणलक्षिया, अलक्षिया य जहा मिच्छादंसणलक्षिया अलक्षिया तहेव भाणियहं ।

८२. [प्र०] चरित्तलक्षिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अज्ञाणी ? [उ०] गोयमा ! पंच नाणाहं भयणाए । तस्स अलक्षियाणं मणपज्जवनाणवज्जाहं चत्तारि नाणाहं, तिस्सि य अज्ञाणाहं भयणाए ।

केवलज्ञानलक्षि-
रहित.

७६. [प्र०] केवलज्ञानलक्षिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेओने केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अज्ञानलक्षिक.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलक्षिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, पण अज्ञानी छे. तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अज्ञानलक्षिरहित.
मलज्ञान अने श्रुता-
ज्ञान लक्षिरहित.

७८. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलक्षिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी; तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. जेम अज्ञानलक्षिवाळा अने अज्ञानलक्षिरहित जीवो कह्या तेम मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलक्षिवाळा अने ते लक्षिधी रहित जीवो कहेवा. [एटले अज्ञानलक्षिवाळानी पेटे (सू० ७७) मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलक्षिवाळा जीवो जाणवा, अने अज्ञानलक्षिरहित जीवोनी पेटे (सू० ७८) मलज्ञान अने श्रुताज्ञानलक्षिरहित जीवो जाणवा.] विभंगज्ञानलक्षिवाळा जीवोने अवश्य त्रण अज्ञान होय छे, अने विभंगज्ञानलक्षिरहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान के अवश्य बे अज्ञान होय छे.

विभंगज्ञानलक्षिक
अने विभंगज्ञान-
लक्षिरहित.

दर्शनलक्षिक.

७९. [प्र०] हे भगवन् ! *दर्शनलक्षिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. [जेओ ज्ञानी छे] तेओने पांच ज्ञान, अने [जेओ अज्ञानी छे तेओने] त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

दर्शनलक्षिरहित.

८०. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनलक्षिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलक्षिरहिता जीवो होता नथी. सम्यग्दर्शनलक्षिवाळा जीवोने भजनाए पांच ज्ञान होय छे, अने सम्यग्दर्शनलक्षिरहित जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे.

मिथ्यादर्शनलक्षिक.

८१. [प्र०] हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनलक्षिवाळा जीवो ज्ञानी होय के अज्ञानी ? [उ०] तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. मिथ्यादर्शनलक्षिरहित (सम्यग्दृष्टि अने मिश्रदृष्टि) जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. सम्यग्मिथ्यादर्शनलक्षिवाळा (मिश्रदृष्टि) जीवो मिथ्यादर्शनलक्षिवाळानी पेटे जाणवा. सम्यग्मिथ्यादर्शनलक्षिरहित जीवो जेम मिथ्यादर्शनलक्षिरहित जीवो कह्या ते प्रमाणे जाणवा.

मिश्रदृष्टिलक्षिक.

चारित्रलक्षिक.

८२. [प्र०] हे भगवन् ! †चारित्रलक्षिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. चारित्रलक्षिरहित जीवोने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

१ सम्मदं- घ । २ -कद्धी अकद्धी त-घ ।

७९. * दर्शन-भ्रदान, तेमां जे ज्ञानपूर्वक होय ते सम्यग्भ्रदान अने अज्ञानपूर्वक होय ते मिथ्याभ्रदान. सम्यग्भ्रदावाळा ते ज्ञानी अने मिथ्याभ्रदावाळा ते अज्ञानी कहेवाय छे.

८०. † दर्शनलक्षिरहित जीवो नथी, केमके सबे जीवने सम्यग् मिथ्याके मिश्र भ्रदानमांभी एक भ्रदान अवश्य होय छे.

८२. ‡ चारित्रलक्षिरहित जे ज्ञानी छे, तेओने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान भजनाए होय छे, केमके भवित्तिपणामां भादिना बे के त्रण ज्ञान होय छे, अने सिद्धपणामां एक केवलज्ञान होय छे. सिद्ध नोचारित्री नोभचारित्री होवाधी चारित्रलक्षिरहित छे, जे अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

૮૩. [પ્ર૦] સામાયિકચારિત્તલ્હીયા ણં મંતે ! ઝીવા કિં નાળી, અઝ્ઞાળી ? [૩૦] ગોયમા ! નાળી, કેવલવજ્ઞાઈં ચત્તારી નાળાઈં મયળાપ . તસ્સ અલ્હીયાણં પંચ નાળાઈં, તિષ્ઠિ ય અઝ્ઞાળાઈં મયળાપ . ઇવં જહા સામાયિકચારિત્તલ્હીયા અલ્હીયા ય મધિયા, ઇવં જાવ મહ્વચ્ચાયચારિત્તલ્હીયા અલ્હીયા ય માળિયજ્ઞા, નવરં મહ્વચ્ચાયચારિત્તલ્હીયાણં પંચ નાળાઈં મયળાપ .

૮૪. [પ્ર૦] ચરિત્તચારિત્તલ્હીયા ણં મંતે ! ઝીવા કિં નાળી, અઝ્ઞાળી ? [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અઝ્ઞાળી . અત્થે-ગતિયા ડુઝ્ઞાળી, અત્થેગતિયા તિઝ્ઞાળી . જે ડુઝ્ઞાળી તે આમિણિબોહિયનાળી ય સુયનાળી ય . જે તિઝ્ઞાળી તે આમિણિબોહિય-નાળી, સુયનાળી, ઓહિનાળી . ઢાળલ્હીયાણં પંચ નાળાઈં, તિષ્ઠિ અઝ્ઞાળાઈં મયળાપ .

૮૫. [પ્ર૦] તસ્સ અલ્હીયાણં પુચ્છા . [૩૦] ગોયમા ! નાળી, નો અઝ્ઞાળી . નિયમા ઇગનાળી કેવલનાળી . ઇવં જાવ વીરિયસ્સ લ્હી અલ્હી ય માળિયજ્ઞા . ઢાલવીરિયલ્હીયાણં તિષ્ઠિ નાળાઈં, તિષ્ઠિ અઝ્ઞાળાઈં મયળાપ . તસ્સ અલ્હીયાણં પંચ નાળાઈં મયળાપ . પંડિયવીરિયલ્હીયાણં પંચ નાળાઈં મયળાપ . તસ્સ અલ્હીયાણં મળપજ્ઞવનાળવજ્ઞાઈં ણાળાઈં, અઝ્ઞા-ળાણિ તિષ્ઠિ ય મયળાપ . ઢાલપંડિયવીરિયલ્હીયાણં તિષ્ઠિ નાળાઈં મયળાપ . તસ્સ અલ્હીયાણં પંચ નાળાઈં તિષ્ઠિ અઝ્ઞાળાઈં મયળાપ .

૮૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! *સામાયિકચારિત્તલ્હીવાલ્હા ઝીવો શું ઝ્ઞાની હોય છે કે અઝ્ઞાની હોય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ ઝ્ઞાની હોય છે, તેઓને કેવલઝ્ઞાન શિવાય ચાર ઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે. સામાયિકચારિત્તલ્હીરહિત ઝીવોને પાંચ ઝ્ઞાન અને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે. ઇ પ્રમાણે જેવી રીતે સામાયિકચારિત્તલ્હીવાલ્હા અને સામાયિકચારિત્તલ્હીરહિત ઝીવો કહ્યા તેમ યાવત્ યથાસ્થાત-ચારિત્તલ્હીવાલ્હા અને યથાસ્થાતચારિત્તલ્હીરહિત ઝીવો કહેવા. પરન્તુ યથાસ્થાતચારિત્તલ્હીવાલ્હાને પાંચ ઝ્ઞાન મજનાપ જાળવા.

૮૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ચારિત્તચારિત્ત (દેશચારિત્ત)લ્હીવાલ્હા ઝીવો શું ઝ્ઞાની છે કે અઝ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ ઝ્ઞાની છે પણ અઝ્ઞાની નથી; તેમાં કેટલાક વેઝ્ઞાનવાલ્હા અને કેટલાક ત્રણઝ્ઞાનવાલ્હા છે. જેઓ વેઝ્ઞાનવાલ્હા છે તેઓ આમિણિ-બોધિક ઝ્ઞાન અને શ્રુતઝ્ઞાનવાલ્હા છે, જેઓ ત્રણઝ્ઞાનવાલ્હા છે તેઓ આમિણિબોધિકઝ્ઞાની, શ્રુતઝ્ઞાની અને અવધિઝ્ઞાની છે. †ચારિત્તચારિત્ત (દેશચારિત્ત)લ્હીરહિત ઝીવોને મજનાપ પાંચ ઝ્ઞાન અને ત્રણ અઝ્ઞાન હોય છે. †દાનલ્હીવાલ્હાને પાંચ ઝ્ઞાન અને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે.

૮૫. [પ્ર૦] ††દાનલ્હીરહિત ઝીવો ઝ્ઞાની છે કે અઝ્ઞાની છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓ ઝ્ઞાની છે, અને તેઓ અવશ્ય ઇકકેવલ્હ-ઝ્ઞાનવાલ્હા છે. ઇ પ્રમાણે યાવત્ વીર્યલ્હીવાલ્હા અને વીર્યલ્હીરહિત ઝીવો કહેવા. ††ઢાલવીર્યલ્હીવાલ્હા ઝીવોને ત્રણ ઝ્ઞાન અને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે. ઢાલવીર્યલ્હીરહિત ઝીવોને મજનાપ પાંચ ઝ્ઞાન હોય છે. પંડિતવીર્યલ્હીવાલ્હા ઝીવોને પણ મજનાપ પાંચ ઝ્ઞાન હોય છે. પંડિતવીર્યલ્હીરહિતને મન:પર્યવઝ્ઞાન શિવાય ચાર ઝ્ઞાન અને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે. ઢાલપંડિતવીર્યલ્હીવાલ્હાને મજનાપ ત્રણ ઝ્ઞાન હોય છે, અને ઢાલપંડિતવીર્યલ્હીરહિત ઝીવોને પાંચ ઝ્ઞાન અને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે.

સામાયિકચારિત્ત-લ્હીક.

યથાસ્થાતચારિત્ત-લ્હીક અને અલ્હીક.

ચારિત્તચારિત્ત-લ્હીક.

ચારિત્તચારિત્ત-લ્હીરહિત-દાનલ્હીક.

દાનલ્હીરહિત-વીર્યલ્હીક અને વીર્યલ્હીરહિત. ઢાલ-વીર્યલ્હીક, પંડિત-વીર્યલ્હીક અને ત-દલ્હીક. ઢાલપંડિ-તવીર્યલ્હીક અને અલ્હીક.

† ઇવં જહા જાવ ય .

૮૩. * સામાયિકચારિત્તલ્હીવાલ્હા ઝીવો ઝ્ઞાની જ હોય છે, તેથી તેઓને કેવલઝ્ઞાન શિવાય ચાર ઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે, કેમકે યથાસ્થાત-ચારિત્તને જ કેવલઝ્ઞાન હોય છે. સામાયિકચારિત્તની લ્હીરહિત જે ઝ્ઞાની છે તેઓને છેદોપસ્થાપનીયભાવે અને સિદ્ધભાવે પાંચ ઝ્ઞાન મજનાપ છે, જે અઝ્ઞાની છે તેઓને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ છે. પરન્તુ યથાસ્થાતચારિત્તવાલ્હાને છદ્ધસ્થપણે અને કેવલીપણે પાંચ ઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે.

૮૪. † ચારિત્તચારિત્તલ્હીરહિત ઝીવો દેશવિરતિ શ્રાવકથી અન્ય જાળવા, તેમાં જે ઝ્ઞાની છે તેને પાંચ ઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે, અને જે અઝ્ઞાની છે તેઓને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ છે.

†† દાનાન્તરાયના ક્ષય કે ક્ષયોપશયથી પ્રકટ થયેલ દાનલ્હીવાલ્હા ઝ્ઞાની અને અઝ્ઞાની હોય છે. તેમાં જેઓ ઝ્ઞાની છે તેઓને પાંચ ઝ્ઞાન મજનાપ છે, કેમકે કેવલઝ્ઞાની પણ દાનલ્હીયુક્ છે. જેઓ અઝ્ઞાની છે તેઓને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ છે.

૮૫. ††† દાનલ્હીરહિત સિદ્ધો છે, તેઓને દાનાન્તરાયના ક્ષય થવા છતાં દેશ લાયક વસ્તુના અભાવથી, પાત્રના અભાવથી અને દાનના પ્રયોજનના અભાવથી દાનલ્હીરહિત કહ્યા છે, તેઓ અવશ્ય ઇકકેવલ્હઝ્ઞાનસહિત છે. ઇ પ્રમાણે લાભ, ભોગ, ઉપભોગ અને વીર્યલ્હીવાલ્હા અને તેથી હ્તર ઝીવો જાળવા. અહીં પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે લ્હીરહિત સિદ્ધો જાળવા. યદિ દાનાન્તરાયનો ક્ષય હોવાથી કેવલઝ્ઞાનીને દાનાદિ લ્હીઓ પ્રકટ થાય છે અને તેથી તેમની પણ દાનાદિકમાં પ્રવૃત્તિ થવી જોઈ, તો પણ તેઓ કૃતકૃલ્લ થયેલા હોવાથી અને પ્રયોજનના અભાવથી તેઓની દાનાદિમાં પ્રવૃત્તિ થતી નથી.—ટીકા.

†††† ઢાલવીર્યલ્હીવાલ્હા અસંયત (અવિરતિ) કહેવાય છે, તેમાં ઝ્ઞાનીને ત્રણ ઝ્ઞાન અને અઝ્ઞાનીને ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે. ઢાલવીર્યલ્હીરહિત ઝીવો સર્વવિરતિ, દેશવિરતિ અને સિદ્ધો જાળવા, તેઓને પાંચ ઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે. પંડિતવીર્યલ્હીરહિત અસંયત, દેશસંયત અને સિદ્ધો છે. તેમાં અસંયતને આદિના ત્રણ ઝ્ઞાન કે ત્રણ અઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે, દેશસંયતને ત્રણ ઝ્ઞાન મજનાપ હોય છે, અને સિદ્ધને ઇક કેવલઝ્ઞાન હોય છે. મન:પર્યવઝ્ઞાન માત્ર પંડિતવીર્યલ્હીવાલ્હાને જ હોય છે. સિદ્ધો પંડિતવીર્યલ્હીરહિત છે, કેમકે અહિંસાદિ ધર્મવ્યાપારમાં સર્વથા પ્રવૃત્તિ કરવી તે પંડિતવીર્ય છે અને તે તેઓને નથી.—ટીકા.

८६. [प्र०] इन्द्रियलक्ष्मिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अस्सानी ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि णाणां, तिस्सि य अस्सानीयं भयणाय ।

८७. [प्र०] तस्स अलक्ष्मियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी, जो अस्सानी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी । सोहं-दियलक्ष्मिया णं जह्वा इन्द्रियलक्ष्मिया ।

८८. [प्र०] तस्स अलक्ष्मियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि अस्सानी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया दुस्सानी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुस्सानी ते आभिणिवोदियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी ते केवलनाणी । जे अस्सानी ते नियमा दुअस्सानी, तं जह्वा—मइअस्सानी य सुयअस्सानी य । चक्खिंदिय—धाणियाणं लक्ष्मी अलक्ष्मी य जहेव सोहंदियस्स । जिस्सि-दियलक्ष्मियाणं चत्तारि णाणां, तिस्सि य अस्सानीयं भयणाय ।

८९. [प्र०] तस्स अलक्ष्मियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा नाणी वि, अस्सानी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी । जे अस्सानी ते नियमा दुअस्सानी, तं जह्वा—मइअस्सानी य सुयअस्सानी य । फांसिदियलक्ष्मिया णं अलक्ष्मिया णं जह्वा इन्द्रियलक्ष्मिया य अलक्ष्मिया य ।

९०. [प्र०] सागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अस्सानी ? [उ०] पंच नाणां तिस्सि अस्सानीयं भयणाय ।

९१. [प्र०] आभिणिवोदियनाणसागारोवउत्ता णं भंते ? [उ०] चत्तारि णाणां भयणाय । एवं सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिणाणसागारोवउत्ता जह्वा ओहिणाणलक्ष्मिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जह्वा मणपज्जवनाणलक्ष्मिया । केवलना-

इन्द्रियलक्ष्मिक-

८६. [प्र०] हे भगवन् ! इन्द्रियलक्ष्मिया जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! *तेओने भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

इन्द्रियलक्ष्मिरहित-

८७. [प्र०] इन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी. ते अवश्य एक केवलज्ञानवाळा छे. श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मियाळा इन्द्रियलक्ष्मियाळानी पेटे (सू० ८६.) जाणवा.

श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मिरहित-

८८. [प्र०] श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे, अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओमां केटलाक बेज्ञानवाळा अने केटलाक एकज्ञानवाळा छे. जेओ बेज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिवोधिकाज्ञानी अने श्रुतज्ञानी छे; अने जेओ एकज्ञानी छे तेओ एक-केवलज्ञानी छे, जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य बेअज्ञानवाळा छे. जेम के मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. नेत्रेन्द्रिय अने घ्राणेन्द्रियलक्ष्मियाळाने श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मियाळानी पेटे (सू० ८७.) चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा; नेत्रेन्द्रिय अने घ्राणेन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवोने श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवोनी पेटे बे ज्ञान, बे अज्ञान अने एक केवलज्ञान होय छे. जिहेन्द्रियलक्ष्मियाळाने चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

चक्षुरेन्द्रियने घ्राणेन्द्रियलक्ष्मियाळा अने लक्ष्मिरहित- जिहेन्द्रियलक्ष्मिक-

जिहेन्द्रियलक्ष्मिरहित-

८९. [प्र०] जिहेन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे, अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य एक केवलज्ञानी छे, जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य बे अज्ञानवाळा छे; ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. स्पर्शेन्द्रियलक्ष्मियाळाने इन्द्रियलक्ष्मियाळानी पेटे (सू० ८६.) भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा. स्पर्शेन्द्रिय लक्ष्मिरहित जीवोने इन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवोनी पेटे (सू० ८७.) एक केवलज्ञान होय छे.

स्पर्शेन्द्रियलक्ष्मिक-

साकार उपयोगवाळा-

९०. [प्र०] हे भगवन् ! साकारउपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) होय छे.

आभिनिवोधिक अने क्लृप्तज्ञानोपयोग-

९१. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिवोधिकसाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. अवधिज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवोने अवधिज्ञान-

१ - इन्द्रियलक्ष्मिया णं अलक्ष्मिया ण य-घ । २ - इन्द्रियलक्ष्मिया अलक्ष्मिया ऊ ।

८६. * इन्द्रियलक्ष्मिया जीवो जेओ ज्ञानी छे, तेओने चार ज्ञान होय छे, पण केवलज्ञान होइ नथी; केमके केवलज्ञानीने इन्द्रियनो उपयोग नथी. जेओ अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे.—टीका.

८८. † श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मिरहित जीवोमां जेओ ज्ञानी छे ते आदिना बेज्ञानवाळा छे, अने ते अपर्याप्तावस्थामां साखादनसम्पददि विकलेन्द्रिय जीवो छे, एकज्ञानी ते केवलज्ञानवाळा छे, तेओ इन्द्रियोपयोगरहित होवाथी श्रोत्रेन्द्रियलक्ष्मिरहित छे. जे अज्ञानी छे ते आदिना बेअज्ञानवाळा छे.

८९. ‡ जिहेन्द्रियलक्ष्मिरहित केवलज्ञानी अने एकेन्द्रिय जीवो छे, तेथी जेओ ज्ञानी छे ते एक केवलज्ञानवाळा छे, अने जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य बेअज्ञानवाळा छे, केमके एकेन्द्रिय जीवोमां साखादन नहि होवाथी ज्ञाननो अभाव छे, तेम विभंगनो पण अभाव छे.

९०. ¶ आकार-विशेष, ते सहित जे बोध ते साकार बोध एटले विशेषप्राहक बोध, तेना उपयोगसहित ते साकारोपयुक्त कहूवाय छे. ते ज्ञानी अने अज्ञानी बने होय छे. तेमां ज्ञानीने पांच ज्ञान भजनाए होय छे, एटले कदाचित् बे, त्रण, चार अने एक पण ज्ञान होय छे. आ वथा ज्ञान लक्ष्मिने आभयी जाणवा. उपयोगनी अपेक्षाए तो एक काले एकज ज्ञान के एक अज्ञान होय छे. अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.—टीका.

असागरोवउत्ता जहा केवलनाणलक्ष्मीया । महअज्ञानसागरोवउत्ताणं तिच्छि अज्ञाणां भयणाप । एवं सुयअज्ञानसागरोवउत्ता वि । विभंगणाणसागरोवउत्ताणं तिच्छि अज्ञाणां नियमा ।

९२. [प्र०] अज्ञागरोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अज्ञाणी ? [उ०] पंच नाणां तिच्छि आज्ञाणां भयणाप । एवं अक्षुदंक्षण—अक्षुदंक्षणअज्ञागरोवउत्ता वि; नवरं चत्तारि णाणां तिच्छि अज्ञाणां भयणाप ।

९३. [प्र०] ओह्दिसणअज्ञागरोवउत्ताणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि अज्ञाणी वि । जे नाणी ते अत्येगतिया तिच्छाणी अत्येगतिया खउनाणी । जे तिच्छाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे खउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, जाव मणपञ्चवनाणी । जे अज्ञाणी ते नियमा तिअज्ञाणी, तं जहा—महअज्ञाणी, सुयअज्ञाणी, विभंगनाणी । केवलदंक्षणअज्ञागरोवउत्ता जहा केवलनाणलक्ष्मीया ।

९४. [प्र०] सजोगी णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया । एवं मणजोगी, घरजोगी, कायजोगी वि । सजोगी जहा सिद्धा ।

९५. [प्र०] सलेस्सा णं भंते !० ? [उ०] जहा सकाइया ।

९६. [प्र०] कण्हलेस्सा णं भंते !० ? [उ०] जहा सरंविआ । एवं जाव पण्हलेस्सा, सुकलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ।

लब्धिवाळनी पेटे (सू. ७१.) [त्रण के चार ज्ञान] जाणवा. मनःपर्यवज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवोने मनःपर्यवज्ञानलब्धिवाळनी पेटे (सू. ७३.) मति, श्रुत अने मनःपर्यव ए त्रण ज्ञान, के अवधिसहित चार ज्ञान जाणवा. केवलज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळनी पेटे (सू. ७५.) एक केवलज्ञान सहित जाणवा. मतिअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. विभंगज्ञानसाकारोपयुक्त जीवोने अवश्य त्रण अज्ञान होय छे.

अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान साकार उपयोग. मतिज्ञानादि साकारोपयोग.

९२. [प्र०] हे भगवन् ! *अनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे चक्षुदर्शन अने अक्षुदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. परन्तु तेओने चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अनाकारोपयोगवाळा जीवो. चक्षुदर्शन अने अक्षुदर्शनअनाकारोपयोग. अवधिदर्शन अनाकारोपयोग.

९३. [प्र०] †अवधिदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ ज्ञानी छे तेओमां केटलाक त्रण ज्ञानवाळा अने केटलाक चार ज्ञानवाळा छे. जेओ त्रण ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिवज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी छे; जेओ चार ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिवज्ञानी, यावत् मनःपर्यायज्ञानी छे. जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य त्रणअज्ञानवाळा छे. ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, अने विभंगज्ञानी. केवलदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळा पेटे (सू. ७५.) एक केवलज्ञानयुक्त जाणवा.

९४. [प्र०] हे भगवन् ! ‡सयोगी जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सक्तायिकनी पेटे (सू. ३८.) जाणवा. ए प्रमाणे मनयोगी, वचनयोगी अने काययोगी पण जाणवा. अयोगी—योगरहित जीवो सिद्धोनी पेटे (सू. ३०.) जाणवा.

सयोगी जीवो.

९५. [प्र०] हे भगवन् ! ††लेइयावाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सक्तायिकनी पेटे (सू. ३८.) जाणवा.

सलेइय जीवो.

९६. [प्र०] ‡‡कृष्णलेइयावाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सेन्द्रिय जीवोनी पेटे (सू. ३५.) जाणवा. ए प्रमाणे यावत् पण्हलेइयावाळा जीवो पण जाणवा. शुक्ललेइयावाळा सलेइयनी पेटे (सू. ९५.) जाणवा अने अलेइय—लेइयाविनाना—जीवो सिद्धोनी पेटे (सू. ३०.) जाणवा.

कृष्णादिदेइयावाळा.

९२. * जे ज्ञानने विषे आकार—जाति, गुण, क्रियादि स्वरूप विशेष—प्रतिभासित न थाय ते अनाकारोपयोग एटले दर्शन, अनाकारोपयोगवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी वे प्रकारना छे. ज्ञानीने लब्धिनी अपेक्षाए पांच ज्ञान भजनाए होय छे अने अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

९३. † अवधिदर्शनअनाकारोपयोगवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी बने छे, कारण के दर्शनने विषय सामान्य होवाणी अने सामान्य अभिन्नरूप होवाणी अने अज्ञानीना दर्शनमां मेद होतो नथी.

९४. ‡ योगद्वारमां सयोगीने सक्तायिकनी पेटे भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा. ए प्रमाणे मनयोगसहित, वचनयोगरहित अने काययोगरहित जीवो पण जाणवा, केमके केवलीने पण मनयोगादि होय छे. सयोगी मिथ्यादृष्टिने त्रण अज्ञान होय छे अने अयोगीने एक केवलज्ञान होय छे.—टीका.

९५. †† लेइयाद्वारमां जेम सक्तायिकने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान दृष्टा तेम लेइयावाळने पण जाणवा, केमके केवलीने पण शुक्ललेइया होवाणी छे लेइयासहित छे. योगान्तगत कृष्णादि द्रव्यमा संबन्धनी आत्मानो परिणाम ते लेइया. विशेष माटे शुओ—(प्रज्ञापनाटीका. पद १७ प. ३३०-१.)

९६. ‡‡ कृष्णलेइया इन्द्रियोपयोगनी पेटे चारज्ञानवाळा अने त्रण अज्ञानवाळने होय छे.

१७. [प्र०] सकसार्हं णं भंते ! ० ? [उ०] जहा संह्रिया । एवं जाव लोभकसार्ह ।

१८. [प्र०] अकसार्हं णं भंते ! किं णाणी० ? [उ०] पंच नाणां भयणाए ।

१९. [प्र०] सवेदगा णं भंते ! ० ? [उ०] जहा संह्रिया । एवं इत्थिवेदगा वि, एवं पुरिसवेदगा वि, एवं नपुंसग-वेदगा वि । अवेदगा जहा अकसार्ह ।

१००. [प्र०] आहारगा णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सकसार्ह, नवरं केवलनाणं पि ।

१०१. [प्र०] अणाहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] मणपञ्चणाणवज्जां नाणां, अन्नाणाणि य त्तिभि भयणाए ।

१०२. [प्र०] आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवत्तिप विसए पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नसे, तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आपसेणं सच्चद्वहं जाणइ पासति, खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आपसेणं सच्चखेत्तं जाणइ पासति, एवं कालओ वि, एवं भावओ वि ।

१०३. [प्र०] सुयनाणस्स णं भंते ! केवत्तिप विसए पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउद्धिहे पन्नसे; तं जहा—द्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । द्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सच्चद्वहं जाणति पासति, एवं खेत्तओ वि, कालओ वि । भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सच्चभावे जाणति, पासति ।

सकषायी जीवो.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सकषायी ! जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] सेंद्रिय जीवोनी पेटे (सू. ३५.) जाणवा; ए प्रमाणे यावत् लोभकषायी जीवो जाणवा.

अकषायी जीवो.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! अकषायी ! जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे.

वेदसहित अने वेदरहित जीवो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! *वेदसहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सइन्द्रिय जीवोनी पेटे (सू. ३५.) जाणवा. ए प्रमाणे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी अने नपुंसकवेदी जीवो जाणवा, तथा वेदरहित जीवो अकषायी जीवोनी पेटे (सू. ९८.) जाणवा.

आहारक जीवो.

१००. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सकषायी जीवोनी पेटे (सू. ९७.) जाणवा, परन्तु विशेष ए छे के तेओने केवलज्ञान (अधिक) होय छे.

अनाहारक.

१०१. [प्र०] हे भगवन् ! †अनाहारक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने मनःपर्यवज्ञान सिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय.

१०२. [प्र०] हे भगवन् ! †आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी आभिनिबोधिक ज्ञानी आदेशवडे (सामान्यरूपे) सर्व द्रव्योने जाणे अने जुए, क्षेत्रथी आभिनिबोधिकज्ञानी आदेशवडे सर्व क्षेत्रने जाणे अने जुए; ए प्रमाणे कालथी अने भावथी पण जाणवुं.

श्रुतज्ञाननो विषय.

१०३. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी ‡उपयुक्त (उपयोग सहित) श्रुतज्ञानी सर्व द्रव्योने जाणे अने जुए छे. ए प्रमाणे क्षेत्रथी अने कालथी पण जाणवुं, भावथी उपयुक्त श्रुतज्ञानी सर्व भावोने जाणे छे अने जुए छे.

१९. * वेदद्वारमां सवेदकने सेन्द्रियनी पेटे भजनाए केवलज्ञान सिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे, अवेदक-वेदरहित जीवोनी अकषायीने पेटे भजनाए पांच ज्ञान होय छे, केमके अनिष्टिबादरादिगुणस्थानके अवेदक होय छे, त्यां छद्मस्थने चार ज्ञान भजनाए होय छे, अने केवलज्ञानीने पांचसुं केवलज्ञान होय छे.—टीका.

१००. † आहारकद्वारमां जेम सकषायी चारज्ञानवाळा अने त्रणअज्ञानवाळा कख्या, तेम आहारको पण ए प्रमाणे जाणवा, परंतु आहारकोने केवलज्ञान पण होय छे, केमके केवलज्ञानी आहारक छे.—टीका.

१०१. ‡ विग्रहगति, केवलिसमुद्घात अने अयोगिपणामां जीवो अनाहारक होय छे अने वाकीनी अवस्थामां आहारक होय छे. मनःपर्यवज्ञान आहारकने ज होय छे, अने अनाहारकने आदिना त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान विग्रहगतिमां, अने केवलज्ञानीने एक केवलज्ञान केवलिसमुद्घात, अने अयोगिपण-स्थामां होय छे; ए माटे अनाहारक जीवोने मनःपर्यवज्ञान सिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान कख्या छे.

१०२. † ज्ञानविषयद्वारमां आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय द्रव्य-धर्मास्तिकायादि द्रव्य-ने आश्रयी, क्षेत्र-द्रव्योना आधारभूत आकाश-ने आश्रयी, काल-द्रव्यना पर्यायनी अवस्थिति-ने आश्रयी, अने भाव-औदयिकादि भाव अथवा द्रव्यना पर्यायो-ने आश्रयी चार प्रकारनो कह्यो छे. तेमां द्रव्यने आश्रयी ने आभिनिबोधिक ज्ञान थाय छे, ते धर्मास्तिकायादि द्रव्योने आदेश—सामान्यविशेषरूप प्रकार-थी, अथवा ओघयकी द्रव्यमात्ररूपे जाणे छे, परन्तु तेमां रहैला सर्वविशेषनी अपेक्षाए जाणतो नथी, अथवा आदेश-श्रुतज्ञान जनिन संस्कारवडे अपाय अने धारणाणी अपेक्षाए जाणे छे, केमके अपाय ने धारणा ज्ञान स्वरूप छे, अने अवग्रह ने ईहानी अपेक्षाए जुए छे, कारणके अवग्रह ने ईहा दर्शनरूप छे. श्रुतज्ञानजन्य संस्कारवडे लोकालोकरूप सर्व क्षेत्रने जाणे छे. ए प्रमाणे कालथी सर्व कालने अने भावथी औदयिकादि पांच भावोने जाणे छे.—टीका.

१०३. ‡ उपयोगसहित श्रुतज्ञानी-संपूर्णदशपूर्वधरादि श्रुतकेवली सर्व धर्मास्तिकायादि द्रव्यने विशेषथी जाणे छे, अने श्रुतज्ञानसारी मानस अवग्रहदर्शन-वडे सर्व अभिलाष्य द्रव्यने जुए छे. ए प्रमाणे क्षेत्रादिने विषे पण जाणी लेवुं. भावथी उपयुक्त श्रुतज्ञानी औदयिकादि सर्व भावोने, अथवा सर्व अभिलाष्य भावोने जाणे छे, यद्यपि अभिलाष्य भावोनी अनन्तमो भाग ज श्रुतप्रतिपादित छे, तो पण प्रसंगानुप्रसंगथी सर्व अभिलाष्य भाव श्रुतज्ञाननो विषय छे, माटे तेनी अपेक्षाए 'सर्व भावोने जाणे छे' एम कह्युं छे.—टीका.

૧૦૪. [પ્ર૦] ઓહિનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિય વિસય પચ્સે ? ગોયમા ! સે સમાસમો ચડહિદે પચ્સે, તં ઝહા-દ્વમ્મો, સેસમો, કાલમો, માવમો । દ્વમ્મો ણં ઓહિનામી રુવિદ્ધારં આણર પાસર, ઝહર નંદીય, જાવ માવમો ।

૧૦૫. [પ્ર૦] મળપઅવનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિય વિસય પચ્સે ? [૩૦] ગોયમા ! સે સમાસમો ચડહિદે પચ્સે, તં ઝહા-દ્વમ્મો, સેસમો, કાલમો, માવમો । દ્વમ્મો ણં ઉહુમતી મળંતે મળંતપદેસિય, ઝહા નંદીય, જાવ માવમો ।

૧૦૬. [પ્ર૦] કેવલનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિય વિસય પચ્સે ? [૩૦] ગોયમા ! સે સમાસમો ચડહિદે પચ્સે, તં ઝહા-દ્વમ્મો, સેસમો, કાલમો, માવમો । દ્વમ્મો ણં કેવલનાણી સહ્વદ્ધારં આણર પાસર । एवं जाव मावमो ।

૧૦૭. [પ્ર૦] મહમજ્ઞાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિય વિસય પચ્સે ? [૩૦] ગોયમા ! સે સમાસમો ચડહિદે પચ્સે, તં ઝહા-દ્વમ્મો, સેસમો, કાલમો, માવમો । દ્વમ્મો ણં મહમજ્ઞાણી મહમજ્ઞાણપરિગયાદં દ્ધારં આણર પાસર, एवं जाव मावमो मद्मज्जाणी मद्मज्जाणपरिगण मावे जाणर पासर ।

૧૦૮. [પ્ર૦] સુયમજ્ઞાણસ્સ ણં મંતે ! કેવતિય વિસય પચ્સે ? [૩૦] ગોયમા ! સે સમાસમો ચડહિદે પચ્સે, તં ઝહા-દ્વમ્મો, સેસમો, કાલમો, માવમો । દ્વમ્મો ણં સુયમજ્ઞાણી સુયમજ્ઞાણપરિગયાદં દ્ધારં આઘવેતિ, પચ્સેદ, પરુવેદ । एवं સેસમો, કાલમો । માવમો ણં સુયમજ્ઞાણી સુયમજ્ઞાણપરિગણ માવે આઘવેતિ તં સેવ ।

૧૦૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અવધિજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી; દ્રવ્યથી અવધિજ્ઞાની રૂપિદ્રવ્યોને જાણે છે અને દેખે છે—ઇત્યાદિ જેમ *નંદીસૂત્રમાં કહ્યું છે તેમ યાવત્ ભાવ સુધી જાણવું.

અવધિજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મન:પર્યવજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી. દ્રવ્યથી †ઋજુમતિમન:પર્યવજ્ઞાની [મનપણે પરિણત] અનંતપ્રદેશિક અનન્ત સ્કંધોને જાણે અને દેખે—ઇત્યાદિ જેમ નંદીસૂત્રમાં કહ્યું છે તેમ અહીં જાણવું, યાવત્ ભાવથી જાણે છે.

મન:પર્યવજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કેવલજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે સંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી. દ્રવ્યથી કેવલજ્ઞાની સર્વ દ્રવ્યોને જાણે છે અને જુદા છે, એ પ્રમાણે યાવત્ ભાવથી [કેવલજ્ઞાની સર્વ ભાવોને જાણે છે અને જુદા છે.]

કેવલજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મતિઅજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી. દ્રવ્યથી મતિઅજ્ઞાની મતિઅજ્ઞાનના વિષયને પ્રાપ્ત દ્રવ્યોને જાણે છે અને જુદા છે; એ પ્રમાણે યાવત્ ભાવથી મતિઅજ્ઞાની મતિઅજ્ઞાનના વિષયભૂત ભાવોને જાણે છે અને જુદા છે.

મતિઅજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શ્રુતઅજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે સંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી. દ્રવ્યથી શ્રુતઅજ્ઞાની શ્રુતઅજ્ઞાનના વિષયભૂત દ્રવ્યોને કહે છે, જણાવે છે અને પ્રરૂપે છે; એ પ્રમાણે ક્ષેત્રથી અને કાલથી જાણવું. ભાવથી શ્રુતઅજ્ઞાની શ્રુતઅજ્ઞાનના વિષયભૂત ભાવોને કહે છે, જણાવે છે અને પ્રરૂપે છે.

શ્રુતઅજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૪. * દ્રવ્યથી અવધિજ્ઞાની જઘન્યથી તૈજસ અને માષાદ્રવ્યોની અંતરે રહેલા એવા સૂક્ષ્મ અનન્ત પુદ્ગલદ્રવ્યોને જાણે, ઉત્કૃષ્ટથી શાદર અને સૂક્ષ્મ સર્વ દ્રવ્યોને જાણે, અને અવધિદર્શનથી દેખે. ક્ષેત્રથી અવધિજ્ઞાની જઘન્ય અંગુલના અસંખ્યાતમા ભાગને અને ઉત્કૃષ્ટથી શક્તિની અપેક્ષાએ અલોકને વિષે અસંખ્ય લોકપ્રમાણ સ્કંધને જાણે અને જુદા, કાલથી અવધિજ્ઞાની જઘન્ય આયલિકાના અસંખ્યાતમા ભાગને અને ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યાત ઉત્તરિણી અને અવસરિણી અતીત અનાગત કાલને જાણે અને જુદા—એટલે તેટલા કાલમાં રહેલાં રૂપી દ્રવ્યને જાણે. યાવત્ ભાવથી અવધિજ્ઞાની જઘન્ય અનન્ત ભાવોને જાણે અને જુદા, પણ દરેક દ્રવ્ય ઠીઠ અનન્ત ભાવોને ન જાણે. ઉત્કૃષ્ટથી પણ અનન્ત ભાવોને જાણે અને જુદા. તે ભાવો સર્વ પર્યાયનો અનન્તમો ભાગ જાણ્યો. જુઓ—નંદી. પ. ૧૭-૧૮ પં. ૧૦.

૧૦૫. † ઋજુ—સામાન્યપ્રાપ્તિ મતિ તે ઋજુમતિમન:પર્યવ, જેમ 'એણે ઘટ ચિન્તવ્યો' એવું સામાન્ય કેટલાક પર્યાયવિશિષ્ટ મનોદ્રવ્યનું જ્ઞાન. દ્રવ્યથી ઋજુમતિમન:પર્યાયજ્ઞાની અહીં દ્વીપમાં રહેલા સંઘી પંચેન્દ્રિય પર્યાય જીવોએ મનરૂપે પરિણમાવેલા મનોવર્ગના અનન્ત સ્કંધોને સાક્ષાત્ જાણે, પરન્તુ તેણે ચિન્તવેલ ઘટાદિકરૂપ અર્થને [આથા આકારવાળો મનોદ્રવ્યનો પરિણામ આથા પ્રકારના ચિન્તન શિવાય ન ઘટે] અનુમાનથી જાણે; માટે 'દેખે' એમ કહ્યું. વિપુલ—અનેકવિશેષપ્રાપ્તિ મતિ—જ્ઞાન, અર્થાત્ પુષ્કલવિશેષવિશિષ્ટ મનોદ્રવ્યનું જ્ઞાન તે વિપુલમતિ મન:પર્યવજ્ઞાન; જેમ 'એણે દ્રવ્યથી માટીનો, ક્ષેત્રથી પાદ્મલિપુત્રનો, કાલથી વસંતકાલનો, અને ભાવથી પીતલવર્ણનો ઘટ ચિન્તવ્યો.' ક્ષેત્રથી ઋજુમતિ જઘન્યથી અંગુલનો અસંખ્યાતમો ભાગ અને ઉત્કૃષ્ટથી તિર્યક્ મનુષ્યલોકમાં રહેલા સંઘી પંચેન્દ્રિય પર્યાયના મનોગત ભાવોને જાણે દેખે, અને વિપુલમતિ અહીં અંગુલ અધિક તે ક્ષેત્રમાં રહેલા મનોગત ભાવને જાણે દેખે, કાલથી ઋજુમતિ જઘન્ય પર્યાયમના અસંખ્યાતમા ભાગને અને ઉત્કૃષ્ટપણે વસ્તુપ્રમાણ અસંખ્યાતમા ભાગ જોટલા અતીત અનાગત કાલને જાણે અને જુદા, તેને જ વિપુલમતિ ઘટારે સ્પષ્ટપણે જાણે. ભાવથી ઋજુમતિ સર્વ ભાવોના અનન્તમા ભાગે રહેલા અનન્ત ભાવને જાણે અને જુદા. તેને વિપુલમતિ વિદ્યુદ અને સ્પષ્ટપણે જાણે અને સ્પષ્ટ. જુઓ—નંદી. પ. ૧૦-૧૧ પં. ૧૧.

૧૦૯. [પ્ર૦] વિભંગનાણસ્સ ણં મંતે ! કેવલિય વલિય પણ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! સે સમાસઓ વડહિદે પવ્ણસે, તં જહા—દ્વઓ, એસઓ, કાલઓ, માવઓ । દ્વઓ ણં વિભંગનાણી વિભંગનાણપરિગયાઈં વ્હાઈં જાણહ પાસહ; એવં જાવ માવઓ ણં વિભંગનાણી વિભંગનાણપરિગપ માવે જાણહ પાસહ ।

૧૧૦. [પ્ર૦] જાણી ણં મંતે ! 'જાણિ'સિ કાલઓ કેવલિયં હોહ ? [૩૦] ગોયમા ! નાણી વુવિદે પણ્ણસે, તં જહા—સાહપ વા અપજ્જવલિય, સાહપ વા સપજ્જવલિય । તત્થ ણં જે સે સાહપ સપજ્જવલિય સે જહએણં અંતોમુહુતં, ઉકોસેણં છાવટ્ઠિ સાગરોવમાઈં સાતિરેગાઈં ।

૧૧૧. [પ્ર૦] આમિણિબોહિયજાણી ણં મંતે ! આમિણિબોહિયઓ એવં નાણી, આમિણિબોહિયનાણી, જાવ કેવલજાણી, અજ્ઞાણી, મહાઅજ્ઞાણી, સુચઅજ્ઞાણી, વિભંગનાણી—એસિં દેસણ્ણવિ વિ સંચિટ્ઠુણા જહા કાયટ્ઠિરૂપ । અંતરં સવ્વં જહા જીવામિગમે । અપ્પાવહુગાણિ તિણ્ણિ જહા વહુવત્તવ્વયાપ ।

વિભંગજ્ઞાનનો વિષય.

૧૦૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વિભંગજ્ઞાનનો વિષય કેટલો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે મંક્ષેપથી ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—દ્રવ્યથી, ક્ષેત્રથી, કાલથી અને ભાવથી; દ્રવ્યથી વિભંગજ્ઞાની વિભંગજ્ઞાનના વિષયભૂત દ્રવ્યોને જાણે છે અને જુએ છે, એ પ્રમાણે યાવદ્ ભાવથી વિભંગજ્ઞાની વિભંગજ્ઞાનના વિષયભૂત ભાવોને જાણે છે અને જુએ છે.

જ્ઞાની જ્ઞાનીપણે
ક્યાંસુધી રહે ?

૧૧૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્ઞાની જ્ઞાનીપણે કાલથી ક્યાંસુધી રહે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જ્ઞાની બે પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—સાદિ સપર્યવસિત અને સાદિઅપર્યવસિત. તેમાં જે જ્ઞાની સાદિસપર્યવસિત છે તે જઘન્યથી અન્તર્મુહુર્ત સુધી અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક અધિક છાસટ સાગરોપમ સુધી જ્ઞાનીપણે રહે છે.

આમિણિબોધિકાદિ
વક્ત્રનો સ્થિતિકાલ.

૧૧૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આમિણિબોધિકજ્ઞાની, આમિણિબોધિકજ્ઞાનીપણે કાલથી કેટલા કાલ સુધી રહે ? [૩૦] એ પ્રમાણે જ્ઞાની, આમિણિબોધિકજ્ઞાની, યાવત્ કેવલજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મતિઅજ્ઞાની, શ્રુતઅજ્ઞાની અને વિભંગજ્ઞાની—એ દશનો જ્ઞાની પણે સ્થિતિકાલ પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રના અઢારમાં કાયસ્થિતિપદમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવો; અને જીવામિગમ સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે એ દશનું પરસ્પર અન્તર જાણવું. તેમજ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના વહુવત્તવ્યતા પદમાં કહ્યા પ્રમાણે ત્રણે જ્ઞાની, અજ્ઞાની અને ઉભયના અલ્પવહુલ્લો જાણવા.

૧ અહુવ્વ વિ ક્ક ।

૧૧૦. * કાલદ્વારમાં સાદિ અપર્યવસિત (જેની આદિ છે પણ અન્ત નથી તે) કેવલજ્ઞાની, અને સાદિ સપર્યવસિત (જેની આદિ અને અન્ત બન્ને છે તે) મત્યાદિજ્ઞાનવાલો. તેમાં કેવલજ્ઞાનનો સાદિઅપર્યવસિત કાલ છે, અને બીજા મત્યાદિજ્ઞાનનો સાદિસપર્યવસિત કાલ છે. તેમાં આદિના બે જ્ઞાનની અપેક્ષાએ જઘન્ય અન્તર્મુહુર્ત કાલ કહ્યો છે, અન્યથા અવધિ અને મન:પર્યવનો જઘન્ય કાલ એક સમય છે, અને ઉત્ક્રષ્ટ કંઈક અધિક છાસટ સાગરોપમ કાલ આદિના ત્રણ જ્ઞાનને આશ્રયી કહ્યો છે.—ટીકા.

૧૧૧. † જ્ઞાની, આમિણિબોધિકજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની, મન:પર્યવજ્ઞાની, કેવલજ્ઞાની, અજ્ઞાની, મત્યજ્ઞાની, શ્રુતાજ્ઞાની અને વિભંગજ્ઞાનીનો સ્થિતિકાલ 'પજ્જવણાસૂત્ર'ના અઢારમાં કાયસ્થિતિ પદમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવો. તેમાં જ્ઞાનીનો અવસ્થિતિકાલ પૂર્વે (સુ. ૧૧૦.) કહેલો છે, છતાં અહીં પણ કહ્યો તે એક પ્રકરણના સંબંધને લીધે કહ્યો છે. આમિણિબોધિકજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાનનો કાલ જઘન્યથી અન્તર્મુહુર્ત, અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક અધિક છાસટ સાગરોપમ છે. અવધિજ્ઞાનનો ઉત્ક્રષ્ટ સ્થિતિકાલ પણ એ પ્રકારે છે, પણ જઘન્યથી એક સમય છે. જેમકે, યારે કોઈ વિભંગજ્ઞાની સમ્યગ્દર્શન પામે ત્યારે તેના પ્રથમ સમયેજ વિભંગજ્ઞાન અવધિજ્ઞાનરૂપે પરિણત થાય છે, ત્યાર પછી તરતજ બીજે સમયે પહે ત્યારે માત્ર એક સમય અવધિજ્ઞાન રહે છે. મન:પર્યવજ્ઞાનીનો અવસ્થિતિકાલ જઘન્યથી એક સમય અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ હોય છે; જેમ અપ્રમત્ત ગુણસ્થાનકે ધર્તમાન કોઈ સંયતને મન:પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય, અને તરતજ બીજે સમયે નષ્ટ થાય ત્યારે તેને જઘન્ય એક સમય થાય છે અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ છે; પૂર્વકોટી વર્ષના આયુષવાલા કોઈ મનુષ્યને ચારિત્ર અંગીકાર કર્યા પછી તરતજ મન:પર્યવજ્ઞાન ઉત્પન્ન થાય અને યાવજીવ રહે ત્યારે તેનો સ્થિતિકાલ ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ થાય છે. કેવલજ્ઞાનનો સ્થિતિકાલ સાદિ અનન્ત છે. અજ્ઞાન, મત્યજ્ઞાન અને શ્રુતઅજ્ઞાનનો સ્થિતિકાલ † ત્રણ પ્રકારનો છે—૧ અનાદિ અનન્ત અમમ્યોને આશ્રયી, ૨ અનાદિ સાન્ત મમ્યોને આશ્રયી, અને ૩ સાદિ સાન્ત સમ્યગ્દર્શનથી પહેલાંને આશ્રયી. તેમાં સાદિ સાન્ત કાલ જઘન્યથી અન્તર્મુહુર્ત હોય છે, કેમકે કોઈ જીવ સમ્યગ્દર્શનથી પહે અને પુન: અન્તર્મુહુર્ત પછી સમ્યગ્દર્શન પામે. ઉત્ક્રષ્ટથી અનન્ત કાલ જાણવો. કેમકે કોઈ જીવ સમ્યક્ત્વથી પછી અનન્તકાલે પુન: સમ્યક્ત્વ પામે. વિભંગજ્ઞાનનો સ્થિતિકાલ જઘન્યથી એક સમય છે, કેમકે તે ઉત્પન્ન થયા પછી બીજે સમયે તેનો નાશ થાય, અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક ન્યૂન પૂર્વકોટી અધિક તેત્રીશ સાગરોપમ છે. જેમ કોઈ મનુષ્યમાં કંઈક ન્યૂન પૂર્વકોટી વર્ષ વિભંગજ્ઞાનિપણે રહીને સાતમી નરક પૃથિવીમાં ઉત્પન્ન થાય. જુઓ—પ્રજ્ઞા પદ. ૧૮. પ. ૩૮૧-૧ પં. ૩.

‡ અન્તરદ્વારને વિષે પાંચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાનનું અન્તર જેમ જીવામિગમસૂત્રમાં કહ્યું છે તે પ્રમાણે જાણવું. આમિણિબોધિક જ્ઞાનનું પરસ્પર અન્તર જઘન્યથી અન્તર્મુહુર્ત અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક ન્યૂન અર્ધ પુલ્લપરાવર્ત કાલ છે. એ પ્રમાણે શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની અને મન:પર્યવજ્ઞાનીને પણ જાણવું. કેવલજ્ઞાનીને પરસ્પર અન્તર નથી. મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાનીનું અન્તર જઘન્યથી અન્તર્મુહુર્ત અને ઉત્ક્રષ્ટથી કંઈક અધિક છાસટ સાગરોપમ હોય છે. વિભંગજ્ઞાનીનું જઘન્યથી અન્તર અન્તર્મુહુર્ત અને ઉત્ક્રષ્ટથી (વનસ્પતિના કાલ જેટલો) અનન્તકાલ છે. જુઓ—(જીવામિ. પ. ૪૫૧-૧ પં. ૫.)

¶ પાંચ જ્ઞાન અને ત્રણ અજ્ઞાનનું અલ્પવહુલ્લ-સૌથી થોડા જીવો મન:પર્યવજ્ઞાની છે, તેથી અવધિજ્ઞાની અસંભવ્યાત ગુણ છે, તેથી આમિણિબોધિક જ્ઞાની અને શ્રુતજ્ઞાની બન્ને વિશેષાધિક છે અને પરસ્પર દુષ્ય છે, તેથી કેવલજ્ઞાની અનન્તગુણ છે. સૌથી થોડા વિભંગજ્ઞાની છે, તેથી મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની અનન્ત-ગુણ છે અને પરસ્પર સરલા છે. તેમાં પ્રથમ જ્ઞાનીના અલ્પવહુલ્લમાં મન:પર્યવજ્ઞાની સૌથી થોડા છે, કારણ કે સંયતને એ મન:પર્યવજ્ઞાન હોય છે. અવધિજ્ઞાની ચારે

११२. [प्र०] केवतिया णं भंते ! आभिनिबोहियणाणपज्जवा पज्जता ? [उ०] गोयमा ! अणंता आभिनिबोहियणाण-पज्जवा पज्जता ।

११३. [प्र०] केवतिया णं भंते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ? [उ०] एवं केव, एवं जाव केवलणाणस्स । एवं महअच्चा-णस्स सुयअच्चाणस्स य ।

११४. [प्र०] केवतिया णं भंते ! विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ।

११५. [प्र०] एप्पस्सिणं भंते ! आभिनिबोहियणाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सत्त्वथोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाण-पज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिनिबोहियणाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ।

११२. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिबोधिकज्ञानना केटला *पर्यायो कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिकज्ञानना अनन्त पर्यायो कइया छे.

आभिनिबोधिकज्ञान-
ना पर्यायो.

११३. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतज्ञानना केटला पर्यायो कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वप्रमाणे [अनन्त पर्यायो] जाणवा. ए प्रमाणे यावत् केवलज्ञानना पर्यायो जाणवा, तेम मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानना पण पर्यायो जाणवा.

श्रुतज्ञाननादिना
पर्यायो.

११४. [प्र०] हे भगवन् ! विभंगज्ञानना केटला पर्यायो कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! विभंगज्ञानना अनन्त पर्यायो कइया छे.

विभंगज्ञानना
पर्यायो.

११५. [प्र०] हे भगवन् ! ए (पूर्वे कहेला) आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञानना पर्यायोमां कोना पर्यायो कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो सौथी थोडा छे, तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्त छे, तेथी अनंतगुण आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो छे, अने तेथी अनंतगुण केवलज्ञानना पर्यायो छे.

पांच ज्ञानना पर्या-
योनुं अल्पबहुत्व.

गतिमां होय छे माटे तेथी असंख्यात गुणा छे. तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक होवातुं कारण अवय्यादिज्ञानरहित छतां पण केटलाक पंचेन्द्रियबीबी अने केटलाक विकलेन्द्रियो पण (साखादनसम्यग्दर्शनो.संभव होवाथी) मति-श्रुतज्ञानी होय छे. अज्ञानिना अल्पबहुत्वमां पंचेन्द्रियोनेज विभंगज्ञान संभवे छे माटे ते सौथी थोडा छे, मल्यज्ञानी अने श्रुताज्ञानी एकेन्द्रियो पण होय छे; माटे तेथी तेओ अनन्तगुण छे अने परस्पर तुल्य छे. ज्ञानी अने अज्ञानिना मिश्र अल्पबहुत्वमां सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी छे, तेथी असंख्यात गुणा अवधिज्ञानी, तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक छे अने परस्पर तुल्य छे. तेथी विभंगज्ञानी असंख्यात गुणा छे, केमके सम्यग्दृष्टि देव अने नारक करतां मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणा छे. तेथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा छे, केमके एकेन्द्रिय शिवाय बाकीना सर्व जीवोथी सिद्धो अनन्तगुणा छे, तेथी मल्यज्ञानी अने श्रुताज्ञानी अनन्तगुण छे अने परस्पर तुल्य छे, केमके साधारण धनस्पतिजीवो मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी होय छे अने तेओ सिद्ध थकी अनन्तगुण छे. जुओ—प्रज्ञा० पद. ३ प. १३६-२ पं. १०.

११२. * पर्याय एटले भिन्न भिन्न अवस्थाओ के मेदो. तेना बे प्रकार छे—स्वपर्याय अने परपर्याय. क्षयोपशमनी विचित्रताथी मतिज्ञानना अवग्रहादि अनन्त मेदो थाय छे ते स्वपर्याय कहेवाय छे, अथवा मतिज्ञानना विषयभूत ज्ञेय पदार्थो अनन्त छे, अने ज्ञेयना मेदथी ज्ञानना पण अनन्त मेदो थाय छे, माटे ते रीते पण तेना अनन्त पर्यायो छे. अथवा केवलज्ञान बडे मतिज्ञानना अंश करता अनन्ता अंश थाय ते मतिज्ञानना अनन्त पर्यायो कहेवाय छे. मतिज्ञान शिवाय बीजा पदार्थोना पर्यायो छे ते तेना परपर्यायो छे अने ते स्वपर्यायथी अनन्तगुण छे. अहिं कोइ शंका करे के जो ते परपर्यायो छे तो ते मतिज्ञानना छे एम केम कहेवाय, अने जो ते मतिज्ञानना छे ते परपर्यायो केम कहेवाय ? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—परपदार्थोना पर्यायोनी मतिज्ञानने विषे संबन्ध नथी माटे ते परपर्याय कहेवाय छे, परन्तु मतिज्ञानना स्वपर्यायोने जाणवामां, अने तेनाथी जूदा पाडवामां प्रतियोगि-संबन्धी तरीके तेनो उपयोग छे माटे ते मतिज्ञानना परपर्यायो कहेवाय छे.—टीका.

११३. † श्रुतज्ञानना पण स्वपर्यायो अने परपर्यायो अनन्त छे. तेमां स्वपर्यायो जे श्रुतज्ञानना अक्षरश्रुतादि मेदो छे ते जाणवा, ते अनन्त छे, केमके तेनो क्षयोपशम विचित्र होवाथी अने विषय अनन्त होवाथी श्रुतानुसारी बोधना अनन्त प्रकार थाय छे. अथवा केवलज्ञान बडे श्रुतज्ञानना अनन्त अंशो थाय ते तेना स्वपर्याय कहेवाय छे, तेथी भिन्न पदार्थोना विशेष धर्मो ते श्रुतज्ञानना परपर्यायो छे. अवधिज्ञानना अनन्त स्वपर्यायो छे, कारणके तेना भवप्रत्यय अने क्षयोपशमिक मेदथी, नारक तिर्यक मनुष्य अने देवरूप स्वामीना मेदथी, असंख्य क्षेत्र अने कालना मेदथी, अनन्त द्रव्य पर्यायना मेदथी, अने तेना अनन्त अंशो थता होवाथी तेना अनन्त मेदो थाय छे. ए प्रमाणे मनःपर्यवज्ञानना अने केवलज्ञानना विषयना अनन्त मेदथी तेम अनन्त अंशोनी कल्पनाथी अनन्त पर्यायो थाय छे.—टीका.

११५. ‡ अहिं स्वपर्यायनी अपेक्षाए अल्पबहुत्व समजतुं, केमके स्व अने परपर्यायनी अपेक्षाए सर्व ज्ञानोना सम्या पर्यायो छे. तेमां सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो छे, केमके तेनो विषय मात्र मन छे. तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके मनःपर्यवज्ञाननी अपेक्षाए अवधिज्ञाननो विषय द्रव्य अने पर्यायोथी अनन्तगुण छे. तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके तेनो विषय रूपी अने अरूपी द्रव्यो होवाथी तेनाथी अनन्तगुण छे. तेथी आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, कारणके तेनो विषय अभिलाष्य अने अनभिलाष्य पदार्थो होवाथी तेथी अनन्तगुण छे. तेथी केवलज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके तेनो विषय सर्व द्रव्यो अने सर्व पर्यायो होवाथी तेथी अनन्तगुण छे. ए प्रमाणे अज्ञानोना अल्पबहुत्वतुं कारण जाणीं केतुं.—टीका.

૧૧૨. [પ્ર૦] ક્યસિ ળં મંતે ! મદ્મજ્ઞાણપજ્ઞવાણં, સુયમજ્ઞાણપજ્ઞવાણં વિભંગજ્ઞાણપજ્ઞવાણં ચ કયરે કયરેહિતો જાઘ વિસેસાહિયા ઘા ? [૩૦] ગોયમા ! સહત્યોઘા વિભંગજ્ઞાણપજ્ઞવા, સુયમજ્ઞાણપજ્ઞવા અણંતગુણા, મદ્મજ્ઞાણપજ્ઞવા અણંતગુણા ।

૧૧૩. [પ્ર૦] ક્યસિ ળં મંતે ! આમિણિઘોહિયણાણપજ્ઞવાણં, જાઘ કેઘલનાણપજ્ઞવાણં, મદ્મજ્ઞાણપજ્ઞવાણં, સુયમજ્ઞાણપજ્ઞવાણં, વિભંગજ્ઞાણપજ્ઞવાણં કયરે કયરેહિતો જાઘ વિસેસાહિયા ઘા ? [૩૦] ગોયમા ! સહત્યોઘા મજ્ઞપજ્ઞાણપજ્ઞવા, વિભંગજ્ઞાણપજ્ઞવા અણંતગુણા, ઘોહિણાણપજ્ઞવા અણંતગુણા, સુયમજ્ઞાણપજ્ઞવા અણંતગુણા, સુયનાણપજ્ઞવા વિસેસાહિયા, મદ્મજ્ઞાણપજ્ઞવા અણંતગુણા, આમિણિઘોહિયણાણપજ્ઞવા વિસેસાહિયા, કેઘલનાણપજ્ઞવા અણંતગુણા । સેઘં મંતે ! સેઘં મંતે ! સિ ।

અદ્દમસૅ ઘીઓ ઉદેસો સમત્તો ।

મત્તવાદિ ળણ અજ્ઞા-
નોના પર્યાયોનું
અસ્પષ્ટગુણ.

૧૧૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ૅ મતિઅજ્ઞાણ શ્રુતઅજ્ઞાણ અને વિભંગજ્ઞાણના પર્યાયોમાં કોના પર્યાયો કોના પર્યાયોથી યાઘદ્ વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્ઘથી ઘોઢા વિભંગજ્ઞાણના પર્યાયો છે, તેથી અણંતગુણ શ્રુતઅજ્ઞાણના પર્યાયો છે, અને તેથી અણંતગુણ મતિઅજ્ઞાણના પર્યાયો છે.

પર્યાય જ્ઞાણ અને ળણ
જ્ઞાણના પર્યાયોનું
અસ્પષ્ટગુણ.

૧૧૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ૅ આમિણિઘોધિકજ્ઞાણના યાઘત્ કેઘલજ્ઞાણના તથા મતિઅજ્ઞાણ, શ્રુતઅજ્ઞાણ, અને વિભંગજ્ઞાણના પર્યાયોમાં કોના પર્યાયો કોના પર્યાયોથી યાઘદ્ વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! *સૌથી ઘોઢા મનઃપર્યાયજ્ઞાણના પર્યાયો છે, તેથી અણંતગુણ વિભંગજ્ઞાણના પર્યાયો છે, તેથી અણંતગુણ અઘધિજ્ઞાણના પર્યાયો છે, તેથી અણંતગુણ શ્રુતઅજ્ઞાણના પર્યાયો છે, તેના કરતાં શ્રુતજ્ઞાણના પર્યાયો વિશેષાધિક છે, તેથી મતિઅજ્ઞાણના પર્યાયો અણંતગુણ છે, તેથી મતિજ્ઞાણના પર્યાયો વિશેષાધિક છે અને તેના કરતાં કેઘલજ્ઞાણના પર્યાયો અણંતગુણ છે. હે મગવન્ ! તે ૅ પ્રમાણે છે, હે મગવન્ ! તે ૅ પ્રમાણે છે. [ૅમ કહી મગવાન્ ગૌતમ યાઘદ્ ઘિહરે છે.]

અદ્દમશતે દિતીય ઉદેશક સમાપ્ત.

૧૧૭. * જ્ઞાણ અને અજ્ઞાણના મિથસ્ત્રને વિષે સૌથી ઘોઢા મનઃપર્યાયજ્ઞાણના પર્યાયો છે, તેથી વિભંગજ્ઞાણના પર્યાયો અણંતગુણ છે, કેમકે ડપરના ડ્રેઘેઘકથી આરંભી સાતમી નરક ધૃતિઘીમાં અને તિર્યક અસંલ્યાત ઢીપ સમુદ્રમાં રહેલા કેટલાક રૂપી ઢ્રઘ્યો અને તેના કેટલાક પર્યાયો વિભંગજ્ઞાણનો વિષય છે, અને તે મનઃપર્યાયજ્ઞાણના વિષયની અપેક્ષા ૅ અણંતગુણ છે. વિભંગજ્ઞાણની અઘધિજ્ઞાણના પર્યાયો અણંતગુણ છે, કેમકે અઘધિજ્ઞાણનો વિષય સકલ રૂપિઢ્રઘ્યો અને પ્રત્યેક ઢ્રઘ્યના અસંલ્યાત પર્યાયો છે, અને તે વિભંગજ્ઞાણની અપેક્ષા ૅ અણંતગુણ છે. તેથી શ્રુતાજ્ઞાણના પર્યાયો અણંત ગુણ છે, કેમકે શ્રુતાજ્ઞાણનો વિષય શ્રુતજ્ઞાણની પેઢે ઘામાન્યાઢેઘો કરીને સર્ઘ મૂર્તામૂર્ત ઢ્રઘ્યો અને સર્ઘ પર્યાયો ઘોઘાથી અઘધિજ્ઞાણની અપેક્ષા ૅ અણંત ગુણ છે. તેથી શ્રુતજ્ઞાણના પર્યાયો વિશેષાધિક છે, કેમકે શ્રુતજ્ઞાણને અગોઘર કેટલાક પર્યાયને શ્રુતજ્ઞાણ જાણે છે. તેથી મદ્મજ્ઞાણના પર્યાયો અણંતગુણ છે, કેમકે શ્રુતજ્ઞાણ અમિલાપ્યઘસ્તુવિઘયક ઘોઘ છે, અને મદ્મજ્ઞાણ તેનાથી અણંતગુણ અઘસ્તુવિઘયક પણ ઘોઘ છે, તેથી મતિજ્ઞાણના પર્યાયો વિશેષાધિક છે. તેથી કેઘલજ્ઞાણના પર્યાયો અણંતગુણ છે, કેમકે તે સર્ઘ કાલ્પા રહેલા સર્ઘ ઢ્રઘ્યો અને સર્ઘ પર્યાયોને જાણે છે.—ઢીકા.

ततिओ उद्देशो ।

१. [प्र०] कइविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णसा, तं जहा—संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ।
२. [प्र०] से किं तं संखेज्जजीविया ? [उ०] संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णसा, तंजहा—ताले, तमाले, तक्कलि, तेतलि—जहा पन्नवणाप जाव नालिपरी । जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ।
३. [प्र०] से किं तं असंखेज्जजीविया ? [उ०] असंखेज्जजीविया दुविहा पन्नसा, तंजहा—पगट्टिया य बहुबीयगा य ।
४. [प्र०] से किं तं पगट्टिया ? [उ०] पगट्टिया अणेगविहा पन्नसा, तंजहा निंबं-ब-जंबु०—एवं जहा पन्नवणापप जाव फला बहुबीयगा । सेत्तं बहुबीयगा । सेत्तं असंखेज्जजीविया ।
५. [प्र०] से किं तं अणंतजीविया ? [उ०] अणंतजीविया अणेगविहा पण्णसा, तं जहा—आलुप, मूलप, सिंगबेरे—एवं जहा सत्तमसप जाव सिउंढी, मुसुंढी, जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं अणंतजीविया ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वृक्षो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! वृक्षो त्रण प्रकारना कइया छे; ते आ प्रमाणे—संख्यात-जीववाळा, असंख्यातजीववाळा अने अनंतजीववाळा. वृक्षना प्रकार.
२. [प्र०] हे भगवन् ! संख्यातजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! संख्यातजीववाळा वृक्षो अनेक प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—ताड, तमाल, तक्कलि, तेतलि—इत्यादि *‘प्रज्ञापना’ सूत्रमां कइया प्रमाणे यावत् नालियेरी पर्यन्त जाणवा. ए सिवाय तेवा प्रकारना बीजा वृक्षो पण संख्यातजीववाळा जाणवा. ए प्रमाणे संख्यातजीवी वृक्षो कइया. संख्यातजीवी.
३. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्यातजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्यातजीववाळा वृक्षो बे प्रकारना कइया छे; ते आ प्रमाणे—एकबीजवाळा अने बहुबीजवाळा. असंख्यातजीवी.
४. [प्र०] हे भगवन् ! एकबीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! एकबीजवाळा वृक्षो अनेक प्रकारना कइया छे; ते आ प्रमाणे—‘निंब, आम्र, जांबू’—इत्यादि प्रज्ञापनासूत्रना ‘प्रज्ञापना’ नामे प्रथमपदमां कइया प्रमाणे यावत् बहुबीजवाळा फलो सुधी जाणवा. ए प्रमाणे असंख्यातजीवी वृक्षो कइया. एकबीजवाळा.
५. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! अनंतजीववाळा वृक्षो अनेकप्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—‘आलु (बटाटा), शृंगबेरे (आहु)’—इत्यादि सत्तम शतकमां कइया प्रमाणे यावत् सिउंढी मुसुंढी सुधी जाणवा. जे बीजा पण तेवा प्रकारना वृक्षो छे तेओ पण (अनन्तजीववाळा) जाणवा. ए प्रमाणे अनन्तजीववाळा वृक्षो कइया. अनन्तजीवी.

१ वृक्षो न-क । २ जाव सीओ कण्हे सि-ग, जाव सीउण्हे व, जाव सीउण्हे सु-क ।

२. * प्रज्ञा० पद. १. प. ३३-१. पं. ६. । ३. † प्रज्ञा० पद. १. प. ३१-१ पं. ५. । ५. ‡ भग० तृ. सं. ७. उ. ३. वृ. ५.

६. [प्र०] अह भंते ! कुम्भे, कुम्भावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया—एप्सिणं भंते ! दुहा वा तिहा वा संखेजहा वा छिन्नाणं जे अंतरा ते वि णं तेहिं जीवपपसेहिं फुडा ! [उ०] हंता फुडा ।

७. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! अंतरे हत्थेण वा, पादेण वा, अंगुलियाए वा, सलागाए वा, कट्टेण वा, किंलिंछेण वा, आमुसमाणे वा, संसुसमाणे वा, आलिहमाणे वा, विलिहमाणे वा, अन्नयेरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आछिंमाणे वा, धिंछिंमाणे वा, अगणिकाएणं वा समोडहमाणे तेसिं जीवपपसाणं किंचि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाए, छविच्छेदं वा करेह ? [उ०] णो तिण्ठे समट्टे. नो खलु तत्थ सत्थं कैमह ।

८. [प्र०] कह णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पमा, जाब अहे सत्तामा, ईसीपम्भारा ।

९. [प्र०] इमा णं भंते ! रयणप्पमापुढवी किं चरिमा अचरिमा ? [उ०] चरिमपवं निरवसेसं भाणियहं । जाब वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा, अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

अट्टमसए ततिओ उद्देशो समचो ।

जीवप्रदेशोवी स्पृष्ट.

६. [प्र०] हे भगवन् ! काचवो, काचवानी श्रेणि, गोधा (घो), गोधानी श्रेणी, गाय, गायनी श्रेणि, मनुष्य, मनुष्यनी श्रेणि, महिष (पाडो), महिषनी श्रेणि—ए त्रधाना वे, त्रण के संख्याता खंड कर्या होय तो तेओनी वच्चेनो भाग शुं जीवप्रदेशी स्पृष्ट—स्पर्शियेलो होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, स्पृष्ट होय.

जीवप्रदेशोने शक्या-
दिकवी पीडा थाय ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुष [ते काचवादिना खंडोना] अन्तराल—वच्चेना भागने हाथथी, पगथी, आंगळीथी, सळीथी, काष्ठथी अने नाना लाकडाथी स्पर्श करतो, विशेष स्पर्श करतो, योहुं विशेष आकर्षण करतो, अथवा कोइ पण तीक्ष्ण शकना समूहथी छेदतो, अधिक छेदतो, अग्नि वडे बाळतो, ते जीवप्रदेशोने थोडी के अधिक पीडा उत्पन्न करे, या तेना कोइ अवयवोने छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नर्था, केमके जीव प्रदेशोने शक्य असर करतुं नथी.

पृथ्वीओ.

८. [प्र०] हे भगवन् ! केटली पृथ्वीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आट पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभा, यावत् अधःसप्तपृथिवी अने ईषत् प्राग्भारा (सिद्धशिला).

९. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी शुं *चरम—प्रान्तवर्ती—छे के अचरम—मध्यवर्ती—छे ? इत्यादि. [उ०] अहीं (प्रज्ञापना सूत्रनुं) 'चरम' पद सघळुं कहेवुं. यावत्—[प्र०] 'हे भगवन् ! वैमानिको स्पर्श चरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ चरम पण छे अने अचरम पण छे.' हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावत् विचरे छे.]

अष्टमशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

१ अंतरा ऊ, (जं अंतरं) ते अंतरे घ । २ कलिंछेण घ । ३ संकमह ग-घ ।

१. * रत्नप्रभा पृथिवी संबन्धे एकवचनान्त अने बहुवचनान्त चरम अने अचरमना चार प्रश्नो, तेमज चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेशना वे प्रश्नो मळी छ प्रश्नो छे, भगवान् तेनो उत्तर आपे छे—हे गौतम ! रत्नप्रभा चरम पण नथी, तेम अचरम पण नथी—इत्यादि. चरम एटछे पर्यन्तवर्ती अने अचरम एटछे मध्यवर्ती. चरमपणुं अने अचरमपणुं अन्यवस्तु सापेक्ष छे ते अन्य वस्तुनुं अहीं कथन नहि होवाथी रत्नप्रभा पृथिवी चरम के अचरम कही शक्याय नहि, एज कारणथी बहुवचनान्त चरम, अचरम, चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेश पण कही शक्याय नहि. परन्तु जो रत्नप्रभा पृथिवी असंख्यात प्रदेशावगाढ होवाथी तेना अनेक अवयवनी विवक्षा करीए तो ते अचरमरूप, तेम बहुवचनान्त चरमरूप, चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप कही शक्याय, कारण के रत्नप्रभाना प्रान्त भागमां अवस्थित खंडो अनेकपणे विवक्षित करीए त्यारे बहुवचनान्त 'चरम' कही शक्याय अने मध्यभागवर्ती खंड एकपणे विवक्षित करीए त्यारे एकवचनान्त 'अचरम' कहेवाय. ए प्रमाणे प्रदेशादृष्टी चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेशरूप पण कही शक्याय.— विशेष माटे जुओ—प्रज्ञा० चरमपद० १०. प. १५४-१.

चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं बयासी-कति णं मंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! पंच किरियाओ पञ्चत्ताओ, तंजहा-काइया, अह्मिगरणिया; एवं किरियापदं निरवसेसं भाणियच्चं, जाव मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

अष्टमसए चउत्थो उद्देशो समाप्तो ।

चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! केटली क्रियाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच क्रियाओ कही छे, ते आ प्रमाणे-कायिकी, अधिकरणिकी-ए प्रमाणे अहीं [प्रज्ञापना सूत्रसुं वावीशमुं] सवळुं *क्रियापद यावत् 'मायाप्रत्ययिक क्रियाओ विशेषाधिक छे' त्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे [एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे]

पांच क्रियाओ.

अष्टमशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

१. * कायिकी, अधिकरणिकी, प्रादेधिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातिकी-ए पांच क्रियाओ छे. तेमां कायिकी क्रिया के प्रकारे छे-अनुपरतकायिकी अने दुष्प्रयुक्तकायिकी. हिंसादि सावय योगधी देघधी के सर्वदा अनिचूत थयेलाने अनुपरतकायिकी क्रिया होय छे. आ क्रिया मात्र अदिरतिने होय छे. कायाधीना दुष्प्रयोग वटे थयेली जे क्रिया ते दुष्प्रयुक्तकायिकी कहेवाय छे. आ क्रिया प्रमत्त साधुने पण होय छे. अधिकरणिकी क्रिया के प्रकारे छे-संयोजनाधिकरणिकी अने निर्देतनाधिकरणिकी. संयोजन-पूर्वे बनावेका अन्नशलादि हिंघाना साधनोने मेळवी तैयार राखवा ते संयोजनाधिकरणिकी, अने नवा बनाववा ते निर्देतनाधिकरणिकी. पोतानुं, परनुं अथवा बभेनुं अशुभ चिंतवनुं ते प्रादेधिकी. जे पोताने परने अथवा उमयने दुःख आपे ते पारितापनिकी. जे पोताने, परने अथवा बभेने जीवितधी रहित करे ते प्राणातिपातिकी.—विशेषमाटे जुओ-प्रज्ञा० पद. २२ प. ४३५-२.

पंचमओ उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-आजीविया णं भंते ! येरे भगवंते एवं वयासी-समणोवासगस्स णं भंते ! सामाहयकडस्स समणोवस्सप अच्छमाणस्स केह भंडं अवहरेज्जा, सेणं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सयं भंडं अणुगवेसइ, परायगं भंडं अणुगवेसइ ? [उ०] गोयमा ! सयं भंडं अणुगवेसति, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ।

२. [प्र०] तस्स णं भंते ! तेहिं सीलघय-गुण-वेरमण-पञ्चकखण-पोसहोववासेहिं से भंडे अमंडे भवइ ? [उ०] हंता भवइ । [प्र०] से केण खाइ णं अट्टेणं भंते ! एवं बुद्धइ-सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ-णो मे हिरण्णे, णो मे सुवघ्णे, नो मे कंसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलघण-कणग-रयण-मणि-भोत्तिय-संख-सिल-प्यवाल-रत्तरयणमादीप संतसारसावदेज्जे, ममत्तभावे पुण से अपरिण्णाप भवइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धइ सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ।

३. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! सामाहयकडस्स समणोवस्सप अच्छमाणस्स केह जायं चरेज्जा, से णं भंते ! किं जायं चरइ, अजायं चरइ ? [उ०] गोयमा ! जायं चरइ, नो अजायं चरइ ।

पंचम उद्देशक.

आजीविकना प्रभो. सामायिक करनार आवकना भांडने कोई अपहरण करे तो ते भांडने शोधे के आभांडने शोधे ?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतमे] ए प्रमाणे कस्युं के-हे भगवन् ! आजीविकोए (गोशालकना शिष्योए) स्थविर भगवन्तोने आ प्रमाणे कस्युं हतुं-हे भगवन् ! जेणे सामायिक कस्युं छे एवा श्रमणना उपाश्रयमां बेटेला श्रमणोपासकना भांड-बख्खादि वस्तुनुं कोइ अपहरण करे, तो हे भगवन् ! [सामायिक समाप्त थया पछी] ते वस्तुनुं अन्वेषण करतो ते श्रावक सुं पोताना भांडने शोधे छे के पारका भांडने शोधे ? [उ०] हे गौतम ! ते श्रावक पोताना भांडने शोधे छे, पण पारका भांडने शोधतो नथी.

अपहृत भांड ते अभांड थाय तो 'पोताना भांडने शोधे छे यम केम कहेवाय ? ममत्वभावनुं प्रत्याख्यान करुं नथी माटे यम कहेवाय के पोता भांडने शोधे छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! ते शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौपधोपवासवडे ते श्रावकनुं [अपहृत] भांड ते अभांड थाय ? [उ०] हे गौतम ! हा, अभांड थाय. [प्र०] हे भगवन् ! [जो अभांड थाय तो] एम शा हेतुथी कहो छो के-[ते श्रमणोपासक] पोताना भांडने शोधे छे, पण पारका भांडने शोधतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! [सामायिक करनार] ते श्रावकना मनमां एवो परिणाम होय छे के-'मारे हिरण्य नथी, मारे सुवर्ण नथी, मारे कांसुं नथी, मारे वरुं नथी, अने मारे विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, परवाला, रक्त रत्नो-इत्यादि विद्यमान सारभूत द्रव्य नथी,' परन्तु तेणे ममत्व भावनुं प्रत्याख्यान करुं नथी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते पोताना भांडने गवेषे छे, पण पारका भांडने गवेषतो नथी.

यम कीने सेवे के अस्तीने सेवे ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! जेणे सामायिक कस्युं छे एवा, श्रमणना उपाश्रयमां रहेला श्रमणोपासकनी कीने कोइ पुरुष सेवे तो सुं ते तेनी की सेवे छे के अस्तीने-अन्यनी कीने-सेवे ? [उ०] हे गौतम ! ते पुरुष तेनी कीने सेवे छे पण अन्यनी कीने सेवतो नथी.

४. [प्र०] तस्स णं मंते ! तेहिं सीलव्रत-गुण-वेरमण-पञ्चकलाण-पोसहोवधासेहिं सा जाया अजाया भवर ? [उ०] ईसा भवर । [प्र०] से केणं कार णं अट्टेणं मंते ! एवं बुद्धर-जायं चरर नो अजायं चरर ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवर-नो मे माता, नो मे पिता, णो मे माया, नो मे मग्गिणी, णो मे भज्जा, णो मे पुत्ता, णो मे धूया, नो मे सुण्हा; पेज्ज-बंधणे पुण से अवोच्छिञ्जे भवर, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाय नो अजायं चरर ।

५. [प्र०] समणोवासगस्स णं मंते ! पुद्दामेव धूलप पाणाहवाप अपञ्चकलाप भवर, से णं मंते ! पच्छा पञ्चाहकलामाणे किं करेर ? [उ०] गोयमा ! तीयं पडिकमति, पडुप्पसं संवरेति, अणागयं पञ्चकलाति ।

६. [प्र०] तीयं पडिकममाणे किं १ तिविहं तिविहेणं पडिकमति, २ तिविहं दुविहेणं पडिकमति, ३ तिविहं एगविहेणं पडिकमति; ४ दुविहं तिविहेणं पडिकमति, ५ दुविहं दुविहेणं पडिकमति, ६ दुविहं एगविहेणं पडिकमति; ७ एगविहं तिविहेणं पडिकमति, ८ एगविहं दुविहेणं पडिकमति, ९ एकविहं एकविहेणं पडिकमति ? [उ०] गोयमा ! तिविहं तिविहेणं पडिकमति; तिविहं दुविहेणं वा पडिकमति, एवं चेव जाव एकविहं वा एकविहेणं पडिकमति । १ तिविहं तिविहेणं पडिकममाणे न करेति, न कारवेति, करंतं णाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । २ तिविहं दुविहेणं पडिकममाणे न करेति, न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; ३ अहवा न करेति न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा; ४ अहवा न करेर, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा । तिविहं एगविहेणं पडिकममाणे ५ न करेति, न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा; ६ अहवा न करेर, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा; ७ अहवा न करेर, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ कायसा । दुविहं तिविहेणं पडिकममाणे ८ न करेर, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा; ९ अहवा न करेर, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा; १० अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । दुविहं दुविहेणं पडिकममाणे ११ न करेर, न कारवेइ मणसा वयसा; १२ अहवा न करेर, न कारवेइ मणसा कायसा; १३ अहवा न करेर, न कारवेइ वयसा कायसा; १४ अहवा न करेर, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; १५ अहवा न करेति, करंतं नाणु-

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवास वडे [ते श्रावकर्त्ता] स्त्री अस्त्री (अन्यस्त्री) धाय ? [उ०] हा, धाय. [प्र०] हे भगवन् ! तो एम सा हेतुयी कहो छो के तेनी स्त्रीने सेवे छे पण अस्त्री (अन्यस्त्री)ने सेवतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! [शीलव्रतादि वडे] ते श्रावकना मनमां एवं होय छे के-‘भारे माता नथी, पिता नथी, भाइ नथी, बहिन नथी, स्त्री नथी, पुत्रो नथी, पुत्री नथी, अने स्त्रुषा (पुत्रवधू) नथी, परन्तु तेने प्रेमबन्धन त्रुत्थुं नथी, ते हेतुयी हे गौतम ! ते पुरुष तेनी स्त्रीने सेवे छे, पण अन्यस्त्रीने सेवतो नथी.

प्रत्याख्यानथी स्त्री ते अस्त्री धाय ? जो एव धाय तो तेनी स्त्रीसे सेवे छे एम कैम कहेवाय ? प्रेमबन्धन अविच्छिन्न छे माटे एम कहेवाय.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे स्थूल प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान होतुं नथी, ते पछीयी तेनुं प्रत्याख्यान करतो शुं करे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत काले करेळ प्राणातिपातने प्रतिक्रमे-निन्दे, प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) प्राणातिपातनो संवर-रोध करे, अने अनागत (भविष्य) प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करे.

स्थूलप्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान कैसी रीते करे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! अतीत कालना प्राणातिपातने प्रतिक्रमतो ते श्रमणोपासक शुं १ त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमे, २ त्रिविध द्विविधे ३ त्रिविध एकविधे, ४ द्विविध त्रिविधे, ५ द्विविध द्विविधे, ६ द्विविध एकविधे, ७ एकविध त्रिविधे, ८ एकविध द्विविधे, के ९ एकविध एकविधे प्रतिक्रमे ? [उ०] हे गौतम ! १ त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमे, २ त्रिविध द्विविधे प्रतिक्रमे-इत्यादि पूर्वे कक्षा प्रमाणे यावत् ९ एकविध एकविधे प्रतिक्रमे. त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करताने अनुमोदन आपतो नथी; २ द्विविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमोदन आपतो नथी; ३ अथवा मन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ४ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ५ त्रिविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, करावतो नथी, अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ६ अथवा वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ७ अथवा कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ८ द्विविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी; ९ अथवा मन, वचन अने कायथी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; १० अथवा मन, वचन अने कायथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ११ द्विविध द्विविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी अने करावतो नथी, १२ अथवा मन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी, १३ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी, १४ अथवा मन अने वचनथी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १५ अथवा मन अने कायथी करतो नथी अने करनारने

अतीतकाले प्राणातिपातना प्रतिक्रमणना मांगा.

જાણઈ મળસા કાયસા; ૧૬ અહવા ન કરેઈ, કરેતં નાણુજાણઈ વયસા કાયસા; ૧૭ અહવા ન કારવેતિ, કરેતં નાણુજાણઈ મળસા વયસા; ૧૮ અહવા ન કારવેઈ, કરેતં નાણુજાણતિ મળસા કાયસા; ૧૯ અહવા ન કારવેતિ, કરેતં નાણુજાણઈ વયસા કાયસા । દુવિહં પઠ્ઠવિહેણં પઠ્ઠિક્રમમાણે ૨૦ ન કરેતિ, ન કારવેતિ મળસા; ૨૧ અહવા ન કરેતિ ન કારવેતિ વયસા; ૨૨ અહવા ન કરેતિ, ન કારવેતિ કાયસા; ૨૩ અહવા ન કરેતિ, કરેતં નાણુજાણઈ મળસા; ૨૪ અહવા ન કરેઈ, કરેતં નાણુજાણઈ વયસા; ૨૫ અહવા ન કરેઈ, કરેતં નાણુજાણઈ કાયસા; ૨૬ અહવા ન કારવેઈ, કરેતં નાણુજાણઈ મળસા; ૨૭ અહવા ન કારવેઈ, કરેતં નાણુજાણઈ વયસા; ૨૮ અહવા ન કારવેઈ, કરેતં નાણુજાણઈ કાયસા । ઇગવિહં તિવિહેણં પઠ્ઠિક્રમમાણે ૨૯ ન કરેઈ મળસા વયસા કાયસા; ૩૦ અહવા ન કારવેઈ મળસા વયસા કાયસા; ૩૧ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ મળસા વયસા કાયસા । ઇગવિહં દુવિહેણં પઠ્ઠિક્રમમાણે ૩૨ ન કરેઈ મળસા વયસા; ૩૩ અહવા ન કરેઈ મળસા કાયસા; ૩૪ અહવા ન કરેઈ વયસા કાયસા; ૩૫ અહવા ન કારવેતિ મળસા વયસા; ૩૬ અહવા ન કારવેતિ મળસા કાયસા; ૩૭ અહવા ન કારવેઈ વયસા કાયસા; ૩૮ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ મળસા વયસા; ૩૯ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ મળસા કાયસા; ૪૦ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ વયસા કાયસા । ઇગવિહં ઇગવિહેણં પઠ્ઠિક્રમમાણે ૪૧ ન કરેઈ મળસા, ૪૨ અહવા ન કરેઈ વયસા, ૪૩ અહવા ન કરેઈ કાયસા; ૪૪ અહવા ન કારવેતિ મળસા; ૪૫ અહવા ન કારવેતિ વયસા; ૪૬ અહવા ન કારવેતિ કાયસા; ૪૭ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ મળસા; ૪૮ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ વયસા; ૪૯ અહવા કરેતં નાણુજાણઈ કાયસા ।

૭. [પ્ર૦] પદુપ્પપ્પં સંવરેમાણે કિં તિવિહં તિવિહેણં સંવરેઈ ? [૩૦] एवं जहा पठ्ठिक्रममाणेणं एगुणपपं भंगा भणिया एवं संवरमाणेण वि एगुणपपं भंगा भाणियद्धा ।

૮. [પ્ર૦] અનાગયં પષ્ઠ્ઠક્ષમાણે કિં તિવિહં તિવિહેણં પષ્ઠ્ઠક્ષમાઈ ? [૩૦] एवं तं चैव भंगा एगुणपपं भाणियद्धा जाच अहवा करेतं नाणुजाणइ कायसा ।

૯. [પ્ર૦] સમણોવાસગસ્સ ણં મંતે ! પુદ્ધામેવ ધૂલમુસાવાય અપષ્ઠ્ઠક્ષમાય ભવઈ, સે ણં મંતે ! પષ્ઠ્ઠા પષ્ઠ્ઠાઈક્ષમાણે ૦ ? [૩૦] एवं जहा पाणाइवायस्स सीयालं भंगसयं भणियं, तथा मुसावायस्स वि भाणियद्धं । एवं अदिआदाणस्स वि, एवं धूल-

અનુમતિ આપતો નથી, ૧૬ અથવા વચન અને કાયથી કરતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૧૭ અથવા મન અને વચનથી કરાવતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૧૮ અથવા મન અને કાયથી કરાવતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૧૯ અથવા વચન અને કાયથી કરાવતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી; ૨૦ દ્વિવિધ એકવિધે પ્રતિક્રમતો મનથી કરતો નથી અને કરાવતો નથી, ૨૧ અથવા વચનથી કરતો નથી અને કરાવતો નથી, ૨૨ અથવા કાયવડે કરતો નથી અને કરાવતો નથી, ૨૩ અથવા મનવડે કરતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૨૪ અથવા વચનવડે કરતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૨૫ અથવા કાયવડે કરતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૨૬ અથવા મનવડે કરાવતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૨૭ અથવા વચનથી કરાવતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી ૨૮ અથવા કાયવડે કરાવતો નથી અને કરનારને અનુમતિ આપતો નથી; ૨૯ એકવિધ ત્રિવિધે પ્રતિક્રમતો મન, વચન અને કાયથી કરતો નથી, ૩૦ અથવા મન, વચન અને કાયથી કરાવતો નથી, ૩૧ અથવા મન, વચન અને કાયથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી; ૩૨ એકવિધ દ્વિવિધે પ્રતિક્રમતો મન અને વચનથી કરતો નથી, ૩૩ અથવા મન અને કાયથી કરતો નથી, ૩૪ અથવા વચન અને કાયથી કરતો નથી, ૩૫ અથવા મન અને વચનથી કરાવતો નથી, ૩૬ અથવા મન અને કાયથી કરાવતો નથી, ૩૭ અથવા વચન અને કાયથી કરાવતો નથી, ૩૮ અથવા મન અને વચનથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૩૯ અથવા મન અને કાયથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૪૦ અથવા વચન અને કાયથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી; ૪૧ એકવિધ એકવિધે પ્રતિક્રમતો મનથી કરતો નથી, ૪૨ અથવા વચનથી કરતો નથી, ૪૩ અથવા કાયથી કરતો નથી; ૪૪ અથવા મનથી કરાવતો નથી, ૪૫ અથવા વચનથી કરાવતો નથી, ૪૬ અથવા કાયથી કરાવતો નથી, ૪૭ અથવા મનથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૪૮ અથવા વચનથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી, ૪૯ અથવા કાયથી કરનારને અનુમતિ આપતો નથી.

૭. [પ્ર૦] પ્રત્યુપ્પપ્પં (વર્તમાન) પ્રાણાતિપાતનો સંવર (રોધ) કરતો [શ્રમણોપાસક] શું ત્રિવિધ ત્રિવિધે સંવર કરે ?—ઈત્યાદિ. [૩૦] જેમ પ્રતિક્રમતા ઓગણપચાસ માંગા કહ્યા, તેમ સંવર કરતાં પણ ઓગણપચાસ માંગા કહેવા.

૮. [પ્ર૦] અનાગત પ્રાણાતિપાતનું પ્રત્યાહ્યાન કરતો [શ્રમણોપાસક] શું ત્રિવિધ ત્રિવિધે પ્રત્યાહ્યાન કરે ?—ઈત્યાદિ. [૩૦] પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે ઓગણપચાસ માંગા યાવત્ 'અથવા કાયવડે કરનારને અનુમતિ આપતો નથી' ત્યાં સુધી કહેવા.

૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે શ્રમણોપાસકે પહેલાં સ્થૂલ મૃષાવાદનું પ્રત્યાહ્યાન કર્યું નથી, પછીથી હે ભગવન્ ! તે [સ્થૂલ મૃષાવાદનું] પ્રત્યાહ્યાન કરતો શું કરે ? [૩૦] જેમ પ્રાણાતિપાતના એકસો સુડતાલીશ માંગા કહ્યા, તેમ મૃષાવાદના પણ એકસો સુડતાલીશ માંગા કહેવા, ૯ પ્રમાણે [સ્થૂલ] અદત્તાદાનના, સ્થૂલ મૈથુનના અને સ્થૂલ પરિગ્રહના પણ માંગાઓ યાવત્ 'અથવા કાયથી કરનારને અનુમતિ

શ્રેયમાનપ્રાણાતિ-
યાતના સંવરસંબન્ધે
માંગા.

અનાગત પ્રાણાતિપા-
તના પ્રત્યાહ્યાન સં-
બન્ધે માંગા.

સ્થૂલમૃષાવાદનું પ્ર-
ત્યાહ્યાન અને તેના
માંગા, યાવત્ સ્થૂલ-
પરિગ્રહના માંગા.

गस्स मेहुणस्स वि, थूलगस्स परिग्गहस्स वि, जाव महवा करेत्तं नाणुजाणइ कायसा । एवं खलु परिसगा समणोवासगा भवंति, नो खलु परिसगा आजीविओवासगा भवंति ।

१०. आजीवियसमयस्स णं अयमंहे—अक्षीणपंडिभोइणो सधे सत्ता; से इत्ता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उइव-इत्ता आहारं आहारैति । तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति; तं जहा—१ ताले, २ तालपलंबे, ३ उद्विहे, ४ संविहे, ५ अवविहे, ६ उदय, ७ नामुदय, ८ नैम्मुदय, ९ अणुवालप, १० संखवालप, ११ अयंबुले, १२ कायरप—इच्छेते दुवालसं आजीविओवासगा अरिहंतदेवतागा, अम्मा—पिउसुस्सूसगा, पंचफलपडिकंता, तं जहा—उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलक्खूहिं, पलंइ—लहसुणकंदमूलविचज्जगा, अणिल्लंछिपहिं अणकभिभेहिं गोणेहिं तसपाणयिवज्जिपहिं विंसेहिं विंत्ति कप्पेमाणा विहरंति । एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मावाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेत्तं वा अन्नं न समणुजाणेत्तए । तं जहा—इंगालकम्मे, धणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, वचगिदावणया, सर-दइ-तलागपरिसोसणया, असतीपोसणया । इच्छेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किष्वा अन्नयरेसु देवल्लोएसु देवत्ताए उच्चवत्तारो भवंति ।

११. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! देवल्लोगा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! खउच्चिहा देवल्लोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

अट्टमसए पंचमओ उद्देशओ समत्तो ।

आपतो नथी' त्यां सुधी जाणवा. आ आवा प्रकारना श्रमणोपासको होय छे, पण आवा प्रकारना आजीविकना (गोशालना) उपासको होता नथी.

१०. आजीविक (गोशालक)ना सिद्धांतनो आ अर्थ छे—'दरेक जीवो अक्षीणपरिभोगी—सचित्ताहारी छे, तेथी तेओ [लाकडी वगैरेथी] हृणीने [तरवार वगैरेथी] छेदीने, [शूलादिथी] भेदीने, [पांख वगैरेना कापवा वडे] लोप करीने [चामडी उतारवाथी] विलोपीने अने विनाश करीने खाय छे. [अर्थात् बीजा जीवो हननादिमां तत्पर छे] पण आजीविकना मतमां आ बार आजीविकोपासको कइया छे, ते आ प्रमाणे—१ ताल, २ तालप्रलंब, ३ उद्विध, ४ संविध, ५ अवविध, ६ उदय, ७ नामोदय, ८ नर्मोदय, ९ अनुपालक, १० शंखपालक, ११ अयंबुल अने १२ कातर—ए बार आजीविकना उपासको छे, तेओनो देव अर्हत् (गोशालक) छे, मातापितानी सेवा करनारा तेओ आ पांच प्रकारना फलने खाता नथी. ते आ प्रमाणे—१ उंबराना फल, २ वडना फल, ३ बोर, ४ सतरनां फल अने ५ पीपळाना फल. तेओ हुंगळी, लसण अने कंदमूलना विवर्जक (त्यागी) छे. तेओ अनिल्लंछित (खसी नहिं करायत्ता), नहिं नाथेला (नाक विधेला) एवा बल्लदो वडे त्रसप्राणीनी हिंसा विवर्जित व्यापार वडे आजीविका करे छे. ज्यारे ए गोशालकना श्रावको पण ए प्रकारे धर्मने इच्छे छे, तो पछी जे आ श्रमणोपासको छे तेओने माटे शुं कहेंवुं ? जेओने आ पंदर कर्मादानो खयं करवाने, बीजा पासे करवावने अने अन्य करनारने अनुमति आपवाने कल्पतां नथी. ते कर्मादानो आ प्रमाणे छे—१ अंगारकर्म, २ वनकर्म, ३ शकटकर्म, ४ भाटककर्म, ५ स्फोटककर्म, ६ दंतवाणिज्य, ७ लाक्षावाणिज्य, ८ केशवाणिज्य, ९ रसवाणिज्य, १० विषवाणिज्य, ११ यंत्रपीलनकर्म, १२ निल्लंछनकर्म, १३ दवाग्निदापन, १४ सरोवर, दइ अने तलावतुं शोषण अने १५ असतीपोषण. ए श्रमणोपासको शुक्क—पवित्र, अने पवित्रताप्रधान थइने मरणसमये काल करीने कोइ पण देवल्लोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे.

आजीविकनो सिद्धान्त-

आजीविकना बार श्रमणोपासको-

श्रावकोने वर्क पंदर कर्मादानो-

११. [प्र०] हे भगवन् ! केटल प्रकारना देवल्लोको कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारना देवल्लोको कइया छे. ते आ प्रमाणे—भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. [एम कहीने यावद् भगवान् गीतम विहरे छे.]

देवल्लोक-

अट्टम अतके पंचम उद्देशक समाप्त.

छटो उद्देश्यौ.

१. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जति ? [उ०] गोयमा ! एगंतसो निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जति ।

२. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण० जाव पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! बहुतरिया से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराय से पावे कम्मे कज्जइ ।

३. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं असंजयं अविरय-पडिहय-पच्चकखायपावकम्मं फासुएण वा, अफासु-एण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-पाण० जाव किं कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से कावि निज्जरा कज्जइ ।

४. निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उचनिमंतेज्जा-एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियत्था सिया, जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पवायत्थे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अत्थेसि दावप; एगंते अणा-वाय अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जिस्ता परिट्ठावेयत्थे सिया ।

षष्ठ उद्देशक.

संयतने निर्दोष अश-
नादिषी प्रतिलाभता
शुं फलं धाय ? एकांत
निर्जरा धाय.

१. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना (उत्तम) श्रमण या ब्राह्मणने प्रासुक (अचित्त) अने एण्णीय (निर्दोष) अशन, पान, खादिम तथा खादिम आहार वडे प्रतिलाभता-सत्कार करता-श्रमणोपासकने शुं [फल] धाय ? [उ०] हे गौतम ! एकांत निर्जरा धाय, पण तेने पाप कर्म न धाय.

सदोष अशनादिषी
प्रतिलाभता शुं फलं
धाय ? षणी निर्जरा
अने अल्प पाप कर्मनो
बंध धाय.

२. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने अप्रासुक (सचित्त) अने अनेपणीय (सदोष) अशनादि वडे प्रति-
लाभता श्रमणोपासकने शुं [फल] धाय ? [उ०] हे गौतम ! षणी निर्जरा धाय, अने अत्यन्त अल्प पाप कर्म धाय.

असंयतने आहारशी
प्रतिलाभता शुं फलं
धाय ? एकान्त पाप
कर्म धाय.

३. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना विरतिरहित, अप्रतिहत अने अप्रत्याख्यात पापकर्मवाळा असंयतने प्रासुक अथवा अप्रा-
सुक, एण्णीय अथवा अनेपणीय अशनादि वडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने शुं [फल] धाय ? [उ०] हे गौतम ! एकांत पापकर्म धाय,
पण कांइ निर्जरा न धाय.

निर्ग्रन्थने वे पिंड श्र-
हण करवा माटे उप-
निमंत्रण.

४. गृहस्थना घरे आहार ग्रहण करवानी इच्छापी प्रवेश करेला निर्ग्रन्थने कोइ गृहस्थ वे पिंड (आहार) ग्रहण करवा माटे
उपनिमंत्रण करे के-हे आयुष्मान् ! एक पिंड तमे खाजो, अने बीजो पिंड स्वविरोने आपजो. पछी ते निर्ग्रथ ते (बन्ने) पिंडने ग्रहण
करे अने ते स्वविरोनी शोध करे; तपास करता ज्यां स्वविरोने जुए त्यांज ते पिंड तेने आपे, जो कदाच शोधतां स्वविरोने न जुए तो ते
पिंड पोते खाय नहीं अने बीजाने आपे नहीं, पण एकान्त, अनापात-ज्यां कोइ आवे नहि एवी अचित्त अने बहु प्रासुक स्थंडिल
(भूमि)ने जोइने, प्रमाजीने त्यां परठवे.

५. [प्र०] निम्नं च षं गाहावहकुलं पिंडवायपडियाय अणुपविटुं केर तीहिं पिंडेहिं उचनिमंतेजा—एगं भाउसो ! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि; से य ते पडिग्गहेजा, थेरा य से अणुगवेसेयवा, सेसं तं चेव जाव परिट्टावेयवे सिया, एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उचनिमंतेजा; जवरं एगं भाउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि; सेसं तं चेव जाव परिट्टावेयवे सिया ।

६. [प्र०] निम्नं च षं गाहावह० जाव केर दोहिं पडिग्गहेहिं उचनिमंतेजा—एगं भाउसो ! अप्पणा पडिभुंजाहि, एगं वेसणं दलयाहि । से य तं पडिग्गहेजा, तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेजा, नो अच्चेसि दावप; सेसं तं चेव, जाव परिट्टावेयवे सिया । एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहवत्तया भणिया, एवं गोच्छंय—रजहरण—चोलपट्ट—कंबल—लट्टि—संधारगवत्तया य भाणियवा, जाव दसहिं संधारपहिं उचनिमंतेजा, जाव परिट्टावेयवे सिया ।

७. [प्र०] निम्नं च षं गाहावहकुलं पिंडवायपडियाय पडिट्टेणं अन्नयरे अकिच्चट्टाणे पडिसेविए, तस्स षं एवं भवति—इहेव ताव अहं पयस्स टाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निन्दामि, गरिहामि, विउट्टामि, विसोहेमि, सकरणयाय अभुट्टेमि, अहारियं पायच्छिस्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि; तथो पच्छा थेराणं अंतियं आलोएस्सामि, जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि । से य संपट्टिए, असंपत्ते थेरा य पुवामेव अमुहा सिया, से षं भंते ! किं आराहप, विराहप ? [उ०] गोयमा ! आराहप, नो विराहप ।

८. [प्र०] से य संपट्टिए असंपत्ते अप्पणा य पुवामेव अमुहे सिया, से षं भंते ! किं आराहप, विराहप ? [उ०] गोयमा ! आराहप, नो विराहप ।

९. [प्र०] से य संपट्टिए असंपत्ते थेरा य कालं करेजा, से षं भंते ! किं आराहप, विराहप ? [उ०] गोयमा ! आराहप, नो विराहप ।

५. [प्र०] गृहस्थना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादाथी प्रवेश करेला निर्ग्रन्थने कोइ गृहस्थ ऋण पिंड ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे के—हे आयुष्मन् ! एक पिंड तमे खाजो अने बीजा बे पिंड स्थविरोने आपजो. पछी ते निर्ग्रन्थ ते पिंडोने ग्रहण करे, अने स्वविरोनी तपास करे. बाकीनुं पूर्वसूत्रनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे, ए प्रमाणे यावद् दश पिंडोने ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे, परन्तु एम कहे के हे आयुष्मन् ! एक पिंड तमे खाजो अने बाकीना नव पिंड स्वविरोने आपजो, बाकी बंधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे.

षण पिंड वा पिंडनुं उपनि

६. [प्र०] निर्ग्रन्थ यावत् गृहपतिना कुलमां प्रवेश करे अने कोइ गृहस्थ बे पात्र वडे तेने उपनिमंत्रण करे के—हे आयुष्मन् ! एक पात्रनो तमे उपभोग करजो अने बीजुं पात्र स्थविरोने आपजो. ते बने पात्रोने ग्रहण करे, बाकीनुं ते प्रमाणे जाणवुं, यावत् पोते ते पात्रनो उपयोग न करे अने बीजाने आपे पण नहीं, बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् ते पात्रने परठवे. ए प्रमाणे यावत् दस पात्र सुधी कहेवुं, जे प्रमाणे पात्रनी वक्तव्यता कही छे तेम गुच्छ, रजोहरण, चोलपट्ट, कंबल, दंड अने संस्तारकनी वक्तव्यता कहेवी, यावत् दश संस्तारकवडे उपनिमंत्रण करे, यावत् तेने परठवे.

बे पात्रोनुं मंत्रण

७. [प्र०] कोइ निर्ग्रन्थे गृहपतिना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादाथी प्रवेश करता कोइ अकृत्य स्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं होय, पछी ते निर्ग्रन्थना मनमां एम थाय के—“प्रथम इं अहीज आ अकार्य स्थाननुं आलोचन, प्रतिक्रमण, निन्दा अने गर्हा करुं, [तेना अनुबन्धने] छेदुं, विशुद्ध करुं, पुनः न करवा माटे तैयार थाउं, अने यथायोग्य प्रायश्चित्तरूप तप कर्मनो स्वीकार करुं. त्यार पछी स्वविरोनी पासे जइने आलोचना करीश, यावत् तपकर्मनो स्वीकार करीश.” [एम विचारी] ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जवा नीकळे अने त्यां पहोंच्या पहेला ते स्वविरो [वातादि दोषना प्रकोपथी] मूक थइ जाय—बोली न शके—अर्थात् प्रायश्चित्त न आपी शके तो हे भगवन् ! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (१)

आराधक विराध

स्वविरो मूक

८. [प्र०] हवे ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जाय अने त्यां पहोंच्या पहेला ते (निर्ग्रन्थ) मूक थइ जाय तो हे भगवन् ! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (२)

निर्ग्रन्थ मूक

९. [प्र०] ते निर्ग्रन्थ स्वविरोनी पासे जवा नीकळे अने ते पहोंच्या पहेलां ते स्वविरो काल करे तो हे भगवन् ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (३)

स्वविरो का

१०. [प्र०] से य संपट्टिप असंपत्ते अप्पणा य पुद्दामेव कालं करेज्जा, से णं भंते ! किं आराहप, विराहप ? [उ०] गोयमा ! आराहप, नो विराहप ।

११. [प्र०] से य संपट्टिप, संपत्ते, धेरा य अमुहा सिया, से णं भंते ! किं आराहप, विराहप ? [उ०] गोयमा ! आराहप, नो विराहप । से य संपट्टिप संपत्ते, अप्पणा य०—एवं संपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियद्वा जहेव असंपत्तेणं ।

१२. [प्र०] निग्गंथेण य बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतेणं अन्नयरे अकिञ्चट्टाणे पडिसेविप, तस्स णं एवं भवति—इहेव ताव अहं०—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ट आलावगा भाणियद्वा; जाव नो विराहप । निग्गंथेण य गामानुगामं दुइज्जमाणेणं अन्नयरे अकिञ्चट्टाणे पडिसेविप, तस्स णं एवं भवइ—इहेव ताव अहं०, एत्थ वि ते चेव अट्ट आलावगा भाणियद्वा, जाव नो विराहप ।

१३. [प्र०] निग्गंथीए य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्टाप अन्नयरे अकिञ्चट्टाणे पडिसेविप; तीसे णं एवं भवइ—इहेव ताव अहं एत्थस्स ठाणस्स आलोपमि, जाव तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा पयत्तिणीए अंतियं आलोपस्सामि, जाव पडिवज्जिस्सामि । सा य संपट्टिया असंपत्ता पयत्तिणी य अमुहा सिया; सा णं भंते ! किं आराहिया, विराहिया ? [उ०] गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया । सा य संपट्टिया जहा निग्गंथस्स तिञ्चि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिञ्चि आलावगा भाणियद्वा, जाव आराहिया, नो विराहिया ।

१४. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुब्बइ—आराहप, नो विराहप ? [उ०] गोयमा ! से जता नामप केइ पुरिसे एवं महं उज्जालोमं वा, गयलोमं वा, सणलोमं वा, कप्पासलोमं वा, तणस्यं वा दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिंदित्ता भगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से णुणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिन्ने, पक्खिप्यमाणे पक्खित्ते, इज्जमाणे दहेत्ति वत्तं सिया ? हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिन्ने, जाव दहेत्ति वत्तं सिया । से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा, धोतं वा, तंतुग्गयं वा मंजिट्टा-

निर्ग्रन्थ काळ करे.

१०. [प्र०] हवे स्थविरोनी पासे जवा निकळेले ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे पहाँच्या पहेल्य पोते काळ करी जाय तो हे भगवन् ! शुं ते आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (४)

संप्राप्त निर्ग्रन्थना चार आलापक.

११. [प्र०] ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जवा नीकळे अने पहाँचता थार ते स्थविरो मूक थई जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. हवे ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जाय अने त्यां पहाँचता वार ते (निर्ग्रन्थ) मूक थई जाय तो शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ?—इत्यादि संप्राप्त (पहाँचेला) निर्ग्रन्थना चार आलापक असंप्राप्त (नहि पहाँचेला) निर्ग्रन्थनी पेटे कहेवा.

विहारभूमि के विहारभूमि तरफ जता.

१२. कोई निर्ग्रन्थे बहार निहारभूमि के विहारभूमि तरफ जतां कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं होय, पछी तेने एम थाय के 'हुं प्रथम अही तेनुं आलोचनादि करुं'—इत्यादि पूर्वनी पेटे अहीं पण तेज आठ आलापक कहेवा, यावत् ते निर्ग्रन्थ विराधक नथी. निर्ग्रन्थे प्रामानुप्रामविहार करतां कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं होय, पछी तेने एम थाय के, हुं प्रथम तेनुं आलोचनादि करुं—इत्यादि पूर्ववत् अहीं पण तेज आठ आलापक कहेवा, यावत् 'ते निर्ग्रन्थ विराधक नथी.'

प्रामानुप्राम विहार करतां.

आराधक निर्ग्रन्थी.

१३. [प्र०] कोई साध्वीए आहार ग्रहण करवाना इरादाथी गृहपतिना घरे प्रवेश करता कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं, पछी तेने एम थाय के—हुं प्रथम आ अकृत्यस्थाननुं आलोचन करुं, यावत् तप कर्मनो स्वीकार करुं. त्थार पछी प्रवर्तिनी (बुद्ध साध्वी) नी पासे आलोचना करीश, यावत् तप कर्मनो स्वीकार करीश, [एम विचारी] ते साध्वी ते प्रवर्तिनीनी पासे जवा निकळे, अने त्यां पहाँच्या पहेलां ते प्रवर्तिनी मूगी थई जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते साध्वी आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते साध्वी आराधक छे पण विराधक नथी, जेम निर्ग्रन्थने त्रण आलापको कहा छे तेम 'ते साध्वी जवा नीकळे'—इत्यादि त्रण आलापको साध्वीने कहेवा. यावत् 'ते आराधक छे पण विराधक नथी.'

आराधक होवातुं कारण.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहे छो के तेओ आराधक छे पण विराधक नथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक पुरुष एक मोटा ऊनना, गजना लोमना, शणना रेसाना, कपासना रेसाना, तृणना अभ्रभागना बे, त्रण के संख्यात छेद—ककडा—करी तेने अग्निमां नाखे तो हे गौतम ! ते छेदातां छेदायेलुं, अग्निमां नंखाता नंखायेलुं, बळतां बळेलुं एम कहेवाय ? हे भगवन् ! हा, छेदातां छेदायेलुं, यावद् बळतां बळेलुं कहेवाय, अथवा कोई पुरुष ननुं, धोएलुं के तन्न—साळथी तरत उतरेलुं कपडुं मजीठना रंगनी

द्वेषणीय पक्विकवेद्या, से जूणं गोयमा ! उक्खिज्जमाणे उक्खिज्जसे, पक्खिज्जमाणे पक्खिज्जसे, रज्जमाणे रत्तेसि वत्तं सिया ? हंता मगवं ! उक्खिज्जमाणे उक्खिज्जसे जाव रत्तेसि वत्तं सिया । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धइ-आराहए नो विराहए ।

१५. [प्र०] पदीवस्स णं भंते ! श्रियायमाणस्स किं पदीवे श्रियाति, लट्ठी श्रियाइ, वस्ती श्रियाति, तेहे श्रियाइ, पदी-वचंपए श्रियाइ, जोई श्रियाइ ? [उ०] गोयमा ! नो पदीवे श्रियाइ, जाव नो पदीवचंपए श्रियाइ, जोई श्रियाइ ।

१६. [प्र०] अगारस्स णं भंते । श्रियायमाणस्स किं अगारे श्रियाइ, कुड्डा श्रियाइ, कडणा श्रियाइ, धारणा श्रियाइ, बलहरणे श्रियाइ, बंसा श्रियाइ, मल्ला श्रियाइ, वग्गा श्रियाइ, छिसरा श्रियाइ, छाणे श्रियाति, जोती श्रियाति ? [उ०] गोयमा ! नो अगारे श्रियाति, नो कुड्डा श्रियाति, जाव नो छाणे श्रियाति, जोती श्रियाति ।

१७. [प्र०] जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिए, सिय पंचकिए, सिय अकिए ।

१८. [प्र०] नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिए, सिय पंचकिए ।

१९. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते ? ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे ।

२०. [प्र०] जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरोहंतो कतिकिरिए ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, जाव सिय अकिए ।

कुंडीमां नांखे तो हे गौतम ! ते उंचेथी नांखता उंचेथी नंखायेळुं, नांखतां नंखायेळुं, रंगातां रंगायेळुं एम कहेवाय ! हा भगवन् ! ते उंचेथी नांखतां उंचेथी नंखायेळुं, यावत् रंगातां रंगायेळुं कहेवाय; ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छं के [आराधना गाटे तैयार थएले] ते आराधक छे पण विराधक नथी.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! बळता दीवामां शुं वळे छे ? शुं दीवो वळे छे, दीपयष्टि-दीवी वळे छे, वाट वळे छे, तेल वळे छे, दीवानुं दांकणुं वळे छे, के ज्योति-दीपशिखा वळे छे ? [उ०] हे गौतम ! दीवो बळतो नथी, यावत् दीवानुं दांकणुं बळतुं नथी, पण ज्योति वळे छे.

बळता दीपकमां शुं वळे छे ? ज्योति वळे छे.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! बळता घरमां शुं वळे छे ? शुं घर वळे छे, भीतो वळे छे, त्राटी वळे छे, धारण (मोभनी नीचेना स्तंभो) वळे छे, मोभ वळे छे, बांसो वळे छे, मल्लो (भीतोना आधार थांभला) वळे छे, छींदरीओ वळे छे, छापरुं वळे छे, छादन-डाम-वगोरेनुं दांकण वळे छे के ज्योति-अग्नि वळे छे ? [उ०] हे गौतम ! घर बळतुं नथी, भीतो बळती नथी, यावत् डाम वगोरेनुं छादन बळतुं नथी, पण ज्योति वळे छे.

बळता घरमां शुं वळे छे ? ज्योति वळे छे.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! एक जीव [परकीय] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच *त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो, कदाच पांचक्रियावाळो, अने कदाच अक्रिय (क्रिया रहित) होय.

परना एक औदारिक शरीरने आश्रयी जीवने क्रिया.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! एक नारक [परकीय] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय.

नारकने क्रिया.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! एक असुरकुमार [परकीय] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे [त्रण, चार के पांच क्रियावाळो होय] ए प्रमाणे यावद् वैमानिको जाणवा. परन्तु मनुष्यो जीवोनी पेठे जाणवा.

असुरकुमारने क्रिया.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! एक जीव [परकीय] औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो होय, यावत् कदाच अक्रिय होय.

एक जीवनी औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.

१ जोति छि-घ । २ आगारे ग ।

१७ *कायिकी, अधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातिनी-ए पांच क्रियाओ छे. तेमां एक जीव उचारे अन्य पृथिव्यादिक जीवना शरीरने आश्रयी कायानो व्यापार करे त्यारे तेने कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी ए त्रण क्रियाओ होय, केमके अवीतरागने कायिकी क्रियाना सदभावमां अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया अवश्य होय छे, अने बीजी वे क्रियाओ भजनाए होय छे. एटले उचारे ते बीजाने पारिताप उत्पन्न करे के घात करे क्षारे तेने पारितापनिकी के प्राणातिपातिनी क्रिया होय छे-टीका.

२१. [प्र०] नेरइय णं भंते ! ओरालियसरीरोहंतो कतिकिरिय ? [उ०] एवं एसो जहा पडमो दंडभो तहा इमो वि अपरिसेसो भाणियद्धो जाव वेमाणिय, नवरं मणुस्से जहा जीवे ।
२२. [प्र०] जीवा णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिया, जाव सिय अकिरिया ।
२३. [प्र०] नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ? [उ०] एवं एसो वि जहा पडमो दंडभो तहा भाणियद्धो, जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा ।
२४. [प्र०] जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरोहंतो कतिकिरिया ? [उ०] गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि, अकिरिया वि ।
२५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरोहंतो कतिकिरिया ? [उ०] गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा ।
२६. [प्र०] जीवे णं भंते ! वेउद्वियसरीराओ कतिकिरिय ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिय, सिय चउकिरिय सिय अकिरिय ।
२७. [प्र०] नेरइय णं भंते ! वेउद्वियसरीराओ कतिकिरिय ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिय, सिय चउकिरिय, एवं जाव वेमाणिय, नवरं मणुस्से जहा जीवे । एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिता तहा वेउद्वियसरीरेण वि चत्तारि दंडगा भाणियद्धा, नवरं पंचमकिरिया न भणइ, सेसं तं चेव । एवं जहा वेउद्वियं तहा आहारगं पि, तेयगं पि, कम्मगं पि भाणियद्धं; एकेके चत्तारि दंडगा भाणियद्धा, जाव वेमाणिया णं भंते ! कम्मगसरीरोहंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

अष्टमसए छट्ठो उद्देशो समाप्तो ।

नैरयिक.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! एक नैरयिक [पर संबन्धी] औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम आ प्रथम दंडक [सू. १८] कह्यो छे तेम आ सघळ्य दंडको पण यावद् वैमानिक सुधी कहेवा, परन्तु मनुष्यो जीवोनी पेटे जाणवा.

जीवोने एक औदा-
रिक शरीरोने आश्रयी
क्रिया.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो [पर संबन्धी] एक औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो होय, यावत् कदाच क्रियारहित होय.

नैरयिकोने क्रिया.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको [पर संबन्धी] औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रथम दंडक [सू. १८.] कह्यो छे तेनी पेटे यावद् वैमानिक सुधी आ दंडक पण कहेवो, पण मनुष्यो जीवोनी पेटे कहेवा.

जीवोने औदारिक
शरीरोने आश्रयी
क्रिया.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो पण होय, चारक्रियावाळो पण होय, पांचक्रियावाळो पण होय अने क्रिया रहित पण होय.

नैरयिकोने क्रिया.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको [परकीय] औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! त्रण-
क्रियावाळो पण होय, चारक्रियावाळो पण होय, अने पांचक्रियावाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा. पण मनुष्यो जीवोनी पेटे जाणवा.

जीवोने वैक्रिय
शरीरोने आश्रयी
क्रिया.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! जीव [परकीय] वैक्रियशरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रण-
क्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो *अने कदाच अक्रिय होय.

नैरयिकोने वैक्रिय
शरीरोने आश्रयी
क्रिया.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिक [पर संबन्धी] वैक्रिय शरीरोने आश्रयीने केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो अने कदाच चारक्रियावाळो होय. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुधी जाणवुं, पण मनुष्यो जीवोनी पेटे जाणवो. ए प्रमाणे जेम औदारिक शरीरोना चार दंडक कहा, तेम वैक्रिय शरीरोना पण चार दंडक कहेवा, परन्तु तेमां पांचमी क्रिया न कहेवी. वाकीनुं पूर्वोनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम वैक्रियशरीर संबन्धे कह्युं, तेम आहारक, तैजस अने कर्मण शरीर संबन्धे पण कहेवुं. एक एकला चार दंडक कहेवा, यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! वैमानिको कर्मण शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! त्रणक्रिया-
वाळो पण होय अने चारक्रियावाळो पण होय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.]

मनुष्योने जीवोनी
पेटे क्रियाओ होय.

वैमानिकोने
कर्मण शरीरोने आ-
श्रयी क्रियाओ.

अष्टमशतके षष्ठ उद्देशक समाप्त.

२६. * जीवोने वैक्रिय शरीरोने आश्रयी चार क्रियाओ होय छे, पांच क्रियाओ होवी नवी. केमके वैक्रिय शरीरोको चात करवो अशक्य छे—

सत्तमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं, तेणं समयेणं रायगिहे नयरे, वन्नभो, गुणसिलए चेइए. वन्नभो, जाव पुढविसिलावइओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणे भगवं महा-वीरे आदिगरे जाव समोसडे; जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना, कुलसंपन्ना, जहा बितियसए जाव जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का, समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उहुंजाणू, अहोसिरा, ज्ञाणकोट्टोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति ।

२. तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिस्ता ते थेरे भगवंते एव वयासी-तुम्मे णं अज्जो तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-प्पडिहय० जहा सत्तमसए वीतिए उद्देशए जाव एगंतबाला या वि भवह ।

३. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एव वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अग्गे तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय० जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

४. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एव वयासी-तुम्मे णं अज्जो ! अदिअं गेण्हह, अदिअं भुंजह, अदिअं साति-ज्जह; तए णं ते तुम्मे अदिअं गेण्हमाणा, अदिअं भुंजमाणा, अदिअं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय० जाव एगंतबाला यावि भवह ।

ससम उद्देशक.

१. ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणसिलक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्टक हतो. ते गुणसिलक चैत्यनी आसपास थोडे दूर घणा अन्यतीर्थिको रहे छे. ते काले-ते समये श्रमण भगवान् महावीर, तीर्थनी आदिना करनारा यावत् समोसर्या, यावत् परिषद् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीरना घणा शिष्यो, स्थविर भगवंतो जातिसंपन्न, कुलसंपन्न-इत्यादि जेम बीजा *शतकमां वर्णव्या छे तेवा, यावद् जीवितनी आशा अने मरणना भयथी रहित हत्ता, अने श्रमण भगवंत महावीरनी आसपास उंचा ढींचण करी नीचे मस्तक नमावी, ध्यानरूप कोष्टने प्राप्त थयेला, तेओ संयम अने तप वडे आत्माने भावित करता यावत् विहरे छे.

२. ल्यार पछी ते अन्यतीर्थिको ज्यां स्थविर भगवंतो छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवीने तेओए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के- 'हे आर्यो ! तमे त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत अने अप्रतिहत पापकर्मवाळ छे'-इत्यादि जेम 'सातमा शतकना बीजा उद्देशकमां कक्षा प्रमाणे यावत् एकांत बाल-अज्ञ छे.

३. ल्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत यावद् एकांत बाल छीए.

४. ल्यार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे अदत्त (कोइए नहीं आपेल) पदार्थनुं ग्रहण करो छो, अदत्त पदार्थने खाओ छो अने अदत्तनो खाद लो छो-अर्थात् [ग्रहणादिकनी] अनुमति आपो छो, तेथी अदत्तनुं ग्रहण करता, अदत्तने जमता अने अदत्तनी अनुमति आपता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, अने अविरत यावद् एकांत बाल पण छो.

अन्यतीर्थिको अने
स्थविरोनो संबन्ध-

अन्यतीर्थिको.
त्रिविधे त्रिविधे
असंयत.

स्थविरो.

अन्यतीर्थिको.
त्रिविधे त्रिविधे
असंयत होवानुं
कारण.

१ तुम्हे णं क, तुम्हे णं क । २ तुम्हे क ।

१. * भग० प्र. सं. पृ. २७८. श. १. उ. ५. पं. २.

† भग. सु. सं. श. ७. उ. २. सू. १. पं. ८.

१२ अ० सू०

५. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिणं गेण्हामो, अदिणं भुंजामो, अदिणं सातिज्जामो ? जए णं अम्हे अदिणं गेण्हमाणा, जाव अदिणं सातिज्जमाणा तिचिहं तिचिहेणं असंजय० जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

६. तप णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुम्हाणं अज्जो ! विज्जमाणे अदिणे, पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सरिज्जमाणे अणिसिट्ठे; तुम्भं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गाहणं असंपसं पत्थ णं अंतरा केइ अवहरिज्जा, गाहावइस्स णं तं, नो खलु तं तुम्भं; तप णं तुम्हे अदिणं गेण्हइ, जाव अदिणं सातिज्जइ; तप णं तुम्हे अदिणं गेण्हमाणा जाव एगंतबाला यावि भवइ ।

७. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिणं गेण्हामो, अदिणं भुंजामो, अदिणं सातिज्जामो; अम्हे णं अज्जो ! दिणं गेण्हामो, दिणं भुंजामो, दिणं सातिज्जामो । तप णं अम्हे दिणं गेण्हमाणा, दिणं भुंजमाणा दिणं सातिज्जमाणा तिचिहं तिचिहेणं संजय—विरय—पडिहय० जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडिया यावि भवामो ।

८. तप णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! तुम्हे दिणं गेण्हइ, जाव दिणं सातिज्जइ, जए णं तुम्हे दिणं गेण्हमाणा, जाव एगंतपंडिया यावि भवइ ?

९. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—अम्हे (म्हं) णं अज्जो ! विज्जमाणे दिणे, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गाहिए, निस्सरिज्जमाणे निसिट्ठे; अम्हं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गाहणं असंपसं पत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हं णं तं, नो खलु तं गाहावइस्स; तप णं अम्हे दिणं गेण्हामो, दिणं भुंजामो, दिणं सातिज्जामो, तप णं अम्हे दिणं गेण्हमाणा, जाव दिणं सातिज्जमाणा तिचिहं तिचिहेणं संजय० जाव एगंतपंडिया वि भवामो । तुम्हे णं अज्जो ! अप्पणा चेष तिचिहं तिचिहेणं अस्संजय० जाव एगंतबाला यावि भवइ ।

स्थिरो.
जा कारणधी अमे
अदत्तं ग्रहण करीए
छीए ?

५. स्थार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! क्या कारणधी अमे अदत्तं ग्रहण करीए छीए, अदत्तं भोजन करीए छीए अने अदत्तनी अनुमति आपीए छीए के जेधी अदत्तने ग्रहण करता, यावत् अदत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, यावत् एकांत बाल छीए ?

अन्यतीर्थिको.

६. स्थार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं होय ते आपेलुं नथी, ग्रहण करातुं होय ते ग्रहण करायेलुं नथी, [पात्रमां] नंखातुं होय ते नंखायेलुं नथी. हे आर्यो ! तमने आपवामां आवतो पदार्थ ज्यां सुधी पात्रमां पड्यो नथी, तेवामां वचमांथीज ते पदार्थने कोइ अपहरण करे तो ते गृहपतिना पदार्थनुं अपहरण थयुं एम कहेवाय, पण तमारा पदार्थनुं अपहरण थयुं एम न कहेवाय, तेथी तमे अदत्तं ग्रहण करो छो, यावद् अदत्तनी अनुमति आपो छो, माटे अदत्तं ग्रहण करता तमे यावत् एकांत अज्ज छो.

स्थिरो.

७. स्थार पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के हे आर्यो ! अमे अदत्तं ग्रहण करता नथी, अदत्तं भोजन करता नथी अने अदत्तनी अनुमति पण आपता नथी, हे आर्यो ! अमे दत्तं—आपेल पदार्थनुं ग्रहण करीए छीए, दत्तं भोजन करीए छीए, अने दत्तनी अनुमति आपीए छीए, माटे दत्तं ग्रहण करता, दत्तं भोजन करता अने दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, विरत अने पापकर्मनो नाश करवावाळा "सप्तम शतकमां क्हा प्रमाणे यावत् एकांत पंडित छीए.

अन्यतीर्थिको.

८. स्थार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे क्या कारणधी दत्तं ग्रहण करो छो, यावत् दत्तनी अनुमति आपो छो, जेधी दत्तं ग्रहण करता तमे यावद् एकांत पंडित छो ?

स्थिरो.

९. ते पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कहुं के हे आर्यो ! अमारा मतमां अपातुं ते अपायेलुं, ग्रहण करातुं ते ग्रहण करायेलुं, अने [पात्रमां] नंखातुं ते नंखायेलुं छे, जेधी हे आर्यो ! अमने देवातो पदार्थ ज्यां सुधी पात्रमां नथी पड्यो तेवामां वचमां कोइ ते पदार्थनो अपहार करे तो ते अमारा पदार्थनो अपहार थयो एम कहेवाय, पण ते गृहपतिना पदार्थनो अपहार थयो एम न कहेवाय, माटे अमे दत्तं ग्रहण करीए छीए, दत्तं भोजन करीए छीए, अने दत्तनी अनुमति आपीए छीए, तेथी दत्तं ग्रहण करता, यावत् दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावद् एकांत पंडित पण छीए. हे आर्यो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकांत बाल छो.

१०. तप णं ते अन्नउत्थिया ते धेरे भगवंते एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अग्हे तिविहं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

११. तप णं ते धेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी-तुम्हे णं अज्जो ! अदिच्चं गेण्हह, अदिच्चं भुंजह, अदिच्चं साविज्जह; तप णं तुम्हे अदिच्चं गेण्हमाणा, जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१२. तप णं ते अन्नउत्थिया ते धेरे भगवंते एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अग्हे अदिच्चं गेण्हामो, जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

१३. तप णं ते धेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी-तुम्हे (म्हं) णं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिच्चे, तं च्चेव जाव गाहा-बइस्स णं तं, णो खलु तं तुम्हं; तप णं तुज्जे अदिच्चं गेण्हह, तं च्चेव जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१४. तप णं ते अन्नउत्थिया ते धेरे भगवंते एवं वयासी-तुम्हे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव एगंत-बाला यावि भवह ।

१५. तप णं ते धेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अग्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंत-बाला यावि भवामो ?

१६. तप णं ते अन्नउत्थिया ते धेरे भगवंते एवं वयासी-तुम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह, अभिहणह, वसेह, लेसेह, संघापह संघट्टेह परित्तावेह, किलामेह, उहवेह; तप णं तुम्हे पुढविं पेच्चेमाणा, अभिहणमाणा जाव उह्वेमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय० जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१७. तप णं ते धेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी-नो खलु अज्जो ! अग्हे रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चामो, अभि-हणामो, जाव उवह्वेमो; अग्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं वा, जोयं वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पपसं पपसेणं वयामो; तेणं अग्हे देसं देसेणं वयमाणा पपसं पपसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो, अभिहणामो, जाव उवह्वेमो; तप णं अग्हे पुढविं अपेच्चेमाणा, अणभिहणेमाणा, जाव अणुवह्वेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय० जाव एगंतपंडिया यावि भवामो । तुम्हे णं अज्जो ! अप्पणा च्चेव विविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव बाला यावि भवह ।

१०. ल्यार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत बाल छीए ?

अन्यतीर्थिको-

११. ल्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, अदत्तनुं भोजन करो छो अने अदत्तनी अनुमति आपो छो माटे अदत्तनुं ग्रहण करता तमे यावद् एकांत बाल छो.

स्थविरो-

१२. ल्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी अदत्तनुं ग्रहण करीए छीए, यावद् एकांत बाल छीए ?

अन्यतीर्थिको-

१३. ल्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं ते अपायेळुं नथी-इत्यादि पूर्वनी पेठे कहेवुं. यावद् ते वस्तु गृहपतिनी छे, पण तमारी नथी, माटे तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, यावद् पूर्वं प्रमाणे तमे एकांत बाल छो.

स्थविरो-

१४. ल्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकांत बाल छो.

अन्यतीर्थिको-

१५. ल्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत बाल छीए ?

स्थविरो-

१६. ल्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कहुं के, हे आर्यो ! तमे गति करता पृथिवीना जीवने दबावो छो, हणो छो, पादाभिघात करो छो, श्लिष्ट (संचर्पित) करो छो, संहत-एकठा करो छो, संचद्रित-स्पर्शित करो छो, परितापित करो छो, क्रांत करो छो अने तेओने मारो छो; तेथी पृथिवीना जीवने दबावता, यावत् मारता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, अविरत अने यावद् एकांत बाल पण छो.

अन्यतीर्थिको-

१७. ल्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कहुं के, हे आर्यो ! गति करता अमे पृथिवीना जीवने दबावता नथी, हणता नथी, यावत् तेओने मारता नथी, हे आर्यो ! गति करता अमे कायना (शरीरना) कार्यने आश्रयी, योगने (ग्लानादिनी सेवाने) आश्रयी अने सत्वने (जीवरक्षणरूप संयमने) आश्रयी एक स्थळेथी बीजे स्थळे जइए छीए, एक प्रदेशथी बीजे प्रदेशे जइए छीए, तो एक स्थळेथी बीजे स्थळे जता अने एक प्रदेशथी बीजे प्रदेशे जता अमे पृथिवीना जीवने दबावता नथी, तेओने हणता नथी, यावत् तेओने मारता नथी; तेथी पृथिवीना जीवने नहि दबावता, नहीं हणता, यावत् नहीं मारता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावद् एकांत पंडित छीए. हे आर्यो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकांत बाल पण छो.

स्थविरो-

१८. तप णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१९. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी—तुम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेबेह, जाव उवइवेह; तप णं तुम्हे पुढविं पेबेमाणा, जाव उवइवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ।

२०. तप णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी—तुम्हे (भं) णं अज्जो ! गम्ममाणे अगते, वीतिकमिज्जमाणे अवी-
तिकंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपसे ।

२१. तप णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिय एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हं गम्ममाणे अगए, वीतिकमिज्जमाणे अवीतिकंते, रायगिहं नगरं जाव असंपसे; अम्हं णं अज्जो ! गम्ममाणे गए, वीतिकमिज्जमाणे वीतिकंते, रायगिहं नगरं संपा-
विउकामे संपसे; तुम्हं णं अप्पणा चेष गम्ममाणे अगए, वीतिकमिज्जमाणे अवीतिकंते, रायगिहं नगरं जाव असंपसे । तप णं
ते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिय एवं पडिहणंति, पडिहणित्ता गइप्पवायं नाम अज्जयणं पन्नवइंसु ।

२२. [प्र०] कइविहे णं भंते ! गइप्पवाए पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाए पन्नसे, तं जहा—पयोगगई, तत-
गई, बंधण—छेयणगई, उववायगई, विहायगती; एत्तो आरम्भ पयोगपयं निरवसेसं भाणियच्चं, जाव सेसं विहायगई । सेव
भंते ! सेव भंते ! सि ।

अष्टमसए सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

अन्यतीर्थिको.

१८. त्पार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत
बाल पण छीए ?

स्थिते.

१९. त्पार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! गति करता तमे पृथिवीना जीवने दबावो छो, यावत्
मारो छो, माटे पृथिवीना जीवने दबावना, यावत् मारना तमे त्रिविध त्रिविधे [असंयत] यावद् एकांत बाल छो.

अन्यतीर्थिको.

२०. त्पार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमारा (मते) गम्यमान—जे स्थळे जवातुं होय ते
अगत—न जवायेलुं कहेवाय, जे उल्लंघन करातुं होय ते न उल्लंघन करायेलुं एम कहेवाय, अने राजगृह नगरने प्राप्त करवानी इच्छा-
वाळाने न प्राप्त थयुं एम कहेवाय.

स्थिते.

२१. ते पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! अमारा (मते) गम्यमान—जे स्थळे जवातुं होय ते
अगत—न जवायेलुं, व्यतिक्रम्यमाण—उल्लंघन करातुं ते अव्यतिक्रांत—उल्लंघन न करायेलुं, अने राजगृहनगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळाने
असंप्राप्त—न प्राप्त थयेलुं न कहेवाय, पण हे आर्यो ! अमारा (मते) गम्यमान ते गत, व्यतिक्रम्यमाण ते व्यतिक्रांत अने राजगृह नग-
रने प्राप्त करवानी इच्छावाळाने ते संप्राप्त कहेवाय छे. तमारे मते गम्यमान ते अगत, व्यतिक्रम्यमाण ते अव्यतिक्रांत अने राजगृह नगरने
यावत् प्राप्त करवानी इच्छावाळाने ते असंप्राप्त छे. ते पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे निरुत्तर कर्या, अने निरुत्तर करीने
तेओए गतिप्रपात नामे अध्ययन प्ररूप्युं.

गतिप्रपात.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! गतिप्रपातो केटला प्रकारे कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! गतिप्रपातो पांच प्रकारना कहा छे, ते आ
प्रमाणे—*१ प्रयोगगति, २ ततगति, ३ बंधनछेदनगति, ४ उपपातगति अने ५ विहायोगति. अर्हीथी आरंभने सघलुं प्रयोगपद अर्ही
कहेवुं. यावत् ए प्रमाणे विहायोगति छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कहीने भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

अष्टम शतके सप्तम उद्देशक समाप्त.

२२. * १ प्रयोग—सत्यमनोयोगादि व्यापार पंद्र प्रकारनो छे, ते वडे मन बगेरेना पुद्गलोनी गति ते प्रयोगगति. २ तत—विस्तीर्ण गति. जेम देवदत्त
गम जाय छे, केमके आ गति विस्तारवाळी छे, माटे एटला विशेषथी प्रयोगगतिथी जूरी कही छे. ३ बन्धनना छेद् वडे जे गति थाय ते बन्धनछेदगति; ते
पीबमुक्त शरीरनी के शरीरमुक्त जीवनी जाणवी. ४ क्षेत्रादिकमां जे गति ते उपपात गति. आकाशादिकमां नारकादि, सिद्ध जीवो, अथवा पुद्गलोनी गति.
५ आकाशमां गमन करवुं ते विहायोगति. जेमके परमाणुनी लोकान्त सुधी गति थाय छे. † प्रज्ञा. पद. १६-प. ३२५—२

अट्टमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-गुरु णं मंते ! पडुच्च कति पडिणीया पञ्चत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पञ्चत्ता, तं जहा-आयरिथपडिणीय, उवज्जायपडिणीय, थेरपडिणीय ।
२. [प्र०] गतिं णं मंते ! पडुच्च कति पडिणीया पञ्चत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पञ्चत्ता, तं जहा-इहलोग-पडिणीय, परलोगपडिणीय, दुहओलोगपडिणीय ।
३. [प्र०] समूहं णं मंते ! पडुच्च कति पडिणीया पञ्चत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पञ्चत्ता, तं जहा-कुलपडि-णीय, गणपडिणीय, संघपडिणीय ।
४. [प्र०] अनुकंपं पडुच्च पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पञ्चत्ता, तं जहा-तवस्सिपडिणीय, गिलाणपडि-णीय, सेहपडिणीय ।
५. [प्र०] सुयं णं मंते ! पडुच्च पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पञ्चत्ता, तं जहा-सुत्तपडिणीय, अत्थपडिणीय, तदुभयपडिणीय ।
६. [प्र०] भावं णं मंते ! पडुच्च पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तओ पडिणीया पञ्चत्ता, तं जहा-नाणपडिणीय, वंसणपडि-णीय, चरिस्सपडिणीय ।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतमे] यावद् ए प्रमाणे कहुं के हे भगवन् ! गुरुओने आश्रयी केटला प्रत्यनीको (द्वेषी) कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण *प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—आचार्यप्रत्यनीक, उपाध्यायप्रत्यनीक अने स्वविरप्रत्यनीक. गुरुप्रत्यनीक.
२. [प्र०] हे भगवन् ! गतिने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे— इहलोकप्रत्यनीक, परलोकप्रत्यनीक अने उभयलोकप्रत्यनीक. गतिप्रत्यनीक.
३. [प्र०] हे भगवन् ! समूहने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे— कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने संघप्रत्यनीक. समूहप्रत्यनीक.
४. [प्र०] हे भगवन् ! अनुकंपाने आश्रयी प्रश्न; अर्थात् केटला प्रत्यनीको कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुकंपाने आश्रयी त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—तपस्विप्रत्यनीक, ग्लानप्रत्यनीक अने शैक्षप्रत्यनीक. अनुकंपाप्रत्यनीक.
५. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—सूत्रप्रत्यनीक, अर्थप्रत्य- न्नीक अने तदुभयप्रत्यनीक. श्रुतप्रत्यनीक.
६. [प्र०] हे भगवन् भावने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानप्रत्यनीक, दर्शनप्रत्य- न्नीक अने चारित्रप्रत्यनीक. भावप्रत्यनीक.

१. * प्रत्यनीक-विरोधी अथवा द्वेषी. आचार्य, उपाध्याय अने स्वविरनो द्वेषी होय. स्वविर-उम्भर, श्रुत अथवा वीक्षा पर्याये जे साधु मोटो होय ते.—टीका.

२. † मनुष्यत्वादि गतिने आश्रयी त्रण प्रत्यनीको छे, १ तेमां इन्द्रियादिकधी प्रतिकूल अज्ञानकष्टाचरण करनार इहलोकप्रत्यनीक कहेवाय छे, २ इन्द्रियना विषयमां तत्पर ते परलोकप्रत्यनीक अने त्रैविदिकवडे इन्द्रियना विषयमां तत्पर ते उभयलोकप्रत्यनीक.—टीका.

७. [प्र०] कइविहे णं भंते ! ववहारे पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे ववहारे पन्नसे, तं जहा—आगमे, सुएणं, आणा, धारणा, जीए । जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्टवेज्जा; णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्टवेज्जा । णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्टवेज्जा; णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्टवेज्जा; णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पट्टवेज्जा; इधेएहिं पंचहिं ववहारं पट्टवेज्जा, तं जहा—आगमेणं, सुएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं; जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारं पट्टवेज्जा ।

८. [प्र०] से किमाहु भंते ! आगमवहलिया समणा णिग्गंथा ? [उ०] इधेएणं पंचविहं ववहारं जया जया जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं आणिसिओवसितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ ।

९. [प्र०] कइविहे णं भंते ! बंधे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! इविहे बंधे पण्णसे, तं जहा—इरियावहियाबंधे य संपराइय-बंधे य ।

१०. [प्र०] इरियावहियं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ, तिरिक्खजोणिओ बंधइ, तिरिक्खजोणिणी बंधइ, मणुस्सो बंधइ, मणुस्सी बंधइ, देवो बंधइ, देवी बंधइ ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बंधइ, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ । पुद्धपडिचएण पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति, पडिचजमाणए पडुच्च १ मणुस्सो वा बंधइ, २ मणुस्सी वा बंधइ, ३ मणुस्सा वा बंधंति, ४ मणुस्सीओ वा बंधंति, ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ, ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधंति, ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बंधंति, ८ अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति ।

व्यवहार-

७. [प्र०] हे भगवन् ! व्यवहार केटला प्रकारनो कहो छे ? [उ०] हे गौतम ! व्यवहार पांच प्रकारे कहो छे, ते आ प्रमाणे—
१ *आगमव्यवहार, २ श्रुतव्यवहार, ३ आज्ञाव्यवहार, ४ धारणाव्यवहार अने ५ जीतव्यवहार. ते पांच प्रकारना व्यवहारमां तेनीं पासे जे प्रकारे आगम होय ते प्रकारे तेणे आगमथी व्यवहार चलाववो, तेमां जो आगम न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे श्रुत होय ते श्रुत वडे व्यवहार चलाववो, अथवा जो तेमां श्रुत न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे आज्ञा होय ते प्रकारे तेणे आज्ञावडे व्यवहार चलाववो. जो तेमां आज्ञा न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे धारणा होय ते प्रकारे धारणा वडे तेणे व्यवहार चलाववो. जो तेमां धारणा न होय तो जे प्रकारे तेनीं पासे जीत होय ते प्रकारे तेणे जीत वडे व्यवहार चलाववो. ए प्रमाणे ए पांच व्यवहारो वडे व्यवहार चलाववो, ते आ प्रमाणे—आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत वडे जे जे प्रकारे तेनीं पासे आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत होय ते ते प्रकारे तेणे व्यवहार चलाववो.

व्यवहारनुं फल.

८. [प्र०] हे भगवन् ! आगमना वल्लाळा श्रमण निर्मथो शुं कहे छे ? अर्थात् पंचविध व्यवहारनुं फल शुं कहे छे ? [उ०] ए प्रकारे आ पांच प्रकारना व्यवहारने ज्यारे ज्यारे अने ज्यां ज्यां (उचित होय) त्यारे त्यारे त्यां त्यां अनिश्रोपश्रित-राग द्वेषना त्यागपूर्वक सारी-रीते व्यवहरतो श्रमण निर्मथ आज्ञानो आराधक धाय छे.

ऐर्यापथिक अने सांपरायिक बंध.

९. [प्र०] हे भगवन् ! बन्ध केटला प्रकारनो कहो छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्ध बे प्रकारनो कहो छे, ते आ प्रमाणे—ऐर्यापथिकबन्ध अने सांपरायिक बन्ध.

ऐर्यापथिक बंधना स्तानी.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ऐर्यापथिक कर्म शुं १ नारक बांधे, २ तिर्यंच बांधे, ३ तिर्यंच स्त्री बांधे, ४ मनुष्य बांधे, ५ मनुष्यस्त्री बांधे, ६ देव बांधे के ७ देवी बांधे ? [उ०] हे गौतम ! १ नारक बांधतो नथी, २ तिर्यंच बांधतो नथी, ३ तिर्यंचस्त्री बांधती नथी, ४ देव बांधतो नथी अने ५ देवी बांधती नथी; पण 'पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी मनुष्यो अने मनुष्य स्त्रीओ बांधे छे. प्रतिपद्यमानने आश्रयी १ मनुष्य बांधे छे. २ अथवा मनुष्यस्त्री बांधे छे. ३ अथवा मनुष्यो बांधे छे. ४ अथवा मनुष्यस्त्रीओ बांधे छे; ५ अथवा मनुष्य अने मनुष्यस्त्री बांधे छे. ६ अथवा मनुष्य अने मनुष्यस्त्रीओ बांधे छे. ७ अथवा मनुष्यो अने मनुष्यस्त्री बांधे छे. ८ अथवा मनुष्यो अने मनुष्यस्त्रीओ बांधे छे.

७. * व्यवहार एटले मुमुक्षुनी प्रवृत्ति, तेलु कारण जे ज्ञान ते पण व्यवहार कहेवाय छे. १ आगम—केवलज्ञान, मनःपर्यव, अविज्ञान, चउद पूर्व, दसा पूर्व अने नव पूर्व. २ श्रुत—आचारकल्पादि, ३ आज्ञा—अर्थात्तार्थनी पासे गूढअर्थवाळा पदो वडे बीजा देशमां रहेला गीतार्थने निवेदन करवा माटे अस्ती-चारना आलोचना लेवी अने ते प्रमाणे बीजाना दोषनी पण शुद्धि करवी. ४ धारणा—गीतार्थे द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनों विचार करी जे दोषनी जे शुद्धि करी होय तेने अवधारिने बैयावण करनारा वगेरेने प्रायश्चित्त आपवुं. ५ जीत—द्रव्य, देश, काल, भावादिनी अपेक्षाए शारीरिक बल, धैर्य वगेरेनी हानिनी विचार करी प्रायश्चित्त आपवुं. विशेष माटे जुओ भ. टी. प. ३८४-२.

१०. † जेणे पूर्वे ऐर्यापथिक बन्ध कर्षो होय ते पूर्वप्रतिपन्न कहेवाय छे, अर्थात् ऐर्यापथिक बंधना बीजा, त्रीजा वगेरे समयमां वर्तमान होय ते. तेका घणा पुरुषो अने स्त्रीओ होय छे. केमके बने प्रकारना केवलितो हमेशां होय छे, ऐर्यापथिक कर्मना बन्धक वीतराग—उपशान्त मोह, क्षीणमोह, अने सगळीं केवळीं गुणस्थानके वर्तता होय छे. ऐर्यापथिकबन्धना प्रथम समये जेओ वर्तता होय ते प्रतिपद्यमान कहेवाय छे, अने तेओनो विरह संभवित होवाथी मनुष्य अने मनुष्यस्त्री एक एकना संयोगे अने एक नै बहुना योगे चार विकल्प धाय छे. द्विकसंयोगे पण चार विकल्पो नाव छे. ए प्रमाणे सर्ववर्तीने आठ विकल्पो धाय छे.—टीका.

११. [प्र०] हे भगवन् ! किं इत्थी बंधर, पुरिसो बंधर, नपुंसगो बंधर; इत्थीओ बंधंति, पुरिसा बंधंति, नपुंसगा बंधंति; नोइत्थी, नोपुरिसो, नोनपुंसगो बंधर ? [उ०] गोयमा नोइत्थी बंधर, नोपुरिसो बंधर, जाव नोनपुंसगो बंधर; पुणपडिवज्ज पडुच्च अवगयवेदा वा बंधंति, पडिवज्जमाणप पडुच्च अवगयवेदो वा बंधंति अवगयवेदा वा बंधंति ।

१२. [प्र०] अह भंते ! अवगयवेदो वा बंधर, अवगयवेदा वा बंधंति तं भंते ! किं १ इत्थीपच्छाकडो बंधर, २ पुरिसपच्छाकडो बंधर, ३ नपुंसगपच्छाकडो बंधर, ४ इत्थीपच्छाकडा बंधंति ५ पुरिसपच्छाकडा बंधंति, ६ नपुंसगपच्छाकडा बंधंति; उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधंति, इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बंधंति ४, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधर ४, उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधर ४, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधर ८; एवं एते छद्दीसं भंगा, जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ? [उ०] गोयमा ! १ इत्थीपच्छाकडो वि बंधर, २ पुरिसपच्छाकडो वि बंधर, ३ नपुंसगपच्छाकडो वि बंधर; ४ इत्थीपच्छाकडा वि बंधंति, ५ पुरिसपच्छाकडा वि बंधंति, ६ नपुंसगपच्छाकडा वि बंधंति; ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधर, एवं एए चेव छद्दीसं भंगा भाणियत्था, जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसकपच्छाकडा य बंधंति ।

१३. [प्र०] तं भंते ! किं १ बंधी बंधर बंधिस्सर, २ बंधी बंधर न बंधिस्सर, ३ बंधी न बंधर बंधिस्सर, ४ बंधी न बंधर न बंधिस्सर, ५ न बंधी बंधर बंधिस्सर, ६ न बंधी बंधर न बंधिस्सर, ७ न बंधी न बंधर बंधिस्सर, ८ न बंधी न बंधर न बंधिस्सर ? [उ०] गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्येगतिप बंधी बंधर बंधिस्सर, अत्येगतिप बंधी बंधर न बंधिस्सर, एवं तं चेव सधं जाव अत्येगतिप न बंधी न बंधर न बंधिस्सर । गहणागरिसं पडुच्च अत्येगतिप बंधी बंधर बंधिस्सर, एवं जाव अत्येगतिप न बंधी बंधर बंधिस्सर, णो चेव णं न बंधी बंधर न बंधिस्सर, अत्येगतिप न बंधी न बंधर बंधिस्सर, अत्येगतिप न बंधी न बंधर न बंधिस्सर ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! ते ऐर्यापथिक कर्मणे शुं १ स्त्री बांधे, २ पुरुष बांधे, ३ नपुंसक बांधे, ४ स्त्रीओ बांधे, ५ पुरुषो बांधे, ६ नपुंसको बांधे, ७ नोस्त्री, नोपुरुष, के नोनपुंसक बांधे ? [उ०] हे गौतम ! स्त्री न बांधे, पुरुष न बांधे, यावद् नपुंसको न बांधे; अथवा पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी वेदरहित जीवो बांधे, अथवा प्रतिपद्यमानने आश्रयी वेदरहित जीव अथवा वेदरहित जीवो बांधे.

ऐर्यापथिकी वेदरहित बांधे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित जीव या वेदरहित जीवो ऐर्यापथिक कर्मणे बांधे तो शुं १ स्त्रीपश्चात्कृत (जेने पूर्वे स्त्रीवेद होय एवो) जीव बांधे, २ पुरुषपश्चात्कृत (जेने पूर्वे पुरुषवेद होय एवो) जीव बांधे, ३ नपुंसकपश्चात्कृत (जेने पूर्वे नपुंसक वेद होय एवो) जीव बांधे, ४ स्त्रीपश्चात्कृत जीवो बांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृत जीवो बांधे, के ६ नपुंसकपश्चात्कृत जीवो बांधे ?; ४ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत अने पुरुषपश्चात्कृत जीव बांधे ? स्त्रीपश्चात्कृत अने पुरुषपश्चात्कृत जीवो बांधे ? ४ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत बांधे ? ४ अथवा पुरुषपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत बांधे ? ८ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत, पुरुषपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत पण कहेवा. ए प्रमाणे ए छद्दीसं भंगो जाणवा, यावत् अथवा स्त्रीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो बांधे ? [उ०] हे गौतम ! १ स्त्रीपश्चात्कृत पण बांधे. २ पुरुषपश्चात्कृत पण बांधे अने ३ नपुंसकपश्चात्कृत पण बांधे ४ स्त्रीपश्चात्कृतो बांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृतो बांधे अने ६ नपुंसकपश्चात्कृतो पण बांधे, अथवा ७ स्त्रीपश्चात्कृतो अने पुरुषपश्चात्कृतो बांधे, ए प्रमाणे ए छद्दीसं भंगा कहेवा. यावत् अथवा स्त्रीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो बांधे.

स्त्रीपश्चात्कृत बांधे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ते (ऐर्यापथिक कर्मणे) कोइए शुं बांधुं छे, बांधे छे, अने बांधशे; २ बांधुं छे, बांधे छे अने नहीं बांधे; ३ बांधुं छे, बांधतो नथी अने बांधशे; ४ बांधुं छे, बांधतो नथी अने नहि बांधे; ५ बांधुं नथी बांधे छे अने बांधशे; ६ बांधुं नथी, बांधे छे अने नहि बांधे; ७ बांधुं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे; ८ बांधुं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं ? [उ०] हे गौतम ! *भवाकर्षणे आश्रयी कोइ एके बांधुं छे, बांधे छे अने बांधशे; कोइ एके बांधुं छे, बांधे छे अने बांधशे नहीं; ए रीते बधुं ते प्रमाणे ज जाणवुं, यावत् कोइ एके बांधुं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं. प्रहणाकर्षणे आश्रयी कोइ एके बांधुं छे, बांधे छे अने बांधशे. ए प्रमाणे यावत् कोइ एके बांधुं नथी, बांधे छे अने बांधशे; पण 'बांधुं नथी, बांधे छे अने बांधशे नहीं' ए भांगो नथी. कोइ एके बांधुं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे; कोइ एके बांधुं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं.

ऐर्यापथिक कर्म संबंधे भांगा.

१३. * अनेक भवने विचे उपसामनेष्वादिनी प्राप्तिनी ऐर्यापथिक कर्मपुद्गलेशुं आकर्षण-ग्रहण करुं ते भवाकर्ष, अने एक भवने विचे ऐर्यापथिक कर्मपुद्गलेशुं ग्रहण करुं ते प्रहणाकर्ष—टीका.

૧૪. [પ્ર૦] તં મંતે ! કિં સાહ્યં સપજ્જવસિયં બંધર, સાહ્યં અપજ્જવસિયં બંધર, અણાહ્યં સપજ્જવસિયં બંધર, અણાહ્યં અપજ્જવસિયં બંધર ? [૩૦] ગોયમા ! સાહ્યં સપજ્જવસિયં બંધર, નો સાહ્યં અપજ્જવસિયં બંધર, નો અણાહ્યં સપજ્જવસિયં બંધર, નો અણાહ્યં અપજ્જવસિયં બંધર ।

૧૫. [પ્ર૦] તં મંતે ! કિં દેસેણં દેસં બંધર, દેસેણં સઘં બંધર, સઘેણં દેસં બંધર, સઘેણં સઘં બંધર ? [૩૦] ગોયમા ! નો દેસેણં દેસં બંધર, નો દેસેણં સઘં બંધર, નો સઘેણં દેસં બંધર, સઘેણં સઘં બંધર ।

૧૬. [પ્ર૦] સંપરાહ્યં ણં મંતે ! કમ્મં કિં નેરહ્મો બંધર, તિરિક્ખજોણિઓ બંધર, જાવ દેવી બંધર ? [૩૦] ગોયમા ! નેરહ્મો વિ બંધર, તિરિક્ખજોણિઓ વિ બંધર, તિરિક્ખજોણિણી વિ બંધર મણુસ્સો વિ બંધર, મણુસ્સી વિ બંધર, દેવો વિ બંધર, દેવી વિ બંધર ।

૧૭. [પ્ર૦] તં મંતે ! કિં હ્થી બંધર, પુરિસો બંધર; તહેવ જાવ નોહ્થી નોપુરિસો નોનપુંસગો બંધર ? [૩૦] ગોયમા ! હ્થી વિ બંધર, પુરિસો વિ બંધર, જાવ નપુંસગો વિ બંધર; અહ્થેવ ય અવગયવેદો ય બંધર, અહ્થેવ ય અવગય-વેદો ય બંધર ।

૧૮. [પ્ર૦] જહ મંતે ! અવગયવેદો ય બંધર, અવગયવેદો ય બંધર તં મંતે ! કિં હ્થીપચ્છાકકડો બંધર, પુરિસપચ્છા-કકડો બંધર ? [૩૦] એવં જહેવ શરિયાવહિયાવંધગસ્સ તહેવ નિરચસેસં, જાવ અહ્થવા હ્થીપચ્છાકકડા ય પુરિસપચ્છાકકડા ય નપુંસગપચ્છાકકડા ય બંધર ।

૧૯. [પ્ર૦] તં મંતે ! કિં ૧ બંધી બંધર બંધિસ્સર, ૨ બંધી બંધર ન બંધિસ્સર, ૩ બંધી ન બંધર બંધિસ્સર, ૪ બંધી ન બંધર ન બંધિસ્સર ? [૩૦] ગોયમા ! ૧ અત્થેગતિપ બંધી બંધર બંધિસ્સર, ૨ અત્થેગતિપ બંધી બંધર ન બંધિસ્સર, ૩ અત્થેગતિપ બંધી ન બંધર બંધિસ્સર, ૪ અત્થેગતિપ બંધી ન બંધર ન બંધિસ્સર ।

દેવોપથિક કર્મસંબંધે
સાદિસપર્યવસિતાદિ
સંગ.

૧૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તે (દેવોપથિક કર્મ) શું ૧ સાદિ સપર્યવસિત વાંધે, ૨ સાદિ અપર્યવસિત વાંધે, ૩ અનાદિ સપર્યવસિત વાંધે કે ૪ અનાદિ અપર્યવસિત વાંધે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સાદિ સપર્યવસિત વાંધે પણ સાદિ અપર્યવસિત ન વાંધે, તેમ અનાદિ સપર્યવસિત અને અનાદિ અપર્યવસિત ન વાંધે.

દેશથી દેશને વાંધે ?
હ્યાદિ પ્રશ્ન.
સર્વથી સર્વને વાંધે છે.

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તે (દેવોપથિક) કર્મને શું *દેશથી દેશને વાંધે, દેશથી સર્વને વાંધે, સર્વથી દેશને વાંધે, કે સર્વથી સર્વને વાંધે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! દેશથી દેશને વાંધતો નથી, દેશથી સર્વને વાંધતો નથી, સર્વથી દેશને વાંધતો નથી, પણ સર્વથી સર્વને વાંધે છે.

સાંપરાયિક કર્મસંબંધન
સ્વામી.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સાંપરાયિક કર્મ શું નારક વાંધે, તિર્યંચ વાંધે, યાવદ્ દેવી વાંધે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નૈરયિક પણ વાંધે, તિર્યંચ પણ વાંધે, તિર્યંચછી પણ વાંધે, મનુષ્ય પણ વાંધે, મનુષ્યછી પણ વાંધે, દેવ પણ વાંધે અને દેવી પણ વાંધે.

સ્ત્રીવગેરે વાંધે.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શું સાંપરાયિક કર્મને સ્ત્રી વાંધે, પુરુષ વાંધે, તેમજ યાવત્ નોસ્ત્રી, નોપુરુષ અને નોનપુંસક વાંધે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સ્ત્રી પણ વાંધે, પુરુષ પણ વાંધે, યાવદ્ નપુંસક પણ વાંધે; અથવા ઇઓ અને વેદરહિત સ્ત્રી વગેરે એક જીવ પણ વાંધે, અથવા ઇઓ અને વેદરહિત અનેક જીવો પણ વાંધે.

સ્ત્રીપશ્ચાત્કૃત વાંધે

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! (સાંપરાયિક કર્મને) જો વેદરહિતજીવ અને વેદરહિતજીવો વાંધે તો શું સ્ત્રીપશ્ચાત્કૃત વાંધે કે પુરુષપશ્ચાત્કૃત વાંધે ? હ્યાદિ. [૩૦] એ પ્રમાણે જેમ દેવોપથિકના વંધકને કહ્યું (સૂ. ૧૨.) તેમ અહીં સર્વ જાણવું, અથવા સ્ત્રીપશ્ચાત્કૃત જીવો, પુરુષપશ્ચાત્કૃત જીવો અને નપુંસકપશ્ચાત્કૃત જીવો વાંધે છે.

સાંપરાયિક કર્મ વાં-
ધ્યું, વાંધે છે અને
વાંધશે-તે સંગ-
સંગો.

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શું કોઈ સાંપરાયિક કર્મને ૧ વાંધ્યું, વાંધે છે અને વાંધશે; ૨ વાંધ્યું, વાંધે છે અને વાંધશે નહીં, ૩ વાંધ્યું, વાંધતો નથી અને વાંધશે નહીં; ૪ વાંધ્યું, વાંધતો નથી અને વાંધશે નહીં ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ કેટલા એક વાંધ્યું છે, વાંધે છે અને વાંધશે; ૨ કેટલા એક વાંધ્યું છે, વાંધે છે અને વાંધશે નહીં; ૩ કેટલા એક વાંધ્યું, વાંધતા નથી અને વાંધશે; ૪ કેટલા એક વાંધ્યું, વાંધતા નથી અને વાંધશે નહીં.

૨૦. [પ્ર૦] તં મંતે ! કિં સાદ્યં સપજ્જવસિયં બંધર ?-પુચ્છા તદ્દેવ । [૩૦] ગોયમા ! સાદ્યં વા સપજ્જવસિયં બંધર, અપાદ્યં વા સપજ્જવસિયં બંધર, અણાદ્યં વા અપજ્જવસિયં બંધર, ણો ચેવ ણં સાદ્યં અપજ્જવસિયં બંધર ।

૨૧. [પ્ર૦] તં મંતે ! કિં વેસેણં વેસં બંધર ? [૩૦] एव जहेव इरियावहियाबंधगस्स, जाव सत्तेणं सत्तं बंधर ।

૨૨. [પ્ર૦] કદ્દ ણં મંતે ! કમ્મપ્પગડીઓ પજ્જતાઓ ? [૩૦] ગોયમા ! અટ્ટ કમ્મપ્પગડીઓ પજ્જતાઓ, તં જહા-ગાણા-ચરણિજ્ઞં, જાવ અંતરાદ્યં ।

૨૩. [પ્ર૦] કદ્દ ણં મંતે ! પરિસહા પણ્ણતા ? [૩૦] ગોયમા ! બાવીસં પરિસહા પજ્જતા, તં જહા-દિગ્ગિહાપરિસહે, પિલાસાપરિસહે, જાવ ઢંસણપરિસહે ।

૨૪. [પ્ર૦] एष णं मंते ! बावीसं परिसहा कतिस्तु कम्मपगडीस्तु समयरंति ? [३०] गोयमा ! अउस्तु कम्मपयडीस्तु समयरंति, तं जहा नाणावरणिजे, वेयणिजे, मोहणिजे, अंतराप ।

૨૫. [પ્ર૦] નાણાવરણિજ્ઞે ણં મંતે ! કમ્મે કતિ પરિસહા સમોયરંતિ ? [૩૦] ગોયમા ! દ્વો પરિસહા સમોયરંતિ, તં જહા-પન્નાપરિસહે નાણપરિસહે ય ।

૨૬. [પ્ર૦] वेयणिजे णं मंते ! कम्मे कति परिसहा समयरंति ? [३०] गोयमा ! पकारस परिसहा समयरंति, तं जहा-

“पंचेव आणुपुत्री चरिया सेज्जा वहे य रोगे य । तणफास-जल्लमेव य पकारस वेदणिज्जम्मि” ॥

૨૭. [પ્ર૦] ઢંસણમોહણિજ્ઞે ણં મંતે ! કમ્મે કતિ પરિસહા સમોયરંતિ ? [૩૦] ગોયમા ! ણો ઢંસણપરિસહે સમોયરહ ।

૨૦. [પ્ર૦] हे भगवन् ! ते (सांपरायिक कर्मने) शुं सादे सपर्यवसित बांधे छे ?-इत्यादि प्रश्न. [३०] हे गौतम ! १ सादि सपर्यवसित बांधे छे; २ अनादि सपर्यवसित बांधे छे, ३ अनादि अपर्यवसित बांधे छे; पण सादि अपर्यवसित बांधतो नथी.

સાદિસપર્યવસિ-
તાદિ માંગા.

૨૧. [પ્ર૦] हे भगवन् (सांपरायिक कर्मने) शुं देशथी (जीवना देशथी) देशने (कर्मना देशने) बांधे छे ? इत्यादि. [३०] जेम ऐर्यापथिकबंधक संबन्धे कहुं [सू. १५.] तेम जाणवुं, यावत् 'सर्वथी सर्वने बांधे छे.'

દેશથી દેશને
બાંધે ?

૨૨. [પ્ર૦] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटला प्रकारे कही छे ? [३०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे, ते आ प्रमाणे— ज्ञानावरणीय, यावद् अंतराय.

કર્મપ્રકૃતિઓ-

૨૩. [પ્ર૦] हे भगवन् ! केटला परीषहो कह्या छे ? [३०] हे गौतम ! बावीश परीषहो कह्या छे, ते आ प्रमाणे—क्षुधापरीषह, पिपासापरीषह, यावद् दर्शनपरीषह.

પરિષહો.

૨૪. [પ્ર૦] हे भगवन् ! बावीश परीषहोनो केटली कर्मप्रकृतिओमां समवतार थाय ? [३०] हे गौतम ! ते बावीश परीषहोनो चार कर्मप्रकृतिमां समवतार थाय छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरणीय, वेदनीय, मोहनीय अने अंतराय.

પરિષહોનો કર્મ-
પ્રકૃતિઓમાં સમ-
વતાર.

૨૫. [પ્ર૦] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय ? [३०] हे गौतम ! ते परीषहोनो समवतार थाय छे; ते आ प्रमाणे—प्रज्ञापरीषह अने *ज्ञानपरीषह.

જ્ઞાનાવરણીય કર્મ-
માં સમવતાર.

૨૬. [પ્ર૦] हे भगवन् ! वेदनीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय छे ? [३०] हे गौतम ! वेदनीयकर्ममां अग्यार परीषहो समवतारे छे, ते आ प्रमाणे—अनुक्रमे पहेला पांच परीषहो—(क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, अने दंशमशक.) चर्या, शय्या, वध, रोग, तृण-स्पर्श अने मलपरिषह-ए अग्यार परिषहोनो वेदनीयकर्ममां समवतार थाय छे.

વેદનીય કર્મમાં
સમવતાર-

૨૭. [પ્ર૦] हे भगवन् ! दर्शनमोहनीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय छे ? [३०] हे गौतम ! तेमां एक दर्शन परीषहोनो समवतार थाय छे.

દર્શનમોહનીય
કર્મમાં સમવતાર.

૨૫. * વિશિષ્ટ મેચ્છાદિ જ્ઞાનના સદ્માલે મદ ન કરવો અને તેના અભાવે ધીનતા ન કરવી તે જ્ઞાનપરિષહ. વીજા પ્રશ્નોમાં આ પરિષહને બદલે અજ્ઞાન-પરીષહ કહેલો છે—ટીકા.

૨૮. [પ્ર૦] ચરિત્તમોહણિજ્ઞે ણં મંતે ! કમ્મે કતિ પરિસહા સમોયરંતિ ? [૩૦] ગોયમા ! સત્ત પરિસહા સમોયરંતિ, તં જહા—

“અરતી અચ્ચેલ—દ્વત્થી નિસીહિયા જાયણા ય અક્કોસે । સક્કાર—પુરુષ્કારે ચરિત્તમોહમ્મિ સસેતે” ॥

૨૯. [પ્ર૦] અંતરાયણ ણં મંતે ! કમ્મે કતિ પરીસહા સમોયરંતિ ? [૩૦] ગોયમા ! યગે અલાભપરિસહે સમોયરહ ।

૩૦. [પ્ર૦] સત્તવિહ્વંધગસ્સ ણં મંતે ! કતિ પરિસહા પક્કતા ? [૩૦] ગોયમા ! ધાવીસં પરિસહા પક્કતા, ધીસં પુણ વેદેહ । જં સમયં સીયપરીસહં વેદેતિ ણો તં સમયં ઉસિણપરીસહં વેદેહ, જં સમયં ઉસિણપરીસહં વેદેહ ણો તં સમયં સીયપરીસહં વેદેહ, જં સમયં ચરિયાપરિસહં વેદેતિ ણો તં સમયં નિસીહિયાપરિસહં વેદેતિ, જં સમયં નિસીહિયાપરીસહં વેદેહ ણો તં સમયં ચરિયાપરિસહં વેદેહ ।

૩૧. [પ્ર૦] અટ્ટવિહ્વંધગસ્સ ણં મંતે ! કતિ પરિસહા પક્કતા ? [૩૦] ગોયમા ! ધાવીસં પરિસહા પક્કતા, તં જહા— છુહાપરીસહે, પિવાસાપરીસહે, સીયપરીસહે, 'દંસ—મસગપરીસહે, જાવ અલાભપરીસહે । एवं अट्टविह्वंघगस्सं वि ।

૩૨. [પ્ર૦] છહિહ્વંધગસ્સ ણં મંતે ! સરાગહ્વમ્મથસ્સ કતિ પરિસહા પક્કતા ? [૩૦] ગોયમા ! ચોદ્ધસ પરિસહા પક્કતા, ધારસ પુણ વેદેહ; જં સમયં સીયપરીસહં વેદેહ ણો તં સમયં ઉસિણપરીસહં વેદેહ, જં સમયં ઉસિણપરીસહં વેદેહ નો તં સમયં સીયપરીસહં વેદેહ; જં સમયં ચરિયાપરીસહં વેદેતિ ણો તં સમયં સેજ્ઞાપરિસહં વેદેહ, જં સમયં સેજ્ઞાપરીસહં વેદેતિ ણો તં સમયં ચરિયાપરીસહં વેદેહ ।

૩૩. [પ્ર૦] ઇકવિહ્વંધગસ્સ ણં મંતે ! ધીયરાગહ્વમ્મથસ્સ કતિ પરીસહા પક્કતા ? [૩૦] ગોયમા ! एवं चेव जहेव छविह्वंघगस्स ।

૩૪. [પ્ર૦] યગવિહ્વંધગસ્સ ણં મંતે ! સજોગિભવત્થકેવલિસ્સ કતિ પરીસહા પક્કતા ? [૩૦] ગોયમા ! યક્કાર સપરીસહા પક્કતા, નવ પુણ વેદેહ, સેસં જહા છહિહ્વંધગસ્સ ।

ચારિત્રમોહનીયમાં
સમવતાર.

૨૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ચારિત્રમોહનીયકર્મમાં કેટલા પરીપહો સમવતરે છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેમાં સાત પરીપહો સમવતરે છે, તે આ પ્રમાણે—અરતિ, અચ્ચેલ, હીં, નૈવેધિકી, યાચના, આક્રોશ અને સન્કારપુરસ્કાર પરીપહ. ૯ સાત પરીપહો ચારિત્રમોહમાં સમવતરે છે.

અંતરાયકર્મમાં
સમવતાર.

૨૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અંતરાયકર્મમાં કેટલા પરીપહો સમવતરે છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેમાં એક અલાભ પરીપહ સમવતરે છે.

સત્તવિહ્વંધકને
પરિપહો.

૩૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સાત પ્રકારના કર્મના બાંધનારને કેટલા પરીપહો કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ધાવીશ પરીપહો કહ્યા છે. પણ એક સાથે ધાવીશ પરીપહોને વેદે છે, કારણ કે જે સમયે શીતપરીપહને વેદે છે તે સમયે ઉષ્ણપરીપહને વેદતો નથી, અને જે સમયે ઉષ્ણપરીપહને વેદે છે તે સમયે શીતપરીપહને વેદતો નથી. તથા જે સમયે ચર્યાપરિપહને વેદે છે તે સમયે નૈવેધિકીપરીપહને વેદતો નથી, અને જે સમયે નૈવેધિકીપરીપહને વેદે છે તે સમયે ચર્યાપરીપહને વેદતો નથી.

અટ્ટવિહ્વંધકને
પરિપહો.

૩૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આઠ પ્રકારના કર્મના બાંધનારને કેટલા પરીપહો કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેને ધાવીશ પરીપહો કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—શુધાપરીપહ, પિવાસાપરીપહ, શીતપરીપહ, દંશમશકપરીપહ, યાવદ્ અલાભપરીપહ. ૯ પ્રમાણે અટ્ટવિહ્વંધકને પણ સત્તવિહ્વંધકના જેમ જાણવું. [તેને ધાવીશ પરીપહો હોય છે, અને તે એક સાથે ધાવીશ પરીપહોને વેદે છે.]

છવિહ્વંધકને
પરિપહો.

૩૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! છ પ્રકારના કર્મના વન્ધક સરાગહ્વમ્મથસ્સને કેટલા પરીપહો કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ચોદ પરીપહો કહ્યા છે, પણ તે એક સાથે ધાર પરીપહોને અનુભવે છે; કારણ કે જે સમયે શીતપરીપહને વેદે છે, તે સમયે ઉષ્ણપરીપહને વેદતો નથી, અને જે સમયે ઉષ્ણપરીપહને વેદે છે તે સમયે શીતપરીપહને વેદતો નથી. તથા જે સમયે ચર્યાપરિપહને વેદે છે તે સમયે શય્યાપરીપહને વેદતો નથી, અને જે સમયે શય્યાપરીપહને વેદે છે તે સમયે ચર્યાપરીપહને વેદતો નથી.

એકવિહ્વંધક વીતરાગ
હ્વમ્મથસ્સને
પરિપહ.

૩૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એક પ્રકારના કર્મના બાંધનાર વીતરાગ હ્વમ્મથસ્સને કેટલા પરીપહો કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જેમ છ પ્રકારના કર્મના બાંધનારને પરીપહો કહ્યા છે તેમ એકવિહ્વંધકને પણ જાણવા.

યગવિહ્વંધક સ-
યોગી કેવલીને
પરિપહો.

૩૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એકવિહ્વંધક સયોગી ભવસ્થ કેવલજ્ઞાનીને કેટલા પરીપહો કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! અગ્યાર પરીપહો કહ્યા છે, તેમાં સાથે નવ પરીપહોને વેદે છે. ધાવીશ વધુ છ પ્રકારના કર્મવન્ધકની પેટે જાણવું.

૧ દંસપરિસહે મસગ-ક । ૨ -સ્સ વિ સત્તવિહ્વંધગસ્સ વિ ગ-ઘ ।

૨૮. * નૈવેધિકી-શુન્ય શુદ્ધિરૂપ સ્વાધ્યાયભૂમિ, ત્યાં જે પરિપહ-ઉપદ્રવો ધાય તેથી ભય ન પામવો તે નૈવેધિકી પરિપહ—ટીકા.

३५. [प्र०] अबंधगस्स णं भंते ! अयोगिभवत्थकेवलस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एकारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेह । जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उल्लिणपरीसहं वेदेह, जं समयं उल्लिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेह, जं समयं चरियापरिसहं वेदेह नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेह नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेह ।

३६. [प्र०] जंबुदीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! जंबुदीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य, तं खेव जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ।

३७. [प्र०] जंबुदीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि मज्झंतियमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सच्चत्थ समा उच्चत्तेणं ? [उ०] हंता, गोयमा ! जंबुदीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण० जाव उच्चत्तेणं ।

३८. [प्र०] जइ णं भंते ! जंबुदीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि, अत्थमणमुहुत्तंसि य मूले जाव उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्टेणं भंते ! एवं बुब्बइ—जंबुदीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? [उ०] गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभिताखेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुब्बइ—जंबुदीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, जाव अत्थमण— जाव दीसंति ।

३९. [प्र०] जंबुदीवे णं भंते ! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, अणागयं खेत्तं गच्छंति ? [उ०] गोयमा ! णो तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं गच्छंति ।

४०. [प्र०] जंबुदीवे णं दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, अणागयं खेत्तं ओभासंति ? [उ०] गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासंति ।

३५. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मबन्धरहित अयोगी भवस्थ केवलज्ञानाने केटला परीपहो कक्षा छे ? [उ०] हे गौतम ! अगीयार परीपहो कक्षा छे; तेमां साथे नत्र परीपहोने वेदे छे; कारण के जे समये शीतपरीपहने वेदे छे ते समये उष्णपरीपहने वेदता नथी, अने जे समये उष्णपरीपहने वेदे छे ते समये शीतपरीपहने वेदता नथी. तथा जे समये चर्यापरिपहने वेदे छे ते समये शय्यापरीपहने वेदता नथी, अने जे समये शय्यापरीपहने वेदे छे ते समये चर्यापरीपहने वेदता नथी.

कर्मबन्धरहित अयोगी केवलीने परिपहो.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपनामे द्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे, मध्याह्नसमये पासि छतां दूर देखाय छे, अने आथमवाने समये दूर छतां पासि देखाय छे ? [उ०] हा, गौतम ! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे—इत्यादि, यावद् आथमवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे.

जंबूद्वीपमां सूर्यो दूर छतां केम पासि देखाय छे ?

३७. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये, मध्याह्नसमये अने आथमवाना समये सर्व स्थले उंचाइमां सरखा छे ? [उ०] हा, गौतम ! जंबूद्वीपमां रहेला बे सूर्यो उगवाना समये यावत् सर्वस्थले उंचाइमां सरखा छे.

सूर्यो सर्वत्र उंचाइमां सरखा छे ?

३८. [प्र०] हे भगवन् ! जो जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये, मध्याह्नसमये अने आथमवाना समये यावद् उंचाइमां सरखा छे तो हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे, यावद् आथमवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे ? [उ०] हे गौतम ! लेश्याना (तेजना) प्रतिघातथी उगवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे, लेश्याना—तेजना अभितापथी मध्याह्न समये पासि छतां दूर देखाय छे, तथा लेश्याना प्रतिघातथी आथमवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे, यावद् आथमवाना समये दूर छतां पासि देखाय छे.

तेजना प्रतिघातथी दूर छतां पासि देखाय छे. तेजना अभितापथी पासि छतां दूर देखाय छे.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे, वर्तमान क्षेत्र प्रति जाय छे, के अनागत क्षेत्र प्रति जाय छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्र प्रति जता नथी, वर्तमान क्षेत्र प्रति जाय छे, पण अनागत क्षेत्र प्रति जता नथी.

अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे ?—इत्यादि प्रश्न.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्रने प्रकाशे छे, वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे के अनागत क्षेत्रने प्रकाशे छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्रने प्रकाशता नथी, वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे, अने अनागत क्षेत्रने प्रकाशता नथी.

अतीतक्षेत्रने प्रकाशे छे ?—इत्यादि प्रश्न. वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे.

३६. * उगवाना अने आथमवाना समये द्रष्टाना स्थाननी अपेक्षाए सूर्य दूर छे पण द्रष्टाने 'नजीक छे' एम प्रतीति थाय छे, द्रष्टा उगवा अने आथमवाना समये हजारो योजन दूर सूर्यने जुए छे, अने नजीकमां होय एम तेने लागे छे, पण मध्याह्नसमये द्रष्टाना स्थाननी अपेक्षाए सूर्य नजीक छतां पण तेने दूर होय एम लागे छे. द्रष्टा उदय अने अस्त समयनी अपेक्षाए मध्याह्नसमये नजीक सूर्यने जुए छे, केमके ते ब्रह्मते मात्र आठसो योजनतुं अन्तर छे, पण तेने उदय अने अस्तसमयनी अपेक्षाए दूर माने छे. तेनुं कारण (सू. ३८ मां) बताव्युं छे.—टीका.

३७. † समभूतल पृथिवीनी अपेक्षाए सूर्यो सर्वत्र आठसो योजन उंचा छे—टीका.

३९. ‡ अतीत क्षेत्र अतिक्रान्त करेछुं होवाथी ते तरफ जतो नथी, पण वर्तमान एटले ज्यां जवानुं छे ते क्षेत्र तरफ जाय छे. बढी अनागत एटले ज्यां जवानुं ए क्षेत्र तरफ पण जतो नथी.—टीका.

४१. [प्र०] तं मंते ! किं पुट्टं भोमासंति, अपुट्टं भोमासंति ? [उ०] गोयमा ! पुट्टं भोमासंति, नो अपुट्टं भोमासंति, जाव नियमा छद्दिसि ।

४२. [प्र०] जंबुद्वीवे णं मंते ! द्वीवे सूरिया किं तीयं क्षेत्रं उज्जीवेति ? [उ०] एवं वेव, जाव नियमा छद्दिसि, एवं तवेति, एवं भोमासंति, जाव नियमा छद्दिसि ।

४३. [प्र०] जंबुद्वीवे णं मंते ! द्वीवे सूरियाणं किं तीय क्षेत्रे किरिया कज्जर, पडुप्ये क्षेत्रे किरिया कज्जर, अणागय क्षेत्रे किरिया कज्जर ? [उ०] गोयमा ! नो तीय क्षेत्रे किरिया कज्जर, पडुप्ये क्षेत्रे किरिया कज्जर, नो अणागय क्षेत्रे किरिया कज्जर ।

४४. [प्र०] सा मंते ! किं पुट्टा कज्जर, अपुट्टा कज्जर ? [उ०] गोयमा ! पुट्टा कज्जर, नो अपुट्टा कज्जर, जाव नियमा छद्दिसि ।

४५. [प्र०] जंबुद्वीवे णं मंते ! द्वीवे सूरिया केवतियं क्षेत्रं उहुं तवंति, केवतियं क्षेत्रं महो तवंति, केवतियं क्षेत्रं तिरियं तवंति ? [उ०] गोयमा ! एगं जोयणसयं उहुं तवंति; अट्टारस जोयणसयाहं अहे तवंति, सीयालीसं जोयणसहस्ताहं दोणिण तेवट्टे जोयणसय एक्कीसं च सट्टिमाप जोयणसस तिरियं तवंति ।

४६. [प्र०] अंतो णं मंते ! माणुसुत्तरपद्यस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-ताराकवा ते णं मंते ! देवा किं उहोवधत्तगा ? [उ०] जहा जीवाभिगमे तद्देव निरवसेसं जाव उक्कोसेणं छम्मासा ।

४७. [प्र०] वाहिया णं मंते ! माणुसुत्तरस्स० ? [उ०] जहा जीवाभिगमे, जाव इंद्वट्टाणे णं मंते ! केवतियं कालं उव-वापणं विरहिए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहत्तेणं एकं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

अट्टमसए अट्टमो उद्देशो समत्तो ।

स्पष्ट क्षेत्रोने प्रका-
शित करे छे.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! [ते सूर्यो] स्पष्टोऽं क्षेत्रे प्रकाशित करे छे के अस्पष्टोऽं क्षेत्रे प्रकाशित करे छे ? [उ०] हे गौतम ! स्पष्टोऽं क्षेत्रे प्रकाशे छे पण अस्पष्टोऽं क्षेत्रे प्रकाशित करता नथी; यावत् अवश्य छ दिशाने प्रकाशे छे.

अतीत क्षेत्रे उद्घो-
तित करे छे ?-
इत्यादि.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां वे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्रे उद्घोतित करे छे ? इत्यादि. [उ०] पूर्वनी पेटे जाणवुं, यावद् अवश्य छ दिशाने उद्घोतित करे छे, ए प्रमाणे तपावे छे, यावद् अवश्य छ दिशाने प्रकाशे छे.

सूर्यनी क्रिया
वर्तमान क्षेत्रमां
कराय छे.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां सूर्योनी क्रिया शुं अतीत क्षेत्रमां कराय छे, वर्तमान क्षेत्रमां कराय छे के अनागत क्षेत्रमां कराय छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्रमां क्रिया कराती नथी, वर्तमान क्षेत्रमां क्रिया कराय छे, पण अनागत क्षेत्रमां क्रिया कराती नथी.

सूर्य स्पष्ट क्रियाने
करे छे.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं [ते सूर्यो] स्पष्ट क्रियाने करे छे के अस्पष्ट क्रियाने करे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ स्पष्ट क्रियाने करे छे, पण अस्पष्ट क्रियाने नथी करता, यावद् अवश्य छ दिशामां स्पष्ट क्रियाने करे छे.

केटलुं क्षेत्र उंचे
तपावे छे ?

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां सूर्यो केटलुं क्षेत्र उंचे तपावे छे, केटलुं क्षेत्र नांचे तपावे छे अने केटलुं क्षेत्र तिर्यग् तपावे छे ? [उ०] हे गौतम ! सो योजन क्षेत्र उंचे तपावे छे, अट्टारसो योजन क्षेत्र नांचे तपावे छे. अने सूडताळीश हजार वसे त्रेसठ योजन तथा एक योजनना साठीया एक्कीश भाग जेटलुं क्षेत्र तिर्यग् (तिरछुं) तपावे छे.

मनुष्योत्तर पर्वतनी
अंदरना चन्द्रादि
देवो शुं ऊर्ध्व लोकां
उत्पन्न थयेला छे ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदर जे चंद्रो, सूर्यो, ग्रहगण, नक्षत्र अने तारारूप देवो छे, हे भगवन् ! ते शुं ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थयेला छे ? [उ०] जे प्रमाणे *जीवाभिगमसूत्रमां कहुं छे तेम यावद् [तेओनो उपपातविरहकाल-उपजवानुं अन्तर जत्रन्य एक समय अने] यावद् उत्कृष्ट छ मास छे'-त्वां सुधी बंधु जाणवुं.

मनुष्योत्तर पर्वतनी
बहारना चंद्रादि
देवो.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी बहार जे चंद्रादि देवो छे तेओ शुं ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थयेला छे ? [उ०] जेम जीवाभिगमसूत्रमां कहुं छे तेम जाणवुं, यावत्-[प्र०] हे भगवन् ! इन्द्रस्थान केटला काल सुधी उपपात वडे विरहित कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी छ मास, [अर्थात् एक इन्द्रना मरण पछी जघन्यथी एक समये अने उत्कृष्टथी छ मासे तेने स्थाने बीजो इन्द्र उत्पन्न थाय छे तेथी तेटलो काल इन्द्रस्थान उपपात विरहित होय छे,] हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे].

अष्टम शतके अष्टम उद्देशक समाप्त.

नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] क्वचिद्देवं णं भंते ! बंधे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! दुव्हिद्दे बंधे पण्णसे, तं जहा—पयोगबंधे य वीससाबंधे य ।
२. [प्र०] वीससाबंधे णं भंते ! कतिव्हिद्दे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! दुव्हिद्दे पण्णसे, तं जहा—सादीयवीससाबंधे अणादीयवीससाबंधे य ।
३. [प्र०] अणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कतिव्हिद्दे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! तिचिद्दे पण्णसे, तं जहा—धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे ।
४. [प्र०] धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सत्त्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे, नो सत्त्वबंधे । एवं अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि ।
५. [प्र०] धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सत्त्वञ्जं । एवं अधम्मत्थिकाय, एवं आगासत्थिकाय वि ।

नवमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! बन्ध केटला प्रकारनो कळो छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्ध वे प्रकारनो कळो छे, ते आ प्रमाणे—प्रयोगबन्ध अने विस्त्रसाबन्ध. बन्ध.
२. [प्र०] हे भगवन् ! विस्त्रसाबन्ध केटला प्रकारनो कळो छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारनो कळो छे, ते आ प्रमाणे—सादि विस्त्रसाबन्ध अने अनादि विस्त्रसाबन्ध. विस्त्रसाबन्ध.
३. [प्र०] हे भगवन् ! अनादि विस्त्रसाबन्ध केटला प्रकारनो कळो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कळो छे, ते आ प्रमाणे —धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध, अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध अने आकाशास्तिकायनो पण अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध. अनादि विस्त्रसाबन्ध.
४. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! *देशबन्ध छे, पण सर्वबन्ध नथी. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध जाणवो. एवी रीते आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध जाणवो. धर्मास्तिकायनो अनादि विस्त्रसा देशबन्ध.
५. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध काळथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्व काल सुधी होय छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्त्रसाबन्ध जाणवो. अनादि विस्त्रसा बन्धनो काळ.

४. * धर्मास्तिकायना प्रदेशोनो नीज प्रदेशो सभे परस्पर संबन्ध ते देशबन्ध, परन्तु तेनो सर्वबन्ध नथी; ओ तेनो सर्वबन्ध होय तो एक प्रदेशमा थीजा सर्व प्रदेशोनो अन्तर्भाव थाय अने तेथी धर्मास्तिकाय एक प्रदेशरूप थाय—टीका.

૬. [પ્ર૦] સાદીયવીસસાબંધે ણં મંતે ! કતિવિદ્ધે પળ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! તિવિદ્ધે પળ્ણસે, તં જહા—બંધણપચ્છદ્દપ, માયણપચ્છદ્દપ, પરિણામપચ્છદ્દપ ।

૭. [પ્ર૦] સે કિં તં બંધણપચ્છદ્દપ ? [૩૦] બંધણપચ્છદ્દપ જં ણં પરમાણુપુગલાદુપ્પપ્પસિયા—તિપ્પપ્પસિયા—જાથ દ્સપ્પસિયા—સંલેજ્જપ્પસિયા—અસંલેજ્જપ્પસિયા—અણંતપ્પસિયાણં ળંધાણં વેમાયનિદ્ધયાપ, વેમાયલુપ્પસિયાપ, વેમાયનિદ્ધલુપ્પસિયાપ બંધણપચ્છદ્દપ ણં બંધે સમુપ્પજ્જહ, જહન્નેણં ઇક્કં સમયં, ઉક્કોસેણં અસંલેજ્જં કાલં । સેત્તં બંધણપચ્છદ્દપ ।

૮. [પ્ર૦] સે કિં તં માયણપચ્છદ્દપ ? [૩૦] માયણપચ્છદ્દપ જં ણં જુભસુરા—જુભગુલ—જુભતંદુલાણં માયણપચ્છદ્દપ ણં બંધે સમુપ્પજ્જહ, જહન્નેણં અંતોમુહુત્તં, ઉક્કોસેણં સંલેજ્જં કાલં । સેત્તં માયણપચ્છદ્દપ ।

૯. [પ્ર૦] સે કિં તં પરિણામપચ્છદ્દપ ? [૩૦] પરિણામપચ્છદ્દપ જં ણં અપ્પમાણં, અપ્પમહ્વસાણં જહા તતિયસપ્પ જાથ અમોહાણં પરિણામપચ્છદ્દપ ણં બંધે સમુપ્પજ્જહ, જહન્નેણં ઇક્કં સમયં ઉક્કોસેણં છમ્માસા । સેત્તં પરિણામપચ્છદ્દપ । સેત્તં સાદીય-વીસસાબંધે । સેત્તં વીસસાબંધે ।

૧૦. [પ્ર૦] સે કિં તં પર્યોગબંધે ? [૩૦] પર્યોગબંધે તિવિદ્ધે પળ્ણસે, તં જહા—અણાઈપ્પ વા અપ્પજ્જવસિપ્પ, સાઈપ્પ વા અપ્પજ્જવસિપ્પ, સાઈપ્પ વા સપ્પજ્જવસિપ્પ । તત્થ ણં જે સે અણાઈપ્પ અપ્પજ્જવસિપ્પ સે ણં અટ્ટુણ્હં જીવમજ્જપ્પણાણં, તત્થ વિ ણં તિણ્હં તિણ્હં અણાઈપ્પ અપ્પજ્જવસિપ્પ, સેસાણં સાઈપ્પ । તત્થ ણં જે સે સાઈપ્પ અપ્પજ્જવસિપ્પ સે ણં સિદ્ધાણં । તત્થ ણં જે સે સાઈપ્પ સપ્પજ્જવસિપ્પ સે ણં ચઠ્ઠિદ્ધે પળ્ણસે, તં જહા—આલાવણબંધે, અલ્હિયાવણબંધે, સરીરબંધે, સરીરપ્પઓગબંધે ।

સાદિ વિસસાબન્ધ.

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સાદિવિસસાબન્ધ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે; તે આ પ્રમાણે— ૧ *બંધનપ્રત્યયિક, ૨ ભાજનપ્રત્યયિક અને ૩ પરિણામપ્રત્યયિક.

બંધનપ્રત્યયિક
બન્ધ.

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! બંધનપ્રત્યયિક [સાદિ વન્ધ] કેવા પ્રકારે છે ? [૩૦] દ્વિપ્રદેશિક, ત્રિપ્રદેશિક, ચાવદ્ દશપ્રદેશિક, સંસ્થાતપ્રદેશિક, અસંસ્થાતપ્રદેશિક અને અનંતપ્રદેશિક પરમાણુ પુદ્ગલસ્કંધોનો વિષમ ક્ષિપ્તતા (ચિકાશ) વડે, વિષમ રુક્ષતા વડે અને વિષમ ક્ષિપ્ત-રુક્ષતા વડે બંધનપ્રત્યયિક વન્ધ થાય છે. તે જઘન્યથી એક સમય, અને ઉત્કૃષ્ટથી અસંસ્થ વાલ સુધી રહે છે. એ પ્રમાણે બંધનપ્રત્યયિક વન્ધ કહ્યો.

ભાજનપ્રત્યયિક
વન્ધ.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ભાજનપ્રત્યયિક વન્ધ કેવા પ્રકારે હોય ? [૩૦] જૂની મદિરાનો, જૂના ગોળનો અને જુના ચોખાનો ભાજન પ્રત્યયિક વન્ધ થાય છે. તે જઘન્યથી અન્તમુહુર્ત અને ઉત્કૃષ્ટ સંસ્થાત વાલ સુધી રહે છે. એ પ્રમાણે ભાજનપ્રત્યયિક વન્ધ કહ્યો.

પરિણામપ્રત્યયિક
વન્ધ.

૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પરિણામપ્રત્યયિક વન્ધ કેવા પ્રકારે છે ? [૩૦] વાદલાઓનો, અશ્રવૃક્ષોનો જેમ તૃતીય શતકમાં કહ્યું છે તેમ ચાવદ્ અમોઘોનો પરિણામપ્રત્યયિક વન્ધ ઉપ્પન્ન થાય છે. તે જઘન્યથી એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટથી છ માસ સુધી રહે છે, એ પ્રમાણે પરિણામપ્રત્યયિકવન્ધ, સાદિ વિસસાબન્ધ અને વિસસાબન્ધ કહ્યો.

પર્યોગવન્ધ.

૧૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પર્યોગવન્ધ કેવા પ્રકારે છે ? [૩૦] "પર્યોગવન્ધ ત્રણ પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે— ૧ અનાદિ અપર્યવસિત, ૨ સાદિ અપર્યવસિત અને ૩ સાદિ સપર્યવસિત પર્યોગવન્ધ. તેમાં જે અનાદિ અપર્યવસિતવન્ધ છે તે જીવના આઠ મધ્યપ્રદેશોનો હોય છે, તે આઠ પ્રદેશોમાં પણ ત્રણ ત્રણ પ્રદેશોનો જે વન્ધ તે અનાદિ અપર્યવસિત વન્ધ છે. બાકીના સર્વપ્રદેશોનો સાદિ સપર્યવસિત (સાન્ત) વન્ધ છે. તેમાં સાદિ અપર્યવસિત વન્ધ સિદ્ધના જીવ પ્રદેશોનો છે. સાદિક સપર્યવસિત વન્ધ ચાર પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે— ૧ આલાવણવન્ધ, ૨ આલીનવન્ધ, ૩ શરીરવન્ધ અને ૪ શરીરપર્યોગવન્ધ.

૬. * ૧ ક્ષિપ્તતાદિ ગુણદ્વારા દ્વિપ્રદેશિક, ચાવદ્ અનન્તપ્રદેશિક પરમાણુઓનો વન્ધ થાય તે વન્ધનપ્રત્યયિક. ૨ ભાજન એટલે આધાર, તે નિમિત્તે જે વન્ધ થાય તે ભાજનપ્રત્યયિક. ૩ પરિણામ એટલે રૂપાન્નર, તે નિમિત્તે જે વન્ધ થાય તે પરિણામપ્રત્યયિક.

૮. † એક ભાજનમાં રહેલી જૂની મદિરા ઘટ્ટ થાય છે અને જૂના ગોળ તથા જૂના ચોખાનો પિંડ થાય છે તે ભાજનપ્રત્યયિક વન્ધ જાણવો—ટીકા.

૯. ‡ ભગ. દ્વિ. સં. શ. ૩ ઉ. ૭ પૃ. ૧૧૨ સ્. ૨.

૧૦. †† પર્યોગવન્ધ એટલે જીવના વ્યાપાર વડે જીવ પ્રદેશોનો અને ઔદારિકાદિ શરીરના પુદ્ગલોનો જે વન્ધ થાય તે. તેના ચાર ભાગા થાય છે. તેમાં અહીં ઋજા ભાગને છોડીને ત્રણ ભાગા લાગુ પડે છે. તેમાં અસંસ્થાતપ્રદેશિક જીવના જે મધ્ય પ્રદેશો છે તેનો અનાદિ અપર્યવસિત વન્ધ છે. કારણ કે જ્યારે જીવ કેવલિ સમુદ્ઘાત વચ્ચે સમગ્ર લોકને વ્યાપીને રહે છે ત્યારે પણ તે તેવીજ સ્થિતિમાં રહે છે, પણ ઋજા જીવ પ્રદેશોમાં વિપરિવર્તન થતું હોવાથી તેઓનો અનાદિ અનન્ત વન્ધ નથી. તેની સ્થાપના:—[...]. આ ચાર પ્રદેશોની ઉપર ઋજા ચાર પ્રદેશો આવેલા છે. એવી રીતે સમુદાયથી આઠ પ્રદેશોનો વન્ધ કહેલો છે. તે આઠ પ્રદેશોમાં પણ કોઈ પણ એક પ્રદેશનો તેની પાસે રહેલા બે પ્રદેશો અને ઉપર કે નીચે રહેલા એક પ્રદેશ સાથે એમ ત્રણ ત્રણ પ્રદેશ સાથે અનાદિ અપર્યવસિત વન્ધ છે—ટીકા.

§ ૧ રજુ ઘગેરેથી તૃણાદિનો વન્ધ તે આલાવણ વન્ધ. ૨ એક પદાર્થનો ઋજા પદાર્થની સાથે લાલ ઘગેરેથી વન્ધ થવો તે આલીનવન્ધ. ૩ સમુદ્ઘાત કરવામાં વિસ્તારિત અને સંકોચિત જીવપ્રદેશોના સંબન્ધથી તૈજસાદિ શરીર પ્રદેશોનો સંબન્ધ તે શરીરવન્ધ. અથવા સમુદ્ઘાત કરવામાં 'સંકુચિત થયેલા આત્મપ્રદેશોનો સંબન્ધ તે શરીરવન્ધ' એમ અન્ય આચાર્ય માને છે. ૪ ઔદારિકાદિ શરીરના વ્યાપારથી શરીરના પુદ્ગલોને પ્રહણ કરવારૂપ વન્ધ તે શરીરપર્યોગવન્ધ—ટીકા.

११. [प्र०] से किं तं आलावणबंधे ? [उ०] आलावणबंधे जं णं तणभाराण वा, कट्टभाराण वा, पत्तभाराण वा, बल्लभाराण वा, वेल्लभाराण वा वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वह्नि-कुरत्त-दम्भमादीपहिं आलावणबंधे समुप्यज्जर, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं आलावणबंधे ।

१२. [प्र०] से किं तं अह्लियावणबंधे ? [उ०] अह्लियावणबंधे चउद्विहे पन्नत्ते, तं जहा-लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चयबंधे, साहणणाबंधे ।

१३. [प्र०] से किं तं लेसणाबंधे ? [उ०] लेसणाबंधे जं णं कुट्टाणं, कोट्टिमाणं, खंभाणं, पासायाणं, कट्टाणं, चम्माणं, घट्टाणं, पडाणं, कडाणं कुरा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमार्हिपहिं लेसणपहिं बंधे समुप्यज्जर, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं लेसणाबंधे ।

१४. [प्र०] से किं तं उच्चयबंधे ? [उ०] उच्चयबंधे जं णं तणरासीण वा, कट्टरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसर-सीण वा, भुसरसीण वा, गोमयरासीण वा, अघगरसीण वा उच्चत्तेणं बंधे समुप्यज्जर, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं उच्चयबंधे ।

१५. [प्र०] से किं तं समुच्चयबंधे ? [उ०] समुच्चयबंधे जं णं अगड-तडाग-नदी-द्रह-वापी-पुक्खरिणी-दीहियाणं गुंजा-लियाणं, सराणं, सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं, बिलपंतियाणं, देवकुल-संभ-प्यव-थूम-खाइयाणं, परिहाणं, पागार-ट्टालग-चरिय-वार-गोपुर-तोरणाणं, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाणं, सिंघाडग-तिय-चउद्व-चच्चर-चउमुह-महापहमादीणं, कुहा-चिक्खल्ल-सि-लेस-समुच्चयणं बंधे समुप्यज्जर, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं समुच्चयबंधे ।

१६. [प्र०] से किं तं साहणणाबंधे ? [उ०] साहणणाबंधे उद्विहे पन्नत्ते, तं जहा-देससाहणणाबंधे य सच्चसाहण-णाबंधे य ।

११. [प्र०] आलापन बन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] आलापन बन्ध घासना भाराओनो, लाकडाना भाराओनो, पांदडाना भाराओनो, पलालना भाराओनो अने वेलाणा भाराओनो नेतरनी वेल, छाल, वाधरी, दोरडा, वेल, कुश अने डाम आदिथी आलापनबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी संख्यात काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे आलापनबन्ध कह्यो.

आलापनबन्ध.

१२. [प्र०] आलीनबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] आलीनबन्ध चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ श्लेषणाबन्ध, २ उच्चयबन्ध, ३ समुच्चयबन्ध अने ४ संहननबन्ध.

आलीनबन्ध.

१३. [प्र०] श्लेषणाबन्ध केवा प्रकारनो होय ? [उ०] शिखरोनो, कुट्टिमोनो (फरस बंधीनो) स्तंभोनो, प्रासादोनो, लाकडाओनो, चामडानो, घडाओनो, कपडाओनो अने मादडीओनो चूनावडे, कचरावडे, श्लेष-वज्रलेप-वडे, लाखवडे, मीण-इत्यादि श्लेषण द्रव्योवडे श्लेषणाबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्यातकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे श्लेषणाबन्ध कह्यो.

श्लेषणाबन्ध.

१४. [प्र०] उच्चयबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] तृणराशिनो, काष्ठराशिनो, पत्रराशिनो, तुषराशिनो, भुसानी राशिनो, छाणना ढगलानो अने कचराना ढगलानो उच्चपणे जे बन्ध थाय छे ते उच्चयबन्ध छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे उच्चयबन्ध कह्यो.

उच्चयबन्ध.

१५. [प्र०] समुच्चयबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] कुवा, तलाव, नदी, द्रह, वापी, पुष्करिणी, दीर्घिका, गुंजालिका, सरोवरो, सरोवरनी श्रेणि, मोटा सरोवरनी पंक्ति, बिलनी श्रेणि, देवकुल, सभा, परव, स्तूप, खाइओ, परिघो, किल्लाओ, कांगराओ, चरिको, द्वार, गोपुर, तोरण, प्रासाद, घर, शरण, लेण (गृहविशेष) हाटो, शृंगाटकाकारमार्ग, त्रिकमार्ग, चतुष्कमार्ग, चत्वरमार्ग, चतुर्मुखमार्ग अने राजमार्गादिनो चुनाद्वारा, कचराद्वारा अने श्लेषना (वज्रलेपना) समुच्चय वडे जे बंध थाय छे ते समुच्चयबन्ध. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे समुच्चयबन्ध कह्यो.

समुच्चयबन्ध.

१६. [प्र०] संहननबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] संहननबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे—देश संहनन बन्ध अने सर्वसंहनन बन्ध.

संहननबन्ध.

१ सभा-पय-थू-ग, सभा-पय-थू-ड ।

१६. * १ कोइ वस्तुना देशबी-अंधापी कोइ वस्तुना देशनो-अंशनो शकटादिना अवयवोनो पेटे संहनन एटले परपर संबन्धरूप बन्ध ते देश-संहननबन्ध. २ क्षीरनीरादिनी पेटे सर्वात्मसंबन्धरूप बंध ते सर्वसंहननबंध—टीका.

१७. से किं तं देससाहणणाबंधे ? [उ०] देससाहणणाबंधे अं णं सगड-रह-जाण-जुग-गिह्लि-यिह्लि-सीय-सर्वमाणी-लोही-लोहकडाह-कहुच्छय-आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणमारिणं देससाहणणाबंधे समुप्यज्जइ, जहणेणं अंतोमुहुत्तं उल्लोखेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं देससाहणणाबंधे ।

१८. [प्र०] से किं तं सव्वसाहणणाबंधे ? [उ०] सव्वसाहणणाबंधे से णं खीरोवगमारिणं । सेत्तं सव्वसाहणणाबंधे, सेत्तं साहणणाबंधे, सेत्तं अह्लियावणबंधे ।

१९. [प्र०] से किं तं सरीरबंधे ? [उ०] सरीरबंधे उविहे पण्णसे, तं जहा-पुव्वपओगपच्चइए य पडुप्यन्नपओगपच्चइए य ।

२०. [प्र०] से किं तं पुव्वपओगपच्चइए ? [उ०] पुव्वपओगपच्चइए अं णं नेरय्याणं संसारवत्त्याणं सव्वजीवाणं तत्थ तत्थ तेसु तेसु कारणेसु समोहणमाणणं जीवप्यपसाणं बंधे समुप्यज्जइ । सेत्तं पुव्वपयोगपच्चइए ।

२१. [प्र०] से किं तं पडुप्यन्नपओगपच्चइए ? [उ०] पडुप्यन्नपओगपच्चइए अं णं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवल्लि-समुग्घाणं समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ पडिनिर्यत्तमाणस्स अंतरा मंथे वट्टमाणस्स तेयाकम्माणं बंधे समुप्यज्जइ, किं कारणं ? ताहे से पपसा पगत्तीगया य भवंति । सेत्तं पडुप्यन्नपओगपच्चइए । सेत्तं सरीरबंधे ।

२२. [प्र०] से किं तं सरीरप्यओगबंधे ? [उ०] सरीरप्यओगबंधे पंचविहे पन्नसे, तं जहा-ओरालियसरीरप्यओगबंधे, वेउच्चियसरीरप्यओगबंधे, आहारगसरीरप्यओगबंधे, तेयासरीरप्यओगबंधे, कम्मासरीरप्यओगबंधे ।

२३. [प्र०] ओरालियसरीरप्यओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णसे, तं जहा-पंचिन्द्रियओरालियसरीरप्यओगबंधे, वेइन्द्रियओरालियसरीरप्यओगबंधे, जौव पंचिन्द्रियओरालियसरीरप्यओगबंधे ।

देशसंहननबन्ध.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! देशसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] हे गौतम ! गाडा, रथ, यान (नाना गाडा) *युग्यवाहन गिह्लि (हाथीना अंबाडी), यिह्लि (पलाण), शिविका, अने स्यन्दमानी (पुरुषप्रमाण वाहनविशेष), तेमज लोटी, लोटाना कडाया, कडछा, आसन, शयन, स्तंभो, भंड (माटीना वासण) पात्र अने नानाप्रकारना उपकरण-इत्यादि पदार्थोनो जे संबन्ध थाय छे ते देशसंहननबन्ध छे. ते जयन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उन्कृष्टथी संख्येय काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे देशसंहनन बन्ध कह्यो.

सर्वसंहननबन्ध.

१८. [प्र०] सर्वसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! दूध अने पाणी इत्यादिनो सर्वसंहनन बन्ध कह्यो छे. ए प्रमाणे सर्वसंहनन बन्ध कह्यो. ए रीते आलीनबंध पण कह्यो.

शरीरबन्ध.

१९. [प्र०] शरीरबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] शरीरबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक अने २ प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक.

पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक-बन्ध.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक शरीरबन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] ते ते स्थले ते ते कारणोने लीचे समुद्घात करता नैरयिको अने संसारावस्थावाळा सर्व जीवोना जीवप्रदेशोनो जे बंध थाय छे ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध छे. ए प्रमाणे पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कह्यो.

प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध.

२१. [प्र०] प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] केवल्लिसमुद्घात वडे समुद्घात करता अने ते समुद्घातार्थी पाछा फरता, वच्चे मंथानमां वर्तता केवल्लिज्जाना अनगारना तैजस अने कार्मण शरीरनो जे बन्ध थाय ते प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कहेयाय छे. तैजस अने कार्मण शरीरनो बन्ध शार्थी थाय छे ? ते वगते ते आत्मप्रदेशो संघातने पामे छे. [अने ते प्रदेशोने अनुसरीने तैजस अने कार्मणनो पण बन्ध थाय छे.] ए प्रमाणे प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कह्यो, ए प्रमाणे शरीरबन्ध कह्यो.

शरीरप्रयोगबन्ध.

२२. [प्र०] शरीरप्रयोग बन्ध केवा प्रकारे कह्यो छे ? [उ०] शरीरप्रयोग बन्ध पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, २ वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध, ३ आहारकशरीरप्रयोगबन्ध, ४ तैजसशरीरप्रयोगबन्ध अने ५ कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, द्वीन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

१ -माणिवा-ओ-ग, ऊ । २ -रथाणं क । ३ -विचतेमा- छ । ४ भवंतिस्स ग । ५ तेइन्द्रिय०, चतुरिन्द्रिय०, पंचिन्द्रिय० ओरालिय० क ।

१७. * युग्य एटले गोल्लदेशमां प्रसिद्ध बे हाय प्रमाण वेदिकायुक्त अंपान—टीका.

१९. † १ पूर्वप्रयुक्त प्रयोग-वेदना कषायादि समुद्घातरूप जीवनो व्यापार, ते निमित्ते भयेलो जीवप्रदेशोनो के तदाश्रित तैजस-कार्मण शरीरनो बन्ध ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध. २ वर्तमान काले केवली समुद्घातरूप जीवव्यापारबी भयेलो तैजस-कार्मणनो शरीरनो बन्ध छे प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध.

२४. [प्र०] एगिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे, एवं एएणं अभिलावेणं भेवो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियवो, जाव पञ्जागम्भवकंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे य, अप्पञ्जागम्भवकंतियमणुस्स— जाव बंधे य ।

२५. [प्र०] ओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदपणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय—सजोग—सहइयाए पमादपबया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्यभोगनामकम्मस्स उदपणं ओरालियसरीरप्यभोगबंधे ।

२६. [प्र०] एगिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदपणं ? [उ०] एवं चेव, पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे एवं चेव, एवं जाव वणस्सइहाइया, एवं वेहंविद्या, एवं तेहंविद्या, एवं चउरिंदिया ।

२७. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदपणं ? [उ०] एवं चेव ।

२८. [प्र०] मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदपणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय—सजोग—सहइयाए पमादपबया जाव आउयं च पडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्यभोगनामकम्मस्स उदपणं ।

२९. [प्र०] ओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ।

३०. [प्र०] एगिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? [उ०] एवं चेव, एवं पुढविकाइया, एवं जाव— [प्र०] मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ।

२४. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटल प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध; ए प्रमाणे ए अभिलापथी जेम *‘अवगाहनासंस्थान’ पदमा औदारिक शरीरनो भेद कह्यो छे तेम अहीं कहेवो; यावत् पर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध अने अपर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवनी सवीर्यता, सयोगता अने सदृश्यताथी, प्रमादहेतुथी, कर्म, योग, (काययोग) भव अने आयुष्यने आश्रयी औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध ए प्रमाणे जाणवो. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, तथा बेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध जाणवो.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] पूर्वे प्रमाणे जाणवुं.

पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध. मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सदृश्यताथी, तेम प्रमादहेतुथी, यावत् आयुष्यने आश्रयी मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यपंचेन्द्रिय-औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध देश के सर्वबन्ध छे ?

३०. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्— [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध. मनुष्य औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

१ —नामाकम्म— क, —नामाए कम्म— क्क । २ —प्ययोग एवं क, प्ययोगबंधे वि एवं क्क । ३ पमाद—जाव क । ४ नामाए क्क ।

२४. * प्रज्ञा० पद २१. प. ४०८-१. पं. १.

२५. † वीर्यान्तराय कर्मना क्षयोपशम वडे उत्पन्न थयेली शक्ति ते सवीर्यता, मनोयोगादिनो व्यापार ते सयोगता, तथाविध पुद्गलादि द्रव्य ते सदृश्यता, प्रमाद, एकेन्द्रियजातिनाम बगैरे कर्म, योग-काययोगादि, तिर्यकादि भव अने तिर्यकादिकना भागुबन्ना लीये उदयप्राप्त औदारिकशरीरप्रयोगबन्धकर्मथी औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.—टीका.

२६. ‡ जेम वृतादिकथी भरेली अने तपी गयेली कडाईनां नांखेलो अपूप (पुत्रो) प्रथम समये वृतादिकने केवळ प्रहण करे, अने बाकीना समये प्रहण करे अने छोडे, तेम भा जीव उयारे पूर्वना शरीरने छोडीने पीजुं शरीर प्रहण करे छ्यारे प्रथम समये उत्पत्तिस्थानके रहेला शरीरयोग्य पुद्गलाने केवळ प्रहण करे छे, माटे आ सर्वबंध छे; छ्यार पछी द्वितीयादि समये (शरीरप्रायोग्य पुद्गलाने) प्रहण करे छे अने छोडे छे माटे ते देशबन्ध छे, तेथी औदारिकशरीरनो देशबंध पण होय छे अने सर्वबन्ध पण होय छे.—टीका.

૩૧. [પ્ર૦] ઓરાલિયસરીરપ્પભોગબંધે ણં મંતે ! કાલઓ કેવચ્ચિરં હોઈ ? [૩૦] ગોયમા ! સહ્યંધે ઇકં સમયં, દેસ-
બંધે જહ્ણેણં ઇકં સમયં, ઉક્કોસેણં તિન્નિ પલિઓવમાઈં સમયઁણાઈં ।

૩૨. ઇગિંદિયઓરાલિયસરીરપ્પભોગયંધે ણં મંતે ! કાલઓ કેવચ્ચિરં હોઈ ? [૩૦] ગોયમા ! સહ્યંધે ઇકં સમયં, દેસ-
બંધે જહ્ણેણં ઇકં સમયં, ઉક્કોસેણં ઘાવીસં ઘાસસહસ્સાઈં સમયઁણાઈં ।

૩૩. [પ્ર૦] પુઢવિક્કાઈયપ્પિગિંદિયપુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહ્યંધે ઇકં સમયં, દેસબંધે જહ્ણેણં યુઢ્ઢાગમવગ્ગહણં તિસમ-
યઁણં, ઉક્કોસેણં ઘાવીસં ઘાસસહસ્સાઈં સમયૂણાઈં; ઇવં સહ્ણેસિં સહ્યંધો ઇકં સમયં, દેસબંધો ઝેસિં નત્થિ વેઢ્ઢિયસરીરં
તેસિં જહ્ણેણં યુઢ્ઢાગમવગ્ગહણં તિસમયૂણં, ઉક્કોસેણં ઝા ઝેસસ ઢિતી સા સમયૂણા કાયઘા । ઝેસિં પુણ અત્થિ વેઢ્ઢિયસરીરં
તેસિં દેસબંધો જહ્ણેણં ઇકં સમયં, ઉક્કોસેણં ઝા ઝેસસ ઢિતી સા સમયૂણા કાયઘા, ઝાઘ મણુસ્સાણં દેસબંધે જહ્ણેણં ઇકં
સમયં, ઉક્કોસેણં તિન્નિ પલિઓવમાઈં સમયૂણાઈં ।

૩૪. [પ્ર૦] ઓરાલિયસરીરબંધંતરં ણં મંતે ! કાલઓ કેવચ્ચિરં હોઈ ? [૩૦] ગોયમા ! સહ્યંધન્તરં જહ્ણેણં યુઢ્ઢાગમવગ્ગહણં
તિસમયઁણં, ઉક્કોસેણં તેસીસં સાગરોવમાઈં પુઢ્ઢકોઢિસમયાહિયાઈં; દેસબંધંતરં જહ્ણેણં ઇકં સમયં ઉક્કોસેણં તેસીસં
સાગરોવમાઈં તિસમયાહિયાઈં ।

૩૫. [પ્ર૦] ઇગિંદિયઓરાલિયપુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! સહ્યંધંતરં જહ્ણેણં યુઢ્ઢાગમવગ્ગહણં તિસમયૂણં, ઉક્કોસેણં
ઘાવીસં ઘાસસહસ્સાઈં સમયાહિયાઈં; દેસબંધંતરં જહ્ણેણં ઇકં સમયં, ઉક્કોસેણં અંતોમુઢ્ઢતં ।

ઔદારિક શરીર-
પ્રયોગવન્ધનો કાલ.

૩૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ઔદારિકશરીરપ્રયોગવન્ધ કાલથી ક્યાં સુધી હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! *સર્વવન્ધ ઇક સમય, અને
દેશવન્ધ જઘન્યથી ઇક સમય, અને ઉત્ક્રઢ ઇક સમય ન્યૂન ત્રણ પલ્યોપમ સુધી હોય છે.

ઇકેન્દ્રિય.

૩૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ઇકેન્દ્રિયઔદારિકશરીરપ્રયોગવન્ધ કાલથી ક્યાં સુધી હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વવન્ધ ઇકસમય,
અને દેશવન્ધ જઘન્યથી ઇક સમય, અને ઉત્ક્રઢ ઇક સમય ન્યૂન ઘાવીશ હજાર વર્ષ સુધી હોય છે.

પૃથિવીકાયિક.

૩૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! પૃથિવીકાયિકઇકેન્દ્રિયઔદારિકશરીરપ્રયોગવન્ધ સંબંધે પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વવન્ધ ઇક
સમય, અને દેશવન્ધ જઘન્યથી ત્રણ સમય ન્યૂન ક્ષુલ્લક મવ પર્યન્ત, અને ઉત્ક્રઢ ઇક સમય ન્યૂન ઘાવીશ હજાર વર્ષ સુધી હોય છે. ઇ
પ્રમાણે સર્વજીવોનો સર્વવન્ધ ઇક સમય છે, અને દેશવન્ધ ઝેઓને વૈક્રિયશરીર નથી તેઓને જઘન્યથી ત્રણ સમય ન્યૂન ક્ષુલ્લક મવ પર્યન્ત
હોય છે, અને ઉત્ક્રઢથી ઝેટલી ઝેનાં આયુષ્યસ્થિતિ છે, તેથી ઇક સમય ન્યૂન કરવો. ઝેઓને વૈક્રિયશરીર છે તેઓને દેશવન્ધ જઘન્યથી
ઇક સમય, અને ઉત્ક્રઢથી ઝેટલું ઝેનું આયુષ્ય છે તેટલામાંથી ઇક સમય ન્યૂન ઝાણવો, ઇ પ્રમાણે યાવઢ મનુષ્યોનો દેશવન્ધ જઘન્યથી
ઇક સમય, અને ઉત્ક્રઢથી ઇક સમય ન્યૂન ત્રણ પલ્યોપમ સુધી ઝાણવો.

ઔદારિક શરીર-
વન્ધના અન્તરનો
કાલ.

૩૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ઔદારિક શરીરના વન્ધનું અન્તર કાલથી ક્યાં સુધી હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વવન્ધનું અન્તર
જઘન્યથી ત્રણ સમય ન્યૂન ક્ષુલ્લક મવપ્રહણ પર્યન્ત છે, અને ઉત્ક્રઢથી સમયાધિક પૂર્વકોટી અને તેત્રીશ સાગરોપમ છે. અને દેશવન્ધનું
અન્તર જઘન્યથી ઇક સમય, અને ઉત્ક્રઢથી ત્રણ સમય અધિક તેત્રીશ સાગરોપમ છે.

ઇકેન્દ્રિય.

૩૫. [પ્ર૦] ઇકેન્દ્રિયઔદારિકશરીરવન્ધસંબંધે પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! તેઓના સર્વવન્ધનું અન્તર જઘન્યથી ત્રણ સમય
ન્યૂન ક્ષુલ્લક મવ પર્યન્ત, અને ઉત્ક્રઢથી સમયાધિક ઘાવીશ હજાર વર્ષ સુધી હોય છે. દેશવન્ધનું અન્તર જઘન્યથી ઇક સમય, અને
ઉત્ક્રઢથી અંતર્મૂર્ત સુધીનું છે.

૧ સમયૂણાઈં ક । ૨ ઝેસસ ઉક્કોસિયા ઢિ-ક-ઘ ઘિનાઁન્યત્ર । ૩ -બંધંતરે ણં ક ઘિનાઁન્યત્ર । ૪ તિ ઉક્કો-ક । ૫ સમઁણં ક ।

૩૧. * પુલાના દૃષ્ટાન્તથી સર્વવન્ધ ઇકસમય છે. અને ઝ્યારે વાયુકાયિક કે મનુષ્યાદિ વૈક્રિય શરીર કરીને અને તેને છેડીને ઔદારિક શરીરનો
ઇક સમય સર્વવન્ધ કરે અને પુનઃ તેનો દેશવન્ધ કરી ઇક સમય પછી તુરતજ મરણ પામે ત્યારે જઘન્યથી ઇક સમય દેશવન્ધ હોય છે. ઔદારિકશરીર-
ઘાલાની ત્રણ પલ્યોપમ ઉત્ક્રઢ સ્થિતિ છે, તેમાં પ્રથમ સમયે તેઓ સર્વવન્ધક છે, અને પછી ઇક સમય ન્યૂન ત્રણ પલ્યોપમ સુધી દેશવન્ધક છે.-ટીકા.

૩૩. † ઝે પૃથિવીકાયિક જીવ ત્રણ સમયની વિપ્રહગતિ ઇત્પન્ન થયો છે તે ત્રીઝે સમયે સર્વવન્ધક છે, અને ઘાકીના સમયે ક્ષુલ્લકમવપ્રમાણ
પોતાના જઘન્ય આયુષ્યપર્યન્ત દેશવન્ધક હોય છે. માટે 'તે ત્રણસમયન્યૂન ક્ષુલ્લકમવપર્યન્ત જઘન્યથી દેશવન્ધક હોય' ઇમ કહ્યું છે.-ટીકા.

૩૪. ‡ કોઈ જીવ મનુષ્યાદિગતિમાં અવિપ્રહગતિ ઇ આવી અને ત્યાં પ્રથમ સમયે સર્વવન્ધક થઈને પૂર્વકોટિ વર્ષ પર્યન્ત ત્યાં રહી તેત્રીશ સાગરોપમની
સ્થિતિઘાલો નારક કે સર્વાર્થમિઢ્ઢ દેઘ થાય, અને પછી તે ત્રણ સમયની વિપ્રહગતિ ઇ ઔદારિકશરીરધારી થાય, ત્યાં વિપ્રહગતિના ઘે સમય અનાહારક હોય
અને ત્રીઝે સમયે તે ઔદારિક શરીરનો સર્વવન્ધક થાય, હવે તેમાં વિપ્રહગતિના ઘે સમય અનાહારક છે તેમાંથી ઇક સમય પૂર્વકોટીના સર્વવન્ધસ્થાને પ્રક્ષિત
કરી ઇ તેથી પૂર્વકોટી પૂર્ણ થઈ અને ઇક સમય અધિક થયો. ઇ રીતે સર્વવન્ધનું ઉત્ક્રઢ અન્તર સમયાધિક પૂર્વકોટિ અને તેત્રીશ સાગરોપમ થાય છે.-ટીકા.

३६. [प्र०] पुढविकाइयपंगिदियपुच्छा । [उ०] सखबंधंतरं जहेव पंगिदियस्स तहेव माणियधं, देसबंधंतरं जहणेणं एकं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि समया । जहा पुढविकाइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउकाइयवजाणं, नधरं सखबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयाहिया कायद्धा । वाउकाइयाणं सखबंधंतरं जहणेणं खुद्दागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसबंधंतरं जहणेणं एकं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

३७. [प्र०] पंगिदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा । [उ०] सखबंधंतरं जहणेणं खुद्दागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुक्कोडी समयाहिया । देसबंधंतरं जहा पंगिदियाणं तथा पंगिदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण वि निरवसेसं माणियधं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

३८. [प्र०] जीवस्स णं मंते ! पंगिदियस्से, नोपंगिदियस्से, पुणरवि पंगिदियस्से पंगिदियओरालियसरीरप्यओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सखबंधंतरं जहणेणं दो खुद्दाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरो-वमसहस्साइं संखेज्जासमम्महियाइं । देसबंधंतरं जहणेणं खुद्दागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखे-ज्जासमम्महियाइं ।

३९. [प्र०] जीवस्स णं मंते ! पुढविकाइयस्से, नोपुढविकाइयस्से, पुणरवि पुढविकाइयस्से पुढविकाइयपंगिदियओरालियसरी-रप्यओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सखबंधंतरं जहणेणं दो खुद्दाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं एवं चेव, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता उस्सप्पिणी—ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियद्दा, ते णं

३६. [प्र०] पृथिवीकायिक एकेन्द्रियना औदारिकशरीरबन्धसंबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओना सर्वबन्धनुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कब्धुं तेम कहेवुं; अने देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी त्रण समय सुधीनुं होय छे. जेम पृथिवीकायिकने कब्धुं तेम वायुकायिक सिधाय यावत् चउरिन्द्रिय सुधीना जीवोने जाणवुं, पण उत्कृष्टथी सर्वबन्धनुं अन्तर जेटली जेनी आयुष्य स्थिति होय तेटली एक समय अधिक करवी. (अर्थात् सर्वबन्धनुं अन्तर समयाधिक आयुष्यनी स्थिति प्रमाणे जाणवुं.) वायुकायिकना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी समयाधिक त्रण हजार वर्ष सुधी जाणवुं. तेओना देशबन्धनुं अन्तर जघ-न्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त पर्यन्त जाणवुं.

३७. [प्र०] पंचेन्द्रियतिर्यचना औदारिक शरीरबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न [उ०] हे गौतम ! तेओना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भवपर्यन्त, अने उत्कृष्टथी समयाधिक पूर्व कोटि होय छे. देशबन्धनुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कब्धुं छे ते प्रकारे सर्व पंचेन्द्रिय तिर्यचोने जाणवुं. ए प्रमाणे मनुष्योने पण समग्र जाणवुं, यावत् उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त छे.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ जीव एकेन्द्रियपणामां होय, अने पछी ते एकेन्द्रिय सिधाय बीजी कोइ जातिमां जाय, अने पुनः एकेन्द्रियपणामां आवे तो एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कालथी केटलुं होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी सर्वबन्धनुं अन्तर *त्रण समय न्यून बे क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी संख्याता वर्ष अधिक बे हजार सागरोपम छे. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय अधिक क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी संख्यात वर्ष अधिक बे हजार सागरोपम छे.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ जीव पृथिवीकायपणामां होय, त्यांथी पृथिवीकाय सिधायना बीजा जीवोमां उत्पन्न थाय अने पुनः ते पृथिवीकायमां आवे तो पृथिवीकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर केटलुं होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी ए रीते त्रण समय न्यून बे क्षुल्लक भव पर्यन्त छे, अने उत्कृष्टथी कालनी अपेक्षाए अनन्तकाल—अनन्त

पंचेन्द्रिय तिर्यचना औदारिक शरीर-बन्धनुं अन्तर.

एकेन्द्रियऔदारिक शरीरना प्रयोग बन्धनुं अन्तर.

पृथिवीकायिक-औदारिक शरीर-बन्धनुं अन्तर.

१ खुद्दाग—कु । २ एवं चेव क । ३ ओसप्पिणी ओ का—क ।

३८. * कोइ एकेन्द्रिय जीव त्रण समयनी विग्रहगतिवडे उत्पन्न थाय, त्यां बे समय अनाहारक रहे अने त्रीजे समये सर्वबन्ध करे, पछी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव प्रमाण आयुष्य पूर्ण करी एकेन्द्रिय सिधाय बीजी जातिमां उत्पन्न थाय, त्यां पण क्षुल्लक भवनी स्थिति पूर्ण करी पुनः अविग्रह गति वडे एकेन्द्रिय जातिमां उपजे अने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, त्यारे त्रण समय न्यून बे क्षुल्लक भव सर्वबन्धनुं जघन्य अन्तर होय. कोइ पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव ऋजुगतिथी उत्पन्न थाय अने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय त्यां बावीश हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मरीने प्रसक्तायिकमां उत्पन्न थाय, त्यां पण संख्यातवर्षाधिक बे हजार सागरोपमनी उत्कृष्ट कायस्थितिने पूरी करी पुनः एकेन्द्रियपणे उत्पन्न यईने सर्वबन्धक थाय त्यारे उपर कहेलुं सर्वबन्धनुं उत्कृष्ट अन्तर थाय. अहीं सर्वबन्धना समय हीन एकेन्द्रियनी उत्कृष्ट भवस्थितिने प्रयकायनी कायस्थितिमां प्रक्षेप करीए ते पण संख्याता वर्ष ज थाय, केमके संख्याताना संख्यात मेद छे.—टीका.

३९. † कालनी अपेक्षाए अनन्त काल छे—एटले अनन्त कालना समयोने उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयोथी अपहारता अनन्त उत्सर्पिणी अव-सर्पिणी थाय. क्षेत्रनी अपेक्षाए अनन्त लोक—एटले अनन्तकालना समयोने लोकाकाशना प्रदेशो वडे अपहारता अनन्त लोक थाय. अहीं वनस्पतिनी काय-स्थिति अनन्तकालनी होवाथी ते अपेक्षाए सर्वबन्धनु उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल छे.—टीका.

પોગ્ગલપરિચ્છા આવલિયાપ અસંખેજ્જાહાગો । દેસબંધંતરં જહ્નેણં ચુદ્ધાગં ભવગ્ગહણં સમયાહિયં, ઉક્કોસેણં અણંતં કાલં જાવ આવલિયાપ અસંખેજ્જાહાગો । જહા પુઠ્ઠવિક્કાહયાણં એવં વણસ્સહકાહયવજ્જાણં જાવ મણુસ્સાણં । વણસ્સહકાહયાણં દોષિ ચુદ્ધાગં એવં ચેવ, ઉક્કોસેણં અસંખેજ્જાં કાલં-અસંખેજ્જાઓ ઉસપ્પિણી-ઓસપ્પિણીઓ કાલઓ, કોસઓ અસંખેજ્જા લોગા, એવં દેસબંધંતરં મિ ઉક્કોસેણં પુઠ્ઠવિક્કાલો ।

૪૦. [પ્ર૦] એપ્પસિ ણં મંતે ! જીવાણં ઓરાલિયસરીરસ્સ દેસબંધગાણં, સહ્બંધગાણં, અબંધગાણં ય કયરે કયરે- જાવ વિસેસાહિયા વા ? [૩૦] ગોયમા ! સહ્થોવા જીવા ઓરાલિયસરીરસ્સ સહ્બંધગા, અબંધગા વિસેસાહિયા, દેસબંધગા અસંખેજ્જાગુણા ।

૪૧. [પ્ર૦] વેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ણં મંતે ! કતિવિદ્દે પણ્ણે ? [૩૦] ગોયમા ! દુવિદ્દે પણ્ણે, તં જહા-પર્ગિદિયવે-ઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ય પંચેદિયવેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ય ।

૪૨. [પ્ર૦] જહ પર્ગિદિયવેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે કિં વાઉક્કાહયપર્ગિદિયસરીરપ્પઓગબંધે ય, અવાઉક્કાહયપર્ગિદિયસરીરપ્પઓગબંધે ? [૩૦] એવં એણં અભિલાલેણં જહા ઓગાહણસંઠાણે વેઉદ્ધિયસરીરમેવો તહા માણિયણ્ણો, જાવ પજ્જત્તાસહ્હટ્ઠસિદ્ધ-અણુસરોચવાહયકપ્પાતીયવેમાણિયવેવપંચિદિયવેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ય, અપજ્જત્તાસહ્હટ્ઠસિદ્ધ- જાવ પઓગબંધે ય ।

૪૩. [પ્ર૦] વેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ણં મંતે ! કસ્સ કમ્મસ્સ ઉદ્દણં ? [૩૦] ગોયમા ! વીરિય-સજોગ-સહ્હયાપ જાવ આઉયં વા લહિં વા પહુચ્ચ વેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગનામાપ કમ્મસ્સ ઉદ્દણં વેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ।

૪૪. [પ્ર૦] વાઉક્કાહયપર્ગિદિયવેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગપુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! વીરિય-સજોગ-સહ્હયાપ એવં ચેવ જાવ લહિં પહુચ્ચ વાઉક્કાહયપર્ગિદિયવેઉદ્ધિય- જાવ બંધે ।

૪૫. [પ્ર૦] રયખપ્પંમાપુઠ્ઠવિનેરહયપંચિદિયવેઉદ્ધિયસરીરપ્પઓગબંધે ણં મંતે ! કસ્સ કમ્મસ્સ ઉદ્દણં ? [૩૦] ગોયમા ! વીરિય-સજોગ-સહ્હયાપ જાવ આઉયં વા પહુચ્ચ રયણપ્પમાપુઠ્ઠવિ- જાવ બંધે, એવં જાવ અહે સત્તમાપ ।

ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી છે, ક્ષેત્રથી અનન્તલોક-અસંલ્ય પુદ્ગલપરાવર્ત છે, અને તે પુદ્ગલપરાવર્ત આવલિકાના અસંલ્યાતમા ભાગના (સમય) તુલ્ય છે. તથા દેશવન્ધનું અન્તર જઘન્યથી સમયાધિક ક્ષુલ્લક ભવ, અને ઉત્કૃષ્ઠથી અનન્ત કાલ, યાવત્ આવલિકાના અસંલ્યાતમા ભાગના સમય મુલ્ય અસંલ્ય પુદ્ગલપરાવર્ત છે. જેમ પૃથ્વીકાયિકોને કહ્યું તેમ વનસ્પતિકાયિક સિવાય વાકીના યાવદ્ મનુષ્ય સુધીના જીવો માટે જાણવું. વનસ્પતિકાયિકોને સર્વવન્ધનું અન્તર જઘન્યથી કારત્તી અપેક્ષા એ પ્રમાણે [ત્રણ સમય ન્યૂન] વે ક્ષુલ્લક ભવ, અને ઉત્કૃષ્ઠથી અસંલ્યકાલ-અસંલ્ય ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી સુધી છે, ક્ષેત્રથી અસંલ્ય લોક છે; દેશવન્ધનું અન્તર જઘન્યથી એ પ્રમાણે (સમયાધિક ક્ષુલ્લક ભવ) જાણવું. અને ઉત્કૃષ્ઠથી પૃથ્વીકાયિકાના સ્થિતિકાલ (અસંલ્ય ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી) સુધી જાણવું.

૪૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એ ઔદારિક શરીરના દેશવન્ધક, સર્વવન્ધક અને અવન્ધક જીવોમાં કયા જીવો કોનાથી યાવદ્ વિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સૌથી થોડા જીવો ઔદારિક શરીરના સર્વવન્ધક છે, તેથી અવન્ધક જીવો વિશેષાધિક છે, અને તેથી દેશવન્ધક જીવો અસંલ્યાત ગુણ છે.

૪૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વૈક્રિયશરીરનો પ્રયોગવન્ધ કેટલ્ય પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બે પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે-એકેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ અને પંચેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ.

૪૨. [પ્ર૦] જો એકેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ છે તો શું વાયુકાયિક એકેન્દ્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ છે કે વાયુકાયિક ભિન્ન એકેન્દ્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધ છે ? [૩૦] એ પ્રમાણે એ અભિલાપથી જેમ *‘અગ્રાહનાસંસ્થાન’પદમાં વૈક્રિય શરીરનો ભેદ કહ્યો છે તેમ કહેવો; યાવત્ પર્યાપ્તસર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તરોપપાતિક કલ્પાતીત વૈમાનિકદેવ પંચેન્દ્રિય વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ અને અપર્યાપ્ત સર્વાર્થસિદ્ધ અનુત્તરોપપાતિક-યાવદ્ વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ.

૪૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ કયા કર્મના ઉદયથી થાય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વીર્યતા, સયોગતા અને સદ્ગુણતાથી યાવદ્ આયુષ્ અને લલ્લિને આશ્રયી વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ નામકર્મના ઉદયથી વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ થાય છે.

૪૪. [પ્ર૦] વાયુકાયિકએકેન્દ્રિયવૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ સંવન્ધે પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વીર્યતા, સયોગતા અને સદ્ગુણતાથી પૂર્વની પેટે યાવદ્ લલ્લિને આશ્રયી વાયુકાયિકએકેન્દ્રિયવૈક્રિયશરીરપ્રયોગ નામકર્મના ઉદયથી યાવદ્ વૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ થાય છે.

૪૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! રત્નપ્રમાપૃથ્વીનૈરયિકપંચેન્દ્રિયવૈક્રિયશરીરપ્રયોગવન્ધ કયા કર્મના ઉદયથી થાય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વીર્યતા, સયોગતા અને સદ્ગુણતાથી યાવદ્ આયુષ્યને આશ્રયી રત્નપ્રમાપૃથ્વીનૈરયિકપંચેન્દ્રિયશરીરપ્રયોગનામકર્મના ઉદયથી યાવદ્ વૈક્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધ થાય છે. એ પ્રમાણે યાવત્ નીચે સાતમી નરકપૃથ્વી સુધી જાણવું.

૧ તં ચેવ ક । ૨-૩-પ્પમણુહિ- ક ।

* ૪૨. પ્રજ્ઞા ૦ પદ. ૨૧. પ. ૪૧૪-૨. પં. ૫.

ઔદારિક શરીરના સર્વવન્ધક, દેશવન્ધક અને અવન્ધકનું અસ્પષ્ટુલ્ય.

વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ વન્ધ.

વૈક્રિયશરીરપ્રયોગ વન્ધ કયા કર્મના ઉદયથી થાય છે ?

વાયુકાયિકએકેન્દ્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધ.

નૈરયિકવૈક્રિય શરીરપ્રયોગવન્ધ.

४६. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिदियवेउद्वियसरीरपुच्छा । [उ०] गोयमा ! धीरिय० जहा वाउक्काइयाणं, मणुस्तपंचिदियवेउद्विय० एवं चेव । असुरकुमारभवनवासिदेवपंचिदियवेउद्विय० जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं, एवं जाव थणिबकुमारा, एवं वाणमंतरा, एवं जोइसिया, एवं सोहम्मकप्पोवया वेमाणिया, एवं जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया, अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव ।

४७. [प्र०] वेउद्वियसरीरप्पयोगबंधे णं मंते ! किं देसबंधे, सच्चबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि, सच्चबंधे वि । वाउक्काइयपगिदिय० एवं चेव, रयणप्पभापुढविनेरइया एवं चेव, एवं जाव अणुत्तरोववाइया ।

४८. [प्र०] वेउद्वियसरीरप्पयोगबंधे णं मंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सच्चबंधे जहणेणं एकं समयं, उक्कोसेणं दो समयया । देसबंधे जहणेणं एकं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।

४९. [प्र०] वाउक्काइयपगिदियवेउद्वियपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सच्चबंधे एकं समयं, देसबंधे जहणेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोसुहुत्तं ।

५०. [प्र०] रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सच्चबंधे एकं समयं, देसबंधे जहणेणं दसवाससहस्साइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूणं, एवं जाव अहे सत्तमा, नवरं देसबंधे जस्स जा जहन्निया ठिती सा तिसमयूणा कायइया, जाव उक्कोसिआ सा समयूणा । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं मणुत्तसाण य जहा वाउक्काइयाणं, असुरकुमार—नागकुमार० जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं; नवरं जस्स जा ठिती सा भाणियइया, जाव अणुत्तरोववाइयाणं सच्चबंधे एकं समयं, देसबंधे जहणेणं एकत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ।

५१. [प्र०] वेउद्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं णं मंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सच्चबंधंतरं जहणेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ— जाव आवलियाए असंखेज्जइभागे; एवं देसबंधंतरं पि ।

४६. [प्र०] तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वीर्यता, सयोगता अने सद्रव्यताथी पूर्ववत् जेम वायुकायिकोने कक्षुं तेम जाणवुं. मनुष्य पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध पण ए प्रमाणे जाणवो. असुरकुमार भवनवासीदेव पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकनी पेटे जाणवो. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. ए रीते वानव्यंतर, ज्योतिषिक, सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक यावद् अच्युत, अने प्रेवेयक कल्पातीत वैमानिकोने जाणवुं. तथा अनुत्तरीपपातिककल्पातीत वैमानिकोने पण ए प्रमाणे जाणवा.

तिर्यंचयोनिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धं शुं देशबन्धं छे के सर्वबन्धं छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देशबन्धं पण छे अने सर्वबन्धं पण छे. ए प्रमाणे वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धं तथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धं जाणवो. ए प्रमाणे यावद् अनुत्तरीपपातिक देवो सुधी जाणवुं.

देशबन्धं अने सर्वबन्धं.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धं कालथी कयां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धं जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी *बे समय सुधी होय. तथा देशबन्धं जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्तीश सागरोपम सुधी होय.

वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धकाल.

४९. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धं एक समय, अने देशबन्धं जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे.

वायुकायिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे काल.

५०. [प्र०] रत्नप्रभानैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धं एक समय, अने देशबन्धं जघन्यथी त्रण समय उणा दशहजार वर्ष सुधी होय, तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून एक सागरोपम सुधी होय. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाणवुं. परन्तु देशबन्धने विपे जेनी जे जघन्य स्थिति होय तेने एक समय न्यून करवी, अने यावत् जेनी उत्कृष्ट स्थिति होय ते पण समय न्यून करवी. पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने वायुकायिकनी पेटे जाणवुं. असुरकुमार, नागकुमार, यावद् अनुत्तरीपपातिक देवोने नारकनी पेटे जाणवा; परन्तु जेनी जे स्थिति (आशुष्य) होय ते कहेवी, यावद् अनुत्तरीपपातिकोने सर्वबन्धं एक समय, अने देशबन्धं जघन्यथी त्रण समय न्यून एकत्तीश सागरोपम सुधीनो होय छे; तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्तीश सागरोपम सुधीनो छे.

रत्नप्रभा नैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धकाल.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरना प्रयोगबन्धनुं अन्तर कालथी कयां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल—अनन्त उत्तर्पिणी अवसर्पिणी, यावद् आवलिकाना असंख्यातमा भागना समय तुल्य असंख्य पुद्गल परावर्त सुधी होय छे. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं.

वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.

१ -नेरइया एवं क विनाऽन्यत्र । २ -या गेयत्वा ङु । ३ एवं चेव अणु- ङु विनाऽन्यत्र । ४ सत्तमाए क-य विवा । ५ समऊणा य । ६ जस्स जा उक्कोसा क-ङु विनाऽन्यत्र । ७ -बंधंतरं णं क विनाऽन्यत्र ।

४८. * औदारिकशरीरी वैक्रियशरीर करतो प्रथम समये सर्वबन्धक थईने मरण पानी देव के नारक थाय ल्यारे प्रथम समये सर्वबन्ध करे, माटे वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनो सर्वबन्ध उत्कृष्टथी बे समय होय. तथा औदारिकशरीरी वैक्रिय शरीर करतो प्रथम समये सर्वबन्ध करी थीजे समये देशबन्धक थाय अने तरत अ मरण पामे माटे देशबन्ध जघन्यथी एक समय होय छे.—टीका.

५२. [प्र०] वाउक्काइयवेउद्वियसरीरपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सन्नबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिभोवमस्स असंखेज्जभागं; एवं देसबंधंतरं पि ।

५३. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिवियवेउद्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सन्नबंधंतरं जहन्नेणं अंतो-मुहुत्तं, उक्कोसेणं पुत्तकोट्टिपुहुत्तं; एवं देसबंधंतरं पि, एवं मणुसस्स वि ।

५४. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! वाउक्काइयसे, नोवाउकाइयसे, पुणरवि वाउकाइयसे वाउक्काइयपरिगदियवेउद्वियपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सन्नबंधंतरं जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो, एवं देसबंधंतरं पि ।

५५. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयसे, णोरयणप्पभापुढवि०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सन्नबंधंतरं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमम्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो; देसबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो; एवं जाव अहे सत्तमाप, नवरं जा जस्स ठिती जहन्निया सा सन्नबंधंतरे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तमम्भहिया कायच्चा, सेसं तं चेव । पंचिवियतिरिक्खजोणिय-मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं; असुरकुमार-णागकुमार० जाव सहस्सार-देवाणं प्पसिं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं, नवरं सन्नबंधंतरे जस्स जा ठिती जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमम्भहिया कायच्चा, सेसं तं चेव ।

५६. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! आणयदेवसे, नोआणय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सन्नबंधंतरं जहन्नेण अट्टारस सागरो-

वायुकायिक वैक्रिय-
शरीरप्रयोगबन्धना-
न्तर.

५२. [प्र०] वायुकायिकना वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! *सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उक्कट्ठी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं.

तिर्यचपंचेन्द्रिय-
वैक्रियशरीर प्रयो-
गबन्धनुं अन्तर.

५३. [प्र०] तिर्यचयोनिक् पंचेन्द्रियना वैक्रियशरीरना प्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उक्कट्ठी पूर्वकोटिपृथक्त्व (बेथी नव पूर्वकोटी) सुधी होय छे. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं. ए रीते मनुष्येने पण जाणवुं.

वायुकायिक वैक्रिय-
शरीरप्रयोगबन्धनुं
अन्तर.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ जीव वायुकायिकपणामां होय अने [मरीने] वायुकाय सिवाय बीजा जीवोमां आवीने उपजे, अने ते पुनः वायुकायपणामां आवे ते वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेना सर्व-बन्धनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उक्कट्ठी अनन्तकाल-वनस्पतिकाल होय. ए प्रमाणे देशबन्धनुं पण अन्तर जाणवुं.

रत्नप्रभा नारकवैक्रिय-
शरीरप्रयोगबन्धनुं
अन्तर.

५५. [प्र०] हे भगवन् ! कोई जीव रत्नप्रभापृथिवीमां नारकपणे उत्पन्न थाय अने पछी रत्नप्रभापृथिवी शिवायना जीवोमां जाय, अने पुनः रत्नप्रभा नरकमां आवे ते रत्नप्रभानैरयिकना वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष, अने उक्कट्ठी वनस्पतिकालपर्यन्त होय. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उक्कट्ठी अनन्तकाल-वनस्पतिकाल सुधी होय. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी पर्यन्त जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के जघन्यथी सर्वबन्धनुं अन्तर जे नारकनी जेटली जघन्य स्थिति होय तेटली स्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक जाणवी. बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक् अने मनुष्येने सर्वबन्धनुं अन्तर वायुकायिकनी पेठे जाणवुं. जेम रत्नप्रभाना नैरयिकोने कहुं तेम असुर-कुमार, नागकुमार, यावत् सहस्वार देवोने पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के तेना सर्वबन्धनुं अन्तर जेनी जे जघन्य स्थिति होय तेने अन्तर्मुहूर्त अधिक करवी, बाकी सर्व पूर्व कक्षा प्रमाणे जाणवुं.

असुरकुमार, नाग-
कुमार, यावत् सह-
स्वार देवो.

आनतदेववैक्रियश-
रीरप्रयोगबन्धनुं
अन्तर.

५६. [प्र०] हे भगवन् ! आनतदेवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयेलो कोइ जीव त्यांथी [च्यवी] आनत देवलोक सिवायना जीवोमां उत्पन्न थाय अने पछी फरीने त्यां आनत देवलोकमां उत्पन्न थाय ते आनतदेव वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे

१ मणुस्साण वि क । २- बंधंतरं ज- क विनाऽभ्यप्र । ३ प्पभगाणं क ।

५२. * औदारिकशरीरी वायुकायिक वैक्रियशरीरनो प्रारंभ करे अने प्रथम समये सर्वबन्धक थइ मरण पामी पुनः वायुकायिक थाय, तेने अपर्याप्ता-वस्थामां वैक्रिय शक्ति उत्पन्न थती नथी, तेथी ते अन्तर्मुहूर्तमां पर्याप्त थइने वैक्रियशरीर करे त्यारे सर्वबन्धक थाय माटे सर्वबन्धनुं जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त होय. तथा औदारिकशरीरी वायुकायिक वैक्रिय शरीर करे तेना प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, त्यार पछी देशबन्धक थइने मरण पामी औदारिकशरीरी वायुकायिकमां पल्योपमनो असंख्यातमो भाग निर्गमन करी अवश्य वैक्रिय शरीर करे, त्यां प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, माटे सर्वबन्धनुं यथोक्त अन्तर जाणवुं.-टीका.

५५. † रत्नप्रभापृथिवीनो नारक दश हजार वर्षेनी स्थितियाळो उत्पत्तिने प्रथम समये सर्वबन्धक होय छे, त्यार पछी त्यांथी च्यवीने गर्भज पंचेन्द्रियने दिसे अन्तर्मुहूर्त रहीने पुनः रत्नप्रभा नरकमां उत्पन्न थाय, त्यां प्रथम समये सर्वबन्धक होय, तेथी सर्वबन्धनुं सूत्रोक्त जघन्य अन्तर होय.-टीका.

बर्माई वासपुहत्तमम्भहियाई, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो: देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो; एवं जाव अण्णुप । नवरं जस्स जा ठिती सा सैवबंधंतरं जहण्णेण वासपुहत्तमम्भहिया कायद्वा, सेसं तं वेव ।

५७. [प्र०] गेवेज्जकप्पातीय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहणेण वावीसं सागरोवमाई वासपुहत्तमम्भहियाई, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।

५८. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहणेणं एकतीसं सागरोवमाई वासपुहत्तमम्भहियाई, उक्कोसेणं संखेज्जाई सागरोवमाई । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाई सागरोवमाई ।

५९. [प्र०] एपसि णं भंते ! जीवाणं वेउच्चियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव वि-सेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउच्चियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

६०. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! एगागारे पण्णसे ।

६१. [प्र०] जइ एगागारे पण्णसे किं मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे ? [उ०] गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे । एवं एपणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंटाणे जाव इह्धिपत्त-पमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगम्मवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, णो अणिह्धिपत्तपमत्त० जाव आहारगसरीरप्पओगबंधे ।

६२. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदपणं ? [उ०] गोयमा ! धीरिय-सजोग-सह्दयाए जाव लंदि च पडुच्च आहारगसरीरप्पओगणामाप कम्मस्स उदपणं आहारगसरीरप्पओगबंधे ।

गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी *वर्षपृथक्त्व अधिक अटार सागरोपम, अने उत्कृष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकालपर्यन्त होय. तथा देश-बन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकाल होय. ए प्रमाणे यावद् अच्युत देवलोकपर्यन्त जाणतुं, परन्तु सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी जेनी जे स्थिति होय ते वर्षपृथक्त्व अधिक कग्गी. बाकी बंधुं पूर्वनी पेटे जाणतुं.

५७. [प्र०] ग्रैवेयक कल्पातीत वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अधिक वावीश सागरोपम, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल-वनस्पतिकाल सुधी होय. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाल जाणवो.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरीपपानिकदेवसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अधिक एकत्रीश सागरोपम, अने उत्कृष्टथी संख्यात सागरोपम छे. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्टथी संख्यात सागरोपम होय छे.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! ए वैक्रियशरीरना देशबंधक, सर्वबंधक अने अबंधक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! वैक्रियशरीरना सर्वबंधक जीवो सौथी थोडा छे, तेथी देशबन्धको अमंख्यातगुणा छे, अने तेथी अबन्धको अनन्तगुणा छे.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरनो प्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनो कह्यो छे.

६१. [प्र०] जो (आहारकशरीरप्रयोगबन्ध) एक प्रकारनो कह्यो छे तो शुं ते मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध छे के मनुष्य-शिवाय बीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे, पण मनुष्य शिवाय बीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होतो नथी. ए प्रमाणे ए अमिलापथी 'अवगाहनासंस्थान' पदमां कया प्रमाणे यावद् ऋद्धिप्राप्त प्रमत्तसंयत सम्पगृह्णि पर्याप्त संख्यात वर्षना आयुपूवाळा कर्मभूमिमां उत्पन्न थएला गर्भज मनुष्यने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे, पण ऋद्धिने अप्राप्त प्रमत्तसंयतने यावद् आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होतो नथी.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्बुद्धताथी यावद् लब्धिने आश्रयी आहारकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे.

ग्रैवेयककल्पातीत.

अनुत्तरीपपानिक.

अवपचुत्त.

आहारकशरीरप्रयोगबन्ध.

आहारकशरीरप्रयोगबन्ध मनुष्य के ते शिवाय बीजाने होय.

आहारक शरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय ?

१-पुहुत्तम-ग । २-अणुया क । ३-बंधंतरे क । ४-पुहुत्त ग-ऊ । ५-भूमिगवन्ध-ग, भूमिगवन्ध-ऊ । ६-लंदि वा ऊ ।

५६. * आनतकल्पनो कोई देव अटार सागरोपमना आयुषवाळो उत्पत्तिने प्रथम समये सर्वबन्धक होय, अने त्यांथी च्यवीने वर्षपृथक्त्व आयुषपर्यन्त मनुष्यमां रहींने पुनः तेज आनत कल्पमां उत्पन्न थईने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, तेथी सर्वबन्धनुं जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्व अधिक अटार सागरोपम जाणतुं-टीका.

५८. † अनुत्तरीपपानिकने विषे उत्कृष्ट सर्वबंधान्तर अने देशबंधान्तर संख्याता सागरोपम छे, कारण के त्यांथी च्यवीने अनन्तकाल संसारमां अमण करतो नथी-टीका.

६१. ‡ प्रश्ना० पद. २१ प. ४२३-१. पं-११.

६३. [प्र०] आहारगसरीररूपयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सङ्घबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि सङ्घबंधे वि ।

६४. [प्र०] आहारगसरीररूपयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सङ्घबंधे एहं समयं, देसबंधे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

६५. [प्र०] आहारगसरीररूपयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सङ्घबंधंतरं जहण्णेणं अंतो-मुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणी—ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोया—अबहुपोगलपरियहुं वेसूणं । एवं देसबंधंतरं पि ।

६६. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं, सङ्घबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहितो जाय विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सङ्घथोवा जीवा आहारगसरीरस्स सङ्घबंधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

६७. [प्र०] तेयासरीररूपयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] ! गोयमा पंचविहे पण्णसे, तं जहा—एगिदियते-यासरीररूपयोगबंधे, बेइदियतेयासरीररूपयोगबंधे, जाय पंचिदियतेयासरीररूपयोगबंधे ।

६८. [प्र०] एगिदियतेयासरीररूपयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] एवं एणं अभिलाषेणं भेदो जहा भोगाह-णसंटाणे, जाय पञ्जसासङ्घट्टसिद्धअणुसरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियतेयासरीररूपयोगबंधे य, अपञ्जसासङ्घट्टसिद्ध-अणुसरोववाइय० जाय बंधे य ।

६९. [प्र०] तेयासरीररूपयोगबंधे णं भंते कस्स कम्मस्स उदणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय—सजोग—सहृयाए जाय आउयं च पडुच्च तेयासरीररूपयोगनामाए कम्मस्स उदणं तेयासरीररूपयोगबंधे ।

७०. [प्र०] तेयासरीररूपयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सङ्घबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे, नो सङ्घबंधे ।

देशबन्ध अने सर्व-
बन्ध.

६३. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध पण छे, अने सर्वबन्ध पण छे.

आहारक शरीरप्र-
योगबन्धो काल.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त सुधी होय छे.

अन्तर.

६५. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरना प्रयोगबन्धनुं अंतर कालथी केटलं होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी कालनी अपेक्षाए अनंतकाल—अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी होय छे. क्षेत्रथी अनंतलोक—काइक न्यून अर्धपुद्गल परावर्त छे. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं.

देशबन्धक, सर्वबन्धक
अने अबन्धकनुं
अल्पगुण.

६६. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबंधक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषा-धिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो आहारकशरीरना सर्वबंधक छे, तेथी देशबंधक संख्यात गुणा छे, अने तेथी अबन्धक जीवो अनन्तगुणा छे.

तैजसशरीरप्रयो-
गबन्ध.

६७. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ एकेन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध, २ द्वीन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध, ३ त्रीन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध, यावत् ५ पंचेन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध.

एकेन्द्रिय.

६८. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] ए अमिलापथी ए प्रमाणे जेम *'अवगाहनासंस्थान'मां भेद कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो, यावद् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरीपपातिक कल्पातीत वैमानिक देवपंचेन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध अने अपर्याप्तसर्वार्थसिद्ध अनुत्तरीपपातिक यावद् तैजसशरीरप्रयोगबन्ध छे.

कावत् पर्याप्तसर्वार्थ-
सिद्ध.

६९. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्बुद्धताथी यावद् आयुष्यने आश्रयी तैजसशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी तैजसशरीरनो प्रयोगबन्ध थाय छे.

तैजस शरीरप्रयो-
गबन्ध कया कर्मना
उदयथी ?

७०. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध छे पण सर्वबन्ध नथी.

देशबन्ध के सर्वबन्ध ?
सर्वबन्ध नथी.

१ -रूपयोगबंधंतरे ग-घ-ङ ।

६८. * प्रज्ञा० पद. २१. प. ४२६-१. पं. ३.

७१. [प्र०] तेषासरीरप्यभोगबंधे णं भंते ! कालभो केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पणसे, तं जहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए ।

७२. [प्र०] तेषासरीरप्यभोगबंधंतरं णं भंते ! कालभो केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अणाइएस्स अपज्जवसिएस्स नत्थि अंतरं, अणाइएस्स सपज्जवसिएस्स नत्थि अंतरं ।

७३. [प्र०] दयसि णं भंते ! जीवाणं तेषासरीरस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेद्धितो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सन्नत्थोवा जीवा तेषासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा ।

७४. [प्र०] कम्मासरीरप्ययोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पणसे ? [उ०] गोयमा ! अट्टविहे पणसे, तं जहा—जाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे, जाव अंतराइएकम्मासरीरप्ययोगबंधे ।

७५. [प्र०] जाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदयणं ? [उ०] गोयमा ! जाणपडिणीययाए जाणणिण्हयणयाए, जाणंतराएणं, जाणप्यदोसेणं, जाणक्कासोयणयाए, जाणविसंवाक्काजोगेणं जाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगनामाए कम्मस्स उदयणं जाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे ।

७६. [प्र०] वरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदयणं ? [उ०] गोयमा ! वंसणपडिणीययाए, एवं जहा जाणावरणिज्जं, नवरं वंसणनामं धेत्तवं, जाव वंसणविसंवाक्काजोगेणं वंसणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगनामाए कम्मस्स उदयणं जाव पभोगबंधे ।

७७. [प्र०] सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदयणं ? [उ०] गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, एवं जहा सत्तमसए कुंस्समाउहेसए जाव अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्ययोगनामाए कम्मस्स उदयणं सायावेयणिज्जकम्मा० जाव बंधे ।

७१. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध कालयी क्यां सुची होय ? [उ०] हे गौतम ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ अनादि अपर्यवसित अने २ अनादि सपर्यवसित.

तैजसशरीरप्रयोग-
बन्धनो काळ.

७२. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कालयी क्यां सुची होय ? [उ०] हे गौतम ! अनादि अपर्यवसित अने अनादि सपर्यवसित ए बन्धे प्रकारना तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर नयी.

तैजसशरीरप्रयोग-
बन्धनुं अन्तर.

७३. [प्र०] हे भगवन् ! ए तैजसशरीरना देशबन्धक अने अबन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोयी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! तैजसशरीरना अबन्धक जीवो सौयी थोडा छे, तेयी देशबन्धक जीवो अनन्तगुण छे.

७४. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मणशरीरप्रयोगबन्ध केटळा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध, यावद् अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध.

कर्मणशरीर प्रयोग-
बन्ध.

७५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञाननी प्रत्यनीकतापी, ज्ञाननो अपलाप करवाथी, ज्ञाननो अन्तराय—भिन्न करवाथी, ज्ञाननो प्रद्वेष करवाथी, ज्ञाननी अत्यन्त आशातना करवाथी, ज्ञानना विसंवादन योगथी अने ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

ज्ञानावरणीय कर्म-
णशरीर प्रयोगबन्ध
कया कर्मना करवाथी
थाय छे ?

७६. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शननी प्रत्यनीकतापी—इत्यादि जेम ज्ञानावरणीयना कारणो कह्या छे तेम दर्शनावरणीय माटे जाणवां; परन्तु [ज्ञानावरणीयस्थाने] 'दर्शनावरणीय' कहेवुं, यावद् दर्शन विसंवादनयोगथी, तथा दर्शनावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी दर्शनावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

दर्शनावरणीयकर्म-
णशरीरप्रयोगबन्ध.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! सातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राणीओ उपर अनुकम्पा करवाथी, भूतो उपर अनुकम्पा करवाथी—इत्यादि जेम सप्तम शतकना दुःषमा उदेशकमा कह्युं छे तेम कहेवुं, यावद् तेओने परिताप नहि उत्पन्न करवाथी, अने सातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी सातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

सातावेदनीय-

१- प्ययोगबंधंतरे णं क विवाऽभ्यन्न । २-सावणाए ण । ३-नाम बे- ग-स । ४-इसमोरे- क विवाऽभ्यन्न ।

७८. [प्र०] असायावेयणिज्ज-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! परतुक्कणयाप, परसोयणयाप, जहा सत्तमसप तुस्समाउदेसप, जाव परियावणयाप असायावेयणिज्जकम्मा० जाव पभोगबंधे ।

७९. [प्र०] मोहणिज्जकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिहकोहयाप, तिहमाणयाप, तिहमाययाप, तिहलोमयाप, तिहदंसणमोहणिज्जयाप, तिहचरित्तमोहणिज्जयाप मोहणिज्जकम्मासरीरप्पभोग० जाव पभोगबंधे ।

८०. [प्र०] नेरइयाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! महारंभयाप, महापरिग्गहयाप, कुणिमाहारेणं, पंचिदियवहेणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पभोगनामाप कम्मस्स उदपणं नेरइयाउयकम्मासरीर० जाव पभोगबंधे ।

८१. [प्र०] तिरिक्खजोणियाउअकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! माइल्लयाप, नियडिल्लयाप, अलियवयणेणं, कूडतुल्ल-कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउअकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

८२. [प्र०] मणुस्साउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पगइभइयाप, पगइविणीययाप, साणुक्कोसणयाप, अमच्छरियाप मणुस्साउयकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

८३. [प्र०] देवाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामनिज्जराप देवाउयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८४. [प्र०] सुमनामकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! काउज्जुययाप, भाउज्जुययाप, मासुज्जुययाप, अविसंवादन-जोगेणं सुमनामकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८५. [प्र०] असुमनामकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कायअणुज्जुययाप, जाव विसंवायणाजोगेणं असुमनामकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

असातावेदनीय.

७८. [प्र०] हे भगवन् ! असातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! बीजाने दुःख देवाथी, बीजाने शोक उत्पन्न करवाथी-इत्यादि जेम *सतम शतकना दुःपमा उदेशकमां कहुं छे तेम यावद् बीजाने परिताप उपजाववाथी अने असातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी असातावेदनीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

मोहनीय.

७९. [प्र०] हे भगवन् ! मोहनीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तीव्रक्रोध करवाथी, तीव्र मान करवाथी, तीव्र माया (कपट) करवाथी, तीव्र लोभ करवाथी, तीव्र दर्शनमोहनीयथी, तीव्र चारित्रमोहनीयथी तथा मोहनीयकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मोहनीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

नारकायुष.

८०. [प्र०] हे भगवन् ! नारकायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! महाआरम्भथी, महापरिग्रहथी, मांसाहार करवाथी, पंचेन्द्रिय जीवो नो वध करवाथी तथा नारकायुषकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नारकायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

तिर्यंचयोनिकायुष.

८१. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! मायिकपणाथी, कपटीपणाथी, खोटुं बोलवाथी, खोटां तोलां अने खोटां मापथी तथा तिर्यंचयोनिकायुषकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी तिर्यंचयोनिकायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

मनुष्यायुष.

८२. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रकृतिनी भद्रताथी, प्रकृतिना विनीतपणाथी, दयाळुपणाथी, अमत्सरिपणाथी तथा मनुष्यायुषकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

देवायुष.

८३. [प्र०] देवायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सरागसंयमथी, संयमासंयम-(देशविरति)थी, अज्ञानतपकर्मथी, अकामनिर्जराथी तथा देवायुषकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी देवायुषकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

शुभनाम.

८४. [प्र०] शुभनामकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी सरलताथी, भावनी सरलताथी, भाषानी सरलताथी अने योगना अविसंवादनपणाथी एकताथी तथा शुभनामकर्मणशरीरप्रयोगनाम कर्मना उदयथी यावत् प्रयोगबन्ध थाय छे.

अशुभनाम.

८५. [प्र०] अशुभनामकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी वक्रताथी, भावनी वक्रताथी, भाषानी वक्रताथी, अने योगना विसंवादनपणाथी-भिन्नताथी अशुभनामकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी यावत् प्रयोगबन्ध थाय छे.

* ७८. भग० खं. ३. श. ७. उ. ६. पृ. २०. सू. १६.

१ इत्तमो दे-क विनाऽप्यत्र । २ -सरीरप्पभोगबंधे णं भंते पुच्छा क विनाऽप्यत्र ।

८६. [प्र०] उच्चागोयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जातिभमदेणं, कुलभमदेणं, बलभमदेणं, रूपभमदेणं, तवभ-
मदेणं, सुयभमदेणं, लाभभमदेणं, इस्सरियभमदेणं उच्चागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८७. [प्र०] नीचागोयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जातिभमदेणं, कुलभमदेणं, बलभमदेणं, जाव इस्सरियभमदेणं
नीचागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८८. [प्र०] अंतराहयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दाणंतरापणं, लाभंतरापणं, भोगंतरापणं, उवभोगंतरापणं,
वीरियंतरापणं अंतराहयकम्मासरीरप्ययोगनामाए कम्मस्स उप्पणं अंतराहयकम्मासरीरप्ययोगबंधे ।

८९. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे णं मंते ! किं देसबंधे, सत्त्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे, णो सत्त्वबंधे,
एवं जाव अंतराहयं ।

९०. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधे णं मंते ! कालभो केवधिंरं होइ ? [उ०] गोयमा ! कुदिहे पण्णत्ते, तं
जहा- अणादीए एवं जहा तेयगस्स संधिदुणा तहेव, एवं जाव अंतराहयस्स ।

९१. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्ययोगबंधंतेरं णं मंते ! कालभो केवधिंरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अणाहयस्स, एवं
जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव, एवं जाव अंतराहयस्स ।

९२. [प्र०] एएसि णं मंते ! जीवाणं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरे० जाव ? [उ०]
अप्पायहुगं जहा तेयगस्स, एवं आउयवज्जं जाव अंतराहयस्स ।

९३. [प्र०] आउयस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्त्वयोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ।

८६. [प्र०] उच्चगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जातिमद न करवाथी, कुलमद न करवाथी
बलमद न करवाथी, रूपमद न करवाथी, तपमद न करवाथी, क्षुतमद न करवाथी, लाभमद न करवाथी अने ऐश्वर्यमद न करवाथी, तथा
उच्चगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी उच्चगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

उच्चगोत्रं

८७. [प्र०] नीचगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जातिमद करवाथी, कुलमद करवाथी, बलमद
करवाथी, यावद् ऐश्वर्यमद करवाथी तथा नीचगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नीचगोत्रकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

नीचगोत्रं

८८. [प्र०] अंतरायकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! दाननो अन्तराय करवाथी, लाभनो अन्तराय करवाथी,
भोगनो अन्तराय करवाथी, उपभोगनो अन्तराय करवाथी अने वीर्यनो अन्तराय करवाथी तथा अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना
उदयथी अंतरायकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

अन्तरायं

८९. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध छे,
पण सर्वबन्ध नथी. ए प्रमाणे यावद् अन्तरायकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध सुधी जाणवुं.

ज्ञानावरणीयको
देशबन्ध के
सर्वबन्ध ?

९०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्या सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानावरणीयकर्मण-
शरीरप्रयोगबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे—अनादि सपर्यवसित (सान्त) अने अनादि अपर्यवसित (अनन्त). ए प्रमाणे
यावत् जेम तैजस शरीरनो स्थितिकाल कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो, ए प्रमाणे यावद् अन्तराय कर्मनो स्थितिकाल जाणवो.

ज्ञानावरणीयकर्मण-
शरीरप्रयोगबन्धको
काल.

९१. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मणशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कालथी क्या सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! अनादि
अनंत अने अनादि सांत छे. जे प्रमाणे तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कह्युं (सू. ७२.) ते प्रमाणे अहीं पण कहेवुं. ए प्रमाणे यावद्
अंतरायकर्मणशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर जाणवुं.

ज्ञानावरणीयकर्मण-
शरीर प्रयोगबन्धनुं
अन्तर.

९२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मना देशबन्धक अने अबन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ?
[उ०] जेम तैजस शरीरनुं अल्पबहुत्व कह्युं (सू. ७३.) तेम अहीं पण जाणवुं. ए प्रमाणे आयुषकर्म शिवाय यावत् अन्तराय कर्म सुधी जाणवुं.

देशबन्धक अने अब-
न्धकनुं अवयवहुत्व.

९३. [प्र०] आयुषकर्म संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आयुषकर्मना देशबन्धक जीवो सौथी योडा छे, अने तेनाथी अवंधक
जीवो संख्यातगुण छे.

आयुष कर्मना देश-
बन्धक अने अबन्धक
जीवोनुं अवयवहुत्व.

१ अणाहए सपज्जवसिए, अणाहए अपज्जवसिए वा एवं-अ-घ । २ जहेव ड । ३-यकम्मस्स ग-ङ । ४-तरे णं क विनाऽन्वय ।
५ आउयवु-क ।

૯૪. [પ્ર૦] જસ્ત ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત સહબંધે સે ણં મંતે ! વેડહિયસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો બંધપ, અબંધપ ।
૯૫. [પ્ર૦] આહારગસરીરસ્ત કિં બંધપ અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો બંધપ અબંધપ ।
૯૬. [પ્ર૦] તેયાસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! બંધપ, નો અબંધપ ।
૯૭. [પ્ર૦] જહ બંધપ કિં દેસબંધપ સહબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! દેસબંધપ, નો સહબંધપ ।
૯૮. [પ્ર૦] કમ્માસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] જહેવ તેયગસ્ત, જાવ દેસબંધપ, નો સહબંધપ ।
૯૯. [પ્ર૦] જસ્ત ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત દેસબંધે સે ણં મંતે ! વેડહિયસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો બંધપ, અબંધપ । एवं जहेव सहबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियहं जाव कम्मगस्स ।
૧૦૦. [પ્ર૦] જસ્ત ણં મંતે ! વેડહિયસરીરસ્ત સહબંધે સે ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો બંધપ, અબંધપ । આહારગસરીરસ્ત एवं એવ, તેયગસ્ત કમ્મગસ્ત ય જહેવ ઓરાલિયણં સમં ભણિયં તહેવ ભાણિયહં જાવ દેસબંધપ, નો સહબંધપ ।
૧૦૧. [પ્ર૦] જસ્ત ણં મંતે ! વેડહિયસરીરસ્ત દેસબંધે સે ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો બંધપ, અબંધપ । एवं जहेव सहबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियहं जाव कम्मगस्स ।
૧૦૨. [પ્ર૦] જસ્ત ણં મંતે ! આહારગસરીરસ્ત સહબંધે સે ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરસ્ત કિં બંધપ, અબંધપ ? [૩૦] ગોયમા ! નો બંધપ, અબંધપ । एवं वेडहियस्स वि, तेया-कम्माणं जहेव ओरालियणं समं भणियं तहेव भाणियहं ।

શરીરબન્ધનો પરસ્પર સંબન્ધ.

ઔદારિક શરીરના સર્વબન્ધ સાથે વૈક્રિયશરીરબન્ધનો સંબન્ધ.

૯૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે જીવને ઔદારિકશરીરનો સર્વબન્ધ છે તે જીવ શું વૈક્રિયશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે બન્ધક નથી; પણ અબન્ધક છે.

આહારક શરીરબન્ધનો સંબન્ધ.

૯૫. [પ્ર૦] ઔદારિકશરીરનો સર્વબન્ધક શું આહારકશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બન્ધક નથી, પણ અબન્ધક છે.

તૈજસશરીરનો સંબન્ધ.

૯૬. [પ્ર૦] તૈજસશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે તૈજસશરીરનો બન્ધક છે પણ અબન્ધક નથી.

દેશબન્ધક કે સર્વબન્ધક ?

૯૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જો તે (તૈજસ શરીરનો) બન્ધક છે તો શું દેશબન્ધક છે કે સર્વબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે દેશબન્ધક છે, પણ સર્વબન્ધક નથી.

કાર્મણશરીરનો સંબન્ધ.

૯૮. [પ્ર૦] કાર્મણશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તૈજસ શરીરની પેઠે યાવત્ કાર્મણશરીરનો દેશબન્ધક છે પણ સર્વબન્ધક નથી.

ઔદારિક શરીરના દેશબન્ધ સાથે વૈક્રિય શરીરનો સંબન્ધ.

૯૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેને ઔદારિકશરીરનો દેશબન્ધ છે તે જીવ શું વૈક્રિયશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બન્ધક નથી, પણ અબન્ધક છે. ए प्रमाणे जेम सर्वबंधना प्रसंगे कहुं, तेम अहीं देशबन्धना प्रसंगे पण यावत् कार्मण शरीर सुधी कहेवुं.

વૈક્રિય શરીરના સર્વબન્ધ સાથે ઔદારિક શરીરનો સંબન્ધ.

૧૦૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે જીવને વૈક્રિયશરીરનો સર્વબન્ધ છે તે જીવ શું ઔદારિકશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બન્ધક નથી, પણ અબન્ધક છે. ए प्रमाणे आहारकशरीर माटे पण जाणवुं, तैजस अने कार्मण शरीरने जेम औदारिक शरीरनी साथे कहुं तेम वैक्रियशरीरनी साथे पण कहेवुं, यावद् देशबन्धक છે પણ સર્વબન્ધક નથી.

દેશબન્ધ સાથે ઔદારિક શરીરબન્ધનો સંબન્ધ.

૧૦૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે જીવને વૈક્રિયશરીરનો દેશબન્ધ છે તે જીવ શું ઔદારિક શરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બન્ધક નથી, પણ અબન્ધક છે. ए प्रमाणे जेम [वैक्रियशरीरना] सर्वबंधना प्रसंगे कहुं तेम अहीं देशबन्धना प्रसंगे पण यावत् कार्मणशरीर सुधी कहेवुं.

આહારક શરીરના સર્વબન્ધ સાથે ઔદારિક શરીરબન્ધનો સંબન્ધ.

૧૦૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે જીવને આહારકશરીરનો સર્વબન્ધ હોય તે જીવ શું ઔદારિકશરીરનો બન્ધક છે કે અબન્ધક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! બન્ધક નથી, પણ અબન્ધક છે. ए प्रमाणे वैक्रियशरीरने पण जाणवुं. अने जेम तैजस अने कार्मण शरीरने औदारिक शरीर साथे कहुं तेम [आहारक शरीर साथे पण] कहेवुं.

१०३. [प्र०] अस्स णं मंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे से णं मंते ! ओरालियसरीरस्स० ? [उ०] एवं जहा आहारगस्स सच्चबंधेणं भणियं तथा देसबंधेण वि भाणियच्चं, जाव कम्मगस्स ।

१०४. [प्र०] अस्स णं मंते ! तेयासरीरस्स देसबंधे से णं मंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधय, अबंधय ? [उ०] गोयमा ! बंधय वा, अबंधय वा ।

१०५. [प्र०] जइ बंधय किं देसबंधय, सच्चबंधय ? [उ०] गोयमा ! देसबंधय वा सच्चबंधय वा ।

१०६. [प्र०] वेडद्वियसरीरस्स किं बंधय, अबंधय ? [उ०] एवं खेव, एवं आहारगसरीरस्स वि ।

१०७. [प्र०] कम्मगसरीरस्स किं बंधय, अबंधय ? [उ०] गोयमा ! बंधय, नो अबंधय ।

१०८. [प्र०] जइ बंधय किं देसबंधय, सच्चबंधय ? [उ०] गोयमा ! देसबंधय, नो सच्चबंधय ।

१०९. [प्र०] अस्स णं मंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे से णं मंते ! ओरालियस्स० ? [उ०] जहा तेयगस्स वत्तव्या भणिया तथा कम्मगस्स वि भाणियच्चा, जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधय, नो सच्चबंधय ।

११०. [प्र०] एपसि णं मंते ! सच्चजीवाणं ओरालिय-वेडद्विय-आहारग-तेया-कम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सच्चबंधगाणं अबंधगाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सच्चथोवा जीवा आहारगसरीरस्स सच्चबंधगा, तस्स खेव देसबंधगा संखेज्जगुणा । वेडद्वियसरीरस्स सच्चबंधगा असंखेज्जगुणा, तस्स खेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा । तेया-कम्मगाणं अबंधगा अणंतगुणा दोण्ह वि तुल्ला । ओरालियसरीरस्स सच्चबंधगा अणंतगुणा, तस्स खेव अबंधगा विसेसाहिया, तस्स खेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा । तेया-कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया; वेडद्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया, आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

अष्टमसर्ग नवमो उद्देशो समप्तो ।

१०३. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारक शरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे कहुं छे तेम देशबन्धनी साथे पण यावत् कार्मणशरीर सुधी कहेवुं.

१०४. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने तैजसशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक पण छे अने अबन्धक पण छे.

१०५. [प्र०] जो ते जीव [औदारिक शरीरनो] बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देशबन्धक पण छे अने सर्वबन्धक पण छे.

१०६. [प्र०] ते जीव शुं वैक्रियशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] पूर्वनी पेटे जाणहुं, ए प्रमाणे आहारक शरीर माटे पण जाणहुं.

१०७. [प्र०] ते जीव शुं कार्मण शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक छे, पण अबन्धक नथी.

१०८. [प्र०] जो [कार्मण शरीरनो] बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

१०९. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने कार्मणशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिकनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] जेम तैजसशरीरनी वक्तव्यता कही, तेम कार्मण शरीरनी पण वक्तव्यता कहेवी, यावत् तैजसशरीरनो देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

११०. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मणशरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धक एवा सर्व जीवोमां कया जीवो कया जीवोयी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! १ सौधी थोडा जीवो आहारक शरीरना सर्वबन्धक छे, २ तेथी तेना देशबन्धक संख्यातगुणा छे, ३ तेथी वैक्रियशरीरना सर्वबन्धक असंख्यातगुणा छे, ४ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्यातगुणा छे, ५ तेथी तैजस अने कार्मण शरीरना अबन्धक जीवो अनंतगुण अने परस्पर तुल्य छे. ६ तेथी औदारिक शरीरना सर्वबन्धक जीवो अनंत गुण छे, ७ तेथी तेना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ८ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्येयगुणा छे, ९ तेथी तैजस अने कार्मण शरीरना देशबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, १० तेथी वैक्रिय शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ११ तेथी आहारक शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे [एम कही भगवान् गौतम ! यावद् विहरे छे.]

अष्टम शतके नवम उद्देशक समाप्त.

आहारक शरीरना देशबन्ध साथे औदारिक शरीरनो सर्वबन्ध. तैजस शरीरना वैक्रिय बन्धक साथे औदारिक शरीरनो सर्वबन्ध औदारिक शरीरनो देशबन्धक के सर्वबन्धक ।

वैक्रियशरीरनो बन्धक के अबन्धक ?

कार्मण शरीरनो बन्धक के अबन्धक ? देशबन्धक के सर्वबन्धक ?

कार्मण शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरबन्धनो सर्वबन्ध.

शरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अरपबहुष.

दसमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी, अन्नउत्थिया णं मंते ! एवं आह्वसंति, जाव एवं परुवेति—“एवं कलु १ शीलं सेयं, २ सुयं सेयं, ३ सुयं सेयं, शीलं सेयं,” से कहमेयं मंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवं आह्वसंति, जाव जे ते एवं आहंसु, मिच्छा ते एवं आहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवं आह्वसामि, जाव परुवेमि—एवं कलु मय चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तं जहा—१ शीलसंपन्ने णामं एगे णो सुयसंपन्ने, २ सुयसंपन्ने नामं एगे नो शीलसंपन्ने, ३ एगे शीलसंपन्ने वि सुयसंपन्ने वि, ४ एगे णो शीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने । तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाय से णं पुरिसे शीलवं असुयवं; उवरप, अविज्ञायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे देसाराहप पन्नत्ते । तत्थ णं जे से दोषे पुरिसजाय से णं पुरिसे अशीलवं सुयवं; अणुवरप, विज्ञायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे देसविराहप पन्नत्ते । तत्थ णं जे से तन्ने पुरिसजाय से णं पुरिसे शीलवं सुयवं; उवरप, विज्ञायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे सवाराहप पन्नत्ते । तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाय से णं पुरिसे अशीलवं असुतवं; अणुवरप, अविष्णायधम्मे; एस णं गोयमा ! मय पुरिसे सवविराहप पन्नत्ते ।

२. [प्र०] कतिविहा णं मंते ! आराहणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणा-राहणा, वंसणाराहणा, चरित्ताराहणा ।

दशम उद्देशक.

१. [प्र०] “राजगृह नगरमा यावद् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे, यावद् ए प्रमाणे प्ररूपे छे—“ए रीते खरेखर १ शील ज श्रेय छे, २ श्रुत ज श्रेय छे, ३ [शीलनिरपेक्ष ज] श्रुत श्रेय छे, अथवा [श्रुतनिरपेक्ष ज] शील श्रेय छे, तो हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते अन्यतीर्थिको जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत् तेओए जे ए प्रमाणे कहुं छे ते तेओए मिथ्या कहुं छे. हे गौतम ! हुं वळी आ प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं, ए प्रमाणे में चार प्रकारना पुरुषो कइया छे, ते आ प्रमाणे—१ एक शीलसंपन्न छे पण श्रुतसंपन्न नथी, २ एक श्रुतसंपन्न छे पण शीलसंपन्न नथी, ३ एक शीलसंपन्न छे अने श्रुतसंपन्न पण छे, ४ एक शीलसंपन्न नथी तेम श्रुतसंपन्न पण नथी. तेमां जे प्रथम प्रकारनो पुरुष छे ते शीलवान् छे पण श्रुतवान् नथी. ते उपरत (पापादिकथी निवृत्त) छे, पण धर्मने जाणतो नथी. हे गौतम ! ते पुरुषने में देशाराधक कइयो छे. तेमां जे बीजो पुरुष छे ते पुरुष शीलवाळो नथी, पण श्रुतवाळो छे. ते पुरुष अनुपरत (पापथी अनिवृत्त) छतां पण धर्मने जाणे छे. हे गौतम ! ते पुरुषने में देशविराधक कइयो छे. तेमां जे त्रीजो पुरुष छे ते शीलवाळो छे अने श्रुतवाळो पण छे. ते पुरुष [पापथी] उपरत छे अने धर्मने जाणे छे. हे गौतम ! ते पुरुषने में सर्वाराधक कइयो छे. तेमां जे चोथो पुरुष छे ते शीलथी अने श्रुतथी रहित छे, ते पापथी उपरत नथी अने धर्मथी अज्ञात छे. हे गौतम ! ए पुरुषने हुं सर्वविराधक कहुं छुं.

आराधना.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी आराधना कही छे; ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानाराधना, २ दर्शनाराधना अने ३ चारित्राराधना.

१. * केटला एक अन्यतीर्थिको एम माने छे के शील-प्राणातिपातादि विरमणरूप किया मात्र श्रेय छे; ज्ञाननुं कइ पण प्रयोजन नथी, केमके ते चेष्टारहित छे. बीजा ज्ञानमात्रथी फलसिद्धि माने छे, कारण के ज्ञानरहित कियावाळाने फलसिद्धि यती नथी, तेथी तेओ कहे छे के श्रुत-ज्ञानज श्रेय छे. अन्य परस्पर निरपेक्ष श्रुत अने शीलथी अभीष्टार्थसिद्धि माने छे—एटके तेओ कियारहित ज्ञान, अथवा ज्ञानरहित कियाथी अभीष्ट सिद्धि माने छे, केमके बनेमांवा प्रत्येक पुरुषनी पवित्रतानुं कारण छे. तेथी एम कहे छे के ३ शील अथवा ४ श्रुत श्रेय छे.—टीका.

२. † १ ज्ञानाराधना—योग्यकाले अध्ययन, विनय, बहुमान—इत्यादि अष्टविध ज्ञानाचारनुं निरतिचारपणे परिपालन करनुं. २ दर्शनाराधना—दर्शन एटके सम्यक्त्व, तेना निःशंकितादि आठ प्रकारना आचारनुं पालन करनुं. ३ चारित्राचार—निरतिचारपणे पंचसमिस्सादि चारित्राचारनुं पालन.

‘शीलज श्रेय छे’ इ-
त्यादि अन्य शीलि-
कोनुं मन्तव्य.

‘शीलसंपन्न छे पण
श्रुतसंपन्न नथी’—
इत्यादि चतुर्विध.

देशाराधक.

देशविराधक.

सर्वाराधक.

सर्वविराधक.

आराधनाना प्रकार.

३. [प्र०] जाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पण्णसा, तं जहा-उक्कोसिया, मज्झिमा, अहन्ना ।

४. [प्र०] वंसणाराहणा णं भंते कतिविहा ? [उ०] एवं खेव तिविहा वि, एवं चरित्ताराहणा वि ।

५. [प्र०] जस्स णं भंते ! उक्कोसिया जाणाराहणा तस्स उक्कोसिया वंसणाराहणा, जस्स उक्कोसिया वंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया जाणाराहणा ? [उ०] गोयमा ! जस्स उक्कोसिया जाणाराहणा तस्स वंसणाराहणा उक्कोसा वा अजहन्नुक्कोसा वा, जस्स पुण उक्कोसिया वंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, अहन्ना वा, अजहन्मणुक्कोसा वा ।

६. [प्र०] जस्स णं भंते उक्कोसिमा जाणाराहणा तस्स उक्कोसिमा चरित्ताराहणा, जस्सुक्कोसिमा चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिमा जाणाराहणा ? [उ०] जहा उक्कोसिमा जाणाराहणा य वंसणाराहणा य मणिया तथा उक्कोसिमा जाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणिमहा ।

७. [प्र०] जस्स णं भंते ! उक्कोसिया वंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा, जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया वंसणाराहणा ? [उ०] गोयमा ! जस्स उक्कोसिया वंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा, अहन्ना वा अजहन्मणुक्कोसा वा, जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स वंसणाराहणा नियमा उक्कोसा ।

८. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! जाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति, जाव अंतं करेति ? [उ०] गोयमा ! अत्येगए तेजेव भवग्गहणेणं सिज्झति, जाव अंतं करेति; अत्येगतिप दोषेणं भवग्गहणेणं सिज्झति, जाव अंतं करेति; अत्येगतिप कप्पोवपसु वा कप्पातीपसु वा उववज्जति ।

९. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! वंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं ? [उ०] एवं खेव ।

१०. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता ? [उ०] एवं खेव, नवरं अत्येगतिप कप्पातीपसु उववज्जति ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य.

ज्ञानाराधना.

४. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] ए प्रमाणे त्रण प्रकारनी कही छे. ए रीते चारित्रा- राधना पण त्रण प्रकारनी जाणवी.

दर्शनाराधना.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? जे जीवने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ते जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट अने मध्यम दर्शनाराधना होय, वळी जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम ज्ञानाराधना होय.

उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट दर्शनाराधनानो संबन्ध.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने ज्ञानानी उत्कृष्ट आराधना होय तेने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय ? जे जीवने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय तेने ज्ञानानी उत्कृष्ट आराधना होय ? [उ०] जेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने दर्शनाराधनानो संबन्ध कह्यो तेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध कह्यो.

उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय ? जेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम चारित्राराधना होय. तथा जेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय तेने अवश्य उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय.

उत्कृष्ट दर्शनाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट ज्ञानाराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवो तेज भवमां सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे; केटलाक जीवो वे भवमां सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे; अने केटलाक जीवो कल्पोपपन्न देवलोकोमां अथवा कल्पातीत देवलोकोमां उत्पन्न थाय.

उत्कृष्ट ज्ञानाराधक केटला भव पछी मोक्षे जाय !

९. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट दर्शनाराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे जाणवुं.

उत्कृष्ट दर्शनाराधक क्यारे मोक्षे जाय !

१०. [प्र०] हे भगवन् ! उत्कृष्ट चारित्राराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी जीवो सिद्ध थाय ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, परन्तु केटलाक जीवो कल्पातीत देवोमां उत्पन्न थाय.

उत्कृष्ट चारित्राराधक क्यारे मोक्षे जाय !

૧૧. [પ્ર૦] મજ્જિમિયં ણં મંતે ! જાણારાહણં આરાહેસા કતિહિં મહગ્ગાહણેહિં સિજ્જહિ, જાવ મંતં કરેતિ ? [૩૦] ગોયમા ! અત્યેગતિય વોષ્ણેણં મહગ્ગાહણેણં સિજ્જહ, જાવ મંતં કરેતિ, તથાં પુણ મહગ્ગાહણં નાદકમહ ।

૧૨. [પ્ર૦] મજ્જિમિયં ણં મંતે ! વંસણારાહણં આરાહેસા ? [૩૦] एवं खेव, एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणं पि ।

૧૩. [પ્ર૦] ઝહ્મિયં ણં મંતે ! જાણારાહણં આરાહેસા કતિહિં મહગ્ગાહણેહિં સિજ્જહિ, જાવ મંતં કરેતિ ? [૩૦] ગોયમા ! અત્યેગતિય તથ્ણેણં મહગ્ગાહણેણં સિજ્જહ, જાવ મંતં કરેદ; સત્ત-દ્ધ મહગ્ગાહણારં પુણ નાદકમહ । एवं वंसणाराहणं पि, एवं चरित्ताराहणं पि ।

૧૪. [પ્ર૦] કતિવિહે ણં મંતે ! પોગ્ગલપરિણામે પણ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહે પોગ્ગલપરિણામે પણ્ણસે, તં જહા-વજ્જપરિણામે, ગંધપરિણામે, રસપરિણામે, ફાસપરિણામે, સંઠાણપરિણામે ।

૧૫. [પ્ર૦] વજ્જપરિણામે ણં મંતે ! કહ્વિહે પણ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહે પણ્ણસે, તં જહા-કાલવજ્જપરિણામે, જાવ સુક્કિલ્લવજ્જપરિણામે । एवं पणं अभिलाषेणं गंधपरिणामे कुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे भद्रविहे ।

૧૬. [પ્ર૦] સંઠાણપરિણામે ણં મંતે ! કહ્વિહે પણ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિહે પણ્ણસે, તં જહા-પરિમંહલસંઠાણ-પરિણામે, જાવ આયતસંઠાણપરિણામે ।

૧૭. [પ્ર૦] યો મંતે ! પોગ્ગલત્થિકાયપપ્પસે કિં વ્હં, વ્હવ્વેસે, વ્હ્વારં, વ્હવ્વેસા; ઉદાહુ વ્હં ચ વ્હવ્વેસે ય, ઉદાહુ વ્હં ચ વ્હવ્વેસા ય, ઉદાહુ વ્હ્વારં ચ વ્હવ્વેસે ય, ઉદાહુ વ્હ્વારં ચ વ્હવ્વેસા ય ? [૩૦] ગોયમા ! સિય વ્હં, સિય વ્હવ્વેસે; નો વ્હ્વારં, નો વ્હવ્વેસા, નો વ્હં ચ વ્હવ્વેસે ય, જાવ નો વ્હ્વારં ચ વ્હવ્વેસા ય ।

જ્ઞાનની મધ્યમારા-
ધના આરાધક વ્યારે
મોક્ષે જાય ?

૧૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્ઞાનની મધ્યમ આરાધનાને આરાધી કેટલા ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી જીવ સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વ દુઃખોનો અન્ત કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કેટલાક જીવો બે ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વદુઃખોનો નાશ કરે, પણ ત્રીજા ભવને અતિક્રમે નથી.

દર્શન અને ચારિત્રની
મધ્યમારાધનાનો
આરાધક વ્યારે
મોક્ષે જાય ?

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જીવ મધ્યમ દર્શનારાધનાને આરાધી કેટલા ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધ થાય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પૂર્વની પેટે જાણવું. એ પ્રમાણે ચારિત્રની મધ્યમ આરાધનાને માટે જાણવું.

જ્ઞાનની અધન્ય આ-
રાધનાનો આરાધક
વ્યારે મોક્ષે જાય ?
એ પ્રમાણે દર્શનારા-
ધના અને ચારિત્ર-
રાધના.

૧૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અધન્ય જ્ઞાનારાધનાને આરાધી જીવ કેટલા ભવ ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વદુઃખોનો અન્ત કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કેટલાક જીવ ત્રીજા ભવમાં સિદ્ધ થાય, યાવત્ સર્વદુઃખોનો અન્ત કરે, પણ સાત આઠ ભવથી વધારે ભવો ન કરે. એ પ્રમાણે દર્શનારાધના અને ચારિત્રારાધના માટે પણ જાણવું.

પુદ્ગલપરિણામ.

૧૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પુદ્ગલનો પરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે; તે આ પ્રમાણે,—વર્ણપરિણામ, ગન્ધપરિણામ, રસપરિણામ, સ્પર્શપરિણામ અને સંસ્થાનપરિણામ.

પુદ્ગલપરિણામના
પ્રકાર.

વર્ણપરિણામ, ગન્ધપ-
રિણામ, રસપરિણામ
અને સ્પર્શપરિણામ.

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વર્ણપરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—
૧ કાલોવર્ણપરિણામ, યાવત્ ૫ શુક્લવર્ણપરિણામ. એ પ્રમાણે એ અભિલાપથી બે પ્રકારનો ગન્ધપરિણામ, પાંચ પ્રકારનો રસપરિણામ, અને આઠ પ્રકારનો સ્પર્શપરિણામ જાણવો.

સંસ્થાનપરિણામ.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સંસ્થાનપરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે, તે આ પ્રમાણે—૧ પરિમંહલ સંસ્થાનપરિણામ, યાવત્ ૫ આયત સંસ્થાનપરિણામ.

પુદ્ગલસ્થિકાયનો
એક પ્રદેશ.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પુદ્ગલસ્થિકાયનો એક પ્રદેશ (પરમાણુ) ૧ શું દ્રવ્ય છે, ૨ દ્રવ્યદેશ છે, ૩ દ્રવ્યો છે, ૪ દ્રવ્યદેશો છે, ૫ અથવા દ્રવ્ય અને દ્રવ્યદેશ છે, ૬ અથવા દ્રવ્ય અને દ્રવ્યદેશો છે, ૭ અથવા દ્રવ્યો અને દ્રવ્યદેશ છે, ૮ કે દ્રવ્યો અને દ્રવ્યદેશો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે કથંચિદ્ દ્રવ્ય છે, કથંચિદ્ દ્રવ્યદેશ છે, પણ દ્રવ્યો નથી, દ્રવ્યદેશો નથી, દ્રવ્ય અને દ્રવ્યદેશ નથી, યાવત્ દ્રવ્યો અને દ્રવ્યદેશો નથી.

१८. [प्र०] दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपयसा किं द्दं, द्दद्वेसे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय द्दं, सिय द्दद्वेसे, सिय द्दद्वेसे, सिय द्दद्वेसे; सिय द्दं च द्दद्वेसे य, नो द्दं च द्दद्वेसे य; सेसा पडिसेहेयवा ।

१९. [प्र०] तिष्णि भंते ! पोग्गलत्थिकायपयसा किं द्दं द्दद्वेसे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय द्दं, सिय द्दद्वेसे, एवं सत्त भंगा भाणियवा, जाव सिय द्दद्वेसे च द्दद्वेसे य, नो द्दद्वेसे च द्दद्वेसे य ।

२०. [प्र०] चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायपयसा किं द्दं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय द्दं, सिय द्दद्वेसे; अट्ट वि भंगा भाणियवा, जाव सिय द्दद्वेसे च द्दद्वेसे य; जहा चत्तारि भणिया एवं पंच, छ, सत्त, जाव असंखेज्जा ।

२१. [प्र०] अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपयसा किं द्दं ? [उ०] एवं चेव, जाव सिय द्दद्वेसे च द्दद्वेसे य ।

२२. [प्र०] केवतिया णं भंते ! लोयागासपयसा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जा लोयागासपयसा पन्नत्ता ।

२३. [प्र०] पगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवपयसा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! जायतिया लोयागासपयसा, पगमेगस्स णं जीवस्स पयतिया जीवपयसा पण्णत्ता ।

२४. [प्र०] कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-नाणावरणिज्जं, जाव अंतरायं ।

२५. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट, एवं स उडीयाणं अट्ट कम्मपगडीओ उडेयवाओ जाव पेमाणियाणं ।

२६. [प्र०] नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपरिच्छेदा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपरिच्छेदा पण्णत्ता ।

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना वे प्रदेशो शुं द्रव्यं के के द्रव्यदेशे ? इत्यादि पूर्वोक्त प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कथंचित् द्रव्यं, २ कथंचित् द्रव्यदेशं, ३ कथंचित् द्रव्यो, ४ कथंचित् द्रव्यदेशो, ५ कथंचित् द्रव्यं अने द्रव्यदेशे, पण द्रव्यं अने द्रव्यदेशो नथी, वाकीना विकल्पो नो प्रतिपद्यं करो.

वे प्रदेशो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना त्रण प्रदेशो शुं द्रव्यं, द्रव्यदेशं ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचित् द्रव्यं, २ कथंचित् द्रव्यदेशं, ५ प्रमाणे सात भागाओ कहेवा, यावत् कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेशं, पण द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी.

त्रण प्रदेशो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना चार प्रदेशो शुं द्रव्यं ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचित् द्रव्यं, २ कथंचित् द्रव्यदेशं, इत्यादि आठ भागा कहेवा, यावत् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो, जेम चार प्रदेशो कहा तेम पांच, छ, सात यावत् असंख्येय प्रदेशो पण कहेवा.

चार प्रदेशो.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकायना अनन्त प्रदेशो शुं द्रव्यं ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वं प्रमाणेज जाणतुं, यावत् कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो.

अनन्त प्रदेशो.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! लोकाकाशना प्रदेशो केटला कहा ? [उ०] हे गौतम ! असंख्येय प्रदेशो कहा.

लोकाकाशना प्रदेशो.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवना केटला जीवप्रदेशो कहा ? [उ०] हे गौतम ! जेटला लोकाकाशना प्रदेशो कहा छे तेटला एक एक जीवना प्रदेशो कहा छे.

एक जीवना प्रदेशो.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरणीय, यावत् अन्तराय.

कर्मप्रकृति.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नेरयिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ५ प्रमाणे सर्वजीवोने यावत् वैमानिकोने आठ कर्मप्रकृतिओ कहेवी.

नेरयिकोने यावत् वैमानिकोने कर्मप्रकृति.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मना केटला अविभाग परिच्छेदो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त *अविभागपरिच्छेदो कहा छे.

ज्ञानावरणीय कर्मना अविभाग परिच्छेद.

१ पुच्छा तद्देव क । २ एतावतिया ग । ३ कइविहा णं क ।

२६. * जेना केवलज्ञानिनी प्रज्ञापी पण विभाग न कणी वाक्य एवा सूत्र अंशोवे अविभागपरिच्छेद कहेवाय छे. ते कर्मपरमाणुओनी अपेक्षाए अथवा ज्ञानना जेटला अविभाग परिच्छेदोनुं आच्छादन कर्तुं छे तेनी अपेक्षाए अनन्त छे.—टीका.

૨૭. [૮૦] નેરહયાણં મંતે ! ણાણાવરણિજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કેવતિયા અવિભાગપલિચ્છેદા પ્ણસા ? [૩૦] ગોયમા ! અણંતા અવિભાગપલિચ્છેદા પ્ણસા; एवं सञ्जजीवाणं, जाव-[प्र०] वेमाणियाणं पुच्छा । [३०] गोयमा ! अणंता अविभागपलि-
च्छेदा प्णसता, एवं जहा णाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भाणिया तहा अट्टण्ह वि कम्मपगडीणं भाणियञ्जा, जाव
वेमाणिआणं अंतराह्यस्स ।

૨૮. [પ્ર૦] ઇગમેગસ્સ ણં મંતે ! જીવસ્સ ઇગમેગે જીવપપ્સે ણાણાવરણિજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કેવતિપહિં અવિભાગપલિચ્છે-
વેહિં આવેદિય-પરિવેદિય ? [૩૦] ગોયમા ! સિય આવેદિય-પરિવેદિય, સિય નો આવેદિય-પરિવેદિય; જહ આવેદિય-પરિવે-
દિય નિયમા અણંતેહિં ।

૨૯. [પ્ર૦] ઇગમેગસ્સ ણં મંતે ! નેરહ્યસ્સ ઇગમેગે જીવપપ્સે ણાણાવરણિજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કેવહપહિં અવિભાગપલિ-
ચ્છેદેહિં આવેદિય-પરિવેદિય ? [૩૦] ગોયમા ! નિયમં અણંતેહિં, જહા નેરહ્યસ્સ एवं जाव वेमाणियस्स; नवरं मणुसस्स
જહા જીવસ્સ ।

૩૦. [પ્ર૦] ઇગમેગસ્સ ણં મંતે ! જીવસ્સ ઇગમેગે જીવપપ્સે દરિસણાવરણિજ્જસ્સ કમ્મસ્સ કેવહપહિં ? [૩૦] एवं
जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियञ्चो जाव वेमाणियस्स; एवं जाव अंतराह्यस्स भाणियञ्चं, नवरं वेयणिज्जस्स, आउ-
यस्स, णामस्स, गोयस्स-एपसिं चउण्ह वि कम्माणं मणुसस्स जहा नेरह्यस्स तहा भाणियञ्चं, सेसं तं चेव ।

૩૧. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! ણાણાવરણિજ્જં તસ્સ દરિસણાવરણિજ્જં, જસ્સ દંસણાવરણિજ્જં તસ્સ નાણાવરણિજ્જં ? [૩૦]
गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियमं अत्थि, जस्स णं दरिस्सणावरणिज्जं तस्स वि नाणावरणिज्जं
નિયમં અત્થિ ।

૩૨. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! ણાણાવરણિજ્જં તસ્સ વેયણિજ્જં, જસ્સ વેયણિજ્જં તસ્સ ણાણાવરણિજ્જં ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ
णाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि, जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ।

નૈરયિક.

૨૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને જ્ઞાનાવરણીયકર્મના અવિભાગપરિચ્છેદો કેટલા કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! અનન્ત અવિભા-
ગપરિચ્છેદો કહ્યા છે. ઇ પ્રમાણે સર્વજીવોને-જાણવું; યાવદ્ [પ્ર૦] વૈમાનિકો મંવન્ધે પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! અનન્ત અવિભાગપરિચ્છેદો
કહ્યા છે. જેમ જ્ઞાનાવરણીય કર્મના અવિભાગપરિચ્છેદો કહ્યા તેમ આટે કર્મપ્રકૃતિના અવિભાગપરિચ્છેદો અન્તરાયકર્મ પર્યન્ત યાવદ્ વૈમાનિ-
કોને કહેવા.

જીવનો ઇક ઇક
પ્રદેશ કેટલા જ્ઞાના-
વરણીય કર્મના પરિ-
ચ્છેદોથી આવેદિત
છે ?

૨૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઇક ઇક જીવનો ઇક ઇક જીવપ્રદેશ જ્ઞાનાવરણીય કર્મના કેટલા અવિભાગપરિચ્છેદો (અંશોથી)
આવેદિત-પરિવેદિત છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કઠાચિત્ આવેદિત-પરિવેદિત હોય, અને કઠાચિત્ *આવેદિત-પરિવેદિત ન હોય. જો આવે-
દિત-પરિવેદિત હોય તો તે અવશ્ય અનન્ત અવિભાગપરિચ્છેદો વડે આવેદિત-પરિવેદિત હોય.

ઇક ઇક નૈરયિકનો
ઇક ઇક જીવપ્રદેશ.

૨૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઇક ઇક નૈરયિક જીવનો ઇક ઇક જીવપ્રદેશ જ્ઞાનાવરણીય કર્મના કેટલા અવિભાગપરિચ્છેદો વડે
આવેદિત-પરિવેદિત હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! અવશ્ય તે અનન્ત અવિભાગપરિચ્છેદો વડે આવેદિત-પરિવેદિત હોય. જેમ નૈરયિકો માટે
કહ્યું તેમ યાવદ્ વૈમાનિકોને કહેવું, પરન્તુ મનુષ્યને જીવના પેટે કહેવું.

દર્શનાવરણીયના
કેટલા પરિચ્છેદોથી
વેદિત છે ?

૩૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઇક ઇક જીવનો ઇક ઇક જીવ પ્રદેશ દર્શનાવરણીય કર્મના કેટલા અવિભાગપરિચ્છેદો વડે આવેદિત
પરિવેદિત હોય ? [૩૦] જેમ જ્ઞાનાવરણીય કર્મના મંવન્ધે દંડક કહ્યો તેમ અહીં પણ યાવદ્ વૈમાનિકને કહેવો, યાવત્ અન્તરાયકર્મ-
પર્યન્ત કહેવું. પણ વેદનાય, આયુષ્, નામ અને ગોત્ર-ઇ ચાર કર્મો માટે જેમ નૈરયિકોને કહ્યું તેમ મનુષ્યોને કહેવું, વાકી વધું પૂર્વ પ્રમા-
ણજ જાણવું.

જ્ઞાનાવરણીય અને
દર્શનાવરણીયનો
સંબન્ધ.

૩૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જે જીવને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ છે તેને શું દર્શનાવરણીય કર્મ છે, જેને દર્શનાવરણીય કર્મ છે તેને શું જ્ઞાના-
વરણીય કર્મ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને જ્ઞાનાવરણીય છે તેને અવશ્ય દર્શનાવરણીય હોય છે, જેને દર્શનાવરણીય છે તેને પણ અવશ્ય
જ્ઞાનાવરણીય હોય છે.

જ્ઞાનાવરણીય અને
વેદનીયનો સંબન્ધ.

૩૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેને જ્ઞાનાવરણીય છે, તેને શું વેદનીય હોય છે, જેને વેદનીય છે તેને જ્ઞાનાવરણીય હોય છે ? [૩૦] હે
ગૌતમ ! જેને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ છે તેને અવશ્ય વેદનાય હોય છે, અને જેને વેદનીય છે તેને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ કઠાચ હોય અને કઠાચ ન હોય.

૨૮. * ક્ષેત્રજ્ઞાનિની અપેક્ષાએ આવેદિત-પરિવેદિત ન હોય, કેમકે તેને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ ક્ષીણ થયેલું હોવાથી જ્ઞાનાવરણીયના અવિભાગપરિચ્છેદો
વડે તેના પ્રદેશોને પરિવેદિત હોવું નથી, અને દત્તર જીવોના પ્રદેશો અનન્ત અવિભાગપરિચ્છેદોથી પરિવેદિત છે.—ડીકા.

૩૩. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! નાણાવરણિજ્ઞં તસ્સ મોહણિજ્ઞં, જસ્સ મોહણિજ્ઞં તસ્સ ણાણાવરણિજ્ઞં ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ નાણાવરણિજ્ઞં તસ્સ મોહણિજ્ઞં સિય અત્થિ, સિય નત્થિ; જસ્સ પુણ મોહણિજ્ઞં તસ્સ ણાણાવરણિજ્ઞં નિયમં અત્થિ ।

૩૪. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! ણાણાવરણિજ્ઞં તસ્સ આડયં ? [૩૦] एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तथा आउएण वि समं भाणियधं, एवं नामेण वि, एवं गोएण वि समं; अंतराएण समं जहा दरिसणावरणिज्जेण समं तदेव नियमं परोप्परं भाणियधाणि ।

૩૫. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! દરિસણાવરણિજ્ઞં તસ્સ વેયણિજ્ઞં, જસ્સ વેયણિજ્ઞં તસ્સ દરિસણાવરણિજ્ઞં ? [૩૦] જહા ણાણાવરણિજ્ઞં ઉવરિમેહિં સત્તહિં કમ્મેહિં સમં ભણિયં તહા દરિસણાવરણિજ્ઞં પિ ઉવરિમેહિં છહિં કમ્મેહિં સમં ભાણિયધં, જાવ અંતરાહણં ।

૩૬. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! વેયણિજ્ઞં તસ્સ મોહણિજ્ઞં, જસ્સ મોહણિજ્ઞં તસ્સ વેયણિજ્ઞં ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ વેયણિજ્ઞં તસ્સ મોહણિજ્ઞં સિય અત્થિ, સિય નત્થિ; જસ્સ પુણ મોહણિજ્ઞં તસ્સ વેયણિજ્ઞં નિયમં અત્થિ ।

૩૭. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! વેયણિજ્ઞં તસ્સ આડયં ? [૩૦] एवं पयाणि परोप्परं नियमं, जहा आउएण समं एवं नामेण वि गोएण वि समं भाणियधं ।

૩૮. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! વેયણિજ્ઞં તસ્સ અંતરાહયં—પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ વેયણિજ્ઞં તસ્સ અંતરાહયં સિય અત્થિ, સિય નત્થિ; જસ્સ પુણ અંતરાહયં તસ્સ વેયણિજ્ઞં નિયમં અત્થિ ।

૩૯. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! મોહણિજ્ઞં તસ્સ આડયં, જસ્સ ણં મંતે ! આડયં તસ્સ મોહણિજ્ઞં ? [૩૦] ગોયમા જસ્સ મોહણિજ્ઞં તસ્સ આડયં નિયમં અત્થિ, જસ્સ પુણ આડયં તસ્સ પુણ મોહણિજ્ઞં સિય અત્થિ, સિય નત્થિ; एवं नामं गोयं अंतराहयं च भाणियधं ।

૪૦. [પ્ર૦] જસ્સ ણં મંતે ! આડયં તસ્સ નામં—પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! दो वि परोप्परं नियमं, एवं गोत्तेण वि समं भाणियधं ।

૩૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને જ્ઞાનાવરણીય છે તેને શું મોહનીય છે, જેને મોહનીય છે તેને જ્ઞાનાવરણીય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને જ્ઞાનાવરણીય છે તેને મોહનીય કર્મ કદાચ હોય અને કદાચ ન હોય. પણ જેને મોહનીય છે તેને અવશ્ય જ્ઞાનાવરણીય કર્મ હોય છે.

જ્ઞાનાવરણીય અને મોહનીય કર્મનો સંબંધ.

૩૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને જ્ઞાનાવરણીય કર્મ છે તેને શું આયુષ્ કર્મ છે ?—ઇત્યાદિ [૩૦] જેમ વેદનીય કર્મ સાથે કહ્યું તેમ આયુષ્ કર્મ સાથે પણ કહેવું. એ પ્રમાણે નામ અને ગોત્ર કર્મની સાથે પણ જાણવું. જેમ દર્શનાવરણીય સાથે કહ્યું તેમ અન્તરાય કર્મ સાથે અવશ્ય પરસ્પર કહેવું.

જ્ઞાનાવરણીય અને આયુષ્કર્મનો સંબંધ.

૩૫. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને દર્શનાવરણીયકર્મ છે તેને શું વેદનીય છે, જેને વેદનીય છે તેને દર્શનાવરણીય છે ? [૩૦] જેમ જ્ઞાનાવરણીય કર્મ ઉપરના સાત કર્મો સાથે કહ્યું છે તેમ દર્શનાવરણીય કર્મ પણ ઉપરના છ કર્મો સાથે કહેવું, અને એ પ્રમાણે યાવદ્ અન્તરાય કર્મ સાથે કહેવું.

દર્શનાવરણીય અને વેદનીયનો સંબંધ.

૩૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને વેદનીય છે તેને શું મોહનીય છે, જેને મોહનીય છે તેને વેદનીય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને વેદનીય છે, તેને મોહનીય કદાચ હોય અને કદાચ ન હોય. પણ જેને મોહનીય છે તેને અવશ્ય વેદનીય છે.

વેદનીય અને મોહનીયનો સંબંધ.

૩૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને વેદનીય છે તેને શું આયુષ્ કર્મ હોય ? [૩૦] એ પ્રમાણે એ વસ્તુ પરસ્પર અવશ્ય હોય. જેમ આયુષ્ કર્મ સાથે કહ્યું તેમ નામ અને ગોત્રની સાથે પણ કહેવું.

૩૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને વેદનીય કર્મ છે તેને શું અન્તરાય હોય—ઇત્યાદિ પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને વેદનીય છે તેને અન્તરાય કર્મ કદાચ હોય અને કદાચ ન હોય. પણ જેને અન્તરાય કર્મ છે તેને અવશ્ય વેદનીય કર્મ હોય.

વેદનીય અને અન્તરાયનો સંબંધ.

૩૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને મોહનીય છે તેને શું આયુષ્ હોય, જેને આયુષ્ છે તેને શું મોહનીય હોય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જેને મોહનીય છે તેને અવશ્ય આયુષ્ હોય, જેને આયુષ્ય છે તેને મોહનીય કર્મ કદાચ હોય અને કદાચ ન હોય. એ પ્રમાણે નામ, ગોત્ર અને અન્તરાયકર્મ કહેવું.

મોહનીય અને આયુષ્નો સંબંધ.

૪૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેને આયુષ્ કર્મ છે તેને નામ કર્મ હોય ?—ઇત્યાદિ પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! તે વસ્તુ પરસ્પર અવશ્ય હોય, એ પ્રમાણે ગોત્ર સાથે પણ કહેવું.

આયુષ્ અને નામકર્મનો સંબંધ.

४१. [प्र०] जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराहयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराहयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराहयं तस्स आउयं नियमं अत्थि ।

४२. [प्र०] जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं, जस्स णं गोयं तस्स णं णामं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स णं णामं तस्स नियमा गोयं, जस्स णं गोयं तस्स नियमा नामं; दो वि एए परोप्परं नियमा अत्थि ।

४३. [प्र०] जस्स णं भंते ! णामं तस्स अंतराहयं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स नामं तस्स अंतराहयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराहयं तस्स णामं नियमा अत्थि ।

४४. [प्र०] जस्स णं भंते ! गोयं तस्स अंतराहयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स णं गोयं तस्स अंतराहयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराहयं तस्स गोयं नियमं अत्थि ।

४५. [प्र०] जीवे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? [उ०] गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘जीवे पोग्गली वि पोग्गले वि’ ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, घडेणं घटी, पडेणं पटी, करेणं करी, एवामेवं गोयमा ! जीवे वि सोइदिय-चक्षिइदिय-घाणिदिय-जिभिइदिय-फासिदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पडुच्च पोग्गले; से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि’ ।

४६. [प्र०] नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणिए, नवरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स तर वि भाणियव्वाइं ।

४७. [प्र०] सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? [उ०] गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘जाव पोग्गले’ ? [उ०] गोयमा ! जीवं पडुच्च, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्टमसए दसमो उद्देशो समत्तो ।

समत्तं अट्टमं सयं ।

आयुषकर्म अने अन्तराय कर्मनो संबंध.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! जेने आयुष् छे तेने अन्तराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने आयुष् छे तेने अन्तराय कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य आयुष् कर्म होय.

नामकर्म अने गोत्र कर्मनो संबंध.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने नाम कर्म छे, तेने शुं गोत्र कर्म होय, जेने गोत्र कर्म छे तेने नाम कर्म होय-प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने नाम कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय; अने जेने गोत्रकर्म छे तेने अवश्य नामकर्म होय. ए वने कर्मो परस्पर अवश्य होय.

नामकर्म अने अन्तरायकर्मनो संबंध.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने नाम कर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय, अने जेने अंतराय कर्म छे तेने शुं नाम कर्म होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने नामकर्म छे तेने अंतराय कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अंतराय कर्म छे तेने अवश्य नामकर्म होय.

गोत्रकर्म अने अन्तराय कर्मनो संबंध.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने गोत्रकर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने गोत्रकर्म छे तेने अन्तराय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय.

जीव पुद्गली के पुद्गल.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीव पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छे के ‘जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे’ ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष छत्रवडे छत्री, दंडवडे दंडी, घटवडे घटी, पटवडे पटी अने करवडे करी कहेवाय छे तेम जीव पण श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियने आश्रयी पुद्गली कहेवाय छे, अने जीवने आश्रयी पुद्गल कहेवाय छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के ‘जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे.’

नैरयिको पुद्गली के पुद्गल ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिक पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! ते पूर्वनी पेटे जाणहुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने पण कहेहुं; परन्तु तेमां जे जीवोने जेटली इन्द्रियो होय तेने नेटली कहेवी.

सिद्धो पुद्गली के पुद्गल ?

४७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सिद्धो पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छे के सिद्धो यावत् पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवने आश्रयी [पुद्गल] कहुं छुं. ते हेतुथी एम कहेवाय छे के सिद्धो पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

अष्टम शतके दशम उद्देशक समाप्त.

नवमं सयं

१. १ जंबुद्वीपे २ जोइस ३० अंतरदीवा ३१ असोच्च ३२ गांगेय ।
३३ कुंडगामे ३४ पुरिसे णवमम्मि संतंमि चोत्तीसा ॥

पढमो उद्देशो ।

२. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समयणं मिहिला णामं णगरी होत्था । वण्णओ । मणिमहे च्चेतिप । वण्णओ । सामी समोसडे, परिसा णिग्गता, जाव भगवं गोयमे पञ्जुवात्तमाणे एवं वंदासी-कहि णं भंते ! जंबुद्वीपे दीवे, किंसंठिए णं भंते ! जंबुद्वीपे दीवे ? [उ०] एवं जंबुद्वीपपन्नत्ती भाणियन्ना, जाव एवामेव सपुष्पावरेणं जंबुद्वीपे दीवे चोइस सल्लिला सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खलाया । सेवं भंते !, सेवं भंते ! सि ।

इति नवमसए पढमो उद्देशो समाप्तो ।

नवम शतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ जंबुद्वीप, २ ज्योतिष्क, ३-३० अठ्यावीश अन्तर्द्वीपो, ३१ असोच्चा, ३२ गांगेय, ३३ कुंडग्राम अने ३४ पुरुप-ए संबन्धे नवमा शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. [१ जंबुद्वीप संबन्धे प्रथम उद्देशक छे, २ ज्योतिष्क देव संबन्धे बीजो उद्देशक छे, ३-३० अठ्यावीश अन्तर्द्वीपोना त्रीजाथी आरंभी त्रीश उद्देशको छे, ३१ असोच्चा-‘सांभळ्या शिवाय-धर्मने पामे’-इत्यादि विषे एकत्रीशमो उद्देशक छे, गांगेय अनगारना प्रश्न विषे बत्रीशमो उद्देशक छे, ब्राह्मणकुंडग्राम संबन्धे तेत्रीशमो उद्देशक छे, अने पुरुपने हणनार संबन्धे चोत्रीशमो उद्देशक छे.]

प्रथम उद्देशक.

२. ते काले-ते समये मिथिला नामे नगरी हती. वर्णन. त्यां मणिमद्र चैत्त हतुं. वर्णन. त्यां महावीरस्वामी समोसर्या. पर्यद् [वां-दवाने] नीकळी. यावद् भगवान् गीतमे पर्युपासना करता आ प्रमाणे पृच्छुं-हे भगवन् ! जंबुद्वीप कये स्थळे छे ? हे भगवन् ! जंबुद्वीप केवा आकारे रहेलो छे ? [उ०] अर्हं *जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति कहेवी, यावद् ‘जंबुद्वीप नामे द्वीपमां पूर्व अने पश्चिम चौद लाख अने छप्पन हजार नदीओ छे’ तेम कहुं छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे [एम कही भगवान् गीतम यावत् विहरे छे.]

जंबुद्वीप.

नवम शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१ सय चउत्तीसा ग-घ । २ नगरी ग-ङ्ग । ३ भाणम- ख-ग-घ । ४ चोइए ग-घ-ङ्ग । ५ वणाळी ग-घ-ङ्ग ।
२. * जंबुद्वीप० प. १५. १-३०८. १.

विओ उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-जंबुहीवे णं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिसु वा, पभासंति वा, पभासि-
स्संति वा ? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे, जाव-“एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं । नव य सया पन्नासा तारा-
गणकोडाकोडीणं” ॥ सोभं सोभिसु, सोभिति, सोभिस्संति ।

२. [प्र०] लवणे णं भंते ! समुहे केवतिया चंदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्संति वा ? [उ०] एवं जहा
जीवाभिगमे, जाव ताराओ । धायइसंडे, कालोदे, पुष्करवरे, अन्धितरपुष्करवरे, मणुस्सखेत्ते-पपसु सधेसु जहा जीवाभिगमे,
जाव-“एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं” ।

३. [प्र०] पुष्करोदे णं भंते ! समुहे केवइया चंदा पभासिसु वा० ३ ? [उ०] एवं सधेसु दीव-समुहेसु ज्योतिसि-
याणां भाणियधं, जाव सयंभूरमणे, जाव सोभं सोभिसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा । सेवं भंते !, सेवं भंते ! ति ।

नवमसए वीओ उद्देशो समत्तो ।

द्वितीय उद्देशक.

जंबुद्वीपमां चंद्रोनी
प्रकाश.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम स्वामीए] ए प्रमाणे प्रश्न कर्यो के-हे भगवन् ! जंबुद्वीप नामना द्वीपमां केटला चंद्रोए
प्रकाश कर्यो, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करशे ? [उ०] ए प्रमाणे जेम *जीवाभिगम सूत्रमां कखुं छे तेम जाणवुं, यावत्
‘एक लाख, तेत्तीश हजार, नवसो ने पचास कोडाकोडि ताराना समुहे शोभा करी, शोभा करे छे अने शोभा करशे’ त्यां सुची जाणवुं.

लवण समुद्रमां
चंद्रोनी प्रकाश.
धातवितखंड कालोद,
पुष्करवर अने अन्ध-
न्तर पुष्करार्थ.

२. [प्र०] हे भगवन् ! लवण समुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करशे ? [उ०] ए
प्रमाणे जेम जीवाभिगम सूत्रमां कखुं छे तेम तारानी हकीकत सुची सर्व जाणवुं. धातवितखंड, कालोदधि, पुष्करवर द्वीप, अन्धन्तर पुष्करार्थ
अने मनुष्यक्षेत्रमां-ए सर्व स्थले जीवाभिगम सूत्रमां कखा प्रमाणे यावत् “एक चंद्रनी परिवार कोटाकोटि तारागणो होय छे” त्यां सुची
सर्व जाणवुं.

पुष्करोद समुद्र-
यावत् स्वयंभूरमण
समुद्र.

३. [प्र०] हे भगवन् ! पुष्करोद समुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो ?—इत्यादि [उ०] ए रीते [जीवाभिगम सूत्रमां कखा
प्रमाणे] सर्व द्वीप अने समुद्रोमां ज्योतिष्कोनी हकीकत यावत् ‘स्वयंभूरमणसमुद्रमां छे यावत् शोभ्या, शोभे छे अने शोभशे’ त्यां सुची
कहेवी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.]

नवम शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

१ वयासी क, वदासि ख । २ अस्सा गाथाया पूर्वार्धे नास्ति क-ख-ड । ३ धावतिसं- क-ख । ४ -कोटिको- ड । ५ जोइसं वा-
क-ख । ६ स्वयंभूर- क-ड ।

१. * जीवा० प्रति. ३ ट. २ प. ३००-१. २. † जीवा० प्रति. ३ ट. २ प. ३०३-१. ३३५-२. ३. ‡ जीवा० प्रति. ३ ट. २ प. ३४८.
१-३६०. २.

तद्दो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वैयासी-कहि णं भंते ! दाहिणिह्लाणं एंगोरुयमणुस्साणं एंगोरुयदीवे नामं दीवे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पद्यस्स दाहिणेणं शुद्धहिमवंतरस्स वासहरपद्यस्स पुरत्थिमिह्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमेणं तिन्नि जोयणसयाइं ओगाहिसा एत्थ णं दाहिणिह्लाणं एंगोरुयमणुस्साणं एंगोरुयदीवे नामं दीवे पणत्ते । गोयमा ! तिन्नि जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं णं एव एगुणघने जोयणसए किंचिविसेसुणे परिक्खेवेणं पन्नत्ते । से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सच्चओ समंता संपरिक्खत्ते, दोण्ह वि पमाणं वन्नओ य एवं एएणं कमेणं एवं अहा जीवाभिगमे जाव 'सुद्धदंतदीवे,' जाव 'देवलोगपेरिग्गहा णं ते मणुया पणत्ता' समणाउसो ! । एवं अट्टावीसंपि अंतरदीवा सएणं सएणं आयाम-विक्खंभेणं भाणियद्वा, नवरं दीवे दीवे उद्देशओ, एवं सक्खे वि अट्टावीसं उद्देशगां । सेवं भंते !, सेवं भंते ! ति ।

नवमसयस्स तीसइमो उद्देशो समत्तो ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावत् ए प्रमाणे पूच्छुं—हे भगवन् ! दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुष्यो नो एकोरुक नामे द्वीप क्वां क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबुद्वीप नामना द्वीपमां आवेत्ता मंदरपर्वत (मेरुपर्वत) नी दक्षिणे चुल्ल (क्षुद्र) हिमवंत नामे बर्षधर पर्वतना पूर्वना छेडाथी ईशान कोणमां त्रणसो योजन लवणसमुद्रमां गया पळी ए स्थळे दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुष्यो नो एकोरुक नामे द्वीप क्खो छे. हे गौतम ! ते द्वीपनी लंबाइ अने पहोळ्ळाइ त्रणसो योजन छे, अने तेनो परिक्षेप (परिधि) नवसो ओगण पचास योजनथी कांइक न्यून छे. ते द्वीप एक पद्मवरवेदिक्का अने एक वनखंडथी चारे वाजु विंटाएळ छे. ए वनेनुं प्रमाण तथा वर्णन ए प्रमाणे ए क्रम वडे जेम *जीवाभिगमसूत्रमां क्खुं छे तेम यावत् 'सुद्धदंत द्वीप छे, यावद् हे आयुष्मान् श्रमण ! ए द्वीपना मनुष्यो मरीने द्वेवगतिमां उपजे छे' त्यांसुधी जाणवुं. ए प्रमाणे पोत पोतानी लंबाइ, अने पहोळ्ळाइथी अठ्यावीश अंतर्द्वीपो क्खेवा; परन्तु एक एक द्वीपे एक एक उद्देशक जाणवो. ए प्रमाणे वधा मळीने अठ्यावीश उद्देशको क्खेवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम क्खी भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

अठ्यावीश अन्त-
द्वीपो.

नवम शतके त्रीशमो उद्देशक समाप्त.

१ वदासि क-ख । २ एगु- क-ऊ । एगु- क-ख । ३ अयं पाठो नास्ति क-ख-ऊ । ४ एकोण- ग-घ, एकाव-ऊ । ५-परिगहिया णं ग-घ । ६ -वीसं अ- घ,-वीस वि ऊ । ७ 'भाणियद्वा' इत्यधिकः पाठः ग-घ ।

१. * जीवा० प्रति. ३ उ. १ पृ. १४४-२-१५६-१.

एगतीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-असोष्ठा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाप वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाप वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाप वा, तप्पक्खिय-उवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाप वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाप ? [उ०] गोयमा ! असोष्ठा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाप वा अत्थेगतिप केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाप, अत्थेगतिप केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सव-णयाप । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धइ-‘असोष्ठा णं जाव नो लभेज्जा सवणयाप’ ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोष्ठा केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाप वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवण-याप; जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोष्ठा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाप वा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाप । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धइ-तं चेव जाव ‘नो लभेज्जा सवणयाप’ ।

२. [प्र०] असोष्ठा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाप वा केवलं बोहिं बुद्धेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोष्ठा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिप केवलं बोहिं बुद्धेज्जा, अत्थेगतिप केवलं बोहिं णो बुद्धेज्जा ! [प्र०] से केणट्टेणं

एकत्रीशमो उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [भगवान् गौतमे] आ प्रमाणे पृच्छुं—हे भगवन् ! केवलि पासेथी, *केवलिना श्रावक पासेथी, केवलिनी श्राविका पासेथी, केवलिना उपासक पासेथी, केवलिनी उपासिका पासेथी, केवलिना पाक्षिक (स्वयंबुद्ध) पासेथी, केवलिना पाक्षिक श्रावक पासेथी, केवलिना पाक्षिकनी श्राविका पासेथी, केवलिना पक्षना उपासक पासेथी अने केवलिना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना जीवने केवलज्ञानीए कहेल धर्मना श्रवणनो-ज्ञाननो लाभ थाय ? [उ०] हे गौतम ! केवलि पासेथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीवने केवलि कहेल धर्मश्रवणनो लाभ थाय अने कोइ जीवने लाभ न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छे के सांभळ्या विना यावत् [धर्म] श्रवणनो लाभ न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे ज्ञानावर-णीय कर्मनो क्षयोपशम करेलो छे ते जीवने केवलि पासेथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण केवलि कहेल धर्मश्रवणनो लाभ थाय, अने जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीवने केवलि पासेथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपा-सिका पासेथी सांभळ्या विना केवलि कहेल धर्मने सांभळ्यानो लाभ न थाय. हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के, तेने यावत् ‘श्रवणनो लाभ न थाय.’

बोधि.

२. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी [धर्म] सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध बोधि-सम्यग्दर्शनने अनुभवे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे.

१. * जेणे केवलज्ञानीने स्वयं पृच्छुं छे, अथवा तेमनी पासेथी सांभळ्युं छे ते केवलिधावक. केवलज्ञानीनी उपासना करता केवलीए अन्यने कहैछे जेणे सांभळ्युं होय ते केवलिकपासक. केवलिनो पाक्षिक एट्ठे स्वयंबुद्ध.-टीका.

† अर्हा श्रवण श्रुतज्ञानरूप आणहुं, अर्थात् केवलज्ञानीवगेरे पासेथी सांभळ्या शिवाय कोइ जीवने धर्मनो बोध थाय, अन्यथा सांभळ्या विना पीतानी मेळे बोध पामेळाने श्रवण शीरीते थाय ?

केवल्यादिपासे
सांभळ्या शिवाय
कोइ जीवने धर्मनो
बोध थाय के न
थाय ?-इत्यादि.

मंते ! जाव नो बुज्जेजा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवर से णं असोष्वा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं बुज्जेजा; जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवर से णं असोष्वा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं णो बुज्जेजा; से तेणट्टेणं जाव णो बुज्जेजा ।

३. [प्र०] असोष्वा णं मंते ! केवलिस्स वा, जाव तण्पण्णियउवासियाय वा केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पण्णयजा ? [उ०] गोयमा ! असोष्वा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाय वा अत्येगतिप केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पण्णयजा; अत्येगतिप केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं नो पण्णयजा । [प्र०] से केणट्टेणं जाव नो पण्णयजा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराहयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोष्वा केवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पण्णयजा; जस्स णं धम्मंतराहयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोष्वा केवलिस्स वा जाव मुंडे भविता जाव णो पण्णयजा, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव नो पण्णयजा ।

४. [प्र०] असोष्वा णं मंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाय वा केवलं बंभचेरवासं आवसेजा ? [उ०] गोयमा ! असोष्वा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाय वा अत्येगतिप केवलं बंभचेरवासं आवसेजा, अत्येगतिप केवलं बंभचेरवासं नो आवसेजा । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुद्धर—‘जाव नो आवसेजा’ ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं चरिसावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवर से णं असोष्वा केवलिस्स वा जाव केवलं बंभचेरवासं आवसेजा; जस्स णं चरिसावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवर से णं असोष्वा केवलिस्स वा जाव नो आवसेजा, से तेणट्टेणं जाव नो आवसेजा ।

५. [प्र०] असोष्वा णं मंते ! केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेजा ? [उ०] गोयमा ! असोष्वा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाय वा अत्येगतिप केवलेणं संजमेणं संजमेजा; अत्येगतिप केवलेणं संजमेणं नो संजमेजा । [प्र०] से

अने कोइ जीव शुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छे के, यावत् [शुद्ध सम्यग्दर्शनने] न अनुभवे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे दर्शनावरणीय (दर्शनमोहनीय) कर्मनो क्षयोपशम कयों छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे; अने जे जीवे दर्शनावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कयों नथी, ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवे. माटे हे गौतम ! ते हेतुयी एम कहुं छे के—यावत् ‘सांभळ्या विना शुद्ध सम्यक्त्वने अनुभवे नहि.’

बोधिनो हेतु.

३. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सांभळ्या विना पण कोइ जीव मुंड—दीक्षित थइने अगारवास—गृहवास—त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने—प्रव्रज्याने स्वीकारे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेयी यावत् तेना पक्षनी उपासिका—पासेयी सांभळ्या विना कोइ जीव मुंड थइने गृहवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने कोइ जीव मुंड थइ गृहवास त्यजी अनगारिकपणाने न स्वीकारे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुयी कहो छे के, ‘यावत् न स्वीकारे’ ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे धर्मांतरायिक—चारित्र धर्ममां अन्तरायभूत—चारित्रावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कयों छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना पण मुंड थइने अगारवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने जे जीवे धर्मांतरायिक कर्मनो क्षयोपशम कयों नथी ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना यावत् मुंड थइने यावत् न स्वीकारे. माटे हे गौतम ! ते हेतुयी एम कहुं छे के ‘यावत् न स्वीकारे.’

प्रव्रज्या-

प्रव्रज्यानो हेतु-

४. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी, यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेयी, यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, अने कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुयी कहो छे के—‘यावत् ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे’ ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कयों छे ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना पण शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, अने जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मनो क्षयोपशम नथी कयों ते जीव केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे. माटे हे गौतम ! ते हेतुयी एम कहुं छे के ‘यावत् ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे.’

ब्रह्मचर्य-

ब्रह्मचर्यवासने हेतु-

५. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेयी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध संयमवडे संयमयतना करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेयी यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेयी सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध संयमवडे *संयमयतना करे, अने कोइ जीव न करे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छे के, यावत् संयमयतना न करे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे यतनावरणीय

संयम-

संयमनो हेतु-

१ अगाराओ घ-ऊ । २ केवलि- जाव क-ख ।

५. * अहिं संयम—चारित्रनो स्वीकार करीने तेना दोषने त्यागकरवाक्य प्रयत्नविशेष करवो ते संयमयतना.

† चारित्रविषे कीर्य प्रवृत्ति ते यतना, तेने आच्छादन करनार कर्म यतनावरणीय—वीर्यान्तराय कर्म—कहेवाय छे—टीका.

કેળટ્ટેણં જાવ નો સંજમેજ્ઞા ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ ણં જયણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે કહે મયદ્દ સે ણં અસોચ્છા ણં કેવલિસ્સ વા જાવ કેવલેણં સંજમેણં સંજમેજ્ઞા; જસ્સ ણં જયણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે નો કહે મયદ્દ સે ણં અસોચ્છા કેવલિસ્સ વા જાવ નો સંજમેજ્ઞા; સે તેણટ્ટેણં ગોયમા ! જાવ અત્યેગતિપ્પ નો સંજમેજ્ઞા ।

૬. [પ્ર૦] અસોચ્છા ણં મંતે ! કેવલિસ્સ વા જાવ ઉવાસિયાપ્પ વા કેવલેણં સંવરેણં સંવરેજ્ઞા ? [૩૦] ગોયમા ! અસોચ્છા ણં કેવલિસ્સ વા જાવ અત્યેગતિપ્પ કેવલેણં સંવરેણં સંવરેજ્ઞા, અત્યેગતિપ્પ કેવલેણં જાવ નો સંવરેજ્ઞા । [પ્ર૦] સે કેળટ્ટેણં જાવ નો સંવરેજ્ઞા ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ ણં અજ્ઞવસાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે કહે મયદ્દ સે ણં અસોચ્છા કેવલિસ્સ વા જાવ કેવલેણં સંવરેણં સંવરેજ્ઞા; જસ્સ ણં અજ્ઞવસાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે નો કહે મયદ્દ સે ણં અસોચ્છા કેવલિસ્સ વા જાવ નો સંવરેજ્ઞા, સે તેણટ્ટેણં જાવ નો સંવરેજ્ઞા ।

૭. [પ્ર૦] અસોચ્છા ણં મંતે ! કેવલિસ્સ વા જાવ કેવલં આમિણિબોહિયનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા ? [૩૦] ગોયમા ! અસોચ્છા ણં કેવલિસ્સ વા જાવ ઉવાસિયાપ્પ વા અત્યેગતિપ્પ કેવલં આમિણિબોહિયનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા, અત્યેગતિપ્પ કેવલં આમિણિબોહિયનાણં નો ઉપ્પાડેજ્ઞા । [પ્ર૦] સે કેળટ્ટેણં જાવ નો ઉપ્પાડેજ્ઞા ? [૩૦] ગોયમા ! જસ્સ ણં આમિણિબોહિયનાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે કહે મયદ્દ સે ણં અસોચ્છા કેવલિસ્સ વા જાવ કેવલં આમિણિબોહિયનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા; જસ્સ ણં આમિણિબોહિયનાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે નો કહે મયદ્દ સે ણં અસોચ્છા કેવલિસ્સ વા, જાવ કેવલં આમિણિબોહિયનાણં નો ઉપ્પાડેજ્ઞા; સે તેણટ્ટેણં જાવ નો ઉપ્પાડેજ્ઞા ।

૮. [પ્ર૦] અસોચ્છા ણં મંતે ! કેવલિં જાવ કેવલં સુચનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા ? [૩૦] એવં જહા આમિણિબોહિયનાણસ્સ વસલ્લયા મણિયા તહા સુચનાણસ્સ વિ માણિયલ્લ; નવરં સુચનાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે માણિયલ્લે । એવં ચેવ કેવલં ઓહિનાણં માણિયલ્લં, નવરં ઓહિનાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે માણિયલ્લે । એવં કેવલં મણપજ્જવનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા, નવરં મણપજ્જવનાણાવરણિજ્ઞાણં કમ્માણં સ્સઓવસમે માણિયલ્લે ।

કર્મોનો ક્ષયોપશમ કર્યો છે તે જીવ કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના પણ શુદ્ધ સંયમવડે સંયમયતના કરે, અને જે જીવે યતનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ નથી કર્યો તે જીવ કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના શુદ્ધ સંયમવડે સંયમયતના ન કરે, માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી એમ કહ્યું છે કે, યાવત્ 'કોઈ સંયમ ન કરે.'

સંવર.

સંવરનો હેતુ.

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કેવલી પાસેથી કે યાવત્ તેના પક્ષની ઉપાસિકા પાસેથી સાંભળ્યા વિના કોઈ જીવ શુદ્ધ સંવરવડે સંવર-આસ્ત્રવનો રોધ-કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના પણ કોઈ જીવ શુદ્ધ સંવરવડે આસ્ત્રવને રોકે, અને કોઈ જીવ શુદ્ધ સંવરવડે આસ્ત્રવને ન રોકે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એ પ્રમાણે શા હેતુથી કહ્યો છે કે-‘યાવત્ સંવર ન કરે’ ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જે જીવે અધ્યવસાનાવરણીય (માત્રચારિત્રાવરણીય) કર્મોનો ક્ષયોપશમ કર્યો છે તે જીવ કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના પણ શુદ્ધ સંવરવડે સંવર-આસ્ત્રવનો રોધ-કરી શકે, અને જે જીવે અધ્યવસાનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ નથી કર્યો તે જીવ કેવલી પાસેથી સાંભળ્યા વિના સંવર ન કરી શકે; માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી એમ કહ્યું છે કે-‘યાવત્ સંવર ન કરે’.

આમિણિબોધિક જ્ઞાન.

આમિણિબોધિક જ્ઞાનનો હેતુ.

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના કોઈ જીવ શુદ્ધ આમિણિબોધિક જ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કેવલી પાસેથી કે યાવત્ તેની ઉપાસિકા પાસેથી સાંભળ્યા વિના પણ કોઈ જીવ શુદ્ધ આમિણિબોધિક જ્ઞાન ઉપજાવી શકે, અને કોઈ જીવ શુદ્ધ આમિણિબોધિક જ્ઞાન ન ઉપજાવી શકે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એમ શા હેતુથી કહ્યો છે કે-‘યાવત્ ન ઉપજાવી શકે’ ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જે જીવે આમિણિબોધિક જ્ઞાનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ કર્યો છે તે જીવ કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના પણ શુદ્ધ આમિણિબોધિકજ્ઞાન ઉપજાવી શકે, અને જે જીવે આમિણિબોધિક જ્ઞાનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ કર્યો નથી તે જીવ કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના શુદ્ધ આમિણિબોધિકજ્ઞાન ન ઉપજાવી શકે. માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી એમ કહ્યું છે કે-‘યાવત્ ન ઉપજાવી શકે.’

શ્રુતજ્ઞાન.

અવધિજ્ઞાન અને મન:પર્યવજ્ઞાન.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કેવલી પાસેથી યાવત્ સાંભળ્યા વિના કોઈ જીવ શુદ્ધ શ્રુતજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરી શકે ? [૩૦] એ પ્રમાણે જેમ આમિણિબોધિકજ્ઞાનની દૃષ્ટીકત કહી, તેમ શ્રુતજ્ઞાનની પણ જાણવી; પરન્તુ અહીં શ્રુતજ્ઞાનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ કહેવો. એ પ્રમાણે શુદ્ધ અવધિજ્ઞાનની પણ દૃષ્ટીકત કહેવી, પણ ત્યાં અવધિજ્ઞાનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ કહેવો; એ રીતે શુદ્ધ મન:પર્યવજ્ઞાન પણ ઉત્પન્ન કરે, પરન્તુ મન:પર્યવજ્ઞાનાવરણીય કર્મોનો ક્ષયોપશમ કહેવો.

९. [प्र०] असोच्छा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाप वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा ! [उ०] एवं चेव, जखरं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए भाणियधे, सेसं तं चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुद्धह—जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।

१०. [प्र०] असोच्छा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाप वा केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाप, केवलं बोहिं बुद्धेज्जा, केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पण्णज्जा, केवलं बंमचेरवासं आवसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा; जाव केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, केवलनाणं उप्पाडेज्जा ! [उ०] गोयमा ! असोच्छा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाप वा अत्येगतिए केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाप, अत्येगतिए केवलपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाप; अत्येगए केवलं बोहिं बुद्धेज्जा, अत्येगतिए केवलं बोहिं णो बुद्धेज्जा; अत्येगतिए केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पण्णज्जा, अत्येगतिए जाव नो पण्णज्जा; अत्येगतिए केवलं बंमचेरवासं आवसेज्जा, अत्येगतिए केवलं बंमचेरवासं नो आवसेज्जा; अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा; एवं संवरेण वि; अत्येगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्येगतिए जाव नो उप्पाडेज्जा; एवं जाव मणपज्जवनाणं, अत्येगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुद्धह—असोच्छा णं तं चेव जाव अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतरायाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, एवं खरिस्तावरणिज्जाणं, जयणावरणिज्जाणं, अज्झवसाणावरणिज्जाणं, आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाणं, जाव मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ; जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं जाव खए नो कडे भवइ से णं असोच्छा केवलिस्स वा जाव केवलपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाप, केवलं बोहिं नो बुद्धेज्जा, जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा । जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतरायाणं, एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्छा केवलिस्स वा जाव केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाप, केवलं बोहिं बुद्धेज्जा, जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।

९. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी [सांभळ्या विना कोइ जीव] केवलज्ञानने उत्पन्न करी शके ? [उ०] पूर्वनी पेटे जाणवुं, परन्तु अहीं 'केवलज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षय' कहेवो. बाकी बहुं पूर्वनी पेटे जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के 'यावत् केवलज्ञानने पण उत्पन्न करी शके.'

१०. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण शुं कोइ जीव केवलज्ञानीए कहेला धर्मने श्रवण करे—जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, मुंड यइने अगारवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, शुद्ध संयमवडे संयमयतना—करे, शुद्ध संवरवडे संवर—आस्रवनो रोध—करे, शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उत्पन्न करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध केवलज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् तेनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे अने कोइ जीव केवलिए कहेला धर्मने न जाणे, कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे; कोइ जीव मुंड यइने आगारवास त्यजी शुद्ध अनगारपणुं स्वीकारे अने कोइ जीव न स्वीकारे; कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे अने कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे; कोइ जीव शुद्ध संयम वडे संयमयतना करे अने कोइ जीव शुद्ध संयमवडे संयम न करे; ए प्रमाणे संवरने विषे पण जाणवुं; कोइ जीव शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव यावत् न उत्पन्न करे; ए प्रमाणे यावत् मनःपर्यवज्ञान सुधी जाणवुं, कोइ जीव केवलज्ञान उपजावे अने कोइ जीव केवलज्ञान न उपजावे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहुं छे के—'धर्मने सांभळ्या शिवाय ते प्रमाणे यावत् कोइ जीव केवलज्ञान न उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! १ जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, २ जेणे दर्शनावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, ३ जेणे धर्मातरायिक कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, ४ ए प्रमाणे चारित्रावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, ५ यतनावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, ६ अध्यवसानावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, ७ आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, यावत् १० मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम नथी कर्यो, अने ११ जेणे केवलज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षय नथी कर्यो ते जीव केवलज्ञानी पासेथी यावत् सांभळ्या विना केवलज्ञानीए कहेला धर्मने सांभळ्याने प्राप्त न करे, अर्थात् न जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे, यावत् केवलज्ञानने न उत्पन्न करे. तथा जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम कर्यो छे, जेणे दर्शनावरणीय कर्मो नो क्षयोपशम कर्यो छे, जेणे धर्मातरायिक कर्मो नो क्षयोपशम कर्यो छे, ए प्रमाणे यावत् जेणे केवलज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षय कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण केवलिए कहेला धर्मने जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने यावत् केवलज्ञानने उत्पन्न करे.

केवलज्ञान.

धर्मबोध, शुद्धसम्यक्त्वनो अनुभव वगैरे.

केवलज्ञानितुं वचन सांभळ्या शिवाय कोई धर्मादिद्वारे प्राप्त करे तेनी हेतु.

११. तस्स णं मंते ! छट्ठंछट्ठेणं भणिक्खसेणं तवोकम्मेणं उहुं बाहाओ पंगिज्झिय पंगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावण-भूमिप आयावेमाणस्स पंगतिभइयाए, पैगइउवसंतयाए, पंगतिपयणुकोह-माण-माया-लोमयाए, मिउमइवसंपभयाए, अंहीण-याए, भइयाए, विणीययाए, अजया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-ऽपोह-मगणगवेसणं करेमाणस्स चिभंगे नामं अज्जाणे समुप्पज्जर, से णं तेणं विभंगनाणेणं समुप्पणेणं अहणेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ, पासइ; से णं तेणं विभंगनाणेणं समुप्पणेणं जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासंडत्थे, सारंभे, सपरिग्गहे, संकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसु-ज्झमाणे वि जाणइ, से णं पुट्टामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ, सम्मत्तं पडिवज्जिता समणधम्मं रोपति, समणधम्मं रोपत्ता चरित्तं पडिवज्जति, चरित्तं पडिवज्जिता लिंणं पडिवज्जइ, तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं सम्मत्तसण-पज्जवेहिं परिवहुमाणेहिं परिवहुमाणेहिं से विभंगे अज्जाणे सम्मत्तपरिग्गहिंए खिप्पामेव ओही परावत्तइ ।

१२. [प्र०] से णं मंते ! कतिसु लेस्सासु होजा ? [उ०] गोयमा ! तिसु विसुज्जलेस्सासु होजा, तं जहा-तेउले-स्ताए, पग्गलेस्साए, सुकलेस्साए ।

१३. [प्र०] से णं मंते ! कतिसु णाणेषु होजा ? [उ०] गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयणाण-ओहिनाणेषु होजा ।

१४. [प्र०] से णं मंते ! किं सजोगी होजा, अजोगी होजा ? [उ०] गोयमा ! सजोगी होजा, नो अजोगी होजा ।

१५. [प्र०] जइ सजोगी होजा, किं मणजोगी होजा, वइजोगी होजा, कायजोगी होजा ? [उ०] गोयमा ! मणजोगी वा होजा, वइजोगी वा होजा, कायजोगी वा होजा ।

१६. [प्र०] से णं मंते ! किं सागारोवउत्ते होजा, अणागारोवउत्ते वा होजा ? [उ०] गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होजा, अणागारोवउत्ते वा होजा ।

१७. [प्र०] से णं मंते ! कयरम्मि संघयणे होजा ? [उ०] गोयमा ! वइरोसहनाराथसंघयणे होजा ।

११. ते जीवने निरंतर छट्ट छट्टना तप करवापूर्वक सूर्यनी सामे उंचा हाथ राखी राखीने आतापना भूमिमां आतापना लेता, प्रकृतिना भद्रपणाथी, प्रकृतिना उपशांतपणाथी, स्वभावथी क्रोध, मान, माया अने लोभ घणा ओछा थयेला होवाथी, अलंत मार्दव-नम्रताने प्राप्त थयेला होवाथी, आलीनपणाथी, भद्रपणाथी अने विनीतपणाथी अन्य कोइ दिवसे शुभ अध्यवसायवडे, शुभ परिणामवडे, विशुद्ध लेख्याओवडे तदावरणीय (विभंगज्ञानावरणीय) कर्मोना क्षयोपशमथी, ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेप्रणा करता विभंग नामे अज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थएल विभंगज्ञान वडे जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट असंख्येय हजार योजनोने जाणे छे अने जुए छे; उत्पन्न थएला विभंगज्ञान वडे ते जीवोने पण जाणे छे अने अजीवोने पण जाणे छे; पाखंडी, आरंभवाळा, परिग्रहवाळा अने संकेशने प्राप्त थयेला जीवोने पण जाणे छे अने विशुद्ध जीवोने पण जाणे छे; ते विभंगज्ञानी पहिलांज सम्यक्त्वने प्राप्त करे छे; प्राप्त करी श्रमण-धर्म उपर रुचि करे छे, रुचि करी चारित्रने स्वीकारे छे. चारित्रने स्वीकारी लिंगवेपने स्वीकारे छे; पछी ते विभंगज्ञानिना मिध्यात्वपर्यायो क्षीण यता यता अने सम्यग्दर्शन पर्यायो वधता वधता ते विभंग अज्ञान सम्यक्त्व युक्त थाय छे, अने शीघ्र अवधिरूपे परावर्तन पावे छे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ते अवधिज्ञानी जीव केटली लेख्याओमां होय ? [उ०] हे गौतम ! त्रण विशुद्ध लेख्याओमां होय. ते आ-प्रमाणे—तेजोलेख्या, पद्मलेख्या अने शुक्कलेख्या.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] जीव केटला ज्ञानोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान—ए त्रण ज्ञानोमां होय.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] सयोगी (मनोयोगादिसहित) होय के अयोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सयोगी होय पण अयोगी न होय.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते सयोगी होय तो शुं मनयोगी होय, वचनयोगी होय के काययोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनयोगी होय, वचनयोगी होय अने काययोगी पण होय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते साकार-ज्ञानउपयोगवाळो होय के अनाकार-दर्शनउपयोगवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते साकारउपयोगवाळो पण होय अने अनाकारउपयोगवाळो पण होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संघयणमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वज्ररूपभनाराचसंघयणवाळो होय.

१-जिहते क, जिहते कः । २-पगती-क-कः । ३-पगई-क-कः । ४-अहीवण- । ५-लेसासु क-कः । ६-जोवी वा कः ।

कैवल्यप्रसूचना
वचनेन सांख्य-
ज्ञानाय सम्यक्त्वादि-
कने स्वीकारे.

विभंगज्ञाननी उत्प-
त्ति.

सम्यग्दर्शननी प्राप्ति-
चारित्र्यनो स्वीकार.

अवधिज्ञाननी
उत्पत्ति.
केरवा.

ज्ञान.

योग.

अनयोगी-इलादि-

उपयोग.

संघयण.

१८. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होजा ? [उ०] गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे संठाणे होजा ।

१९. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि उच्चसे होजा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीय, उच्चोसेणं पंचधनुसतिय होजा ।

२०. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि माउप होजा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्टवासाउप, उच्चोसेणं पुच्चकोडी-माउप होजा ।

२१. [प्र०] से णं भंते ! किं सवेदप होजा, अवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! सवेदप होजा, नो अवेदप होजा ।

२२. [प्र०] जह सवेदप होजा किं इत्थिवेदप होजा, पुरिसवेदप होजा, पुरिस-नपुंसगवेदप होजा, नपुंसगवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! नो इत्थिवेदप होजा, पुरिसवेदप वा होजा, नो नपुंसगवेदप होजा, पुरिस-नपुंसगवेदप वा होजा ।

२३. [प्र०] से णं भंते ! किं सकसाई होजा अकसाई होजा ? [उ०] गोयमा ! सकसाई होजा, नो अकसाई होजा ।

२४. [प्र०] जह सकसाई होजा से णं भंते ! कतिसु कसापसु होजा ? [उ०] गोयमा ! चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होजा ।

२५. [प्र०] तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेजा अज्झवसाणा पणत्ता ।

२६. [प्र०] ते णं भंते ! किं पसत्था, अप्यसत्था ? [उ०] गोयमा ! पसत्था, नो अप्यसत्था ।

२७. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं बहुमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं तो अप्याणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय-जाव विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिं तो अप्याणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिं तो अप्याणं विसंजोएइ; जावो धि य से इमावो नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामावो चत्तारि उत्तरपयडीवो, तासिं च णं उच्चग-

१८. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संस्थानमां होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने छ संस्थानमांनुं कोइ पण एक संस्थान होय.

संस्थान.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटली उंचाइवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी सात हाथ अने उत्कृष्टथी पांचसो धनुषनी उंचाइवाळो होय.

उंचाइ.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटला आयुषवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी कांइक वधारे आठ वर्ष, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिआयुषवाळो होय.

आयुष.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते वेदसहित होय के वेदरहित होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वेदसहित होय पण वेदरहित न होय.

वेद.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदसहित होय तो शुं १ स्त्रीवेदवाळो होय, २ पुरुषवेदवाळो होय, ३ नपुंसकवेदवाळो होय के ४* पुरुषनपुंसकवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्त्रीवेदवाळो न होय, पण पुरुषवेदवाळो होय; नपुंसकवेदवाळो न होय, पण पुरुषनपुंसकवेदवाळो होय.

पुरुषवेदादि.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते (अवधिज्ञानी) सकषायी होय के अकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकषायी होय, पण कषायरहित न होय.

कषाय.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते कषायवाळो होय तो तेने केटला कषायो होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने संज्वलनक्रोध, मान, माया अने लोभ-ए चार कषाय होय.

संज्वलनक्रोधादि.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! तेने केटला अव्यवसायो कक्षा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने असंख्याता अव्यवसायो कक्षां छे.

अव्यवसायो.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! ते अव्यवसायो प्रशस्त होय के अप्रशस्त होय ? [उ०] हे गौतम ! प्रशस्त अव्यवसायो होय, पण अप्रशस्त न होय.

प्रशस्त अव्यवसाय.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) वृद्धि पामता प्रशस्त अव्यवसायोवडे अनंत नारकना भवोथी पोताना आत्माने विमुक्त करे, अनंत तिर्यंचोना भवोथी आत्माने विमुक्त करे, अनंत मनुष्यभवोथी आत्माने विमुक्त करे, अने अनंत देवभवोथी आत्माने विमुक्त करे. तथा तेनी जे आ नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति अने देवगति नामे चार उत्तर प्रकृतिओ छे, तेनी अने बीजी प्रकृतिओना आधारभूत अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करीने अप्रत्याख्याना कषायरूप क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, क्षय करीने प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करी संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभनो

नारक, तिर्यंच, देव अने मनुष्य भवोथी मुक्ति.

अनन्तानुबंधी-कषायनो क्षय.

१ बहुमाणेहिं च ।

२१. * किंजां छेव करवा कगेरेवी नपुंसक भवेको-अर्थात् कृत्रिम नपुंसक भवेको होय ते पुरुषनपुंसक कहेवाय छे-टीका.

द्विप अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अणं० खवेइत्ता अपखखलाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अपख० खवेइत्ता पंचखखलाणावरणकोह-माण-माया-लोभे खवेइ, पख० खवेइत्ता संजलणकोह-माण-माया-लोभे खवेइ, संज० खवेइत्ता पंचविहं नाणा-वरणिजं, नवविहं दरिसणावरणिजं, पंचविहं अंतरायं, तालमत्याकडं च णं मोहणिजं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुण्णकरणं अणुपविट्टस्स अणंते अणुत्तरे निहाघाए निरायरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाण-दंसणे समुप्पन्ने ।

२८. [प्र०] से णं भंते ! केवलपन्नं धम्मं आघवेज्ज वा, पन्नवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ? [उ०] णो तिण्णट्ठे समट्ठे, णणत्थ पगणाएण वा, पगवागरणेण वा ।

२९. [प्र०] से णं भंते ! पलावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] णो इण्णट्ठे समट्ठे, उववेसं पुण करेजा ।

३०. [प्र०] से णं भंते ! सिज्जति, जाव अंतं करेति ? [उ०] हंता सिज्जति, जाव अंतं करेति ।

३१. [प्र०] से णं भंते ! किं उहं होजा, अहे होजा, तिरियं होजा ? [उ०] गोयमा ! उहं वा होजा, अहे वा होजा, तिरियं वा होजा; उहं होज्जमाणे सदावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंतपरियाएसु वट्टवेयइपण्णसु होजा; साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा होजा, पंडगवणे वा होजा; अहे होज्जमाणे गड्ढाए वा, दरीए वा होजा; साहरणं पडुच्च पायाले वा, भवणे वा होजा; तिरियं होज्जमाणे पन्नरससु कम्मभूमीसु होजा; साहरणं पडुच्च अहाइज्जदीव-समुइ-तवेकडेसभाए होजा ।

३२. [प्र०] ते णं एगसमए णं केवतिया होजा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं एको वा, दो वा, तिभि वा; उक्कोसेणं दस, से तेण्णट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलपन्नं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलि० जाव नो लभेज्जा सवणयाए, जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा’ ।

क्षय करे, पछी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय कर्म, नव प्रकारे दर्शनावरणीय कर्म, पांच प्रकारे अंतराय कर्म, तथा मोहनीय कर्मने छे-दायेल मस्तकवाळ ताडवृक्षना समान [क्षीण] करीने कर्म रजने विखेरी नांखनार अपूर्व करणमां प्रवेश करेला एवा तेने अनंत, अनुत्तर, व्याघातरहित, आवरणरहित, सर्व पदार्थने ग्रहण करनार, प्रतिपूर्ण, श्रेष्ठ एवं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे.

अश्रुत्वा केवली
भगवोपदेश न करे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! ते [केवलज्ञानी] केवलिए कहेल धर्मने कहे, जणावे अने प्ररूपे ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ योग्य नथी, परन्तु एक न्याय-उदाहरण अने एक [प्रश्ना] उत्तर शिवाय. [अर्थात् ते अश्रुत्वा केवली एक उदाहरण या एक प्रश्ना उत्तर शिवाय धर्मनो उपदेश न करे.]

प्रत्रज्या न आपे.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! ते [केवली] कोइने प्रत्रज्या आपे, मुंडे-दीक्षा आपे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी, पण मात्र [‘अमुकनी पासे प्रत्रज्या ग्रहण करो’ एवो] उपदेश करे.

सिद्ध थाय.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अश्रुत्वा केवलज्ञानी) सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अंत करे ? [उ०] हा, सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे.

ऊर्ध्व, अधो अने
तिर्यग् लोकमां होय.
ऊर्ध्वलोकमां वृत्त
वैताड्यमां होय.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अश्रुत्वा केवलज्ञानी) ऊर्ध्वलोकमां होय, अधोलोकमां होय के तिर्यग् लोकमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते ऊर्ध्वलोकमां पण होय, अधोलोकमां पण होय अने तिर्यग् लोकमां पण होय. जो ते ऊर्ध्वलोकमां होय तो शब्दापाति, विकटापाति, गंधापाति, अने माल्यवंत नामे वृत्तवैताड्य पर्वतोमां होय. तथा संहरणने आश्रयी सौमनस्यवनमां के पांडुकवनमां होय. जो ते अधोलोकमां होय तो गर्ता—अधोलोकग्रामादिमां के गुफामां होय, तथा संहरणने आश्रयी पातालकलशमां के भवनमां (भवनवासि देवोना रहेटाणमां) होय, जो ते तिर्यग्लोकमां होय तो ते पंदर कर्मभूमिमां होय, अने संहरणने आश्रयी अदी द्वीप अने समुद्रोना एक भागमां होय.

वे एक समये केटला
होय ?

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अश्रुत्वा केवलज्ञानी] एक समये केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टथी दस होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कछुं छे के, केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीवने केवलिए कहेल धर्म-श्रवणनो लाभ थाय अने केवली पासेथी सांभळ्या सित्राय कोइ जीवने केवलप्रणीत धर्म श्रवणनो लाभ न थाय, यावत् कोइ जीव केवलज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव केवलज्ञानने न उत्पन्न करे.

३३. सोच्चा णं मंते ! केवलस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपन्नसं धम्मं लमेज्जा सवणयाए ? [उ०] गोयमा ! सोच्चा णं केवलस्स वा, जाव अत्थेगतिए केवलपन्नसं धम्मं, एवं जा चेव असोच्चाए वत्तद्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियद्वा, नवरं अभिलाषो 'सोच्चे'सि, सेसं तं चेव निवरसेसं, जाव जस्स णं मणपञ्चवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलस्स वा, जाव उवासियाए वा केवलपन्नसं धम्मं लमेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्जेज्जा, जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।

३४. [प्र०] तस्स णं अट्टमंअट्टमेणं अणिक्खिसेणं तथोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइमइयाए, तहेव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जर, से णं तेणं ओहिणाणेणं समुप्पजेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ ।

३५. [प्र०] से णं मंते ! कतिसु लेस्तासु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! छसु लेस्तासु होज्जा, तं जहा-कण्हलेस्ताए, जाव सुक्कलेस्ताए ।

३६. [प्र०] से णं मंते ! कतिसु णाणेषु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! तिसु वा, खउसु वा होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिणाणेषु होज्जा, खउसु होज्जमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयणाण-ओहिणाण-मणपञ्चव-णाणेषु होज्जा ।

३७. [प्र०] से णं मंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? [उ०] एवं ओगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चसं, आउयं च एयाणि सद्धानि जहा असोच्चाए तहेव भाणियद्वाणि ।

३८. [प्र०] से णं मंते ! किं सवेदए ? पुच्छा [उ०] गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ।

३३. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी यावत् तेना पक्षणी उपासिका पासेथी [धर्म] सांभळीने कोइ जीव केवलप्ररूपित धर्म प्राप्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केवलज्ञानी पासेथी यावत् सांभळीने कोइ जीव केवलप्ररूपित धर्मने प्राप्त करे अने कोइ जीव न करे. ए प्रमाणे यावत् 'असोच्चा'नी जे वक्तव्यता छे ते ज वक्तव्यता 'सोच्चा' ने पण कहेवी. परन्तु अहीं 'सोच्चा' एवो पाठ कहेवो. बाकी सर्व पूर्व कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे जीवे मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षयोपशम कर्यो छे, अने जे जीवे केवलज्ञानावरणीय कर्मोनी क्षय कर्यो छे ते जीवने केवली पासेथी यावत् तेनी उपासिका पासेथी केवलीए कहेल धर्मनो लाभ थाय, अने ते शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, यावत् केवलज्ञानने प्राप्त करे.

३४. (केवलज्ञानी वगेरे पासेथी धर्म सांभळीने सम्यग्दर्शनादि जेने प्राप्त थयेल छे एवा) तेने निरन्तर अट्टम तप करवा वडे आत्माने भावित करता, प्रकृतिनी भद्रताथी तेमज यावत् मार्गनी गवेषणा करता अवधिज्ञान उत्पन्न थाय छे. अने ते उत्पन्न थएल अवधिज्ञान वडे जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्टथी अलोकने विषे लोकप्रमाण असंख्य खंडोने जाणे छे अने जुए छे.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] जीव केटली लेस्याओमां वर्ततो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते *छ ए लेस्यामां वर्ततो होय छे, ते आ प्रमाणे-कृष्णलेस्या, यावत् शुक्कलेस्या.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] केटलां ज्ञानमां वर्ततो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते त्रण के चार ज्ञानमां होय. जो त्रण ज्ञानमां होय तो आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमां होय, जो चार ज्ञानमां होय तो ते आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमां होय.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] सयोगी होय के अयोगी होय ? [उ०] पूर्व कह्या प्रमाणे योग, उपयोग, संघयण, संस्थान, उंचाइ, अने आयुष् ए वधा जेम 'असोच्चा' ने कह्या (सू० १२-२०) तेम अहीं कहेवां.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) शुं वेदसहित होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! वेदसहित होय के वेदरहित पण होय.

केवलप्ररूपित पासेथी धर्म सांभळीने कोइ जीवने पासेथी अने कोइ न धर्म इत्यादि.

केवलज्ञानपासेथी धर्म अवधि करीने सम्यग्दर्शनादियुक्त जीवने अवधिज्ञानादिनी प्राप्ति.

केवला.

ज्ञान.

योग.

वेद.

१ सवेव क-ज । २ सवेव क-ज । ३ जोगोवजो- ग-घ-ङ ।

१५. *यद्यपि त्रण प्रकृत एवी भावकेश्यामां ज ज्ञान प्राप्त थाय छे, तो पण इत्येकेश्यानी अपेक्षाए छ ए केस्यामां ते अवधिज्ञानी होय छे.—टीका.

३९. [प्र०] जह अवेदप होजा किं उवसंतवेदप होजा, क्षीणवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! नो उवसंतवेदप होजा, क्षीणवेदप होजा ।

४०. [प्र०] जह सवेदप होजा किं इत्थीवेदप होजा, पुरिसवेदप होजा, नपुंसगवेदप होजा, पुरिस-नपुंसगवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! इत्थीवेदप वा होजा, पुरिसवेदप वा होजा, पुरिस-नपुंसगवेदप वा होजा ।

४१. [प्र०] से णं मंते ! किं सकसाई होजा, अकसाई होजा ? [उ०] गोयमा ! सकसाई वा होजा, अकसाई वा होजा ।

४२. [प्र०] जह अकसाई होजा किं उवसंतकसाई होजा, क्षीणकसाई होजा ? [उ०] गोयमा ! नो उवसंतकसाई होजा, क्षीणकसाई होजा ।

४३. [प्र०] जदि सकसाई होजा से णं मंते ! कतिसु कसापसु होजा ? [उ०] गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा पकम्मि वा होजा । चउसु होजमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होजा, तिसु होजमाणे तिसु-संजलणमाण-माया-लोभेसु होजा, दोसु होजमाणे दोसु-संजलणमाया-लोभेसु होजा, पगम्मि होजमाणे पगम्मि-संजलणलोभे होजा ।

४४. [प्र०] तस्स णं मंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! असंखेजा, एवं जहा असोच्चाप तहेव जाव केवलवरनाण-दंसणे समुप्यज्जह ।

४५. [प्र०] से णं मंते ! केवलपन्नसं धम्मं आघवेज्ज वा, पद्मवेज्ज वा, परुवेज्ज वा ? [उ०] हंता, आघवेज्ज वा, पद्मवेज्ज वा, परुवेज्ज वा ।

४६. [प्र०] से णं मंते ! पद्मावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पद्मावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ।

४७. [प्र०] तस्स णं मंते ! सिस्सा वि पद्मावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, पद्मावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ।

उपशांतवेद के क्षीणवेद होय ?

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित होय तो शुं ते उपशांतवेदवाळो होय के क्षीणवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशांतवेदवाळो न होय, पण क्षीणवेदवाळो होय.

क्षीणवेदादि.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित होय तो शुं ते क्षीणवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय, नपुंसकवेदवाळो होय के पुरुष-नपुंसकवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते क्षीणवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय के पुरुषनपुंसकवेदवाळो पण होय.

सकषायी के अकषायी ?

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) शुं सकषायी होय के अकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकषायी होय के अकषायी पण होय.

उपशांत के क्षीणकषायी ?

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते अकषायी होय तो शुं उपशांतकषायी होय के क्षीणकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशांतकषायी न होय, पण क्षीणकषायी होय.

केटला कषायो होय ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जो सकषायी होय तो ते केटला कषायोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते चार कषायोमां, त्रण कषायोमां, वे कषायोमां के एक कषायोमां होय. जो चार कषायोमां होय तो संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभमां होय. जो त्रण कषायोमां होय तो संज्वलन मान, माया अने लोभमां होय. जो वे कषायोमां होय तो संज्वलन माया अने लोभमां होय. अने जो एक कषायोमां होय तो एक संज्वलन लोभमां होय.

अध्यवसायो.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! तेने केटलां अध्यवसायो कक्षा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने असंख्यात अध्यवसायो कक्षां छे. ए प्रमाणे जेम 'असोच्चा' ने कसुं (सू. २५) तेम यावत् 'तेने श्रेष्ठ केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे' त्यां सुधी कहेवुं.

धर्मापदेश.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवलज्ञानी) केवलिए कहेला धर्मने कहे, जणावे, प्ररूपे ? [उ०] हा, गौतम ! ते (केवलप्रवृत्त धर्मने) कहे, जणावे, अने प्ररूपे.

प्रव्रज्या आपे.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! ते कोइने प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! ते प्रव्रज्या आपे-दीक्षा आपे.

तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! तेना (सोच्चा केवलज्ञानी) शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे-दीक्षा आपे.

४८. [प्र०] तस्स णं भंते ! पस्सिस्सा वि पद्दावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, पद्दावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ।
 ४९. [प्र०] से णं भंते ! सिज्झति, बुज्झति, जाव अंतं करेइ ? [उ०] हंता, सिज्झति, जाव अंतं करेति ।
 ५०. [प्र०] तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झंति, जाव अंतं करेति ? [उ०] हंता, सिज्झंति, जाव अंतं करेति ।
 ५१. [प्र०] तस्स णं भंते ! पस्सिस्सा वि सिज्झंति, जाव अंतं करेति ? [उ०] एवं च्चैव जाव अंतं करेति ।
 ५२. [प्र०] से णं भंते ! किं उहं होज्जा ? [उ०] जहेव असोच्चाय, जाव तदेकवेसभाय होज्जा ।
 ५३. [प्र०] ते णं भंते ! एगसमय णं केवइया होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहक्केणं एक्को वा, दो वा, तिभि वा, उक्को-
 सेणं अट्टसयं, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुष्सति-‘सोच्चा णं केवलस्स वा, जाव केवलउवासियाय वा, जाव अत्थेगतिप
 केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिप केवलनाणं णो उप्पाडेज्जा’ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

नवमसए पगतीसइमो उद्देशो समत्तो ।

४८. [प्र०] हे भगवन् ! तेना प्रशिष्यो पण प्रत्रय्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! प्रत्रय्या आपे, दीक्षा आपे.
 ४९. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवली) सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखनो अन्त करे ? [उ०] हा गौतम ! ते सिद्ध
 थाय, यावत् सर्व दुःखनो नाश करे.
 ५०. [प्र०] हे भगवन् ! तेना शिष्यो पण सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखनो अंत करे ? [उ०] हा, गौतम ! सिद्ध थाय, यावत् सर्व
 दुःखनो नाश करे.
 ५१. [प्र०] हे भगवन् ! तेना प्रशिष्यो पण सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखनो अन्त करे ? [उ०] ए प्रमाणे यावत् सर्व दुःखनो
 अन्त करे.
 ५२. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवली) शुं ऊर्ध्वलोकमां होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम ‘असोच्चा’ केवली संबंधे कहुं (स.
 ३१.) ते प्रमाणे जाणवुं, यावत् [अदी द्वीप समुद्र के] तेना एक भागमां होय.
 ५३. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवली) एक समयमां केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक समयमां जघन्यथी एक, बे के
 व्रण होय, अने उत्कृष्टथी एक सो आठ होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के, ‘केवली पासेथी यावत् केवलिनी उपासिका-
 पासेथी सांभळीने यावत् कोइ जीव केवलज्ञानने उपजावे अने कोइ जीव केवलज्ञानने न उपजावे.’ हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् !
 ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

प्रशिष्यो पण
प्रत्रय्या आपे.
सिद्ध थाय.

शिष्यो पण
सिद्ध थाय.

प्रशिष्यो पण
सिद्ध थाय.

शुं ऊर्ध्वलोकमां
होय.

एकसमयमां
केटला.

नवम शतके एकत्रीशमो उद्देशक समाप्त.

बत्तीसइमो उद्देशो.

१. तेणं कालेणं तेणं समणं वाणियग्गामे णमं नयरे होत्था, । वन्नओ । दूतिपलासए चेए । सामी समोसडे । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समणं पासावच्छिजे गंगेए णामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामेते ठिष्सा समणं भगवं महावीरं एवं वंदासी-

२. [प्र०] संतरं भंते! नेरइया उववज्जंति, निरंतरं नेरइया उववज्जंति? [उ०] गंगेया! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति।

३. [प्र०] संतरं भंते! असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति? [उ०] गंगेया! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति; एवं जाव थणियकुमारा।

४. [प्र०] संतरं भंते! पुढविकाइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति? [उ०] गंगेया! नो 'संतरं पुढविकाइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति; एवं जाव वणस्सइकाइया, बेइदिया जाव वेमाणिया एते जहा णेरइया।

५. [प्र०] संतरं भंते! नेरइया उव्वट्ठंति, निरंतरं नेरइया उव्वट्ठंति? [उ०] गंगेया! संतरं पि नेरइया उव्वट्ठंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्ठंति; एवं जाव थणियकुमारा।

बत्तीसइमो उद्देशक.

१. ते काले, अने ते समये वाणियग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. दूतिपलासा नामे चैत्य हतुं. श्रीमहावीर स्वामी समवसर्था. पर्षद् वांद्वा निकळी. धर्मोपदेश कर्यो. पर्षद् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रीपार्श्वप्रभुना शिष्य गांगेय नामे अनगार ज्यां श्रमण भगवान् महावीर विराजमान हता त्यां आव्या, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे थोडे दूर बेसीने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने ए प्रमाणे कहुं-

२. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको *सांतर (अन्तरसहित) उत्पन्न थाय छे के निरंतर (अन्तर शिवाय) उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! नैरयिको सांतर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारो सांतर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! असुरकुमारो सांतर पण उत्पन्न थाय छे, अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

४. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिक जीवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! पृथिवीकायिक जीवो सान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक जीवो सुधी जाणवुं. बेइन्द्रिय जीवोथी मांडी यावद् वैमानिको नैरयिकोनी पेटे (सू० २) जाणवा.

५. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको सांतर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे? [उ०] हे गांगेय! नैरयिको सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी जाणवुं.

१ अयं पाठो नास्ति छ । २ -पलासे चे- घ-ऊ । ३ -वपच्छिता ग-घ-ऊ । ४ वयासी ग-घ-ऊ । ५ सांतरं क-ख । ६ उववज्जं- घ ।

२. * जे उत्पत्तिमां समयादिकालनुं अन्तर-व्यवधान होय ते सान्तर कहेवाय छे. तेमां एकैन्द्रियो प्रतिसमय उत्पन्न थता होवाथी तेओ सान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरन्तर उपजे छे. ते शिवाय बीजा जीवोनी उत्पत्तिमां अन्तरनो संभव होवाथी तेओ सान्तर अने निरन्तर-ए अने प्रमाणे उपजे छे. —टीका.

वाणियग्राम.

भगवना प्रभो.

नैरयिको सान्तर के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ?

असुरकुमार.

पृथिवीकायिको. बेइन्द्रियो यावत् वैमानिको.

नैरयिको अने यावत् स्तनितकुमारुं सान्तर अने निरन्तर च्यवन.

६. [प्र०] संतरं मंते ! पुढविकाइया उच्चंति-पुच्छा । [उ०] गंगेया ! जो संतरं पुढविकाइया उच्चंति, निरंतरं पुढविकाइया उच्चंति, एवं जाव धनस्सइकाइया नो संतरं, निरंतरं उच्चंति ।

७. [प्र०] संतरं मंते ! बेइदिया उच्चंति, निरंतरं बेइदिया उच्चंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि बेइदिया उच्चंति, निरंतरं पि बेइदिया उच्चंति, एवं जाव बाणमंतरा ।

८. [प्र०] संतरं मंते ! जोइसिया चयंति-पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति, एवं जाव वेमणिया वि ।

९. [प्र०] कइविहे णं मंते ! पवेसणए पन्नसे ? [उ०] गंगेया ! अउच्चिहे पवेसणए पन्नसे, तं जहा-नेरइयपवेसणए, तिरिक्कजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ।

१०. [प्र०] नेरइयपवेसणए णं मंते ! कइविहे पन्नसे ? [उ०] गंगेया ! सत्तविहे पन्नसे, तं जहा-रयणप्यभापुढविनेरइयपवेसणए, जाव अहेसत्तमापुढविनेरतियपवेसणए ।

११. [प्र०] एगे णं मंते ! नेरइय नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्यभाए होज्जा, सक्करप्यभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

१२. [प्र०] वो मंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्यभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्यभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वालुयप्यभाए होज्जा, जाव एगे रयणप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्यभाए एगे वालुय-

६. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीवो सांतर च्यवे छे ? -इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! पृथिवीकायिक जीवो निरंतर च्यवे छे पण सांतर च्यवता नथी. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक जीवो सान्तर च्यवता नथी, पण निरन्तर च्यवे छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीवो सांतर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे ? [उ०] हे गांगेय ! बेइन्द्रिय जीवो सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वानव्यन्तर सुधी जाणवुं.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिषिक देवो सांतर च्यवे छे ? -इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ज्योतिषिक देवो सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक देवो सुधी जाणवुं.

९. [प्र०] हे भगवन् ! *प्रवेशनक (उत्पत्ति) केटला प्रकारे कहेल छे ? [उ०] हे गांगेय ! प्रवेशनक चार प्रकारे कहां छे. ते आ प्रमाणे-१ नैरयिकप्रवेशनक, २ तिर्यचयोनिकप्रवेशनक, ३ मनुष्यप्रवेशनक अने ४ देवप्रवेशनक.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गांगेय ! सात प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे-१ रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् ७ अधःसत्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनक.

११. [प्र०] हे भगवन् ! एक नारक जीव नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो छुं १ रत्नप्रभापृथिवीमां होय, २ शर्कराप्रभापृथिवीमां होय के यावद् ७ अधःसत्तमपृथिवीमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते १ रत्नप्रभापृथिवीमां पण होय, यावद् ७ अधःसत्तमपृथिवीमां पण होय.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! वे नारको नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करता छुं रत्नप्रभापृथिवीमां उत्पन्न थाय के यावद् अधःसत्तमपृथिवीमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गांगेय ! ते बने १ रत्नप्रभापृथिवीमां होय, के यावद् ७ अधःसत्तमनरकपृथिवीमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक वालुकाप्रभापृथिवीमां होय. यावद् ६ एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक अधःसत्तमनरकपृथिवीमां होय. [३ एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक पंकप्रभापृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक धूमप्रभापृथिवीमां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय.

१ तिरिक्कजो- ग-छ ।

१. * बीजी गतिमांभी च्यवीने विजातीय गतिमां जीवो प्रवेश-उत्पाद थयो ते प्रवेशनक कहेवाय छे.—टीका.

११. † अहीं एक नारकना रत्नप्रभादि सात पृथिवीने आश्रयी सात विकल्प थाय छे.

१२. ‡ वे नारकोना अग्यावीश विकल्पो थाय छे. तेमां एक एक पृथिवीमां बने नारकोनी उत्पत्तिने आश्रयी सात भांगा थाय छे, तथा वे पृथिवीने बिचे एक एक नारकनी उपति वचे द्विकसंयोगी एकवीश भांगा थाय छे.

‡ शूल सूत्रपाठमां नहि आपेला भंगो आवा [] कोष्ठकनी अंदर आपेला छे. अहीं प्रीजा भंगथी मांभी छहा भंगपृथिवीना भंगो आप्या छे.

पृथिवीकायिकजीवो
सान्तर के निरन्तर
च्यवता.

बेइन्द्रियवादि.

ज्योतिषिक

प्रवेशनक

नैरयिकप्रवेशनक.

एक नैरयिक.

वे नैरयिक.

प्रमाण होजा; जाब अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होजा; एवं जाब अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । एवं एकेका पुढवी छुबुयथा, जाब अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

१३. [प्र०] तिभि मंते ! नेरइया नेरइयपयेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होजा, जाब अहेसत्तमाए होजा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होजा, जाब अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होजा; जाब अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होजा; जाब अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होजा; जाब अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होजा; जाब अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा । एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तइया भणिया, तहा सधुपुढवीणं भाणियधं, जाब अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

६ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःतमःप्रभापृथिवीमां होय. ए रीते रत्नप्रभा साथे छ विकल्प थाय छे.] १ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक वालुकाप्रभापृथिवीमां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां होय अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय. [२ एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक पंकप्रभापृथिवीमां होय, ३ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक धूमप्रभापृथिवीमां होय, ४ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय, ५ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःतमापृथिवीमां होय. ए प्रमाणे पांच विकल्प शर्कराप्रभा साथे थाय छे.] १ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक पंकप्रभामां होय. [२ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय, ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय.] ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय. ए प्रमाणे आगल आगलनी एक एक पृथिवी छोडी देवी, यावत् एक तमामां होय अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [एटले वालुकाप्रभा साथे चार विकल्प थाय छे. १ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, ३ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमः-तमामां होय. ए रीते पंकप्रभा साथे त्रण विकल्प थाय छे. १ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, २ अथवा एक धूम-प्रभामां होय अने एक तमःतमामां होय. ए प्रमाणे धूमप्रभा साथे बे विकल्प थाय छे. १ अथवा एक तमःप्रभामां होय अने एक तमतमाप्र-भामां होय. ए रीते तमःप्रभा साथे एक विकल्प थाय छे*]

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवळे प्रवेश करता त्रण नैरयिको शुं रत्नप्रभामां होय के यावत् अधःसत्तम पृथिवीमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते त्रण नैरयिको १† रत्नप्रभामां पण होय अने यावत् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय. १‡ अथवा एक रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने बे अधःसत्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे १-२ ना रत्नप्रभानी साथे अनुक्रमे बीजी नरकपृथिवीओनो संयोग करता छ विकल्प थाय.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ बे रत्नप्रभामां होय अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय [ए प्रमाणे २-१ ना बीजा छ विकल्पो थाय.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने बे वालुकाप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने बे अधःसत्तम नरकमां होय. [ए रीते १-२ ना पांच विकल्प थाय.] १ अथवा बे शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा बे शर्कराप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे २-१ ना पांच विकल्प थाय.] जेम शर्कराप्रभानां वक्तव्यता कही तेम साते पृथिवीओनी कहेवी. [ते आ प्रमाणे-१ एक वालुकाप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक वालुकाप्रभामां अने बे तमतमापृथिवीमां होय. एवी रीते १-२ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा बे वालुकाप्रभामां होय अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ बे वालुकाप्रभामां होय अने एक तमतमामां होय. ए प्रमाणे २-१ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने बे धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ३ एक पंकप्र-भामां होय अने बे तमःतमाप्रभामां होय. ए रीते १-२ ना त्रण विकल्प थाय. १ अथवा बे पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ३ बे पंकप्रभामां होय अने एक तमतमामां होय. ए रीते २-१ ना त्रण विकल्प थाय. १ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने बे तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने बे तमतमाप्रभामां होय. एम १-२ ना बे विकल्पो थाय. १ अथवा बे धूमप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा बे धूमप्रभामां होय अने एक तमतमामां होय. एम २-१ ना बे विकल्प थाय. १ अथवा एक तमःप्रभामां होय अने बे तमःतमाप्रभामां होय.] यावत् १ अथवा बे तमःप्रभामां होय अने एक तमतमाप्रभामां होय. [एम १-२, २-१ ना बे विकल्प थाय.]

१२. * ए प्रमाणे बे नैरयिकोने आश्रयी द्विकसंयोगी ६-५-४-३-२-१ भांगा मळीने एकवीश भांगाओ थाय छे, तेनी साथे एकसंयोगी सात भांगा मेळवतां कुल अठ्यावीश भांगा थाय छे.

१३. † त्रणे नैरयिको रत्नप्रभादि साते नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय, माटे त्रण नैरयिकोने आश्रयी एकसंयोगी सात विकल्पो थाय छे.

‡ त्रण नैरयिकना द्विकसंयोगी १-२ अने २-१-ए बे विकल्प थाय छे. तेमां १-२ ना रत्नप्रभानी साथे बीजी बधी पृथिवीओनो अनुक्रमे संयोग करतां छ विकल्पो थाय, अने तेवी रीते २-१ ना पण छ विकल्पो मळीने चार विकल्पो थाय. शर्कराप्रभा साथे पांच पांच मळीने दण, वालुकाप्रभा साथे आठ, पंक-प्रभा साथे छ, धूमप्रभा साथे चार, अने तमःप्रभा साथे बे-ए प्रमाणे द्विकसंयोगी बेताळी त भांगाओ थाय छे.

एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे वालुयप्पमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे पंकप्पमाए एगे धूमप्पमाए एगे तमाए होजा; अहवा एगे पंकप्पमाए एगे धूमप्पमाए एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे पंकप्पमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा; अहवा एगे धूमप्पमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ।

१४. [प्र०] चत्तारि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पमाए होजा ?—पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पमाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा ।

अहवा एगे रयणप्पमाए तिन्नि सक्करप्पमाए होजा; अहवा एगे रयणप्पमाए तिन्नि वालुयप्पमाए होजा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पमाए तिन्नि अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पमाए दो सक्करप्पमाए होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पमाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिन्नि रयणप्पमाए एगे सक्करप्पमाए होजा; एवं जाव अहवा तिन्नि रयणप्पमाए एगे अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे सक्करप्पमाए तिन्नि वालुयप्पमाए होजा; एवं जहेव रयणप्पमाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पमाए वि उवरिमाहिं समं चारेयधं; एवं एकेकाए समं चारेयधं, जाव अहवा तिन्नि तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ६३ ।

अहवा एगे रयणप्पमाए एगे सक्करप्पमाए दो वालुयप्पमाए होजा; अहवा एगे रयणप्पमाए एगे सक्करप्पमाए दो पंकप्पमाए होजा; एवं जाव एगे रयणप्पमाए एगे सक्करप्पमाए दो अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्पमाए दो सक्करप्पमाए

अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [एम पंक० साथे त्रण विकल्प थया.] १ अथवा एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [धूम० साथे एक विकल्प थयो. १५-१०-६-३-१-ए वधा मळीने त्रिकसंयोगी पात्रीस विकल्प थया. ए प्रमाणे त्रण नैरयिकोने आश्रयी एक संयोगी ७, द्विकसंयोगी ४२, अने त्रिकसंयोगी ३५ मळीने कुल ८४ विकल्प थाय छे.]

चार नैरयिको.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता चार नैरयिको शुं रत्नप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न [उ०] हे गांगेय ! ते चारे १ रत्नप्रभामां पण होय, अने यावत् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय. [ए प्रमाणे एकसंयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी त्रैसठ विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [एम १-३ ना छ विकल्प थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने बे अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे बीजी रीते २-२ ना छ विकल्प थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ए बीजी रीते ३-१ ना छ विकल्प थया. ए प्रमाणे रत्नप्रभानी साथे अढार विकल्प थाय छे.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभानो उपरनी नरकपृथिवीओ साथे संचार (योग) कर्यो तेम शर्कराप्रभानो पण उपरनी नरकपृथिवीओ साथे संचार करवो. एवी रीते एक एक नरक पृथिवीओ साथे योग करवो. यावत् अथवा त्रण तमामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय.

द्विकसंयोगी ५ विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय. [ए रीते १-१-२ ना

१ वालुकाए ७ । २ पंकए ७ । ३ धूमाए ७ । ४ जाव अहवा ५-७ ।

१४. * चार नैरयिकना १-३, २-२, ३-१-ए प्रमाणे द्विकयोगी त्रण विकल्प थाय छे. तेमां रत्नप्रभा साथे बाकीनी पृथिवीओनो योग करता १-३ ना छ भांगा, ए प्रमाणे २-२ ना छ, अने ३-१ ना छ-ए रीते अढार भांगा थाय छे. शर्कराप्रभानी साथे ते प्रमाणे त्रण विकल्पना ५-५-५ मळीने पंदर विकल्प थाय छे. एम वालुकाप्रभानी साथे ४-४-४ मळीने बार विकल्प, पंकप्रभानी साथे ३-३-३ मळीने नव विकल्प, धूमप्रभानी साथे २-२-२ मळीने छ विकल्प अने तमःप्रभानी साथे १-१-१ मळीने त्रण विकल्प-सर्वे मळीने द्विकसंयोगी ६३ विकल्पो थाय छे. तेमां रत्नप्रभाना अढार भांगाओ उपर मूळ अनुवादमां कथा छे. ए प्रमाणे शर्कराप्रभा साथे आगळनी पृथिवीओनो योग करता १-३ ना पांच विकल्प थाय छे. जेम के एक शर्करामां अने त्रण वालुकामां होय. ए रीते २-२ ना पण पांच विकल्प थाय छे. जेम के बे शर्करामां अने बे वालुकामां होय. ते प्रमाणे ३-१ ना पण पांच विकल्प थाय. जेम के त्रण शर्करामां अने एक वालुकामां होय. आ रीते शर्कराप्रभाना पंदर विकल्प थाय. वालुकाप्रभा साथे पंकप्रभादि पृथिवीओनो योग करतां चार विकल्पो थाय, तेने पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे गुणतां बार विकल्प थाय. तेमज पंकप्रभा साथे धूमप्रभादिनो योग करतां त्रण विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे गुणतां नव विकल्प थाय. धूमप्रभा साथे तमःप्रभादिनो योग करतां बे विकल्प थाय, तेने त्रण विकल्प साथे गुणतां छ विकल्प थाय. तमःप्रभा साथे तमःतमःप्रभानो योग करतां एक विकल्प थाय, तेने पूर्वना त्रण विकल्प साथे गुणतां त्रण विकल्प थाय. ए रीते आगळनी पृथिवीओनो योग करतां उपर कथा प्रमाणे रत्नप्रभाना १८, शर्कराप्रभा १५, वालुकाना १२, पंकप्रभाना ९, धूमप्रभाना ६, अने तमःप्रभाना ३ विकल्पो मळीने चार नैरयिकना द्विकसंयोगी त्रैसठ विकल्पो (भांगाओ) थाय छे.

† चार नैरयिकना त्रिकसंयोगी १०५ विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे—चार नैरयिकना १-१-२, १-२-१ अने २-१-१-ए त्रण विकल्प थाय छे. हवे रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभा साथे वालुकाप्रभादि आगळनी नरकपृथिवीओनो योग करतां पांच भांगा थाय छे, तेने पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे गुणता पंदर भांगा थाय. एज प्रकारे त्रणे विकल्पोना रत्नप्रभा अने वालुकाप्रभा ए बनेनो बाकीनी बीजी पृथिवीओ साथे संयोग करतां कुल बार विकल्प थाय, रत्नप्रभा अने

पंकप्यभाए एगे तमाए होजा १२; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १३; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए होजा १४; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १५; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १६; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए होजा १७; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १८; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १९; अहवा एगे रयणप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा २०; अहवा एगे सङ्करप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे धूमप्यभाए होजा २१ । एवं जहा रयणप्यभाए उचरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सङ्करप्यभाए वि उचरिमाओ चारियद्वाओ; जाव अहवा एगे सङ्करप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ३० । अहवा एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए होजा ३१; अहवा एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होजा ३२; अहवा एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ३३; अहवा एगे बालुयप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ३४; अहवा एगे पंकप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ३५ ।

१५. [प्र०] पंच भंते ! नेरइया नेरइयवेसणएणं पविस्समाणा किं रयणप्यभाए होजा-पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा ।

अहवा एगे रयणप्यभाए चत्तारि सङ्करप्यभाए होजा; जाव अहवा एगे रयणप्यभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्यभाए तिञ्चि सङ्करप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्यभाए तिञ्चि अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिञ्चि

अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [वे विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [एक विकल्प थयो.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [एक विकल्प थयो. ए प्रमाणे बधा मळीने रत्नप्रभाना संयोगवाळा ४-३-३-३-२-२-१-१-१-वीश विकल्प थया.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभापृथिवीनो बीजी उपरनी पृथिवीओ साथे संचार (योग) कर्यो, तेम शर्कराप्रभा पृथिवीनो पण बीजी बची उपरनी पृथिवीओ साथे योग करवो; *यावत् १० अथवा एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [शर्कराना संयोगवाळा दश विकल्प थया.] १ अथवा एक बालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक बालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. ३ अथवा एक बालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा एक बालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे बालुकाप्रभाना संयोगवाळा चार विकल्प थया.] १ अथवा एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे २०-१०-४-१ मळीने चतुःसंयोगी पांतीश विकल्प थया. अने सर्व मळीने चार नैरयिकने आश्रयी एकसंयोगी ७, द्विकसंयोगी ६३, त्रिकसंयोगी १०५ अने चतुःसंयोगी ३५ बधा मळीने बसो दस विकल्पो थाय छे.]

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पांच नैरयिको नैरयिकप्रवेशनवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गंगेय ! १ रत्नप्रभामां पण होय, अने यावद् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय. [ए प्रमाणे एक संयोगी सात विकल्प थया.]

** १ अथवा एक रत्नप्रभामां अने चार शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामां अने चार अधःसत्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे 'एक अने चार' विकल्पना रत्नप्रभा साथे बीजी पृथ्वीओनो योग करता छ भांगा थाय.] १ अथवा वे रत्नप्रभामां अने

१ संचारिया- ॐ । २ उचरिय- ॐ । ३ ग- ॐ विना नाव्यज ।

* १४. शर्कराप्रभाना संयोगवाळा बीजाधी मळीने दसमा विकल्प शुची आ प्रमाणे— २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. (त्रण विकल्प थया.) १ एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. (त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. (ए त्रण विकल्प थया.) अथवा १० एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक तमःप्रभामां होय.

** १५. पांच नैरयिकना द्विकसंयोगी १-४, २-३, ३-२, ४-१-ए चार विकल्प थाय छे, तेने रत्नप्रभाना द्विकसंयोगी छ विकल्प साथे गुणतां सोबीश भांगा थाय. शर्कराप्रभाना उपरनी पृथिवीओ साथे द्विकसंयोगी पांच विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त चार विकल्प साथे गुणतां वीश भांगा थाय. तेची छे

पांच नैरयिक.

द्विकसंयोगी
६४ विकल्पो.

सकल्पमाय दो सकल्पमाय होजा; एवं जाव अहेसत्तमाय होजा । अहवा चत्तारि रयणप्यमाय एगे सकल्पमाय होजा; एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्यमाय एगे अहेसत्तमाय होजा । अहवा एगे सकल्पमाय चत्तारि बालुयप्यमाय होजा । एवं अहवा रयणप्यमाय समं उबरिमपुडवीओ चेरियाओ तहा सकल्पमाय वि समं चारेयजाओ; जाव अहवा चत्तारि सकल्पमाय एगे अहेसत्तमाय होजा; एवं एकेकाय समं चारेयजाओ; जाव अहवा चत्तारि तमाय एगे अहेसत्तमाय होजा ।

अहवा एगे रयणप्यमाय एगे सकल्पमाय तिभि बालुयप्यमाय होजा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्यमाय एगे सकल्पमाय तिभि अहेसत्तमाय होजा । अहवा एगे रयणप्यमाय दो सकल्पमाय दो बालुयप्यमाय होजा; एवं जाव त्रण शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए रीते 'बे ने त्रण' विकल्पना छ भांगा थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ त्रण रत्नप्रभामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए रीते 'त्रण ने बे' विकल्पना छ भांगा थया.] १ अथवा चार रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा चार रत्नप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [एम 'चार ने एक' विकल्पना छ, अने वधा मळीने रत्नप्रभाना संयोगवाळ्य चोवीश विकल्प थया.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने चार बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभानी साथे बीजी उपरनी नरक पृथिवीओनो योग कर्यो, तेम शर्कराप्रभानी साथे उपरनी नरक पृथिवीओनो संयोग करवो. यावत् २० अथवा चार शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ए प्रमाणे [बालुकाप्रभा वगरे] एक एक पृथिवीनी साथे योग करवो. यावत् अथवा चार तमामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने त्रण बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे 'एक एक ने त्रण' विकल्पने आश्रयी पांच भांगा थया.] १ अथवा एक

त्रिकसंयोगी
२१० विकल्पो.

१ दोकि छ । २ संचारि- छ । ३ उच्चारि- छ ।

बालुकाप्रभाना उपरनी पृथिवीओ साथे चार विकल्प थाय, तेने उपर कहेला चार विकल्प साथे गुणतां सोल विकल्प थाय. पंकप्रभाना धूमप्रभादि पृथिवीओ साथे त्रण विकल्प थाय, तेने पूर्वना चार विकल्पे गुणतां बार विकल्प थाय. धूमप्रभानी साथे तमःप्रभादिनो योग करता बे विकल्प थाय, तेने पूर्वना चार विकल्पे गुणतां आठ विकल्प थाय. तमःप्रभा साथे तमःप्रभानो योग करता पूर्वना चार विकल्पना चार विकल्पो थाय. ए रीते २४, २०, १६, १२, ८ अने ४-ए वधा मळीने द्विकसंयोगी ८४ विकल्पो थाय छे.

* १५. पांच नैरविक्रमा त्रिकसंयोगी छ विकल्प थाय छे, जेमके-१-१-३, १-२-२, २-१-२, १-३-१, २-२-१, ३-१-१. हवे सात नरकना त्रिकसंयोगी पंचाश अंगो थाय छे, ते प्रत्येकनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पने जोडता पांच नारकोने आश्रयी त्रिकसंयोगी बसो ने दस भांगा थाय छे.

१ रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	बालुकाप्रभा.	१ रत्नप्रभा,	बालुकाप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
२ " "	" "	पंकप्रभा.	१० " "	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
३ " "	" "	धूमप्रभा.	११ " "	" "	तमःप्रभा.
४ " "	" "	तमःप्रभा.	१२ " "	" "	तमःतमःप्रभा.
५ " "	" "	तमःतमःप्रभा.	१३ " "	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
६ " "	बालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	१४ " "	" "	तमःतमःप्रभा.
७ " "	" "	धूमप्रभा.	१५ " "	तमःप्रभा,	" "
८ " "	" "	तमःप्रभा.			

आ पंच भांगाओने पूर्वोक्त छ विकल्पो साथे जोडता रत्नप्रभाना संयोगवाळा नेहुं विकल्पो थाय छे.

१ शर्कराप्रभा,	बालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	६ शर्कराप्रभा,	पंकप्रभा,	तमःप्रभा.
२ " "	" "	धूमप्रभा.	७ " "	" "	तमःतमःप्रभा.
३ " "	" "	तमःप्रभा.	८ " "	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
४ " "	" "	तमःतमःप्रभा.	९ " "	" "	तमःतमःप्रभा.
५ " "	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	१० " "	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.

आ दस भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करवापी शर्कराप्रभाना संयोगवाळ्य साठ विकल्पो थाय छे.

१ बालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	४ बालुकाप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
२ " "	" "	तमःप्रभा.	५ " "	" "	तमःतमःप्रभा.
३ " "	" "	तमःतमःप्रभा.	६ " "	तमःप्रभा,	" "

आ छ भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करता बालुकाप्रभाना संयोगवाळ्य छत्रीश विकल्पो थाय छे.

१ पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.	३ पंकप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
२ " "	" "	तमःतमःप्रभा.			

आ त्रण भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो संयोग करता पंकप्रभाना संयोगवाळा अठार विकल्पो थाय छे.

१ धूमप्रभा, तमःप्रभा, तमःतमःप्रभा.

आ छेळा भांगानी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करता धूमप्रभाना संयोगवाळा छ विकल्पो थाय छे. १०, ६०, ३६, १८, अने ६-ए वधा मळीने पांच नैरविक्रमोने आश्रयी त्रिकसंयोगी बसो दस विकल्पो थाय छे.

अहवा एगे रयणप्यभाए दो सकरप्यभाए दो अहेससत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए दो बालुयप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए दो अहेससत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए तिभि सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्यभाए तिभि सकरप्यभाए एगे अहेससत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्यभाए दो सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए होजा; एवं जाव अहेससत्तमाए । अहवा तिभि रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा तिभि रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे अहेससत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए एगे बालुयप्यभाए तिभि पंकप्यभाए होजा । एवं एणं कमेणं जहा चउण्हं तियासंजोगो भणितो तहा पंचण्हं वि तियासंजोगो भाणियद्धो; नवरं तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह दोज्जि, सेसं तं चेव, जाव अहवा तिभि धूमप्यभाए एगे तमाए एगे अहेससत्तमाए होजा ।

अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए दो पंकप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए दो अहेससत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए दो बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए होजा; एवं जाव अहेससत्तमाए । अहवा एगे रयणप्यभाए दो सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्यभाए दो सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे अहेससत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे पंकप्यभाए होजा; एवं जाव अहवा दो रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे बालुयप्यभाए एगे अहेससत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सकरप्यभाए एगे पंकप्यभाए दो धूमप्यभाए होजा;

रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने बे बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने बे अधःसत्तम चरकमां होय. ['एक बे बे' ना विकल्पने आश्रयी ए पांच भंग थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे अधःसत्तम नरकमां होय. ['बे एक बे' विकल्पने आश्रयी ए पांच भंग थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने एक बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने एक अधःसत्तममां होय. ['एक त्रण एक' ने आश्रयी पांच भंग थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने एक बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ बे रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने एक अधःसत्तममां होय. ['बे बे एक'ने आश्रयी पांच भंग थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक बालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक अधःसत्तममां होय. ['त्रण एक एक'नी अपेक्षाए पांच भंग थया.] (३०). १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक बालुकाप्रभामां अने त्रण पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम चार नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कद्धो तेम पांच नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो. परन्तु त्यां एकनो मंचार कराव छे, अही बेनो संचार करवो. बाकी सर्व पूर्वोक्त जाणवुं; यावत् अथवा त्रण धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. (२१०).

१ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां अने बे अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ए चार विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां बे बालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां बे बालुकाप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय. [४ भंग.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकपृथिवीमां होय. [४ भंग.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक

* चतुःसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे—पांच नैरयिकोना चतुःसंयोग '१-१-१-२' '१-१-२-१' '१-२-१-१' २-१-१-१ ए चार प्रकारे थाय छे. तेने सात नरकना चतुःसंयोगी पांश्रीश भंगोनी साथे जोडता १४० विकल्पो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	बालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	११	रत्नप्रभा,	बालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
२	"	"	"	धूमप्रभा.	१२	"	"	"	तमःप्रभा.
३	"	"	"	तमःप्रभा.	१३	"	"	"	तमःतमःप्रभा.
४	"	"	"	तमःतमःप्रभा.	१४	"	"	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
५	"	"	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	१५	"	"	"	तमःतमःप्रभा.
६	"	"	"	तमःप्रभा.	१६	"	"	तमःप्रभा,	"
७	"	"	"	तमःतमःप्रभा.	१७	"	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
८	"	"	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.	१८	"	"	"	तमःतमःप्रभा.
९	"	"	"	तमःतमःप्रभा.	१९	"	"	तमःप्रभा,	"
१०	"	"	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.	२०	"	धूमप्रभा,	"	"

आ वीश भंगोनी साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनी संयोग करता रत्नप्रभाना संयोगबाबा पंश्री विकल्पो थाय छे.

એવં ગ્રહ ચઠ્ઠાં ચઠ્ઠસંજોગો મળિયો તદ્વા પંચમ્હ વિ ચઠ્ઠસંજોગો મળિયયો, નવરં અમ્બહિયં એગો સંચારેયયો, એવં ગ્રહ અહવા દો પંકપ્પમાય એગે ધૂમપ્પમાય એગે તમાય એગે અહેસત્તમાય હોજ્જા ।

અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે વાલુયપ્પમાય એગે પંકપ્પમાય એગે ધૂમપ્પમાય હોજ્જા ૧; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે વાલુયપ્પમાય એગે પંકપ્પમાય એગે તમાય હોજ્જા ૨; અહવા એગે રચણપ્પમાય ગ્રહ એગે પંક-પ્પમાય એગે અહેસત્તમાય હોજ્જા ૩; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે વાલુયપ્પમાય એગે ધૂમપ્પમાય એગે તમાય હોજ્જા ૪; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે વાલુયપ્પમાય એગે ધૂમપ્પમાય એગે અહેસત્તમાય હોજ્જા ૫; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે વાલુયપ્પમાય એગે તમાય એગે અહેસત્તમાય હોજ્જા ૬; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પ-માય એગે પંકપ્પમાય એગે ધૂમપ્પમાય એગે તમાય હોજ્જા ૭; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે પંકપ્પમાય એગે ધૂમપ્પમાય એગે અહેસત્તમાય હોજ્જા ૮; અહવા એગે રચણપ્પમાય એગે સક્કરપ્પમાય એગે પંકપ્પમાય એગે તમાય એગે અહેસત્તમાય

વાલુકાપ્રમામાં અને એક અધ:સત્તમ નરકપૃથિવીમાં હોય. [૪ મંગ.] ૧ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક પંકપ્રમામાં અને બે ધૂમપ્રમામાં હોય. ૨ પ્રમાણે જેમ ચાર નૈરયિકોનો ચતુ:સંયોગ કહ્યો, તેમ પાંચ નૈરયિકોનો પણ ચતુ:સંયોગ કહેવો. પરન્તુ અહીં એકનો અધિક સંચાર (યોગ) કરવો. ૩ પ્રમાણે યાવત્ અથવા બે પંકપ્રમામાં એક ધૂમપ્રમામાં એક તમામાં અને એક અધ:સત્તમ નરકપૃથિવીમાં હોય.

અથવા ૧ એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક વાલુકાપ્રમામાં એક પંકપ્રમામાં અને એક ધૂમપ્રમામાં હોય. ૨ અથવા એક રત્નપ્ર-મામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક વાલુકાપ્રમામાં એક પંકપ્રમામાં અને એક તમ:પ્રમામાં હોય. ૩ અથવા એક રત્નપ્રમામાં યાવત્ એક પંકપ્રમામાં અને એક અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં હોય. ૪ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક વાલુકાપ્રમામાં એક ધૂમપ્રમામાં અને એક તમ:પ્ર-મામાં હોય. ૫ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક વાલુકાપ્રમામાં એક ધૂમપ્રમામાં અને એક અધ:સત્તમ નરકમાં હોય. ૬ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક વાલુકાપ્રમામાં એક તમ:પ્રમામાં અને એક અધ:સત્તમ નરકમાં હોય. ૭ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક પંકપ્રમામાં એક ધૂમપ્રમામાં અને એક તમ:પ્રમામાં હોય. ૮ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં એક પંકપ્રમામાં

પંચસંયોગી ૨૨
વિકલ્પો.

૧ શર્કરાપ્રમા, વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા.	૬ શર્કરાપ્રમા, વાલુકાપ્રમા, તમ:પ્રમા, તમ:તમ:પ્રમા.
૨ " " " તમ:પ્રમા.	૭ " " પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા.
૩ " " " તમ:તમ:પ્રમા.	૮ " " " તમ:તમ:પ્રમા.
૪ " " " ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા.	૯ " " " તમ:પ્રમા, "
૫ " " " તમ:તમ:પ્રમા.	૧૦ " " ધૂમપ્રમા, " "

આ દસ મંગો સાથે પૂર્વોક્ત ચાર વિકલ્પોનો સંયોગ કરવાથી શર્કરાપ્રમાના સંયોગવાળા ચાલીશ વિકલ્પો થાય છે.

૧ વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા.	૩ વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, તમ:પ્રમા, તમ:તમ:પ્રમા.
૨ " " " તમ:તમ:પ્રમા.	૪ " " ધૂમપ્રમા, " "

આ ચાર મંગોની સાથે પૂર્વોક્ત ચાર વિકલ્પોનો સંયોગ કરવાથી વાલુકાપ્રમાના સંયોગવાળા સોઠ વિકલ્પો થાય છે.

પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા, તમ:તમ:પ્રમા.

આ એક મંગ સાથે પૂર્વોક્ત ચાર વિકલ્પોનો સંયોગ કરવાથી પંકપ્રમાના સંયોગવાળા ચાર મંગો થાય છે. ૧૮, ૪૦, ૧૬ અને ૪ એ મળીને પાંચ નારકોના ચતુ:સંયોગી એકસો ચાલીશ વિકલ્પો થાય છે.

પાંચ સંયોગી વિકલ્પો દર્શાવે છે-પાંચ નૈરયિકોનો પાંચસંયોગી ૧-૧-૧-૧-૧ એ પ્રમાણે એકજ વિકલ્પ થાય છે, તેથી તે દ્વારા સાત નરકપૃથિવીના પાંચ સંયોગી ૨૧ વિકલ્પો થાય છે. તે આ પ્રમાણે—

૧ રત્નપ્રમા, શર્કરાપ્રમા, વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા.	૯ રત્નપ્રમા, શર્કરાપ્રમા, પંકપ્રમા, તમ:પ્રમા, તમ:તમ:પ્રમા.
૨ " " " " તમ:પ્રમા.	૧૦ " " ધૂમપ્રમા, " "
૩ " " " " તમ:તમ:પ્રમા.	૧૧ " " વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા; તમ:પ્રમા.
૪ " " " ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા.	૧૨ " " પંકપ્રમા, " તમ:તમ:પ્રમા.
૫ " " " " તમ:તમ:પ્રમા.	૧૩ " " " તમ:પ્રમા, " "
૬ " " " તમ:પ્રમા, " "	૧૪ " " ધૂમપ્રમા " "
૭ " " " પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા.	૧૫ " " પંકપ્રમા, " " "
૮ " " " " તમ:તમ:પ્રમા.	

પૂર્વોક્ત એક વિકલ્પના યોગે રત્નપ્રમાના સંયોગવાળા ઉપર કહેલા પંદર વિકલ્પો થાય છે.

૧ શર્કરાપ્રમા, વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા.	૪ શર્કરાપ્રમા, વાલુકાપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા, તમ:તમ:પ્રમા.
૨ " " " " તમ:તમ:પ્રમા.	૫ " " પંકપ્રમા, " " "
૩ " " " તમ:પ્રમા, " "	

પૂર્વોક્ત એક વિકલ્પના યોગે શર્કરાપ્રમાના સંયોગવાળા ઉપરના પાંચ વિકલ્પ થાય છે.

૧ વાલુકાપ્રમા, પંકપ્રમા, ધૂમપ્રમા, તમ:પ્રમા, તમ:તમ:પ્રમા.

એ પ્રમાણે વાલુકાપ્રમાના સંયોગવાળા એક વિકલ્પ થાય છે. ૧૫, ૫ અને ૧-એ મળીને પંચસંયોગી એકવીશ વિકલ્પો થાય છે. ૭, ૮૪, ૨૧૦, ૧૪૦, અને ૨૧ એ મળીને પાંચ નૈરયિકોના કુલ ચારસો ને વાલુકા વિકલ્પો થાય છે.

होज्जा ९; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १०; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ११; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १२; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तभाए होज्जा १५; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा १६; अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १७; अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १८; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा १९; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तभाए होज्जा २०; अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तभाए होज्जा २१ ।

१६. [प्र०] छम्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा—पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तभाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. ९ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. १० अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. ११ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. १२ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. १३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तममां होय. १४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसत्तममां होय. १५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसत्तममां होय. १६ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक तमामां होय. १७ अथवा एक शर्कराप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तममां होय. १८ अथवा एक शर्कराप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसत्तममां होय. १९ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसत्तममां होय. २० अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसत्तममां होय. २१ अथवा एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तममां होय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! छ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! तेओ १ रत्नप्रभामां पण होय, ७ यावत् अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय. [एक संयोगी सात विकल्प थया.]

१ *अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच वालुकाप्रभामां पण होय. यावत् ६

१ धूमाए ग । २ तमाए क । ३ धूमप्पभाए घ, तमाए क-ङ । ४ रतणप्प- क । ५ -प्पभाए वा हो- घ-ङ ।

* १६. द्विकसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे—छ नैरयिकोना द्विकसंयोगी पांच विकल्पो थाय छे—२-४, ३-३, ४-२, १-५ अने ५-१. ए पांच विकल्पोने सात नरकमा द्विकसंयोगी एकवीश भंगोनी साथे गुणता १०५ भंगो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा.	४	रत्नप्रभा,	धूमप्रभा.
२	"	वालुकाप्रभा.	५	"	तमःप्रभा.
३	"	पंकप्रभा.	६	"	तमःतमःप्रभा.
ए छ भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणवाशी रत्नप्रभाना संयोगवाळा श्रीश विकल्प थाय छे.					
१	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा.	४	शर्कराप्रभा,	तमःप्रभा.
२	"	पंकप्रभा.	५	"	तमःतमःप्रभा.
३	"	धूमप्रभा.			
ए पांच भंगो साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां शर्कराप्रभाना संयोगवाळा पचीश विकल्प थाय छे.					
१	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	३	वालुकाप्रभा,	तमःप्रभा.
२	"	धूमप्रभा.	४	"	तमःतमःप्रभा.
ए चार भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां वालुकाप्रभाना संयोगवाळा वीश विकल्पो थाय छे.					
१	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	३	पंकप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
२	"	तमःप्रभा.			
ए त्रण भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणकार करवाशी पंकप्रभाना संयोगवाळा पंदर विकल्प थाय छे.					
१	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.	२	धूमप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
ए बे भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां धूमप्रभाना संयोगवाळा दस विकल्प थाय छे.					
१	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.			

ए एक भांग साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां तमःप्रभाना संयोगवाळा पांच विकल्प थाय छे. ए बचा १०-२५-१५-१०-५ मळीने छ नैरयिकोना द्विकसंयोगी एकसोने पांच विकल्पो थाय छे.

नैरयिको.

द्विकसंयोगी
१०५ विकल्पो.

एतै रयण्यमाय पंच अहेसत्तमाय होजा । अहवा दो रयण्यमाय चत्तारि सक्करप्यमाय होजा; जाव अहवा दो रयण्यमाय चत्तारि अहेसत्तमाय होजा । अहवा तिभि रयण्यमाय तिभि सक्करप्यमाय, एवं एरणं कमेणं जहा पञ्चण्हं दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियहो, नवरं एको अम्महिओ संचारेयहो, जाव अहवा पंच तमाय एगे अहेसत्तमाय होजा ।

अहवा एगे रयण्यमाय एगे सक्करप्यमाय चत्तारि वालुयप्यमाय होजा; अहवा एगे रयण्यमाय एगे सक्करप्यमाय चत्तारि पंकप्यमाय होजा, एवं जाव अहवा एगे रयण्यमाय एगे सक्करप्यमाय चत्तारि अहेसत्तमाय होजा । अहवा एगे रयण्यमाय दो सक्करप्यमाय तिभि वालुयप्यमाय होजा, एवं एरणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो मणिओ तहा छण्ह वि भाणियहो, नवरं एको अम्महिओ उचारेयहो, सेसं तं वेव । चउक्कसंजोगो वि तहेव, पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं एको अम्महिओ संचारेयहो, जाव पच्छिओ भंगो, अहवा दो वालुयप्यमाय एगे पंकप्यमाय एगे धूमप्यमाय एगे तमाय एगे अहेसत्तमाय होजा ।

अहवा एगे रयण्यमाय एगे सक्करप्यमाय जाव एगे तमाय होजा; अहवा एगे रयण्यमाय जाव एगे धूमप्यमाय एगे अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे रयण्यमाय जाव एगे पंकप्यमाय एगे तमाय एगे अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे रयण्यमाय जाव एगे वालुयप्यमाय एगे धूमप्यमाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे रयण्यमाय एगे सक्करप्यमाय एगे

अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच अधःसत्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने चार शर्कराप्रभामां होय. यावद् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने चार अधःसत्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने त्रण शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रम वडे जेम पांच नैरयिकोनो द्विकसंयोग कस्यो तेम छ नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु अहीं एक अधिक गणवो. यावत् १०५ अथवा पांच तमामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय.

* १ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार अधःसत्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम पांच नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कस्यो तेम छ नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो, परन्तु विशेष ए छे के तेमां एक नैरयिक अधिक कहेवो, अने बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं.

त्रिकसंयोगी विकल्पो.

ते प्रमाणे छ नारकोनो चतुःसंयोग अने पंचसंयोग पण जाणवो. परन्तु तेमां एक नैरयिक अधिक गणवो. यावत् छेछो भंग— अथवा बे वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय.

चतुःसंयोग अने पंचसंयोग.

१ † अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक तमामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक धूमप्रभामां अने एक अधःसत्तम नरकमां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसत्तममां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां

छसंयोगी विकल्पो.

१ सक्कराए ग । २ हुयसं-ऊ । ३ तियसं-ऊ । ४ अम्महिओ ऊ । ५ पंचकसं-क ।

* १६. त्रिकसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे-छ नैरयिकोना १-१-४, १-२-३, २-१-३, १-३-२, २-२-२, ३-१-२, १-४-१, २-३-१, ३-२-१, अने ४-१-१ ए प्रमाणे त्रिकसंयोगी दश विकल्पो थाय छे. हवे सात नरकपृथिवीना त्रिकसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे, ते पांच नैरयिकोना त्रिकसंयोगी विकल्प प्रसंगे (पृ. १४५) दर्शाव्या छे. तेनी साथे उपर कहेला दश विकल्पोने गुणतां ३५० भंगो थाय छे.

† छ नैरयिकना चतुःसंयोगी दश विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे-१-१-१-३, १-१-२-२, १-२-१-२, २-१-१-२, १-१-३-१, १-२-२-१, २-१-२-१, १-३-१-१, २-२-१-१, ३-१-१-१. हवे रत्नप्रभादि सात नरकना चतुःसंयोगी पांश्रीश विकल्पो थाय छे, ते पांच नैरयिकना चतुःसंयोगी भांगाओना कयन प्रसंगे (पृ. १४६.) दर्शाविला छे, तेनी साथे उपर कहेला दश विकल्पोने गुणतां छ नैरयिकना चतुःसंयोगी ३५० भांगाओ थाय छे.

छ नैरयिकना पंचसंयोगी पांच विकल्पो थाय छे—१-१-१-१-२, १-१-१-२-१, १-१-२-१-१, १-२-१-१-१, २-१-१-१-१. हवे जे सात नरकपृथिवीना पंचसंयोगी एकबीस विकल्पो थाय छे. ते (पृ. १४७) दर्शाविला छे. तेने उपर कहेला पांच विकल्पो साथे गुणतां छ नैरयिकोना सात नरकपृथिवीने आश्रयी पंचसंयोगी १०५ विकल्पो थाय छे.

१ रत्नप्रभा, शर्करा०, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूम०, तमःप्रभा.	५ रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तमःतमःप्रभा.
२ " " " " " " तमःतमःप्रभा.	६ " वालुकाप्रभा, " " " "
३ " " " " " तमःप्रभा, "	७ शर्कराप्रभा, " " " "
४ " " " " धूमप्रभा, " "	

ए प्रमाणे छ नैरयिकोनो छसंयोगी एकज विकल्प थाय छे. ते द्वारा सात नरक पृथिवीना छ संयोगी सात विकल्प थाय छे. ए प्रमाणे छ नैरयिकोना एक संयोगी ७, द्विकसंयोगी १०५, त्रिकसंयोगी ३५०, चतुःसंयोगी ३५०, पंचसंयोगी १०५, अने छ संयोगी ७ सबी मळी ९२४ विकल्पो थाय छे.

पंकप्यभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे रयणप्यभाय एगे वालुयप्यभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे सक्करप्यभाय एगे वालुयप्यभाय, जाव एगे अहेसत्तमाय होजा ।

१७. [प्र०] सत्त भंते ! नेरहया नेरहयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाय वा होजा, जाव अहेसत्तमाय वा होजा । अहवा एगे रयणप्यभाय छ सक्करप्यभाय होजा । एवं एणं कमेणं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्हं वि भाणियच्चं, नवरं एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेसं तं चेष । तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो, छक्कसंजोगो य छण्हं जहा तहा सत्तण्हं वि भाणियच्चं, नवरं एक्केको अब्भहिओ संचारेयच्चो, जाव छक्कगसंजोगो । अहवा दो सक्करप्यभाय एगे वालुयप्यभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा । अहवा एगे रयणप्यभाय एगे सक्करप्यभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा ।

१८. [प्र०] अट्ट भंते ! नेरतिया नेरहयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्यभाय वा होजा, जाव अहेसत्तमाय वा होजा । अहवा एगे रयणप्यभाय सत्त सक्करप्यभाय होजा । एवं दुयासंजोगो, जाव छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं भणितो तहा अट्टण्हं वि भाणियच्चो, नवरं एक्केको अब्भहिओ संचारेयच्चो, सेसं तं चेष, जाव छक्कसंजोगस्स । अहवा तिच्चि

एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय. ७ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय.

सात नैरयिको.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सात नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता [शुं रत्नप्रभामां होय ?] इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! [ते साते नैरयिको] रत्नप्रभामां पण होय अने यावद् अधःसत्तम नरकपृथिवीमां पण होय. [एक संयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी
विकल्पो.

* अथवा एक रत्नप्रभामां अने छ शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम छ नैरयिकोको द्विकसंयोग कद्धो तेम सात नैरयिकोको पण जाणवो. पण विशेष ए छे के एक नैरयिकोको अधिक संचार करवो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम छ नैरयिकोको त्रिकसंयोग, चतुःसंयोग, पंचसंयोग अने षट्संयोग कद्धो तेम सात नैरयिकोको पण जाणवो; परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकोको अधिक संचार करवो, यावत् षट्संयोग—‘अथवा वे शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय’ त्यासुची जाणवुं [सत्तसंयोगी एक विकल्प—] अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय.

त्रिकसंयोग, चतुःसंयोग,
पंचसंयोग अने छ संयोग.

सात संयोगी विकल्पो.

आठ नैरयिको.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! आठ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! १ रत्नप्रभामां पण होय; यावद् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय.†

द्विकसंयोगी
विकल्पो.

अथवा † ‘एक रत्नप्रभामां अने सात शर्कराप्रभामां होय.’ ए प्रमाणे जेम सात नैरयिकोको **द्विकसंयोग, ††त्रिकसंयोग, ‡‡चतुष्कसंयोग,

१ रत्न-क । २ चउक्कसं-क । ३ पंचासं-क । ४ छक्कसं-क । ५ छक्कसं-क । ६ छक्कसं-क । ७ छक्कसं-क ।

१७. * सात नैरयिकोको द्विकसंयोगी छ विकल्प थया छे, जेम के, १-६, २-५, ३-४, ४-३, ५-२, ६-१. ते छ विकल्पवडे पूर्वे कहेला सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीस भांगाने गुणतां सात नैरयिकोको द्विकसंयोगी १२६ भांग थया छे.

† सात नैरयिकोको त्रिकसंयोगी पंदर विकल्पो थया छे—१-१-५, १-२-४, २-१-४, १-३-३, २-२-३, ३-१-३, १-४-२, २-३-२, ३-२-२, ४-१-२, १-५-१, २-४-१, ३-३-१, ४-२-१, ५-१-१. हवे सात नरक पृथिवीना त्रिकसंयोगी ३५ विकल्पो पूर्वे (पृ० १४९.) जणाव्या छे, तेनी साथे उपर कहेला पंदर विकल्पोने गुणतां ५२५ भांगो थया छे.

‡ सात नैरयिकोको चतुःसंयोगी १-१-१-४-इत्यादि बीस विकल्पो थया छे, तेने पूर्वे जणावेलो (पृ० १४३.) सात नरक पृथिवीना चतुःसंयोगी पांतीस भांगो साथे गुणतां ७०० विकल्पो थया छे.

§ सात नैरयिकोको पंचसंयोगी १-१-१-१-३ इत्यादि पंदर विकल्पो थया छे, तेने सात नरकना पूर्वे जणावेलो (पृ० १४७.) पंचसंयोगी एकवीस विकल्पोनी साथे गुणतां ३१५ विकल्पो थया छे.

|| सात नैरयिकोको षट्संयोगी १-१-१-१-१-२ इत्यादि छ विकल्प थया छे. तेने पूर्वे कहेला (पृ० १४९.) सात नरकपृथिवीना छसंयोगी सात विकल्पोनी साथे गुणतां ४२ विकल्पो थया छे.

सातसंयोगी एक विकल्पने सात नरकपृथिवी साथे गुणतां सात विकल्प थया छे. ७-१२६-५२५-७००-३१५-४२-१ सर्व मळीने सात नैरयिकोको १७१६ विकल्पो थया छे.

१८. § ए प्रमाणे आठ नैरयिकोको एक संयोगी सात विकल्पो थया.

** आठ नैरयिकोको १-७ इत्यादि द्विकसंयोगी सात विकल्प थया छे, तेने पूर्वे कहेला (पृ. १३९. सू. १२) सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीस भांगो साथे गुणतां १४७ भांगो थया छे.

†† आठ नैरयिकोको १-१-६ इत्यादि त्रिकसंयोगी एकवीस विकल्पो थया छे. तेने पूर्वे जणावेलो (पृ० १४९.) सात नरकना त्रिकसंयोगी पांतीस भांगो साथे गुणतां ७३५ विकल्पो थया छे.

‡‡ आठ नैरयिकोको १-१-१-५ इत्यादि चतुःसंयोगी ३५ विकल्पो थया छे. तेने पूर्वे कहेला (पृ० १४३.) सात नरकना चतुःसंयोगी ३५ भांगोनी साथे गुणतां १२२५ विकल्पो थया छे.

सत्करप्पभाय एगे बालुयप्पभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे रयणप्पभाय जाव एगे तमाय दो अहेसत्तमाय होजा; अहवा एगे रयणप्पभाय जाव दो तमाय एगे अहेसत्तमाय होजा । एवं संचारेयधं, जाव अहवा दो रयणप्पभाय एगे सत्करप्पभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा ।

१९. [प्र०] नव मंते ! नेरतिया नेरय्यपवेसणणं पविसमाणा किं० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाय वा होजा; जाव अहेसत्तमाय वा होजा । अहवा एगे रयणप्पभाय अट्ट सत्करप्पभाय होजा । एवं दुयासंजोगो, जाव सत्तसंजोगो य जहा अट्टण्हं भणियं तथा नवण्हं पि भाणियधं; नवरं एकेको अम्महिओ संचारेयधो, सेसं तं चेव । पच्छिमो आलावगो—अहवा तिन्नि रयणप्पभाय एगे सत्करप्पभाय एगे बालुयप्पभाय जाव एगे अहेसत्तमाय होजा ।

२०. [प्र०] दस मंते ! नेरहया नेरय्यपवेसणणं पविसमाणा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाय वा होजा; जाव अहेसत्तमाय वा होजा । अहवा एगे रयणप्पभाय नव सत्करप्पभाय होजा । एवं दुयासंजोगो जाव सत्तसंजोगो य जहा

*पंचसंयोग अने षट्संयोग कखो तेम आठ नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु विशेष ए के एक एक नैरयिकोनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं छसंयोग सुधी पूर्व प्रमाणे जाणवुं. [छेछो विकल्प—] अथवा त्रण शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय.

यावत् षट्संयोगी विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक तमामां अने वे अधःसत्तम पृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् वे तमामां अने एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. ए प्रमाणे सर्वत्र संचार करवो. यावत् ७ अथवा वे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे ७, १४७, ७३५, १२२५, ७३५, १४७ अने ७. ए बधा मळीने आठ जीवने आश्रयी ३००३ विकल्पो थाय छे.]

सत्तसंयोगी विकल्प.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! नव नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते नव नैरयिको १ रत्नप्रभामां होय, अने ए प्रमाणे यावत् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय.†

नव नैरयिको.

अथवा 'एक रत्नप्रभामां अने आठ शर्कराप्रभामां पण होय' इत्यादि आठ नैरयिकोनो जेम "द्विकसंयोग [त्रिकसंयोग, **चतुष्कसंयोग, ††पंचकसंयोग, ‡‡षट्संयोग,] यावत् †††सप्तकसंयोग. कखो तेम नव नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकोनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. तेनो छेछो भांगो—अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक बालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसत्तम नरकमां होय.

द्विकसंयोगी विकल्पो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! दश नैरयिकोनैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं १ रत्नप्रभामां होय के यावत् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते दश नैरयिको १ रत्नप्रभामां पण होय, अने ए प्रमाणे यावत् ७ अधःसत्तम पृथिवीमां पण होय.‡‡

दश नैरयिको.

* १८. आठ नैरयिकोना १-१-१-१-५ इत्यादि पंचसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे, तेने सात नरकना पंचसंयोगी २१ भांगानी साथे गुणतां ७३५ विकल्पो थाय.

† आठ संख्यानां छसंयोगी १-१-१-१-३ इत्यादि २१ विकल्पो थाय छे, तेने पूर्वे कहेला (पृ. १४९.) सात नरकना छसंयोगी सात भांगा साथे गुणतां १४७ विकल्पो थाय.

‡ आठ संख्याना सात संयोगी सात विकल्प थाय छे, तेने सात नरकना सात संयोगी एक विकल्पनी साथे गुणतां सात भंग थाय. एप्रमाणे ७-१४७-७३५-१२२५-७३५-१४७-७ सर्वे मळीने आठ नैरयिकोना सात नरकने आश्रयी ३००३ भांगा थाय छे.

१९. † नव नैरयिकोना आश्रयी एक संयोगी सात विकल्पो थया.

‡ नव संख्याना द्विकसंयोगी आठ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश विकल्पनी साथे गुणतां १६८ भांगा थाय छे.

§ नव संख्याना त्रिकसंयोगी २८ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना त्रिकसंयोगी पांतीश विकल्पनी साथे गुणतां ९८० भांगा थाय छे.

** नव संख्याना चतुष्कसंयोगी १-१-१-६ इत्यादि ५६ विकल्प थाय, तेने सात नरकना चतुःसंयोगी ३५ विकल्प साथे गुणता १९६० भांगा थाय छे.

†† नव संख्याना १-१-१-१-५ इत्यादि पंचसंयोगी ७० विकल्पो थाय, तेने सात नरकना पंचसंयोगी एकवीश भांगा साथे गुणतां १४७० विकल्पो थाय छे.

‡‡ नव संख्याना षट्संयोगी १-१-१-१-३ इत्यादि ५६ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना छसंयोगी सात विकल्पनी साथे गुणतां ३९२ भांगा थाय छे.

§§ नव संख्याना सप्तसंयोगी १-१-१-१-१-३ इत्यादि २८ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना सप्तसंयोगी एक विकल्पनी साथे गुणतां २८ भांगा थाय छे. ए प्रमाणे ७-१६८-९८०-१९६०-१४७०-३९२-२८ मळीने पांच हजारने पांच विकल्पो थाय छे.

‡‡‡ २०. दश नरकना एक योगी सात विकल्प थाय.

નવવર્ણ; નવરં વલ્કેકો અમ્મહિઓ સંચારેયહો, સેસં તં જેવ । અપચ્છિમખાલાવગો—અહવા ચત્તારિ રચણપ્પમાય વમે સક્કરપ્પમાય જાવ યગે અહેસત્તમાય હોજા ।

૨૧. [પ્ર૦] સંલેજા મંતે ! નેરહયા નેરહયપ્પયેસણપ્પં પવિસમાણાં પુચ્છા । [૩૦] ગંગેયા ! રચણપ્પમાય ઘા હોજા; જાવ અહેસત્તમાય ઘા હોજા । અહવા યગે રચણપ્પમાય સંલેજા સક્કરપ્પમાય હોજા; યવં જાવ અહવા યગે રચણપ્પમાય સંલેજા અહેસત્તમાય હોજા । અહવા ઘો રચણપ્પમાય સંલેજા સક્કરપ્પમાય હોજા; યવં જાવ અહવા ઘો રચણપ્પમાય સંલેજા અહેસત્તમાય હોજા । અહવા તિચ્છિ રચણપ્પમાય સંલેજા સક્કરપ્પમાય હોજા । યવં યપ્પં કમેણં વલ્કેકો સંચારેયહો, જાવ અહવા ઘસ રચણપ્પમાય સંલેજા સક્કરપ્પમાય હોજા । યવં જાવ અહવા ઘસ રચણપ્પમાય સંલેજા અહેસત્તમાય હોજા । અહવા સંલેજા

દ્વિકસંયોગાદિ
વિકલ્પો.

અથવા એક રત્નપ્રમામાં અને નવ શર્કરાપ્રમામાં હોય—ઇત્યાદિ *દ્વિકસંયોગ [તથા †ત્રિકસંયોગ, ‡ચતુષ્કસંયોગ, §પંચકસંયોગ, ¶ષટ્કસંયોગ] યાવત્ §સત્તકસંયોગ જેમ નવ નારકનો કહ્યો તેમ ઘસ નૈરયિકનો પણ જાણવો. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે એક એક નૈરયિકનો અધિક સંચાર કરવો. બાકી બધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. તેનો છેલ્લો ભંગ—અથવા ચાર રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં યાવત્ એક અધ:સત્તમ-નરકમાં હોય.

સંલ્યાતનૈરયિકો.

૨૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સંલ્યાતા નૈરયિકો નૈરયિકપ્રવેશનકવહે પ્રવેશ કરતા જું રત્નપ્રમામાં હોય ? ઇત્યાદિ પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગાંગેય ! **સંલ્યાતા નૈરયિકો ૧ રત્નપ્રમામાં પણ હોય અને યાવત્ ૭ અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં પણ હોય. [એક સંયોગી સાત વિકલ્પ થયા.]

દ્વિકસંયોગી
વિકલ્પો.

૧ અથવા એક રત્નપ્રમામાં હોય અને સંલ્યાતા શર્કરાપ્રમામાં હોય. એ પ્રમાણે યાવત્ ૬ એક રત્નપ્રમામાં હોય અને સંલ્યાતા અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં પણ હોય. [છ વિકલ્પ થયા.] ૧ અથવા બે રત્નપ્રમામાં અને સંલ્યાતા શર્કરાપ્રમામાં હોય. એ પ્રમાણે યાવત્ ૬ બે રત્નપ્રમામાં અને સંલ્યાતા અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં પણ હોય. [છ વિકલ્પ થયા.] ૧ અથવા ત્રણ રત્નપ્રમામાં અને સંલ્યાતા શર્કરાપ્રમામાં હોય. એ

* દશ સંલ્યાતા ૧-૧ ઇત્યાદિ દ્વિકયોગી નવ વિકલ્પો થાય, તેને સાત નરકના દ્વિકસંયોગી એકવીશ ભાગા સાથે ગુણતાં ૧૮૧ વિકલ્પો થાય છે.

† દશ સંલ્યાતા ૧-૧-૮ ઇત્યાદિ ત્રિકયોગી ૩૬ વિકલ્પો થાય છે. તેની સાથે સાત નરકના ત્રિકસંયોગી પાંત્રીશ વિકલ્પોને ગુણતાં ૧૨૬૦ ભાગા થાય છે.

‡ દશ સંલ્યાતા ચતુષ્કયોગી ૧-૧-૧-૭ ઇત્યાદિ ૮૪ વિકલ્પો થાય, તેની સાથે સાત નરકના ૩૫ ભાગાને ગુણતાં ૨૯૪૦ ભાગા થાય છે.

§ દશ સંલ્યાતા પંચયોગી ૧-૧-૧-૧-૬ ઇત્યાદિ ૧૨૬ વિકલ્પો થાય, તેને સાત નરકના પંચસંયોગી એકવીશ ભાગાની સાથે ગુણતાં ૨૬૪૬ ભાગા થાય છે.

¶ દશ સંલ્યાતા ષટ્કયોગી ૧-૧-૧-૧-૧-૫ ઇત્યાદિ ૧૨૬ વિકલ્પો થાય છે, તેની સાથે સાત નરકના છસંયોગી સાત વિકલ્પોની સાથે ગુણતાં ૮૮૨ ભાગા થાય છે.

§ દશ સંલ્યાતા સપ્તયોગી ૧-૧-૧-૧-૧-૧-૪ ઇત્યાદિ ૮૪ વિકલ્પો થાય. અને સાત નરકનો સપ્તસંયોગી એકજ ભાગો થાય છે, માટે એકની સાથે ગુણતાં પણ ૮૪ ભાગા થાય છે. એ પ્રમાણે ૭-૧૮૧-૧૨૬૦-૨૯૪૦-૨૬૪૬-૮૮૨-૮૪ સર્વ મઠીને દશ નૈરયિકના ૮૦૦૮ વિકલ્પો થાય છે.

૨૧. ** અહિં અગ્યારથી માંઠીને શીર્ષપ્રદેહિકા સુધીની સંલ્યાતા જાણવા. તેમાં એકયોગી સાત જ વિકલ્પ થાય છે. દ્વિકસંયોગમાં સંલ્યાતામાં બે વિભાગ કરતાં એક અને સંલ્યાતા, બે અને સંલ્યાતા, યાવત્ દશ અને સંલ્યાતા—એ રીતે દશ વિકલ્પ, તથા 'સંલ્યાતા' અને સંલ્યાતા મઠીને અગીયાર વિકલ્પો થાય છે. અને તે વિકલ્પો ઉપરની રત્નપ્રમાદિ પૃથિવી સાથે એકથી આરંભી સંલ્યાતા સુધીના અગીયાર પદનો સંચાર કરવાથી અને નીચેની શર્કરાપ્રમાદિ સાથે કેવલ 'સંલ્યાતા'પદનો સંચાર કરવાથી થાય છે. એથી વિપરીત ઉપરની પૃથિવી સાથે 'સંલ્યાતા'પદનો અને નીચેની પૃથિવી સાથે એકાદિ પદનો સંચાર કરવાથી જે ભાગા થાય તે અહિં વિવક્ષિત નથી. અર્થાત્—એક રત્નપ્રમામાં અને સંલ્યાતા શર્કરાપ્રમામાં, એક રત્નપ્રમામાં અને સંલ્યાતા શાલુકપ્રમામાં હોય—ઇત્યાદિ વિકલ્પો કરવા, પણ સંલ્યાતા રત્નપ્રમામાં અને એક શર્કરાપ્રમામાં, સંલ્યાતા રત્નપ્રમામાં અને એક શાલુકપ્રમામાં હોય—ઇત્યાદિ વિકલ્પો ન કરવા, કેમકે પૂર્વના સૂત્રોમાં આજ ક્રમ વિવક્ષિત છે. આગળના સૂત્રોમાં દશ વગેરે રાશિઓના બે ભાગ કરી એકાદિ લઘુ સંલ્યાતાઓને પૂર્વે મૂકી છે, અને નવાદિ મોટી સંલ્યાતાઓને પછી મૂકી છે, અર્થાત્ 'એક રત્નપ્રમામાં અને નવ શર્કરાપ્રમામાં'—એ પ્રમાણે કહ્યું છે. પણ 'નવ રત્નપ્રમામાં અને એક શર્કરાપ્રમામાં'—એવા કોઈ વિકલ્પો જણાવ્યા નથી. એ પ્રમાણે અહિં પણ ઉપરની નરકપૃથિવી સાથે એકાદિ સંલ્યાતાઓ, અને નીચેની નરકપૃથિવી સાથે સંલ્યાતરાશિનો સંચાર કરવો. તેમાં પાછલની નરકપૃથિવી સાથેની સંલ્યાતરાશિમાંથી એકાદિ સંલ્યાતાને ઓછી કરવામાં આવે તોપણ સંલ્યાતા રાશિનું સંલ્યાતાતપણું કાયમ રહે છે. તેમાં રત્નપ્રમાની સાથે એકથી આરંભી સંલ્યાતા સુધીના અગીયાર પદનો અને બાકીની પૃથિવીઓ સાથે અનુક્રમે 'સંલ્યાતા'પદનો સંચાર કરતાં છાસઠ ભાગા થાય છે—

એક.	સંલ્યાતા.	એક.	સંલ્યાતા.
૧ રત્ન.	શર્કરા.	૪ રત્ન.	ધૂમ.
૨ "	શાલુકા.	૫ "	તમા.
૩ "	પંક.	૬ "	સત્તમા.

આ પ્રમાણે બે અને સંલ્યાતા—ઇત્યાદિ દશ વિકલ્પના ધીજા સાઠ ભાગા મઠીને રત્નપ્રમાના સંયોગવાઠા ૬૬ ભાગા જાણવા. શર્કરાપ્રમાનો બાકીનો નરકપૃથિવીઓ સાથે યોગ કરતાં પાંચ વિકલ્પ થાય, તેને પૂર્વેક અગીયાર વિકલ્પ સાથે ગુણતાં શર્કરાપ્રમાના સંયોગવાઠા ૫૫ વિકલ્પો થાય છે. તે પ્રમાણે શાલુકપ્રમાના સુમ્માઠીસ, પંકપ્રમાના તેત્રીશ, ધૂમપ્રમાના બાવીશ અને તમાપ્રમાના અગીયાર વિકલ્પો થાય છે. બધા મઠીને દ્વિકસંયોગી થસોને એકવીશ વિકલ્પ થાય છે.

રચણપ્પમાય સંલેખા સક્કરપ્પમાય હોજા, જાવ અહવા સંલેખા રચણપ્પમાય સંલેખા અહેસત્તમાય હોજા । અહવા एगे सक्कर-
 प्पमाय संलेखा वालुयप्पमाय होजा, एवं अहा रंयणपपभा उवरिमपुंढवीहिं समं चारिया एवं सक्करपपभा वि उवरिमपुंढवीहिं
 समं चारेयद्वा, एवं एकेका पुढवी उवरिमपुंढवीहिं समं चारेयद्वा; जाव अहवा संलेखा तमाय संलेखा अहेसत्तमाय होजा ।
 अहवा एगे रचणपपमाय एगे सक्करपपमाय संलेखा वालुयपपमाय होजा; अहवा एगे रचणपपमाय एगे सक्करपपमाय संलेखा
 पंकपपमाय होजा; जाव अहवा एगे रचणपपमाय एगे सक्करपपमाय संलेखा अहेसत्तमाय होजा । अहवा एगे रचणपपमाय दो
 सक्करपपमाय संलेखा वालुयपपमाय होजा; जाव अहवा एगे रचणपपमाय दो सक्करपपमाय संलेखा अहेसत्तमाय होजा । अहवा
 एगे रचणपपमाय तिभि सक्करपपमाय संलेखा वालुयपपमाय होजा; एवं एएणं कमेणं एकेको संचारेयद्दो; अहवा एगे रच-
 णपपमाय संलेखा सक्करपपमाय संलेखा वालुयपपमाय होजा; जाव अहवा एगे रचणपपमाय संलेखा वालुयपपमाय संलेखा

પ્રમાણે એ ક્રમથી એક એક નૈરચિકનો અધિક સંચાર કરવો. યાવત્ ૧ અથવા દસ રત્નપ્રમામાં અને સંખ્યાતા શર્કરાપ્રમામાં હોય. એ પ્રમાણે
 યાવત્ ૬ અથવા દસ રત્નપ્રમામાં અને સંખ્યાતા અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં હોય. ૧ અથવા સંખ્યાતા રત્નપ્રમામાં અને સંખ્યાતા શર્કરાપ્રમામાં
 હોય. એ પ્રમાણે યાવત્ ૬ અથવા સંખ્યાતા રત્નપ્રમામાં અને સંખ્યાતા અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં હોય. ૧ અથવા એક શર્કરાપ્રમામાં અને
 સંખ્યાતા વાલુકામાં હોય. એ પ્રમાણે જેમ રત્નપ્રમાપૃથિવીનો બીજી પૃથિવી સાથે યોગ કર્યો તેમ શર્કરાપ્રમા પૃથિવીનો પણ ઉપરની બધી
 પૃથિવીઓ સાથે યોગ કરવો. એ પ્રકારે એક એક પૃથિવીનો ઉપરની પૃથિવીઓ સાથે યોગ કરવો. યાવત્ અથવા સંખ્યાતા તમ:પ્રમામાં અને
 સંખ્યાતા અધ:સત્તમ નરકમાં પણ હોય. [એ પ્રમાણે ત્રિકસંયોગી વિકલ્પો થયા.]

૧ *અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં અને સંખ્યાતા વાલુકાપ્રમામાં હોય. ૨ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં અને
 સંખ્યાતા પંકપ્રમામાં હોય. એ પ્રમાણે યાવત્ અથવા એક રત્નપ્રમામાં એક શર્કરાપ્રમામાં અને સંખ્યાતા અધ:સત્તમ પૃથિવીમાં હોય. અથવા એક

ત્રિકસંયોગી
 વિકલ્પો.

૧-પ્પમાય ડ- ગ-ઘ । ૨-પુઢવીપુહિં ણ-ઘ । ૩ પુઢવીપુહિં ણ-ઘ ।

* ત્રિકસંયોગમાં 'રત્નપ્રમા, શર્કરાપ્રમા અને વાલુકાપ્રમા'—એ પ્રથમ ત્રિકલ્પો છે. અને તેમાં 'એક, એક અને સંખ્યાતા' એ પ્રથમ વિકલ્પ છે. તેમાં
 પ્રથમ પૃથિવીમાં એક જીવ અને ત્રીજી પૃથિવીમાં સંખ્યાતા જીવ સ્થાપીને અને બીજી પૃથિવીમાં અનુક્રમે સંખ્યાતા વિન્યાસમાં બેથી માંડીને દસ સુધીની
 સંખ્યાનો તથા સંખ્યાતપદનો યોગ કરવાથી પૂર્વેના વિકલ્પની સાથે મઠીને અભીયાર વિકલ્પો થાય છે. ત્યાર બાદ બીજી અને ત્રીજી પૃથિવીમાં 'સંખ્યાત'પદ
 અને પ્રથમ પૃથિવીમાં બેથી માંડીને સંખ્યાતપદ સુધી સંચાર કરતાં દશ વિકલ્પો થાય છે. સર્વ મઠીને એકવીસ વિકલ્પો થાય છે; તે આ પ્રમાણે—

રત્નપ્રમા.	શર્કરાપ્રમા.	વાલુકા.	રત્નપ્રમા.	શર્કરાપ્રમા.	વાલુકા.
૧.	૧	સંખ્યાતા	૧૧.	૧	સંખ્યાતા
૨.	૨	"	૧૨.	૨	"
૩.	૩	"	૧૩.	૩	"
૪.	૪	"	૧૪.	૪	"
૫.	૫	"	૧૫.	૫	"
૬.	૬	"	૧૬.	૬	"
૭.	૭	"	૧૭.	૭	"
૮.	૮	"	૧૮.	૮	"
૯.	૯	"	૧૯.	૯	"
૧૦.	૧૦	"	૨૦.	૧૦	"
			૨૧.	સંખ્યાતા.	"

તે એકવીસ વિકલ્પોની સાથે સાત નરકપૃથિવીના ત્રિકસંયોગી પાંત્રીશ પદોનો ગુણાકાર કરવાથી ત્રિકસંયોગી સાતસો ને પાંત્રીશ વિકલ્પો થાય છે.
 આદિની ચાર નરકપૃથિવીઓએ પ્રથમ અતુલકસંયોગ થાય છે. તેમાં પ્રથમની ત્રણ પૃથિવીમાં 'એક એક અને ચોથી પૃથિવીમાં સંખ્યાતા'—એ પ્રમાણે પ્રથમ
 વિકલ્પ થાય છે. ત્યાર બાદ પૂર્વોક્ત ક્રમથી ત્રીજી પૃથિવીમાં બેથી માંડીને સંખ્યાતપદનો સંચાર કરતાં બીજા દશ વિકલ્પો થાય છે. એમ બીજી તથા પ્રથમ
 પૃથિવીમાં પણ બેથી માંડીને સંખ્યાતપદનો સંચાર કરતાં બીજા વિકલ્પો થાય, અને બધા મઠીને એકત્રીસ વિકલ્પ થાય. તે એકત્રીસ વિકલ્પોની સાથે સાત
 નરકના અતુલકસંયોગી પાંત્રીશ પદોનો ગુણાકાર કરતાં અતુલકસંયોગી એક હજાર પંચાશી વિકલ્પો થાય છે.

આદિની પાંચ પૃથિવીઓએ પ્રથમ પંચસંયોગ થાય છે, અને તેમાં આદિની ચાર પૃથિવીમાં 'એક એક અને પાંચમી પૃથિવીમાં સંખ્યાતા'—એમ પ્રથમ
 વિકલ્પ થાય, ત્યાર બાદ પૂર્વોક્ત ક્રમથી ચોથી નરકપૃથિવીમાં અનુક્રમે બેથી માંડીને સંખ્યાત પદ સુધી સંચાર કરવો. એ રીતે બાકીની ત્રીજી, બીજી અને
 પ્રથમ પૃથિવીમાં પણ સંચાર કરવો. એમ બધા મઠીને પંચકલ્પોની એકતાલીસ વિકલ્પો થાય છે. તેની સાથે સાત નરકપૃથિવીના પંચસંયોગી એકવીસ પદોનો
 ગુણાકાર કરવાથી આઠસોને એકસઠ વિકલ્પો થાય છે.

ષટ્કસંયોગમાં પૂર્વોક્ત ક્રમથી એકાદન વિકલ્પો થાય છે, અને તેની સાથે સાત નરકના ષટ્કસંયોગી સાત પદોનો ગુણાકાર કરવાથી ત્રણસો ને સત્તાવન
 વિકલ્પો થાય છે.

સપ્તસંયોગમાં તો પૂર્વોક્ત માવનાથી એકસઠ વિકલ્પ થાય છે. એ પ્રમાણે સંખ્યાત નૈરચિકોને આશ્રયી ૭, ૨૧૧, ૭૨૫, ૧૦૮૫, ૮૬૧, ૩૫૭ તથા
 ૬૧-બધા મઠીને ૩૩૩૭ વિકલ્પો થાય છે.

अहेसत्तमाए होजा । अहवा दो रयणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा तिभि रयणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; एवं एणं कमेणं एकेको रयणप्पभाए संचारेयद्वो; जाव अहवा संखेजा रयणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए संखेजा वालुयप्पभाए होजा; जाव अहवा संखेजा रयणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेजा पंकप्पभाए होजा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेजा पंकप्पभाए होजा; एवं एणं कमेणं तियासंजोगो, चउकसंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा दसण्हं तहेव भाणियद्वो । पच्छिमो आलावगो सँससंजोगस्स—अहवा संखेजा रयणप्पभाए संखेजा सक्करप्पभाए जाव संखेजा अहेसत्तमाए होजा ।

२२. [प्र०] असंखेजा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणणं० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होजा, जाव अहेसत्तमाए वा होजा । अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेजा सक्करप्पभाए होजा; एवं दुयासंजोगो, जाव सँसगसंजोगो य जहा संखेजाणं भणिओ तहा असंखेजाण वि भाणियद्वो, नवरं 'असंखेजाओ' अम्महिओ भाणियद्वो, सेसं तं चेव, जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो—अहवा असंखेजा रयणप्पभाए असंखेजा सक्करप्पभाए जाव असंखेजा अहेसत्तमाए होजा ।

२३. [प्र०] उक्कोसेणं भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणणं० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव रयणप्पभाए होजा; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होजा; जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होजा; एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होजा; अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होजा; जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्प-

रत्तप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. अथवा एक रत्तप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां होय. अथवा एक रत्तप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी एक एक नैरयिको संचार करवो. अथवा एक रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय, यावद् अथवा एक रत्तप्रभामां संख्याता वालुकाप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां होय. अथवा वे रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा वे रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां होय. अथवा त्रण रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी रत्तप्रभामां एक एकनो संचार करवो. यावत् अथवा संख्याता रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा संख्याता रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां होय. अथवा एक रत्तप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. यावद् अथवा एक रत्तप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां होय. अथवा एक रत्तप्रभामां वे वालुकाप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग, यावत् सप्तकसंयोग जेम दस नैरयिकोनो कह्यो तेम कह्यो. तेनो छेछो आलापक—अथवा संख्याता रत्तप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने यावत् संख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां होय.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्यात नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्तप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! १ रत्तप्रभामां पण होय अने यावत् ७ अधःसत्तमपृथिवीमां पण होय. * १ अथवा एक रत्तप्रभामां अने असंख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम संख्याता नैरयिकोनो द्विकसंयोग, यावत् सप्तकसंयोग कह्यो तेम असंख्यातानो पण कह्यो. पण विशेष ए के अहि 'असंख्याता' पद कह्युं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं, यावत् छेछो आलापक—अथवा असंख्याता रत्तप्रभामां असंख्याता शर्कराप्रभामां यावद् असंख्याता अधःसत्तमपृथिवीमां पण होय.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता नैरयिको उत्कृष्टपदे शुं रत्तप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! १ सर्व नैरयिको उत्कृष्टपदे रत्तप्रभामां होय. [द्विकसंयोगी छ विकल्प—] १ अथवा रत्तप्रभामां अने शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा रत्तप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् अथवा ६ रत्तप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमां पण होय. [त्रिकसंयोगी १५ विकल्प—] १ अथवा रत्तप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ५ रत्तप्रभा शर्कराप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमां होय. ६ अथवा रत्तप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां पण होय. यावद् १० अथवा रत्तप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमां होय.

१ सक्करप्पभाए क । २ चउकसं-क । ३ सत्तासं-क । ४ सत्तासं-क ।

* असंख्याता नैरयिकोने आश्रथी एकयोगादि विकल्पो आ प्रमाणे छे—७, २५२, ८०५, ११९०, १४५, ३९२, ६७—वा मळीने ३६५८ विकल्पो थाय छे.

असंख्यात
नैरयिको.

द्विकसंयोग,
विकल्पो.

उत्कृष्टप्रवेशनक.

द्विकसंयोग.

त्रिकसंयोग.

भाय अहेसत्तमाय य होजा; अहवा रयणप्पभाय पंकप्पभाय धूमाय होजा, एवं रयणप्पमं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणितो तहा भाणियधं जाव अहवा रयणप्पभाय तमाय य अहेसत्तमाय य होजा । अहवा रयणप्पभाय य सक्करप्पभाय वालुयप्पभाय पंकप्पभाय य होजा; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय वालुयप्पभाय धूमप्पभाय य होजा; जाव अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय वालुयप्पभाय अहेसत्तमाय य होजा; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय पंकप्पभाय धूमप्पभाय य होजा; एवं रयणप्पमं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियधं, जाव अहवा रयणप्पभाय धूमप्पभाय तमाय अहेसत्तमाय य होजा । अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय वालुयप्पभाय पंकप्पभाय धूमप्पभाय य होजा १; अहवा रयणप्पभाय जाव पंकप्पभाय तमाय य होजा २; अहवा रयणप्पभाय जाव पंकप्पभाय अहेसत्तमाय य होजा ३; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय वालुयप्पभाय धूमप्पभाय तमाय य होजा ४; एवं रयणप्पमं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियधं; जाव अहवा रयणप्पभाय पंकप्पभाय जाव अहेसत्तमाय य होजा; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय जाव धूमप्पभाय तमाय य होजा १; अहवा रयणप्पभाय जाव धूमप्पभाय अहेसत्तमाय य होजा २; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय जाव पंकप्पभाय तमाय य अहेसत्तमाय य होजा ३; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय वालुयप्पभाय धूमप्पभाय तमाय अहेसत्तमाय य होजा ४; अहवा रयणप्पभाय सक्करप्पभाय पंकप्पभाय जाव अहेसत्तमाय य होजा ५; अहवा रयणप्पभाय वालुयप्पभाय जाव अहेसत्तमाय होजा ६; अहवा रयणप्पभाय य सक्करप्पभाय य जाव अहेसत्तमाय य होजा ७ ।

२४. [प्र०] एयस्स णं भंते ! रयणप्पमापुहविनेरइयप्पवेसणगस्स सक्करप्पमापुहवि- जाव अहे सत्तमापुहविनेरइयप्पवेसणगस्स कयरे- कयरे जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सद्धत्थोवे अहेसत्तमापुहविनेरइयप्पवेसण, तमापुहविनेरइयप्पवेसण असंखेज्जगुणे; एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पमापुहविनेरइयप्पवेसण असंखेज्जगुणे ।

२५. [प्र०] तिरिक्खजोणियपवेसणं णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गंगेया ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-एग्गिदिय-तिरिक्खजोणियपवेसण, जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियपवेसण ।

११ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभाने मुक्या शिवाय त्रण नैरयिको नो त्रिकसंयोग कळो तेम अहीं कहेवुं. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा, तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां पण होय.

[चतुःसंयोगी २० विकल्प-] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने धूमप्रभामां होय. यावत् ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमां पण होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाने मुक्या शिवाय जेम चार नैरयिको नो चतुष्कसंयोग कळो छे तेम अहीं कहेवो. यावद् २० अथवा रत्नप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां होय.

[पंचसंयोगी १५ विकल्प-] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने तम प्रभामां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमां होय. ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा अने तमःप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाने छोड्या शिवाय जेम पांच नैरयिको नो पंचसंयोग कळो तेम कहेवो. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभा यावत् अधःसत्तमपृथिवीमां होय.

[षट्कसंयोगी छ विकल्प-] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा यावत् धूमप्रभा अने तमःप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावत् धूमप्रभा अने अधःसत्तमपृथिवीमां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा यावत् पंकप्रभा तमःप्रभा अने अधःसत्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा यावत् अधःसत्तमपृथिवीमां होय. ६ अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा यावत् अधःसत्तमपृथिवीमां होय. [सप्तसंयोगी १ विकल्प-] अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा, यावद् अधःसत्तमपृथिवीमां होय. [ए रीते उत्कृष्ट पदना १-६-१५-२०-१५-६-१ मळी ६४ विकल्पो थाय छे.]

२४. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् अधःसत्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनकमां कया प्रवेशनको कया प्रवेशनकोपी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! सौपी अल्प अधःसत्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनक छे, तेना करतां तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असंख्येयगुण छे. ए प्रमाणे विपरीत क्रमयी यावत् रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असंख्यातगुण छे.

तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कळुं छे ? [उ०] हे गांगेय ! तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कळुं छे. ते आ प्रमाणे -एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक.

चतुःसंयोग.

पंचसंयोग.

षट्कसंयोग.

सप्तसंयोग.

नैरयिकप्रवेशनक
शरयवहुत्त.

तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक
प्रकार.

२६. [प्र०] एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियप्पवेसणएणं पविसमाणे किं एगिदिपसु होज्जा, जाव पंचिदिपसु होज्जा ? [उ०] गंगेया ! एगिदिपसु वा होज्जा; जाव पंचिदिपसु वा होज्जा ।

२७. [प्र०] दो भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! एगिदिपसु वा होज्जा, जाव पंचिदिपसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिदिपसु होज्जा एगे वेइदिपसु होज्जा, एवं जहा नेरइयप्पवेसणए तहा तिरिक्खजोणियप्पवेसणए वि भाणियहो, जाव असंखेज्जा ।

२८. [प्र०] उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव एगिदिपसु होज्जा, अहवा एगिदिपसु वा वेइदिपसु वा होज्जा । एवं जहा नेरतिया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयह्वा । एगिदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो, तियासंजोगो, चंडकसंजोगो, पंचसंजोगो उवउंजिऊण भाणियहो, जाव अहवा एगिदिपसु वा, वेइदिय० जाव पंचिदिपसु वा होज्जा ।

२९. [प्र०] एयस्स णं भंते ! एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगरस्स, जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगरस्स व कयरे कयरे— जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सच्चत्योवे पंचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइदिय० विसेसाहिए, वेइदिय० विसेसाहिए, एगिदियतिरिक्ख० विसेसाहिए ।

३०. [प्र०] मणुस्सप्पवेसणए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा— संमुच्छिममणुस्सप्पवेसणए, गम्भवकंतियमणुस्सपवेसणए थ ।

३१. [प्र०] एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सप्पवेसणएणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, गम्भवकंतियमणुस्सेसु होज्जा ? [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गम्भवकंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।

कक तिर्यचयोनिक-

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एक तिर्यचयोनिक जीव तिर्यचयोनिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! *१ एक तिर्यचयोनिक जीव एकेन्द्रियोमां होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियोमां पण होय.

वे तिर्यचयोनिको-

२७. [प्र०] हे भगवन् ! वे तिर्यचयोनिक जीवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! १ एकेन्द्रियोमां पण होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियोमां पण होय. अथवा एक एकेन्द्रियोमां अने एक वेइन्द्रियोमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकप्रवेशनकमां कहुं तेम तिर्यचयोनिकप्रवेशनकमां यावत् असंख्येय तिर्यचयोनिको सुधी कहेवुं.

यावत् असंख्याता तिर्यचो-

उत्कृष्ट तिर्यच योनिकप्रवेशनक-

२८. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचयोनिको उत्कृष्टपणे [शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय ?] ए प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते वधा एकेन्द्रियोमां होय. अथवा एकेन्द्रियो अने वेइन्द्रियोमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिको नो संचार कयो तेम तिर्यचयोनिको नो पण संचार करवो. एकेन्द्रियोने मुक्या सिवाय द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग अने पंचकसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवो. यावत् अथवा एकेन्द्रियोमां वेइन्द्रियोमां यावत् पंचेन्द्रियोमां पण होय.

तिर्यचयोनिक-प्रवेशनकप्रवेशनक-

२९. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक सौधी अल्प छे, तेथी चउरिन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, तेना करतां त्रीन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, तेना करतां वेइन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, अने तेना करतां एकेन्द्रियतिर्यचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे.

मनुष्यप्रवेशनक.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गांगेय ! वे प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—संमुच्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनक.

कक मनुष्य-

३१. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो एक मनुष्य शुं संमुच्छिम मनुष्योमां होय के गर्भज मनुष्योमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते संमुच्छिम मनुष्योमां पण होय अने गर्भज मनुष्योमां पण होय.

१-२ वेदियेसु क । ३ चउक्कासं- क । ४ पंचासं- क ।

२६. * यद्यपि अर्हं 'एक जीव एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय' एम कहुं, तेमां ए विचारणीय छे के एकेन्द्रियोमां एक जीव कदापि उत्पन्न थतो नथी, परंतु प्रतिसमय अनन्त जीवो उत्पन्न थाय छे; तोपण विजातीय देवादिभवथी नीकळीने जे एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय ते प्रवेशनक कहेवाय छे, ते अपेक्षाए एक जीव पण छामे. प्रवेशनक एटले जे विजातीय भवथी आवीने विजातिमां उत्पन्न थाय. सजातीय जीव सजातिमां आवीने उत्पन्न थाय, ते तो तेमां प्रविष्टज छे माटे ते प्रवेशनक न कहेवाय. हवे एक जीव अनुक्रमे एकेन्द्रियादि पांच स्थळे आवी उतरन थाय ल्यारे तेना पांच विकल्पो थाय. वे जीवो पण एक एक स्थळे साथे उत्पन्न थाय तो पण पांच ज विकल्पो थाय, अने द्विकसंयोगी दश विकल्पो थाय, हवे त्रणथी मांथीने असंख्यात तिर्यचयोनिकोसुं प्रवेशनक नैरयिकप्रवेशनकनी पेठे जाणवुं, परन्तु नारको सात नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय अने तिर्यचो एकेन्द्रियादि पांच स्थानकोमां उत्पन्न थाय, माटे मांगानी संख्या विभ भिन्न थाय, ते बुद्धिमाने स्वयं विचारी लेवा. यद्यपि अर्हं अनन्त एकेन्द्रियो उत्पन्न थाय छे, परन्तु उपर बतावेळं प्रवेशनकसुं कक्षण असंख्यात जीवोमां अ घटी शके छे माटे असंख्यात सुधी प्रवेशनक जाणवुं.

३२. [प्र०] दो मंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्तेसु वा होजा, गम्भवकंतियमणुस्तेसु वा होजा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्तेसु वा होजा एगे गम्भवकंतियमणुस्तेसु वा होजा, एवं एपणं कमेणं जहा नेरइयपवे-सणप ताहा मणुस्सपवेसणप वि भाणियधे, जाव दस ।

३३. [प्र०] संखेजा मंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्तेसु वा होजा, गम्भवकंतियमणुस्तेसु वा होजा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्तेसु होजा संखेजा गम्भवकंतियमणुस्तेसु वा होजा, अहवा दो संमुच्छिममणुस्तेसु होजा संखेजा गम्भवकंतियमणुस्तेसु होजा, एवं एकेकं उस्तारितेसु जाव अहवा संखेजा संमुच्छिममणुस्तेसु होजा संखेजा गम्भवकंतियमणुस्तेसु होजा ।

३४. [प्र०] असंखेजा मंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव संमुच्छिममणुस्तेसु होजा । अहवा असंखेजा संमुच्छिममणुस्तेसु एगे गम्भवकंतियमणुस्तेसु होजा, अहवा असंखेजा संमुच्छिममणुस्तेसु दो गम्भवकंतियमणु-स्तेसु होजा, एवं जाव असंखेजा संमुच्छिममणुस्तेसु होजा संखेजा गम्भवकंतियमणुस्तेसु होजा ।

३५. [प्र०] उक्कोसा मंते ! मणुस्ता० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव संमुच्छिममणुस्तेसु होजा, अहवा समु-च्छिममणुस्तेसु य गम्भवकंतियमणुस्तेसु वा होजा ।

३६. [प्र०] एयस्स णं मंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गम्भवकंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरे- जाव विसेसाहिया ? [उ०] गंगेया ! सधेत्योवे गम्भवकंतियमणुस्सपवेसणप, संमुच्छिममणुस्सपवेसणप असंखेजगुणे ।

३७. [प्र०] देवपवेसणप णं मंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गंगेया ! चउच्चिहे पण्णसे, तं जहा-भवनवासिदेवपवे-सणप, जाव वेमाणियदेवपवेसणप ।

३८. [प्र०] एगे मंते ! देवे देवपवेसणपणं पविसमाणे किं भवनवासीसु होजा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियसु होजा ? [उ०] गंगेया ! भवनवासीसु वा होजा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियसु वा होजा ।

३२. [प्र०] हे भगवन् ! बे मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! बे मनुष्यो संमूर्च्छिम मनु-ष्योमां पण होय अने गर्भज मनुष्योमां पण होय. अथवा एक संमूर्च्छिम मनुष्यमां होय अने एक गर्भजमनुष्यमां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम नैरयिकप्रवेशनक कहुं तेम मनुष्यप्रवेशनक पण यावद् दश मनुष्यो सुधी कहेवुं.

बे मनुष्यो.

दश मनुष्यो.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! तेओ संमूर्च्छिम मनुष्यमां पण होय अने गर्भज मनुष्यमां पण होय. अथवा एक संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय. अथवा बे संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय. ए प्रमाणे एक एक वधारता यावद् अथवा संख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय.

संख्याता मनुष्यो.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने एक गर्भज मनुष्योमां होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने बे गर्भज मनुष्योमां होय. ए प्रमाणे यावत् असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय.

असंख्याता मनुष्यो.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यो उत्कृष्टपणे [कया प्रवेशनकमां होय ?] ए संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधाय संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय. अथवा संमूर्च्छिम मनुष्यो अने गर्भज मनुष्योमां पण होय.

उत्कृष्ट मनुष्य-प्रवेशनक.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्च्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! सौधी अल्प गर्भजमनुष्य प्रवेशनक छे, अने संमूर्च्छिम मनुष्यप्रवेशनक असंख्येयगुण छे.

मनुष्यप्रवेशनक अल्पवहुण.

देवप्रवेशनक.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! देवप्रवेशनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गांगेय ! चार प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे—१ भवनवासिदेवप्रवेशनक, यावद् ४ वैमानिकदेवप्रवेशनक.

देवप्रवेशनकका प्रकार.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! एक देव देवप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो हुं भवनवासिमां होय, वानव्यतरमां होय, ज्योतिषिकमां होय के वैमानिकमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! १ भवनवासिमां होय, २ वानव्यतर, ३ ज्योतिषिक अने ४ वैमानिकमां पण होय.

एक देव.

३९. [प्र०] दो भंते ! देवा देवपवेशणपणं० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! भवणवासीसु वा होजा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होजा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होजा, एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेशणए तहा देवपवेशणए वि भाणियधे, जाव असंखेज्ज सि ।

४०. [प्र०] उक्कोसा भंते ! पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सधे वि ताव जोइसिएसु होजा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होजा, अहवा जोइसिय- वाणमंतरेसु य होजा, अहवा जोइसिय- वेमाणिएसु य होजा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होजा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वेमाणिएसु य होजा, अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होजा ।

४१. [प्र०] एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेशणगस्स, वाणमंतरदेवपवेशणगस्स, जोइसियदेवपवेशणगस्स, वेमाणिय-देवपवेशणगस्स य कयरे कयरे- जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सधत्थोवे वेमाणियदेवपवेशणए, भवणवासिदेवपवेशणए असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेवपवेशणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेशणए संखेज्जगुणे ।

४२. [प्र०] एयस्स णं भंते ! नेरइयपवेशणगस्स तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देवपवेशणगस्स य कयरे कयरे- जाव विसेसाहिए वा ? [उ०] गंगेया ! सधत्थोवे मणुस्सपवेशणए, नेरइयपवेशणए असंखेज्जगुणे, देवपवेशणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेशणए असंखेज्जगुणे ।

४३. [प्र०] संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति, संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति, जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति, संतरं नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति, जाव संतरं वाणमंतरा उववज्जंति निरंतरं वाणमंतरा उववज्जंति, सांतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति, सांतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति, जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति; नो संतरं पुढविकाइया उववज्जंति निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा नेरइया, जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं

वे देवो.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! वे देवो देवप्रवेशनकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते वे देवो १ भवनवासिमां होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिकमां पण होय. अथवा एक भवनवासिमां होय अने एक वानव्यंतरमां होय. ए प्रमाणे जेम तिर्यचयोनिकप्रवेशनक कहुं छे तेम देवप्रवेशनक पण यावद् असंख्याता देवो सुधी जाणवुं.

सकलदेवप्रवेशनक.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! देवो उक्कट्टपणे [कया प्रवेशनकमां होय ?]-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते वधा ज्योतिष्कमां होय. अथवा ज्योतिष्क अने भवनवासिमां होय. अथवा ज्योतिष्क अने वानव्यंतरमां होय. अथवा ज्योतिष्क अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी अने वानव्यंतरमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, वानव्यंतर अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी, वानव्यंतर अने वैमानिकमां होय.

देवप्रवेशनकउं
अस्पष्टत्व.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवप्रवेशनक, वानव्यंतरदेवप्रवेशनक, ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक अने वैमानिकदेवप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कया प्रवेशनकथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! वैमानिकदेवप्रवेशनक सौधी अल्प छे, तेना करतां असंख्येयगुण भवनवासिदेवप्रवेशनक छे, तेथी असंख्येयगुण वानव्यंतरदेवप्रवेशनक छे, अने तेनाथी ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक संख्यातगुण छे.

सर्व प्रवेशनकउं
अस्पष्टत्व.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनक, तिर्यचयोनिकप्रवेशनक, मनुष्यप्रवेशनक अने देवप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कया प्रवेशनकथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! सौधी अल्प मनुष्यप्रवेशनक छे, तेथी नैरयिकप्रवेशनक असंख्यात गुण छे, तेना करतां असंख्यातगुण देवप्रवेशनक छे अने तेनाथी असंख्यातगुण तिर्यचयोनिकप्रवेशनक छे.

उत्पाद अने उद्वर्तना.

नैरयिकोनी
सान्तर अने
निरन्तर उत्पाद
अने उद्वर्तना.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर (अन्तरसहित) उत्पन्न थाय छे के निरन्तर (अन्तररहित) उत्पन्न थाय छे ? असुरकुमारो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? यावत् वैमानिक देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? नैरयिको सान्तर उद्वर्त छे-नीकळे छे के निरन्तर उद्वर्त छे ? यावत् वानव्यंतरो सांतर उद्वर्त छे के निरन्तर उद्वर्त छे ? ज्योतिष्को सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? अने वैमानिको सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? [उ०] हे गांगेय ! नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. यावत् स्तनितकुमारो सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. पृथिवीकायिको सान्तर उत्पन्न यता नथी पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् वनरपत्तिकायिको पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. तथा बाकीना बधा जीवो नैरयिकोनी पेठे सान्तर

पि वेमाणिया उचवज्जति; संतरं पि नेरइया उचवज्जति निरंतरं पि नेरइया उचवज्जति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतरं पुढ-
विकाइया उचवज्जति निरंतरं पुढविकाइया उचवज्जति, एवं जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा नेरइया, नवरं जोइसिय—वेमाणिया
अचंति अभिलाओ, जाव संतरं पि वेमाणिया अचंति निरंतरं पि वेमाणिया अचंति ।

४४. [प्र०] संतो मंते ! नेरइया उचवज्जति, असतो मंते ! नेरइया उचवज्जति ? [उ०] गंगेया ! सतो नेरइया उचव-
ज्जति, नो असतो नेरइया उचवज्जति; एवं जाव वेमाणिया ।

४५. [प्र०] सतो मंते ! नेरइया उचवज्जति, असतो नेरइया उचवज्जति ? [उ०] गंगेया ! सतो नेरइया उचवज्जति, नो असतो
नेरइया उचवज्जति; एवं जाव वेमाणिया, नवरं जोइसिय—वेमाणिपसु अचंति भाणियच्चं ।

४६. [प्र०] सओ मंते ! नेरइया उचवज्जति, असतो मंते नेरइया उचवज्जति; सतो असुरकुमारा उचवज्जति, जाव
सतो वेमाणिया उचवज्जति, असतो वेमाणिया उचवज्जति; सतो नेरतिया उचवज्जति, असतो नेरइया उचवज्जति; सतो असुरकु-
मारा उचवज्जति, जाव सतो वेमाणिया अचंति, असतो वेमाणिया अचंति ? [उ०] गंगेया ! सतो नेरइया उचवज्जति, नो असओ
नेरइया उचवज्जति; सओ असुरकुमारा उचवज्जति, नो असतो असुरकुमारा उचवज्जति; जाव सओ वेमाणिया उचवज्जति, नो
असतो वेमाणिआ उचवज्जति; सतो नेरतिया उचवज्जति, नो असतो नेरतिया उचवज्जति; जाव सतो वेमाणिया अचंति, नो
असतो वेमाणिया अचंति । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चति—सतो नेरतिया उचवज्जति, नो असतो नेरइया उचवज्जति;
जाव सओ वेमाणिया अचंति, नो असओ वेमाणिया अचंति ? [उ०] से णूणं गंगेया ! पासेणं अरइया पुरिसादाणीएणं
सासए लोए बुइए अंणादीए अणययग्गे, जहा पंचमसए, जाव 'जे लोकाइ से लोए', से तेणट्टेणं गंगेया ! एवं बुच्चइ—जाव
सतो वेमाणिया अचंति, नो असतो वेमाणिया अचंति ।

४७. [प्र०] सयं मंते ! एवं जाणह, उदाहु असयं, असोआ एते एवं जाणह, उदाहु सोआ; 'सतो नेरइया उचवज्जति,
नो असतो नेरइया उचवज्जति; जाव सओ वेमाणिया अचंति नो असओ वेमाणिया अचंति' ? [उ०] गंगेया ! सयं एते एवं

अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. यावद् वैमानिको पण सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. नैरयिको सान्तर अने निरन्तर उद्वर्ते छे. ए
प्रमाणे यावद् स्तनितकुमारो जाणवा. पृथिवीकायिको सान्तर उद्वर्तता नथी पण निरन्तर उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिको पण
जाणवा. बाकीना यथा जीवो नैरयिकोनीं पेटे सान्तर अने निरन्तर उद्वर्ते छे. पण विशेष ए छे के 'ज्योतिषिको अने वैमानिको च्यवे छे'
एम पाठ कहेवो. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सान्तर अने निरन्तर च्यवे छे.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! सद्—विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद्—अविद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे
गांगेय ! सद्—विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक पर्यन्त जाणवुं.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे के अविद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे ? [उ०] हे गांगेय ! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते
छे पण अविद्यमान नैरयिको उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. विशेष ए छे के ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां 'च्यवे छे'
एवो पाठ कहेवो.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे ? सद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे के
असद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे ? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे के असद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे ? सद् नैरयिको
उद्वर्ते छे के असद् नैरयिको उद्वर्ते छे ? सद् असुरकुमारो उद्वर्ते छे के असद् असुरकुमारो उद्वर्ते छे ? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको च्यवे
छे के असद् वैमानिको च्यवे छे ? [उ०] हे गांगेय ! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. सद् असुरकुमारो
उत्पन्न थाय छे पण असद् असुरकुमारो उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे पण असद् वैमानिको उत्पन्न थता
नथी. सद् नैरयिको उद्वर्ते छे पण असद् नैरयिको उद्वर्तता नथी. यावद् सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी. [प्र०]
हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमा-
निको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी ? हे भगवन् ! शुं ते निश्चित छे ? [उ०] हे गांगेय ! खरेखर पुरुषादानीय अर्हत् श्रीपा-
र्शनाथे "लोकने शाश्वत, अनादि अने अनन्त कह्यो छे—" इत्यादि "पांचमा शतकमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे अवलोकी शकाय—
जाणी शकाय ते लोक, ते हेतुथी हे गांगेय ! एम कह्युं छे के, सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! आप स्वयं आ प्रमाणे जाणो छो, के अस्वयं जाणो छो ? सांग्ग्या शिवाय ए प्रमाणे जाणो
छो अथवा सांभळीने जाणो छो के 'सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी, यावत् सद्

विद्यमान नैरयिको
उत्पन्न थाय छे
के अविद्यमान ?

सद् नैरयिको
उद्वर्ते छे के असद् ?

सद् नैरयिकादिना
उत्पाद अने उद्वर्तना-
संबन्धे प्रश्न.

सद् नैरयिकादिना
उत्पाद अने उद्व-
र्तनानो हेतु.

आप स्वयं जाणो छो
के अस्वयं जाणो छो ?

जाणामि, नो असयं; असोद्या एते एवं जाणामि, नो सोद्या 'सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति, जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति' । [प्र०] से केणट्टेणं भंते! एवं बुद्धति-तं चेष, जाव 'नो असतो वेमाणिया चयंति'? [उ०] गंगेया! केवली णं पुंरत्थिमेणं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ; दाहिणेणं एवं जहा संहुदेसए, जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स; से तेणट्टेणं गंगेया! एवं बुद्धइ 'तं चेष जाव नो असतो वेमाणिया चयंति' ।

४८. [प्र०] सयं भंते! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति? [उ०] गंगेया! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति [प्र०] से केणट्टेणं भंते! एवं बुद्धइ-जाव उववज्जंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्ममारियत्ताए, कम्मगुरुसंमारियत्ताए, असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्टेणं गंगेया! जाव उववज्जंति ।

४९. [प्र०] सयं भंते! असुरकुमार० पुच्छा । [उ०] गंगेया! सयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति । [प्र०] से केणट्टेणं तं चेष जाव उववज्जंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मोवसमेणं, कम्मविगतीए, कम्मविसोहीए, कम्मविसुखीए, सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति; से तेणट्टेणं जाव उववज्जंति, एवं जाव थणियकुमारा ।

५०. [प्र०] सयं भंते! पुढविकाइया० पुच्छा । [उ०] गंगेया! सयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति, नो असयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति । [प्र०] से केणट्टेणं जाव उववज्जंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्ममारियत्ताए, कम्मगुरुसंमारियत्ताए सुभा-सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभा-सुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभा-सुभाणं कम्माणं फल-

वैमानिको च्यवे छे, पण असद् वैमानिको च्यवता नथी! [उ०] हे गांगेय! हुं ए बधुं स्वयं जाणुं छुं, पण अस्वयं (बीजानी सहायथी) जाणतो नथी. वळी सांभळ्या विना आ प्रमाणे जाणुं छुं, पण सांभळीने जाणतो नथी के 'सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी, यावत् सद् वैमानिको च्यवे छे, पण असद् वैमानिको च्यवता नथी.' [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के, 'हुं स्वयं जाणुं छुं-इत्यादि पूर्वोक्त यावत् असद् वैमानिको च्यवता नथी'? [उ०] हे गांगेय! केवलज्ञानी पूर्वमां मित (मर्यादित) पण जाणे, अने अमित (अमर्यादित) पण जाणे, तथा दक्षिणमां पण ए प्रमाणे जाणे. ए प्रमाणे जेम 'शब्द उद्देशकमां कहुं छे तेम जाणहुं, यावत् 'केवलिनं ज्ञान निरावरण होय छे,' माटे हे गांगेय! ते हेतुथी एम कहुं छुं के 'हुं स्वयं जाणुं छुं-इत्यादि यावद् असद् वैमानिको च्यवता नथी.'

नैरयिको स्वयं उपजे छे के असयं उपजे छे?

४८. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे के अस्वयं उत्पन्न थाय छे. [उ०] हे गांगेय! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'स्वयं यावद् उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गांगेय! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना भारेपणाथी, कर्मना अत्यन्त भारेपणाथी, अशुभ कर्मोना उदयथी, अशुभ कर्मोना विपाकथी अने अशुभ कर्मोना फल-विपाकथी नैरयिको नैरयिकोमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण नैरयिको नैरयिकोमां अस्वयं उत्पन्न थता नथी; ते हेतुथी हे गांगेय! एम कहेवाय छे के यावत् 'तेओ स्वयं उत्पन्न थाय छे.'

असुरकुमारो.

४९. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारो स्वयं [असुरकुमारपणे उत्पन्न थाय छे?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! असुरकुमारो स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के तेओ 'स्वयं यावद् उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गांगेय! कर्मना उदयथी, [अशुभ] कर्मना उपशमथी, अशुभ कर्मना अभावथी, कर्मनी विशोधिथी, कर्मनी विशुद्धिथी, शुभ कर्मोना उदयथी, शुभ कर्मोना विपाकथी अने शुभ कर्मोना फल-विपाकथी असुरकुमारो असुरकुमारपणे स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण असुरकुमारो असुरकुमारपणे अस्वयं उत्पन्न थता नथी. माटे हे गांगेय! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे यावद् स्तनितकुमारो सुधी जाणुं.

पृथिवीकायिको.

५०. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गांगेय! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना भारथी, कर्मना अत्यन्त भारथी, शुभ अने अशुभ कर्मोना उदयथी, शुभ अने अशुभ

१-पुरच्छिमेणं घ-ङ । २ लगहुदे-क-ग-घ-ङ ।

४७ * भग० २ हा. ६ उ. ४ पृ. १७०.

विवागेयं स्वयं पुत्रविज्ञाया जाय उववज्जति, नो असयं पुत्रविज्ञाया जाय उववज्जति, से तेजद्वेणं जाय उववज्जति । एवं जाय मनुस्सा । वाणमंतर-जोरसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । से तेजद्वेणं गंगेया ! एवं बुद्धति-स्वयं वेमाणिया जाय उववज्जति, नो असयं जाय उववज्जति ।

५१. तप्पमिति च णं से गंगेये अनगारे समणं भगवं महावीरं पञ्चभिजाणद सङ्घणुं, सङ्घदरिसि । तए णं से गंगेये अनगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेद, २ करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंविता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं मंते ! तुष्मं अंतियं चाउज्जामाओ धम्मामो पंचमहद्वयं, एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तद्देव भाणियच्चं, जाय सङ्घपुक्कप्यहीणे । सेवं मंते !, सेवं मंते ! सि ।

नवमसए गंगेयो वत्तीसइमो उद्देशो समत्तो ।

कर्माना विपाकयी, अने शुभाशुभ कर्मोना फलविपाकयी पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण यावद् अस्वयं उत्पन्न थता नयी. माटे हे गांगेय ! ते हेतुयी एम कहुं छुं के-यावत् 'पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे यावत् मनुष्यो सुची जाणवुं. जेम असुरकुमारोने कहुं तेम धानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिको संबन्धे कहेवुं. माटे हे गांगेय ! ते हेतुयी एम कहुं छुं के-यावत् 'वैमानिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नयी.'

५१. त्थार पछी श्रीगांगेय अनगार श्रमण भगवान् महावीरने सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी जाणे छे. त्थारवाद ते गांगेय अनगार श्रमण भगवंत महावीरने त्रण थार आदक्षिणा प्रदक्षिणा करे छे, करीने वांदि छे, नमे छे; वांदिने, नमीने तेणे एम कहुं के-हे भगवन् ! तमारी पासे चार महाव्रत धर्मयी पांच महाव्रतधर्मने ग्रहण करवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे बधुं *कालासवेसिक पुत्रनी पेटे यावत् ते 'सर्वदुःखथी मुक्त थया' ल्यां सुची कहेवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

गांगेय भगवान् महा-
वीरने सर्वज्ञ माने छे,
अने दीक्षा ग्रहण
करी निर्वाण पावने छे.

नवम शतके वप्रीशमो गांगेय उद्देशक समाप्त.

तेत्तीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं, तेणं समयणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था । वज्जमो । बहुसालए वेतिए । वज्जमो । तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उस्सभदत्ते नामं माहणे परिवसइ; अहे, वित्ते, वित्ते, जाव अपरिभूए, रिउत्तेव-अज्जुत्तेव-सामवेव-अथ-इणवेव- जहा कंदओ, जाव अत्तेसु य बहुसु वंभज्जपसु सुपरिनिट्टिए समणोवासए अंभिगयजीवाऽजीवे, उवल्लखपुण्ण-पावे, जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरए । तस्स णं उस्सभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था, सुकुमालपाणि-पाया, जाव पियदंसणा, सुरूवा समणोवासिया अंभिगयजीवा-जीवा, उवल्लखपुत्र-पावा जाव विहरए । तेणं कालेणं, तेणं समयणं सामी समोसडे । परिसा जाव पज्जुवासति । तए णं से उस्सभदत्ते माहणे इमीसे कहाए उवल्लखट्टे समणे इट्ट-जाव हिंथए, जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उयागच्छति, उवागच्छिता देवाणंदां माहणिं एवं वयासी-एवं अत्तु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे, जाव सत्तण्णू, सत्तदरिसी, आगासगपणं चक्केणं जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे बहुसालए वेइए महापट्टिकुवं जाव विहरति । तं मैहाफलं अत्तु देवाणुप्पिए ! तंहारुवाणं अंरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अंभि-गमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए, एगस्स वि आयरियस्स अंम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए; तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, जाव पज्जुवासामो; एवं णं इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए जमाए निस्सेयाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ । तए णं सा देवाणंदा माहणी उस्सभ-

तेत्तीसमो उद्देशक.

१. ते काले, ते समये ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. बहुशालक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरमां ऋषभदत्त नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. ते आद्य-धनिक, तेजस्वी, प्रसिद्ध अने यावत् अपरिभूत-कोइथी परामव न पामे तेवो हतो. वळी ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्वणवेदमां निपुण अने "स्कंदक तापसनी पेठे यावत् ब्राह्मणोना बीजा घणा नयोमां कुशल हतो. ते श्रमणोनी उपासक, जीवाजीव तत्त्वने जाणनार, पुण्य-पापने ओल्लखनार अने यावत् आत्माने भावित करतो विहरतो हतो. ते ऋषभदत्त ब्राह्मणने देवानंदा नामे ब्राह्मणी स्त्री हती. तेना हाथ पग सुकुमाल हता, यावत् तेनुं दर्शन प्रिय हतुं अने तेनुं रूप सुन्दर हतुं. वळी श्रमणोनी उपासिका [देवानंदा] जीवाजीव अने पुण्यपापने जाणती विहरती हती. ते काले, ते समये महावीरस्वामी समोसर्या. पर्वत्त यावत् पर्युपासना करे छे. सार पछी ते ऋषभदत्त ब्राह्मण श्रमण भगवान् महावीरना आगमननी आ वात जाणीने सुहा थयो, यावत् उल्लसित हृदयवाळो थयो, अने ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी हती त्यां आळ्यो. त्यां आवीने तेणे देवानंदा ब्राह्मणीने आ प्रमाणे कहुं के-हे देवानुप्रिये ! ए प्रमाणे अहीं तीर्थनी आदि करनार यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आकाशमां रहेला चक्रवडे यावत् सुखपूर्वक विहार करता बहुशालक नामे चैत्यमां योग्य अवग्रहने ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. हे देवानुप्रिये ! यावत् तेवा प्रकारना अर्हत भगवंतना नाम-गोत्रना पण श्रवणथी मोटुं फल प्राप्त थाय छे, तो वळी तेओना अंभिगमन (सामा जवुं), वंदन, नमन, प्रतिप्रच्छन अने पर्युपासन कर-वाथी फल थाय तेमां शुं कहेवुं ? तथा एक पण आर्य अने धार्मिक सुवचनना श्रवणथी मोटुं फल थाय छे, तो वळी विपुल अर्थने ग्रहण करवावडे महाफल थाय तेमां शुं कहेवुं ? माटे हे देवानुप्रिये ! आपणे जइए अने श्रमण भगवंत महावीरने वन्दन-नमन करीए, यावत् तेमनी पर्युपासना करीए. ए आपणने आ भवमां तथा परभवमां हित, सुख, संगतता, निःश्रेयस अने शुभ अनुबंधने माटे थयो. ज्यारे ते

१ - गामे नामं न- ङ । २ अदिग- क । ३ तते णं क । ४ हिंथए क । ५ महाफलं क । ६ जाव तहा- न-ख । ७ अदिहं-न-ख । ८ एवं णे इ- क, एवं णो इ- ङ ।

ब्राह्मणकुंडग्राम.

ऋषभदत्त.

देवानंदा.

महावीरस्वामी
समोसर्या.

बहुशालक चैत्य.

दुर्लभं माहर्णेण एवं बुता समाणी हट्ट- जाव हियया, करयल- जाव कट्टु उसमदत्तस्स माहणस्स पयमट्टं विणपणं पडि-
सुणेह ।

२. तप णं से उसमदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सहावेह, कोडुंबियपुरिसे सहावेत्ता एवं वैयासी-खिप्पामेव भो देवा-
सुप्पिया ! लडुकरणजुत्त-जोहय-समखुरवाल्लिहाण-समलिहियसिगेहिं, जंबूणवामयकलायजुत्त-पैतिविसिट्टेहिं, रययामयवंटा-
सुत्तरजुयपवरकंबणनत्थपग्गहोग्गहियपहिं, नीलुप्पलकयामेलपहिं, पवरगोणजुवाणपहिं णाणामणि-रयणघंटियाजालपरिगयं,
जुजायजुग-जोसरजुयजुग-पसत्थसुविरच्चियनिमित्तं, पवरलक्खणोववेयं धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता
म्म पतमाणसियं पच्चप्पिण्ह । तप णं ते कोडुंबियपुरिसा उसमदत्तेणं माहणेणं एवं बुता समाणा हट्ट- जाव हियया, करयल-
एवं खामी तहसाणाए विणपणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लडुकरणजुत्त- जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्टवेत्ता
जाव तमाणसियं पच्चप्पिण्हति ।

३. तप णं से उसमदत्ते माहणे ण्हाए, जाव अप्पमहग्गामरणालंकियसरीरे सैंतो गिहातो पडिणिक्खमति, पडिणि-
क्खमिन्ता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव धम्मियं जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता धम्मियं जाणप्पवरं
बुक्खे । तप णं सा देवाणंदा माहणी अंतो अंतोउरंसि ण्हाता, कयवलिकम्मा, कयकोउय-मंगल-पायच्छिता, किंच वर-
पावपत्तणेउर-मणिमेहला-हंररचित-उच्चियकडग-खुंइग-एकावली-कंठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-सोणिसुत्तग-नाणामणि-रयण-
भूसणविराहंगी, धीणंसुयत्थपवरपरिहिया, दुग्गल्लसुकुमालउत्तरिज्जा, सच्चोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचंदणवंदिता,
वरामरणभूसितंगी, कौलागरुधूवधुविया, सिरिसमाणवेत्ता, जाव अप्पमहग्गामरणालंकियसरीरा, बह्वाहिं खुज्जाहिं, चिलाति-

ऋषभदत्त ब्राह्मणे देवानंदा ब्राह्मणीने ए प्रमाणे कहुं त्यारे ते खुश यह, अने यावत् उल्लसितहृदयवाळी धईने पोताना करतलने यावत्
मस्तके अंजलिरूपे करी ऋषभदत्त ब्राह्मणना ए कथनने विनयपूर्वक स्वीकारे छे.

२. स्वारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेओने तेणे आ प्रमाणे कहुं के—हे देवानु-
प्रियो ! जलदी चालवावाळ, प्रशस्त अने सदृशरूपवाळ, समान खरी अने पुच्छवाळ, समान उगोला शिंगडावाळ, सोनाना कलाप-आ-
भरणोथी युक्त, चालवामां उत्तम, रूपानी घंटडीओथी युक्त, सुवर्णमय सुतरनी नाथवडे बाधेला, नील कमळना शिरोपेचवाळ बे उत्तम
युवान बळदोथी युक्त; अनेक प्रकारनी मणिमय घंटडीओना समूहथी व्याप्त, उत्तम काष्ठमय धोंसरु अने जोतरनी बे दोरीओ उत्तम रीते
जेमां गोठवेली छे एवा; प्रवरलक्षणयुक्त, धार्मिक, श्रेष्ठ यान-रथने तैयार करी हाजर क्तो अने आ मारी आज्ञा पाछी आपो'. ज्यारे ते
ऋषभदत्त ब्राह्मणे ते कौटुंबिक पुरुषोने एम कहुं त्यारे तेओए खुश यह यावद् आनंदितहृदयवाळ यह, मस्तके करतलने जोडी एम कहुं
के—हे खामिन् ! ए प्रमाणे आपनी आज्ञा मान्य छे'. एम कही विनयपूर्वक वचनने स्वीकारी जलदी चालवावाळ बे बळदोथी जोडेला,
यावद् धार्मिक अने प्रवर यानने (रथने) शीघ्र हाजर करीने यावत् आज्ञाने पाछी आपे छे.

३. स्वारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण खान करी यावत् अल्प अने महामूल्यवाळां आभरणोथी पोताना शरीरने अलंकृत करी पोतान
वाळी बहार निकळे छे. बहार निकळीने जे ठेकाणे बहारनी उपस्थान शाला छे, अने ज्यां धार्मिक यानप्रवर छे त्यां आवीने ते रथ
उपर चढे छे. स्वारबाद ते देवानंदा ब्राह्मणी अंदर अंतःपुरमां खान करी, बलिकर्म—पूजा करी, कौतुक—(मपीतिलक) मंगल अने
द्राव्यसिक्त करी, पगमां पहरेला सुंदर नूपुर, मणिनो कंदोरो, हार, पहरेलां उचित कडां, वीटीओ, विचित्रमणिमय एकावली (एकसर-
वाळ) हार, कंठसूत्र, छातीमां रहेला धैत्रेयक (लांबा हार), कटीसूत्र, अने विचित्रमणि तथा रत्नोना आभूषणथी शरीरने सुशोभित करी,
उत्तम वीर्यसूत्र बखने पहरेली, उपर सुकुमाल रेशमी बखने ओढी, बची ऋतुना सुगंधी पुष्पोथी पोताना केशने गुंथी, कपालमा चंदन लगावी,
उत्तम आभूषणथी शरीरने शणगारी, कालागरुना धूपवडे सुगंधित यह, लक्ष्मीसमानवेशवाळी, यावत् अल्प अने बहुमूल्यवाळां आभरणोथी
शरीरने अलंकृत करी, धणी कुब्ज दासीओ, चिलातदेशनी दासीओ, यावत् अनेक देश विदेशथी आवीने एकठी धयेली, पोताना देशना
प्रतिकर वेव वेवने भरण करनारी, इंगितवडे—आकृतिवडे—चिन्तित अने इष्ट अर्थने जाणनारी, कुशल अने विनयवाळी दासीओना
परिचारणिय, तेवज मोखना देशनी दासीओ, खोजाओ, वृद्ध कंचुकिओ अने मान्य पुरुषोना वृन्द साथे ते देवानंदा पोताना अंतःपुरथी
निकळे छे. निकळीने जे बहारनी उपस्थान शाला छे अने ज्यां धार्मिक यान प्रवर (श्रेष्ठ रथ) उभो छे त्यां आवे छे. आवीने यावत् ते
धार्मिक उत्तम रथ उपर चढे छे. स्वारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानंदा ब्राह्मणीनी साथे धार्मिक अने श्रेष्ठ यान (रथ) उपर चढीने
परिचारनी साथे ब्राह्मणकुंडप्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी निकळे छे. निकळीने जे स्पळे बहुर लक चैल छे त्यां आवे छे. त्यां

१ हियया ग-घ-ड । २ सहावियया ग-घ । ३ वदालि क । ४ परिणि ग-घ-ड । ५-वक-जाव ड । ६ तहदि भाणा-ग-घ । ७ स-
सुप्पिया ड । ८-वकमइया ड । ९ किंचे क, किंचि ग । १० हारविराह-ग । ११ बडुज-ए-क, बडुग ड । १२-गुवधूव-ग-घ ।

યાદિ, યાજ્ઞાદેસ-વિદેસપરિપિંચિયાદિ, સવેસનેશ્વરગદિયથેસાદિ, ઇન્ગિત-ચિતિત-પતિયચિયાજિયાદિ, કુસલાદિ, ચિંતીયાદિ, શેડિયાચક્રવાલ-વરિસધર-થેરકંચુરજ્ઞ-મહાસરગવંદપરિવિસ્ત્રા અંતેડરાઓ નિગ્ગચ્છતિ, નિગ્ગચ્છિત્તા ઝેનેવ વાહિરિયા ડચકુવા-સાલા, ઝેનેવ ધમ્મિય જાણપ્પવરે તેનેવ ડવાગચ્છદ, ડવાગચ્છિત્તા જાવ ધમ્મિયં જાણપ્પવરં ડુરુદા । તપ ણં સે ડસમદ્દચે માહવે દેવાણંદાપ માહણીય સંચિં ધમ્મિયં જાણપ્પવરં ડુરુદે સમાણે ણિયગપરિયાલસંપરિવુડે માહણકુંડગ્ગામં નગરં મજ્જમજ્જેવં નિગ્ગચ્છદ; નિગ્ગચ્છિત્તા ઝેનેવ વહુસાલપ ચેદપ તેનેવ ડવાગચ્છદ, તેનેવ ડવાગચ્છિત્તા ઈંસાદીપ તિત્થકરાતિસપ પાસદ, પાલિસા ધમ્મિયં જાણપ્પવરં ડવેદ, ડવિત્તા ધમ્મિયાઓ જાણપ્પવરાઓ પેંચોરુદદ, પચોરુદિત્તા સમણં મગવં મહાવીરં પંચવિદેણં અભિગમેણં અભિગચ્છતિ, તં જહા-સચિત્તાણં દ્વાણં વિડસરણયાપ, एवं જહા વિતિયસપ, જાવ તિવિદ્યાપ પજુવાસણયાપ પજુવાસતિ । તપ ણં સા દેવાણંદા માહણી ધમ્મિયાઓ જાણપ્પવરાઓ પેંચોરુદદિ, ધ૦ ૨ પચોરુદિત્તા વહુદિં છુજાદિ, જાવ મહાસરગવંદપરિવિસ્ત્રા સમણં મગવં મહાવીરં પંચવિદેણં અભિગમેણં અભિગચ્છદ, તં જહા-સચિત્તાણં દ્વાણં વિડસરણયાપ, અચિત્તાણં દ્વાણં અભિમોયણયાપ, ચિણયોણયાપ ગાયલટ્ટીય, ચકલુપ્પાસે અંજલિપગ્ગહેણં, મણસ્સ યગસીમાલકરણેણં; ઝેનેવ સમણે મગવં મહાવીરે તેનેવ ડવાગચ્છદ, ડવાગચ્છિત્તા સમણં મગવં મહાવીરં તિકલુસો આયાહિણ-પયાહિણં કરેદ, કરિત્તા વંવદ, નમંસદ, વંવિત્તા નમંસિત્તા ડસમદ્દસં માહણં પુરઓ કદુ ડિયા ચેવ સપરિવારા સુસ્સુસમાણી, ણમંસમાણી ઝેમિમુદા વિણયણં પંજ-લિડડા જાવ પજુવાસદ ।

૪. તપ ણં સા દેવાણંદા માહણી આગયપણ્યા, પપ્પુલોયણા, સંવરિયવલયવાદા, કંચુયપરિવિસ્ત્રિયા ધારાહયક-લંબગં પિવ સમૂસવિયરોમકૂવા સમણં મગવં મહાવીરં અભિમિસાપ વિટ્ટીય દેહમાણી દેહમાણી ચિટ્ટિ ।

૫. [પ્ર૦] અંતે ! સિ મગવં ગોયમે સમણં મગવં મહાવીરં વંદતિ, ણમંસતિ, વંદિત્તા, ણમંસિત્તા एवं વયાસી-કિં ણં અંતે ! ઇસા દેવાણંદા માહણી આગયપણ્યા, તં ચેવ જાવ રોમકૂવા દેવાણુપ્પિયં અભિમિસાપ વિટ્ટીય દેહમાણી ૨ ચિટ્ટિ ? [૩૦] ગોયમાદિ ! સમણે મગવં મહાવીરે મગવં ગોયમં एवं વયાસી-एवं સલુ ગોયમા ! દેવાણંદા માહણી મમં અમ્મગા, અહં ણં દેવાણંદાપ માહણીય અત્તપ; તપ ણં સા દેવાણંદા માહણી તેણં પુત્તપુત્તસિણેહારાગેણં આગયપણ્યા, જાવ સમૂસવિયરોમકૂવા મમં અભિમિસાપ વિટ્ટીય દેહમાણી ૨ ચિટ્ટદ । તપ ણં સમણે મગવં મહાવીરે ડસમદ્દસસ્સ માહણસ્સ દેવાણંદાપ માહણીય તીસે ય મહાસિ-મહાલિયાપ ઇસિપરિસાપ જાવ પરિસા પહિગયા ।

આવી તીર્થકરના છત્રાદિક અતિશયોને જુદા છે; જોઈને ધાર્મિક શ્રેષ્ઠ રથને ડમો રાલ્લે છે. ડમો રાલ્લી તેના ડપરથી નીચે ડતરે છે. ડતરની શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસે પાંચ પ્રકારના અભિગમવડે જાય છે. તે આ પ્રમાણે-‘સચિત્ત દ્રવ્યોનો સ્યાગ કરવો’-ઈત્યાદિ *વીજા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ ત્રણ પ્રકારની ડપાસનાવડે ડપાસે છે. તે દેવાણંદા બ્રાહ્મણી પણ ધાર્મિક યાનપ્રવરથી નીચે ડતરે છે, ડતરની ઘણી કુચ્છદાસીઓના યાવત્ માન્ય પુરુષના સમૂહથી પરિવૃત્ત થઈને શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસે પાંચ પ્રકારના અભિગમવડે જાય છે. તે આ પ્રમાણે—૧ સચિત્ત દ્રવ્યનો (ફલાદિનો) સ્યાગ કરવો. ૨ અચિત્ત દ્રવ્યનો (આમરણાદિનો) સ્યાગ નહિ કરવો, ૩ વિનયથી શરીરને અનત કરવું, ૪ મગવંતને ચક્ષુથી જોતાં અંજલિ કરવી. અને ૫ મનની ડકામ્રતા કરવી. ૧ પાંચ અભિગમ વડે જ્યાં શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર છે ત્યાં આવે છે. ત્યાં આવીને શ્રમણ મગવંત મહાવીરને ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરે છે. કરીને વાંદે છે, નમે છે. વાંદી અને નમી ઋષભદત્ત બ્રાહ્મણને આગલ કરી પોતાના પરિવારસહિત ડમી રહીને સુશ્રૂષા કરતી, નમતી અમિમુખ રહીને વિનયવડે હાથ જોડી યાવત્ ડપાસના કરે છે.

૪. સ્યારવાદ તે દેવાણંદા બ્રાહ્મણીને પાનો ચલ્લો-તેના સ્તનમાંથી દૂધની ધારા છૂટી, તેના લોચનો આનંદાશ્રુથી મિનાં થયાં, તેની હર્ષથી ડકદમ ફુલતી મુજાઓને તેના કહાઓ રોકી, [હર્ષથી શરીર પ્રપુલ્હિત થતાં] તેનો કંચુક વિસ્તીર્ણ થયો, મેઘની ધારાથી વિકસિત થયેલા કદંબપુષ્પની પેટે તેના રોમકૂપ ઝૂમાં થયા, અને તે શ્રમણ મગવંત મહાવીરને અનિમિષ દૃષ્ટિથી જોતી જોતી ડમી રહી.

૫. [પ્ર૦] ત્યારે ‘મગવન્ ! ડમ કહી મગવાન્ ગૌતમ શ્રમણ મગવંત મહાવીરને વાંદે છે, નમે છે. વાંદીને-નમીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું-હે મગવન્ ! આ દેવાણંદા બ્રાહ્મણીને પાનો કેમ ચલ્લો, અર્થાત્ તેના સ્તનમાંથી દૂધની ધારા કેમ વહૂટી ઇત્યાદિ પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે કહ્યું તેને રોમાંચ કેમ થયો ? અને દેવાણુપ્રિય તરફ અનિમિષ નજરે જોતી જોતી કેમ ડમી છે ? [૩૦] ‘હે ગૌતમ ! ડમ કહી શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરે મગવંત ગૌતમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે ગૌતમ ! ડ પ્રમાણે ખરેલ્લર આ દેવાણંદા બ્રાહ્મણી મારી માતા છે, હું દેવાણંદા બ્રાહ્મણીનો પુત્ર છું. તે દેવાણંદા બ્રાહ્મણીને પૂર્વના પુત્રજ્ઞેહાનુરાગથી પાનો ચલ્લો, અને તેના રોમકૂપ ડમા થયા, અને મારી સામું અનિમિષ નજરથી જોતી ડમી છે. સ્યારવાદ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરે ઋષભદત્ત બ્રાહ્મણ, દેવાણંદા બ્રાહ્મણી અને અત્યંત મોટી ઋષિ પર્યદને ધર્મે કહ્યો. યાવત્ પર્યદ પાછી જાય

દેવાણંદાના સ્તનમાંથી દૂધની ધારા કેમ છૂટી?

કુચ્છના શેરથી દૂધની ધારા છૂટી.

૧ વેસીદિં ગ-ઘ । ૨-યાદિ ય ચે- ગ-ઘ । ૩ છત્રાતીપ ક । ૪-દમદ ક । ૫-શુદી ક । ૬ કલંબપુષ્પગં પિવ ક । ૭-શુપ્પિય કવિનાઢવ્યજ । ૮ વદાસિ ક । ૯-પણુયા ક ।

૩. * મગ. સં. ૧ ઘ. ૨ ડ. ૫ ડ. ૨૫૬.

૧. તપ ં લે ઉસમવ્ત્તે માહવે સમગ્રસ્સ મગધમો મહાવીરસ્સ મંતિયં ધમ્મં લોચા નિસમ્મ હટ્ટ-તુટ્ટે ઉદ્દાપ ઉદ્દેર, ૨ કોટ્ટિયા સમગં મગધં મહાવીરં તિવ્વુત્તો જાવ નમંસિત્તા યવં વ્વયાસી-પ્પમ્મેયં મંતે !, તહમેયં મંતે ! જહા કંવમો, જાવ લે કોટ્ટેયં તુમ્મે વ્વહ સિ કદ્દુ ઉસરપુરત્તિયમં વિસિમાગં અવહ્મમતિ, અવહ્મમિત્તા સયમેવ આમરણ-મહ્હા-સંકારં મોમુયદ્, સય- વ મોમુયદ્તા સયમેવ પંચમુટ્ઠિયં છોયં કરેતિ, ૨ કરિત્તા જેનેવ સમગે મગધં મહાવીરે તેનેવ ઉવાગચ્છદ, ૨ ઉવગચ્છિત્તા સમગં મગધં મહાવીરં તિવ્વુત્તો આયાહિણં પયાહિણં, જાવ નમંસિત્તા યવં વ્વયાસી-આહિસે ં મંતે ! છોપ, પહિસે ં મંતે ! છોપ, આહિસપહિસે ં મંતે ! છોપ જરાપ મરણેવ ય, યવં યયળં કમેણં જહા કંવમો તહેવ પહ્હમો, જાવ સામાયમાહયાઈ વ્વજ્જારસ ંગારં મહિજ્જદ, જાવ વહ્હિં ચડત્થ-હટ્ટ-દુમ-વસમ- જાવ વિચિત્તેહિં ત્તવોકમ્મેહિં અપ્પાપં માષેમાણે વહ્હં વાસાઈ સામગ્ગપરિયાગં પાડણદ, ૨ પાડણિત્તા માસિયાપ સંલેહણાપ મત્તાપં મૂસેતિ, ૨ મૂસિત્તા સટ્ઠિ મત્તાઈ મળસણાપ છેવેતિ, ૨ છેવિત્તા અસ્સદ્દાપ કીરતિ નગ્ગમાલો જાવ તમટ્ટં આરાહેર, ૨ આરાહેસા જાવ સહ્હુવ્વજ્જપ્પહીણે ।

૭. તપ ં સા વેવાણંદા માહણી સમગ્રસ્સ મગધમો મહાવીરસ્સ મંતિયં ધમ્મં લોચા નિસમ્મ હટ્ટા તુટ્ટા સમગં મગધં મહાવીરં તિવ્વુત્તો આયાહિણ-પયાહિણં, જાવ નમંસિત્તા યવં વ્વયાસી-પ્પમ્મેયં મંતે, તહમેયં મંતે ! યવં જહા ઉસમવ્ત્તો તહેવ જાવ ધમ્મં આરખિત્તયં । તપ ં સમગે મગધં મહાવીરે વેવાણંદં માહણિં સયમેવ પહ્હાવેતિ, સયમેવ પહ્હાવિત્તા સયમેવ અજ્જ- ચંદનાપ અજ્જાપ સીસિણિચાપ દલ્લયદ । તપ ં સા અજ્જચંદના અજ્જાવેવાણંદામાહણિં સયમેવ પહ્હાવેતિ, સયમેવ મુંડાવેતિ, સયમેવ લેહાવેતિ । યવં જહેવ ઉસમવ્ત્તો તહેવ અજ્જચંદનાપ અજ્જાપ ઇમં યવાકુલં ધમ્મિયં ચ ઉવવેસં સમં સંપહિવજ્જદ, તમાણાપ તેહા ગચ્છદ, જાવ સંજમેણં સંજમતિ । તપ ં સા વેવાણંદા અજ્જા અજ્જચંદનાપ અજ્જાપ મંતિયં સામાયમાહયાઈ વ્વજ્જારસ ંગારં મહિજ્જદ, લેસં તં વ્વેવ, જાવ સહ્હુવ્વજ્જપ્પહીણા ।

૮. તસ્સ ં માહણકુંડગ્ગામસ્સ નગરસ્સ વૈષ્ણવિયેણં પથ્થ ં ક્ષત્રિયકુંડગ્ગામે નામં નયરે હોત્થા । વક્ષમ્મો । તથ્થ ં ક્ષત્રિયકુંડગ્ગામે નયરે જમાલી નામં ક્ષત્રિયકુમારે પરિવસદ્, મદ્દુ, વિસે, જાવ અપરિભૂતે, ઉત્તિ પાસાયવરગય કુહમાણેહિં

૬. સ્વારપછી તે શુભદત્ત બ્રાહ્મણ શ્રમણ મગધંત મહાવીરની પાસે ધર્મને સાંભળી, હૃદયમાં ધારણ કરી સુશ થયો, તુષ્ઠ થયો, અને તેણે ઉભા થઈને શ્રમણ મગધંત મહાવીરને ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરી, યાવત્ નમસ્કાર કરી આ પ્રમાણે કહ્યું—‘હિ મગવન્ ! તે ઇ પ્રમાણે છે, હે મગવન્ ! તે ઇ પ્રમાણે છે.’—ઈત્યાદિ *સ્કંદક તાપસના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ ‘જે તમે કહો છો તે ઇમજ છે’ ઇમ કહી તે [શુભદત્ત બ્રાહ્મણ] ઈશાન દિશા તરફ જાય છે, ત્યાં જઈને પોતાની મેઢે આમરણ, માલા અને અલંકારને ઉતારે છે, ઉતારીને પોતાની મેઢે પંચમુષ્ટિક લોચ કરે છે. લોચ કરીને જ્યાં શ્રમણ મગધંત મહાવીર છે ત્યાં આવે છે, આવીને શ્રમણ મગધંત મહાવીરને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરી યાવત્ ‘મમી તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે—‘હિ મગવન્ ! જરા અને મરણથી આ લોક ચોતરફ પ્રજ્વલિત થયેલો છે, હે મગવન્ ! આ લોક અલ્પન્ત પ્રજ્વલિત થયેલો છે, હે મગવન્ ! લોક ચોતરફ અને અલ્પન્ત પ્રજ્વલિત થયેલો છે.—ઇ પ્રમાણે ઇ ક્રમથી સ્કંદકતાપસની પેઠે તેણે પ્રવ્રજ્યા સ્ત્રીચી, યાવત્ સામાયિકાદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરે છે, યાવત્ ઘણા ઉપવાસ, છઠ્ઠ, અઠ્ઠમ અને દશમ યાવત્ વિચિત્ર તપકર્મ વહે આત્માને ભાવિત કરતો તે ઘણા વરસ સુધી સાધુપણાના પર્યાયને પાઢે છે. પાઢીને માસિકી સંલેખનાવહે આત્માને વાસિત કરીને સાઠ મહોને અનશન કરવાવહે વ્યતીત કરીને જેને માટે નમ્માવ-નિર્મ્લ્યપણાનો સ્ત્રીકાર કર્યો હતો, યાવત્ તે નિર્વાણરૂપ અર્થને આરાધે છે, તે અર્થને આરાધી સ્વાર બાદ યાવત્ સર્વદુઃખથી મુક્ત થાય છે.

શુભદત્તે પ્રવ્રજ્યા સ્ત્રીચી.

૭. હવે તે દેવાનંદા બ્રાહ્મણી શ્રમણ મગધંત મહાવીરની પાસે ધર્મને સાંભળી, હૃદયમાં અવધારી આનન્દિત અને સંતુષ્ટ થઈ, અને શ્રમણ મગધંત મહાવીરને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરી યાવત્ નમસ્કાર કરી આ પ્રમાણે બોલી—‘હિ મગવન્ ! તે ઇમજ છે, હે મગવન્ ! તે ઇમજ છે.’—ઇ પ્રમાણે શુભદત્તની જેમ યાવત્ તેણે મગધંત કથિત ધર્મ કહ્યો. સ્વારબાદ શ્રમણ મગધંત મહાવીર પોતે દેવાનંદા બ્રાહ્મણીને દીક્ષા આપે છે, દીક્ષા આપીને પોતે આર્યચંદના નામે આર્યોને શિષ્યાપણે સોંપે છે. સ્વારબાદ તે આર્યચંદના આર્યો પોતેજ તે દેવાનંદા બ્રાહ્મણીને દીક્ષા આપે છે, સયમેવ મુંડે છે, સયમેવ શિક્ષા આપે છે. ઇ પ્રમાણે દેવાનંદા શુભદત્ત બ્રાહ્મણની પેઠે આર્યચંદનાના આ આવા પ્રકારના ધાર્મિક ઉપદેશને સમ્યક્ પ્રકારે સ્વીકાર કરે છે, અને તેની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તે છે, યાવત્ સંયમવહે પ્રવર્તે છે. સ્વારપછી દેવાનંદા આર્યો આર્યચંદના આર્યોની પાસે સામાયિકાદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરે છે. બાકીનું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ તે [દેવાનંદા] સર્વદુઃખથી મુક્ત થાય છે.

દેવાનંદાની પ્રવ્રજ્યા.

૮. હવે તે બ્રાહ્મણકુંડગ્રામ નગરની પશ્ચિમ દિશા ઇ સ્વચ્છે ક્ષત્રિયકુંડગ્રામ નામે નગર હતું. ષર્ણન. તે ક્ષત્રિયકુંડગ્રામ નામે નગરમાં જમાલી નામનો ક્ષત્રિયકુમાર રહેતો હતો. તે આલ્ક-ધનિક, તેજસ્વી અને યાવત્ જેનો પરાભવ ન થઈ શકે (વો (સમર્થ) હતો. તે પોતાના

ક્ષત્રિયકુંડગ્રામ જમાલિયું ષર્ણન.

૧ કલ્પેયં ઇમં જ- જ-જ । ૨ -હિત્તા ત્ત્વજ્જે જ-જ । ૩ હટ્ટ-તુટ્ટા જ-જ । ૪ -મંદં જા- જ-જ । ૫ તહ ય-હ । ૬ પચ- વિચિત્તેયં હ ।
 ૬. * મગ. સં. ૧ ઘ. ૧ ડ. ૧ ઘ. ૧૧૮. † મગ. સં. ૧ ઘ. ૧ ડ. ૧ ઘ. ૧૧૯-૧૨૦.

सुदृग्मत्प्रपिहि वसीसतिवजेहि षाडपिहि षाणाविहवरतरुणीसंपउसेहि उवनचिज्जमाणे उवनचिज्जमाणे, उवनचिज्जमाणे उवनचिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद्-हेमंत-वसंत-गिम्हपञ्जते छप्य उऊ अहाविभवेवं शान्-माणे, कालं गालेमाणे, इट्टे सह-फरिस-रस-रुव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पञ्चणुप्पवमाणे विहरति । तए णं वसि-यकुंडग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर- जाव बहुजणसहे इ वा अहा उववाइए जाव एवं पञ्चवेर, एवं पकवेर, एवं खल्लु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे, जाव सच्चणू सच्चदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालक ज्जेइए अहापडिरुवं जाव विहरति । तं महप्फलं खल्लु देवाणुप्पिया ! तहारुवाणं अरहंताणं भगवंताणं अहा उववाइए, जाव प्रणामिसुहे वसियकुंडग्गामं नयरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छति, निग्गच्छिता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालक ज्जेइए, एवं जहा उववाइए, जाव तिबिहाए पञ्जुवास्तणयाए पञ्जुवासति । तए णं तस्स जमालिस्स वसियकुमारस्स तं मह-याजणसहं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयं पयाकवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था— “किं णं अज्ज वसियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, अंदमहे इ वा, मुण्डुवमहे इ वा, णागमहे इ वा, जफ्फमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नरमहे इ वा, दहमहे इ वा, पच्चयमहे इ वा, उक्खमहे इ वा, चेरयमहे इ वा, धूममहे इ वा, अं णं एए बहवे उग्गा, भोगा, राइआ, इक्खागा, णाता, कोरवा, वसिया, वसियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता, जहा उववाइए, जाव सैत्थवाहप्पमित्तयो ण्हाया, कयवळिकम्मा जहा उववाइए, जाव निग्गच्छति” एवं संपेहेर, एवं संपेहिता कंचुइजपुरिसं इहावेति, कं० २ सहावित्ता एवं वदासी—किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज वसियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, जाव निग्गच्छति । तए णं से कंचुइजपुरिसे जमालिणा वसियकुमारेणं एवं बुत्ते समाणे इट्ट-तुट्टे समणस्स भगवभो महावीरस्स आगमणगहि-यधिणिच्छए करयल— जमालि वसियकुमारं जएणं विजएणं वज्जावेइ, वज्जावित्ता एवं वदासी—णो खल्लु देवाणुप्पिया ! अज्ज वसियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, जाव निग्गच्छति, एवं खल्लु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे जाव सच्चणू

उत्तम प्रासाद उपर जेमां मृदंगो वागे छे एवा, अने अनेक प्रकारनी सुंदर युवतिओवडे भजवाता बत्रीश प्रकारना नाटकोवडे (तुल्यने अनुसारे) हस्तपादादि अवयवोने नचावतो २, स्तुति करातो २, अत्यन्त खुश करातो २ प्राङ्गु, वर्षा, शरद, हेमंत, वसंत, अने ग्रीष्म पर्यन्त ए छए ऋतुओमां पोताना वैभव प्रमाणे सुखनो अनुभव करतो २, समयने गाळतो, मनुष्यसंबन्धी पांच प्रकारना इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गन्धरूप कामभोगोने अनुभवतो विहरे छे. स्यारबाद क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क अने चत्वरमां यावत् घणा माणसोनो कोलाहल यतो हतो—इत्यादि *औपपातिक सूत्रमां कक्षा प्रमाणे कहेवुं; यावत् घणां माणसो परस्पर ए प्रमाणे जणावे छे, यावत् ए प्रमाणे प्ररूपे छे के—हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर तीर्थनी आदिना करनारा, यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आ ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरनी बहार बहुशाल नामना चैत्यमां यथायोग्य अवप्रहने प्रहण करी यावत् विहरे छे, तो हे देवानुप्रियो ! तेवा प्रकारना अर्हत् भगवंतना नामगोत्रना श्रवणमात्रथी पण मोट्टुं फल याय छे’—इत्यादि *औपपातिक सूत्रने अनुसारे वर्णन करवुं. यावत् ते जनसमूह एक दिशा तरफ जाय छे, अने क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी बहार निकळे छे, निकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, अने ज्यां बहुशालक चैत्य छे त्यां आवे छे. ए प्रमाणे बधुं औपपातिक सूत्रने अनुसारे कहेवुं, यावत् श्रण प्रकारनी पर्युपासना करे छे. स्यार पछी ते घणा मनुष्यना शब्दने यावत् जनना कोलाहलने सांभळीने अने अवधारीने क्षत्रियकुमार जमालिना मनमां आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो—‘शुं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे, स्कन्दनो उत्सव छे, वासुदेवनो उत्सव छे, नागनो उत्सव छे, यक्षनो उत्सव छे, भूतनो उत्सव छे, कूवानो उत्सव छे, तळावनो उत्सव छे, नदीनो उत्सव छे, ग्रहनो उत्सव छे, पर्वतनो उत्सव छे, वृक्षनो उत्सव छे, चैत्यनो उत्सव छे या स्तूपनो उत्सव छे, के जेथी ए बधा उग्रकुलना, भोगकुलना, राजन्यकुलना, इक्ष्वाकुकुलना, ज्ञातकुलना अने कुरुवंशना क्षत्रियो, क्षत्रियपुत्रो, भटो, अने भटपुत्रो, इत्यादि औपपातिकसूत्रने अनुसारे कहेवुं, यावत् सार्थवाह प्रमुख खान करी, बलिकर्म (पूजा) करी इत्यादि औपपातिकसूत्रमां वर्णन कर्या प्रमाणे यावत् बहार निकळे छे ? एम विचार करे छे. विचार करीने जमालि कंचुकिने बोलावे छे, बोलावीने तेने आ प्रमाणे कछुं—‘हे देवानुप्रियो ! शुं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे के यावत् आ बधा नगर बहार निकळे छे ? प्यारे ते जमालि नामना क्षत्रियकुमारे ते कंचुकि पुरुषने ए प्रमाणे कछुं स्यारे ते हर्षित अने संतुष्ट थयो, अने ते श्रमण भगवान् महावीरना आगमननो निश्चय करीने हाय जोडीं जमालि नामे क्षत्रियकुमारने जय अने विजय वडे वधावे छे. वधावीने तेने आ प्रमाणे कछुं—‘हे देवानुप्रियो ! आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे—इत्यादि तेथी यावत् बधा नीकळे छे, एम नथी, पण हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर यावत् सर्वज्ञ, सर्वदर्शी

१ अरिहंताणं ग । २ निग्गच्छइ क । ३ पञ्जुवासइ क । ४ भूयम-क-क । ५ -प्पमिइ ग-घ । ६ -णारेणं क-क । ७ -विमिच्छिए घ । ८ -गाच्छति क-क ।

८. * औपपातिक. प. ५७-१. † औपपातिक. प. ५७-२. ‡ औपपातिक. प. ५९-२. § औपपातिक. प. ५८-१.

केशवरीली माहणकुंडंगामरस्य क्यरस्य बंधिया बहुसाळय वेदप महापठिकर्त उग्वं जाव विहरति । तप नं एय बंधवे उग्वं
 कौम्य, जाव अप्पेगया बंधयवसिं जाव निगगच्छंति । तप नं से जेमाळी कसियकुमारे कंचुपुरिसस्य अंतियं एयं अहुं
 कौम्य, निसम्म इहु-तुहु- जाव कोडुवियपुरिसे सहावेर, को० २ सहावेसा एयं वयासी-विप्यामेव भो देवाधुपिया !
 काउग्वं मासरेण सुसामेव उचडुवेर, उचडुवेसा मम एयमापसियं पचपिणह । तप नं ते कोडुवियपुरिसा जमाळिया कसि-
 यकुमारेण एयं हुसा समाना जाव पचपिंति ।

९. तप नं से जमाळियकसियकुमारे जेणेव मज्जणवेर तेणेव उवागच्छर, तेणेव उवागच्छिता ण्हाते कयवळिकम्मे
 जाव उचवाएय परिसावज्जो सहा भाणियं, जाव चंडणोकिणगायसरीरे सहाळंकारविभूसिय मज्जणवराभो पठिनिष्कमार,
 मज्जण० २ पठिनिष्कमिसा जेणेव काहिरिया उचट्टावसाळा, जेणेव काउग्वंटे आसरहे तेणेव उवागच्छर, तेणेव उवागच्छिता
 काउग्वंटे आसरहं डुकहर, काउग्वंटे २ डुकहिसा सकोरण्टमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयामंडवडकरयडकरवंपरि-
 निष्कसे, कसियकुंडंगामे नगरे मज्जंमज्जेणं विगगच्छर, निगगच्छिता जेणेव माहणकुंडंगामे नयरे, जेणेव बहुसाळय वेदप तेणेव
 उवागच्छर, उवागच्छिता तुरय निगिण्हेर, तुरय निगिण्हिसा एयं डवेर, एयं डवेसा एहाओ पंचोरुहति, पचोरुहिसा पुष्प-
 चोला-SSउहमावियं वाहणामो य विसजेति, वा० २ विसजेसा एगसाडियं उत्तरासंगं करे, एग० करिसा आयंते, चोफ्जे,
 एमसुहभूप, अंजलिमंडलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छर, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं
 विष्णुसो आयाहिनपयाहिनं करे, ति० २ करेसा जाव तिबिहाप पञ्जुवासणाप पञ्जुवासर । तप नं समणे भगवं महावीरं
 जमाळिस्त कसियकुमारस्त, तीसे य महतिमहालियाप इसि० जाव भस्मकहा, जाव परिसा पठिगया ।

१०. तप नं से जमाळिकसियकुमारे समणस्त भगवन्तो महावीरस्त अंतियं धम्मं सोळा, निसम्म इहु-तुहु जाव
 एयप उहाय डहेर, उ० २ उट्टेसा समणं भगवं महावीरं तिक्खुसो जाव धर्मसिसा एयं वयासी-सहहामि णं भंते ! निगगंथं
 पावयणं, पचियामि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, रोपमि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, अभ्युट्टेमि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, एव-

माहणकुंडंगाम-
 बहुसाळय

माहणकुंडंगाम नामे नगरनी बहार बहुशाल नामे चैस्यमां यथायोग्य अवग्रह प्रहण करीने यावत् विहरे छे. तेथी ए उग्रकुलना, भोगकुलना
 एवयो-इत्यादि यावत् केटलाक वादवा माटे नीकळे छे. स्यारपळी ते जमालि क्षत्रियकुमार कंचुकि पुरुष पासेथी ए वातने सांभळी, हृदयमां
 अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थरं, कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कहुं के-‘हे देवानुप्रियो ! तमे शीघ्र चारघंटा-
 अश्वरथने जोडीने हाजर करो अने हाजर करीने आ मारी आज्ञा पाळी आपो’. स्यारवाद जमालि क्षत्रियकुमारे ए प्रमाणे कहुं एटले
 कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे अमल करी यावत् तेनी आज्ञा पाळी आपे छे.

९. स्यारपळी ते जमालि क्षत्रियकुमार ज्यां ज्ञानगृह छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने ज्ञान करी, तेणे बलिकर्म (पूजा) कर्तुं-इत्यादि
 यावत् जेम *औपपातिकसूत्रमां पर्वदानुं वर्णन कर्तुं छे तेम अहिं जाणवुं, यावत् चंदनथी जेना शरीरे विलेपन करायेळुं छे एवो ते जमालि
 कर्तुं अलंकारथी विभूषित थरं ज्ञानगृहथी बहार निकळे छे. बहार निकळीने ज्यां बहार उपस्थानशाळा छे, अने ज्यां चारघंटावाळो अश्व-
 रथ उभो छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने ते चारघंटावाळो अश्वरथ उपर चढे छे. चढीने माथा उपर धारण कराता कोरंटपुष्पनी माळवाळ
 कप्रसहित, महान् योधाओना समूहथी विंटायेळो ते क्षत्रियकुंडंगाम नामे नगरना मध्यभागथी बहार निकळे छे. निकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंड-
 ग्राम नगर आवेळुं छे, अने ज्यां बहुशाल नामे चैस्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने घोडाओने रोके छे, अने रथने उभो राखे छे. रथने
 उभो राखी, रथथी नीचे उतरे छे. उतरीने पुष्प, तांबूल, आयुधादि तथा उपानहनो (पगरखानो) त्याग करे छे. त्याग करीने एक सळंग-
 पञ्जुं उत्तरासंग करे छे. करीने कोगळो करी चोक्खा अने परम पवित्र थरं अंजलिबडे वे हाथ जोडीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे
 त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् त्रिविध पर्युपासनाथी उपासे छे. स्यारपळी श्रमण भगवंत
 महावीर जमालि नामे क्षत्रियकुमारने अने ते अत्यन्त मोटी ऋषि पर्वदाने यावत् धर्मोपदेश करे छे. यावत् ते पर्वद् [धर्मोपदेश श्रवणं
 करीने] पाळी गरि.

१०. स्यारवाद ते जमालि नामे क्षत्रियकुमार श्रमण भगवान् महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, हृदयमां अवधारीने हर्षित अने
 संतुष्टहृदयवाळो थयो, अने यावत् उभो थरने श्रमण भगवंत महावीरनी त्रण वार प्रदक्षिणा करी, वंदन-नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे
 कहुं-हे भगवन् ! हुं निर्मथना प्रवचननी श्रद्धा करुं छुं, हे भगवन् ! हुं निर्मथना प्रवचन उपर विश्वास करुं छुं, हे भगवन् ! हुं निर्मथना

१ अहाकर्वं क । २ जमाळियक-ग-स । ३ कंचुपुरि ग-स-ड । ४ चंडणोकिणगा-क, चंडणाकिणगा-स, चंडणोकिणगा-
 क । ५-इमति क । पाहणाउ प वि-क; ६ वाणहीनो व न, वाणहाड व क । ७ अंतियं क । ८ वयासि क ।
 ९ * औपपातिक. प. ६४-२.

મેયં મંતે !, તદ્દમેયં મંતે !, અધિતદ્દમેયં મંતે !, અસંદિગ્ધમેયં મંતે !, જાવ હે જહેયં તુમ્હે વદહ, ઝં મહરં દેવાનુપ્રિય !
અમ્માપિયરો આપુચ્છામિ, તવ ણં મહં દેવાનુપ્રિયાણં મંતિયં મુંઢે મધિચ્છા ઐગારાઓ અણગારિયં પંચયામિ । મહાકુરં દેવાનુ-
પ્રિયા ! મા પઢિચંચં ।

૧૧. તવ ણં હે જમાલી ક્ષત્રિયકુમારે સમણેણં મગવયા મહાવીરેણં યથં તુસે સમાણે હુહ-તુહે સમણં મગ્ગં મહાવીરં
તિક્ષુત્તો જાવ નમંસિચ્છા તામેવ ચાઉચ્છંટં આસરહં તુરુદ્દેર, તુરુહિચ્છા સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયાઓ વહુસાલાઓ
ચેદયાઓ પઢિનિક્ષમ્મહ, પઢિનિક્ષમિચ્છા સકોરંટં । જાવ ધરિચ્છમાણે ણં મહયામહચ્છગર- જાવ પરિચ્છિચ્છે, જેણેવ ક્ષત્રિયકું-
ડગ્ગામે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છર, ઉવાગચ્છિચ્છા ક્ષત્રિયકુંડગ્ગામં નયરં મજ્જંમજ્જેણં, જેણેવ સપ્પ મેદ્દે, જેણેવ વાહિરિયા ઉવહાણ-
સાલા તેણેવ ઉવાગચ્છર, ઉવાગચ્છિચ્છા તુરપ્પ નિગિણ્ઠર, નિગિણ્ઠિચ્છા રહં ઠવેર, ઠવિચ્છા રહાઓ પખોરહર, રહાઓ પખોરહિચ્છા
જેણેવ અધિમત્તરિયા ઉવહાણસાલા, જેણેવ અમ્મા-પિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છર, ઉવાગચ્છિચ્છા અમ્મા-પિયરો જપ્પં વિજયપ્પં વચ્ચાવેદ, જપ્પં
૨ વચ્ચાવિચ્છા યથં વયાસી-યથં કલ્હુ મગ્ગ-તાઓ ! મય સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મે નિસંતે, હે વિ ય
મે ધમ્મે ઇચ્છિય, પઢિચ્છિય, અમિરુચ્છિય । તવ ણં તં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારં અમ્મા-પિયરો યથં વયાસી-ધમે સિ ણં તુમં જાયા !
કયપુચ્છે સિ ણં તુમં જાયા !, કયપુચ્છે સિ ણં તુમં જાયા !, કયલક્ષણે સિ ણં તુમં જાયા ! જં ણં તુમે સમણસ્સ મગવઓ
મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મે નિસંતે, હે વિ ય ધમ્મે ઇચ્છિય, પઢિચ્છિય, અમિરુચ્છિય ।

૧૨. તવ ણં હે જમાલિક્ષત્રિયકુમારે અમ્મા-પિયરો દોષં પિ યથં વયાસી-યથં કલ્હુ મય અમ્મ-તાતો ! સમણસ્સ મગ-
વઓ મહાવીરસ્સ અંતિય ધમ્મે નિસંતે, જાવ અમિરુચ્છિય । તવ ણં મહં અમ્મ-તાઓ ! સંસારમહચ્છિઓ, મીતે કામ્મ-જરા-
મરણેણં, તં ઇચ્છામિ ણં અમ્મ-તાઓ ! તુમ્હેદિ અમ્મણુચ્છાપ સમાણે સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં મુંઢે મધિચ્છા
ઐગારાઓ અણગારિયં પચ્છસપ્પ ।

પ્રવચન ઉપર રુચિ કરું છું, અને હે ભગવન્ ! નિર્મથના પ્રવચનાનુસારે વર્તવાને તૈયાર થયો છું. વહી હે ભગવન્ ! જે તમે ઉપદેશો છો તે
નિર્મથ પ્રવચન એમ જ છે, હે ભગવન્ ! તેમજ છે. હે ભગવન્ ! સત્ય છે, હે ભગવન્ ! અસંદિગ્ધ (નિશ્ચિત) છે, પરન્તુ હે દેવાનુપ્રિય !
મારા માતા પિતાની રજા મારીને હું આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે મુંઢ-દીક્ષિત થઈ ગૃહવાસનો ત્યાગ કરી અનગારિકપણાને સ્વીકારવા ઇચ્છું છું.
હે દેવાનુપ્રિય ! જેમ સુખ ઉપજે તેમ કરો, પ્રતિબંધ ન કરો.'

૧૧. જ્યારે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરે જમાલિને એ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તે પ્રસન્ન અને સંતુષ્ટ થઈ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ત્રણવાર
પ્રદક્ષિણા કરી યાવત્ નમસ્કાર કરીને ચારઘંટાવાઝા અશ્વરથ ઉપર ચઢે છે, ચઢીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસેથી અને મહુશાલક
ચૈલ્યથી નીકળે છે. નીકળીને માથે ધરાતા યાવત્ કોરંટપુષ્પની માલાવાઝા છત્રસહિત, મોટા સુમટોના સમૂહથી વીંટાયલો તે જમાલિ જ્યાં
ક્ષત્રિયકુંડપ્રામ નામે નગર છે ત્યાં આવે છે. આવીને ક્ષત્રિયકુંડપ્રામ નામે નગરની મધ્યમાગમાં થઈને જે સ્થળે પોતાનું ઘર છે અને જ્યાં મહા-
રની ઉપસ્થાનશાળા છે ત્યાં આવે છે. ત્યાં આવીને ઘોડાઓને રોકીને રથને ઉમો રાખે છે. ઉમો રાખીને રથથી નીચે ઉતરે છે. ઉતરીને જ્યાં
અંદરની ઉપસ્થાનશાળા છે, જ્યાં માતા-પિતા (બેઠા) છે ત્યાં આવે છે, આવીને માતા-પિતાને જય અને વિજયથી વધાવે છે. વધાવીને તે
જમાલિ આ પ્રમાણે કહ્યું-હે માતા પિતા ! એ પ્રમાણે મેં શ્રમણ ભગવંત મહાવીર પાસેથી ધર્મ સાંભળ્યો છે, તે ધર્મ મને ઇષ્ટ છે,
અલ્યન્ત ઇષ્ટ છે, અને તેમાં મારી અમિરુચ્છિય થઈ છે. સ્યારપછી તે જમાલિ કુમારને તેના માતા પિતા આ પ્રમાણે કહ્યું-હે પુત્ર ! તું ધન્ય
છે, હે પુત્ર ! તું કૃતાર્થ છે, હે પુત્ર ! તું કૃતપુષ્પ છે અને હે પુત્ર ! તું કૃતલક્ષણ છે કે જે તે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસેથી ધર્મને
સાંભળ્યો છે, અને તે ધર્મ તને પ્રિય છે, અલ્યન્ત પ્રિય છે અને તેમાં તારી અમિરુચ્છિય થઈ છે.'

જમાલિ.

૧૨. પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારે વીજીવાર પળ પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે માતા-પિતા ! એ પ્રમાણે મેં
શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસેથી ધર્મ સાંભળ્યો છે, યાવત્ તેમાં મારી અમિરુચ્છિય થઈ છે. તેથી હે માતા-પિતા ! હું સંસારના મયથી ઉદ્ધિત
થયો છું, જન્મ જરા અને મરણથી મય પામ્યો છું, તેથી હે માતા-પિતા ! તમારી આજ્ઞાથી હું શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે દીક્ષા લેઈને
ગૃહવાસનો ત્યાગ કરી, અનગારિકપણાને પ્રવ્રણ કરવા ઇચ્છું છું.

૧ આગારા-ગ-ઘ-ઙ । ૨ પચ્ચયામિ ક । ૩ અંતિયં ક । ૪ -વતિતે ક । ૫ -મચ્છ-ગ-ઙ । ૬ અમ્મણસરણેણં ક-ચ-પ્પ

૭ આગારાઓ ઘ-ઙ ।

૧૨. તપ ણં સા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ માતા તં અગિદ્ધં, અકાંતં, અપ્રિયં, અમણુજં, અમખામં, અસુચપુલં ગિરં
 ક્ષોષ, નિસન્ન, લેષાગચરોમકૂષ્પગલંતવિલીનગતા, લોગમરપથેવિચંગમંગી, નિષેયા, વીણ-વિમળવચના, કરચલમલિયજ
 કમલમાલા, તપ્તજળમોલુગ્ગુલ્લસરીરલાયજસુખનિષ્ઠાયા, ગચસિરીયા, પસિદ્ધિલમૂસળ-પઠંતજ્ઞુણિયસંજુષ્ટિયથલવલય-
 વખ્મદુષ્ટરિજા, મુષ્ઠાવસળદુષેતગદર્, સુકુમાલવિકિલકેસહૃત્યા, પંરસુખિકષ્ટ જ ચંપગલયા, નિષ્વત્તમદે જ ઈંવલટ્ટી, વિમુ-
 ક્ષસંધિવંજના કોટ્ટિમતલંસિ ઘસતિ સહંગેહિ સંનિષ્ઠાયા । તપ ણં સા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ માયા સેસંમમોવસિયાપ
 સુરિયં કંચળમિગારમુહવિણિગયસીયલવિમલજલધારપૈરિસિષ્માણનિશ્ચાવિયગાયલટ્ટી, ઉક્ષેવય-તાલિયંટ-વીયળગજણિયવા-
 વં, સંકુસિપ્પં અંતેરપરિજણેણં આસાસિયા સમાખી, રોચમાખી, કંદમાખી, સોચમાખી, વિલધમાખી જમાલિં ક્ષત્રિયકુમારં
 વં વયાસી-તુમં સિ ણં જાયા ! અમ્હં ણે પુત્તે ઈદ્દે, કંતે, પિપ, મણુજે, મળામે, યેજે, વેસાસિપ, સંમતે, વહુમપ, અણુમપ
 મંદકરંદગસમાજે, રયણે રયણમ્મૂપ, ઝીવિજ્જસવિયે, હિંયેપનંવિજણે, ડંબેરપુપ્પમિથ દુલ્લમે સવળયાપ, કિમંગ ! પુળ પાસ-
 ણયાપ, તં નો જલુ જાયા ! અમ્હે ઈચ્છામો તુમ્મં જળમવિ વિપ્પયોગં, તં અચ્છાહિ તાથ જાયા ! જાથ તાથ અમ્હે ઝીવામો,
 તખો પચ્છા અમ્હેહિ કાલગપ્પહિ સમાણેહિ પરિણંયવયે, વહિયકુલવંસતંતુકજ્જમ્મિ નિરથયક્ષે સમળસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ
 ણંસિયં મુંઢે મવિષ્ઠા આગારાઓ અળગારિયં પહ્થરહિસિ ।

૧૪. તપ ણં જમાલી ક્ષત્રિયકુમારે અમ્મા-પિયરો પવં વયાસી-તહા વિ ણં તં અમ્મ-તાઓ ! જં ણં તુમ્મે મમ પવં
 ઈદ્દ, તુમં સિ ણં જાયા ! અમ્હં ણે પુત્તે ઈદ્દે કંતે ચેવ, જાથ પહ્થરહિસિ; પવં જલુ અમ્મ-તાઓ ! માણુસ્સપ મથે અળેગજાઈ-
 ણા-મરણ-રોગ-સારીર-માણસપકામદુક્ક-વેયળ-વસળસતોવહ્વામિમૂપ, અધુપ, અણિતિપ, અસાસપ, સંજ્ઞમ્મરાગસરિસે,
 ડંબુપ્પુદસમાજે, કુસળગજલથિંપુસન્નિમે, સુવિળગદંસળોવમે, વિજ્જુલયાચંચલે, અણિષ્ઠે, સહળ-પહળ-વિહંસળધમ્મે, પુષ્ઠિં વા
 પચ્છા વા અવસ્સ વિપ્પજહિયથે મવિસ્સહ; સે કેસ ણં જાણઈ અમ્મતાઓ ! કે પુષ્ઠિં ગમળયાપ, કે પચ્છા ગમળયાપ ! તં ઈચ્છામિ
 ણં અમ્મ-તાઓ ! તુમ્મેહિં અમ્મણુજાપ સમાજે સમળસ્સ જાથ- પહ્થરપપ ।

૧૩. સ્યારવાદ જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતા અનિદ્ધ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, મનને ન ગમે તેવી અને પૂર્વે નહીં સાંભળેલી
 વાણીને સાંભળી અને અવધારીને રોમકૂષ્પથી શરતા પરસેવાથી મીના શરીરવાળી થઈ, શોકના ભારથી તેનાં અંગો અંગ કંપવા લાગ્યાં, તે
 ઈતિજ થઈ, તેનું મુલ દીન અને શોકાતુર થયું, કર્તલવઢે ચોઝાયેલી કમલમાલાની પેટે તેનું શરીર તત્કાલ ગ્થન અને દુર્બલ થયું. તે
 અપ્યશૂન્ય, પ્રભરહિત અને શોભાવિનાની થઈ ગઈ. તેના આમૂષ્ણો ઢીલાં થઈ ગયાં, અને તેથી તેના નિર્મલ ષલયો પડી ગયાં અને
 તેને ચૂર્ણ થઈ ગયા. તેનું ઉત્તરીય વલ્લ શરીર ઉપરથી સરી ગયું, અને મૂર્છાવઢે તેનું ચૈતન્ય નષ્ટ થયું હોવાથી તે મારે શરીરવાળી થઈ
 તેનો સુકુમાલ કેશપાશ ચિત્રાઈ ગયો. કુહાડીના ઘાથી છેદાણી ચંપકલતાની પેટે અને ઉત્સવ પૂરો થતા હિન્દ્રજદંડની જેમ તેનાં
 ધિવંધનો ઢિથિલ થઈ ગયાં, અને તે પરસવંધી ઉપર સર્થ અંગોવઢે 'ધસ્' દર્શને નીચે પડી ગઈ. સ્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની
 માતાના શરીરને [દાસીવઢે] વ્યાકુલચિત્તે ત્વરાથી ઢઝાતા સોનાના કલશના મુલથી નીકળેલી શીતલ અને નિર્મલ જલધારાના સિંચનવઢે
 સ્થ કર્યું, અને તે ઉક્ષેપક (વાંસના બનેલા), તાલંદુત (તાહના પાંદડાના બનેલા) પંજા અને વીજળાના જલચિન્દુસહિત પવનવઢે અંત:-
 રના માણસોથી આશ્વાસનને પ્રાપ્ત થઈ. રોતી, આક્રંદન કરતી, શોક કરતી અને ચિલાપ કરતી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની માતા એ પ્રમાણે
 કહેવા લાગી-હિ જાત ! તું અમારે ઈદ્ધ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ, મન ગમતો, આધારભૂત, વિશ્વાસપાત્ર, સંમત, વહુમત, અનુમત, આમરણની પેટી
 જેવો, રક્તસ્વરૂપ, રક્તના જેવો, જીવિતના ઉત્સવ સમાન અને હૃદયને આનંદજનક એકજ પુત્ર છો. ષલ્લી ડંબરાના પુષ્પની પેટે તારા નામનું
 ષવળ પળ દુર્લભ છે, તો તારું દર્શન દુર્લભ હોય એમાં શું કહેવું ? માટે હે પુત્ર ? ચરેચર અમે તારો એક ક્ષણ પળ વિયોગ ઈચ્છતા નથી.
 તેથી હે પુત્ર ! જ્યાં સુધી અમે જીવીએ છીએ ત્યાંસુધી તું રહે. અને અમે કાલગત થયા પછી વૃદ્ધાવસ્થામાં કુલવંશતન્તુની વૃદ્ધિ કરીને નિરપેક્ષ
 પુત્રો તું શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે દીક્ષા પ્રહળ કરી ગૃહવાસનો ત્યાગ કરી અનગારિકપણાને સ્વીકારજે.'

૧૪. સ્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-“હે માતા-પિતા ! હમણાં મને જે તમે એ
 પ્રમાણે કહ્યું કે-હે પુત્ર ! તું અમારે ઈદ્ધ તયા કાંત એક પુત્ર છો-ઈત્યાદિ યાવત્ અમારા કાલગત થયા પછી તું પ્રવ્રજ્યા લેજે.” પળ હે માતા
 -પિતા ! એ પ્રમાણે ચરેચર આ મનુષ્યમથ અનેક જન્મ, જરા, મરણ અને રોગરૂપ શારીર અને માનસિક દુઃખોની અલ્યન્ત વેદનાથી અને
 સંકટો વ્યસનોથી પીડિત, અધુવ, અનિસ્ય, અને અશાશ્વત છે, તેમ સંખ્યાના રંગ જેવો, પાણીના પરપોટા જેવો, ઢામની અણી ઉપર રહેલા
 પ્રહ્લચિન્દુ જેવો, સ્વપ્નદર્શનના સમાન, ચિજલ્લીની પેટે ચંચલ અને અનિસ્ય છે. સહવું, પહવું અને નાશ પામવો એ તેનો ધર્મ છે. પહેલાં કે
 પછી તેનો અવશ્ય ત્યાગ કરવાનો છે; તો હે માતા-પિતા ! તે કોણ જાણે છે કે-કોણ પૂર્વે જશે, અને કોણ પછી જશે ? માટે હે માતા-
 પિતા ! હું તમારી અનુમતિથી શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની પાસે યાવત્ પ્રવ્રજ્યા પ્રહળ કરવાને ઈચ્છું છું.

જમાલિની માતાની
 વચના.

જમાલિ-

૧ નિવચ ધ્વ-ગ-ઘ-ઙ । ૨-મોવતિવાપ ળ-ઝ-ઞ । ૩-વૈસિકમાણ-જ । ૪ ઝીવિવડસ્સવિપ્પ ક્ક । ૫ હિયપામંવિ-ઘ, હિયવંવિ-
 ૧ પુલ્કં વિવ ક્ક-ક । ૨-વચવળો ક્ક-ક । ૩ અમ્હે ક્ક ।
 ૧૨ મ. ૫૦

૧૫. તથા જં તં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારં અમ્મા-પિયરો ઇવં ઘયાસી-ઇમં ચ તે જાયા ! સરીરગં પંચિસિદ્ધરૂપ-લક્ષણ-વ્યંજનગુણોવવેયં, ઉત્તમબલ-વીરીય-સત્ત્વસં, વિષ્ણાણવિચક્ષણં, સંસોહગ્ગુણસંમુસ્તિયં અભિજાયમહકામં, વિવિદ્વાદિ-રોગરહિયં, નિરુવહય-ઉદ્ધ-લટું, પંચિદિયપદ્મપદમજોહ્નત્થં, અણેગઉત્તમગુણેહિં સંજ્ઞસં, તં અણુહોદિ તાવ જાયા ! નિયગ-સરીરરૂપ-સોહગ્ગ-જોહ્નગુણે, તઓ પચ્છા અણુભૂય નિયગસરીરરૂપ-સોહગ્ગજોહ્નગુણે અગ્હેહિં કાલગપ્પહિં સમાખેહિં ધરિણયવયે, વદ્ધિયકુલવંસતંતુકજ્ઞમિ નિરવચયક્ષે સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં મુંદે ભવિસા માગારાઓ અગ્ગારિયં પદ્ધદ્ધિસિ ।

૧૬. તથા જં સે જમાલી ક્ષત્રિયકુમારે અમ્મા-પિયરો ઇવં ઘયાસી-તદ્દા વિ જં તં અમ્મ-યાઓ ! જં જં તુમ્મે મમં ઇવં ઘવહ-ઇમં ચ જં તે જાયા ! સરીરગં તં સેવ જાવ પદ્ધદ્ધિસિ, ઇવં સ્સુ અમ્મ-યાઓ ! માણુસ્સગં સરીરં તુવચ્ચાયયણં, વિવિદ્વાદિસયસંનિકેતં, અદ્ધિયકદુદ્ધિયં, છિરા-પ્પહારજાલઓણસંપિણસં, મદ્ધિયમંડં વ તુમ્બલં, અસુરસંકિલિદ્ધં, અણિદ્ધવિચક્ષણ-કાલસંઠપ્પયં, જરાકુણિમ-જજ્જરધરં વ સહ્ણ-પહ્ણ-વિહંસણધમ્મં, પુદ્ધિં વા પચ્છા વા અવસ્સં વિપ્પજહિયસં ભવિસ્સહ, સે કે સ જં જાણતિ અમ્મયાઓ ! કે પુદ્ધિં તં સેવ જાવ પદ્ધદ્ધિસિ ।

૧૭. તથા જં તં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારં અમ્મા-પિયરો ઇવં ઘયાસી-ઇમાઓ ય તે જાયા ! વિપુલકુલબાલિયાઓ સરિસિયાઓ, સરિસયાઓ, સરિદ્ધયાઓ, સરિસલાવધ-રૂવ-જોહ્નગુણોવવેયાઓ, સરિસપ્પહિંતો કુલેહિંતો આણિપહ્ણિયાઓ કલાકુસલ-સલ્લકાલલાલિય-સુહોચિયાઓ, મહ્વગુણજુસ્સ-નિડણવિણઓવચારપંદિય-વિચક્ષણાઓ, મંજુલ-મિય-મધુરમણિય-વિદ્ધિસિય-વિપ્પેષિચયગતિ-વિલાસ-ચિદ્ધિયવિસારવાઓ, અવિકલકુલ-સીલસાલિણીઓ, વિસુદ્ધકુલ-વંસસંતાણતંતુવહ્ણ-પ્પગમ્મવચમાચિણીઓ, મણાણુકુલ-દ્ધિયદ્ધિચિયાઓ, અદ્ધ તુજ્જ ગુણવહ્ણહાઓ, ઉત્તમાઓ, નિષ્ઠં માવાણુરસસહ્ણગસુંદરીઓ મારિયાઓ; તં મુંજાદિ તાવ જાયા ! ઇતાદિ સદ્ધિ વિડલે માણુરસપ્પ કામભોગે, તઓ પચ્છા મુક્તમોગી, વિસયવિગયવોચ્છિજ્જઓ ઉહલ્લે અગ્હેહિં કાલગપ્પહિં જાવ પદ્ધદ્ધિસિ ।

અવ-પિતા.

૧૫. સ્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારને તેના માતા પિતાએ આ પ્રમાણે કહ્યું કે-“હે પુત્ર ! આ તારું શરીર ઉત્તમ રૂપ, લક્ષણ, વ્યંજન (મસ, તલ વગેરે) અને ગુણોથી યુક્ત છે, ઉત્તમ બલ, વીર્ય અને સત્ત્વસહિત છે, વિજ્ઞાનમાં વિચક્ષણ છે, સૌભાગ્ય ગુણથી ઉન્નત છે, કુલીન છે, અત્યન્ત સમર્થ છે, અનેક પ્રકારના વ્યાધિ અને રોગથી રહિત છે, નિરુપહત, ઉદાત્ત, અને મનોહર છે, પદ્મ (ચતુર) એવી પાંચ ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત અને ઉગતી યુવાવસ્થાને પ્રાપ્ત થયેલું છે, અને એ શિવાય બીજા અનેક ઉત્તમ ગુણોથી ભરપૂર છે. માટે હે પુત્ર ! જ્યાં સુધી તારા પોતાના શરીરમાં રૂપ, સૌભાગ્ય તથા યૌવનાદિ ગુણો છે ત્યાંસુધી તેનો તું અનુભવ કર, અને અનુભવ કરી અમો કાલગત થયા પછી વૃદ્ધાવસ્થામાં કુલવંશરૂપ તન્તુની વૃદ્ધિ કરીને નિરપેક્ષ એવો તું શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પાસે દીક્ષા લઈને ગૃહવાસનો ત્યાગ કરી અમારિકપણાને સ્ત્રીકારજે.

જમાલિ.

૧૬. સ્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા-પિતાને એ પ્રમાણે કહ્યું કે-“હે માતા-પિતા ! તે વરોચર છે, પણ જે તમને મને એ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે પુત્ર ! આ તારું શરીર [ઉત્તમરૂપ, લક્ષણ વ્યંજન અને ગુણોથી યુક્ત છે] ઇત્યાદિ યાવત્ [અમારા કાલગત થયા પછી] તું દીક્ષા લેજે.’ પણ એ રીતે તો હે માતા-પિતા ! ચરેચર આ મનુષ્યનું શરીર દુઃખનું ઘર છે, અનેક પ્રકારના સંકટો વ્યાધિઓનું સ્થાન છે, અસ્થિરૂપ લાકડાનું બનેલું છે, નાડીઓ અને સ્નાયુના સમૂહથી અત્યન્ત વિટાણ છે, માટીના વાસણની પેટે દુર્બલ છે, અચિધી ભરપૂર છે, જેનું શુશ્રૂષા કાર્ય હમેશાં ચાલુ છે. જીર્ણ મૃતક અને જીર્ણ ઘરની પેટે સડવું, પડવું અને નાશ પામવો-એ તેના સહ ધર્મો છે. વઠી એ શરીર પહેલાં કે પછી અવશ્ય છોડવાનું છે. તો હે માતા-પિતા ! તે કોણ જાણે છે કે કોણ પહેલાં [જશે અને કો પછી જશે. ?] ઇત્યાદિ.

અવ-પિતા.

૧૭. સ્યારપછી તેના માતા-પિતાએ તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-“હે પુત્ર ! આ તારે આઠ સ્ત્રીઓ છે, તે વિશાળ કુલમાં ઉત્પન્ન થયેલી અને વાઝાઓ છે, તે સમાન ત્વચાવાઢી, સમાન ઉમરવાઢી, સમાન લાવણ્ય, રૂપ અને યૌવનગુણથી યુક્ત છે; વડ તે સમાન કુલથી આણેલી, કલામાં કુશલ, સર્વકાલ લાલિત અને સુખને યોગ્ય છે; તે માર્દવગુણથી યુક્ત, નિપુણ, લિનયોપચારમાં પંચિ અને વિચક્ષણ છે; સુંદર મિત, અને મધુર બોલવામાં, તેમજ હારય, વિપ્રેક્ષિત, (કટાક્ષ દષ્ટિ), ગતિ, વિલાસ અને સ્થિતિમાં વિશારદ છે. ઉત્તમ કુલ અને શીલથી સુશોભિત છે; વિશુદ્ધ કુલરૂપ વંશતંતુની વૃદ્ધિ કરવામાં સમર્થ યૌવનવાઢી છે; મનને અનુકૂલ અને હૃદયને ઇષ્ટ છે. વઢી ગુણો ઘડે પ્રિય અને ઉત્તમ છે, તેમજ હમેશાં ભાવમાં અનુરક્ત અને સર્વ અંગમાં સુંદર છે. માટે હે પુત્ર ! તું એ સ્ત્રીઓ સાથે મનુષ્યસંબન્ધ વિશાળ કામભોગોને ભોગવ અને સ્યાર પછી મુક્તમોગી થઈ વિષયની અસ્વકતા દૂર થાય સ્યારે અમારા કાલગત થયા પછી યાવત્ તું દીક્ષા લેજે.

૧૮. તપ ણં સે જમાલી ક્ષત્રિયકુમારે અમ્મા-પિયરો પ્વં વયાસી-તહા વિ ણં તં અમ્મ-યાઓ ! જં ણં તુમ્મે મમ્મં પ્વં વયહ-દમાઓ તે જાયા ! વિપુલકુલ- જાવ પહરહિસિ, પ્વં કલુ અમ્મ-યાઓ ! માણુસ્સગા કામમોગા અશુર્, અસાસવા, વંતાસવા, પિસાસવા, સેલાસવા, સુકાસવા, સોણિયાસવા, ઉચ્ચાર-પાસવણ-કેલ-સિચાણગ-વંત-પિત્ત-પૂય-સુક-સોણિય-સુભવા, અમનુષ્યકુલ-સુત-પૂય-પુરિસપુષા, મયગંધુસ્સાસ-અસુમનિસ્સાસંડહેયગગા, ધીમત્થા, અપ્પકાલિયા, લહુસગા, કલમલાહિયાસદુપ્પવજુજણસાહારણા, પરિકિલેસકિચ્છુદુપ્પસજ્ઞા, અનુદજણનિસેવિયા, સદા સાદુગરહણિજ્ઞા, અર્ગતસંસા-જણા, કદુગફલવિવાગા કુહલિહ અમુચ્ચમાણદુપ્પાણુવંધિણો, સિદ્ધિગમણવિઘ્ઠા; સે કે સ ણં જાણદ અમ્મ-યાઓ ! કે સ ણં ચમણયાપ કે પચ્છા ? તં ઇચ્છામિ ણં અમ્મ-યાઓ ! જાવ પહરહિસિ ।

૧૯. તપ ણં તં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારં અમ્મા-પિયરો પ્વં વયાસી-દમે ય તે જાયા ! અજ્જય-પજ્જય-પિડપજ્જયાગપ સુપહુરિએ ય, સુવષે ય, કંસે ય, વૂસે ય, વિડલવણ-કળગ- જાવ સંતસારસાવપ્પએ, અંલાહિ જાવ માસત્તમાઓ કુલ-વંસાઓ પકામં વાડે, પકામં મોતું, પરિમાપડં, તં અણુહોહિ તાવ જાયા ! વિડલે માણુસ્સપ દહિ-સકારસમુદપ, તઓ પચ્છા અણુપ્પયકલાણે, વહિયકુલવંસ- જાવ પહરહિસિ ।

૨૦. તપ ણં સે જમાલી ક્ષત્રિયકુમારે અમ્મા-પિયરો પ્વં વયાસી-તહા વિ ણં તં અમ્મ-યાઓ ! જં ણં તુમ્મે મમ્મં પ્વં વયહ-દમં ય તે જાયા ! અજ્જગ-પજ્જગ- જાવ પહરહિસિ, પ્વં કલુ અમ્મ-યાઓ ! હિરણે ય, સુવષે ય, જાવ સાવપ્પએ અગ્નિસાહિય, ચોરસાહિય, રાયસાહિય, મચ્ચસાહિય, વાદયસાહિય, અગ્નિસામહે જાવ વાદયસામહે, અધુવે, અણિતિય, વિસાસય, પુઠ્ઠિ વા પચ્છા વા અવસ્સ વિપ્પજહિયથ્થે ભવિસ્સદ, સે કેસ ણં જાણદ તં ચેવ જાવ પહરહિસિ ।

૨૧. તપ ણં તં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારં અમ્મ-યાઓ જાહે નો સંચાપંતિ વિસયાણુલોમાહિ વહુહિ આઘવણાહિ ય, પન્ન-વણાહિ ય, સન્નવણાહિ ય, વિન્નવણાહિ ય આઘવેસપ વા, પન્નવેસપ વા, સન્નવેસપ વા, વિન્નવેસપ વા, તાહે વિસયપડિકૂલાહિ

૧૮. ત્યારપછી તે જમાલિ નામે ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે માતા-પિતા ! હમણા તમે જે મને કહ્યું છે-‘હે પુત્ર ! તારે વિશાલ કુલર્મા [ઉત્પન્ન થયેલી આ આઠ સ્ત્રીઓ છે]-ઇત્યાદિ યાવત્ તું દીક્ષા લેજે, તે ઠીક છે. પણ હે માતા-પિતા ! આ પ્રમાણે ધરેધર મનુષ્યસંબંધી કામમોગો અશુભ અને અશાશ્વત છે; વાત, પિત્ત, શ્લેષ્મ, વીર્ય અને લોહીને શરવાવાળા છે; વિષ્ણુ, મૂત્ર, શ્લેષ્મ, નાસિકાનો મેલ, વમન, પિત્ત, પરુ, શુક્ર અને શોણિતથી ઉત્પન્ન થયેલાં છે; વઠ્ઠી તે અમનોજ્ઞ, ધરણ અને દુર્ગન્ધી વિષ્ણુથી ભરે છે; મૃતકના જેવી ગંધવાળા ઉચ્છ્વાસથી અને અશુભ નિઃશ્વાસથી ઉદ્ભવેને ઉત્પન્ન કરે છે, વીમત્સ, અલ્પકાલસ્થાયી, હલકા, અને કલમલ-(શરીરમાં રહેલ એક પ્રકારના અશુભ દ્રવ્ય)ના સ્થાનરૂપ હોવાથી દુઃસ્વરૂપ અને સર્વ મનુષ્યોને સાધારણ છે; શારીરિક અને માનસિક અત્યંત દુઃસ્વરૂપે સાધ્ય છે; અજ્ઞાન જનથી સેવાવળા છે; સાધુ પુરુષોથી હમેશાં નિંદનીય છે; અનંત સંસારની વૃદ્ધિ કરનારા છે. પરિણામે કટુકપલ્લવાળા છે, બલ્લા ઘાસના પૂલની પેટે ન મુકી શકાય તેવા દુઃસ્વાનુબંધી અને મોક્ષમાર્ગમાં વિઘ્નરૂપ છે. વઠ્ઠી હે માતા-પિતા ! તે કોણ જાણે છે કે કોણ પહેલાં જશે અને કોણ પછી જશે ? માટે હે માતા-પિતા ! હું યાવત્ દીક્ષા લેવાને ઇચ્છું છું.’

૧૯. ત્યારપછી તે જમાલિ નામે ક્ષત્રિયકુમારને તેના માતા-પિતાએ આ પ્રમાણે કહ્યું કે ‘હે પુત્ર ! આ અર્યા (પિતામહ), પર્યા (પ્રપિતામહ) અને પિતાના પર્યા-(પ્રપિતામહ-) થકી આવેલું ઘણું હિરણ્ય, સુવર્ણ, કાંસ્ય, વજ્ર, વિપુલ ધન, કનક યાવત્ સારભૂત દ્રવ્ય વિષમન છે, અને તે તારે સાત પેઢી સુધી પુષ્કલ દાન દેવાને પુષ્કલ મોગવવાને અને વહેંચવા માટે પૂરતું છે. માટે હે પુત્ર ! મનુષ્ય-સંબંધી વિપુલ ઋદ્ધિ અને સન્માનને મોગવ, અને ત્યારપછી સુખનો અનુભવ કરી, અને કુલવંશને વધારી યાવત્ તું દીક્ષા લેજે.’

૨૦. ત્યારબાદ જમાલિ નામે ક્ષત્રિયકુમારે પોતાના માતા-પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે માતા-પિતા ! તમે જે આ પ્રમાણે કહ્યું છે, હે પુત્ર ! આ હિરણ્યાદિ દ્રવ્ય તારા પિતામહ અને પ્રપિતામહથી યાવત્ આવેલું છે, ઇત્યાદિ યાવત્ તું દીક્ષા લેજે. આ ઠીક છે, પણ હે માતા-પિતા ! આ પ્રમાણે ધરેધર તે હિરણ્ય, સુવર્ણ, યાવત્ સર્વ સારભૂત દ્રવ્ય અગ્નિને સાધારણ છે, ચોરને સાધારણ છે, રાજાને સાધારણ છે, મૃત્યુને સાધારણ છે, દાયાદ (માયાત) ને સાધારણ છે, અગ્નિને સામાન્ય છે, યાવત્ દાયાદને સામાન્ય છે. વઠ્ઠી તે અધુવ, અનિત્ય, અને અશાશ્વત છે. પહેલાં કે પછી તે અવશ્ય છોડવાનું છે, તો કોણ જાણે છે કે પહેલાં કોણ જશે અને પછી કોણ જશે ? ઇત્યાદિ યાવત્ હું પ્રત્રજ્યા લેવાને ઇચ્છું છું.’

૨૧. ત્યારે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારને તેના માતા પિતા વિષયને અનુકૂળ એવી ઘણી ઉક્તિઓ, પ્રજ્ઞાતિઓ, સંજ્ઞાતિઓ અને વિજ્ઞાતિઓથી કહેવાને, જણાવવાને, સમજાવવાને, વિનવવાને સમર્થ ન થયા ત્યારે તેઓએ વિષયને પ્રતિકૂલ, અને સંયમને વિષે મય અને ઉદ્દેગ કરનારી

વમાલિ.

મનુષ્યસંબંધી કામમોગો અશુભ અને અશાશ્વત છે ઇત્યાદિ.

માતા-પિતા.

હિરણ્યાદિનો અનુભવ મોગ કર-ઇત્યાદિ.

વમાલિ.

હિરણ્યાદિ અનુભવ અને અજ્ઞાનવત છે.

માતા-પિતા.

સંજમમયુદ્ધેયનકરાહિં પન્નવળાહિં પન્નવેમાળા एवं वयासी-एवं बलु जाया ! निगंधे पावयणे सधे, अनुत्तरे, केवले अह
आवस्सप, जाव सधदुक्खणं मंतं करेति । अहीच एगंतविट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया जवां चावेयथा, वायुयाकवले
इव निस्साए, गंगा वा महानदी पडिसोयगमणयाए, मंहासमुदो वा भुयार्हिं पुचरो; तिक्खं कमियं, गह्यं कंवेयं, अडि
धारं वतं करियं । नो बलु कप्पइ जाया ! समणां निगंधाणं अहाकम्मिए इ वा, उहेसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा,
अज्जोयरए इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिणे इ वा, अछेजे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अमिहजे इ वा, कंताएमसे इ वा,
बुम्मिक्खमसे इ वा, गिलाणमसे इ वा, वहलियामसे इ वा, पाणुणमसे इ वा, सेजायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलमोयणे
इ वा, कंदमोयणे इ वा, फलमोयणे इ वा, बीयमोयणे इ वा, हरियमोयणे इ वा भुसए वा पायए वा । तुंमं सि व णं जाया !
सुहसमुच्चिए, णो चेष णं दुहसमुच्चिए; नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नालं चोरा, नालं धाला, नालं
वंसा, नालं मसगा, नालं वाइय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइए विविहरोगायंके, परिस्सहोवसमो उविजे अहियासेसए । तं
नो बलु जाया ! अह्हे उ इच्छामो तुम्मं खणमवि विप्ययोणं, तं अच्छाहिं ताव जाया ! जाव ताव अह्हे जीवामो; तमो पच्छा
अह्हेहिं जाव पवइहिसि;

२२. तप णं से जमाली क्षत्रियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी-तहा वि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुम्हे ममं एवं
वदह, एवं बलु जाया ! निगंधे पावयणे सधे, अनुत्तरे, केवले तं चेष जाव पवइहिसि; एवं बलु अम्मयाओ ! निगंधे
पावयणे कीवाणं, कायरणं, कापुरिसाणं, इहलोगपडिबद्धाणं, परलोगपरंमुहाणं, विसयतिसियाणं वुरणुचरे पागयजणस्स
धीरस्स, निच्छियस्स, ववसियस्स नो बलु एत्थं किंचि वि दुकरं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्म-याओ ! तुम्हेहिं अम्मणा

निर्भ्रय प्रवचन
कल છે.

एवी उक्तिओधी समजावता आ प्रमाणे कहुं के 'हे पुत्र ! ए प्रमाणे खरेखर निर्भ्रय प्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वितीय छे. इत्यादि
*आवश्यक सूत्रमां कहा प्रमाणे यावत् ते सर्व दुःखोने नाश करनाहं छे. परन्तु ते सर्पनी पेटे एकांत-निश्चितदृष्टिवाळुं, अज्ञानी पेटे
एकांत धारवाळुं, लोढाना जवने चाववानी पेटे दुष्कर, अने वेळुना कोळीयानी पेटे निःस्वाद छे, वळी ते गंगा नदीना सामे प्रवां
जवानी पेटे, अने वे हाथथी समुद्र तरवाना जेवुं ते प्रवचननुं अनुपालन मुस्कल छे. तीक्ष्ण खड्गादि उपर चालवाना जे
[दुष्कर] छे, मोटी शिलाने उचकवा बरोबर छे अने तरवारनी धारा समान व्रतनुं आचरण करवानुं छे. हे पुत्र ! श्रमण निर्भ्रयो
१ आधाकर्मिक, २ औदेशिक, ३ मिश्रजात, ४ अच्यवपूरक, ५ पूतिकृत, ६ क्रीत, ७ प्रामित्य, ८ अच्छेष, ९ अनिःसृष्ट, १० अम्य
हत, ११ कांतारभक्त, १२ दुर्भिक्षभक्त, १३ ग्लानभक्त, १४ वार्दल्लिक्ताभक्त, १५ प्राचूर्णकभक्त, १६ शय्यातरपिंड अने १७ राजपि
तेमज मूलनुं भोजन, कंदनुं भोजन, फलनुं भोजन, बीजनुं भोजन अने हरित-(लीलीवनस्पति) नुं भोजन खावुं के पीवुं कल्पतुं न
वळी हे पुत्र ! तुं सुखने योग्य छो पण दुःखने योग्य नथी. तेमज टाढ, तडका, भुख, तरश, चोर, श्वापद, डांस अने मच्छरना उपद्रवो
तथा वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक अने संनिपातजन्य विविध प्रकारना रोगो अने तेना दुःखोने, तेमज परीषह अने उपसर्गोने सहवाने
समर्थ नथी. माटे हे पुत्र ! अने तारो वियोग एक क्षण पण इच्छता नथी; तेथी अ्यांसुधी अमे जीविए ल्यंसुधी तुं रहे अने अम
कालगत थया पछी यावत् तुं दीक्षा लेजे'.

अज्ञाति.

२२. ल्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कहुं के—'हे माता-पिता ! तमे मने जे ए प्रमाणे
कहुं के—हे पुत्र ! निर्भ्रयप्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वितीय छे—इत्यादि यावत् अमारा कालगत थया पछी तुं दीक्षा लेजे. ते ठीक
छे, पण हे मात-पिता ! ए प्रमाणे खरेखर निर्भ्रय प्रवचन क्लीब-मन्दशक्तिवाळ, कायर अने हलका पुरुपोने, तथा आ लोकमां आसक
परलोकथी पराङ्मुख एवा विपयनी तृष्णावाळ सामान्य पुरुपोने (तेनुं अनुपालन) दुष्कर छे; पण धीर, निश्चित अने प्रयत्नवान् पुरुष
तेनुं अनुपालन जरा पण दुष्कर नथी. माटे हे माता-पिता ! हुं तमारी अनुमतिथी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावद् दीक्षा लेवो

१ समुद्रे इ वा ग, समुद्रे वा घ, समुद्रे एव ङ । २ मिस्साजा-ङ । ३ उज्जोयरए ग-घ-ङ । ४ तुंमं व णं ग-घ । ५ अ-ङ । ६ अह्हेहिं काळगएहिं-ङ ।

२१. * "इणमेव निगंधं पावयणं सधं, अनुत्तरे, केवलियं, पडिपुत्रं नेवाउयं, संदुद्धं, सक्कगणं, सिद्धिमगं, सुत्तिमगं, निजाणमगं, निव्वाणमगं
अभितहं, अमिसंधि, सधदुक्खण्यहीणमगं । इत्थं टिआ जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुचंति, परिनिव्वायंति, सधदुक्खणमंतं करंति" ।

(आवश्यकप्रतिक्रमण सूत्र-३०-३३.)

अर्थ—आज निर्भ्रयप्रवचन सत्य, अनुपम, अद्वितीय, परिपूर्ण, श्वावयुक्त, शुद्ध, शक्यने कापनार, सिद्धिमार्ग, सुत्तिमार्ग, निर्वाणमार्ग, अने
निर्वाणमार्गरूप छे. तेमज ते असत्परहित, निरन्तर अने सर्वदुःखना नाशानुं कारण छे. तेमां तत्पर थयेका जीवो सिद्ध थाव छे, शुद्ध थाव छे,
शुक्त थाव छे, निर्वाणने प्राप्त थाव छे अने सर्वदुःखोवो नाश करे छे.

† साधुओने पिढना बेंताळीश दोषो होय छे. सोळ उद्गमदोष, सोळ उत्पादनदोष. अने दस एषणादोष. तेमां आधाकर्मिकसोळ उद्गमदोष
छे. तेमां 'आधाकर्मिक'की मांकीने 'अभ्याङ्गत'सुधीना दस दोषो छे. जुओ-प्रवचनसारोदार गाथा. ५६५.

अथ जमाथे समणस्स भयंभो महावीरस्स जाव पञ्चदशप । इयं णं तं जमालि क्षत्रियकुमारं मग्गा-पियरो जाहे नो
 क्खिंयन्ति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिक्काहि य वेह्महिं आमवणाहि य, पञ्चवणाहि य भावविचय वा, जाव विचविचय
 वा, ताहे अकामाहं वेव जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स त्रिकमणं जणुमचित्था ।

२३. तय णं तस्स जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सहावेह, सहाविता एवं वयासी-क्षिप्यामेव
 भो देवानुपिया ! क्षत्रियकुडगांमं नयरं सभितरवाहिरिं आसिय-संमज्जि-भोवलिं जहा उववाए, जाव पञ्चपिणंति ।
 तय णं से जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिया दोषं पि कोडुंबियपुरिसे सहावेह, सहाविता एवं वयासी-क्षिप्यामेव भो देवा-
 नुपिया ! जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स महत्थं, महत्थं, महत्तिं विपुलं निष्कमणामिसेयं उवहुवेह । तय णं ते कोडुंबियपुरिस्सा
 ताहे जाव पञ्चपिणंति । तय णं तं जमालि क्षत्रियकुमारं मग्गा-पियरो सीहासणवरंसि पुरत्थामिमुहं निसीयावेंति, निसी-
 यावेत्ता भट्टसएणं सोवणिणयाणं कलसाणं, एवं जहा रायप्यसेणजे, जाव भट्टसएणं भोमेजाणं कलसाणं सविहिप जाव
 जहा रवेणं महया महया निष्कमणामिसेगेणं अंभिसिंचंति ।

२४. म० २ अमिसिंचिता करयल- जाव जयणं विजयणं वज्जावेंति, ज० २ वज्जाविता एवं वयासी-अण जाया !
 किं देमो, किं पयच्छामो, किणा वा ते भट्टो ? तय णं से जमाली क्षत्रियकुमारे मग्गा-पियरो एवं वयासी-इच्छामि णं मग्गा-
 यानो ! कुत्तियावणाओ रयहरणं चं पडिग्गाहं चं आणिउं कासवगं च सहाविउं । तय णं से जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिता
 कोडुंबियपुरिसे सहावेह, को० २ सहाविता एवं वयासी-क्षिप्यामेव भो देवानुपिया ! सिरिघराओ तिभि सयसहस्साहं
 गहाय दोहिं सयसहस्सेणं कुत्तियावणाओ रयहरणं चं पडिग्गाहं चं आणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सहावेह । तय णं ते कोडुं-
 बियपुरिस्सा जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिउणा एवं बुत्ता समाणा इट्ट-तुट्ट- करयल- जाव पडिसुणेत्ता क्षिप्यामेव सिरिघ-
 राओ तिभि सयसहस्साहं, ताहे जाव कासवगं सहावेति । तय णं से कासवप जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिउणा कोडुं-
 बियपुरिसेहिं सहाविप समाणे इट्टे तुट्टे ण्हाय कयबलिकम्मे जाव सरीरे, जेणेव जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिया तेणेव

इच्छं हूं. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिता विषयने अनुकूल तथा विषयने प्रतिकूल एवी घणी उक्तिओ, प्रज्ञतिओ, संज्ञ-
 तिओ अने विनतिओथी कहेवाने यावत् समजाववाने शक्तिमान् न थया स्यारे बगर इच्छाए तेओए जमालि क्षत्रियकुमारने दीक्षा
 देवानी अनुमति आपी.

दीक्षानुमति.

२३. स्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. अने बोलावीने एम कहुं के—'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र
 आ क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी बहार अने अंदर पाणीथी छंटकाव करावो, वाळीने साफ करावो, अने लीपावो'-इत्यादि जेम* औपपातिक सूत्रमां
 कहुं छे तेम करीने यावत् ते कौटुंबिक पुरुषो आजा पाछी आपे छे. स्यारबाद फरीने पण जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने
 बोलाव्या, अने बोलावीने आ प्रमाणे कहुं के—'हे देवानुप्रियो ! जल्दी जमालि क्षत्रियकुमारनो महार्थ, महामूल्य, महापूज्य अने मोटो
 दीक्षानो अभिवेक तैयार करो.' स्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो कहुवा प्रमाणे करीने आजा पाछी आपे छे. स्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारने तेना
 माता-पिता उत्तम सिंहासनमां पूर्व दिशा सन्मुख बैसारे छे, अने बैसारीने एकसो आठ सोनाना कलशोथी-इत्यादि राजप्रश्रीयसूत्रमां
 कहुवा प्रमाणे यावत् एकसोने आठ माटीना कलशोथी सर्व ऋद्धिवडे यावद् मोटा शब्दवडे मोटा २ निष्कमणाभिषेकथी तेनो अभिवेक करे छे.

जमालिनी दीक्षा.

२४. अभिवेक कर्षा बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता-पिता हाथ जोडी यावत् तेने जय अने विजयथी वधावे छे. वधावीने
 तेओए आ प्रमाणे कहुं के—'हे पुत्र ! तुं काहे के तने अमे शुं दइए, शुं आपीए, अथवा तारे काइ प्रयोजन छे ? स्यारे ते जमालि क्षत्रिय-
 कुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कहुं के—हे माता-पिता ! हुं कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र मंगाववा तथा एक हजामने
 बोलाववा इच्छं हूं. स्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने कहुं के—'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र
 आपणा खजानामांथी त्रण लाख (सोनैया) ने लइने तेमांथी बे लाख (सोनैया) वडे कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र लावो,
 तथा एक लाख सोनैया आपीने एक हजामने बोलावो. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते कौटुंबिक पुरुषोने ए प्रमाणे आजा करी
 स्यारे तेओ खुश थया, तुष्ट थया, अने हाथ जोडीने यावत् पोताना स्वामीनुं वचन स्वीकारीने तुरतज खजानामांथी त्रण लाख सुवर्णमुद्रा
 लइने यावत् हजामने बोलावे छे, स्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषो द्वारा बोलावेलो ते हजाम खुश थयो, तुष्ट थयो,

१ वहुहिं व जा-ग-क । २ अकामए वे-ग । ३ अहसयाणं क । ४-सिंचइ ग-घ । ५ वा क । ६-वा क । ७-पुपिये ।
 ८ कुपे समाणे क । ९-गुहा घ । १० इट्टुहे क ।

२३. * औपपातिक. प. ६१-६.

† राजप्रश्रीय प. १००-१. पं ८.

२४. † क-पृथिवी, त्रिक-त्रण, आपण-हाट; सर्व, शत्रु अने पातारूप त्रण लोकमां रहेली वस्तुने मळवाना इभाव-हाटने कुत्रिकापण कहे छे—टीका.

અધાગચ્છતિ, ડયાગચ્છિતા કરચલ- જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિયરં જયણં વિજયણં વચ્ચાવેર, અ૦ ૩ ઘટ્ટાવિષ્ણા પર્ણં
 ઘયાસી-સંદિસંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! જં મય કરણિજ્ઞં ? તપ ણં સે જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિયા તં કાસવગં પર્ણં ઘયાસી
 -નુમં દેવાણુપ્પિયા ! જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પેરેણં જસેણં ચડરંગુલઘજે 'નિક્ષમણપાઓગ્ગે અગ્ગકેસે કપ્પેહિ । તપ ણં
 સે કાસવે જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિડણા પર્ણં વુસે સમાણે દુદ્ધ-તુદ્ધ- કરચલ- જાવ પર્ણં સામી ! તદ્દેશાણાપ વિજયણં
 જયણં પડિસુણે, પડિસુણિષ્ણા સુરમિણા ગંધોદપણં હત્થ-પાદે પક્ષ્ણાલેહ, પક્ષ્ણાલિષ્ણા સુદ્ધાપ અદ્ધપડલાપ પોત્તીપ મુહં બંધર
 મુહં બંધિષ્ણા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પેરેણં જસેણં ચડરંગુલઘજે 'નિક્ષમણપાઓગ્ગે અગ્ગકેસે કપ્પેહિ । તપ ણં સા જમા
 લિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ માયા હંસલક્ષણેણં પેડસાડપણં અગ્ગકેસે પડિચ્છર, અ૦ ૨ પડિચ્છિષ્ણા સુરમિણા ગંધોદપણં પક્ષ્ણા
 લેહ, સુરમિ૦ ૨ પક્ષ્ણાલિષ્ણા અગ્ગેહિં ઘેરેહિં ગંધેહિં, મહેરેહિં અથેતિ, અગ્ગેહિં ૨ અથિષ્ણા સુદ્ધે વત્થે વંધર, સુ૦ ૨ બંધિષ્ણા
 રચણકરંડગંસિ પક્ષિવતિ, પક્ષિવતિષ્ણા હાર-વારિધાર-સિદુવાર-છિન્નમુત્તાવલિપ્પગાસારં મુચવિયોગદુસહારં મંસુરં વિણિ
 મ્મુચમાળી ૨ પર્ણં ઘયાસી-પ્પસ ણં અમ્હં જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ વહુસુ તિહીસુ ય પહ્ણીસુ ય ઉસ્સવેસુ ય જબેસુ ય
 છણેસુ ય અપચ્છિમે દરિસણે ભવિસ્સતીતિ કદ્ધુ કેસીસગમૂલે ઠવેતિ ।

૨૫. તપ ણં તસ્સ જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ અમ્મા-પિયરો 'દોષં પિ ઉત્તરાવક્રમણં સીહાસણં રયાવેતિ, દોષં પિ
 રયાવિષ્ણા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ સેયા-પીયપહિં કલસેહિં ણ્હાવેતિ, સેયા૦ ૨ ણ્હાવિષ્ણા પમ્હલસુકુમાલાપ સુરમીપ
 ગંધકાસાર્પ ગાયાહં લૂહેતિ, પ૦ ૨ લૂહિષ્ણા સરસેણં ગોસીસચંદણેણં ગાયાહં અણુલિપંતિ, સ૦ ૨ અણુલિપિષ્ણા નાસાનિ-
 સ્સાસવાયવોજ્ઞં, ચક્કવુહરં, વક્ષ-પરિસજ્જતં, હયલાલાપેલવાડતિરેગં, ઘવલં, કણગલ્લચિતંતકમ્મં, મહરિહં, હંસલક્ષણપડસાડગ
 ધરિહિંતિ, પરિહિષ્ણા દારં પિણેહિંતિ, પિણહિષ્ણા અદ્ધદારં પિણેહિંતિ, પિણહિષ્ણા પર્ણં જહા સુરિયામસ્સ અલંકારો તદ્દેવ જાપ
 ચિત્તં રચણસંકહુકકં મહાકં પિણિહિંતિ, કિં વહુણા ? ગંધિમ-વેદિમ-પૂરિમ-સંઘાતિમેણં ચડવિદેહં મહેણં કપ્પહક્ષણં પિય
 અલંકાય-વિભૂસિયં કરેતિ । તપ ણં સે જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિયા કોડુંચિયપુરિસે સહાવેર, સહાવિષ્ણા પર્ણં ઘયાસી-
 સ્વિપ્યામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! અણેગલ્લમસયસણિવિદ્ધં, લીલદ્વિયસાલમંજિયાગં જહા રાયપ્પસેણજે વિમાણવણ્ણમો, જાવ મણિ

ન્યાયો, અને બલિકર્મ (દેવપૂજા) કરી, યાવત્ તેણે પોતાનું શરીર શણગાર્યું, અને પછી ય્યાં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારનો પિતા છે ત્યાં તે આવે છે.
 આવીને હાથ જોડીને જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતાને જય અને વિજયથી વધાવે છે; વધાવ્યા પછી તે હજામ આ પ્રમાણે બોલ્યો
 કે-‘હે દેવાનુપ્રિય! જે મારે કરવાનું હોય તે ફરમાવો’. ત્યારપછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતાને તે હજામને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે
 દેવાનુપ્રિય! જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના અત્યંત યત્નપૂર્વક ચાર અંગુલ મૂકીને નિક્ષમણને (દીક્ષાને) યોગ્ય આગળના વાલ કાપી નાશ. ત્યાર-
 પછી જ્યારે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતાને તે હજામને આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તે ખુશ થયો, તુષ્ટ થયો અને હાથ જોડીને આ પ્રમાણે બોલ્યો-
 ‘હે રવામિન્ ! આજ્ઞા પ્રમાણે કરીશ’ એમ કહીને વિનયથી તે વચનનો સ્વીકાર કરે છે. સ્વીકાર કરીને સુગંધી ગંધોદકથી હાથ પગને
 ધુવે છે, ધોઈને શુદ્ધ આઠ પડવાળા વસ્ત્રથી મોટાને બાંધી અત્યંત યત્નપૂર્વક જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના નિક્ષમણ યોગ્ય અપ્રકેશો ચાર આંગળ
 મૂકીને કાપે છે. ત્યાર પછી જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના માતા હંસના જેવા શ્રેત પટશાટકથી તે અપ્રકેશોને પ્રહણ કરે છે. પ્રહણ કરીને તે
 કેશોને સુગંધી ગંધોદકથી ધૂવે છે. ધોઈને ઉત્તમ અને પ્રધાન ગંધ તથા માલવડે પૂજે છે. પૂજીને શુદ્ધ વસ્ત્રવડે બાંધે છે. બાંધીને રત્નના
 કરંડિયામાં મૂકે છે. ત્યાર પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના માતા હારિ, પાળીની ધારા, સિદુવારના પુષ્પો અને તટ્ટી ગપ્લી મોતીની માલ
 જેવાં પુત્રના વિયોગથી દુઃસહ આંસુ પાડતી આ પ્રમાણે બોલી કે-‘આ કેશો અમારા માટે વળી તિથિઓ, પર્વણો, ઉત્સવો, યજ્ઞો, અને
 મહોત્સવોમાં જમાલિકુમારના ચારંચારં દર્શનરૂપ થશે’ એમ ધારી તેને ઓશીકાના મૂલમાં મૂકે છે.

૨૫. ત્યાર બાદ તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના માતા-પિતા પુનઃ ઉત્તર દિશા સન્મુખ બીજું સિંહાસન મૂકાવે છે. મૂકાવીને પરીવાર જમાલિ
 ક્ષત્રિયકુમારને સોના અને રૂપાના કલશો વડે ન્હરાવે છે. ન્હરાવીને સુરમિ, દશાવાલી અને સુકુમાલ સુગંધી ગંધકાષાય (ગન્ધપ્રધાન
 લાલ) વસ્ત્ર વડે તેનાં અંગોને લૂંછે છે, અને અંગોને લૂંછીને સરસ ગોશીર્ષ ચંદનવડે ગાત્રનું વિલેપન કરે છે. વિલેપન કરીને નાસિકાના
 નિઃશ્વાસના વાયુથી ડહી જાય એવું હલકું, આંખને ગમે તેવું સુંદર, વર્ણ અને સ્પર્શથી સંયુક્ત, ઘોડાની લાલ કરતાં પણ વધારે નરમ, ધોલું
 સોનાના કસબી છેડાવાળું, મહામૂલ્યવાળું, અને હંસના ચિહ્નયુક્ત એવું પટશાટક (રેશમી વસ્ત્ર) પહેરાવે છે. પહેરાવીને હાર અને અર્ધહારને
 પહેરાવે છે. આ પ્રમાણે જેમ સૂર્યામ્ના અલંકારનું વર્ણન કરેલું છે તેમ અહિં કરવું, યાવત્ વિચિત્ર રત્નોથી જડેલા ઉત્કૃષ્ટ મુકુટને પહેરાવે

૧-પઓને ગ-ઘ-ઙ । ૨ પઠિકપ્પેહિ ઘ । ૩ તદ્દેશાણા વિ-ક । ૪-પવોને ગ-ઘ-ઙ । ૫ પઠિસા-ગ । ૬ અત્તરેહિં ક । ૭ સુદ્ધ-
 રથેણ ઘ, સુદ્ધેણ વથેણ ઙ । ૮-વારિધારા ગ-ઘ । ૯ ગોસીસગ-ગ । ૧૦ દોષં ઉત્ત-ક । ૧૧ સીવાપી-ક-ઘ, સેયાપી-ઙ ।
 ૧૨ માણ્હેતિ ગ-ઘ । ૧૩ માણ્હેતા ગ-ઘ । ૧૪ વિણિહિંતિ, વિણિહિષ્ણા ક । ૧૫ -જહેતિ, -જહેતા ક ।

ईश्वरबन्धियाजालपरिनिवृत्तं पुरितसहस्सबाहिभिः सीयं उच्यते, उच्यते च मम पयमाणसियं पञ्चपिण्डम् । तप्यं नं ते कोडुं-
 त्रियपुरिसा जाव पञ्चपिण्डंति । तप्यं नं से जमाली क्षत्रियकुमारे केसालंकारेणं, बरालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आमरणा-
 लंकारेणं चउद्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिण्य समाने पडिपुञ्जालंकारे सीहासनाभो अभ्युद्वेह, सिहासनाभो अभ्युद्विस्ता सीयं
 अणुप्यदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुह, दुरुहिता सीहासणवरंसि पुरत्याऽमिमुहे सभिसन्ने । तप्यं नं तस्स जमालिस्स क्षत्रिय-
 कुमारस्स माता ण्हाया, कय-(बलिकम्मा) जाव -सरीरा हंसलक्षणं पइसाडगं गहाय सीयं अणुप्यदाहिणीकरेमाणी
 सीयं दुरुह, सीयं दुरुहिता जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स दाहिणे पासे महासणवरंसि सभिसन्ना । तप्यं नं तस्स जमालिस्स-
 क्षत्रियकुमारस्स अम्मभाती ण्हाया, जाव -सरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्यदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरु-
 ह, सीयं दुरुहिता जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स वामे पासे महासणवरंसि सभिसन्ना । तप्यं नं तस्स जमालिस्स क्षत्रिय-
 कुमारस्स पिड्ढो एगा वरतरणी सिंगारागारवारुवेसा संगयगय- जाव रुव-जोवण-विलासकलिया सुंदरयण- हिम-
 रयण-कुमुद-कुंदे-दुप्यगासं सकोरंटमल्लवामं धवलं मायवत्तं गहाय सलीलं उंवरि धारेमाणीओ धारेमाणीओ चिट्ठति ।
 तप्यं नं तस्स जमालिस्स उमओ पासि दुवे वरतरणीओ सिंगारागारवारु- जाव -कलियाओ, गाणामणि-कणग-रयण-
 विमलमहरिहतवणिञ्जु-अलविचित्रदंडाओ, चिल्लियाओ, संख-क-कुंदे-दु-दगरय-अमयमहिय-केणपुंजसन्निकासाओ धव-
 लाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ वीयमाणीओ चिट्ठति । तप्यं नं तस्स जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स उत्तरपुर-
 त्थिमेणं एगा वरतरणी सिंगारागार- जाव -कलिया सेतं रयवामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं
 सिंगारं गहाय चिट्ठ । तप्यं नं तस्स जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमेणं एगा वरतरणी सिंगारागार- जाव
 -कलिया चित्तकणगवदंडं तालवेदं गहाय चिट्ठ । तप्यं नं तस्स जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सहावेह
 को० २ सहाविस्ता एवं वयासी-अप्यामेव ओ देवाणुपिया ! सरिसयं, सरिसयं, सरिसयं, सरिसलावन्न-रुव-जोवण-
 गुणोववेयं, एगामरण-वसणगहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरणसहस्सं सहावेह । तप्यं नं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिपुञ्जिता
 अप्यामेव सरिसयं, सरिसयं, जाव सहावेति । तप्यं नं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स क्षत्रियकुमारस्स पिड्डणा कोडुंबि-
 यपुरिसेहि सहाविया समाणा इट्ठ-नुट्ठ-ण्हाया, कयबलिकम्मा, कयकोडय-मंगल-पायच्छिता, एगामरण-वसणगहिय-

छे. वधारे शुं कहेवुं ? पण मंथिम-गुथेली, वेष्टिम-वीटेली, पूरिम-पूरेली अने संघातिम-परस्पर संघात वडे तैयार थयेली चारे
 प्रकारनी माळओ वडे कल्पवृक्षनी पेटे ते जमालि कुमारेने अलंकृत-विभूषित करे छे. ल्यार बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिता
 कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. अने बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कहुं के-‘हे देवानुप्रियो ! शीघ्र संकडो स्तंभोवडे सहित लीलापूर्वक
 पुतळीओथी युक्त-इत्यादि *राजप्रश्नीयसूत्रमां विमाननुं वर्णन कर्युं छे तेवी यावत् मणिरत्ननी घंटिकाओना समूह युक्त, हजार
 पुरुषोथी उंचकी शकाय तेवी शीबिका-पालखीने तैयार करो अने तैयार करीने मारी आज्ञा पाछी आपो.’ ल्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत्
 आज्ञाने पाछी आपे छे. ल्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमार केसालंकार, बरालंकार माल्यालंकार अने आमरणालंकार ए चार प्रकारना
 अलंकारथी अलंकृत यह प्रतिपूर्ण अलंकारथी विभूषित यह सिंहासनथी उठे छे. उठीने ते शिबिकाने प्रदक्षिणा दइने तेना उपर चढे छे.
 चढीने उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशा सन्मुख बेसे छे. ल्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता ज्ञान करी बलिकर्म करी यावत्
 शरीरने अलंकृत करी, हंसना चिह्नवाळ पटशाटकने लइ शिबिकाने प्रदक्षिणा करी तेना उपर चढे छे; अने चढीने ते जमालि क्षत्रिय-
 कुमारने जमणे पडखे उत्तम भद्रासन उपर बेठी. पछी जमालि क्षत्रियकुमारनी धावमाता ज्ञान करी यावत् शरीरने शणगारी रजोहरण
 अने पात्रने लइ ते शिबिकाने प्रदक्षिणा करी तेना उपर चढे छे, अने चढीने जमालि क्षत्रियकुमारने डाबे पडखे उत्तम भद्रासन
 उपर बेठी. ल्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी पाळळ मनोहर आकार अने सुंदर पहरेवेशाळी, संगतगतिवाळी यावत् रूप अने
 जीवनना विलासथी युक्त, सुंदर स्तनवाळी एक युवती हिम, रजत, कुमुद, मोगराजुं फुल अने चंद्रसमान कोरंटकपुष्पनी माळयुक्त, धोळुं
 छत्र हाथमां लइ तेने लीलापूर्वक धारण करती उमी रहे छे. ल्यारपछी ते जमालिने वने पडखे शृंगारना जेवा मनोहर आकारवाळी
 अने सुंदर वेषवाळी उत्तम बे युवती स्त्रीओ यावत् अनेक प्रकारना मणि, कनक, रत्न अने विमल, महामूल्य तपनीय (रक्त सुवर्ण-)
 थी बनेला, उज्ज्वल विचित्र दंडवाळां, दीपतां, शंख, अंक, मोगराना फुल, चंद्र, पाणीना बिन्दु अने मथेल अमृतना फीणना समान
 ओळां चामरोने ग्रहण करी लीलापूर्वक बीजती उमी रहे छे. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी उत्तरपूर्व दिशाए शृंगारना गृह जेथी उत्तम
 वेषवाळी यावत् एक उत्तम स्त्री भेत रजतमय, पवित्र पाणीथी भरेला अने उन्नत हस्तीना मोटा मुखना आकारवाळ कलशने ग्रहण
 करीने यावत् उमी रहे छे. ल्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी दक्षिणपूर्व शृंगारना गृहरूप उत्तम वेषवाळी यावत् एक उत्तम स्त्री

१ उच्यतेमाणी २ क । २ वीयमाणीओ ३ क । ३-पुरच्छिमेणं ग-घ क । ४ सेत-रयवाम- ग-घ ।

* कुओ-राजप्रश्नीय प. २६-२ पं. ९.

વિજ્ઞોયા તેજેવ જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિયા તેજેવ ઉવાગચ્છંતિ, તેજેવ ઉવાગચ્છિતા કરયછ- જાવ વહાવેવ જાવ
 ઘયાસી-સંવિસંતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! જં અમ્હેદિ કરણિજં । તપ ણં સે જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિયા ણં કોટુંબિયકા
 તરુણસહસ્સં પિ ઇવં ઘયાસી-તુમ્હે ણં દેવાણુપ્પિયા ! ણ્હાયા કયવલિકમ્મા જાવ-ગદ્ધિયનિજ્ઞોગ્ગા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમાર-
 રસ્સ સીયં પરિવહ્હ । તપ ણં તે કોટુંબિયપુરિસા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ જાવ પડિસુણિતા ણ્હાયા જાવ -ગદ્ધિ
 નિજ્ઞોગા જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ સીયં પરિવહંતિ । તપ ણં તસ્સ જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પુરિસહસ્સવાહિમિ
 સીયં દુરુદ્ધસ્સ સમાણસ્સ તપ્પહમયાપ ઇમે અદ્ધ-દ્ધ મંગલગા પુરઓ મહાણુપુઢીય સંપટ્ટિયા; તં જહા-સોત્થિય-સિરિવચ્છ-
 જાવ -વપ્પના; તદાણંતરં ચ ણં પુત્તકલસમિગારં જહા ઉચવાપ્પ, જાવ -ગગણતલમણુલિહંતી પુરઓ મહાણુપુઢીય સંપટ્ટિયા
 ઇવં જહા ઉચવાપ્પ તહેવ માણિયં, જાવ-આલોયં ચ કરેમાણા જયજયસહં ચ પડંજમાણા પુરઓ મહાણુપુઢીય સંપટ્ટિયા
 તદાણંતરં ચ ણં વહ્હે ઉગ્ગા મોગા જહા ઉચવાપ્પ જાવ મહાપુરિસવગ્ગુરાપરિક્કિત્તા, જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પુરઓ
 ય મગ્ગતો ય પાસઓ ય મહાણુપુઢીય સંપટ્ટિયા ।

૨૬. તપ ણં સે જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિયા ણ્હાયા કયવલિકમ્મા જાવ -વિભૂસિય દ્ધત્થિકલ્લંચવરગપ સકોરંટ-
 મહ્હામેણં છત્તેણં ધરિજ્જમાણેણં સેયવરચામરાહિં ઉદ્ધુમ્મણીહિં ઉદ્ધુમ્મણીહિં હય-ગય-રહ-પવરજોહકલિયાપ આડરંગિણીય
 સેણાપ સદ્ધિ સંપરિવુદ્ધે, મહ્હયામહ્હચ્છગર- જાવ -પરિક્કિત્તે જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પિટ્ટઓ અણુગચ્છહ । તપ ણં
 તસ્સ જમાલિસ્સ ક્ષત્રિયકુમારસ્સ પુરઓ મહં આસા, આસવરા, ઉમઓ પાસિ ણાગા, ણાગવરા, પિટ્ટઓ રહા, રહસંગેહી । તપ
 ણં સે જમાલી ક્ષત્રિયકુમારે અમ્મુગ્ગતમિગારે, પરિગદ્ધિયતાલિયંટે, ડસવિયસેતછત્તે, પઢીયસેતચામરબોલવીયણાપ, સદ્ધિય
 જાવ ણાદિતરવેણં, તયાણંતરં ચ ણં વહ્હે લેટ્ટિગ્ગાહા કુંતેગ્ગાહા જાવ પુલ્લયગ્ગાહા, જાવ ધીણગ્ગાહા; તયાણંતરં ચ ણં મહ્હસર

વિચિત્ર સોનાના દંડવાળા વિજ્ઞાને લઈને ઉભી રહે છે, પછી તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતા કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલ-
 વીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે દેવાનુપ્રિયો! શીઘ્ર સરસા, સમાનસ્વચાવાલ્ય, સમાનઉમ્મરવાલ્ય, સમાનલાવણ્ય, રૂપ અને યૌવન ગુણ
 યુક્ત, અને એક સરસા આભરણ અને વજ્રરૂપ પરિકરવાલ્ય એક હજાર ઉત્તમ યુવાન કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવો’. પછી તે કૌટુંબિક પુરુ-
 ષોએ યાવત્ પોતાના સ્વામીનું વચન સ્વીકારીને જલદી એક સરસા અને સરસી ત્વચાવાલ્ય યાવત્ એક હજાર પુરુષોને બોલાવ્યા. સ્વારપછી
 તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના પિતા કૌટુંબિક પુરુષોદ્વારા બોલાવેલા તે કૌટુંબિક પુરુષો હર્ષિત અને તુષ્ટ થયા. જ્ઞાન કરી, વલિકર્મ (પૂજા
 કરી, કૌતુક અને મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરી, એકસરસા ઘરેણાં અને વજ્રરૂપ પરિકરવાલ્ય ઘડીને તેઓ જ્યાં જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારના
 છે ત્યાં આવે છે. આવીને હાય જોડી યાવત્ વધાવી તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે દેવાનુપ્રિય! જે કાર્ય અમારે કરવાનું હોય,
 ફરમાવો.’ પછી તે જમાલિકુમારના પિતાએ તે હજાર કૌટુંબિક ઉત્તમ યુવાન પુરુષોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-‘હે દેવાનુપ્રિયો! જ્ઞાન કરી,
 વલિકર્મ કરી અને યાવત્ એક સરસા આભરણ અને વજ્રરૂપપરિકરવાલ્ય તમે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની શિવિકાને ઉપાડો.’ પછી તે જમાલિ
 ક્ષત્રિયકુમારના પિતાનું વચન સ્વીકારી જ્ઞાન કરેલા યાવત્ સરસો પહેરવેષ ધારણ કરેલા તે કૌટુંબિક પુરુષો જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની
 શિવિકા ઉપાડે છે. પછી ય્યારે તે જમાલિ ક્ષત્રિયકુમાર હજાર પુરુષોથી ઉપાડેલી શિવિકામાં બેઠો સ્વારે સૌ પહેલાં આ આઠ આઠ મંગલો
 આગલ અનુક્રમે ચાલ્યા. તે આ પ્રમાણે ૧ સ્વસ્તિક, ૨ શ્રીવત્સ, યાવદ્ ૩ દર્પણ. તે આઠ મંગલ પછી પૂર્ણ કલશ ચાલ્યો- ઇત્યાદિ
 ઔપપાતિકસૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવદ્ ગગન તલનો સ્પર્શ કરતી ઈન્દ્રી વૈજયંતી-શ્વજા આગલ અનુક્રમે ચાલી-ઇત્યાદિ ઔપપાતિકસૂત્રમાં
 કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ જય જય શબ્દનો ઉચ્ચાર કરતા તેઓ આગલ અનુક્રમે ચાલ્યા. સ્વારપછી ઘણા ઉગ્રકુલમાં ઉત્પન્ન થયેલા, મોગકુલમાં
 ઉત્પન્ન થયેલા પુરુષો ઔપપાતિકસૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ મોટા પુરુષો રૂપી વાગુરાથી વીંટાયેલા જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની આગલ, પાછલ
 અને પડલે અનુક્રમે ચાલ્યા.

૨૬. સ્વારપછી તે જમાલિકુમારના પિતા જ્ઞાન કરી, વલિકર્મ કરી યાવદ્ વિભૂષિત થઈ હાથીના ઉત્તમ સ્કંધ ઉપર ચઢી, કોરંટક
 પુષ્પની માલ્યા યુક્ત, [મસ્તકે] ધારણ કરાતા છત્રસહિત, બે શ્વેત ચામરોથી વીંજાતા ૨, ઘોડા, હાથી, રથ અને પ્રવર યોધાઓ સહિત
 ચતુરંગિણી સેના સાથે પરિવૃત્ત થઈ, મોટા સુમટના ઘૂંદથી યાવત્ વીંટાયેલા જમાલિ ક્ષત્રિયકુમારની પાછલ ચાલે છે, સ્વારપછી તે જમાલિ
 ક્ષત્રિયકુમારની આગલ મોટા અને ઉત્તમ ઘોડાઓ, અને બન્ને પડલે ઉત્તમ હાથીઓ, પાછલ રથો અને રથનો સમૂહ ચાલ્યો. સ્વાર બાદ
 તે જમાલિકુમાર સર્વ શ્વેતસહિત યાવત્ યાદિત્રના શબ્દસહિત ચાલ્યો. તેની આગલ કલશ અને તાલવૃત્તને લઈને પુરુષો ચાલતા હતા
 તેના ઉપર ઉંચે શ્વેત છત્ર ધારણ કરાવું હતું, અને તેના પડલે શ્વેત ચામર અને નાના પંલાઓ વીંજાતા હતા. સ્વાર પછી કેટલાક લાવ-

૧ કુમ્હે ણં ઘ-હ । ૨ પાસાઓ ય ક-ઠ । ૩ કય-જાવ ક-હ । ૪-કુમારસ્સ । ૫ -વીંજણીય ણ-હ-હ । ૬ તવણંતરં ક-
 ૭-મહા ણ-હ ।

* ઔપપા. પ. ૬૧-૧

† ઔપપા. પ. ૬૧-૧

मयाणं, अद्भुतस्यं तुरयाणं, अद्भुतस्यं रहानं, तदाणंतरं च णं लडड-असि-कौतहरथाणं बहूणं पायसाणीणं पुरओ संपट्टियं, तयाणंतरं च णं बहवे राईसर-तलवर-जाव सत्यवाहप्यभियओ पुरओ संपट्टिया सत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झमज्जेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालय चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ।

२७. तए णं तस्स जमालिस्स सत्तियकुमारस्स सत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिय-च-उड-जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया, जहा उववाइए, जाव अभिनिंदिता य अभित्थुणंता य एवं वयासी-‘जय जय णंदा ! धम्मेणं, जय जय नंदा ! तवेणं, जय जय नंदा ! भइं ते भंभग्गेहिं णाण-दंसण-चरिसमुत्तमेहिं, अजियाइं जिंणाहि इंदियाइं, जीयं च पाळेहि समणधम्मं; जियविघो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्जे, णिंहाहि य राग-दोसमल्ले तवेणं भित्तिघणियवद्धकच्छे, माहाहि य अद्भु कम्मसत्तु ज्ञाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्यमत्तो इराहि धाराहणपडतां च धीर ! तेलोक्करंगमज्जे, पादय वित्ति-मिरमणुत्तरं केवलं च णाणं, गच्छ य मोक्खं परं पवं जिणवरोकविट्ठेणं सिद्धमग्गेणं अकुडिलेणं, इंता परीसहचमूं, अभिमविय गामकंटकोवसगाणं, धम्मं ते अविग्घमत्थुत्ति कहु अभिनंदंति य अभित्थुणंति य ।

तए णं से जमाली सत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पिच्छिजमाणे पिच्छिजमाणे एवं जहा उववाइए कुणिओ, जाव णिग्गच्छति; णिग्गच्छिता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालय चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता छुत्तादीए तित्थगरा-तिसए पासइ, पासिता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सियाओ पंभोरुहर । तए णं तं जमालि सत्तियकुमारं अम्मा-पियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता समणं भगवं महावी रं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु भंते ! जमाली सत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते, जाव किमंग ! पुण पासणयाए, से जहा णामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा, जाव संहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुहे णोऽवलिप्पति पंकरपणं,

डीवाळा, मालावाळा, यावत् पुस्तकवाळा यावत् वीणावाळा पुरुषो चाल्या. स्यारपछी एकसो आठ हाथी, एकसो आठ घोडा अने एकसो आठ रथो चाल्या, स्यारपछी लाकडी, तरवार अने मालाने प्रहण करी मोटुं पायदळ आगळ चाल्युं, स्यारपछी घणा युवराजो, धनिको, तलवरो, यावत् सार्यवाह प्रमुख आगळ चाल्या. यावद् क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वच्चे थइने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशालक चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां जवानो विचार कर्यो.

२७. स्यारपछी क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वचोवच निकळता ते जमालि क्षत्रियकुमारने शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क यावत् मार्गोमां घणा मना अर्थिओए, कामना अर्थिओए-इत्यादि *औपपातिकसूत्रमां कक्षा प्रमाणे यावत् अभिनंदन आपता, स्तुति करता आ प्रमाणे कथुं छे-‘हे नंद-आनन्ददायक ! तारो धर्म वडे जय थाओ, हे नन्द ! तारो तपवडे जय थाओ, हे नन्द ! तारुं भद्र थाओ, अभम-अखंडित अने उत्तम ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वडे अजित एवी इन्द्रियोने तुं जित, अने जीतिने श्रमण धर्मतुं पालन कर. हे देव ! विघ्नोने जीती ति सिद्धिगतिमां निवास कर. धैर्यरूप कच्छने मजबूत बांधीने तपवडे रागद्वेषरूप मल्लोनी धात कर. उत्तम शुद्ध ध्यानवडे अष्टकर्मरूप सुनुं मर्दन कर. वळी हे धीर ! तुं अप्रमत्त यइ त्रणलोकरूप रंगमंडप मध्ये आराधनापताकाने प्रहण करी निर्मळ अने अनुत्तर एवा धलज्ञानने प्राप्त कर, अने जिनवरे उपदेशेल सरल सिद्धिमार्गवडे परमपदरूप मोक्षने प्राप्त कर. परीषहरूप सेनाने हणीने इन्द्रियोने तिकूल उपसर्गोनी पराजय कर. तने धर्ममां अविघ्न थाओ’-ए प्रमाणे तेओ अभिनंदन आपे छे अने स्तुति करे छे.

स्यारबाद ते जमालि क्षत्रियकुमार हजारो नेत्रोनी मालाओधी वारंवार जोवातो -इत्यादि †औपपातिकसूत्रमां कृणिकना प्रसंगे कथुं छे तेम अहिं जाणवुं; यावत् ते [जमालि] नीकळे छे. नीकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशाल नामे चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने तीर्थकरना छत्रादिक अतिशयोने जुए छे, जोइने हजार पुरुषोधी वहन कराती ते शिबिकाने उमी राखे छे. उमी राखीने शिबिका थफी नीचे उतरे छे. स्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारने आगळ करी तेना माता-पिता ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् नमी तेओ आ प्रमाणे बोल्या के-‘हे भगवन् ! ए प्रमाणे तरेखर आ जमालि क्षत्रियकुमार अमारो एक इष्ट अने प्रिय पुत्र छे, जेतुं नाम श्रवण पण दुर्लभ छे, तो दर्शन दुर्लभ होय तेमां शुं कहेतुं ! जेम कोइ एक कमळ, पद्म, यावत् सहस्रपत्र कादवमां उत्पन्न थाय, अने पाणीमां वचे, तोपण ते पंकनी रजथी तेम जलना कणथी केपातुं नथी; ए प्रमाणे आ जमालि क्षत्रियकुमार पण कामथकी उत्पन्न थयो छे अने भोगोथी वृद्धि थाम्यो छे, तो पण ते कामरजथी

१ संपट्टिया क-क । २ जाव जाहितरवेण सत्तिय-ग-घ । ३ -सिगच-क । ४ अभिग्गहेहिं ग । ५ जियाइं ग-क । ६ णिहय क । ७ -वद्धकच्छे क । ८ -वाहिणीं सीयं घ । ९ -कमत्ति क । १० गच्छइ ग-घ-क । ११ पउमसहस्स-ग-घ ।
 १०. * औपपा० प. ७१-१.
 ११ म० सु०
 † औपपा० प. ७५-१.

णोऽवलिप्स्यह जलरपणं, एवामेव जमाली वि खसियकुमारे कामेहिं जाय, भोगेहिं संजुहे णो विलिप्स्यह कामरपणं, णो विलिप्स्यह भोगरपणं, णो विलिप्स्यह मित्त-णाह-णियगसयण-संबंधिपरिजणेणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुद्धिणे भीए जम्मण-मरणेणं, देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पद्धतेति, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं अग्गे सीसभिक्खं वलयाओ, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं ।

२८. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खसियकुमारं एवं वयासी-अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तए णं से जमाली खसियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं बुत्ते समणे हट्ट-तुट्टे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाय नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दित्तिभागं अयकमह, अयकमित्ता सयमेव आभरण-महा-लंकारं ओमुयह । तए णं सा जमालिस्स खसियकुमारस्स माथा हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण-महा-लंकारं पडिच्छति, आ० २ पडिच्छित्ता हार-बारि- जाय विणिम्भुयमाणी विणिम्भुयमाणी जमालिं खसियकुमारं एवं वयासी-अडियवं जाया ! जइयवं जाया ! परिकमियवं जाया ! अस्सि च णं अट्टे, णो पैमाएतद्धं ति कट्टु जमालिस्स खसियकुमारस्स अम्मा-पियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउम्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

२९. तए णं से जमाली खसियकुमारे सयमेव पंचमुट्टियं लोयं करेह, करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छह, पैवं जहा उसमवत्तो तहेव पद्धओ, नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धि तहेव जाव सामादयमाइयाहिं एकारस अंगा अहिज्जह, सा० २ अहिज्जित्ता वट्टहिं चउत्थ-छट्ट-ट्टम- जाव -मासद्ध-मासखमणेहिं विचिन्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरह ।

३०. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाह जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदह, नमंसह, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं अंते ! तुम्मेहिं अम्मणुत्ताए समणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धि बहिया जणवयविहारं विहरित्ताए । तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्टं णो आढाह, णं

अने भोगरजथी लेपातो नथी, तेमज मित्र, ज्ञाति, पोताना स्वजन, संबन्धी अने परिजनथी पण लेपातो नथी. हे देवानुप्रिय ! आ जमालि क्षत्रियकुमार संसारना भयथी उद्विग्न थयो छे, जन्म मरणथी भयमीत थयो छे, अने देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड-दीक्षित यइने अगारवासथी अनगारिकपणाने स्वीकारवाने इच्छे छे. तो देवानुप्रियने अमे आ शिष्यरूपी भिक्षा आपीए लीए. तो हे देवानुप्रिय ! आप आ शिष्यरूप भिक्षानो स्वीकार करो'.

२८. त्वारे श्रमण भगवंत महावीरे ते जमालि क्षत्रियकुमारने आ प्रमाणे कहुं के-हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो, प्रतिबन्ध न करो'. ज्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि क्षत्रियकुमारने ए प्रमाणे कहुं त्वारे ते हर्षित थइ, तुष्ट थइ, यावत् श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावद् नमस्कार करी, उत्तरपूर्व दिशा तरफ जाय छे. जइने पोतानी मेळे आभरण, माला अने अलंकार उतारे छे. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हंसना चिह्वाळां पटशाटकथी आभरण, माला अने अलंकारोने ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने हार अने पाणीनी धारा जेवा आंखु पाडती २ तेणे पोताना पुत्र जमालिने आ प्रमाणे कहुं के-हि पुत्र ! संयमने विपे प्रयत्न करजे, हे पुत्र ! यत्न करजे, हे पुत्र ! पराक्रम करजे, संयम पाळवामां प्रमाद न करीश. ए प्रमाणे (कहीने) ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता-पिता श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे; वादी अने नमीने जे दिशथी तेओ आव्या हता ते दिशाए पाछा गया.

२९. त्वारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार पोतानी मेळे पंच मुष्टिक लोच करे छे, करीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्या आवे छे, आवीने *ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेठे तेणे प्रत्रज्या लीधी. परन्तु जमालि क्षत्रियकुमारे पांचसो पुरुषो साथे प्रत्रज्या लीधी-इत्यादि सर्व जाणवुं. यावत् ते जमालि अनगार सामाधिकारि अगीआर अंगोने भणे छे. भणीने घणा चतुर्थ भक्त, छट्ट, अट्टम, अने यावत् मासाध तथा मासक्षमणरूप विचित्र तपकर्मवडे आत्माने भावित करता विहरे छे.

३०. त्वार वाद अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगार ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्या आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे. वादी अने नमीने तेणे आ प्रमाणे कहुं के-हे भगवन् ! तमारी अनुमतिथी हुं पांचसे अनगारनी साथे बहानना देशोमां विहार करवाने इच्छुं छुं.' त्वारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो आदर न कर्यो, स्वीकार न कर्यो;

१ पवइसए कु । २ -तवत्ति क-कु । ३-वंदह णमंसह ग-घ । ४-५ दिसिं ग-घ । ६ खसिए घ । ७ उवागच्छित्ता एउं ग-घ-कु । ८ जाव सव्वं सा-घ ।

परिजाण, तुसिणीय संचिद्वर । तप णं से जमाली अणगारे समणे भगवं महावीरं दोषं पि तच्चं पि एवं वयासी-इच्छामि णं मंते ! तुम्हेहि अणगारसर्पहि सद्धिं जाव विहरित्तप । तप णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोषं पि, तच्चं पि एयमदुं णो आढार, जाव तुसिणीय संचिद्वर । तप णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं चंदर, णमंसर, चंदित्ता, णमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ, बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमर, पडिनिक्खमित्ता पंचहि अणगारसर्पहि सद्धिं बहिया अणवयविहारं विहरर ।

३१. तेणं कालेणं, तेणं समपणं साधत्थी नामं नयरी होत्था, वण्णओ, कोट्टप चेइए, वण्णओ, जाव वणसंडस्स । कालेणं, तेणं समपणं चंपा नामं नयरी होत्था, वण्णओ । पुण्णभदे चेइए, वण्णओ, जाव पुढविंसिलापट्टओ । तप णं जमाली अणगारे अन्नया कयाइं पंचहि अणगारसर्पहि सद्धिं संपरिदुडे पुवाणुपुद्धिं चरमाणे, नाम्माणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव चत्थी नयरी, जेणेव कोट्टप चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ, अ० २ ओगिण्हित्ता जेमेणं तवसा अण्णायं भावेमाणे विहरर । तप णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं पुवाणुपुद्धिं चरमाणे, जाव सुहंसुहंणं चरमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभदे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हति, अ० २ ओगिण्हित्ता संजमेणं, तवसा अण्णायं भावेमाणे विहरर ।

३२. तप णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य, विरसेहि य, अंतंहेहि य, पंतंहेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, गालाहकंतेहि य, पमाणहकंतेहि य, सीपहि य पाण-भोयणेहिं अन्नया कयाइं सरीरगंसि विडले रोगातंके पाउभूए, उज्जले, उडले, पगाडे, ककसे, कडुए, चंडे, दुक्खे, दुग्गे, तिष्ठे, दुरहियासे । पित्तज्वरपरिगतसरीरे, दाहबुद्धिपि था वि विहरर । तप णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समणे समणे निग्गंथे सहवेति, स० २ सहावित्ता एवं वयासी-तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! मम सेज्जासंधारणं संथरर । तप णं ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स पैतमदुं विणपणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासंधारणं संथरंति । तप णं से जमाली अणगारे बलियत्तरं वेदणाए अभिभूए समणे एवं पि समणे निग्गंथे सहवेर, सहावित्ता दोषं पि एवं वयासी-ममं णं देवाणुप्पिया ! सेज्जासंधारणं णं किं कडे, कज्जइ ?*

तु मौन रखा. ल्यार पछी ते जमालि अनगारे श्रमण भगवंत महावीरने बीजी वार, त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कहुं के- 'हे भगवन् ! मारी अनुमतिथी हुं पांचसो साधु साथे यावत् विहार करवाने इच्छुं छुं.' पछी श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो जी वार, त्रीजी वार पण आदर न कर्यो, यावत् मौन रखा. ल्यारबाद जमालि अनगार श्रमण भगवंत महावीरने वादे छे, नमे छे. मीने-नमीने श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने बहुशाल नामे चैत्यथी नीकले छे, नीकलीने पांचसो साधुओनी साथे बहारना देशोमां वार करे छे.

३१. ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. *वर्णन. त्यां कोष्ठक नामे चैत्य हतुं. *वर्णन यावत् वनखंड सुधी जाणवुं. काले अने ते समये चंपा नामे नगरी हती, वर्णन. पूर्णभद्र चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. हवे अन्य कोइ दिवसे जमालि अनगार पांचसो साधुओना परिवारनी साथे अनुक्रमे विहार करता, एक गामथी बीजे गाम जता ज्यां श्रावस्ती नामे नगरी छे, ज्यां कोष्ठक चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करीने संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता विहरे ल्यारबाद अन्य कोइ दिवसे श्रमण भगवान् महावीर अनुक्रमे विचरता यावत् सुखपूर्वक विहार करता ज्यां चंपानगरी छे, अने ज्यां भद्र चैत्य छे त्यां आवे छे, आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता विचरे छे.

३२. हवे अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगारने रसरहित, विरस, अन्त, प्रान्त, रुक्ष (लुखा) तुच्छ, कालातिक्रान्त, (मुख सनो काल वीती गम्भ पछी) प्रमाणातिक्रान्त (प्रमाणथी वधारे के ओछा) शीत पान-भोजनथी शरीरमां मोटो व्याधि पेदा थयो, ते थधि अत्यन्त दाह प्ररमर, विपुल, सख्त, कर्कश, कटुक, चंड, (भयंकर) दुःखरूप, कष्टसाध्य, तीव्र अने असह्य हतो, तेनुं शरीर श्रावणथी व्यास होवथी ते दाहयुक्त हतो. हवे ते जमालि अनगार वेदनाथी पीडित थयेलो पोताना श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कहुं के- 'हे देवानुप्पियो ! तमे मारे सुवा माटे संस्तारक (शय्या) पाथरो'. ल्यारबाद ते श्रमण निर्ग्रन्थो जमालि अनगारनी आ वातनो विनयपूर्वक स्वीकार करे छे, स्वीकारीने जमालि अनगारने सुवा माटे संस्तारक पाथरे छे. ज्यारे ते जमालि अनगार अत्यंत वेदनाथी व्याकुल थयो ल्यारे फरीथी श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलाव्या अने बोलावीने फरीथी तेणे आ प्रमाणे कहुं के- 'हे देवानुप्पियो ! मारे माटे

श्रावस्ती नगरी.
कोष्ठक चैत्य. चंपा-
नगरी, पूर्णभद्रचैत्य-
श्रावस्ती.
कोष्ठकचैत्य.

१ कयावि छ । २ सुखी णं व-ड । ३ अयमदुं व-ड । * एवं बुत्ते समणे समणा निग्गंथा एवं विति-भो सामी ! कीरइ' इत्यधिकः पाठः ग-घ ।

३१. * सुखी इत्यधिकः चंपानगरीनुं वर्णन. प. १-१. । सुखो उच्यते इत्यधिकः पूर्णभद्रचैत्यनुं वर्णन. प. ४-२.

તતે ણં તે સમણા નિગ્ગંથા જમાલિ અણગારં પવં ઘયાસી-ણો સ્સલુ દેઘાણુપ્પિયા ણં સેઝાસંથારપ કહે, કઝર । તપ ણં તસ્સ જમાલિસ્સ અણગારસ્સ અયમેયાકુલે અઝ્ઠત્થિપ જાવ સમુપ્પજિત્થા-જં ણં સમણે ભગવં મહાવીરે પવં આરક્કહ, જાવ પવં પરુ-વેદ-પવં સ્સલુ ચલમાણે ચલિપ, ઉદીરિઝ્ઞમાણે ઉદીરીપ, જાવ નિઝરિઝ્ઞમાણે ણિઝિઞ્ઞે, તં ણં મિષ્ઠા; ઇમં ષ ણં પબ્બક્કમેવ વીસદ સેઝાસંથારપ કઝમાણે અકહે, સંથરિઝ્ઞમાણે અસંથરિપ, જમ્હા ણં સેઝાસંથારપ કઝમાણે અકહે, સંથરિઝ્ઞમાણે અસંથરિપ તમ્હા ચલમાણે ષિ અચલિપ, જાવ નિઝરિઝ્ઞમાણે ષિ અણિઝિઞ્ઞે, પવં સંપેહેદ, સંપેહિત્તા સમણે નિગ્ગંથે સહાવેદ, સમ. ૧ સહાવિત્તા પવં ઘયાસી-જં ણં દેઘાણુપ્પિયા ! સમણે ભગવં મહાવીરે પવં આરક્કહ, જાવ પરુવેદ-પવં સ્સલુ ચલમાણે ચલિપ, તં ષેવ સઘં જાવ ણિઝરમાણે અણિઝિઞ્ઞે । તપ ણં તસ્સ જમાલિસ્સ અણગારસ્સ પવં આરક્કમાણસ્સ જાવ પરુવેમાણસ્સ અત્થે-ગર્હયા સમણા નિગ્ગંથા પયમટ્ટં સહંહંતિ, પસિયંતિ, રોયંતિ, અત્થેગર્હયા સમણા નિગ્ગંથા પયમટ્ટં નો સહંહંતિ, નો પસિયંતિ, નો રોયંતિ । તત્થ ણં જે તે સમણા નિગ્ગંથા જમાલિસ્સ અણગારસ્સ પયમટ્ટં સહંહંતિ, પસિયંતિ, રોયંતિ તે ણં જમાલિ ષેવ અણગારં ઉવસંપજિત્તા ણં વિહરંતિ; તત્થ ણં જે તે સમણા નિગ્ગંથા જમાલિસ્સ અણગારસ્સ પયં અટ્ટં ણો સહંહંતિ, ણો પસિ-યંતિ, ણો રોયંતિ તે ણં જમાલિસ્સ અણગારસ્સ અંતિયાઓ, કોટ્ટયાઓ વેદયાઓ પઙ્ગિનિક્કમંતિ, પઙ્ગિનિક્કમિત્તા પુઘાણુપુષ્ઠિ ચરમાણે ગામાણુગામં દૂરજ્ઞમાણે જેણેવ ચંપા નયરી, જેણેવ પુણ્ણમદ્દે વેદપ, જેણેવ સમણે ભગવં મહાવીરે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ; ઉવાગચ્છિત્તા સમણં ભગવં મહાવીરં તિક્કલુત્તો આયાહિણપયાહિણં કરેદ, કરિત્તા વંદ્દ નમંસદ, વંદિત્તા નમંસિત્તા સમણં ભગવં મહાવીરં ઉવસંપજિત્તા ણં વિહરંતિ ।

૩૩. તપ ણં સે જમાલી અણગારે અઘયા કેયાવિ તાઓ રોગાયંકાઓ વિપ્પમુકે, હંદ્દે જાપ, અરોપ વલિયસરીરે, સાવ-ત્થીઓ નયરીઓ કોટ્ટયાઓ વેદયાઓ પઙ્ગિનિક્કમતિ, પઙ્ગિનિક્કમિત્તા પુઘાણુપુષ્ઠિ ચરમાણે, ગામાણુગામં દૂરજ્ઞમાણે જેણેવ ચંપા નયરી, જેણેવ પુણ્ણમદ્દે વેદપ, જેણેવ સમણે ભગવં મહાવીરે તેણેવ ઉવાગચ્છંદ, તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અદુરસામંતે ઠિઠ્ઠા સમણં ભગવં મહાવીરં પવં ઘયાસી-જહા ણં દેઘાણુપ્પિયાણં ઘહેવે અંતેવાસી સમણા નિગ્ગંથા

સંસ્તારક કર્યો છે કે કરાય છે ?' ત્યાર પછી તે શ્રમણ નિર્મળ્યો જમાલિ અણગારને એમ કહ્યું કે-‘દેવાનુપ્રિયને માટે શય્યાસંસ્તારક કર્યો નથી, પણ કરાય છે’. ત્યાર પછી તે જમાલિ અણગારને આ આવા પ્રકારનો સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે-‘શ્રમણ ભગવંત મહાવીર જે એ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરૂપે છે કે, ચાલતું હોય તે ચાલતું કહેવાય, ઉદીરાતું હોય તે ઉદીરાયું કહેવાય, યાવત્ નિર્જરાતું હોય તે નિર્જરાયું કહેવાય, તે મિથ્યા છે. કારણ કે આ પ્રત્યક્ષ દેખાય છે કે, શય્યા સંસ્તારક કરાતો હોય ત્યાં સુધી તે કરાયો નથી, પથરાતો હોય ત્યાં સુધી તે પથરાયો નથી; જે કારણથી આ શય્યા-સંસ્તારક કરાતો હોય ત્યાં સુધી તે કરાયો નથી, પથરાતો હોય ત્યાં સુધી તે પથરાયેલો નથી; તે કારણથી ચાલતું હોય ત્યાં સુધી તે ચલિત નથી, પણ અચલિત છે; યાવત્ નિર્જરાતું હોય ત્યાં સુધી તે નિર્જરાયું નથી પણ અનિર્જરિત છે’ એ પ્રમાણે વિચાર કરે છે. વિચાર કરીને તે જમાલિ અણગાર શ્રમણ નિર્મળ્યોને બોલાવે છે, બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણ ભગવંત મહાવીર જે આ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરૂપે છે કે-‘લેખર એ પ્રમાણે “ચાલતું તે ચલિત કહેવાય”-इत्यादि, પૂર્વેવત્ સર્વે કહેવું, યાવત્ નિર્જરાતું હોય તે નિર્જરિત નથી, પણ અનિર્જરિત છે.’ જ્યારે જમાલિ અણગાર એ પ્રમાણે કહેતા હતા, યાવત્ પ્રરૂપણા કરતા હતા, ત્યારે કેટલાક શ્રમણ નિર્મળ્યો એ વાતને શ્રદ્ધાપૂર્વક માનતા હતા, તેની પ્રતીતિ કરતા હતા, રુચિ કરતા હતા; અને કેટલાક શ્રમણ નિર્મળ્યો એ વાત માનતા ન હોતા, તથા તેની પ્રતીતિ અને રુચિ કરતા ન હોતા. તેમાં જે શ્રમણ નિર્મળ્યો તે જમાલિ અણગારના આ મન્તવ્યની શ્રદ્ધા કરતા હતા, પ્રતીતિ કરતા હતા અને રુચિ કરતા હતા તેઓ તે જમાલિ અણગારને આશ્રયી વિહાર કરે છે. અને જે શ્રમણ નિર્મળ્યો જમાલિ અણગારના એ મન્તવ્યમાં શ્રદ્ધા કરતા ન હોતા, પ્રતીતિ કરતા ન હોતા અને રુચિ કરતા ન હોતા તેઓ જમાલિ અણગારની પાસેથી કોષ્ટક ચૈલ્ય થકી બહાર નીકળે છે, અને બહાર નીકળીને અનુક્રમે વિચરતા, એક ગામથી વીજે ગામ વિહાર કરતા જ્યાં ચંપા નગરી છે, જ્યાં પૂર્ણમદ્દ ચૈલ્ય છે, અને જ્યાં શ્રમણ ભગવંત મહાવીર છે ત્યાં આવે છે. આવીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરે છે, કરીને વાંદે છે; નમે છે, અને વાંદી-નમીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની નિશ્રાપ વિહાર કરે છે.

૩૩. ત્યાર પછી કોઈ એક દિવસે તે જમાલિ અણગાર પૂર્વોક્ત રોગના દુઃખથી વિમુક્ત થયો, દૃષ્ટ, રોગરહિત અને બલવાન્ શરીર-વાલો થયો. અને શ્રાવસ્તી નગરીથી અને કોષ્ટક ચૈલ્યથી બહાર નીકળી અનુક્રમે વિચરતા પ્રામાણુગામ વિહાર કરતા જ્યાં ચંપાનગરી છે, જ્યાં પૂર્ણમદ્દ ચૈલ્ય છે, અને જ્યાં શ્રમણ ભગવંત મહાવીર છે ત્યાં આવે છે. આવીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરની અલ્પન્ત દૂર મહિ તેમ અલ્પન્ત પાસે મહિ, તેમ ઉભા રહીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘જેમ દેવાનુપ્રિયના ઘણા શિષ્યો શ્રમણ નિર્મળ્યો છવ્વસ

छउमत्या भवेत्ता छउमत्यावक्रमणेणं अवकंता, णो कलु अहं तेहा छउमत्ये भविता छउमत्यावक्रमणेणं अवकंते; अहं णं उप्पन्नानाण-वंसणधरे अरहा जिणे केवली भविता केवलिवक्रमणेणं अवकंते ।

३४. तप णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी-नो कलु जमाली ! केवलिस्स णाणे वा वंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूमंसि वा आवरिअह वा विवारिअह वा; अदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्नानाण-वंसणधरे अरहा जिणे केवली भविता केवलिवक्रमणेणं अवकंते, तो णं इमाहं दो वागरणाहं वागरेहि-सासप लोप जमाली ! असासप लोप जमाली ! सासप जीवे जमाली ! असासप जीवे जमाली ? । तप णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं बुत्ते समाणे संकिप कंकिप जाव कलुससमावसे जाय या वि होत्या, णो संचावति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खं आइप्पिअसप, तुसिणीय संचिट्टर ।

३५. 'जमालि'सि समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी-अत्थि णं जमाली ! ममं बह्वे अंतेवासी समणा णिग्गंधा छउमत्या, जे णं पभू पर्यं वागरणं वागरिअप, जहा णं अहं, नो वेव णं पयप्पगारं भासं भासिअप, जहा णं तुमं । सासप लोप जमाली ! 'जं ण कयायि णासि, ण कयाह ण भवति, ण कयाह ण भविस्सह; भुविं च, भवह य, भवि-स्सह य; धुवे, णितिय, सासप, अक्खप, अन्नप, अवट्टिए णिच्चे । असासप लोप जमाली ! 'जं ओसप्पिणी भविता उस्सप्पिणी भवह, उस्सप्पिणी भविता ओस्सप्पिणी भवह । सासप जीवे जमाली ! जं न कयायि णासि, जाव णिच्चे । असासप जीवे जमाली ! जं णं नेरहय भविता तिरिक्खजोणिय भवह, तिरिक्खजोणिय भविता मणुस्से भवह, मणुस्से भविता देवे भवह ।

३६. तप णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स एवं आइक्खमाणस्स, जाव एवं परुवेमाणस्स पर्यं अहं नो सहहति, णो पत्तियह, णो रोएह; पयमहं असहहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे दोब्बं पि समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतियाओ आयाप अवकमह, दोब्बं पि आयाप अवकमिआ बह्वहिं असप्पावुप्पावणाहिं मिच्छताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च बुग्गाहेमाणे, बुप्पाएमाणे बह्वं वासाहं सामन्नपरियागं पाउणह, पाउणित्ता अद्धमासियाय संलेहणाए अत्ताणं

होइने छमस्य विहारथी विहरी रखा छे; पण हं तेम छमस्य विहारथी विहरतो नथी. हं तो उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शन धारण करनारो अहंनू, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरु छुं.

३४. स्वारपछी भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के-हि जमालि ! खरेखर ए प्रमाणे केवलितुं ज्ञान के दर्शन पर्वतथी संभथी के स्तूपथी आवृत थतुं नथी, तेम निवारित थतुं नथी. हे जमालि ! जो तुं उत्पन्न थयेला ज्ञान, दर्शनने धारण करनार अहंनू, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरे छे तो आ बे प्रश्नो उत्तर आप. [प्र०] हे जमालि ! १ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? हे जमालि ! २ जीव शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? ज्यारे भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने पूर्व प्रमाणे पूछ्युं त्यारे ते शंकित अने कांक्षित थयो, यावत् कलुषितपरिणामवाळो थयो. ज्यारे ते (जमालि) भगवंत गौतमना प्रश्नो कांइ पण उत्तर आपवा समर्थ न थयो त्यारे तेणे मौन धारण कर्तुं.

३५. पछी श्रमण भगवान् महावीरे 'हि जमालि !' एम कहिने ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के-हि जमालि ! मारे घणा श्रमण निर्प्रय शिष्यो छमस्य छे, तेओ मारी पेठे आ प्रश्नो उत्तर आपवा समर्थ छे. पण जेम तुं कहे छे तेम 'हुं सर्वज्ञ अने जिन छुं' एवी भाषा तेओ बोलता नथी. हे जमालि ! लोक शाश्वत छे, कारण के 'लोक कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि लोक नथी' एम नथी, अने 'कदापि लोक नहि हशे' एम पण नथी. परन्तु लोक हतो, छे अने हशे. ते ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षत, अव्यय, अवस्थित अने नित्य छे. वळी हे जमालि ! लोक अशाश्वत पण छे, कारण के अवसर्पिणी थइने उत्सर्पिणी थाय छे. उत्सर्पिणी थइने अवसर्पिणी थाय छे. हे जमालि ! जीव शाश्वत छे, कारण के ते 'कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि नथी' एम नथी अने, 'कदापि नहि हशे' एम पण नथी, जीव यावद् नित्य छे. वळी हे जमालि ! जीव अशाश्वत पण छे, कारण के नैरयिक थइने तिर्यचयोनिक थाय छे, तिर्यच-योनिक थइने मनुष्य थाय छे, अने मनुष्य थइने देव थाय छे.

३६. स्वारपछी ते जमालि अनगार आ प्रमाणे कहैता, यावत् ए प्रकारे प्ररूपणा करता श्रमण भगवान् महावीरनी आ वातनी अद्धा करतो नथी, प्रतीति करतो नथी, रुचि करतो नथी, अने आ वातनी अश्रद्धा करतो, अप्रतीति कुरतो अने अरुचि करतो पोते बीजी वार पण श्रमण भगवंत महावीर पासेथी नीकळे छे. नीकळीने घणा असद्-असस्स भावने प्रकट करवा छे अने मिथ्यात्वना अभिनिवेश बडे पोताने, परने तथा बनेने भ्रान्त करतो अने मिथ्याज्ञानवाळ करतो घणा वरस सुधी श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिकस-

भगवान् गौतमना जमालिने प्रश्नो.

लोक शाश्वत छे के अशाश्वत ? जीव शाश्वत छे के अशाश्वत ? जमालि उत्तर आपवा अस-मर्थ कयो.

भगवान् महावीर-ना उत्तरो.

लोक शाश्वत छे.

लोक अशाश्वत छे-जीव शाश्वत छे.

जीव अशाश्वत छे.

असेह, अस्सिन्ना तीसं भत्ताइं अणसणाए छेवेति, तीसं० २ छेवेत्ता तस्स ट्ठाणस्स अणालोहय-पडिक्कते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमडितीपसु देवकिच्चिसियसु देवेषु देवकिच्चिसियत्ताए उववसे ।

३७. [प्र०] तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे, से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववसे ? [उ०] गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं तदा मम एवं आइक्खमाणस्स ४ एयं अट्टं णो सदहइ ३, एयं अट्टं असइहमाणे ३ दोषं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोषं० २ अवक्कमित्ता वइहिं असब्भायुब्भायणाहिं तं चेव जाय देवकिच्चिसियत्ताए उववसे ।

३८. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! देवकिच्चिसिया पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा देवकिच्चिसिया पणत्ता, तं जहा-तिपलिओवमट्टिइया, तिसागरोवमट्टिइया, तेरससागरोवमट्टिइया ।

३९. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिपलिओवमट्टिइया देवकिच्चिसिया परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पि जोइसियाणं, हिट्ठि सोहम्मि-साणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्टिनिया देवकिच्चिसिया परिवसंति ।

४०. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिसागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पि सोहम्मि-साणाणं कप्पाणं, हिट्ठि सणकुमार-माहिंसेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया परिवसंति ।

४१. [प्र०] कहिं णं भंते ! तेरससागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया देवा परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पि बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठि लंतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्टिइया देवकिच्चिसिया देवा परिवसंति ।

लेखनावडे आत्माने-शरीरने कृश करीने अनशनवडे त्रीश भक्तोने पूरा करी ते पापस्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय मरण रामये काल करीने लान्तक देवलोकने विषे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिक देव पणे उत्पन्न थयो.

३७. पछी ते जमालि अनगारने काळगत धयेळ जाणीने भगवान् गौतम ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वादे छे, नमे छे. वादी-नर्माने ते आ प्रमाणे बोल्या के-‘हे भगवन् ! ए प्रमाणे देवानुप्रिय एवा आपनो अंतेवासी कुशिप्य जमालि नामे अनगार हतो, ते काळ समये काळ करीने क्यां गयो-क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] ‘हे गौतमादि !’ ए प्रमाणे कहीने श्रमण भगवंत महावीरे भगवान् गौतमने आ प्रमाणे कहुं के-‘हे गौतम ! मारो अंतेवासी कुशिप्य जमालि नामे अनगार हतो ते वयरे हुं ए प्रमाणे कहेता हतो, यावत् प्ररूपणा करतो हतो त्यारे ते आ बावतनी श्रद्धा करतो नहोतो, प्रतीति के रुचि करतो नहोतो. आ बावतनी श्रद्धा, प्रतीति के रुचि न करतो फरीथी मारी पासेथी नीकळीने घणा असद्भूत-गिथ्या भावोने प्रकट करवावडे-इत्यादि यावत् किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थयो छे.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिषिक देवो केटळा प्रकारना कळा छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारना किल्बिषिक देवो कळा छे. ते आ प्रमाणे-त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा अने तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो कये ठेकाणे रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्योतिष्कदेवोनी उपर अने सौधर्म अने ईशानदेवलोकनी नीचे त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म अने ईशान देवलोकनी उपर तथा सनकुमार अने माहेन्द्र देवलोकनी नीचे त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ब्रह्मलोकनी उपर अने लांतक कल्पनी नीचे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे.

किल्बिषिकदेवनी स्थिति.

किल्बिषिक देवोनी निवास.

४२. [प्र०] देवकिञ्चिसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिञ्चिसियत्ताय उववत्तारो भवन्ति ? [उ०] गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्जायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया; आयरिय-उवज्जायाणं अयसकरा, अवन्नकरा, अकिच्चकरा, बहूहि असम्भाबुम्भावणाहिं, मिच्छताभिनिवेशेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च बुग्गाहेमाणा, बुप्पापमाणा बहूहि वासाहं सामन्नपरियाणं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स द्वाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवकिञ्चिसियसु देवकिञ्चिसियत्ताय उववत्तारो भवन्ति, तं जहा-तिपलिओवमट्ठितियसु वा, तिसागरोवमट्ठितियसु वा, तेरससागरोवमट्ठितियसु वा ।

४३. [प्र०] देवकिञ्चिसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खणं, भवक्खणं, ठिईक्खणं अणंतरं चयं चरसा कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय-तिरिक्खज्जोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाहं संसारं अणुपरियट्ठित्ता तओ पक्खा सिज्जंति, बुज्जंति, जाव अंतं करंति, अन्येगइया अणादीयं अणवदग्गं दीहमज्जं चाउरंत-संसारकंतरं अणुपरियट्ठंति ।

४४. [प्र०] जमाली णं भंते ! अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे, तुच्छाहारे, अरसजीवी, विरसजीवी, जाव तुच्छजीवी, उवसंतजीवी, पसंतजीवी, विविस्तजीवी ? [उ०] हंता, गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, जाव विविस्तजीवी ।

४५. [प्र०] जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, जाव विविस्तजीवी कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतय कप्पे तेरससागरोवमट्ठितियसु देवकिञ्चिसियसु देवेषु देवकिञ्चिसियत्ताय उववन्ने ? [उ०] गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीय, उवज्जायपडिणीय, आयरिय-उवज्जायाणं अयसकारय, अवन्नकारय, जाव

४२. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिषिक देवो क्या कर्मना निमित्ते किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवो आचार्यना प्रत्यनीक (द्वेषी), उपाध्यायना प्रत्यनीक, कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने संघना प्रत्यनीक होय, तथा आचार्य अने उपाध्यायना अयश करनारा, अवर्णवाद करनारा अने अर्कीर्ति करनारा होय, तथा घणा असत्य अर्थने प्रगट करवाथी अने मिथ्या कदाप्रहथी पोताने, परने अने ब्रह्मेने भ्रान्त करता, दुर्बोध करता, घणा वरस सुधी साधुपणाने पाळे, अने पाळीने ते अकार्य स्थानतुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या सिवाय मरणसमये काल करीने कोइ पण किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ते आ प्रमाणे—त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळां, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळां, के तेर सागरोपमनी स्थितिवाळां. [उत्पन्न थाय.]

क्या कर्मनी किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! ते किल्बिषिक देवो आयुष्यनो क्षय थवाथी, भवनो क्षय थवाथी, स्थितिनो क्षय थवाथी, तरत ते देवलोकथी च्यवीने क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते किल्बिषिक देवो *नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार के पांच भवो करी, एटलो संसार भ्रमण करीने त्यारपट्टी सिद्ध थाय, बुद्ध थाय अने यावद् दुःखोनो नाश करे. अने केटलाक किल्बिषिक देवो तो अनादि, अनंत अने दीर्घमार्गवाळ चारगति संसाराटवीमां भय्या करे.

किल्बिषिक देवो मरीने क्यां उत्पन्न थाय ?

४४. [प्र०] हे भगवन् ! जुं जमालि नामे अनगार रसरहित आहार करतो, विरसाहार करतो, अंताहार करतो, प्रांताहार करतो, रूक्षाहार करतो, तुच्छाहार करतो, अरसजीवी, विरसजीवी, यावत् तुच्छजीवी, उपशांतजीवनवाळो, प्रशांतजीवनवाळो, पवित्र अने एकान्त जीवनवाळो हतो ? [उ०] हे गौतम ! हा, जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी यावद् पवित्रजीवनवाळो हतो.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जो जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी अने यावद् पवित्र जीवनवाळो हतो तो हे भगवन् ! ते जमालि अनगार मरणसमये काल करीने लांतक देवलोकमां तेर सागरोपमनी स्थितिवाळ किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिक देवपणे केम उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! ते जमालि अनगार आचार्यनो अने उपाध्यायनो प्रत्यनीक हतो, तथा आचार्य अने उपाध्यायनो अयश करनार अवर्णवाद करनार हतो यावद् ते [मिथ्या अभिमिवेश वडे पोताने, परने अने उभयने भ्रान्त करतो] दुर्बोध करतो, यावत् घणा

१ इमे आव-क-क । २ -वेवत्ताए क-क ।

४३. * अद्यपि 'किल्बिषिक मरीने क्यां उत्पन्न थाय ?' ए प्रश्ना उत्तरमां नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार पांच भवमहण करीने सोझे जाय एम कहुं छे, ते सामान्य कथन छे. अन्यथा देव अने नारक मरीने देव के नारक न थाय, परन्तु तरत तो मनुष्य के तिर्यंचमां उत्पन्न थवने पखी नारक के कथनां उत्पन्न थाय. -टीका

बुप्पापमाणे, जाव बहूरं वासां सामन्नपरियागं पाउणति, पाउणित्ता अद्धमासियाय संलेहणाय तीसं भत्तां अणसणाय छेदेति, तीसं २ छेदेत्ता तस्स द्वाणस्स अणालोइयपडिकंते कालमासे कालं किंवा लंतए कप्पे जाव उववन्ने ।

४६. [प्र०] जमाली णं भंते ! देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववञ्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! चत्तादि, पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-वेषमवग्गहणां संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्जिहिति, जाव भंतं काहिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

नवमसए तेत्तीसहमो उद्देशो समप्तो ।

वरस सुधी श्रमणपणाने पाळीने अर्धमासिक संलेखना वडे शरीरने कृश करीने त्रीश भक्तोने अनशन वडे पूरा करीने ते स्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय काळसमये काळ करीने लांतक कल्पमां यावद् उत्पन्न थयो.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! ते जमालि नामे देव देवपणाथी, देवलोकथी पोताना आयुपनो क्षय थया वाद यावत् कयां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! तिर्यचयोनिक, मनुष्य, अंन देवना चार पांच भवो करी-एट्ठो संसार भमी-त्यार पछी ते सिद्ध थशे, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करशे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवंत गौतम यावत् विहरे छे.]

नवम शते तेत्तीशमो उद्देशक समाप्त.

चौत्तीसइमो उद्देशो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समयणं रायगिहे जाव एवं वयासी-पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ, नोपुरिसं हणइ ? [उ०] गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-पुरिसं पि हणइ, जाव नोपुरिसे वि हणइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ-एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिसं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-पुरिसं पि हणइ, जाव नोपुरिसे वि हणइ ।

२. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! आसं हणमाणे किं आसं हणइ, नोआसे वि हणइ ? [उ०] गोयमा ! आसं पि हणइ, नोआसे वि हणइ । [प्र०] से केणट्टेणं ? [उ०] अट्टो तहेव, एवं इत्थि, सीहं, वग्घं जाव खिंसल्लगं । *एए सव्वे इक्कमा ।

३. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! अन्नयरं तैसं पाणं हणमाणे किं अन्नयरं तैसं पाणं हणइ, नोअन्नतरे तसे पाणे हणइ ? [उ०] गोयमा ! अन्नयरं पि तसं पाणं हणइ, नोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ-अन्नयरं पि तसं पाणं, नोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ-एवं खलु अहं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्टेणं गोयमा ! तं चेष । एए सव्वे वि एक्कमा ।

चौत्रीशमो उद्देशक.

१. [प्र०] ते काले-ते समये राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावत् ए प्रमाणे पुच्छुं के-हे भगवन् ! कोइ पुरुष पुरुषनो घात करतो शुं पुरुषनो ज घात करे के नोपुरुषनो घात करे ? [उ०] हे गौतम ! पुरुषनो पण घात करे अने नोपुरुषनो (पुरुष शिवाय बीजा जीवोनो) पण घात करे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के-पुरुषनो घात करे अने यावत् नोपुरुषनो पण घात करे ! [उ०] हे गौतम ! ते घात करमारना मनमां तो एम छे के 'हुं एक पुरुषने हणुं छुं', पण ते एक पुरुषने हणतो बीजा अनेक जीवोने हणे छे; माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं छे के ते पुरुषने पण हणे अने यावत् नोपुरुषोने पण हणे.

पुरुषने हणतो
पुरुषने हणे के नो-
पुरुषने हणे ?
पुरुष अने नोपु-
रुषनो घात करे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! अशने हणतो कोइ पुरुष शुं अशने हणे के नोअशने (अश सिवाय बीजा जीवोने) पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते अशने पण हणे अने नोअशने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! उच्चर पूर्ववत् जाणवो. ए प्रमाणे हस्ती, सिंह, बाघ तथा यावत् चिल्लुक संबन्धे पण जाणवुं. ए बधानो एक सरखो पाठ जाणवो.

अशने हणतो
अशने के नोअ-
शने हणे ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुष कोइ एक त्रस जीवने हणतो शुं ते त्रस जीवने हणे के ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते कोइ एक त्रस जीवने पण हणे, अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के 'ते कोइ एक त्रस जीवने हणे अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे' ? [उ०] हे गौतम ! ते हणनारना मनमां ए प्रमाणे होय छे के 'हुं कोइ एक त्रस जीवने हणुं छुं', पण ते कोइ एक त्रस जीवने हणतो ते शिवाय बीजा अनेक त्रस जीवोने हणे छे. माटे हे गौतम ! इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं. ए बधाना एक सरखा पाठ कहैवा.

असुक्क त्रसने हणतो
तेने हणे के बीजा-
त्रसोने पण हणे ?

४. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! इस्सि हणमाणे किं इस्सि हणइ, नोइस्सि हणइ ? [उ०] गोयमा ! इस्सि पि हणइ नोइस्सि पि हणइ । [प्र०] से कणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ-जाव नोइस्सि पि हणइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ-एवं बलु म्भं एणं इस्सि हणामि, से णं एणं इस्सि हणमाणे अणंते जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं निक्खेयो ।

५. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे, नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! निर्यमं ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेण य पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे, एवं भासं, एवं जाव चिंसलंगं, जाव अहवा चिंसलावेरेण य णोचिंसलावेरेहि य पुट्ठे ।

६. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! इस्सि हणमाणे किं इस्सिवेरेणं पुट्ठे, नोइस्सिवेरेणं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! निर्यमं ताव इस्सिवेरेण य नोइस्सिवेरेहि य पुट्ठे ।

७. [प्र०] पुंढविकाइए णं भंते ! पुंढविकाइयं चेव भाणमइ वा, पाणमति वा, उस्ससति वा, नीससइ वा ? [उ०] इंता, गोयमा ! पुंढविकाइए पुंढविकाइअं चेव भाणमति वा, जाव 'नीससति वा ।

८. [प्र०] पुंढविकाइए णं भंते ! आउकाइयं भाणमं(म)ति, जाव नीससं(स)ति वा ? [उ०] इंता, गोयमा ! पुंढविकाइए चेव आउकाइयं भाणमं(म)ति, जाव नीससं(स)ति वा; एवं तेउकाइयं, वाउकाइयं, एवं वणस्सइकाइयं ।

९. [प्र०] आउकाइए णं भंते ! पुंढविकाइयं भाणमति वा, पाणमति वा ? [उ०] एवं चेव ।

ऋषिने हणतो
ऋषिने हणे के ते
शिवाय बीजाने
हणे ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! ऋषिने हणतो कोई पुरुष शुं ऋषिने हणे के ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ऋषिने हणे अने ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छे के यावद् ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते हणनारना मनमां एम होय छे के 'हुं एक ऋषिने हणुं छुं.', पण ते एक ऋषिने हणतो *अनंत जीवोने हणे छे. ते हेतुथी एम कहेवाय छे—इत्यादि उपसंहार जाणवो.

पुरुषने हणनार
पुरुषना वैरथी
बन्धाय के नो-
पुरुषना वैरथी
बन्धाय ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! कोई पुरुष बीजा पुरुषने हणतो शुं पुरुषना वैरथी बन्धाय के नोपुरुषना (पुरुष शिवाय बीजा जीवोना) वैरथी बन्धाय ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य पुरुषना वैरथी बन्धाय, १ अथवा †पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरथी बन्धाय, २ अथवा पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरोथी बन्धाय. ए प्रमाणे अश्वसंबन्धे अने यावत् चिह्ललक संबन्धे पण जाणवुं. यावत् अथवा चिह्ललकना वैरथी अने नोचिह्ललकना वैरोथी बन्धाय.

ऋषिना वैरथी के
नोऋषिना वैरोथी
बन्धाय ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! ऋषिनो वध करनार पुरुष शुं ऋषिना वैरथी बन्धाय के नोऋषिना वैरथी बन्धाय ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य †ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी बन्धाय.

पृथिवीकायिक
पृथिवीकायिकने
आसोच्छ्वासरूपे
ग्रहण करे अने मूके ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हे गौतम ! हा, पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके.

पृथिवीकायिक
अपकायिकने
ग्रहण करे अने
मूके ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अपकायिकने आणप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हा, गौतम ! पृथिवीकायिक अपकायिकने आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे, यावत् मूके. ए प्रमाणे अग्निकाय, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिकसंबन्धे प्रश्नो करवा.

अपकायिक पृथि-
वीकायिकने ग्रह-
ण करे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! अपकायिक जीव पृथिवीकायिकने आणप्राणरूपे—आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] ए रीते पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

१ अणंता जीवा क-ग-ऊ । २ नियमा व, नियमेणं ऊ । ३ चिह्ललंगं ग-घ-ऊ । ४-५ चिह्ललगवे- ग-घ-ऊ । ६ नियमा व । ७ -काइया ग-घ-ऊ । ८ -कायं घ । ९ -मंति पाणमंति वा उस्ससंति नीससंति वा ग-घ-ऊ । १०-मंति वा ग-घ-ऊ । ११-संति वा क-ग-घ-ऊ ।

४. * "ऋषिनो वध करनार कोई पुरुष ऋषिने हणे अने ते शिवाय बीजा जीवोने पण हणे" ते संबन्धे टीकाकार आ प्रमाणे खुलासो करे छे— "ऋषिनो हणनार पुरुष ऋषिनो घात करता ते शिवाय बीजा अनन्त जीवोने घात करे, कारण के ऋषि जीवतो होय तो अनेक प्राणिओने प्रतिबोध करे, अने तेओ प्रतिबोध पामीने अजुकमे मोझे जाय, मुफ जीवो तो अनन्त जीवोना अहिंसक छे, अने ते अनन्त जीवोनी अहिंसामां ऋषि कारण छे माटे ऋषिनो वध करनार तेनी अने बीजा अनन्त जीवोनी हिंसा करे छे."—टीका.

५. † पुरुषने हणनार पुरुषे पुरुषनो घात करेओ होवाथी तेना पापथी ते अवश्य बन्धाय, पण ज्यारे ते तेम करता बीजा कोई एक प्राणीनी हिंसा करे त्यारे ते नोपुरुषवैरथी पण बन्धाय, अने अनेक प्राणिओनी हिंसा करे तो नोपुरुषवैरोथी बन्धाय.

६. ‡ ऋषिनो घात करनार पुरुष ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी बन्धाय. आ पक्षमां आ एकत्र मंग जाणवो.

१०. [प्र०] भाउकाइय णं मंते ! भाउकाइयं चेव भाणमति वा ? [उ०] एवं चेव, एवं तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयं ।

११. [प्र०] तेउकाइय णं मंते ! पुडविकाइयं भाणमति वा ? [उ०] एवं, जाव वणस्सइकाइय णं मंते ! वणस्सइकाइयं चेव भाणमति वा ? [उ०] तहेव ।

१२. [प्र०] पुडविकाइय णं मंते ! पुडविकाइयं चेव भाणममाणे वा, पाणममाणे वा, ऊससमाणे वा, णीससमाणे वा कइकिरिय ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिय, सिय चउकिरिय, सिय पंचकिरिय ।

१३. [प्र०] पुडविकाइय णं मंते ! भाउकाइयं भाणममाणे वा ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइयं, एवं भाउकाइयण वि सहे वि भाणियहा, एवं तेउकाइयण वि, एवं वाउकाइयण वि । जाव [प्र०] वणस्सइकाइय णं मंते ! वणस्सइकाइयं चेव भाणममाणे वा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिय, सिय चउकिरिय, सिय पंचकिरिय ।

१४. [प्र०] वाउकाइय णं मंते ! क्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिय ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिय, सिय चउकिरिय, सिय पंचकिरिय, एवं कंदं, एवं जाव [प्र०] बीयं पचालेमाणे वा पुच्छा ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिय, सिय चउकिरिय, सिय पंचकिरिय । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

नवमसए चोत्तीसइमो उद्देशो समाप्तो ।

नवमं सयं समत्तं ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अष्कायिक जीव अष्कायिकने आनप्राणरूपे-आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] पूर्वं प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे तेजःकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय संबन्धे पण जाणवुं.

अष्कायिक अष्कायिकने ग्रहण करे अने मूके ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! अग्निकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे-आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? ए प्रमाणे यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे-आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणवुं.

तेजःकायिक अग्नि-
कीकायिकने ग्र-
हण करे अने मूके ।

१२. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे-आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कदाच* त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय.

पृथिवीकायिक-
दिकने क्रियावा-
ळो.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अष्कायिकने आनप्राणरूपे-आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो [केटली क्रियावाळो होय ?] [उ०] इत्यादि पूर्वं प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक संबन्धे पण जाणवुं. तथा ए प्रमाणे अष्कायिकनी साथे सर्व पृथिवीकायादिकनो संबन्ध कहेवो. तेज प्रकारे तेजःकायिक अने वायुकायिकनी साथे सर्वनो संबन्ध कहेवो. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे-आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो [अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ?] [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! वायुकायिक जीव वृक्षना मूळने कंपावतो के पाडतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो होय, कदाच चारक्रियावाळो होय अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत् कंद संबन्धे जाणवुं, ए प्रमाणे यावत् [प्र०] बीजने कंपावतो-इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

वायुकायिकने
क्रिया-

नवमशते चोत्तीसइमो उद्देशक समाप्त.

नवम शतक समाप्त.

१२. * पृथिवीकायिकादि जीव पृथिवीकायिकादिकने आसोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो. अ्यारे तेने पीडा उत्पन्न न करे अ्यारे तेने कायिकी इत्यादि त्रण क्रिया होय, अ्यारे पीडा करे अ्यारे पारितापनिकी सहित चार क्रिया, अने चात करे अ्यारे प्राणतिपातिकीयुक्त पांच क्रिया होय.—टीकाकार.

१४. † वृक्षना मूळने कंपावतुं के पाडतुं ते मधीमा कांठा उपरं रहेला वृक्षना मूळ पृथ्वीची वंकावेली न होय अ्यारे संबन्ध छे.—टीकाकार.

दसमं सयं

१. १ 'दिसि २ संबुडअणगारे ३ आयङ्गी ४ सामहत्थि ५ देवि ६ सभा ।
७-२८ उत्तरअंतरदीवा दसमग्मि सयंमि चउसीसा ॥

२. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-किमियं भंते ! 'पँडिणा'ति पबुच्चइ ? [उ०] गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव ।

३. [प्र०] किमियं भंते ! 'पँडिणा'ति पबुच्चइ ? [उ०] गोयमा ! एवं चेव; एवं दाहिणा, एवं उद्दीणा, एवं उद्दा, एवं अहो वि ।

४. [प्र०] कति णं भंते ! दिसाओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! दस दिसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ पुरत्थिमा, २ पुरत्थिमदाहिणा, ३ दाहिणा, ४ दाहिणपच्चत्थिमा, ५ पच्चत्थिमा, ६ पच्चत्थिमुत्तरा, ७ उत्तरा, ८ उत्तरपुरत्थिमा, ९ उद्दा, १० अहो ।

दशम शतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ दिशा, २ संबृत अनगार, ३ आत्मऋद्धि, ४ श्यामहस्ती, ५ देवी, ६ सभा अने ७-३४ उत्तर दिशाना अन्तरद्वीपो-ए सबन्धे दशमां शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. [१ दिशा संबन्धे प्रथम उद्देशक, २ संबृत (संवरयुक्त) अनगारादि विषे बीजो उद्देशक, ३ आत्म ऋद्धि-पोतानी शक्ति-थी देवो देवावासोने उल्लंघन करे'-इत्यादि संबन्धे त्रीजो उद्देशक, ४ श्यामहस्ति नामे श्रीमहावीरना शिष्यना प्रश्न संबन्धे चोथो उद्देशक, ५ देवी-चमरादि इन्द्रनी अग्रमहिषी-संबन्धे पांचमो उद्देशक, ६ सभा-सुधर्मा सभा-संबन्धे छट्टो उद्देशक अने ७-३४ उत्तर दिशाना अठ्यावीश अन्तरद्वीपो संबन्धी सातथी चोत्रीश उद्देशको छे.]

प्रथम उद्देशक.

पूर्वादि दिसाओ.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् आ प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! आ पूर्वदिशा ए झुं कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ते *जीवरूप अने अजीवरूप कहेवाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! आ पश्चिम दिशा ए झुं कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्वदिशा, अने अधोदिशा संबन्धे पण जाणवुं.

दिशाभोगा प्रहार.

४. [प्र०] हे भगवन् ! केटली दिशाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दश दिशाओ कही छे; ते आ प्रमाणे-१ पूर्व, २ पूर्वदक्षिण (अग्नि कोण), ३ दक्षिण, ४ दक्षिणपश्चिम (नैऋत कोण), ५ पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण), ७ उत्तर, ८ उत्तरपूर्व (ईशान कोण), ९ ऊर्ध्व अने १० अधो दिशा.

१ दिस सं-ग. २ चोप्रीका क. ३ पाईणाति ग. ४ परीणाति ग. ५ दाहिणाव-ग.

२. * प्राची एटछे पूर्व दिशा जीवरूप छे, केमके त्यां एकेन्द्रियादिक जीवो रहेला छे, अने पुद्गलास्त्रिकाव वगेरे अजीव पदार्थ रहेला छे सोडे अजीवरूप पण छे.-टीका.

५. [प्र०] क्वाचि जं भंते ! द्वाचं दिसार्थं कति नात्रवेजा पञ्चता ! [उ०] गोयमा ! द्वाच नात्रवेजा पञ्चता, तं जहा—१ ईदा २ अग्नेवी ३ जमा य नेरई बाहणी य वायवा । सोमा ईसाणी य विमला य तमा य बोदवा ।

६. [प्र०] ईदा जं भंते ! दिसा किं १ जीवा, २ जीवदेसा, ३ जीवपपसा, ४ अजीवा, ५ अजीवदेसा, ६ अजीवप-
देसा ! [उ०] गोयमा ! जीवा वि, तं जेव जाव अजीवपपसा वि । जे जीवा ते णियमा षंगिदिया, बेइदिया, जाव पंखिदिया,
अग्निदिया । जे अजीवदेसा ते जियमा षंगिदियदेसा, जाव अग्निदियदेसा । जे जीवपपसा ते षंगिदियपपसा बेइदियपपसा,
जाव अग्निदियपपसा । जे अजीवा ते बुचिहा पञ्चता, तं जहा—रुचिअजीवा य अरुचिअजीवा य । जे रुचिअजीवा ते उउचिहा
पञ्चता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपपसा, परमाणुपेम्माळा । जे अरुचिअजीवा ते खउचिहा पञ्चता, तं जहा—१ नोधम्म-
त्थिकाय धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पपसा, ३ नोअधम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकायस्स देसे, ४ अधम्मत्थि-
कायस्स पपसा, ५ नोआगासत्थिकाय आगासत्थिकायस्स देसे, ६ आगासत्थिकायस्स पपसा, ७ अद्दासमप ।

७. [प्र०] अग्नेवी जं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपपसा—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! १ जोजीवा जीवदेसा
वि, २ जीवपपसा वि, १ अजीवा वि, २ अजीवदेसा वि, ३ अजीवपपसा वि । जे जीवदेसा ते नियमा षंगिदियदेसा ।
१ अहवा षंगिदियदेसा य बेइदियस्स देसे, २ अहवा षंगिदियदेसा य बेइदियस्स देसा य, ३ अहवा षंगिदियदेसा य
बेइदियाण य देसा । १ अहवा षंगिदियदेसा य तेइदियस्स देसे अ । एवं जेव तियभंगो भाणियहो । एवं जाव अग्निदियाजं
तियभंगो । जे जीवपपसा ते नियमा षंगिदियपपसा । अहवा षंगिदियपपसा य बेइदियस्स पपसा, अहवा षंगिदियपपसा य

५. [प्र०] हे भगवन् ! ए दश दिशाओना केटलां नाम कहां छे ? [उ०] हे गौतम ! दश नाम कहां छे. ते आ प्रमाणे—१ ऐन्द्री
(पूर्व), २ आग्नेयी (अग्नि कोण), ३ याम्या (दक्षिण), ४ नैर्ऋती (नैर्ऋतकोण), ५ वारुणी (पश्चिम), ६ वायव्या, ७ सोम्या
(उत्तर), ८ ऐशानी (ईशान कोण), ९ विमला (उर्ध्व दिशा), अने १० तमा (अधो दिशा). ए दिशाना नामो अनुक्रमे जाणवां.

दिशाओना दश
नाम-

६. [प्र०] हे भगवन् ! ऐन्द्री (पूर्व) दिशा सुं १ जीवरूप छे, २ जीवना देशरूप छे के जीवना प्रदेशरूप छे ? अथवा १ अजीव
रूप छे, २ अजीवना देशरूप छे के ३ अजीवना प्रदेशरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे यावत्
अजीवप्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, यावत् पंचेन्द्रिय, तथा अनिन्द्रिय (सिद्धो) छे. जे जीवना
देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, यावत् अनिन्द्रिय—मुक्तजीवना देशो छे. जे जीवप्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे,
बेइन्द्रियजीवना प्रदेशो छे, यावत् अनिन्द्रिय (मुक्त) जीवना प्रदेशो छे. वळी जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—एक
रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—१ स्कंध, २ स्कंध देश, ३ स्कंधप्र-
देश अने ४ परमाणु पुद्गल. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—१ नोधर्मास्तिकायरूप धर्मास्तिकायनो
देश, २ धर्मास्तिकायन प्रदेशो, ३ नोअधर्मास्तिकायरूप अधर्मास्तिकायनो देश, ४ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नो आकाशास्तिकायरूप
आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, अने ७ अद्दासमय (का-).

ऐन्द्री दिशा
जीवरूप छे
इत्यादि-

७. [प्र०] हे भगवन् ! आग्नेयी दिशा (अग्निकोण) सुं १ जीवरूप छे, २ जीवदेशरूप छे के ३ जीवप्रदेशरूप छे—इत्यादि
प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ जोजीवरूप जीवना देश अने २ जीवना प्रदेशरूप छे, ३ अजीवरूप छे, ४ अजीवना देशरूप छे
अने ५ अजीवना प्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने
बेइन्द्रियजीवनो देश छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियना देशो छे; ३ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो छे.
१ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने त्रीन्द्रियनो देश छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे अहिं ऋण विकल्पो जाणवा. ए प्रमाणे यावत् अनिन्द्रिय सुची ऋण
विकल्पो—भांगा कहेवा. तेमां जे जीवना प्रदेशो छे. ते अवश्य एकेन्द्रियोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियना प्रदेशो
छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे सर्वत्र प्रथम भांगा सिवाय बे भांगा जाणवा, ए प्रमाणे यावत्

आग्नेयी दिशा-

१ द्वाचं य । २ बोदवा य । ३—ग्निदियस्स देसा क । ४—देसा, य । ५—ग्निदियस्स दे-य ।

५. * इन्द्र तेनो खामी छे, चाटे ते ऐन्द्री दिशा कहेवाय छे. ए प्रमाणे अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, सोम अने ईशान देशो खामी होवापी आग्नेयी
अग्नेरे तेना गुणनिपात नामो छे. प्रकाशगुण होवापी उर्ध्व दिशाने विमला अने अधकारगुण होवापी अधो दिशाने तमा कहेवाय छे.—टीका.

६. † प्राचीनिका अर्थात् धर्मास्तिकायनक नदी, परन्तु तेना जेव अने अधस्तित प्रदेशकर छे, चाटे ते नोअधर्मास्तिकायनक छे. ए प्रमाणे ते नोअधर्मा-
स्तिकायनक छे.—इत्यादि पण क.पुं.

७. ‡ आग्नेयी दिशा जीवरूप नवी, कारणके दरेक विदिशाओनो आस एक प्रदेशरूप छे, अने एक प्रदेशमां जीवनो सवावेव यतो नवी, केसके
तेनी अद्यगाहना अवस्थप्रदेशरूप छे.—टीकाकार.

वेदंदिषाण य पयसा । एवं आहृद्विरद्विभो जाव अणिंदिषाणं । जे अजीवा ते रुविहा पयसा, तं जहा—रुविअजीवा य अरुविअजीवा य । जे रुविअजीवा ते अउद्विहा पयसा, तं जहा—अंधा, जाव परमाणुपोग्गला । जे अरुविअजीवा ते ससविहा पयसा, तं जहा—१ नोधम्मत्थिकाय धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पयसा, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, जाव ६ आगासत्थिकायस्स पयसा, ७ अद्दासमय । विदिशासु नत्थि जीवा, देसे भंगो य होइ सत्तथ ।

८. [प्र०] जमा णं भंते ! दिसा किं जीवा ? [उ०] जहा इवा तदेव निरवसेसा । नेरई य जहा अग्गेयी । वारुणी जहा इंदा । वायसा जहा अग्गेयी । सोमा जहा इंदा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाय जीवा जहा अग्गेयीय । अजीवा जहा इंदा । एवं तमाय वि, नवरं अरुवी छविहा, अद्दासमयो न भवति ।

९. [प्र०] कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—१ ओरालिय, जाव ५ कम्मय ।

१०. [प्र०] ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] एवं ओगाहणासंठाणं निरसेसं भाणियं, जाव, 'अप्या-बहुगं'ति । सेवं भंते !, सेवं भंते ! ति ।

दसमसए पढमो उद्देशो समत्तो ।

अभिविद्य सुधी जाणवुं. हवे जे अजीवो छे ते ते प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—रूपिअजीव अने बीजा अरूपिअजीव. जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—१ स्कंधो, यावत् ४ परमाणुपुद्गलो. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—१ नोधर्मास्तिकायरूप धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायना प्रदेशो; ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं; यावत् आकाशास्तिकायना प्रदेशो अने अद्दासमय. विदिशाओमां जीवो नथी, माटे सर्वत्र देशविषयक भांगो जाणवो.

आग्नेय दिशा.

८. [प्र०] हे भगवन् ! याम्या (दक्षिण) दिशा शुं जीवरूप छे—इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे कहुं (सू. ६) तेम सर्व अहीं जाणवुं. जेम आग्नेयी दिशा संबन्धे कहुं (सू. ७) ते प्रमाणे नैर्ऋती दिशा माटे जाणवुं. जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे कहुं तेम वारुणी (पश्चिम) दिशा माटे जाणवुं. वायव्यदिशाने आग्नेयीनी पेठे जाणवुं. ऐन्द्रीनी पेठे सोम्या अने आग्नेयीनी पेठे ऐशानी दिशा जाणवी. तथा विमला—ऊर्ध्वदिशा—मां जेम आग्नेयीमां जीवो कइया तेम जीवो अने ऐन्द्रीमां अजीवो कइया तेम अजीवो जाणवा. ए प्रमाणे तमा—अधोदिशा—ने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, *तमा दिशामां अरूपिअजीवो छ प्रकारना छे, कारण के स्यां अद्दासमय (काल) नथी.

शरीरा प्रकार.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शरीरो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! शरीरो पांच प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे—१ औदारिक, [२ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस] यावत् ५ कार्मण.

औदारिक शरीर का प्रकार.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक शरीर केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! अहिं सर्व 'अवगाहनासंस्थान' पद अल्प-बहुत्व सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, ए भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही यावत् भगवान् गौतमं विहरे छे]

दशमशते प्रथम उद्देशक समाप्त.

१—संज्ञापदे नि-य ।

८. * समयनो व्यवहार गतिमान् सूर्यना प्रकाश उपर अवलंबित छे, ते (गतिमान् सूर्यनो प्रकाश) तमाने विषे नथी माटे स्यां अद्दासमय (काल) नथी. यद्यपि विमलाने विषे पण गतिमान् सूर्यनो प्रकाश नहि होवाथी समयना व्यवहारनो संभव नथी, तो पण मेरुपर्वतना स्फटिककांडने विषे गतिमान् सूर्यना प्रकाशनो संक्रम भाय छे, तेथी स्यां समयव्यवहार होइ शके छे.—टीकाकार.

१०. † प्रश्ना० पद. २१. प. ४०७. २-४३३. २.

बीओ उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-संबुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीथीपंथे ठिष्ठा पुरओ रुवाहं निज्जायमाणस्स, मग्गओ रुवाहं अवयक्खमाणस्स, पासओ रुवाहं अवलोपमाणस्स, उहं रुवाहं आलोपमाणस्स, अहे रुवाणि आलोपमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! संबुडस्स णं अणगारस्स वीथीपंथे ठिष्ठा जाव तस्स णं णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुब्बइ-जाव संपराइया किरिया कज्जति ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा० एवं जहा सत्तमसए पढमो-हेसए जाव से णं उस्सुत्तमेव रीयति से तेणट्टेणं जाव से संपराइया किरिया कज्जइ ।

२. [प्र०] संबुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीथीपंथे ठिष्ठा पुरओ रुवाहं निज्जायमाणस्स जाव तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? पुब्बा [उ०] गोयमा ! संबुड० जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुब्बइ ? [उ०] जहा सत्तमे सए सत्तमोहेसए, जाव से णं अह्मासुत्तमेव रीयति से तेणट्टेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ।

३. [प्र०] कहविहा णं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा जोणी पणत्ता, तं जहा-सीया, उस्सिणा, सीतोस्सिणा; एवं जोणीपयं निरसेसं माणिवहं ।

द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! वीचिमार्गमां-कषायभावमां-रहीने आगळ रहेलां रूपोने जोता, पाळळना रूपोने देखता, पडखेना रूपोने अवलोकता, ऊंचेना रूपोने आलोकता अने नीचेना रूपोने अवलोकता संवृत (संवरयुक्त) अनगारने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! वीचिमार्गमां (कषायभावमां) रहीने यावत् रूपोने जोता संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के संवृत अनगारने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया होय तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे-इत्यादि "सप्तम शतकना प्रथम उद्देशकमां कक्षा प्रमाणे यावत् 'ते संवृत अनगार सूत्र विरुद्ध वर्ते छे' त्यांसुची कहेवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! अवीचिमार्गमां-अकषायभावमां-रहीने आगळना रूपोने जोता, यावत् अवलोकता संवृत अनगारने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! यावत् अकषायभावमां रहीने आगळ रूपोने जोता यावत् ते संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, पण सांपरायिकी क्रिया न लागे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे पण सांपरायिकी क्रिया न लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे-इत्यादि जेम सप्तम शतकना प्रथम उद्देशकमां (उ० १. सू० १८.) कथुं छे तेम अही पण यावत् 'ते अनगार सूत्रानुसारे वर्ते छे' त्यांसुची कहेवुं, हे गौतम ! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागती नथी.

३. [प्र०] हे भगवन् ! योनि केटळ प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! योनि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे- शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अही समग्र योनिपद कहेवुं.

कषायभावमां रहेल संवृत साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया लागे !

अकषायभावमां रहेल साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया !

ऐर्यापथिकी कषय-वा सांपरायिकी क्रियानो हेतु.

योनि.

१. * अग. ख. १. ख. ७ उ. १ इ. ५ सू. १८.

३. † प्रज्ञा. पद ९ प. २२४. २-२२७.

४. [प्र०] करविहा णं मंते ! वेयणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उस्सिणा, स्सीओस्सिणा । एवं वेयणापयं निरखसेसं भाणियच्चं, जाव [प्र०] 'नेरइया णं मंते ! किं दुषकं वेयणं वेदंति, सुहं वेयणं वेदंति, अदुषकमसुहं वेयणं वेदंति ? [उ०] गोयमा ! दुषकं पि वेयणं वेदंति, सुहं पि वेयणं वेदंति, अदुषकमसुहं पि वेयणं वेदंति' ।

५. मासियं णं मंते ! भिक्खुपडिमं पडिच्चस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठे काए, चियत्ते देहे—एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरखसेसा भाणियत्ता, जहा दसाहिं, जाव 'आराहिया भवइ' ।

६. भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता से णं तस्स टाणस्स अणालोइय—पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स टाणस्स आलोइय—पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—'पच्छा वि णं अहं च्छेरिमकालसमयंसि एयस्स टाणस्स आलोएस्सामि, जाव पडिक्कमिस्सामि, से णं तस्स टाणस्स अणालोइय—पडिक्कंते जाव नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स टाणस्स आलोइय—पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—'जइ ताव समणोघासगा वि काल-मासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उव्वत्तारो भवंति, किमंग ! पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणंपि नो लमिस्सामि'त्ति कट्ठु से णं तस्स टाणस्स अणालोइय—पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा; से णं तस्स टाणस्स आलोइय—पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा । सेवं मंते !, सेवं मंते ! त्ति ।

दसमसए बीओ उद्देशो समत्तो ।

वेदाना प्रकार-
नैरयिकोने वेदना.

४. [प्र०] हे भगवन् ! वेदना केट्ठया प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गीतम ! वेदना त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे— शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अहीं संपूर्ण वेदानापद कहेवुं. यावत्—[प्र०] 'हे भगवन् ! नैरयिको शुं दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे के सुख—दुःख शिवाय वेदना वेदे छे ? [उ०] हे गीतम ! नैरयिको दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे अने सुखदुःख शिवाय पण वेदना वेदे छे.

भिक्षु प्रतिमा-
आराधना.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे अनगारे मासिक भिक्षु प्रतिमाने स्वीकारेली छे, अने हंमेशां शरीरना ममत्वनो त्याग कर्यो छे—देहनो त्याग कर्यो छे—इत्यादि मासिक भिक्षु प्रतिमानो संपूर्ण विचार अहिं दशाश्रुत रक्कधमां बताव्या प्रमाणे यावत् [बारमी प्रतिमा] 'आराधी होय छे' त्यांसुधी जाणवो.

६. जो ते भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थानने सेवीने अने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन तथा प्रतिक्रमण कर्या विना काल करे तो तेने आराधना थती नथी, परन्तु जो ते ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करीने काल करे तो तेने आराधना थाय छे. वळी कदाच कोइ भिक्षुए अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्तुं होय, पछी तेना मनमां एम विचार थाय के 'हुं मारा अंतकालना समये ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन करीश, यावत् तपरूप प्रार्थश्चित्तनो स्वीकार करीश,' ल्यार पछी ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना मरण पामे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करी काल करे तो तेने आराधना थाय छे. वळी कोइ भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करी पछी मनमां एम विचारे के, 'जो श्रमणोपासको पण मरणसमये काल करीने कोइ एक देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे, तो शुं हुं अणपन्निकदेवपणुं पण नहि पामुं,' एम विचारीने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना जो काल करे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते अकृत्यस्थानने आलोची तथा प्रतिक्रमी पछी काल करे तो तेने आराधना थाय छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही भगवान् गीतम यावद् विहरे छे.]

दशमशतै द्वितीय उद्देशक समाप्त.

१ जाव व-घ, जहा दसा जा-ऊ । २ चरम-घ । ३ पडिक्कमिस्सामि घ । ४ अन्नपडिय-ग-घ ।

४. * प्रज्ञा० पद ३५ प ५५३. २—५५७.

ततीओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-आइहीय णं भंते ! देवे जाव चत्तारि, पंच देवावासंतरारं वीतिंते, तेण परं परिहीय ? [उ०] हंता, गोयमा ! आयहीय णं तं चेष, एवं असुरकुमारे वि । नवरं असुरकुमारावासंतरारं, सेसं तं चेष । एवं पयणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एवं बाणमंतरे, ओइस-वेमाणिय, जाव तेण परं परिहीय ।
२. [प्र०] अण्यहीय णं भंते ! देवे से महहिियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवपज्जा ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे ।
३. [प्र०] समिहीय णं भंते ! देवे समहीयस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवपज्जा ? [उ०] णो इणट्टे समट्टे, पमसं पुण वीइवपज्जा ।
४. [प्र०] से णं भंते ! किं विमोहिता पभू, अविमोहिता पभू ? [उ०] गोयमा ! विमोहिता पभू, नो अविमोहेता पभू ।
५. [प्र०] से भंते ! किं पुं विमोहिता पच्छा वीइवपज्जा, पुं वितीवइता पच्छा विमोहेज्जा ? [उ०] गोयमा ! पुं विमोहिता पच्छा वीइवपज्जा, णो पुं वितीवइता पच्छा विमोहेज्जा ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावत् आ प्रमाणे बोल्या के-हे भगवन् ! छुं देव पोतानी शक्तिवडे यावत् चार पांच देवावासोने उल्लंघन करे, अने ल्यारपछी बीजानी शक्तिवडे उल्लंघन करे ? [उ०] हा, गौतम ! पोतानी शक्तिवडे चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे असुरकुमार संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु ते आत्मशक्तियी असुरकुमारोना आवासोनुं उल्लंघन करे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए रीते आ अनुक्रमथी यावत् स्तनितकुमार, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक सुधी जाणवुं. 'तेओ यावत् चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे अने ल्यारपछी आगळ परनी शक्तियी उल्लंघन करे' स्यासुधी जाणवुं.
२. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो देव महर्दिक-महा शक्तिवाळ्या देवनी वच्चे यइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [अर्थात् ते वचोवच यइने न जाय.]
३. [प्र०] हे भगवन् ! समर्दिक-समानशक्तिवाळो-देव समानशक्तिवाळ्या देवनी वच्चे यइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. पण जो ते प्रमत्त (असावधान) होय तो तेनी वच्चे यइने जाय.
४. [प्र०] हे भगवन् ! छुं ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, के विमोह पमाड्या सिवाय जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, पण विमोह पमाड्या सिवाय न जइ शके.
५. [प्र०] हे भगवन् ! छुं ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय के पहेलां जइने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय, पण पहेलां जइने पछी विमोह न पमाडे.

राजगृह नगर.
देव आत्मशक्तियी
चार पांच देवावासो-
सोने उल्लंघने ?

अल्पशक्ति देव मह-
र्दिक देवनी वचोवच
यइने जाय ?

समर्दिक देव सम-
र्दिक देवनी वचोवच
यइने जाय ?

विमोह पमाडीने
जइ शके के ते सि-
वाय जाय ?

विमोह पमाडीने जइने
पछी के जइने पछी पमाडे ?

६. [प्र०] महिद्वीप णं भंते ! देवे अप्पहियस्स देवस्स मज्झंमज्जेणं वीरवपज्जा ? [उ०] हंता, वीरवपज्जा ।

७. [प्र०] 'से भंते ! किं विमोहिता पभू, अविमोहेता पभू ? [उ०] गोयमा ! विमोहेता वि पभू, अविमोहेता वि पभू ।

८. [प्र०] से भंते ! किं पुड्ढिं विमोहिता पच्छा वीरवपज्जा, पुड्ढिं वीरवपज्जा पच्छा विमोहेज्जा ? [उ०] गोयमा ! पुड्ढिं वा विमोहेता पच्छा वीरवपज्जा, पुड्ढिं वा वीरवपज्जा पच्छा विमोहेज्जा ।

९. [प्र०] अप्पहिय णं भंते ! असुरकुमारे महहियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्जेणं वीरवपज्जा ? [उ०] णो इण्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेण वि तिन्नि आलावगा भाणियत्ता जहा ओहिपणं देवेणं मणिया । एवं जाव थैणियकुमारेणं, धाणमं-तर-जोहसिय-वेमाणियणं एवं वेव ।

१०. [प्र०] अप्पहिय णं भंते ! देवे महिद्वियाप देवीप मज्झंमज्जेणं वीरवपज्जा ? [उ०] णो इण्ठे समट्ठे ।

११. [प्र०] समहिय णं भंते ! देवे समहियाप देवीप मज्झंमज्जेणं ? [उ०] एवं तहेव देवेण य देवीप य दंडओ भाणियत्तो, जाव वेमाणियाप ।

१२. [प्र०] अपहिया णं भंते ! देवी महहियस्स देवस्स मज्झंमज्जेणं ? [उ०] एवं एसो वि ततिओ दंडओ भाणियत्तो, जाव [प्र०] 'महिद्विया वेमाणिणी अप्पहियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्जेणं वीरवपज्जा ? [उ०] हंता, वीरवपज्जा' ।

१३. [प्र०] अप्पहिया णं भंते ! देवी महहियाप देवीप मज्झंमज्जेणं वीरवपज्जा ? [उ०] णो इण्ठे समट्ठे । एवं समहिया देवी समहियाप देवीप तहेव, महिद्विया वि देवी अप्पहियाप देवीप तहेव, एवं एकेके तिन्नि तिन्नि आलावगा

६. [प्र०] हे भगवन् ! महर्द्धिक-महाशक्तिवालो देव अल्पशक्तिवाला देवनी वचोवच थईने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं ते अल्पशक्तिवाला देवने विमोह पमाडीने जइ शके के विमोह पमाड्या विना जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! विमोह पमाडीने पण जइ शके अने विमोह पमाड्या विना पण जइ शके.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं पूर्वे विमोह पमाडीने पछी जाय के पूर्वे जाय अने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते महर्द्धिक देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय, के पहेलां जहने पछी विमोह पमाडे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवालो असुरकुमार महाशक्तिवाला असुरकुमारनी वचोवच थइने जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे सामान्य देवनी पेटे असुरकुमारना पण 'त्रण आलापक कहेवा. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोने पण ए प्रमाणे कहेवुं.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवालो देव महाशक्तिवाली देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी; अर्थात् न जाय.

११. [प्र०] हे भगवन् ! समानशक्तिवालो देव समानशक्तिवाली देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वनी पेटे देवनी साथे देवीनो दंडक कहेवो, यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाली देवी महाशक्तिवाला देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! न जाय, ए प्रमाणे अहीं श्रीजो दंडक पूर्व प्रमाणे कहेवो; यावत्-[प्र०] 'हे भगवन् ! महाशक्तिवाली वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाला वैमानिक देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय.'

१३. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाली देवी मोटी शक्तिवाली देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे समानशक्तिवाली देवीनो समानशक्तिवाली देवी साथे, तथा महाशक्तिवाली देवीनो अल्पशक्तिवाली देवी साथे ते प्रमाणे आलापक कहेवा, अने ए रीते एक एकना त्रण त्रण आलापक कहेवा. यावत्-[प्र०] 'हे भगवन् ! मोटीशक्तिवाली वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाली

महर्द्धिक देव अल्प-
शक्ति देवनी वचो-
वच थईने जाय ?
महर्द्धिक देव अल्प-
शक्तिनो मोह पमा-
डीने जाय के ते
विमोह जाय ?
महर्द्धिक देव मोह
पमाडीने जाय के जइ-
ने जइ पमाडे ?
असुरकुमार.

अल्पशक्ति देव मह-
र्द्धिक देवीनी वचो-
वच थईने जाय ?

समानशक्ति देव सम-
र्द्धिक देवीनी वचो-
वच थईने जाय ?

अल्पशक्ति देवी मह-
र्द्धिक देवनी वचो-
वच थईने जाय ?
महर्द्धिक वैमानिक
देवी.

अल्पशक्ति देवी मह-
र्द्धिक देवीनी वचो-
वच थईने जाय ?
समानशक्ति देवी सम-
र्द्धिक देवीनी साथे.

१ से णं भं-घ । २-कुमारे वि घ । ३-कुमारणं घ । ४ देवीप व ग-घ ।

९. * १ अल्पशक्ति साथे महर्द्धिक, २ समर्द्धिक साथे समर्द्धिक, अने महर्द्धिक साथे अल्पशक्तिवा-त्रण आलापक जायवा.

आणिचक्षा, जाव—[प्र०] 'महद्विया णं मंते ! वेमाणिणी अप्पद्वियाय वेमाणिणीय मज्झंमज्जेणं वीरवपज्जा ? [उ०] हंता, वीरव-
पज्जा' । सा मंते ! किं विमोहिता पम् ? तद्वेव जाव 'पुधि वा वीरवदत्ता पच्छा विमोहेज्जा' । एय चत्तारि दंडगा ।

१४. [प्र०] आसस्स णं मंते ! धावमाणस्स किं 'खु खु'सि करेति ? [उ०] गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिय-
वस्स य जगयस्स य अंतरा पत्थ णं कक्कडप नामं वाय समुच्छर, जेणं आसस्स धावमाणस्स 'खु खु'सि करेत् ।

१५. [प्र०] अह मंते ! आसस्सामो, सस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिस्सामो, तुयस्सामो; "आमंतणी आणवणी
जायणी तह पुच्छणी य पणवणी । पणवणी भासा भासा इच्छानुलोमा य ॥ अणमिग्गहिया भासा भासा य अमिग्गहम्मि
बोद्धवा । संशयकरणी भासा बोयडमडोयडा चेव" ॥ पणवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता, गोयमा !
आसस्सामो, तं चेव जाव न एसा भासा मोसा । सेवं मंते !, सेवं मंते ! सि ।

दसमे सए तईओ उद्देशो समत्तो ।

वैमानिक देवीनी वचोवच यइने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय; यावत्—[प्र०] 'हे भगवन् ! शुं ते महाशक्तिवाळी देवी विमोह पमाडीने
जह शके [के विमोह पमाड्या विना जह शके ? वळी पहेलां विमोह पमाडे, अने पळी जाय के पहेलां जाय अने पळी विमोह पमाडे ?
[उ०] हे गौतम] पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् 'पूर्वे जाय अने पळीयी विमोह पमाडे' त्यां सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे ए *चार दंडक कहेवा.

महादेविक वैमानिक
देवी अत्यधिक देवीनी
साथे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे घोडो दोडतो होय त्यारे ते 'खु खु' शब्द केम करे छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे घोडो दोडतो
होय छे त्यारे हृदय अने यकृत् (लीव्हर)—नी वचे कर्कटनामे वायु उत्पन्न थाय छे, अने तेथी घोडो दोडतो होय छे त्यारे ते 'खु खु'
शब्द करे छे,

महादेविक देवी जोह
पमाडीने जाव के ते
शिवाय ई
दोडता घोडाने 'खु
खु' शब्द केम थाय
छे ?

१५. [प्र०] हे भगवन् ! 'अमे आश्रय करीशुं, शयन करीशुं, उभा रहीशुं, बेसीशुं, (पयारीमां) आळोटशुं—इत्यादि भाषा *
"१ आमंत्रणी, २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ प्रच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छानुलोमा, ८ अनभिगृहीत, ९ अभिगृहीत, १०
संशयकरणी, ११ व्याकृता, अने १२ अव्याकृता भाषा छे." तेमांनी आ प्रज्ञापनी भाषा कहेवाय ? अने ए भाषा मृषा (असत्य) न कहे-
वाय ? [उ०] हे गौतम ! 'आश्रय करीशुं'—इत्यादि भाषा पूर्ववत् कहेवाय, पण मृषा भाषा न कहेवाय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे
भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

भाषामा
चार प्रकार.

दशमश्चते तृतीय उद्देशक समाप्त.

१ कक्कडप ग । २ निसिस्सामो ग ।

१३. * १ सामान्य देव साथे देवीनो दंडक, २ देव साथे देवनो दंडक, ३ देवी साथे देवनो दंडक, ४ देवी साथे देवीनो दंडक.—ए चार दंडक
आणवा.

१५. * १ संबोधन करवापूर्वक बोलाती भाषा ते आमंत्रणी, २ आज्ञापूर्वक बोलाती भाषा ते आज्ञापनी. जेम के 'वट कर'. ३ कोह पण वस्तुनी याचना
करवी ते याचनी. ४ अज्ञात अथवा संदिग्ध अर्थनो प्रश्न करवो ते प्रच्छनी. ५ उपदेश आपवारूप ते प्रज्ञापनी. ६ निषेध करवो ते प्रत्याख्यानी. ७ इच्छाने
अनुकूल भाषा ते इच्छानुलोमा. ८ अर्थना अमिग्गह—निश्चय शिवाय बोकाय ते अनभिगृहीता. जेमके 'तने ठीक लागे ते कर'. ९ अर्थना निश्चयपूर्वक बोकाय
ते अभिगृहीता. जेमके 'आ प्रमाणे कर'. १० अर्थनो संशय करवारी ते संशयकरणी, जेमके सैन्यशब्द पुरुष, लवण अने घोडाना अर्थनो संशय उत्पन्न करे
छे. ११ लोकप्रसिद्धशब्दावली भाषा ते व्याकृता. १२ अने गंभीरशब्दावली भाषा ते अव्याकृता.—टीका. शुभो प्रज्ञापना भाषापद् प० २५६-१ पं. ९.

चतुर्थ उद्देशक.

१. तेणं कालेणं, तेणं समपणं वाणियग्गामे नयरे होत्था, वण्णओ । दूतिपलासप चेइप । सामी समोसहे । जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, तेणं समपणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूर्इ नामं अणगारे, जाव उहुंजाणू जाव विहरति । तेणं कालेणं, तेणं समपणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे पगइम-इप, अहा रोहे, जाव उहुंजाणू जाव विहरइ । तप णं से सामहत्थी अणगारे जायसहे जाव उट्टाप उट्टेइ, उट्टिसा जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिसा भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी ।

२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायसीसगा देवा ? [उ०] हंता, अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुद्धइ—'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायसीसगा देवा' ? [उ०] तायसीसगा देवा एवं खलु सामहत्थी—तेणं कालेणं तेणं समपणं इहेव जंबुद्दीपे दीपे भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्था । वण्णओ । तत्थ णं कायं-दीप नयरीप तायसीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति, अहा, जाव अपरिभूता अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्ण-पावा, वण्णओ, जाव विहरंति । तप णं ते तायसीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुंषि उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा, संवि-ग्गविहारी भविस्ता, तओ पच्छा पासत्था, पासत्थविहारी, ओसन्ना, ओसन्नविहारी, कुसीला, कुसीलविहारी, अहाच्छंदा, अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति । पाउणिसा अइमासियाप संलेहणाप अत्ताणं झूसैति, अत्ताणं

चतुर्थ उद्देशक.

१. ते काले—ते समये वाणियग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. त्यां दूतिपलाश नामे चैत्य हतुं. त्यां भगवान् महावीर स्वामी समोसर्या. परिषद् धर्मोपदेश श्रवण करीने पाछी गइ. ते काले—ते समये श्रमण भगवंत महावीरना मोटा शिष्य इंदभूति नामे अनगार यावद् ऊर्ध्व-जानु (जेना ढींचण उभा छे एवा) यावद् विहारे छे. ते काले—ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य श्यामहस्ती नामे अनगार हता. जे *रोह नामे अनगारनी पेटे भद्रप्रकृतिना यावद् ऊर्ध्वजानु विहरता हता. त्यार पछी श्रद्धावाळ ते श्यामहस्ती अनगार यावत् उभा थहने ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, आवीने भगवान् गौतमने त्रणवार प्रदक्षिणा करी, वंदी, नमी अने पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या—

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इन्द्र चमरने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हा, चमरेन्द्रने त्रायक्षिशक देवो छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुपी कहो छो के असुरकुमारना इंद्र चमरने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे श्यामहस्ती ! ते त्रायक्षिशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—ते काले—ते समये आ जंबुद्दीपमां, भारतवर्षमां काकंदी नामे नगरी हती, वर्णन. ते काकंदी नगरीमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक गृहपतिओ रहेता हता, जेओ धनिक, यावत् अपरिभूत (जेनो पराभव न थइ शके एवा समर्थ) हता, जीवाजीवने जाणनारा, अने पुण्य पापना ज्ञाता तेओ यावद् विहारे छे. त्यारपछी ते परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक

१ कुमारस्स वा-घ । २ कावसीसं क । ३ गाहाया क ।

१. * भग० सं. १ वा. १ उ. ६ पृ. १६५.

वाणियग्राम.

दूतिपलाशचैत्य.

श्यामहस्ती अनगार.

असुरकुमारने यावकि-

शक देवो छे ?

त्रायक्षिशक देवोनो

संबन्ध.

इत्येता त्रीं मत्तार् भणसजाय छेदेति, छेदित्ता तस्स ठाणस्स भणालोदय—पडिक्कंता कालमासे कालं किञ्चा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररज्जो तायसीसगदेवत्ताय उववत्ता ।

३. [प्र०] अप्पमिदं च णं भंते ! ते कायंदगा तायसीसं सहाया गाहावर्हं समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररज्जो तायसीसगदेवत्ताय उववत्ता तप्पमिदं च णं भंते ! एवं बुद्धइ—‘चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररज्जो तायसीसगा देवा ? तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा भणगारेणं एवं बुद्धे समणे संकिय, कंजिय, वित्तिगिच्छिय उट्ठाए उट्ठेइ । उट्ठाए उट्ठित्ता सामहत्थिणा भणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ । वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—

४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररज्जो तायसीसगा देवा २ ? [उ०] इंता, अत्थि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुद्धइ—एवं तं चेव सत्तं भाणियत्तं, जाव ‘तप्पमिदं च णं एवं बुद्धइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररज्जो तायसीसगा देवा २ ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! चमरस्स णं असुरिदस्स असुरकुमाररज्जो तायसीसगा देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णसे; अं न कयाइं नासी, न कयाइ न भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ; जाव णिच्चे अट्ठोच्छित्तिनयट्ठयाए, अच्चे चयंति, अच्चे उववत्तंति ।

५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! बलिस्स वररोयणिदस्स वररोयणरज्जो तायसीसगा देवा २ ? [उ०] इंता, अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुद्धइ—‘बलिस्स वररोयणिदस्स जाव तायसीसगा देवा २ ? [उ०] एवं बल्लु गोयमा ! तेणं कालेणं, तेणं समएणं इहेव अंबुद्धीवे वीवे भारहे वासे विभेले णामं सन्निवेशे होत्था । वचओ । तत्थ णं विभेले सन्निवेशे जहा चमरस्स जाव उववत्ता । [प्र०] अप्पमिदं च णं भंते ! विभेलगा तायसीसं सहाया गाहावर्हं समणोवासगा बलिस्स वररोयणिदस्स सेसं तं चेव जाव निच्चे अट्ठोच्छित्तिनयट्ठयाए, अच्चे चयंति, अच्चे उववत्तंति ।

गृहपतिओ पूर्वे उग्र, उग्रविहारी (उग्रचर्यावाळा) * संविग्र अने संविग्रविहारी हता, पण पाच्छथी पासत्या, पासत्यविहारी (पासत्यानी चर्यावाळा) अवसन्न, अवसन्नविहारी, कुशील, कुशीलविहारी, यथाछंद, अने यथाछंदविहारी यईने तेओ घणा वरससुधी श्रमणोपासकना पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिक संखेलनावडे आत्माने सेधीने त्रीश भक्तोने अनशनपणे ज्यतीत करीने ते प्रमादस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण कर्या विना काल समये काल करी तेओ असुरेंद्र, असुरकुमार राजा चमरना त्रायक्षिशकदेवपणे उत्पन्न थया.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारथी मांडीने ते काकंदीना रहेनारा अने परस्पर सहाय करनारा, तेत्रीश श्रमणोपासको असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरना त्रायक्षिशकदेवपणे उत्पन्न थया त्यारथी एम कहेवाय छे के असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरने त्रायक्षिशक देवो छे ? (अर्थात् ते पूर्वे त्रायक्षिश देवो न होता ?). ज्यारे ते श्यामहस्ती अनगारे भगवंत गौतमने ए प्रमाणे कहुं, त्यारे भगवान् गौतम शंक्ति, काक्षित अने अत्यन्त संदिग्ध थया, अने तेओ उभा यईने ते श्यामहस्ती अनगारनी साथे ज्यां श्रमण भगवान् महावीर हता त्यां आवे छे त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वादी अने नमीने आ प्रमाणे बोल्या—

४. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेंद्र, असुरकुमारना राजा चमरने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहुओ छे के ते चमरने त्रायक्षिशक देवो छे !—इत्यादि पूर्वे कहेलो त्रायक्षिशक देवो नो सर्व संबन्ध कहेवो; यावत् काकंदीना रहेनारा श्रमणोपासको त्रायक्षिशकदेवपणे उत्पन्न थया छे त्यारथी शुं एम कहेवाय छे के चमरने त्रायक्षिशक देवो छे ? (ते पूर्वे शुं नहोता ?) [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ योग्य नथी, पण असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमरना त्रायक्षिशक देवोना नामो शाश्वत कख्या छे, जेथी तेओ कदी न हतां एम नथी, कदी न हशे एम नथी; कदी नथी एम पण नथी. यावत् [तेओ नित्य छे, अव्युच्छित्तिनय—(द्रव्यार्थिकनय—) नी अपेक्षाए अन्य च्यवे छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे. [पण तेओनो विच्छेद थतो नथी.]

५. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेंद्र, वैरोचनराजा बलिने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहुओ छे के वैरोचनेंद्र बलिने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! बलिना त्रायक्षिशक देवो नो संबन्ध आ प्रमाणे छे—ते काले—ते समये जंबूद्वीपना भारतवर्षमां विमेल नामे संनिवेश (कस्वो) हतो. वर्णन. ते विमेल सन्निवेशमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हता. इत्यादि जेम चमरेन्द्रना संबन्धे कहुं तेम अहीं पण जाणवुं. यावत् तेओ त्रायक्षिशकदेवपणे उत्पन्न थया. ज्यारथी मांडीने ते विमेल संनिवेशना परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको वैरोचनेन्द्र बलिना त्रायक्षिशकदेवपणे उत्पन्न थया—इत्यादि पूर्वोक्त सर्व हकीकत यावत् ‘तेओ नित्य छे, अव्युच्छित्तिनयनी अपेक्षाए अन्य च्यवे छे अन्य उत्पन्न थाय छे’ त्यासुधी जाणवी.

२. * संविग्र—मोक्ष मेळववा तत्पर थयेळा, अथवा संसारथी भयभीत थयेळा, संविग्रविहारी—मोक्षने अनुकूल चर्यावाळा.

† ज्ञानादिथी वाङ्म ते पासत्या, हेमेशां पासत्याना आचारवाङ्म ते पासत्यविहारी. अवसन्न—वाक्की गयेला, आकसथी सन्नय् अजुघानने बरोबर बहि करकार, अर्थात् जन्मथी मांडीने छिशीलाचारी. कुशील—ज्ञानादि आचारथी विराधना करनार; हेमेशां ज्ञानादिआचारना विराधक ते कुशीलविहारी. यथाछन्द—भगमने परतन्न नहि होवाथी सच्छन्धी, अने हेमेशां सच्छन्धी ते यथाछन्दविहारी.—टीका.

वहीन्द्रने त्रायक्षिशक देवो. हेउ.

६. [प्र०] अत्थि णं भंते ! धरणस्स णागकुमारिदस्स णागकुमाररण्णो तायसीसगा देवा २ ? [उ०] इंता अत्थि ! [प्र०] से केणट्टेणं जाव तायसीसगा देवा २ ? [उ०] गोयमा ! धरणस्स णागकुमारिदस्स णागकुमाररण्णो तायसीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं न कयाई नाली, जाव अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति । एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव महाघोसस्स ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविदस्स, देवरज्जो पुच्छा । [उ०] इंता अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं जाव तायसीसगा देवा २ ? [उ०] एवं खल्लु गोयमा ! तेणं कालेणं, तेणं समएणं इद्देव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पलासए नामं सन्निवेशे होत्था । वन्नथो । तत्थ णं पलासए सन्निवेशे तायसीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरंति । तए णं ते तायसीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुब्बि पि पच्छा वि उग्गा, उग्गविहारी, संबिग्गा, संबिग्गविहारी बहई वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिस्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसैति, झूसिस्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदंति, छेदिस्ता आलोइय-पडिक्कंता, समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववज्जा । जप्पमिइं च णं भंते ! पालासिगा तायसीसं सहाया गाहावई समणोवासया, सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति ।

८. [प्र०] अत्थि णं भंते ! ईस्ताणस्स० ? [उ०] एवं जहा सक्कस्स, नवरं चंपाए णयरीए जाव उववज्जा । जप्पमिइं च णं भंते ! चंपिज्जा तायसीसं सहाया, सेसं तं चेष, जाव अन्ने उववज्जंति ।

९. [प्र०] अत्थि णं भंते ! सणकुमारस्स देविदस्स देवरज्जो पुच्छा । [उ०] इंता अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं ? [उ०] जहा धरणस्स तद्देव, एवं जाव पाणयस्स, एवं अब्बुयस्स, जाव अन्ने उववज्जंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

दसमसए चउत्थो उद्देशो समत्तो ।

धरणेन्द्रने त्रायक्षि-
शक देवो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के धरणेन्द्रने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणना त्रायक्षिशक देवोना नामो शाश्वत कक्षा छे, जेथी तेओ कदापि न हता एम नथी, कदापि नथी एम नथी, अने कदापि न हशे एम पण नथी. यावत् अन्य प्यवे छे अने अन्य उपजे छे. ए प्रमाणे भूतानंद अने यावत् महाघोष इन्द्रना त्रायक्षिशक देवो संबन्धे पण जाणवुं.

सकनेन्द्रने त्रायक्षि-
शक देवो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्रने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हा गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के देवेन्द्र देवराज शक्रने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! शक्रना त्रायक्षिशक देवोना संबन्ध आ प्रमाणे छे—ते काले—ते समये आ जंबुद्दीपना भारतवर्षमां पलाशक नामे संनिवेश हतो. वर्णन. ते पलाशक नामे संनिवेशमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हता—इत्यादि जेम चमर संबन्धे कहुं ते प्रमाणे यावत् तेओ विचरे छे. स्यारपछी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपति श्रमणोपासको पहैलां अने पछी उग्र, उग्रविहारी, संबिग्र अने संबिग्रविहारी यइने घणा वर्ष सुची श्रमणोपासकपर्यायने पाकीने मासिक संलेखनावडे आत्माने सेवे छे, सेवीने साठ भक्तो अनशन वडे व्यतीत करीने आलोचन, प्रतिक्रमण करीने समाधिने प्राप्त थाय छे, अने मरणसमये काल करी यावत् त्रायक्षिशकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ज्यारथी आरंभीने पलाशक संनिवेशना निवासी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको शक्रना त्रायक्षिशकपणे उत्पन्न थया इत्यादि सर्व वृत्तान्त चमरेन्द्रना प्रमाणे यावत् 'अन्य छे प्यवे छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे' ल्यासुची जाणवो.

ईशानेन्द्रने त्राय-
क्षिशक देवो.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ईशान इंद्रने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] शक्रनी पेटे ईशानेन्द्रने पण जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के ते गृहपतिओ श्रमणोपासको पलाशक संनिवेशने बदले चंपानगरीमां उत्पन्न थयेलां छे. 'ज्यारथी चंपाना निवासी त्रायक्षिशकपणे उत्पन्न थया'—इत्यादि पूर्वोक्त सर्व वृत्तान्त यावत् 'अन्य उपजे छे' ल्यासुची जाणवो.

सकनेन्द्रने त्राय-
क्षिशक देवो.

९. [प्र०] हे भगवन् ! देवोना राजा देवेन्द्र सनकुमारने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! आप ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सनकुमार देवेन्द्रने त्रायक्षिशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम धरणेन्द्र संबन्धे कहुं ते प्रमाणे अही जाणवुं. ए रीते यावत् प्राणतथी मांडीने अच्युतपर्यन्त यावत् 'बीजा उत्पन्न थाय छे' ल्यासुची कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम विहरे छे.]

दशमशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

પંચમઝો ઉદ્દેસો.

૧. [પ્ર૦] તેણં કાલેણં, તેણં સમયણં રાયગિદ્દે જામં નયરે । ગુણસિલય ચેરય । જાવ પરિસા પહિગયા । તેણં કાલેણં, તેણં સમયણં સમજસ્સ મગવઝો મહાવીરસ્સ વહ્થે અંતેવાસી યેરા મગવંતો જારસંપણા, કુલસંપણા, જહા મટ્ટમે સપ સત્તમુદે-સપ જાવ વિહરંતિ । તપ્પ ણં તે યેરા મગવંતો જાયસહ્વા, જાયસંસયા, જહા ગોયમસામી, જાવ પજ્જુવાસમાણા एवं વયાસી—

૨. [પ્ર૦] ચમરસ્સ ણં મંતે ! અસુરિદ્દસ્સ અસુરકુમારરઝો કતિ અગ્ગમહિસીઝો પલ્લસાઝો ? [ઉ૦] અઝ્ઝો ! પંચ અગ્ગ-મહિસીઝો પલ્લસાઝો, તં જહા—૧ કાલી, ૨ રાયી, ૩ રયણી, ૪ વિહ્હુ, ૫ મેઘા । તત્પ્પ ણં ઇગમેગાય વેષીપ અટ્ટ-ટ્ટ વેવીસહ-સ્સ પરિવારો પલ્લસો ।

૩. [પ્ર૦] પમ્મ ણં મંતે ! તાઝો ઇગમેગા વેષી અઝ્ઝાં અટ્ટ-ટ્ટ વેવીસહસ્સાં પરિવારં વિહ્હુસિત્તય ? [ઉ૦] ઇવામેવ સપુ-હ્હાવરેણં ચત્તાલીસં વેષીસહસ્સા, સેત્તં તુહ્હિય ।

૪. [પ્ર૦] પમ્મ ણં મંતે ! ચમરે અસુરિદ્દે અસુરકુમારરાયા ચમરચંચાય રાયહાણીય, સમાય સુહમ્માય, ચમરંસિ સીહા-સણંસિ તુહ્હિયણં સઙ્ગિ દિહ્હાં મોગમોગાં મુંજમાણે વિહરિત્તય ? [ઉ૦] ણો ઇણદ્દે સમટ્ટે । [પ્ર૦] સે કેણદ્દેણં મંતે ! एवं તુહ્હર-‘નો પમ્મ ચમરે અસુરિદ્દે ચમરચંચાય રાયહાણીય જાવ વિહરિત્તય’ ? [ઉ૦] અઝ્ઝો ! ચમરસ્સ ણં અસુરિદ્દસ્સ અસુરકુમારરઝો ચમરચંચાય રાયહાણીય, સમાય સુહમ્માય, માણવય ચેદ્દયઝંમે વહ્હરામયસુ ગોલ-વહ્હ-સમુગ્ગપસુ વહ્હઝો જિણસકહ્હાઝો

પંચમ ઉદ્દેશક.

૧. તે કાલે—તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું, અને ત્યાં ગુણસિલ નામે ચૈત્ય હતું. [શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર સમોસર્યા.] યાવત્ સમા [ધર્મશ્રવણ કરીને] પાછી ગઈ. તે કાલે—તે સમયે શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરના ઘણા શિષ્યો પૂજ્ય સ્થવિરો જાતિસંપન્ન—ઇત્યાદિ જેમ આઠમાં શતકના સાતમાં *ઉદ્દેશકમાં કહ્યું છે તેમ યાવત્ વિહરે છે. સ્યાર પછી તે સ્થવિર મગવંતો જાણવાની શ્રદ્ધાવાલ્ય યાવત્ સંશયવાલ્ય થઈને ગૌતમસ્વામીની પેઠે પર્યુપાસના કરતા આ પ્રમાણે બોલ્યા.

રાજગૃહ નવર. ગુણ-
શીલચૈત્ય.

૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અસુરેંદ્ર અસુરકુમારના રાજા ચમરને કેટલી અપ્રમહિષીઝો (પદ્ધરાણીઝો) કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્યો ! ચમ-રેન્દ્રને પાંચ પદ્ધરાણીઝો કહી છે, તે આ પ્રમાણે—કાલી રાયી, રજની, વિહ્હુ અને મેઘા. તેમાંની એક એક દેવીને આઠ આઠ હજાર દેવી-ઝોનો પરિવાર કહ્યો છે.

ચમરેન્દ્રને અપ્રમહિ-
ષીઝો.

૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શું તે એક એક દેવી આઠ આઠ હજાર દેવીઝોના પરિવારને વિકુર્વવા સમર્થ છે ? [ઉ૦] હે આર્યો ! હા, એ પ્રમાણે પૂર્વાપર બધી મઠ્ઠીને [પાંચ પદ્ધરાણીઝોનો પરિવાર] ચાલીશ હજાર દેવીઝો છે અને તે ત્રુટિક (વર્ગ) કહેવાય છે.

અપ્રમહિષીઝોનો
પરિવાર.

૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અસુરેંદ્ર અને અસુરકુમારોનો રાજા ચમર પોતાની ચમરચંચા નામની રાજધાનીમાં સુધર્મા સમામાં ચમર નામે સિદ્ધાસનમાં બેસી તે ત્રુટિક (ઝીઝોના પરિવાર) સાથે મોગવવા ઝાયક દિવ્યમોગોને મોગવવાને સમર્થ છે ? [ઉ૦] હે આર્યો ! એ અર્થ યોગ્ય નથી. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! એ પ્રમાણે આપ શા હેતુથી કહ્યો છો કે ચમરચંચા રાજધાનીમાં તે અસુરેંદ્ર અને અસુરકુમારનો રાજા ચમર દિવ્ય મોગોને મોગવવા સમર્થ નથી ? [ઉ૦] હે આર્યો ! અસુરેંદ્ર અને અસુરકુમારના રાજા ચમરની ચમરચંચા નામની રાજધાનીમાં સુધર્મા

ચમરેન્દ્ર પોતાની ક્ર-
મામાં દેવીઝો સાથે
મોગો મોગવવા સ-
મર્થ છે ?
હેતુ-

सखिद्विस्वत्ताओ विद्वंति; जाओ णं चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररओ अजेसि च बहूणं असुरकुमारणं देवाण य देवीण च अण्णिजाओ, वंदणिजाओ, नमंसणिजाओ, पूयणिजाओ, सकारणिजाओ, सम्माणिजाओ, कण्ठाणं, मंगलं, देवयं, वेदयं पञ्जुवासणिजाओ भवंति, तेसि पणिहाय नो पभू, से तेण्णुणं अओ ! एवं बुब्बह—'नो पभू चमरे असुरिदे जाव चमरचंचाय जाव विहरित्तप' । [प्र०] पभू णं अओ ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचंचाय रायहाणीय, समाप सुहम्माय, चमरंसि सीहासनंसि चउसट्टीय सामाणियसाहस्सीहिं, तायसीसाय जाव अजेसि च बहूणं असुरकुमारेहिं देवेहि य, देवीहि य सखि संपरिवुडे महयाहय— जाव भुंजमाणे विहरित्तप ? [उ०] केवलं परियारिहीय, नो खेव णं मेहुणवत्तियं ।

५. [प्र०] चमरस्स णं भंते ! असुरिदस्स असुरकुमाररओ सोमस्स महारओ कति अग्गमहिस्सीओ पञ्जत्ताओ ? [उ०] अओ ! चत्तारि अग्गमहिस्सीओ पञ्जत्ताओ, तं जहा—१ कणगा, २ कणगलता, ३ वित्तगुत्ता, ४ वसुंधरा । तत्थ णं एगमेगाय देवीय एगमेगंसि देवीसहस्सं परिवारे पण्णत्ते [प्र०] पभू णं ताओ एगमेगाय देवीय अणं एगमेगं देवीसहस्सं परिवारं विउत्तिय ? [उ०] एवामेव सपुद्दावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिय ।

६. [प्र०] पभू णं भंते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररओ सोमे महाराया सोमाय रायहाणीय, समाप सुहम्माय, सोमंसि सीहासनंसि तुडियणं ? [उ०] अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं परिवारो जहा सूरियामस्स, सेसं तं खेव, जाव णो खेव णं मेहुणवत्तियं ।

७. [प्र०] चमरस्स णं भंते ! जाव रओ जमस्स महारओ कति अग्गमहिस्सीओ पञ्जत्ताओ ? [उ०] एवं खेव, नवरं जमाय रायहाणीय, सेसं जहा सोमस्स, एवं वरुणस्स वि, नवरं वरुणाय रायहाणीय, एवं वेसमणस्स वि, नवरं वेसमणाय रायहाणीय, सेसं तं खेव, जाव मेहुणवत्तियं ।

नामे सभामां माणवक चैत्यस्संभने विषे यज्जमय अने गोल—वृत्त डावडामां नांखेलां जिनना घणां अस्थिओ (हाडकांओ) छे, जे असुरेद्र अने असुरकुमारना राजा चमरने तथा बीजा घणा असुरकुमार देवोने अने देवीओने अर्चनीय, वंदनीय, नमस्कार करवा योग्य, पूजवा-योग्य, सत्कार करवा योग्य अने संमान करवा योग्य छे, तथा कल्याण अने मंगलरूप देव चैत्यनी पेटे उपासना करवा योग्य छे, माटे ते जिनना अस्थिओना प्रणिधानमां [संनिधानमां] ते असुरेद्र पोतानी राजधानीमां यावत् [भोगो भोगववा] समर्थ नथी. तेथी हे आर्यो ! एम कहेवाय छे के चमर असुरेद्र यावत् चमरचंचा राजधानीमां यावत् [ते देवीओ साथे दिव्य भोगो] भोगववा समर्थ नथी. पण हे आर्यो ! ते असुरेद्र असुरकुमारराजा चमर चमरचंचा नामे राजधानीमां, सुधर्मा सभामां, चमरनामे सिंहासनमां बेसी चोसट्ट हजार सामानिक देवो, त्रायस्त्रिंशक देवो, अने बीजा घणा असुरकुमार देवो तथा दंवीओ साथे परिवृत थइ मोटा अने निरन्तर थता नाट्य, गीत, अने वादित्रोना शब्दो वडे केवल परिवारनी ऋद्धिथी भोगो भोगववा समर्थ छे, परन्तु मैथुननिमित्तक भोगो भोगववा समर्थ नथी.

चमरेन्द्रना सोम
लोकापालने पट्टरा-
णीओ.

५. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना [लोकपाल] सोम महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्यो ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—कनका, कनकालता, चित्रगुत्ता अने वसुंधरा. त्यां एक एक देवीने एक एक हजार देवीओ परिवार छे. तेओमांनी एक एक देवी एक एक हजार हजार देवीना परिवारने विकुर्वी शके छे. ए प्रमाणे पूर्वापर बधी मळीने चार हजार देवीओ थाय छे. ते त्रुटिक (देवीओनो वर्ग) कहेवाय छे.

सोम लोकपाल पो-
तानी सभामां देवीओ
साथे भोग भोगववा
समर्थ छे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना [लोकपाल] सोम नामे महाराजा पोतानी सोमा नामे राजधानीमां सुधर्मा सभामां सोमनामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (देवीओना वर्ग) साथे भोग भोगववा समर्थ छे ? [उ०] चमरना संबन्धे कहुं छे ते सर्व अहीं पण जाणवुं. परन्तु तेनो परिवार *सूर्यामनी पेटे जाणवो. अने बाकीतुं सर्व पूर्व प्रमाणे कहेवुं, यावत् ते देवीओ साथे पोतानी सोमा राजधानीमां मैथुननिमित्तक भोग भोगववा समर्थ नथी.

चमरे अग्गमहिस्सीओ.
बलीन्द्रने अग्गमही-
णीओ.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते चमरना [लोकपाल] यम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्यो ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए छे के [यम लोकपालने] यमा नामे राजधानी छे. बाकी बधुं सोमनी पेटे जाणवुं. तथा ए प्रमाणे वरुणना संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु तेने वरुणा राजधानी छे. ते प्रमाणे वैश्रमणने पण जाणवुं. परन्तु तेने वैश्रमणा राजधानी छे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् 'तेओ मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी.'

૮. [પ્ર૦] બલિસ્ત જં મંતે ! ઘરોયર્ણિવસ્ત પુષ્કા । [૩૦] અજ્ઞો ! પંચ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ, તં જહા-૧ સુમા, ૨ નિરુમા, ૩ રંમા, ૪ નિરંમા, ૫ મદ્મા । તત્થ જં યગમેગાય દેવીય અદુ-દુ૦, સેસં જહા ચમરસ્ત, નઘરં બલિચંચાય રાય-હાણીય, પરિવારો જહા મોઝહેસય સેસં તં ચેવ, જાય મેહુગવચિયં ।

૯. [પ્ર૦] બલિસ્ત જં મંતે ! ઘરોયર્ણિવસ્ત, ઘરોયર્ણરણ્ણો સોમસ્ત મહારણ્ણો કતિ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ ? [૩૦] અજ્ઞો ! ચત્તારિ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ । તં જહા-૧ મીળગા, ૨ સુમહા, ૩ વિજયા, ૪ અસળી । તત્થ જં યગમેગાય દેવીય, સેસં જહા ચમરસોમસ્ત યવં જાય વેસમણસ્ત ।

૧૦. [પ્ર૦] ધરણસ્ત જં મંતે ! નાગકુમારિવસ્ત નાગકુમારરણ્ણો કતિ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ ? [૩૦] અજ્ઞો ! છ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ, તં જહા-૧ ઇલા, ૨ સુક્કા, ૩ સતારા, ૪ સોદામિળી, ૫ ઇંદા, ૬ ઘણવિજ્ઞુયા । તત્થ જં યગમેગાય દેવીય છ છ દેવીસહસ્તા પરિવારો પળ્ણતો ।

૧૧. [પ્ર૦] પમૂ જં તાઓ યગમેગા દેવી અજ્ઞાં છ છ દેવિસહસ્તાં પરિવારં વિઝવિચય ? [૩૦] યવામેવ સપુઘાવરેણં છત્તીસાં દેવિસહસ્તાં, સેસં તુઙિય । [પ્ર૦] પમૂ જં મંતે ! ધરણે ૦ ? [૩૦] સેસં તં ચેવ, નઘરં ધરણાય રાયહાણીય, ધર-ણસિ સીદાસળંસિ, સઓ પરિવારો, સેસં તં ચેવ ।

૧૨. [પ્ર૦] ધરણસ્ત જં મંતે ! નાગકુમારિવસ્ત લોગપાલસ્ત કાલવાલસ્ત મહારણ્ણો કતિ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ ? [૩૦] અજ્ઞો ! ચત્તારિ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ, તં જહા-૧ અસોગા, ૨ વિમલા, ૩ સુપ્પમા, ૪ સુદંસળા । તત્થ જં યગમેગાય૦, અઘસેસં જહા ચમરલોગપાલાળં । યવં સેસાળં તિણ્ણ ઘિ ।

૧૩. [પ્ર૦] મૂયાર્ણિવસ્ત મંતે ! પુષ્કા । [૩૦] અજ્ઞો ! છ અગમહિસીઓ પદ્મતાઓ, તં જહા-૧ રૂયા, ૨ રૂયંસા, ૩ સુરૂયા, ૪ રૂયગાવતી, ૫ રૂયકંતા, ૬ રૂયપ્પમા । તત્થ જં યગમેગાય દેવીય૦ અઘસેસં જહા ધરણસ્ત ।

૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ઘેરોચનેન્દ્ર બલિને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! પાંચ પટ્ટરાણીઓ કહી છે; તે આ પ્રમાણે -શુમા, નિશુંમા, રંમા, નિરંમા અને મદના. તેમાંની એક એક દેવીને આઠ આઠ હજાર દેવીઓનો પરિવાર હોય છે-ઇત્યાદિ સર્વ ચમરેન્દ્રની પેઠે જાણવું; પરન્તુ બલિ નામે ઇન્દ્રને બલિચંચા નામે રાજધાની છે, અને તેનો પરિવાર તૃતીય શતકના પ્રથમ *ઉદ્દેશકમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવો, બાકી સર્વ પૂર્વપ્રમાણે જાણવું. યાવત્ તે મૈથુનનિમિત્તે ભોગ ભોગવવા સમર્થ નથી.

બલીન્દ્રને અઘ-
મહિષીઓ.

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ઘેરોચનેન્દ્ર ઘેરોચનરાજા બલિના [લોકપાલ] સોમ નામે મહારાજાને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-મેનકા, સુમદ્રા, વિજયા અને અશની. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે બધું ચમરના સોમ નામે લોકપાલની પેઠે જાણવું. ૯ પ્રમાણે યાવત્ વૈશ્રમણ સૂચી જાણવું.

બલિના લોકપાલ
સોમને અઘવહિ-
ષીઓ.

૧૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નાગકુમારના ઇન્દ્ર અને નાગકુમારના રાજા ધરણને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને છ પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-ઇલા, શુક્કા, સતારા, સૌદામિની, ઇન્દ્રા અને ઘનવિજ્ઞુત્. તેમાં એક એક દેવીને છ છ હજાર દેવીઓનો પરિવાર કહ્યો છે.

ધરણેન્દ્રને અઘ-
મહિષીઓ.

૧૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! તેમાંની એક એક દેવી અન્ય છ છ હજાર દેવીઓના પરિવારને વિકુર્વી શકે ? [૩૦] તેઓ પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે પૂર્વાપર સર્વ મઠીને છત્રીશ હજાર દેવીઓને વિકુર્વવા સમર્થ છે. ૯ પ્રમાણે તે ત્રુટિક (દેવીઓનો સમૂહ) કહ્યો. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! શું ધરણેન્દ્ર પોતાની ધરણા નામે રાજધાનીમાં ધરણ નામે સિંહાસનમાં બેસી પોતાના પરિવાર દેવીઓ સાથે ભોગ ભોગવવા સમર્થ છે ઇત્યાદિ ? [૩૦] બાકી સર્વ પૂર્વવત્ જાણવું, [અર્થાત્ મૈથુનનિમિત્તે ત્યાં ભોગ ભોગવવા સમર્થ નથી.]

ધરણેન્દ્રની દેવી-
ઓનો પરિવાર.

૧૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! નાગકુમારના ઇન્દ્ર ધરણના લોકપાલ કાલવાલ નામે મહારાજાને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે; તે આ પ્રમાણે-અશોકા, વિમલા, સુપ્રમા અને સુદર્શના. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે ચમરના લોકપાલોની પેઠે જાણવું. ૯ પ્રમાણે બાકીના ત્રણે લોકપાલો સંબન્ધે જાણવું.

ધરણના લોકપાલ
કાલવાલને અઘ-
મહિષીઓ.

૧૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! મૂતાનેન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! છ પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-રૂપા, રૂપાંશા, સુરૂપા, રૂપકાવતી, રૂપકાંતા અને રૂપપ્રમા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર ઇત્યાદિ સર્વ ધરણેન્દ્રની પેઠે જાણવું.

મૂતાનેન્દ્રને
અઘમહિષીઓ.

૧૪. [પ્ર૦] મૂયાણંદસ્સ ણં મંતે ! નાગવિત્તસ્સ પુચ્છા । [ઉ૦] અહ્હો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા—૧ સુણંદા, ૨ સુમદ્દા, ૩ સુજાયા, ૪ સુમણા । તત્થ ણં યગમેગાયં અવસેસં જહા ચમરલોગપાલાણં । एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं । जे दाहिणिह्हा इदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं । उत्तरिह्हाणं इदाणं जहा मूयाणंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा मूयाणंदस्स लोगपालाणं, नवरं इदाणं सहेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि; परिवारो जहा तए सए पढमे उद्देसए । लोगपालाणं सहेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परिवारो जहा चमरस्स लोगपालाणं ।

૧૫. [પ્ર૦] કાલસ્સ ણં મંતે ! પિસાયિંદસ્સ પિસાયરણ્ણો કતિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ ? [ઉ૦] અહ્હો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા—૧ કમલા, ૨ કમલપ્પમા, ૩ ઉપ્પલા, ૪ સુદંસણા । તત્થ ણં યગમેગાય દેવીય યગમેગં દેવિસહસ્સં, સેસં જહા ચમરલોગપાલાણં । परिवारो तद्देव, णवरं कालाप रायहाणीय, कालंसि सीहासणांसि, सेसं तं चेष, एवं महाकालस्स वि ।

૧૬. [પ્ર૦] સુરુવસ્સ ણં મંતે ! મૂર્તિંદસ્સ મૂતરઓ પુચ્છા । [ઉ૦] અહ્હો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા—૧ રુવવર્દ, ૨ વહુરુવા, ૩ સુરુવા, ૪ સુમગા । તત્થ ણં યગમેગાય, સેસં જહા કાલસ્સ । एवं पडिरुवस्स वि ।

૧૭. [પ્ર૦] પુણ્ણમહસ્સ ણં મંતે ! જખ્ખિંદસ્સ પુચ્છા । [ઉ૦] અહ્હો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા—૧ પુખ્ખા, ૨ વહુપુપ્પિયા, ૩ ઉત્તમા, ૪ તારયા । તત્થ ણં યગમેગાય, સેસં જહા કાલસ્સ । एवं माणिमहस्स वि ।

૧૮. [પ્ર૦] મીમસ્સ ણં મંતે ! રક્ષસિંદસ્સ પુચ્છા । [ઉ૦] અહ્હો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા—૧ પડમા, ૨ પેડમાવતી, ૩ કણગા, ૪ રયણપ્પમા । તત્થ ણં યગમેગાય, સેસં જહા કાલસ્સ । एवं महामीमस्स वि ।

શ્રીરામચન્દ્રના લોકપાલોને અગ્ગમહિસીઓ.

૧૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મૂતાનેંદ્રના લોકપાલ નાગવિત્તને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે. તે આ પ્રમાણે—સુનંદા, સુમદ્દા, સુજાતા અને સુમના. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે બધું ચમરેન્દ્રના લોકપાલોની પેટે જાણવું. એ પ્રમાણે બાકી રહેલા ત્રણે લોકપાલોના સંબંધે જાણવું. જે દક્ષિણ દિશિના ઇન્દ્રો છે તેઓને ધરણેન્દ્રની પેટે (સ્. ૧૦.) જાણવું, અને તેઓના લોકપાલોને પણ ધરણેન્દ્રના લોકપાલોની પેટે જાણવું. તથા ઉત્તર દિશિના ઇન્દ્રોને મૂતાનેંદ્રની પેટે (સ્. ૧૩.) જાણવું. તેઓના લોકપાલોને પણ મૂતાનેંદ્રના લોકપાલોની પેટે જાણવું; પરન્તુ વિશેષ એ છે કે સર્વ ઇન્દ્રોની રાજધાનીઓ અને સિંહાસનો ઇન્દ્રના સમાન નામે જાણવાં. અને તેઓનો પરિવાર *તૃતીય શતકના પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવો. તથા બધા લોકપાલોની રાજધાનીઓ અને સિંહાસનો પણ તેઓનાં સમાન નામે જાણવાં. અને તેઓનો પરિવાર ચમરેન્દ્રના લોકપાલોના પરિવારની પેટે જાણવો.

શ્રીરામચન્દ્રને અગ્ગમહિસીઓ.

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પિશાચના ઇન્દ્ર અને પિશાચના રાજા કાલને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે. તે આ પ્રમાણે—કમલા, કમલપ્રમા, ઉપ્પલા અને સુદર્શના. તેમાંની એક એક દેવીને એક એક હજાર દેવીનો પરિવાર છે, બાકી બધું ચમરના લોકપાલોની પેટે જાણવું, અને પરિવાર પણ તેજ પ્રમાણે જાણવો. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે કાલા નામે રાજધાની અને કાલ નામે સિંહાસન જાણવું. તથા બાકી બધું પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે જાણવું. એ પ્રમાણે મહાકાલસંબંધે પણ જાણવું.

શ્રીરામચન્દ્રને અગ્ગમહિસીઓ.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મૂતના ઇન્દ્ર અને મૂતના રાજા સુરુપને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે—રૂપવતી, વહુરૂપા, સુરૂપા, અને સુમગા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે કાલેન્દ્રની પેટે જાણવું. અને એજ પ્રમાણે પ્રતિરૂપેન્દ્ર સંબંધે પણ જાણવું.

શ્રીરામચન્દ્રને અગ્ગમહિસીઓ.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! યક્ષના ઇન્દ્ર પૂર્ણમદ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે—પૂર્ણા, વહુપુત્રિકા, ઉત્તમા અને તારકા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે કાલેન્દ્રની પેટે જાણવું, અને એ પ્રમાણે માણિમદ્ર સંબંધે પણ જાણવું.

શ્રીરામચન્દ્રને અગ્ગમહિસીઓ.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! રાક્ષસના ઇન્દ્ર મીમને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે—પદ્મા, પદ્માવતી, કનકા અને રક્ષપ્રમા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે સર્વ કાલેન્દ્રનાં પેટે જાણવું. એ પ્રમાણે મહામીમેન્દ્ર સંબંધે પણ જાણવું.

૧ સુમતી ક ।

૧૪. * મગ૦ દ્વિ. સં૦ જ૦ ૧ ઉ૦ ૧ પ૦ ૧.

૧૯. [પ્ર૦] કિન્નરસ્ત્રળ ણં મંતે ! પુષ્કા । મજ્જો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા-૧ વહેસા, ૨ કેતુમતી, ૩ રતિસેના, ૪ રાપ્પિયા । તત્થ ણં, સેસં તં ચેવ, ઇવં કિપુરુસસ્સ વિ ।

૨૦. [પ્ર૦] સપુરુસસ્સ ણં પુષ્કા । [૩૦] મજ્જો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા-૧ રોહિણી, ૨ નવમિકા, ૩ હિરી, ૪ પુષ્કવતી । તત્થ ણં ઇગમેગાપ, સેસં તં ચેવ, ઇવં મહાપુરુસસ્સ વિ ।

૨૧. [પ્ર૦] અતિકાયસ્સ ણં પુષ્કા । [૩૦] મજ્જો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા-૧ મુયંગા, ૨ મુયગવતી, ૩ મહાકચ્છા, ૪ કુડા । તત્થ ણં સેસં તં ચેવ, ઇવં મહાકાયસ્સ વિ ।

૨૨. [પ્ર૦] ગીયરસ્સ ણં પુષ્કા । [૩૦] મજ્જો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા-૧ સુઘોસા, ૨ વિમલા, ૩ સુસ્સરા, ૪ સરસ્સર । તત્થ ણં સેસં તં ચેવ । ઇવં ગીયજસસ્સ વિ । સભેસિ ઇપ્પસિં જહા કાલસ્સ, નવરં સરિસનામિ-
વાઓ રાયહાણીઓ સીહાસણાણિ ય, સેસં તં ચેવ ।

૨૩. [પ્ર૦] ચંદસ્સ ણં મંતે ! જોહસિવસ્સ જોહસરણ્ણો પુષ્કા । [૩૦] મજ્જો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્કસાઓ, તં જહા-૧ ચંદપ્પમા, ૨ લોસિણામા, ૩ અચ્ચિમાલી, ૪ પમંકરા । ઇવં જહા જીવામિગમે જોહસિયહહેસપ તહેવ સુરસ્સ વિ
૧ સુરપ્પમા, ૨ આયવામા, ૩ અચ્ચિમાલી, ૪ પમંકરા । સેસં તં ચેવ, જાથ નો ચેવ ણં મેહુણવત્તિયં ।

૨૪. [પ્ર૦] ઇંગાલસ્સ ણં મંતે ! મહગ્ગહસ્સ કતિ અગ્ગમહિસીઓ પુષ્કા । [૩૦] મજ્જો ! ચત્તારિ અગ્ગમહિસીઓ પક્ક-
સાઓ, તં જહા-૧ વિજયા, ૨ વેજયંતી, ૩ જયંતી, ૪ અપરાજિયા । તત્થ ણં ઇગમેગાપ દેવીણ સેસં તં ચેવ ચંદસ્સ, નવરં
ઇંગાલવહેસપ વિમાણે, ઇંગાલગંસિ સીહાસણંસિ, સેસં તં ચેવ, ઇવં ઘિયાલગસ્સ વિ । ઇવં અટ્ટાસીતીપ વિ મહાગહાણં
માણિયઠ્ઠં, જાથ માવકેડસ્સ, નવરં વહેસગા સીહાસણાણિ ય સરિસનામગાણિ, સેસં તં ચેવ ।

૧૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! કિન્નરેન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે
-અવતંસા, કેતુમતી, રતિસેના અને રતિપ્રિયા. તેઓનાં એક એકનો પરિવાર વગેરે પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે જાણવું. એ પ્રમાણે કિપુરુષેન્દ્ર સંબંધે
પણ જાણવું.

કિન્નરેન્દ્રને અષ્ટ
મહિષીઓ.

૨૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! સપુરુષેન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે. તે આ
પ્રમાણે-રોહિણી, નવમિકા, હી અને પુષ્પવતી. તેમાં એક એકનો પરિવાર વગેરે બધું પૂર્વેની પેઠે જાણવું. એ પ્રમાણે મહાપુરુષેન્દ્ર સંબંધે પણ
જાણવું.

સપુરુષેન્દ્રને અષ્ટ
મહિષીઓ.

૨૧. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અતિકાયેન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ
પ્રમાણે-મુયંગા, મુયગવતી, મહાકચ્છા અને સુટા. તેમાં એક એકનો પરિવાર વગેરે બધું પૂર્વેની પેઠે જાણવું. એ પ્રમાણે મહાકાયેન્દ્ર સંબંધે
પણ જાણવું.

અતિકાયેન્દ્રને
અષ્ટમહિષીઓ.

૨૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! ગીતરતીન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ હોય છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ હોય છે, તે આ પ્રમાણે
-સુઘોષા, વિમલા, સુસ્સરા અને સરસ્વતી. તેમાં એક એકનો પરિવાર વગેરે બધું પૂર્વેની પેઠે જાણવું. એ પ્રમાણે ગીતયશ ઇન્દ્ર સંબંધે પણ
સમજવું. આ સર્વે ઇન્દ્રોને બાકીનું સર્વ કાલેન્દ્રની પેઠે જાણવું; પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, રાજધાનીઓ અને સિંહાસનો ઇન્દ્રના સમાન નામે
જાણવાં, બાકી સર્વે પૂર્વેની પેઠે જાણવું.

ગીતરતીન્દ્રને
અષ્ટમહિષીઓ.

૨૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જ્યોતિષ્કના ઇન્દ્ર અને જ્યોતિષ્કના રાજા ચન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને
ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-ચન્દ્રપ્રમા, જ્યોત્સ્નામા, અર્ચિર્માલી અને પ્રમંકરા-ઇત્યાદિ જેમ *જીવામિગમસૂત્રમાં જ્યોતિષ્કનાં ઉદે-
શકર્મા કહ્યું છે તેમ જાણવું. સૂર્યસંબંધે પણ બધું તેમજ જાણવું. સૂર્યને ચાર પટ્ટરાણીઓ છે, તે આ પ્રમાણે-સૂર્યપ્રમા, આતપામા, અર્ચિર્માલી
અને પ્રમંકરા-ઇત્યાદિ સર્વે પૂર્વેક કહેવું, યાવત્ તેઓ પોતાની રાજધાનીમાં સિંહાસનને વિષે મૈથુનનિમિત્તે મોગો મોગવી શક્તા નથી.

ચન્દ્રને અષ્ટ
મહિષીઓ.

૨૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! અંગારા નામના મહામહને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [૩૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે,
તે આ પ્રમાણે-વિજયા, વૈજયંતી, જયંતી અને અપરાજિતા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે બધું ચન્દ્રની પેઠે જાણવું પરન્તુ વિશેષ એ
છે કે, અંગારાવતંસકનામના વિમાનમાં અને અંગારક નામના સિંહાસનને વિષે યાવત્ મૈથુનનિમિત્તે મોગો મોગવતા નથી. બાકી સર્વે પૂર્વેવત્
જાણવું. તથા એ પ્રમાણે યાવત્ વ્યાલ નામે પ્રહસંબંધે પણ જાણવું. એમ અઠ્યાશી મહાપ્રહો માટે યાવત્ યાવત્ પ્રહ સુધી કહેવું. પરન્તુ
વિશેષ એ છે કે, અવતંસકો અને સિંહાસનો ઇન્દ્રના સમાન નામે જાણવાં. બાકી બધું પૂર્વપ્રમાણે જાણવું.

અંગારામહને
અષ્ટમહિષીઓ.

૨૫. [પ્ર૦] સકસ્સ ણં મંતે ! દેવિંદસ્સ દેવરજો પુચ્છા । [ઉ૦] અહો ! અદુ અગ્ગમહિસીઓ પપ્પસાઓ, તં જહા- ૧ પવમા, ૨ સિધા, ૩ સેયા, ૪ અંજુ, ૫ અમલા, ૬ અચ્છરા, ૭ નવમિયા, ૮ રોહિણી । તત્થ ણં યગ્ગમેનાય દેવીય સોલસ સોલસ દેવીસહસ્સા પરિવારો પપ્પસો । [પ્ર૦] પમૂ ણં તાઓ યગ્ગમેના દેવી અઘાઈં સોલસ સોલસ દેવિસહસ્સાઈં પરિવારં વિડઘ્ચિત્તય ? [ઉ૦] યથામેવ સપુઘ્ઘાવરેણં અઘ્ઘાવીસુત્તરં દેવિસયસહસ્સં પરિવારં વિડઘ્ચિત્તય, સેસં તુઘ્ઘિય ।

૨૬. [પ્ર૦] પમૂ ણં મંતે ! સક્કે દેવિંદે દેવરાયા સોહમ્મે કપ્પે, સોહમ્મવહેંસય વિમાણે, સમાય સુહમ્માય, સકંચિ સીહાસણંસિ તુઘ્ઘિયણં સંચિ, સેસં જહા અમરસ્સ, નવરં પરિવારો જહા મોહસેસય ।

૨૭. [પ્ર૦] સકસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરજો સોમસ્સ મહારણ્ણો કતિ અગ્ગમહિસીઓ પુચ્છા । [ઉ૦] અહો ! અચ્ચારિ- અગ્ગમહિસીઓ પપ્પસાઓ, તં જહા-૧ રોહિણી, ૨ મદ્દના, ૩ ચિત્તા, ૪ સોમા । તત્થ ણં યગ્ગમેના, સેસં જહા અમરકોગપા- લાણં, નવરં સયંપમે વિમાણે, સમાય સુહમ્માય, સોમંસિ સીહાસણંસિ, સેસં તં ચેવ, યથં જાવ-વેસમણસ્સ, નવરં વિમાણાઈં જહા તતિયસય ।

૨૮. [પ્ર૦] ઈસાણસ્સ ણં મંતે ! પુચ્છા । [ઉ૦] અહો ! અદુ અગ્ગમહિસીઓ પપ્પસાઓ, તં જહા-૧ કણ્ઘા, ૨ કણ્ઘરાઈ, ૩ રામા, ૪ રામરવિચ્ચયા, ૫ વસુ, ૬ વસુગુત્તા, ૭ વસુમિત્તા, ૮ વસુંધરા । તત્થ ણં યગ્ગમેનાય સેસં જહા સકસ્સ ।

૨૯. [પ્ર૦] ઈસાણસ્સ ણં મંતે ! દેવિંદસ્સ સોમસ્સ મહારજો કતિ અગ્ગમહિસીઓ પુચ્છા । [ઉ૦] અહો ! અચ્ચારિ અગ્ગમહિસીઓ પપ્પસાઓ । તં જહા-૧ પુહ્ઘવી, ૨ રાર્, ૩ રયણી, ૪ વિજ્ઞુ । તત્થ ણં, સેસં જહા સકસ્સ લોગપાલાણં, યથં જાવ વરુણસ્સ, ણવરં વિમાણા જહા અઉત્થસય, સેસં તં ચેવ, જાવ નો ચેવ ણં મેઘુણવસિયં । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! ચિ ।

દસમસય પંચમો ઉદ્દેસો સમત્તો ।

૨૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવના ઇન્દ્ર દેવના રાજા શક્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને આઠ પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-પવા, શિવા, શ્રેયા, અંજુ, અમલા, અપ્સરા, નવમિકા અને રોહિણી. તેમાંની એક એક દેવીનો સોલ્લ સોલ્લ હજાર દેવીઓનો પરિવાર હોય છે. તેમાંની એક એક દેવી બીજી સોલ્લ સોલ્લ હજાર દેવીઓના પરિવારને વિકુર્વી શકે છે. એ પ્રમાણે પૂર્વાપર મઠ્ઠીને એક લાખ અને અઠ્યાવીશ હજાર દેવીઓના પરિવારને વિકુર્વવા સમર્થ છે. એ પ્રમાણે ત્રુટિક (દેવીઓનો સમૂહ) કહ્યો.

૨૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્ર સૌધર્મ દેવલોકમાં સૌધર્માવતંસક વિમાનમાં સુધર્મા સમાને વિપે અને શક્ર નામે સિંહાસનમાં બેસી તે ત્રુટિક (દેવીઓના સમૂહ) સાથે ભોગ ભોગવવા સમર્થ છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! બાકી સર્વ ચમરેન્દ્રની પેઠે જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે તેનો પરિવાર તૃતીયશતકના પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવો.

૨૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રના (લોકપાલ) સોમ નામે મહારાજાને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-રોહિણી, મદના, ચિત્રા અને સોમા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે ચમરેન્દ્રના લોકપાલોની પેઠે જાણવો; પરન્તુ વિશેષ એ છે કે સ્વયંપ્રભ નામે વિમાનમાં, સુધર્મા સમામાં અને સોમ નામના સિંહાસનમાં બેસીને મૈથુનનિમિત્તે દેવીઓની સાથે ભોગ ભોગવવા સમર્થ નથી-હલ્યાદિ સર્વ પૂર્વવત્ જાણવું. એ પ્રમાણે યાવત્ વૈશ્રમણ સુધી જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે તેમના વિમાનો તૃતીયશતકમાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવાં.

૨૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ઈશાનેન્દ્રને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને આઠ પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-કૃષ્ણા, કૃષ્ણરાજિ, રામા, રામરક્ષિતા, વસુ, વસુગુત્તા, વસુમિત્રા અને વસુંધરા. તેમાં એક એક દેવીનો પરિવાર વગેરે બધું શક્રની પેઠે જાણવું.

૨૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનના [લોકપાલ] સોમ નામે મહારાજાને કેટલી પટ્ટરાણીઓ કહી છે ? [ઉ૦] હે આર્ય ! તેને ચાર પટ્ટરાણીઓ કહી છે, તે આ પ્રમાણે-પૃથિવી, રાત્રી, રજની, અને વિદ્યુત્. તેમાં એક એકનો પરિવાર વગેરે બાકી બધું શક્રના લોકપાલોની પેઠે જાણવું. એ પ્રમાણે યાવત્ વરુણ સુધી જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે ત્રીચોથા શતકમાં કહ્યા પ્રમાણે વિમાનો કહેવા, બાકી બધું પૂર્વની પેઠે જાણવું. યાવત્ તે મૈથુનનિમિત્તે [રાજધાનીમાં પોતાના સિંહાસન ઉપર બેસીને] ભોગ ભોગવતા નથી. હે ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે.

દશમ ઘણે પંચમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

શક્રને અગ્ગમહિ-
સીઓ.

શક્ર સુધર્મા સમા-
માં દેવીઓ સાથે
ભોગ ભોગવવા
સમર્થ છે ?

શક્રના લોકપાલ
સોમને અગ્ગમહિ-
સીઓ.

ઈશાનેન્દ્રને અગ્ગ-
મહિસીઓ.

ઈશાનના લો-
કપાલ સોમને
અગ્ગમહિસીઓ.

छट्ठओ उद्देशो ।

१. [प्र०] कहि णं भंते ! सक्कस्स वेधिदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! जंबुद्वीपे दीपे मंदरस्स पत्तयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाय एवं जहा रायप्पसेणइजे, जाव पंच वडेंसगा पणत्ता, तं जहा-१ असोगवडेंसए, जाव मज्जे ५ सोहम्मवडेंसए । से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामधिक्खंभेणं, “एवं जह सूरियामे तद्देव माणं, तद्देव उवधाओ । सक्कस्स य अभिसेओ तद्देव जह सूरियामस्स ॥ अलंकारअणिया तद्देव जाव आय-रक्ख सि” दो सागरोवमाइं ठिती ।

[प्र०] सक्केणं भंते ! वेधिदे देवराया केमहिद्विप, जाव केमहासोक्खे । [उ०] गोयमा ! महिद्विप, जाव महासोक्खे । से णं तत्थ वसीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव विहरए, एवं महिद्विप जाव महासोक्खे सक्के वेधिदे देवराया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

दसमसए छट्ठओ उद्देशो समत्तो ।

षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्रनी सुधर्मा नामे सभा क्यां कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिणे आ रत्नप्रभापृथिवीना [बहु सम अने रमणीय भूमिभागनी उंचे घणा कोटाकोटि योजन दूर सौधर्म नामे देवलोकने विषे] इत्यादि *‘रायपसेणीय’ सूत्रमां कक्षा प्रमाणे यावत् पांच अवतंसक विमानो कक्षा छे, ते आ प्रमाणे-अशोकावतंसक, यावत् वच्चे सौधर्मावतंसक छे. ते सौधर्मावतंसक नामे महा विमाननी लंबाई अने पहोळ्याई साडा बार लाख योजन छे. शक्रनुं प्रमाण, उपपात (उपजबुं), अभिषेक, अलंकार अने अर्चनिका (पूजा)-इत्यादि यावत् आत्मरक्षको सूर्याभ देवनी पेटे जाणवा. तेनी स्थिति (आयुष) बे सागरोपमनी छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र केवी महाऋद्धिवाळो छे, केवा महासुखवाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते महाऋद्धिवाळो यावत् महासुखवाळो बत्तीश लाख विमानोनी स्वामी थइने यावद् विहरे छे, ए प्रमाणे महाऋद्धिवाळो अने महासुखवाळो ते देवेन्द्र देवराज शक्र छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

दशम वृत्ते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

१ -महिद्विप-क । २ -सोक्खा-क ।

३. *सुओ अवतंसकविमाननुं वगीन रायप० प० ५९. †सुओ रायप० प० ९७-११२.

सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] क्वि णं भंते! उत्तरिष्ठाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं वीवे पण्णत्ते ? [उ०] एवं जहा जीवामिग्गे तद्देव निरवसेसं, जाव सुद्धदंतदीवो त्ति । एए अट्टावीसं उद्देशगा भाणियत्ता । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ।

दसमसए सत्तमादि चोत्तीसइमपजन्ता अट्टावीसं उद्देशा समत्ता ।

समत्तं दसमं सयं ।

उद्देशक ७-३४.

१. [प्र०] हे भगवन्! उत्तरमां रहेनारा एकोरुक मनुष्योनो एकोरुक नामे द्वीप कये स्थळे क्खो छे ? [उ०] हे गौतम *जीवामिग-मसूत्रमां क्ख्वा प्रमाणे सर्धे द्विपो संबन्धे यावत् सुद्धदंतद्वीप सुधी क्खेवुं. ए प्रमाणे प्रत्येक द्वीप संबन्धे एक एक उद्देशक क्खेवो. एम अठ्यावीश उद्देशको क्खेवा. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [एम क्खी भगवान् गौतम यावत् विहरे छे.]

दशम शते ७-३४ उद्देशको समाप्त.

दशम शतक समाप्त.

एकारसं सयं ।

१.

उत्पल सालु पलासे कुंभी नाली य पडम कझीय ।
नलिन सिव लोग काला-लभिय दस दो य एकारे ॥

पढमो उद्देशो ।

२. तेषं कालेणं तेषं समयणं रायगिहे जाव पञ्जुवासमाणे एवं वयासि-[प्र०] उत्पले णं मंते ! एगपस्य किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] गोयमा ! एगजीवे, णो अणेगजीवे । तेष परं जे अन्ने जीवा उववञ्जंति तेषं णो एगजीवे, अणेगजीवे ।

एकादश शतक.

१. [उद्देश संग्रह-] १ उत्पल, २ शाळक, ३ पलाश, ४ कुंभी, ५ नाडीक, ६ पद्म, ७ कर्णिका, ८ नलिन, ९ शिवराजर्षि, १० लोक, ११ काल, अने १२ आलभिक-ए संबन्धे अगीयारमां शतकमां बार उद्देशको छे. [उत्पल-अमुक जातना कमल-संबन्धे प्रथम उद्देशक, शाळक-उत्पलकन्द-संबन्धे बीजो उद्देशक, पलाश-खाखरा-ना वृक्ष संबन्धे त्रीजो उद्देशक, कुंभी वनस्पति संबन्धे चोथो उद्देशक, नाडीक वनस्पति संबन्धे पांचमो उद्देशक, पद्म-अमुक जातना कमल-विषे छट्टो उद्देशक, कर्णिका संबन्धे सातमो उद्देशक, नलिन-अमुक प्रकारना कमल-संबन्धे आठमो उद्देशक, शिवराजर्षि संबन्धे नवमो उद्देशक, लोकने विषे दशमो उद्देशक, कालसंबन्धे अगीआरमो उद्देशक, अने आलभिक-आलभिकानगरीमां करेला प्रश्न-संबन्धे बारमो उद्देशक.-ए प्रमाणे अगीयारमां शतकमां बार उद्देशको छे.]

*प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] ते काले-ते समये राजगृह नगरने विषे पर्युपासना करता [गौतम] आ प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! उत्पल शुं एक जीववाळुं छे के अनेकजीववाळुं छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक जीववाळुं छे, पण अनेक जीववाळुं नथी. ह्यार पछी ज्यारे ते उत्पलने विषे बीजा जीवो-जीवाभ्रित पांदडा वगेरे अवयवो-उगे छे ह्यारे ते उत्पल एक जीववाळुं नथी, पण अनेक जीववाळुं छे.

उत्पल-
उत्पल पक्षीको छे
के अनेक जीवो छे ।

* प्रथम उद्देशकार्थसंग्रह गाथा-“१ उपपात २ परिमाण ३ अपहार ४ उंचार्ह ५ ज्ञानावरणादिकर्मनो बन्ध ६ वेदक ७ उदय ८ उदीरणा ९ लेखा १० विट्टी य ११ नाणे य ॥ १२ जोगु-१३ वज्रो १४ वक्र-१५ रसमाह १६ कसासगे १७ य आहारे । १८ विरहे १९ किरिया २० बन्धे २१ सन्न-२२ कसायि-२३ रिध-२४ बन्धे य ॥ २५ सक्ति-२६ विद्य-२७ अनुबन्धे २८ संवेहा-२९ हार-३० डिङ्-३१ समुद्रवाप । ३२ चयणं ३३ मूलादीसु य उववाभो सन्धजीवाणं ॥”

संग्रह गाथानो अर्थ-१ उपपात, २ परिमाण, ३ अपहार, ४ उंचार्ह, ५ ज्ञानावरणादिकर्मनो बन्ध, ६ वेदक, ७ उदय, ८ उदीरणा, ९ लेखा, १० विट्टी (सन्धग्रह, मिश्रग्रह अने मिथ्याग्रह), ११ ज्ञान, १२ योग, १३ उपयोग, १४ वज्रो, १५ रसादि १६ उच्छ्वासक, १७ आहार, १८ विरति, १९ क्रिया, २० बन्धक, २१ संज्ञा, २२ कषाय, २३ शीवेहादि, २४ समुद्रवाप, २५ संज्ञी, २६ इन्द्रिय, २७ अनुबन्ध, २८ संवेध, २९ आहार, ३० स्थिति, ३१ समुद्रवाप, ३२ चयन, अने ३३ सर्व जीवोनो मूलादिमां उपपात-एरीवे प्रथम उद्देशकना ३३ द्वारो अणाम्या छे.

३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कओहितो उववज्जंति ? किं नेरपहितो उववज्जंति, तिरि० मणु० देवेहितो उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरतिपहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिपहितो वि उववज्जंति मणुस्सेहितो० देवेहितो वि उववज्जंति । एवं उववाओ भाणिअहो जहा वज्जंतीप वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणेति ।

४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा एगसमप णं केवइवा उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! जहणेणं एको वा दो वा तिक्कि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।

५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा समय २ अवहीरमाणा २ केवतिकालेणं अवहीरंति ? [उ०] गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समय २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया ।

६. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिआ सरीरोगाहणा पत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहणेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ-भागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ।

७. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा ? [उ०] गोयमा ! नो अबंधगा, बंधप वा, बंधगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

८. [प्र०] नवरं आउअस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! १ बंधप वा, २ अबंधप वा, ३ बंधगा वा, ४ अबंधगा वा, ५ अहवा बंधपअ अबंधप अ, ६ अहवा बंधप अ अबंधगा य, ७ अहवा बंधगा य अबंधप अ, ८ अहवा बंधगा य अबंधगा य । एते अट्ठ भंगा ।

९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा अवेदगा ? [उ०] गोयमा ! नो अवेदगा, वेदप वा वेदगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! [उत्पलमां] ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे—शुं नैरयिकथी, तिर्यचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो नैरयिकथी आवीने उपजता नथी, पण तिर्यचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे. जेम प्रज्ञापनासूत्रनां *व्युत्क्रांतिपदमां कहुं छे ते प्रमाणे वनस्पतिकायिकोमां यावत् ईशान देवलोक सुधीना जीवो नो उपपात कहेवो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो [उत्पलमां] एक समयमां केटला उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्यात के असंख्याता जीवो एक समयमां उत्पन्न थाय.

५. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो समये समये काढवामां आवे तो केटले काले ते पूरा काढी शकाय ? [उ०] हे गौतम ! जो ते जीवो समये समये असंख्य काढवामां आवे, अने ते असंख्य उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल सुधी काढवामां आवे तो पण ते पूरा काढी शकाय नहीं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पलना जीवोनी केटली मोटी शरीरायगाहना कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य—ओछामां ओछी—अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट कइंक अधिक हजार योजन होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो शुं ज्ञानावरणीय कर्मना बंधक छे के अबंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानावरणीय कर्मना अबंधक नथी, पण बन्धक छे. अथवा एक जीव बंधक छे अने अनेक जीवो पण बंधक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतरायकर्म संबंधे पण जाणवुं.

८. [प्र०] परन्तु आयुषकर्मना संबंधे प्रश्न करवो. [हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो आयुषकर्मना बंधक छे के अबंधक छे ?] [उ०] हे गौतम ! १ [उत्पलनो] एक जीव बंधक छे, २ एक जीव अबंधक छे, ३ अनेक जीवो बंधक छे, ४ अनेक जीवो अबंधक छे, ५ अथवा एक बंधक अने एक अबंधक छे, ६ अथवा एक बंधक अने अनेक अबंधक छे, ७ अथवा अनेक बंधक अने एक अबंधक छे, ८ अथवा अनेक बंधक अने अनेक अबंधक छे. ए प्रमाणे ए आठ भांगा जाणवा.

९. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना वेदक छे के अवेदक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अवेदक नथी, पण एक जीव वेदक छे अथवा अनेक जीवो अवेदक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतराय कर्म सुधी जाणवुं.

३. * प्रज्ञा० पद ६ प० २०४.

७. † उत्पलने प्रारंभमां ज्यारे एकज पांडडुं होय छे स्यारे तेमां एक जीव होवाथी एक जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मनो बन्धक कहेवाय छे, परन्तु ज्यारे अनेक पांडडा थाय छे स्यारे तेमां अनेक जीवो होवाथी अनेक जीवो बन्धक कहेवाय छे.—टीका.

उपपात—जीवो
उत्पलमां क्यांथी
आवीने उप-
जे छे ?

परमाण—एक समय-
मां केटला उपजे ?

अवहार—प्रतिसमय
काढवामां आवे तो
केटले काढी शक्य ?

शरीरायगाहना.

ज्ञानावरणीयादि
कर्मना बंधक.

आयुष कर्मना ब-
न्धक.

ज्ञानावरणीयादि-
कर्मना वेदक.

१०. [प्र०] ते वं मंते जीवा किं साक्षात्पेयमा असात्पापेयमा ? [उ०] गोचमा ! साक्षात्पेय वा, असात्पापेय वा मनु मंग ।

११. [प्र०] ते वं मंते ! साक्षात्पेयमा कस्मत्स किं उदीरमा अशुदीरमा ? [उ०] गोचमा ! जो अशुदीरमा, उदीरमा वा । एवं जाय अंतरायकस ।

१२. [प्र०] ते वं मंते ! जीवा साक्षात्पेयमा कस्मत्स किं उदीरमा अशुदीरमा ? [उ०] गोचमा ! जो अशुदीरमा, उदीरमा वा, अशुदीरमा वा । एवं जाय अंतरायकस । अवरं वेपजिजा-इयसु मनु मंग ।

१३. [प्र०] ते वं मंते ! जीवा किं कण्डलेसा, नीललेसा, तेउलेसा ? [उ०] गोचमा ! कण्डलेसे वा, जाय तेउलेसे वा, कण्डलेसा वा नीललेसा वा काउलेसा वा तेउलेसा वा । अहवा कण्डलेसे य नीललेसे य, एवं एय दुयार्सजोग-तिया-संयोग-वउकसंयोगेण असीती मंग मवति ।

१४. [प्र०] ते वं मंते ! जीवा किं सम्मदिट्टी, मिच्छादिट्टी, सम्मामिच्छादिट्टी ? [उ०] गोचमा ! जो सम्मदिट्टी, जो सम्मामिच्छादिट्टी, मिच्छादिट्टी वा मिच्छादिट्टिणो वा ।

१५. [प्र०] ते वं मंते ! जीवा किं नाणी अजाणी ? [उ०] गोचमा ! जो नाणी, अजाणी वा, अजाणिणो वा ।

१६. [प्र०] ते वं मंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? [उ०] गोचमा ! जो मणजोगी, जो वयजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो साताना वेदक छे के असाताना वेदक छे ? [उ०] हे गीतम ! ते जीवो साताना वेदक छे अने असाताना पण वेदक छे. अहीं पूर्ण प्रमाणे आठ भांगा कहैवा.

११. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो ज्ञानावरणीय कर्मना उदयवाळ छे के अनुदयवाळ छे ? [उ०] हे गीतम ! तेओ ज्ञानावरणीयकर्मना अनुदयवाळ नथी, पण एक जीव उदयवाळो छे अथवा अनेक जीवो उदयवाळ छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म संबंधे जाणवुं.

ज्ञानावरणीय कर्मना उदय-

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना उदीरक छे के अनुदीरक छे ? [उ०] हे गीतम ! तेओ अनुदीरक नथी, पण एक जीव उदीरक छे, अथवा अनेक जीवो उदीरक छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म सुधी जाणवुं परन्तु विशेष ए छे के वेदनीयकर्म अने आयुषकर्ममां पूर्ववत् (सू० ८) आठ भांगा कहैवा.

उदीरक-

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो कृष्णलेस्यावाळ, नीललेस्यावाळ, कापोतलेस्यावाळ के तेजोलेस्यावाळ होय ? [उ०] हे गीतम ! एक जीव कृष्णलेस्यावाळो, यावत् एक तेजोलेस्यावाळो होय, अथवा अनेक जीवो कृष्णलेस्यावाळ, नीललेस्यावाळ, कापोतलेस्यावाळ अने तेजोलेस्यावाळ होय, अथवा एक कृष्णलेस्यावाळो अने एक नीललेस्यावाळो होय. ए प्रमाणे द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग अने चतुष्कसंयोग वडे सर्व मळीने एही भांगा कहैवा.

लेस्या-

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो सम्यग्दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि छे, के सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे ? [उ०] हे गीतम ! तेओ सम्यग्दृष्टि नथी, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नथी, पण एक जीव मिथ्यादृष्टि छे, अथवा अनेक जीवो मिथ्यादृष्टिओ छे.

दृष्टि-सम्यग्दृष्टि के मिथ्यादृष्टि

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गीतम ! ते ज्ञानी नथी, पण एक अज्ञानी छे, अथवा अनेक अज्ञानीओ छे.

ज्ञान-ज्ञानी के अज्ञानी

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो मनयोगी, वचनयोगी के काययोगी छे ? [उ०] हे गीतम ! तेओ मनयोगी नथी, वचनयोगी नथी, पण एक काययोगी छे अथवा अनेक काययोगीओ छे.

योग-मनयोगी वचनयोगी के काययोगी

११. * उत्पल वनस्पतिकारिक होवाधी तेमां प्रथमनी चार केस्याओ होय छे. एकयोगे एक जीवना चार तथा अनेक जीवोना चार भांगा मळीने तेओना आठ भांगा बाय छे. द्विकसंयोगमा एक अने अनेकनी वउमंगी बाय छे. कृष्णादि चार केस्याना छ द्विकसंयोग बाय छे, तेने पूर्वोक्त वउमंगी साथे शुणता द्विकयोगी जोवीश विकल्पो बाय छे. चार केस्याना त्रिकयोगी आठ विकल्प बाय छे, तेने पूर्वोक्त वउमंगी साथे शुणता त्रिकसंयोगी चत्रीश विकल्पो बाय छे, अने वउःसंयोगे सोळ विकल्पो बाय छे, सर्व मळीने एही भांगा बाय छे.

१७. [प्र०] ते जं मंते ! जीवा किं सागारोवडत्ता, अणागारोवडत्ता ? [उ०] गोयमा ! सागारोवडत्ते वा, अणागारोवडत्ते वा अद्दु भंगा ।

१८. [प्र०] तेसि जं मंते ! जीवाणं सरीरगा कतिवधा, कतिगंधा, कतिरसा, कतिकामा पचत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचवधा, पंचरसा, पुगंधा अद्दुफासा पचत्ता । ते पुण अप्यणा अवधा, अगंधा, अरसा, अफासा पचत्ता ।

१९. [प्र०] ते जं मंते ! जीवा किं उस्सासगा, निस्सासगा, णोउस्सासनिस्सासगा ? [उ०] गोयमा ! उस्सासय वा, निस्सासय वा, णोउस्सासनिस्सासय वा, उस्सासगा वा, निस्सासगा वा, णोउस्सासनिस्सासगा वा, अद्दुवा उस्सासय य निस्सासय य, अद्दुवा उस्सासय य णोउस्सासनिस्सासय य, अद्दुवा निस्सासय य णोउस्सासनिस्सासय य, अद्दुवा उस्सासय य निस्सासय य णोउस्सासनिस्सासय य । अद्दु भंगा । एय छवीसं भंगा भवति ।

२०. [प्र०] ते जं मंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? [उ०] गोयमा ! णो अप्पाहारगा, आहारय वा, अणाहारय वा एवं अद्दु भंगा ।

उपयोग-साकार उप-
योगी के अनाकार
उपयोगी ?

१७. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुं ते [उत्पलना] जीवो साकार उपयोगवाळा छे के अनाकार उपयोगवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! एक जीव साकार उपयोगवाळो छे, अथवा एक जीव अनाकारउपयोगवाळो छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे (सू० ८) आठ भांगा कहेवा.

शरीरमा वर्णादि-

१८. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवोना शरीरो केटला वर्णवाळां, केटलां गंधवाळां, केटला रसवाळां अने केटला स्पर्शवाळां कद्दां छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच वर्णवाळां, पांच रसवाळां, वे गंधवाळां अने आठ स्पर्शवाळां कद्दां छे. अने जीवो पोते वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श रहित छे.

उच्छ्वासक, निःश्वास-
क अने अनुच्छ्वासक-
निःश्वासक.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुं ते [उत्पलना] जीवो उच्छ्वासक (श्वास लेनारा) छे, निःश्वासक (श्वास मूकनारा) छे के अनुच्छ्वासक-निःश्वासक (श्वास नहि लेनारा अने नहि मूकनारा) होय छे ? [उ०] हे गौतम ! *१ कोई एक उच्छ्वासक छे, २ कोई एक निःश्वासक छे, अने ३ कोई एक अनुच्छ्वासकनिःश्वासक पण छे. ४ अथवा अनेक जीवो उच्छ्वासक छे, ५ अनेक निःश्वासक छे, अने ६ अनेक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक पण छे. १-४ अथवा एक उच्छ्वासक, अने एक निःश्वासक छे, १-४ अथवा एक उच्छ्वासक अने एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक छे, १-४ अथवा एक निःश्वासक अने एक अनुच्छ्वासक-निःश्वासक छे, १-८ अथवा एक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक अने एक अनुच्छ्वासकनिःश्वासक छे.-ए प्रमाणे आठ भांगा करवा. ए सर्व मळीने छवीश भांगा थाय छे.

आहारक के अनाहा-
रक ?

२०. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुं ते [उत्पलना] जीवो आहारक छे के अनाहारक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सधळ अनाहारक नथी, पण एक आहारक छे, अथवा एक अनाहारक छे.-इत्यादि आठ भांगा अहीं कहेवा.

१९. * एक अने अनेकना एकत्व योगे छ भांगा, द्विकयोगे बार भांगा, अने त्रिकयोगे आठ भांगा थाय छे. तेसां एकत्व योगे छ भांगा कहेला छे. द्विकयोगे बार भांगा आ प्रमाणे—

	उ. नि.	उ. अनु.	नि. अनु.
१-एक	१-१	१-१	१-१
	१-२	१-२	१-२
२-अनेक	२-१	२-१	२-१
	२-२	२-२	२-२

त्रिकयोगे आठ भांगा थाय छे, ते आ प्रमाणे—

उ.	नि.	अनु.
१.	१.	१.
१.	१.	२.
१.	२.	१.
१.	२.	२.
२.	१.	१.
२.	१.	२.
२.	२.	१.
२.	२.	२.

अथवा मळीने २९ भांगा थाय छे.

२१. [प्र०] हे णं मंते ! जीवा किं विरता, अविरता, विरताविरता ? [उ०] गोयमा ! नो विरता नो विरताविरता, अविरता वा अविरता वा ।

२२. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किं सकिरिया अकिरिया ? [उ०] गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिया वा, सकिरिया वा ।

२३. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्टविहबंधगा ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहबंधगा वा, अट्टविहबंधगा वा । अट्ट मंगा ।

२४. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिग्गहसन्नोवउत्ता ? [उ०] गोयमा ! आहारसन्नोवउत्ता वा असीती मंगा ।

२५. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किं कोहकसायी, माणकसायी, मायाकसायी, लोभकसायी ? [उ०] असीती मंगा ।

२६. [प्र०] ते णं मंते जीवा किं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ? [उ०] गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा वा, नपुंसगवेदगा वा ।

२७. [प्र०] ते णं मंते जीवा किं इत्थिवेदबंधगा, पुरिसवेदबंधगा, नपुंसगवेदबंधगा ? [उ०] गोयमा ! इत्थिवेदबंधगा वा, पुरिसवेदबंधगा वा, नपुंसगवेदबंधगा वा छवीसं मंगा ।

२८. [प्र०] ते णं मंते जीवा किं सजी, असजी ? [उ०] गोयमा ! नो सजी, असजी वा असज्जिणो वा ।

२९. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किं सइंदिया अण्णिंदिया ? [उ०] गोयमा ! नो अण्णिंदिया, सइंदिया वा, सइंदिया वा ।

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो सर्वविरति छे, अविरति छे के विरताविरत (देशविरति) छे ? [उ०] हे गौतम ! ते सर्वविरति नथी, विरताविरत (देशविरति) नथी, पण एक जीव अविरति छे, अथवा अनेक जीवो अविरति छे.

सर्वविरति, अविरति के देशविरति छे ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो शुं सक्रिय छे के अक्रिय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अक्रिय नथी पण तेमानो एक जीव सक्रिय छे अथवा अनेक जीवो सक्रिय छे.

सक्रिय के अक्रिय ।

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे के आठ प्रकारे कर्मना बंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे, अथवा आठ प्रकारे बंधक छे. अहीं आठ भांगा कहेवा.

सप्तविधबंधक के अष्टविधबंधक ।

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळ, भयसंज्ञाना उपयोगवाळ, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळ, के परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळ छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ आहारसंज्ञाना उपयोगवाळ छे—इत्यादि *एंशी भांगा कहेवा.

आहारदि संज्ञानो.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो क्रोधकषायवाळ, मानकषायवाळ, मायाकषायवाळ के लोभकषायवाळ छे ? [उ०] हे गौतम ! अहीं पण एंशी भांगा कहेवा.

कषाय.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदवाळ, पुरुषवेदवाळ के नपुंसकवेदवाळ होय ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदवाळ नथी, पुरुषवेदवाळ नथी, पण एक जीव नपुंसकवेदवाळो के अनेक नपुंसकवेदवाळ होय.

वेद.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदना बंधक, पुरुष वेदना बंधक के नपुंसक वेदना बंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदना बंधक, पुरुषवेदना बंधक अथवा नपुंसकवेदना बंधक छे. अहीं पण छवीश भांगा कहेवा.

वेदना बंधक.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलजीवो संज्ञी छे के असंज्ञी छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संज्ञी नथी, एक असंज्ञी छे, अथवा अनेक असंज्ञी छे.

संज्ञी के असंज्ञी ।

२९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलजीवो इंद्रियसहित छे के इंद्रियरहित छे ? [उ०] हे गौतम ! ते इंद्रियरहित नथी, पण एक जीव इंद्रियवाळो छे, अथवा अनेक जीवो इंद्रियवाळ छे.

संन्द्रिय के अन्द्रिय ।

२४. * लेइयाद्वारनी पेठे अहिं पण एंशी भांगा कहेवा. जुओ सू० १३ शुं टीप्पन.

२७. † अहिं पण एक अने अनेकना उच्छ्वासकादिनी पेठे छवीश भांगा कहेवा. जुओ सू० १९ शुं टीप्पन.

३०. [प्र०] से बं मंते ! उप्पलजीवेति कालतो केवचिरं होए ? [उ०] गोयमा ! जहणेणं अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अंश-
केजं कालं ।

३१. [प्र०] से बं मंते ! उप्पलजीवे पुडविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गति-
रागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं जहणेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं असंखेज्जारं भवग्गहणारं । कालादेसेणं जह-
णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा—एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३२. [प्र०] से णं मंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे० [उ०] एवं चेवं, एवं जहा पुडविजीवे मणिए तहा, जाव वाउ-
जीवे माणियवे ।

३३. [प्र०] से णं मंते ! उप्पलजीवे से वणस्सइजीवे, से पुणरवि उप्पलजीवेति केवइयं कालं सेवेज्जा—केवतियं कालं
गतिरागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं जहणेणं दो भवग्गहणारं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणारं, कालादेसेणं जह-
णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं तरुकाळं, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३४. [प्र०] से णं मंते ! उप्पलजीवे वेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवे ति केवइयं कालं सेवेज्जा—केवइयं कालं गति-
रागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं जहणेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं संखेज्जारं भवग्गहणारं, कालादेसेणं जहणेणं
दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा—एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं तेइंदियजीवे, एवं
चउरिइयजीवे वि ।

३५. [प्र०] से बं मंते ! उप्पलजीवे एवेइयतिरिक्खजोणियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेति पुच्छा । [उ०] गोयमा !
मवादेसेणं जहणेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणारं, कालादेसेणं जहणेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पुक्कोसि-
पुहुत्तं, एवतियं कालं सेवेज्जा—एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवतियं कालं गतिरा-
गतिं करेज्जा ।

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव उत्पल्लपणे कालथी क्यांसुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त सुधी अने
उत्कृष्टथी असंख्य काल सुधी रहे.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव पृथिवीकायिकमां आवे, अने फरीथी पाळो उत्पल्लमां आवे—ए प्रमाणे केटलो काळ
सेवे—केटलो काल सुधी गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी^{*} बे भव अने उत्कृष्टथी असंख्यात भव सुधी
गमनागमन करे, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी असंख्यकाल; एटलो काळ सेवे—एटलो काल गमनागमन करे.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव अक्कायिकपणे उपजे अने फरीथी ते पाळो उत्पल्लमां आवे, ए प्रमाणे केटलो काळ
गमनागमन करे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम पृथिवीना जीव संबन्धे (सू० ३१) कसुं तेम यावत् वायुना जीव सुधी कहेवुं.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव वनस्पतिमां आवे, अने ते फरीथी उत्पल्लमां आवे ए प्रमाणे केटलो काल सेवे—केटलो
काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, अने उत्कृष्टथी अनंत भव सुधी गमनागमन करे. कालनी
अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी अनंत काल—वनस्पतिकाल पर्यन्त; एटलो काळ सेवे—एटलो काल गमनागमन करे.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पल्लो जीव वेइन्द्रियमां आवे, अने ते फरीथी उत्पल्लपणे उपजे; ए प्रमाणे ते केटलो काल सेवे—
केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, उत्कृष्टथी संख्याता भवो; तथा कालनी अपेक्षाए जघ-
न्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्यातो काल; एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे. एज प्रमाणे त्रीन्द्रियपणे, अने चतु-
रिन्द्रियजीवपणे गमनागमन करवामां पूर्ववत् काल जाणवो.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पल्लो जीव पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिक्कापणे उपजे अने ते फरीथी उत्पल्लपणे उपजे, एम केटलो काळ
गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, उत्कृष्टथी आठ भवो, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने
उत्कृष्टथी पूर्वकोटिपृथक्त्व; एटलो काळ सेवे—एटलो काल गमनागमन करे. ए प्रमाणे उत्पल्लो जीव मनुष्य साये पण यावत् एटलो काळ
गमनागमन करे.

३१. * प्रथम भव पृथिवीकायिकपणे अने नीचो उत्पल्लपणे, सारपळी मनुष्यादि गतिमां आवे—टीका.

अनुभव-उत्पल्लो
जीव उत्पल्लपणे क्यां
सुधी रहे ?

सर्व-उत्पल्लो
जीव पृथिवीमां आषी
उत्पल्लमां आवे त्यारे
केटलो काल गमना-
गमन करे ?

उत्पल्लो जीव वन-
स्पतिमां आवे पुनः
उत्पल्लमां आवे त्यारे
हे केटलो काल
गमनागमन करे ?

उत्पल्लो जीव वेइ-
न्द्रियमां आवे
उत्पल्लपणे उपजे
त्यारे केटलो काल
जाव ?

उत्पल्लो जीव पं-
चेन्द्रिय तिर्यच योनि
उत्पल्लमां आवे त्यारे
केटलो काल जाव ?

३६. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किमाहारमाहारंति ? [उ०] गौतम ! इक्ष्मो अर्णतपदेसियाहं वृक्षारं, एवं जहा माहाद-
हेक्ष्य वणस्सहकाहयाणं माहारो तद्देव जाव सन्नप्यणयाप माहारमाहारंति । अवरं नियमा छद्दिसिं सेसं तं वेव ।

३७. [प्र०] तेषि णं मंते ! जीवाणं केवइयं काळं डिई पज्जसा ? [उ०] गौतम ! जहणेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस
वाससहस्सार्हं ।

३८. [प्र०] तेषि णं मंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पज्जसा ? [उ०] गौतम ! तन्नो समुग्घाया पज्जसा । तं जहा-
वेइयासमुग्घाय, कसायसमुग्घाय, मारणंतियसमुग्घाय ।

३९. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहता मरंति, असमोहता मरंति ? [उ०] गौतम ! समो-
हता वि मरंति, असमोहता वि मरंति ।

४०. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा अणंतरे उच्चइत्ता कहिं गच्छंति—कहिं उववज्जंति ? किं नेरप्यसु उववज्जंति, तिरिक्ख-
जोणियसु उववज्जंति ? एवं जहा वज्जंती उच्चइत्ताय वणस्सहकाहयाणं तहा माणियज्जं ।

४१. [प्र०] अह मंते ! सब्बे पाणा, सब्बे भूता, सब्बे जीवा, सब्बे सत्ता, उप्पलमूलत्ताय, उप्पलकंदत्ताय, उप्पलनाल-
त्ताय, उप्पलपत्तत्ताय, उप्पलकेसरत्ताय, उप्पलकन्नियत्ताय, उप्पलयिभुगत्ताय उववज्जपुत्ता ? [उ०] हन्ता, गौतम ! असत्तिं,
असत्ता अणंतपुत्तो । सेव मंते ! सेव मंते त्ति ।

पहमो उत्पलउद्देशओ समत्तो ।

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो कया पदार्थनो आहार करे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो इव्यथी अनन्तप्रदेशिक
द्रव्योनो आहार करे, इत्यादि सर्व *आहारक उद्देशकमां वनस्पतिकायिकोनो आहार कस्यो छे ते प्रमाणे यावत् 'तेभो सर्वात्मना—सर्व
प्रदेशोए आहार करे छे,' त्यां सुष्ठी कहेवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के तेभो अवश्य छए दिशीनो आहार करे छे, बाकी वधुं पूर्व
प्रमाणे जाणवुं.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुष्ठी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतमु-
हूर्त, अने उत्कृष्टथी दस हजार वर्षनी स्थिति कही छे.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवोने केटला समुद्घातो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण समुद्घातो कहा छे,
ते आ प्रमाणे—वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात अने मारणातिकसमुद्घात.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो मारणातिक समुद्घात वडे समवहत (समुद्घातने प्राप्त) थइने मरे, के असमवहत
(समुद्घातने प्राप्त थया शिवाय) मरे ? [उ०] हे गौतम ! ते समवहत थइने पण मरे अने असमवहत थइने पण मरे.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो मरीने तरत क्यां जाय ?—क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, तिर्यचयोनि-
कोमां उत्पन्न थाय, मनुष्योमां उत्पन्न थाय के देवोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्रना व्युत्क्रांतिपदमां उद्धर्तना प्रकरणमां
वनस्पतिकायिकोने कहा प्रमाणे अही पण कहेवुं.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व प्राणो, सर्व भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सस्वो उत्पलना मूलपणे, कंदपणे, नालपणे, पांदडापणे, केस-
रपणे, कर्णिकापणे अने थिभुग (पांदडानुं उत्पत्ति स्थान) पणे पूर्व उत्पन्न थया छे ? [उ०] हा, गौतम ! जीवो अनेकवार अथवा अनन्त-
वार पूर्व उत्पन्न थया छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते प्रथम उत्पलोद्देशक समाप्त.

३६. * प्रज्ञा० पद २० उ० १ प० ४१८-५०५.

३८. † समुद्घात माटे जुओ प्रज्ञा० पद ३६ प० ५५८.

४०. ‡ प्रज्ञा० पद ६ प० २०४.

जाहार.

आयुष.

समुद्घात.

उत्पन्न.

सर्व जीवोनुं अने
पणे उत्पन्न.

बीओ उद्देशी.

१. [प्र०] सालुप णं मंते ! एगपत्तय किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] गोयमा ! एगजीवे । एवं उप्पलुहेसगवत्तय्या अपरिसेसा भाणियत्ता जाव 'अणंतच्छुत्तो', नवरं सरीरोगाहणा जहणेणं अंगुलस्स असंजेज्जमागं, उक्कोसेणं घणुपुट्टं । सेसं तं वेव । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

बीओ उद्देशी समाप्ति ।

द्वितीय उद्देशक.

आद्यक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदावाळो शाळक (उत्पलकन्द) शुं एक जीववाळो छे के अनेक जीववाळो छे ! [उ०] हे गौतम ! ते एक जीववाळो छे, ए प्रमाणे उत्पलोदेशकनी सघली वक्तव्यता कहेवी, यावद् 'अनन्तवार उत्पन्न पया छे.' परन्तु विशेष ए छे के, शाळकना शरीरनी अवगाहना जघन्यपी अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट घनुषपृथक्त्व छे, बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादशशते द्वितीयोद्देशक समाप्त.

तईओ उहेसो ।

१. [प्र०] पलासे णं मंते ! एगपत्तए कि एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं उप्पलुहेसगवत्तया अपरिसेसा माणि-
यत्ता । नवरं सरीरोगाहणा जह्मेणं अंगुलस्स असंजेज्जमागं, उक्कोसेणं गाउयपुत्ता, देवा एपसु चेव न उषवज्जंति ।

२. [प्र०] लेसाद्यु ते णं मंते ! जीवा किं कण्हेसे, नीललेसे, काउलेसे ? [उ०] गोयमा ! कण्हेस्से वा नीललेस्से
वा काउलेस्से वा छवीसं मंगा । सेसं तं चेव । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

तईओ उहेसो समाप्तो ।

तृतीय उदेशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! पलाशवृक्ष [प्रारंभमां] एक पादडावाळो होय त्तारे शुं एक जीववाळो होय के अनेक जीववाळो होय ?
[उ०] हे गौतम ! *उत्पलउदेशकनी बची वक्तव्यता अहीं कहेवी. परन्तु विशेष ए छे के, पलाशना शरीरनी अवगाहना जघन्यपी अंगुलनो
असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व छे. बळी देवो प्यवीने ए पलाशवृक्षमां उत्पन्न यता नथी.

२. [प्र०] लेस्याद्वारमां हे भगवन् ! शुं पलाशवृक्षना जीवो कृष्णलेस्यावाळ, नीललेस्यावाळ के कापोतलेस्यावाळ होय ? [उ०]
हे गौतम ! ते कृष्णलेस्यावाळ, नीललेस्यावाळ के कापोतलेस्यावाळ होय, ए प्रमाणे छवीश भांगा कहेवा. बाकी वधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं.
हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते तृतीय उदेशक समाप्त.

१. * मग० सं० ३ द० ११ उ० १ द० १.

२. † अहिं एक अने अनेकना वण्णासकादिनी पेटे २६ भांगा जाणवा. जुओ मग० सं० ३ द० ११ उ० १ द० १९ शुं टीप्पन.

चउत्यो उद्देशी ।

१. [प्र०] कुंमिप णं मंते ! एगपत्तप कि एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] दवं जहा पलासुरेसप तहा भाणिबवे । नवर्त
ठिती जहाणेणं मंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं । सेसं तं वेव । सेवं मंते ! सेवं मंते ! चि ।

चउत्यो उद्देशी समचो ।

चतुर्थ उद्देशक.

कुंमिक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळो कुंमिक (वनस्पतिविशेष) जुं एक जीववाळो होय के अनेकजीववाळो होय ? [उ०]
हे गौतम ! ए प्रमाणे *पलाशोद्देशकमां कक्षा प्रमाणे वधुं कहेतुं, परन्तु विशेष ए छे के कुंमिकनी स्थिति (आयु) जघन्धी अंतर्हति, अने
उत्कृष्ट वर्षपुयक्त्व—वे वर्षधी नव वर्ष—सुधीनी होय छे. बाफी वधुं पूर्वे कक्षा प्रमाणे जाणतुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते
एमज छे.

एकादशशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

पंचमो उद्देशो ।

१. नाडिकं सं मंते । कृमिनां किं दृग्जीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं कुंभिकोऽप्युक्तवा निरुपसेलं भाणियत्त । सेवं मंते । सेवं मंते । सि ।

पंचमो उद्देशो समाप्तो ।

पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एकपांदावाळो नाडिक (वनस्पतिविशेष) शुं एक जीववाळो छे के अनेकजीववाळो छे ? [उ०] हे नाडिक गौतम ! कुंभिक उद्देशकनी (उ० ४ सू० १) बघी वक्तव्यता अहीं कहेवी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश अंते पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्टो उद्देशो ।

१. [प्र०] पउमे णं भंते ! एगपसए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? [उ०] एवं उप्पलुहेसगसवया निरवसेसा भाणियवा ।
सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

छट्टो उद्देशो समत्तो ।

षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांडडावालुं पम शुं एक जीववालुं होय के अनेक जीववालुं होय ? [उ०] हे गौतम ! उत्पल उद्देश
कर्मा (उ० १ सू० १) कखा प्रमाणे बधुं कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कश्चिद् नं भंते ! एगपस्य किं एगजीवे, अणेगजीवे ? [उ०] एवं चेव निरवसेसं भाणियच्चं । सेवं संते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

सत्तम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळी कर्णिका शुं एक जीववाळी छे के अनेक जीववाळी छे ? [उ०] हे गौतम ! वधुं पूर्वं अमाणे कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

कर्णिका.

एकादश शते सत्तम उद्देशक समाप्त.

अष्टमो उद्देशः

१. [प्र०] नलिनो जं मंते ! एगवत्स्य किं एगजीवे, अणेगजीवे ? [उ०] एवं वेद निरवसेसं जाव 'अर्भतशुषो' । सेवं मंते ! सेवं मंते ! त्ति ।

अष्टमो उद्देशो समाप्तः ।

अष्टम उद्देशकः

नलिनः

१. [प्र०] हे भगवन् ! एकपत्रवालुं नलिन (कमलविशेष) शुं एकजीववालुं छे के अनेकजीववालुं छे ? [उ०] हे गौतम ! ए वधुं पूर्वं प्रमाणे (उ० १ सू० १) यावत् 'सर्व जीवो अनंतवार उत्पन्न थया छे' त्यांसुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते अष्टम उद्देशक समाप्तः

नवमो उद्देशो ।

१. तेषां कालेण तेषां समपणं हृत्थिनागपुरे णामं णगरे होत्था । वज्रभो । तस्स णं हृत्थिनागपुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे विसीमागे पत्थ णं सहसंबवणे णामं उज्जाणे होत्था । सन्नोदुयपुष्प-फलसमिद्धे, रम्मे, णंदणवणसभिव्यगासे, सुहसीतलच्छाय, मणोरमे, सादुप्फले, अकंटपे, पासादीपे, जाव-पडिक्खे । तत्थ णं हृत्थिनागपुरे णगरे सिवे णामं राषा होत्था । महयाहिमवंतं वज्रभो । तस्स णं सिवस्स रज्जो धारिणी णामं देवी होत्था । सुकुमालं वज्रभो । तस्स णं सिवस्स रज्जो पुसे धारिणीय अत्थप सिवभदे णामं कुमारे होत्था । सुकुमालं जहा सूरियकंते, जावप-बुवेक्खमाणे २ विहरति ।

२. तप णं तस्स सिवस्स रज्जो अन्नया कया वि पुषारसावरत्तकालसमयंसि रज्जुपुरं चित्तेमाणस्स अयमेयाकथे अज्जत्थिय जाव समुप्पञ्चित्था-“अत्थि ता मे पुरा पौराणाणं जहा तामलिस्स, जाव-पुसेहिं व्हामि, पसूहिं व्हामि, रज्जेणं व्हामि, पवं रट्टेणं, बल्लेणं, वाहणेणं, कोसेणं, कोट्टागारेणं, पुरेणं, अंतरेणं व्हामि, विपुलधण-कज्जग-रयणं जाव संतसारसावपज्जेणं अतीव २ अभिव्हामि, तं किं णं अहं पुरा पौराणाणं जाव एगंतसोक्खयं उद्देहमाणे विहरामि ? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं व्हामि, तं खेव जाव अभिव्हामि, जाव मे सामंतरायाणो वि वसे व्हंति, तावता मे सेव कल्लं पादुप्पभाताप जाव अलंते सुवहुं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुयं तंभियं तावसमंडणं वडावेत्ता सिवभदं कुमारं रज्जे डावेत्ता तं सुवहुं लोही-लोहकडाह-कडु-

नवम उद्देशक.

१. ते काले-ते समये हस्तिनापुर नामे नगर इत्तुं. वर्णन. ते हस्तिनापुर नगरनी बह्वार उत्तरपूर्व दिशामां-ईशानकोणमां-सह-साम्रवन नामे उद्यान इत्तुं. ते उद्यान सर्वं ऋतुना पुष्प अने फलपी ससृद्ध, रम्य अने नंदनवन समान इत्तुं. तेनी छाया सुखकारक अने शीतल हती, ते मनोहर, खादिष्ठफलवाळुं, कंटकरहित, प्रसन्नता आपनार, यावत् प्रतिकरूप-सुन्दर-इत्तुं. ते हस्तिनापुर नगरमां शिव नामे राजा हतो, ते मोट्ट हिमाचल पर्वतनी पेटे (सर्वं राजाओमां) श्रेष्ठ हतो, [इत्यादि सज्जानुं वर्णन कहेवुं.] ते शिव राजाने धारिणी नामे पट्टराणी हती, तेना हाय पग सुकुमाल हता,-[इत्यादि स्त्रीनुं वर्णन कहेवुं]. ते शिवराजाने धारिणी राणीथी उत्पन्न थयेलो शिवभद्र नामे पुत्र हतो, तेना हाय पग सुकुमाल हता-इत्यादि कुमारनुं वर्णन सूर्यकाल राजकुमारनी पेटे* कहेवुं. यावत् ते कुमार [राज्य, राष्ट्र, सैन्या-विने] जोतो जोतो विहरे छे.

२. हवे कोइ एक दिवसे शिवराजाने पूर्वरात्रिना पाळला भागमां राज्यकारभारनो विचार करता आ आबो अध्यवसाय-संकल्प उत्पन्न थयो के मारा पूर्व पुण्यकर्मेनो प्रभाव छे, इत्यादि तामलि तापसनी पेटे कहेवुं, जे यावत् हुं पुत्रोवडे, पशुओवडे, राज्यवडे, राष्ट्र-वडे, बलवडे, वाहनवडे, कोशवडे, कोट्टागारवडे, पुरवडे अने अन्तःपुरवडे वृद्धि पासुं छुं. वळी पुष्कळ धन, कनक, रत्न यावत् सारभूत इत्यवडे अतिशय अत्यंत वृद्धि पासुं छुं, तो छुं हवे हुं मारा पूर्व पुण्यकर्मेना फलरूप एकान्त सुखके भोगवतो ज विहरं ? ते माटे ज्यांसुधी हुं विरप्यथी वृद्धि पासुं छुं, यावत् पूर्वं कदा प्रमाणे वृद्धि पासुं छुं, ज्यांसुधी सामंत राजाओ मारे तावे छे, त्यांसुधी मारे काले प्रातःकाले

अवलरप-
हस्तिनापुर-

शिवराजा-

शिवभद्रपुत्र-

शिवराजानो संक्षेप-

१. * सर्वकान्तकुमारनुं वर्णन जुओ राजप्र० प० ११५.

२. † तामलि तापसना संकल्पनुं वर्णन जुओ भग० खं० २ अ० ३ उ० १ पृ० २५.

ચ્યુયં તંચિયં તાવસમંડગં ગહાય જે હમે ગંગાકુલે ઘાણપત્યા તાવસા મંચંતિ, તં જહા-હોષિયા, પોષિયા, જહા ઉવવાદ્ય જાવ-કટુસોહ્યિયં પિવ અપ્યાણં કરેમાણા વિહરંતિ, તત્ય ણં જે તે વિસાપોષ્ણી તાવસા તેસિ અંતિયં મુંડે મવિચ્છા વિસાપોષ્ણિય-તાવસસાપ પદ્મહસપ । પદ્મહસે વિ ય ણં સમાષે અયમેયારૂઠં અભિગ્ઠં અભિગિણિહસ્સામિ-‘કપ્પર મે જાવજીવાય છટ્ટું-છટ્ટેણં અણિચ્છેણં વિસાચ્છવાલેણં તવોક્મ્મેણં ઉટ્ટું ઘાહાઓ પગિજ્ઞિય ૨ જાવ વિહરિત્તપ’ તિ કદ્દુ એવં સંપેહેતિ ।

૩. સંપેહેતા કહ્લં જાવ જલંતે સુવહું લોહી-લોહ૦ જાવ ઘડાવેતા કોડુંચિયપુરિસે સદાવેર, સદાવેતા એવં ઘયાસિ-‘શ્ચિપ્યામેષ મો ! દેવાણુપ્પિયા ! હત્થિનાગપુરં નગરં સમ્મિતર-વાહિરિયં આસિય૦’ જાવ તમાણત્તિયં પદ્મપ્પિયંતિ । તપ ણં સે સિવે રાયા દોષં પિ કોડુંચિયપુરિસે સદાવેતિ, સદાવેતા એવં ઘયાસિ-‘શ્ચિપ્યામેષ મો દેવાણુપ્પિયા ! સિવમહસ્સ કુમારસ્સ મહત્થં ૩ વિડલં રાયામિસેયં ઉવટ્ટવેહ’ । તપ ણં તે કોડુંચિયપુરિસા તહેવ ઉવટ્ટવેતિ । તપ ણં સે સિવે રાયા અણેગગણના-યગ-વંડનાયગ૦ જાવ-સંધિપાલસદ્ધિ સંપરિહુડે સિવમહં કુમારં સીહાસણવરંસિ પુરત્યામિમુહં ણિસિયાવેતિ । ણિસિયાવેતા અટ્ટસપણં સોવચ્ચિયાણં કલસાણં જાવ-અટ્ટસપણં મોમેજ્ઞાણં કલસાણં સચ્ચિદ્ધીય જાવ-રવેણં મહયા ૨ રાયામિસેગેણં અભિ-સિચતિ । મ૦ ૨ પમ્હલસુકુમાલાપ સુરમીપ ગંધકાસાર્પ ગાયાઈ લૂહેતિ । પમ્હલ૦ ૨ સરસેણં ગોલીસેણં એવં જહેવ જમા-લિસ્સ અલંકારો તહેવ જાવ-કપ્પરુક્કણં પિવ અલંકિય-વિમ્મુસિયં કરેતિ । કરિત્તા કરયલ૦ જાવ-કદ્દુ સિવમહં કુમારં જપણં વિજપણં વદ્ધાવેતિ । જપણં ૨ તાહિ ઇટ્ટાહિ કંતાહિ પિયાહિ જહા ઉવવાદ્ય કૂણિયસ્સ જાવ-પરમાડં પાલયાહિ, ઇટ્ટજણસંપરિહુડે હત્થિનાગપુરસ્સ નગરસ્સ અષોસિ ચ વહુણં ગામા-ગર-નગર૦ જાવ વિહરાહિ’ તિ કદ્દુ જયજયસહં પડંજતિ । તપ ણં સે સિવમહે કુમારે રાયા જાતે । મહયા હિમવંત૦ વજ્જઓ જાવ-વિહર ।

૪. તપ ણં સે સિવે રાયા અણ્યા કયાઈ સોમણંસિ તિહિ-કરણ-દિવસ-મુહુત્ત-નક્કત્તંસિ વિપુલં અસણ-પાણ-સા-દ્દમ-સાદ્દમં ઉવક્કઠાવેતિ । ઉવક્કઠાવેતા મિત્ત-ગાદ-નિયગ૦ જાવ-પરિજ્ઞણં રાયાણો ય ક્ષતિયા આમંતેતિ । આમંતેતા તઓ

સૂર્ય દેદીપ્યમાન થયે છતે ઘણી લોઢીઓ, લોહના કડાયાં, કડછા અને ત્રાંબાના બીજા તાપસના ઉપકરણોને ઘડાવીને શિવમદ્ર કુમારને રાજ્યમાં સ્થાપીને ઘણી લોઢીઓ, લોહના કડાયાં, કડછા અને ત્રાંબાના તાપસના ઉપકરણો લઈને, જે આ ગંગાને કાંઠે ઘાનપ્રસ્થ તાપસો રહે છે, તે આ પ્રકારે-અગ્નિહોત્રી, પોતિક-વજ્ર ધારણ કરનારા-ઈત્યાદિ ‘‘ઉવવાદ્ય’’ સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવત્-જેઓ કાષ્ઠથી શરીરને તપાવતા વિચરે છે, તે તાપસોમાં જે તાપસો દિશાપ્રોક્ષક (પાણી વડે દિશાને પૂજી ફલ પુષ્પાદિ પ્રહણ કરનારા) છે, તેઓની પાસે મારે મુંડ થઈને દિક્ષપ્રોક્ષકતાપસપણે પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કરવી શ્રેય છે, પ્રવ્રજ્યા પ્રહણ કરીને ડું આ આવા પ્રકારનો અભિપ્રહ પ્રહણ કરીશ, તે આ પ્રકારે-યાવજીવ નિરંતર છદ્દ છદ્દ કરવાથી દિક્ષક્રવાલ તપકર્મ વડે ડુંચા હાથ રાખીને રહેવું મને કલ્પે-એ પ્રમાણે તે શિવરાજા વિચારે છે.

૩. એ પ્રમાણે વિચારીને આવતી કાલે પ્રાતઃકાલે સૂર્ય દેદીપ્યમાન છતે, અનેક પ્રકારના લોઢી, કડાયા વગેરે તાપસના ઉપકરણો તૈયાર કરાવી પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવે છે. બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયો ! શીઘ્ર આ હસ્તિનાપુર નગરની બાહર અને અંદર જલ છંટકાવી સાફ કરાવો-ઈત્યાદિ યાવત્ તેમ કરી તેઓ તેની આજ્ઞાને પાછી આપે છે. ત્યારપછી તે શિવરાજા ફરીને પણ તે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવે છે, બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયો ! શીઘ્ર શિવમદ્ર કુમારના મહાઅર્ચવાલા યાવત્ વિપુલ રાજ્યાભિષેકની તૈયારી કરો. ત્યારબાદ તે કૌટુંબિક પુરુષો તે પ્રમાણે યાવત્ રાજ્યાભિષેકની તૈયારી કરે છે, ત્યારપછી તે શિવરાજા અનેક ગણનાયક, દંડનાયક, યાવત્ સંધિપાલના પરિવારયુક્ત શિવમદ્ર કુમારને ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર પૂર્વ દિશા સન્મુખ બેસાડે છે, બેસાડીને એકસો સાઠ સોનાના કલશોવડે, યાવત્ એકસો આઠ માટીના કલશોવડે, સર્વ ઋદ્ધિથી યાવત્ વાદિત્રાદિકના શબ્દોવડે મોટા રાજ્યાભિષેકથી અભિષેક કરે છે. ત્યારપછી પાંપણ જેવા સુકુમાલ અને સુગંધિ ગંધવસ્ત્રવડે તેનાં શરીરને સાફ કરે છે, સાફ કરીને સરસ ગોશીર્ષચંદન વડે લેપ કરી યાવત્ જેમ ‘જમાલિનું વર્ણન કર્યું છે તેમ કલ્પવૃક્ષની પેટે તેને અલંકૃત-વિમ્મુષિત કરે છે. ત્યારપછી હાથ જોડી શિવમદ્ર-કુમારને જય અને વિજયથી વધાવે છે; વધાવીને ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય વાણીવડે આશીર્વાદ આપતા ઔપપાતિક સૂત્રમાં કોણિક રાજા સંબન્ધે કહ્યા પ્રમાણે † તેઓએ કહ્યું-યાવત્ તું દીર્ઘાયુષી થા, અને ઇષ્ટ જનના પરિવારયુક્ત હસ્તિનાપુર નગર અને બીજા અનેક પ્રામ્, આકર તથા નગરોનું સ્વામિપણું ભોગવ-ઈત્યાદિ કહીને તેઓ જય જય શબ્દ બોલે છે. ત્યાર બાદ તે શિવમદ્ર કુમાર રાજા થયો, તે મોટા હિમાચલની પેટે સર્વ રાજાઓમાં મુખ્ય થઈને યાવત્ વિહરે છે, અહીં શિવમદ્રરાજાનું વર્ણન કરવું.

૪. ત્યારપછી તે શિવરાજા અન્ય કોઈ દિવસે પ્રશસ્ત તિથિ, કરણ, દિવસ અને નક્ષત્રના યોગમાં વિપુલ અશન, પાન, સ્વાદિમ અને સ્વાદિમ વસ્તુઓને તૈયાર કરાવે છે, તૈયાર કરાવી મિત્ર, જ્ઞાતિ, યાવત્ પોતાના પરિજનને, રાજાઓને અને ક્ષત્રિયોને આમન્ત્રણ કરે

૨. * તાપસોનું વર્ણન જુઓ ઉવવાદ્ય પ૦ ૧૦-૧.

૩. † જમાલિનું વર્ણન જુઓ મગ૦ સં૦ ૩ શ૦ ૧ ડ૦ ૩૩ પ૦ ૧૦૪.

‡ કોણિકનું વર્ણન જુઓ ઉવવાદ્ય પ૦ ૭૩-૧.

पञ्चा षड्वाय जाव-सरीरे भोजनवेलाय भोजनमंडबंसि सुहासणवरगण तेणं मित्र-जाति-नियगसयण० जाव-परिजनेणं रापहि य क्षत्रियहि य सद्धि विपुलं असण-पाण-खादम-सादमं एवं जहा तामली जाव-सकारेति, संमाणेति । सकारेत्ता संमाणेत्ता तं मित्र-जाति० जाव-परिजणं रायाणो य क्षत्रिय य सिवमहं च रायाणं आपुच्छइ । आपुच्छिता सुबहुं लोही-डोहकडाह-कडुच्छुयं जाव-मंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा षाणपत्या तावसा भवंति, तं चेष जाव तेसि अंतियं मुंडे भविता विसापो-विषयतावसत्ताय पव्वइय । पव्वइय वि य णं समाणे अयमेयाकवं अभिग्गहं अभिगिण्हति-‘कप्पइ मे जावजीवाप छट्टुं०’ तं चेष जाव अभिग्गहं अभिगिण्हति, अभिगिण्हिता पढमं छट्टककमणं उवसंपज्जिता णं विहरइ ।

५. तय णं से सिवे रायरिसी पढमछट्टककमणपारणगंसि आयावणभूमीय पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता वागलवत्थनियत्ये जेणेव सय उडय तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छिता किट्ठिणसंकाइयगं गिण्हति, गिण्हिता पुरत्थिमं विसं पोक्खेति, ‘पुरत्थिमाय विसाय सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवे रायरिसी, अभिरक्खिता जाणि य तत्थ कंदाणि य सुलाणि य तथाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ’ सि कट्टु पुरत्थिमं विसं पसरति, पुर० २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव-हरियाणि य ताइं गेण्हति, गिण्हिता किट्ठिणसंकाइयं भरेइ, किट्ठि० २ दम्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हति, गिण्हिता जेणेव सय उडय तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता किट्ठिणसं-काइयगं ठवेति, किट्ठि० २ वेदिं वहेति, वे० २ उवलेषण-संमज्जणं करेइ, उ० २ दम्भ-कलसाहत्थगण जेणेव गंगा महा-नदी तेणेव उवागच्छति, तेणेव० २ गंगामहानदी भोगाहेति, गंगा० २ जलमज्जणं करेइ, जल० २ जलकीडं करेइ, जल० २ जलामिसेयं करेति, जला० २ आयंतं चोक्खे परमसुइभूय देवय-पितिकयकजे दम्भ-कलसाहत्थगण गंगाओ महानदीओ पच्चुसरइ, गंगाओ० २ जेणेव सय उडय तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० २ दम्भेहि य कुसेहि य वालुयापहि य वेतिं रपति, वेतिं रपत्ता सरपणं अरणिं महेति, सर० २ अग्नि पाडेति, २ अग्नि संभुजेइ, २ समिहाकट्टां पक्खिवइ, समिहा० २ अग्नि उज्जालेइ, अग्नि० २ “अग्निस्स दाहिणे पासे, सत्संगां समावहे । [तं जहा-] सकहं वकलं ठाणं, सिज्जा भंडं कमंडलुं ॥ दंडवाहं तह-

छे, आमन्त्रण करी ल्यार वाद ज्ञान करी यावत् शरीरने अलंकृत करी भोजनवेलाय भोजनमंडपमां उत्तम सुखासन उपर वेसी मित्र, ज्ञाति अने पोताना खजन यावत् परिजन साथे तथा राजा अने क्षत्रियो साथे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम भोजन करी *तामलि-तापसनी पेटे यावत् ते शिवराजा बधाओनो सत्कार करे छे, सन्मान करे छे, सत्कार अने सन्मान करीने मित्र, ज्ञाति, पोताना खजन, यावत् परिजननी तथा राजाओ, क्षत्रियो अने शिवमद्र राजानी रजा मागे छे. रजा मागीने अनेक प्रकारना लोढी, लोढाना कडायां, कडछा यावत् तापसना उचित उपकरणो लइने गंगाने कांठे जे आ वानप्रस्थ तापसो रहे छे-इत्यादि सर्वे पूर्ववत् जाणवुं, यावत् ते दिशाप्रोक्षक तापसोनी पासे दीक्षित थई दिशाप्रोक्षकतापसरूपे प्रत्रय्या ग्रहण करी प्रत्रजित थइने ते आ प्रकारनो अभिग्रह धारण करे छे-‘मारे याव-जीव निरंतर छट्ट छट्टनो तप करयो कल्पे’-इत्यादि पूर्ववत् अभिग्रह ग्रहण करीने प्रथम छट्ट तपनो स्वीकार करी विहरे छे.

शिवराजर्षिनो
अभिग्रह.

५. ल्यारवाद प्रथम छट्ट तपना पारणाना दिवसे ते शिव राजर्षि आतापना भूमिथी नीचे आवे छे, नीचे आवीने वत्कलना वक्क पहेरी ज्यां पोतानी छुंपडी छे त्यां आवे छे, त्यां आवी किट्ठिन (वांसनुं पात्र) अने कावडने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी पूर्व दिशाने प्रोक्षित करी ‘पूर्व दिशाना सोम महाराजा धर्मसाधनमां प्रवृत्त थएला शिव राजर्षिनुं रक्षण करो, अने पूर्व दिशामां रहेला कंद, मूल, छाल, पांदडा, पुष्प, फल, बीज अने हरित-लीली वनस्पतिने लेवानी अनुज्जा आपो’-एम कही ते शिव राजर्षि पूर्व दिशा तरफ जाय छे, जइने त्यां रहेला कंद, यावत्-लीली वनस्पतिने ग्रहण करीने पोतानी कावड भरे छे. ल्यार पछी दर्भ, कुश, समिध-काष्ठ अने झाडनी शाखाने मरडी पांद-डाओने ले छे; लेईने ज्यां पोतानी छुंपडी छे त्यां आवे छे, आवीने कावडने नीचे मूके छे, मूकीने वेदिकाने प्रमार्जित करे छे; पछी वेदि-काने [छाण पाणीवडे] लीपी शुद्ध करे छे. ल्यारवाद डाम अने कलशने हाथमां लइ ज्यां गंगा महानदी छे, त्यां आवीने गंगा महा-नदीमां प्रवेश करे छे, प्रवेश करी डुबकी मारे छे, जलक्रीडा करे छे, अने ज्ञान करे छे, पछी आचमन करी चोक्खा थइ-परम पवित्र थइ देवता अने पितृकार्य करी डाम अने पाणीनो कलश हाथमां लइ गंगा महानदीथी बहार नीकळीने ज्यां पोतानी छुंपडी छे त्यां आवे छे, आवीने डाम, कुश अने वालुका वडे वेदिने बनावे छे, बनावी मथनकाष्ठवडे अरणिने घसे छे, घसीने अग्नि पाडे छे, पाडीने अग्निने सुळगावे छे, पछी तेमां समिधना काष्ठोने नांखी ते अग्निने प्रज्वलित करे छे, अने अग्निनी दक्षिण बाजुए ३” सात वस्तुओ मुके छे, ते आ प्रमाणे-“१ सकया (उपकरणविशेष), २ वत्कल, ३ दीप, ४ शय्याना उपकरण, ५ कमंडल, ६ दंड अने ७ आत्मा (पोते). ए सर्वने

४. * तामलितापसनुं वर्णन जुओ भग० खं० २ श० ३ व० १ पृ० २६.

† गंगाने किनारे रहेता तापसोनुं वर्णन जुओ उववाइअ प० १०-१.

અમારું મહે તારું સમારહે ।” મહુજા ય ઇચ્છા ય તંતુલેદિ ય અર્ચિત્તુ જુગદ, અર્ચિત્તુ જુગિત્તા યદં જાહેર, યદં-સાહેજા યદિ
ચરસદેવં કરેર, યલિં ૨ અસિદિપૂયં કરેર, અતિદિં ૨ તથો પચ્છા અપ્પણા આહારમાહારેતિ ।

૧. તપ ણં સે સિવે રાયરિસી દોષં છટુક્ષમણં ઉવસંપજિત્તા ણં વિહરદ । તપ ણં સે સિવે રાયરિસી દોષે છટુક્ષ-
મણપારણગંસિ આયાવળમૂમીઓ પચ્છોરુદર, આયાવળ ૦ ૨ યવં જહા પદમપારણગં, નવરં દાદિણગં વિસં પોષ્ણેતિ, દાદિણ ૦
૨ દાદિણાપ વિસાપ જમે મહારાયા પથાણે પત્થિયં સેસં તં ચેવ આહારમાહારે । તપ ણં સે સિવે રાયરિસી તથં
છટુક્ષમણં ઉવસંપજિત્તા ણં વિહરતિ । તપ ણં સે સિવે રાયરિસી સેસં તં ચેવ નવરં પચ્છિમાપ વિસાપ વદળે મહારાયા
પથાણે પત્થિયં સેસં તં ચેવ જાવ આહારમાહારે । તપ ણં સે સિવે રાયરિસી ચડત્યં છટુક્ષમણં ઉવસંપજિત્તા ણં વિહરદ,
તપ ણં સે સિવે રાયરિસી ચડત્યં છટુક્ષમણ ૦ યવં તં ચેવ, નવરં ઉત્તરવિસં પોષ્ણેર, ઉત્તરાપ વિસાપ વેસમળે મહારાયા પથાણે
પત્થિયં અમિરવચડ સિવં, સેસં તં ચેવ જાવ—તથો પચ્છા અપ્પણા આહારમાહારે ।

૭. તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ છટુક્ષ્ટુણં અનિચ્છિત્તેણં વિસાચક્રવાલેયં જાવ—આયાવેમણસ્સ પચ્છરુદપાપ
જાવ—વિનીયધાપ અજયા કવા યિ તયાવરણિજ્ઞાણં કમ્માયં અજોવસમેયં રૂદા—પોદ—મચ્ચમ—મચ્ચેસમં કરેજાપસ્સ વિમ્મંતે નામં
અચ્ચાથે સમુપ્પજે । સે ણં તેણં વિમ્મંતેનાણેણં સમુપ્પજેણં પાસદ અર્ચિસ લોપ સત્ત ધીવે સત્ત સમુદ્દે, તેણ પરં ન જાણતિ ન પાસતિ ।

૮. તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ અયમેવાકુવે અમ્મત્થિય જાવ સમુપ્પજિત્થા—‘અત્થિ ણં મમં અસેસે નાણ—ઈસણે
સમુપ્પજે, યવં જહુ અર્ચિસ લોપ સત્ત ધીવા સત્ત સમુદ્દા, તેણ પરં વોચ્છિજા ધીવા ય સમુદ્દા ય, યવં સંપેદ્દે, યવં ૦ ૨ આયા-
વળમૂમીઓ પચ્છોરુદર, આ ૦ ૨ યાગલવત્થનિયત્થે જેણેવ સપ ઉડપ તેણેવ ઉવાગચ્છર, તેણેવ ૦ ૨ સુવહું લોદી—લોદકડાહ—
કડુચ્છુર્યં જાવ—મંડગં કિદ્દિણસંકાર્યં ય ગેણદર, ૨ જેણેવ હત્થિણાપુરે નગરે જેણેવ તાવસાવસદ્દે તેણેવ ઉવાગચ્છર, તેણેવ ૦
૨ મંડનિચ્છેર્યં કરેર, મંડ ૦ ૨ હત્થિણાપુરે નગરે સિંઘાડગ—તિન ૦ જાવ—પદેસુ વહુ જણસ્સ યવમાદકર, જાવ—યવં પરુદેર—
‘અત્થિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમં અતિસેસે નાણ—ઈસણે સમુપ્પજે, યવં જહુ અર્ચિસ લોપ જાવ ધીવા ય સમુદ્દા ય’ । તપ ણં તસ્સ

૧૬૪૪ કરે છે.” પછી મધ, ધી અને ચોલા વડે અગ્નિમાં હોમ કરે છે, હોમ કરીને અઠ—બલિ તૈયાર કરે છે, અને કલિષ્ઠી મૈત્રવેચની પૂજા
કરે છે, સ્વાસ્થ્ય અસ્તિથિની પૂજા કરી તે શિવ રાજર્ષિ પોતે આહાર કરે છે.

૬. સ્વાસ્થ્ય તે શિવરાજર્ષિ ફરીવાર છટ્ટ તપ કરીને વિહરે છે, પછી તે શિવરાજર્ષિ આતાપના ભૂમિથી ઉતરી વલ્કલનું વણ પહેરે છે,
રૂથાદિ વધુ પ્રથમ પારણાની પેઠે જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે ધીજા પારણા વચ્ચે દક્ષિણ દિશાને પ્રોક્ષિત કરે—પૂજી, તેમ કરીને એમ
કહે કે ‘દક્ષિણ દિશાના (લોકપાલ) યમ મહારાજા પ્રસ્થાન—પરલોકસાધન—માં પ્રવૃત્ત થયેલા શિવરાજર્ષિનું રક્ષણ કરો’ રૂથાવિ સર્વ
પૂર્વવત્ કહેવું, યાવત્ પોતે આહાર કરે છે. પછી તે શિવરાજર્ષિ ત્રીજા છટ્ટ તપને સ્વીકારી વિહરે છે, તેના પારણાની વચ્ચે દક્ષિણ વર્ણની
પેઠે જાણવી, પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, પશ્ચિમ દિશાનું પ્રોક્ષણ—પૂજન—કરે, અને એમ કહે કે પશ્ચિમ દિશાના (લોકપાલ) વરુણ મહારાજા
પ્રસ્થાન—પરલોક સાધનમાં પ્રવૃત્ત થયેલા શિવ રાજર્ષિનું રક્ષણ કરો, બાકી વધુ પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. યાવત્ સ્વાસ્થ્ય પછી તે આહાર કરે. પછી
તે શિવરાજર્ષિ ચોથા છટ્ટના તપને સ્વીકારી વિહરે છે—રૂથાદિ પૂર્વવત્ જાણવું. પરન્તુ (ચોથે પારણે) ઉત્તર દિશાને પૂજે છે, અને એમ કહે
છે કે ઉત્તર દિશાના (લોકપાલ) વૈશ્રવણ મહારાજા ધર્મસાધનમાં પ્રવૃત્ત થયેલા શિવરાજર્ષિનું રક્ષણ કરો, બાકી વધુ પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું,
યાવત્ સ્વાસ્થ્ય પછી પોતે આહાર કરે છે.

૭. એ પ્રમાણે નિરંતર છટ્ટ છટ્ટના તપ કરવાથી વિક્ષેપકાલ તપ કરતા, યાવત્ આતાપના લેતા તે શિવરાજર્ષિને પ્રકૃતિની ભરતા
અને યાવત્ વિનીતતાથી અન્ય કોઈ દિવસે તેના આવરણભૂત કર્મોના ક્ષયોપશમ થવાથી રૂદા, અપોદ, માર્ગણા અને ગવેષણ કરતા વિમ્બ નામે
જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું. પછી તે ઉત્પન્ન થયેલા તે વિમ્બજ્ઞાન વડે આ લોકમાં સાત દ્વીપો અને સાત સમુદ્રો જુદા છે, તે પછી આગળ જાણતા
નથી, કે જોતા નથી.

૮. સ્વાસ્થ્ય તે શિવરાજર્ષિને આ આવા પ્રકારનો અધ્યવસાય ઉત્પન્ન થયો કે, ‘મને અતિશયવાલું જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થયું છે,
અને એ પ્રમાણે આ લોકમાં સાત દ્વીપ અને સાત સમુદ્રો છે, અને સ્વાસ્થ્ય દ્વીપો અને સમુદ્રો નથી’—એમ વિચારે છે, વિચારીને આતાપના ભૂમિથી
નીચે ઉતરે છે, અને વલ્કલનાં વણો પહેરી યાં પોતાની ઘૂંપડી છે ત્યાં આવી અનેક પ્રકારના લોદી, લોદાના કણાયાં અને કણા સપ્ત
ધીજા ઉપકરણો અને કાવડને પ્રહણ કરે છે, અને યાં હસ્તિનાપુર નગર છે અને યાં તાપસોનું યાવત્ આશ્રમ છે ત્યાં આવે છે, આવીને
ઉપકરણ વગેરેને મૂકે છે, અને હસ્તિનાપુર નગરમાં શુંગાટક, ત્રિક, યાવત્ રાજમાર્ગોમાં ઘણા માણસોને એમ કહે છે, યાવત્ પ્રસૂ પ્રસ્તુ છે
કે, ‘હે દેવાનુપ્રિયો ! મને અતિશયવાલું જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થયું છે, અને આ લોકમાં એ પ્રમાણે સાત દ્વીપો અને સાત સમુદ્રો છે.’

શિવરાજર્ષિને
વિમ્બજ્ઞાન.

શિવરાજર્ષિનો સાત
દ્વીપ અને સાત સમુદ્રો
જનો અધ્યવસાય.

सिखस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमहुं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग० जाव-पहेसु बहु जणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खर, जाव पक्खेइ-‘एवं खलु देवानुप्पिया ! सिखे रायरिसी एवं आइक्खर, जाव पक्खेइ-अत्थि णं देवानुप्पिया ! अन्नं अत्थिसेसे नाणदंसणे, जाव तेण परं बोच्छिच्चा दीवा य समुहा य’ । से कहमेयं मजे एवं ?

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसडे, परिसा जाव पडिगथा । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेहे मंतेवासी जहा वितियसए नियंडुहेसए जाव अडमाणे बहुजणसहं निसामेइ, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खर, एवं जाव पक्खेइ-‘एवं खलु देवानुप्पिया ! सिखे रायरिसी एवं आइक्खर, जाव पक्खेइ-अत्थि णं देवानुप्पिया ! तं चेव जाव बोच्छिच्चा दीवा य समुहा य’ । से कहमेयं मजे एवं ?

१०. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमहुं सोच्चा निसम्म जाव-सहे जहा नियंडुहेसए जाव तेण परं बोच्छिच्चा दीवा य समुहा य, से कहमेयं मंते ! एवं ? गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-जहं गोयमा ! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमातिक्खर, तं चेव सव्वं भाणियव्वं, जाव-मंडनिकखेवं करेति, हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग० तं चेव जाव बोच्छिच्चा दीवा य समुहा य । तए णं तस्स सिखस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमहुं सोच्चा निसम्म तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव तेण परं बोच्छिच्चा दीवा य समुहा य, तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, जाव पक्खेमि-‘एवं खलु जंबु-दीवादीया दीवा लवणादीया समुहा संठाणओ एगविहिविहाणा, विस्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवामिगमे जाव-सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए असंखेजे दीवसमुहे पन्नसे समणाउसो !

११. [प्र०] अत्थि णं मंते ! जंबुदीवे दीवे इवाइं सववाइं पि अववाइं पि सगंघाइं पि अगंघाइं पि सरस्ताइं पि अरसाइं पि सकासाइं पि अफासाइं पि अन्नमन्नवदाइं अन्नमन्नपुट्टाइं जाव-घडत्ताए चिहुंति ? [उ०] इंता अत्थि ।

त्यारवाद ते शिवराजर्षिं पासेयी ए प्रकारुं वचन सांभळी, अवधारी हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक, यावद् राजमार्गोमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे-यावद् एम प्ररूपे छे-हे देवानुप्रियो ! शिवराजर्षिं आ प्रमाणे कहे छे-यावत् प्ररूपे छे के हे देवानुप्रियो ! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, यावत् ए प्रमाणे आ लोकमां सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, त्यार पछी नथी, ते एम केवी रीते होय ?

९. ते काले-ते समये महावीर स्वामी समोसर्या, पर्षद् पण पाछी गई. ते काले-ते समये श्रमण भगवान् महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामे अनगार बीजा शतकना निर्मन्थोद्देशकमां *वर्णन्या प्रमाणे यावत् भिक्षाए जता घणा माणसो नो शब्द सांभळे छे-बहु माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे-यावत् प्ररूपे छे के हे देवानुप्रियो ! शिव राजर्षिं एम कहे छे-यावत् एम प्ररूपे छे-हे देवानुप्रियो ! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने यावत् सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, त्यार पछी द्वीपो अने समुद्रो नथी, तो ए प्रमाणे केम होय ?

१०. [प्र०] त्यार पछी भगवान् गौतमे घणा माणसो पासे आ वात सांभळी, अवधारी श्रद्धावाळ्य थई निर्मथ उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् श्रमण भगवंत महावीरने पूछ्युं-हे भगवन् ! शिवराजर्षिं कहे छे के-‘यावत् सात द्वीप अने सात समुद्र छे, त्यार पछी कांइ नथी’ तो ए प्रमाणे केम होइ शके ? [उ०] ‘हे गौतम’ ! एम कही श्रमण भगवान् महावीरे गौतमने आ प्रमाणे कहुं-हे गौतम ! घणा माणसो जे परस्पर ए प्रमाणे कहे छे-इत्यादि बधुं कहेयुं, यावद् ते शिवराजर्षिं पोताना उपकरणो मूके छे अने हस्तिनापुर नगरमां जइ शृंगाटक, त्रिक अने बहु प्रकारना मार्गोमां आ प्रमाणे कहे छे, यावत् सात द्वीपो अने समुद्रो छे त्यार पछी नथी, त्यारवाद ते शिवराजर्षिं पासे आ वात सांभळी अने अवधारी हस्तिनापुर नगरमां माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के-‘यावत् सात द्वीप अने समुद्रो छे, ते पछी कांइ नथी’ इत्यादि, ते मिथ्या (असत्य) छे. हे गौतम ! हुं ए प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं-ए प्रमाणे जंबूद्वीपादि द्वीपो अने लवणादि समुद्रो बधा [वृत्ताकारे होवायी] आकारे एक सरखा छे, पण विशालताए द्विगुण द्विगुण विस्तारवाळ्य होवायी अनेक प्रकारना छे-इत्यादि सर्वे ! ‘जीवाभिगम’मां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् हे आयुष्मन् श्रमण ! आ तिर्यग्लोकमां स्वयंभूरमण समुद्रपर्यन्त असंख्यात द्वीपो अने समुद्रो कह्या छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां वर्णवाळ्य, वर्णरहित, गंधवाळ्य, गंधरहित, रसवाळ्य, रसरहित, स्पर्शवाळ्य अने स्पर्शरहित द्रव्यो अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट यावद् अन्योन्य संबद्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे.†

शिवराजर्षि संकल
सात द्वीप अने सात
समुद्र संकल्पे प्रथम.

वर्णादिरहित अने
वर्णादिसहित द्रव्यो.

९ * भगवान् गौतमजुं वर्णन जुओ भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २८०.

† जुओ भग० खं० १ पृ० २८१.

१० † द्वीप अने समुद्रो जुओ जीवाभि० प्रति० ३ उ० १ प० १७६-१.

११ † वर्ण गंध रस अने स्पर्शवाळ्य पुद्गल द्रव्यो छे, अने वर्णादिरहित आकाशादि द्रव्यो छे, बळी तेओ परस्पर स्पर्शने रहेका छे.—टीका.

૧૨. [પ્ર૦] અત્થિ ણં મંતે ! લવણસમુદ્રે દશાઈં સવન્નાઈં પિ અવન્નાઈં પિ સગંધાઈં અગંધાઈં પિ સરસાઈં પિ અરસાઈં પિ સફાસાઈં પિ અફાસાઈં પિ અન્નમન્નવન્નાઈં અન્નમન્નવુદ્ધાઈં જાવ-ઘડત્તાપ ચ્ચિટ્તિ ? [૩૦] હંતા અત્થિ ।

૧૩. [પ્ર૦] અત્થિ ણં મંતે ! ધાયદસંઢે વીવે દદ્દાઈં સવન્નાઈં પિ એવં ચેવ, એવં જાવ-સયંભૂરમણસમુદ્રે ? [૩૦] જાવ હંતા અત્થિ ।

૧૪. તપ ણં સા મહત્તિમદ્દાલિયા મહ્ધપરિસા સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં એયમદ્દં સોઘ્ઘા, નિસમ્મ હુદ્ધુ-તુદ્ધા સમણં ભગવં મહાવીરં વંવદ્દ નમંસદ્દ, વંવિત્તા નમંસિત્તા જામેવ દિસં પાઠબ્ભૂયા તામેવ દિસં પઢ્ઢિગયા ।

૧૫. તપ ણં હ્થિથાણાપુરે નગરે સિંઘાડગઠ જાવ-પહેસુ વહુજણો અન્નમન્નસ્સ એવમાદ્દવ્વદ્દ, જાવ પરુવેદ્દ-જઞ્ઞં 'દેવાણુપ્પિયા ! સિવે રાયરિસી એવમાદ્દવ્વદ્દ, જાવ પરુવેદ્દ-અત્થિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમં અતિસેસે નાણે જાવ-સમુદ્દા ય', તં નો હ્ણદ્દે સમદ્દે, સમણે ભગવં મહાવીરે એવમાદ્દવ્વદ્દ, જાવ પરુવેદ્દ-એવં સ્સલુ એયસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ હ્ણદ્દંહ્ણેણં તં ચેવ જાવ-મંઢનિષ્ણેવં કરેદ્દ, મંઢનિષ્ણેવં કરેસા હ્થિથાણાપુરે નગરે સિંઘાડગઠ જાવ-સમુદ્દા ય । તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિ-સિસ્સ અંતિયં એયમદ્દં સોઘ્ઘા નિસમ્મ જાવ-સમુદ્દા ય તણ્ણં મિચ્છા, સમણે ભગવં મહાવીરે એવમાદ્દવ્વદ્દ-એવં સ્સલુ જંબુદ્દીવા-દીયા દીવા લવણાદીયા સમુદ્દા તં ચેવ જાવ અસંચ્છેજ્ઞા દીવસમુદ્દા પન્નત્તા સમણાડસો !

૧૬. તપ ણં સે સિવે રાયરિસી વહુજણસ્સ અંતિયં એયમદ્દં સોઘ્ઘા નિસમ્મ સંકિપ્પ કંચ્ચિપ્પ વિત્તિગિચ્ચિપ્પ મેવસમાવન્ને કલ્હુસસમાવન્ને જાપ્પ યાવિ હોત્થા । તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ સંકિયસ્સ કંચ્ચિયસ્સ જાવ-કલ્હુસસમાવન્નસ્સ સે વિમંગે અન્નાણે સ્સિપ્પામેવ પરિવડ્ડિપ્પ ।

૧૭. તપ ણં તસ્સ સિવસ્સ રાયરિસિસ્સ અયમેયારુવે અન્મત્થિપ્પ જાવ સમુપ્પજ્જિત્થા—'એવં સ્સલુ સમણે ભગવં મહાવીરે આદિગરે તિત્થગરે જાવ-સદ્ધમ્મ સદ્ધવરિસી આગાસગપ્પણં ચ્ચક્કેણં જાવ સહસંવચ્ચણે ઉજ્જાણે અદ્દાપડ્ડિરુવં જાવ વિહરદ્દ, તં મહા-ફલં સ્સલુ તદ્દારુવાણં અરહંતાણં ભગવંતાણં નામગોયસ્સ જદ્દા ઉવવાદ્દપ્પ જાવ-ગહ્ણયાપ્પ, તં ગચ્છામિ ણં સમણં ભગવં મહાવીરં, વંદામિ જાવ પ્પજ્જુવાસામિ, એવં ણે દ્દહભવે ય પરમથે ય જાવ મવિસ્સદ્દ'ત્તિકહ્હુ એવં સંપેહેતિ ।

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! લવણ સમુદ્રમાં વર્ણવાળાં, વર્ણવિનાના, ગંધવાળાં, ગંધ વિનાના, રસવાળાં, રસવિનાના, સ્પર્શવાળાં ને સ્પર્શ વિનાના દ્રવ્યો અન્યોન્ય વદ્દ, અન્યોન્ય સ્પૃષ્ઠ, યાવત્ અન્યોન્ય સંવદ્દ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! હા, છે.

૧૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ધાતકિત્ત્વંડમાં અને એ પ્રમાણે યાવત્ સ્વયંભૂરમણ સમુદ્રમાં વર્ણવાળાં ને વર્ણરહિત ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત દ્રવ્યો પરસ્પર સંવદ્દ છે ઇત્યાદિ યાવત્ ? [૩૦] હે ગૌતમ ! હા, છે ત્યાં સુધી જાણવું.

૧૪. ત્યારવાદ તે અત્યન્ત મોટી અને મહત્વયુક્ત પરિપદ્ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર પાસેથી એ અર્થ સાંભળી અને અવધારી હૃષ્ટ તુષ્ટ થઈ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વાંદી નમી જે દિશામાંથી આવી હતી તે દિશામાં ગઈ.

૧૫. ત્યારવાદ હસ્તિનાપુર નગરમાં શૃંગાટક યાવત્ બીજા માર્ગોમાં ઘણા માણસો પરસ્પર આ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરુપે છે કે હે દેવાનુપ્રિયો ! શિવરાજર્ષિ જે એમ કહે છે—'યાવત્ પ્રરુપે છે—'હે દેવાનુપ્રિયો ! મને અતિશયવાલું જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું છે, યાવત્ બીજા દ્વીપ-સમુદ્રો નથી;' તે તેનું કથન યથાર્થ નથી. શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર એ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરુપે છે કે—છટ્ટ છટ્ટના તપને નિરંતર કરતા શિવરાજર્ષિ પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે યાવત્ પોતાના ઉપકરણો મૂકીને હસ્તિનાપુર નામના નગરમાં શૃંગાટક યાવત્ બીજા માર્ગોમાં એ પ્રમાણે કહે છે—'યાવત્ સાત દ્વીપ-સમુદ્રો છે, બીજા નથી. ત્યારવાદ તે શિવરાજર્ષિની પાસે એ વાત સાંભળીને અવધારીને ઘણા માણસો એમ કહે છે—'શિવરાજર્ષિ જે કહે છે કે માત્ર સાત દ્વીપ સમુદ્રો છે' તે મિથ્યા છે, યાવત્ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર એ પ્રમાણે કહે છે કે—'હે આયુષ્મન્ શ્રમણ ! જંબૂદ્વીપાદિ દ્વીપો અને લવણાદિ સમુદ્રો એક સરસા આકારે છે—ઇત્યાદિ પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ અસંખ્યાના દ્વીપ-સમુદ્રો કહ્યા છે.'

૧૬. ત્યાર વાદ તે શિવરાજર્ષિ ઘણા માણસો પાસેથી એ વાતને સાંભળીને અને અવધારીને શંકિત, કાંક્ષિત, સંદિગ્ધ, અનિશ્ચિત અને કલુપિત ભાવને પ્રાપ્ત થયા, અને શંકિત, કાંક્ષિત, સંદિગ્ધ, અનિશ્ચિત અને કલુપિત ભાવને પ્રાપ્ત થયેલા શિવરાજર્ષિનું વિભંગ નામે અજ્ઞાન તરતજ નાશ પામ્યું.

૧૭. ત્યાર પછી તે શિવરાજર્ષિને આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્ ઉત્પન્ન થયો—'એ પ્રમાણે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ધર્મની આદિ કરનારા, તીર્થંકર, યાવત્ સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી છે; અને તેઓ આકાશમા ચાલતા ધર્મચક્રવલ્લે યાવત્ સહસ્રાધ્રવન નામે ઉચ્ચાનમાં યથાયોગ્ય અવગ્રહ પ્રહણ કરી યાવત્ વિહરે છે. તો તેવા પ્રકારના અરિહંત ભગવંતોના નામગોત્રનું શ્રવણ કરવું તે મહા ફલવાળું છે, તો અભિગમન વંદનાદિ માટે તો શું કહેવું ?—ઇત્યાદિ *ઔપપાતિક સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ એક આર્ય ધાર્મિક સુવચનનું શ્રવણ કરવું મહા ફલવાળું છે, તો તેના વિપુલ અર્થનું અવધારણ કરવા માટે તો શું કહેવું ? તેથી હું શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરની પાસે જાઉં, વાંદુ અને નમું, યાવત્ તેઓની પર્યુપાસના કરું, એ મને આ ભવમાં અને પરભવમાં યાવત્ શ્રેયને માટે યશે' એમ વિચારે છે.

લવણસમુદ્રમાં
દ્રવ્યો.

ધાતકિત્ત્વંડમાં
દ્રવ્યો.

શિવરાજર્ષિનું
કથન યથાર્થ નથી.

મહાવીરસ્વામીનું
કથન-અસંખ્યાત
દ્વીપ-સમુદ્રો.

શિવરાજર્ષિ શંકિત
થયા.

શિવરાજર્ષિને મહા-
વીરસ્વામી પાસે
જ્ઞાપવાનો સંકલ્પ.

૧૮. એવં ૨ ત્વા જ્ઞેયેવ તાવસાવસદ્દે તેજેવ ઉવાગચ્છદ, તેજેવ ઉવાગચ્છિત્તા તાવસાવસદ્દં અણુપ્પવિસતિ, તાં ૨ સુબહું લોહી-લોહકડાહ૦ જાવ કિલિણસંકાતિગં ચ ગેણદ્દ, ગેણિહતા તાવસાવસદ્દાધો પલ્લિનિષ્ણમતિ, તાવં ૨ પલ્લિવલ્લિવિ-કમ્મંગે હલ્લિખાગપુરં નગરં મજ્જમજ્જેણં નિગ્ગચ્છદ, નિગ્ગચ્છિત્તા જ્ઞેયેવ સદ્દસંબધજે ઉજ્જાણે, જ્ઞેયેવ સમણે મગલં મહાવીરે, તેજેવ ઉવાગચ્છદ, તેજેવ ઉવાગચ્છિત્તા સમણં મગલં મહાવીરં તિવ્વહુસો આયાહિણપયાહિણં કરેદ, ઘંવતિ નમંસતિ, ઘંદિત્તા નમંસિત્તા નચ્ચાસલ્લે નાદદુરે જાવ- પંજલિઉડે પજ્જુવાસદ્દ । તપ્પ જં સમણે મગલં મહાવીરે સિવ્વસ્સ રાયરિસિસ્સ તીસે ય મહતિમહાલિ-યાપ્પં જાવ-આણાપ આરાહપ્પ મલ્લ ।

૧૯. તપ્પ જં સે સિવ્વે રાયરિસી સમણસ્સ મગલ્લો મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મં સોચ્ચા, નિસમ્મ જહા અંદમ્મો, જાવ ઉત્તરપુરચ્છિમં દિસીમાગં અવલ્લમ્મદ્દ, ૨ સુબહું લોહી-લોહકડાહ૦ જાવ-કિલિણસંકાતિગં ઘંતે પહેદ્દ, ૫૦ ૨ સયમેવ પંચમુ-ટ્ટિયં લોયં કરેતિ, સયમે ૨ સમણં મગલં મહાવીરં એવં જહેવ ઉત્તમવસે તહેવ પલ્લમ્મો, તહેવ હક્કારસ અંગાહં અહિજ્જતિ, તહેવ સદ્દં જાવ-સદ્દુપ્પલ્લપ્પહીણે ।

૨૦. [પ્ર૦] 'મંતે'સિ મગલં ગોયમે સમણં મગલં મહાવીરં ઘંદદ્દ નમંસદ્દ, ઘંદિત્તા નમંસિત્તા એવં ઘયાસી-જીવા જં મંતે ! સિજ્જમાણા કયરંમિ સંઘયણે સિજ્જંતિ ? [ઉ૦] ગોયમા ! ઘયરોસમણારાયસંઘયણે સિજ્જંતિ । એવં જહેવ ઉવવાહપ્પ તહેવ "સંઘ-યણં સંઠાણં ઉચ્ચસં આડયં ચ પરિવસણા" । એવં સિદ્ધિગંઢિયા નિરવસેસા માણિયઘા, જાવ-"અજ્ઞાવાહં સોક્કલં અણુહોંતિ સાસયં સિદ્ધા" ॥ સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! સિ ॥ સિવ્વો સમત્તો ।

એકારસસપ્ત નવમો ઉદ્દેસો સમત્તો ।

૧૮. એ પ્રમાણે વિચાર કરી જ્યાં તાપસોનો મઠ છે ત્યાં આવે છે. આવી તાપસોના મઠમાં પ્રવેશ કરી ઘણી લોદી, લોદાના કડાયા યાવત્ કાવડ વગેરે ઉપકરણોને લેઈ તાપસોના આશ્રમથી નીકળે છે. નીકળીને વિભંગજ્ઞાનરહિત તે શિવરાજર્ષિ હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે-વચ્ચ પહોંને જ્યાં સદ્દસામ્રવન નામે ઉષાન છે, જ્યાં શ્રમણ મગલાન્ મહાવીર છે ત્યાં આવે છે. આવીને શ્રમણ મગલાન્ મહાવીરને ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરીને વાંદે છે અને નમે છે. વાંદી અને નમીને તેઓથી વહુ નજીક નહીં અને વહુદૂર નહીં તેમ ઉભા રહી યાવત્ હાથ જોડી તે શિવરાજર્ષિ શ્રમણ મગલાન્ મહાવીરની ઉપાસના કરે છે. સ્યાર બાદ તે શિવરાજર્ષિને અને મોટામા મોટી પર્ષદને શ્રમણ મગલાન્ મહાવીર ધર્મકથા કહે છે. અને યાવત્ તે શિવરાજર્ષિ આજ્ઞાના આરાધક થાય છે.

શિવરાજર્ષિનું મહા-
વીરસ્વામી પાસે
આગમન.

૧૯. પછી તે શિવરાજર્ષિ શ્રમણ મગલાન્ મહાવીરની પાસેથી ધર્મને સાંભળી અને અવધારી *સ્કંદકના પ્રકરણમાં વહ્યા પ્રમાણે યાવત્ ઈશાન કોણ તરફ જઈ ઘણી લોદી, લોદાના કડાયા યાવત્ કાવડ વગેરે તાપસોચિત ઉપકરણોને એકાંત જગ્યાએ મૂકે છે. મૂકીને પોતાની મેઢે પંચ મુટ્ટિ લોચ કરી, શ્રમણ મગલાન્ મહાવીર પાસે †શ્રુવમદત્તની પેઠે પ્રવ્રજ્યાનો સ્વીકાર કરે છે, અને તે પ્રમાણે અગ્યાર અંગોનું અધ્યયન કરે છે, તથા એજ પ્રમાણે યાવત્ તે શિવરાજર્ષિ સર્વ દુઃખથી મુક્ત થાય છે.

શિવરાજર્ષિની સીકા.

૨૦. 'હે મગલાન્ ! એમ કહી મગલાન્ ગૌતમ શ્રમણ મગલાન્ મહાવીરને વાંદે છે અને નમે છે, વાંદી અને નમીને મગલાન્ ગૌતમે આ પ્રમાણે પૂછ્યું—[પ્ર૦] "હે મગલાન્ ! સિદ્ધ યતા જીવો કયા સંઘયણમાં સિદ્ધ થાય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જીવો વજ્રરૂપમનારાચ સંઘયણમાં સિદ્ધ થાય"—इत्यादि †ઔપપાતિકસૂત્રમાં વહ્યા પ્રમાણે "સંઘયણ, સંસ્થાન, ઉંચાઈ, આયુષ, પરિવસના (વાસ)"—અને એ પ્રમાણે આસ્તી †સિદ્ધિગંઢિકા કહેવી; યાવત્ અવ્યાવાધ (દુઃખરહિત) શાશ્વત સુખને સિદ્ધો અનુભવે છે. 'હે મગલાન્ ! તે એમજ છે, હે મગલાન્ ! તે એમજ છે' એમ કહી યાવત્ વિહરે છે.

એકાદશ ઘતે શિવનામે નવમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૧૯ * જુઓ મગ. સં. ૧ ક. ૧ ડ. ૧ પૃ. ૨૨૮.

† શ્રુવમદત્તની પ્રવ્રજ્યા જુઓ મગ. સં. ૧ ક. ૧ ડ. ૧૨ પૃ. ૧૬૫.

૨૦ † સિદ્ધના સ્વરૂપનું વર્ણન જુઓ ઔપપા. ૫. ૧૧૨-૧.

‡ ઔપપાતિક સૂત્રને અન્વેષિતના સ્વરૂપનું વર્ણન કરનાર "કર્ણ પલ્લિયા સિદ્ધા" इत्यादि વાચીય ગાથાના પ્રકરણને સિદ્ધિગંઢિકા કહે છે.

दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-कतिविहे णं भंते ! लोप पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! अउविहे लोप पञ्चसे, तंजहा-द्वल्लोप, खेत्तलोप, काललोप, भावलोप ।
२. [प्र०] खेत्तलोप णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पञ्चसे, तंजहा-१ अहोलोयखेत्तलोप, २ तिरियलोयखेत्तलोप, ३ उहूलोयखेत्तलोप ।
३. [प्र०] अहोलोयखेत्तलोप णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पञ्चसे, तंजहा-रयणप्पमापुढवि-अहेलोयखेत्तलोप, जाव-अहेसत्तमापुढविअहोलोयखेत्तलोप ।
४. [प्र०] तिरियलोयखेत्तलोप णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! असंखेत्तविहे पञ्चसे, तंजहा-अंबुदीवे वीवे तिरियलोयखेत्तलोप, जाव-सयंभूरमणसमुहे तिरियलोयखेत्तलोप ।
५. [प्र०] उहूलोगखेत्तलोप णं भंते ! कतिविहे पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! पञ्चरसविहे पञ्चसे, तंजहा-सोहम्मकप्पउहूलोगखेत्तलोप, जाव-अच्चुयउहूलोप, गेवेत्तविमाणउहूलोप, अनुत्तरविमाण० ईसिपम्मारपुढविउहूलोगखेत्तलोप ।
६. [प्र०] अहूलोगखेत्तलोप णं भंते ! किंसंठिप पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! तप्पागारसंठिप पञ्चसे ।

दशम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावद् आ प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! लोक केटला प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक चार प्रकारनो क्खो छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्यलोक, २ क्षेत्रलोक, ३ काललोक अने ४ भावलोक.
२. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रलोक केटला प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो क्खो छे, ते आ प्रमाणे-१ अधोलोकक्षेत्रलोक, २ तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक अने ३ ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक.
३. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! सात प्रकारनो क्खो छे, ते आ प्रमाणे-१ रत्तप्रभापृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक, यावत् ७ अधःसतमपृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक.
४. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्य प्रकारनो क्खो छे, ते आ प्रमाणे-जंबूद्वीपतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक, यावत् स्वयंभूरमणसमुद्रतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक.
५. [प्र०] हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो क्खो छे ? [उ०] हे गौतम ! पंदर प्रकारनो क्खो छे, ते आ प्रमाणे-१ सौधर्मकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, यावद् १२ अच्युतकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १३ प्रैवेयकविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १४ अनुत्तरविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक अने १५ ईषत्पाग्भारपृथिवीऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक.
६. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक केवा संस्थाने छे ? [उ०] हे गौतम ! अधोलोक त्रापाने आकारे छे.

लोकना प्रकार.

क्षेत्रलोकना प्रकार.

अधोलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.

तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक.

ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.

अधोलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.

७. [प्र०] तिरियल्लोयकेसल्लोय णं मंते ! किसंठिय पजसे ? [उ०] गोयमा ! हल्लुरिसंठिय पजसे ।

८. [प्र०] उहल्लोयकेसल्लोय—पुच्छा [उ०] उहमुंगगाकारसंठिय पजसे ।

९. [प्र०] ल्लोय णं मंते ! किसंठिय पजसे ? [उ०] गोयमा ! सुपरङ्गसंठिय ल्लोय पजसे, तंजहा—देट्टा विच्छिन्ने, मज्जे संक्खित्ते, जहा सत्तमसस्य पट्टमुहेसस्य जाव अंतं करेति ।

१०. [प्र०] अल्लोय णं मंते ! किसंठिय पजसे ? [उ०] गोयमा ! हल्लुरिगोलसंठिय पजसे ।

११. [प्र०] अहेल्लोगकेसल्लोय णं मंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपपसा ? [उ०] एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं माणियसं, जाव—अद्दासमय ।

१२. [प्र०] तिरियल्लोयकेसल्लोय णं मंते ! किं जीवा० ? [उ०] एवं चेव, एवं उहल्लोयकेसल्लोय वि, नवरं अरूवी छविहा, अद्दासममो नत्थि ।

१३. [प्र०] ल्लोय णं मंते किं जीवा० ? [उ०] जहा वितियसस्य अत्थिउहेसस्य ल्लोयागासे, नवरं अरूवी सत्तविहा, जाव—अहम्मत्थिकायस्स पपसा, नोआगासत्थिकाय, आगासत्थिकायस्स हेसे, आगासत्थिकायपपसा, अद्दासमय, सेसं तं चेव ।

१४. [प्र०] अल्लोय णं मंते ! किं जीवा० ? [उ०] एवं जहा अत्थिकायउहेसस्य अल्लोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव—अणंतमागुणे ।

७. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केवा संस्थाने छे ? [उ०] हे गौतम ! ते शास्त्रने आकारे छे.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केवा आकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! उभा मृदंगने आकारे छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! लोक केवा आकारे संस्थित छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठकने आकारे संस्थित छे, ते आ प्रमाणे—“नीचे पहोळो, मध्यभागमां संक्षिप्त—संकीर्ण”—इत्यादि “सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां कक्षा प्रमाणे कहेवुं. [ते लोकने उत्पन्न ज्ञान दर्शनने धारण करनारा केवलज्ञानी जाणे छे अने ह्यार पछी सिद्ध थाय छे] यावद् ‘सर्व दुःखोनो अन्त करे छे’.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक केवा आकारे कस्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! अलोक पोला गोळने आकारे कस्यो छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक शुं जीवरूप छे, जीवदेशरूप छे, जीवप्रदेशरूप छे इत्यादि ? [उ०] हे गौतम ! जेम † ऐन्त्री दिशा संबन्धे कस्युं छे ते प्रमाणे सर्व अहिं जाणवुं, यावद् ‘अद्दासमय (काल) रूप छे’.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोक शुं जीवरूप छे इत्यादि ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक संबन्धे पण जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के ऊर्ध्वलोकमां अरूपी द्रव्य छ प्रकारे छे, कारण के त्यां अद्दा समय नथी.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! लोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] बीजा शतकना ‡अस्तिउद्देशकमां लोकाकाराने विषे कस्युं छे ते प्रमाणे अहिं जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के अहिं अरूपी सात प्रकारे जाणवा, †यावद् ४ ‘अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नोआकाशास्तिकाय—रूप, आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो अने ७ अद्दासमय. बाकी पूर्वे कक्षा प्रमाणे जाणवुं.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] जेम §अस्तिकायउद्देशकमां अलोकाकाराने विषे कस्युं छे ते प्रमाणे कस्युं अहिं जाणवुं, यावत् ते [सर्वाकाराना] ‘अनन्तमा भाग न्यून छे’.

तिर्यग्लोक
संस्थान.

ऊर्ध्वलोक
संस्थान.

लोकसुं संस्थान.

अलोकसुं संस्थान.

अधोलोक जीव-
रूप छे इत्यादि प्रश्न.

तिर्यग्लोक जीव-
रूप छे इत्यादि.

लोक जीवरूप छे
इत्यादि.

अलोकाकार जीव-
रूप छे इत्यादि.

१ * लोकसुं संस्थान जुओ भग० सं० ३ श० ७ उ० १ पृ० २.

११ † जुओ ऐन्त्रीदिशासंबन्धे प्रश्न भग० सं० ३ श० १० उ० १ पृ० १८९.

१२ ‡ भग० सं० १ श० २ उ० १० पृ० २१०. सू० ६६.

१३ § १ अधर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ३ अधर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, अने ७ काल.—ए अरूपीना सात प्रकार छे. सेमां प्रथम अधर्मास्तिकाय छे. कारण के ते संपूर्ण लोकने विषे विद्यमान छे. अधर्मास्तिकायनो देश नथी, केमके लोकमां असंख अधर्मास्तिकाय छे. तथा अधर्मास्तिकायना प्रदेशो छे, कारण के अधर्मास्तिकाय ते प्रदेशोना समुदायरूप छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना पण ते सेद जाणवा. आकाशास्तिकाय नथी, कारण के लोकमां तेनो एक भाग छे, अने तेबीज आकाशास्तिकायनो देश छे. आकाशास्तिकायना प्रदेशो छे. तथा काल द्रव्य छे.—टीका.

१४ § भग० सं० १ श० २ उ० १० पृ० २१० सू० ६७.

१५. [प्र०] अहेलोगक्षेत्रलोगस्त णं भंते ! एगंमि आगासपपसे किं जीवा, जीवदेसा, जीवपपसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपपसा ? [उ०] गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपपसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपपसा वि । जे जीवदेसा ते नियमा १ एगंदियदेसा, २ अहवा एगंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, ३ अहवा एगंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । एवं मज्झिह्विरहिओ जाव-अण्णिएसु, जाव-अहवा एगंदियदेसा य अण्णिएदेसा य । जे जीवपपसा ते नियमा १ एगंदियपपसा, २ अहवा एगंदियपपसा य बेइंदियस्स पपसा, ३ अहवा एगंदियपपसा य बेइंदियाण य पपसा, एवं आह्विरहिओ जाव पंखिएसु, अण्णिएसु तियमंगो । जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य । रूवी तहेय, जे अरूवी अजीवा ते पंखिविहा पण्णत्ता, तंजहा-१ नोधम्मत्थिकाय धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पपसे, एवं ४ अहम्मत्थिकायस्स वि, ५ अह्मासमय ।

१६. [प्र०] तिरियलोगक्षेत्रलोगस्त णं भंते ! एगंमि आगासपपसे किं जीवा० ? [उ०] एवं जहा अहेलोगक्षेत्रलोगस्त तहेय, एवं उह्वलोगक्षेत्रलोगस्त वि, नवरं अह्मासमओ नत्थि, अरूवी चउच्चिहा । लोगस्त जहा अहेलोगक्षेत्रलोगस्त एगंमि आगासपपसे ।

१७. [प्र०] अलोगस्त णं भंते ! एगंमि आगासपपसे पुच्छा [उ०] गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, तं चेव जाव अणंतेहि अगुरुयलहुयगुणेहि संजुचे सङ्गागासस्स अणंतभागूणे ।

१८. दहओ णं अहेलोगक्षेत्रलोए अणंताइं जीवदह्वाइं, अणंताइं अजीवदह्वाइं, अणंता जीवाजीवदह्वा । एवं तिरियलोगक्षेत्रलोए वि, एवं उह्वलोगक्षेत्रलोए वि । दहओ णं अलोए णेवत्थि जीवदह्वा, नेवत्थि अजीवदह्वा, नेवत्थि जीवाजीवदह्वा, एणे

१५. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं १ जीवो, २ जीवना देशो, ३ अजीवो, ४ अजीवोना देशो अने ५ अजीवना प्रदेशो छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो नथी, पण जीवोना देशो, जीवोना प्रदेशो, अजीवो, अजीवना देशो अने अजीवना प्रदेशो छे. तेमां त्यां जे जीवोना देशो छे ते अवश्य १ एकेन्द्रियजीवोना देशो छे २ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रिय जीवोना देश छे, ३ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो छे. ए प्रमाणे *मध्यम भंगरहित बाकीना विकल्पो यावद् अनिन्द्रियो-सिद्धो संबन्धे जाणवा. यावद् 'एकेन्द्रियोना देशो अने अनिन्द्रियोना देशो' छे, तथा त्यां जे जीवना प्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो अने एक बेइन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे, २ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रियो संबन्धे प्रथम भंग शिवाय त्रण भांगा जाणवा. तथा त्यां जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां रूपिअजीवो पूर्व प्रमाणे जाणवा. अने जे अरूपिअजीवो छे ते पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ नोधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायनो प्रदेश, ए प्रमाणे ४ अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं. अने ५ अह्मा समय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो छे ? इत्यादि [उ०] जेम अधोलोकक्षेत्रलोकना संबन्धे कहुं तेम अहाँ वधुं जाणवुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, त्यां अह्मासमय नथी, माटे अरूपी चार प्रकारना छे, लोकना एक आकाश प्रदेशमां अधोलोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशमां जेम कहुं छे तेम जाणवुं.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! अलोकना एक आकाश प्रदेश संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्यां 'जीवो नथी, जीव देशो नथी'-इत्यादि पूर्वनां पेटे [सू. १४] कहेवुं, यावत् अलोक अनन्त अगुरुलघुगुणोपी संयुक्त छे अने सर्वाकाराना अनंतमा भागे न्यून छे.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यपी अधोलोकक्षेत्रलोकमां अनन्त जीव द्रव्यो छे, अनंत अजीव द्रव्यो छे अने अनंत जीवाजीव द्रव्यो छे. ए प्रमाणे तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकमां तथा ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकमां पण जाणवुं. द्रव्यपी अलोकमां जीव द्रव्यो नथी, अजीव द्रव्यो नथी अने जीवाजीव द्रव्यो नथी, पण एक अजीवद्रव्यनो देश छे, यावत् सर्वाकाराना अनंतमा भागे न्यून छे. कालपी अधोलोकक्षेत्रलोक कोइ

१५ * श. १० उ. १ प्रदर्शित एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रिय जीवना देशो-ए मध्यम भांगो होतो नथी, कारणके एक आकाशप्रदेशमां एक बेइन्द्रिय जीवना पणा देशो संभवित नथी.

† नोधर्मास्तिकाय-अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमां संपूर्ण धर्मास्तिकाय नथी. पण तेनो देश अने प्रदेश होय छे तेनी तेने नोधर्मास्तिकायकय कहल छे.

अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे इत्यादि.

तिर्यग्लोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे इत्यादि. लोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीव होय ?

अलोकना एक आकाशप्रदेशमां जीव होय ?

द्रव्यादिपी अधोलोकक्षेत्रलोके विचार.

अजीवद्वन्द्वे जाव सन्नागासअणंतभागूणे । कालभो णं अहेल्लोयखेत्तलोय न कयार नासि, जाव निचे, एवं जाव अल्लोणे । भावभो णं अहेल्लोयखेत्तलोय अणंता वन्नपज्जावा, जहा खंदप, जाव अणंता अगुरुयल्लुपयपज्जावा, एवं जाव ल्लोय । भावभो णं अल्लोय नेवत्थि वन्नपज्जावा, जाव नेवत्थि अगुरुयल्लुपयपज्जावा, एगे अजीवद्वन्द्वे, जाव अणंतभागूणे ।

१९. [प्र०] लोय णं मते ! के महालय पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! अयं जंबुद्वीवे दीवे सन्नदीव० जाव—परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समपणं छ देवा महिद्विया जाव—महेसवखा जंबुद्वीवे दीवे मंदरे पन्न मंदरचूलियं सन्नधो समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठेज्जा, अहेणं चत्तारि विसाकुमारीभो महत्तरियाभो चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्वीवस्स दीवस्स चउसु वि विसासु बहियाडमिमुहीभो टिष्ठा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियामिमुहे पक्खिजेज्जा, पभू णं गोयमा ! ताभो एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपसे खिप्पामेव पडिसाहरित्तप, ते णं गोयमा ! देवा ताप उक्खिट्ठप जाव देवगईप एगे देवे पुरच्छामिमुहे पयाते, एवं दाहिणामिमुहे, एवं पच्चत्थामिमुहे, एवं उत्तरामिमुहे, एवं उद्दामि० एगे देवे अहोमिमुहे पयाप, तेणं कालेणं तेणं समपणं वाससहस्साउप दारप पयाप, तप णं तस्स दारगस्स अम्मपियरो पहीणा भवति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तप णं तस्स दारगस्स आउप पहीणे भवति, णो चेव णं जाव संपाउणंति, तप णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिजा पहीणा भवति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तप णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तप णं तस्स दारगस्स नामगोप वि पहीणे भवति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तेसि णं मंते । देवाणं किं गप बहुप अगपबहुप ? गोयमा ! गप बहुप नो अगप बहुप, गयाउ से अगप असंक्खेज्जाभाने, अगयाउ से गप असंक्खेज्जागुणे, लोय णं गोयमा ! ए महालय पन्नसे ।

२०. [प्र०] अलोय णं मते ! के महालय पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! अयं समयजेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खमेणं, जहा खंदप, जाव—परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समपणं इस देवा महिद्विया तहेव जाव—संपरिक्खित्ता णं चिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ विसाकुमारीभो महत्तरियाभो अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पन्नयस्स चउसु वि विसासु चउसु

दिवस न हतो एम नथी, यावत् निल्ल छे. ए प्रमाणे यावत् अलोक जाणवो. भावथी अधोलोकक्षेत्रलोकमां 'अनंत वर्ण पर्यवो छे'—इत्यादि जेम "स्कंदकना अधिकारमां कर्हुं छे तेम जाणतुं, यावद् अनंत अगुरुल्लुपपर्यवो छे. ए प्रमाणे यावत् लोक सुधी जाणतुं. भावथी अलोकमां वर्णपर्यवो नथी, यावत् अगुरुल्लुपपर्यवो नथी, पण एक अजीवद्वयनो देश छे अने ते सर्वाकाशना अनंतमा भागे न्यून छे.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! लोक केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ जंबुद्वीप नामे द्वीप सर्वे द्वीपो अने समुद्रोनी अभ्यं-तर छे, यावत् परिधि युक्त छे. ते काले—ते समये महर्धिक अने यावत् महासुखवाळा छ देवो जंबुद्वीपमां मेरुपर्वतने विषे मेरुपर्वतनी चूलिकाने चारे तरफ वीटाइने उभा रहे, अने नीचे मोटी चार विक्रुमारीभो चार बलिपिंडने ग्रहण करीने जंबुद्वीपनी चारे दिशामां बहार मुख राखीने उमी रहे, पछी तेओ ते चारे बलिपिंडने एक साथे बाहेर फेंके, तोपण हे गौतम ! तेमांनो एक एक देव ते चार बलिपिंडने पृथिवी उपर पड्या पहेळां शीघ्र ग्रहण करवा समर्थ छे. हे गौतम ! एवी गतिवाळा ते देवोमांथी एक देव उक्कट यावद् त्वरित देवगतिवडे पूर्व दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक दक्षिण दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक पश्चिम दिशामां, एक उत्तर दिशामां, एक ऊर्ध्व दिशामां अने एक देव अधोदिशामां गयो. हवे ते काले, ते समये हजार वर्षना आयुषवाळो एक बाळक उत्पन्न थयो, ल्यार पछी ते बाळकना मातापिता मरण पाम्या, तोपण तेटला वखत सुधी पण ते गएला देवो लोकना अंतने प्राप्त करी शकता नथी. ल्यार बाद ते बाळकतुं आयु-ष क्षीण थयुं—पूरुं थयुं, तोपण ते देवो लोकांतने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते बाळकना अस्थि अने मज्जा नाश पाम्या, तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी, ल्यार बाद सात पेढी सुधी तेना कुलवंश नष्ट थया, तोपण ते देवो लोकांतने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते बाळकतुं नामगोत्र पण नष्ट थयुं तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी. [प्र०] जो एम छे तो हे भगवन् ! ते देवोए ओळंगेले मार्ग घणो छे के ओळंग्या विनानो मार्ग घणो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देवो वडे ओळंगायेल—गमन करायेल—क्षेत्र वधारे छे, पण नहि ओळंगायेलुं—नहि गमन करायेलुं क्षेत्र वधारे नथी. गमन करायेला क्षेत्रथी नहि गमन करायेलुं क्षेत्र असंख्यातमा भागे छे. अने नहि गमन करायेला क्षेत्रथी गमन करायेलुं क्षेत्र असंख्यात गुण छे. हे गौतम ! लोक एटलो मोटो कह्यो छे.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! 'आ मनुष्यक्षेत्रं लंबा' अने पटोळाइमां पीस्ताळीश

१८ * जुओ स्कंदकना अधिकारमां लोकना स्वरूपतु वर्णन. भग० सं० १ अ० २ उ० १ पृ० २३५.

† चार स्वर्गवाळा पुत्रल्लेखो तथा अरुपी इत्यमां अगुरुल्लुपपर्यवो होय छे, अने ते इत्यो अलोकमां नहि होवावी त्यां अगुरुल्लुपपर्यवो नथी—टीका.

१९ † त्रण लक्ष, सोल हजार, बसो सत्सानीस जोजन, त्रण कोष, एकवो अज्जावीस तनुष अने कइक अधिक साडा तेर आंगळ—एटली जंबुद्वी-पनी परिधि छे—टीका.

लोकनो विस्तार.

अलोकनो विस्तार.

वि विदिसासु बहियामिमुहीओ डिष्ठा ते अट्ट बलिपिंडे जमगसमगं बहियामिमुहीओ पक्खिबेजा, पभू णं गोयमा ! तओ एग-
मेगे देवे ते अट्ट बलिपिंडे धरणितलमसंपसे खिप्पामेव पडिसाहरित्तप; ते णं गोयमा ! देवा ताप उक्किट्ठाए जाव देवगाए
लोगंते डिष्ठा असम्भावपट्टवणाए एगे देवे पुरच्छामिमुहे पयाए, एगे देवे दाहिणपुरच्छामिमुहे पयाए, एवं जाव-उत्तरपु-
रच्छामिमुहे, एगे देवे उट्टामिमुहे, एगे देवे अट्टोमिमुहे पयाए । तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए वारए पयाए ।
तए णं तस्स वारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो खेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति, तं खेव जाव-तेसिं णं देवाणं
किं गए बहुए अगए बहुए ? गोयमा ! नो गए बहुए अगए बहुए, गयाउ से अगए अणंतगुणे, अगयाउ से गए अणंतमागे,
अलोए णं गोयमा ! एमहालय पन्नसे ।

२१. [प्र०] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपपसे जे एगिदियपपसा जाव-पंखिदियपपसा अणिदियपपसा अन्नमन्न-
बद्धा, अन्नमन्नपुट्टा, जाव-अन्नमन्नसमभरघडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आवाहं वा वाबाहं वा उप्पा-
यंति, छविच्छेदं वा करेति ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चह-लोगस्स णं एगंमि आगासपपसे जे
एगिदियपपसा जाव चिट्ठंति, णत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आवाहं वा जाव करेति ?, [उ०] गोयमा ! से जहानामए
नट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा, जाव-कलिया रंगट्टाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स
अन्नयरं नट्टविहिं उचवंसेजा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए विट्ठीए सच्चओ समंता सममिलोपंति ? इंता
संममिलोपंति, ताओ णं गोयमा ! विट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सच्चओ समंता संनिपडियाओ ?, इंता सच्चिपडियाओ, अत्थि णं
गोयमा ! ताओ विट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आवाहं वा वाबाहं वा उप्पापंति, छविच्छेदं वा करेति ?, णो तिणट्टे समट्टे ।
अइवा सा नट्टिया तासिं विट्ठीणं किंचि आवाहं वा वाबाहं वा उप्पापंति, छविच्छेदं वा करे ? णो तिणट्टे समट्टे । ताओ वा
विट्ठीओ अन्नमन्नाए विट्ठीए किंचि आवाहं वा वाबाहं वा उप्पापंति, छविच्छेदं वा करेन्ति ?, णो तिणट्टे समट्टे । से तेणट्टेणं
गोयमा ! एवं बुच्चह-तं खेव जाव छविच्छेदं वा करेति ।

लाख योजन छे'-इत्यादि जेम *स्कंदकना अधिकारमां कहुं छे तेम जाणवुं, यावत् ते परिधियुक्त छे. ते काले-ते समये दस महर्धिक
देवो पूर्वनी पेटे ते मनुष्य लोकनी चारे बाजु बीटाइने उभा रहे. तेनी नीचे मोटी आठ दिक्कमारीओ आठ बलिपिंडने लेइने मानुषोत्तर
पर्वतनी चारे दिशामां अने चारे विदिशामां बाह्यामिमुख उमी रहे अने ते आठ बलि पिंडने लइने एकज साथे मानुषोत्तर पर्वतनी बाहे-
रनी दिशामां फेंके, तो हे गौतम ! तेमांनो कोई पण एक देव ते आठ बलिपिंडोने पृथिवी उपर पड्या पहेलां शीघ्र संहरवा समर्थ छे. हे
गौतम ! ते देवो उत्कृष्ट, यावद् त्वरित देवगतिथी लोकना अंतमां उभा रही असत् कल्पना वडे एक देव पूर्व दिशा तरफ जाय, एक देव
दक्षिणपूर्व तरफ जाय, अने ए प्रमाणे यावत् एक देव पूर्व तरफ जाय, वळी एक देव ऊर्ध्व दिशा तरफ जाय, अने एक देव अधोदिशा
तरफ जाय; ते काले-ते समये लाख वर्षना आयुषवाळा एक बालकनो जन्म थाय, पछी तेना मातापिता मरण पामे तोपण ते देवो अलो-
कना अन्तने प्राप्त करी शकता नथी-इत्यादि पूर्वे कहेलुं. अहीं कहेवुं. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! ते देवोनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे के
नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु नथी, पण नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे. गमन
करायेला क्षेत्र करतां नहि गमन करायेलुं क्षेत्र अनन्तगुण छे, अने नहि गमन करायेला क्षेत्र करतां गमन करायेलुं क्षेत्र अनंतमे भागे छे.
हे गौतम ! अलोक एटलो मोटो कहुओ छे.

लोकना एक आकाश
प्रदेशमां बीजना
प्रदेशो परस्पर संबद्ध
छे अने एक बीजाने
बीजा उत्पन्न करे ?

२१. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, यावत् पंचेन्द्रियना प्रदेशो अने अनि-
न्द्रियना प्रदेशो छे ते शुं बधा परस्पर बद्ध छे, अन्योऽन्य सृष्ट छे, यावद् अन्योन्य संबद्ध छे ? वळी हे भगवन् ! ते बधा परस्पर एक
बीजाने कांइ पण आबाधा (पीडा) व्याबाधा (विशेष पीडा) उत्पन्न करे, तथा अवयवनो छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ
नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रियना प्रदेशो यावत् रहे छे, अने
ते परस्पर एक बीजाने कांइ पण आबाधा वा व्याबाधा करता नथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम शृंगारना आकार सहित सुन्दर वेपवाळी अने
संगीतादिने विषे निपुणतावाळी कोई एक नर्तकी होय अने ते सेंकडो अथवा लाखो माणसोथी भरेला रंगस्थानमां बत्रीश प्रकारना नाट्य-
मांनुं कोई एक प्रकारनुं नाट्य देखाडे तो हे गौतम ! ते प्रेक्षको शुं ते नर्तकीने अनिमेष दृष्टिथी चोतरफ जुए ? हा, भगवन् ! जुए. तो
हे गौतम ! ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओ शुं ते नर्तकीने विषे चारे बाजुथी पडेली होय छे ? हा, पडेली होय छे. हे गौतम ! प्रेक्षकोनी ते दृष्टिओ
ते नर्तकीने कांइ पण आबाधा वा व्याबाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? हे भगवन् ! ए अर्थ योग्य नथी. अथवा ते
नर्तकी ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओने कांइ पण आबाधा के व्याबाधा उत्पन्न करे अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? ए अर्थ यथार्थ नथी. अथवा
ते दृष्टिओ परस्पर एक बीजी दृष्टिओने कांइपण आबाधा के व्याबाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? ए अर्थ यथार्थ नथी.
अर्थात् न करे, ते हेतुथी एम कहेवाय छे के पूर्वोक्त यावत् अवयवनो छेद करता नथी.'

२२. [प्र०] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपय जहणपय जीवपयसाणं, उक्कोसपय जीवपयसाणं, सच्चजीवाण व कयरे कयरे० जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सबथोवा लोगस्स एगंमि आगासपयसे जहणपय जीवपयसा, सच्चजीवा वसंसेजगुणा, उक्कोसपय जीवपयसा विसेसाहिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

एकारससय दसमोदेसो समत्तो ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्यपदे रहेला जीवप्रदेशो, उक्कृष्टपदे रहेला जीवप्रदेशो अने सर्व जीवोमां कोण कोना करतां यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गीतम ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्य पदे रहेला जीवप्रदेशो सीयी थोडा छे, तेना करतां सर्व जीवो असंख्यात गुण छे, अने ते करतां पण उक्कृष्ट पदे रहेला जीवप्रदेशो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, एम कही [भगवान् गीतम] यावद् विहरे छे.

एक आकाश प्रदेशमां जघन्य अने उक्कृष्ट पदे रहेला जीव प्रदेशो तथा सर्व जीवोमां अस्त्वगुण.

एकारदश शते दशम उद्देश समाप्त.

एकारसमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समणं वाणियगामे णामं नगरे होत्था, वणओ । दूतिपलासय चेइए, वणओ । जाव-पुढवि-सिलापट्टओ । तत्थ णं वाणियगामे नगरे सुदंसणे णामं सेट्टी परिवसइ, अहे, जाव-अपरिभूए समणोवासय अभिगयजीवा-जीवे जाव-विहरइ । सामी समोसडे, जाव-परिसा पज्जुवासइ । तए णं से सुदंसणे सेट्टी इमीसे कइए लखट्टे समाणे हट्ट-तुट्टे णहाए कय-जाव-पायच्छिसे सद्दालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, साओ ० २ सकोरेंटमल्लदामेणं छसेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महयापुरिसवग्गुरापरिक्खिसे वाणियगामं नगरं मज्जं-मज्जेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छिता जेणेव दूतिपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । तेणेव ० २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तंजहा-सच्चिचाणं द्दवाणं ० जहा उस्समदत्तो, जाव-तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्टिस्स तीसे य महतिमहालयाए जाव-आराहए भवइ । तए णं से सुदंसणे सेट्टी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, निसग्ग हट्ट-तुट्टं उट्टाप उट्टेइ, उट्टाप ० २ -त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव-नमंसित्ता एवं वयासी—

२. [प्र०] कइविहे णं मंते ! काले पणसे ? [उ०] सुदंसणा ! चउच्चिहे काले पणसे, तंजहा-१ पमाणकाले, २ महा-उनिक्खसिकाले, ३ मरणकाले, ४ अद्दाकाले ।

अगीयारमो उद्देशक.

१. ते काले, ते समये वाणियग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. दूतिपलाशक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते वाणि-ज्यग्राम नगरमां सुदर्शन नामे शेठ रहेतो हतो; ते आढ्य-धनिक, यावत् अपरिभूत-कोइथी परामव न पामे तेवो, जीवा-जीव तत्त्वनो जाण-नार श्रमणोपासक हतो. त्यां महावीर स्वामी समवसर्या. यावत् पर्यद्-जनसमुदाये पर्युपासना करे छे. त्यार बाद महावीर स्वामी आव्यानी आ वात सांभळी सुदर्शन शेठ हर्षित अने संतुष्ट थया, अने खान करी, बलिकर्म यावत् मंगलरूप प्रायश्चित्त करी, सर्व अलंकारपी विभूषित थइ, पोताना घेरथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळीने माथे धारण कराता कोरंटकपुष्पनी माळावाळा छत्र सहित पगे चालीने घणा मनुष्पोना समुदायरूप वागुरा-बन्धनथी विटायेली ते सुदर्शन शेठ वाणियग्राम नगरनी वच्चोवच्च थईने नीकळे छे. नीकळीने ज्यां दूतिप-लाश चैत्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे, ते अभिगमो आ प्रमाणे छे-१ 'सचित्त द्रव्यो नो त्याग करवो'-इत्यादि जेम "ऋषभदत्तना प्रकरणमां कहुं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ त्रण प्रकारनी पर्युपासना वडे पर्युपासे छे. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते सुदर्शन शेठने अने ते मोटामा मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् ते सुदर्शन शेठ आराधक थाय छे. त्यार पछी सुदर्शन शेठ श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळी अने अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थइ उभा थाय छे, उभा थईने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, यावद् नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे पूछुं—

२. [प्र०] हे भगवन् ! काल केटला प्रकारनो कइओ छे ? [उ०] हे सुदर्शन ! काल चार प्रकारनो कइओ छे; ते आ प्रमाणे-१ प्रमाणकाल, २ यथायुर्निवृत्तिकाल, ३ मरणकाल अने ४ अद्दाकाल.

३. [प्र०] से किं तं प्रमाणकाले ? [उ०] प्रमाणकाले बुधिवे पञ्चमे, तं—जहा—दिवसप्रमाणकाले, राहप्रमाणकाले य । चउपोरिसिय दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ । उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवइ, जहन्निया तिसुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवइ ।

४. [प्र०] जदा णं भंते ! उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवति, तदा णं कतिभागमुहुत्त-
भागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिसुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवति ? जदा णं जहन्निया तिसुहुत्ता दिवसस्स
वा राईय वा पोरिसी भवति, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा
राईय वा पोरिसी भवइ ? [उ०] सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवइ तदा
णं बावीसस्यभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिसुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवइ । जदा णं जहन्निया
तिसुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवइ तथा णं बावीसस्यभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ उक्कोसिया अन्नपंचम-
मुहुत्ता दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवति ।

५. [प्र०] कदा णं भंते ! उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता दिवसस्स राईय वा पोरिसी भवइ, कदा वा जहन्निया तिसुहुत्ता
दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवइ ? [उ०] सुदंसणा ! जदा णं उक्कोस्य अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवाल-
समुहुत्ता राई भवइ तदा णं उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहन्निया तिसुहुत्ता राईय पोरिसी भवइ ।
जया णं उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्तिया राई भवति, जहन्निय दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा णं उक्कोसिया अन्नपंचममुहुत्ता
राईय पोरिसी भवइ, जहन्निया तिसुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ।

६. [प्र०] कदा णं भंते ! उक्कोस्य अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, कदा वा उक्को-
सिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवति, जहन्निय दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ? [उ०] सुदंसणा ! आसाढपुञ्जिमाय उक्कोस्य अट्टार-
समुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । पोसस्स पुञ्जिमाय णं उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ,
जहन्निय दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति ? [उ०] हन्ता, अत्थि ।

८. [प्र०] कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति ? [उ०] सुदंसणा ! चित्ता—सोयपुञ्जिमासु णं पत्थ णं

३. [प्र०] हे भगवन् ! प्रमाणकाल केटला प्रकारे छे ? [उ०] प्रमाणकाल बे प्रकारनो कइयो छे; ते आ प्रमाणे—दिवसप्रमाणकाल
अने रात्रीप्रमाणकाल, अर्थात् चार पौरुषीना—प्रहरनो दिवस थाय छे, अने चार पौरुषीनी रात्री थाय छे. अने उत्कृष्ट—मोटामा मोटी साडा
चार मुहूर्तनी पौरुषी दिवसनी, अने रात्रिनी थाय छे. तथा जघन्य—न्हानामां न्हानी पौरुषी दिवस अने रात्रिनी त्रण मुहूर्तनी थाय छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे दिवसे के रात्रीए साडा चार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग घटती
घटती दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी थाय ? अने ज्यारे दिवसे के रात्रीए त्रण मुहूर्तनी न्हानामां न्हानी पौरुषी होय छे
त्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग वधती वधती दिवस अने रात्रीनी साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी थाय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे दिवसे
अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना एकसो बावीशमा भाग जेटली घटती घटती दिवस अने रात्रीनी
जघन्य त्रण मुहूर्तनी पौरुषी थाय छे, अने ज्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय छे त्यारे मुहूर्तना एकसो बावीशमा
भाग जेटली वधती वधती दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी थाय छे.

५. [प्र०] हे भगवन् ! क्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय, अने क्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुह-
ूर्तनी जघन्य पौरुषी होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे अट्टारमुहूर्तनो मोटो दिवस होय अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री होय त्यारे साडाचार
मुहूर्तनी दिवसनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे, अने रात्रीनी त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय छे. तथा ज्यारे अट्टारमुहूर्तनी मोटी रात्री होय अने
बार मुहूर्तनी न्हानी दिवस होय त्यारे साडा चार मुहूर्तनी रात्रिनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे, अने त्रण मुहूर्तनी दिवसनी जघन्य पौरुषी होय छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अट्टार मुहूर्तनो मोटो दिवस, अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री क्यारे होय ? तथा अट्टार मुहूर्तनी मोटी रात्री
अने बार मुहूर्तनी न्हानी दिवस क्यारे होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! आषाढपूर्णिमाने विषे अट्टार मुहूर्तनो मोटो दिवस होय छे, अने बार
मुहूर्तनी न्हानी रात्री होय छे. तथा पोषमासनी पूर्णिमाने समये अट्टार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने बार मुहूर्तनी न्हानी दिवस होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन् ! दिवस अने रात्री ए बजे सरखां होय ? [उ०] हा, होय.

८. [प्र०] क्यारे (दिवस अने रात्री) सरखां होय ? [उ०] हे सुदर्शन ! ज्यारे चैत्री पूनम अने आसो मासनी पूनम होय त्यारे

दिवस वा राईओ वा समा खेव भवति, पञ्चरसमुद्रसे दिवसे पञ्चरसमुद्रता राई भवत । खडभागमुद्रसभायुष्ण खडमुद्रसा दिवसस्स वा राईय वा पोरिसी भवत । सेत्तं पमाणकाले ।

९. [प्र०] से किं तं अहाडनिवसिकाले ? [उ०] अहाडनिवसिकाले अणं नेरएण वा तिरिक्खजोणियण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाडयं निवसियं सेत्तं पालेमाणे अहाडनिवसिकाले ।

१०. [प्र०] से किं तं मरणकाले ? [उ०] जीवो वा सरीरामो सरीरं वा जीवामो सेत्तं मरणकाले ।

११. [प्र०] से किं तं अद्धाकाले ? [उ०] अद्धाकाले अणेगविहे पणसे । से णं समयद्वयाय भावलिचद्वयाय जाव—उस्सप्पिणीद्वयाय । एस णं सुदंसणा ! अद्धादोहारच्छेदेणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हद्धमागच्छइ सेत्तं समय । समयद्वयाय असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिहसमागमेणं सा एगा 'आवलिच' ति पबुच्छइ । संखेज्जाओ भावलियाओ जहा सालिउहेसए जाव—सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाणं ।

१२. [प्र०] एपहि णं भंते ! पलिओवम—सागरोवमेहि किं पयोयणं ? [उ०] सुदंसणा ! एपहि पलिओवम—सागरोवमेहि नेरएय—तिरिक्खजोणिय—मणुस्स—देवाणं आउयाइं भविजंति ।

१३. [प्र०] नेरएयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पणत्ता ? [उ०] एवं ठिइपदं निरवसेसं भाणियधं जाव—अज्जहमणुक्को—सेणं तेस्सीसं सागरोवमाइं ठिति पणत्ता ।

१४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! एपसिं पलिओवमसागरोवमाणं खपति वा अवचपति वा ? [उ०] हुन्ता, अत्थि ।

१५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्छइ 'अत्थि णं एपसिं णं पलिओवम—सागरोवमाणं जाव—अवचपति वा' ? [उ०] एवं खल्लु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समयणं हत्थिणागपुरे नामं नगरे होत्था, वज्जओ । सहसंबवणे उज्जाणे, वज्जओ । तत्थ णं हत्थिणागपुरे नगरे बले नामं राया होत्था, वज्जओ । तस्स णं बलस्स रओ पभावई णामं देवी होत्था । सुकुमाल० वज्जओ, जाव—विहरइ । तए णं सा पभावई देवी अज्जया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अग्गितरओ सच्चित्तकम्मे, बाहिरओ

दिवस अने रात्री ए वन्ने सरखां होय छे. ल्यारे पंदर मुहूर्तनो दिवस होय छे अने पंदर मुहूर्तनी रात्री होय छे. अने ते दिवस अने रात्रीनी मुहूर्तना चोथा भागे न्यून चार मुहूर्तनी पौरुषी होय छे. ए प्रमाणे प्रमाणकाल कखो.

९. [प्र०] हे भगवन् ! यथायुर्निर्वृत्तिकाल केवा प्रकारे कहेलो छे ? [उ०] जे कोइ नैरयिक, तिर्यचयोनिक, मनुष्य के देवे पोते जेवुं आयुष्य बांध्युं छे ते प्रकारे तेनुं पालन करे ते यथायुर्निर्वृत्तिकाल कहेवाय छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! मरणकाल ए शुं छे ? [उ०] (ज्यारे) शरीरथी जीवनो अथवा जीवथी शरीरनो वियोग थाय (ल्यारे) ते मरणकाल कहेवाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! अद्धाकाल ए केटला प्रकारे छे ? [उ०] अद्धाकाल अनेक प्रकारनो कखो छे; समयरूपे, आवलिकारूपे, अने यावद् उत्सर्पिणीरूपे. हे सुदर्शन ! कालना बे भाग करवा छतां ज्यारे तेना बे भाग न ज थइ शके ते काल समयरूपे समय कहेवाय छे. असंख्येय समयोनो समुदाय मळवाथी एक आवलिका थाय छे. संख्यात आवलिकानो [एक उच्छ्वास] थाय छे—इत्यादि बंधुं^{११} शालि उदेशकमां कख्या प्रमाणे यावत् सागरोपमना प्रमाण सुधी जाणवुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ए पल्योपम अने सागरोपमरूपनुं शुं प्रयोजन छे ? [उ०] हे सुदर्शन ! ए पल्योपम अने सागरोपम वडे नैरयिक, तिर्यचयोनिक, मनुष्य तथा देवोनां आयुषोनुं माप करवामां आवे छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुधीनी कही छे ? [उ०] अहीं [संपूर्ण स्थितिपद कनेवुं, यावद् [पर्याप्त सर्वाधीसिद्ध देवोनी] उत्कृष्ट नहि अने जघन्य नहि एथी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे] ल्यां सुधी जाणवुं.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ए पल्योपम तथा सागरोपमनो क्षय के अपचय थाय छे ? [उ०] हा, थाय छे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कही छो के पल्योपम अने सागरोपमनो यावत् अपचय थाय छे ? [उ०] हे सुदर्शन ! ए प्रमाणे खरेखर ते काले, ते समये हस्तिनागपुर नामे नगर हतुं. वर्णन. ल्यां सहस्राध्वन नामे उद्यान हतुं. वर्णन. ते हस्तिनागपुर नगरमां बल नामे राजा हतो. वर्णन. ते बल राजाने प्रभावती नामे राणी हती. तेना हाथ पग सुकुमाल हता—इत्यादि वर्णन जाणवुं. यावत् ते विहरती हती. ल्यार बाद अन्य कोइ पण दिवसे तेवा प्रकारना, अंदर चित्रवाळा, बहारथी धोळेला, धसेला अने सुंवाळा करेला, जेनो

हस्तिनागपुर.
बलराजा.
प्रभावती राणी.
साकपुत्र.

११. * भग० सं० २ का० ६ उ० ७ पृ० ३२१.

१३. † प्रश्ना० पद ४ प० १६६-१७८.

सुविण-बहु-महे, विविचउल्लोग-विह्वितले, मधि-रयणपणासियंभयारे, बहुसम-सुविमत्तवेसभाय, पंक्कव-सरस-सुरमि-
सुकपुष्कपुंजोवधारकलिय, कालागुरुपवर-कुंडुवक-तुरुकपूवममवतंगुदुयामिरामे, सुगंधि-वरगंधिय, गंधवहिभूय संसि
सरिसगंसि सयणिजंसि साळिमणवदिय, उमभोविभोवणे, दुहभो उजय, मज्जे जय-गंभीरे, गंगापुलिनवालुपउहालसाळिसय,
उकविय-कोमिय-दुगुहपट्टपडिच्छायणे, सुविरययवसाणे, रत्तंसुयसंयुय, सुरम्मे, भाइणग-रुय-र-गवमीय-दुलकासे,
सुगंधवरकुसुम-सुव-सयभोवधारकलिय, महरत्तकालसमर्थसि सुव-जागरा भोहीरमाणी २ अयमेयाकवं भोरालं, कल्लानं,
सिबं, धनं, मंगलं, सस्सिरियं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा ।

१६. हार-रयय-कीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पंडुरतरोरुमणिज-पेच्छणिजं, थिर-रुद-पउद-
बह-पीवर-सुसिलिदु-विसिदु-तिवकादाढाधिडंविद्यमुहं, परिकम्मियजककमलकोमल-माइअसोमंतलदुउदुं, रसुप्पलपत्तमउअ-
सुकुमालतालुजीहं, मूसागयपवरकणगताविअभावसायंत-बह-तडिविमलसरिसनयणं, विसालपीवरोदं, पडिपुत्रविपुलकंधं,
मिडविसयसुदुमलकण-पसत्थ-विच्छिज-केसरसडोवसोभियं, असिय-सुनिमिय-सुजाय-अप्पोडिअलंगूलं, सोमं, सोमा-
कारं, लीलायंतं, जंभायंतं, नहयलाभो भोवयमाणं, निययवयणमतिवयंतं, सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा ।

१७. तय णं सा पमावती देवी अयमेयाकवं भोरालं जाव-सस्सिरियं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी इदु-
दुदु-जाव-हियया धाराहयकलंबपुष्कगं पिब समूसियरोमकूवा तं सुविणं भोगिण्हति, भोगिण्हत्ता सयणिजाभो अम्भुद्रेइ,
सय० २ अतुरियमचबलमसंमंताए अबिलंबियाए रायहंससरिसीए गर्हए जेणेव बलस्स रभो सयणिजे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव०
२ बलं रायं ताहिं इद्दाहिं कंताहिं पियाहिं मणुआहिं मणामाहिं भोरालाहिं कल्लानाहिं सिवाहिं धमाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरी-
याहिं मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलघमाणी २ पडिबोहेति, पडि० २ बलेणं रत्ता अम्भणुआया समाणी नाणामणि-
रयणमत्तिचिचंसि महासणंसि णिसीयति, णिसियित्ता आसत्था धीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इद्दाहिं कंताहिं
जाव-संलघमाणी २ एवं वयासी-

उपरनो भाग विविध चित्रयुक्त अने नीचेनो भाग सुशोमित छे एवा, मणि अने रत्नना प्रकाशधी अंधकाररहित, बहु समान अने सुविभक्त
भागवाळा, मुकेला पांच वर्णना सरस अने सुगंधी पुष्पपुंजना उपचार वडे युक्त, उत्तम कालागुरु, कीन्दरु अने तुरुष्क-शिलारसना धू-
पयी चोतरफ फेलायेला सुगंधना उद्ववथी सुंदर, सुगंधि पदार्थोधी सुवासित थयेला, सुगंधि द्रव्यनी गुटिका जेवा ते वासधरमां तकीयास-
हित, माथे अने पगे ओशीकावाळी, बने बाणुए उंची, वचमां नमेली अने विशाल, गंगाना किनारानी रतीना *अवदाल सरखी (अस्यंत
कोमल), भरेला क्षीमिक-रेशमी दुकूलना पट्टी आच्छादित, रजलाणधी (उडती धूळने अटकावना वरुधी) ढंकायेली, रत्तांशुक-
मच्छरदानी सहित, सुरम्य, आजिनक (एक जातनुं चामडानुं कोमळ वरु), रू, बरु, माखण अने आकडाना रूना समान स्पर्शवाळी,
सुगंधि उत्तम पुष्पो, चूर्ण, अने बीजा शयनोपचारधी युक्त एवी शय्यामां कंडक सुती अने जागती निद्रा लेती लेती प्रभावती देवी अर्ध-
रात्रीना समये आ एवा प्रकारना, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगलकारक अने शोभा युक्त महास्वप्ने जोइने जागी.

शय्या.

महास्वप्ने जोइ
प्रभावती जागी.

सिंहनुं वर्णन.

१६. मोतीना हार, रजत, क्षीरसमुद्र, चंद्रना किरण, पाणीना बिंदु अने रूपाना मोटा पर्यंत जेवा धोळ, विशाल, रमणीय अने
दर्शनीय, स्थिर अने सुंदर प्रकोष्ठवाळा, गोळ, पुष्ट, सुल्लिष्ट, विशिष्ट, अने तीक्ष्ण दाढोवडे फाडेला मुखवाळा, संस्कारित उत्तम कमलना
जेवा कोमल, प्रमाणयुक्त अने अल्पन्त सुशोमित ओष्ठवाळा, राता कमलना पत्रनी जेम अस्यंत कोमळ तालु अने जीभवाळा, मूषामां रहेला,
अग्निधी तपावेल अने आवर्त करता उत्तम सुवर्णना समान वर्णवाळी गोळ अने विजळीना जेवी निर्मळ आंखवाळा, विशाल अने पुष्ट जंघा-
वाळा, संपूर्ण अने विपुल स्कंधवाळा, कोमळ, विशद-रपष्ट, सूक्ष्म, अने प्रदस्त, लक्षणवाळी विस्तीर्ण केसरानी छटाधी सुशोमित, उंचा
करेला, सारीरीते नीचे नमावेल, सुन्दर अने पृथिवी उपर पछाडेल पूछडाधी युक्त, सौम्य, सौम्य आकारवाळा, लीला करता, बगासां खाता
अने आकाश थकी उतरी पोताना मुखमां प्रवेश करता सिंहने स्वप्नां जोइ ते प्रभावती देवी जागी.

सिंहने स्वप्नां
जोइने जागी.

१७. स्वार बाद ते प्रभावती देवी आ आवा प्रकारना उदार यावत् शोभावाळा महास्वप्ने जोइने जागी अने हर्षित तथा संतुष्ट
इद्रयवाळी थई, यावत् मेघनी धारधी विकसित थयेला कदंबकना पुष्पनी पेटे रोमांचित थयेली [प्रभावती देवी] ते स्वप्ननुं स्मरण करे
छे, स्मरण करीने पोताना शयनधी उठी त्वराविनानी, चपलतारहित, संभ्रमविना, विळंबरहित पणे राजहंससमान गतिवडे ज्यां बल-
राजानुं शयनगृह छे त्यां आवे छे, आवीने इष्ट, कांत, प्रिय, मनोह, मनगमती, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगल्य, सौन्दर्ययुक्त, मित,
मधुर अने मंजुल-कोमळ वाणीवडे बोलती २ ते बल राजाने जगाडे छे. स्वार बाद ते बल राजानी अनुनतिधी विचित्र मणि अने रत्नोनी
रचना वडे विचित्र मद्रासनमां बेसे छे. सुखासनमां बेठेली स्वस्थ अने शान्त थएली ते प्रभावती देवीए इष्ट, प्रिय, यावत् मधुर वाणीधी
बोलतां २ आ प्रमाणे कर्तुं-

बलराजाना स्वप्न
गृह तरफ आवे छे.

१५. * एग मूकवाधी नीचे सरी जवाम एवी रैताळ जमीनने अवदाल कहे छे.

૧૮. एवं कलु अहं देवाणुप्यिया ! अज्ज तंसि तारिसंगंसि सयणिसंसि सारुङ्गणं । तं खेव जाव-नियगवयणमएवधं वीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्यिया ! एयस्स ओरालस्स जाव-महासुविणस्स के मखे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सह ? तए णं से बले राया पभावएए देवीए अंतियं एयमट्टं सोखा निसम्म हट्ट-तुट्टं जाव-इयहियए धाराहयनीवसु-रभिकुसुमचंचुमालइयतणुयउसवियरोमकूषे तं सुविणं ओगिणहइ, ओगिणहइता ईहं पविस्सह, ईहं पविसित्ता अप्पणे सामा-वियणं मइपुण्णणं बुद्धिविजाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, तस्स २-त्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव-मंगल्लाहिं मिय-मधुर-सत्तिरि ० संलवमाणे २ एवं वयासी—

૧૯. ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे जाव-सत्तिरीए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, आरोग-तुट्ठि-वीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्यिए ! भोगलाभो देवाणुप्यिए ! पुत्तलाभो देवाणु-प्यिए ! रज्जलाभो देवाणुप्यिए ! एवं कलु तुमं देवाणुप्यिए ! णवणहं मासाणं बहुपडिपुञ्जाणं अज्जट्टमाणराइवियाणं विइकंतायं अमहं कुलकेउं, कुलदीवं, कुलपच्चयं, कुलवडंसयं, कुलतिलगं, कुलकित्तिकरं, कुलनंदिकरं, कुलजसकरं, कुलाधारं, कुलपायवं, कुलविबद्धणकरं, सुकुमालपाणि-पायं, अहीणपडिपुञ्जपंचिदियसरिरं, जाव-सत्तिसोमाकारं, कंतं, पियवंसणं, सुरुवं, देवकुमा-रसमप्पमं दारगं पयाहिसि ।

૨૦. से वि य णं दारए उम्मुक्कवालमावे विजायपरिणयमित्ते जोहणगमणुप्पत्ते सुरे वीरे विकंते चित्थिअ-विडलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सह । तं उराले णं तुमे जाव-सुमिणे दिट्ठे, आरोग-तुट्ठि ० जाव-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे सि कहु पभावति देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव-वग्गुहिं दोखं पि तखं पि अणुबूइति । तए णं सा पभावती देवी बलस्स रओ अंतियं एयमट्टं सोखा निसम्म हट्ट-तुट्टं ० करयल ० जाव एवं वयासी-‘एवमेयं देवाणुप्यिया ! तहमेयं देवाणुप्यिया ! अचित्तहमेयं देवाणुप्यिया ! असंदिद्धमेयं देवाणुप्यिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्यिया ! पडिच्छियमेयं देवाणुप्यिया ! इच्छियपडिच्छि-यमेयं देवाणुप्यिया ! से जहेयं तुज्जे वइह’सि कहु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रत्ता अम्मणुञ्जाया समाणी णाणामणि-रयणमत्तिचित्ताओ महासणाओ अम्भुट्टेइ, अम्भुट्टेत्ता अनुरियमच्चवल ० जाव गतीए जेणेव सए सयणिसंजे तेणेव

૧૮. हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर में आजे ते तेवा प्रकारनी अने तकीयावाळी शय्यामां [सुतां जागतां] इत्यादि पूर्वोक्त जाणवुं, यावत् मारा पोताना मुखमां प्रवेश करता सिंहने स्वप्नमां जोहने जागी. तो हे देवानुप्रिय ! ए उदार यावत् महास्वप्नतुं बीजुं सुं कल्याणकारक फल अथवा वृत्तिविशेष थशे ? त्थार पछी ते बल राजा प्रभावती देवी पासेथी आ वात सांभळी, अवधारी हर्षित, तुष्ट, यावत् आल्हादयुक्त हृदयवाळो थयो, मेघनी धाराथी विकसित थयेला सुगंधि कदंब पुष्पनी पेटे जेनुं शरीर रोमांचित थयेळुं छे अने जेनी रोमराजी उभी थयेली छे, एवो बलराजा ते स्वप्नो अवग्रह-सामान्य विचार-करे छे, पछी ते स्वप्नसंबन्धी ईहा (विशेष विचार) करे छे. तेम करीने पोताना स्वाभाविक, मतिपूर्वक बुद्धिविज्ञानथी ते स्वप्नना फलनो निश्चय करे छे. पछी इष्ट, कांत, यावत् मंगलयुक्त, तथा मित, मधुर अने शोभायुक्त वाणीथी संलाप करता २ ते बल राजाए आ प्रमाणे कह्युं—

૧૯. हे देवी ! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी ! तमे कल्याणकारक स्वप्न जोयुं छे, यावत् हे देवी ! तमे शोभायुक्त स्वप्न जोयुं छे, तथा हे देवी ! तमे आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष, कल्याण अने मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे. हे देवानुप्रिये ! तेथी अर्थनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! भोगनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! पुत्रनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! राज्यनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये ! खरेखर तमे नय मास संपूर्ण थया बाद साडा सात दिवस विल्या पछी आपणा कुलमां ध्वजसमान, कुलमां दीवासमान, कुलमां पर्वतसमान, कुलमां शेखरसमान, कुलमां तिलकसमान, कुलनी कीर्ति करनार, कुलने आनंद आपनार, कुलनो जश करनार, कुलना आधारभूत, कुलमां वृक्ष-समान, कुलनी वृद्धिकरनार, सुकुमाल हायपगवाळा, खोडरहित अने संपूर्ण पंचेन्द्रिययुक्त शरीरवाळा, यावत् चंद्रसमान सौम्यआकार-वाळा, प्रिय, जेनुं दर्शन प्रिय छे एवा, सुन्दररूपवाळा, अने देवकुमार जेवी कांतिवाळा पुत्रने जन्म आपशो.

૨૦. अने ते बालक पोतानुं बालकपणुं मूकी, विद्ध अने परिणत-मोटो थईने युवावस्थाने पामी शूर, वीर, पराक्रमी, विस्तीर्ण अने विपुल बल तथा वाहनवाळो, राज्यनो धणी राजा थशे. हे देवी ! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी ! तमे आरोग्य, तुष्टि अने यावत् मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे’-एम कही ते बल राजा इष्ट यावत् मधुर वाणीथी प्रभावती देवीनी बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे प्रशंसा करे छे. त्थार बाद ते प्रभावती देवी बल राजानी पासेथी ए पूर्वोक्त वात सांभळीने, अवधारीने हर्षवाळी अने संतुष्ट थइ हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली-‘हे देवानुप्रिय ! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय ! तेज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय ! ए सख छे, हे देवानुप्रिय ! ए संदेहरहित छे, हे देवानुप्रिय ! मने इच्छित छे, हे देवानुप्रिय ! ए में स्वीकारेळुं छे, हे देवानुप्रिय ! ए मने इच्छितु अने स्वीकृत छे’ एम कही स्वप्नो सारी रीते स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने बल राजानी अनुमतिथी अनेक जातना मणि अने रत्ननी

स्वप्नतुं फल.

प्रभावती देवी
स्वप्नना फलनो
स्वीकार करे छे.

કલાગચ્છદ, તેણેવ ઉવાગચ્છિતા સયગિજ્ઞાંસિ નિસીયતિ, નિસીરતા એવં વયાસી—‘મા મે સે ઉત્તમે પદાવે મંગલે સુધિને મનેદિં પાવસુમિનેદિં પદિહમ્મિસ્સાર’ સિ કદુ દેવ-ગુરુજનસંબદ્ધાદિં પસત્યાદિં મંગલ્લાદિં ધમ્મિયાદિં કદ્દાદિં સુધિજાગરિયં પદિજાગરમાપી ૨ વિહરતિ ।

૨૧. તપ ણં સે વલે રાયા કોડુંબિયપુરિસે સદાવેદ, સદાવેતા એવં વયાસી—‘ક્ષિપ્યામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! મહ્ન સધિ-સેસં વાહિરિયં ઉવટ્ટાણસાલં ગંધોદયસિત્ત-સુદમ-સંમક્કિમ્મો-વલિસં સુગંધવરપંચવક્ષપુષ્કોવયારકલિયં કાલાગુરુપવર-કુંડુ-વક્કઠઠ ઝાવ-ગંધવટ્ટિમૂયં કરેદ ય કરાવેદ ય, કરેતા કરાવેતા સીહાસનં રપદ, સીહાસનં રયાવેતા મમેતં ઝાવ-પચ્ચપ્પિજહ । તપ ણં તે કોડુંબિયઠ ઝાવ-પદિસુનેતા ક્ષિપ્યામેવ સધિસેસં વાહિરિયં ઉવટ્ટાણસાલં ઝાવ-પચ્ચપ્પિજંતિ ।

૨૨. તપ ણં સે વલે રાયા પચ્ચસકાલસમયંસિ સયગિજ્ઞામો અમ્મુદ્દેહ, સયઠ ૨ -સા પાયપીઠામો પચ્ચોદ્દેહ, પાવઠ ૨ -હિતા જેણેવ મહ્નસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, મહ્નસાલં અણુપવિસદ, ઝદા ઉવવારપ તદેવ મહ્નસાલા તદેવ મજ્જણઘરે ઝાવ -સસિચ્ચ પિયવંસણે નરવર્દે મજ્જણઘરામો પદિનિષ્કમમદ, પદિનિષ્કમિત્તા જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છિદ, તેણેવ ઉવાગચ્છિતા સીહાસનઘરંસિ પુરત્યામિમુદે નિસીયદ નિસીરતા અપ્પણો ઉત્તરપુરત્થિમે વિસીમાપ મદ્દ મહાસણાદં સેયવત્થપચ્ચુથુયાદં સિદ્ધત્થગકયમંગલોવયારાદં રયાવેદ, રયાવેતા અપ્પણો અદૂરસામંતે જાણામણિરયણમંડિયં, અદિયપેચ્છ-ગિજ્ઞં, મદ્દગ્ધ-વરપટ્ટણુમ્મયં, સળ્લપદ્ધવદ્ધમત્તિસયધિસતાણં, દ્દિહામિય-ઉસમઠ ઝાવ-મત્તિમિસં, અમ્મિતરિયં જવણિયં અંછાવેદ, અંછાવેતા જાણામણિ-રયણમત્તિચિત્તં અત્થરય-મડયમસૂરગોત્થયં, સેયવત્થપચ્ચુથુયં, અંગસુદ્ધફાસુયં, સુમડયં પમાવતીય દેવીય મહાસણં રયાવેદ, રયાવેતા કોડુંબિયપુરિસે સદાવેદ, સદાવેતા એવં વયાસી—

૨૩. ‘ક્ષિપ્યામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! મહુંગમહાનિમિત્તસુત્ત-સ્થધારપ, વિવિદ્ધસત્થકુસલે, સુધિજલક્ષણપાઠપ સદાવેદ’ તપ ણં તે કોડુંબિયપુરિસા ઝાવ-પદિસુનેતા વલસ્સ રત્તો અંતિયામો પદિનિષ્કમમદ, પદિનિષ્કમિત્તા સિગ્ધં તુરિયં ચવલં ચંદં વેદયં દ્દિયણપુરં ણગરં મજ્જંમજ્જેણં જેણેવ તેસિ સુધિજલક્ષણપાઠગાણં ગિદ્દાદં તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, તેણેવ ઉવાગચ્છિતા તે સુધિ-

રચના વડે વિચિત્ર એવા મદ્રાસનથી ઉઠે છે, ઉઠીને ત્વરા વિના, ચપલતારહિત યાવદ્ ગતિ વડે [તે પ્રમાવતી દેવી] ઝ્યાં પોતાની શય્યા છે સ્યાં આવી શય્યા ઉપર બેસે છે, બેસીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—‘આ મારું ઉત્તમ, પ્રધાન અને મંગલરૂપ સ્વપ્ન બીજા પાપસ્વપ્નોથી ન હણાઓ’ એમ કહીને તે પ્રમાવતી દેવી દેવ અને ગુરુ સંબન્ધી, પ્રશસ્ત, મંગલરૂપ અને ધાર્મિક કથાઓવડે સ્વપ્ન જાગરણ કરતી કરતી વિહરે છે.

૨૧. સ્યાર બાદ તે વલ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું—‘હે દેવાનુપ્રિયો ! આજે તમે જલ્દી બહારની ઉપસ્થાન-શાલને સવિશેષપણે ગંધોદકવડે છાંટી, વાઢી અને છાણથી લીંપીને સાફ કરો. તથા સુગંધી અને ઉત્તમ પાંચ વર્ણના પુષ્પોથી શણગારો, વઢી ઉત્તમ કાલાગુરુ અને કીંદરુના ધૂપથી યાવદ્ ગંધવર્તિભૂત-સુગંધી ગુટિકા સમાન કરો, કરાવો, અને સ્યારપછી સ્યાં સિંહાસન મૂકાવો, સિંહાસન મૂકાવીને આ મારી આજ્ઞા યાવત્ પાછી આપો.’ સ્યાર બાદ તે કૌટુંબિક પુરુષો યાવત્ આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરી તુરતજ સવિશેષપણે બહારની ઉપસ્થાન શાલને સાફ કરીને યાવત્ આજ્ઞા પાછી આપે છે.

૨૨. સ્યાર બાદ તે વલ રાજા પ્રાતઃકાલ સમયે પોતાની શય્યાથી ઉઠીને પાદપીઠથી ઉતરી ઝ્યાં વ્યાયામશાલ્યા છે સ્યાં આવે છે. આવીને વ્યાયામશાલ્યામાં પ્રવેશ કરે છે, સ્યાર પછી તે જ્ઞાનગૃહમાં જાય છે. વ્યાયામશાલા અને જ્ઞાનગૃહનું વર્ણન *ઔપપાતિક સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે જાણવું, યાવત્ ચંદ્રની પેઠે જેનું દર્શન પ્રિય છે એવો તે વલ નરપતિ જ્ઞાનગૃહથી બહાર નીકળે છે, બહાર નીકળીને ઝ્યાં બહારની ઉપસ્થાનશાલા છે સ્યાં આવે છે, સ્યાં આવીને પૂર્વદિશા સન્મુખ ઉત્તમ સિંહાસનમાં બેસે છે. સ્યાર બાદ પોતાનાથી ઉત્તરપૂર્વદિશામાં -દ્દિશાન કોણમાં ધોલ્લ વક્ષથી આચ્છાદિત અને સરસવ વડે જેનો મંગલોપચાર કરેલો છે એવા આઠ મદ્રાસનો મૂકાવે છે. સ્યાર બાદ પોતા-નાથી થોડે દૂર અનેક પ્રકારના મણિ અને રત્નથી સુશોભિત, અધિક દર્શનીય, કીંમતી, મોટા શહેરમાં બનેલી, સૂક્ષ્મ સૂતરના સેંકડો કારી-કારીવક્ષા વિચિત્રતાળાવાઢી, તથા દ્દિહામુગ અને વલ્લદ વગેરેની કારીગરીથી વિચિત્ર એવી અંદરની જવનિકાને-પડદાને યસેડે છે, યસેડીને [જવનિકાની અંદર] અનેક પ્રકારના મણિ અને રત્નોની રચના વડે વિચિત્ર, ગાદી અને કોમલ ગાલમસૂરીયાથી ઢંકાયેલું, શ્વેત વક્ષવડે આચ્છાદિત, શરીરને સુખકર સ્પર્શવાલું તથા સુકોમલ એવું એક મદ્રાસન પ્રમાવતી દેવી માટે મૂકાવે છે. સ્યાર પછી તે વલ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું—

૨૩. ‘હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શીઘ્ર જાઓ, અને અર્ષાંગ મહાનિમિત્તના સૂત્ર અને અર્થને ધારણ કરના, અને વિવિધ શાસ્ત્રમાં કુશલ રચના સ્વપ્નના લક્ષણ પાઠકોને બોલાવો.’ સ્યાર બાદ તે કૌટુંબિક પુરુષો યાવત્ આજ્ઞાનો સ્વીકાર કરીને વલ રાજાની પાસેથી નીકળે છે; નીકળીને સ્વપ્ન, ચપલપણે, જ્ઞાપટાબંધ અને વેગસહિત દ્દિસ્તિનાપુર નગરની ધવોવચ ઝ્યાં સ્વપ્નલક્ષણપાઠકોના ઘરો છે, સ્યાં જઈને સ્વપ્નલક્ષ-

વ્યાયામશાલા અને જ્ઞાનગૃહમાં પ્રવેશ.

સ્વપ્નપાઠકોને બોલાવવાની આજ્ઞા.

बलक्षणापाठप सहावेति । तप णं ते सुविणलक्षणापाठगा बलस्स रत्तो कोटुंबियपुरिसेहिं सहाविया समाणा हट्ट-तुट्ट० ष्हावत्तु
 कय० जाव-सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुखाणा सपहिं २ गेहेहितो णिग्गच्छति, सपहिं २-च्छिता इत्थिणापुटं
 नगरं मज्झमज्जेणं जेणेव बलस्स रत्तो मवणवरवडैसए तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छिता मवणवरवडैसएपडिबुवारंति
 एगमो मिलंति, एगमो मिलिन्ता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छिता करयल० बलराषं
 ज्ञपणं विज्जपणं बद्धावेति । तप णं ते सुविणलक्षणापाठगा बलेणं रत्ता वंदिय-पूरम-सकारिअ-संमाणिआ समाणा एसेयं २
 पुब्वत्थेसु महासणेसु निसीयंति । तप णं से बले राया पमावति देविं जकणियंतरियं ठावेर, ठावेत्ता पुप्फ-कल पडिपुब्वत्थे,
 परेणं विणपणं ते सुविणलक्षणापाठप एषं वयासी-‘एवं अल्लु देवाणुप्पिया! पमावती देवी अज्ज तंति तारिसंगंछि
 वासवत्तंसि जाव-सीहं सुविणे पासिन्ता णं पडिबुज्जा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव केममे कल्लणे फलविधि-
 विसेसे भविस्सह’? तप णं सुविणलक्षणापाठगा बलस्स रत्तो अंतियं एयमट्टं सोच्चा निसम्म हट्ट-तुट्ट० तं सुविणं ओगिणहर,
 ओगिणहत्ता ईहं अणुप्पविसार, अणुप्पविसिन्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेद, तस्स० २-त्ता अन्नमज्जेणं सद्धिं संचालेति,
 संचालेत्ता तस्स सुविणस्स लज्जट्टा गहियट्टा पुच्छियट्टा विणिच्छियट्टा अभिगयट्टा बलस्स रत्तो पुरमो सुविणसत्थां उच्चार-
 माणा २ एषं वयासी-‘एवं अल्लु देवाणुप्पिया! अहं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, वावत्तरि सव्वसु-
 विणा विट्ठा । तत्थणं देवाणुप्पिया! तित्थगरमायरो वा चक्रवर्तिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्रवर्तिंसि वा गम्भं वक्कममाणंसि
 एपसि तीसाए महासुविणाणं इमे चोइस महासुविणे पासिन्ता णं पडिबुज्जंति । तं जहा-“गय-वसह-सीह-अभिसेय-
 वाम-ससि-विणयरं इयं कुंमं । पउमसर-सागर-विमाण-मवण-रयणुच्चय-सिंहि अ” ॥ वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि
 गम्भं वक्कममाणंसि एपसि चोइसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासिन्ता णं पडिबुज्जंति । बलदेवमायरो वा बलदे-
 वंसि गम्भं वक्कममाणंसि एपसि चोइसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे अत्तारि महासुविणे पासिन्ता णं पडिबुज्जंति । मंडलियमायरो
 वा मंडलियंसि गम्भं वक्कममाणंसि एतेसि णं चउदसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासिन्ता णं पडिबुज्जंति ।
 इमे व णं देवाणुप्पिया! पमावतीए देवीए एगे महासुविणे विट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! प्रभावतीए देवीए सुविणे विट्ठे,
 जाव-भारोग-तुट्टि० जाव-मंगलकारए णं देवाणुप्पिया! प्रभावतीए देवीए सुविणे विट्ठे, अत्थलाओ देवाणुप्पिए! भोग-

णपाठकोने बोलवे छे. ज्यारे ते बल राजाना कौटुंबिक पुरुषोए ते स्वप्नलक्षणपाठकोने बोलव्या स्यारे तेओ प्रसन्न थया, तुष्ट थया अने
 क्लान करी बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलंकृत करी, मस्तके सर्षप अने लीली धरोनुं मंगल करी पोत पोताना घेरथी नीकळे छे,
 नीकळीने हस्तिनागपुर नगरनी वन्धे थइ ज्यां बल राजानुं उत्तम महालय छे, त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रेष्ठ महालयना द्वार पासे ते
 स्वप्नपाठको एकटा थाय छे, एकटा थइने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवी हाथ जोडी बल राजाने जय अने
 विजयथी वधावे छे. स्यार बाद ते बल राजाए बांदेला, पूजेला, सत्कारेला अने सम्मानित करेला ते स्वप्नलक्षणपाठको पूर्वे गोठवेला भद्रा-
 सनो उपर बेसे छे. स्यार पछी ते बल राजा प्रभावती देवीने जवनिकानी-पडदानी अंदर बेसाडे छे. स्यार बाद पुष्प अने फलथी परिपूर्ण
 हस्तवाळा ते बल राजाए अतिशय विनयपूर्वक ते स्वप्नलक्षणपाठकोने आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर आजे प्रभा-
 वती देवी ते तेवा प्रकारना वासगृहमां यावत् स्वप्नमां सिंहेने जोइने जागेली छे, तो हे देवानुप्रियो! आ उदार एवा स्वप्ननुं यावत् बीजुं
 कयुं कल्याणरूप फल अने वृत्तिविशेष थशे. स्यार पछी ते स्वप्नलक्षणपाठको बल राजानी पासेथी ए वात सांभळी तथा अवधारी खुश अने
 संतुष्ट थई ते स्वप्न संबन्धे सामान्य विचार करे छे, सामान्य विचार करी तेनो विशेष विचार करे छे, अने पछी ते स्वप्नना अर्थनो निश्चय
 करे छे, अने स्यार बाद तेओ परस्पर साथे विचारणा करे छे. स्यार पछी ते स्वप्नना अर्थने स्वयं जाणी, बीजा पासेथी ग्रहण करी,
 ते संबन्धी शंकरने पूछी, अर्थनो निश्चय करी अने स्वप्नना अर्थने अवगत करी बल राजानी आगळ स्वप्नशास्त्रोना उच्चार करतां तेओए
 आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेंताळीश सामान्य स्वप्नो, अने त्रीश महास्वप्नो मळीने कुल बहो-
 तेर जातना स्वप्नो कहेला छे. तेमां हे देवानुप्रिय! तीर्थकरनी माताओ के चक्रवर्तिनी माताओ ज्यारे तीर्थकर के चक्रवर्ती गर्भमां आवीने
 उपजे स्यारे ए त्रीश महास्वप्नोमांथी आ चौद स्वप्नोने जोइने जागे छे, ते चौद स्वप्नो आ प्रमाणे छे- “१ हाथी, २ बलद, ३ सिंह, ४
 लक्ष्मीनो अभिषेक, ५ पुष्पमाळा, ६ चंद्र, ७ सूरज, ८ ध्वजा, ९ कुंभ, १० पद्मसरोवर, ११ समुद्र, १२ विमान अथवा भवन, १३
 रत्नो ढगलो अने १४ अग्नि” वळी वासुदेवनी माताओ ज्यारे वासुदेव गर्भमां आवे स्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ पण सात महास्वप्नो
 जोइने जागे छे. तथा बलदेवनी माताओ ज्यारे बलदेव गर्भमां प्रवेश करे स्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ पण चार महास्वप्नोने जोइने
 जागे छे. मांडलिक राजानी माताओ ज्यारे मांडलिक राजा गर्भमां प्रवेश करे स्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ एक महास्वप्न जोइने जागे

बल पाठकोने
 वासना कर्कनी प्रस.

२१. * जो तीर्थकर देवलोकधी आवीने उपजे तो तेनी माता स्वप्नमां विमान रुप अने नरकधी आवीने उपजे तो तेनी माता स्वप्नमां भवन रुप
 छे-टीका.

કામને દેવાણુપિય ! પુત્રલાભો દેવાણુપિય ! રજાલાભો દેવાણુપિય ! યં વં કલુ દેવાણુપિય ! પ્રભાવતી દેવી નવનું માસાઈ વહુપરિપુષ્યાં જાવ-વીતિકંતાણં તુર્જ કુલકેઠં જાવ-પયાદિતિ । તે વિ ય ણં દારપ ઉમ્મુકચાલભાવે જાવ-રજ્જર્વ રાયા મધિસ્સર, મળગારે વા માધિયપ્પા । તં ઓરાલે ણં દેવાણુપિયા ! પ્રભાવતીય દેવીય સુવિણે વિદ્દે, જાવ-મારોગ-તુટ્ટિ-ઈદાપ્પ-કહ્લાણં જાવ-વિદ્દે ।

૨૪. તપ ણં લે વલે રાયા સુવિણલક્ષણપાઠગાણં મંતિય પ્યમટું સોચા નિસમ્મ હટ્ટ-તુટ્ટં કરયલં જાવ-કદુ તે સુવિણલક્ષણપાઠગે યં વયાસી-‘પ્યમેયં દેવાણુપિયા ! જાવ-લે જદેયં તુષ્પે વદદ’પિ કદુ તં સુવિણં સમ્મં પઢિચ્છર, તં ૨-ચિહ્વતા સુવિણલક્ષણપાઠપ વિહલેણં મસણ-પાણ-જારમ-સારમ-પુષ્પ-વત્થ-ગંધ-મહ્લાલંકારેણં લક્કારેતિ, સમ્માણેતિ, લક્કારેતા સમ્માણેતા વિહલં જીવિષારિદં પીરવાણં દલયતિ, વિહલં ૨-ચિહ્વતા પઢિવિસજ્જેતિ, પઢિવિસજ્જેતા લીદાસણામો અમ્મુદ્દેર, સીં ૨-જા જેણેવ પ્રભાવતી દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છર, તેણેવ ઉવાગચ્છિતા પ્રભાવતિ દેવિ તાદિ ઇદ્દાદિં કંતાદિં જાવ-સંલબમાણે ૨ યં વયાસી-‘યં વં કલુ દેવાણુપિયા ! સુવિણસત્પંસિ વાયાલીસં સુવિણા તીસં મહાસુવિણા વાવચ્ચરિ સહસુવિણા વિદ્દા । તત્થ ણં દેવાણુપિય ! તિત્થગરમાયરો વા ચક્કવદ્દિમાયરો વા તં વેવ જાવ અજ્જયરં યં મહાસુવિણં પાસિત્તા ણં પઢિ-ચુજ્જંતિ । ઇમે ય ણં તુમે દેવાણુપિય ! યગે મહાસુવિણે વિદ્દે, તં ઓરાલે ણં તુમે દેવી ! સુવિણે વિદ્દે, જાવ-રજ્જર્વ રાયા મધિસ્સર, મળગારે વા માધિયપ્પા, તં ઓરાલે ણં તુમે દેવી ! સુવિણે વિદ્દે, જાવ-વિદ્દે, સિ કદુ પ્રભાવતિ દેવિ તાદિ ઇદ્દાદિં કંતાદિં જાવ-દોષં પિ તથં પિ અણુપૂહર ।

૨૫. તપ ણં સા પ્રભાવતી દેવી વલસ્સ રજો મંતિયં પ્યમટું સોચા નિસમ્મ હટ્ટ-તુટ્ટં કરયલં જાવ-યં વયાસી-‘પ્યમેયં દેવાણુપિયા ! જાવ-તં સુવિણં સમ્મં પઢિચ્છતિ, તં ૨-ચિહ્વતા વલેણં રજા અમ્મણુજાયા સમાણી નાનામણિ-રયણ-મત્તિચિસં જાવ અમ્મુદ્દેતિ । અનુરિયમચ્ચલં જાવ-ગતીય જેણેવ સપ મવણે તેણેવ ઉવાગચ્છર, તે ૨-ચિહ્વતા સયં મવણમણુપવિદ્દા ।

૨૬. તપ ણં સા પ્રભાવતી દેવી ણ્હાયા કયવલિકમ્મા જાવ- સદ્ધાલંકારવિમૂસિયા તં ગમ્મં ણાર્ણીપદિં નાર્ણપ્પેદિં નાર્ણતિસેદિં નાર્ણકુપ્પદિં નાર્ણકસાપ્પદિં નાર્ણઅંબિલેદિં નાર્ણમહુરેદિં ઉડમયમાણસુદેદિં મોયણ-ચ્છાયણ-ગંધ-મહ્લેદિં જં તસ્સ

છે. તો હે દેવાનુપ્રિય ! આ પ્રભાવતી દેવીએ એક મહાસ્વમ્મ જોયું છે, હે દેવાનુપ્રિય ! પ્રભાવતી દેવીએ ઉદાર સ્વમ્મ જોયું છે, યાવત્ આરોગ્ય, તુષ્ટિ યાવત્ મંગલ કરનાર સ્વમ્મ જોયું છે. તેથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને અર્થલાભ થશે, મોગલાભ થશે, પુત્રલાભ થશે અને રાજ્યલાભ થશે. તથા હે દેવાનુપ્રિય ! એ પ્રમાણે લેખેલ પ્રભાવતી દેવી નવ માસ સંપૂર્ણ થયા પછી અને સાડા સાત દિવસ વિલ્લા પછી તમારા કુલમાં વ્હજ સમાન એવા યાવત્ પુત્રનો જન્મ આપશે. અને તે પુત્ર પણ બાલ્યાવસ્થા મૂકી મોટો થશે ત્યારે તે યાવત્ રાજ્યનો પતિ રાજા થશે, અથવા માવિતાલ્મા સાધુ થશે. તેથી હે દેવાનુપ્રિય ! પ્રભાવતી દેવીએ ઉદાર સ્વમ્મ જોયું છે, યાવત્ આરોગ્ય, તુષ્ટિ, દીર્ઘાયુષ તથા કલ્યાણ કરનાર સ્વમ્મ જોયું છે.

૨૪. સ્વાર બાદ તે બલરાજા સ્વમ્મલક્ષણપાઠકો પાસેથી એ વાતને સાંભળી અને અવધારી હર્ષિત, અને સંતુષ્ટ થયો, અને હાથ જોડી યાવત્ તેણે સ્વમ્મલક્ષણપાઠકોને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે દેવાનુપ્રિયો ! આ એ પ્રમાણે છે કે, યાવત્ જે તમે કહો છો’-એમ કહી તે સ્વમ્મોનો સારી રીતે સ્વીકાર કરે છે. ત્યાર બાદ સ્વમ્મલક્ષણપાઠકોનો પુષ્કલ અશન, પાન, ખાદિમ, સ્વાદિમ, પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલા અને અલંકારો વડે સત્કાર કરે છે, સન્માન કરે છે, તેમ કરીને જીવિકાને યોગ્ય ઘણું પ્રીતિદાન આપે છે; અને પ્રીતિદાન આપીને તે સ્વમ્મલક્ષણપાઠકોને રજા આપે છે. ત્યાર પછી પોતાના સિંહાસનથી ઉઠે છે, ઊઠીને જ્યાં પ્રભાવતી દેવી છે ત્યાં આવી પ્રભાવતી દેવીને તેણે તે પ્રકારની ઇષ્ટ, મનોહર યાવત્ મધુર વાણીવડે સંલપ કરતા કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયે ! એ પ્રમાણે લેખેલ સ્વમ્મશાસ્ત્રમાં વેતાલીશ સાધારણ સ્વમ્મો, અને ત્રીશ મહાસ્વમ્મો તથા વધા મઠ્ઠીને મહોંતેર સ્વમ્મો દેખાડ્યા છે. તેમાં હે દેવાનુપ્રિયે ! તીર્થકરની માતાઓ કે ચક્રવર્તિની માતાઓ-ઈત્યાદિ પૂર્વવત્ કહેવું, યાવત્ કોઈ એક મહાસ્વમ્મને જોઈને જાગે છે. હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ એક મહાસ્વમ્મ જોયું છે, હે દેવી ! તમે ઉદાર સ્વમ્મ જોયું છે, યાવત્ તે રાજ્યનો પતિ રાજા થશે કે માવિતાલ્મા અનગાર થશે. હે દેવિ ! તમે ઉદાર સ્વમ્મ જોયું છે, યાવત્ મંગલકર સ્વમ્મ જોયું છે, એમ કહી પ્રભાવતી દેવીની તે પ્રકારની ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય એવી યાવત્ મધુર વાણીવડે બે વાર અને ત્રણ વાર પણ પ્રશંસા કરે છે.

૨૫. સ્વાર બાદ તે પ્રભાવતી દેવી બલ રાજાની પાસેથી એ વાતને સાંભળીને અવધારીને હર્ષવાળી, અને સંતુષ્ટ થઈ યાવત્ હાથ જોડી આ પ્રમાણે બોલી-‘હે દેવાનુપ્રિય ! એ એ પ્રમાણે જ છે’ યાવત્ એમ કહી યાવત્ તે સ્વમ્મને સારી રીતે પ્રહ્ણ કરે છે. ત્યાર પછી બલ રાજાની અનુમતિથી અનેક પ્રકારના મણિ અને રત્નની કારીગરીથી શુક્ત તથા વિચિત્ર એવા તે મદ્રાસનથી ઊઠી ત્વરાપૂર્વક, અચપલપણે યાવત્ હંસ-સમાનગતિ વડે જ્યાં પોતાનું મંદિર છે ત્યાં આવી તેણે પોતાના મંદિરમાં પ્રવેશ કર્યો.

૨૬. સ્વાર બાદ તે પ્રભાવતી દેવી જ્ઞાન કરી, બલિકર્મ-વેવપૂજા કરી, યાવત્ સર્વ અલંકારથી વિમૂષિત થઈ તે ગર્ભને અતિશીત નહિ, અતિઉષ્ણ નહિ, અતિ તિત્ત નહિ, અતિકદુ નહિ, અતિ તુરા નહિ, અતિલાઠાં નહિ, અને અતિમધુર નહિ એવા, તથા દરેક ઋતુમાં

गम्भस्स हियं मितं पत्थं गम्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विविस्समउपहिं सयणा-सणेहिं पररिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुण्णदोहला सम्मानियदोहला भविमाणियदोहला बोच्छिण्णदोहला बवणीयदोहला बवगयरोग-मोह-भय-परितासा तं गम्भं सुहं-सुहेणं परिखहति । तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुभाणं अञ्जट्टमाणराहंविद्याणं धीतिकंताणं सुकुमालपाणि-पायं अहीणपडिपुञ्जपंचिदियसरिरं लक्खण-वंजणगुणोषबेयं जाव-ससिसो-माकारं कंतं पियदंसणं सुरूथं दारयं पयाया ।

२७. तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेसा जेणेव बले राया तेणेव उवाग-च्छन्ति, तेणेव उवागच्छिता करयल० जाव-बलं रायं जयेणं विजएणं बद्धावेति, जएणं विजएणं बद्धावेत्ता एवं बयासी-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावतीपियट्टयाए पियं निवेदेमो, पियं भे भवउ’ । तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं पयमट्टं सोष्ठा निसम्म हट्ट-तुट्ट० जाव-धाराहयणीव० जाव-रोमकूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयति, दलयित्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुञ्जं भिगारं च गिण्हइ, गिण्हित्ता मत्थए धोवइ, मत्थए धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति, पीइदाणं दलयित्ता सक्कारेति सम्माणेति ।

२८. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सहावेइ, सहावेत्ता एवं बयासी-‘खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेइ, चारग० २-करेत्ता माणुम्माणवहणं करेइ, मा० करेत्ता २ हत्थिणापुरं नगरं सभितरवाहिरियं आसिय-संमज्जिओ-वलित्तं जाव-करेइ कारवेइ, करेत्ता य कारवेत्ता य जूयसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहिमसक्कारं वा उस्सवेइ, २ ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिण्ह’ । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रत्ता एवं बुत्ता० जाव-पच्चप्पिणंति । तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छिता तं वेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुकं उक्करं उक्किट्टं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोडंडिमं अधरिमं गणियावरनाइइज्जकलियं अणेगताला-चराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदियसे ठिरवडियं करेति । तए णं से बले राया दसाहियाए ठिरवडियाए बट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवा वेमाणे य, सए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छेमाणे पडिच्छावेमाणे एवं विहरइ । तए णं तस्स दारगस्स

भोगवतां सुखकारक एवा भोजन, आच्छादन, गंध अने माला वडे ते गर्भने हितकर, मित, पथ्य अने पोषणरूप छे तेवा आहारने योग्य देश अने योग्य काले ग्रहण करती, तथा पवित्र अने कोमल शयन अने आसनवडे एकान्तमां सुखरूप अने मनने अनुकूल एवी विहारभूमिवडे प्रशस्त दोहदवाळी, संपूर्ण दोहदवाळी, सन्मानित दोहदवाळी, जेनो दोहद तिरस्कार पाम्यो नथी एवी, दोहदरहित, दूर थयेला दोहदवाळी, तथा रोग, मोह, भय अने परित्रास रहित ते गर्भने सुखपूर्वक धारण करे छे. त्यार बाद ते प्रभावती देवीए नव मास पूर्ण थया पछी अने साडा सात दिवस वीत्या पछी सुकुमालहाथ-पगवाळा अने दोषरहित प्रतिपूर्णपंचेन्द्रिय युक्त शरीरवाळा, तथा लक्षण, व्यंजन अने गुणथी युक्त, यावत् चंद्रसमानसौम्य आकारवाळा, कांत, प्रियदर्शन अने सुंदर रूपवाळा पुत्रने जन्म आय्यो.

पुत्रजन्म.

कथामणी.

२७. त्यार बाद ते प्रभावती देवीनी सेवा करनार दासीओए तेने प्रसव थयेले जाणी ज्यां बल राजा छे त्यां आवी हाथ जोडी यावत् बल राजाने जय अने विजयथी वधावीने आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर प्रभावती देवीनी प्रीति माटे आ (पुत्रजन्मरूप) प्रिय निवेदन करीए छीए, अने ते आपने प्रिय थाओ.’ त्यार बाद ते बल राजा शरीरनी शुश्रूषा करनार दासीओ पासेथी ए वात सांभळी अवधारिने हर्षित अने संतुष्ट थइ यावद् मेघनी धाराथी सिंचायला कदंबकना पुष्पनी पेटे यावद् रोमांचित थइ ते अंगरक्षिका दासीओने मुकुट सिवाय पहेरेल सर्व अलंकार आपे छे. आपीने ते राजा श्वेत रजतमय अने निर्मल पाणीथी भरेला कलशने लइ ते दासीओना मस्तक धुए छे, मस्तकने धोइने तेओने जीविकाने उचित धणुं प्रीतिदान आपी सत्कार अने सन्मान करी विसर्जित करे छे.

पुत्रजन्मोत्सव.

२८. त्यार बाद ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रिय ! तमे शीघ्र हस्तिनापुर नगरमां केदीओने मुक्त करो, मुक्त करीने मान (माप) अने उन्मानने (तोलने) वधारो; त्यार बाद हस्तिनापुर नगरनी बहार अने अंदरना भागमां छंटकाव करो, साफ करो, संमार्जित करो अने लीपो; तेम करी अने करावीने सहस्र यूपोनो अने सहस्र चक्रोनो पूजा, महामहिमा अने सत्कार करो, ए प्रमाणे करी मारी आ आह्वा पाछी आपो. त्यार बाद ते बल राजाना कहेवा प्रमाणे करी ते कौटुंबिक पुरुषो तेनी आह्वा पाछी आपे छे. त्यार पछी ते बल राजा ज्यां व्यायामशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने-इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं. यावद् ज्ञानगृहथी बहार नीकळी जकात रहित, कररहित, प्रधान, [विक्रयनो निषेध करेले होवाथी] आपवा योग्य वस्तु रहित, मापवा योग्य वस्तुरहित, मेयरहित, सुभटना प्रवेशरहित, दंड तथा कुदंबरहित, [ऋण मुक्त करेछुं होवाथी] अधरिमयुक्त-देवारहित, उत्तम गणिकाओ अने नाटकीयाओथी युक्त, अनेक तालानुचरो वडे युक्त, निरंतर वागतां वृंदगोसहित, ताजा पुष्पोनी माला युक्त, प्रमोद सहित, अने क्रीडा युक्त एवी स्थितिपतिता-पुत्रजन्ममहोत्सव पुर अने देशना लोको साथे मळीने दस दिवस सुप्री करे छे. त्यार बाद दस दिवस सुधी स्थितिप-

अम्मा-पियरो पढमे दिवसे ठिद्वडियं करेइ, तइए दिवसे चंदसूरदंसावणियं करेइ, छट्टे दिवसे जागरियं करेइ, पक्कारसमे दिवसे बीतिहंते निवसे असुरजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विडलं असणं पाणं खारमं सारमं उवक्खडाविति, उवक्खडावेत्ता जहा सिवो जाव-असिय य आमंतेति, आ० २ तओ पच्छा ण्हाया कय० तं चेष जाव सकारेति सम्माणेति, २ तस्सेव मिच्च-णाति-जाव-राईण य असियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्यकूढं कुलाणुकुं कुलसरिसं कुलसंतानंतंतुवज्जणकरं अयमेयाकूढं गोळं गुणनिष्फन्नं नामधेज्जं करेति-‘जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रओ पुत्ते पभाव-सीए वेवीए असए, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले,’ तए णं तरस दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति ‘महब्बले’सि ।

२९. तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिगगहिए, तंजहा-कीरधाईए, एवं जहा इदपइणे, जाव-निवाय-निवाघावंसि सुहंसुहेणं परिवहति । तए णं तस्स महब्बलस्स दारगरस अम्मा-पियरो अणुपुणेणं ठितिवडियं वा चंदसूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंक्रमणं वा जेमामणं वा पिडवज्जणं वा पज्जपावणं वा कण्णवेहणं वा संवच्छर-पडिलेहणं वा चोलोयणं च उवणयणं च अजाणि य बहुणि गम्माघाण-जम्मणमादियारं कोउयारं करेति ।

३०. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्टवासगं जाणित्ता सोमणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि० एवं जहा इदपइओ, जाव-अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था । तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कवालभावं जाव-अलं भोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मा-पियरो अट्ट पासायवडेंसए करेति, अभुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वन्नओ जहा रायप्पसेणइजे, जाव-पडि-रूवे, तेसि णं पासायवडेंसगणं बहुमज्जवेसमागे एत्थ णं महेगं भवणं करेति अणेगखंभसयसंनिविट्टं, वन्नओ जहा रायप्पसेण-इजे पेच्छाघरमंडवंसि जाव-पडिरूवे ।

तिता-उत्सव चालु हती स्यारे ते बल राजा सो रूपियाना, हजार रूपियाना अने लाख रूपियाना खर्चवाळ भागो, दानो अने द्रव्यना अमुक भागोने देतो अने देवरावतो तथा सो रूपियाना, हजार रूपियाना तथा लाख रूपियाना लाभने मेळवतो, मेळवावतो ए प्रमाणे रहे छे. स्यार बाद ते छोकराना मातापिता प्रथम दिवसे स्थितिपतिता-कुलनी मर्यादा प्रमाणे क्रिया करे छे; श्रीजे दिवसे चंद्र अने सूर्यनुं दर्शन करावे छे, छट्टे दिवसे धर्मजागरण करे छे अने अग्यारमो दिवस वीत्या बाद अशुचि जातकर्म करवानुं निवृत्त थया पछी बारमे दिवसे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम पदार्थोने तैयार करावे छे, अने जेम *शिव राजा संबन्धे कश्युं तेम क्षत्रियोने आमन्त्रे छे. स्यार पछी खान तथा बलिकर्म करी इत्यादि पूर्वोक्त यावत् सत्कार अने सन्मान करी तेज मित्र, ज्ञाति यावत् राजन्य अने क्षत्रियोनी समक्ष अर्या-पिता, पर्या-पितामह अने पिताना पण पितामहथी, घणा पुरुषोनी परंपरार्थी वधेल्लं, कुलने योग्य, कुलने उचित अने कुलरूपसंतान-तंतुने वधारनार आ आवा प्रकारनुं, गुणयुक्त अने गुणनिष्पन्न नाम पाडे छे. जेथी अमारो आ छोकोरो बल राजानो पुत्र अने प्रभावती देवीनो आत्मज छे, माटे ते अमारा आ पुत्रनुं नाम ‘महाबल’ हो. स्यार बाद ते छोकराना माता पिता तेनुं ‘महाबल’ एवुं नाम करे छे.

पुत्रनुं नाम पाडुं.

२९. स्यार पछी ते महाबल नामे पुत्रनुं पांच धावो बडे पालन करायुं. ते पांच धावो आ प्रमाणे छे-१ क्षीरधात्री, ए प्रमाणे बधुं इदप्रतिज्ञनी पेठे जाणुं. यावत् ते कुमार वायुरहित अने निर्व्याघात-अडचणरहित स्थानमां अत्यंत सुखपूर्वक वृद्धि पामे छे. पछी ते महाबलना मातापिताए जन्मना दिवसथी मांडी अनुक्रमे स्थितिपतिता, सूर्यचंद्रनुं दर्शन, धर्मजागरण, नामकरण, भांखोडीया चालवुं, पगी चालवुं, जमाडवुं, कोळीआ वधारया, बोलाववुं, कान विधाववा, वर्षगांठ करवी, चूडा-शिखा रखाववी, उपनयन-शीखववुं ए बधां अने ए शिवाय बीजा घणा गर्भाधान, जन्म वगरे कौतुको करे छे.

पांच धावोबडे पुत्र पालन.

३०. स्यार पछी ते महाबल कुमारने तेना मातापिता आठ वरसथी अधिक उमरनो जाणी प्रशस्त तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तमां [कलाचार्य पासे भणवा मोकले छे]-इत्यादि ए प्रमाणे बधुं † इदप्रतिज्ञनी पेठे कहेवुं, यावत् ते महाबल कुमार विषयोपभोगने समर्थ थयो. स्यार बाद ते महाबल कुमारनो बालभाव व्यतीत थयो जाणी, यावद् तेने विषयोपभोगने योग्य जाणी तेना माता पिता तेने माटे आठ श्रेष्ठ प्रासादो तैयार करावे छे, ते प्रासादो अतिशय उंचा अने [श्वेत वर्णना होवाथी] जाणे हसता होयनी-इत्यादि वर्णन‡ राजप्रश्नीयसूत्रमां कक्षा प्रमाणे जाणुं. यावत् ते प्रासादो अत्यंत सुंदर छे, ते प्रासादोना बराबर मध्यभागमां एक मोटुं भवन तैयार करावे छे, ते भवन सेंकडो थांभला उपर रहेल्लं छे-इत्यादि वर्णन § राजप्रश्नीय सूत्रमां कक्षा प्रमाणे प्रेक्षागृह अने मंडपना वर्णननी पेठे जाणुं, यावत् ते सुन्दर हतुं.

महाबल कुमारने भणवा मोकलो.

२८ * भग० षा० ११ उ० ९ पृ० २२२.

२९ † पांच धावोना नामो आ प्रमाणे छे-१ क्षीरधात्री (दूध पानारी), २ मन्वनधात्री (ज्ञान करावनारी), ३ मंवनधात्री (अलंकार पहरेवावारी), ४ कीडा करावनार धात्री, अने ५ अंकुधात्री-खोळामां बैसाडवार. ‡ जुओ इदप्रतिज्ञसंबन्धे राजप्र० १४७-१,२.

३० † जुओ राजप्र० प० १४७-२. § जुओ राजप्र० प० ८५-२. ¶ प्रेक्षामह मंडपनुं वर्णन जुओ राजप्र० प० ३५-१.

૩૧. તપ ણં તં મહાબલં કુમારં અમા-પિયરો અજ્યા કયા વિ સોમજંસિ તિદિ-કરણ-વિવસ-નક્ષત્ર-મુદુર્ષ્ણિ
શ્લોક કયલિકમ્મં કયકોડય-મંગલપાયચ્છિત્તં સજ્જાલંકારવિભૂસિયં પમક્ષણગ-જ્ઞાણ-ગીય-વાદય-પસાદ્ધ-દુંગતિલગ-કં-
કળઅવિહવવહુડવળીયં મંગલજુજંપિપદિ ય ધરકોડયમંગલોવયારકયસંતિકમ્મં સરિસયાણં સરિસયાણં સરિસયાણં સરિસલા-
વન્ન-રુવ-જોજ્જગુણોવધેયાણં વિળીયાણં કયકોડય-મંગલપાયચ્છિત્તાણં સરિસપદિ રાયકુલેદિતો આજિહ્વિચાણં અદુઘ્ઠં રાયચર-
કમાણં પગદિવસેણં પાણિ ગિણ્હારિસુ ।

૩૨. તપ ણં તસ્સ મહાબલસ્સ કુમારસ્સ અમા-પિયરો અયમેયારુવં પીદદાણં ઢલયંતિ, તં જહા-અદુ હિરણ્ણકોડીઓ,
અદુ સુવન્નકોડીઓ, અદુ મઝડે મઝડપ્પવરે, અદુ કુંડલજુપ કુંડલજુયપ્પવરે, અદુ હારે હારપ્પવરે, અદુ અઢ્ઢારે અઢ્ઢારપ્પવરે,
અદુ પગાવલીઓ પગાવલિપ્પવરાઓ, એવં મુસાવલીઓ, એવં કળગાવલીઓ, એવં રયણાવલીઓ, અદુ કઢગજોપ કઢગજોય-
પ્પવરે, એવં તુહિયજોપ, અદુ સોમજુયલાઈં સોમજુયલપ્પવરાઈં, એવં વઢગજુયલાઈં, એવં પદ્ધજુયલાઈં, એવં ડુગુલ્લજુયલાઈં,
અદુ સિરીઓ, અદુ હિરીઓ, એવં ઘિઈઓ, કિસીઓ, બુહીઓ, લક્ષીઓ, અદુ નંદાઈં, અદુ મહાઈં, અદુ તલે તલપ્પવરે,
સઘ્ઠરયણામપ, ણિયગવરમઘ્ઠણકેઙ્ઠ અદુ ણપ ણયપ્પવરે, અદુ વયે વયપ્પવરે, ઢસગોસાહસ્સિપ્પણં વપ્પણં, અદુ નાઢગાઈં નાઢ-
ગપ્પવરાઈં વસીસઘ્ઠેણં નાઢપ્પણં, અદુ આસે આસપ્પવરે, સઘ્ઠરયણામપ, સિરિઘરપઢિરુવપ, અદુ હ્થી હ્થિપ્પવરે, સઘ્ઠરયણા-
મપ સિરિઘરપઢિરુવપ, અદુ જાણાઈં જાણપ્પવરાઈં, અદુ જુગાઈં જુગપ્પવરાઈં, એવં સિવિયાઓ, એવં સંવમાળીઓ, એવં ગિહ્લીઓ,
ચિહ્લીઓ, અદુ વિયઢજાણાઈં વિયઢજાણપ્પવરાઈં, અદુ રહે પારિજાણિય, અદુ રહે સંગામિય, અદુ આસે આસપ્પવરે, અદુ હ્થી
હ્થિપ્પવરે, અદુ ગામે ગામપ્પવરે, ઢસકુલસાહસ્સિપ્પણં ગામેણં, અદુ ઢાસે ઢાસપ્પવરે, એવં ચેવ ઢાસીઓ, એવં કિંકરે, એવં
કંચુરજ્ઞે, એવં વરિસઘરે, એવં મહ્તરપ, અદુ સોવન્નિપ ઓલંબણદીવે, અદુ રુપ્પામપ ઓલંબણદીવે, અદુ સુવન્નરુપ્પામપ ઓલં-
બણદીવે, અદુ સોવન્નિપ ઉક્કંચણદીવે, અદુ પંજરદીવે, એવં ચેવ તિષ્ઠિ વિ, અદુ સોવન્નિપ થાલે, અદુ રુપ્પમપ થાલે, અદુ સુવન્ન-
રુપ્પમપ થાલે, અદુ સોવન્નિયાઓ પત્તીઓ ૩, અદુ સોવન્નિયાઈં થાસયાઈં ૩, અદુ સોવન્નિયાઈં મહ્લગાઈં ૩, અદુ સોવન્નિયાઓ
તલિયાઓ ૩, અદુ સોવન્નિયાઓ કાવહઆઓ ૩, અદુ સોવન્નિપ અઘપ્પદ ૩, અદુ સોવન્નિયાઓ અઘયજ્ઞાઓ ૩,
અદુ સોવન્નિપ પાયપીઢપ ૩, અદુ સોવન્નિયાઓ મિસિયાઓ ૩, અદુ સોવન્નિયાઓ કરોહિયાઓ ૩, અદુ સોવન્નિપ પહ્લંકે ૩,

મહાબલનું પાણિ-
પ્રહ્ણ.

૩૧. ત્યાર પછી બીજા કોઈ એક દિવસે શુભ તિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર અને મુહૂર્તમાં જેણે જ્ઞાન, બલિકર્મ-પૂજા, રક્ષા આદિ
કૌતુક અને મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું છે એવા મહાબલ કુમારને સર્વ અલંકારથી વિભૂષિત કરી અને સઘવા સ્ત્રીઓએ કરેલા અમ્યંજન-
વિલેપન, જ્ઞાન, ગીત, વાદિત્ર, મંડન, આઠ અંગમાં તિલક અને કંકણ પહેરાવી મંગલ અને આશીર્વાદપૂર્વક ઉત્તમ રક્ષા વગેરે કૌતુકરૂપ
અને સરસવ વગેરે મંગલરૂપ ઉપચાર વડે શાંતિકર્મ કરી, યોગ્ય, સમાનત્વચાવાળી, સમાન ઉમરવાળી, સમાન લાવણ્ય, રૂપ, યૌવન અને
ગુણોથી યુક્ત, વિનીત, જેણે કૌતુક અને મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરેલું છે એવી, સમાન રાજકુલથી આણેલી એવી, ઉત્તમ, રાજાની આઠ શ્રેષ્ઠ
કન્યાઓનું એક દિવસે પાણિપ્રહ્ણ કરાવ્યું.

પ્રીતિદાન.

૩૨. ત્યાર પછી તે મહાબલ કુમારના માતા પિતા એવા પ્રકારનું આ પ્રીતિદાન આપે છે, તે આ પ્રમાણે-આઠ કોટિ હિરણ્ય, આઠ ક્રોઢ
સોનૈયા, મુકુટોમાં ઉત્તમ એવા આઠ મુકુટ, કુંડલયુગલમાં ઉત્તમ એવી આઠ કુંડલની જોડી, હારોમાં ઉત્તમ એવા આઠ હાર, અર્ધહારમાં શ્રેષ્ઠ એવા આઠ
અર્ધહાર, એકસરા હારમાં ઉત્તમ એવા આઠ એકસરા હાર, એજ પ્રમાણે મુક્તાવલીઓ, કનકાવલીઓ અને રત્નાવલીઓ જાણવી; કઢા યુગલમાં
ઉત્તમ એવા આઠ કઢાની જોડી, એ પ્રમાણે તુહિય-બાજુબંધની જોડી, રેશમી વસ્ત્ર યુગલમાં ઉત્તમ એવા આઠ રેશમી વસ્ત્રની જોડી, એ પ્રમાણે
સૂતરાઠ વસ્ત્રની જોડીઓમાં ઉત્તમ એવી આઠ સૂતરાઠ વસ્ત્રની જોડીઓ, એ પ્રમાણે ટસરની જોડીઓ, પદ્મયુગલો, ડુકૂલયુગલો, આઠ શ્રી, આઠ હી,
એ પ્રમાણે ધી, કીર્તિ, બુદ્ધિ, અને લક્ષ્મી દેવીઓની પ્રતિમા જાણવી. આઠ નંદો, આઠ મદ્રો, તાઢમાં ઉત્તમ એવા આઠ તાલવૃક્ષ-એ સર્વ રત્નમય
જાણવા. પોતાના ભવનના કેતુ-ચિહ્નરૂપ ધ્વજમાં ઉત્તમ એવા આઠ ધ્વજો, ઢસ હજાર ગાયોનું એક ઋજ-ગોકુલ થાય છે, તેવા ગોકુલમાં ઉત્તમ
એવા આઠ ગોકુલો, નાટકોમાં ઉત્તમ અને વત્રીશ માણસોથી મજવી શકાય એવા આઠ નાટકો, ઘોડાઓમાં ઉત્તમ એવા આઠ ઘોડા, આ વધું રત્ન-
મય જાણવું. માંડાગાર સમાન હાથીઓમાં ઉત્તમ એવા આઠ રત્નમય હાથીઓ, માંડાગાર સમાન સર્વરત્નમય યાનોમાં શ્રેષ્ઠ એવા આઠ યાનો, યુગ્ય-
માં ઉત્તમ આઠ યુગ્યો (અમુક જાતના વાહનો), એ પ્રમાણે શિવિકા, સ્વદંમાનિકા, એ પ્રમાણે ગિહ્લી, (હાથીની ઉપરની અંવાડી), ચિહ્નિઓ
(ઘોડાના આઢા પલાળો), વિકટ યાનોમાં (ઉઘાડા વાહનોમાં) પ્રધાન એવા આઠ વિકટ યાનો, આઠ પારિયાનિક (ત્રીઢાના) રથો, સંપ્રામને
યોગ્ય એવા આઠ રથો, અશ્વોમાં ઉત્તમ એવા આઠ અશ્વ, હાથીઓમાં ઉત્તમ એવા આઠ હાથીઓ, પ્રામોમાં ઉત્તમ એવા આઠ ગામો, જેમાં ઢસ હજાર
કુલો રહે તે એક ગામ કહેવાય છે. ઢાસોમાં ઉત્તમ એવા આઠ ઢાસો, એજ પ્રમાણે ઢાસીઓ, એ પ્રમાણે કિંકરો, એ પ્રમાણે કંચુકિઓ, એ પ્રમાણે
વર્ષધરો, (અંત:પુરના રક્ષક ખોજાઓ) એ પ્રમાણે મહ્તરકો (ઘડાઓ), આઠ સોનાના, આઠ રુપાના તથા આઠ સોના-રુપાના અવલંબન

अद्दु सोवर्णियाओ पडिसेआओ ३, अद्दु हंसासणां, अद्दु कौंआसणां, एवं गवलासणां, उज्जयासणां, पणयासणां, दीहा-
लणां, भद्रासणां, पक्खासणां, मगरासणां, अद्दु पडमासणां, अद्दु विसासोवत्थियासणां, अद्दु तेह्लसमुणे, जहा रायप्प-
सेमइओ, जाव-अद्दु सरिसवसमुणे, अद्दु सुआओ, जहा उववाइए, जाव-अद्दु पारिसीओ, अद्दु छत्ते, अद्दु छत्तघारिओ चेडीओ,
अद्दु चामपाओ, अद्दु चामरघारीओ चेडीओ, अद्दु तालिपंटे, अद्दु तालिबंटघारीओ चेडीओ, अद्दु करोडियाघारीओ चेडीओ, अद्दु
क्षीरघातीओ, जाव-अद्दु अंकघातीओ, अद्दु अंगमदियाओ, अद्दु उम्मदियाओ, अद्दु ण्हावियाओ, अद्दु पसादियाओ, अद्दु वच्च-
गपेसीओ, अद्दु सुजगपेसीओ, अद्दु कोट्टागारीओ, अद्दु दवकारीओ, अद्दु उवत्थाणियाओ, अद्दु नाडइआओ, अद्दु कोडुंबिणीओ,
अद्दु महाणसिणीओ, अद्दु मंडागारिणीओ, अद्दु अज्जाधारिणीओ, अद्दु पुण्णधरणीओ, अद्दु पाणिघरणीओ, अद्दु बलिकारीओ,
अद्दु सेआाकारीओ, अद्दु अम्मितरियाओ पडिहारीओ, अद्दु बाहिरियाओ पडिहारीओ, अद्दु मालाकारीओ, अद्दु पेसणका-
रीओ, अन्नं वा सुवहुं हिरन्नं वा सुवच्चं वा कंसं वा दूसं वा विउलघण-कणग०जाव-संतसारसावपज्जं, अलाहि जाव आस-
णमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं मोसुं, पकामं परिमापउं । तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं
हिरन्नकोडिं दलयति, एगमेगं सुवच्चकोडिं दलयति, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयति, एवं तं चेष सच्चं जाव-एगमेगं
पेसणकारिं दलयति, अन्नं वा सुवहुं हिरन्नं वा जाव-परिमापउं । तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरणए जहा जमाली
जाव-बिहरति ।

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपणे, वच्चओ जहा केसि-
सामिस्स, जाव पंचाहिं अणगारसपहिं सद्धिं संपरिबुडे पुआणुपुद्धिं चरमाणे गामाणुग्गामं इतिज्जमाणे जेणेव हत्थिणागपुरे

दीपो (हांडीओ), आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना-रुपाना उत्कंचनदीपो (दंडयुक्त दीवाओ), ए प्रमाणे त्रणे जातना पंजर-
दीपो-फानसो, आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना-रुपाना थाळो, आठ सोनानी, आठ रुपानी अने आठ सोना-रुपानी पात्रीओ,
(नाना पात्रो), ए प्रमाणे त्रणे जातना आठ स्थासको-तासको, आठ मल्लको-चपणीया, आठ तलिका-रकेबीओ, आठ कलाचिका-चमचा,
आठ तावेथाओ, आठ तवीओ, आठ पादपीठ-(पग मूकवाना बाजोठ), आठ मिसिका-(अमुक प्रकारना आसनो), आठ करोटिका (अमुक
जातना पात्रो, लोटा अथवा कचोला), आठ पलंग, आठ प्रतिशय्या (डोयणी प्रमुख नानी बीजी शय्याओ), आठ हंसासनो, आठ क्रींआसनो,
ए प्रमाणे गरुडासनो, उंचा आसनो, नीचा आसनो, दीर्घासनो, भद्रासनो, पक्षासनो, मकरासनो, आठ पद्मासनो, आठ दिक्खस्तिक्कासनो, आठ
तेलना डाबडा-इत्यादि बधुं *राजप्रश्रीय सूत्रमां कद्धा प्रमाणे कहेवुं, यावद् आठ सरसवना डाबडा, आठ कुब्ज दासीओ-इत्यादि बधुं औप-
पातिक सूत्रमां कद्धा प्रमाणे कहेवुं, यावत् आठ पारसिक देशनी दासीओ; आठ छत्रो, आठ छत्र धरनारी दासीओ, आठ चामरो, आठ चामर
धरनारी दासीओ, आठ पंखा, आठ पंखा बीजनारी दासीओ, आठ करोटिका-तांबूलना करंडिया-ने धारण करनारी दासीओ, आठ क्षीरघात्रीओ
(दूध पानारी धावो), यावद् आठ अंकघात्रीओ, (खोळामां रमाडनारी धावो) आठ अंगमर्दिकाओ, -शरीरनुं अल्प मर्दन करनारी दासीओ,
आठ उन्मर्दिकाओ (अधिक मर्दन करनारी दासीओ), आठ ज्ञान करावनारी दासीओ, आठ अलंकार पहरेवनारीओ, आठ चंदन घसनारीओ,
आठ तांबूल चूर्ण पीसनारीओ, आठ कोष्ठागारनुं रक्षण करनारी, आठ परिहास करनारी, आठ सभामां पासे रहेनारी, आठ नाटक करनारीओ,
आठ कौटुंबिकीओ-साथे जनारी दासीओ, आठ रसोइ करनारी, आठ भांडागारनुं रक्षण करनारी, आठ मालणो, आठ पुष्प धारण करनारी,
आठ पाणी लावनारी, आठ बलि करनारी, आठ पयारी तैयार करनारी, आठ अंदरनी अने आठ बहारनी प्रतिहारीओ, आठ माला करनारीओ,
आठ पेण करनारी, अने ए शिवाय बीजुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कांसुं, वच्च तथा विपुल धन, कनक, यावत् विद्यमान सारभूत धन आप्युं,
जे सात पेटी सुधी इच्छापूर्वक आपवा अने भोगववाने परिपूर्ण हतुं. स्यार बाद ते महाबल कुमार दरेक क्षीने एक एक हिरण्यकोटि, एक
एक सुवर्णकोटि अने मुकुटोमां उत्तम एक एक मुकुट आपे छे. ए प्रमाणे पूर्वोक्त सर्व वस्तुओ एक एक आपे छे, यावत् एक एक पेण
करनारी दासी तथा बीजुं पण घणुं हिरण्य यावद् वहेची आपे छे. स्यार पछी ते महाबल कुमार उत्तम प्रासादमां उपर बेसी जमालिनी पेठे
यावद् बिहरे छे.

३३. ते काले-ते समये विमलनाथ तीर्थकरना प्रपौत्र-प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार हता, ते जातिसंपन्न हता-इत्यादि वर्णन
केशी स्वामीनी पेठे जाणवुं, यावत् तेओ पांचसो साधुना परिवारनी साथे अनुक्रमे एक गामयी बीजे गाम विहार करता, ज्यां हस्तिनागपुर
नामे नगर छे, अने ज्यां सहस्राववन नामे उद्यान छे त्यां आवे छे, आवीने यथा योग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने

धर्मघोष अनगारुं
भागवत.

३३ * सुओ राजप्रश्रीय ४० ६८-९. † सुओ औपपा० ५० ७६-२. ‡ जमालिनुं वर्णन सुओ भग० खं० ३ ४० ९ ३० ३३ ५० १६६.

३३ † सुओ राजप्र० ५० ११८-९.

नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरुवं उग्गाहं भोगिण्हति, भोगिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तप णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय० जाव-परिसा पञ्जुवासाइ ।

३४. तप णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसइं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली तहेव खिता, तहेव कञ्चु-इज्जपुरिसं सइवेति, कञ्चुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छप करयल० जाव-निग्गच्छइ । एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलस्स अरहओ पउप्पय धम्मघोसे नामं अणगारे, सेसं तं चेव, जाव-सो वि तहेव राह्वरेणं निग्गच्छति । धम्मकहा जहा केसिसामिस्स । सो वि तहेव अम्मा-पियरो आपुच्छइ, नवरं धम्मघोसस्स अण-गारस्स अंतियं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पञ्चइत्तप, तहेव बुत्तपडिबुत्तया, नवरं इमाओ य ते जाया ! विउलरायकुल-बालियाओ कला०, सेसं तं चेव जाव-ताहे अकामाईं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी-‘तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसम-वि रज्जसिंरिं पासित्तप’ । तप णं से महब्बले कुमारे अम्मा-पियराण वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीप संविट्ठति । तप णं से बले राया कोडुंघियपुरिसे सइवेइ, एवं जहा सिवभइस्स तहेव रायामिसेओ भाणियओ, जाव-अभिसिंचति । करयलपरिग्गहियं महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वइत्तवेति, जएणं विजएणं वइत्तवित्ता जाव-एवं वयासी-‘अण जाया ! किं वेमो, किं पय-च्छामो’, सेसं जहा जमालिस्स तहेव, जाव-तप णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाईं चोइस पुट्ठाईं अहिज्जति, अहिज्जिता बह्वाहिं चउत्थ० जाव-विचिचेहिं तथोकम्मोहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुत्ताईं दुवालस वासाईं सामन्नपरियागं पाउणति, बहु० २-णिन्ता मासियाप संलेहणाप सट्ठिं भत्ताईं अणसणाप० आलोइयपडिक्कंते समाहि-पत्ते कालमासे कालं किच्चा उहुं चंद्रम-सूरिय० जहा अम्मओ, जाव बंभलोप कप्पे देवत्ताप उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाईं टिती पणत्ता, तत्थ णं महब्बलस्स वि दस सागरोवमाईं टिती पत्ता । से णं तुमं सुवंसणा ! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाईं विट्ठाईं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताप पञ्चायाप ।

भावित करता यावद् विहरे छे. ते समये हस्तिनागपुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक-[वगेरे मार्गोमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे इत्यादि] यावत् परिषद् उपासना करे छे.

३४. स्यार बाद ते महाबल कुमार घणा माणसोना शब्दने, जनना कोलाहलने सांभळी ए प्रमाणे यावत् *जमालिनी पेठे जाणवुं, यावत् ते महाबल कुमार कंचुकी पुरुषने बोलावे छे, अने कंचुकी पुरुष पण तेज प्रमाणे कहे छे, परन्तु एटलो विशेष छे के ते कंचुकी धर्मघोष मुनिना आगमननो निश्चय जाणीने हाथ जोडीने यावद् नीकळे छे. ए प्रमाणे हे देवानुप्रिय ! विमलनाथ अरिहंतना प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार अहीं आव्या छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् ते महाबल कुमार पण उत्तम रथमां बेसीने वांदावा नीकळे छे. धर्मकथा किेशि-स्वामिनी पेठे जाणवी. महाबल कुमार पण ते प्रमाणे मातापितानां रजा मागे छे, परन्तु ते ‘धर्मघोष अनगारनीं पासे दीक्षा लइ अगारथी-गृह-धासथकी अनगारिकपणुं लेवाने इच्छुं छुं’ एम कहे छे-इत्यादि उक्ति अने प्रत्युक्ति ते प्रमाणे (जमालिना चरितमां वर्णव्या प्रमाणे) जाणवी. परन्तु हे पुत्र ! [आ तारी खीओ] विपुल एवा राजकुलमां उत्पन्न थयेली बालाओ छे, वळी ते कलाओमां कुशल छे-इत्यादि बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत् मातापिताए इच्छा विना ते महाबल कुमारने आ प्रमाणे कछुं-‘हे पुत्र ! एक दिवस पण तारी राज्यलक्ष्मीने जोवा अमे इच्छी-ए छीए,’ स्यारे ते महाबल कुमार मातापिताना वचनने अनुसरिने चूप रह्यो. पछी ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या-इत्यादि शिवभद्रनी पेठे राज्याभिषेक जाणवो, यावत् राज्याभिषेक कर्यो, अने हाथ जोडीने महाबल कुमारने जय अने विजयवडे वधावी यावद् आ प्रमाणे कछुं-‘हे पुत्र ! कहे के तने शुं दइए, तने शुं आपीए,’ इत्यादि बाकीनुं बधुं जमालिनी पेठे जाणवुं; यावत् स्यार पछी ते महाबल अनगार धर्मघोष अनगारनीं पासे सामायिकादि चउद पूर्वोने भणे छे, भणीने घणा चतुर्थ भक्त, यावद् विचित्र तपकर्मवडे आत्माने भावित करिने संपूर्ण बार वर्ष श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने मासिक संलेखनावडे निराहारपणे साठ भक्तोने वीतावी, आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थइ मरण समये काल करी ऊर्ध्व लोकमां चंद्र अने सूर्यनी उपर बहु दूर अंबडनी पेठे यावत् ब्रह्मलोक कल्पमां देवपणे उत्पन्न थयो. ह्यां कैटलाक देवोनी स्थिति दस सागरोपमनी कहेली छे. तेमां महाबल देवनी पण दस सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. हे सुदर्शन ! तुं ते ब्रह्मलोक कल्पमां दस सागरोपम सुधी दिव्य अने भोग्य एवा भोगोने भोगवी ते देवलोकथी आयुषनो, भवनो अने स्थितिनो क्षय थया पछी तुरतज च्यवी अहींज वाणिज्यग्राम नामना नगरमां श्रेष्ठिना कुलमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे.

महाबल कुमारनुं
बंधन करवा माटे
बधुं, दीक्षा लेवानी
रजा मागवी.

महाबल कुमारने
राज्याभिषेक अने
दीक्षा.

ब्रह्मदेवलोकमां उप-
पडुं अने सर्वाधी
कल्पनी सुदर्शन
अंठीपणे उपबधुं.

३४ * जुओ भग० सं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६६.

† जुओ राजप्र० प० १२०-१.

‡ जुओ भग० सं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६९-१७२.

§ जुओ भग० सं० ३ श० ११ उ० ९ पृ० २२२.

¶ भग० सं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १७३.

‡ जुओ औपपा० अंबडाधिकार प० ९७-२.

३५. तए णं तुमे सुदंसणा ! उम्मुक्कवालभावेणं विजायपरिणयमेत्तेणं जोवणगमणुप्पत्तेणं तहाकवाणं येराणं अंतियं केवल्लिपत्ते धम्मे निसंते, सेऽवि य धम्मे इच्छिय, पडिच्छिय, अभिरुएय; तं सुद्धु णं तुमं सुदंसणा ! इवाणि पकरेसि । से तेणट्टेणं सुदंसणा ! एवं बुद्धर-अत्थिय णं एतेसि पलिओवम-सागरोवमाणं कयेति वा अवचयेति वा । तए णं तस्स सुदंसणस्स खेद्विस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्टं सोब्बा निसम्म सुभेणं अज्जवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्जमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्मणं कओवसमेणं ईहा-पोह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्नीपुद्धजातीसरणे समुप्पत्ते, एयमट्टं सम्मं अभिसमेति । तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुद्धभवे तुगुणाणीयसङ्खसंबेगे आणंदं-सुपुद्धनवणे समणं भगवं महावीरं तिककुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, आ० २-रेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-‘एवमेयं मंते ! जाव से जहेयं तुज्जे वदह’सि कहु उत्तरपुरच्छिमं विसीभागं अवकमह, सेसं जहा उसमवत्तस्स, जाव-सङ्खदुक्खप्पहीणे; नवरं चोहस पुवारं अहिज्जह, बहुपडिपुआरं दुवालस वासाइं सामअपरियागं पाउणह, सेसं तं वेव । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि । महम्मलो समत्तो ।

एकारसमे सए एकारसमो उद्देशो समत्तो ।

३५. ल्यार बाद हे सुदर्शन ! बालपणाने वीतावी विज्ञाने अने मोटो थइ, यौवनने प्राप्त थइ तें तेवा प्रकारना स्वविरोनी पासे केवलिए कहे-लो धर्म सांभळ्यो, अने ते धर्म पण तने इच्छित अने स्वीकृत थयो, तथा तेना उपर तने अभिरुचि थइ. हे सुदर्शन ! हाल तुं जे करे छे ते सारुं करे छे. ते माटे हे सुदर्शन ! एम कहेवाय छे के ए पत्त्योपम अने सागरोपमनो क्षय अने अपचय थाय छे. ल्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी ते सुदर्शन शेठने शुभ अध्ययसायवडे, शुभ परिणामवडे अने विशुद्ध लेस्याओथी तदावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थवाथी ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणा करतां संझिरूप पूर्व जन्मनुं स्मरण उत्पन्न थयुं, अने तेथी भगवंते कहेल आ अर्थने सारी रीते जाणे छे. ल्यार बाद ते सुदर्शन शेठने श्रमण भगवंत महावीरे पूर्वभव संभारेलो होवाथी बेवडी श्रद्धा अने संवेग उत्पन्न थयो, तेनां लोचन आनंदाश्रुथी परिपूर्ण थया, अने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने ऋण वार आदक्षिण प्रदक्षिणा करी, वांटी अने नर्माने आ प्रमाणे कहुं-‘हे भगवन् ! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे-यावत् एम कही ते सुदर्शन शेठ उत्तरपूर्व (ईशान) दिशा तरफ गया. बाकी बधुं ऋषभदत्तनी पेटे जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ सर्व दुःखथी रहित थया. परन्तु विशेष ए छे के ते पूरां चौद पूर्वो भणे छे, अने संपूर्ण बार वरस सुधी श्रमणपर्यायने पाळे छे. बाकी बधु पूर्व प्रमाणे जाणवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे-एम कही यावद् विहरे छे.

सुदर्शन शेठने
जाणिसरण.

सुदर्शन शेठनी
प्रमत्ता.

एकादश शते महाबल नाम एकादश उद्देशक समाप्त.

बारसमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समपणं आलमिया नामं नगरी होत्या । वज्रभो । संखवणे चेइप । वज्रभो । तत्थ णं आलमियाप नगरीप बहवे इसिमहपुत्तपामोफखा समणोवासया परिवसंति, अह्मा, जाव-अपरिभूया, अभिगयजीवा-जीवा जाव-विहरंति । तप णं तेसिं समणोवासयाणं अन्नया कया वि पगयभो सहियाणं समुवागयाणं संनिविट्ठाणं सन्निसन्नाणं अयमेयाकवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्या-देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केषतियं कालं टिती पण्णत्ता ? तप णं से इसिमहपुत्ते समणोवासप देवट्ठितीगहियट्ठे ते समणोवासप एवं वयासी-देवलोपसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साहं टिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव-दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोव-माहं टिती पण्णत्ता । तेण परं बोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य । तप णं ते समणोवासया इसिमहपुत्तस्स समणोवासगस्स पव-माहकमानस्स जाव-एवं परुवेमाणस्स पयमट्ठं नो सहइंति, नो पसियंति, नो रोयंति, एवमट्ठं असइहमाणा अपसियमाणा, अरोपमाणा जामेव दिसं पाउम्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

२. तेणं कालेणं तेणं समपणं समणे भगवं महावीरे जाव-समोसडे, जाव-परिसा पज्जुवासइ । तप णं ते समणोवासया इमीसे कहाप लखट्ठा समाणा हट्ठ-तुट्ठा एवं जहा तुंगिउहेसप जाव पज्जुवासंति । तप णं समणे भगवं महावीरे तेसिं सम-णोवासगणं तीसे य महति० घम्मकहा, जाव-आणाय आराहप भवइ ।

बारसो उद्देशक.

आलमिका नगरी.
शंखवन चैल.
ऋषिभद्रपुत्र
श्रमणोपासको.
श्रमणोपासकोनो
वार्तालाप.
देवलोकां देवोनी
स्थिति.
अर्पणस्थिति.
उत्तुष्टस्थिति.

१. ते काले-ते समये आलमिका नामे नगरी हती. वर्णन. शंखवन नामे चैल्य हतुं. वर्णन. ते आलमिका नगरीमां ऋषिभद्रपुत्र प्रमुख घणा श्रमणोपासको-श्रावको रहेता हता. तेओ धनिक यावद् कोइयी पराभव न पामे तेवा अने जीवा-जीव तत्त्वे जाणनारा हता. ल्यार बाद बीजा कोइ एक दिवसे एकत्र मलेला, आवेला, एकटा ययेला अने बेठेला ते श्रमणोपासकोनो आ आवा प्रकारनो वार्तालाप थयो-इ आर्य ! देवलोकमां देवोनी केटला काल सुधी स्थिति कही छे ? ल्यार बाद देवस्थिति संबन्धे सत्य हकीकत जाणनार ऋषिभद्रपुत्रे ते श्रम-णोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं-‘हे आर्य ! देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी कही छे, ल्यार पछी एकसमय अधिक, बै समय अधिक, यावद् दरा समय अधिक, संख्यात समयाधिक, अने असंख्य समयाधिक करतां उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. ल्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे (अर्थात् तेनाथी उपरनी स्थितिना देवो अने देवलोको नथी.) ल्यार पछी ए प्रमाणे कहेतां, यावत् एम प्ररूपणा करता ते श्रमणोपासको ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासकना आ अर्थनी श्रद्धा करता नथी, प्रतीति करता नथी अने रुचि करता नथी. ए अर्थनी श्रद्धा, प्रतीति अने रुचि नहि करता तेओ जे दिशाथी आव्या हता तेज दिशा तरफ पाछा गया.

२. ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीर यावत् समवसर्या, यावत् परिषद तेमनी उपासना करे छे. ल्यार बाद ते श्रमणोपा-सको [श्री महावीर स्वामी आव्यानी] आ वात सांभळी, हर्षित अने संतुष्ट थया-इत्यादि *तुंगिक उद्देशकनी पेठे जाणवुं, यावत् तेओ पर्युपासना करे छे. ल्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा अत्यन्त मोटी ते पर्वदने धर्मकथा कही. यावत् तेओ आज्ञाना आराधक थया.

३. तप णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोष्वा निसम्म हट्ठ-तुट्ठा उट्ठाए उट्ठे, उ० २-त्ता समणं भगवं महावीरं वंदन्ति, नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी- [प्र०] एवं खलु मंते ! इत्थिभइपुत्ते समणो-वासए अहं एवं आइक्खइ, जाव-परुवेइ-देवल्लोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहणेणं दस वाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया, जाव-तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवल्लोगा य, से कहमेयं मंते ! एवं ? [उ०] 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी-अहं अज्जो ! "इत्थिभइपुत्ते समणोवासए तुज्जं एवं आइक्खइ, जाव-परुवेइ-देवल्लोगेसु णं अज्जो ! देवाणं जहणेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया, जाव-तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवल्लोगा य," सब्बे णं एसमट्ठे, अहं पुण अज्जो ! एवमाइक्खामि, जाव-परुवेमि-देवल्लोगेसु णं अज्जो ! देवाणं जहणेणं दस वाससहस्साइं तं खेव जाव-तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवल्लोगा य," सब्बे णं एसमट्ठे । तप णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोष्वा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदन्ति नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव इत्थिभइपुत्ते सम-णोवासए तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता इत्थिभइपुत्तं समणोवासगं वंदन्ति नमंसन्ति, वंदित्ता, नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ जामेति । तप णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छन्ति, प० २-च्छित्ता अट्ठाइं परियादियन्ति, अ० २-इत्ता समणं भगवं महावीरं वंदन्ति नमंसन्ति, वं० २-त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

४. [प्र०] 'मंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वं० २-त्ता एवं वयासी-पभू णं मंते ! इत्थि-भइपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंढे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पइइत्तए ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे, समट्ठे । गोयमा ! इत्थिभइपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलच्चय-गुणच्चय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोवयासेहिं अहापरिग्गहिपहिं तवो-कम्मोहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहित्ति, व० २-णित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसे-हित्ति, मा० २-सेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहित्ति, २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मो कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहित्ति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पल्लिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं इत्थिभइपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पल्लिओवमाइं ठिती भविस्सति ।

५. [प्र०] से णं मंते ! इत्थिभइपुत्ते देवे तातो देवल्लोगाओ आउक्खएणं भव० ठिइक्खएणं जाव-कहिं उववज्जिहित्ति ?

३. त्थार पछी ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी, हर्षित अने मंतुए थया, अने प्रयत्नथी उभा थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांटी अने नमीने आ प्रमाणे कहुं- 'हे भगवन् ! ए प्रमाणे खरेखर ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक अमने ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, हे आर्य ! देवल्लोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी कही छे, अने ते पछी समयाधिक यावत् उत्कृष्ट स्थिति [तेत्रीश सागरोपमनी कही छे], अने पछी देवो अने देवल्लोक व्युच्छिन्न थाय छे, तो हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे केवी-रीते होय ? [उ०] 'हे आर्यो ! ए कही श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कहुं- 'हे आर्यो ! ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक जे तमने आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, देवल्लोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी छे, अने ते पछी समयाधिक करता-इत्यादि कहेवुं, यावत् त्थार पछी देवो अने देवल्लोको व्युच्छिन्न थाय छे. ए वात सार्ची छे. हे आर्यो ! हुं पण एज प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं के देवल्लोकमां देवोनी स्थिति जघन्य दस हजार वर्षनी छे-इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत् त्थार बाद देवो अने देवल्लोको व्युच्छिन्न थाय छे, ए अर्थ सत्य छे. त्थार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी ए वात सांभळी अने अवधारी श्रमण भगवंत महावीरने वांटी, नमी ज्यां ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे, आवीने ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासकने वांटी तथा नमी ए अर्थने (सत्य बातने न मानवारूप अपराधने) सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्थार बाद ते श्रमणोपासको तेने प्रश्नो पूछे छे, अने पूछी अर्थने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी श्रमण भगवंत महावीरने वांटी नमी जे दिशायकी आव्या हत्ता, पाछा तेज दिशा तरफ गया.

देवोनी स्थिति.

४. [प्र०] 'हे भगवन् ! ए प्रमाणे कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांटी अने नमस्कार करी आ प्रमाणे कहुं- 'हे भगवन् ! श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र आप देवानुप्रियनी पासे दीक्षा लइ गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ यथार्थ नथी; पण हे गौतम ! श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र घणा शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौषधो-पवासो वडे तथा यथायोग्य स्वीकारेण तपकर्म वडे आत्माने भावित करतो घणां बरसो सुधी श्रमणोपासकमर्यायने पाळी, मासिक संलेखनावडे आत्माने सेवी, साठ भक्तो निराहारपणे वीतावी आलोचन अने प्रतिक्रमण करी, समाधिने प्राप्त थइ मरण समये काल करी सौधर्मकल्पमां अरुणाभ नामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यां केटलाक देवोनी चार पत्त्योपमनी स्थिति कही छे; तेमां ऋषिभद्रपुत्र देवनी पण चार पत्त्योपमनी स्थिति हशे.

ऋषिभद्रपुत्र अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! पछी ते ऋषिभद्रपुत्र देव ते देवल्लोकथी आयुपनो क्षय थया पछी, भवनो क्षय थया पछी, अने स्थितिनो

ऋषिभद्रपुत्र देवल्लोकथी व्यथी क्यां थयो ?

[૩૦] ગોયમા ! મહાવિદેહે વાસે સિદ્ધિહિતિ, જાવ—મંતં કાહેતિ । ‘સેવં મંતે ! સેવં મંતે’ ! સિ મગવં ગોયમે જાવ અપ્યાર્ણ માલે-
માણે વિહરદ । તપ ણં સમણે મગવં મહાવીરે અજ્ઞયા કયા વિ આલમિયાઓ નગરીઓ સંલ્લવણાઓ વેદ્યાઓ પદ્મિનિક્ષમદ્,
પદ્મિનિક્ષમિત્તા મહિયા અણવયવિહારં વિહરદ ।

૬. [પ્ર૦] તેણં કાલેણં તેણં સમણં આલમિયા નામં નગરી હોત્યા । વલ્લઓ । તત્થ ણં સંલ્લવણે ણામં વેદ્ય હોત્યા ।
વલ્લઓ । તસ્સ ણં સંલ્લવણસ્સ વેદ્યસ્સ અદૂરસામંતે પોગ્ગલે નામં પરિચ્ચાયપ્પ પરિવસતિ, રિડ્ધેદ—અજુલ્લેદં જાવ—નપસુ સુપરિ-
નિટ્ટિપ્પ છટ્ટું—છટ્ટેણં અણિવિલ્લક્ષેણં તથોકમ્મેણં ઉઠ્ઠં વાહાઓં જાવ—આયાવેમાણે વિહરતિ । તપ ણં તસ્સ પોગ્ગલસ્સ છટ્ટું—છટ્ટેણં
જાવ—આયાવેમાણસ્સ પગતિમહિયાપ્પ જહા સિવસ્સ જાવ—વિમ્ભંગે નામં અજ્ઞાણે સમુપ્પણે । સે ણં તેણં વિમ્ભંગેણં નાણેણં સમુપ્પણેણં
વંમલોપ કપ્પે દેવાણં ઠિતિં જાણતિ પાસતિ । તપ ણં તસ્સ પોગ્ગલસ્સ પરિચ્ચાયગસ્સ અયમેયારૂથે અમ્મત્થિપ્પ જાવ—સમુપ્પ-
લ્લિત્યા—‘અત્થિ ણં મમં અહસેસે નાણ—વંસણે સમુપ્પણે, દેવલોપસુ ણં દેવાણં જહણેણં દસવાસસહસ્સાઈ ઠિતી પ્પણ્ણસા, તેણ
પરં સમયાહિયા, દુસમયાહિયા જાવ—અસંલ્લેક્કસમયાહિયા, ઉક્કોસેણં દસસાગરોવમાઈ ઠિતી પ્પણ્ણસા, તેણ પરં વોચ્છિન્ના દેવા
ય દેવલોગા ય’—એવં સંપેહેતિ, એવં સંપેહેત્તા આયાવણભૂમીઓ પચ્છોરુહદ, આં ૨—હિત્તા તિવંડકુંડિયા જાવ—ધાડરસાઓ ય
ગેણ્ણદ્, ગેણ્ણેત્તા જેણેવ આલંમિયા નગરી, જેણેવ પરિચ્ચાયગાવસદ્દે, તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા મંડનિક્ષેવં કરેતિ, મંં
૨—રેત્તા આલંમિયાપ્પ નગરીપ્પ સિંઘાડગં જાવ—પહેસુ અજ્ઞમજ્જસ્સ એવમાદ્ધસ્સ, જાવ—પરુવેદ—‘અત્થિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! મમં
અતિસેસે નાણ—વંસણે સમુપ્પણે, દેવલોપસુ ણં દેવાણં જહણેણં દસવાસસહસ્સાઈ, તદ્દેવ જાવ—વોચ્છિન્ના દેવા ય દેવલોગા ય ।
તપ ણં આલંમિયાપ્પ નગરીપ્પ એણં અમિલાવેણં જહા સિવસ્સ, તં વેવ જાવ સે કહમેયં મજ્જે એવં ? સામી સમોસદ્દે, જાવ—
પરિસા પદ્મિગયા । મગવં ગોયમે તદ્દેવ મિલ્લારિયાપ્પ તદ્દેવ મહુજ્જણસઈ નિસામેદ, તદ્દેવં ૨—ત્તા તદ્દેવ સલ્લં માણિયલ્લં,
જાવ—અહં પુણ ગોયમા ! એવં આદ્ધસ્સામિ, એવં માસામિ, જાવ પરુવેમિ—‘દેવલોપસુ ણં દેવાણં જહણેણં દસ વાસસહસ્સાઈ
ઠિતી પ્પણ્ણસા, તેણ પરં સમયાહિયા, દુસમયાહિયા, જાવ—ઉક્કોસેણં તેત્તીસં સાગરોવમાઈ ઠિતી પ્પણ્ણસા, તેણ પરં વોચ્છિન્ના
દેવા ય દેવલોગા ય ।

૭. [પ્ર૦] અત્થિ ણં મંતે ! સોહમ્મે કપ્પે દ્ધાઈં સલ્લજ્જાઈં પિ અવજ્જાઈં પિ ? [૩૦] તદ્દેવ જાવ—હંતા અત્થિ, એવં ઈસાણે

સિદ્ધિપદ પામશે.

ક્ષય થયા બાદ યાવત્ ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં સિદ્ધિપદ પામશે, યાવત્ સર્વં દુઃખોનો અન્ત—નાશ
કરશે. હે મગવન્ ! તે એમજ છે, હે મગવન્ ! તે એમજ છે—એમ કહી મગવાન્ ગૌતમ યાવત્ આત્માને માવિત કરતા વિહરે છે. ત્યાર બાદ
શ્રમણ મગવંત મહાવીર અન્ય કોઈ દિવસે આલમિકા નગરીથી અને શંલવન નામે ચૈલ્યથી નીકળી બહારના દેશોમાં વિચરે છે.

૬. [પ્ર૦] તે કાલે—તે સમયે આલમિકા નામે નગરી હતી. વર્ણન. ત્યાં શંલવન નામે ચૈલ્ય હતું. વર્ણન. તે શંલવન ચૈલ્યની થોડે
દૂર પુદ્ગલ નામે પરિત્રાજક રહેતો હતો. તે ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ અને યાવત્ બીજા બ્રાહ્મણ સંબન્ધી નયોમાં કુશલ હતો. તે નિરંતર છટ્ટુ છટ્ટુનો
તપ કરવાપૂર્વક ડંચા હાથ રાક્ષાને યાવત્ આતાપના લેતો હતો. ત્યાર બાદ તે પુદ્ગલ પરિત્રાજકને નિરંતર છટ્ટુ છટ્ટુના તપ કરવાપૂર્વક યાવત્
આતાપના લેતા પ્રકૃતિની સરલ્લતાર્થી “શિવ પરિત્રાજકની પેટે યાવત્ વિમ્ભંગ નામે અજ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું, અને તે ઉત્પન્ન થયેલા વિમ્ભંગજ્ઞાનવડે
બ્રહ્મલોક કલ્પમાં રહેલા દેવોની સ્થિતિ જાણે છે અને જુદા છે. પછી તે પુદ્ગલ પરિત્રાજકને આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્ ઉત્પન્ન થયો—
‘મને અતિશયવાલું જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થયું છે, દેવલોકમાં દેવોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની છે, અને પછી એક સમય અધિક, બે
સમય અધિક, યાવત્ અસંલ્લય સમય અધિક કરતાં ઉત્કૃષ્ટથી દસ સાગરોપમની સ્થિતિ કહી છે. ત્યાર પછી દેવો અને દેવલોકો વ્યુચ્છિન્ન
થાય છે’—એમ વિચાર કરે છે, વિચારીને આતાપનાભૂમિથી નીચે ઉતરી ત્રિવંડ, કુંડિકા, યાવત્ મગવાં વલ્લોને પ્રહણ કરી જ્યાં આલમિકા
નગરી છે, અને જ્યાં તાપસોના આશ્રમો છે ત્યાં આવે છે, આવીને પોતાના ઉપકરણો મૂકી આલમિકા નગરીમાં શૃંગાટક, ત્રિક, યાવત્ બીજા
માર્ગોમાં એક બીજાને એ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્ પ્રરૂપે છે—‘હે દેવાનુપ્રિય ! મને અતિશયવાલું જ્ઞાન અને દર્શન ઉત્પન્ન થયું છે, અને દેવલો-
કમાં દેવોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની છે’—इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, ત્યાર પછી દેવો અને દેવલોકો વ્યુચ્છિન્ન થાય છે.’ ત્યાર બાદ ‘આલ-
મિકા નગરીમાં’—એ અમિલાપથી જેમ શિવ રાજર્ષિ માટે પૂર્વે કહ્યું [શં ૧૧ ૩૦ ૯ સૂં ૮] તેમ અહીં કહેવું, યાવત્ એ પ્રમાણે કેવી
રીતે હોય ? હવે મહાવીર સ્વામી સમવસર્યા અને યાવત્ પરિષદ્ વાંદીને વિસર્જિત થઈ. મગવાન્ ગૌતમ તેજ પ્રમાણે મિશ્તાચર્યા માટે નીકળ્યા
અને તેઓ ઘણા માણસોનો શબ્દ સાંભળે છે—इत्यादि बहुं पूर्ववत् कहेवुं, યાવત્ હે ગૌતમ ! હું પણ એ પ્રમાણે કહું છું, વોલું છું, યાવત્
પ્રરૂપું છું કે દેવલોકમાં દેવોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની કહી છે, અને ત્યાર પછી એક સમયાધિક, દ્વિસમયાધિક યાવત્ ઉત્કૃષ્ટથી
તેત્રીશ સાગરોપમ સ્થિતિ કહી છે, અને ત્યાર બાદ દેવો અને દેવલોકો વ્યુચ્છિન્ન થાય છે.

૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! સૌધર્મકલ્પમાં વર્ણસહિત અને વર્ણરહિત દ્રવ્યો છે ?—इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न. [૩૦] હે ગૌતમ ! હા, છે. એ પ્રમાણે

ધિ, एवं जाव अक्षय, एवं मेवेअविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु धि, ईसिपम्भाराय धि जाव-हंता अत्थि । तप णं सा महति-अहालिया जाव-पडिगया ।

૮. તપ ણં આલંભિયાપ નગરીપ સિંઘાહગ-તિય૦ અવસેસં જહા સિવસ્સ, જાવ-સહ્વદુક્ષ્ણપ્પહીણે, નવરં તિવંહ-કુંહિયં જાવ-ધાહરસવત્થપરિહિપ પરિવહિયવિષ્મંઘે આલંભિયં નગરં મજ્જં-મજ્જેણં નિગ્ગચ્છતિ, જાવ-ઉત્તરપુરચ્છિમં વિસીભાગં અવ-ક્રમતિ, અવક્રમિત્તા તિવંહકુંહિયં ચ જહા સંદ્ધો, જાવ પહ્વદ્ધો સેસં જહા સિવસ્સ, જાવ-“અઘ્ઘાવાહં સોક્કં અણુભવંતિ સાસયં સિદ્ધા” । સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! સિ ।

दुवालसमो उद्देशो समत्तो ।

समत्तं एगारसमं सयं ।

યાવદ્દેશાન દેવલોકમાં પણ જાણવું. તે પ્રમાણે યાવદ્ અચ્યુતમાં, પ્રૈવેયકવિમાનમાં, અનુત્તરવિમાનમાં અને ઈપત્યાગ્ભારા પૃથિવીમાં (સિદ્ધ-શિલામાં) પણ વર્ણસહિત અને વર્ણરહિત દ્રવ્યો છે. ત્યાર વાદ તે અત્યન્ત મોટી પરિપદ્ યાવદ્ વિસર્જિત થઈ.

૮. પછી આલમ્બિકા નગરીમાં શૃંગાટક, ત્રિક-વગેરે માર્ગોમાં ઘણા માણસોને એમ કહે છે ઇત્યાદિ *શિવ રાજર્ષિની પેટે કહેવું, યાવત્ તે સર્વે દુઃસ્વચી રહિત થયા. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, ત્રિદંડ, કુંહિકા યાવદ્ ગેરુથી રંગેલ્યા વસ્ત્રને પહેરી વિભંગજ્ઞાન રહિત થયેલો તે પુદ્ગલ પરિત્રાજક આલમ્બિકા નગરીની વચ્ચે થઈને નીકળે છે. નીકળીને યાવદ્ ઉત્તરપૂર્વ (ઈશાન) દિશા તરફ જઈ 'સ્કંદકર્તા પેટે તે પુદ્ગલ પરિ-ત્રાજક ત્રિદંડ, કુંહિકા યાવદ્ મૂકી પ્રવ્રજિત થાય છે. વાકી બધું શિવરાજર્ષિની પેટે યાવદ્ 'સિદ્ધો અવ્યાવાધ અને શાશ્વત સુખને અનુભવે છે' ત્યાંસુધી જાણવું. 'હે મગવન્ ! તે એમજ છે, હે મગવન્ ! તે એમજ છે'—એમ કહી યાવદ્ મગવાન્ ગૌતમ વિહરે છે.

વર્ણવ-

एकादश शते द्वादश उद्देशक समाप्त.

एकादश शतक समाप्त.

दुवालसमं सयं ।

१ संखे २ जयंति ३ पुढवि ४ पोग्गल ५ अइवाय ६ राहु ७ लोगे य ।
८ नागे य ९ देव १० आया बारसमसए दसुहेसा ॥ १ ॥

पढमो उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समपणं सावत्थी नामं नगरी होत्था, वसओ । कोट्टए चेइए, वसओ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बह्वे संखप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अह्हा, जाव-अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति । तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव-सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवा-जीवा जाव-विहरइ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ, अहे, अभिगय० जाव-विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समपणं सामी समोसडे । परिसा निग्गया, जाव-पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए जहा आलंभियाए जाव-पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति० धम्मकहा, जाव-परिसा पडिगया । तए णं ते समणो-वासगा समणस्स भगवओ महावीररस अंतियं धम्मं सोच्चा निसग्ग हट्टुट्टु० समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता

वारमुं शतक.

[उद्देशक संग्रह-] १ शंख, २ जयंती, ३ पृथिवी, ४ पुद्गल, ५ अतिपात, ६ राहु, ७ लोक, ८ नाग, ९ देव अने १० आत्मा-ए विषयो संबन्धे दश उद्देशको बारमा शतकमां कहेवामां आवशे.

प्रथम उद्देशक.

श्रावस्ती नगरी-
शंखप्रमुख श्रमणो-
पासको.
शंखने उपला की
हती.
पुष्कलिश्रमणो-
पासक.

१. ते काले, ते समये श्रावस्ती नामनी नगरी हती. वर्णन. कोष्ठक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमां शंखप्रमुख घणा श्रमणोपासको रहेता हता, तेओ धनिक यावद् अपरिभूत-कोइथी पराभव न पामे तेवा अने जीवाजीव तत्त्वने जाणनारा हता. ते शंख नामना श्रमणोपासकने उत्पला नामे खी हती, ते सुकुमाल हाथपगवाळी, यावत् सुरूपा अने जीवाजीव तत्त्वने जाणनारी श्रमणोपासिका यावद् विहरती हती. ते श्रावस्ती नगरीमां पुष्कली नामे श्रमणोपासक रहेतो हतो, ते धनिक अने जीवाजीव तत्त्वनो ज्ञाता हतो. ते काले, ते समये त्यां महावीर स्वागी समवसर्या, परिषद् वांदवाने नीकळी, यावत् ते पर्युपासना करे छे. त्थार बाद ते श्रमणोपासको भगवंत आ-व्यानी आ वात सांभळी *आलभिका नगरीना श्रावकोनी पेठे यावत् पर्युपासना करे छे. त्थार बाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपास-कोने तथा ते अत्यंत मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् सभा पाळी गई. पळी ते श्रमणोपासकोए श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सां-भळी, अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थई श्रमण भगवंत महावीरने वांधा अने नमन कर्तुं; वांदीने, नमीने प्रश्नो पूछ्या, प्रश्नो पूछीने तेमा

अमंस्त्रिणा पाणिनां पुच्छंति प० २—च्छिता अद्वाहं परियादियंति, अ० २—यिच्छा उद्वाह उद्देति, उ० २—सा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिच्छा जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पद्दारेत्थ गमणाए ।

२. तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—‘तुज्जे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं खाइमं उवक्खडावेह, तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिमाएमाणा परिभुंजे-माणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो । तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति । तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयाकवे अम्मत्थिए जाव—समुप्पज्जित्था—‘नो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव—साइमं आसाएमाणस्स ४ पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोस-हियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणि—सुवन्नस्स ववगयमाला—वन्नग—विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ—मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दम्मसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए’ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, ते० २—च्छिता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २—च्छिता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पो० २—जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, उ० २—हित्ता दम्मसंथारणं संथरति, दम्म० २—रित्ता दम्मसंथारणं वुरूहइ, व० २ वुरूहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव—पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरति ।

३. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं २ गिहारं, तेणेव उवागच्छंति, ते० २—च्छिता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता अन्नमसं सहावेति, अ० २—वेत्ता एवं वयासी—‘एवं खलु देवाणु-प्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण—पाण—खाइम—साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हत्थमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समणोवासगं सहावेत्तए’ ।

४. तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—‘अच्छइ णं तुज्जे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहन्नं संखं समणोवासगं सहावेमि’ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिच्छा सावत्थीए नगरीए मज्झं—मज्जेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, ते० २—च्छिता संखस्स समणो-वासगस्स गिहं अणुपविट्ठे ।

५. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्टुत्तु० आसणाओ अब्भु अर्थो ग्रहण कर्या, अर्थो ग्रहण करी अने उभा थई श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने कोष्ठक नामे चैयथी नीकळीने तेओए श्रावस्ती नगरी तरफ जयानो विचार कर्यो.

२. पछी ते शंख नामे श्रमणोपासके ए वधा श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कहुं के हे देवानुप्रियो ! तमे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने तैयार करावो, पछी आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारनो आखाद लेता, विशेष खाद लेता, परस्पर देता अने खाता पाक्षिक पोषधनुं अनुपालन करता विहरीशुं. त्थार पछी ते श्रमणोपासकोए शंख नामना श्रमणोपासकनुं वचन विनयपूर्वक स्वीकार्युं. त्थार बाद ते शंख नामे श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावद् उत्पन्न थयो—‘अशन, यावत् खादिम आहा-रनो आखाद लेता, विखाद लेता, परस्पर आपता अने खाता पाक्षिक पोषधने ग्रहण करीने रहेवुं मने श्रेयस्कर नथी, पण मारी पोषधशा-खामां ब्रह्मचर्यपूर्वक, मणि अने सुवर्णनो त्याग करी माला, उद्वर्तन अने विलेपनने छोडी शस्त्र अने मुसल वगैरेने मूकीने तथा डाभना संथारो सहित मारे एकलाने—बीजानी सहाय शिवाय—पोषधनो स्वीकार करी विहरवुं श्रेय छे.’ एम विचार करी, श्रावस्ती नगरीमां ज्यां पोतानुं घर छे, अने ज्यां उत्पला श्रमणोपासिका रहे छे, त्यां आवी उत्पला श्रमणोपासिकाने पूछी, ज्यां पौषधशाला छे त्यां जइ, पोषधशा-खामां प्रवेश करी, पोषधशालाने प्रमाजीं निहार अने पेशाव करवानी जग्याने प्रतिलेही—तपासीने डाभनो संथारो पाथरी तेना उपर बेठो, बेसीने पोषधशालामां पोषधग्रहण करी ब्रह्मचर्यपूर्वक यावत् पाक्षिक पोषधनुं पालन करे छे.

३. त्थार बाद ते श्रमणोपासकोए श्रावस्ती नगरीमां पोतपोताने घर जइ, पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने तैयार करावी परस्पर एक बीजाने बोलावी आ प्रमाणे कहुं—‘हे देवानुप्रियो ! आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने तैयार करावेलो छे, पण ते शंख श्रमणोपासक जलदी आव्या नहि, माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे शंख श्रमणोपासकने बोलावथा श्रेयस्कर छे.

४. त्थार बाद ते पुष्कळी नामना श्रमणोपासके ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कहुं—‘हे देवानुप्रियो ! तमे शांतिपूर्वक विसामो ल्यो, अने हुं शंख श्रमणोपासकने बोलावुं छुं, एम कही श्रमणोपासकोनी पासेथी नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमां ज्यां शंख श्रमणोपास-कनुं घर छे, त्यां जइ तेणे शंख श्रमणोपासकना घरमां प्रवेश कर्यो.

५. पछी ते [शंख श्रावकनी पत्नी] उत्पला श्रमणोपासिका ते पुष्कळि श्रमणोपासकने आवतो जोइ, हर्षित अने संतुष्ट थई पो-

शंखनो संकल्प-अशनादिनो आहार करता पाक्षिक पोषध लेवो मने श्रेयस्कर नथी.

भोजन माटे शंख श्रमणोपासकने बोलावथा योग्य छे.

पुष्कळि शंखने बोलावथा जाय छे.

ट्टेह, आ० २-ता सप्त-द्वय पयारं अणुगच्छर, अणुगच्छिता पोक्खलि समणोवासगं वंदति, नमंसति, वंदिता नमंसिता आस-
णेणं उवनिमंतेह, आ० २-ता एवं वयासी-‘संविस्तु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्ययोजणं ? तए णं से पोक्खली समणो-
वासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी-कहिं देवाणुप्पिए ! संखे समणोवासए’ ? तए णं सा उप्पला समणोवासिया
पोक्खलि समणोवासयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव-विहरए ।

६. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छर, ते० २-च्छिता
गमणागमणाए पडिक्कमए, ग० २-मिता संखं समणोवासगं वंदति नमंसति, वंदिता नमंसिता एवं वयासी-‘एवं खलु देवा-
णुप्पिया ! अग्हेहिं से विउले असणे० जाव-साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं जाव-साइमं
आसाएमाणा जाव-पडिजागरमाणा विहरामो ।

७. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलि समणोवासगं एवं वयासी-‘णो खलु कप्पए देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं
पाणं खारमं साइमं आसाएमाणस्स जाव-पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पए मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव-विहरि-
त्तए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुम्हे तं विउलं असणं पाणं खारमं साइमं आसाएमाणा जाव विहरए ।

८. तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्कमए, पडिनिक्कमिता
सावत्थि नगरिं मज्झं-मज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छर, ते० २-च्छिता ते समणोवासए एवं वयासी-‘एवं खलु
देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव-विहरए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुम्हे विउलं असणं ४ जाव
विहरए, संखे णं समणोवासए नो हइमागच्छर । तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा जाव-विहरंति ।

९. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुद्धरत्ता-घरत्तकालसमयंसि घम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयाकूवे जाव
-समुप्पज्जित्था-‘सेयं खलु मे कलं जाव-जलंते समणं भगवं महावीरं वंदिता नमंसिता जाव-पज्जुवासित्ता तओ पडिनिय-
त्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए’त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं संपेहेत्ता कलं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्कमति, पडि-
निक्कमिता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए सयाओ गिहाओ पडिनिक्कमति, स० २-मिता पाव्विहारत्तारेणं
सावत्थि नगरिं मज्झंमज्जेणं जाव-पज्जुवासति, अभिगमो नत्थि ।

ताना आसनथी उठी, सात आठ पगलां तेनी सामे जइ पुक्कलि श्रमणोपासकने वांदी अने नमी आसनवडे उपनिमंत्रण कर्या बाद
आ प्रमाणे बोली-‘हे देवानुप्रिय ! कहो, के तमारा आगमननुं शुं प्रयोजन छे ? त्यारे ते पुक्कलि श्रमणोपासके ते उत्पला श्रमणोपासिकाने
आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रिये ! शंख श्रमणोपासक क्यार् छे’ ? त्यार बाद ते उत्पला श्रमणोपासिकाए ते पुक्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे
कहुं-‘हे देवानुप्रिय ! खरेखर शंख श्रमणोपासक पोपधशालामां पोपध ग्रहण करी ब्रह्मचारी थइने यावद् विहरे छे.’

६. त्यार बाद ते पुक्कलि श्रमणोपासके ज्यां पोपधशाला छे, अने ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां आवी, गमनागमनने (जतां आ-
वतां कोइ जीवनी हिंसा करी होय तेने) प्रतिक्रमी शंख श्रमणोपासकने वांदी अने नमीने तेने आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे
खरेखर अमे घणो अशन, यावत्-खादिम आहार तैयार कराव्यो छे, तो हे देवानुप्रिय ! आपणे जइए, अने पुक्कळ अशन, यावत्-खादिम
आहारनो आखाद लेता यावत्-पोपधनुं पालन करता विहरीए.

७. त्यार बाद ते शंख श्रमणोपासके ते पुक्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रिय ! पुक्कळ अशन, पान, खादिम
अने खादिम आहारनो आखाद लेता यावत् पोपधनुं पालन करी विहरनुं मने योग्य नथी, मने तो पोपधशालामां पोपधयुक्त थइने यावत्-
विहरनुं योग्य छे. माटे हे देवानुप्रिय ! तमे इच्छा प्रमाणे घणा अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारनो आखाद लेता यावद् विहरो.’

८. त्यार बाद ते पुक्कलि श्रमणोपासक शंख श्रमणोपासकनी पासोथी पोपधशालामांथी बहार नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां
ज्यां ते श्रमणोपासको छे त्यां आव्यो, अने त्यां आवी ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कहुं-‘हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर शंख श्रमणो-
पासक पोपधशालामां पोपध ग्रहण करीने यावद् विहरे छे. [तेणे कहुं छे के-] ‘हे देवानुप्रियो ! तमे इच्छा मुजब घणा अशन, पान,
खादिम अने खादिम आहारनो आखाद लेता यावत् विहरो, शंख श्रमणोपासक तो शीघ्र नहि आवे’. त्यार बाद ते श्रमणोपासको ते विपुल
अशन, पान, खादिम अने खादिम आहारने आखादता यावद्-विहरे छे.

९. त्यार बाद मध्य रात्रिना समये धर्म जागरण करता ते शंख श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो-
‘आवती काले यावत् सूर्य उगवाना समये श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी यावत् पर्युपासना करी त्यांथी पाछा आवीने पाक्षिक पोषध
पारवो श्रेयस्कर छे’-एम विचार करे छे, एम विचारी आवती काले यावत् सूर्योदय समये पोपधशालाथी बहार नीकळी शुद्ध, बहार
जवा योग्य तथा मंगलरूप वज्रो उत्तम रीते पहेरी पोताना धरथी बहार नीकळी पगे चाली श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां थइने जाय छे,
यावत् पर्युपासना करे छे. अहिं [पोपधयुक्त होवाथी] तेने *अभिगमो नथी.

संखे कहुंके-आहार-
रनो आखाद लेता
पोपधनुं पालन
करनुं मने योग्य
नथी.

शंखनो महावीर
स्वामिने वंदन कर-
वानो संकल्प.

शंख भगवंतने
वंदन करा जाय छे.

૧૦. તપ ણં તે સમણોવાસગા કલ્હં પાદુઃ જાવ-અલંતે ણ્હાયા કયલિકમ્મા જાવ-સરીરા સપ્પહિં ૨ ગેહેહિંતો પહિ-
નિષ્કમંસિ, સં ૨-મિત્તા ઇગયમ્મો મિલાયંતિ, ઇગયમ્મો મિલાયિત્તા સેસં જહા પદમં જાવ-પજ્જુવાસંતિ । તપ ણં સમણે
મગ્ગં મહાવીરે તેસિં સમણોવાસગાણં તીસે ય ધમ્મકહા, જાવ-આણપ આરાહપ મ્મવતિ । તપ ણં તે સમણોવાસગા સમણસ્સ
મગ્ગમ્મો મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મં સોચ્છા નિસમ્મ હદ્દુદ્ધા ઉદ્ધાપ ઉદ્ધેતિ, ઉઃ ૨-દ્દેચ્છા સમણં મગ્ગં મહાવીરં વંદંતિ નમંસંતિ,
વંદિત્તા નમંસિત્તા ઝેણેવ સંચે સમણોવાસપ તેણેવ ઉધાગચ્છન્તિ, તેઃ ૨-ચ્છિત્તા સંચં સમણોવાસયં ઇવં વયાસી-‘તુમં દેવા-
ણુપ્પિયા ! હિજ્જો અમ્હે અપ્પણા ચેવ ઇવં વયાસી, તુમ્હે ણં દેવાણુપ્પિયા ! વિડલં મસણંઃ જાવ-વિહરિસ્સામો, તપ ણં તુમં
પોસહસાલાપ જાવ વિહરિપ, તં સુદ્ધુ ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હે હીલસિ । ‘અજ્જો’ત્તિ સમણે મગ્ગં મહાવીરે તે સમણોવાસપ
ઇવં વયાસી-‘મા ણં અજ્જો ! તુજ્જે સંચં સમણોવાસગં હીલહ, નિદહ, ચિંસહ, ગરહહ, અવમન્નહ, સંચે ણં સમણોવાસપ પિય-
અમ્મે ચેવ, હહધમ્મે ચેવ, સુદક્ખુજાગરિયં જાગરિપ ।

૧૧. [પ્ર૦] ‘મંતે’ત્તિ મગ્ગં ગોયમે સમણં મગ્ગં મહાવીરં વંદહ નમંસહ, વંદિત્તા નમંસિત્તા ઇવં વયાસી-કહવિહા ણં
મંતે ! જાગરિયા પ્ણણ્ણા ? [ઉઃ] ગોયમા ! તિવિહા જાગરિયા પ્ણણ્ણા, તંજહા-બુદ્ધજાગરિયા, અબુદ્ધજાગરિયા, સુદક્ખુ-
જાગરિયા । [પ્ર૦] સે કેણદ્દેણં મંતે ! ઇવં બુદ્ધહ-‘તિવિહા જાગરિયા પ્ણણ્ણા, તંજહા-બુદ્ધજાગરિયા, અબુદ્ધજાગરિયા, સુદક્ખુ
જાગરિયા’ ? [ઉઃ] ગોયમા ! જે હમે અરિહંતા મગ્ગંતો ઉપ્પન્નનાણ-હંસણધરા જહા સંવપ્ જાવ-સવન્ન સમ્મદરિસી, ઇપ્પ ણં બુદ્ધા
બુદ્ધજાગરિયં જાગરંતિ । જે હમે અણગારા મગ્ગંતો ઈરિયાસમિયા માસાસમિયા જાવ-ગુપ્પસંભચારી ઇપ્પ ણં અબુદ્ધા અબુદ્ધ-
જાગરિયં જાગરંતિ । જે હમે સમણોવાસગા અમિગયઝીવા-ઝીવા જાવ-વિહરન્તિ, ઇત્તે ણં સુદક્ખુજાગરિયં જાગરંતિ, સે તેણદ્દેણં
ગોયમા ! ઇવં બુદ્ધહ ‘તિવિહા જાગરિયા જાવ-સુદક્ખુજાગરિયા’ ।

૧૨. [પ્ર૦] તપ ણં સે સંચે સમણોવાસપ સમણં મગ્ગં મહાવીરં વંદહ નમંસહ, વંદિત્તા નમંસિત્તા ઇવં વયાસી-કોહ-
વસદ્દે ણં મંતે ! ઝીવે કિં વંધહ, કિં પકરેતિ, કિં ચિણાતિ, કિં ઉવચ્ચિણાતિ ? સંચા ! કોહવસદ્દે ણં ઝીવે આડયવજ્જામો સત્ત
કમ્મપગ્ગાહીમો સિદ્ધિલબ્ધવજ્જામો-ઇવં જહા પદમસપ અસંબુદ્ધસ્સ અણગારસ્સ જાવ-અણુપરિયદ્દહ ।

૧૦. સ્યાર બાદ [પૂર્વે કહેલા] તે શ્રમણોપાસકો આવતી કાલે યાવત્ સૂર્યોદય સમયે જ્ઞાન કરી, બલિકર્મ કરી યાવત્ શરીરને અલં-
કૃત કરી પોત પોતાના ઘરથી નીકળી એક સ્થળે મેગા થાય છે, એક સ્થળે મેગા થઈને-હસ્વાદિ વધું *પ્રથમ નિર્ગમવત્ જાણવું, યાવત્ (મગ્ગંત
મહાવીરની પાસે જઈ) તેમની પર્યુપાસના કરે છે. સ્યાર બાદ શ્રમણ મગ્ગંત મહાવીરે તે શ્રમણોપાસકોને તથા તે સમાને ધર્મકથા કહી. યાવત્
‘તે આજ્ઞાના આરાધક થાય છે’ ત્યાં સુધી જાણવું. સ્યાર બાદ તે શ્રમણોપાસકો શ્રમણ મગ્ગંત મહાવીરની પાસેથી ધર્મને સાંભળી, અવ-
ધારી, હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થયા, અને ઉમા થઈ શ્રમણ મગ્ગંત મહાવીરને વાંદી, નમી, ય્યાં શંખ શ્રમણોપાસક છે ત્યાં આવ્યા; આવીને શંખ શ્રમ-
ણોપાસકને તેઓ એમ કહ્યું કે-‘હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ગઈ કાલે અમને એમ કહ્યું હતું કે, ‘હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે પુષ્કળ અશનાદિ આહારને
તૈયાર કરાવો, યાવત્-આપણે વિહરીશું, સ્યાર બાદ તમે પોષધશાલામાં યાવત્ વિહર્યા, તો હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમારી ઠીક હીલના (હાંસી)
કરી.’ પછી ‘હે આર્યો !’ એમ કહી શ્રમણ મગ્ગંત મહાવીરે તે શ્રમણોપાસકોને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે આર્યો !’ તમે શંખ શ્રમણોપાસકની હીલના,
નિંદા, ચિંસના, ગર્હા અને અવમાનના ન કરો, કારણ કે તે શંખ શ્રમણોપાસક ધર્મને વિષે પ્રીતિવાલો અને દૃઢતાવાલો છે, તથા તેણે
[પ્રમાદ અને નિદ્રાના ત્યાગથી] સુદૃષ્ટિ-જ્ઞાનીનું જાગરણ કરેલ છે.

૧૧. [પ્ર૦] ‘મગ્ગવન્’ ! એ પ્રમાણે કહી મગ્ગવન્ ગૌતમ શ્રમણ મગ્ગંત મહાવીરને વાંદે છે, નમે છે, વાંદી અને નમી તેણે આ પ્રમાણે
કહ્યું-‘હે મગ્ગવન્ ! જાગરિકા કેટલા પ્રકારની કહી છે ? [ઉઃ] હે ગૌતમ ! જાગરિકા ત્રણ પ્રકારની કહી છે, તે આ પ્રમાણે-૧ બુદ્ધજાગ-
રિકા, ૨ અબુદ્ધજાગરિકા અને ૩ સુદર્શનજાગરિકા. [પ્ર૦] હે મગ્ગવન્ ! તમે એ પ્રમાણે શા હેતુથી કહ્યો છો કે ‘જાગરિકા ત્રણ પ્રકારની
છે, તે આ પ્રમાણે-બુદ્ધજાગરિકા, અબુદ્ધજાગરિકા અને સુદર્શનજાગરિકા’ ? [ઉઃ] હે ગૌતમ ! જે ઉત્પન્ન થયેલા જ્ઞાન અને દર્શનના ધારણ
કરનારા આ અરિહંત મગ્ગંતો છે-હત્યાદિ ઈસ્કંદકના અધિકારમાં કહ્યા પ્રમાણે સર્વજ્ઞ અને સર્વદર્શી છે-એ બુદ્ધો [કેવલજ્ઞાનવડે] બુદ્ધજા-
ગરિકા જાગે છે. જે આ મગ્ગંત અનગારો ઈર્યાસમિતિયુક્ત, માષાસમિતિયુક્ત અને યાવત્-ગુપ્ત વ્રજ્જચારી છે, તેઓ [કેવલજ્ઞાની નહિ હોવા-
થી] અબુદ્ધ છે અને તેઓ અબુદ્ધજાગરિકા જાગે છે. તથા જે આ શ્રમણોપાસકો ઝીવાઝીવને જાણનારા છે, યાવત્ એઓ [સમ્યગ્દર્શની
હોવાથી] સુદર્શનજાગરિકા જાગે છે. માટે તે હેતુથી હે ગૌતમ ! એ પ્રમાણે કહ્યું છે કે જાગરિકા ત્રણ પ્રકારની છે, યાવત્ સુદર્શનજાગરિકા છે.

૧૨. [પ્ર૦] સ્યાર બાદ તે શંખ શ્રમણોપાસકે શ્રમણ મગ્ગંત મહાવીરને વાંદી, નમી આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે મગ્ગવન્ ! ‘ક્રોધને વશ
હોવાથી પીડિત થયેલો ઝીવ શું વાંધે, શું કરે, શેનો ચય કરે અને શેનો ઉપચય કરે ? [ઉઃ] હે શંખ ! ક્રોધને વશ થવાથી પીડિત
થયેલો ઝીવ આયુષ સિવાયની સાત કર્મપ્રકૃતિઓ શિથિલ બન્ધનથી વાંધેલી હોય તો કઠિન બન્ધનવાળી કરે-હત્યાદિ સર્વ પ્રથમ શત-
કમાં કહેલા સંવરરહિત અનગારની પેટે જાણવું, યાવત્ તે [સંવરરહિત સાધુ] સંસારમાં ભમે છે.

ઝીવા શ્રમણોપાસકો
પણ વાંધવા જાવ છે-

શંખની નિદ્રા ન
કરો.

જાગરિકાના
પ્રકાર.

ક્રોધથી વ્યાકુલ
થયેલો ઝીવ શું વાંધે?

१३. [प्र०] माणवसद्दे णं भंते ! जीवे एवं खेव, एवं मायावसद्देऽवि । एवं लोभवसद्देऽवि, जाव-भणुपरिभट्ट ।

१४. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवधो महावीरस्स अंतियं एयमट्टं सोष्वा निसम्म भीया तत्था तसिवा संसारभडद्धिगा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्टं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेति । तए णं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव-पडिगया ।

१५. [प्र०] 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं० [उ०] सेसं जहा इत्थिमइपुत्तस्स, जाव-अंतं काहेति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव-विहरइ ।

पढमो उद्देशो समत्तो ।

माने जीव शुं बांधे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मानने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं, अने एज प्रमाणे मायाने वश थवाथी पीडित थयेलो अने लोभने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव संबन्धे पण जाणवुं; यावत् ते संसारमां भमे छे.

१४. त्थार वाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीर पासेथी ए प्रमाणे वात सांभळी, अवधारी भय पाम्या, त्रास पाम्या, त्रसित थया अने संसारना भयथी उद्विग्न थया. तथा तेओ श्रमण भगवंत महावीरने वांटी, नमी ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां जइ शंख श्रमणोपासकने वांटी, नमी ए (अविनयरूप) अर्थने सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्थार वाद ते श्रमणोपासको यावत् पाछा गया. तेनो बाकी रहेलो वृत्तांत *आलभिकाना श्रमणोपासकोनी पेटे जाणवो.

शंख प्रव्रज्या श्रमण करवा समर्थ छे ?

१५. [प्र०] 'भगवन् ! एम कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांटी, नमी आ प्रमाणे कहुं-हे भगवन् ! ते शंख श्रमणोपासक आप देवानुप्रियनी पासे प्रव्रज्या लेवाने समर्थ छे ? [उ०] बाकी वधुं ! ऋषिभद्रपुत्रनी पेटे जाणवुं. यावत्-ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, एम कही विहरे छे.

द्वादशशते प्रथम उद्देशक समाप्त.

१४ * आलभिकाना श्रमणोपासक संबन्धे जुओ भग० खं० ३ दा० ११ उ० १२ पृ० २४८.

१५ † ऋषिभद्रपुत्रनो संबन्ध जुओ भग० खं० ३ दा० ११ उ० १२ पृ० २४८.

बीओ उद्देशो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समयणं कोसंबी नामं नगरी होत्या । वज्रभो । चंद्रोवतरणे चेहप । वज्रभो । तत्थ णं कोसंबीय नगरीय सहस्साणीयस्स रत्तो पोसे सयाणीयस्स रत्तो पुसे चेडगस्स रत्तो नसुप मिगावतीय देवीय असप जयंतीय समणो-वासियाय भस्सिज्जय उदायणे नामं राया होत्या । वज्रभो । तत्थ णं कोसंबीय नयरीय सहस्साणीयस्स रत्तो सुण्हा सयाणीयस्स रत्तो भज्जा वेडगस्स रत्तो धूया उदायणस्स रत्तो माया जयंतीय समणोवासियाय भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्या । व-ज्रभो, सुकुमाल० जाव-सुरुवा समणोवासिया जाव-विहरइ । तत्थ णं कोसंबीय नगरीय सहस्साणीयस्स रत्तो धूया सयाणी-यस्स रत्तो भगिणी उदायणस्स रत्तो पिउच्छा मिगावतीय देवीय नणंदा वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुबसिज्जायरी जयंती नामं समणोवासिया होत्या, सुकुमाल० जाव-सुरुवा अभिगय० जाव विहरइ ।

२. तेणं कालेणं तेणं समयणं सामी समोसडे । जाव-परिसा पज्जुवासइ । तप णं से उदायणे राया इमीसे कहाप लख्खे समाणे हट्ट-तुट्टे कौंडुंबिचपुरिसे सहावेइ, को० २-त्ता एधं वयासी-‘खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कोसंबि नगरिं लम्भितर-वाहिरियं० एधं जहा कूणिओ तहेव सबं जाव-पज्जुवासइ । तप णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाप लख्खे समाणी हट्ट-तुट्टा जेजेव मियावती देवी तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छिस्ता मियावतिं देवि एधं वयासी-एधं जहा नवमसप उस्-

द्वितीय उद्देशक.

१. ते काले, ते समये कौशांबी नामे नगरी हती. वर्णन. चन्द्रावतरण चैत्य हतुं. वर्णन. ते कौशांबी नगरीमां सहस्रानीक राजानो पौत्र, शतानीक राजानो पुत्र, चेटक राजानी पुत्रीनो पुत्र, मृगावती देवीनो पुत्र, अने जयंती श्रमणोपासिकानो भत्रीजो उदायन नामे राजा हतो. वर्णन. ते कौशांबी नगरीमां सहस्रानीक राजाना पुत्रीनो पत्नी, शतानीक राजानी पत्नी, चेटक राजानी पुत्री, उदायन राजानी माता अने जयंती श्रमणोपासिकानी भोजाइ मृगावती नामे देवी हती. सुकुमाल हायपगवाळी-इत्यादि वर्णन जाणवुं, यावत् सुरूपवाळी अने श्रम-णोपासिका हती. वळी ते कौशांबी नगरीमां जयंती नामे श्रमणोपासिका हती, जे सहस्रानीक राजानी पुत्री, शतानीक राजानी भगिनी, उदायन राजानी फोइ, मृगावती देवीनी नणंद अने श्रमण भगवंत महावीरना साधुओनी प्रथम शय्यातर (वसति आपनार) हती. ते सुकुमाल, यावत् सुरूपा अने जीवाजीवने जाणनारी यावद् विहरती हती.

२. ते काले, ते समये महावीर खामी समवसर्या, यावत् पर्थत् पर्युपासना करे छे. स्यार बाद ते उदायन राजा आ (श्रमण भग-वंत महावीर पधार्यानी) वात सांभळी हट्ट तुष्ट थयो, अने तेणे कौंडुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कथुं-‘हे देवानुप्रियो ! शीघ्रज कौशांबी नगरीने बहार अने अंदर साफ करावो’-इत्यादि बधुं *कूणिक राजानी पेटे कहेवुं, यावत्-ते पर्युपासना करे छे. स्यार बाद (श्रमण भगवंत महावीर पधार्यानी) आ वात सांभळी ते जयंती श्रमणोपासिका हट्ट अने तुष्ट थइ, अने ज्यां मृगावती देवी छे त्यां आवी तेणे मृगा-वती देवीने आ प्रमाणे कथुं-ए प्रमाणे नवम शतकर्मा ऋषभदत्तना प्रकरणमां कथा प्रमाणे जाणवुं, यावत् [श्रमण भगवंत महावीरनुं दर्शन आपणा कल्याण माटे] थशे. स्यार बाद जेम दिवानंदाए ऋषभदत्तना वचननो स्वीकार कर्यो तेम मृगावती देवीए ते जयंती श्रमणो-

कौशांबी नगरी.

उदायन राजा.

जयंती श्रमणो-
पासिका.

१ चंद्रोवतरणे छे । २ संवहर-सुड-सु । ३ जयंती छ-सु ।

३ * उदा० प० ६३-२. † मय० सं० ३ ख० ९ उ० ३३ पृ० १६२. ‡ मय० सं० ३ ख० ९ उ० ३३ पृ० १६३.

३३ म० सु०

भक्तो जाव-भविस्सइ । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव-पडिसुणेति । तए णं सा मियावती देवी कोडुंबियपुरिसे सहावेइ, को० २-सा एवं वयासी-‘खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! लहुकरण-जुत्तजोइय० जाव-धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्टवेइ’ जाव-उवट्टवेइति, जाव-पच्चप्पिणंति । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयवलिकम्मा जाव-सरीरा बट्टहिं खुज्जाहिं जाव-अंतेउराओ निग्गच्छति, अं० २-च्छिता जेजेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेजेव धम्मिए जाणप्पवरे तेजेव उवागच्छइ, ते० २-च्छिता० २ जाव-दुरूढा । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी नियगपरियाल० जहा उस्सभक्तो जाव-धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुइइ । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बट्टहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव-वंदइ नमंसइ, उदायणं रायं पुरओ कट्टु ठितिया खेव जाव पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रओ मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महत्तिमहा० जाव धम्मं परिकहेइ, जाव परिसा पडिगया, उदायणे पडिगए, मियावती देवी वि पडिगया ।

३. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोष्ठा निसम्म हट्ट-तुट्टा समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी-[प्र०] कहंभं अंते ! जीवा गरुयत्तं हहमागच्छन्ति ? [उ०] जयंती ! पाणाइवाएणं, जाव-मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु जीवा गरुयत्तं हहमागच्छन्ति । एवं जहा पढमसए जाव-वीरवयंति ।

४. [प्र०] भवसिद्धियत्तणं अंते ! जीवाणं किं समावओ परिणामओ ? [उ०] जयंती ! समावओ, नो परिणामओ ।

५. [प्र०] सत्तेवि णं अंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सन्ति ? [उ०] हंता ! जयंती ! सत्तेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सन्ति ।

६. [प्र०] जइ णं अंते ! सत्ते वि भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सन्ति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? [उ०] णो तिण्हे समट्टे । [प्र०] से केणं साएएणं अट्टेणं अंते ! एवं बुच्चइ-‘सत्ते वि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सन्ति, नो

पासिकाना वचननो स्वीकार कर्यो, स्यार पछी ते मृगावती देवीए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं-‘हे देवानुप्रियो ! वेगवाळुं, जोतरसहित यावत् धार्मिक श्रेष्ठ यान जोडीने जलदी हाजर करो,’ यावत्-ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् हाजर करे छे, अने तेनी आजा पाछी आपे छे. स्यार बाद ते मृगावती देवी ते जयंती श्रमणोपासिकानी साथे खान करी, बलिकर्म-पूजा करी, यावत्-शरीरने शणगारी घणी कुञ्ज दासीओ साथे यावत् अंतःपुरथी बहार नीकळे छे, नीकळी ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे, अने ज्यां धार्मिक श्रेष्ठ बाहन तैयार उभुं छे, त्यां आवी यावत् ते बाहन उपर चढी. स्यार बाद जयंती श्रमणोपासिकानी साथे धार्मिक श्रेष्ठ यान उपर चढेली ते मृगावती देवी पोताना परिवारयुक्त *ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेटे यावत्-ते धार्मिक श्रेष्ठ बाहनथी नीचे उतरे छे. पछी जयंती श्रमणोपासिकानी साथे ते मृगावती देवी घणी कुञ्ज दासीओना परिवार सहित दिवानंदानी पेटे यावद् बांदी, नमी उदायन राजाने आगळ करी त्यांज रही-नेज यावद् पर्युपासना करे छे. स्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे उदायन राजाने, मृगावती देवीने, जयंती श्रमणोपासिकाने अने ते अख्यन्त मोटी परिषदने यावद् धर्मोपदेश कर्यो, यावत् परिषद् पाछी गइ, उदायन राजा अने मृगावती देवी पण पाछा गया.

३. स्यार बाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीरनीं पासिथी धर्मेने सांभळी, अवधारी हइ अने तुष्ट थइ, श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे बोली के-[प्र०] हे भगवन् ! जीवो शायी गुरुत्व-भारेपणुं पामे ? [उ०] हे जयंती ! जीवो प्राणातिपातथी-जीवहिंसाथी यावद् मिथ्यादर्शनशल्यथी, ए प्रमाणे खरेखर जीवो भारेकर्मापणुं प्राप्त करे छे. ए प्रमाणे जेम प्रथम शतकर्मा कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत् तेओ मोक्षे जाय छे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोनुं भवसिद्धिकपणुं स्वभावथी छे के परिणामथी छे ? [उ०] हे जयंती ! भवसिद्धिक जीवो स्वभावथी छे, पण परिणामथी नथी.

५. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे ? [उ०] हे जयंती ! हा, सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जो सर्वे भवसिद्धिको सिद्ध थशे तो आ लोक भवसिद्धिक जीवो रहित थशे ? [उ०] ते अर्थ यथार्थ नथी, अर्थात् बधा भवसिद्धिको सिद्ध थाय तोपण भवसिद्धिक विनानो लोक नाहिं थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे तमे शा हेतुथी कहा छे

२ * भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६४.

† भग० खं० ३ पृ० १६४.

३ † भग० खं० १ श० १ उ० ९ पृ० १९९.

४ * स्थाभाविक भावने स्वभाव कहे छे, जेम पुद्गलने विषे मूर्तत्व स्थाभाविक भाव छे. रूपान्तरने परिणाम कहे छे, जेम बालरव, यौवन, वृद्धत्व वगैरे परिणामथी थयेला भावो छे.

जयंती मृगावती
सहित भगवंतने
वंदन करवा जाय छे.

जयंतीना श्रमो.

जीवो शायी भारे-
पणुं पामे ?

अभ्यपणुं स्थाभाविक
छे के परिणाम-
कथ्ये ?

सर्वे भवसिद्धिको
सिद्ध थशे ?
तो छुं लोक भव-
रहित थशे ?

बोध नं भवसिद्धिबिहरिण्य लोप भविस्सह ? [उ०] जयंती ! से जहानामप सन्नागाससेदी सिया, अणादीया अणवदग्गा परिस्ता करिबुडा, सा नं परमाणुपोगलमेसेहिं बंडेहिं समप २ अवहीरमाणी २ अणंताहिं ओसपिणी—अवसपिणीहिं अवहीरंति, नो बोध नं भवहिया सिया, से तेणट्टेणं जयंती ! एवं बुब्बह—‘सखे वि नं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो बोध नं भवसिद्धिबिहरिण्य लोप भविस्सह ।

७. [प्र०] सुत्तसं मंते ! साह, जागरियसं साह ? [उ०] जयंती ! अत्येगइयाणं जीवाणं सुत्तसं साह, अत्येगतियाणं जीवाणं जागरियसं साह । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुब्बह ‘अत्येगइयाणं जाव—साह’ ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिह्ता अहम्मफ्फाई अहम्मपलोह अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं बोध विंत्ति कप्पेमाणा विहरंति, एपसि नं जीवाणं सुत्तसं साह । एप नं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्कणयाए खोयणयाए जाव—परियावणयाए वट्ठंति, एप नं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति, एपसि जीवाणं सुत्तसं साह । जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव—धम्मेणं बोध विंत्ति कप्पेमाणा विहरंति एपसि नं जीवाणं जागरियसं साह । एप नं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव—सत्ताणं अदुक्कणयाए, जाव—अपरियावणयाए वट्ठंति, ते नं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एप नं जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरत्तारो भवंति, एपसि नं जीवाणं जागरियसं साह; से तेणट्टेणं जयंती ! एवं बुब्बह—‘अत्येगइयाणं जीवाणं सुत्तसं साह, अत्येगइयाणं जीवाणं जागरियसं साह’ ।

८. [प्र०] बलियसं मंते ! साह, दुब्बलियसं साह ? [उ०] जयंती ! अत्येगइयाणं जीवाणं बलियसं साह, अत्येगइयाणं जीवाणं दुब्बलियसं साह । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुब्बह—जाव साह ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव—विहरंति, एपसि नं जीवाणं दुब्बलियसं साह । एप नं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियत्तस्स वसत्तया भाणियत्ता । बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियत्तं, जाव संजोएत्तारो भवंति, एपसि नं जीवाणं बलियसं साह, से तेणट्टेणं जयंती ! एवं बुब्बह—तं बोध जाव—साह ।

के ‘बधाय पण भवसिद्धिको सिद्ध थशे, अने लोक भवसिद्धिक जीवोयी रहित नहीं थाय’ ? [उ०] हे जयंती ! जेमके सर्वाकाशनी श्रेणी होय, ते अनादि, अनंत, बने बाजुए परिमित अने बीजी श्रेणीओथी परिवृत होय, तेमांथी समये समये एक परमाणु पुद्गलमात्रखंडो काढतां काढतां अनन्त उत्सर्पिणी अने अनन्त अवसर्पिणी सुधी काडीए तोपण ते श्रेणि खाली थाय नहीं; ते प्रमाणे हे जयंती ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, बधाय भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे, तो पण लोक भवसिद्धिक जीवो विनानो थशे नहि.

७. [प्र०] हे भगवन् ! सुतेलापणुं सारुं के जागरितत्व—जागोलापणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं, अने केटलाक जीवोनुं जागोलापणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी तमे एम कहो छो के ‘केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागोलापणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक, अधर्मने अनुसरनारा, जेने अधर्म प्रिय छे एवा, अधर्म कहेनारा, अधर्मने ज जोनारा, अधर्ममां आसक्त, अधर्माचरण करनारा अने अधर्मथीज आजीविकाने करता विहरे छे, ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. जो ए जीवो सूतेला होय तो बहु प्राणोना, भूतोना, जीवोना तथा सत्त्वोना दुःख माटे, शोक माटे, यावत्—परिताप माटे थता नथी, वळी जो ए जीवो सूतेला होय तो पोताने, बीजाने के बन्नेने घणी अधार्मिक संयोजना वडे जोडनारा होता नथी, माटे ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. तथा हे जयंती ! जे आ जीवो धार्मिक अने धर्मानुसारी छे, यावत्—धर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं जागोलापणुं सारुं छे; जो ए जीवो जागता होय तो ते घणा प्राणीओना यावत्—सत्त्वोना अदुःख (सुख) माटे यावत्—अपरिताप (शान्ति) माटे बर्ते छे, वळी ते जीवो जागता होय तो पोताने, परने अने बन्नेने घणी धार्मिक संयोजना (क्रिया) साथे जोडनारा थाय छे, तथा ए जीवो जागता होय तो धर्मजागरिकावडे पोताने जागृत राखे छे, माटे ए जीवोनुं जागोलापणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती ! एम कहेवाय छे के, ‘केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागोलापणुं सारुं छे’.

८. [प्र०] हे भगवन् ! सबलपणुं सारुं के दुर्बलपणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं सबलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, ‘केटलाक जीवोनुं सबलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं’ ? [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक छे, अने यावद् अधर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं, जो ए जीवो दुबला होय तो कोइ जीवना दुःख माटे थता नथी—इत्यादि ‘सूतेला’नी पेठे दुर्बलपणानी वक्तव्यता कहेवी, अने ‘जागता’नी पेठे सबलपणानी वक्तव्यता कहेवी; यावत्—धार्मिक क्रिया—संयोजनावडे जोडनारा थाय छे, माटे ए जीवोनुं बलवानपणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती ! एम कहेवाय छे के—इत्यादि केटलाक जीवोनुं बलवानपणुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं छे.

सूतापणुं सारुं के जागोलापणुं सारुं ?

सबलपणुं सारुं के दुर्बलपणुं सारुं ?

९. [प्र०] दक्षसं मंते ! साह, आलसियसं साह ? [उ०] जयंती ! अत्येगसिवाणं जीवाणं दक्षसं साह, अत्येगसि-
वाणं जीवाणं आलसियसं साह । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुद्ध-तं खेव जाव साह ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अह-
म्मिया जाव-विहरंति, एपसि णं जीवाणं आलसियसं साह । एप णं जीवा आलसा समाणा नो बहूणं, जहा सुत्ता मालसा
भाणियन्ना, जहा जागरा तहा दक्षा भाणियन्ना, जाव संजोएसारे भवंति । एप णं जीवा दक्षा समाणा बहूहि भावरियवे-
याववेहिं, जाव-उवज्जाय०, थेर०, तवस्सि०, गिलाण०, सेह०, कुल०, गण०, संघ०, साहम्मियवेयाववेहिं अत्ताणं संजो-
एसारे भवंति, एपसि णं जीवाणं दक्षसं साह, से तेणट्टेणं तं खेव जाव साह ।

१०. [प्र०] सोहंदिद्यवसट्टे णं मंते ! जीवे किं बंधं ? [उ०] एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव-अणुपरियट्टर । एवं
चर्किंदियवसट्टे वि, एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि, जाव-अणुपरियट्टर ।

११. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमहुं सोळा निसम्म हट्ट-तुट्टा सेरं
जहा देवाणंदा तहेव पत्तइया, जाव सच्चुक्खप्पहीणा । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

बीओ उद्देशो समत्तो ।

दक्षत्व सारं के आळ-
सुपणुं सारं ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! दक्षपणुं-उद्यमीपणुं सारं के आळसुपणुं सारं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं दक्षपणुं सारं अने
केटलाक जीवोनुं आळसुपणुं सारं. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छे-इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं. [उ०] हे जयंती ! जे
आ जीवो अधार्मिक [अधर्मानुसारी] यावद् विहरे छे, ए जीवोनुं आळसुपणुं सारं छे. ए जीवो जो आळसु होय तो घणा जीवोना दुःख
माटे थता नथी-इत्यादि बधुं 'सूतेला'नी पेटे कहेवुं, तथा 'जागेला'नी पेटे दक्ष-उद्यमी जाणवा, यावत्-[धार्मिक प्रवृत्तिओ साथे] जोड-
नारा थाय छे. वळी ए जीवो दक्ष होय तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष (नव दीक्षित), कुल, गण, संघ, अने साध-
र्मिकना घणा वैयावच्च-सेवा-साथे आत्माने जोडनारा थाय छे. तेथी ए जीवोनुं दक्षपणुं सारं छे. माटे हे जयंती ! ते हेतुथी एम कहुं छुं-
इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं, यावत् केटलाएक जीवोनुं दक्षपणुं सारं छे.

श्रोत्रेन्द्रियवशात्
छुं करे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव छुं बांधे ? [उ०] हे जयंती ! जेम क्रोधने वश थयेला जीव
संबन्धे कहुं तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् ते संसारमां भमे छे. ए प्रमाणे चक्षुइन्द्रियने वश थयेला अने यावत् स्पर्शेन्द्रियवश थयेला जीव
संबन्धे पण जाणवुं, यावत् ते संसारमां भमे छे.

असंतीय प्रव्रज्या
ग्रहण करी.

११. स्यार बाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीर पासेथी ए वात सांभळी, हृदयमां अवधारी, हर्षवाळी अने संतुष्ट
थई-इत्यादि (बाकी) बधुं *देवानंदानी पेटे जाणवुं. यावत् तेणे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने सर्व दुःखथी मुक्त थई. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे
छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

ब्राह्मणते द्वितीय उद्देशक समाप्त.

तईओ उद्देशो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-कइ णं मंते ! पुढवीओ पण्णसाओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णसाओ, तंजहा-पढमा, दोष्ठा, जाव-सत्तमा ।

२. [प्र०] पढमा णं मंते ! पुढवी किनामा, किगोत्ता पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! घम्मा नामेणं, रयणप्पमा गोत्तेणं, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरयउद्देशओ सो चेव निरयसेसो भाणियद्धो, जाव अप्पाबहुगं ति । सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

तईओ उद्देशो समत्तो ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावद्-आ प्रमाणे पृथ्वी-हे भगवन् ! केटली पृथिवीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! सात पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-प्रथमा, द्वितीया यावत्-सप्तमी.

२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम पृथिवी कया नामवाळी अने कया गोत्रवाळी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रथम पृथिवीनुं नाम 'घम्मा' छे अने गोत्र रत्तप्रभा छे-ए प्रमाणे *जीवाभिगम' सूत्रमां प्रथम नैरयिक उद्देशक कसो छे ते बधो यावद्-अल्पबहुत्व सूधी अहिं कहेवो. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

पृथिवीओमा
प्रकार.

प्रथमपृथिवीमा
नाम अने गोत्र.

द्वादशशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहअंति, एगयओ साहण्णिस्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! दुप्पएसिप खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ।

२. [प्र०] तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहअंति, साहण्णिस्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! तिपएसिप खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिप खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति ।

३. [प्र०] चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहअंति ? जाव-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अउपएसिप खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिप खंधे भवइ, अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिप खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ।

४. [प्र०] पंच भंते ! परमाणुपोग्गला-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचपएसिप खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहाऽवि तिहाऽवि चउहाऽवि पंचहाऽवि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अउपएसिप खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप-

चतुर्थ उद्देशक.

बे परमाणुओ
एकरूपे एकठा
थईने शुं थाय ?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावद्-आ प्रमाणे पूछ्युं-हे भगवन् ! बे परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय, अने एकरूपे एकठा थईने पछी तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो द्विप्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो तेनो मेद थाय तो तेना बे विभाग थाय-एक तरफ एक परमाणुपुद्गल रहे, अने बीजी तरफ एक (बीजो) परमाणुपुद्गल रहे. [.] [.]

त्रण परमाणुओ.

२. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ? अने एकठा थईने तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो मेद-वियोग थाय तो तेना बे के त्रण विभाग थाय, जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, अने बीजी तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [.] [..]. तथा जो तेना त्रण विभाग थाय तो त्रण परमाणुपुद्गल रहे. [.] [.] [.]

चार परमाणुओ.

३. [प्र०] हे भगवन् ! चार परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो ते स्कंधनो मेद थाय तो तेना बे, त्रण अने चार भाग थाय. जो बे भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध रहे. [.] [...]. अथवा बे द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [..] [..]. जो त्रण भाग थाय तो एक तरफ बे छूटा परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [.] [.] [..]. जो चार भाग थाय तो जूदा चार परमाणुपुद्गल रहे. [.] [.] [.] [.]

पांच परमाणुओ.

४. [प्र०] हे भगवन् ! पांच परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय ? [अने पछी शुं थाय ?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. जो ते मेदाय तो तेना बे, त्रण, चार अने पांच विभाग थाय. जो तेना बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणु

एग्यभो तिभि दुपयसिया खंधा भवति; पंचहा कज्जमाणे एग्यभो चत्तारि परमाणुपोग्गला, एग्यभो तिपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो तिभि परमाणुपोग्गला, एग्यभो दो दुपयसिया खंधा भवति; छहा कज्जमाणे एग्यभो पंच परमाणुपोग्गला, एग्यभो दुपयसिए खंधे भवति; सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवति ।

७. [प्र०] अट्ट भंते ! परमाणुपोग्गला—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अट्टपयसिए खंधे भवति; आव—दुहा कज्जमाणे एग्यभो परमाणुपोग्गले, एग्यभो सत्तपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो दुपयसिए खंधे, एग्यभो छप्पयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो तिपयसिए खंधे एग्यभो पंचपयसिए खंधे भवति; अहवा दो चउपयसिया खंधा भवति; तिहा कज्जमाणे एग्यभो दो परमाणुपोग्गला भवति, एग्यभो छप्पयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो परमाणुपोग्गले, एग्यभो दुपयसिए खंधे, एग्यभो पंचपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो परमाणुपोग्गले, एग्यभो तिपयसिए खंधे, एग्यभो चउपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो दो दुपयसिया खंधा, एग्यभो चउपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो दुपयसिए खंधे, एग्यभो दो तिपयसिया खंधा भवति, चउहा कज्जमाणे एग्यभो तिभि परमाणुपोग्गला, एग्यभो पंचपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो दोभि परमाणुपोग्गला, एग्यभो दुपयसिए खंधे, एग्यभो चउपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो दो परमाणुपोग्गला, एग्यभो दो तिपयसिया खंधा भवति; अहवा एग्यभो परमाणुपोग्गले, एग्यभो दो दुपयसिया खंधा, एग्यभो तिपयसिए खंधे भवति; अहवा चत्तारि दुपयसिया खंधा भवति; पंचहा कज्जमाणे एग्यभो चत्तारि परमाणुपोग्गला, एग्यभो चउपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो तिभि परमाणुपोग्गला, एग्यभो दुपयसिए खंधे, एग्यभो तिपयसिए खंधे भवति; अहवा एग्यभो दो परमाणुपोग्गला, एग्यभो तिभि दुपयसिया खंधा भवति; छहा कज्जमाणे एग्यभो पंच परमाणुपोग्गला, एग्यभो

एक तरफ बे परमाणुपुद्गले, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [••] [•••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•] [••] [•••] [•••]. जो तेना पांच विभाग थाय तो जुदा चार परमाणुपुद्गले, अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•] [•] [•] [••] [••]. जो तेना छ भाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [••]. तथा जो तेना सात भाग थाय तो जुदा जुदा सात परमाणुपुद्गले थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•].

आठ परमाणुभो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आठ परमाणुपुद्गले संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आठ प्रदेशनो एक स्कंध थाय. [जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात के आठ विभाग थाय.] यावत् तेना बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ सात प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [••••••]. अथवा एक तरफ बे प्रदेशनो एक स्कंध अने एक तरफ छ प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [••] [••••••]. अथवा एक तरफ त्रण प्रदेशनो एक स्कंध अने एक तरफ पांच प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•••] [••••••]. अथवा चार चार प्रदेशना बे स्कंध थाय छे. [••••] [••••••]. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ जुदा बे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ छ प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [••] [••••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [••] [••••••] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•••] [••••]. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. [••] [••] [••••]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [••] [•••] [••••]. जो तेना चार विभाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ पांच प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [••••]. अथवा एक तरफ जुदा बे परमाणुपुद्गले, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक चार प्रदेशनो स्कंध थाय छे. [•] [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गले अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [•] [•] [•••] [••••] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक एक स्कंध थाय छे. [•] [••] [••] [••••]. अथवा चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [••] [••] [••] [••]. तेना पांच विभाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणु पुद्गले, अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [•] [••••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुभो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गले, एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [•] [•] [••] [••] [••]. जो तेना छ विभाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [••]. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गले अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [•] [•] [•] [•] [••] [••] जो तेना सात विभाग थाय तो एक तरफ जुदा

तिपपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो चत्वारि परमाणुपोग्गला, एगयभो दो दुपपसिया कंधा भवति, सप्तहा कज्जमाणे एग-
यभो छ परमाणुपोग्गला, एगयभो दुपपसिय कंधे भवति, अहवा कज्जमाणे अद्दु परमाणुपोग्गला भवति ।

८. [प्र०] नव मंते ! परमाणुपोग्गला—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! आव—नवविहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणे एगयभो परमा-
णुपोग्गले, एगयभो अद्दुपपसिय कंधे भवति; एवं एकेकं संचारंतेहिं जाव—अहवा एगयभो चउप्यपसिय कंधे, एगयभो पंचपप-
सिय कंधे भवति, तिहा कज्जमाणे एगयभो दो परमाणुपोग्गला, एगयभो सप्तपपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो परमाणुपो-
ग्गले, एगयभो दुपपसिय कंधे, एगयभो छप्यपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो परमाणुपोग्गले, एगयभो तिपपसिय कंधे,
एगयभो पंचपपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो परमाणुपोग्गले, एगयभो दो चउप्यपसिया कंधा भवति; अहवा एगयभो दुपप-
सिय कंधे, एगयभो तिपपसिय कंधे, एगयभो चउप्यपसिय कंधे भवति, अहवा तिभि तिपपसिया कंधा भवति, चउहा कज्जमाणे
एगयभो तिभि परमाणुपोग्गला, एगयभो छप्यपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो दो परमाणुपोग्गला, एगयभो दुपपसिय कंधे,
एगयभो पंचपपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो दो परमाणुपोग्गला, एगयभो तिपपसिय कंधे, एगयभो चउप्यपसिय कंधे
भवति; अहवा एगयभो परमाणुपोग्गले, एगयभो दो दुपपसिया कंधा, एगयभो चउप्यपसिय कंधे भवति; अहवा एगयभो
परमाणुपोग्गले, एगयभो दुपपसिय कंधे, एगयभो दो तिपपसिया कंधा भवति; अहवा एगयभो तिभि दुप्यपसिया कंधा,
एगयभो तिपपसिय कंधे भवति; पंचहा कज्जमाणे एगयभो चत्वारि परमाणुपोग्गला, एगयभो पंचपपसिय कंधे भवति, अहवा
एगयभो तिभि परमाणुपोग्गला, एगयभो दुपपसिय कंधे, एगयभो चउप्यपसिय कंधे भवति, अहवा एगयभो तिभि परमाणुपो-
ग्गला, एगयभो दो तिपपसिया कंधा भवति; अहवा एगयभो दो परमाणुपोग्गला, एगयभो दो दुपपसिया कंधा, एगयभो

छ परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	•	•	•	•	••
---	---	---	---	---	---	----

. जो तेना आठ विभाग
थाय तो जुदा जुदा आठ परमाणुपुद्गले थाय छे.

•	•	•	•	•	•	•	•
---	---	---	---	---	---	---	---

.

८. [प्र०] हे भगवन् ! नव परमाणुपुद्गले संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नवप्रदेशानो एक स्कंध थाय छे; अने जो तेना विभाग
करवामां आवे तो [बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ के] यावत् नव विभाग थाय छे. तेना जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक पर-
माणुपुद्गल अने एक तरफ एक अष्टप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•••••
---	-------

. ए प्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्—अथवा एक
तरफ एक चार प्रदेशानो स्कंध अने एक तरफ पांच प्रदेशानो स्कंध थाय छे.

••	•••
----	-----

. जो तेना त्रण भाग करवामां आवे तो एक
तरफ बे परमाणुपुद्गले, अने एक तरफ एक सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	•••••
---	---	-------

. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल,
एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	••	•••••
---	----	-------

. अथवा एक तरफ एक परमाणु,
एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	••	•••
---	----	-----

. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ
बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो थाय छे.

•	••	••
---	----	----

. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक
तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे.

••	••••	••
----	------	----

. अथवा त्रण त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे.

••	••	••
----	----	----

. तेना चार भाग
थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ छप्रदेशानो एक स्कंध थाय छे.

•	•	•	•••••
---	---	---	-------

. अथवा एक तरफ बे
परमाणुपुद्गले, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	••	•••••
---	---	----	-------

. अथवा एक तरफ बे परमाणु-
पुद्गले, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चारप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	••	••
---	---	----	----

. अथवा एक तरफ एक
परमाणु पुद्गल, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो, अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	••	••	••
---	----	----	----

. अथवा एक
तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे.

•	••	••••	••••
---	----	------	------

.
अथवा एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

••	••	••	••••
----	----	----	------

. पांच भाग थाय
तो एक तरफ जुदा चार परमाणुओ अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	•	•	•••••
---	---	---	---	-------

. अथवा एक तरफ
त्रण परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	•	•	••	••
---	---	---	---	----	----

. अथवा
एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गले अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे.

•	•	•	••	••
---	---	---	----	----

. अथवा एक तरफ बे
परमाणुपुद्गले, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे.

•	•	••	••	••••
---	---	----	----	------

. अथवा एक
तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे.

•	••	••	••	••
---	----	----	----	----

. जो तेना छ भाग करवामां
आवे तो एक तरफ पांच परमाणुपुद्गले अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे.

•	•	•	•	•	••
---	---	---	---	---	----

 अ-
थवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गले, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे.

•	•	•	•
---	---	---	---

नव परमाणुओ-

तिपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपपसिया खंधा भवति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ तिपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिप्पि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पि दुपपसिया खंधा भवति; सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपपसिया खंधा भवति; अट्टहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपपसिए खंधे भवति; नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवति ।

९. [प्र०] दस मंते ! परमाणुपोग्गला-[उ०] जाव-दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ अट्ट पपसिए खंधे भवति; एवं एकेकं संचारेयहं ति, जाव-अहवा दो पंच पपसिया खंधा भवति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्टपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ सत्तपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपपसिए खंधे, एगयओ छपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपपसिए खंधे, एगयओ पंचपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ दो चउपपसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ दो तिपपसिया खंधा, एगयओ चउपपसिए खंधे भवति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिप्पि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ छपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपपसिए खंधे, एगयओ पंचपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउपपसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपपसिए खंधे, एगयओ तिपपसिए खंधे, एगयओ चउपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पि तिपपसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ तिप्पि दुपपसिया खंधा, एगयओ चउपपसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिप्पि तिपपसिया खंधा भवति । अहवा एगयओ दो दुपपसिया खंधा, एगयओ दो तिपपसिया खंधा भवति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छपपसिए खंधे

॥०॥ ॥००॥. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥
 ॥०॥. जो तेना सात भाग करवामां आवे तो एक तरफ छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥
 ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥. अथवा एक तरफ पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो होय छे. ॥०॥
 ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥. आठ भाग करवामां आवे तो एक तरफ सात परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक एक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥. जो तेना नव भाग करवामां आवे तो जुदा नव परमाणुओ होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥.

दश परमाणु.

९. [प्र०] हे भगवन् ! दश परमाणुओ संबन्धे प्रश्न. [उ०] (तेनो एक दशप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अने जो तेना विभाग करवामां आवे तो बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव अने दश विभाग थाय छे.) यावत् बे भाग करवामां आवे तो एक तरफ एक परमाणु अने एक तरफ नव प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. ॥०॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ अष्टप्रदेशिक एक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०००॥. ए प्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्-अथवा बे पंचप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. ॥०॥ ॥००॥. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एकतरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक आठ प्रदेशनो स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ सप्तप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक छ प्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥००॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥००॥ ॥००॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो होय छे. ॥००॥ ॥००॥ ॥००॥. अथवा एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥००॥ ॥००॥ ॥००॥. तेना चार विभाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ सप्तप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥००००॥. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥००॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥००॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो होय छे. ॥०॥ ॥०॥ ॥००॥ ॥०००॥. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ

अक्षरं क्रमेण पंचगसंज्ञो वि भाणियन्नो, जाव-नवगसंज्ञो । इत्था कज्जमाणे एगयमो नव परमाणुपोग्गला, एगयमो संखे-
ज्जपपसिए कंधे भवति; अहवा एगयमो अट्ट परमाणुपोग्गला, एगयमो दुपपसिए, एगयमो संखेज्जपपसिए कंधे भवति ।
अक्षरं क्रमेण एकेणो पूरेयन्नो, जाव-अहवा एगयमो इत्थपपसिए कंधे, एगयमो नव संखेज्जपपसिया कंधा भवति; अहवा इत्थ
संखेज्जपपसिया कंधा भवति । संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति ।

११. [प्र०] असंखेज्जा णं मंते ! परमाणुपोग्गला एगयमो साहजंति, एगयमो साहजित्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा !
असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; से मिज्जमाणे दुहाऽवि, जाव-इत्थाऽवि, संखेज्जहाऽवि, असंखेज्जहाऽवि कज्जह । दुहा कज्ज-
माणे एगयमो परमाणुपोग्गले, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; जाव-अहवा एगयमो इत्थपपसिए कंधे भवति; एग-
यमो असंखिज्जपपसिए कंधे भवति; अहवा एगयमो संखेज्जपपसिए कंधे, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; अहवा दो
असंखेज्जपपसिया कंधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयमो दो परमाणुपोग्गला, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति;
अहवा एगयमो परमाणुपोग्गले, एगयमो दुपपसिए, एगयमो असंखिज्जपपसिए कंधे भवति; जाव-अहवा एगयमो परमाणु-
पोग्गले, एगयमो इत्थपपसिए कंधे, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; अहवा एगयमो परमाणुपोग्गले, एगयमो संखे-
ज्जपपसिए कंधे, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; अहवा एगयमो परमाणुपोग्गले, एगयमो दो असंखेज्जपपसिया कंधा
भवति; अहवा एगयमो दुपपसिए कंधे, एगयमो दो असंखेज्जपपसिया कंधा भवति; एवं जाव-अहवा एगयमो संखेज्जपप-
सिए कंधे, एगयमो दो असंखिज्जपपसिया कंधा भवति; अहवा तिथि असंखेज्जपपसिया कंधा भवति । अउहा कज्जमाणे एग-
यमो तिथि परमाणुपोग्गला, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; एवं अउकगसंज्ञो, जाव-इत्थगसंज्ञो, एप अहेव
संखेज्जपपसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियन्नं, जाव-अहवा इत्थ असंखेज्जपपसिया कंधा भवति । संखेज्जहा
कज्जमाणे एगयमो संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; अहवा एगयमो संखेज्जा दुपपसिया
कंधा, एगयमो असंखेज्जपपसिए कंधे भवति; एवं जाव-अहवा एगयमो संखेज्जा इत्थपपसिया कंधा, एगयमो असंखेज्जपप-

• • • • • • • • • • सं० । ए क्रमवडे एक एकनी संख्या वधारवी, यावद्-अथवा एक
दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ नव संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. ::::: सं० । सं० । सं० । सं० । सं० ।
सं० । सं० । सं० । सं० । अथवा दश संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. सं० । सं० । सं० । सं० । सं० । सं० ।
सं० । सं० । सं० । सं० । जो तेना संख्यात भागो करवामा आवे तो संख्याता परमाणुपुद्गलो थाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता परमाणुपुद्गलो एकठां मळे, अने पछी तेनुं शुं थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेनो असंख्यात-
प्रदेशिक स्कन्ध थाय. जो तेना विभाग करीए तो बे, यावत् दश, संख्याता के असंख्याता विभाग थाय. जो बे विभाग करवामा आवे तो
एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कंध होय छे. • असं० । यावद्-अथवा एक तरफ दशप्रदेशिक
स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ::::: असं० । अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ
असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. सं० असं० । अथवा बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. असं० असं० । जो तेना त्रण विभाग
करवामा आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. • • असं० । अथवा एक तरफ
एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. • • असं० । यावद्-अथवा
एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. • ::::: असं० । अथवा
एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. • सं० असं० । अथवा
एक तरफ एक परमाणु, अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. • असं० असं० । अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक
स्कन्ध अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. -- असं० असं० । ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक
स्कन्ध अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. सं० असं० असं० । अथवा त्रण असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्धो होय छे.
असं० असं० असं० । जो तेना चार भाग करवामा आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्ध
होय छे. • • • असं० । ए प्रमाणे चतुष्कसंयोग, यावद् दशकसंयोग जाणवो. अने ए सर्व संख्यातप्रदेशिकनी पेठे जाणवुं,
परन्तु एक 'असंख्यात' शब्द अधिक कहेवो. यावद्-अथवा दश असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो संख्याता विभाग करवामा आवे
तो एक तरफ संख्याता परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता द्विप्रदेशिक स्कन्धो
अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ संख्याता दशप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक

असंख्याता परमा-
णुओ.

સિંધુ કંધે મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ સંલેજ્ઞા સંલેજ્ઞપ્સિયા કંધા, ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા સંલેજ્ઞા અસંલેજ્ઞપ્સિયા કંધા મ્વતિ । અસંલેજ્ઞા ક્ષમાણે અસંલેજ્ઞા પરમાણુપોગ્ગલા મ્વતિ ।

૧૨. [પ્ર૦] અણંતા ણં મંતે ! પરમાણુપોગ્ગલા જાવ-કિં મ્વતિ ? [૩૦] ગોયમા ! અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; સે મિજ્ઞમાણે દુહાઽવિ તિહાઽવિ જાવ-દ્વહાઽવિ સંલેજ્ઞા-અસંલેજ્ઞા-અણંતહાઽવિ ક્ષમાણે । દુહા ક્ષમાણે ઇગ્યમ્ પરમાણુપોગ્ગલા ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; જાવ-અહવા દો અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ । તિહા ક્ષમાણે ઇગ્યમ્ દો પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગ્યમ્ દુપ્સિય, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; જાવ-અહવા ઇગ્યમ્ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞપ્સિય કંધે, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગ્યમ્ દો અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ દુપ્સિય કંધે, ઇગ્યમ્ દો અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ, ઇવં જાવ-અહવા ઇગ્યમ્ દ્વપ્સિય કંધે, ઇગ્યમ્ દો અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ સંલેજ્ઞપ્સિય કંધે, ઇગ્યમ્ દો અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞપ્સિય કંધે ઇગ્યમ્ દો અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ; અહવા તિષ્ઠિ અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ । ચ્ચહા ક્ષમાણે ઇગ્યમ્ તિષ્ઠિ પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; ઇવં ચ્ચહાસંજોગો, જાવ-અસંલેજ્ઞસંજોગો, ઇતે સ્ત્વે અહિવ અસંલેજ્ઞાણં મ્વતિ તદ્દેવ અણંતાણઽવિ મ્વતિ, નવરં ઇકં અણંતગં અમ્મહિયં મ્વતિ, જાવ-અહવા ઇગ્યમ્ સંલેજ્ઞા સંલેજ્ઞપ્સિયા કંધા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ સંલેજ્ઞા અસંલેજ્ઞપ્સિયા કંધા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા સંલેજ્ઞા અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ । અસંલેજ્ઞા ક્ષમાણે ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞા પરમાણુપોગ્ગલા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞા દુપ્સિયા કંધા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; જાવ-અહવા ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞા સંલેજ્ઞપ્સિયા કંધા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા ઇગ્યમ્ અસંલેજ્ઞા અસંલેજ્ઞપ્સિયા કંધા, ઇગ્યમ્ અણંતપ્સિય કંધે મ્વતિ; અહવા અસંલેજ્ઞા અણંતપ્સિયા કંધા મ્વતિ । અણંતહા ક્ષમાણે અણંતા પરમાણુપોગ્ગલા મ્વતિ ।

અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા ઇક તરફ સંલ્યાતા સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને ઇક તરફ ઇક અસંલ્યાતપ્રદેશાત્મક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા સંલ્યાતા અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. જો તેના અસંલ્યાત વિભાગ કરવામાં આવે તો અસંલ્યાત પરમાણુપુદ્ગલો થાય છે.

અસંલ્યાત પરમાણુઓ.

૧૨. [પ્ર૦] હે મ્વતિ ! અનન્ત પરમાણુપુદ્ગલો ઇકઠા થાય અને ઇકઠા થયા પછી તેનું શું થાય ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તેનો અનન્તપ્રદેશાત્મક સ્કન્ધ થાય. જો તેના વિભાગ થાય તો બે, ત્રણ, ચાવત્ દસ, સંલ્યાત, અસંલ્યાત અને અનન્ત વિભાગ થાય. બે વિભાગ કરવામાં આવે તો ઇક તરફ પરમાણુપુદ્ગલ અને ઇક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [અનં]. યાવદ્-અથવા બે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [અનં] [અનં]. જો તેના ત્રણ વિભાગ કરવામાં આવે તો ઇક તરફ બે પરમાણુપુદ્ગલો અને ઇક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [•] [અનં]. અથવા ઇકતરફ ઇક પરમાણુ, ઇક તરફ ઇક દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને ઇક તરફ ઇક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [••] [અનં]. યાવદ્-અથવા ઇક તરફ ઇક પરમાણુપુદ્ગલ, ઇક તરફ અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને ઇક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [અસં]. [અનં]. અથવા ઇક તરફ ઇક પરમાણુ, અને ઇક તરફ બે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [•] [અનં] [અનં]. અથવા ઇક તરફ ઇક દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને ઇક તરફ બે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [••] [અનં] [અનં]. ઇ પ્રમાણે યાવદ્-અથવા ઇક તરફ ઇક દશપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને ઇક તરફ બે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [:::]: [અનં] [અનં]. અથવા ઇક તરફ ઇક સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને ઇક તરફ બે અનન્ત પ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [સં] [અનં] [અનં]. અથવા ઇક તરફ ઇક અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધ અને ઇક તરફ બે અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. [અસં] [અનં] [અનં]. જો તેના ચાર ભાગ કરવામાં આવે તો ઇક તરફ ત્રણ પરમાણુઓ અને ઇક તરફ ઇક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. [•] [•] [•] [અનં]-ઇ પ્રમાણે ચતુષ્ક-સંયોગ, યાવદ્-સંલ્યાતસંયોગ કહેવો. ઇ મ્વતિ સંયોગો અસંલ્યાતની પેટે અનન્તને પળ કહેવા; પરન્તુ ઇક 'અનન્ત' શબ્દ અધિક કહેવો; યાવદ્-અથવા ઇક તરફ સંલ્યાતા સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને ઇક તરફ ઇક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા ઇક તરફ સંલ્યાતા અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને ઇક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા સંલ્યાતા અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. જો તેના અસંલ્યાતા વિભાગ કરીએ તો ઇક તરફ અસંલ્યાત પરમાણુપુદ્ગલો અને ઇક તરફ ઇક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા ઇક તરફ અસંલ્યાત દ્વિપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને ઇક તરફ ઇક અનન્ત પ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે, યાવદ્-અથવા ઇક તરફ અસંલ્યાતા સંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને ઇક તરફ ઇક અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા ઇક તરફ અસંલ્યાતા અસંલ્યાતપ્રદેશિક સ્કન્ધો અને ઇક તરફ અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધ હોય છે. અથવા અસંલ્યાતા અનન્તપ્રદેશિક સ્કન્ધો હોય છે. જો તેના અનન્ત વિભાગ કરવામાં આવે તો અનન્ત પરમાણુપુદ્ગલો થાય છે.

१३. [प्र०] एषसि णं मंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा—भेदाणुवापणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्ठा समणुगंतत्ता भवं-
तीति मक्खाया ? [उ०] हंता, गोयमा ! एषसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा० जाव—मक्खाया ।

१४. [प्र०] कइविहे णं मंते ! पोग्गलपरियट्ठे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्ठे पण्णसे, तंजहा—१
ओरालियपोग्गलपरियट्ठे, २ वेडच्चियपोग्गलपरियट्ठे, ३ तेयापोग्गलपरियट्ठे, ४ कम्मापोग्गलपरियट्ठे, ५ मणपोग्गलपरियट्ठे, ६
वहपोग्गलपरियट्ठे, ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्ठे ।

१५. [प्र०] नेरइयाणं मंते ! कतिविहे पोग्गलपरियट्ठे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्ठे पण्णसे,
तंजहा—१ ओरालियपोग्गलपरियट्ठे, २ वेडच्चियपोग्गलपरियट्ठे, जाव— ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्ठे; एवं जाव—वेमाणियाणं ।

१६. [प्र०] एगमेगस्स णं मंते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] अणंता, [प्र०] केवइया
पुरेक्खडा ? [उ०] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि; अस्सत्थि जहभेणं एक्को वा दो वा तिप्पि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा अस्स-
खेज्जा वा अणंता वा ।

१७. [प्र०] एगमेगस्स णं मंते ! असुरकुमारस्स केवतिया ओरालियपोग्गल० ? [उ०] एवं वेव, एवं जाव—
वेमाणियस्स ।

१८. [प्र०] एगमेगस्स णं मंते ! नेरइयस्स केवतिया वेडच्चियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] अणंता; एवं जहेव
ओरालियपोग्गलपरियट्ठा तहेव वेडच्चियपोग्गलपरियट्ठाऽपि भाणियत्ता, एवं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव—आणापाणुपोग्गल-
परियट्ठा, एते एगत्थिया सत्त दंडगा भवंति ।

१९. [प्र०] नेरइयाणं मंते ! केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्ठा अतीता ? [उ०] गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ?
[उ०] अणंता, एवं जाव—वेमाणियाणं, एवं वेडच्चियपोग्गलपरियट्ठाऽपि, एवं जाव—आणापाणुपोग्गलपरियट्ठा, जाव—वेमा-
णियाणं, एवं एप पोहत्थिया सत्त चउद्धीसतिदंडगा ।

१३. हे भगवन् ! ए परमाणुपुद्गलोना संयोग अने मेदना संबंधयी अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कइया छे ?
[उ०] हा, गौतम ! संयोग अने मेदनां योगयी ए परमाणुपुद्गलोना अनंतानंत पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कइया छे.

अनन्तानन्त पुद्गल
परिवर्तो.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलपरिवर्तो केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलपरिवर्तो सात प्रकारना कइया छे, ते
आ प्रमाणे—१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, ३ तैजसपुद्गलपरिवर्त, ४ कार्मणपुद्गलपरिवर्त, ५ मनपुद्गलपरिवर्त, ६ वचन-
पुद्गलपरिवर्त अने ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त.

पुद्गलपरिवर्तो
प्रकार.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारना पुद्गलपरिवर्तो कइया छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने सात पुद्गलपरिवर्तो कइया
छे, ते आ प्रमाणे—१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, यावद् ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त. ए प्रमाणे यावद्—वैमानिको सुधी जाणवुं.

नैरयिकोने पुद्गल
परिवर्तो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकोने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत—थया छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त थया छे.
[प्र०] केटला थनारा छे ? [उ०] कोइने थवाना होय छे अने कोइने नयी; जेने थवाना छे तेने जघन्ययी एक, बे के त्रण थवाना छे; अने
उत्कृष्टयी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे.

एक नैरयिकोने औदा-
रिकपुद्गलपरिवर्तो.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] ए प्रमाणे—उपर कइया प्रमाणे
जाणवुं, ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुधी जाणवुं.

असुरकुमारने औदा-
रिकपुद्गलपरिवर्त.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकोने केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. ए प्रमाणे जेम औदा-
रिकपुद्गलपरिवर्त संबन्धे कइयुं तेम वैक्रियपुद्गलपरिवर्त संबन्धे पण जाणवुं. यावद् वैमानिक सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त
संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे एक एकने आश्रयी सात दंडको थाय छे.

एक नैरयिकोने वैक्रि-
यपुद्गलपरिवर्तो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला
औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए रीते वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो, यावद्
आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो संबन्धे पण यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. एम [सात पुद्गलपरिवर्त संबन्धे] बहुवचनने आश्रयी सात दंडको
[नैरयिकादि] चोवीश दंडको कहेवा.

नैरयिकोने पुद्गल
परिवर्तो.

२०. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयसे केवतिया ओरालियपोग्गलपरियहा अतीता ? [उ०] नत्थि एक्को वि । [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] नत्थि एक्को वि ।

२१. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारसे केवतिया ओरालियपोग्गलपरियहा० [उ०] एवं चेव, एवं जाव—थणियकुमारसे जहा असुरकुमारसे ।

२२. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविकाइयसे केवतिया ओरालियपोग्गलपरियहा अतीता ? [उ०] अणंता, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि; जस्सत्थि तस्स जहभेणं एक्को वा दो वा तिभि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं जाव—मणुस्ससे, वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणियसे जहा असुरकुमारसे ।

२३. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयसे केवतिया ओरालियपोग्गलपरियहा ? [उ०] एवं जहा नेरइयस्स वत्तवया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियहा, जाव—वेमाणियसे, एवं जाव—थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्स वि, एवं जाव—वेमाणियस्स, सत्तेसि एक्को गमो ।

२४. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयसे केवतिया वेउच्चियपोग्गलपरियहा अतीता ? [उ०] अणंता, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] एक्कोत्तरिया जाव—अणंता वा, एवं जाव—थणियकुमारसे ।

२५. [प्र०] पुढवीकाइयसे पुच्छा । [उ०] नत्थि एक्कोऽवि, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] नत्थि एक्कोऽवि, एवं जत्थ वेउच्चियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयसे तहा भाणियच्चं, जाव—वेमाणियस्स वेमाणियसे । तेयापोग्गलपरियहा, कम्मापोग्गलपरियहा य सत्तत्थ एक्कोत्तरिया भाणियच्चं, मणपोग्गलपरियहा सत्तेसु पंथि-विपसु एगोत्तरिया, विगलंदिपसु नत्थि । वइपोग्गलपरियहा एवं चेव, नवरं एगिदिपसु नत्थि भाणियच्चं । आणापाणुपोग्गलपरियहा सत्तत्थ एक्कोत्तरिया, जाव वेमाणियस्स वेमाणियसे ।

एक नैरयिकने नैरयिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्तं.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत—थया छे ? [उ०] तेओने एक पण औदारिकपुद्गलपरिवर्तं थयो नथी. [प्र०] केटला औदारिक पुद्गलपरिवर्तो थवाना छे ? [उ०] तेओने एक पण थवानो नथी.

एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्तं.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] उपर कहा प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे जेम असुरकुमारपणामां कहुं तेम यावत् स्तनितकुमारपणामां पण जाणवुं.

एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्तं.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी, जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, वे के त्रण थवाना छे, अने उत्कृष्टथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे, ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां पण जाणवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां जेम असुरकुमारपणामां कहुं तेम जाणवुं.

एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्तं.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत—थया छे ? [उ०] जेम नैरयिकनी वक्तव्यता कही तेम असुरकुमारनी पण वक्तव्यता कहेवी. ए प्रमाणे यावद्—वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे पृथिवीधी आरंभी यावद् वैमानिकसुधी बधाओने एक गम—पाठ कहेवो.

एक नैरयिकने नैरयिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्तं.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] हे गौतम ! एकथी मांडीने यावद् अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं.

नैरयिकने पृथिवीकायपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्तं.

२५. [प्र०] पृथिवीकायिकपणामां प्रश्न.—एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो केटला थया छे ? [उ०] एक पण नथी. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] एक पण नथी. ए प्रमाणे जे जीवोने वैक्रियशरीर छे तेओने एकादि पुद्गलपरावर्तो जाणवा, अने जेओने वैक्रियशरीर नथी तेओने पृथिवीकायिकपणामां कहुं छे तेम कहेवुं, यावद् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. तैजस-पुद्गलपरिवर्तो अने कार्मणपुद्गलपरिवर्तो सर्वत्र एकथी मांडीने अनन्तसुधी कहेवा. मनःपुद्गलपरिवर्तो वधा पंचेन्द्रियोमां एकथी आरंभी [अनन्त सुधी] कहेवा. ते (मनःपुद्गलपरिवर्तो) विकलेन्द्रियोमां नथी. वचनपुद्गलपरिवर्तो पण ए प्रमाणे जाणवा; परन्तु विशेष ए छे के ते एकेन्द्रिय जीवोमां नथी. आसोच्छ्वासपुद्गलपरिवर्तो वधा जीवोमां एकथी मांडीने वधारे जाणवा; यावद्—वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं.

२६. [प्र०] नेरइयणं मंते ! नेरइयचे केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? [उ०] नत्थि एक्कोऽवि । [प्र०] केवइया पुरेक्कडा ? [उ०] नत्थि एक्को वि, एवं जाव—यणियकुमारचे ।

२७. [प्र०] बुद्धविकारयचे पुच्छा । [उ०] अणंता । [प्र०] केवइया पुरेक्कडा ? [उ०] अणंता, एवं जाव—मणुस्सत्ते । वाण-मंतर—ओरसिय—वेमाणियचे जहा नेरइयचे, एवं जाव—वेमाणियस्स वेमाणियचे, एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियट्टा, जत्थ अत्थि तत्थ अतीता वि पुरेक्कडा वि अणंता भाणियट्टा, जत्थ नत्थि तत्थ दोऽवि नत्थि भाणियट्टा । जाव—[प्र०] वेमा-णियाणं वेमाणियचे केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीया ? [उ०] अणंता । [प्र०] केवतिया पुरेक्कडा ? [उ०] अणंता ।

२८. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुद्धइ—‘ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे’ ? [उ०] गोयमा ! जणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं द्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं, बज्जाइं, पुट्टाइं, कडाइं, पट्ट-वियाइं, निविट्टाइं, अभिनिविट्टाइं, अभिसमन्नागयाइं, परियावियाइं, परिणामियाइं, निज्जिआइं, निसिरियाइं, निसिट्टाइं मयंति; से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धइ—‘ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे’ । एवं वेउच्चियपोग्गलपरियट्टेऽवि, नवरं वेउच्चियसरीरे वट्टमाणेणं वेउच्चियसरीरपायोग्गाइं, सेसं तं चेव सधं, एवं जाव—आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं आणा-पाणुपायोग्गाइं सधद्व्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तं चेव ।

२९. [प्र०] ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं मंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ? [उ०] गोयमा ! अणंताइि उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीइि एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ; एवं वेउच्चियपोग्गलपरियट्टे वि, एवं जाव—आणापाणुपोग्गलपरियट्टेऽवि ।

३०. [प्र०] एयस्स णं मंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टेनिव्वत्तणाकालस्स, वेउच्चियपोग्गल०, जाव—आणापाणुपोग्गलप-रियट्टेनिव्वत्तणाकालस्स कयरे—कयरोहिंतो जाव—विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टेनिव्वत्त-

२६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे ? [उ०] एक पण व्यतीत थयेल नथी. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] एक पण थवानो नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं.

२७. [प्र०] पृथिवीकायिकपणामां प्रश्न. (नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे ?) [उ०] अनन्ता व्यतीत थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत्—मनुष्यपणामां जाणवुं. तथा जेम नैर-यिकपणामां कहुं छे तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए रीते साते पुद्गलपरिवर्तो कहेवा; ज्यां होय छे त्यां अतीत—थयेला अने पुरस्कृत—भावी पण अनन्ता कहेवा, अने ‘ज्यां नथी त्यां अतीत अने भावी बन्ने पण नथी—’ एम कहेवुं. यावद्—[प्र०] वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो थयेला छे ? [उ०] अनन्ता थयेला छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! ‘औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त’—एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गीतम ! औदा-रिकशरीरमां वर्तता जीवे औदारिकशरीरने योग्य द्रव्यो औदारिकशरीरपणे ग्रहण करेलां छे, स्पर्शलां छे, करेलां छे, स्थिर करेलां छे, स्थापन करेलां छे, अभिनिविष्ट—सर्वथा लागेलां छे, सर्वथा प्राप्त थयेलां छे, सर्व अवयवबडे ग्रहण करायेलां छे, परिणाम पामेलां छे, निर्जरायेलां छे, जीवप्रदेशथी नीकळेलां छे, अने जीवप्रदेशथी जूदा थयेलां छे, माटे ते हेतुथी हे गीतम ! एम ‘औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त’ कहेवाय छे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के, वैक्रियशरीरमां वर्तता जीवे वैक्रियशरीरने योग्य पुद्गलो कहेवां, बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त सुधी जाणवुं; विशेष ए छे के, त्यां ‘आनप्राणयोग्य सर्व द्रव्यो आनप्राणपणे ग्रह्यां छे’ इत्यादि कहेवुं, बाकी बधुं पूर्वनी पेटेज जाणवुं.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकपुद्गलपरिवर्त केटला काळे नीपजे ? [उ०] हे गीतम ! अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीबडे—एटला काळे—औदारिकपुद्गलपरिवर्त नीपजे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. ए प्रमाणे यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ए औदारिकपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकालमां, वैक्रियपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकालमां, यावद्—आनप्राणपुद्गलप-रिवर्तना निष्पत्तिकालमां कयो काळ कोनाथी (अल्प), यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गीतम ! सर्वथी थोडो कार्मणपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्ति-काळ छे, तेनाथी अनन्तगुण तैजसपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाल छे, तेनाथी अनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाल छे, तेनाथी

नैरयिकोने नैरयिक-पणामां केटला औदा-रिकपुद्गलपरिवर्त व्यतीत थया छे ? नैरयिकोने पृथिवी-कायिकपणामां औदा-रिकपुद्गलपरिवर्त.

औदारिकपुद्गलपरि-वर्त शा हेतुथी कहेवाय ?

औदारिकपुद्गलपरि-वर्तनो निष्पत्तिकाल.

औदारिकपुद्गलपरि-वर्तकाळमां कयो काळ.

જાકાલે, તેયાપોગ્ગલપરિયદ્વિનિચ્છનાકાલે અનંતગુણે, ઓરાલિયપોગ્ગલ૦ અનંતગુણે, આણાપાણુપોગ્ગલ૦ અનંતગુણે, મળપો-
ગ્ગલ૦ અનંતગુણે, વરપોગ્ગલ૦ અનંતગુણે, વેડચ્ચિયપોગ્ગલપરિયદ્વિનિચ્છનાકાલે અનંતગુણે ।

૩૧. [પ્ર૦] યપ્પસિ જં મંતે ! ઓરાલિયપોગ્ગલપરિયદ્વિનિચ્છના જાવ-આણાપાણુપોગ્ગલપરિયદ્વિનિચ્છના ય કચરે કચરેહિતો જાવ-
વિસેસાહિયા વા ? [ઉ૦] ગોયમા ! સદ્ધથોવા વેડચ્ચિયપોગ્ગલપરિયદ્વિનિચ્છના, વરપો૦ અનંતગુણા, મળપો૦ અનંતગુણા, આણાપા-
ણુપો૦ અનંતગુણા, ઓરાલિયપો૦ અનંતગુણા, તેયાપો૦ અનંતગુણા, કમ્મગપો૦ અનંતગુણા । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે ! સિ મગ્ગં
જાવ-વિહરે ।

દ્વાદશ શતે ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

આનપ્રાણપુદ્ગલનો નિષ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે, તેનાથી મન:પુદ્ગલપરિવર્તનો નિષ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે, તેનાથી વચ્ચનપુદ્ગલપરિવર્તનો
નિષ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે, અને તેનાથી વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તનો નિષ્પત્તિકાલ અનન્તગુણ છે.

પુદ્ગલપરિવર્તનું અર્થ-
વચ્ચન.

૩૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! એ ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્ત, યાવદ્-આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્ત-એઓમાં પરસ્પર કયા પુદ્ગલપરિવર્ત કોનાથી યાવદ્-
વિશેષાધિક છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! સૌથી યોડા વૈક્રિયપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા વચ્ચનપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા
મન:પુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા આનપ્રાણપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણ ઔદારિકપુદ્ગલપરિવર્તો છે, તેનાથી અનન્તગુણા તૈજ-
સપુદ્ગલપરિવર્તો છે, અને તેનાથી અનન્તગુણ કાર્મણપુદ્ગલપરિવર્તો છે. 'હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે, હે ભગવન્ ! તે એ પ્રમાણે છે'-એમ
કહી યાવદ્-ભગવાન્ ગૌતમ વિહરે છે.

દ્વાદશ શતે ચતુર્થ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

પંચમો ઉદ્દેસઓ ।

૧. [પ્ર૦] રાયગિદ્દે જાવ-પ્વં ઘયાસી-અહ મંતે ! ૧ પાણાહવાપ, ૨ મુસાવાપ, ૩ અવિજ્ઞાવાણે, ૪ મેહુણે, ૫ પરિ-ગ્રહે-પ્સ ણં કતિવજ્ઞે, કતિગંધે, કતિરસે, કતિફાસે પ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવજ્ઞે, ડુગંધે, પંચરસે, ચડફાસે, પ્ણસે ॥

૨. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ કોદ્દે, ૨ કોવે, ૩ રોસે, ૪ દોસે, ૫ અક્ષમા, ૬ સંજ્વલણે, ૭ કલહે, ૮ ચંડિકે, ૯ મંડણે, ૧૦ વિવાદે-પ્સ ણં કતિવજ્ઞે, જાવ-કતિફાસે પ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવજ્ઞે, ડુગંધે, પંચરસે, ચડફાસે પ્ણસે ॥

૩. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ માણે, ૨ મદે, ૩ દર્પે, ૪ સ્તંમ, ૫ ગર્વ, ૬ અત્યુક્તોદા, ૭ પરપરિવાપ, ૮ ઉક્કાસે, ૯ અવ-કાસે, ૧૦ ઉચ્ચતે, ૧૧ ઉચ્ચામે, ૧૨ ડુર્નામે-પ્સ ણં કતિવજ્ઞે ધ ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવજ્ઞે, જહા કોદ્દે તદ્દેવ ॥

પંચમ ઉદ્દેશક.

૧. [પ્ર૦] રાજગૃહ નગરમાં [ગૌતમ] યાવદ્-આ પ્રમાણે બોલ્યા કે હે ભગવન્ ! ૧ *પ્રાણાતિપાત, ૨ મૃષાવાદ, ૩ અદત્તાદાન, ૪ મૈથુન અને ૫ પરિગ્રહ-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, કેટલા ગન્ધવાળા, કેટલા રસવાળા અને કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે પાંચ વર્ણવાળા, બે ગન્ધવાળા, પાંચ રસવાળા અને ચાર સ્પર્શવાળા કહ્યા છે.

૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ ક્રોધ, ૨ કોપ, ૩ રોષ, ૪ દોષ, ૫ અક્ષમા, ૬ સંજ્વલન, ૭ કલહ, ૮ ચાંડિક્ય (રૌદ્રાકાર), ૯ મંડન (દંડાદિથી યુદ્ધ કરવું) અને ૧૦ વિવાદ-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ વર્ણવાળા, બે ગન્ધવાળા, પાંચ રસવાળા અને ચાર સ્પર્શવાળા કહ્યા છે.

૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ માન, ૨ મદ, ૩ દર્પ, ૪ સ્તંમ, ૫ ગર્વ, ૬ અત્યુક્તોદા, ૭ પરપરિવાદ, ૮ ઉક્કર્ષ, ૯ અપકર્ષ, ૧૦ ઉચ્ચત (ઉચ્ચય), ૧૧ ઉચ્ચામ અને ૧૨ ડુર્નામ-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પાંચ વર્ણવાળા-શ્વેત્યાદિ જેમ ક્રોધ સંબન્ધે કહ્યું તેમ અહિં જાણવું.

૧ * પ્રાણાતિપાત—જીવહિંસાથી ઉત્પન્ન થયેલું કર્મ અથવા જીવહિંસાને ઉત્પન્ન કરનાર ચારિત્રમોહનીય કર્મ ઉપચારથી પ્રાણાતિપાત કહેવાય છે. ૯ રીતે મૃષાવાદાદિ સંબન્ધે પણ જાણવું. અને તે કર્મ પુણ્યરૂપ હોવાથી તેને વર્ણાદિક હોય છે, માટે તેને પાંચ વર્ણ વગેરે કહ્યા છે—ટીકા.

૨ † ક્રોધના પરિણામને ઉત્પન્ન કરનાર કર્મને ક્રોધ કહે છે. તેમાં ૧ ક્રોધ સામાન્ય નામ છે અને કોપાદિ તેના વિશેષણના નામો છે. ૨ ક્રોધના ઉદયથી સ્વભાવથી ચલિત થવું તે કોપ, ૩ ક્રોધની પરંપરા તે રોષ, ૪ પોતાને અથવા પરને દુઃખ આપવું તે દોષ, અથવા અપ્રીતિમાત્ર તે દ્વેષ, ૫ ધીજાણ કરેલા અપરાધને સહન ન કરવો તે અક્ષમા, ૬ કારંકાર ક્રોધથી બઝવું તે સંજ્વલન, ૭ મોટેથી ડૂમ પાઠી પરસ્પર અનુચિત્ત કોલવું તે કલહ, ૮ રૌદ્રાકાર ધારણ કરવો તે ચાંડિક્ય, ૯ દંડાદિથી યુદ્ધ કરવું તે મંડન અને ૧૦ પરસ્પર વિરોધથી ઉત્પન્ન થયેલા વચનો તે વિવાદ. અથવા આ બધા ક્રોધના આર્થક શબ્દો છે—ટીકા.

૩ ‡ માનના પરિણામને ઉત્પન્ન કરનાર કર્મને માન કહેવાય છે. તેમાં ૧ માન સામાન્ય નામ છે અને મદાદિ તેના વિશેષણના નામો છે, ૨ મદ-દર્પ, ૩ દર્પ-દસપર્ણ, ૪ સ્તંમ-અનમનસ્વભાવ, ૫ ગર્વ-અહંકાર, ૬ અત્યુક્તોદા-ધીજાણી પોતાની ઉત્કૃષ્ટતા બતાવવી, ૭ પરપરિવાદ-પરનિન્દા, ૮ ઉક્કર્ષ-માનથી પોતાની કે પરની ક્રિયાને ઉત્કૃષ્ટ કરવી, અથવા અભિમાનથી પોતાની સમૃદ્ધિ વગેરેને પ્રકટ કરવી, ૯ અપકર્ષ-અભિમાનથી પોતાના અથવા પરના કોઈ પણ કાર્યથી વન્ધ પડવું, અથવા અભિમાનથી અપ્રકટ રહેવું, ૧૦ ઉચ્ચત-પૂર્વે પ્રહત નમનનો સ્વાગ કરવો, અથવા ઉચ્ચ-અભિમાનથી નીતિનો સ્વાગ કરવો, ૧૧ ઉચ્ચામ-શ્વેત્યાદિને અભિમાનથી ન નમવું અને ૧૨ ડુર્નામ-મદથી ડુરરીતે નમવું. અહિં સાંખ્યિક માનના કાર્ય છે. અથવા આ બધા શબ્દો માનના આર્થક શબ્દો છે—ટીકા.

પ્રાણાતિપાતવગેરે કેટલા વર્ણાદિક કહે છે ?

ક્રોધાદિ કેટલા વર્ણાદિ સહિત છે ?

માન વગેરે કેટલા વર્ણાદિક કહે છે ?

૪. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ માયા, ૨ ઉવહી, ૩ નિયડી, ૪ વલયે, ૫ ગહને, ૬ ખૂમે, ૭ કલ્કે, ૮ કુરુપ, ૯ જિન્દે, ૧૦ કિલ્લિસે, ૧૧ આચરણયા, ૧૨ ગૂહણયા, ૧૩ વંચણયા, ૧૪ પલિઉંચણયા, ૧૫ સાતિજોગે ય-પસ ણં કતિવલ્લે ૪ પલ્લસે ! [૩૦] ગોયમા ! પંચવલ્લે, જહેવ કોહે !

૫. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ લોમે, ૨ ઈચ્છા, ૩ મુચ્છા, ૪ કંક્ષા, ૫ ગેહી, ૬ તળ્હા, ૭ મિજ્જા, ૮ અમિજ્જા, ૯ આસા-સણયા, ૧૦ પત્થણયા, ૧૧ લાલપ્પણયા, ૧૨ કામાસા, ૧૩ મોગાસા, ૧૪ જીવિયાસા, ૧૫ મરણાસા, ૧૬ નંદીરાગે-પસ ણં કતિવલ્લે ૪ ? [૩૦] જહેવ કોહે !

૬. [પ્ર૦] અહ મંતે ! પેલ્લે, વોસે, કલ્લહે, જાવ-મિચ્છાદંસણસલ્લે-પસ ણં કતિવલ્લે ? [૩૦] જહેવ કોહે તહેવ વડપાસે !

૭. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ પાળાદવાયવેરમણે, જાવ-૫ પરિગ્ગહવેરમણે, ૬ કોહવિલ્લેગે જાવ-૧૮ મિચ્છાદંસણસલ્લવિલ્લેગે-પસ ણં કતિવલ્લે, જાવ-કતિપાસે પળ્લસે ? [૩૦] ગોયમા ! અલ્લે, અગંધે, અરસે, અપાસે પળ્લસે !

૮. [પ્ર૦] અહ મંતે ! ૧ ઉપ્પસિયા, ૨ વેણહયા, ૩ કમ્મિયા, ૪ પરિણામિયા-પસ ણં કતિવલ્લા ? [૩૦] તં વેવ જાવ-અપાસા પલ્લસા !

માયા.

૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ *માયા, ૨ ઉપધિ, ૩ નિકૃતિ, ૪ વલય-વક્રતાજનનસ્વભાવ, ૫ ગહન, ૬ નૂમ, ૭ કલ્ક, ૮ કુરુપા ૯ જિહ્વાતા, ૧૦ કિલ્લિપ, ૧૧ આદરણતા (આચરણતા), ૧૨ ગૂહનતા, ૧૩ વંચનતા, ૧૪ પ્રતિકુંચનતા, ૧૫ સાતિયોગ-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ૯ બધા પાંચ વર્ણવાળા-ઇત્યાદિ ક્રોધની પેટે જાણવા.

લોભ.

૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ લોભ, ૨ ઈચ્છા, ૩ મૂર્છા, ૪ કાંક્ષા, ૫ ગૃહ્ણિ, ૬ તૃષ્ણા, ૭ મિધ્યા, ૮ અમિધ્યા, ૯ આશંસના, ૧૦ પ્રાર્થના, ૧૧ લાલપનતા, ૧૨ કામાશા, ૧૩ મોગાશા, ૧૪ જીવિતાશા, ૧૫ મરણાશા અને ૧૬ નંદિરાગ-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ક્રોધની પેટે (સૂ. ૨) જાણવું.

રાગ દ્વેષ અને કેટલા વર્ણાયુક્ત છે ?

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ પ્રેમ-રાગ, ૨ દ્વેષ, ૩ કલ્હ, યાવત્-૮ મિધ્યાદર્શનશલ્ય-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળા છે ? [૩૦] ક્રોધની પેટે તે બધા ચાર સ્પર્શવાળા છે.

પ્રાણાતિપાતવિ-ભાદિ કેટલા વર્ણાયુક્ત છે ?

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ પ્રાણાતિપાતવિરમણ, યાવત્-૫ પરિગ્રહવિરમણ, ૬ ક્રોધનો લ્યાગ, યાવત્-૧૮ મિધ્યાદર્શનશલ્યનો લ્યાગ-૯ બધા કેટલા વર્ણવાળા, યાવત્ કેટલા સ્પર્શવાળા કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વર્ણ વિનાના, ગંધ વિનાના, રસ વિનાના અને સ્પર્શ વિનાના કહ્યા છે.

આત્મકારની મતિ.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ ઔત્પત્તિકી (સ્વાભાવિક ઉત્પન્ન થયેલી), ૨ વૈનયિકી (ગુરુના વિનય-શાસ્ત્રાભ્યાસદ્વારા થયેલી બુદ્ધિ), ૩ કાર્મિકી (કર્મદ્વારા થયેલી) અને ૪ પારિણામિકી (લાંબા કાલ સુધી પૂર્વાપર અર્થના અવલોકનાદિકથી ઉત્પન્ન થયેલી) બુદ્ધિ-૯ કેટલા વર્ણવાળી, યાવત્-કેટલા સ્પર્શવાળી કહી છે ? [૩૦] પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું, યાવત્-સ્પર્શરહિત કહી છે.

૪ * ૧ માયા સામાન્યવાચક નામ છે અને ઉપધિઆદિ તેના મેદો છે. ૨ ઉપધિ-છેતરવા યોગ્ય મનુષ્યની પાસે જવાના કારણભૂત ભાવ, ૩ નિકૃતિ-આદર કરવા વહે વીજાને છેતરવું, અથવા પૂર્વકૃત માયાને ઢાંકવા વીજી માયા કરવી, ૪ વલય-જે ભાવ વહે વલયની પેટે વલ્ક વચન કે વેદા પ્રવર્તે તે ભાવ, ૫ ગહન-વીજાને છેતરવા માટે ગહનના જેવી-ન સમજી શકાય તેવી-વચનજાલ, ૬ નૂમ-વીજાને ઠગવા નીચતાનો અથવા નીચ સ્થાનનો આશ્રય કરવો, ૭ કલ્ક-હિંસાદિનિમિત્તે પરને છેતરવાનો અભિપ્રાય, ૮ કુરુપ-નિન્દિતરીતે મોહ પમાહનાર અભિપ્રાય, ૯ જિહ્વાતા-વીજાને છેતરવાની બુદ્ધિથી કાર્યમાં મન્દ-તાતું અવસંબન કરાય તે, ૧૦ કિલ્લિષ-જે માયાથી અર્હિંજ કિલ્લિષકના જેવો થાય તે, ૧૧ આદરણતા-(આચરણતા) જે માયાવિશેષથી કોઈ પણ વસ્તુનો આદર કરે તે આદરણતા, અથવા વીજાને છેતરવા વિવિધ ક્રિયાનું આચરણ કરવું તે આચરણતા, ૧૨ ગૂહનતા-પોતાના સ્વરૂપને છૂપાવવું, ૧૩ વંચનતા-પરને છેતરવું, ૧૪ પ્રતિકુંચનતા-સરલપણે કહેલા વચનનું ઝેંઢન કરવું, ૧૫ સાતિયોગ-ઉત્તમ દ્રવ્યની સાથે હીન દ્રવ્યનો યોગ કરવો. અથવા આ બધા માયાના ઇકાર્યક શબ્દો છે ટીકા.

૫ † ૧ લોભ સામાન્યવાચી નામ છે અને ઈચ્છાદિક તેના વિશેષ મેદો છે, ૨ ઈચ્છા-અમિલાષ, ૩ મૂર્છા-સંરક્ષણ કરવાની નિરન્તર અમિલાષા, ૪ કાંક્ષા-અપ્રાપ્ત પદાર્થની ઈચ્છા, ૫ ગૃહ્ણિ-પ્રાપ્ત અર્થમાં આસક્તિ, ૬ તૃષ્ણા-પ્રાપ્ત પદાર્થનો વ્યય ન થાય તેવી ઈચ્છા, ૭ મિધ્યા-વિષયોનું ધ્યાન, ઇકામ્રતા, ૮ અમિધ્યા-અદૃઢ આપ્રહ, વલાયમાન ચિત્તની સ્થિતિ, ૯ આશંસના-પોતાને દૃષ્ટ અર્થની ઈચ્છા, ૧૦ પ્રાર્થના-વીજા માટે દૃષ્ટ અર્થની માગણી, ૧૧ લાલપનતા-અભ્યન્ત શોભ-વાથી પ્રાર્થના કરવી, ૧૨ કામાશા-દૃષ્ટ શબ્દ અને રૂપ પ્રાપ્તિની સંભાવના, ૧૩ મોગાશા-દૃષ્ટ ગંધાદિ પ્રાપ્તિની સંભાવના, ૧૪ જીવિતાશા-જીવિતવ્યયની પ્રાપ્તિની સંભાવના, ૧૫ મરણાશા-કોઈક અવસ્થામાં મરણ પ્રાપ્તિની સંભાવના, ૧૬ નંદીરાગ-છટ્ટી સમૃદ્ધિનો રાગ થવો-ટીકા.

૭ ‡ પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિ જીવના ઉપયોગસ્વરૂપ છે, અને જીવનો ઉપયોગ અમૂર્ત હોવાથી તે વર્ણાદિરહિત કહ્યા છે.

૮ † ૧ ઉત્પત્તિ એ જેનું પ્રયોજન છે, પરન્તુ જેને શાક્ષ, કર્મ અને અભ્યાસાદિની અપેક્ષા નથી તે ઔત્પત્તિકી બુદ્ધિ કહેવાય છે. ૨ જેના વિનય-પુસ્કૃતિ કારણભૂત છે તે વૈનયિકી બુદ્ધિ, તે જીવનો સ્વભાવ હોવાથી અમૂર્ત છે અને તેથી તે વર્ણાદિરહિત છે. ૯ પ્રમાણે અવગ્રહાદિ અને ઉત્પાનાદિ પ્રતિપાદક સૂત્રી જાણવા.

९. [प्र०] अहं मंते ! १ उग्गहे, २ ईहा, ३ अवाय, ४ धारणा—एस णं कतिवन्ना ? [उ०] एवं खेव जाव—अफासा पन्नत्ता ।

१०. [प्र०] अहं मंते ! १ उट्टाणे, २ कम्मे, ३ बले, ४ वीरीय, ५ पुरिसकारपरकमे—एस णं कतिवन्ने ? [उ०] तं खेव जाव—अफासे पन्नत्ते ।

११. [प्र०] सत्तमे णं मंते ! उच्चासंतरे कतिवन्ने ? [उ०] एवं खेव जाव—अफासे पन्नत्ते ।

१२. [प्र०] सत्तमे णं मंते ! तणुवाप कतिवन्ने ? [उ०] जहा पाणाहवाप, नवरं अट्टफासे पण्णत्ते, एवं जहा सत्तमे तणुवाप तहा सत्तमे घणवाप, घणोवधी, पुडधी । छट्ठे उच्चासंतरे अबन्ने, तणुवाप जाव—छट्ठी पुडधी—एयाहं अट्टफासाहं, एवं जहा सत्तमाप पुडधीप बत्तवया भणिया तहा जाव—पढमाप पुडधीप भाणियहं । जंबुद्वीपे वीवे जाव—सयंभुरमणे समुदे, सोहम्मे कण्णे, जाव—ईसिपम्भारा पुडधी, नेरतियावासा, जाव—वेमाणियावासा—एयाणि सत्ताणि अट्टफासाणि ।

१३. [प्र०] नेरइया णं मंते ! कतिवन्ना, जाव—कतिफासा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! वेउच्चिय—तेयाहं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुग्गंधा, अट्टफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुग्गंधा, चउफासा पण्णत्ता, जीवं पडुच्च अवन्ना, जाव—अफासा पण्णत्ता, एवं जाव—थणियकुमारा ।

१४. [प्र०] पुडविकाइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओरालिय—तेयगाहं पडुच्च पंचवन्ना, जाव—अट्टफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव, एवं जाव—चउरिंदिया । नवरं वाउक्काइया ओरालिय—वेउच्चिय—तेयगाहं पडुच्च पंचवन्ना, जाव—अट्टफासा पण्णत्ता; सेसं जहा नेरइयाणं । पंचिंदियतिरिक्कजोणिया जहा वाउक्काइया ।

९. [प्र०] हे भगवन् ! १ अवग्रह (अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञान), २ ईहा (विचारणा), ३ अवाय—निश्चय अने ४ धारणा (उपयोगं सातस्य)—ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्—केटला स्पर्शवाळा छे ? [उ०] ए प्रमाणे यावद्—स्पर्शरहित कह्या छे.

अवग्रहादि.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! १ उत्थान, २ कर्म, ३ बल, ४ वीर्य अने ५ पुरुषकारपरक्रम—ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्—केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे यावद् ते स्पर्शरहित कह्या छे.

उत्थानादि केटला वर्णवियुक्त छे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! सातमी [सातमी* नरकपृथिवी नीचेनो] अवकाशांतर—आकाशनी खंड केटला वर्णवाळो, यावत्—केटला स्पर्शवाळो कह्या छे ? [उ०] ए प्रमाणे यावद्—स्पर्शरहित कह्या छे.

सप्तम अवकाशान्तर.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! सातमी नरकपृथिवी नीचेनो तनुवात केटला वर्णवाळो, यावत्—केटला स्पर्शवाळो कह्या छे ? [उ०] प्राणातिपातनी पेटे (सू. ११) जाणवुं, परंतु विशेष ए छे के अहीं सातमी तनुवात आठ स्पर्शवाळो कह्या छे. जेम सातमी तनुवात कह्या छे तेम सातमी घनवात तथा सप्तमपृथिवी जाणवी. छट्ठी पृथिवीनी नीचेनो अवकाशांतर वर्णादिरहित छे. छट्ठी तनुवात तथा यावद्—छट्ठी पृथिवी—ए बधा आठ स्पर्शवाळां छे. ए प्रमाणे जेम सातमी पृथिवीनी वक्तव्यता कही, तेम यावत्—प्रथम पृथिवी सुधी जाणवुं. जंबूद्वीप नामे द्वीप, यावत् स्वयंभुरमणसमुद्र, सौधर्म कल्प, यावद्—ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, नैरयिकावासो तथा यावद्—वैमानिकावासो—ए बधा आठ स्पर्शवाळा छे.

सप्तम तनुवात.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला वर्णवाळा, यावत् केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वैक्रिय अने तैजस—पुद्गलोनी अपेक्षाए तेओ पांच वर्णवाळा, पांच रसवाळा, बे गंधवाळा अने आठ स्पर्शवाळा कह्या छे, अने कार्मण पुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, पांच रसवाळा, बे गंधवाळा अने चार स्पर्शवाळा कह्या छे, तथा जीवनी अपेक्षाए वर्णरहित, अने यावद् स्पर्शरहित कह्या छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

नैरयिकोने वर्णादि.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको केटला वर्णवाळा छे ?—इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! औदारिक अने तैजस पुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, यावत्—आठ स्पर्शवाळा छे, कार्मणी अपेक्षाए जेम नैरयिको कह्या तेम कहेवा, अने जीवनी अपेक्षाए पण पूर्व प्रमाणे (वर्णादिरहित) जाणवा. ए प्रमाणे यावत्—चउरिन्दिय जीवो सुधी जाणवुं, पण विशेष ए छे के, वायुकायिको औदारिक, वैक्रिय अने तैजसपुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, यावद्—आठ स्पर्शवाळा कह्या छे, बाकी बधुं नैरयिकोनी पेटे जाणवुं. तथा वायुकायिकोनी पेटे पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको पण जाणवा.

पृथिवीकायिको.

११ * प्रथम अने बीजी नरकपृथिवीनी नीचेनो आकाश ते प्रथम अवकाशान्तर कहेवाय छे, अने तेनी अपेक्षाए सप्तमनरकपृथिवीनी नीचेनो आकाशान्तर कहेवाय छे, तेना उपर सातमी घनवात छे तेना उपर सातमी घनोद्धि छे अने तेना उपर सातमी नरकपृथिवी छे, तनुवातादि वैक्रियक होवावी मूर्त छे, तेनी तेने वर्णादि होय छे.—टीका.

૧૫. [પ્ર૦] મણુસ્તાણં પુષ્કા । [૩૦] મોરાલિય-વેડચિય-માહારગ-તેયગાર્ પદુષ્ પંચવજ્ઞા, જાવ-મટ્ટુપાસા પળ્ણસા, કમ્મગં ઝીવં ચ પદુષ્ જહા નેરહયાણં, ઘાણમંતર-ઓહસિય-વેમાણિયા જહા નેરહયા । ધમ્મરિયકાપ, જાવ-પોગ્ગલ્લિયકાપ-પ્પ સહ્વે અવજ્ઞા, જાવ-અપાસા, નવરં પોગ્ગલ્લિયકાપ પંચવજ્ઞે, પંચરસે, ડુગંધે, મટ્ટુપાસે પળ્ણસે । જાવાહરણિજ્ઞે, જાવ-મંતરાપ્પ-પ્પયાણિ ચ્ચડપાસાણિ ।

૧૬. [પ્ર૦] કળ્હલેસા ણં મંતે ! કહ્વજ્ઞા-પુષ્કા । [૩૦] વહ્લેસં પદુષ્ પંચવજ્ઞા, જાવ-મટ્ટુપાસા પળ્ણસા, માવહેસં પદુષ્ અવજ્ઞા ધ, પ્પવં જાવ સુક્કલેસ્સા । સમ્મહિદ્ધિ ૩, ચ્ચક્કુદંસણે ધ, આભિણિચ્ચોહિયણાણે ૫ જાવ-ચિમ્મંગણાણે, આહારસજ્ઞા, જાવ-પરિગ્ગહસજ્ઞા-પ્પયાણિ અવજ્ઞાણિ ધ । મોરાલિયસરીરે, જાવ-તેયગસરીરે-પ્પયાણિ મટ્ટુપાસાણિ । કમ્મગસરીરે ચ્ચડપાસે, મળ્ણજોગે, વયજોગે ચ્ચ ચ્ચડપાસે, કાયજોગે મટ્ટુપાસે । સાગારોવઓગે ચ્ચ અણાગારોવઓગે ચ્ચ અવજ્ઞા ।

૧૭. [પ્ર૦] સહ્વદ્ધા ણં મંતે ! કતિવજ્ઞા-પુષ્કા । [૩૦] ગોયમા ! અત્થેગતિયા સહ્વદ્ધા પંચવજ્ઞા, જાવ-મટ્ટુપાસા પળ્ણસા, અત્થેગતિયા સહ્વદ્ધા પંચવજ્ઞા, ચ્ચડપાસા પળ્ણસા, અત્થેગતિયા સહ્વદ્ધા ઇગ્ગવળ્ણા, ઇગ્ગંધા, ઇગ્ગરસા, ડુપાસા પજ્ઞસા, અત્થેગહયા સહ્વદ્ધા અવજ્ઞા, જાવ-અપાસા પજ્ઞસા । પ્પવં સહ્વપ્પસા વિ, સહ્વપ્પજ્ઞા વિ, તીયદ્ધા અવજ્ઞા, જાવ-અપાસા પળ્ણસા, પ્પવં અણાગયદ્ધા વિ, પ્પવં સહ્વદ્ધા વિ ।

૧૮. [પ્ર૦] ઝીવે ણં મંતે ! ગમ્મં વક્કમમાણે કતિવજ્ઞં, કતિગંધં, કતિરસં, કતિપાસં પરિણામં પરિણમહ્ ! [૩૦] ગોયમા ! પંચવજ્ઞં, પંચરસં, ડુગંધં, મટ્ટુપાસં પરિણામં પરિણમહ્ ।

૧૯. [પ્ર૦] કમ્મઓ ણં મંતે ! ઝીવે નો અકમ્મઓ વિમત્તિમાવં પરિણમહ્, કમ્મઓ ણં જ્ઞપ્ નો અકમ્મઓ વિમત્તિમાવં પરિણમહ્ ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! કમ્મઓ ણં તં સ્વેવ જાવ-પરિણમહ્, નો અકમ્મઓ વિમત્તિમાવં પરિણમહ્ । 'સ્વેવં મંતે ! સ્વેવં મંતે'ત્તિ ।

મનુષ્યો.

૧૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મનુષ્યો કેટલા વર્ણવાળા કહ્યા છે?—ઇત્યાદિ. [૩૦] ઔદારિક, વૈક્રિય, આહારક અને તૈજસ પુદ્ગલોની અપેક્ષા પાંચ વર્ણવાળા, યાવત્-આઠ સ્પર્શવાળા કહ્યા છે, કાર્મણપુદ્ગલ અને જીવની અપેક્ષા નૈરયિકોની પેટે (સૂ. ૧૩.) જાણવા. જેમ નૈરયિકો કહ્યા તેમ વાનવ્યંતર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકો કહેવા. ધર્માસ્તિકાય અને યાવત્-પુદ્ગલાસ્તિકાય-૯ બધા વર્ણરહિત છે, યાવત્ સ્પર્શરહિત છે; પણ વિશેષ ૯ છે કે, પુદ્ગલાસ્તિકાય પાંચ વર્ણવાળો, પાંચ રસવાળો, બે ગંધવાળો અને આઠ સ્પર્શવાળો હોય છે. ૧ જ્ઞાનાવરણીય, યાવત્-૮ અંતરાય કર્મ-૯ બધાં ચાર સ્પર્શવાળાં છે.

જ્ઞાનવ્યંતરાદિ-
ધર્માસ્તિકાયાદિ.

જ્ઞાનાવરણાદિ.

કૃષ્ણલેશ્યાદિ.

સમ્યગ્દૃષ્ટ્યાદિ.

ઔદારિકાદિ શરીર-
સાકારોપયોગ અને
અનાકારોપયોગ.

૧૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કૃષ્ણલેશ્યા કેટલા વર્ણવાળી છે—ઇત્યાદિ પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ *દ્રવ્યલેશ્યાની અપેક્ષા પાંચ વર્ણવાળી, યાવત્-આઠ સ્પર્શવાળી કહી છે અને માવલેશ્યાની અપેક્ષા વર્ણોદિરહિત છે. ૯ પ્રમાણે યાવત્-શુક્લેશ્યા સુધી જાણવું. ૧ સમ્યગ્દૃષ્ટિ, ૨ મિથ્યાદૃષ્ટિ, ૩ સમ્યગ્મિથ્યાદૃષ્ટિ, ૪-૭ ચક્ષુદર્શન વગેરે ચાર દર્શન, ૮-૧૨ આભિનિબોધિક (મતિજ્ઞાન) વગેરે પાંચ જ્ઞાન, યાવત્-વિભંગજ્ઞાન, આહારસંજ્ઞા, યાવત્-પરિગ્રહસંજ્ઞા-૯ બધાં વર્ણોદિરહિત છે. ઔદારિક શરીર, યાવત્-તૈજસ શરીર-૯ બધાં-આઠ સ્પર્શવાળાં છે. કાર્મણશરીર, મનોયોગ અને વચનયોગ ચાર સ્પર્શવાળા છે, કાયયોગ આઠ સ્પર્શવાળો છે, સાકારોપયોગ અને અનાકારોપયોગ-૯ બન્ને વર્ણોદિરહિત છે.

સર્વદ્રવ્યો.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! બધાં દ્રવ્યો કેટલા વર્ણવાળાં છે?—ઇત્યાદિ પ્રશ્ન. [૩૦] હે ગૌતમ ! સર્વ દ્રવ્યોમાંના કેટલાક પાંચ વર્ણવાળાં, યાવત્-આઠ સ્પર્શવાળાં છે, અને કેટલાક પાંચ વર્ણવાળાં અને ચાર સ્પર્શવાળાં છે. તથા સર્વ દ્રવ્યોમાંના કેટલાક એક વર્ણવાળાં, એક ગંધવાળાં, એક રસવાળાં અને બે સ્પર્શવાળાં છે, બધી સર્વ દ્રવ્યોમાંના કેટલાક વર્ણરહિત, યાવત્-સ્પર્શરહિત છે. ૯ પ્રમાણે સર્વ પ્રદેશો, સર્વ પર્યાયો અને અતીતકાલ પણ વર્ણરહિત, યાવત્ સ્પર્શરહિત કહ્યા છે. ૯ પ્રમાણે ભવિષ્યકાલ અને સર્વકાલ પણ જાણવો.

ગર્ભમાં કલ્પ થતો
જીવ.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ગર્ભમાં ઉત્પન્ન થતો જીવ કેટલા વર્ણવાળા, કેટલા ગંધવાળા, કેટલા રસવાળા અને કેટલા સ્પર્શવાળા પરિણામવડે પરિણમે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! તે પાંચ વર્ણવાળા, પાંચ રસવાળા, બે ગંધવાળા અને આઠ સ્પર્શવાળા પરિણામવડે પરિણમે.

જીવ અને અગત્ ક-
ર્મથી વિવિધરૂપે પરિ-
ણમે છે ?

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જીવ કર્મવડે વિવિધરૂપે—મનુષ્ય—તિર્યંચાદિ અનેકરૂપે—પરિણમે છે ? કર્મ શિવાય વિવિધરૂપે પરિણમતો નથી ? તથા જગત્ કર્મવડે વિવિધરૂપે પરિણમે છે ? કર્મ વિના પરિણમતું નથી ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! કર્મથી જીવ અને જગત્—જીવનો મમૂહ વિવિધરૂપે પરિણમે છે, કર્મ વિના પરિણમતું નથી. 'હે ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે'—એમ કહી [ભગવાન્ ગૌતમ] યાવત્ વિહરે છે.

દ્વાદશ શ્લોક પંચમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૧૬ * લેશ્યાના બે પ્રકાર છે—દ્રવ્ય અને માવ. તેમાં દ્રવ્યલેશ્યા સાદરપુદ્ગલપરિણામરૂપ હોવાથી તેને પાંચવર્ણ, યાવત્-આઠ સ્પર્શ હોય છે, અને માવલેશ્યા આન્તરપરિણામરૂપ હોવાથી વર્ણોદિરહિત છે—ટીકા.

छट्ठओ उद्देसओ ।

१. रायगिहे जाव-एवं बयासी-बहुजणे णं मंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति, जाव-एवं परूवेइ-‘एवं खलु राहु चंदं गेण्हति, एवं’ २, से कहमेयं मंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! अन्नं से बहुजणे अन्नमन्नस्स० जाव-मिच्छं ते एवमाइंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, जाव एवं परूवेमि-‘एवं खलु राहु देवे महिइणीए, जाव-महेसक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंध-धरे, वरामरणधारी, राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा-सिंघाइए १, जडिलए २, कसए ३, करए ४, द्दुरे ५, मगरे ६, मच्छे ७, कच्छमे ८, कण्हसप्ये ९ । राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवन्ना पण्णत्ता, तंजहा-किण्हा, नीला, लोहिया, हालिहा, सुक्किहा । अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिटवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिहवन्नामे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किए राहुविमाणे भासरसिवन्नामे पण्णत्ते । जया णं राहु आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउत्तमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहु, जदा णं राहु आगच्छमाणे वा गच्छ-माणे वा विउत्तमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ता णं पुरत्थिमेणं वीतीवयति तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहु, एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भणिया तदा दाहिणेण य उत्तरेण य दो आलावगा भाणियत्ता, एवं उत्तरपुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भाणियत्ता, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भाणियत्ता, एवं चेव जाव-तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, दाहिणपुरत्थिमेणं राहु । जदा णं राहु भाग-

षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां (भगवान् गौतम) यावद्-आ प्रमाणे बोल्या-हे भगवन् ! घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत्-ए प्रमाणे प्ररूपे छे के ‘ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने प्रसे छे, ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने प्रसे छे’; हे भगवन् ! एवी रीते केम होय ? [उ०] हे गौतम ! बहु माणसो परस्पर जे कहे छे ते यावत् ए प्रमाणे मिथ्या-असत्य कहे छे. हे गौतम ! हुं तो आ प्रमाणे कहुं छुं, यावद्-आ प्रमाणे प्ररूपुं छुं-ए प्रमाणे खरेखर राहु महर्धिक, (महाशुद्धिवालो) यावद्-महासुखवालो, उत्तम वन्नो, उत्तम माला, उत्तम सुगंध अने उत्तम आभूषण धारण करनार देव छे, ते राहुदेवना नव नामो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ शृंगाटक, २ जटिलक, ३ क्षत्रक, ४ खर, ५ दर्दुर, ६ मकर, ७ मत्स्य, ८ कच्छप अने ९ कृष्णसर्प. ते राहुदेवना विमानो पांच वर्णवाळा कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ काळ, २ नीला (लीला), ३ लाल, ४ पीळा अने ५ शुक्र. तेमां राहुनुं जे काळुं विमान छे ते खंजन-काजळना जेवा वर्णवाळुं छे, जे नील (लीळ) विमान छे ते कान्वा तुंबडाना वर्ण जेवुं छे, जे लाल वर्णनुं राहुनुं विमान छे ते मजिठना वर्ण जेवुं छे, जे पीळुं राहुनुं विमान छे ते हळदरना वर्ण जेवुं छे, अने जे घोळुं विमान छे ते राखना ढगलाना वर्ण जेवुं कहुं छे. ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के काम-क्रीडा करतो राहु पूर्वमां रहेला चंद्रना प्रकाशने आवरीने अक्षिम तरफ जाय त्तारे पूर्वमां चंद्र पोताने देखाडे छे, अर्थात् चन्द्र पूर्वमां देखाय छे, अने पश्चिममां राहु पोताने देखाडे छे, अर्थात् राहु पश्चिममां देखाय छे. ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के काम-क्रीडा करतो राहु पश्चिममां चंद्रना प्रकाशने आवरीने पूर्व तरफ जाय त्तारे पश्चिममां चंद्र पोताने देखाडे छे, अने पूर्वमां राहु पोताने देखाडे छे. ए प्रमाणे जेम पूर्व अने पश्चिमना बे आलापक कह्या तेम दक्षिण अने उत्तरना बे आलापक कहेवा, ए प्रमाणे उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) अने दक्षिण-पश्चिमना (नैर्ऋत कोणना) बे आलापक कहेवा. ए प्रमाणे दक्षिण-पूर्व (अग्निकोण) अने उत्तर-पश्चिमना (वायव्य कोणना) बे आलापक कहेवा. ए रीते यावत्-त्तारे उत्तर-पश्चिम-(वायव्य कोण) मां चन्द्र पोताने

राहु चंद्रने प्रसे छे-
ते संवने प्रस.

राहु देवनुं वर्णव.

राहुना नामो.

राहुना विमानो.

राहु आवतो के जतो
चन्द्रना प्रकाशने
आवरे छे.

ચ્છમાણે ઘા ગચ્છમાણે ઘા ચિહ્નમાણે ઘા પરિચારમાણે ઘા ચંદ્રલેસ્સં આવરેમાણે ૨ ચિદ્વૃત્તિ તદા ણં મણુસ્સલોપ મણુસ્સા વદંતિ—
‘પવં સ્સલુ રાહુ ચંદં ગેણ્હતિ, પવં૦’ ૨ । જદા ણં રાહુ આગચ્છમાણે ૪ ચંદસ્સ લેસ્સં આવરેતા ણં પાસેણ ધીરવચ્ચ તદા ણં
મણુસ્સલોપ મણુસ્સા વદંતિ—‘પવં સ્સલુ ચંદેણં રાહુસ્સ કુચ્છી મિચ્છા, પવં૦’ ૨ । જદા ણં રાહુ આગચ્છમાણે ઘા ૪ ચંદસ્સ
લેસ્સં આવરેતા ણં પચ્ચોસકહ તદા ણં મણુસ્સલોપ મણુસ્સા વદંતિ—‘પવં સ્સલુ રાહુણા ચંદે ઘંતે, પવં૦’ ૨ । જદા ણં રાહુ આગચ્છ-
માણે ઘા ૪ જાવ-પરિચારમાણે ઘા ચંદ્રલેસ્સં અદ્દે સપર્ષિક્ક સપડિદિસિ આવરેતા ણં ચિદ્વૃત્તિ તદા ણં મણુસ્સલોપ મણુસ્સા
વદંતિ—‘પવં સ્સલુ રાહુણા ચંદે ઘત્થે પવં૦’ ૨ ।

૨. [પ્ર૦] કતિવિદ્દે ણં મંતે ! રાહુ પજ્જતે ? [૩૦] ગોયમા ! ટુવિદ્દે રાહુ પજ્જતે, તંજહા-ધુવરાહુ ય પજ્જરાહુ ય । તત્થ
ણં જે સે ધુવરાહુ સે ણં બહુલપક્કસ્સ પાડિવપ પજ્જરસતિમાગેણં પજ્જરસતિમાગં ચંદસ્સ લેસ્સં આવરેમાણે ૨ ચિદ્વૃત્તિ, તંજહા-
પદમાપ પદમં માગં, ચિતિયાપ ચિતિયં માગં, જાવ-પજ્જરસેલુ પજ્જરસમં માગં, ચરિમસમયે ચંદે રસે મવતિ, અવસેસે સમયે
ચંદે રસે ય વિરસે ય મવતિ; તમેવ સુક્કપક્કસ્સ ઉવવંસેમાણે ૨ ચિદ્વૃત્તિ, પદમાપ પદમં માગં, જાવ-પજ્જરસેલુ પજ્જરસમં માગં,
ચરિમસમયે ચંદે વિરસે મવતિ, અવસેસે સમયે ચંદે રસે ય વિરસે ય મવતિ । તત્થ ણં જે સે પજ્જરાહુ સે જહ્ણેણં છ્ણં માસાણં
ઉક્કોસેણં ઘાયાલીસાપ માસાણં ચંદસ્સ, અઢયાલીસાપ સંવચ્છરાણં સુરસ્સ ।

૩. [પ્ર૦] સે કેણ્ણેણં મંતે ! પવં ટુચ્છર-‘ચંદે સસી’ ૨ ? [૩૦] ગોયમા ! ચંદસ્સ ણં જોરસિદ્દસ્સ જોરસરખો મિયંકે
વિમાણે કંતા દેવા, કંતાઓ દેવીઓ, કંતાઈ આસણ-સયણ-સંમ-મંડમત્તોષગરણાઈ, અપ્પણા વિ ય ણં ચંદે જોરસિદ્દે જોરસ-
રાયા સોમે કંતે સુમપ પિયદંસણે સુરુવે, સે તેણ્ણેણં જાવ-સસી ।

૪. [પ્ર૦] સે કેણ્ણેણં મંતે ! પવં ટુચ્છર-‘સૂરે આરુષ્ણે, સૂરે૦ ૨’ ૨ ? [૩૦] ગોયમા ! સૂરાદિયા ણં સમયા ઇ ઘા આવલિયા
ઈ ઘા જાવ-ઉસ્સપ્પિણી ઇ ઘા અવસપ્પિણી ઇ ઘા, સે તેણ્ણેણં જાવ-આરુષ્ણે ।

દેખાડે છે, અને દક્ષિણ-પૂર્વમાં (અગ્નિકોણમાં) રાહુ પોતાને દેખાડે છે. વળી જ્યારે આવતો કે જતો, વિકુર્વણા કરતો કે કામક્રીડા કરતો
રાહુ ચંદ્રની જ્યોત્સ્નાનું આવરણ કરતો ૨ સ્થિતિ કરે, ત્યારે મનુષ્યલોકમાં મનુષ્યો કહે છે કે, ‘એ પ્રમાણે खरेखर રાહુ ચંદ્રને પ્રસે છે.’ એ
પ્રમાણે જ્યારે રાહુ આવતો કે જતો, વિકુર્વણા કરતો કે કામક્રીડા કરતો ચંદ્રના પ્રકાશને આવરીને પાસે થઈને જાય ત્યારે મનુષ્યલોકમાં
મનુષ્યો કહે છે કે—‘એ પ્રમાણે खरेखर ચંદ્રે રાહુની કુક્ષિ મેદી’ ૨, અર્થાત્ રાહુની કુક્ષિમાં પ્રવેશ કર્યો. એ પ્રમાણે આવતો કે જતો, વિકુ-
ર્વણા કરતો કે કામક્રીડા કરતો રાહુ જ્યારે ચંદ્રની લેજ્યાને ઢાંકીને પાછો વળે ત્યારે મનુષ્ય લોકમાં મનુષ્યો કહે છે કે, ‘એ પ્રમાણે खरेखर
રાહુએ ચંદ્રને ઘમ્યો’. વળી એ પ્રમાણે જ્યારે રાહુ આવતો કે યાવત્-કામક્રીડા કરતો ચંદ્રના પ્રકાશને નીચેથી, ચારે દિશાથી અને ચારે વિ-
દિશાથી આવરીને-ઢાંકીને રહે ત્યારે મનુષ્યલોકમાં મનુષ્યો કહે છે કે—‘એ પ્રમાણે खरेखर રાહુએ ચંદ્રને ઘમ્યો.’

રાહુના પ્રકાર.

૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! રાહુ કેટલા પ્રકારના કહ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! રાહુ બે પ્રકારના કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે—ધુવરાહુ
(નિત્યરાહુ) અને પર્વરાહુ. તેમાં જે ધુવરાહુ છે તે કૃષ્ણપક્ષના પડવાથી માંડીને [પ્રતિદિવસ] પોતાના પજ્જરમા ભાગવડે ચન્દ્રલેજ્યા-ચંદ્રવિમ્બ-
સંબન્ધી પજ્જરમા ભાગને ઢાંકતો ૨ રહે છે, તે આ પ્રમાણે—એકમને દિવસે પ્રથમ ભાગને ઢાંકે છે, બીજાના દિવસે બીજા ભાગને ઢાંકે છે, એ
પ્રમાણે યાવત્-અમાવાસ્યાને દિવસે ચંદ્રના પંદરમા ભાગને ઢાંકે છે; અને કૃષ્ણપક્ષને છેલ્લે સમયે ચંદ્ર રક્ત-સર્વથા આચ્છાદિત થાય છે અને
બાકીના સમયે ચંદ્ર રક્ત-અંશથી આચ્છાદિત અને વિરક્ત-અંશથી અનાચ્છાદિત હોય છે. શુક્રપક્ષના પ્રતિપદથી આરંભી (પ્રતિદિવસ) તેજ
ચંદ્રની લેજ્યાના પંદરમા ભાગને દેખાડતો ૨ રહે છે. તે આ પ્રમાણે—પડવાને વિષે પહેલા ભાગને દેખાડે છે, યાવત્ પૂર્ણિમાને વિષે પંદરમા-
ભાગને દેખાડે છે. શુક્રપક્ષના છેવટના સમયે ચન્દ્ર વિરક્ત-રાહુથી સર્વથા મુક્ત હોય છે, અને બાકીના સમયે ચન્દ્ર રક્ત-આચ્છાદિત અને
વિરક્ત-અનાચ્છાદિત હોય છે. તેમાં જે પર્વગહુ છે તે ઓછામાં ઓછાં છ માસે (ચંદ્રને કે સૂર્યને) ઢાંકે છે. અને વધારેમાં વધારે વેતાલીશ-
માસે ચંદ્રને અને વધારેમાં વધારે અઢતાલીશ વરસે સૂર્યને ઢાંકે છે.

રાહુ ચન્દ્રને અને પ-
ર્વને વધારે ઢાંકે ?

શા હેતુથી ચન્દ્રને
સસી (સશ્રી)શોભા-
યુક્ત કહેવાય છે ?

૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શા હેતુથી ચન્દ્રને ‘સસી’ સશ્રી-એ પ્રમાણે કહેવાય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જ્યોતિષ્કના ઇંદ્ર અને જ્યોતિષ્કના
રાજા ચંદ્રના મૃગાંક (મૃગના ચિહ્નવાળા) વિમાનમાં મનોહર દેવો, મનોહર દેવીઓ, મનોહર આસન, શયન, સ્તંભ તથા સુંદર પાત્ર ધારી
ઉપકરણો છે, તથા જ્યોતિષ્કનો રાજા અને જ્યોતિષ્ક ઇંદ્ર ચંદ્ર પોતે પણ સૌમ્ય, કાંત, સુમગ, પ્રિયદર્શન અને સુરુપ છે, તે માટે ચંદ્ર
સસી-સશ્રી-શોભાસહિત કહેવાય છે.

શા હેતુથી સૂર્યને આ-
દિત્ય કહેવાય છે ?

૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શા હેતુથી સૂર્યને આદિત્ય (આદિમાં યયેલો) એમ કહેવાય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સમયો, આવલિકાઓ,
યાવત્-ઉસર્પિણીઓ અને અવસર્પિણીઓના આદિભૂત-કારણ સૂર્ય છે, માટે આદિત્ય-આદિમાં થનાર કહેવાય છે. [અર્થાત્ અહોરાત્રાદિક કાલમાં
સમય-આવલિકા અને મુહૂર્તાદિ મેદો સૂર્યની અપેક્ષાએ થાય છે, માટે સૂર્યને અહોરાત્રાદિક કાલનો આદિભૂત હોવાથી આદિત્ય કહેવાય છે.]

५. [प्र०] चंद्रस्व भं मंते ! जोरसिद्धस्व जोरसरणी कति अनामहिस्त्रीभो पण्णसामो ? [उ०] जहा इसमस्य जाव-जो चैव भं मेहूपचरियं । सुरस्व वि तहेव ।

६. [प्र०] चंद्रिम-सूरिया भं मंते ! जोरसिद्धा जोरसरायाणो केरिस्य कामभोगे पञ्चगुम्भवमाणा विहरंति ? [उ०] भोग्या ! से जहानामय केर पुरिसे पढमजोबुण्डुणवळत्थे पढमजोबुण्डुणवळत्थाय भारियाय सद्धिं भविरवसविवाहकजे, अत्यगवेसवयाय सोळसवासविप्यवासिय, से भं तभो लद्धे, कयकजे, अणइसमग्गे पुणरवि नियगगिहं ह्वमागए, ण्हाय कयवळिकम्मे, कयकोउय-मंगलपायळिसे, सच्चालंकारविभूसिय, मणुणं थालिपागसुद्धं अट्टारसबंजणाकुलं भोग्यं भुसे समाणे, तंसि तारिसगंसि वासघरंसि, वचभो महप्पले कुमारे, जाव-सयणोवयारकलिय ताए तारिसियाय भारियाय सिंगारागारचार-वेसाय जाव-कलियाय मणुरत्ताय भविरत्ताय मणाणुहूलाय सद्धिं इहे सहे फरिसे जाव-पंचविहे माणुस्सय कामभोगे पञ्चगु-म्भवमाणे विहरेआ, से भं गोयमा ! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोफ्णं पञ्चगुम्भवमाणो विहरति ? मोरालं समणाउसो ! तस्व भं गोयमा ! पुरिसस्व कामभोगेहितो चाणमंतदणं देवाणं एसो अनंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा, चाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहितो असुरिद्वजियाणं भवणवासीणं देवाणं एसो अनंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा, असुरि-द्वजियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहितो असुरकुमारणं देवाणं एसो अनंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा, असुरकु-मारणं देवाणं कामभोगेहितो गहगण-नक्षत्र-ताराकवारणं जोतिसियाणं देवाणं एसो अनंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा, गहगण-नक्षत्र-जाव-कामभोगेहितो चंद्रिम-सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एसो अनंतगुणविसिद्धतरा चैव कामभोगा, चंद्रिम-सूरिया भं गोयमा ! जोतिसिद्धा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पञ्चगुम्भवमाणा विहरंति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' चि भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव-विहर ।

छद्मो उद्देशो समचो ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिषिकना इन्द्र अने ज्योतिषिकना राजा चंद्रने केटली पहरणीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम "दशम शतकमां कर्णुं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत्-[पोतानी राजधानीमां सिंहासन विषे जिनना कस्थिओतुं संनिधान होवापी] 'मैथुन विभित्ते देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ नथी' स्यां सुधी जाणवुं, तथा सूर्य संबंधे एण तेज प्रमाणे जणवुं.

चंद्रने अनामहि-
स्त्रीभो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिषिकना इन्द्र अने राजा, चंद्र अने सूर्य केवा प्रकारना कामभोगोने भोगवता विहरे छे ? [उ०] जेम प्रथम युवावस्थाना प्रारंभमां बलवान् कोइ एक पुरुषे प्रथम उगती युवावस्थामां बळवाळी भार्या साथे ताजौज विवाह करी, अत्ते पछी ते धन मेळववा माटे सोळवरस सुधी परदेश गयो, अने ते धनने मेळवी, कार्य समाप्त करी समस्त विघ्नरहितपणे पाछो पोताने घेर तुरत आव्यो, ज्ञान करी, बलिकर्म-पूजा करी, कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करी तथा सर्वालंकारथी विभूषित धई मनोह, अने स्थालीमां पाक करवा वडे छुद्ध तथा अट्टार प्रकारना व्यंजन-शाकादिथी युक्त भोजन कर्या बाद महिबल उद्देशकमां वासगृहनुं वर्णन कर्युं छे तेवा प्रकारना-शयनो-पचार युक्त वासगृहमां यावत्-तेवा प्रकारनी उत्तम शृंगारना गृहरूप सुंदर वैषवाळी, यावत्-कलित-कलायुक्त, अनुरक्त, अस्यन्त रागयुक्त, अने मनने अनुकूल एवी बी साथे इष्ट शब्द, स्पर्श यावत्-पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोने भोगवतो विहरे छे, हे गौतम ! हवे ते पुरुष वेदोपशमनना-विकार शांतिना-समये केवा प्रकारना मुखने भोग्ये ? हे आयुष्मन् भ्रमण ! ते पुरुष उदार मुखने अनुभवे. हे गौतम ! ते पुरुषना कामभोगो करतां वानव्यंतर देवोने अनंतगुण विशिष्टतर कामभोगो होय छे. वानव्यंतर देवोना कामभोगोथी असुरेन्द्र सिंहायना भवनवासी देवोने अनंतगुण विशिष्टतर कामभोगो होय छे, असुरेन्द्र सिंहाय भवनवासी देवोना कामभोगो करतां असुरकुमार देवोना कामभोगो अनंतगुण विशिष्टतर होय छे, असुरकुमार देवोना कामभोगो करतां अनंतगुण विशिष्टतर कामभोगो ज्योतिषिक देवरूप प्रहगण, नक्षत्र अने ताराओने होय छे. ज्योतिषिक देवरूप प्रहगण, नक्षत्र अने ताराओना कामभोगो करतां अनंतगुण विशि-ष्टतर कामभोगो ज्योतिषिकना इन्द्र अने ज्योतिषिक देवोना राजा चन्द्र तथा सूर्यने होय छे. हे गौतम ! ज्योतिषिकना इन्द्र, अने ज्योतिषिकना राजा चंद्र अने सूर्य आवा प्रकारना कामभोगोने अनुभवता विहरे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही मगवान् गौतम भ्रमण भगवंत महावीरने (वांदी अने नमी) यावद् विहरे छे.

सूर्य अने चन्द्र केव
प्रकारना कामभोगो
भोग्ये छे ?

इन्द्रश्च इते बहु उद्देशक समाप्त.

५ * अम० सं० १ अ० १० उ० १० पु० २०२ ए० २२.

६ † अम० सं० १ अ० ११ उ० ११ पु० २२६ ए० १५.

‡ अहिं कामभोगोना मुखने-सुखाभासने उदार मुख तरीके कर्णुं ते प्राकृत कननी दृष्टिए समजवुं, कसलिक पीते तो ते दुःखरूप व छे.—अनुवादक.

सत्तमो उद्देशओ ।

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समपणं जाव-एवं वयासी-केमहालय णं मंते ! लोए पञ्चसे ? [उ०] गोयमा ! महत्तिमहालय लोए पञ्चसे, पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखिज्जाओ एवं चेव, एवं पञ्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उहं पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विष्खंमेणं ।

२. [प्र०] एयंसि णं मंते ! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेसे वि पपसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाय वा, न मए वा वि ? [उ०] गोयमा ! नो इण्टे समट्टे । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चइ-‘एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेसे वि पपसे, जत्थ णं अयं जीवे ण जाय वा, न मए वा वि’ ? [उ०] गोयमा ! सेज्जहानामए-केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, से णं तत्थ जहणेणं एगं वा दो वा तिज्जि वा, उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्किवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहणेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेसे वि पपसे, जे णं तासि अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिघाणएण वा वंतेण वा पिसेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणकंतपुत्ते भवइ ? णो तिणट्टे समट्टे, होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेसे वि पपसे, जे णं तासि अयाणं उच्चारेण वा जाव-णहेहिं वा अणकंतपुत्ते, णो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगंसि लोगस्स य सासयं भावं, संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य णिच्चभावं, कम्मवहुत्तं, जम्मण-मरणवाहुत्तं च पडुच्च नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेसे वि पपसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाय वा न मए वा वि, से तेणट्टेणं तं चेव जाव-न मए वा वि ।

सप्तम उद्देशक.

लोकतुं महत्त.

१. [प्र०] ते काले-ते समये यावद्-[भगवान् गौतम] आ प्रमाणे बोल्या के-हे भगवन् ! लोक केटलो मोटो कइओ छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक अत्यन्त मोटो कइओ छे; ते पूर्व दिशाए असंख्य कोटाकोटी योजन छे, दक्षिण दिशाए ए प्रमाणे असंख्याता कोटाकोटी योजन छे, ए प्रमाणे पश्चिम दिशाए अने उत्तर दिशाए छे. तथा एज प्रमाणे ऊर्ध्व-उपर अने नीचे पण असंख्य कोटाकोटी योजन आयाम-लंबाई अने विष्कंभ-विस्तारथी छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आ एवडा मोटा लोकमां एवो कोइ परमाणुपुद्गलना जेटलो पण प्रदेश छे के, ज्यां आ जीव उत्पन्न थयो न होय, अने मरण पाम्यो पण न होय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के-‘आ एवडा मोटा लोकमां एवो कोइ परमाणुपुद्गलमात्र पण प्रदेश नथी, के ज्यां आ जीव उत्पन्न थयो न होय अने मर्यो न होय’ ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष सो बकरीने माटे एक मोटो अजाबज-बकरीनो बाडो-करे, तथा तेमां ओछामां ओछी एक, बे के त्रण अने वधारेमां वधारे एक हजार बकरीओ नाखे, अने ते बाडामां घणुं पाणी अने घणुं गोचर-चरवानुं स्थळ-होवाथी ते बकरीओ जघन्यथी एक दिवस, बे दिवस के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी छ मास सुधी रहे, तो हे गौतम ! ते बाडानो एवो कोइ परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश होय के जे ते बकरीओनी छिडिओथी, मूत्रथी, श्लेष्मथी, नाकनां मळथी, वमनथी, पित्तथी, शुक्रथी, लोहिथी, चामडाथी, रोमथी, शिंगडाथी, खरीथी अने नखथी पूर्वे स्पर्श न करायेलो होय ? [हे भगवन् !] ए अर्थ यथार्थ नथी. हे गौतम ! कदाच कोइ एक परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश होय के जे ते बकरीओनी लीडोओथी, यावत् नखोथी पूर्वे स्पर्श न करायेलो होय. तो पण आ एवडा मोटा लोकमां लोकना शाश्वत भावने लहने, संसारना अनादिपणाने लीचे, जीवना नित्य भावने आश्रयी, अने कर्मनी बहुलताने अने जन्म तथा मरणनी बहुलताने अपेक्षी एवो कोइ परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश नथी के ज्यां आ जीव न जन्म्यो होय के न मर्यो होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी पूर्वोक्त यावत्-‘ते मर्यो न होय.’

૩. [પ્ર૦] કતિ ણં મંતે ! પુઢવીમો પળ્ણસામો ? [૩૦] ગોયમા ! સત્ત પુઢવીમો પળ્ણસામો, જહા પહમસપ પંચમડ-હેસપ તહેવ આવાસા ઠાવેયઘા, જાવ-અણુત્તરવિમાણેસિ, જાવ-અપરાજિપ સઘ્ઠસિચે ।

૪. [પ્ર૦] અયં ણં મંતે ! જીવે ઇમીસે રયળ્ણપ્પમાપ પુઢવીપ તીસાપ નિરયાવાસસયસહસ્સેણુ પળ્ણમેગંસિ નિરયાવાસંસિ પુઢવિકાઠ્ઠયાપ, જાવ-વળ્ણસ્સહકાઠ્ઠયાપ, નરગસાપ, નેરયસાપ ઉવવન્નપુઢે ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! અસરં, અણુવા અણં-તણુસો ।

૫. [પ્ર૦] સઘ્ઠજીવા વિ ણં મંતે ! ઇમીસે રયળ્ણપ્પમાપ પુઢવીપ તીસાપ ણિરયા૦ [૩૦] તં ચેવ જાવ-અણંતણુસો ।

૬. [પ્ર૦] અયં મંતે ! જીવે સઠ્ઠરપ્પમાપ પુઢવીપ પળ્ણવીસા૦ [૩૦] એવં જહા રયળ્ણપ્પમાપ તહેવ ઠો આલાવગા માણિ-વઘ્ઠા, એવં જાવ-ધૂમપ્પમાપ ।

૭. [પ્ર૦] અયં મંતે ! જીવે તમાપ પુઢવીપ પંચૂણે નિરયાવાસસયસહસ્સેણુ પળ્ણમેગંસિ૦ [૩૦] સેસં તં ચેવ ।

૮. [પ્ર૦] અયં મંતે ! જીવે મહેસત્તમાપ પુઢવીપ પંચણુ અણુત્તરેણુ મહતિમહાલણુ મહાનિરણુ પળ્ણમેગંસિ નિરયાવા-સંસિ૦ [૩૦] સેસં જહા રયળ્ણપ્પમાપ ।

૯. [પ્ર૦] અયં મંતે ! જીવે ચડસઠ્ઠીપ અણુરકુમારાવાસસયસહસ્સેણુ પળ્ણમેગંસિ અણુરકુમારાવાસંસિ પુઢવિકાઠ્ઠયા-પ, જાવ-વળ્ણસ્સહકાઠ્ઠયાપ વેવસાપ વેવિસાપ આસળ-સયળ-મંડમત્તોવગરણસાપ ઉવવન્નપુઢે ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! જાવ-અણંતણુસો । સઘ્ઠજીવા વિ ણં મંતે ! એવં ચેવ, એવં જાવ-ધણિયકુમારેણુ । નાણસં આવાસેણુ, આવાસા પુઢ્ઠમણિયા ।

૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! પૃથિવીઓ કેટલી કહી છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સાત પૃથિવીઓ કહી છે, અહીં પ્રથમ શતકના પંચમ *ઉદે-શકમાં કહ્યા પ્રમાણે નરકાદિના આવાસો કહેવા, એ પ્રમાણે યાવત્-અનુત્તરવિમાન, યાવત્-અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધ સુધી જાણવું.

નરકપૃથિવી.

૪. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આ જીવ આ રક્ષપ્રમા પૃથિવીમાં અને તેના ત્રીસ લાખ નરકાવાસોમાંના એક એક નરકાવાસમાં પૃથ્વીકાયિક-કપણે, યાવત્-વનસ્પતિકાયિકપણે, નરકપણે, નૈરયિકપણે, પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! અનેકવાર અથવા અનંતવાર પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે.

આ જીવ રક્ષપ્રમાના એક એક નરકાવાસમાં પૃથિવીકાયિકાદિકપણે ઉત્પન્ન થયો છે ?

૫. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! સર્વ જીવો પણ આ રક્ષપ્રમા પૃથિવીમાં અને તેના ત્રીસ લાખ નરકાવાસમાંના [એક એક નરકાવાસમાં પૃથિવીકાયિકપણે, યાવત્-વનસ્પતિકાયિકપણે યાવત્-પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે ત્યાં અનેકવાર અથવા] યાવત્-અનંતવાર પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે.

સર્વ જીવો.

૬. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આ જીવ શર્કરાપ્રમાના પચીસ લાખ નરકાવાસમાંના એક એક નરકાવાસમાં પૃથિવીકાયિકપણે યાવત્ વન-સ્પતિકાયિકપણે યાવત્-પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] જેમ રક્ષપ્રમાના બે આલાપક કહ્યા તેમ શર્કરાપ્રમાના પણ [એક જીવ અને સર્વ જીવ આશ્રયી] બે આલાપક કહેવા. એ પ્રમાણે યાવત્-ધૂમપ્રમા સુધી આલાપક કહેવા.

શર્કરાપ્રમાના નર-કાવાસમાં પૃથિવીકાયિકાદિકપણે ઉત્પન્ન થયો છે ?

૭. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આ જીવ તમાપૃથિવીમાંના પાંચ ન્યૂન એક લાખ નિરયાવાસમાંના એક એક નરકાવાસમાં [પૃથિવીકાયિકપણે યાવત્-વનસ્પતિકાયિકપણે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ?] [૩૦] બાકી બધું પૂર્વે પ્રમાણે જાણવું.

તમા પૃથિવી.

૮. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આ જીવ અધઃસત્તમ નરકપૃથિવીના પાંચ અનુત્તર અને અલ્પન્ત મ્હોટા નરકાવાસોમાંના એક એક નરકા-વાસમાં પૂર્વે ઉત્પન્ન થયો છે ? [૩૦] બાકી બધું રક્ષપ્રમાની પેઠે જાણવું.

સત્તમ પૃથિવીમાં પૂર્વે ઉત્પન્ન થયો છે ?

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! આ જીવ અણુરકુમારોના ચોસઠ લાખ અણુરકુમારાવાસોમાંના એક એક અણુરકુમારાવાસમાં પૃથિવીકાયિકપણે, યાવત્-વનસ્પતિકાયિકપણે, દેવપણે, દેવીપણે, આસળ, શયન અને પાત્ર વગેરે ઉપકરણપણે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! યાવત્-અનંતવાર ઉત્પન્ન થયેલો છે. સર્વ જીવો એ પ્રમાણે જાણવા. એ પ્રમાણે યાવત્-'સ્તનિતકુમારો' સુધી જાણવું, પરન્તુ તેઓના આવાસોની સંખ્યામાં મેદ છે, અને એ આવાસો પૂર્વે કહેલા છે.

અણુરકુમાર.

१०. [प्र०] अयं णं मंते ! जीवे असंख्येज्जेसु पुडविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुडविकाइयावासंसि पुडविकाइ-
यत्ताए जाव-वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुब्बे ! [उ०] इंता गोयमा ! जाव-अणंतखुत्तो । एवं सन्नजीवा वि, एवं जाव-वण-
स्सइकाइयत्ताए ।

११. [प्र०] अयं णं मंते ! जीवे असंख्येज्जेसु बेइदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेइदियावासंसि पुडविकाइयत्ताए, जाव-
वणस्सइकाइयत्ताए, बेइदियत्ताए उववन्नपुब्बे ! [उ०] इंता गोयमा ! जाव-खुत्तो । सन्नजीवा वि णं एवं खेव, एवं जाव-अणु-
स्सेसु, नवरं तेंदियत्ताए जाव-वणस्सइकाइयत्ताए तेंदियत्ताए, चउरिंदियत्ताए चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियत्ताए चउरिंदियत्ताए,
पंचिंदियत्ताए चउरिंदियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेइदियाणं, वाणमंतर-जोइसिय-सोइम्मो-साणाणं य जहा
असुरकुमारणं ।

१२. [प्र०] अयं णं मंते ! जीवे सणकुमारे कप्पे बारससु विमानावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुड-
विकाइयत्ताए० [उ०] सेसं जहा असुरकुमारणं जाव-अणंतखुत्तो, नो खेव णं देवत्ताए, एवं सन्नजीवा वि, एवं जाव-आणव-
पाणत्ताए, एवं आरण-अणुत्ताए वि ।

१३. [प्र०] अयं णं मंते ! जीवे तिसु वि अट्टारसुत्तरेसु गेविअविमानावाससयेसु० [उ०] एवं खेव ।

१४. [प्र०] अयं णं मंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुडवि० [उ०] तदेव जाव-
अणंतखुत्तो, नो खेव णं देवत्ताए वा देवीत्ताए वा, एवं सन्नजीवा वि ।

१५. [प्र०] अयं णं मंते ! जीवे सन्नजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भजत्ताए, पुत्तत्ताए, भू-
त्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुब्बे ! [उ०] इंता गोयमा ! असइं, अनुवा अणंतखुत्तो ।

१६. [प्र०] सन्नजीवा वि णं मंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव-उववन्नपुब्बे ! [उ०] इंता गोयमा ! जाव-
अणंतखुत्तो ।

पृथिवीकायिकावास-
मां पूर्वे उत्पन्न
थयो छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव असंख्याता लाख पृथिवीकायिकावासमांना एक एक पृथिवीकायिकावासमां पृथिवीकायिकपणे
यावद्-वनस्पतिकायिकपणे पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावद्-अनंतवार उत्पन्न थएलो छे; ए प्रमाणे सर्व जीवो पण
जाणवा. ए प्रमाणे यावद्-वनस्पतिकायिकोमां पण जाणवुं.

बेइन्द्रियावासमां पूर्वे
उत्पन्न थयो छे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव असंख्याता लाख बेइन्द्रियावासमांना एक एक बेइन्द्रियावासमां पृथिवीकायिकपणे, यावद्-
वनस्पतिकायिकपणे अने बेइन्द्रियपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! त्यां यावद्-अनंतवार उत्पन्न थएलो छे. सर्व जीवो पण ए
प्रमाणे जाणवा, ए प्रमाणे यावद्-मनुष्योमां जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, ते इन्द्रियोमां यावद्-वनस्पतिकायिकपणे, यावद् ते इन्द्रियपणे;
चउरिंदियोमां चउरिंदियपणे, पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकोमां पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकपणे, अने मनुष्योमां मनुष्यपणे उत्पत्ति जाणवी. बाकी बहुं
बेइन्द्रियोनी पेठे जाणवुं. जेम असुरकुमारो संबंधे कहुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशानमां पण जाणवुं.

सन्नकुमारकल्पमां.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सन्नकुमार कल्पमां तेना बार लाख विमानावासमांना एक एक वैमानिकावासमां पृथिवीकायपणे,
यावद्-पूर्वे उत्पन्न थयलो छे ? [उ०] बाकीतुं बहुं असुरकुमारोनी पेठे (सू० ९) यावद्-अनंतवार उत्पन्न थएलो छे' त्यां सुची जाणवुं. पण
त्यां देवीपणे उत्पन्न थयो नथी. ए प्रमाणे सर्व जीवो संबंधे पण जाणवुं. ए प्रमाणे यावद्-आनत अने प्राणतमां तथा आरण-अणुत्तामां
पण जाणवुं.

अनेक विमाना-
वासमां.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव त्रणसोने अट्टार अनेक विमानावासमांना एक एक आवासमां पृथिवीकायिकपणे, यावद्-पूर्वे
उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं. (यावद्-अनंतवार उत्पन्न थएलो छे.)

अनुत्तर विमाना-
वासमां.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव पांच अनुत्तर विमानोमांना एक एक अनुत्तर विमानमां पृथिवीकायिकपणे, (यावद्-पूर्वे उत्पन्न थएलो
छे ?) [उ०] ते प्रमाणे यावद्-अनंतवार उत्पन्न थएलो छे, पण देवपणे अने देवीपणे उत्पन्न थयो नथी. ए प्रमाणे सर्व जीवो पण जाणवा.

आ जीव सर्व जीवोना
माता पिता इत्यादि
संबंधकपणे उत्पन्न
थयो छे ?

१५. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना मातापणे, पितापणे, भाईपणे, बहैनपणे, स्त्रीपणे, पुत्रपणे, पुत्री अने पुत्रवधूपणे पूर्वे
उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! अनेकवार, अथवा अनंतवार उत्पन्न थयलो छे.

सर्व जीवो आ जीवोना
माता इत्यादि संब-
ंधकपणे उत्पन्न
थयो छे ?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व जीवो पण आ जीवोना मातापणे, यावद्-पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावद्-अनेक-
वार अथवा अनंतवार उत्पन्न थयो छे.

૧૭. [પ્ર૦] અચળં મંતે ! જીવે સજ્જીવાણં અરિષ્ણાય, વૈરિષ્ણાય, ઘાતગણાય, વહગણાય, પઢિળીયણાય, પચ્ચામિષ્ણાય ઉત્પન્નપુષ્પે ? [ઉ૦] હંતા ગોયમા ! જાવ—અણંતલુચ્છો ।

૧૮. [પ્ર૦] સજ્જીવા વિ જં મંતે ! [ઉ૦] ઇવં ચેવ ।

૧૯. [પ્ર૦] અચળં મંતે ! જીવે સજ્જીવાણં રાયણાય, યુવરાયણાય, જાવ—સત્યવાહણાય ઉત્પન્નપુષ્પે ? [ઉ૦] હંતા ગોયમા ! અસતિ, જાવ—અણંતલુચ્છો । સજ્જીવાણં ઇવં ચેવ ।

૨૦. [પ્ર૦] અચળં મંતે ! જીવે સજ્જીવાણં દાસણાય, પેસણાય, મચગણાય, માણ્ણગણાય, મોગપુરિસણાય, સીસણાય, વૈસણાય ઉત્પન્નપુષ્પે ? [ઉ૦] હંતા ગોયમા ! જાવ—અણંતલુચ્છો । ઇવં સજ્જીવા વિ અણંતલુચ્છો । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે'ચિ જાવ—વિહરે ।

સત્તમો ઉદ્દેશકો સમાપ્તો ।

૧૭. [પ્ર૦] હે મગધન્ ! આ જીવ સર્વે જીવોના શત્રુપણે, વૈરિપણે, ઘાતકપણે, વધકપણે, પ્રત્યનીકપણે અને શત્રુના મિત્રપણે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [ઉ૦] હા, ગૌતમ ! યાવદ્—અનંતવાર ઉત્પન્ન થયો છે.

આ જીવ સર્વે જીવોના શત્રુરૂપે ઉત્પન્ન થયો છે !

૧૮. [પ્ર૦] હે મગધન્ ! બધા ય જીવો (આ જીવોના વૈરિપણે યાવદ્—પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ?) [ઉ૦] એ પ્રમાણે જાણવું.

સર્વે જીવો.

૧૯. [પ્ર૦] હે મગધન્ ! આ જીવ સર્વે જીવોના રાજાતરીકે, યુવરાજતરીકે યાવદ્—સાર્થવાહતરીકે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [ઉ૦] હા ગૌતમ ! અનેકવાર અથવા અનંતવાર ઉત્પન્ન થયો છે. એ પ્રમાણે સર્વે જીવો સંબંધે પણ જાણવું.

આ જીવ સર્વે જીવોના રાજા તરીકે ઉત્પન્ન થયેલો છે !

૨૦. [પ્ર૦] હે મગધન્ ! આ જીવ સર્વે જીવોના દાસપણે પ્રેમ્ય—ચાકરપણે, શ્રુતકપણે, માગીદારપણે, મોગપુરુષપણે (વીજાએ ઉપાર્જેલા ધનનો મોગ કરનારપણે), શિષ્યપણે, અને શત્રુપણે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલો છે ? [ઉ૦] હા ગૌતમ ! યાવદ્—અનંતવાર ઉત્પન્ન થયો છે, એ પ્રમાણે સર્વે જીવો પણ યાવદ્ અનંતવાર ઉત્પન્ન થયા છે. 'હે મગધન્ ! તે એમજ છે, હે મગધન્ ! તે એમજ છે.'—એમ કહી યાવદ્—વિહરે છે.

આ જીવ સર્વે જીવોના દાસરૂપે ઉત્પન્ન થયેલો છે ! સર્વે જીવો.

દ્વાદશ શ્લોકે સત્તમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

अट्टमो उद्देशओ ।

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव-एवं वयासी-देवे णं भंते ! महिहीए जाव-महेसकणे अणंतरं अयं चरत्ता विसरीरेसु नागेसु उववजेजा ? [उ०] हंता गोयमा ! उववजेजा ।
२. [प्र०] से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूहय-सत्कारिय-सम्माणिय दिसे सखे सखोवाप संनिहियपाडिहेरे यावि भवेजा ? [उ०] हंता, भवेजा ।
३. [प्र०] से णं भंते ! तभोहितो अणंतरं उच्चट्टिता सिज्जेजा, बुज्जेजा, जाव-अंतं करेजा ? [उ०] हंता सिज्जेजा, जाव-अंतं करेजा ।
४. [प्र०] देवे णं भंते ! महिहीए एवं खेव जाव-विसरीरेसु मणीसु उववजेजा । [उ०] एवं खेव जहा नागाणं ।
५. [प्र०] देवे णं भंते ! महिहीए जाव-विसरीरेसु रुक्खेसु उववजेजा ? [उ०] हंता, उववजेजा एवं खेव, नवरं इमं नाणत्तं-जाव-सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिते यावि भवेजा ? हंता भवेजा, सेसं तं खेव जाव-अंतं-करेजा ।

अष्टम उद्देशक.

महाकडिवाळो देव
शरीरे मात्र वेसरीर-
काळ नागोमां उपजे ?

१. [प्र०] ते काले, ते समये, [भगवान् गौतम] यावद्-आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! महाकडिवाळो यावद्-महासुखवाळो देव च्यवीने-मरण पाणीने तुरतज मात्र *वे शरीरनेज धारण करनारा नागोमां, (सर्प अथवा हाथीमां) उत्पन्न थाय ? [उ०] हा गौतम ! उत्पन्न थाय.

नागना जन्ममां
अर्चित पूजित थाय ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! त्यां ते नागनां जन्ममां अर्चित, वंदित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित, दिव्य, प्रधान, सत्य, सखावपातरूप (जेनी सेवा सफल छे एवो) ते संसारनो अन्त करे, अने पासे रहेला [पूर्वना संबन्धी देवोए] जेनुं प्रतिहार कर्म कर्युं छे एवो थाय ? [उ०] हा थाय.

वे शरीरवाळा मणि-
मां उत्पन्न थाय ?

३. [प्र०] ते त्यांथी मरण पाणीने सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, यावद्-संसारनो अन्त करे ? [उ०] हा, सिद्ध थाय, यावद्-अन्त करे.

४. [प्र०] हे भगवन् ! महर्षिक देव-ए प्रमाणे यावद्-वे शरीरवाळा मणिमां उत्पन्न थाय ? [उ०] ए प्रमाणे नागनी पेटे जाणवुं.

वे शरीरवाळा वृक्षमां
उत्पन्न थाय ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! महर्षिक यावद्-महासौख्यवाळो देव वे शरीरनेज धारण करनारा वृक्षोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! उत्पन्न थाय-इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के 'जे वृक्षमां ते उत्पन्न थाय ते वृक्ष यावत्-समीपमां रहेखां देवकृत प्रतिहार्यवाळुं थाय, तथा [ते वृक्ष] छाणथी लंपेल अने खडीथी धोळेल होय, बाकी वधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावद्-'ते संसारनो अन्त करे.'

१ * जेभो नागनुं शरीर छोडीने मनुष्यशरीरने पानी मोक्ष प्राप्त करछे ते मात्र वे शरीरने धारण करनारा नागो कहेवाय छे.

५ † प्रतिहारकर्म-पासे रही तेनुं रक्षणादि कार्य करवुं.

‡ देवाभिरुचित विविध वृक्षो बद्धपीठवाळा होय छे, तेथी तेनी पीठ-चोतरो छाणवगेरेथी लंपेल अने खडी वगेरेथी धोळेल होय छे-टीका.

३. [प्र०] अहं भंते ! गोलंगूलवसमे, कुकुडवसमे, मंडुकवसमे-एष षं निस्सीला निन्नया निग्गुणा निम्मेरा निप्पव-
वत्ताण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पमाए पुडवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्टितीयंसि नरगंसि नेरएयत्ताए
उववजेजा ? [उ०] समणे भगवं महावीरे वागरेए-‘उववज्जमाणे उववजे’सि वत्तं सिया ।

७. [प्र०] अहं भंते ! सीहे वग्गे जहा उस्स(मोस)पिणीउहेसए जाव-परस्सरे-एष षं निस्सीला० [उ०] एवं चेव
जाव-वत्तं सिया ।

८. [प्र०] अहं भंते ! ङंके कंके विलए मन्नुए सिन्धी-एष षं निस्सीला० [उ०] सेखं तं चेव जाव-वत्तं सिया । ‘सेवं
भंते ! सेवं भंते !’ सि जाव-विहरए ।

अहमो उरेसो समत्तो ।

६. [प्र०] हे भगवन् ! वानरवृषभ-मोटो वानर, मोटो कुकडो, अने मोटो देडको-ए वधा शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्या-
दारहित, प्रभाख्यान अने पौषधोपवासरहित मरणसमये काल करी आ रत्नप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्टथी सागरोपमनी स्थितिवाळा नरकमां नैर-
यिकपणे उत्पन्न थाय ? [उ०] श्रमण भगवंत महावीर कहे छे के [हा नैरयिकरूपे उत्पन्न थाय,] कारण के *जे उपजतुं होय ते ‘उत्पन्न
थयुं’ एम कहेवाय.

वानर वगेरे जीवी
रत्नप्रभां उत्पन्न
थाय ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! सिंह, वाघ-वगेरे अवसरिणी उद्देशकमां कच्चा प्रमाणे यावत्-परासर-ए वधा शीलरहित-इत्यादि यावत्
[उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

सिंह वगेरे एव नैर-
यिक पणे उत्पन्न ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! कागडो, गीध, वीलक, देडको अने मोर-ए वधा शीलरहित-इत्यादि प्रभ. [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणवुं.
हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’-एम कही यावद्-विहरे छे.

काक वगेरे.

द्वादशशते अष्टम उद्देशक समाप्त.

६ * जे समये वानरादि छे ते समये ते नारकरूपे नथी, माटे ते नारकरूपे केम उत्पन्न थाय ? आ प्रश्नना उत्तरमां भगवान् महावीर कहे छे के ‘जे
उत्पन्न होय ते उत्पन्न थएलें’ एम कहेवाय, माटे वानरादि नारकरूपे जे उत्पन्न थवाना छे ते उत्पन्न थएला एम कहेवाय-टीका.

नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कश्चिद्वा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा—१ भवियद्वदेवा, २ नरदेवा, ३ धम्मदेवा, ४ देवाहिदेवा, ५ भावदेवा ।

२. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध—भवियद्वदेवा भवियद्वदेवा ? [उ०] गोयमा ! जे भविय पंचिदियतिरिक्ख-ओणिय वा मणुस्से वा देवेषु उववज्जित्तप से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्ध—‘भवियद्वदेवा २’ ।

३. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध—‘नरदेवा नरदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतत्तकवही उप्पत्त-समत्तत्तकरयण्यहाणा नवनिहिपरणो समिद्धकोसा वत्तीसंरायवरत्तहस्त्राजुयातमग्गा काणवरमेहकाहिद्वयो मणुस्सिदा, से तेणट्टेणं जाव—‘नरदेवा २’ ।

४. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध—‘धम्मदेवा धम्मदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अणत्तारा भगवंतो इरियात्त-मिया, जाव—गुत्तवंभयारी, से तेणट्टेणं जाव—‘धम्मदेवा २’ ।

नवम उद्देशक.

देवोवा भव्यदेवादि
प्रकार.

१. [प्र०] हे भगवन् ! देवो केटला प्रकारना कस्सा छे ? [उ०] हे गौतम ! देवो पांच प्रकारना कस्सा छे, ते आ प्रमाणे—१ भव्य-द्रव्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव अने ५ भावदेव.

भव्यद्रव्यदेव कहेबाजुं
कारण.

२. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी ‘भव्यद्रव्यदेव’ ‘भव्यद्रव्यदेव’—एम् कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! जे पंचेन्द्रियतिर्यचयो-निक के मनुष्य देवोमां उत्पन्न यवाने भव्य—योग्य छे, ते माटे ते ‘भव्यद्रव्यदेव’ २ कहेवाय छे.

नरदेव.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी ‘नरदेव’ ‘नरदेव’—एम् कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! जे आ राजाओ चार विशाना अन्तना स्वामी चक्रवर्तीओ छे, जेने समस्त रत्नोमां प्रधान चक्ररत्न उत्पन्न थयुं छे एवा, नव निधिना स्वामिओ, समृद्ध भंडारवाळा, जेओनो मार्ग वतीस हजार राजाओ वडे अनुसराय छे एवा, महासागररूप उत्तम मेखलापर्यन्त पृथ्वीना पति अने मनुष्यना इंद्रो छे ते माटे ‘नरदेवो’ ‘नरदेवो’—एम् कहेवाय छे.

धर्मदेव.

४. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ‘धर्मदेव’ ‘धर्मदेव’—एम् कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! जे आ अनगर भगवंतो, इर्यासमितिवाळा यावद्—गुप्त ब्रह्मचारी छे, माटे ते हेतुथी ‘धर्मदेव’ ‘धर्मदेव’—एम् कहेवाय छे.

१ * भव्यद्रव्यदेव—अहि द्रव्यशब्द अप्राधान्यवाचक छे, भूतकाळमां देवत्वपर्यायने प्राप्त भयेला अथवा भविष्य काळमां देवपणाने प्राप्तनार, वर्तमानमां देवता गुणधी शून्य होबाधी अप्रधान एवा द्रव्यदेव कहेवाय छे, तेमां भविष्यमां देवपणाने प्राप्त बनार भव्यद्रव्यदेव कहेवाय छे. २ नरदेव—मनुष्योधी देवनी पेटे आराधना लायक नरदेव कहेवाय छे. ३ धर्मदेव—शुद्धादि धर्मवडे देवो जेवा, अथवा जेने धर्म प्रधान छे एवा ‘धार्मिक देवोने’ धर्मदेव कहे छे. ४ देवाधिदेव—पारमार्थिक देवपणुं होबाधी सामान्य देवो करतां अधिक—भेष्ठ देवाधिदेव कहेवाय छे, अथवा देवाधिदेव पण कहे छे. ५ भावदेव—देवगत्यादि कर्मना उद्यधी देवपणानो अनुभव करनार भावदेव कहेवाय छे.

५. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुबुद्द—‘देवाधिदेवा देवाधिदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उत्पन्न-
जाव—इंसणचरा जाव—सत्तपरिसी, से तेणट्टेणं जाव—‘देवाधिदेवा’ २ ।

६. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुबुद्द—‘भावदेवा भावदेवा’ ? [उ०] गोयमा ! जे इमे भवणवद्द—वाणमंतर—जोहस—
वेमाणिया देवा देवगतिनामगोयाइं कम्मइं वेदंति, से तेणट्टेणं जाव—‘भावदेवा’ २ ।

७. [प्र०] भवियदद्ददेवा णं मंते ! कम्मोहितो उव्वज्जंति, किं नेरत्तपहितो उव्वज्जंति, तिरिक्ख० मणुस्स० देवेहितो
उव्वज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नेरत्तपहितो उव्वज्जंति, तिरि० मणु० देवेहितो वि उव्वज्जंति, मेवो जहा वक्कंतीए सत्तेसु उव्वधा-
एववा जाव—‘अणुत्तरोववाइय’सि, नवरं असंखेज्जावासाउयअकम्मभूमगमंतरदीवगसत्तइसिद्धज्जं जाव—अपराजियदेवेहितो वि
उव्वज्जंति, णो सत्तइसिद्धदेवेहितो उव्वज्जंति ।

८. [प्र०] नरदेवा णं मंते ! कम्मोहितो उव्वज्जंति ? किं नेरत्तिय०—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरत्तियहितो वि उव्वज्ज-
ज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेहितो वि उव्वज्जंति ।

९. [प्र०] अह नेरत्तपहितो उव्वज्जंति किं रयणप्पमापुढविनेरत्तपहितो उव्वज्जंति, जाव—अहेसत्तमपुढविनेरत्तपहितो
उव्वज्जंति ? [उ०] गोयमा ! रयणप्पमापुढविनेरत्तपहितो उव्वज्जंति, नो सक्कर० जाव—नो अहेसत्तमपुढविनेरत्तपहितो
उव्वज्जंति ।

१०. [प्र०] अह देवेहितो उव्वज्जंति किं भवणवासिदेवेहितो उव्वज्जंति, वाणमंतर० जोहसिय० वेमाणियदेवेहितो
उव्वज्जंति ? [उ०] गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उव्वज्जंति, वाणमंतर०, एवं सत्तदेवेसु उव्वधाएयवा, वक्कंतीभेदेणं जाव—
सत्तइसिद्धसि ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी ‘देवाधिदेव’ ‘देवाधिदेव’ कहेवाय छे ? [उ] हे गौतम ! जे आ अरिहंत—भगवंतो उत्पन्न
क्येला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनारा यावद्—सर्वदशी छे, ते हेतुथी यावद् ‘देवाधिदेव’ ‘देवाधिदेव’ कहेवाय छे.

देवाधिदेव.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ‘भावदेव’ ‘भावदेव’ कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे आ भवनपतिओ, वानव्यंतरो,
ज्योतिष्को अने वैमानिक देवो देवगति संबन्धी नाम अने गोत्र कर्मोने वेदे छे, ते माटे ‘भावदेव’ ‘भावदेव’ कहेवाय छे.

भावदेव.

७. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय, तिर्यचोथी आवीने उत्पन्न
थाय, मनुष्योथी आवीने उत्पन्न थाय, के देवोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय, तिर्यचोथी,
मनुष्योथी, अने देवोथी पण आवीने उत्पन्न थाय. अहीं ‘व्युत्क्रान्ति पदमा कद्दा प्रमाणे मेद—विशेषता कहेवी, अने तेओनी सर्वने
विधे उत्पत्ति कहेवी, यावद्—अनुत्तरीपपातिक सुची कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के, असंख्यात वर्षना आयुष्यवाळा जीवो, अकर्म-
भूमिना जीवो, अंतरद्वीपना जीवो अने सर्वार्थसिद्ध वर्जिने यावद्—अपराजित देवोथी आवीने उत्पन्न थाय छे. पण सर्वार्थसिद्धना देवो
उत्पन्न थता नथी.

भव्यद्रव्यदेवो क्यांथी
आवीने उत्पन्न ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवो क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय ?—शुं नैरयिकोथी, तिर्यचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवीने उत्पन्न
थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिको अने देवोथी आवीने उत्पन्न थाय छे, पण तिर्यच अने मनुष्योथी आवीने उत्पन्न थता नथी.

नरदेवो क्यांथी आवीने
उत्पन्न ?

९. [प्र०] जो तेओ नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय तो शुं रत्तप्रभाना नैरयिकोथी आवीने (नरदेवो) उत्पन्न थाय के यावद्—अधः-
सत्तम पृथ्वीना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ रत्तप्रभाना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय, पण शर्कराप्रभाथी
आवीने न उत्पन्न थाय, यावद्—अधःसत्तमपृथ्वीना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न न थाय.

रत्तप्रभादिमांथी कद्द
नरक पृथिवीथी
आवीने उत्पन्न ?

१०. [प्र०] जो तेओ देवोथी आवी (नरदेवो) उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी देवोथी आवी उत्पन्न थाय के वानव्यंतर, ज्यो-
तिष्क अने वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, तथा वानव्यंतर,
ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे सर्व देवो संबन्धे ‘व्युत्क्रान्ति पदमा कहेली विशेषतापूर्वक यावद् सर्वार्थ-
सिद्ध सुची उपपात कहेवो.

शुं भवनवासीआदि
देवोथी कद्द
देवोथी आवीने उत्पन्न ?

११. [प्र०] धम्मदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववजंति ? किं नेररपहिंतो ? [उ०] एवं वकंतीभेदेणं सवेसु उववाप-
यत्ता जाव—'सच्चट्टसिद्ध'सि । नवरं तमा—अहेसत्तमाए नो उववाओतेउ—वाउ—असंखिज्जवासाउयअकम्मभूमग—अंतरदीवगवजोसु ।

१२. [प्र०] देवाधिदेवा णं भंते ! कतोहिंतो उवउजंति, किं नेररपहिंतो उववजंति ? पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेररप-
हिंतो उववजंति, नो तिरि० नो मणु० देवेहिंतो वि उववजंति ।

१३. [प्र०] जइ नेररपहिंतो [उ०] एवं तिसु पुढवीसु उववजंति, सेसाओ कोडेयत्ताओ ।

१४. [प्र०] जइ देवेहिंतो [उ०] वेमाणिपसु सवेसु उववजंति जाव—सच्चट्टसिद्धसि, सेसा कोडेयत्ता ।

१५. [प्र०] भावदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववजंति ? [उ०] एवं जहा वकंतीए भवणवासीणं उववाओ तइइ
भाणियत्तो ।

१६. [प्र०] भवियत्तवदेवाणं भंते ! केवतियं काळं टिती पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! जइभेणं अंतोमुहुत्तं, उओसेणं तिक्खि
पल्लिओवमाहं ।

१७. [प्र०] नरदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जइभेणं सत्त वाससयाहं, उओसेणं अउरासीहं पुव्वसयसइस्साहं ।

१८. [प्र०] धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जइभेणं अंतोमुहुत्तं, उओसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! शुं नैरयिकोथी, [तिर्यचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी] उत्पन्न
थाय ? [उ०] ए प्रमाणे बहुं *व्युत्क्रांति पदमां कहेला मेद—विशेषवडे यावत्— सर्वाधीसिद्ध सुधी सर्वथकी उपपाद कहेवो, परन्तु विशेष ए
छे के, तमःप्रभा अने अधःसत्तमपृथ्वीथी, तथा तेजःकाय, वायुकाय, असंख्यवर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिजो, अकर्मभूमिजो अने
अंतरदीपज मनुष्य तथा तिर्यचोथी आवी धर्मदेवो उत्पन्न न थाय. [अर्थात्—ए सिवाय बाकीना स्थानथी आवी धर्मदेव थाय.]

१२. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय—शुं नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम !
नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे, तिर्यच अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण देवो थकी आवीने उत्पन्न थाय छे.

१३. [प्र०] जो नैरयिकोथी आवी (देवाधिदेव) उत्पन्न थाय [तो शुं रत्तप्रभाना नैरयिकथी आवी उत्पन्न थाय]—इत्यादि प्रश्न.
[उ०] ए प्रमाणे प्रथम त्रण पृथिवीथी आवी [देवाधिदेव] उत्पन्न थाय छे. बाकीनी पृथिवीओनो प्रतिषेध करवो.

१४. [प्र०] जो तेओ देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं भवनपति वगोरेथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] सर्व वैमानिक देवोथी,
यावत्—सर्वाधीसिद्धथी आवी उत्पन्न थाय. बाकीना देवोनो निषेध करवो.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] जेम *व्युत्क्रांतिपदमां भवनवासिओनो उपपात कइओ
छे तेम अहिं कहेवो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवोनी केटला काळ सुधी स्थिति कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनी ओछामां ओछी अन्त-
मुहुत्त अने वधारेमां वधारे त्रण पल्योपमनी स्थिति कही छे.

१७. [प्र०] नरदेवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति सातसो वर्षनी अने उत्कृष्ट चोराशीलाव पूर्वनी
स्थिति कही छे.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति अन्तमुहुत्तनी, अने उत्कृष्ट देशोनपूर्वको-
टिनी कही छे.

११ * प्रश्ना० पद ६ प० २१५.

† तमःप्रभा पृथिवीथी नीकलेलाने मनुष्यपशुं प्राप्त थाय, पण चारित्र प्राप्त थतुं नथी, तथा सातमी नरकपृथिवी,
तेजःकाय, वायुकाय, असंख्यवर्षना आयुषवाळा कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज अने अन्तदीपज मनुष्य अने तिर्यचो—थकी नीकलेलाने मनुष्यपणाना अभाव थकी
चारित्र होतुं नथी, तेथी त्यांथी नीकळी तेओ धर्मदेव (चारित्रयुक्त अनगर) थता नथी—टीका.

१३ † प्रथम त्रण नरकपृथिवीथकी नीकलेळा तीर्थकरपणे उपजे छे, पण नीचेनी चार पृथिवीथी नीकलेळा तीर्थकरो थता नथी, माटे बाकीनी चार
पृथिवीनो प्रतिषेध करवो—टीका.

१५ † प्रश्ना० पद ६ प० २११. षणा स्थानोथी आवी भवनपतिदेवपणे उपजे छे, कारणके अर्धज्ञी पण तेमां उत्पन्न थाय छे, माटे भवनपति संबन्धे
उपपात कइओ छे—टीका.

१६ † अन्तमुहुत्तना आयुषवाळो पंचेन्द्रिय तिर्यच देवपणे उपजे, माटे भव्यद्रव्यदेवनी जघन्य स्थिति अन्तमुहुत्तनी कही छे, तेमज त्रण पल्योपमकी
स्थितवाळा उत्तरकुक आदिना मनुष्यो अने तिर्यचो देवपणे उत्पन्न थाय माटे उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थिति कही छे—टीका.

१७ † चक्रवर्तिनी जघन्य स्थिति सातसो वर्षनी होय छे, जेमके ब्रह्मवत्तनी, अने उत्कृष्ट स्थिति चोराशी लाव पूर्वनी होय छे, जेमके भरतनी.

१८ † कोइपण मनुष्य अन्तमुहुत्त आयुष बाकी होव ल्यारे चारित्रनो स्वीकार करे, तेनी अपेक्षाए धर्मदेवनी जघन्य स्थिति अन्तमुहुत्तनी, अने ते
कईक न्यून पूर्वकोटि वर्षपर्यन्त चारित्र पालन करे तेनी अपेक्षाए उत्कृष्ट स्थिति जागवी—टीका.

नैरयिक क्यांथी आवी
उपजे ?

देवाधिदेव क्यांथी
आवी उपजे ?

रत्तप्रभाना नरक पृ-
थिवीथकी कर नर-
क पृथिवीथी आवी
उपजे ?

देवोमां सर्व वैमानिक
देवोथी आवीने उपजे.

भावदेवो क्यांथी
आवी उपजे ?

भव्यद्रव्यदेवनी
स्थिति.

नरदेवनी स्थिति.

धर्मदेवनी स्थिति.

१९. [प्र०] देवाधिदेवानं पुच्छा । [उ०] गौयमा ! जहजेणं वावसरिं वासाहं, उक्कोसेणं चउरासीहं पुहसयसहस्साहं ।

२०. [प्र०] भावदेवानं पुच्छा । [उ०] गौयमा ! जहजेणं दस वाससहस्साहं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाहं ।

२१. [प्र०] भवियद्वदेवा णं भंते ! किं एगसं पभू विउच्चित्तप, पुहुसं पभू विउच्चित्तप ? [उ०] गौयमा ! एगसं पि पभू विउच्चित्तप, पुहुसं पि पभू विउच्चित्तप, एगसं विउच्चित्तपणे एगिदियरुखं वा जाव-पंचिदियरुखं वा, पुहुसं विउच्चित्तपणे एगिदियरुखाणि वा जाव-पंचिदियरुखाणि वा, ताहं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउच्चित्तं, विउच्चित्ता तओ वच्छा अप्पणो जह्दिच्छियाहं कज्जाहं करेति, एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि ।

२२. [प्र०] देवाधिदेवानं पुच्छा, [उ०] गौयमा ! एगसं पि पभू विउच्चित्तप, पुहुसं पि पभू विउच्चित्तप, नो खेव णं संपत्तीप विउच्चित्तु वा, विउच्चित्ति वा, विउच्चित्तसंति वा ।

२३. [प्र०] भावदेवानं पुच्छा [उ०] जहा भवियद्वदेवा ।

२४. [प्र०] भवियद्वदेवा णं भंते ! अणंतरं उच्चट्ठित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? किं नेरएसु उववज्जंति ? जाव-देवेषु उववज्जंति ? [उ०] गौयमा ! नो नेरएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेषु उववज्जंति, जह देवेषु उववज्जंति सद्धदेवेषु उववज्जंति जाव-सद्धट्ठिसिद्धत्ति ।

२५. [प्र०] नरदेवा णं भंते ! अणंतरं उच्चट्ठित्ता-पुच्छा । [उ०] गौयमा ! नेरएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, णो देवेषु उववज्जंति, जह नेरएसु उववज्जंति०, सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति ।

२६. [प्र०] धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं-पुच्छा । [उ०] गौयमा ! नो नेरएसु उववज्जेज्जा, नो तिरि०, नो मणु०, देवेषु उववज्जंति ।

१९. [प्र०] देवाधिदेव संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति बहोतर वर्षनी, अने उत्कृष्ट स्थिति चोरा-शीलाख पूर्वनी कही छे.

देवाधिदेवनी स्थिति.

२०. [प्र०] भावदेवोनी स्थिति संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति दशहजार वर्षनी, अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी कही छे.

भावदेवनी स्थिति.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो एक रूप विकुर्ववाने समर्थ छे के अनेकरूपो विकुर्ववाने समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! [भव्यद्रव्यदेव वैक्रियलब्धिसंपन्न मनुष्य के तिर्यच] एक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे अने अनेकरूपो पण विकुर्ववाने समर्थ छे. एक रूपने विकुर्वतो एक ऐक्यद्विरूपने यावत्-एक पंचेन्द्रियरूपने विकुर्वे छे, अथवा अनेक रूपने विकुर्वतो अनेक ऐक्यद्विरूपने के अनेक पंचेन्द्रियरूपने विकुर्वे छे, ते रूपो संख्याता के असंख्याता, संबद्ध के असंबद्ध, समान के असमान विकुर्वे छे, विकुर्व्या पछी पोतानां यथेष्ट कार्यो करे छे. ए प्रमाणे नरदेव अने धर्मदेव संबन्धे पण जाणवुं.

भव्यद्रव्यदेवनी विकुर्वणा शक्ति.

२२. [प्र०] देवाधिदेवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ एक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे, अने अनेक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे. पण तेणे [औत्सुक्यना अभावथी शक्ति छतां] संप्राप्तिवडे (करवावडे) वैक्रियरूप विकुर्व्युं नथी, विकुर्वता नथी अने विकुर्वशे पण नहि.

देवाधिदेवनी विकुर्वणा शक्ति.

२३. [प्र०] भावदेवसंबन्धे प्रश्न. [उ०] जेम भव्यद्रव्यदेवो संबन्धे (सू० २१) कहुं तेम भावदेवसंबन्धे पण जाणवुं.

भावदेवनी विकुर्वणा शक्ति.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो तुरतज मरण पामी क्यां जाय-क्यां उत्पन्न धाय ? हुं नैरयिकोमां उपजे, यावद्-देवोमां उत्पन्न धाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकोमां, तिर्यचोमां के मनुष्योमां उत्पन्न धता नथी, पण देवोमां उत्पन्न धाय छे. जो देवोमां उत्पन्न धाय तो ते सर्वदेवोमां उत्पन्न धाय, यावत् सर्वार्थसिद्धमां उत्पन्न धाय.

भव्यद्रव्यदेवो मरण पामी क्यां जाय ?

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवो अन्तररहित-तुरतज मरण पामी क्यां उत्पन्न धाय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! *नैरयिकोमां उत्पन्न धाय, पण तिर्यच, मनुष्य के देवमां उत्पन्न न धाय, जो नैरयिकोमां उत्पन्न धाय तो साते नरकपृथिवीमां उत्पन्न धाय.

नरदेव मरण पामी क्यां उत्पन्न ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो तुरतज मरण पामी क्यां उत्पन्न धाय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकोमां, तिर्यचोमां के मनुष्योमां उत्पन्न धता नथी, पण देवोमां उत्पन्न धाय छे.

धर्मदेव मरण पामी क्यां जाय ?

२५ * यद्यपि कोईक बक्रवर्तिओ देवमां उत्पन्न धाय छे, परन्तु ते नरदेवपणुं छोडी अने धर्मदेवपणुं पामीने उपजे छे, कामभोगोने स्वाग कर्मां शिवाय नरदेव अवस्थामां तो ते नैरयिकमां उपजे छे.

२७. [प्र०] अह देवेसु उववजंति किं भवणवासि-पुष्पा । [उ०] गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववजंति, नो वाणमं-तर०, नो जोहसिय०, वेमाणियवेवेसु उववजंति, सवेसु वेमाणियसु उववजंति जाव-सव्वहसिद्धअणुत्तरोववायसु-अव उववजंति, अत्येगइया सिज्जंति, जाव-अंतं करंति ।

२८. [प्र०] देवाधिदेवा अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति, कहिं उववजंति ? [उ०] गोयमा ! सिज्जंति, जाव-अंतं करंति ।

२९. [प्र०] भावदेवा णं मंते ! अणंतरं उव्वट्टिता-पुष्पा । [उ०] अहा वजंतीए असुरकुमारणं उव्वट्टणा तहा भाणियजा ।

३०. [प्र०] भवियद्वयदेवे णं मंते ! 'भवियद्वयदेवे'सि काल्ढो केवधिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अहजेणं अंतोमुहुरंतं, उक्कोसेणं तिन्नि पल्लिओवमाइं, एवं जहेष ठिई सखेष संचिट्टणा वि जाव-भावदेवस्स, नवरं धम्मदेवस्स अहजेणं वजं समव, उक्कोसेणं वेसुणा पुव्वकोडी ।

३१. [प्र०] भवियद्वयदेवस्स णं मंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अहजेणं दसवाससहस्साइं अंतो-मुहुरंतमभहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो ।

३२. [प्र०] नरदेवाणं पुष्पा । [उ०] गोयमा ! अहजेणं सातिरेणं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अवहं पोग्गळप-रियइं वेसुणं ।

कविवेदो क्वा देवोमा
उत्पन्न थाय ?

२७. [प्र०] जो तेओ (धर्मदेवो) देवोमा उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी देवोमा उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! भवनवासिदेवोमां, वानव्यंतरोमां अने ज्योतिष्कोमां उत्पन्न यता नथी, पण वैमानिक देवोमां उत्पन्न थाय छे. सर्व वैमानिकोमां, यावत्-सर्वा-र्थसिद्ध अनुत्तरीपपातिक देवोमां यावद्-उत्पन्न थाय छे, अने केटलाक सिद्ध थाय छे, यावत्-सर्व दुःखोनो नाश करे छे.

देवाधिदेवो मरण
पामी क्वां जाय ?

२८. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवो अन्तररहित-तुरतज मरण पामी क्वां जाय-क्वां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्ध थाय, यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करे.

भावदेव मरण पामी
क्वां जाय ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो तुरतज मरण पामी क्वां जाय ?-ए प्रश्न. [उ०] "जेम 'व्युत्क्रांति' पदमां असुरकुमारोनी उद्धर्तना कही छे तेम अहिं भावदेवोनी पण उद्धर्तना कहेवी.

भव्यद्रव्यदेवोनी
स्थिति.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो 'भव्यद्रव्यदेवरूपे' काल्ढी क्वांसुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहुरंत अने उत्कृष्टथी त्रण पत्तोपम सुधी होय. ए प्रमाणे जेम भवस्थिति कही तेम संस्थिति पण यावद्-भावदेव सुधी जाणवी. परन्तु धर्मदेव जघन्य एक समय सुधी अने उत्कृष्ट कईक न्यून पूर्वकोटि वर्ष सुधी होय.

भव्यद्रव्यदेवो केट-
ला कालं अन्तर
होय ?

३१. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवने परस्पर केटला कालं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य अंतर्मुहुरंत अधिक दशहजार वर्ष, अने उत्कृष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकाल पर्यन्त अन्तर होय.

नरदेवने परस्पर के-
टलं अन्तर होय ?

३२. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवने परस्पर केटलं अन्तर होय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्य काइक अधिक एक सागरोपम, अने उत्कृष्ट अनंतकाल-काइक न्यून अर्धपुद्गलपरिवर्त पर्यन्त अन्तर होय.

२९ * प्रश्ना० पद ६ प० २१५-१.

३० † अशुभ भावने प्राप्त कर्मा पछी शुभ भावने एक समय मात्र प्राप्त करी तुरतज मरण पाने ते अपेक्षाए धर्मदेवनी जघन्य स्थिति एक समयनी जाणवी.

३१ ‡ कोई भव्यद्रव्यदेव कईने दशहजारवर्षनी स्थितिकाला व्यन्तरादिमां उत्पन्न थाय, अने खांची मरी शुभ पुष्पी आदिमां जई एां अन्तर्मुहुरंत यही पुनः भव्यद्रव्यदेव तरीके उपजे-एरीते अन्तर्मुहुरंत अधिक दशहजार वर्षं अन्तर होय. अहिं कोई संका करे छे के 'देवपत्नी थीनी तुरतज भव्यद्रव्यदेव तरीके उत्पत्तिसो संभव होवावी दस हजार वर्षं अन्तर होय, पण अन्तर्मुहुरंत अधिक जेम होय' ? अहिं समाधान करे छे-'सर्वजघन्य आयुषवालो देव थीनी शुभ पुष्पिआदिमां उत्पन्न थई भव्यद्रव्यदेवमां उपजे छे'-आलो प्राचीन टीकाकारनो आशय जभाव छे, ते मतने अशुचरी उपर कहेलं अन्तर होय छे-नीका सेई समाधान भा प्रमाणे आपे छे-'जेमे देवतुं आयुष बांधे छे ते अहिं भव्यद्रव्यदेव तरीके इष्ट छे, तेवी दशहजारवर्षनी स्थितिकाला देवमत्तनी थीनी भव्य-द्रव्यदेवपणे उत्पन्न थाय अने अन्तर्मुहुरंत पछी आयुषनो बन्ध करे सारे पूर्वे कहेलं अन्तर पटे. भव्यद्रव्यदेव मरी देव कई खांची थीनी वनस्पतिकादिनी विषे अनन्तकाल पर्यन्त रही पुनः भव्यद्रव्यदेव थाय-ते अपेक्षाए उत्कृष्ट अन्तर जाणुं.

३२ ¶ नरदेव-वक्रवर्ती कामभोगीमां आसक्त थई प्रथम नरकपृथिवीमां जघन्य सागरोपम आयुष भोगवी पुनः वक्रवर्ती थाय, अने ज्योत्सुधी वक्रवर्ती उत्पन्न न थाय तेटला काल अधिक एक सागरोपम जघन्य अन्तर होय. कोई सम्मरदृष्टि वक्रवर्तीपणुं पाने, अने ते उत्कृष्ट कईक न्यून अर्ध पुद्गलपरिवर्त संसार भ्रमण करी पुनः सम्मत्स पामी छेनटे नरदेवत्व पामी भोक्षे जाय, ते अपेक्षाए नरदेवतुं उत्कृष्ट अन्तर होय-टीका.

३३. [प्र०] धम्मदेवस्त णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहणेणं पलिभोवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, जाव—भवहं पोग्ग-
कपरियहं देसुणं ।

३४. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नत्थि अंतरं ।

३५. [प्र०] भावदेवस्त णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहणेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ।

३६. [प्र०] एप्पसि णं मंते ! भवियद्वदेवाणं, नरदेवाणं, जाव—भावदेवाण य कयरे कयरेहितो जाव—विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सत्तथोवा नरदेवा, देवाधिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियद्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा ।

३७. [प्र०] एप्पसि णं मंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोरसियाणं, वेमाणियाणं सोहम्मगाणं, जाव—अणु-
यगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहितो जाव—विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सत्तथोवा अणुत्तरोववाइया
भावदेवा, उवरिमगेवेजा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेजा संखेज्जगुणा, हेट्टिमगेवेजा संखेज्जगुणा, अणुए कप्पे देवा संखे-
ज्जगुणा, जाव—आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे मप्यावहुयं जाव—ओतिसिया भावदेवा
असंखेज्जगुणा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! चि ।

नवमो उद्देशो समाप्तो.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय. ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी *पल्योपमपृथक्त्व (वेथी
नव पल्योपम) अने उत्कृष्ट अनंतकाल—कंडक न्यून अपार्ध पुत्रलपरिवर्त पर्यन्त अन्तर होय.

धर्मदेवने परस्पर के
टलुं अन्तर होय ।

३४. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय—ए संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेने अंतर नथी.

देवाधिदेवने अन्तर

३५. [प्र०] भावदेवना परस्पर अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अनंतकाल—वनस्पतिकाल
पर्यन्त अन्तर होय.

भावदेवतुं अन्तर

३६. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो, नरदेवो, यावद्—भावदेवोर्माना कोण कोनाथी यावद्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम !
सौथी थोडा नरदेवो छे, ते करता देवाधिदेवो संख्यातगुण छे, तेथी धर्मदेवो संख्यातगुण छे, ते करता भव्यद्रव्यदेवो असंख्यातगुण छे
अने तेथी भावदेवो असंख्यातगुण छे.

भव्यद्रव्यदेवोर्माना
परस्पर अन्तर

३७. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो—भवणवासी, वानव्यंतर, ज्योतिष्क, वैमानिक, सौधर्म, ईशान यावद्—अच्युतक, प्रैवेयक तथा
अनुत्तरीपपातिक—एओर्माना कोण कोनाथी यावद्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा अनुत्तरीपपातिक भावदेवो छे, ते करता
उपरमा प्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, ते करता मप्यम प्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, तेथी अधस्तन प्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण
छे, ते करता अच्युत कल्पना देवो संख्यातगुण छे, यावद्—आनतकल्पना देवो संख्यातगुण छे. ए प्रमाणे जेम ! 'जीवाभिगम'सूत्रमां
त्रिविध जीवना अविकारमां देवपुरुषोत्तुं अल्पबहुत्व कथुं छे तेम अहीं पण यावद्—'ज्योतिष्क भावदेवो असंख्येयगुण छे' थां सुची कहेवुं-
'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' [एम कही—भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

भावदेवतुं असंख्येयगुण

द्वादश श्रुते नवम उद्देशक समाप्त.

३३ * कोईक धर्मदेव—चारित्रयुक्त साधु सोधने देवकोठमां पल्योपमपृथक्त्वना अनुभवको देव कई थांथी च्यवी पुनः मनुष्यपुं पानी जाठ कई
वही चारित्र सीकारे, ते अपेक्षाए कोईक अधिक पल्योपमपृथक्त्व अन्तर होय—टीका.

३४ † देवाधिदेव सोझे जाय छे तेथी तेओने अन्तर होई वथी—टीका.

३७ ‡ जीवाभिगम—अति-२ प-५१-१.

दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कइविद्वा णं भंते ! आया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अट्टविद्वा आया पण्णत्ता, तंजहा—१ दवियाया, २ कसायाया, ३ योगाया, ४ उवओगाया, ५ णाणाया, ६ दंसणाया, ७ चरिस्ताया, ८ वीरियाया ।
२. [प्र०] जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स कसायाया, जस्स कसायाया तस्स दवियाया ? [उ०] गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ।
३. [प्र०] जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [उ०] एवं जहा दवियाया कसायाया मणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियत्ता ।
४. [प्र०] जस्स णं भंते ! दवियाया, तस्स उवओगाया—एवं सत्तथ पुच्छा भाणियत्ता । [उ०] गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि, जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि, जस्स दवियाया तस्स णाणाया भय-

दशम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! आत्मा केटला प्रकारना कइया छे ? [उ०] हे गीतम ! आठ प्रकारना आत्मा छे, ते आ प्रमाणे—*१ द्रव्यात्मा, २ कषायात्मा, ३ योगात्मा, ४ उपयोगात्मा, ५ ज्ञानात्मा, ६ दर्शनात्मा, ७ चारित्रात्मा अने ८ वीर्यात्मा.
२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने शुं कषायात्मा होय अने जेने कषायात्मा होय तेने शुं द्रव्यात्मा होय ? [उ०] हे गीतम ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने कषायात्मा कदाचित् होय अने कदाचित् न होय, पण जेने कषायात्मा होय, तेने तो अवश्य द्रव्यात्मा होय.
३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने योगात्मा होय ? [अने जेने योगात्मा होय तेने द्रव्यात्मा होय ?] [उ०] ए प्रमाणे जेम द्रव्यात्मा अने कषायात्मानो संबन्ध कइयो तेम द्रव्यात्मा अने योगात्मानो संबन्ध कहेवो.
४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने उपयोगात्मा होय ? [अने जेने उपयोगात्मा होय तेने द्रव्यात्मा होय ?] ए प्रमाणे सर्वत्र प्रश्न करवो. [उ०] हे गीतम ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने उपयोगात्मा अवश्य होय, अने जेने उपयोगात्मा होय तेने पण

आत्माना प्रकार.

द्रव्यात्मा अने कषायात्मानो संबन्ध.

द्रव्यात्मा अने योगात्मानो संबन्ध.

द्रव्यात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध.

१ * उपयोगलक्षण आत्मा एक प्रकारे छे, तो पण अमुक विशेषताने लीधे तेना आठ प्रकार छे, ते आ प्रमाणे—१ त्रिकाळवर्ती आत्मा द्रव्य ते द्रव्यात्मा, ते सर्व जीवोने होय छे, २ क्रोधादिकषाययुक्त आत्मा ते कषायात्मा, ते सकषायी जीवोने होय छे, पण उपशान्तकषाय अने क्षीणकषायने होतो नथी, ३ मन, वचन अने वायव्यापरवाळाने योगात्मा होय छे, ४ साकार अने निराकार उपयोगात्मा सिद्ध अने संसारी सर्व जीवने उपयोगात्मा होय छे, ५ सम्यग् विशेषावबोधरूप ज्ञानात्मा सर्व सम्यग्दृष्टिने होय छे, ६ सामान्यअवबोधरूप दर्शनात्मा सर्व जीवोने होय छे, ७ चारित्रात्मा विरतिवाळाने होय छे, ८ अने वीर्यात्मा करणवीर्यवाळ्य सर्व संसारी जीवोने होय छे—टीका.

२ † अहिं द्रव्यात्मा—आदि आठ पदोनी स्थापना करवी, तेमां प्रथम सू० २-४ सुची द्रव्यात्मानो बाकीना कषायात्मा चगेरे सात आत्मानो साधे संबन्ध बतावे छे—जेने द्रव्यात्मा—जीवल होय, तेने कषायात्मा कदाचित् (सकषायवस्थामां) होय, अने कदाचित् क्षीणकषाय अने उपशान्तकषायवाळाने न होय, पण जेने कषायात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा—जीवल अवश्य होय छे, केमके जीवल शिवाय कषायो होता नथी.

३ ‡ जेने द्रव्यात्मा होय तेने योगात्मा सयोगीअवस्थामां होय छे, अयोगी (योगरहित) केवली अने सिद्धोने योगात्मा होतो नथी, पण जेने योगात्मा होय तेने अवश्य द्रव्यात्मा होय छे, केमके जीवल शिवाय योगो होता नथी. आ हकीकत पूर्वसूत्रमां बताव्या प्रमाणे जाणवी.

४ § जे जीवने द्रव्यात्मा होय छे तेने अवश्य उपयोगात्मा होय छे, अने जेने उपयोगात्मा होय छे तेने अवश्य द्रव्यात्मा होय छे, केमके द्रव्यात्मा अने उपयोगात्मानो परस्पर नियत संबन्ध छे. सिद्ध अने अन्य संसारी जीवोने द्रव्यात्मा पण छे, अने उपयोगात्मा पण छे; कारण के उपयोग ए जीवोने लक्षण छे.

आय जस्स पुण णाणाया तस्स द्वियाया नियमं अत्थि, जस्स द्वियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स द्वियाया नियमं अत्थि, जस्स द्वियाया तस्स चरिाया भयणाए, जस्स पुण चरिाया तस्स द्वियाया नियमं अत्थि, एवं वीरियायाए वि समं ।

५. [प्र०] जस्स णं मंते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुञ्जा । [उ०] गीयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, एवं उवजोगायाए वि समं कसायाया नेयत्ता, कसायाया य णाणाया य परोप्परं दो वि भइयत्ताओ, जहा कसायाया य उवजोगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य कसायाया य चरिाया य दो वि परोप्परं भइयत्ताओ, जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियत्ताओ, एवं जहा कसायायाए वत्तत्ता भणिया तहा जोगायाए वि उवविमाहिं समं भाणियत्ताओ । जहा द्वियायाए वत्तत्ता भणिया तहा

द्रव्यात्मा अवश्य होय, जेने द्रव्यात्मा होय तेने ज्ञानात्मा भजनाए—विकल्पे होय, अने जेने ज्ञानात्मा होय तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय. जेने द्रव्यात्मा होय तेने दर्शनात्मा अवश्य होय, जेने दर्शनात्मा होय तेने द्रव्यात्मा पण अवश्य होय, जेने द्रव्यात्मा होय तेने चारित्रात्मा भजनाए—विकल्पे होय, अने जेने चारित्रात्मा होय तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय. ए प्रमाणे वीर्यात्मानो साथे पण संबन्ध कहेवो.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जेने कषायात्मा होय तेने श्रुं योगात्मा होय ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने कषायात्मा होय तेने योगात्मा अवश्य होय, अने जेने योगात्मा होय तेने कदाचित् कषायात्मा होय अने कदाचित् न पण होय. ए प्रमाणे उपयोगात्मानो साथे कषायात्मानो संबन्ध जाणवो. तथा कषायात्मा अने ज्ञानात्मा ए बन्ने परस्पर भजनाए—विकल्पे कहेवा. जेम कषायात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध कछो तेम कषायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध कहेवो. तथा कषायात्मा अने चारित्रात्मा—ए बन्ने—परस्पर भजनाए कहेवा. जेम कषायात्मा अने योगात्मा कछा, तेम कषायात्मा अने वीर्यात्मा पण कहेवा. ए प्रमाणे जेम कषायात्मानो साथे इतर [छ] आत्मानो वक्तव्यता कही, तेम योगात्मानो साथे पण उपरना [पांच] आत्मानो वक्तव्यता कहेवी. जेम द्रव्यात्मानो वक्तव्यता कही तेम उपयोगात्मानो

द्रव्यात्मानो कषायात्मानो साथे संबन्ध.
दर्शनात्मानो साथे संबन्ध.
चारित्रात्मानो साथे संबन्ध.
वीर्यात्मानो साथे संबन्ध.
कषायात्मानो अने योगात्मानो संबन्ध.

कषायात्मानो अने दर्शनात्मानो संबन्ध.

४ * जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने ज्ञानात्मा विकल्पे होय छे, जेमके सम्यग्दृष्टिने तत्त्वना विशेषावबोधरूप सम्यग्ज्ञान होय छे, अने सिध्दादृष्टिने सम्यग्ज्ञान होतुं नथी; पण जेने ज्ञानात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा सिद्धनी पेटे अवश्य होय छे. जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने सामान्य अवबोधरूप दर्शनात्मा अवश्य होय छे, जेम सिद्धने केवलदर्शन होय छे, जेने दर्शनात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा पण अवश्य होय छे. जेमके बहुदर्शनादिवाक्यने द्रव्यात्मा—जीवस होय छे.

† जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने चारित्रात्मा भजनाए होय छे, कारण के सिद्ध अथवा विरतिरहितने द्रव्यात्मा छतां पण हिंसादि दोषधी निवृत्तिरूप चारित्रात्मा होतो नथी, अने विरतिवाक्यने होय छे, माटे भजना जाणवी. जेने चारित्रात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय छे, जेमके चारित्रवाक्यने जीवत्वतुं नियतसाहचर्य होय छे. ए प्रमाणे द्रव्यात्मानो वीर्यात्मानो साथे संबन्ध जाणवो. जेमके द्रव्यात्मानो चारित्रात्मानो साथे भजना अने नियम कछो तेम वीर्यात्मानो साथे पण जाणवुं. ते आ प्रमाणे—जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने वीर्यात्मा होतो नथी, जेमके सकरण वीर्यनी अपेक्षाए सिद्धने वीर्यात्मा नथी, वीजा संसारीने होय छे. पण जेने वीर्यात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय छे. जेमके वीर्यात्मा संसारी जीवोने द्रव्यात्मा होय छे.

५ † हुने कषायात्मानो साथे वीजा छ आत्मानो संबन्ध बतावे छे—जेने कषायात्मा होय छे तेने योगात्मा होय छे, जेमके कोह पण सकषायी अयोगी (योगरहित) होतो नथी. पण जेने योगात्मा होय छे तेने कषायात्मा कदाच होय के न होय, जेमके सयोगी सकषायी अने अकषायी बने प्रकारना होय छे. ए प्रमाणे उपयोगात्मा पण कहेवो, ते आ प्रमाणे—जेने कषायात्मा होय छे तेने उपयोगात्मा अवश्य होय छे, जेमके उपयोगरहितने (जड पदार्थने) कषायो होता नथी, पण जेने उपयोगात्मा होय छे तेने कषायात्मा भजनाए होय छे. उपयोगात्मा छतां पण सकषायीने कषायात्मा होय छे, पण वीतरागने कषायो होता नथी. कषायात्मा अने ज्ञानात्मानो परस्पर भजना जाणवी. जेमके जेने कषायात्मा होय छे तेने ज्ञानात्मा कदाचित् होय छे, अने कदाचित् होतो नथी. कारण के सकषायी सम्यग्दृष्टिने ज्ञानात्मा होय छे, पण सिध्दादृष्टि सकषायीने ज्ञानात्मा होतो नथी, तथा जेने ज्ञानात्मा होय छे तेने कषायात्मा कदाचित् होय छे, कदाचित् होतो नथी. कारण के ज्ञानीने कषायो होय छे, अने होता पण नथी.

‡ जेम कषायात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध कछो, तेम कषायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध कहेवो, जेमके जेने कषायात्मा होय छे तेने दर्शनात्मा अवश्य होय छे, दर्शनरहित जड पदार्थने कषायात्मा होतो नथी, पण तेने दर्शनात्मा होय छे, तेने कषायात्मा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होतो नथी, जेमके दर्शनवाक्यने कषाय होय छे अने होता पण नथी.

§ कषायात्मा अने चारित्रात्मा परस्पर भजनाए जाणवा, जेमके जेने कषायात्मा होय छे तेने चारित्रात्मा कदाचित् होय छे, कदाचित् होतो नथी, कारण के सकषायीने प्रमात् साधुनी पेटे चारित्र होय छे, अने असंयतनी पेटे तेनो अभाव पण होय छे. ते आ प्रमाणे—जेने चारित्रात्मा होय छे तेने कषायात्मा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होतो नथी. सामासिकदि चारित्रवाक्यने कषायो होय छे अने यथाक्यातचारित्रवाक्यने तेनो अभाव होय छे. जेम कषायात्मा अने योगात्मा कछा तेम कषायात्मा अने वीर्यात्मानो संबन्ध कहेवो.

॥ ए प्रमाणे योगात्मानो उपयोगात्मा बगेरे उपरना पांच पदो साथे पूर्व प्रमाणे संबन्ध कहेवो, जेने चारित्रात्मा होय छे तेने योगात्मा कदाच सयोग चारित्रवाक्यनी पेटे होय छे अने अयोगीनी पेटे कदाच होतो नथी. पण अन्य वाक्यानां आबो पाठ छे. 'जस्स चरिाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि' जेने प्रस्तुपे-अत्रादिरूप चारित्रात्मा होय छे तेने योगात्मा अवश्य होय छे—टीका.

॥ हुने उपयोगात्मानो साथे वीजा चार पदोने संबन्ध अतिरिक्त द्वारा जणावे छे.

ઢકયોગાયાય વિ ડચરિહ્યાઈ સમં માણિયહ્યા । જસ્સ નાળાયા તસ્સ ઢંસળાયા નિયમં અત્થિ, જસ્સ પુળ ઢંસળાયા તસ્સ ળાળાયા મયળાય, જસ્સ નાળાયા તસ્સ ચરિત્તાયા સિય અત્થિ સિય નત્થિ, જસ્સ પુળ ચરિત્તાયા તસ્સ નાળાયા નિયમં અત્થિ, ળાળાયા ઢીરિયાયા ઢો વિ પરોપ્પરં મયળાય । જસ્સ ઢંસળાયા તસ્સ ડચરિમાઓ ઢો વિ મયળાય, જસ્સ પુળ તાઓ તસ્સ ઢંસળાયા નિયમં અત્થિ । જસ્સ ચરિત્તાયા તસ્સ ઢીરિયાયા નિયમં અત્થિ, જસ્સ પુળ ઢીરિયાયા તસ્સ ચરિત્તાયા સિય અત્થિ સિય નત્થિ ।

૬. [પ્ર૦] યયાસિ ળં મંતે ! ઢચિયાયાળં, કસાયાયાળં, જાઢ-ઢીરિયાયાળ ય કયરે કયરેહિત્તો જાઢ-ઢિસેસાહિયા ઢા ? [૩૦] ગોયમા ! સઢ્ઢથોઢાઓ ચરિત્તાયાઓ, નાળાયાઓ અળંતગુળાઓ, કસાયાઓ અળંતગુળાઓ, ળોગાયાઓ ઢિસેસાહિયાઓ, ઢીરિયાયાઓ ઢિસેસાહિયાઓ, ડચયોગ-ઢચિય-ઢંસળાયાઓ તિચ્છિ ઢિ ઢુહ્યાઓ ઢિસેસાહિયાઓ ।

૭. [પ્ર૦] આયા મંતે ! નાળે અજ્ઞાળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા સિય નાળે સિય અજ્ઞાળે, ળાળે પુળ નિયમં આયા ।

૮. [પ્ર૦] આયા મંતે ! નેરહ્યાળં નાળે, અજ્ઞે નેરહ્યાળં નાળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા નેરહ્યાળં સિય નાળે, સિય અજ્ઞાળે । નાળે પુળ સે નિયમં આયા, યઢં જાઢ ઢળિયકુમારાળં ।

૯. [પ્ર૦] આયા મંતે ! પુઢઢિકાહ્યાળં અજ્ઞાળે, અજ્ઞે પુઢઢિકાહ્યાળં અજ્ઞાળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા પુઢઢિકાહ્યાળં નિયમં અજ્ઞાળે, અજ્ઞાળે ઢિ નિયમં આયા, યઢં જાઢ ઢળસ્સહકાહ્યાળં, ઢેહંદિય-તેહંદિય-જાઢ-ઢેમાળિયાળં જઢા નેરહ્યાળં ।

૧૦. [પ્ર૦] આયા મંતે ! ઢંસળે, અજ્ઞે ઢંસળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા નિયમં ઢંસળે, ઢંસળે ઢિ નિયમં આયા ।

૧૧. [પ્ર૦] આયા મંતે ! નેરહ્યાળં ઢંસળે, અજ્ઞે નેરહ્યાળં ઢંસળે ? [૩૦] ગોયમા ! આયા નેરહ્યાળં નિયમા ઢંસળે, ઢંસળે ઢિ સે નિયમં આયા, યઢં જાઢ-ઢેમાળિયાળં નિરંતરં ઢંઢઓ ।

પળ ડપરના આત્માઓની સાથે ઢક્લ્પતા કહેઢી. જેને જ્ઞાનાત્મા હોય તેને ઢર્શનાત્મા અઢસ્ય હોય, અને જેને ઢઢી ઢર્શનાત્મા હોય તેને જ્ઞાનાત્મા મજનાય હોય. જેને જ્ઞાનાત્મા હોય તેને ચારિત્રાત્મા મજનાય હોય—પટલે કઢાઢિઢ્ હોય અને કઢાઢિઢ્ ન હોય, ઢઢી જેને ચારિત્રાત્મા હોય તેને જ્ઞાનાત્મા અઢસ્ય હોય. તથા જ્ઞાનાત્મા અને ઢીર્યાત્મા—પ ઢજે પરસ્પર મજનાય—ઢિકલ્પે હોય. જેને ઢર્શનાત્મા હોય તેને ડપરના ચારિત્રાત્મા, ઢીર્યાત્મા પ ઢજે મજનાય હોય, ઢઢી જેને તે ઢજે આત્મા હોય તેને ઢર્શનાત્મા અઢસ્ય હોય. જેને ચારિત્રાત્મા હોય તેને અઢસ્ય ઢીર્યાત્મા હોય, ઢઢી જેને ઢીર્યાત્મા હોય તેને ચારિત્રાત્મા કઢાઢિઢ્ હોય અને કઢાઢિઢ્ ન હોય.

જ્ઞાનાત્મા ઢનેરેતું
અઢસ્યતુલ્ય.

૬. [પ્ર૦] હે મગઢન્ ! ઢ્રઢ્યાત્મા, કષાયાત્મા, યાઢઢ્-ઢીર્યાત્મામાં કયા આત્મા કોનાધી યાઢઢ્-ઢિશેષાધિક છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ સૌધી યોઢા ચારિત્રાત્મા છે, ૨ તે કરતાં જ્ઞાનાત્મા અનંતગુળ છે, ૩ તેધી કષાયાત્મા અનંતગુળ છે, ૪ તે કરતાં યોગાત્મા ઢિશેષાધિક છે, ૫ તેધી ઢીર્યાત્મા ઢિશેષાધિક છે, ૬ તે કરતાં ડપયોગાત્મા, ઢ્રઢ્યાત્મા અને ઢર્શનાત્મા—પ ઢ્રળે ઢિશેષાધિક છે અને પરસ્પર તુલ્ય છે.

આત્મા જ્ઞાન-
સ્ઢરૂપ છે કે
અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે ?

૭. [પ્ર૦] હે મગઢન્ ! આત્મા જ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે કે અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આત્મા કઢાઢિત્ જ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે, અને કઢાઢિત્ અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે. પળ જ્ઞાન તો અઢસ્ય આત્મસ્ઢરૂપ છે.

નૈરયિકોનો આત્મા.

૮. [પ્ર૦] હે મગઢન્ ! નૈરયિકોનો આત્મા જ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે, કે અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નૈરયિકોનો આત્મા કઢાઢિત્ જ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે, અને કઢાઢિત્ અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ પળ છે. પરન્તુ તેઓતું જ્ઞાન અઢસ્ય આત્મસ્ઢરૂપ છે. પ પ્રમાળે યાઢઢ્-સ્તાનિતકુમારો સુધી જાળવું.

પૃથ્ઢીકાયિકોનો
આત્મા.

૯. [પ્ર૦] હે મગઢન્ ! પૃથ્ઢીકાયિકોનો આત્મા જ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે કે અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પૃથ્ઢીકાયિકોનો આત્મા અઢસ્ય અજ્ઞાનસ્ઢરૂપ છે, અને તેઓતું અજ્ઞાન પળ અઢસ્ય આત્મસ્ઢરૂપ છે. પ પ્રમાળે યાઢઢ્-ઢનસ્પતિકાયિકો સુધી જાળવું. ઢેહંદ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને યાઢઢ્-ઢૈમાનિકોને નૈરયિકોની પેટે (સૂ. ૮) જાળવું.

આત્મા ઢર્શનસ્ઢરૂપ
છે કે તેધી અન્ય છે ?

૧૦. [પ્ર૦] હે મગઢન્ ! આત્મા ઢર્શનસ્ઢરૂપ છે કે તેધી ઢર્શન ઢીતું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આત્મા અઢસ્ય ઢર્શનસ્ઢરૂપ છે અને ઢર્શન પળ અઢસ્ય આત્મા છે.

નૈરયિકોનો આત્મા.

૧૧. [પ્ર૦] હે મગઢન્ ! નૈરયિકોનો આત્મા ઢર્શનસ્ઢરૂપ છે ? કે નૈરયિકોતું ઢર્શન તેધી અન્ય છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નૈરયિકોનો આત્મા અઢસ્ય ઢર્શનસ્ઢરૂપ છે, અને તેઓતું ઢર્શન પળ અઢસ્ય આત્મા છે. પ પ્રમાળે યાઢઢ્-ઢૈમાનિકો સુધી નિરંતર (ઢોઢીસ) ઢંઢક કહેઢા.

૫ * જ્ઞાનાત્મા સાથે ડપરના ઢ્રળ આત્માનો સંઢન્ઢ ઢતાઢે છે. † ઢર્શનાત્મા સાથે ડપરના ઢે પઢોનો સંઢન્ઢ ઢતાઢે છે.

૭ † જ્ઞાન-સમ્યજ્ઞાન અને અજ્ઞાન-મિથ્યાજ્ઞાન ઢ્રહ્મ કરવું.

१२. [प्र०] आया मंते ! एयण्यमापुढवी, जजा एयण्यमा पुढवी ? [उ०] गोयमा ! एयण्यमा १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तं आयाति य नोआयाति य । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं जुद्ध—'एयण्यमा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तं आयाति य नोआयाति य' ? [उ०] गोयमा ! अप्पणे आविट्ठे १ आया, परस्स आविट्ठे २ नोआया, ३ तदुमयस्स आविट्ठे अवत्तं एयण्यमा पुढवी आयाति य नोआयाति य, से तेणट्टेणं तं चेव जाव—नोआयाति य ।

१३. [प्र०] आया मंते ! सक्करप्पमा पुढवी ? [उ०] जहा एयण्यमा पुढवी तथा सक्करप्पमाप वि, एवं जाव—अहे-सत्तमा ।

१४. [प्र०] आया मंते ! सोहम्मि कप्पे पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सोहम्मि कप्पे १ सिय आया, २ सिय नोआया, जाव—नो आयाति य । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! जाव—'नो आयाति य' ? [उ०] गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे १ आया, परस्स आइट्ठे २ नो आया, तदुमयस्स आइट्ठे ३ अवत्तं आयाति य नोआयाति य, से तेणट्टेणं तं चेव जाव—'नोआयाति य' । एवं जाव—अक्कप कप्पे ।

१५. [प्र०] आया मंते ! नेविज्जविमाणे, अजे नेविज्जविमाणे ? [उ०] एवं जहा एयण्यमा तहेव, एवं अणुत्तरविमाणा वि, एवं ईत्थिपम्भारा वि ।

१६. [प्र०] आया मंते ! परमाणुपोग्गळे, अजे परमाणुपोग्गळे ? [उ०] एवं जहा सोहम्मि कप्पे तथा परमाणुपोग्गळे वि भाणियधे ।

१७. [प्र०] आया मंते ! दुपपसिय कंधे, अजे दुपपसिय कंधे ? [उ०] गोयमा ! दुपपसिय कंधे १ सिय आया, २

१२. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथ्वी आत्मा—सत्त्वरूप छे के अन्य—असत्त्वरूप रत्नप्रभा पृथिवी छे ? [उ०] हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी १ कथंचित् आत्मा—सत्त्वरूप छे, २ कथंचित् नोआत्मा—असत्त्वरूप पण छे, अने ३ सत्त्वरूपे अने असत्त्वरूपे [उभयथा] कथंचित् अवक्तव्य—कहेवाने अशक्य छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छो के, 'रत्नप्रभा पृथिवी कथंचित् आत्मा—सत्त्वरूप छे, कथंचित् नोआत्मा—असत्त्वरूप छे, अने सद् अने असद्—ए उभयरूपे कथंचित् अवक्तव्य छे' ? [उ०] हे गौतम ! 'रत्नप्रभा पृथिवी पोताना आदेशायी—स्वरूपयी आत्मा—विद्यमान छे, परना आदेशायी—पररूपे विद्यमायी नोआत्मा—अविद्यमान छे, अने उभयना आदेशायी—स्व अने परनी विद्यमायी आत्मा—सत्त्वरूपे अने नोआत्मा—असत्त्वरूपे अवक्तव्य छे. ते हेतुयी पूर्व प्रमाणे कथं छे तेम आत्मा—सद् अने यावद्—नोआत्मा—असत्त्वरूपे अवक्तव्य छे.

रत्नप्रभा पृथिवी सत्त्वरूप छे के असत्त्वरूप छे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी आत्मा—सत्त्वरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम रत्नप्रभा पृथ्वी कही तेम शर्कराप्रभा पृथ्वी संबन्धे पण जाणतुं. ए प्रमाणे यावद्—अवःसत्तम पृथ्वी सुची जाणतुं.

शर्कराप्रभा पृथिवी.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म देवलोक आत्मा—सत्त्वरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सौधर्म कल्प १ कथंचित् आत्मा—सत्त्वरूप छे, २ कथंचित् नोआत्मा—असत्त्वरूप छे, यावद्—आत्मा—सद् अने नोआत्मा—असत्त्वरूपे कथंचित् अवक्तव्य छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छो के, 'ते यावद्—आत्मा अने नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे' ? [उ०] हे गौतम ! पोताना आदेशायी आत्मा—विद्यमान छे, परना आदेशायी नोआत्मा—अविद्यमान छे, अने क्वेना आदेशायी अवक्तव्य—आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवाच्य छे, माटे ते हेतुयी इत्यादि पूर्वोक्त यावद्—आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवक्तव्य छे. ए रीते यावद्—अच्युतकल्प पण जाणवी.

सौधर्म देवलोक.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! प्रैवेयक विमान आत्मा—विद्यमान छे के तेयी अन्य (अविद्यमान) प्रैवेयक विमान छे ? [उ०] ए वहुं रत्नप्रभा पृथिवीनी पेठे (सू० १२) जाणतुं, अने ते प्रमाणे अनुत्तर विमान तथा ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी (सिद्धशिला) सुची जाणतुं.

प्रैवेयक विमान.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! एक परमाणुपुद्गल आत्मा—विद्यमान छे के तेयी अन्य (अविद्यमान) परमाणुपुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम सौधर्मकल्प संबन्धे कथं (सू० १४) तेम एक परमाणुपुद्गलसंबन्धे पण जाणतुं.

एक परमाणु सत्त्वरूप छे के असत्त्वरूप छे ?

१७. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा—विद्यमान छे के तेयी अन्य द्विप्रदेशिक स्कंध छे ? [उ०] हे गौतम ! द्विप्रदेशिक

द्विप्रदेशिक स्कंध.

१३ * रत्नप्रभा पृथिवी पोताना वर्णानि पर्याय वडे आत्मा—सत्त्वरूप छे, परवस्तुना पर्याय वडे नोआत्मा—असत्त्वरूप छे, अने स्वपरना पर्याय वडे आत्म-स्वरूप छे अवात्मस्वरूप ए अने प्रकारे कहेवाने अशक्य छे. ए प्रमाणे परमाणु [सू० १६] सुची त्रय भांगा कथं छे.

१४ † द्विप्रदेशिक स्कन्धने विषे छ भांगा थाय छे, तेनां प्रथमता त्रय भांगा एकक स्कन्धनी अपेक्षाए थाय छे, अने ते पूर्वे कहेला छे. बाकीना त्रय भांगा अपेक्षाए छे. द्विप्रदेशिक स्कन्ध होवानी तेना एक वेशनी स्वपर्याय वडे सत्त्वरूपे विवक्षा करीए अने बीजा वेशनी परपर्याय वडे असत्त्वरूपे विवक्षा करीए तो द्विप्रदेशिक स्कन्ध अनुक्रमे ४ कथंचित् आत्मारूपे अने कथंचित् अनात्मरूपे होय, तथा तेनां एक वेशनी स्वपर्यायवडे सत्त्वरूपे विवक्षा करीए अने बीजा वेशनी सद् अने असद् ए उभयरूपे विवक्षा करीए तो ५ कथंचित् आत्मरूप अने अवक्तव्य कहेवाय. तथा ते स्कन्धनो एक वेश परपर्यायवडे असत्त्वरूपे विवक्षित करीए अने एक बीजा वेशनी उभयरूपे विवक्षा करीए तो ते ६ नोआत्मा अने अवक्तव्य कहेवाय. कथंचित् आत्मा, नोआत्मा अने अवक्तव्य—ए प्रमाणे सातमो भांगो द्विप्रदेशिक स्कन्धने विषे तेना ते अंस होवानी थतो नथी. द्विप्रदेशिकादि स्कन्धने विषे तो आ साते भांगा थाय छे.

સિય નોઆયા, ૩ સિય અવત્તહં આયાઈ ય નોઆયાતિ ય, ૪ સિય આયા ય નોઆયા ય, ૫ સિય આયા ય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, ૬ સિય નોઆયા ય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય ।

૧૮. [પ્ર૦] સે કેળટુંગં મંતે ! एवं तं शेष जाव—‘नोआया य अवत्तहं आयाति य नोआयाति य’ ? [उ०] गोयमा ! ૧ અવ્વણો આદિટ્ટે ૧ આયા, ૨ પરસ્સ આદિટ્ટે નોઆયા, ૩ તદુભયસ્સ આદિટ્ટે અવત્તહં ડુપ્પસિપ્પ કંધે આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, ૪ દેસે આદિટ્ટે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે અસમ્માવપજ્જવે ડુપ્પસિપ્પ કંધે આયા ય નોઆયા ય, ૫ દેસે આદિટ્ટે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે તદુભયપજ્જવે ડુપ્પસિપ્પ કંધે આયા ય અવત્તહં આયાઈ ય નો આયાઈ ય, ૬ દેસે આદિટ્ટે અસમ્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે તદુભયપજ્જવે ડુપ્પસિપ્પ કંધે નોઆયા ય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, સે તેળટુંગં તં શેષ જાવ—‘નોઆયાતિ ય’ ।

૧૯. [પ્ર૦] આયા મંતે ! તિપ્પસિપ્પ કંધે અન્ને તિપ્પસિપ્પ કંધે ? [उ०] गोयमा ! તિપ્પસિપ્પ કંધે ૧ સિય આયા, ૨ સિય નોઆયા, ૩ સિય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, ૪ સિય આયાય નોઆયા ય, ૫ સિય આયા ય નોઆયાઓ ય, ૬ સિય આયાઓ ય નોઆયા ય, ૭ સિય આયા ય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, ૮ સિય આયા ય અવત્તહાઈ આયાઓ ય નોઆયાઓ ય, ૯ સિય આયાઓ ય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, ૧૦ સિય નોઆયા ય અવત્તહં આયાતિ ય નોઆયાતિ ય, ૧૧ સિય નોઆયા ય અવત્તહાઈ આયાઓ ય નોઆયાઓ ય, ૧૨ સિય નોઆયાઓ ય અવત્તહં આયાઈ ય નોઆયાઈ ય, ૧૩ સિય આયા ય નોઆયા ય અવત્તહં આયાઈ ય નોઆયાઈ ય ।

૨૦. [પ્ર૦] સે કેળટુંગં મંતે ! एवं बुद्ध-तिपप्सिप कंधे सिय आया-एवं शेष उच्चारयेहं जाव—सिय आया य नोआया य अवत्तहं आयाति य नोआयाति य ? [उ०] गोयमा ! ૧ અવ્વણો આદિટ્ટે આયા, ૨ પરસ્સ આદિટ્ટે નોઆયા, ૩ તદુભયસ્સ આદિટ્ટે અવત્તહં આયાતિ ય નો આયાતિ ય, ૪ દેસે આદિટ્ટે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિટ્ટે અસમ્માવપજ્જવે તિપ્પસિપ્પ

સ્કંધ ૧ કથંચિત્ આત્મા-વિચમાન છે, ૨ કથંચિદ્-નોઆત્મા-અવિચમાન છે, અને ૩ આત્મા તથા નોઆત્મા રૂપે કથંચિદ્ અવક્તવ્ય છે, ૪ કથંચિદ્ આત્મા છે, અને કથંચિદ્ નોઆત્મા પણ છે, ૫ કથંચિદ્ આત્મા છે, અને આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે, ૬ કથંચિત્ નોઆત્મા છે, અને આત્મા અને નોઆત્મા-ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે.

આ હેતુથી સ્વરૂપ છે-હ્યાદિ.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ए प्रमाणे शा हेतुधी कही छो के-ह्यादि पूर्वोक्त यावद्-आत्मा अने नोआत्मा-ए उभयरूपे अवक्तव्य છે? [उ०] हे गौतम ! ૧ (દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ) પોતાના આદેશથી આત્મા છે, ૨ પરના આદેશથી નોઆત્મા છે, ૩ ઉભયના આદેશથી આત્મા અને નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે, ૪ એક દેશની અપેક્ષા સદ્ભાવપર્યાયની વિવક્ષાથી અને એક દેશની અપેક્ષા અસદ્ભાવપર્યાયની વિવક્ષાથી દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા-વિચમાન, તથા નોઆત્મા-અવિચમાન છે, ૫ એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવ અને અસદ્ભાવ એ બન્ને પર્યાયની અપેક્ષા દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા-વિચમાન અને આત્મા તથા નોઆત્મા એ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે. ૬ એક દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવ અને અસદ્ભાવ-૯ બન્ને પર્યાયની અપેક્ષા તે દ્વિપ્રદેશિક સ્કંધ નોઆત્મા-અવિચમાન અને આત્મા તથા નોઆત્મારૂપે અવક્તવ્ય છે. તે હેતુથી એ પ્રમાણે કહ્યું છે કે યાવદ્-નોઆત્મા-અવિચમાન છે.’

ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધના આત્મા-આદિ તેર ભાગા.

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! *त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा-विचमान છે કે તેથી અન્ય ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ છે? [उ०] हे गौतम ! ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ ૧ કથંચિત્ આત્મા-વિચમાન છે, ૨ કથંચિદ્ નોઆત્મા-અવિચમાન છે, ૩ આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે કથંચિદ્ અવક્તવ્ય છે, ૪ કથંચિદ્ આત્મા તથા કથંચિત્ નોઆત્મા છે, ૫ કથંચિદ્ આત્મા તથા નોઆત્માઓ છે, (એકવચન અને બહુવચન.) ૬ કથંચિદ્ આત્માઓ અને નોઆત્મા છે, (બહુવચન અને એકવચન.) ૭ કથંચિદ્ આત્મા અને કથંચિદ્ આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે, ૮ કથંચિદ્ આત્મા અને આત્માઓ તથા નોઆત્માઓ-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે. ૯ કથંચિદ્ આત્માઓ અને આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે, ૧૦ કથંચિદ્ નોઆત્મા અને આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે, ૧૧ કથંચિદ્ નોઆત્મા અને આત્માઓ તથા નોઆત્માઓ-૯ બન્ને રૂપે અવક્તવ્યો છે, ૧૨ કથંચિદ્ નોઆત્માઓ અને આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ ઉભયરૂપે અવક્તવ્ય છે, ૧૩ કથંચિદ્ આત્મા, નોઆત્મા અને આત્મા તથા નોઆત્મા-૯ બન્ને રૂપે અવક્તવ્ય છે.

આ હેતુથી ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધના આત્મા-આદિ તેર ભાગા થાય છે !

૨૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ए प्रमाणे शा हेतुधी कही छो के, ‘त्रिप्रदेशिक स्कंध कथंचिद् आत्मा છે-હ્યાદિ પૂર્વ પ્રમાણે કહેવું, યાવદ્-કથંચિદ્ આત્મા, નોઆત્મા અને આત્મા તથા નોઆત્મારૂપે અવક્તવ્ય છે? [उ०] हे गौतम ! (ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ) પોતાના આદેશથી ૧ આત્મા છે, ૨ પરના-આદેશથી નોઆત્મા છે, ૩ ઉભયના આદેશથી આત્મા અને નોઆત્મા-૯ ઉભય રૂપે અવક્તવ્ય છે, ૪ એક દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને એક દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા અને નોઆત્મારૂપ છે, ૫ એક

૧૧ * ત્રિપ્રદેશિક સ્કંધને વિષે તેર ભાગા થાય છે. તેમાં પૂર્વે કહેલ સ્કંધના આદિના ત્રણ ભાગા સ્કંધની અપેક્ષા થાય છે, પછીના બીજા ત્રણ ભાગાના એકવચન અને બહુવચનના મેદ થકી ત્રણ ત્રણ વિકલ્પો થાય છે. અને સાતમો ભાગો એક જ પ્રકારનો છે.

अथि आया य नोआया य, ५ देसे आदिहे सम्भावपञ्चवे देसा आदिहा असम्भावपञ्चवा तिपयसिए अंधे आया य नोआयाओ य, ३ देसा आदिहा सम्भावपञ्चवा देसे आदिहे असम्भावपञ्चवे तिपयसिए अंधे आयाओ य नोआया य, ७ देसे आदिहे सम्भावपञ्चवे देसे आदिहे तदुभयपञ्चवे तिपयसिए अंधे आया य अवसत्तं आयाइ य नोआयाइ य, ८ देसे आदिहे सम्भावपञ्चवे देसा आदिहा तदुभयपञ्चवा तिपयसिए अंधे आया य अवसत्तं आयाइ आयाउ य नोआयाउ य, ९ देसा आदिहा सम्भावपञ्चवा देसे आदिहे तदुभयपञ्चवे तिपयसिए अंधे आयाउ य अवसत्तं आयाति य नो आयाति य, एए तिप्ति भंगा, १० देसे आदिहे असम्भावपञ्चवे देसे आदिहे तदुभयपञ्चवे तिपयसिए अंधे नोआया य, अवसत्तं आयाइ य नोआयाति य, ११ देसे आदिहे असम्भावपञ्चवे देसा आदिहा तदुभयपञ्चवा तिपयसिए अंधे नोआया य अवसत्तं आयाउ य नोआयाउ य, १२ देसा आदिहा असम्भावपञ्चवा देसे आदिहे तदुभयपञ्चवे तिपयसिए अंधे नोआयाउ य अवसत्तं आयाति य नो आयाति य, १३ देसे आदिहे सम्भावपञ्चवे देसे आदिहे असम्भावपञ्चवे देसे आदिहे तदुभयपञ्चवे तिपयसिए अंधे आया य नोआया य अवसत्तं आयाति य नोआया इ य । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धर—‘तिपयसिए अंधे सिय आया तं—चेव ज्ञाव—नोआयाति य* ।

२१. [प्र०] आया मंते ! चउप्पयसिए अंधे अन्ने० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउप्पयसिए अंधे १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवसत्तं आयाति य नोआयाति य, ४—७ सिय आया य नोआया य ४, ८—११ सिय आया य अवसत्तं ४, १२—१५ सिय नोआया य अवसत्तं ४, १६ सिय आया य नो आया य अवसत्तं आयाति य नोआयाति य ४, १७ सिय आया य नोआया य अवसत्तं आयाओ य नोआयाओ य, १८ सिय आया य नोआयाओ य अवसत्तं आयाति य नो आयाति य, १९ सिय आयाओ य नोआया य अवसत्तं आयाति य नोआयाति य ।

२२. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुद्धर—‘चउप्पयसिए अंधे सिय आया य नोआया य अवसत्तं—तं चेव अट्टे पडि—उच्चारयेयं ? [उ०] गोयमा ! १ अप्पणो आदिहे आया, २ परस्स आदिहे नोआया, ३ तदुभयस्स आदिहे अवसत्तं आयाति

देशना आदेशाथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशाथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिकस्क्ंध आत्मा तथा नोआत्माओ छे, ६ देशोना आदेशाथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशाथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए त्रिप्रदेशिक स्क्ंध आत्माओ अने नोआत्मारूप छे, ७ देशना आदेशाथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशाथी उभय—सद्भाव तथा असद्भाव पर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिकस्क्ंध आत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा—ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ८ देशना आदेशाथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशाथी उभयपर्यायनी विवक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्क्ंध आत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ—ए उभयरूपे अवक्तव्यो छे, ९ देशोना आदेशाथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशाथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्क्ंध आत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा ए उभयरूपे अवक्तव्य छे.—ए ऋण भांगाओ जाणवा. १० देशना आदेशाथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशाथी उभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्क्ंध नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवक्तव्य छे, ११ देशना आदेशाथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशाथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्क्ंध नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ—ए उभयरूपे अवक्तव्यो छे, १२ देशोना आदेशाथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशाथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्क्ंध नोआत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूपे अवक्तव्य छे, १३ देशना आदेशाथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशाथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशाथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्क्ंध (कथंचिद्) आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूपे अवक्तव्य छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुपी एम कथुं छे के—‘त्रिप्रदेशिक स्क्ंध कथंचिद्—आत्मा छे—इत्यादि यावद्—नो आत्मा छे—’त्यां सुधी बधुं कहेवुं.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! चतुःप्रदेशिक स्क्ंध आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! *चतुःप्रदेशिक स्क्ंध १ कथंचिद् आत्मा छे, २ कथंचिद् नोआत्मा छे, ३ आत्मा अने नोआत्मा उभयरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे, ४—७ कथंचिद् आत्मा अने नोआत्मा छे ४, (एकवचन अने बहुवचनना चार भांगाओ) ८—११ कथंचिद् आत्मा अने अवक्तव्य छे ४, १२—१५ कथंचिद् नोआत्मा अने अवक्तव्य छे ४, १६ कथंचिद् आत्मा अने नोआत्मा तथा आत्मा—नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे, १७ कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओरूपे अवक्तव्यो छे, १८ कथंचिद् आत्मा नोआत्माओ तथा आत्मा अने नोआत्मा—उभयरूपे अवक्तव्य छे. १९ कथंचिद् आत्माओ, नोआत्मा तथा आत्मा अने अनात्मरूपे अवक्तव्य छे.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुपी एम कहेवाय छे के चतुःप्रदेशिक स्क्ंध कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने अवक्तव्य छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे अर्थनो पुनरुच्चार करी प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ पोताना आदेशाथी—स्वरूपनी विवक्षाथी आत्मा छे, २ परना आदेशाथी—पररूपनी विवक्षाथी नोआत्मा छे, ३ तदुभयना आदेशाथी आत्मा अने नोआत्मा—ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ४ देशना आदेशाथी सद्भाव

२१ * चतुःप्रदेशिक स्क्ंधने विचे पण त्रिप्रदेशिक स्क्ंधनी चेहे जाणवुं, परन्तु त्यां भोगणीस भांगाओ थाय छे, तेमां प्रथमना ऋण भांगाओ सकल-विधी—सकल स्क्ंधनी अपेक्षाए थाय छे, ते प्रमाणे बाकीना चार भांगाना प्रत्येके चार चार विकल्पो थाय छे.

चतुःप्रदेशिक स्क्ंध-
ना १९ भांगाओ.

शा हेतुपी आत्मा
इत्यादि छे.

બ નોઆવાતિ ય, ૪ દેસે આદિદ્દે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિદ્દે અસમ્માવપજ્જવે વહમંગો, સમ્માવપજ્જવે તદુમયેણ ય વહમંગો, અસમ્માવેણ તદુમયેણ ય વહમંગો, દેસે આદિદ્દે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિદ્દે અસમ્માવપજ્જવે દેસે આદિદ્દે તદુમયવપજ્જવે વહવપ્પસિય કંથે આયા ય નોઆયા ય અવત્તહં આવાતિ ય નો આવાતિ ય ૧૬, દેસે આદિદ્દે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિદ્દે અસમ્માવપજ્જવે દેસા આદિદ્દા તદુમયવપજ્જવા વહવપ્પસિય કંથે અવહ આવા ય નોઆયા ય અવત્તહાર્દ આવાતો ય નોઆવાતો ય ૧૭, દેસે આદિદ્દે સમ્માવપજ્જવે દેસા આદિદ્દા અસમ્માવપજ્જવા દેસે આદિદ્દે તદુમયવપજ્જવે વહવપ્પસિય કંથે આયા ય નોઆવાતો ય અવત્તહં આવાતિ ય નોઆવાતિ ય ૧૮, દેસા આદિદ્દા સમ્માવપજ્જવા દેસે આદિદ્દે અસમ્માવપજ્જવે દેસે આદિદ્દે તદુમયવપજ્જવે વહવપ્પસિય કંથે આયાતો ય નોઆયા ય અવત્તહં આવાતિ ય નો આવાતિ ય ૧૯, સે તેવોદ્દેઠં ગોચમા ! સ્વં ધુચ્ચર વહવપ્પસિય કંથે સિય આયા સિય નોઆયા સિય અવત્તહં નિવ્વેદે તે સેવ મંગા ઉચ્ચારેયમા જાવ—નોઆવાતિ ય ।

૨૩. [પ્ર૦] આયા મંતે ! પંચવપ્પસિય કંથે અન્ને પંચવપ્પસિય કંથે ! [૩૦] ગોચમા ! પંચવપ્પસિય કંથે ૧ સિય આયા, ૨ સિય નોઆયા, ૩ સિય અવત્તહં આવાતિ ય નોઆવાતિ ય, ૪-૭ સિય આયા ય નોઆયા ય સિય અવત્તહં ૪, ૮-૧૧ નોઆયા ય અવત્તહેણ ય ૪, તિયગસંજોગે પક્કો ણ પહર ।

૨૪. [પ્ર૦] સે કેણદ્દેઠં મંતે ! તં સેવ પહિડ્ધાચારેયહં । [૩૦] ગોચમા ! ૧ અવ્વજો આદિદ્દે આવા, ૨ વપ્પસ આદિદ્દે નોઆયા, ૩ તદુમયસ્સ આદિદ્દે અવત્તહં, ૪ દેસે આદિદ્દે સમ્માવપજ્જવે દેસે આદિદ્દે અસમ્માવપજ્જવે—પ્પં ધુચ્ચરસંજોગે સલ્લે પહંતિ તિયગસંજોગે પક્કો ણ પહર । હવ્વપ્પસિયસ્સ સલ્લે પહંતિ । જહા હવ્વપ્પસિય પ્પં જાવ—અણંતવપ્પસિય । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે'તિ જાવ—વિહરતિ ।

બારસમસ્ય દસમો ઉદ્દેસો સમત્તો ।

સમત્તં બારસમં સયં ।

વપર્યાયની અપેક્ષા અને દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા [એકવચન અને બહુવચનના] ચાર ભાગા થાય છે, સદ્ભાવપર્યાય અને તદુભયની અપેક્ષા ચાર ભાગા થાય છે, તથા અસદ્ભાવ અને તદુભયની અપેક્ષા પણ ચાર ભાગા થાય છે, તથા ૧૬ દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને દેશના આદેશથી તદુભયપર્યાયની અપેક્ષા ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા, નોઆત્મા અને આત્મા તથા નોઆત્મા—૨ ઉભયરૂપે અવત્કલ્પ્ય છે, ૧૭ દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા, દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને દેશના આદેશથી તદુભયપર્યાયની અપેક્ષા ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા, નોઆત્મા અને આત્માઓ તથા નોઆત્માઓરૂપે અવત્કલ્પ્ય છે, ૧૮ દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા, દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને દેશના આદેશથી તદુભયપર્યાયની અપેક્ષા ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા, નોઆત્માઓ અને આત્મા તથા નોઆત્મા—ઉભયરૂપે અવત્કલ્પ્ય છે, ૧૯ દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા, દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા, અને દેશના આદેશથી તદુભયપર્યાયની અપેક્ષા ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ આત્માઓ, નોઆત્મા અને આત્મા તથા નોઆત્મારૂપે અવત્કલ્પ્ય છે. માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી એમ કહેવાય છે કે, ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ કથંચિદ્ આત્મા છે, કથંચિદ્ નોઆત્મા છે અને કથંચિત્ અવત્કલ્પ્ય છે,—૨ નિક્ષેપમાં પૂર્વોક્ત ભાગાઓ યાવદ્—“નો આત્મા છે” આં સુધી કહેવા.

ચતુષ્પ્રદેશિક સ્કંધ-
આ ૨૧ ભાગાઓ.

૨૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! પંચપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા છે, કે તેથી અન્ય પંચપ્રદેશિક સ્કંધ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! પંચપ્રદેશિક સ્કંધ ૧ *કથંચિત્ આત્મા છે, ૨ કથંચિત્ નોઆત્મા છે, અને ૩ આત્મા તથા નોઆત્મારૂપે કથંચિત્ અવત્કલ્પ્ય છે, ૪ કથંચિત્ આત્મા, નોઆત્મા અને આત્મા અને અનાત્મા—ઉભયરૂપે કથંચિત્ અવત્કલ્પ્ય છે. નોઆત્મા અને અવત્કલ્પ્યવહે ૨ પ્રમાણે ચાર ભાગા કરવા, ત્રિક સંયોગમાં (આઠ ભાગા થાય છે) એક આઠમો ભાગો ઉત્તરતો નથી, ૯ટલે સાત ભાગાઓ થાય છે. (કુલ મઠ્ઠીને બાવીશ ભાગાઓ થાય છે.)

આ હેતુથી હે 'આત્મા'
સ્વભાવિરૂપ છે ?

૨૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શા હેતુથી (પંચપ્રદેશિક સ્કંધ આત્મા છે)—હૃદ્યાદિ પાઠનો પુનઃ ઉચ્ચાર કરવો. [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ (પંચપ્રદેશિક સ્કંધ) પોતાના આદેશથી આત્મા છે, ૨ પરના આદેશથી નોઆત્મા છે, ૩ તદુભયના—આદેશથી અવત્કલ્પ્ય છે, ૪ દેશના આદેશથી સદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા અને દેશના આદેશથી અસદ્ભાવપર્યાયની અપેક્ષા કથંચિત્ આત્મા છે અને આત્મા નથી—૨ પ્રમાણે ત્રિક-સંયોગમાં સર્વે ભાગા ઉપજે છે, માત્ર ત્રિકસંયોગમાં (આઠમો) એક ભાગો ઉત્તરતો નથી. ષટ્પ્રદેશિક સ્કંધને વિષે સર્વે ભાગાઓ ળાગુ પડે છે, જેમ ષટ્પ્રદેશિક સ્કંધને વિષે કહ્યું, તેમ યાવદ્—અનન્તપ્રદેશિક સ્કંધ સંબન્ધે જાણવું, 'હે ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે—' એમ કહી [ભગવાન્ ગૌતમ] યાવદ્ વિહરે છે.

દ્વાદશ્ય શ્લોકે દશમ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

દ્વાદશ્ય શ્લોક સમાપ્ત.

૨૩ * પંચપ્રદેશિક સ્કંધના બાવીશ ભાગા થાય છે, તેમાં આદિના ત્રણ ભાગા પૂર્વ પ્રમાણે સકલાદેશરૂપ છે, ચાર પઠ્ઠીના ત્રણ ભાગાના પ્રત્યેકે ચાર ચાર વિકલ્પ થાય છે, અને સાતમા ભાગાના સાત વિકલ્પ થાય છે. ત્રિકસંયોગના મૂક આઠ ભાગા થાય, તેમાં અર્ધ પ્રથમના સાત ભાગા મહત્ત્વ કરવા, એક બીજા ભાગાનો અસંમ્મ હોવાથી તે ન મહત્ત્વ કરવો. છ પ્રદેશિક સ્કંધને વિષે ત્રેવીશ ભાગા થાય છે.—ટીકા.

તેરસમું સર્વં ।

૧. ૧ પુહવી ૨ દેવ ૩ મળંતર ૪ પુહવી ૫ આહારમેવ ૬ ડવવાપ ।
૭ માસા ૮ કમ ૯ અપ્યમારે કેવાઘડિયા ૧૦ સમુઘાપ ॥

૨. [પ્ર૦] રાયગિદે જાવ—પવં વયાસી—કતિ જં મંતે ! પુહવીઓ પજસામો ? [૩૦] ગોયમા ! સાત પુહવીઓ પજસામો, તેં જહા—૧ રયજ્યમા, જાવ—૭ બહેસતમા ।

૩. [પ્ર૦] હમીસે જં મંતે ! રયજ્યમાપ પુહવીપ કેવતિયા નિરયાવાસસયસહસ્તા પજસા ? [૩૦] ગોયમા ! તીસં નિરયાવાસસયસહસ્તા પજસા । [પ્ર૦] તે જં મંતે ! કિં સંજેઝવિત્થડા, મસંજેઝવિત્થડા ? [૩૦] ગોયમા ! સંજેઝવિત્થડા વિ મસંજેઝવિત્થડા વિ ।

૪. [પ્ર૦] હમીસે જં મંતે ! રયજ્યમાપ પુહવીપ તીસાપ નિરયાવાસસયસહસ્તેમુ સંજેઝવિત્થડેમુ નરપ્પુ ૧ પગસમ-પજં કેવતિયા નેરયા ડવવજંતિ ? ૨ કેવતિયા કાડહેસ્તા ડવવજંતિ ? ૩ કેવદયા કણપખિકયા ડવવજંતિ ? ૪ કેવતિયા

ત્રયોદશશતક.

૧. [ઉદેશક સંગ્રહ—] ૧ નરક પૃથ્વી વિષે પ્રથમ ઉદેશક, ૨ દેવની પ્રરૂપણા સંબન્ધે ટ્રીજો ઉદેશક, ૩ અનન્તરાહાર—ઉપપાત ક્ષેત્રની પ્રાપ્તિ સમયે તુરતજ આહાર કરનારા—નારક સંબન્ધે ટ્રીજો ઉદેશક, ૪ પૃથિવી—નરકપૃથિવીની વક્તવ્યતા પ્રતિપાદન કરવા માટે ચોથો ઉદેશક, ૫ આહાર—નારકાદિના આહારની પ્રરૂપણા કરવા માટે પાંચમો ઉદેશક, ૬ ઉપપાત—નારકાદિના ઉપપાત સંબન્ધે છઠ્ઠો ઉદેશક, ૭ માષા સંબન્ધે સાતમો ઉદેશક, ૮ કર્મની પ્રરૂપણા કરવા માટે આઠમો ઉદેશક, ૯ અનગાર—ભાવિતાત્મા અનગાર વૈક્રિય ઇન્ધિના સામર્થ્યથી કેવાઘડિયા—હાપમાં દોરડાથી બાંધેલી ઘટ્ટીકા લઈને [૯વારૂપે] આકાશમાં ગમન કરી શકે—હ્યાદિક અર્થનું પ્રતિપાદન કરવા માટે નવમો ઉદેશક, ૧૦ અને સમુદ્ઘાતનું પ્રતિપાદન કરવા માટે દશમો ઉદેશક—૯ પ્રમાણે તેરમા શતકને વિષે દશ ઉદેશકો કહેવામાં આવશે.

પ્રથમ ઉદેશક.

૨. [પ્ર૦] રાજગૃહ નગરમાં [મગવાન્ ગૌતમ] યાવત્—૯ પ્રમાણે બોલ્યા કે—હે મગવન્ ! કેટલી નરક પૃથિવીઓ કહેલી છે ? [૩૦] હૈ ગૌતમ ! સાત નરકપૃથિવીઓ કહેલી છે, તે આ પ્રમાણે—૧ રક્ષપ્રમા, યાવત્—૭ અથઃ સસમનરકપૃથિવી.

નરકપૃથિવી.

૩. [પ્ર૦] હૈ મગવન્ ! આ રક્ષપ્રમા નરકપૃથિવીને વિષે કેટલા લાલ નરકાવાસો કહેલા છે ? [૩૦] હૈ ગૌતમ ! ત્રીશ લાલ નરકાવાસો કહેલા છે. [પ્ર૦] હૈ મગવન્ ! તે નરકાવાસો સંખ્યાતા યોજન વિસ્તારવાળા છે કે અસંખ્યાતા યોજન વિસ્તારવાળા છે ? [૩૦] હૈ ગૌતમ ! સંખ્યાતા યોજન વિસ્તારવાળા પળ છે અને અસંખ્યાતા યોજન વિસ્તારવાળા પળ છે.

રક્ષપ્રમાનેવિષે
નરકાવાસો.

૪. [પ્ર૦] હૈ મગવન્ ! આ રક્ષપ્રમાપૃથિવીના ત્રીશ લાલ નરકાવાસોમાંના સંખ્યાતાયોજનવિસ્તારવાળા નરકાવાસોને વિષે એક સમયે ૧ કેટલા નારક જીવો ઉત્પન્ન થાય, ૨ કેટલા કાપોતલેખ્યાવાળા ઉત્પન્ન થાય, ૩ કેટલા કૃષ્ણપાક્ષિકજીવો ઉત્પન્ન થાય, ૪

સંખ્યાતાયોજન
વિસ્તારવાળા નરકા-
વાસોમાં એક સમયે
નારકાદિવો ઉત્પન્ન-

૧ કેવાઘડિયા ક ।

૪ * જે જીવોને કંઈક ન્યૂન અર્થપુદ્ગલપ્રસવર્ત સંસાર થાકી હોય છે તે કૃષ્ણપાક્ષિક, અને તેથી અધિક સંસાર થાકી હોય તે કૃષ્ણપાક્ષિક કહેવાય છે.—ટીકા.

સુક્ષ્મપક્ષિયા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૫ કેવલિયા સન્ની ઉવવજ્ઞંતિ ? ૬ કેવલિયા અસન્ની ઉવવજ્ઞંતિ ? ૭ કેવલિયા ભવસિદ્ધિયા ઉવવ-
જ્ઞંતિ ? ૮ કેવલિયા અભવસિદ્ધિયા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૯ કેવલિયા આભિગ્નિબોહિયનાળી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૦ કેવલિયા સુયનાળી ઉવ-
વજ્ઞંતિ ? ૧૧ કેવલિયા ઓહિનાળી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૨ કેવલિયા મદમજ્ઞાળી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૩ કેવલિયા સુયમજ્ઞાળી ઉવવજ્ઞંતિ ?
૧૪ કેવલિયા વિમ્બંગનાળી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૫ કેવલિયા અચ્છુદર્શની ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૬ કેવલિયા અચ્છુદર્શની ઉવવજ્ઞંતિ ?
૧૭ કેવલિયા ઓહિદંસળી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૮ કેવલિયા આહારસન્નોવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૧૯ કેવલિયા મયસન્નોવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ?
૨૦ કેવલિયા મૈથુનસન્નોવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૨૧ કેવલિયા પરિગ્રહસન્નોવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૨૨ કેવલિયા ક્ષીવેદયા ઉવવજ્ઞંતિ ?
૨૩ કેવલિયા પુરિસવેદયા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૨૪ કેવલિયા નપુંસગવેદયા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૨૫ કેવલિયા કોહકસાર્દ ઉવવજ્ઞંતિ ? ૨૮
જાવ-કેવલિયા લોમકસાર્દી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૨૯ કેવલિયા સોહંદિયવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ? જાવ-૩૩ કેવલિયા ફાર્સિદિયોવડતા
ઉવવજ્ઞંતિ ? ૩૪ કેવલિયા નોહંદિયોવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૩૫ કેવલિયા મજ્ઞોગી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૩૬ કેવલિયા વજ્ઞોગી ઉવવ-
જ્ઞંતિ ? ૩૭ કેવલિયા કાયજોગી ઉવવજ્ઞંતિ ? ૩૮ કેવલિયા સાગારોવડતા ઉવવજ્ઞંતિ ? ૩૯ કેવલિયા અનાગારોવડતા ઉવ-
વજ્ઞંતિ ? [૩૦] ગોચમા ! ઈમીસે ણં રયણપ્પમાપ પુલ્લવીય તીસાપ નિરયાવાસસયસહસ્સેસુ સંલેજ્ઞવિત્થહેસુ નરયસુ જહ્ણેણં
પક્કો વા દો વા તિમ્મિ વા, ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞા નેરયા ઉવવજ્ઞંતિ, જહ્ણેણં પક્કો વા દો વા તિમ્મિ વા, ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞા
કાડલેસ્સા ઉવવજ્ઞંતિ, જહ્ણેણં પક્કો વા દો વા તિમ્મિ વા, ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞા કણ્ઠપક્ષિયા ઉવવજ્ઞંતિ, एवं સુક્ષ્મપક્ષિયા વિ, एवं
સન્ની, एवं અસન્ની વિ, एवं ભવસિદ્ધિયા, एवं અભવસિદ્ધિયા, આભિગ્નિબોહિયનાળી, સુયનાળી, ઓહિનાળી, મદમજ્ઞાળી, સુયમજ્ઞાળી,
વિમ્બંગનાળી एवं વેવ, અચ્છુદર્શની ણ ઉવવજ્ઞંતિ, જહ્ણેણં પક્કો વા દો વા તિમ્મિ વા ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞા અચ્છુદર્શની ઉવવજ્ઞંતિ, एवं
ઓહિદંસળી વિ, આહારસન્નોવડતા વિ, જાવ-પરિગ્રહસન્નોવડતા વિ, ક્ષીવેદયા ન ઉવવજ્ઞંતિ, પુરિસવેદયા વિ ન ઉવવજ્ઞંતિ,
જહ્ણેણં પક્કો વા દો વા તિમ્મિ વા, ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞા નપુંસગવેદયા ઉવવજ્ઞંતિ, एवं કોહકસાર્દ, જાવ-લોમકસાર્દ, સોહંદિય-
વડતા ન ઉવવજ્ઞંતિ, एवं જાવ-ફાર્સિદિયોવડતા ન ઉવવજ્ઞંતિ, જહ્ણેણં પક્કો વા દો વા તિમ્મિ વા, ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞા

કેટલા શુક્ષ્મપક્ષિક જીવો ઉત્પન્ન થાય, ૫ કેટલા સંજ્ઞી જીવો ઉત્પન્ન થાય, ૬ કેટલા અસંજ્ઞી જીવો ઉત્પન્ન થાય, ૭ કેટલા ભવસિદ્ધિક
જીવો ઉત્પન્ન થાય, ૮ કેટલા અભવસિદ્ધિક જીવો ઉત્પન્ન થાય, ૯ કેટલા આભિગ્નિબોધિકજ્ઞાની-મતિજ્ઞાની ઉત્પન્ન થાય, ૧૦ કેટલા શ્રુતજ્ઞાની
ઉત્પન્ન થાય, ૧૧ કેટલા અવધિજ્ઞાની ઉત્પન્ન થાય, ૧૨ કેટલા મતિઅજ્ઞાની ઉત્પન્ન થાય, ૧૩ કેટલા શ્રુતઅજ્ઞાની ઉત્પન્ન થાય, ૧૪ કેટલા
વિમ્બંગજ્ઞાની ઉત્પન્ન થાય, ૧૫ કેટલા અચ્છુદર્શની ઉત્પન્ન થાય, ૧૬ કેટલા *અચ્છુદર્શની ઉત્પન્ન થાય, ૧૭ કેટલા અવધિદર્શની ઉત્પન્ન
થાય, ૧૮ કેટલા આહારસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા જીવ ઉત્પન્ન થાય, ૧૯ કેટલા મયસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય, ૨૦ કેટલા મૈથુનસં-
જ્ઞાના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય, ૨૧ કેટલા પરિગ્રહ સંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય, ૨૨ કેટલા ક્ષીવેદી જીવ ઉત્પન્ન થાય, ૨૩
કેટલા પુરુષવેદી ઉત્પન્ન થાય, ૨૪ કેટલા નપુંસકવેદી ઉત્પન્ન થાય, ૨૫ કેટલા ક્રોધકષાયવાળા જીવ ઉત્પન્ન થાય, યાવત્-૨૮ કેટલા
લોભકષાયવાળા ઉત્પન્ન થાય, ૨૯ કેટલા શ્રોત્રેન્દ્રિયના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય, યાવત્ ૩૩ કેટલા સ્પર્શનેન્દ્રિયના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન
થાય, ૩૪ કેટલા નોહંદ્રિય (મન)ના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય, ૩૫ કેટલા મનયોગી ઉત્પન્ન થાય, ૩૬ કેટલા વચ્ચનયોગી ઉત્પન્ન થાય,
૩૭ કેટલા કાયયોગી ઉત્પન્ન થાય, ૩૮ કેટલા સાકારોપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય, અને ૩૯ કેટલા અનાકારોપયોગવાળા ઉત્પન્ન થાય ? [૩૦]
હે ગૌતમ ! આ રત્નપ્રમાપૃથિવીના ત્રીશ લાખ નરકાવાસોમાના સંખ્યાતા યોજનના વિસ્તારવાળા નરકાવાસોને વિષે ૧ જઘન્યધકી એક, બે કે
ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટથી સંખ્યાતા નારકો ઉત્પન્ન થાય છે, ૨ જઘન્યધી એક બે કે ત્રણ, અને ઉત્કૃષ્ટથી સંખ્યાતા કાપોતલેદ્યાવાળા ઉત્પન્ન થાય
છે, કારણકે પ્રથમ નરક પૃથિવીમાં કાપોતલેદ્યા હોય છે. ૩ જઘન્યધી એક, બે કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટથી સંખ્યાતા કુણ્ણપાક્ષિક જીવો ઉત્પન્ન
થાય છે, ૫ પ્રમાણે શુક્ષ્મપક્ષિક સંબંધે પણ જાણવું, ૫ રીતે સંજ્ઞી અને અસંજ્ઞીને પણ કહેવું, ૫ પ્રમાણે ભવસિદ્ધિક અને અભવસિદ્ધિક જીવો પણ
જાણવા. મતિજ્ઞાની, શ્રુતજ્ઞાની, અવધિજ્ઞાની, મતિઅજ્ઞાની, શ્રુતઅજ્ઞાની, વિમ્બંગજ્ઞાની ૫ સર્વ ૫ પ્રમાણેજ ઉત્પન્ન થાય છે. અચ્છુદર્શનવાળા જીવો
ઉત્પન્ન થતા નથી. જઘન્યધી એક, બે અથવા ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટથી સંખ્યાતા અચ્છુદર્શનવાળા જીવો ઉત્પન્ન થાય છે. [કારણકે ઉત્પત્તિ સમયે
સામાન્ય ઉપયોગરૂપ અચ્છુદર્શન છે.] ૫મ અવધિદર્શનવાળા પણ જાણવા. ૫ રીતે આહાર સંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા અને યાવત્ પરિગ્રહ
સંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા પણ ૫ પ્રમાણે ઉત્પન્ન થાય છે. ક્ષીવેદવાળા અને પુરુષવેદવાળા જીવો [ભવપ્રત્યય નપુંસકવેદ હોવાથી] ઉત્પન્ન થતા
નથી. જઘન્યધકી એક, બે કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટથી સંખ્યાતા નપુંસકવેદી ઉત્પન્ન થાય છે. ૫ પ્રમાણે ક્રોધકષાયી, અને યાવત્ લોભકષાયી
જાણવા. શ્રોત્રેન્દ્રિયના ઉપયોગવાળા ઉત્પન્ન થતા નથી, અને યાવત્ સ્પર્શનેન્દ્રિયના ઉપયોગવાળા પણ ઉત્પન્ન થતા નથી. જઘન્યધી એક, બે

૪ * હિન્દિયો અને મન વિષય સામાન્ય ઉપયોગમાત્રને પણ અચ્છુદર્શન કહે છે, અને તે ઉત્પત્તિસમયે પણ હોય છે તેથી ઉત્તરમાં 'અચ્છુદર્શની
ઉત્પન્ન થાય છે'—૫મ કહ્યું છે.

† યાવત્ શબ્દથી મયસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા અને મૈથુનસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા જીવો પ્રહણ કરવા.

નોંદિઓવડતા ઉચ્ચજાંતિ, મળજોગી ન ઉચ્ચજાંતિ, एवं वहजोगी वि, जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा कायजोगी उचचजंति, एवं सागारोवडता वि, एवं मणागारोवडता वि ।

૫. [પ્ર૦] इमीसे णं मंते ! रयणप्यभाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु संजेजवित्थडेसु नरपसु एगसमएणं केवइया नेरइया उचचंति ? केवतिया काउलेस्ता उचचंति ? जाव-केवतिया मणागारोवडता उचचंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे णं रयणप्यभाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु संजेजवित्थडेसु नरपसु एगसमएणं जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा नेरइया उचचंति, जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा काउलेस्ता उचचंति, एवं जाव-सणी । असणी ण उचचंति । जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा मवसिइयीया उचचंति, एवं जाव-सुयम-काणी । विभंगजानी ण उचचंति, चक्खुदंसणी ण उचचंति । जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा मवक्खु-दंसणी उचचंति, एवं जाव-लोभकसायी । सोइविओवडता ण उचचंति, एवं जाव-फासिइयोवडता न उचचंति । जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा नोइवियोवडता उचचंति । मणजोगी न उचचंति, एवं वहजोगी वि । जहजेणं एको वा दो वा तिभि वा, उकोसेणं संजेजा कायजोगी उचचंति, एवं सागारोवडता वि, मणागारोवडता वि ।

૬. [પ્ર૦] इमीसे णं मंते ! रयणप्यभाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु संजेजवित्थडेसु नरपसु केवइया नेरइया, पन्नता केवइया काउलेस्ता, जाव-केवतिया मणागारोवडता पन्नता ? केवतिया अणंतरोवडगा पन्नता १ ? केव-इया परंपरोवडगा पन्नता २ ? केवइया अणंतरोवगाढा पन्नता ३ ? केवइया परंपरोवगाढा पन्नता ४ ? केवइया अणंतराहारा पन्नता ५ ? केवतिया परंपराहारा पन्नता ६ ? केवतिया अणंतरपज्जता पन्नता ७ ? केवतिया परंपरपज्जता पन्नता ८ ? केव-तिया चरिमा पन्नता ९ ? केवतिया अचरिमा पन्नता १० ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयणप्यभाय पुढवीय तीसाय निरयावा-ससयसहस्सेसु संजेजवित्थडेसु नरपसु संजेजा नेरतिया पन्नता, संजेजा काउलेस्ता पन्नता, एवं जाव-संजेजा सणी पन्नता ।

કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ઠી સંખ્યાતા *નોંદિયના ઉપયોગવાલ્લ ઉત્પન્ન થાય છે. મનયોગી અને વચ્ચનયોગી ઉત્પન્ન થતા નથી. જઘન્યથી એક, બે અને ત્રણ તથા ઉત્કૃષ્ઠી સંખ્યાતા કાયયોગવાલ્લ ઉત્પન્ન થાય છે. ૧ પ્રમાણે સાકારોપયોગવાલ્લ અને ૧ રીતે અનાકારોપયોગવાલ્લ પણ ઉત્પન્ન થાય છે.

૫. [પ્ર૦] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्यातायोजन विस्तारवाळ नरकावासोने विषे एक समयमां केटला नारक जीवो उद्वर्ते-मरण पामे, केटला कापोतलेस्यावाळ उद्वर्ते, यावत्-केटला अनाकारोपयोगवाळ उद्वर्ते ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्याता योजन विस्तारवाळ नरकावासोमां एक समये जघन्यथी एक, बे के त्रण અને उत्कृष्टथी १ संख्याता नारको उद्वर्ते, जघन्यथी एक, बे के त्रण અને उत्कृष्टथी संख्याता कापोतलेस्यावाळ उद्वर्ते, १ प्रमाणे यावत्-संज्ञी जीवो सुची उद्वर्तना जाणवी. असंज्ञी जीवो †उद्वर्तता नथी. भवसिद्धिक जीवो जघन्यथी एक, बे के त्रण અને उत्कृष्टथी संख्याता उद्वर्ते છે. ૧ પ્રમાણે-યાવત્ શ્રુતઅજ્ઞાની સુચી જાણવું. વિભંગજ્ઞાની અને ચક્ષુદર્શની ઉદ્વર્તતા નથી. જઘન્યથી એક, બે કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ઠથી સંખ્યાતા અચક્ષુદર્શની ઉદ્વર્તે છે. ૧ પ્રમાણે યાવત્ લોભકષાયી જીવો સુચી જાણવું. શ્રોત્રેન્દ્રિયના ઉપયોગવાલ્લ ઉદ્વર્તતા નથી. ૧ પ્રમાણે યાવત્-સ્પર્શનેન્દ્રિયના ઉપયોગવાલ્લ પણ ઉદ્વર્તતા નથી. જઘન્યથી એક, બે કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ઠથી સંખ્યાતા નોંદિયના ઉપયોગવાલ્લ ઉદ્વર્તે છે. મનયોગી ઉદ્વર્તતા નથી. ૧ પ્રમાણે વચ્ચનયોગી પણ ઉદ્વર્તતા નથી. કાયયોગી જઘન્યથી એક, બે કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ઠથી સંખ્યાતા ઉદ્વર્તે છે. ૧ પ્રમાણે સાકારોપયોગવાલ્લ અને અનાકારોપયોગવાલ્લ પણ જાણવા. [૧ પ્રમાણે નારક જીવોને વિષે ઉદ્વર્તનાનું પરિમાણ કહ્યું].

૬. [પ્ર૦] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्याता योजन विस्तारवाळ नरकावासोने विषे १ केटला नारक जीवो कहेला છે ? २ केटला कापोत लेस्यावाळ, यावत्-३९ केटला अनाकारोपयोगवाळ कहेला છે. १ केटला अनन्तरोपपन्न-प्रथम समये उत्पन्न थयेला होय છે, અને केटला परंपरोपपन्न-उत्पत्ति समयनी अपेक्षाए बे इत्यादि समयोने विषे उत्पन्न थयेला होय છે. केटला अनंत-रावगाढ-विवक्षित क्षेत्रने विषे प्रथम समयमां रहेला છે, केटला परंपरावगाढ-विवक्षित क्षेत्रमां द्वितीयादि समयने विषे रहेला છે, केटला अनंतराहारा-प्रथम समये आहार करवावाळ છે, केटला परंपराहारा-द्वितीयादि समये आहार करवावाळ છે, केटला अनंतरपर्याप्ता-प्रथम समये पर्याप्ता होय છે, અને केटला परंपरपर्याप्ता-द्वितीयादि समये पर्याप्ता होय છે, केटला चरम-जेने छेछो तेज नारकभव बाकी છે एवा होय છે, अथवा केटला नारक भवना चरम छेछे समये वर्ते છે, १० અને केटला अचरम-चरमथकी विपरीत होय છે ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमाना संख्याता योजन विस्तारवाळ नरकावासोने विषे १ संख्याता नारक जीवो कहेला છે, २

एक समये नारक जीवो उद्वर्तता.

रत्नप्रभायां नारक जीवोनी सङ्ख्या.

* नोइन्द्रिय-मन, यद्यपि अहिं अपर्याप्तावस्थामां मनःपर्याप्तित्वो अभाव होवाथी इव्य मन होतું नથી, तो पण चैतन्यरूप भावमन इमेंशां होय છે, માટે 'નોइन्द्रિયના ઉપયોગવાલ્લ ઉત્પન્ન થાય છે'-એમ કહ્યું છે-ટીકા.

† १ संख्याता योजन विस्तारवाळ नरकावासने विषे संख्याताज नारको समाह थके.

‡ उद्वर्तना परभवना प्रथम समयने विषे होय, અને नारकी अवज्ञीने विषे न उचजे, માટે અસંજી ઉદ્વર્તતા નથી.-ટીકા.

असञ्जी सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जइजेणं एको वा दो वा तिप्पि वा, उकोसेणं संखेजा पक्कता । संखेजा भवसिद्धीया पक्कता, एवं जाव-संखेजा परिग्गाहसखोवउत्ता पक्कता, इत्थिवेद्गा नत्थि, पुरिसवेद्गा नत्थि, संखेजा नपुंसगवेद्गा पक्कता, एवं कोइकसायी वि । मानकसाई जइ असञ्जी, एवं जाव-लोभकसायी । संखेजा लोइदियोवउत्ता पक्कता, एवं जाव-फासिदियोवउत्ता । नोइदियोवउत्ता जइ असञ्जी । संखेजा मणजोगी पक्कता, एवं जाव-अणागारोवउत्ता । अणंतरोवउत्ता सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जइ असञ्जी । संखेजा परंपरोवउत्ता पक्कता । एवं जइ अणंतरोवउत्ता तइ अणंतरोवउत्ता-वगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपक्कता, अरिमा । परंपरोवउत्ता, जाव-अचरिमा जइ परंपरोवउत्ता ।

७. [प्र०] इमीसे ञं भंते ! रणण्यमाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु असंखेजवित्थेसु एगसमएणं केव-तिया नेरया उववजंति, जाव-केवतिया अणागारोवउत्ता उववजंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रणण्यमाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु असंखेजवित्थेसु नरयसु एगसमएणं जइजेणं एको वा दो वा तिप्पि वा, उकोसेणं असंखेजा केव-इया उववजंति । एवं जइव संखेजवित्थेसु तिप्पि गमगा तइ असंखेजवित्थेसु वि तिप्पि गमगा भाणित्ता, नवरं असं-खेजा भाणियत्ता, सेसं तं वेव, जाव-असंखेजा अचरिमा पक्कता, नाणसं हेस्सासु, हेस्साओ जइ पढमसय, नवरं संखेज-वित्थेसु वि असंखेजवित्थेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेजा उववजंति, सेसं तं वेव ।

८. [प्र०] सक्करपमाय ञं भंते ! पुढवीय केवतिया निरयावास-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता । [प्र०] ते ञं भंते ! किं संखेजवित्थेसु, असंखेजवित्थेसु ? [उ०] एवं जइ रणण्यमाय तइ सक्करपमाय वि । नवरं असञ्जी तिप्पु वि गमयसु न अत्थि, सेसं तं वेव ।

संख्याता कापोतलेख्यावाळ्य कहेला छे, ए प्रमाणे यावत्-संख्याता संज्ञी जीवो कहेला छे. *असंज्ञी जीवो कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय छे तो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता होय छे, संख्याता भवसिद्धिक जीवो कहेला छे, ए प्रमाणे यावत् संख्याता परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळ्य कहेला छे; स्त्रीवेदी नथी अने पुरुषवेदी पण नथी, नपुंसकवेदी संख्याता होय छे. ए प्रमाणे क्रोधकषायी पण संख्याता होय छे. मानकषायी असंज्ञीनी पेटे [कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी.] ए प्रमाणे यावत्-[माया-कषायी अने] लोभकषायी जाणवा. संख्याता श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळ्य कइया छे, ए प्रमाणे यावत्-स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळ्य पण कइया छे. नोइन्द्रियना उपयोगवाळ्य असंज्ञीनी पेटे जाणवा, संख्याता मनोयोगी कहेला छे, अने ए प्रमाणे यावत् [संख्याता] ३९ अनाकारोपयोगी जाणवा. अणंतरोपपन्न-प्रथम समये उत्पन्न धवावाळ्य नारको कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय तो ते असंज्ञीनी पेटे जाणवा. संख्याता परंपरोपपन्न-द्वितीयादि समये उत्पन्न थयेला जाणवा. ए प्रमाणे जेम अणंतरोपपन्न कइया तेम अणंतरावगाढ अणंतरा-हारक, अणन्तरपर्याप्तक अने चरम-जेमे छेड्डोज नारक भव बाकी छे ते अथवा नारकभवेने छेडे समये वर्तता-जाणवा. परंपरावगाढ, यावत्-अचरम सुधी जेम परंपरोपपन्न कइया तेम कहेवा. [ए प्रमाणे संख्याता योजन विस्तारवाळ्य नरकावासनी वक्तव्यता कइी.]

असंख्ययोनववाळ्य
नरकावासोमां नार-
कासिनी उत्पाद.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना असंख्यात योजन विस्तारवाळ्य नरकावासोने विषे एक समये केटल नारको उत्पन्न थाय, यावत्-केटल अनाकारोपयोगवाळ्य उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावा-सोमांना असंख्यातयोजन विस्तारवाळ्य नरकावासोने विषे एक समये जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी असंख्याता नारको उत्पन्न थाय छे, ए प्रमाणे जेम संख्याता विस्तारवाळ्य नरकने विषे [उत्पाद, च्यवन अने सत्ता-] ए त्रण आलापक कइया तेम असंख्यातयोजन विस्तारवाळ्य नरकावासोने विषे पण त्रण आलापक कहेवा, परन्तु अहिं 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो. बाकी बंधुं पूर्व पेटे जाणवुं. यावत् 'असंख्याता अचरम नारको कहेला छे'-स्यां सुधी कहेवुं. लेख्याने विषे विशेषता छे, अने ते लेख्याओ प्रथम शतकमां कइया प्रमाणे जाणवी. परन्तु एटलो विशेष छे के संख्यात योजन विस्तारवाळ्य अने असंख्यात योजन विस्तारवाळ्य नरकावासोने विषे अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी असंख्याता ज च्यवे छे,—एम कहेवुं, बाकी बंधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा नरक पृथिवीने विषे केटल नरकावासो होय छे—ते संबन्धे प्रभ. [उ०] हे गौतम ! पचीश लाख नरकावासो होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते नरकावासो छुं संख्यातयोजनविस्तारवाळ्य होय के असंख्यातयोजनविस्तारवाळ्य होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा संबन्धे कइयां तेम शर्कराप्रभा संबन्धे जाणवुं, परन्तु [उत्पाद, उद्वर्तना अने सत्ता-] ए त्रणे आलापकने विषे असंज्ञी न कहेवा [कारण के असंज्ञी प्रथम नरकपृथिवीने विषेज उपजे छे.] बाकी बंधुं पूर्व पेटे जाणवुं.

६ * असंज्ञीयकी मरण पामी जेओ नारकपणे उत्पन्न थमा छे, तेओ अर्थात्तावस्वामां भूतभावनी अपेक्षाए असंज्ञी कहेवाय छे, तेओ अल्प होय के माटे 'असंज्ञी कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी' एम कइया छे—टीका.

७ † भग० खं० १ खं० १ उ० १ पृ० १०४. जुओ प्रश्ना० केव्हापद १७ उ० २ प० १४३-२.

‡ अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी तीर्थकरादि ज होय, ते थोडा होय माटे ते संख्याताज नीकळे.—टीका.

शर्कराप्रभामां
नरकावासो.

९. [प्र०] बालुप्यमाय नं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पत्तरस निरयावाससयसहस्सा पत्तरा, सेसं जहा सहरप्यमाय, वाणसं केसासु, केसाओ जहा पदमसय ।
१०. [प्र०] पंकप्यमाय नं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इस निरयावाससयसहस्सा पत्तरा, एवं जहा सहरप्यमाय, नवरं ओहिनापी ओहिंसणी व न उच्रंति, सेसं तं वेव ।
११. [प्र०] धूमप्यमाय नं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिचि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्यमाय ।
१२. [प्र०] तमाय नं मंते ! पुढवीय केवतिया निरयावास० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पञ्चसे । सेसं जहा पंकप्यमाय ।
१३. [प्र०] अहेसत्तमाय नं मंते ! पुढवीय कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पत्तरा ? [उ०] गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव-अपद्दुणे । [प्र०] ते नं मंते ! कि संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडे व असंखेज्जवित्थडा थ ।
१४. [प्र०] अहेसत्तमाय नं मंते ! पुढवीय पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालया० जाव-महानिरपसु संखेज्जवित्थडे नरप एगसमएणं केवतिया० ? [उ०] एवं जहा पंकप्यमाय, नवरं तिसु नाणेसु न उववजंति, न उच्रंति, पत्तरा एसु तहेव मत्थि, एवं असंखेज्जवित्थडेसु चि, नवरं असंखेज्जा भाणियत्ता ।
१५. [प्र०] इमीसे नं मंते ! रयणप्यमाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरपसु कि सम्मदिट्ठी नेरतिया उववजंति, मिच्छदिट्ठी नेरतिया उववजंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरतिया उववजंति ? [उ०] गोयमा ! सम्मदिट्ठी चि नेरया उववजंति, मिच्छादिट्ठी चि नेरया उववजंति, जो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरया उववजंति ।

९. [प्र०] बालुकाप्रभा संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंदरलाख नरकावासो कहा है, बाकी बंधुं शर्कराप्रभानी पेटे जाणवुं. पण लेख्याने विषे *विशेषता छे, अने ते प्रथम शतकमां कहा प्रमाणे जाणवी.
१०. [प्र०] हे भगवन् ! पंकप्रभा नरकने विषे केटल नरकावासो कहा छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! दश लाख नरकावासो कहा छे. ए प्रमाणे जेम शर्कराप्रभा संबन्धे कह्युं, तेम अहिं पण जाणवुं. परन्तु अहिंयी अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवता नथी, बाकी बंधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं.
११. [प्र०] धूमप्रभा संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण लाख नरकावासो कहा छे, ए प्रमाणे जेम पंकप्रभा संबन्धे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं.
१२. [प्र०] हे भगवन् ! तमा नरकपृथिवीने विषे केटल नरकावासो कहा छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पांच न्यून एक लाख नरकावासो कहा छे. बाकी बंधुं पंकप्रभा पेटे जाणवुं.
१३. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसत्तम नरक पृथिवीने विषे अनुत्तर अने अत्यंत मोटा एवा केटल महानरकावासो कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुत्तर अने मोटा पांच नरकावासो कहा छे. यावत्—[१ काल, २ महाकाल, ३ रोर, ४ महारोर, अने] ५ अप्रतिष्ठान. [प्र०] हे भगवन् ! ते नरकावासो छुं संख्यात योजनना विस्तारवाळ छे के असंख्यात योजनना विस्तारवाळ छे ? [उ०] हे गौतम ! वबेनो अप्रतिष्ठान नरकावास संख्यातयोजनना विस्तारवाळो छे अने बीजा असंख्यातयोजनना विस्तारवाळ छे.
१४. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसत्तम नरकपृथिवीना पांच अनुत्तर अने अत्यंत मोटा यावत्—महानरकावासोमांना संख्यात योजन विस्तारवाळ नरकावासने विषे एक समये केटल नारको उत्पन्न थाय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम पंकप्रभाने विषे कह्युं तेम अहिं जाणवुं; परंतु एटलो विशेष छे के अहिं त्रण ज्ञानसहित उत्पन्न यता नथी, [केमके सम्यक्त्वभ्रष्ट ज अहिं उपजे छे.] तेम च्यवता पण नथी. तो पण ए पांच नरकावासोमां ए प्रमाणे—प्रथमादि नरकपृथिवीनी जेम त्रण ज्ञानवाळ होय छे. ए प्रमाणे असंख्यातायोजनविस्तारवाळ नरकावासोने विषे पण जाणवुं, परन्तु त्यां 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो.
१५. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्तप्रभापृथिवीन्न त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजनविस्तारवाळ नरकावासोने विषे छुं सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थाय, मिध्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय के सम्यग्मिध्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि पण नारको उपजे, मिध्यादृष्टि पण नारको उपजे, परन्तु सम्यग्मिध्यादृष्टि नारको उत्पन्न यता नथी.

बालुकाप्रभा
नरकावासो.

पंकप्रभा
नरकावासो.

धूमप्रभा
नरकावासो.

तमःप्रभा
नरकावासो.

सत्तम नरक
नरकावासो.

रत्तप्रभा
संख्यातायोजन
विस्तारवाळ
नरकावासो
सम्यग्दृष्टि नारको
उत्पन्न.

९ * प्रथमनी जे नरक पृथिवीमां कापोतकेया होय छे, त्रीश नरकपृथिवीमां मिध्र-कापोत अने नील बभे केया छे. चतुर्थ पृथिवीमां नीलकेया छे, पांचवी पृथिवीमां मिध्र-कृष्ण अने नील बभे केया छे, छठी पृथिवीमां कृष्णकेया छे अने सातवी नरकपृथिवीमां परमकृष्णकेया छे.

† भग० अं० १ अ० १ उ० २ पृ० १०४. सुओ प्रभा० केया पद १७ उ० २ प० ३४१-२.

१० † अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी प्रायः तीर्थकर ज होय अने बोधी भादि नरकपृथिवीनी नीकलेला तीर्थकर न थाय माटे 'अहिंयी अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवता नथी' एम कह्युं छे—टीका.

१६. [प्र०] इमीसे णं मंते ! रयणप्यभाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरपसु किं सम्महिद्वी नेरपया उच्चंति ? [उ०] एवं खेव ।

१७. [प्र०] इमीसे णं मंते ! रयणप्यभाय पुढवीय तीसाय निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्महिद्वीहिं नेरपयिं अविरहिया, मिच्छाविद्वीहिं नेरपयिं अविरहिया, सम्मामिच्छविद्वीहिं नेरपयिं अविरहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सम्महिद्वीहिं वि नेरपयिं अविरहिया, मिच्छाविद्वीहिं वि नेरपयिं अविरहिया, सम्मामिच्छाविद्वीहिं नेरपयिं अविरहिया वा । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिक्खि गमगा भाणियथा । एवं सक्करप्यभाय वि, एवं जाव-तमाय वि ।

१८. [प्र०] अहेसत्तमाय णं मंते ! पुढवीय पंचसु अणुत्तरेसु जाव-संखेज्जवित्थडे नरप किं सम्महिद्वी नेरपया-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सम्महिद्वी नेरपया न उच्चजंति, मिच्छाविद्वी नेरपया उच्चजंति, सम्मामिच्छविद्वी नेरपया न उच्चजंति, एवं उच्चंति वि, अविरहिय जहेव रयणप्यभाय । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिक्खि गमगा ।

१९. [प्र०] से नूनं मंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से, जाव-सुकलेस्से भविता कण्हलेस्सेसु नेरपसु उच्चजंति ? [उ०] इंता, गोयमा ! कण्हलेस्से जाव-उच्चजंति । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं पुच्छा-कण्हलेस्से जाव-उच्चजंति ? [उ०] गोयमा ! लेस्सट्टाणेसु संकिलिस्समाणेसु २ कण्हलेसं परिणमइ, कण्ह० २-णमिक्खा कण्हलेस्सेसु नेरपसु उच्चजंति, से तेणट्टेणं जाव-उच्चजंति ।

२०. [प्र०] से नूनं मंते ! कण्हलेस्से जाव-सुकलेस्से भविता नीललेस्सेसु नेरपसु उच्चजंति ? [उ०] इंता, गोयमा ! जाव-उच्चजंति । [प्र०] से केणट्टेणं जाव-उच्चजंति ? [उ०] गोयमा ! लेस्सट्टाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्जमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमति, नील० २-णमिक्खा नीललेस्सेसु नेरपसु उच्चजंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव-उच्चजंति ।

२१. [प्र०] से नूनं मंते ! कण्हलेस्से नील० जाव-भविता काउलेस्सेसु नेरपसु उच्चजंति ? [उ०] एवं जहा नीललेस्साय तहा काउलेस्साय वि भाणियथा, जाव-से तेणट्टेणं जाव-उच्चजंति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति ।

त्रयोदश शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथ्वीना श्रीश लाख नरकावासोमांना संख्यातायोजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे शुं सम्यग्दृष्टि नारकी च्यवे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथ्वीना श्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासो शुं सम्यग्दृष्टि नारको वडे अविरहित-सहित छे, मिध्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे के सम्यग्मिध्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे ? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नारको वडे अविरहित छे, अने मिध्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे, परन्तु सम्यग्मिध्यादृष्टि नारको वडे कदाचित् अविरहित होय छे अने कदाचित् विरहित होय छे. ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाळा नरकोने विषे पण [उत्पाद, उद्दवर्तना अने सत्ता संबन्धे] ऋण आलापक कहैवा. ए प्रमाणे शर्कराप्रभाने विषे अने यावत्-तमापृथिवी सुधी कहैवुं.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसप्तपृथ्वीना पांच अनुत्तर नरकावासोमांना यावत्-संख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे शुं सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थाय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थता नथी, पण मिध्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय छे. सम्यग्मिध्यादृष्टि नारको उत्पन्न थता नथी. [सम्यग्मिध्यादृष्टि काल न करे माटे न उपजे.] ए प्रमाणे उद्दवर्तना पण कहैवी. जेम रत्नप्रभाने विषे सत्ता संबन्धे नारको मिध्यादृष्ट्यादिवडे अविरहित-सहित कदा छे तेम अहिं कहैवुं, ए प्रमाणे असंख्याता योजन-विस्तारवाळा नरकावासोने विषे पण ऋण आलापको कहैवा.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर कृष्णलेस्यावाळो, नीललेस्यावाळो, यावत्-शुक्ललेस्यावाळो धईने कृष्णलेस्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! कृष्णलेस्यावाळो धईने यावत्-उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी आप एम कहो छो के 'कृष्ण-लेस्यावाळो धईने यावत्-उत्पन्न थाय ?' [उ०] हे गौतम ! लेस्याना स्थानको संकेशने पामतां पामतां कृष्णलेस्यारूपे परिणमे छे, कृष्णलेस्या-रूपे परिणाम थया बाद ते कृष्णलेस्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी यावत्-'उत्पन्न थाय छे.'

२०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर कृष्णलेस्यावाळो, यावत्-शुक्ललेस्यावाळो धईने नीललेस्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! यावत्-उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत्-उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! लेस्याना स्थानको संकेशने पामतां अने विशुद्धि पामतां, नीललेस्यारूपे परिणमे छे, नीललेस्यारूपे परिणाम थया बाद नीललेस्यावाळा नारकोमां ते उत्पन्न थाय छे, ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् उत्पन्न थाय छे.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर कृष्णलेस्यावाळो, नीललेस्यावाळो, अने यावत्-[शुक्ललेस्यावाळो धईने] कापोतलेस्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय ? [उ०] जेम नीललेस्या संबन्धे कहुं, तेम कापोतलेस्या संबन्धे पण यावत्-'ते हेतुथी यावत्-उत्पन्न थाय छे,' त्यां सुधी कहैवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

त्रयोदश शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

सम्यग्दृष्टिबगोरेनी
उद्दवर्तना.

सम्यग्दृष्टि बगोरेनी
अविरहित होय.

सप्तम नरकमां
सम्यग्दृष्टि बगोरे
उपजे !

कृष्णलेस्यावाळो
धईने कृष्णलेस्या-
वाळा नारकोमां
उत्पन्न थाय !

नीललेस्यावाळा
नारकोमां उत्पन्न
थाय !
तेनो हेतु.

कापोतलेस्यावाळा
नारकोमां उपजे !

बीओ उद्देशो.

१. [प्र०] कविविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ! [उ०] गोयमा ! चउच्चिहा देवा पन्नत्ता, तंजहा— भवणवासी, २ चाणमं-
तरा, ३ जोइसिआ, ४ वेमाणिआ ।

२. [प्र०] भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा— १ असुरकु-
मारा—एवं भेओ जहा वितियसप देवुइसप, जाव—अपराजिया, सव्वट्टसिद्धगा ।

३. [प्र०] केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चोसंठि असुरकुमारावासस-
यसहस्सा पण्णत्ता [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखे-
ज्जवित्थडा वि ।

४. [प्र०] चोसट्टीप णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवतिया
असुरकुमारा उववज्जंति, जाव—केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवतिया कण्हपविसया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए
तहैव पुच्छा, तहैव धागरणं; नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति, सेसं तं चैव । उच्चट्टगा
वि तहैव, नवरं असणी उच्चट्टंति । ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उच्चट्टंति, सेसं तं चैव, पन्नत्ता एसु तहैव, नवरं संखेज्जगा इत्थि-

द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारना देवो कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारना देवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१
भवनवासी, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिषिक अने ४ वैमानिक.

देवोना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासी देवो केटला प्रकारना कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे—
१ असुरकुमार—इत्यादि मेदो बीजा शतकना *देवोद्देशकनां कक्षा प्रमाणे यावत् 'अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध' पर्यन्त कहेवा.

भवनवासी देवोना
प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना केटला लाख आवासो कक्षा छे ? [उ०] हे गौतम ! चोसठ लाख असुरकुमारना आवासो
कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते असुरकुमारना आवासो संख्याता योजनविस्तारवाळ छे के असंख्यातायोजनविस्तारवाळ छे ? [उ०]
हे गौतम ! संख्याता योजनविस्तारवाळ पण छे अने असंख्यातायोजनविस्तारवाळ पण छे.

असुरकुमारना
आवासो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! चोसठ लाख असुरकुमारना आवासोमाना संख्यातायोजनविस्तारवाळ असुरकुमारोना आवासोमां एक
समये केटला असुरकुमारो उपजे, यावत्—केटला तेजोलेइयावाळ उत्पन्न थाय, केटला कृष्णपाक्षिक जीवो उत्पन्न थाय ? ए प्रमाणे जेम रत्न-
प्रमा संबंधे [उ० १ प्र० ४] प्रश्न कर्यो हतो, तेम अहिं प्रश्न करवो. अने ते प्रकारे उत्तर पण आपयो, परन्तु एटलो विशेष छे के अहीं
वे वेदो सहित उपजे, नपुंसकवेदवाळ न उपजे, बाकी बंधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. उद्वर्तना संबंधे पण तज प्रमाणे जाणवुं, परन्तु एटलो

असुरकुमारना
उत्पाद.

उद्वर्तना.

२ * मग० खं० १ श० २ उ० ४ पृ० २१५. सुजो बीजा० प्रति० १ प० ४८-१.

१ † असुरकुमाराना जे भवो सौधी न्हाता छे, ते जंबूद्वीपना समान छे, मध्यम संख्याता योजनविस्तारवाळ छे अने बाकीना (मोटां) छे ते
असंख्यवोजनता विस्तारवाळ छे.

વેદગા પળ્ળસા, યં પુરિસવેદગા વિ, નપુંસગવેદગા નત્થિ । કોદકસાર્દ સિય મત્થિ સિય નત્થિ, જદ્દ મત્થિ જદ્દએણ યક્કો વા દો વા તિચ્છિ વા, ડક્કોસેણં સંલેજ્જા પળ્ળસા । યં માણં માયં । સંલેજ્જા લોમકસાર્દ પળ્ળસા, સેસં તં ચેવ । તિસુ વિ ગમપ્પસુ સંલેજ્જેસુ અપ્પારિ છેસ્સાઓ માણિયદ્ધાઓ, યં અસંલેજ્જવિત્થહેસુ વિ, નવરં તિસુ વિ ગમપ્પસુ અસંલેજ્જા માણિયદ્ધા, જાવ—અસંલેજ્જા અચરિમા પળ્ળસા ।

૫. [પ્ર૦] કેવતિયા ણં મંતે ! નાગકુમારાવાસં ? [૩૦] યં જાવ—યણિયકુમારા, નવરં જત્થ અપ્પિયા ભવણા ।

૬. [પ્ર૦] કેવતિયા ણં મંતે ! ઘાણમંતરાવાસસયસહસ્સા પલ્લસા ? [૩૦] ગોયમા ! અસંલેજ્જા ઘાણમંતરાવાસસયસહસ્સા પલ્લસા । [પ્ર૦] તે ણં મંતે ! કિં સંલેજ્જવિત્થહા, અસંલેજ્જવિત્થહા ? [૩૦] ગોયમા ! સંલેજ્જવિત્થહા, નો અસંલેજ્જવિત્થહા ।

૭. [પ્ર૦] સંલેજ્જેસુ ણં મંતે ! ઘાણમંતરાવાસસયસહસ્સેસુ પગસમપણં કેવતિયા ઘાણમંતરા ઉવવજ્જંતિ ? [૩૦] યં જદ્દા અસુરકુમારાણં સંલેજ્જવિત્થહેસુ તિચ્છિ ગમગા તદ્દેવ માણિયદ્ધા ઘાણમંતરાણ વિ તિચ્છિ ગમગા ।

૮. [પ્ર૦] કેવતિયા ણં મંતે ! જોતિસિયધિમાણાવાસસયસહસ્સા પળ્ળસા ? [૩૦] ગોયમા ! અસંલેજ્જા જોદ્ધસિયધિમાણાવાસસયસહસ્સા પળ્ળસા । [પ્ર૦] તે ણં મંતે ! કિં સંલેજ્જવિત્થહા ? [૩૦] યં જદ્દા ઘાણમંતરાણં તદ્દા જોદ્ધસિયાણ વિ તિચ્છિ ગમગા માણિયદ્ધા, નવરં પગા તેડલેસ્સા । ઉવવજ્જંતેસુ પલ્લસેસુ ય અસન્ની નત્થિ, સેસં તં ચેવ ।

વિશેષ છે કે અસંહી ઉદ્દર્તે છે—ચ્યવે છે, [કારણ કે ઈશાનદેવલોકસુધીના દેવો પૃથિવીકાયાદિ અસંહીમાં ઉપજે છે.] અવધિજ્ઞાની અને અવધિદર્શની સ્વાંથી ઉદ્દર્તતા—નીકલ્લતાં નથી, [કારણ કે અસુરકુમારાદિથી નીકલ્લેલા તીર્થકરાદિ ન થાય અને અવધિજ્ઞાન અને અવધિદર્શનસહિત તીર્થકરાદિ જ ઉદ્દર્તે.] બાકીનું વધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. સત્તાને આગ્રયી પૂર્વે જ કહેલું છે તે પ્રમાણે સર્વ કહેવું. પરન્તુ ઇટલો વિશેષ છે કે સ્વાં સંલ્યાતા લીવેદવાલ્યા કહેલા છે. ૧ પ્રમાણે પુરુષવેદવાલ્યા પળ કહેલા છે, નપુંસકવેદવાલ્યા નથી. *ક્રોધકપાયવાલ્યા કદાચિત્ હોય છે અને કદાચિત્ હોતા નથી. જો હોય છે તો જઘન્યથી ૧ક, બે કે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટથી સંલ્યાતા હોય છે, ૧ પ્રમાણે માન અને માયા સંબંધે પળ જાણવું. લોમકષાયવાલ્યા સંલ્યાતા કહેલા છે. [કારણ કે દેવગતિમાં લોમકષાયી ઘણા હોય છે, તેથી હમેશાં તે સંલ્યાતા જ હોય.] બાકી વધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. સંલ્યાતાસંબંધે ઉત્પાદ, ઉદ્દર્તના અને સત્તાના ત્રણ આલાપકોને વિષે ચાર લેક્ષ્યાઓ કહેવી. ૧ પ્રમાણે અસંલ્યાતા યોજનવિસ્તારવાલ્યા અસુરકુમારાવાસો સંબંધે પળ જાણવું, પરન્તુ ત્રણે આલાપકોને વિષે 'અસંલ્યાતા' પાઠ કહેવો, યાવત્—'અસંલ્યાતા અચરમ કદ્ધા' છે.

અસુરકુમારાદિના
આવાસો.

૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કેટલા લાલ નાગકુમારના આવાસો કહેલા છે ? [૩૦] પૂર્વ પ્રમાણે જાણવા. યાવત્—સ્તનિતકુમાર સુધી [ઉત્પાદ, ઉદ્દર્તના અને સત્તા સંબંધે ત્રણ આલાપક] કહેવા, પરન્તુ ઇટલો વિશેષ છે કે સ્વાં જેટલા લાલ ભવનો હોય સ્વાં તેટલા લાલ ભવનો કહેવાં.

વાનવ્યંતર
દેવોના આવાસ.

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વાનવ્યંતરદેવોના કેટલા લાલ આવાસો કહેલા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! વાનવ્યંતરદેવોના અસંલ્યાતા લાલ આવાસો કહેલા છે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તે આવાસો શું સંલ્યાતયોજનવિસ્તારવાલ્યા છે કે અસંલ્યાતયોજનવિસ્તારવાલ્યા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સંલ્યાત યોજનવિસ્તારવાલ્યા છે, પળ અસંલ્યાત યોજનવિસ્તારવાલ્યા નથી.

ક્રમ સમયે વાનવ્ય-
ન્તર દેવોનો
ઉત્પાદ.

૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! સંલ્યાતાલાલ યોજનવિસ્તારવાલ્યા વાનવ્યંતરદેવોના આવાસને વિષે ૧ક સમયે કેટલા વાનવ્યંતરદેવો ઉપજે ? [૩૦] જેમ અસુરકુમારોના સંલ્યાતા યોજનવિસ્તારવાલ્યા આવાસોને વિષે ત્રણ આલાપકો કદ્ધા છે તે પ્રમાણે વાનવ્યંતર સંબંધે પળ ત્રણ આલાપકો કહેવા.

જ્યોતિષિક દેવોના
વિમાનાવાસ.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્યોતિષિક દેવોના કેટલા લાલ વિમાનાવાસો કદ્ધા છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જ્યોતિષિક દેવોના અસંલ્યાતા લાલ વિમાનાવાસો કહેલા છે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તે વિમાનાવાસો શું સંલ્યાત યોજનવિસ્તારવાલ્યા છે કે અસંલ્યાત યોજનવિસ્તારવાલ્યા છે ? [૩૦] ૧ પ્રમાણે જેમ વાનવ્યંતર દેવો સંબંધે કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ્યોતિષિકોને પળ ત્રણ આલાપકો કહેવા, પરન્તુ ઇટલો વિશેષ છે કે અહિં ૧ક માત્ર તેજોલેક્ષ્યા કહેવી. ઉત્પાદને વિષે અને સત્તાને વિષે અસંહી જીવો ઉપજતા તેમ ઉદ્દર્તતા નથી, બાકી વધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું.

* દેવોમાં ક્રોધ, માન અને માયારૂપ કષાયના ઉદયવાલ્યા કોદક સમયે જ હોય છે, માટે 'કદાચિત્ હોય છે અને કદાચિત્ હોતા નથી'—૧મ કહ્યું છે, અને લોમકષાયના ઉદયવાલ્યા સર્વદા હોય છે, માટે 'સંલ્યાતા લોમકષાયી હોય છે'—૧મ કહ્યું છે.

† અસુરકુમારને ચોસઠ લાલ, નાગકુમારને ચોરાષી લાલ, સુવર્ણકુમારને વહોતેર લાલ, વાયુકુમારને છત્તું લાલ, દ્વીપકુમાર, વિહુસાર, ઉદ્ધિકુમાર, વિશુલકુમાર, સ્તનિતકુમાર અને અમિકુમારના પ્રત્યેક યુગલને છોતેર લાલ ભવનો હોય છે.—ટીકા.

९. [प्र०] सोहम्मे णं मंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! बत्तीसं विमाणावास-
सयसहस्सा पणत्ता । [प्र०] ते णं मंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि असं-
खेज्जवित्थडा वि ।

१०. [प्र०] सोहम्मे णं मंते ! कप्पे बत्तीसाप विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु पगसमपणं केवतिया
सोहम्मा देवा उववज्जंति, केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति? [उ०] एवं जहा जोइसियाणं तिभि गमगा तहेव तिभि गमगा भाणि-
यत्ता, नवरं तिसु वि 'संखेज्जा' भाणियत्ता, ओहिनाणी ओहिदंसणी य अयावेयत्ता, सेसं तं खेव । असंखेज्जवित्थडेसु एवं खेव तिभि
गमगा, नवरं तिसु वि गमपसु 'असंखेज्जा' भाणियत्ता । ओहिनाणी य ओहिदंसणी य संखेज्जा अयंति, सेसं तं खेव । एवं
जहा सोहम्मे वत्तया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियत्ता । सणकुमारे एवं खेव, नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति,
पन्नसेसु य न भणंति, असन्नी तिसु वि गमपसु न भणंति, सेसं तं खेव, एवं जाव-सहस्सारे, नाणसं विमाणेसु छेस्सासु
य, सेसं तं खेव ।

११. [प्र०] भाणय-पाणपसु णं मंते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पणत्ता ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि विमा-
णावाससया पणत्ता । [प्र०] तेणं मंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्ज-
वित्थडा वि । एवं संखेज्जवित्थडेसु तिभि गमगा जहा सहस्सारे, असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य अयंतेसु य एवं खेव
'संखेज्जा' भाणियत्ता, पन्नसेसु असंखेज्जा, नवरं नोइदियोवत्ता अणंतरोववत्तगा अणंतरोगाहगा अणंतराहारगा अणंतरपज्जत्तगा
य एपसिं जहरेणं पक्को वा दो वा तिभि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा, पन्नसेसु असंखेज्जा भाणियत्ता । आरण-सुपसु एवं खेव जहा
भाणय-पाणपसु, नाणसं विमाणेसु, एवं गेवेज्जगा वि ।

९. [प्र०] हे भगवन्! सौधर्म देवलोकने विषे केटला लाख विमानावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम! बत्रीश लाख विमानावासो
कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते विमानावासो शुं संख्याता योजनविस्तारवाळ छे के असंख्यातयोजनविस्तारवाळ छे? [उ०] हे गौतम!
संख्याता योजनविस्तारवाळ छे अने असंख्यात योजनविस्तारवाळ पण छे.

१०. [प्र०] हे भगवन्! सौधर्म देवलोकने विषे बत्रीश लाख विमानावासोमांना संख्यातायोजन विस्तारवाळ विमानोने विषे एक
समये केटला सौधर्म देवो उत्पन्न थाय, केटला तेजोलेख्यावाळ उत्पन्न थाय? [उ०] जेम ज्योतिषिकोने त्रण आलापको कद्दां तेम अहिं पण
त्रण आलापको कहेवां, परन्तु त्रणे आलापकोमां 'संख्याता' एवो पाठ कहेवो. [अहिंथी नीकळी तीर्थकरादि थाय माटे] 'अवधिज्ञानी अने
अवधिदर्शनी प्यवे'-एम कहेवुं, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. असंख्यातायोजनविस्तारवाळ विमानावासोमां ए प्रमाणे त्रण आलापको
कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के ए त्रणे आलापकोमां 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो. अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी संख्याता प्यवे छे.
[केमके तीर्थकरादिक अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन सहित प्यवे अने ते संख्याता होय.] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम सौधर्म
देवलोकनी वक्तव्यता कही, तेम ईशान देवलोकने विषे [त्रण संख्याताना अने त्रण असंख्याताना] ए प्रमाणे छ आलापको कहेवा. सन-
कुमारने विषे पण एमज जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के अहिं छीवेदवाळ उत्पन्न यथा नथी, तेम सत्तामां पण होता नथी. त्रणे आला-
पकोने विषे असंखी न कहेवा. [कारण के अहिं संखीथी आवी उपजे छे अने संखीने विषे जाय छे.] बाकीनुं बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए
प्रमाणे यावत्-सहस्रार देवलोक सुधी जाणवुं, परन्तु विमानो अने लेख्याओमां विशेष छे. बाकी बधुं पूर्वनी पेटे जाणवुं.

११. [प्र०] हे भगवन्! आनत अने प्राणत देवलोकने विषे केटला शत (सैंकडो) विमानावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम!
चारसो विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते विमानावासो शुं संख्याता योजनविस्तारवाळ छे के असंख्यातायोजनविस्तारवाळ
छे? [उ०] हे गौतम! संख्याता योजन विस्तारवाळ पण छे अने असंख्यातयोजनविस्तारवाळ पण छे. ए प्रमाणे संख्यातायोजनविस्तारवाळ
विमानावासोने विषे त्रण आलापको सहस्रार देवलोकनी पेटे कहेवा. *असंख्यात योजनविस्तारवाळ विमानोने विषे उत्पाद अने प्यवन सं-
बन्धे ए प्रमाणे 'संख्याता' ज कहेवां; सत्तामां असंख्याता कहेवा; परन्तु एटलो विशेष छे के नोइदिय-मनना उपयोगवाळ, अनन्तरोपपन्नक,
अनन्तरावगाढ, अनन्तराहारक अने अनन्तरपर्याप्ता-ए पांच पदने विषे जघन्यथकी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता उपजे, अने
सत्तामां असंख्याता होय-एम कहेवुं. जेम आनत अने प्राणतने विषे कहुं, तेम आरण अने अच्युतने विषे पण ए प्रमाणे जाणवुं, परंतु
विमानोनी संख्यामां विशेषता छे. ए प्रमाणे प्रैवेयक संबन्धे पण जाणवुं.

११ * आनतादि देवलोकमां संख्यातायोजनविस्तारवाळ विमानावासोमां उत्पाद, प्यवन अने स्थिति विषे संख्याता देवो होय छे, अने असंख्यात
योजनविस्तारवाळ विमानोमां उत्पाद अने प्यवनने विषे संख्याता होय छे, अने स्थिति विषे असंख्याता देवो होय छे, कारण के गर्भज मनुष्य बकी ज
आनतादि देवोमां उत्पन्न थाय छे, तथा ते देवो खांथी प्यवीने गर्भज मनुष्यमां ज उत्पन्न थाय छे, अने ते संख्याताज होय छे, माटे एक समये संख्यातामां
ज उत्पाद अने प्यवन संबन्धे छे, अने तेओनुं आयुष असंख्यवर्षेनुं होवाथी तेना जीवनकालमां असंख्य देवो उपजे छे, तेथी स्थितिने विषे असंख्याता देवो
होय छे.-टीका.

† अहिं आरण अने अच्युत देवलोकमां त्रणसो विमान छे.

सौधर्मदेवलोक-
मां विमानावास-

एक समये सौध-
र्मनी मांथीने
सहस्रारसुधी दे-
वोने कथाद.

आनत अने प्रा-
णत देवलोकमां
विमानावास-

प्रैवेयक.

१२. [प्र०] कति णं भंते! अनुत्तरविमाणा पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! पंच अनुत्तरविमाणा पन्नत्ता। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थेय्या, असंखेज्जवित्थेय्या? [उ०] गोयमा! संखेज्जवित्थेय्ये य असंखेज्जवित्थेय्या य।

१३. [प्र०] पंचसु णं भंते! अनुत्तरविमाणेषु संखेज्जवित्थेय्ये विमाणे एगसमपणं केवतिया अनुत्तरविमाणा देवा उव्वज्जंति, केवतिया सुकलेस्सा उव्वज्जंति—पुच्छा तहेव। [उ०] गोयमा! पंचसु णं अनुत्तरविमाणेषु संखेज्जवित्थेय्ये अनुत्तरविमाणे एगसमपणं जह्वेणं पक्को वा दोवा तिभि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अनुत्तरविमाणा देवा उव्वज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेषु संखेज्जवित्थेय्येसु, नवरं किण्हपक्खिया, अमवसिद्धिया, तिसु अन्नाणेषु एव न उव्वज्जंति, न खर्यंति, न पन्नत्तसु भाणियत्ता, अचरिमा वि खोडिज्जंति, जाव—संखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता, सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थेय्येसु वि एव न भंति, नवरं अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जपसु असंखेज्जवित्थेय्येसु जाव—असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता।

१४. [प्र०] चोसट्ठीय णं भंते! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थेय्येसु असुरकुमारावासेसु किं सम्महिद्धी असुरकुमारा उव्वज्जंति, मिच्छादिद्धी? [उ०] एवं जहा रयणप्पभाय तिभि आलावगा भणिया तहा भाणियत्ता। एवं असंखेज्जवित्थेय्येसु वि तिभि गमगा, एवं जाव—गेवेज्जविमाणे, अनुत्तरविमाणेषु एवं चेव, नवरं तिसु वि आलावपसु मिच्छादिद्धी सम्मामिच्छादिद्धी य न भंति, सेसं तं चेव।

१५. [प्र०] से नूणं भंते! कण्हलेस्से, नील० जाव—सुकलेस्से भविता कण्हलेस्सेसु देवेषु उव्वज्जंति? [उ०] इंता गोयमा! एवं जहेव नेरहपसु पढमे उहेसए तहेव भाणियत्तं, नीललेसाए वि जहेव नेरहयाणं, जहा नीललेसाए एवं जाव—पमहलेस्सेसु, सुकलेस्सेसु एवं चेव, नवरं लेस्सट्ठणेषु विसुज्जमाणेषु २ सुकलेस्सं परिणमति, सु० २ परिणमिता सुकलेस्सेसु देवेषु उव्वज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव—उव्वज्जंति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति।

तेरसमसए बीओ उद्देशो समत्तो

१२. [प्र०] हे भगवन्! केटला अनुत्तर विमानो कहाँ छे? [उ०] हे गौतम! पांच अनुत्तर विमानो कहेलाँ छे। [प्र०] हे भगवन्! ते अनुत्तर विमानो संख्याता योजनविस्तारवाळाँ छे के असंख्याता योजनविस्तारवाळाँ छे? [उ०] हे गौतम! *संख्याता योजनविस्तारवाळाँ पण छे, तेमज असंख्याता योजनविस्तारवाळाँ पण छे।

१३. [प्र०] हे भगवन्! पांच अनुत्तर विमानोमांना संख्याता योजन विस्तारवाळा विमानने विषे एक समये केटला अनुत्तरौपपातिक देवो उत्पन्न थाय, केटला शुक्लेश्यावाळा उत्पन्न थाय—इत्यादि प्रश्न करवो। [उ०] हे गौतम! पांच अनुत्तरविमानोमां संख्याता योजन विस्तारवाळा सर्वार्थसिद्ध अनुत्तर विमानने विषे जघन्यथी एक, बे के त्रण, अने उत्कृष्टथी संख्याता अनुत्तरौपपातिक देवो उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे जेम संख्याता विस्तारवाळा प्रवेयक विमानो संबन्धे कह्युं ते प्रमाणे अहिं कहेवुं, परन्तु एटलो विशेष के कृष्णपाक्षिको, अभव्यो अने त्रण अज्ञानने विषे वर्तता जीवो. अहिं उपजता नथी, च्यवता नथी अने सत्तामां पण होता नथी—एम कहेवुं. अचरमनो (जेने छेछो अनुत्तर देवनो भव नथी, पण वधारे भवो छे तेनो) पण प्रतिषेध करवो, [केमके अनुत्तरसर्वार्थसिद्धने विषे जे चरम होय तेज उपजे.] यावत्—त्यां 'संख्याता चरम' (जेने छेछो अनुत्तर देवनो भव छे तेओ) कहेला छे. बाकी बधुं पूर्व पेठे जाणवुं. असंख्याता योजन विस्तारवाळाँ अनुत्तर विमानोने विषे पण पूर्वोक्त (कृष्णपाक्षिकादिक) न कहेवां, पण त्यां अचरम (जेने ते छेछो भव नथी एवा) उपजे छे. बाकी जेम प्रवेयकने विषे कह्युं तेम असंख्याता योजन विस्तारवाळा अनुत्तर विमानोने विषे यावत्—'असंख्याता अचरम कहा छे' त्यां सुची जाणवुं.

१४. [प्र०] हे भगवन्! चोसठलाख असुरकुमारना आवासोमांना संख्यातायोजन विस्तारवाळा असुरकुमारना आवासोने विषे छुं सम्यग्दष्टि असुरकुमारो उत्पन्न थाय, मिथ्यादष्टि असुरकुमारो उत्पन्न थाय, (के मिश्रदष्टि उत्पन्न थाय)? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा संबन्धे त्रण आलापको कहा (उ० १ सू० १३.) तेम अहिं पण कहेवा. ए प्रमाणे असंख्याता योजन विस्तारवाळा असुरकुमारोना आवासोने विषे पण सम्यग्दष्टि, मिथ्यादष्टि अने मिश्रदष्टि संबन्धे ए त्रण आलापको कहेवा. ए प्रमाणे यावत्—प्रवेयक विमानने विषे अने अनुत्तर विमानने विषे पण जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के अनुत्तरविमानसंबन्धे उत्पाद, च्यवन अने सत्ताना त्रण आलापकने विषे मिथ्यादष्टि अने मिश्रदष्टि न कहेवा. बाकी बधुं पूर्व पेठे जाणवुं.

१५. [प्र०] हे भगवन्! खरेखर कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, यावत्—शुक्ललेश्यावाळा पईने कृष्णलेश्यावाळा देवोमां उत्पन्न थाय! [उ०] हा, गौतम! जेम नारको संबन्धे प्रथम उद्देशकमां (सू० १९) कह्युं छे ते प्रमाणे जाणवुं. नीललेश्यावाळाने पण जेम नारकोने कह्युं छे तेम कहेवुं. जेम नीललेश्यावाळाने विषे कह्युं छे तेम यावत्—पमलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळा माटे पण जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के—लेश्याना स्थानको विशुद्ध थतां थतां शुक्ललेश्यारूपे परिणमे छे, शुक्ललेश्यारूपे परिणमन थया पछी शुक्ललेश्यावाळा देवोमां ते उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी हे गौतम! यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे!

त्रयोदश शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

१२ * तेमां वचेवुं सर्वार्थसिद्ध विमान रत्न योजन प्रमाण होवाची संख्याता योजन विस्तारवाळाँ छे, अने विजयादि चार विमानो असंख्यौपपातिक विस्तारवाळाँ छे.

अनुत्तर विमानो.

पांच अनुत्तरमां एक समये देवोना उत्पादादि.

असुरकुमारावासमां सम्यग्दष्ट्यादि उपजे ?

कृष्णलेश्यावाळां पईने कृष्णलेश्यावाळा देवोमां उत्पन्न थाय !

तईओ उद्देशो ।

१. [प्र०] नेरया ञं भंते! अंतराहारा, ततो निश्चयया, यवं परियारणापदं निरवसेसं माणियं । 'सेवं भंते! सेवं भंते! चि ।

तेरसमसए तईओ उद्देशो समसो.

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! नारको [उपजवाना क्षेत्रने प्राप्त यतां] अनन्तराहारी-तुरतज आहार करवायाळ होय? अने ल्यार पछी निर्व-
तेना-शरीरनी उत्पत्ति करे, [ल्यार पछी लोमाहारादिद्वारा पुद्गलो ग्रहण करे, ल्यार पछी इन्द्रियादिरूपे पुद्गलेनो परिणाम करे, ल्यार बाद
परिचारणा-शब्दादि विषयोनो उपभोग-करे, अने ल्यार पछी अनेक प्रकारना रूपो विकुर्वे? [उ०] [हा, गौतम!] इत्यादि प्रज्ञापना सूत्रं
'परिचारणा पद समस्र कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

नारको अनन्तरा-
हारी होय अने
ल्यार बाद कसुको
परिचारणा करे!

त्रयोदश शतके तृतीय उद्देशक समाप्त.

चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] कति णं मंते ! पुढवीओ पञ्चसामो ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ वण्णसामो, तंजहा—१ रयणप्पमा, जाव—७ अहेसत्तमा ।

२. [प्र०] अहेसत्तमाय णं मंते ! पुढवीय पंच अणुत्तरा महत्तिमहालया जाव—अपइट्टाणे । ते णं णरगा छट्ठीय तमाय पुढवीय नेरपइत्तो १ महंततरा चेव, २ महाविच्छिन्नतरा चेव, ३ महावासतरा चेव, ४ महापरिकतरा चेव, १ नो तहा महापवेसणतरा चेव, २ आइत्तरा चेव, ३ आउलतरा चेव, ४ अणोमाणतरा चेव । तेसु णं नरपसु नेरतिया छट्ठीय तमाय पुढवीय नेरपइत्तो १ महाकम्मतरा चेव, २ महाकिरियतरा चेव, ३ महासवतरा चेव, ४ महावेयणतरा चेव, नो तहा १ अप्पकम्मतरा चेव, २ अप्पकिरियतरा चेव, ३ अप्पासवतरा चेव, ४ अप्पवेदणतरा चेव, १ अप्पहियतरा चेव, २ अप्पजुत्तियतरा चेव, १ नो तहा महहियतरा चेव, २ महजुइयतरा चेव । छट्ठीय णं तमाय पुढवीय एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णसे, ते णं नरगा अहेसत्तमाय पुढवीय नेरपइत्तो नो तहा महत्तरा चेव, महाविच्छिन्नतरा चेव ४; महप्पवेसणतरा चेव आइत्तरा चेव ४ । तेसु णं नरपसु णं नेरतिया अहेसत्तमाय पुढवीय नेरपइत्तो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव ४; नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव ४ । महहियतरा चेव महाजुइयतरा चेव, नो तहा अप्प-

चतुर्थ उद्देशक.

नरकपृथिवी.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटली नरक पृथिवीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! *सात पृथिवीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ रत्तप्रभा, यावत्—७ अधःसत्तम पृथिवी.

१ नैरधिकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसत्तम नरकपृथिवीमां पांच अनुत्तर अने अत्यन्त मोटा नरकावासो यावत्—‘अप्रतिष्ठान’ सुची कहेला छे, ते नरकावासो छट्ठी तमःप्रभापृथिवीना नरकावासोथी अत्यन्त मोटा, अतिविस्तारवाळ, घणा अवकाशवाळ, घणाजन रहित अने शून्य छे, परन्तु ते महाप्रवेशवाळ नथी, [अर्थात् छट्ठी नरक पृथिवीमां जेम घणा जीवोनों प्रवेश थाय छे, तेम सत्तम नरकपृथिवीमां घणा जीवोनों प्रवेश थतो नथी.] [घणा नारकोवडे] ते अत्यन्त संकीर्ण अने अत्यन्त व्याप्त नथी, अर्थात् ते नरकावासो घणा विशाल छे. ते नरकावासोमां रहेला नारको छट्ठी तमा पृथिवीना नारकोथी महाकर्मवाळा, महाक्रियावाळा, महाआश्रववाळा अने महावेदनावाळा छे, परन्तु तेओ [छट्ठी नरक पृथिवीनी अपेक्षाए] अल्पकर्मवाळा, अल्पक्रियावाळा, अल्पआश्रववाळा अने अल्पवेदनावाळा नथी. ते नारको अत्यन्त अल्पद्विवाळा अने अत्यन्त अल्पद्युतिवाळा छे; परन्तु ते महाद्विवाळा अने महाद्युतिवाळा नथी. छट्ठी तमा नरकपृथिवीमां पांच न्यून एक लाख नरकावासो कहेला छे. ते नरकावासो सातमी नरकपृथिवीना नरकावासो करतां तेवा अत्यन्त मोटा अने महाविस्तारवाळा नथी, परन्तु ते महाप्रवेशवाळा अने नारकोवडे अत्यन्त संकीर्ण छे. ते नरकावासोमां नारको सातमी नरकपृथिवीना नारको करतां अल्पकर्मवाळा अने अल्पक्रियावाळा छे, परन्तु तेवा अत्यन्त महाकर्मवाळा अने महाक्रियावाळा नथी. तेओ सत्तमनरकपृथिवीना नारकोथी महाद्विवाळा अने महाद्युतिवाळा छे. परन्तु तेथी अल्पद्विवाळा अने अल्पद्युतिवाळा नथी, छट्ठी तमा नरकपृथिवीना नरकावासो पांचमी धूमप्रभानरकपृथिवीमां

१ *आ उद्देशकमां १३ द्वारो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ नैरधिक, २ स्पर्श, ३ प्रणिधि, ४ निरयान्त, ५ लोकमध्य, ६ विद्या—विदित्ताप्रवृत्ति, ७ अस्तिकायप्रवर्तन, ८ अस्तिकायप्रवेशास्पर्शना, ९ अवगाहना, १० जीवावगाह, ११ अस्तिकायनिषेधन, १२ बहुसय अने १३ लोकसंख्याक.

द्विचतस्रा चैव अप्यद्भ्यस्तस्रा चैव । छट्ठीयं नं तमाय पुढवीय नरगा पंचमाय धूमप्यमाय पुढवीय नरपहितो महत्तरा चैव ४, नो तहा महप्यवेसगतरा चैव ४ । तेषु नं नरपसु नेरतिया पंचमाय धूमप्यमाय पुढवीय नेरपहितो महाकम्मतरा चैव ४ नो तहा अप्यकम्मतरा चैव ४; अप्यद्विचतस्रा चैव २ नो तहा महद्विचतस्रा चैव २ । पंचमाय नं धूमप्यमाय पुढवीय तिभि विरवावाससयसहस्ता पञ्चसा; एवं जहा छट्ठीय भगिया एवं सत्त वि पुढवीओ परोप्यरं भणंति जाव-रयणप्यमंति, जाव-नो तहा महद्विचतस्रा चैव, अप्यद्भ्यस्तियतरा चैव ।

३. [प्र०] रयणप्यमापुढविनेरइया नं मंते ! केरिसयं पुढविफासं पञ्चणुम्भवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! भणिदुं, जाव-भमणामं, एवं जाव-भहेसत्तमपुढविनेरइया, एवं भाडफासं, एवं जाव-धणस्तइफासं ।

४. [प्र०] इमा नं मंते ! रयणप्यमापुढवी दोषं सक्करप्यमं पुढविं पणिहाय सत्तमहंतिया बाहल्लेणं, सत्तमुद्रिया सत्त-तैसु० ? [उ०] एवं जहा जीवामिगमे वितिय नेरइयउहेसय ।

५. [प्र०] इमीसे नं मंते ! रयणप्यमाय पुढवीय गिरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया० ? [उ०] एवं जहा नेरइयउहेसय जाव-भहेसत्तमाय ।

६. [प्र०] कहि नं मंते ! लोगस्स आयाममज्जे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! इमीसे नं रयणप्यमाय उवासंतरस्स असं-जेज्जतिभागं ओगाहेत्ता पत्थ नं लोगस्स आयाममज्जे पण्णसे ।

७. [प्र०] कहि नं मंते ! अहेलोगस्स आयाममज्जे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! अउत्थीय पंकप्यमाय पुढवीय उवासं-तरस्स सातिरेगं अखं ओगाहित्ता पत्थ नं अहेलोगस्स आयाममज्जे पण्णसे ।

नरकावासोपी अत्यन्तमोटा छे—इत्यादि चार बोल कहेवा. परन्तु तेनी पेटे ते महाप्रवेशवाळा नयी, अर्थात् तेमां घणा जीवो प्रवेश करता नयी. ते नरकावासोमां नारकीओ पांचमी धूमप्रभा पृथिवीना नारको करतां महाकर्मवाळा छे ४, परन्तु तेवा अल्पकर्मवाळा नयी—४, ते अल्पकर्मवाळा छे, परन्तु ते प्रमाणे ते अत्यन्त महर्द्धिक नयी. पांचमी धूमप्रभा नरकपृथिवीमां त्रण लाख नरकावासो कहेला छे—इत्यादि जेम छट्ठी तमापृथिवी संबंधे कथुं, तेम साते नरकपृथिवीओ संबन्धे परस्पर यावत्—'रत्नप्रभा'—सुधी कहेवुं, यावत्—तेथी [शर्कराप्रभाना नारको] महाकर्मवाळा नयी, पण अल्पश्रुतिवाळा छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना नारको केवा प्रकारना पृथिवीना स्पर्शने अनुभवता विहरे छे ? [उ०] हे गौतम ! *अनिष्ट, यावत्—मनने प्रतिकूल—[पृथिवीना स्पर्शने अनुभवता विहरे छे.] इत्यादि यावत्—अधःसत्तम पृथिवीना नारको संबन्धे जाणवुं, ए रीते [अनिष्ट अने प्रतिकूल] पाणीना स्पर्शने, यावत्—वनस्पतिना स्पर्शने (अनुभवता विहरे छे.)

२ स्वर्गदार.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी बीजी शर्कराप्रभापृथिवीनी अपेक्षाए जाडाइमां सर्व करतां मोटी छे, अने चारे दिशाए लंबाह पडोळाइमां सर्वथी न्हानी छे ? [उ०] हा, गौतम ! इत्यादि—जेम जीवामिगम सूत्रना बीजा नैरयिक उदेशकमां कथुं छे तेम अहिं जाणवुं.

३ प्रणिधिदार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी आसपास जे पृथिवीकायिक जीवो छे, यावत्—वनस्पतिकायिक जीवो छे ते [महाकर्मवाळा अने महावेदनावाळा छे ? [उ०] हा, गौतम !] इत्यादि—जेम जीवामिगम सूत्रना नैरयिक उदेशकमां कथुं छे तेम यावत्—अधःसत्तमनरकपृथिवी सुधी जाणवुं.

४ निरयान्तदार.

६. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना आयाम—लंबाईनो मध्य भाग कयां कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना आकाराना खंडनो अस्तंर्यात्तमो भाग उल्लंघन कयां पछी अहिं लोकना आयामनो मध्यभाग कहेलो छे.

५ लोकमध्यदार.

७. [प्र०] हे भगवन् ! कयां अधोलोकना आयाम—लंबाईनो मध्य भाग कयां कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! चोथी पंकप्रभा पृथिवीना आकाराना खंडनो कंठक अधिक अरधो भाग उल्लंघन कयां पछी अहिं अधोलोकना आयामनो मध्य भाग कहेलो छे.

अधोलोकमध्य.

३ * सुणो बीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२५-१.

† यावत् सप्यवी तेजस्कायिक अने वायुकायिक ग्रहण करवा, बादर तेजस्कायिक मात्र समयक्षेत्रने विधे' ज ह्येन छे, तेथी अहिं नरकपृथिवीने विधे तेनी सद्भाव होती नयी, परन्तु खां अमिसमाज उच्च अन्व वस्तुणे होय छे, तेथी 'तेजस्कायिकना स्पर्शने अनुभवे छे' एम कथुं छे—टीका.

४ † बीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२५-१.

‡ रत्नप्रभा पृथिवी आवाइमां एक अक्ष अने एंजीइजार योवनप्रमाण होवावी सर्व करतां मोटी छे, अने शर्कराप्रभा एक अक्ष अने वजीघ इंधार योवनप्रमाण होवावी तेनाथी न्हानी छे. तेमज रत्नप्रभा लंबाह अने पडोळाइमां एक रज्जु (राज) प्रमाण छे तेथी न्हानी छे, अने शर्कराप्रभा तेथी अधिक प्रमाण होवावी मोटी छे—टीका.

५ ‡ बीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२५-२.

૮. [પ્ર૦] કહિ ણં મંતે ! ઉદ્ધલોગસ્સ આયામમજ્ઞે પળ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! ઉપ્પિ સળ્ણકુમાર—માહિલાણં કળ્ણ્યાણં હેઈં બંમલોય કળ્ણે રિદ્ધિવિમાણે પત્થહે પત્થ ણં ઉદ્ધલોગસ્સ આયામમજ્ઞે પળ્ણસે ।

૯. [પ્ર૦] કહિ ણં મંતે ! તિરિયલોગસ્સ આયામમજ્ઞે પળ્ણસે ? [૩૦] ગોયમા ! અંબુદ્ધિવે વીવે મંવરસ્સ પલ્લવસ્સ વડ્ડ-મજ્ઞવેસમાય હમીસે રયળ્ણપ્પમાય પુઢવીપ ઉવરિમહેદ્ધિલેસુ સુહાગપયરેસુ પત્થ ણં તિરિયલોગસ્સ મજ્ઞે અદ્ધપ્પસિપ દયપં પળ્ણસે, જઓ ણં હમાઓ દસ વિસાઓ પવહંતિ, તંજહા—૧ પુરચ્છિમા, ૨ પુરચ્છિમવાહિણા—પવં જહા વસમસપ્પ જાવ—નામધેજ્ઞં તિ ।

૧૦. [પ્ર૦] હંદા ણં મંતે ! વિસા ૧ કિમાદીયા, ૨ કિપવહા, ૩ કતિપવેસાદીયા, ૪ કતિપવેસુત્તરા, ૫ કતિપવેસિયા, ૬ કિપજ્જવસિયા, ૭ કિસંઠિયા પલ્ણસા ? [૩૦] ગોયમા ! હંદા ણં વિસા ૧ ક્યગાદીયા, ૨ ક્યગપ્પવહા, ૩ દુપ્પસાદીયા, ૪ દુપ્પસુત્તરા, ૫ લોગં પડુચ્ચ અસંલેજ્જપ્પસિયા, અલોગં પડુચ્ચ અણંતપ્પસિયા, ૬ લોગં પડુચ્ચ સાઈયા સપ્પજ્જવસિયા, અલોગં પડુચ્ચ સાઈયા અપ્પજ્જવસિયા, ૭ લોગં પડુચ્ચ મુરજસંઠિયા, અલોગં પડુચ્ચ સગહુલ્લિસંઠિયા પલ્ણસા ।

૧૧. [પ્ર૦] અગ્ગેયી ણં મંતે ! વિસા ૧ કિમાદીયા, ૨ કિપવહા, ૩ કતિપવેસાદીયા, ૪ કતિપવેસવિચ્છિન્ના, ૫ કતિપવેસિયા, ૬ કિપજ્જવસિયા, ૭ કિસંઠિયા પલ્ણસા ? [૩૦] ગોયમા ! અગ્ગેયી ણં વિસા ૧ ક્યગાદીયા, ૨ ક્યગપ્પવહા, ૩ પગપ્પસાદીયા, ૪ પગપ્પસવિચ્છિન્ના, ૫ અણુત્તરા લોગં પડુચ્ચ અસંલેજ્જપ્પસિયા, અલોગં પડુચ્ચ અણંતપ્પસિયા, ૬ લોગં પડુચ્ચ સાઈયા સપ્પજ્જવસિયા, અલોગં પડુચ્ચ સાઈયા અપ્પજ્જવસિયા, છિન્નમુત્તાવલિસંઠિયા પળ્ણસા । જમા અહા હંદા, નેરઈ જહા અગ્ગેયી । પવં જહા હંદા તહા વિસાઓ ચત્તારિ, જહા અગ્ગેઈ તહા ચત્તારિ વિ વિવિસાઓ ।

૧૨. [પ્ર૦] વિમલા ણં મંતે ! વિસા કિમાદીયા—પુચ્છા જહા અગ્ગેયીપ । [૩૦] ગોયમા ! વિમલા ણં વિસા ૧ ક્યગાદીયા, ૨ ક્યગપ્પવહા, ૩ ચડ્ડપ્પસાદીયા, ૪ દુપ્પસવિચ્છિન્ના, અણુત્તરા લોગં પડુચ્ચ સેસં જહા અગ્ગેયીપ, નવરં ક્યગ-સંઠિયા પળ્ણસા, પવં તમા વિ ।

કર્ણલોકમધ્ય.

૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ક્યાં કર્ણલોકની લંબાઈનો મધ્યભાગ કહેલો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! સનત્કુમાર અને માહેન્દ્ર દેવલોકના ઉપર અને બ્રહ્મદેવલોકની નીચે રિષ્ટ નામે ત્રીજા પ્રતરને વિષે અહિં કર્ણલોકના આયામનો મધ્ય ભાગ કહેલો છે.

તિર્યગ્લોકમધ્ય.

૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તિર્યગ્ લોકના આયામનો મધ્યભાગ ક્યાં કહેલો છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! જંબૂદ્વીપમાં મેરુપર્વતના બરોબર મધ્ય ભાગને વિષે આ રત્નપ્રમા પૃથિવીના ઉપર અને નીચેના ક્ષુદ્ર (સર્વ કરતાં ઘણું) એવા બે પ્રતરો છે, તેને વિષે તિર્યગ્લોકના મધ્યભાગરૂપ આઠ પ્રદેશનો રુચક કહેલો છે, જ્યાંથી આ દશ દિશાઓ નીકળે છે, તે આ પ્રમાણે—૧ પૂર્વદિશા, ૨ પૂર્વદક્ષિણ,—હ્યાદિ જેમ દશમ શતકના *પ્રથમ ઉદ્દેશકને વિષે કહ્યું છે તે પ્રમાણે યાવત્ 'દિશાના દશ નામ છે'—ત્યાં સુધી જાણવું.

૬ દિશા-વિદિશા પ્રવહાર. એન્દ્રી દિશા ક્યાંથી નીકળે છે ?

૧૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ એન્દ્રી (પૂર્વ) દિશાની આદિમાં શું છે ? ૨ તે ક્યાંથી નીકળે છે ? ૩ તેની આદિમાં કેટલા પ્રદેશો છે ? ૪ કેટલા પ્રદેશોની ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ થાય છે ? ૫ તે કેટલા પ્રદેશની છે ? ૬ તેનો અન્ત ક્યાં છે ? અને ૭ તે કેવા આકારે કહેલી છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ એન્દ્રી દિશાની આદિમાં રુચક છે, ૨ તે રુચક ધકી નીકળે છે, ૩ તેની આદિમાં બે પ્રદેશો છે, ૪ બે પ્રદેશની ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ થાય છે, ૫ લોકને આશ્રયી તે અસંખ્યાતપ્રદેશાત્મક છે, અલોકને આશ્રયી અનન્તપ્રદેશાત્મક છે, ૬ લોકને આશ્રયી આદિ અને અન્તસહિત છે, અને અલોકને આશ્રયી સાદિ અને અનન્ત છે, ૭ લોકને આશ્રયી મુરજ—મૃદંગને આકારે છે, અને અલોકને આશ્રયી ગાઢાની ઝાઢને આકારે કહેલી છે.

આગ્નેયી.

૧૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ૧ આગ્નેયી દિશાની આદિમાં શું છે ? ૨ તે ક્યાંથી નીકળે છે ? ૩ તેની આદિમાં કેટલા પ્રદેશો છે ? ૪ તે કેટલા પ્રદેશના વિસ્તારવાળી છે ? ૫ તે કેટલા પ્રદેશની છે ? ૬ તેને અન્તે શું છે ? ૭ અને તે કેવા આકારે છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ આગ્નેયી દિશાની આદિમાં રુચક છે, ૨ તે રુચક ધકી નીકળે છે, ૩ તેની આદિમાં એક પ્રદેશ છે, ૪ તે એક પ્રદેશના વિસ્તારવાળી છે, ૫ તે ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિરહિત છે, અને લોકને આશ્રયી અસંખ્યાતપ્રદેશાત્મક છે, અલોકને આશ્રયી અનન્ત પ્રદેશાત્મક છે, ૬ લોકને આશ્રયી આદિ અને અન્ત સહિત છે, અને અલોકને આશ્રયી સાદિ અને અનન્ત છે. અને ૭ તે તૂટી ગઈ મોતીની માઝાના આકારે કહેલી છે. યામ્યા (દક્ષિણ) દિશા એન્દ્રી (પૂર્વ) દિશાની પેઠે જાણવી. નૈર્ઋતી આગ્નેયી દિશાની પેઠે જાણવી—હ્યાદિ જેમ એન્દ્રી દિશા કહી, તેમ ચારે દિશાઓ અને આગ્નેયી દિશા કહી તેમ ચારે વિદિશાઓ જાણવી.

યામ્યા-દક્ષિણ. નૈર્ઋતી.

કર્ણદિશા.

૧૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! વિમલા (કર્ણ) દિશાની આદિમાં શું છે ? હ્યાદિ આગ્નેયીની પેઠે પ્રશ્ન કરવો. [૩૦] હે ગૌતમ ! ૧ વિમલા દિશાની આદિમાં રુચક છે, ૨ તે રુચક ધકી નીકળે છે, ૩ તેની આદિમાં ચાર પ્રદેશ છે, ૪ તે બે પ્રદેશના વિસ્તારવાળી છે, ૫ ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ રહિત તે દિશા લોકને આશ્રયી અસંખ્યાતપ્રદેશાત્મક છે. બાકી બધું આગ્નેયી દિશાને વિષે કહ્યું છે તેમ જાણવું. પરન્તુ એટલો વિશેષ છે કે તે રુચકને આકારે કહેલી છે. ૧ પ્રમાણે તમા (અધો) દિશા પણ જાણવી.

તમાદિશા.

१३. [प्र०] किमियं भंते ! लोपसि पद्भुषर ? [उ०] गोयमा ! पंचस्थिकाया, एस णं एवतिए लोप सि पद्भुषर, तंजहा—
१ धम्मस्थिकाय, २ अहम्मस्थिकाय, जाव—५ पोग्गलस्थिकाय ।

१४. [प्र०] धम्मस्थिकायणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! धम्मस्थिकायणं जीवाणं भागमण—गमण—
भासु—स्मेस—मणजोगा—वहजोगा—कायजोगा, जे यावन्ने तहप्यगारा चला भावा सत्ते ते धम्मस्थिकाय पवत्तंति, गहलक्खणे
णं धम्मस्थिकाय ।

१५. [प्र०] अहम्मस्थिकायणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! अहम्मस्थिकायणं जीवाणं ठाण—निस्सीयण—
सुयहण, मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावन्ने तहप्यगारा थिरा भावा सत्ते ते अहम्मस्थिकाय पवत्तंति, ठाणलक्खणे णं
अहम्मस्थिकाय ।

१६. [प्र०] आगासस्थिकायणं भंते ! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! आगासस्थिकायणं जीव-
द्वजाण य अजीवद्वजाण य भायणभूय । “एणेण वि से पुञ्जे दोहि वि पुञ्जे सयं पि मायज्जा । कोडिसएण वि पुञ्जे कोडिसहस्सं
पि मायज्जा ॥” अवगाहणालक्खणे णं आगासस्थिकाय ।

१७. [प्र०] जीवस्थिकायणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! जीवस्थिकायणं जीवे अणंताणं आभिनिबोहियनाण-
पञ्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपञ्जवाणं—एवं जहा वितियसए अस्थिकायउहेसए जाव—उचओगं गच्छति, उचओगलक्खणे णं जीवे ।

१८. [प्र०] पोग्गलस्थिकाय णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पोग्गलस्थिकायणं जीवाणं ओरालिय—वेउच्चिय—आहारग—तेया—
कम्मए सोहंदिद्य—चर्किच्चदिद्य—घाणिदिद्य—जिभिदिद्य—फासिदिद्य—मणजोग—वयजोग—कायजोग—आणापाणूणं च गहणं पवत्तति,
गहणलक्खणे णं पोग्गलस्थिकाय ।

१३. [प्र०] हे भगवन् ! आ लोक केवो कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! आ लोक पंचास्तिकायरूप कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे—
१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, यावत्—[३ आकाशास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय अने] ५ पुद्गलास्तिकाय.

१४. [प्र०] धर्मास्तिकाय वडे जीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! धर्मास्तिकाय वडे जीवोनुं आगमन, गमन, भाषा,
उन्मेष (नेत्रनुं उघडनुं), मनोयोग, वचनयोग अने काययोग प्रवर्ते छे; ते शिवाय बीजा तेवा प्रकारना गमनशील भावो छे, ते सर्व धर्मा-
स्तिकायथी प्रवर्ते छे; केमके गतिलक्षण धर्मास्तिकाय छे.

१५. [प्र०] अधर्मास्तिकाय वडे जीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! अधर्मास्तिकाय वडे जीवोनुं उभा रहेवुं, बेसवुं,
सुवुं अने मनने स्थिर करवुं—वगरे प्रवर्ते छे, ते शिवाय बीजा स्थिर भावो छे ते सर्व अधर्मास्तिकाय थकी प्रवर्ते छे, केमके स्थितिलक्षण
अधर्मास्तिकाय छे.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशास्तिकायवडे जीवोनी अने अजीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! आकाशास्तिकाय
जीव अने अजीव द्रव्यनो आश्रयरूप छे. अर्थात् तेथी जीव अने अजीवद्रव्यनो अवगाह प्रवर्ते छे. “एक—[परमाणु—]थी के बे—
[परमाणु] थी पूर्ण एक आकाशप्रदेशनी अंदर सो परमाणुओ पण माय, अने सो क्रोड [परमाणुओ] वडे पूर्ण एक आकाशप्रदेशमा
हजार क्रोड [परमाणुओ] पण “माय;” केमके अवगाहनालक्षण आकाशास्तिकाय छे.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायवडे जीवोनुं शुं प्रवर्ते ! [उ०] हे गौतम ! जीवास्तिकायवडे जीव अनन्त आभिनिबोधिक—
मतिज्ञानना पर्यायो, अने अनन्त श्रुतज्ञानना पर्यायोना—इत्यादि जेम बीजा शतकना अस्तिकाय उदेशकमा कहुं छे तेम अहिं कहेवुं,
यावत्—ते [ज्ञान अने दर्शनना] उपयोगने प्राप्त थाय छे, केमके उपयोगलक्षण जीव छे.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकाय वडे शुं प्रवर्ते ! [उ०] हे गौतम ! पुद्गलास्तिकायवडे जीवोने औदारिक, वैक्रिय, आहा-
रक, तैजस, कार्मण, ओत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, प्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग अने आसोच्छ्वासनुं प्रहण
प्रवर्ते छे. केमके प्रहणलक्षण पुद्गलास्तिकाय छे.

लोक.

७ अस्तिकाय-
प्रवर्तनद्वार-
धर्मास्तिकायवडे
जीवोनुं प्रवर्तन.

अधर्मास्तिकायवडे
प्रवर्तन.

आकाशास्तिकायवडे
प्रवर्तन.

जीवास्तिकायवडे
प्रवर्तन.

पुद्गलास्तिकायवडे
प्रवर्तन.

१९ * जेम एक ओरकानो आकाश एक बीजाला प्रकाशनी भराय, अने बीजो बीजो करीए तो तेवो प्रकाश पण खास समाय, एम सो के सहस्र बीजानो
प्रकाश पण खास समाय, पण बहार व मोकडे तेम पुद्गलको परिणाम विचित्र होवानी एक, वे, संख्याता, असंख्याता के अनन्त परमाणुथी पूर्ण एक
आकाश प्रदेशमा एकथी मतिने अनन्त परमाणुओ सुथी खास समाय.

૧૯. [પ્ર૦] યને મંતે ! ધમ્મત્થિકાયપપ્પસે કેવતિપિહિ ધમ્મત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! જહ્નપ્પવે તિહિ, ઉક્કોસપ્પવે છહિ. [પ્ર૦] કેવતિપિહિ અહમ્મત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! જહ્નપ્પવ ચહિ, ઉક્કોસપ્પવ સત્તહિ. [પ્ર૦] કેવતિપિહિ આગાસત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! સત્તહિ. [પ્ર૦] કેવતિપિહિ જીવત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! અણંતેહિ. [પ્ર૦] કેવતિપિહિ પોગ્ગલત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! અણંતેહિ. [પ્ર૦] કેવતિપિહિ અદ્દાસમપ્પહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] સિય પુટ્ટે સિય નો પુટ્ટે, જહ્ પુટ્ટે નિયમં અણંતેહિ.

૨૦. [પ્ર૦] યને મંતે ! અહમ્મત્થિકાયપપ્પસે કેવતિપિહિ ધમ્મત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! જહ્નપ્પવ ચહિ, ઉક્કોસપ્પવ સત્તહિ. [પ્ર૦] કેવતિપિહિ અહમ્મત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] જહ્નપ્પવ તિહિ, ઉક્કોસપ્પવ છહિ, સેસં જહ્દા ધમ્મત્થિકાયસ્સ.

૨૧. [પ્ર૦] યને મંતે ! આગાસત્થિકાયપપ્પસે કેવતિપિહિ ધમ્મત્થિકાયપપ્પસેહિ પુટ્ટે ? [ઉ૦] ગોયમા ! સિય પુટ્ટે સિય નો પુટ્ટે, જહ્ પુટ્ટે જહ્નપ્પવે પક્કેણ વા કોહિ વા તીહિ વા ચહિ વા, ઉક્કોસપ્પવ સત્તહિ. [પ્ર૦] અહમ્મત્થિકાયપપ્પસેહિ વિ.

૮ અસ્તિકાયપ્રદેશ
સ્વર્ણનાદ્વાર-
ધર્માસ્તિકાયનો એક
પ્રદેશ ધર્માસ્તિકા-
યાદિ દ્રવ્યના કેટલા
પ્રદેશો વડે સ્પર્શાય ?




૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કેટલા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જઘન્યપ્પવે ત્રણ પ્રદેશોવડે, અને ઉત્કૃષ્ટપ્પવે છ પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય. [પ્ર૦] કેટલા અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જઘન્યપ્પવે †ચાર, અને ઉત્કૃષ્ટ પ્પવે સાત અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય. [પ્ર૦] કેટલા આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! આકાશાસ્તિકાયના સાત પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય. [પ્ર૦] કેટલા જીવાસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! ‡જીવાસ્તિકાયના અનન્ત પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય. [પ્ર૦] કેટલા પુદ્ગલાસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! †અદ્દા-કાલ-ના સમયોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] કદાચિત્ કાલના સમયોવડે સ્પર્શાયેલો હોય અને કદાચિત્ સ્પર્શાયેલો ન હોય. જો સ્પર્શ કરાયેલો હોય તો અવશ્ય અનન્ત-સમયોવડે સ્પર્શ કરાયેલો હોય.

અધર્માસ્તિકાયનો
એક પ્રદેશ.

૨૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! અધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કેટલા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જઘન્યપ્પવે †ચાર, અને ઉત્કૃષ્ટપ્પવે સાત ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શ કરાયેલો હોય. [પ્ર૦] કેટલા અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શ કરાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જઘન્યપ્પવે ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટપ્પવે છ પ્રદેશોવડે સ્પર્શ કરાયેલો હોય. બાકી વધુ ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોની પેટે કહેવું.

આકાશાસ્તિકાયનો
એક પ્રદેશ.

૨૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ કેટલા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશોવડે સ્પર્શ કરાયેલો હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! †કદાચિત્ [લોકને આશ્રયી] સ્પર્શ કરાયેલો હોય અને કદાચિત્ [અલોકને આશ્રયી] સ્પર્શ કરાયેલો ન હોય. જો સ્પર્શ કરાયેલો હોય

૧૯ * અહિ જઘન્યપ્પવ લોકાન્તના કોણને વિષે હોય છે, તે ભૂમિને નજીક ઓરહાના કોણની પેટે જાણવું. [સ્થાપના]— યાં ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશને ઉપરના એક પ્રદેશ અને પાસેના બે પ્રદેશો—એમ ધર્માસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટપ્પવે  ચાર દિશાના ચાર પ્રદેશો અને ઊર્ધ્વ તથા અધોદિશાના એક એક પ્રદેશ મળીને છ પ્રદેશોની સ્પર્શના હોય છે. સ્થાપના—.

† ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશને જઘન્યપ્પવે જેમ ધર્માસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના કહી છે, તેવી રીતે અધર્માસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશોની સ્પર્શના તથા ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશને સ્થાને રહેલા અધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશોની સ્પર્શના-મળીને ચાર પ્રદેશોની સ્પર્શના હોય છે. અને ઉત્કૃષ્ટપ્પવે છ દિશાના છ પ્રદેશો અને ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશને સ્થાને રહેલા એક અધર્માસ્તિકાયની પ્રદેશોની એમ સાત પ્રદેશોની સ્પર્શના હોય છે. લોકાન્તે પણ અલોકાકાશ હોવાથી પૂર્વોક્ત સાત આકાશાસ્તિકાયના પ્રદેશોની સ્પર્શના હોય છે.

‡ એક ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશને વિષે અને તેની પાસે અનન્તજીવના અનન્ત પ્રદેશો વિદ્યમાન હોવાથી તે જીવના અનન્ત પ્રદેશો વડે સ્પર્શાયેલ હોય. એ પ્રમાણે પુદ્ગલાસ્તિકાયના અનન્ત પ્રદેશોવડે પણ સ્પર્શાયેલો હોય.

†† અદ્દાસમય માત્ર સમયક્ષેત્ર—અહીં દ્વીપમાં હોય છે, તેની બાહરે નથી, કેમકે સમયાદિક કાલ સૂર્યની ગતિદ્વારા નિષ્પન્ન થાય છે, તેથી કદાચિત્ ધર્માસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ સ્પર્શાયેલ હોય અને કદાચિત્ ન હોય. જો સ્પર્શાયેલ હોય તો અનન્ત અદ્દાસમયો વડે સ્પર્શાયેલ હોય, કેમકે તે અનાદિ હોવાથી તેને અનન્ત સમયની સ્પર્શના હોય છે. અથવા વર્તમાનસમયવિશિષ્ટ અનન્ત દ્રવ્યો તે અનન્ત સમય કહેવાય છે, માટે અનન્ત સમયોવડે સ્પૃષ્ટ કહેવાય છે.

૨૦ †† અધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશોની બાકીના દ્રવ્યોના પ્રદેશોની સાથે સ્પર્શના ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશની સ્પર્શનાને અનુસારે જાણવી.

૨૧ †† આકાશાસ્તિકાયનો એક પ્રદેશ લોકને આશ્રયી ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ હોય છે, અને અલોકને આશ્રયી સ્પૃષ્ટ હોતો નથી. જો સ્પૃષ્ટ હોય તો જઘન્ય પ્પવે ૧ લોકાન્તમાં વર્તમાન ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રદેશ વડે અલોકાકાશના અગ્રભાગમાં વર્તતો એક આકાશ પ્રદેશ સ્પૃષ્ટ હોય, ૨ વક્ત્રવત આકાશપ્રદેશ ધર્માસ્તિકાયના બે પ્રદેશ વડે સ્પૃષ્ટ હોય, ૩ જે અલોકાકાશના પ્રદેશની આગળ, નીચે અને ઉપર ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો છે તે ધર્માસ્તિકાયના ત્રણ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ હોય. ૪ લોકાન્તને વિષે સ્થળામાં રહેલો આકાશપ્રદેશ તે તદાશ્રિત પ્રદેશ, ઉપરના કે નીચેના અને બે દિશામાં રહેલા બે પ્રદેશ—એ રીતે ચાર ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ હોય. ૫ જે આકાશનો પ્રદેશ ઉપરના, નીચેના, બે દિશાના અને યાંજ રહેલા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો સ્પૃષ્ટ હોય તે પાંચ પ્રદેશો વડે સ્પર્શાય. ૬ જે ઉપર, નીચે, ત્રણ દિશા અને યાંજ રહેલા ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પર્શાય તે છ પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ હોય. ૭ અને જે ઉપર, નીચે, ચાર દિશામાં અને યાંજ રહેલા પ્રદેશો વડે સ્પર્શાય તે ધર્માસ્તિકાયના સાત પ્રદેશો વડે સ્પૃષ્ટ હોય. એ પ્રમાણે અધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પર્શના જાણવી.

[प्र०] केवतिपहि आगासत्थिकायपपसेहि पुट्टे ? [उ०] छहि । [प्र०] केवतिपहि जीवत्थिकायपपसेहि पुट्टे ? [उ०] सिय पुट्टे सिव नो पुट्टे, जर पुट्टे नियमं मणंतेहि । एवं पोग्गलत्थिकायपपसेहि वि, अद्दासमपहि वि ।

२२. [प्र०] एगे मंते ! जीवत्थिकायपपसे केवतिपहि धम्मत्थिकाय-पुच्छा । [उ०] जहन्नपदे चउहिं, उक्कोसपप सत्तहिं । एवं अहम्मत्थिकायपपसेहि वि । [प्र०] केवतिपहि आगासत्थिकाय-पुच्छा । [उ०] सत्तहिं । [प्र०] केवतिपहि जीवत्थि० ? [उ०] सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२३. [प्र०] एगे मंते ! पोग्गलत्थिकायपपसे केवतिपहि धम्मत्थिकायपपसेहि० ? [उ०] एवं जहेव जीवत्थिकायस्स ।

२४. [प्र०] दो मंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवतिपहि धम्मत्थिकायपपसेहि पुट्टा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपप छहिं, उक्कोसपप बारसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपपसेहि वि । [प्र०] केवतिपहि आगासत्थिकाय० ? [उ०] बारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२५. [प्र०] तिन्नि मंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवतिपहि धम्मत्थिकायपपसेहि पुट्टा ? [उ०] जहन्नपप अट्टहिं, उक्कोसपप सत्तरसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपपसेहि वि । [प्र०] केवतिपहि आगासत्थि० ? [उ०] सत्तरसहिं, सेसं जहा धम्म-

तो जघ्न्यपदे एक, बे, त्रण के चार धर्मास्तिकायना प्रदेशवडे स्पर्श करायेलो होय, अने उत्कृष्टपदे सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोनी साथे पण स्पर्श जाणवो. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] हे गौतम ! छ प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] कदाचित् स्पर्श करायेलो होय अने कदाचित् स्पर्श न करायेलो पण होय. जो स्पर्श करायेलो होय तो अवश्य अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे अने अद्दा-कालना समयोवडे पण स्पर्शना जाणवी.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायना एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय-ए प्रश्न. [उ०] जघ्न्यपदे चार अने उत्कृष्टपदे सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] जेम जीवास्तिकायना एक प्रदेश संबन्धे कछुं तेम अहिं जाणवुं.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] हे गौतम ! जघ्न्यपदे छ प्रदेशोवडे, अने उत्कृष्टपदे बार प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्शना जाणवी. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] बार प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] जघ्न्यपदे आठ, अने उत्कृष्टपदे सत्तर प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्श करायेला होय. [प्र०] केटला

जीवास्तिकायना एक प्रदेश.

पुद्गलास्तिकायना एक प्रदेश.

पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.

पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.

२४ * अहिं वृत्तिकारुं आवा प्रकारुं व्याख्यान छ—“लोकान्ते द्विप्रदेशिक स्क्न्ध एक प्रदेशने अवगाहीने रहले छे, तो पण ते प्रदेशने ‘प्रतिव्रयनी अवगाहना होय छे’ ए नयमतनी विषयाबी अवगाह प्रदेश एक छतां पण भिन्न मानवाबी ते बे प्रदेशो वडे स्पर्शयेलो छे, तथा जे तेनी उपरनी के नीचेनी प्रदेश छे ते पण नयना मतथी बे प्रदेशथी स्पर्शयेलो छे, अने पासेना बे अणुओ एक एक प्रदेशनो स्पर्श करे छे-आ प्रमाणे धर्मास्तिकायना छ प्रदेशो वडे त्रणुक् स्क्न्धनो स्पर्श थाय छे. नयना मतनो आश्रय न करीए तो त्रणुक् स्क्न्धने चार प्रदेशनी जघ्न्य स्पर्शना होय छे.” वृत्तिकार आ प्रमाणे कहे छे— “अहिं जे बे बिंदुओ छे ते बे परमाणुओ जाणवा, तेमां आ तरफनो परमाणु आ तरफना धर्मास्तिकायना प्रदेश वडे स्पर्श करायेल होय, अने पैली तरफनो परमाणु पैली तरफना धर्मास्तिकायप्रदेश वडे स्पृष्ट होय-ए प्रमाणे बे प्रदेशो, तथा जे बे प्रदेशोमां बे परमाणुओ स्थापित करेला छे तेनी आगळना बे प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय-ए प्रमाणे चार थया, अने बे अवगाह प्रदेशनी स्पर्शना होय-एम छ प्रदेशनी स्पर्शना होय. उत्कृष्ट बार प्रदेशनी स्पर्शना होय छे, ते आ प्रमाणे—
दक्षिणनो एक एक मळीने बार प्रदेशनी



द्विप्रदेशावगाह होवाबी बे प्रदेश, बे उपरना अने बे नीचेना, पासेना बड्के, अने उत्तर स्पर्शना होय छे.

२५ † पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशने एक प्रदेशावगाह छतां पूर्वोक्त नयना मतथी अवगाह त्रण प्रदेश, नीचेना के उपरना त्रण प्रदेश अने पासेना बे प्रदेश-ए प्रमाणे धर्मास्तिकायना आठ प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. अहिं थया जघ्न्य पदे विवक्षित परमाणुथी बमणा करी अने बे अधिक करीए एटला प्रदेशोनी स्पर्शना होय छे. अने उत्कृष्टपदे विवक्षित परमाणुथी पांचगुणा करी बे अधिक करीए एटला प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. तेमां एक परमाणुने बमणा करीए अने बे सहित करीए एटले जघ्न्यपदे चार प्रदेशनी स्पर्शना होय, अने उत्कृष्टपदे एक परमाणुने पांच गुणा करीए अने बे सहित करीए एटले सात प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. ए प्रमाणे त्रणुक्-त्रणुक्कारिने बिबे जाणवुं—टीका.

स्थिकायस्स । एवं एणं गमेणं भाणियच्चं जाव-दस्स, नवरं जहन्नपदे दोष्णि पक्खिवियच्चा, उक्कोसपप पंच । चत्तारि पोग्गल-
त्थिकायस्स० जहन्नपप दसहिं, उक्कोसपप बावीसाप । पंच पुग्गल०, जहन्नपप बारसहिं, उक्कोसपप सत्तावीसाप । छ पोग्गल०
जहन्नपप चोइसहिं, उक्कोसपप बत्तीसाप । सत्त पोग्गल० जहन्नेणं सोलसहिं, उक्कोसपप सत्ततीसाप । अट्ट पोग्गल० जहन्नपप
अट्टारसहिं, उक्कोसेणं बायालीसाप । नव पोग्गल० जहन्नपप धीसाप, उक्कोसपपे सीयालीसाप । दस पोग्गल० जहन्नपप बावी-
साप, उक्कोसपप बावन्नाप । आगासत्थिकायस्स सत्तत्थ उक्कोसगं भाणियच्चं ।

२६. [प्र०] संखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवत्तिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं पुट्टा ? [उ०] जहन्नपपे तेणेव संखे-
ज्जपणं दुगुणेणं दुरूवाहिपणं, उक्कोसपप तेणेव संखेज्जपणं पंचगुणेणं दुरूवाहिपणं । [प्र०] केवत्तिपहिं अधम्मत्थिकाय पपसेहिं ?
[उ०] एवं चेव । [प्र०] केवत्तिपहिं आगासत्थिकाय० ? [उ०] तेणेव संखेज्जपणं पंचगुणेणं दुरूवाहिपणं । [प्र०] केवत्तिपहिं
जीवत्थिकाय० ? [उ०] अणंतेहिं । [प्र०] केवत्तिपहिं पोग्गलत्थिकाय० ? [उ०] अणंतेहिं । [प्र०] केवत्तिपहिं अट्टासमपहिं ?
[उ०] सिय पुट्टे, सिय नो पुट्टे, जाव-अणंतेहिं ।

२७. [प्र०] असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवत्तिपहिं धम्मत्थिकायपपसेहिं० ? [उ०] जहन्नपप तेणेव असंखे-
ज्जपणं दुगुणेणं दुरूवाहिपणं, उक्कोसपपे तेणेव असंखेज्जपणं पंचगुणेणं दुरूवाहिपणं, सेसं जहा संखेज्जाणं जाव-नियमं अणंतेहिं ।

२८. [प्र०] अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपपसा केवत्तिपहिं धम्मत्थिकाय० ? [उ०] एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता
वि निरवसेसं ।

आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] सत्तर प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. बाकी बंधुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.
ए प्रमाणे आ पाठ वडे यावत्-दश प्रदेशो सुधी कहेवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के जघन्यपदे बेनो अने उत्कृष्टपदे पांचनो प्रक्षेप करवो.
चार पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो जघन्यपदे दश अने उत्कृष्टपदे बावीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना पांच प्रदेशो जघ-
न्यपदे बार अने उत्कृष्टपदे सत्तावीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना छ प्रदेशो जघन्यपदे चौद अने उत्कृष्टपदे बत्तीश
प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना सात प्रदेशो जघन्यपदे सोळ अने उत्कृष्टपदे साडत्रीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय.
पुद्गलास्तिकायना आठ प्रदेशो जघन्यपदे अट्टार अने उत्कृष्टपदे बेतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय. पुद्गलास्तिकायना नव प्रदेशो जघन्यपदे
वीश अने उत्कृष्टपदे सुडतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय. पुद्गलास्तिकायना दश प्रदेशो जघन्यपदे बावीश अने उत्कृष्टपदे बावन प्रदेशो-
वडे स्पर्शयिला होय. आकाशास्तिकायनुं सर्वत्र *उत्कृष्टपद कहेवुं.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय ? [उ०] जघन्यपदे तेज
संख्याता प्रदेशने बमणा करी बे रूप अधिक करीए, अने उत्कृष्टपदे तेज संख्याता प्रदेशने पांच गुणा करी बे रूप अधिक करीए. [तेटला
प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय.] [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शय ? [उ०] ए प्रमाणे [धर्मास्तिकायनी पेटे] जाणवुं. [प्र०]
केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शयिला होय ? [उ०] तेज संख्याताने पांचगुणा करी बे रूप अधिक करीए [तेटला प्रदेशोवडे
स्पर्श करायेल होय.] [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०]
केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अट्टासमयोवडे स्पर्श
करायेल होय ? [उ०] कदाच स्पर्श करायेल होय, अने कदाच स्पर्श न करायेल होय, यावत्-अनन्त समयोवडे स्पर्श करायेल होय.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना असंख्याता प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श कराय ? [उ०] जघन्यपदे
तेज असंख्याताने बमणा करीए अने बे रूप अधिक करीए तेटला प्रदेशोवडे स्पर्श कराय, अने उत्कृष्टपदे तेज असंख्याताने पांच गुणा
करीए, अने बे रूप अधिक करीए एटला प्रदेशोवडे स्पर्श कराय. बाकी बंधुं जेम संख्यातासंबन्धे कहुं तेम अहिं जाणवुं, यावत्-‘अवश्य
अनन्त समयोवडे स्पर्श कराय’ त्यां सुधी जाणवुं.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श कराय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम
असंख्याता प्रदेश संबन्धे कहुं तेम अनन्ता प्रदेश संबन्धे पण समप्र जाणवुं.

२५ * आकाशास्तिकायनुं उत्कृष्टपद छे, पण जघन्यपद नबी, कारण के आकाश सर्व स्थळे विद्यमान छे.—टीका.

२६ † दशधी उपरांत संख्यानी गणना संख्यातामां ज थाय छे. जेमके वीश प्रदेशानो एक स्कन्ध लोकान्तना एक प्रदेशने विचे रहेलो छे, अने ते
अमुक नयना अमिप्रायधी वीश अवगाह प्रदेशोवडे, अने तेज नयना मतधी उपरना के नीचेना वीश प्रदेशो वडे तथा पासेना बे प्रदेशो वडे—ए प्रमाणे
जघन्यपदे बेतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शय. उत्कृष्टपदे निरूपचरित (वास्तविक) वीश अवगाह प्रदेशोवडे, वीश नीचेना अने वीश उपरना प्रदेशोवडे अने
पूर्व अने पश्चिम, ए बजे दिशाए वीश वीश प्रदेशोवडे, तथा उत्तर अने दक्षिण बाजु एक एक प्रदेशोवडे—सर्व मळी एकलो बे प्रदेशोवडे स्पर्शय.—टीका.

२८ † अहिं एटली विशेषता छे के जेम जघन्यपदने विचे उपरना के नीचेना अवगाह प्रदेशो औपचारिक छे, तेम उत्कृष्ट पदने विचे पण जाणवुं,
जेमके अवगाहधी निरूपचरित अनन्त आकाश प्रदेशो होता नबी, पण असंख्याता होय छे.—टीका.

पुद्गलास्तिकायना
संख्याता प्रदेशो.

पुद्गलास्तिकायना
असंख्य प्रदेशो.

पुद्गलास्तिकायना
अनन्त प्रदेशो.

२९. [प्र०] एते मंते ! अद्वासमय केवतिपहि धम्मत्थिकायपपसेहि पुट्टे ? [उ०] सत्तिहि । [प्र०] केवतिपहि अहम्मत्थि० ? [उ०] एवं वेव, एवं आगासत्थिकापहि वि । [प्र०] केवतिपहि जीवत्थिकाय० ? [उ०] अणंतेहि, एवं जाव-अद्वासमपहि ।

३०. [प्र०] धम्मत्थिकाय णं मंते ! केवतिपहि धम्मत्थिकायपपसेहि पुट्टे ? [उ०] नत्थि पक्केण वि । [प्र०] केवतिपहि अधम्मत्थिकायपपसेहि ? [उ०] असंखेज्जेहि । [प्र०] केवतिपहि आगासत्थिकायपपसेहि० ? [उ०] असंखेज्जेहि । [प्र०] केवतिपहि जीवत्थिकायपपसेहि० ? [उ०] अणंतेहि । [प्र०] केवतिपहि पोगलत्थिकायपपसेहि० ? [उ०] अणंतेहि । [प्र०] केवतिपहि अद्वासमपहि ? [उ०] सिय पुट्टे, सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे नियमा अणंतेहि ।

३१. [प्र०] अहम्मत्थिकाय णं मंते ! केवइपणं धम्मत्थिकाय० ? [उ०] असंखेज्जेहि । [प्र०] केवतिपहि अहम्मत्थि० ? [उ०] णत्थि पक्केण वि, सेसं जइ धम्मत्थिकायस्स । एवं पपणं गमपणं सत्ते वि सट्ठाणप नत्थि पक्केण वि पुट्टा । परट्ठाणप आविल्लपहि तिहि असंखेज्जेहि भाणियच्चं, पच्छिल्लपसु 'अणंता' भाणियच्चा, जाव-अद्वासमयो सि, जाव-[प्र०] केवतिपहि अद्वासमपहि पुट्टे ? [उ०] नत्थि पक्केण वि ।

३२. [प्र०] जत्थ णं मंते ! एते धम्मत्थिकायपपसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपपसा ओगाढा ? [उ०] नत्थि पक्को वि । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थिकायपपसा ओगाढा ? [उ०] पक्को । [प्र०] केवतिया आगासत्थिकायपपसा० ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! अद्वा-कालनो एक समय केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] *अद्वासमय सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] उपर प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्शना जाणवी. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. ए प्रमाणे यावत्-[अनन्त] अद्वासमयोवडे स्पर्शना जाणवी.

कालनो एक समय.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायद्रव्य केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] एक पण प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल न होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] असंख्यात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्ता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अद्वासमयोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] कदाच स्पर्श करायेल होय अने कदाच स्पर्श करायेल न होय. जो स्पर्श करायेल होय तो अवश्य अनन्त समयोवडे स्पर्श करायेल होय.

धर्मास्तिकायद्रव्य.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! अधर्मास्तिकाय केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] एक पण प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल न होय. बाकी बहु धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे ए पाठ वडे सर्वे पण स्वस्थानके एक पण प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल नहीं, परस्थानके-आदिना त्रण स्थानके-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रण स्थले असंख्याता प्रदेशो वडे स्पर्श करायेल होय एम कहेवुं. अने पछीना त्रण स्थले 'अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय'-एम यावत्-अद्वा समय सुधी कहेवुं. यावत्-[प्र०] केटला अद्वा समयोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] एक पण समयोवडे स्पर्श करायेल न होय.

अधर्मास्तिकाय.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ-रहेलो होय त्यां बीजा केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय

१ अवगाढार.

२९ * अहिं वर्तमानसमयविशिष्ट समयक्षेत्रमां रहेलो परमाणु अद्वासमय तरीके जाणवो, अन्यथा अद्वासमयने धर्मास्तिकायना सात प्रदेश साधे स्पर्शना न होय. अहिं अचन्यपद नहीं, केमके अद्वासमय मनुष्यक्षेत्रवा मध्यवर्ती छे. अचन्यपदको तो लोकान्तने विषे संभव छे, अने लोकान्तने विषे काल नहीं. अद्वासमयविशिष्ट परमाणुद्रव्य एक धर्मास्तिकायना प्रदेशने विषे अवगाढ छे, अने बीजा तेनी छ दिशाए धर्मास्तिकायना छ प्रदेशो रहेला छे-ए प्रमाणे तेने सात प्रदेशोनी स्पर्शना होय छे.

† अहिं यावत्शब्दी एक अद्वासमय अनन्त पुद्गलास्तिकायप्रदेशोवडे अने अनन्त अद्वासमयोवडे स्पर्श करायेल होय, ते आ प्रमाणे-अद्वासमय-विशिष्ट अणुद्रव्य अद्वासमय कहेवाय छे, ते एक अद्वासमय पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे अने अनन्त अद्वासमय-अद्वासमयविशिष्ट अनन्त परमाणुओवडे स्पर्श कराय छे.

३१ † ज्यां केवल धर्मास्तिकायादि द्रव्यनो तेना प्रदेशोनी साधे स्पर्शनाको विचार थाय ते स्वस्थानक कहेवाय, बीजा द्रव्यना प्रदेशोनी साधे स्पर्शनाको विचार थाय ते परस्थानक कहेवाय. तेमां स्वस्थानके एक पण प्रदेशोवडे स्पृष्ट नहीं, अने परस्थानके धर्मास्तिकायादि त्रण सूत्रने विषे असंख्य प्रदेशोवडे स्पृष्ट होय छे, केमके धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने तत्संबद्ध आकाशना असंख्य प्रदेशो छे. जीवादि त्रण सूत्रने विषे अनन्त प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय छे. केमके तेओना अनन्त प्रदेशो छे. यावत् एक अद्वासमय केटला अद्वासमयो वडे स्पर्श करायेल होय ? एक पण अद्वासमय वडे स्पर्श करायेल नहीं, कारण के विचारवर्तित अद्वासमय एक ज होवावी तेनी समयान्तरणी साधे स्पर्शना नहीं.

[३०] एको । [प्र०] केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? [३०] अणंता । [प्र०] केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा० ? [३०] अणंता । [प्र०] केवतिया अद्दासमया ? [३०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता ।

३३. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? [३०] एको । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि० ? [३०] नत्थि एको वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

३४. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे आगासत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? [३०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एको, एवं अहम्मत्थिकायपपसा वि । [प्र०] केवत्थया आगासत्थिकाय० ? [३०] नत्थि एको वि । [प्र०] केवतिया जीवत्थि० ? [३०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता, एवं जाव-अद्दासमया ।

३५. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे जीवत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थि० ? [३०] एको, एवं अहम्मत्थिकायपदेसा वि । एवं आगासत्थिकायपपसा वि । [प्र०] केवतिया जीवत्थि० ? [३०] अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

३६. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थिकायपपसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय० ? [३०] एवं जहा जीवत्थिकायपपसे तद्देव निरवसेसं ।

३७. [प्र०] जत्थ णं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय० ? [३०] सिय एको सिय दोक्कि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

३८. [प्र०] जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपदेसा तत्थ केवत्थया धम्मत्थिकाय० ? [३०] सिय एको, सिय

धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां बीजा धर्मास्तिकायाना केटला प्रदेश अवगाढ होय ?

छे ? [३०] एक पण प्रदेश अवगाढ नथी. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ-रहेला होय ? [३०] एक अधर्मास्तिकायनो प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेश अवगाढ होय ? [३०] एक प्रदेश अवगाढ होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] अनन्ता प्रदेशो अवगाढ होय. [प्र०] केटला अद्दासमयो अवगाढ होय ? [३०] अद्दासमयो कदाच अवगाढ होय अने कदाच अवगाढ न होय; जो अवगाढ होय तो अनन्त अद्दासमयो अवगाढ होय.

अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ-रहेलो होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] त्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] एक पण नथी. बाकी बहुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.

आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] त्यां धर्मास्तिकायना प्रदेशो कदाच अवगाढ-रहेला होय, अने कदाच न अवगाढ होय. जो अवगाढ होय तो एक प्रदेश अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पण जाणवा. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] एक पण न होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] कदाच अवगाढ होय अने कदाच न अवगाढ होय. जो अवगाढ होय तो अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय. ए प्रमाणे यावत्-अद्दासमय सुची जाणवुं.

जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां जीवास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] त्यां एक प्रदेश अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पण जाणवा. आकाशास्तिकायना प्रदेशो पण ए रीते जाणवा. [प्र०] जीवास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] अनन्ता प्रदेशो अवगाढ होय. बाकी बहुं धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं.

पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] ए प्रमाणे जेम जीवास्तिकायना प्रदेश संबन्धे कहुं तेम बहुं कहेवुं.

पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ-रहेला होय ? [३०] कदाच एक प्रदेश अवगाढ होय, अने कदाच वे प्रदेशो अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे आकाशास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं. बाकी बहुं [जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमय संबन्धे] जेम धर्मास्तिकायना प्रदेशानी वक्तव्यतामां कहुं छे तेम पुद्गलास्तिकायना वे प्रदेशानी वक्तव्यताने विषे पण कहेवुं. [अर्थात् तेओना अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय छे.]

पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो अवगाढ-रहेला छे त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय ? [३०] कदाच एक, कदाच वे अने कदाच त्रण प्रदेशो अवगाढ होय. [कारणके ज्यारे पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो एक आकाशास्तिकायना

दोषि, सिय तिभि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहेव दोण्हं, एवं एकेको वड्डियच्चो पएसो अण्हण्हयहिं तिहिं अत्थिकायहिं, सेसेहिं जहेव दोण्हं जाव-वसण्हं सिय एको, सिय दोषि, सिय तिभि, जाव-सिय दस । संखेज्जाणं सिय एको, सिय दोषि, जाव-सिय दस, सिय संखेज्जा । असंखेज्जाणं सिय एको, जाव-सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा । जहा असंखेज्जा एवं अणंता वि ।

३९. [प्र०] अत्थ णं मंते ! एगे अद्दासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थि० ? [उ०] एको । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि० ? [उ०] एको । [प्र०] केवतिया आगासत्थि० ? [उ०] एको । [प्र०] केवत्तया जीवत्थि० ? [उ०] अणंता, एवं जाव-अद्दासमया ।

४०. [प्र०] अत्थ णं मंते ! धम्मत्थिकाय ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? [उ०] नत्थि एको वि । [प्र०] केवतिया अहम्मत्थिकाय० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया आगासत्थि० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवत्तिया जीवत्थिकाय० ? [उ०] अणंता । एवं जाव-अद्दासमया ।

४१. [प्र०] अत्थ णं मंते ! अहम्मत्थिकाय ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवत्तिया अहम्मत्थि० ? [उ०] नत्थि एको वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं सवे, सट्टाणे नत्थि एको वि भाणियच्चं, परट्टाणे आविल्लगा तिभि असंखेज्जा भाणियच्च, पच्छिल्लगा तिभि अणंता भाणियच्च जाव-अद्दासमभो सि । जाव-[प्र०] केवत्तिया अद्दासमया ओगाढा ? [उ०] नत्थि एको वि ।

कायना प्रदेशने अवगाहीने रहे स्यारे तेने विषे एक धर्मास्तिकायनो प्रदेश अवगाहीने रहे, ज्यारे बे आकाशास्तिकायना प्रदेशने अवगाहीने रहे स्यारे त्यां बे धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहे, अने ज्यारे त्रण आकाशास्तिकायना प्रदेशोने अवगाहीने रहे स्यारे त्यां त्रण धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहे.] ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायना संबन्धे कहेवुं. बाकी जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमयने आश्रयी जेम बे पुद्गलप्रदेशसंबन्धे कहेवुं तेम त्रण पुद्गलप्रदेश संबन्धे पण कहेवुं. [अर्थात्-त्रण पुद्गल प्रदेशने स्थाने अनन्त जीवप्रदेशो, अनन्त पुद्गलपरमाणुओ अने अनन्त अद्दासमय अवगाढ होय.] ए प्रमाणे आदिना त्रण अस्तिकायने विषे एक एक प्रदेश वधारवो, बाकीनाने विषे जेम बे पुद्गलास्तिकायना प्रदेशसंबन्धे कहेवुं तेम यावत्-दश प्रदेश संबन्धे पण कहेवुं. एटले ज्यां पुद्गलास्तिकायना दश प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायनो कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् बे प्रदेश, कदाचित् त्रण प्रदेश, यावत्-कदाचित् दश प्रदेशो अवगाढ होय. ज्यां संख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायनो कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् बे प्रदेश, यावत्-कदाचित् दश प्रदेशो, यावत्-संख्याता प्रदेशो अवगाढ होय. असंख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो ज्यां अवगाढ-रहेला होय त्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश, यावत्-कदाचित् संख्याता प्रदेशो, अने कदाचित् असंख्याता प्रदेशो अवगाढ होय. जेम असंख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो माटे कहेवुं तेम अनन्त प्रदेशो माटे पण जाणवुं. [अर्थात् ज्यां पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना कदाचित् एक, यावत्-संख्याता अने यावत्-असंख्याता प्रदेशो रहेला होय.]

३९. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां एक अद्दासमय अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] अनन्त प्रदेशो रहेला होय. ए प्रमाणे यावत् अद्दासमय सुधी जाणवुं. [अर्थात् पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमयो अनन्ता रहेला होय.]

एक अद्दासमय.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां एक धर्मास्तिकाय अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] त्यां धर्मास्तिकायनो एक पण प्रदेश रहेलो न होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो होय ? [उ०] अनन्ता होय. ए प्रमाणे यावत्-अद्दासमय सुधी जाणवुं.

एक धर्मास्तिकाय.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां एक अधर्मास्तिकाय अवगाढ-रहेलो होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय ? [उ०] एक पण प्रदेश न होय. बाकी [आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्दासमयने] धर्मास्तिकायनी पेटे जाणवुं. सर्व धर्मास्तिकायादि द्रव्यने 'स्वस्थानके एक पण प्रदेश नथी'-ए प्रमाणे कहेवुं, अने परस्थानके आदिना त्रण द्रव्यने (धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायने) 'असंख्याता' कहेवा, अने पच्छल्लगा त्रण द्रव्यने 'अनन्ता' यावत्-अद्दासमय सुधी कहेवा. यावत्-[प्र०] केटला अद्दासमय अवगाढ होय ? [उ०] एक पण नथी.

एक अधर्मास्तिकाय.

૪૨. [પ્ર૦] જત્ય ણં મંતે ! પમે પુઢવિક્કારપ ઓગાઢે તત્થ ણં કેવતિયા પુઢવિક્કારયા ઓગાઢા ? [ઉ૦] અસંલેજ્ઞા । [પ્ર૦] કેવતિયા આઝકારયા ઓગાઢા ? [ઉ૦] અસંલેજ્ઞા । [પ્ર૦] કેવરયા તેઝકારયા ઓગાઢા ? [ઉ૦] અસંલેજ્ઞા । [પ્ર૦] કેવરયા વાઝકારયા ઓગાઢા ? [ઉ૦] અસંલેજ્ઞા । [પ્ર૦] કેવતિયા વણસ્સરકારયા ઓગાઢા ? [ઉ૦] અણંતા ।

૪૩. [પ્ર૦] જત્ય ણં મંતે ! પમે આઝકારપ ઓગાઢે તત્થ ણં કેવતિયા પુઢવિ૦ ? [ઉ૦] અસંલેજ્ઞા । [પ્ર૦] કેવતિયા આઝ૦ ? [ઉ૦] અસંલેજ્ઞા । एवं जहेव पुढविकारयाणं वत्तवता तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियच्चं जाव-वणस्सरकारयाणं, जाव- [प०] केवतिया वणस्सरकारया ओगाढा ? [उ०] अणंता ।

૪૪. [પ્ર૦] પયંસિ ણં મંતે ! ધમ્મત્થિકાય-અધમ્મત્થિકાય-આગાસત્થિકાયંસિ ચક્કિયા કેરૂં આસરત્તપ વા ચિટ્ઠિત્તપ વા નિસીયત્તપ વા તુયટ્ઠિત્તપ વા ? [ઉ૦] નો ઇણ્ટે સમટ્ટે, અણંતા પુણ તત્થ ઝીવા ઓગાઢા । [પ્ર૦] સે કેણ્ટેણં મંતે ! एवं बुद्ध-‘एतंसि णं धम्मत्थि० जाव-आगासत्थिकायंसि णो चक्किया केरूँ आसरत्तप वा जाव-ओगाढा’ ? [उ०] गोयमा ! से जहानामप-कूडागारसाला सिया, बुहओ लिता, गुत्ता, गुत्तदुवारा, जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव-दुवारवयणाई पिहेइ, बु० २ पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाप बहुमज्जवेसभाप जहणेणं एक्को वा दो वा तिप्पि वा उक्कोसेणं पदीयसहस्सं पलीवेज्जा, से नूर्ण गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नसंबद्धाओ अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव-अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति ? हंता चिट्ठंति । चक्किया णं गोयमा ! केरूँ तासु पदीवलेस्सासु आसरत्तप वा जाव-तुयट्ठित्तप वा ? भगवं ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुद्ध-जाव-‘ओगाढा’ ।

૪૫. [પ્ર૦] કહિ ણં મંતે ! લોપ બહુસમે ? કહિ ણં મંતે ! લોપ સઘવિગ્ગહિપ પળ્લસે ? [ઉ૦] ગોયમા ! इमीसे रयण-प्पमाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्ढागपयरेसु एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ णं लोए सघविग्गहिप पण्णसे ।

પૃથિવીકાયિક.

૪૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્યાં એક પૃથિવીકાયિક જીવ અવગાઢ હોય ત્યાં બીજા કેટલા પૃથિવીકાયિક જીવો રહેલા હોય ? [ઉ૦] અસંલ્યાતા પૃથિવીકાયિકો રહેલા હોય. [પ્ર૦] કેટલા અષ્કાયિક જીવો અવગાઢ હોય ? [ઉ૦] અસંલ્યાતા જીવો અવગાઢ હોય. [પ્ર૦] કેટલા તેજઃકાયિક જીવો રહેલા હોય ? [ઉ૦] અસંલ્યાતા રહેલા હોય. [પ્ર૦] કેટલા વાયુકાયિક જીવો રહેલા હોય ? [ઉ૦] અસંલ્યાતા રહેલા હોય. [પ્ર૦] કેટલા વનસ્પતિકાયિકો રહેલા હોય ? [ઉ૦] અનન્તા વનસ્પતિકાયિકો રહેલા હોય.

અષ્કાયિક.

૪૩. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જ્યાં એક અષ્કાયિક રહેલો હોય ત્યાં કેટલા પૃથિવીકાયિક જીવો રહેલા હોય ? [ઉ૦] અસંલ્યાતા રહેલા હોય. [પ્ર૦] કેટલા અષ્કાયિકો રહેલા હોય ? [ઉ૦] અસંલ્યાતા રહેલા હોય. ए प्रमाणे जेम पृथिवीकायिकनी वक्तव्यता कही, तेम सर्वमी सघळी वक्तव्यता यावत्-वनस्पतिकाय सुधी कहेवी. यावत्-[प०] केटला वनस्पतिकायिको रहेला होय ? [उ०] अनन्ता रहेला होय.

૧૧ અસ્તિકાય-
નિષ્વદનદાર-
ધર્માસ્તિકાયાદિ વળ
પ્રવ્યમાં બેસવાને
સમથે થાય ?

૪૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આ ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય, અને આકાશાસ્તિકાયને વિષે કોઈ પુરુષ બેસવાને, ઉભો રહેવાને, નીચે બેસવાને અને આલોટવાને શક્તિમાન્ હોય ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! આ અર્થ યથાર્થ નથી, પરન્તુ તે સ્થાને તો અનન્તા જીવો અવગાઢ-રહેલા છે. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! શા હેતુથી એમ કહો છો કે આ ‘ધર્માસ્તિકાય, યાવત્-આકાશાસ્તિકાયને વિષે કોઈ પુરુષ બેસવાને શક્તિમાન્ નથી’-ઇત્યાદિ યાવત્-સ્વાં અનન્તા જીવો અવગાઢ-રહેલા છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ કૂટાગારશાલા હોય, તેને અંદર ને બહાર લીપી હોય, ચારે તરફથી ઢાંકેલી હોય, અને તેનાં વારણાં પણ બંધ કર્યાં હોય-ઇત્યાદિ* રાજપ્રશ્નીય સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે તેનું વર્ણન જાણવું, યાવત્-તે કૂટાગાર શાલાના દ્વારના કમાડને બંધ કરી, તે કૂટાગાર શાલાના બરાબર મધ્યમાગમાં જઘન્યથી એક, બે, ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ઠથી એક હજાર દીવાઓ સઠગાવે. હે ગૌતમ ! ચરેચર તે દીવાઓનું તેજ પરસ્પર મઠીને, પરસ્પર સ્પર્શ કરીને, યાવત્ એક બીજા સાથે એકરૂપે ધરને રહે ! હા, ભગવન્ ! રહે, હે ગૌતમ ! કોઈ પણ પુરુષ તે દીવાઓના તેજમાં બેસવાને યાવત્-અથવા આલોટવાને શક્તિમાન્ થાય ? હે ભગવન્ ! એ અર્થ યોગ્ય નથી, પણ અનન્તા જીવો ત્યાં અવગાઢ-રહેલા હોય છે. તે માટે હે ગૌતમ ! એમ કહેવાય છે કે યાવત્-‘અનન્તા જીવો ત્યાં અવગાઢ હોય છે.’

૧૨ બહુસમદાર.

૪૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! લોકનો બરાબર સમ-(પ્રવેશની વૃદ્ધિ-હાનિરહિત) ભાગ ક્યાં કહેલો છે ? હે ભગવન્ ! લોકનો સર્વથી સંક્ષિપ્ત-સાંકઢો ભાગ ક્યાં કહેલો છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! આ રત્નપ્રમા પૃથિવીના ઉપર અને નીચેના ક્ષુદ્ર (લઘુ) પ્રતરને વિષે અહિં લોકનો બરાબર સમમાગ કહેલો છે, અને અહિંજ લોકનો સર્વથી સંક્ષિપ્ત (સાંકઢો) ભાગ કહેલો છે.

૪૪ * કૂટાગારશાલાનું વર્ણન જુઓ-રાજપ્રશ્નીય પ૦ ૧૧૪.

૪૫ † આ વચ્ચે ક્ષુદ્ર પ્રતરોથી આરંભીને ઉપર અને નીચે પ્રતરની વૃદ્ધિ થાય છે-તીકા.

४६. [प्र०] कहि णं मंते ! विग्गहविग्गहिए लोप पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! विग्गहकंडप पत्थ णं विग्गहविग्गहिए लोप पण्णसे ।

४७. [प्र०] किसंठिए णं मंते ! लोप पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! सुपरद्धियसंठिए लोप पण्णसे, हेट्ठा विच्छिप्पे, मज्जे अद्दा सत्तमसए पढमुहेसे जाव-‘अंतं करेति’ ।

४८. [प्र०] एयस्स णं मंते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उह्ललोगस्स य कयरे कयरेहितो जाव-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सत्तथोवे तिरियलोप, उह्ललोप असंखेज्जगुणे, अहेलोप विसेसाहिए । ‘सेवं मंते ! सेवं मंते’ ! चि ।

तेरसमसए चउत्थो उहेसो समसो ।

४६. [प्र०] हे भगवन् ! क्यां विग्रहविग्रहिक-लोकरूप शरीरनो वक्रतायुक्त भाग छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यां विग्रहकंडक-वक्रता-युक्त अवयव छे (अर्थात् लोकरूप शरीरनो ब्रह्मदेवलोकरूप कोणीनो भाग छे, त्यां प्रदेशनी वृद्धि-हानि होवाथी वक्र अवयव छे) त्यां लोकरूपशरीर वक्रतायुक्त छे.

कोकनो वक्रताय.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! लोकनुं संस्थान केवा प्रकारे कथुं छे ? [उ०] हे गौतम ! लोकनुं सुप्रतिष्ठक-(उंधा वाळेल शरावना उपर मूकेला शरावसंपुट)ने आकारे आ लोक कथो छे. नीचे विस्तीर्ण, मध्यमां संक्षिप्त-इत्यादि जेम *सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां कथा प्रमाणे यावत्-‘संसारनो अन्त करे छे’-त्यां सुधी जाणवुं.

१३ संस्थानद्वार.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! आ अधोलोक, तिर्यग्लोक, अने ऊर्ध्वलोकमां कयो लोक कोनाथी यावत्-विशेषाधिक छे ? [उ०] सर्वथी थोडो तिर्यग्लोक छे, तेथी असंख्यातगुण ऊर्ध्वलोक छे अने तेथी विशेषाधिक अधोलोक छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.’

प्रबोधश शतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

पंचमो उद्देशो ।

१. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सच्चित्ताहारा, अच्चित्ताहारा, मीसाहारा ? [उ०] गोयमा ! नो सच्चित्ताहारा, अच्चित्ताहारा, नो मीसाहारा । एवं असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देशओ निरवसेसो भाणियहो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

तेरसमसए पंचमो उद्देशओ समसो ।

पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको शुं सच्चित्ताहारी छे, अच्चित्ताहारी छे के मिश्राहारी (सच्चित्त अने अचित्त उभय आहारवाळ) छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सच्चित्ताहारी नथी, मिश्राहारी नथी, परन्तु अच्चित्ताहारी छे. असुरकुमारो ए प्रमाणे जाणवा. अहीं ['प्रज्ञापना' सूत्रना अठ्यावीशमा आहारपदनो] * प्रथम नैरयिक उद्देशक समस्र कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'— एम कही भगवान् गौतम यावद्—विहरे छे.

त्रयोदश शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्टो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव—एवं वयासी—संतरं भंते ! नेरतिया उववज्जंति, निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति । एवं असुरकुमारा वि, एवं जहा गंगेये तहेव दो दंडगा जाव— 'संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति' ।

षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के—हे भगवन् ! नारको सांतर—समयादिकना अंतर सहित उपजे, के निरन्तर—समयादिकना अंतर रहित उपजे ? [उ] हे गौतम ! नैरयिको सांतर पण उपजे छे, अने निरन्तर पण उपजे छे. असुरकुमारो पण ए प्रमाणे जाणवा, ए प्रमाणे जिम गांगेय उद्देशकमां कहुं छे तेम उत्पाद अने उद्वर्तना संबंधे बे दंडको यावत्—'वैमानिको सांतर पण च्यवे छे, अने निरन्तर पण च्यवे छे'—त्यां सुधी कहेवा.

२. [प्र०] कहिबं मंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररज्जो चमरचंचा नामं आवासे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! जंबूद्वीपे द्वीपे मंरस्स पच्चयस्स दाहिणेणं तिरियमसंकेजे द्वीपसमुद्रे—एवं जहा वितियसए समाउहेसए वत्तज्जया सच्चेव अपरिसेसस वैयज्जा, नवरं इमं नाणसं—जाव—तिगिच्छकूटस्स उप्पायपच्चयस्स चमरचंचाय रायहाणीय चमरचंचस्स आवासपच्चयस्स अग्नेसि च बहूषं सेसं तं चेव जाव—तेरस य अंगुळाहं अंगुळं च किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं । तीसे णं चमरचंचाय रायहाणीय दाहिणपच्चयमेणं छज्जोडिसए पणपच्चं च कोडीओ पयतीसं च सयसहस्साहं पच्चासं च सहस्साहं अरुणोदगसमुहं तिरिबं बीरचइत्ता एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररज्जो चमरचंचे नामं आवासे पण्णसे, चउरासीहं जोयणसहस्साहं आ-यामविक्खंजेणं, दो जोयणसयसहस्सा पच्चट्ठिं च सहस्साहं छच्च बचीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेणं । से णं एगेणं पागारेणं सच्चओ संमता संपरिक्खसे । से णं पागारे दिवहं जोयणसयं उहं उच्चसेणं, एवं चमरचंचाय रायहाणीय वत्तज्जया माणियहा सभाविहणा, जाव—चत्तारि पासायपंतीओ ।

३. [प्र०] चमरे णं मंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ? [उ०] नो तिण्ण्डे समट्ठे । [प्र०] से केणं जाह अट्ठेणं मंते ! एवं बुच्चइ—‘चमरचंचे आवासे० ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए—इहं मणुस्सलोगंसि उवगा-रियलेणाह वा, उज्जाणियलेणाह वा, गिज्जाणियलेणाह वा, वारिधारियलेणाह वा, तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति, सयंति—जहा रायप्यसेणइजे जाव—कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुम्भवमाणा विहरंति, अत्तथ पुण वसहिं उवेति, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररज्जो चमरचंचे आवासे केवलं किइा—रतिपत्तियं, अत्तथ पुण वसहिं उवेति, से तेण्ण्डेण जाव—आवासे । ‘सेवं मंते ! सेवं मंते !’ ति जाव—विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे अत्तया कयाह रायगिहाओ नगरओ गुणसिल्लओ जाव—विहरइ ।

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना इन्द्र अने असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंचा नामे आवास कयां कसो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमा मेरु पर्वतनी दक्षिणे तिर्यग् असंख्याता द्वीपसमुद्रो उल्लंघीने [अरुणवर द्वीपनी बाह्य वेदिकाना अन्तथी अरु-णवर समुद्रमा बेंतालीश लाख योजन गया बाद चमरेन्द्रनो तिगिच्छककूटनामे *उत्पातपर्वत आवे छे, तेनी दक्षिण दिशाए ६५५ कोड, ३५ लाख अने पचास हजार योजन अरुणोदक समुद्रमा तीर्छा गया बाद नीचे रत्नप्रभा पृथिवीनी अंदर चालीश हजार योजन जइए एटले चमरेन्द्रनी चमरचंचा नामे राजधानी आवे छे—इत्यादि] बीजा शतकनां आठमा सभा उदेशकमां—जे वक्तव्यता कही छे ते समग्र अहिं कहेवी, परंतु तेमां आ विशेष छे के तिगिच्छककूट नामे उत्पात पर्वत, चमरचंचानामे राजधानी, चमरचंच नामे आवासपर्वत, अने बीजा घणाना—इत्यादि बहुं ते प्रमाणे कहेवुं, यावत्—त्रण लाख, सोळ हजार, बसो सत्यावीश योजन [त्रण गाउ, बसो अठ्यावीश धनुष अने कंइक विशेषाधिक] साडा तेर अंगुल—एटली चमरचंचानी परिधि छे. ते चमरचंचा राजधानीथी दक्षिण—पश्चिम दिशाए (नैऋत्य कोणने विषे, छसो पंचावन क्रोड, पांतीश लाख, अने पचास हजार योजन अरुणोदक समुद्रमां तिच्छी गया बाद अहिं असुरकुमारना इन्द्र अने असुर-कुमारना राजा चमरनो चमरचंच नामे आवास कसो छे. ते लंबाह अने पडोव्यइमां चोराशी हजार योजन छे. तेनी परिधि बे लाख, पांसठ हजार अने छसो कत्रीश योजनथी कंइक विशेषाधिक छे. ते आवास एक प्राकारथी (किल्लाथी) चोतरफ बिटाएलो छे. ते प्राकार उंचो—उंचाइमां दोढसो योजन छे. ए प्रमाणे चमरचंचा राजधानीनी बधी वक्तव्यता यावत्—“चार प्रासाद पंकितओ छे”—स्यां सुधी कहेवी, परन्तु [१ सुधर्मासभा, २ उपपातसभा, ३ अभिषेकसभा, ४ अलंकारसभा अने ५ व्यवसायसभा—] ए पांच सभा न कहेवी.

असुरकुमारना च
मरनो चमरचंच
नामे आवास
छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमर चमरचंच नामे आवासमां रहे छे ? [उ०] ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कसो छे के, चमरचंच नामे आवासमां—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेमके आ मनुष्यलोकमां उपकारक—पीठबद्ध धरो, उथानमां रहेला लोकने उपकारक (नगरप्रवेश गृहो) धरो, नगरनिर्गम—नगरथी बहार नीकळतां प्राप्त यतां धरो अने वारिधार-युक्त (कुमारायुक्त) धरो होय, त्यां घणा पुरुषो अने स्त्रीओ बेसे, सुचे—इत्यादि राजप्रश्रीय सूत्रमां कइया प्रमाणे यावत्—‘कल्याणरूप फळ अने वृत्तिविशेषने अनुभवतां रहे छे’ त्यां सुधी कहेवुं, पण त्यां रहेठाण करता नथी, अर्थात् पोतानो निवास तो बीजे स्थळे करे छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंच नामे आवास केवल क्रीडा अने रति निमित्ते छे, अने बीजे स्थळे ते पोतानो वास करे छे; ते हेतुथी एम कसुं छे के चमरचंच आवासने विषे ते पोतानो वास करतो नथी.’ हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे—‘एम कही यावत् विहरे छे. स्यारबाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोइ दिवसे राजगृह नगरथकी अने गुणसिल्लक चैत्यथकी यावत्—विहार करे छे.

चमरेन्द्र चमरचंच
नामे आवास
छे.

२ * चमरेन्द्रने तिर्यग्लोकमां अहुं होय स्यारे आ पर्वत उपर आधी उत्पत्तन करे छे माटे ते पर्वतने उत्पातपर्वत कहेवामां आवे छे.—टीका.

† सुधो भग० खं० १ शो० १ उ० ८ पृ० २९७.

‡ राजप्र० प० ७६ पृ० ३२.

૪. તેણં કાલેણં તેણં સમયણં ચંપા નામં નયરી હત્યા, વજ્રમો । પુષ્પમદે ચેરપ, વજ્રમો । તપ ણં સમણે મગ્ધં મહા-
વીરે અજ્યા કદાહ પુષ્પાણુપુષ્પિ ચરમાણે જાવ-વિહરમાણે જેણેવ ચંપા નગરી જેણેવ પુષ્પમદે ચેરિય તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તે ૦ ૨-
-ચ્છિત્તા જાવ-વિહરહ । તેણં કાલેણં તેણં સમયણં સિંધુસોવીરેસુ જણવણ્ણુ વીતીમય નામં નગરે હત્યા, વજ્રમો । તસ્સ ણં
વીતીમયસ્સ નગરસ્સ બહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમે દિસીમાય પત્થ ણં મિયવણે નામં ઉજ્જાણે હત્યા, સહોડય ૦ વજ્રમો । તત્થ ણં
વીતીમય નગરે ઉવાયણે નામં રાયા હત્યા, મહ્યા ૦ વજ્રમો । તસ્સ ણં ઉવાયણસ્સ રજો પમાવતી નામં દેવી હત્યા, સુકુ-
માલ ૦ વજ્રમો । તસ્સ ણં ઉવાયણસ્સ રજો પુત્તે પમાવતી દેવીય અત્તપ અમીતિનામં કુમારે હત્યા, સુકુમાલ ૦ જહા સિવ-
મદે, જાવ-‘પશ્ચુએક્ષમાણે વિહરતિ’ । તસ્સ ણં ઉવાયણસ્સ રજો નિયય માર્ગિજ્ઞે કેસીનામં કુમારે હત્યા, સુકુમાલ ૦ જાવ-
સુરુથે । સે ણં ઉવાયણે રાયા સિંધુસોવીરપ્પામોક્ષાણં સોલસણ્ણં જણવયાણં, વીતીમયપ્પામોક્ષાણં તિણ્ણં તેસદ્દીપં નગરા-
ગરસયાણં, મહસેણપ્પામોક્ષાણં દસણ્ણં રાર્ણં વદ્દમહાણં વિદિચ્છત્ત-ચામર-વાલવીયણાણં, મજ્જેસિ ચ વહ્ણં રાર્ણ-સર-
તલવર ૦ જાવ-સત્થવાહપ્પમિર્ણં આહેવચ્ચં પોરેવચ્ચં જાવ-કારેમાણે, પાલેમાણે સમણોવાસપ અમિગયજીવાજીવે જાવ-વિહરહ ।

૫. તપ ણં સે ઉવાયણે રાયા અજ્યા કયાહ જેણેવ પોસહસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, જહા સંજે જાવ-વિહરહ । તપ ણં
તસ્સ ઉવાયણસ્સ રજો પુષ્પરત્તાવરત્તકાલસમયંસિ ધમ્મજાગરિયં જાગરમાણસ્સ અયમેયારુથે અમ્મત્થિય જાવ-સમુપ્પજિત્થા-
‘‘ધમ્મા ણં તે ગામા-ગર-નગર-લેહ-કવ્વહ-મંડબ-દ્રોણમુહ-પટ્ટના-સમ-સંબાહસખિવેસા, જરથ ણં સમણે મગ્ધં મહાવીરે
વિહરહ, ઘ્ખા ણં તે રાર્ણસર-તલવર ૦ જાવ-સત્થવાહપ્પમિર્ણો, જે ણં સમણં મગ્ધં મહાવીરં વંદંતિ નમંસંતિ, જાવ-પજ્જુવાસંતિ ।
જહ ણં સમણે મગ્ધં મહાવીરે પુષ્પાણુપુષ્પિ ચરમાણે ગામાણુગામં જાવ-વિહરમાણે રહમાગચ્છેજ્ઞા, રહ સમોસરેજ્ઞા, રહેવ વીતી-
મયસ્સ નગરસ્સ બહિયા મિયવણે ઉજ્જાણે અહાપરિક્કવં ડગ્ગહં ડગ્ગિણ્ણિહ્તા સંજમેણં તવસા જાવ-વિહરેજ્ઞા, તો ણં અહં સમણં
મગ્ધં મહાવીરં વંદેજ્ઞા, નમંસેજ્ઞા, જાવ-પજ્જુવાસેજ્ઞા । તપ ણં સમણે મગ્ધં મહાવીરે ઉવાયણસ્સ રજો અયમેયારુથં અમ્મત્થિયં
જાવ-સમુપ્પજં વિયાણિત્તા ચંપાઓ નગરીઓ પુષ્પમદાઓ ચેરયાઓ પઠિનિક્કમતિ, પઠિનિક્કમિત્તા પુષ્પાણુપુષ્પિ ચરમાણે ગામાણુ ૦
જાવ-વિહરમાણે જેણેવ સિંધુસોવીરે જણવણ જેણેવ વીતીમયે નગરે, જેણેવ મિયવણે ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તે ૦ ૨-ચ્છિત્તા

ચંપાનગરી.

પૂર્ણમદ્ર ચૈલ.

સિંધુસોવીરદેશ.
વીતમય.

ઉવાયણ રાજા.
પમાવતી દેવી.

૪. તે કાલે તે સમયે ચંપા નામની નગરી હતી. વર્ણન. પૂર્ણમદ્ર ચૈલ હતું. વર્ણન. સ્યારવાદ શ્રમણ ભગવંત મહાવીર અન્ય કોઈ દિવસે
અનુક્રમે ગમન કરતા, યાવત્-વિહાર કરતા જ્યાં ચંપા નગરી છે, અને જ્યાં પૂર્ણમદ્ર ચૈલ છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને યાવત્-વિહારે છે.
તે કાલે તે સમયે સિંધુસોવીર દેશને વિષે વીતમય નામે નગર હતું. તે વીતમય નગરની બહાર ઉત્તરપૂર્વ દિશાએ (ઈશાન કોણને વિષે)
મૃગવન નામનું ઉદ્યાન હતું. તે સર્વ ઋતુના પુષ્પાદિકથી સમૃદ્ધ હતું-ઇત્યાદિ વર્ણન જાણવું. તે વીતમય નગરને વિષે ઉદાયન નામે રાજા
હતો, તે મહાહિમવાનું જેવો-ઇત્યાદિ વર્ણન જાણવું. તે ઉદાયન રાજાને પ્રમાવતી નામની દેવી (રાણી) હતી, તે સુકુમાલહાયપગવાઠી-
ઇત્યાદિ વર્ણન જાણવું. તે ઉદાયન રાજાને પ્રમાવતી દેવીથી થયેલો અમીચિ નામે કુમાર હતો. તે સુકુમાલ-ઇત્યાદિ વર્ણન *શિવમદ્રની
પેટે જાણવું, યાવત્-તે રાજ્યની ચિંતા કરતો વિહારે છે. તે ઉદાયન રાજાને પોતાનો ભાણેજ કેશી નામે કુમાર હતો, તે સુકુમાલહાયપગવાઠો
અને યાવત્-સુરુપ હતો. તે ઉદાયન રાજા સિંધુસોવીર પ્રમુખ સોલ દેશ, વીતમયપ્રમુખ ત્રણસોને ત્રેસઠ નગર અને આકરનું (સુવર્ણાદિ
ખાણોનું) તથા જેને છત્ર ચામર અને વાલવ્યજન-(વિંજણો) આપેલા છે એવા મહાસેન પ્રમુખ દશ મુકુટવદ્ધ રાજાઓ, અને એવા બીજા ઘણા
રાજા, યુવરાજ, તલવર (કોટવાલ) યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુખનું અધિપતિપણું કરતો, રાજ્યનું પાલન કરતો, જીવાજીવ તત્ત્વને જાણતો,
શ્રમણોનો ઉપાસક થઈને યાવત્-વિહારે છે.

૫. સ્યારવાદ તે ઉદાયન રાજા અન્ય કોઈ દિવસે જ્યાં પોષધશાલા છે ત્યાં આવે છે, અને શંખ શ્રમણોપાસકની પેટે યાવત્-
વિહારે છે. સ્યારવાદ તે ઉદાયન રાજાને મધ્યરાત્રીને સમયે ધર્મજાગરણ કરતા આવા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્-ઉત્પન્ન થયો-‘‘તે ગામ,
આકર, નગર, લેહ, કર્વટ, મંડબ, દ્રોણમુખ, પટ્ટન, આશ્રમ, સંબાધ અને સન્નિવેશ ધન્ય છે, જ્યાં શ્રમણ ભગવંત મહાવીર વિચરે છે, તે
રાજા, શેઠ, તલવર યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુખ ધન્ય છે, જેઓ શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વંદન-નમસ્કાર કરે છે અને યાવત્-પર્યુપાસના
કરે છે. જો શ્રમણ ભગવંત મહાવીર અનુક્રમે વિચરતા એક ગામથી બીજે ગામ જતા, યાવત્-વિહાર કરતા અહિં આવે, અહિં સમોસરે,
અને આ વીતમય નગરની બહાર મૃગવન નામે ઉદ્યાનમાં યથાયોગ્ય અવપ્રહને પ્રહણ કરી સંયમ અને તપવડે આત્માને ભાવિત કરતા
યાવત્-વિચરે તો હું શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વંદન કરું, અને નમસ્કાર કરું, યાવત્-તેમની પર્યુપાસના કરું. સ્યારવાદ શ્રમણ ભગવંત
મહાવીર ઉદાયન રાજાના આવા પ્રકારના ઉત્પન્ન થયેલા આ સંકલ્પને જાણીને ચંપા નગરીથી અને પૂર્ણમદ્ર ચૈલ થકી નીકળે છે, નીકળીને

જાવ-વિહરતિ । તપ ણં વીતીમયે નગરે સિંઘાહગં જાવ-પરિસા પજ્જુવાસર । તપ ણં સે ઉદાયને રાયા હમીસે કહાપ લલ્લહે સમાણે હટ્ટુતુટ્ટું કોડુંચિયપુરિસે સહાવેતિ, કોં ૨-સા એવં વયાસી-“લિપ્પામેવ મો વેષાણુપ્પિયા ! વીતીમયં નગરં સમ્મિ-સરવાહિરિયં અહા કૂળિઓ ઉવવાહપ જાવ-‘પજ્જુવાસતિ’ । પમાવતીપામોક્લાઓ વેધીઓ તહેવ જાવ-પજ્જુવાસંતિ । ધમ્મકહા । તપ ણં સે ઉદાયને રાયા સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં ધમ્મં સોષા નિસમ્મ હટ્ટ-તુટ્ટે ઉટ્ટાપ ઉટ્ટેર, ઉટ્ટાં ૨-સા સમણં મગવં મહાવીરં તિપ્પુત્તો જાવ-નમંસિસા એવં વયાસી-‘એવમેયં મંતે ! તહમેયં મંતે ! જાવ-સે જહેયં તુજ્જે વદ્દહ’સિ કહુ અં નવરં વેષાણુપ્પિયા ! અમીચિકુમારં રજ્જે ઠાવેમિ, તપ ણં અહં વેષાણુપ્પિયાણં અંતિય મુંઢે મવિસા જાવ-પલ્લયામિ । ‘અહાસુહં વેષાણુપ્પિયા ! મા પલ્લિબંધં’ । તપ ણં સે ઉદાયને રાયા સમણેણં મગવયા મહાવીરેણં એવં વુસે સમાણે હટ્ટ-તુટ્ટે સમણં મગવં મહાવીરં વંદતિ નમંસતિ, વંદિસા નમંસિસા તમેવ આમિસેકં હર્થિય દુરુહતિ, દુરુહિસા સમણસ્સ મગવઓ મહા-વીરસ્સ અંતિયાઓ મિયવળાઓ ઉજ્જાણાઓ પલ્લિનિક્કમતિ, પલ્લિનિક્કમિસા જેણેવ વીતીમયે નગરે તેણેવ પહારેતથ ગમણાપ ।

૬. તપ ણં તસ્સ ઉદાયણસ્સ રજ્જો અયમેયાકુવે અમ્મત્થિપ જાવ-સમુપ્પજ્જિત્થા-“એવં સલ્લુ અમીચીકુમારે મમં પ્પો વુસે હટ્ટે કંતે, જાવ-કિમંગ પુણ પાસળયાપ ? તં જદી ણં અહં અમીચીકુમારં રજ્જે ઠાવેસા સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિયં મુંઢે મવિસા જાવ-પલ્લયામિ, તો ણં અમીચીકુમારે રજ્જે ય રટ્ટે ય જાવ-જળવપ ય માણુસ્સપ્પસુ ય કામમોગેસુ મુલ્લિપ, ગિલ્લે, ગલ્લિપ, અજ્જોવવલ્લે, અળાવીયં, અળવદગ્ગં વીહમકં આરંતસંસારકંતારં અણુપરિયટ્ઠિસ્સર, તં નો સલ્લુ મે સેયં અમીચી-કુમારં રજ્જે ઠાવેસા સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ જાવ-પલ્લયાપ, સેયં સલ્લુ મે ણિયગં માર્ણેજ્જં કેસિં કુમારં રજ્જે ઠાવેસા સમણસ્સ મગવઓ જાવ-પલ્લયાપ’-એવં સંપેહેર, એવં સંપેહેસા જેણેવ વીતીમયે નગરે તેણેવ ઉવાગચ્છર, તેં ૨-ગલ્લિસા વીતી-મયં નગરં મજ્જમજ્જેણં જેણેવ સપ ગેહે જેણેવ વાહિરિયા ઉવટ્ટાણસાલા, તેણેવ ઉવાગચ્છર, તેં ૨-લ્લિસા આમિસેકં હર્થિય ઠવેતિ, આમિં ૨-વેસા આમિસેકાઓ હત્થીઓ પલ્લોરુમર, આં ૨-મિસા જેણેવ સીહાસણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, તેં ૨-લ્લિસા

અનુક્રમે ગમન કરતા, એક ગામથી વીજે ગામ યાવત્-વિહરતા, જ્યાં સિંધુસૌવીર દેશ છે, જ્યાં વીતમય નગર છે, અને જ્યાં મૃગવન નામે ઉદ્યાન છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને યાવત્-વિહરે છે. તે સમયે વીતમય નગરમાં શૃંગાટક-શીંગોડાના જેવા ત્રિકોણ (આકારવાળા)-હલ્યાદિ માર્ગોમાં [ઘણા માણસો પરસ્પર કહે છે કે ‘અહિં મૃગવન ઉદ્યાનમાં મગવાન્ મહાવીર પધાર્યા છે’ એમ સાંભળીને ઘણા ક્ષત્રિયો વગેરે વંદન કરવા નીકળે છે હલ્યાદિ] યાવત્-પરિષદ્ પર્યુપાસના કરે છે. ત્યાર પછી મગવાન્ મહાવીર આવ્યાની આ વાતથી વિદિત થયેલા તે ઉદાયન રાજાએ હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થઈ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું કે-“હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શીઘ્ર વીતમય નગરને અંદર અને બહાર સાફ કરાવો”-હલ્યાદિ બધું *ઔપપાતિક સૂત્રમાં કૃષ્ણિક સંબંધે કહ્યું છે તેમ અહિં પણ કહેવું. યાવત્-તે પર્યુપાસના કરે છે. તથા પ્રભાવતી પ્રમુખ દેવીઓ પણ તેજ પ્રમાણે યાવત્-પર્યુપાસના કરે છે. ત્યારબાદ [મગવંતે] ધર્મ કયા કહી. પછી તે ઉદાયન રાજા શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસે ધર્મને સાંભળી, અવધારી હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થઈ ઊઠી ઊભો ધાય છે, ઊભો થઈને શ્રમણ મગવંત મહાવીરને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરી યાવત્-નમસ્કાર કરીને આ પ્રમાણે બોલ્યો-‘હિ મગવન્ ! એ પ્રમાણે જ છે, હે મગવન્ ! તે તે પ્રકારે છે’-યાવત્-જે પ્રકારે આ તમે કહો છો, પરંતુ એટલો વિશેષ છે કે, હે દેવાનુપ્રિય ! અમીચિકુમારને રાજ્યને વિષે સ્થાપન કરું, અને ત્યારબાદ હું દેવાનુ-પ્રિય એવા આપની પાસે મુંઢ થઈને યાવત્-પ્રવ્રજ્યાનો સ્વીકાર કરું. [મગવંતે કહ્યું કે] ‘હે દેવાનુપ્રિય ! જેમ સુખ ધાય તેમ કરો, પ્રતિ-બંધ ન કરો.’ ત્યાર બાદ શ્રમણ મગવંત મહાવીરે ઉદાયન રાજાને એ પ્રમાણે કહ્યું એટલે તે હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થઈ શ્રમણ મગવંત મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કરે છે, વંદન અને નમસ્કાર કરીને તે અભિષેકને યોગ્ય (પદ) હસ્તી ઉપર ચઢી શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસેથી અને મૃગવન નામના ઉદ્યાનથી નીકળીને જ્યાં વીતમય નામે નગર છે તે તરફ જવાનો તેણે વિચાર કર્યો.

૬. ત્યાર પછી તે ઉદાયન રાજાને આવા પ્રકારનો આ સંવલ્પ યાવત્-ઉત્પન્ન થયો કે ‘એ પ્રમાણે યાવત્-અમીચિકુમાર મારે એક પુત્ર છે અને તે મને ઇષ્ટ અને પ્રિય છે, યાવત્-તેનું નામ શ્રવણ પણ દુર્લભ છે, તો પછી તેનું દર્શન દુર્લભ હોય તેમાં શું કહેવું ? તે માટે જો હું અમીચિકુમારને રાજ્યને વિષે સ્થાપીને શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસે મુંઢ થઈ યાવત્-પ્રવ્રજ્યા પ્રહણ કરું, તો અમીચિકુમાર રાજ્ય, રાહ, યાવત્-જનપદમાં અને મનુષ્યસંબંધી કામમોગોમાં મૂર્છિત, ગૂઢ, પ્રયિત અને તહીન થઈ અનાદિ અનંત અને દીર્ઘમાર્ગવાળા ચારગતિ-રૂપ સંસાર અટવીને વિષે પરિશ્રમણ કરશે, તે માટે અમીચિકુમારને રાજ્યને વિષે સ્થાપન કરી શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસે યાવત્-પ્રવ્રજ્યા લેવી એ શ્રેયરૂપ નથી, પરંતુ મારે મારા ભાણેજ કેશીકુમારને રાજ્યને વિષે સ્થાપન કરીને શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસે પ્રવ્રજ્યા લેવી શ્રેયરૂપ છે’-એ પ્રમાણે વિચાર કરે છે. એમ વિચારીને જ્યાં વીતમય નગર છે, ત્યાં આવી વીતમય નગરની વચ્ચે જ્યાં પોતાનું ઘર છે, અને જ્યાં વાહરની ઉપસ્થાનશાલા છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને અભિષેકને યોગ્ય-પદ હસ્તીને ઊભો રાખીને તેના ઉપરથી નીચે ઉતરે છે, નીચે ઉતરીને જ્યાં સિંહાસન છે, ત્યાં આવી ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર પૂર્વ દિશાસન્મુખ બેસે છે, બેસીને કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવી તેણે એ પ્રમાણે

પોતાના ભાણેજ કેશીકુમારને રાજ્ય-અભિષેક કરવાનો ઉદ્દેશ્ય વચનો સંકલ્પ.

સીંહાસનવરંસિ પુરત્યામિમુદ્દે નિસીયતિ, નિસીયા કોડુંબિયપુરિસે સદાથેતિ, કો. ૨-વેસા એવં વયાસી—‘શિષ્યામેવ મો દેવા-
ણુપિયા ! કીતીમયં નગરં સમ્મિતરવાહિરિયં’ જાવ—પશ્ચાપ્પિણંતિ । તપ ણં સે ઉદાયણે રાયા દોષં પિ કોડુંબિયપુરિસે સદા-
થેતિ, સદાથેસા એવં વયાસી—‘શિષ્યામેવ મો દેવાણુપિયા ! કેસિસ્સ કુમારસ્સ મહત્થં ૩-એવં રાયામિસેમો જહા સિવમહસ્સ
કુમારસ્સ તદ્દેવ માણિયલ્લો જાવ—‘પરમાડં પાલયાહિ, ઇદ્દુજનસંપરિવુદ્દે સિંધુસૌવીરપામોક્ષાણં સોલસણ્ઠં અજવયાણં કીતીમ-
થપામોક્ષાણં તિષ્ઠિ તેસટ્ટીણં નગરા-ગરસયાણં મહસેણપામોક્ષાણં દસણ્ઠં રારિણં અજોસિ ચ વહુણં રારિસર. જાવ—કારે-
માણે, પાલેમાણે વિહરાહિ’ સિ કદ્દુ જયજયસદ્દં પડંજંતિ । તપ ણં સે કેસી કુમારે રાયા આપ, મહયા. જાવ—વિહરતિ ।

૭. તપ ણં સે ઉદાયણે રાયા કેસિં રાયાણં આપુચ્છહ । તપ ણં સે કેસી રાયા કોડુંબિયપુરિસે સદાથેતિ—એવં જહા અમા-
લિસ્સ તદ્દેવ સમ્મિતરવાહિરિયં તદ્દેવ જાવ—નિષ્કમણામિસેયં ઉવટ્ટથેતિ । તપ ણં સે કેસી રાયા અણેગગણનાયગ. જાવ—સંપ-
રિવુદ્દે ઉદાયણં રાયં સીંહાસનવરંસિ પુરત્યામિમુદ્દે નિસીયાથેતિ, નિસીયાથેસા અટ્ટસપણં સોલભિયાણં. એવં જહા અમાલિસ્સ
જાવ—એવં વયાસી—‘મણ સામી ! કિં વેમો, કિં પયચ્છામો, કિણા વા તે અટ્ટો’ ? તપ ણં સે ઉદાયણે રાયા કેસિં રાયં એવં
વયાસી—‘ઇચ્છામિ ણં દેવાણુપિયા ! કુસિયાવણામો.’—એવં જહા અમાલિસ્સ, નવરં પડમાવતી અગ્ગકેસે પડિચ્છહ પિયવિ-
પ્પયોગવૂસહા । તપ ણં સે કેસી રાયા દોષં પિ ઉત્તરાવક્રમણં સીંહાસનં રયાથેતિ, કો. ૨ રયાથેસા, ઉદાયણં રાયં સેયાપીતપીહિ
કલસેહિ. સેસં જહા અમાલિસ્સ, જાવ—સમિસથે, તદ્દેવ અમ્મધાતી, નવરં પડમાવતી હંસલક્ષણં પડસાડગં ગઘાય સેસં તં
થેવ, જાવ—સીયામો પશ્ચોરુમતિ, સી. ૨-મિસા, એણેવ સમણે મગવં મહાવીરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તે. ૨-ચ્છિસા સમણં મગવં
મહાવીરં તિષ્ઠુત્તો વંદંતિ નમંસંતિ, વંદિસા નમંસિસા ઉત્તરપુરચ્છિમં વિસીમાગં અવક્રમતિ, ઉ. ૨-અવક્રમિસા સયમેવ
આમરણમહાલંકારં તં થેવ પડમાવતી પડિચ્છતિ, જાવ—‘વચ્ચિયં સામી ! જાવ—નો પમાદેયં’ તિ કદ્દુ કેસી રાયા પડમાવતી
ચ સમણં મગવં મહાવીરં વંદંતિ નમંસંતિ, વંદિસા, નમંસિસા જાવ—પચ્ચિયા । તપ ણં સે ઉદાયણે રાયા સયમેવ પંચમુદ્ધિયં
લોયં. સેસં જહા ઉત્તમદત્તસ્સ, જાવ—સવ્વતુક્કપ્પહીણે ।

કહું—‘હિ દેવાનુપ્રિયો ! શીઘ્ર કીતમય નગરને બહાર અને અંદરથી સાફ કરાવો’—ઈત્યાદિ યાવત્—તેઓ તેમ કરીને આજ્ઞા પાછી આપે છે.
સારપછી તે ઉદાયન રાજાએ બીજીવાર કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહું—‘હિ દેવાનુપ્રિયો ! શીઘ્ર કેશીકુમારનો મહાઅર્થવાલો
૩ વિપુલ રાજ્યાભિષેક કરો’. એ પ્રમાણે જેમ *શિવભદ્રકુમારનો રાજ્યાભિષેક વાલો છે તેમ અહિં ‘દીર્ઘાયુષી યાઓ’—ત્યાં સુધી કહેવો.
હવે તે યાવત્—ઇષ્ટજનથી પરિવૃત્ત થઈ સિંધુસૌવીર પ્રમુખ સોલ દેશો, કીતમય પ્રમુખ ત્રણસો ત્રેસઠ નગરો અને જાણોનું તથા મહાસેન પ્રમુખ
દશ રાજાઓ, અન્ય કીજા ઘણા રાજા અને યુવરાજ વગેરેનું સ્વામિપણું યાવત્—કરતો, પાલન કરતો વિહર’ એમ કહી ‘જય જય’ શબ્દ બોલે
છે. ત્યારે તે કેશીકુમાર રાજા થયો અને તે મોટા હિમવાનું પર્વતના જેવો—ઈત્યાદિ વર્ણન જાણવું, યાવત્—તે વિહરે છે.

૭. ત્યારબાદ ઉદાયન રાજા કેશી રાજા પાસે [દીક્ષા લેવાની] રજા માગે છે, સાર પછી તે કેશીરાજા કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવે છે—
ઈત્યાદિ જેમ અમાલિ સંબંધે કહું છે તેમ નગરની બહાર અને અંદર સાફ કરાવો—ઈત્યાદિ યાવત્—નિષ્કમણામિષેક—દીક્ષામિષેક કરે છે. સારપછી
અનેક ગણનાયક વગેરેના પરિવાર યુક્ત તે કેશી રાજા ઉદાયન રાજાને ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર પૂર્વદિશા સન્મુખ બેસાડીને એકસો આઠ
સોનાના કલશો વડે અભિષેક કરે છે—ઈત્યાદિ જેમ અમાલિ સંબંધે કહું છે તેમ કહેવું, યાવત્—તે કેશી રાજાએ એ પ્રમાણે કહું કે—‘હિ
સ્વામિન્ ! અમે શું દરૂપ, અમે શું આપીએ, અને તમારે શેનું પ્રયોજન છે ? પછી તે ઉદાયન રાજાએ કેશી રાજાને એ પ્રમાણે કહું—‘હિ દેવાનુ-
પ્રિય ! કુત્રિકાપણથી [હું એક રજોહરણ અને એક પાત્ર] મંગાવવા ઇચ્છું છું.—ઈત્યાદિ જેમ અમાલિ સંબંધે કહું તેમ અહિં જાણવું. પરન્તુ
એટલો વિશેષ છે કે જેને પ્રિયનો વિયોગ દુઃસહ છે એવી પદ્માવતી અપ્રકેશોને પ્રહણ કરે છે. સાર બાદ કેશી રાજા બીજીવાર પણ ઉત્તર
દિશા તરફ સિંહાસન ગોઠવાવીને ઉદાયન રાજાનો શ્વેત અને પીત (સોના—રૂપાના) કલશો વડે અભિષેક કરે છે. બાકી બધું અમાલિની
પેઠે જાણવું, યાવત્—તે શિવિકામાં બેઠો. તે પ્રમાણે ધાવમાતા સંબંધે જાણવું, પરંતુ એટલો વિશેષ છે કે અહિં પદ્માવતી હંસના ચિહ્નવાળા
રેશમી પટને પ્રહણ કરી—ઈત્યાદિ બાકી બધું તે પ્રમાણે જાણવું, યાવત્—તે ઉદાયન રાજા શિવિકા થકી ઉતરીને જ્યાં શ્રમણ ભગવંત મહા-
વીર છે, ત્યાં આવીને શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને ત્રણવાર વંદન અને નમસ્કાર કરી ઉત્તર—પૂર્વ દિશા—ઈશાન કોણ તરફ જઈને પોતે જ
આમરણ, માલા અને અલંકારને મૂકે છે—ઈત્યાદિ પૂર્વ પ્રમાણે કહેવું, યાવત્—પદ્માવતી તેને પ્રહણ કરે છે, અને યાવત્—[તે બોલી કે—]
‘હિ સ્વામિન્ ! સંયમને વિષે પ્રયત્ન કરજો, યાવત્—પ્રમાદ ન કરશો’—એમ કહી કેશી રાજા અને પદ્માવતી શ્રમણ ભગવંત મહાવીરને વંદન અને
નમસ્કાર કરે છે. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ પોતાને સ્થાનકે ગયા પછી ઉદાયન રાજા પોતાની મેલે પંચ મુદ્ધિક લોચ કરે છે—બાકીનું
વૃત્તાંત શ્રમણભદ્રકુમારની પેઠે જાણવું, યાવત્—તે સર્વ દુઃખથી રહિત થાય છે.

૬ * જુઓ શિવભદ્રકુમારના રાજ્યાભિષેક સંબંધે મગ. ૩ શ. ૧૧ ડ. ૧ પૃ. ૨૨૨.

૭ † જુઓ—મગ. ૩ શ. ૧ ડ. ૩૩ પૃ. ૧૦૩.

‡ જુઓ—મગ. ૩ શ. ૧ ડ. ૩૩ પૃ. ૧૦૩.

§ જુઓ—મગ. ૩ શ. ૧ ડ. ૩૩ પૃ. ૧૦૩.

८. तप्यं तस्स अमीयिस्स कुमारस्स अन्नदा कयाइ पुत्तरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स अय-
मेवाकथे अभ्भत्थियं जाव-समुप्पज्जित्था-‘एवं खलु अहं उदायणस्स पुत्ते पमावतीए देवीए अत्तए, तप्यं णं से उदायणं राया
अमं अब्हाय नियगं भाणिज्जं केसिकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ जाव-पच्चइए’-इमेणं पयारूवेणं महया अप्पत्तिएणं
अणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिमूए समाणे अंतोउरपरियालसंपरिदुडे समंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छति,
निग्गच्छित्ता पुत्ताणुपुत्तिं चरमाणे गामाणुगामं वूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, ते० २-
च्छित्ता कूणियं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था । तप्यं णं से अमी-
वीकुमारे समणोवासए यावि होत्था, अभिगय० जाव-विहरइ, उदायणंमि रायरिसिमि समणुबद्धवेरे यावि होत्था । तंणं
कालेणं तेणं समयणं इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु ओसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पच्चत्ता । तप्यं णं से
अमीवीकुमारे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाउणति, पाउणित्ता अज्जमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए
छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु
ओयट्ठीए आयावा० जाव-सहस्सेसु अन्नयरंसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आतावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववओ । तत्थ णं
अत्थेगइयाणं आयावगाणं असुरकुमाराणं देवाणं एणं पलिओवमं ठिईं पच्चत्ता, तत्थ णं अमीयिस्स वि देवस्स एणं पलिओवमं
ठिईं पणत्ता । [प्र०] से णं अंते ! अमीवीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं उच्चट्ठित्ता कहिं गच्छिहिति, कहिं
उववज्जिहिति ! [उ०] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिहिति, जाव-अंतं काहिति । ‘सेवं अंते ! सेवं अंते’ ! सि ।

तेरसमसए छट्ठो उदेसो समसो ।

८. त्वार पछी अम्य कोई दिवसे अमीचिकुमारने मथ्यरात्रिने समये कुटुंबजागरण करता आवा प्रकारनो आ विचार उत्पन्न थयो-
‘ए प्रमाणे खरेखर हूं उदायन राजानो पुत्र अने प्रभादेवीनी कुक्षिणी उत्पन्न थयो हूं, अने ते उदायन राजाए मने छोडी पोताना भाणेज
केसिकुमारने राज्य उपर बेसाडी भ्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत्-प्रमज्या लीधी’-आवा प्रकारना आ मोटा अप्रीतिरूप मानसिक
आंतर दुःखथी पीडित थएलो ते अमीचिकुमार पोताना अंतःपुरना परिवारसहित पोतानुं भांडमात्रोपकरण-पात्र वगैरे सामग्री लईने नीकळे
छे, नीकळी अनुक्रमे जतां-एक गामथी बीजे गाम जतां ज्यां चंपा नगरी छे, अने ज्यां कूणिक राजा छे त्यां आवी कूणिकनो आश्रय करी
विहरे छे. अने त्यां पण तेने त्रिपुल भोगनी सामग्री प्राप्त यई. पछी ते अमीचिकुमार श्रावक पण थयो, अने जीवाजीवतत्त्वनो ज्ञाता थइ
यावत्-विहरे छे, तो पण ते अमीचिकुमार उदायन राजर्षिने विषे वैरना अनुबन्धथी युक्त हतो. ते काले, ते समये आ रत्नप्रभा पृथिवीना
नरकावासोनी पासे चोसठ लाख असुरकुमारोना आवासो कह्या छे, हवे ते अमीचिकुमार घणा वर्षो सुधी भ्रमणोपासक पर्यायने पाळी अर्ध
मासिक संलेखनाथी त्रीश भक्तो अनशनपणे व्यतीत करी, ते पाप स्थानकनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्या सिवाय मरणसमये कालधर्म
पामी आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी पासे चोसठ लाख आयाव (आताप-प्रकाशरूप) असुरकुमारावासोमांना कोइ एक आयावरूप
असुरकुमारावासमां आतावरूप असुरकुमार देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केठलाक आयावरूप असुरकुमार देवोनी एक पत्योपम स्थिति कही छे,
अने त्यां अमीचिदेवनी पण एक पत्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते अमीचिदेव आयुःक्षय थया पछी तथा भवक्षय
थया पछी मरण पामी क्यां जशे-क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्ध थशे, यावत्-सर्व दुःखोनो अंत करशे.
‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’-एम कही भगवान् गौतम यावत्-विहरे छे.

त्रयोदश शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

सत्तमो उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं बयासी-भाया मंते ! भासा, अभा भासा ? [उ०] गोयमा ! नो भाया भासा, अभा भासा ।
२. [प्र०] रुविं मंते ! भासा, अरुविं भासा ? [उ०] गोयमा ! रुविं भासा, नो अरुविं भासा ।
३. [प्र०] सच्चिता मंते ! भासा, अचित्ता भासा ? [उ०] गोयमा ! नो सच्चिता भासा, अचित्ता भासा ।
४. [प्र०] जीवा मंते ! भासा, अजीवा भासा ? [उ०] गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा ।
५. [प्र०] जीवाणं मंते ! भासा, अजीवाणं भासा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा ।
६. [प्र०] पुषिं मंते ! भासा, भासिज्जमाणी भासा, भासासमयवीतिकंता भासा ? [उ०] गोयमा ! नो पुषिं भासा, भासिज्जमाणी भासा, जो भासासमयवीतिकंता भासा ।
७. [प्र०] पुषिं मंते ! भासा मिज्जति, भासिज्जमाणी भासा मिज्जति, भासासमयवीतिकंता भासा मिज्जति ? [उ०] गोयमा ! नो पुषिं भासा मिज्जति, भासिज्जमाणी भासा मिज्जति, नो भासासमयवीतिकंता भासा मिज्जति ।

सप्तम उद्देशक.

भाषा.
भाषा आत्मस्वरूप
छे के तेथी अन्य छे ?
रूपी के अरूपी ?
सचित्त के अचित्त ?
जीवस्वरूप के अजी-
वस्वरूप ?
जीवोने भाषा के
अजीवोने भाषा
होय ?
भाषा स्वारे कहेवाय ?
भाषा स्वारे मेदाय ?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां भगवान् गौतम यावत्-आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! भाषा ए आत्मा-जीवस्वरूप छे के तेथी अन्य छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा ए आत्मा नथी, पण तेथी अन्य (पुद्गलस्वरूप) भाषा छे.
२. [प्र०] हे भगवन् ! भाषा रूपी-रूपवाली छे के अरूपी-रूप विनानी छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा (पुद्गलमय होवाथी) रूपी छे, पण रूप विनानी नथी.
३. [प्र०] हे भगवन् ! भाषा सचित्त-सजीव छे के अचित्त-अजीव छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा सचित्त नथी, पण अचित्त छे.
४. [प्र०] हे भगवन् ! भाषा जीवस्वरूप-प्राणधारणरूप छे के अजीवस्वरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भाषा जीवस्वरूप नथी, पण अजीवस्वरूप छे.
५. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने भाषा होय छे के अजीवोने भाषा होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवोने भाषा होय छे, पण अजीवोने भाषा नथी होती.
६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं [बोलाया] पूर्वें भाषा कहेवाय, बोलाती होय स्वारे भाषा कहेवाय, के बोलाया पछी भाषा कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! बोलाया पहिल भाषा न कहेवाय, तेमज बोलाया पछी पण भाषा न कहेवाय, पण बोलाती होय स्वारे भाषा कहेवाय.
७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं बोलाया पहिल भाषा मेदाय, बोलाती भाषा मेदाय, के बोलाया पछी भाषा मेदाय ? [उ०] हे गौतम ! बोलाया पहिल भाषा न मेदाय, तेमज बोलाया पछी भाषा न मेदाय, पण बोलाती होय स्वारे भाषा मेदाय.

१ * जीवशी प्रयोजाय छे, जीवना बन्ध अने मोक्षलुं कारण थाय छे माटे जीवो बरु होवाथी भाषा 'आत्मा-जीव'-एम कही सकय ! अचर भाषा जीवस्वरूप नथी-एम पण कहेवाय ? केमके ते ओत्रेन्द्रियप्राण होवाथी मूर्तपणावके जीव करतां भिन्न छे, माटे शंकाथी आ प्रश्न थाय छे. अचर-अचर पुद्गलमय होवाथी ते आत्मस्वरूप नथी.-टीका.

८. [प्र०] कतिविहा णं भंते! भासा पण्णत्ता! [उ०] गोयमा! चउच्चिहा भासा पण्णत्ता, तंजहा—१ सच्चा, २ मोसा, ३ सच्चासोसा, ४ असच्चासोसा।

९. [प्र०] आया भंते! मणे, अजे मणे! [उ०] गोयमा! जो आया मणे, अजे मणे। जहा भासा तहा मणे वि, जाव—जो अजीवाणं मणे।

१०. [प्र०] पुंदि भंते! मणे, मणिज्जमाणे मणे? [उ०] एवं जहेव भासा।

११. [प्र०] पुंदि भंते! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिकंते मणे भिज्जति! [उ०] एवं जहेव भासा।

१२. [प्र०] कतिविहे णं भंते! मणे पण्णत्ते! [उ०] गोयमा! चउच्चिहे मणे पण्णत्ते, तंजहा—१ सच्चे, जाव—४ असच्चासोसे।

१३. [प्र०] आया भंते! काये, अजे काये! [उ०] गोयमा! भाया वि काये, अजे वि काये।

१४. [प्र०] रुंदि भंते! काये, अरुंदि काये?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! रुंदि पि काये, अरुंदि पि काय, एवं एकेके पुच्छा। गोयमा! सच्चित्ते वि काये, अच्चित्ते वि काय। जीवे वि काय, अजीवे वि काय, जीवाण वि काय, अजीवाण वि काय।

१५. [प्र०] पुंदि भंते! काये?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! पुंदि पि काय, कायिज्जमाणे वि काय, कायसमयवीतिकंते वि काये।

१६. [प्र०] पुंदि भंते! काये भिज्जति?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! पुंदि पि काय भिज्जति, जाव—काय भिज्जति।

८. [प्र०] हे भगवन्! भाषा केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! भाषा चार प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ सत्य, २ मृषा—असत्य, ३ सत्यमृषा—सत्य ल्यने असत्य मिश्र, अने ४ असत्यामृषा—सत्य पण नहि तेम असत्य पण नहि.

भाषाना प्रकार.

९. [प्र०] मन ए आत्मा छे, के तेयी अन्य मन छे? [उ०] हे गौतम! मन ए आत्मा नयी, पण मन अन्य छे—इत्यादि जेम भाषा संबन्धे कहुं, तेम मनसंबन्धे पण जाणवुं, यावत्—अजीवोने मन नयी.

मन.
मन आत्मा छे के
तेयी अन्य छे।

१०. [प्र०] हे भगवन्! [मनननी] पूर्वे मन होय, मनन समये मन होय, के मननसमय वीत्या पछी मन होय? [उ०] जेम भाषासंबन्धे कहुं तेम जाणवुं.

मन क्यारे होय।

११. [प्र०] हे भगवन्! मनननी पूर्वे मन भेदाय, मननसमये मन भेदाय, के मननसमय वीत्या पछी मन भेदाय? [उ०] जेम भाषासंबन्धे कहुं छे तेम अहिं जाणवुं.

मन क्यारे भेदाय।

१२. [प्र०] हे भगवन्! मन केटला प्रकारनुं कहुं छे! [उ०] हे गौतम! मन चार प्रकारनुं कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ सत्य, २ असत्य, [३ मिश्र] यावत्—४ असत्यामृषा—सत्य पण नहि अने असत्य पण नहि.

मनना प्रकार.

१३. [प्र०] हे भगवन्! काय—शरीर आत्मा छे के तेयी अन्य—आत्मायी *मिन्न—काय छे? [उ०] हे गौतम! काय आत्मा पण छे, अने आत्मायी मिन्न पण काय छे.

काय आत्मा छे के
तेयी अन्य।

१४. [प्र०] हे भगवन्! काय रूपी छे के अरूपी छे? [उ०] हे गौतम! काय रूपी पण छे अने काय अरूपी पण छे. ए प्रमाणे पूर्ववत् एक एक प्रश्न करवो. हे गौतम! काय सच्चित्त पण छे अने अच्चित्त पण छे, काय जीवरूप पण छे अने अजीवरूप पण छे, तथा काय जीवोने होय छे, तेम अजीवोने पण होय छे.

रूपी के अरूपी।

१५. [प्र०] हे भगवन्! पूर्वे काय होय?—इत्यादि [पूर्ववत्] प्रश्न. [उ०] हे गौतम! काय—शरीर [जीवनो संबन्ध थया] पूर्वे पण होय, वीर्यमान—पुद्गलोना ग्रहण समये पण काय होय, अने कायसमय—पुद्गल ग्रहण समय वीत्या पछी पण काय होय.

काय क्यारे होय।

१६. [प्र०] हे भगवन्! काय [जीवे ग्रहण करी] पूर्वे भेदाय?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पूर्वे पण काय भेदाय, यावत्—[पुद्गल ग्रहण समय वीत्या बाद] पण यावत्—भेदाय.

काय क्यारे भेदाय।

१३ * काय—आत्मस्वरूप छे, केमके काये करेका करेनो अजुअव आत्माने काय छे, अथवा काय आत्मायी मिन्न छे, केमके कायना एक अंशको छेत् अथवा उता पण आत्मानो छेत् यतो नयी, माटे आ प्रश्न उपस्थित काय छे. उत्तर—रुचंचित्त काय आत्मस्वरूप पण छे, केमके शरीरने स्वर्ष यता तेनो आत्माने आत्मस्वरूप काय छे, तेमके करेचिद् आत्मायी मिन्न पण छे, जो अत्यंत अचिन्न होय तो शरीरको नाश यता आत्मानो नाश पण याय—टीका.

૧૭. [પ્ર૦] કઈવિદે ણં મંતે ! કાયે પક્ષ્ણે ? [૩૦] ગોયમા ! સત્તવિદે કાયે પક્ષ્ણે, તંજહા—૧ મોરાલે, ૨ ઓપલિયમીસપ, ૩ વેડવિપ, ૪ વેડવિયમીસપ, ૫ આહારપ, ૬ આહારગમીસપ, ૭ કમ્મપ ।

૧૮. [પ્ર૦] કતિવિદે ણં મંતે ! મરણે પક્ષ્ણે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિદે મરણે પક્ષ્ણે, તંજહા—૧ આવીચિયમરણે, ૨ ઓહિમરણે, ૩ આદિતિયમરણે; ૪ બાલમરણે, ૫ પંઢિયમરણે ।

૧૯. [પ્ર૦] આવીચિયમરણે ણં મંતે ! કતિવિદે પક્ષ્ણે ? [૩૦] ગોયમા ! પંચવિદે પક્ષ્ણે, તંજહા—૧ દ્વાવીચિયમરણે, ૨ ક્ષેત્રાવીચિયમરણે, ૩ કાલાવીચિયમરણે, ૪ ભવાવીચિયમરણે, ૫ માવાવીચિયમરણે ।

૨૦. [પ્ર૦] દ્વાવીચિયમરણે ણં મંતે ! કતિવિદે પક્ષ્ણે ? [૩૦] ગોયમા ! ચડવિદે પક્ષ્ણે, તંજહા—૧ નેરહયદ્વાવીચિયમરણે, ૨ તિરિષ્ણજોણિયદ્વાવીચિયમરણે, ૩ મણુસ્સદ્વાવીચિયમરણે, ૪ દેવદ્વાવીચિયમરણે । [પ્ર૦] સે કેણટ્ટેણં મંતે ! एवं बुद्धइ—‘नेरहयद्ववावीचियमरणे नेरहयद्ववावीचियमरणे’ ? [૩૦] ગોયમા ! જણં નેરહયા નેરહય દ્વે વહુમાણા આઈં દ્વાઈં નેરહયાઉયસાપ ગહિયાઈં, વહ્દાઈં, પુટ્ટાઈં, કડાઈં, પટ્ટવિયાઈં, નિષિટ્ટાઈં, અભિનિવિટ્ટાઈં, અભિસમખાગયાઈં મવંતિ તાઈં દ્વાઈં આવીચિયમણુસમયં નિરંતરં મરંતિ સ્તિ કહુ સે તેણટ્ટેણં ગોયમા ! एवं बुद्धइ—‘नेरहयद्ववावीचियमरणे,’ एवं जाव—देवद्ववावीचियमरणे ।

૨૧. [પ્ર૦] ક્ષેત્રાવીચિયમરણે ણં મંતે ! કતિવિદે પક્ષ્ણે ? [૩૦] ગોયમા ! ચડવિદે પક્ષ્ણે, તંજહા—૧ ‘નેરહયક્ષેત્રાવીચિયમરણે, જાવ—૪ દેવક્ષેત્રાવીચિયમરણે’ ।

૨૨. [પ્ર૦] સે કેણટ્ટેણં મંતે ! एवं बुद्धइ—‘नेरहयक्ષेत्रावीचियमरणे नेर० २’ ? [૩૦] ગોયમા ! જણં નેરહયા નેરહયક્ષેસે વહુમાણા આઈં દ્વાઈં નેરહયાઉયસાપ—एवं अहव द्वावीचियमरणे तहव क्षेत्रावीचियमरणे वि । एवं जाव—मावावीचियमरणे ।

કાયના પ્રકાર.

૧૭. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! કાય કેટલા પ્રકારે કહેલ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! કાય સાત પ્રકારે કહેલ છે, તે આ પ્રમાણે—૧ ઔદારિક, ૨ ઔદારિકમિશ્ર, ૩ વૈક્રિય, ૪ વૈક્રિયમિશ્ર, ૫ આહારક, ૬ આહારકમિશ્ર, ૭ કાર્મણ.

મરણના પ્રકાર.

૧૮. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! મરણ કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! મરણ પાંચ પ્રકારનું કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—૧ *આવીચિકમરણ, ૨ અવધિમરણ, ૩ આલંતિકમરણ, ૪ બાલમરણ, ૫ પંઢિતમરણ.

આવીચિકમરણના પ્રકાર.

૧૯. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! આવીચિકમરણ કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! આવીચિકમરણ પાંચ પ્રકારે કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—૧ દ્રવ્યાવીચિકમરણ, ૨ ક્ષેત્રાવીચિકમરણ, ૩ કાલાવીચિકમરણ, ૪ ભવાવીચિકમરણ, અને ૫ માવાવીચિકમરણ.

દ્રવ્યાવીચિકમરણના પ્રકાર.

૨૦. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દ્રવ્યાવીચિકમરણ કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ચાર પ્રકારે કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—૧ નૈરયિકદ્રવ્યાવીચિકમરણ, ૨ તિર્યચ્યોનિકદ્રવ્યાવીચિકમરણ, ૩ મનુષ્યદ્રવ્યાવીચિકમરણ અને ૪ દેવદ્રવ્યાવીચિકમરણ. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! एम शा हेतुथी नैरयिकद्रव्यावीचिकमरणने नैरयिकद्रव्यावीचिकमरण कहो छे ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નારકજીવપણે વર્તતા નારકોએ જે દ્રવ્યોને નૈરયિકઆયુષપણે [સ્પર્શયકી] પ્રહાં છે, [બંધનથી] બાંધેલાં છે, [પ્રદેશથી] પુષ્ટ કર્યાં છે, [વિશિષ્ટરસથી] કરેલાં છે, [સ્થિતિવદે] પ્રથાપિત કર્યાં છે, [જીવપ્રદેશોમાં] નિવિષ્ટ—પ્રવેશોલાં છે, અભિનિવિશિષ્ટ—અલંત ગાઠ પ્રવેશોલાં છે, અને અભિસમખાગત—ઉદયાભિમુલ્લથયેલાં છે, તે દ્રવ્યોને આવીચિક—નિરંતર પ્રતિસમય મરે છે—છોડે છે, માટે તે હેતુથી હે ગૌતમ ! નૈરયિક દ્રવ્યાવીચિકમરણ નૈરયિકદ્રવ્યાવીચિકમરણ કહેવાય છે. ए प्रमाणे [तिर्यच्योनिकद्रव्यावीचिकमरण, मनुष्यद्रव्यावीचिकमरण अने] यावत्—देवद्रव्यावीचिकमरण जाणवुं.

નૈરયિકદ્રવ્યાવીચિકમરણ.

૨૧. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! ક્ષેત્રાવીચિકમરણ કેટલા પ્રકારે કહ્યું છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! ચાર પ્રકારે કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—નૈરયિકક્ષેત્રાવીચિકમરણ, ૨ તિર્યચ્યોનિકક્ષેત્રાવીચિકમરણ, યાવત્—૪ દેવક્ષેત્રાવીચિકમરણ.

ક્ષેત્રાવીચિકમરણ.

નારકક્ષેત્રાવીચિકમરણ.

૨૨. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! તે ए प्रमाणे शा हेतुथी नारकक्षेत्रावीचिकमरण नारकक्षेत्रावीचिकमरण कहेवाय छे ? [૩૦] હે ગૌતમ ! નારકક્ષેત્રમાં વર્તતા નારક જીવોએ જે દ્રવ્યોને પોતે નારકઆયુષપણે પ્રહણ કરેલાં છે, અને તે [દ્રવ્યોને પ્રતિસમય નિરંતર મૂકે છે]—इच्छादि द्रव्यावीचिकमरण संबंधे कहेलुं छे ते अहिं कहेवुं, તે માટે નૈરયિકક્ષેત્રાવીચિકમરણ કહેવાય છે. અને ए प्रमाणे यावत्—[कालावीचिकमरण, भवावीचिकमरण, तथा] भावावीचिकमरण पण जाणवुं.

૧૦ * ૧ આ—સમન્તાત્, વીષ્ણુ-તરંગની પેઠે પ્રતિસમય અનુભવાતા આયુષકર્મપુણ્ણોનો અન્ય અન્ય આયુષના દલિકના ઉચ્ચ થવા કાયે કાયે મરણે જે આવીચિકમરણ; ૨ અવધિ-મર્યાદાસહિત મરણ, અર્થાત્ નરકાદિ ભવના હેતુભૂત જે વર્તમાન આયુષકર્મના પુણ્ણોનો અનુભવ કરીને મરણ પામે, અને પુનઃ તેજ આયુષકર્મના પુણ્ણોને આગામી ભવમાં પ્રહણ કરીને મરણ પામશે તે અવધિમરણ કહેવાય છે, કારણ કે તે દ્રવ્યની અવેશાએ પુનઃ સે પુણ્ણોને પ્રહણ કરેલાં સુધી જીવ મરણ પામેલો છે, વઢી પરિણામના વિચિત્રપણાથી પ્રહણ કરીને છોડેલા પુણ્ણોનું પુનઃ પ્રહણ પણ સંભવે છે; ૩ જે નારકાદિજાનુષાકરના દલિક મોમવી મરણ પામે, અને મરણ પામી વઢી તેજ આયુષકર્મના પુણ્ણોનો અનુભવ કર્યાં શિવાય મરણ પામશે એવું જે મરણ હે દ્રવ્યની અવેશાએ અવેશાથી પણાથી આલંતિકમરણ કહેવાય છે; ૪ અવિરતિનું મરણ તે બાલમરણ; ૫ અને સર્વવિરતિનું મરણ હે પંઢિતમરણ કહેવાય છે.—બીજા.

२३. [प्र०] ओहोमरणे णं मंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णसे, तंजहा—१ द्धोहोमरणे, २ खोहोमरणे, जाव—५ भावोहोमरणे ।

२४. [प्र०] द्धोहोमरणे णं मंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! चउच्चिहे पण्णसे, तंजहा—१ नेरइयद्दोहोमरणे, जाव—४ देवद्दोहोमरणे ।

२५. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चइ नेरइयद्दोहोमरणे २ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयद्दो वट्टमाणा जाइं द्धोहोमरणे संपयं मरंति, तेणं नेरइया ताइं द्धोहोमरणे अणागए काले पुणो वि मरिस्संति, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव—द्दोहोमरणे । एवं तिरिक्खजोणिय०, मणुस्स०, देवद्दोहोमरणे वि । एवं एपणं गमेणं खोहोमरणे वि, कालोहोमरणे वि, मधोहोमरणे वि, भावोहोमरणे वि ।

२६. [प्र०] भादितियमरणे णं मंते ! पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णसे, तंजहा—१ द्धोदितियमरणे, २ खोदितियमरणे, जाव—५ भावादितियमरणे ।

२७. [प्र०] द्धोदितियमरणे णं मंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! चउच्चिहे पण्णसे, तंजहा—१ नेरइयद्दोदितियमरणे, जाव—४ देवद्दोदितियमरणे ।

२८. [प्र०] से केणट्टेणं मंते एवं बुच्चइ—'नेरइयद्दोदितियमरणे नेर० २' ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयद्दो वट्टमाणा जाइं द्धोदितियमरणे संपयं मरंति, तेणं नेरइया ताइं द्धोदितियमरणे अणागए काले नो पुणो वि मरिस्संति, से तेणट्टेणं जाव—मरणे । एवं तिरिक्ख०, मणुस्स०, देवद्दोदितियमरणे, एवं खोदितियमरणे वि, एवं जाव—भावादितियमरणे वि ।

२९. [प्र०] बालमरणे णं मंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! बुच्चालसविहे पण्णसे, तंजहा—१ बलयमरणं, जहा कंदए, जाव—१२ गदपट्टे ।

२३. [प्र०] हे भगवन् ! अवधिमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ द्रव्यावधिमरण, २ क्षेत्रावधिमरण, [३ कालावधिमरण, ४ भवावधिमरण] यावत्—अने ५ भावावधिमरण.

अवधिमरण.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यावधिमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे—१ नैरयिकद्रव्यावधिमरण, २ यावत्—[तिर्यच्योनिकद्रव्यावधिमरण, ३ मनुष्यद्रव्यावधिमरण] अने ४ देवद्रव्यावधिमरण.

द्रव्यावधिमरण.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकद्रव्यावधिमरण शा माटे कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकपणे वर्तता नारक जीवो जे द्रव्योने सांप्रत काले मूके छे, अने वळी ते नारको यइने तेज द्रव्योने भविष्यकाले फरीथी [ग्रहण करीने] पण छोडसे, ते माटे हे गौतम ! नैरयिकद्रव्यावधिमरण कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यच्योनिकद्रव्यावधिमरण, मनुष्यद्रव्यावधिमरण अने देवद्रव्यावधिमरण पण जाणवुं. तथा ए पाठ वडे क्षेत्रावधिमरण, कालावधिमरण, भवावधिमरण अने भावावधिमरण जाणवुं.

नैरयिकद्रव्यावधिमरण शा हेतुथी कहेवाय छे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! आत्यंतिकमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ द्रव्यात्यंतिकमरण, २ क्षेत्रात्यंतिकमरण, यावत्—५ भावात्यंतिकमरण.

आत्यंतिक मरण.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यात्यंतिकमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ नैरयिकद्रव्यात्यंतिकमरण, अने यावत्—४ देवद्रव्यात्यंतिकमरण.

द्रव्यात्यंतिकमरण.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी 'नैरयिकद्रव्यात्यंतिकमरण' २ कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकपणे वर्तता जे नारक जीवो जे द्रव्योने सांप्रत काले छोडे छे, ते नैरयिको ते द्रव्योने भविष्यकाले फरी वार नहि छोडे, हे गौतम ! ते हेतुथी 'नैरयिकद्रव्यात्यंतिकमरण' २ कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यच्योनिकद्रव्यात्यंतिकमरण, मनुष्यद्रव्यात्यंतिकमरण, अने देवद्रव्यात्यंतिकमरण पण जाणवुं, तथा ए प्रमाणे क्षेत्रात्यंतिकमरण, यावत्—[कालात्यंतिकमरण, भवात्यंतिकमरण अने] भावात्यंतिकमरण जाणवुं.

नैरयिकद्रव्यात्यंतिकमरण शाही कहेवाय छे ?

२९. [प्र०] हे भगवन् ! बालमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! बार प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ बलयमरण,—इत्यादि स्क्न्दकना अधिकारमां कहा प्रमाणे यावत्—१२ गृध्रस्पृष्टमरण जाणवुं.

बालमरणमा प्रकार.

२९ * १ बलयमरण—अत्यन्त क्षुधावी बलबलता मरण पाववुं, अथवा संयमवी भ्रष्ट धर्मेकावुं मरण ते बलयमरण के बलयमरण कहेवाय छे, १२ गृध्रस्पृष्ट मरण—वीर पक्षीकोए अथवा शिकारी पक्षीकोए स्पृष्ट—विदारण करवावी जे मरण वाय ते. † जुओ मग० खं० १ ख० २ ख० १ पृ० २३४.

३०. [प्र०] पंडितमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पण्णसे, तंजहा—१ पाओबगमणे च २ भक्तपक्षकखाने य ।

३१. [प्र०] पाओबगमणे णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पण्णसे, तंजहा—जीहारिमे य अनीहारिमे य, जाव—नियमं अपडिकम्मे ।

३२. [प्र०] भक्तपक्षकखाने णं भंते ! कतिविहे पण्णसे ? [उ०] एवं तं चेवं, नवरं नियमं सपडिकम्मे । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !'सि ।

तेरसमसए सचमो उदेसो समतो ।

पंडितमरण.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! पंडितमरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ पादपोपगमन (पडेला पादप—वृक्षनी पेटे हाल्या चाल्या शिवाय एकज स्थितिमां उपगमन—रहेवुं), २ भक्तप्रत्याख्यान (आहार पाणिनो त्याग करवो).

पादपोपगमन.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! पादपोपगमन मरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारनुं कहुं छे, ते आ प्रमाणे—१ निर्हारिम (वसतिना एक भागमां पादपोपगमन कराय के ज्यांथी मृत कलेवरने बहार काढवुं पडे ते निर्हारिम पादपोपगमन) २ अनिर्हारिम (पर्वतनी गुफामां के तेवा बीजा स्थळे पादपोपगमन करे के ज्यांथी तैनुं मृत कलेवर बहार न काढवुं पडे ते) यावत्—आ बने प्रकारनुं पादपोप गमन मरण अवश्य अप्रतिकर्म (शरीरसंस्काररहित) होय छे.

भक्तप्रत्याख्यान.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! भक्तप्रत्याख्यानरूप मरण केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] ए प्रमाणे पूर्वे कहा प्रमाणे तेना (निर्हारिम अने अनिर्हारिम ए बे भेद जाणवा) पण विशेष ए छे के आ बने प्रकारनुं भक्तप्रत्याख्यानरूप मरण अवश्य सप्रतिकर्म—शरीरसंस्कारसहित होय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही विहरे छे.

त्रयोदशशते सप्तम उद्देशक समाप्त.

अष्टमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कति णं मंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, एवं बंधट्टिह-उद्देशो भाणियओ निरवसेसो जहा पच्चवणाए । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !' सि ।

तेरसमसए अट्टमो उद्देशो समत्तो ।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मनी केटली प्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गीतम ! कर्मनी आठ प्रकृतिओ कही छे, अहिं प्रज्ञापना सूत्रनी *बंधस्थिति नामे संपूर्ण उद्देशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

कर्मप्रकृति.

त्रयोदशशते अष्टम उद्देशक समाप्त.

नवमो उद्देशो ।

१. रायगिहे जाव—एवं वयासी—[प्र०] से जहानामए केह पुरिसे केयावडियं गहाय गच्छेजा, एवामेव अनगारे वि भावियप्पा केयावडियाकिहहत्थगएणं अप्पाणेणं उहं वेहासं उप्पएज्जा ? [उ०] गोयमा ! हुंता, उप्पएज्जा ।

२. [प्र०] अनगारे णं मंते ! भावियप्पा केवतियाहं एभू केयावडियाहत्थकिहगयाहं रुवाहं विउच्चिसए ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे—एवं जहा तइयसए पंचमुद्देशए जाव—'नो खेव णं संपत्तीए विउच्चिसु वा विउच्चिसि वा विउच्चिस्संति वा' ।

नवम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृहमां [भगवान् गीतम] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! जेम कोइ एक पुरुष दोरडाथी बांधेली घटिकाने छेने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा साउ दोरडाथी बांधेली घटिकानुं कार्य हस्तगत करी [वैक्रियलब्धियी एवं रूप धारण करी] पोते उंचे आकाशमां उडे ? [उ०] हा गीतम ! उडे.

वैक्रियलब्धियी कोइ दोरडाथी बांधेली घटिका केहने कया रूपे गमन करे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार दोरडाथी बांधेली घटिकाने हायमां धारण करवारूप केटलं रूपो विकुर्वी शकवाने समर्थ होय ? [उ०] हे गीतम ! 'जेम कोइ एक जुवान पुरुष युवति स्त्रीने हाय वडे आलिने'—इत्यादि ए प्रकारे तृतीयशतकना पांचमा उद्देशकमां कया प्रमाणे यावत्—संप्राप्ति (संपादन) करवावडे तेवां रूपो विकुर्व्या नथी, विकुर्वता नथी अने विकुर्वशे पण नहि.

केटलं रूपो विकुर्वी कये ?

૩. [પ્ર૦] સે જહાનામય કેર પુરિસે હિરણપેલં ગહાય ગચ્છેજા, યથામેવ અણગારે વિ માવિયપ્પા હિરણપેલહત્થવિષ્ણ-
ગણં અપ્પાણેણં ? [ઉ૦] સેસં તં ચેવ, યથં સુવણ્ણપેલં, યથં રયણપેલં, ઘર્રપેલં, વત્થપેલં, આમરણપેલં, યથં વિયલકિહું,
સુંબકિહું, ઘમ્મકિહું, કંચલકિહું, યથં અચમારં, તંબમારં, તડયમારં, સીસગમારં, હિરણમારં, સુલ્લમારં, વર્રમારં ।

૪. [પ્ર૦] સે જહાનામય ઘગ્ગુલી સિયા, દો વિ પાપ ડહ્હંબિયા ૨ ડહ્હંપાવા અહોસિરા ચિટ્ટેજા, યથામેવ અણગારે વિ
માવિયપ્પા ઘગ્ગુલીકિચ્છગણં અપ્પાણેણં ડહ્હં વેદાસં ? [ઉ૦] યથં જહોવહ્યવત્થયા માણિયદ્ધા, જાવ-વિડહિસ્સંતિ વા ।

૫. [પ્ર૦] સે જહાનામય જલોયા સિયા, ઉદગંસિ કાયં ઉદ્ધિહિયા ૨ ગચ્છેજા, યથામેવ ? [ઉ૦] સેસં જહા ઘગ્ગુલીપ ।

૬. [પ્ર૦] સે જહાનામય ધીયંધીયગસડણે સિયા, દો વિ પાપ સમતુરંગેમાણે ૨ ગચ્છેજા, યથામેવ અણગારે ? [ઉ૦]
સેસં તં ચેવ ।

૭. [પ્ર૦] સે જહાનામય પવિલ્લવિરાલપ સિયા, દ્વલ્લાઓ રુલ્લં ડેવેમાણે ૨ ગચ્છેજા, યથામેવ અણગારે ? [ઉ૦] સેસં
તં ચેવ ।

૮. [પ્ર૦] સે જહાનામય જીવંજીવગસડણે સિયા, દો વિ પાપ સમતુરંગેમાણે ૨ ગચ્છેજા, યથામેવ અણગારે ? [ઉ૦]
સેસં તં ચેવ ।

૯. [પ્ર૦] સે જહાનામય હંસે સિયા, તીરાઓ તીરં અમિરમમાણે ૨ ગચ્છેજા, યથામેવ અણગારે હંસકિચ્છગણં અપ્પા-
ણેણં ? [ઉ૦] તં ચેવ ।

૧૦. [પ્ર૦] સે જહાનામય સમુદ્ધાયસપ સિયા, ધીર્હંઓ ધીર્હં ડેવેમાણે ૨ ગચ્છેજા, યથામેવ ? [ઉ૦] તદ્દેવ ।

હિરણ્યની પેટી કેરને
ગમન કરે ?

૩. [પ્ર૦] જેમ કોઈ એક પુરુષ હિરણ્યની પેટીને લઈને ગમન કરે, એ પ્રમાણે ભાવિતાત્મા અનગાર પણ હિરણ્યની પેટીના કૃત્યને હસ્ત-
ગત કરી (એવું રૂપ વિકુર્વી) પોતે ગમનમાં ઉડે ? [ઉ૦] બાકી બધું પૂર્વવત્ જાણવું. એ પ્રકારે સુવર્ણની પેટી, રત્નની પેટી, વજ્રની પેટી,
વલ્લની પેટી અને ઘરેણાની પેટીને લઈને [આકાશમાં ગમન કરે ?] એ પ્રમાણે વિદલકટ-વાંસની સાદડી, શુંબકટ-ઘાસની સાદડી, ચર્મકટ,
ચામડાથી ભરેલ ખાટલી વગેરે, અને કાંબલકટ-પાથરવાના ડનના કાંબલ, તથા હોટાના ભારને, તાંબાના ભારને, કલ્હના ભારને, સીસાના
ભારને, હિરણ્યના-રૂપાના ભારને, સુવર્ણના ભારને અને વજ્રના ભારને લઈને પણ ગમન કરે.

ઘગ્ગુલીની પેટે
ગમન કરે ?

૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેમ કોઈ એક ઘડવાગુલી હોય અને તે પોતાના બન્ને પગ [વૃક્ષાદિક સાથે] ડંચા લટકાવી, ડંચા પગ અને
માથું નીચે રાખીને રહે, એ પ્રમાણે ભાવિતાત્મા અનગાર પણ ઘગ્ગુલીના કૃત્યને પ્રાપ્ત થયેલો [અર્થાત્ ઘગ્ગુલીની પેટે] પોતે આકાશમાં ડંચે
ઉડે ? [ઉ૦] હા, ઉડે. એ પ્રમાણે યજ્ઞોપવીતની (જનોર્હી) ચક્તવ્યતા પણ કહેવી. [જેમ કોઈ બ્રાહ્મણ ગલ્લામાં જનોર્હ નાખી ગમન કરે તેમ
ભાવિતાત્મા અનગાર તેવું રૂપ વિકુર્વે-હ્યાદિ], પરન્તુ (સંપ્રાપ્તિવહે તેવાં રૂપો) વિકુર્વશે નહિ.

જલોયાની પેટે
ગમન કરે ?

૫. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેમ કોઈ એક જલોય હોય અને તે પોતાના શરીરને પાણીમાં ઘેરી ઘેરીને ગમન કરે, એ પ્રમાણે ભાવિતાત્મા
અનગાર તેવું રૂપ વિકુર્વી આકાશમાં ગમન કરે ? [ઉ૦] બાકી બધું ઘગ્ગુલીની પેટે જાણવું.

ધીયંધીયક પક્ષીની
પેટે ગમન કરે ?

૬. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! જેમ કોઈ એક ધીયંધીયક પક્ષી હોય, અને તે પોતાના બન્ને પગને ઘોડાની પેટે સાથે ડપાડવું ગમન કરે,
એ પ્રમાણે ભાવિતાત્મા અનગાર [તેવા આકારે આકાશમાં ઉડે ? [ઉ૦] હા, ઉડે.] બાકી બધું પૂર્વની પેટે જાણવું.

વિદલક પક્ષીની
પેટે ગમન કરે ?

૭. [પ્ર૦] જેમ કોઈ એક વિદલક નામે પક્ષી હોય, અને તે એક વૃક્ષથી બીજા વૃક્ષે જતું, બીજા વૃક્ષથી ત્રીજા વૃક્ષે જતું ગતિ કરે,
એ પ્રમાણે ભાવિતાત્મા અનગાર [તેવા આકારે ગમન કરે ? [ઉ૦] હા ગમન કરે.] બાકી બધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું.

જીવંજીવક પક્ષીના
ગમન કરે ?

૮. [પ્ર૦] જેમ કોઈ એક જીવંજીવક નામે પક્ષી હોય, અને તે પણ પોતાના બન્ને પગને ઘોડાની પેટે સાથે ડપાડવું ગતિ કરે, એ
પ્રમાણે ભાવિતાત્મા અનગાર પણ પોતે તેવા આકારે આકાશમાં ઉડે ? [ઉ૦] બાકી બધું પૂર્વ પેટે જાણવું.

હંસ પેટે ગતિ કરે ?

૯. [પ્ર૦] જેમ કોઈ એક હંસ હોય અને તે આ કાંઠેથી બીજે કાંઠે રમતો રમતો ગતિ કરે, એ પ્રમાણે ભાવિતાત્મા અનગાર પણ
હંસ કૃત્યને પ્રાપ્ત કરી પોતે ગમનમાં [હંસને આકારે ઉડે ?] [ઉ૦] પૂર્વવત્ જાણવું.

સમુદ્ધાયસમા આ-
કારે ગતિ કરે ?

૧૦. [પ્ર૦] જેમ કોઈ એક સમુદ્ધાયસ (સમુદ્રનો કાગડો) હોય, અને તે એક તરંગથી બીજા તરંગે જતો ગતિ કરે, એ પ્રમાણે
[ભાવિતાત્મા સાથુ પોતે એવા આકારે ગમનમાં ગતિ કરે ?] [ઉ૦] તે પ્રમાણે જાણવું.

११. [प्र०] से जहानामय केह पुरिसे कक गहाय गच्छेजा, एवामेव अणगारे वि भावियप्या चक्रहृत्थकिचगपणं अप्पाणेणं ? [उ०] सेसं जहा केयाचडियाय, एवं छत्तं, एवं चमरं ।
१२. [प्र०] से जहानामय केह पुरिसे रयणं गहाय गच्छेजा, एवं चेष, एवं बहरं, वेरुलियं, जाव-रिट्टं, एवं उप्पल-हृत्थगं, पउमहृत्थगं, कुमुवहृत्थगं, एवं जाव-से जहानामय केह पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेजा० ? [उ०] एवं चेष,
१३. [प्र०] से जहानामय केह पुरिसे मिसं अवहालिय २ गच्छेजा, एवामेव अणगारे वि मिसकिचगपणं अप्पाणेणं ? [उ०] तं चेष ।
१४. [प्र०] से जहानामय मुणालिया सिया, उदंगंसि कायं उम्मज्जिय २ चिट्ठिजा, एवामेव० ? [उ०] सेसं जहा वग्गुलीय ।
१५. [प्र०] से जहानामय वणसंठे सिया, किण्हे, किण्होभासे, जाव-निकुदंभभूय, पासादीय ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्या वणसंठकिचगपणं अप्पाणेणं उहुं वेहासं उप्पायजा ? [उ०] सेसं तं चेष ।
१६. [प्र०] से जहानामय पुक्करणी सिया, चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुच्चसुजाय० जाव-सहुअइयमइरसरणादिया पासादीया ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्या पोक्करणीकिचगपणं अप्पाणेणं उहुं वेहासं उप्पायजा ? [उ०] हंता उप्पायजा ।
१७. [प्र०] अणगारे णं अंते ! भावियप्या केवतियाइं पभू पोक्करणीकिचगयाइं रुवाइं विउच्चिप्तप ? [उ०] सेसं तं चेष जाव-विउच्चिस्संति वा ।
१८. [प्र०] से अंते ! किं मायी विउच्चति, अमायी विउच्चति ? [उ०] गोयमा ! मायी विउच्चइ, नो अमायी विउच्चइ । मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय० एवं जहा तइयसए चउत्थुइसए जाव-‘अत्थि तस्स आराहणा’ । ‘सेवं अंते ! सेवं अंते !’त्ति विहरइ ।

तेरसमसए नवमो उद्देशो समत्तो ।

११. [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष चक्रने लइने गति करे, एज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पोते चक्रकृत्यने हस्तगत करीने [एवा आकारे आकाशमां उडे ?] [उ०] बाकी बधुं पूर्वे कहेली दोरडाथी बांधेल घटिकानी पेटे (सू० ?) जाणवुं. एज प्रमाणे छत्र तथा चामरने लइने गमन करे.
- १२ [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष रत्तने लइने गमन करे, ए प्रमाणे वज्र, वैडुर्य, यावत्-रिष्ट (श्यामरत्न), ए प्रमाणे उत्पलने हस्तगत करी, पन्नने हस्तगत करी, ए प्रमाणे यावत्-कोइ एक पुरुष सहस्रपत्रने लइने गति करे, तेम भावितात्मा अनगार पोते एवा आकारे आकाशमां गति करे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.
१३. [प्र०] हे भगवन् ! जेम कोइ एक पुरुष विसनी-कमळनी डांडलीने तोडी तोडीने गति करे, ते प्रमाणे अनगार पण पोते विसकृत्यने प्राप्त करी-[एवा प्रकारे] पोते गगनमां गमन करे ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं.
१४. [प्र०] जेम कोइ एक मृणालिका-कमलनो छोड पाणीमां कायने-पोताना शरीरने डुवाडी डुवाडी [मुख बहार राखी] रहे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पोते एवा आकारे गगनमां उडे ? [उ०] बाकी बधुं वागुलीनी पेटे जाणवुं.
१५. [प्र०] जेम कोइ एक वनखंड होय, अने ते काळो, काळा प्रकाशवाळो, यावत्-मेवना समूहरूप, प्रसन्नता देनार अने [दर्शनीय] होय, ए ज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पोते वनखंडना कृत्यने प्राप्त करी अर्थात् एवा आकारे पोते गगनमां उडे ? [उ०] बाकी बधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं.
१६. [प्र०] जेम कोइ एक पुष्करिणी-वाव होय, अने ते चोखंडी, समान कांठावाळी, जेने अनुक्रमे सुशोभित वप्र-वंडी छे एवी, पोपट वगरे पक्षीओना मोटा शब्दवाळी, तेओना मधुर स्वरवाळी अने प्रसन्नता आपनार होय, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पुष्करिणीमा कृत्यने प्राप्त करी-एवा आकारने विकुर्वी पोते आकाशमां उडे ? [उ०] हा उडे.
१७. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार पुष्करिणीना कृत्यने प्राप्त-एवा आकारवाळां केटलां रूपो विकुर्ववाने समर्थ थाय ? [उ०] बाकी पूर्वे प्रमाणे जाणवुं, पण ते संप्राप्तिथी यावत्-विकुर्वशे नहि.
१८. [प्र०] हे भगवन् ! [पूर्वोक्त रूपो] मायावाळो विकुर्वे के मायारहित (अनगार) विकुर्वे ? [उ०] हे गौतम ! मायावाळो विकुर्वे, पण मायारहित साधु न विकुर्वे. मायावाळो साधु विकुर्वेणारूप प्रमाद स्थानकनी आलोचना अने प्रतिक्रमण करी शिवाय काळ करे-इत्यादि 'तृतीय शतकना चौथा उद्देशकमां कइया प्रमाणे जाणवुं, यावत्-'तेने आराधना थाय छे-' त्यां सुधी कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही [भगवान् गौतम !] यावद्-विहरे छे.

चक्रहस्त पुष्करिणी जेम गति करे ?

रत्नहस्त पुष्करिणी पेटे गति करे ?

विस.

मृणालिका.

वनखंड.

पुष्करिणीना आकारे आकाशमां गमन करे ?

केटला रूपो विकुर्वे ?

मायारहित के आकारे रहित विकुर्वे ?

त्रयोदशसुते नवम उद्देशक समाप्त.

दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] कति णं मंते ! छाडमत्थियसमुग्घाया पन्नसा ? [उ०] गोयमा ! छ छाडमत्थिया समुग्घाया पन्नसा, तंजहा-
१ वेयणासमुग्घाप, एवं छाडमत्थियसमुग्घाया नेवन्ना, जहा पन्नवणाप, जाव-आहारगसमुग्घायेत्ति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !'
त्ति जाव-विहरति ।

तेरसमसए दसमो उद्देशो समचो ।

तेरसमं सयं समत्तं ।

दशम उद्देशक.

समुद्घात.

१. [प्र०]-हे भगवन् ! छाअस्थिक समुद्घातो केटला कया छे ? [उ०] हे गौतम ! छाअस्थिक छ समुद्घातो कया छे, ते आ
प्रमाणे-१ वेदनासमुद्घात-इत्थादि ए प्रमाणे छाअस्थिक समुद्घातो *प्रज्ञापनासूत्रना समुद्घात पदमां कया प्रमाणे यावत्-आहारसमुद्घात
सुषी जाणवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही [भगवान् गौतम]यावद्-विहरे छे.

त्रयोदशशते दशम उद्देशक समाप्त.

त्रयोदशशतक समाप्त.

चौदसमं सयं ।

१. १ चर २ उन्माद ३ सरीरे ४ योगल ५ अगणी तथा ६ किमाहारे ।
७ संसिद्ध ८ मंतरे खलु ९ अणगारे १० केवली चेष ॥

पढमो उद्देशो ।

२. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-अणगारे णं मंते ! भावियप्पा चरमं देवावाचं वीतिक्कंते, परमं देवावासम-संपसे, पत्थ णं अंतरा कालं करेजा, तस्स णं मंते ! कहिं गती, कहिं उववाप पणसे ? [उ०] गोयमा ! जे से तत्थ परिय-स्समो तल्लेसा देवावासा, तहिं तस्स गई, तहिं तस्स उववाप पणसे । से य तत्थ गप विराहेजा कम्मलेस्सामेव पडिपडति, से य तत्थ गप नो विराहेजा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जिता णं विहरति ।

चतुर्दश शतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ चरमशब्दसहित होवाथी चरमनामे प्रथम उद्देशक, २ उन्मादना अर्थनो प्रतिपादक होवाथी उन्मादनामे बीजो उद्देशक, ३ शरीरशब्दसहित होवाथी शरीरनामे त्रीजो उद्देशक, ४ पुद्गल-पुद्गलार्थ प्रतिपादित करवाथी पुद्गलनामे चोथो उद्देशक, ५ अग्निशब्दसहित होवाथी अग्निनामे पंचम उद्देशक, ६ किमाहार-(कई दिशाना आहारवाळो होय छे?) ए प्रश्नयुक्त होवाथी किमाहार-नामे षष्ठ उद्देशक, ७ *'चिरसंसिद्धो सि गोयमा' !-आ पदमां आवेला संल्लिष्टशब्दसहित होवाथी सातमो संल्लिष्ट उद्देशक, ८ नरकपृथिवीना अन्तरने प्रतिपादन करवाथी आठमो अन्तर उद्देशक, ९ प्रारंभमां 'अनगार'-पद होवाथी नवमो अनगार उद्देशक, अने १० आरंभमां 'केवली'-ए पद होवाथी दशमो केवली उद्देशक-[ए प्रमाणे चौदमां शतकमां दश उद्देशको कहेवामां आवशे.]

प्रथम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावद्-आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार (साधु) जेणे चरम-छेळा देवावासतुं उच्छ्वन कर्युं छे, अने हजी परम-आगळना देवावासने प्राप्त थयो नथी, आ अवसरे ते काळ करे-मरण पामे तो हे भगवन् ! तेनी क्यां गति थाय अने तेनो क्यां उत्पाद थाय ? [उत्तरोत्तर प्रशस्त अभ्यवसायस्थानने बिषे वर्तमान अनगार चरम-सौधर्मादिदेवलोकना आ छेहे वर्तमान देवावासनी स्थित्यादिना बन्धने योग्य अभ्यवसायस्थानने ओळंगी गयो छे, अने परम-उपर रहेला सनत्कुमारादि देवलोकना स्थित्यादिना बन्धने योग्य अभ्यवसायने प्राप्त थयो नथी, आ अवसरे काळ करे तो ते क्यां उपजे ?] [उ०] हे गौतम ! चरम देवावास अने परम देवावासनी पासे ते लेख्यावाळं देवावासो छे त्यां तेनी गति अने त्यां तेनो उत्पाद कहेलो छे. [सौधर्मादिदेवलोक अने सनत्कुमारादि देव-लोकनी पासे ईशानादि देवलोकमां जे लेख्याए साधु मरण पामे ते लेख्यावाळं देवावासोने बिषे तेनी गति अने तेनो उत्पाद थाय छे.] ते साधु क्यां जइने पोतानी पूर्व लेख्याने विराचे-छोडे तो ते कर्मलेख्या-भावलेख्यायी पडे छे, अने जो ते त्यां जइने न विराचे तो तेज लेख्यानो कायप करी विहरे छे.

भावित्वात्मा अन-
गार जेणे चरम-
देवावासतुं उच्छ-
वन कर्युं छे अने
परम देवावासने
प्राप्त थयो नथी
ते मरीने क्यां
उपजे !

१ * हे गौतम ! तुं कांवा काळची [माथी जावे] उच्छ्वनवाळो छे.

२ * हेव अने नगरमां इत्यं केवली पडता नथी, भावकेवली पडे छे, कारण के तेने इत्यंकेवली अवस्थित होय छे.

३. [प्र०] अणगारे णं मंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिकंते, परमं असुर० [उ०] एवं चेव, एवं जाव-थणियकुमारावासं, जोइलियावासं, एवं वेमाणियावासं, जाव-विहरति ।

४. [प्र०] नेरइयाणं मंते ! कइं सीहा गती, कइं सीहे गतिविसए पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! से जहरनामए-केव पुरिसे तरुणे बलवं जुगवं जाव-निउणसिप्पोवणए आउट्टियं बाहं पसारेआ, पसारियं वा बाहं आउंटेआ, विक्किण्णं वा मुट्ठिं साहरेआ, साहरियं वा मुट्ठिं विक्किरेआ, उम्मिसियं वा अक्किं जिम्मिसेआ, निम्मिसियं वा अक्किं उम्मिसेआ, भवे एयारुवे ? णो तिण्ण्डे सम्भे, नेरइया णं एगसमएण वा दुसमएण वा तिसमएण वा विग्गहेणं उववअंति, नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णसे; एवं जाव-वेमाणियाणं, नवरं एग्गिय्याणं उवसमएण विग्गहे भाविय-यहे । सेसं तं चेव ।

५. [प्र०] नेरइया णं मंते ! किं अणंतरोववन्नगा, परंपरोववन्नगा, अणंतरपरंपरअणुववन्नगा ? [उ०] गोयमा ! नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि, अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि [प्र०] से केण्ण्डेणं मंते ! एवं बुद्ध-जाव-अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया अणंतरोववन्नगा, जे णं नेरइया अपढम-

असुरकुमारावास.

३. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगर चरम-आ तरफ छेछा असुरकुमारावासने ओळंगी गयो छे अने परम असुरकुमारावासने प्राप्त थयो नयी, ते जो आ अवसरे मरण पामे तो ते क्वा उपजे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं. ए रीते यावत्-स्तनितकुमारावास, ज्योतिषिकावास अने वैमानिकावासपर्यन्त यावत्-‘विहरे छे’ स्थां सुधी जाणवुं.

नारकोनी शीघ्र-गति.

४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनी केवा प्रकारनी शीघ्र गति कही छे, अने तेओनो केवा प्रकारनी शीघ्र गतिनो विषय (समय) कस्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कौइ एक पुरुष तरुण, बलिष्ठ, युगवाळो (विशिष्ट बलवाळ्ण सुषमादिकाळ्णां उपपन्न थयेलो) अने यावत्-निपुण शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता होय; ते पोताना संकुचित हायने (त्वरापी) पसारे अने पसारेला हायने संकुचित करे, पसारेली मुठिने संकुचित करे, अने संकोचेली मुठिने पसारे-उघाडे, उघाडेली आंखने मीची दे अने मीचेली आंखने उघाडे, हे गौतम ! (नारकोनी) आवा प्रकारनी-शीघ्रगति अथवा शीघ्र गतिनो विषय होय ? आ अर्थ समर्थ-यथार्थ नयी. नारको एक समयनी (ऋजुगतिवडे) अने बे समय के प्रण समयनी विग्रहगतिवडे उत्पन्न थाय छे. हे गौतम ! तेवा प्रकारे (एक समय, बे समय के प्रण समयनी) नैरयिकोनी शीघ्रगति अथवा शीघ्रगतिनो विषय कस्यो छे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, एकेन्द्रियोने (उत्कृष्ट) चार समयनी विग्रहगति कहेवी. बाकी (पृथिवीकायिकादि दंडकने विषे) बहुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

नारको अणन्तरोपपन्न, परंपरोपपन्न आ अणन्तरपरंपरअणुववन्नगा वि ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरयिको अणन्तरोपपन्न (जेओनी उत्पत्तिमां समयादिकनुं अन्तर नयी, अर्थात् नारकभवना प्रथम समये उत्पन्न थयेला एवा) छे, परंपरोपपन्न (जेओनी उत्पत्तिने बे-प्रण-इत्यादि समयनी परंपरा थयेली छे तेवा) छे, अणन्तरपरंपरानुपपन्न (जेओनी अणन्तर अने परंपर-ए बन्ने प्रकारनी उत्पत्ति थयेली नयी एवा) छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको अणन्तरोपपन्न छे, परंपरोपपन्न छे अने अणन्तरपरंपरानुपपन्न पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुपी कहो छो के, नैरयिको यावत्-अणन्तरपरंपरानुपपन्न छे ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको प्रथम समये उत्पन्न थया छे तेओ ‘अणन्तरोपपन्न’ कहेवाय छे, जे नैरयिकोनी उत्पत्तिमां प्रथम समय शिवाय द्वितीयादि समयो व्यतीत थया छे तेओ ‘परंपरोपपन्न’ कहेवाय छे अने जे नैरयिको विग्रहगतिने प्राप्त थया छे ते ‘अणन्तरपरंपरानुपपन्न’ कहेवाय छे,

* अहिं एक भवशी भवान्तरमां गमनकरवारूप गति जाणवी. नारको नरकगतिमां एक समय, बे समय अने प्रण समयनी गतिवडे उत्पन्न जाय छे. तेमां ऋजुगति एक समयनी होय छे, अने विग्रहगति बे अथवा प्रण समयनी होय छे ते शीघ्रगति कहेवाय छे. बाहुप्रसारणादि गतिनो काक अर्चस्य समयनो छे, तेवी तेवा प्रकारनी गतिने शीघ्रगति न कहेवाय. स्यारे जीव समभेणिए आवेला उत्पत्ति स्थानके अहने उपजे छे स्यारे तेने ऋजुगति एक समयनी होय छे, पण स्यारे उत्पत्तिस्थानक समभेणिमां होतुं नवी स्यारे विग्रहगति के के प्रण समयनी होय छे; अने एकेन्द्रिय जीवने उत्कृष्ट चार समयनी विग्रहगति होय छे; तेमां बे समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे-स्यारे कौइ जीव भरतक्षेत्रनी पूर्व दिशावी नरकमां पश्चिम दिशाए उत्पन्न जाय, स्यारे प्रथम समये नीचे आवे, बीजे समये तिछी उत्पत्तिस्थानके जाय. ए रीते बे समयनी विग्रहगति जाणवी. प्रण समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे-स्यारे कौइ जीव भरतनी पूर्व दिशावी नरकमां वायव्य दिशा तरफ उपजे स्यारे ते एक समये समभेणिद्वारा नीचे आवे, बीजे समये तिर्ग पश्चिम दिशाए जाय, त्रीजा समये तिर्ग वायव्य दिशाने तिरे उत्पत्तिस्थानके अहने उपजे. ए प्रमाणे नारकोनी शीघ्रगतिकारक अथवा आवा प्रकारनी शीघ्रगति कही.

† एकेन्द्रियोने चार समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे होय छे-एक समयमां त्रसनाबीवी बहार अघोळोकनी विदिशावी दिशा तरफ जाय, केमके शीघ्रनी गति श्रेणिने अजुसारे होय छे. बीजा समये लोकना मध्यभागमां प्रवेश करे, त्रीजा समये उंचे (ऊर्ध्वलोकमां) जाय, अने चोये समये त्रसनाबीवी नीचनी दिशाने तिरे व्यवस्थित उत्पत्तिस्थाने जाय. आ बात सामान्यरीते थना जीवने आभवी कही. अन्यथा एकेन्द्रियने पांच समयनी विग्रहगति संभवै छे. ते आ प्रमाणे-१ त्रसनाबीवी बहार अघोळोकनी विदिशावी दिशा तरफ जाय, २ बीजा समये लोकमां प्रवेश करे, ३ त्रीजा समये ऊर्ध्वलोकमां जाय, ४ शीघ्र समये स्थावी दिशा तरफ जाय, अने ५ पांचमां समये विदिशानां रक्षेका उत्पत्तिस्थानके जाय. एम पांच समयनी विग्रहगति कही.

अनन्तरोपपन्न ते ऽं नैरह्या परंपरोपपन्नगा, जे ऽं नैरह्या विग्रहगतिसमावन्नगा ते ऽं नैरह्या अणंतरपरंपरानुपपन्नगा, से तेणट्टेणं जाव-अनुपपन्नगा वि, एवं निरंतरं जाव-वेमाणिया ।

६. [प्र०] अणंतरोपपन्नगा ऽं मंते ! नैरह्या किं नैरह्याउयं पकरेंति, तिरिक्ख०, मणुस्स०, देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नैरह्याउयं पकरेंति, जाव-नो देवाउयं पकरेंति ।

७. [प्र०] परंपरोपपन्नगा ऽं मंते ! नैरह्या किं नैरह्याउयं पकरेंति, जाव-देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नैरह्याउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ।

८. [प्र०] अणंतरपरंपरानुपपन्नगा ऽं मंते ! नैरह्या किं नैरह्याउयं पकरेंति-पुच्छा । [उ०] नो नैरह्याउयं पकरेंति, जाव-नो देवाउयं पकरेंति, एवं जाव-वेमाणिया, नवरं पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोपपन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति, सेसं तं चेष ।

९. [प्र०] नैरह्या ऽं मंते ! किं अणंतरनिग्गया, परंपरनिग्गया, अणंतरपरंपरनिग्गया ? [उ०] गोयमा ! नैरह्या ऽं अणंतरनिग्गया वि, जाव-अणंतरपरंपरनिग्गया वि । [प्र०] से केणट्टेणं जाव-अणिग्गया वि ? [उ०] गोयमा ! जे ऽं नैरह्या पढमसमयनिग्गया ते ऽं नैरह्या अणंतरनिग्गया, जे ऽं नैरह्या अपढमसमयनिग्गया ते ऽं नैरह्या परंपरनिग्गया, जे ऽं नैरह्या विग्रहगतिसमावन्नगा ते ऽं नैरह्या अणंतरपरंपरनिग्गया, से तेणट्टेणं गोयमा ! जाव-अणिग्गया वि, एवं जाव-वेमाणिया ।

१० [प्र०] अणंतरनिग्गया ऽं मंते ! नैरह्या किं नैरह्याउयं पकरेंति, जाव-देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नैरह्याउयं पकरेंति, जाव-नो देवाउयं पकरेंति ।

माटे ते हेतुपी हे गौतम ! नैरयिको पूर्व प्रमाणे यावत्-^{*}‘अनन्तरपरंपरानुपपन्न छे-’स्यां सुची कहेवुं. ए प्रमाणे निरन्तर यावत्-वैमानिको सुची कहेवुं.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न (प्रथम समये उत्पन्न थयेला) नैरयिको सुं नैरयिकनुं आयुष बांधे, तिर्यच्चनुं आयुष बांधे, मनुष्यनुं आयुष बांधे, के देवनुं आयुष बांधे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकनुं आयुष न बांधे, यावद्-देवनुं आयुष पण न बांधे.

अनन्तरोपपन्न नारको जावनी आनुपपन्नो बन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न नैरयिको सुं नैरयिकनुं आयुष बांधे, यावद्-देवनुं आयुष बांधे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकनुं आयुष बांधता नथी, तिर्यच्चनुं आयुष बांधे छे, मनुष्यनुं आयुष पण बांधे छे, देवनुं आयुष बांधता नथी.

परंपरोपपन्न नैरयिकोने आनुपपन्नो बन्ध.

८. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरपरंपरानुपपन्न (विग्रहगतिने प्राप्त थयेला) नैरयिको सुं नैरयिकनुं आयुष बांधे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकनुं आयुष न बांधे, यावत्-देवायुष पण न बांधे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुची जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के परंपरोपपन्न पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको अने मनुष्यो चारे प्रकारना आयुष बांधे छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे कहेवुं.

अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको.

९. [प्र०] हे भगवन् ! सुं नैरयिको अनन्तरनिर्गत (नरकादिथी नीकळी भवान्तर प्राप्त थयेला जेओने प्रथम समय वर्ते छे, समयादिना अन्तरनो अभाव छे)-परंपरनिर्गत (नरकादिथी नीकळी भवान्तरने प्राप्त थयेला जेओने वे-त्रण-इत्यादि समयोनुं अन्तर छे) अने अनन्तर-परम्परानिर्गत (जेओ नरकाथी नीकळी विग्रहगतिमां वर्तता होय छे, अने ज्यां सुची उत्पत्ति क्षेत्रने प्राप्त न थाय स्यांसुची ते अनन्तरभावे अने परंपरभावे अनिर्गत एवा) छे ? [उ०] हे गौतम ! नारको अनन्तरनिर्गत पण होय छे, यावत्-अनन्तरपरम्परानिर्गत पण होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुपी कहो छो के यावत्-‘नारको अनन्तरपरम्परानिर्गत छे’ ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको नरकाथी प्रथम समये नीकळेला छे तेओ अनन्तरनिर्गत, जेओ प्रथमसमय व्यतिरिक्त द्वितीयादि समयथी निकळेला छे तेओ परंपरनिर्गत, अने जेओ विग्रहगतिने प्राप्त थयेला छे तेओ अनन्तरपरंपरानिर्गत छे. माटे ते हेतुपी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के नैरयिको यावत्-अनन्तरपरम्परानिर्गत छे. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुची [ए त्रण त्रण आलापको] कहेवा.

अनन्तरनिर्गतादि नैरयिको.

नारको अनन्तरनिर्गतादि केन कहेवाय छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरनिर्गत नारको सुं नरकायुष बांधे, के यावद्-देवायुष बांधे, [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुष न बांधे, यावत्-देवायुष न बांधे.

अनन्तरनिर्गतादिने जावनी आनुपपन्नो बन्ध.

५ * जेओनी अनन्तर अने परम्पर-ए बन्धे प्रकारनी उत्पत्ति नथी एवा विग्रहगतिमां वर्तमान जीवो ‘अनन्तरपरंपरानुपपन्न’ कहेवाय छे, केमके अनन्तर उत्पत्ति भवना प्रथमसमये होय छे, परंपरोत्पत्ति द्वितीयादि समये होय छे, अने विग्रहगतिमां बन्धे प्रकारनी उत्पत्तिनो अभाव छे.

६ † अहिं अनन्तरोपपन्न अने अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको चारे प्रकारना आयुषनो बन्ध करता नथी, केमके ते अवस्थामां तेवा प्रकारना अव्यवस्था अन्तरे सर्व जीवोने आनुपपन्नो बन्ध भवती नथी. पोसाणा आनुपपन्नो तृतीय भागादि बाकी होय ल्यारे आयुषनो बन्ध थाय छे; तेथी परंपरोपपन्न नैरयिको पोसाणा आनुपपन्नो छ मास बाकी होय ल्यारे अने अनन्तरे उत्पन्नो छ मास अने अवस्थथी अनन्तर्गत बाकी होय ल्यारे भवविभक्त तिर्यच अने मनुष्यायुष बांधे छे, ते विवाय वेव अने नारका आनुपपन्नो बन्ध करता नथी-दीप्त.

११. [प्र०] परंपरनिर्गता णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, जाव-देवाउयं पि पकरेंति ।

१२. [प्र०] अणंतरपरंपरअणिग्गया णं भंते ! नेरइया-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव-जो देवाउयं पकरेंति, एवं निरवसेसं जाव-वेमाणिया ।

१३. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोपपन्नगा, परंपरखेदोपपन्नगा, अणंतरपरंपरखेदाणुपपन्नगा ? [उ०] गोयमा ! नेरइया०, एवं एणं अभिलाषेणं तं चेव अत्तारि दंडगा भाणियत्ता । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !'ति जाव-विहरए ।

चौदसमसए पढमो उद्देशो समत्तो ।

परंपरनिर्गत.

११. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरनिर्गत नारको शुं नारकायुष बांधे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुष पण बांधे, यावत्-देवायुष पण बांधे.

अनन्तरपरंपरा-निर्गत.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरपरंपरानिर्गत नारको शुं नारकायुष बांधे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नरकायुष न बांधे, यावद्-देवायुष पण न बांधे. [कारण के अनन्तरपरंपरानिर्गत नारको विग्रहगतिने विषे होय छे अने त्यां आयुषनो बन्ध यत्तो नथी.] ए प्रमाणे समग्र यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

अनन्तरखेदोप-पन्न-पणैरे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको शुं अनन्तरखेदोपपन्न (समयादिना अन्तररहित-प्रथम समये जेओनो दुःखयुक्त उत्पाद छे एवा) छे, परंपरखेदोपपन्न (जेओना खेदयुक्त उत्पादमां वे-त्रण इत्यादि समयो थयेला छे एवा) छे के अनन्तरपरंपरखेदानुपपन्न (जेओनी उत्पत्ति अनन्तर-तुरतज अने परम्पर खेदवडे नथी तेवा) छे? [उ०] हे गौतम ! ए नैरयिको अनन्तरखेदोपपन्न-इत्यादि त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे ए अभिलाषयी पूर्व प्रमाणे *चार दंडको कहेवा 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,' एम कही [भगवान् गौतम] यावद्-विहरे छे.

चतुर्दशशतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

बीओ उद्देशो ।

१. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! उम्मादे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णसे, तंजहा-जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदपणं । तत्थ णं जे से जक्खापसे से णं सुहवेयणतराय च्चेव सुहविमोयणतराय च्चेव । तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदपणं से णं सुहवेयणतराय च्चेव सुहविमोयणतराय च्चेव ।

२. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कतिविहे उम्मादे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णसे, तंजहा-जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदपणं । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णसे, तंजहा-जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स जाव-उदपणं’ ? [उ०] गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिज्जायाय जक्खापसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदपणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा, से तेणट्टेणं जाव-उम्माय ।

३. [प्र०] असुरकुमाराणं भंते ! कतिविहे उम्मादे पण्णसे ? [उ०] एवं जहेव नेरइयाणं, नवरं देवे वा से महि-हीयतराय असुभे पोग्गले पक्खिज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिज्जायाय जक्खापसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा, सेसं तं च्चेव, से तेणट्टेणं जाव-उदपणं, एवं जाव-थणियकुमाराणं । पुढधिकारयाणं जाव-मणुस्साणं एपसिं जहा नेरइयाणं, वाणमंतर-जोहस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारनो उन्माद कद्धो छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारनो उन्माद कद्धो छे, ते आ प्रमाणे-१ यक्षा आवेशरूप, अने २ मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो. तेमां जे यक्षावेशरूप उन्माद छे ते सुखपूर्वक वेदी शकाय अने सुखपूर्वक मूकी शकाय तेवो छे, अने तेमां जे मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो उन्माद छे ते दुःखपूर्वक वेदवा लायक अने दुःखपूर्वक मूकी शकाय तेवो छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनो उन्माद कद्धो छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने बे प्रकारनो उन्माद होय छे, ते आ प्रमाणे-१ यक्षावेशरूप उन्माद अने २ मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो उन्माद. [प्र०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुथी कहो छो के, ‘नैरयिकोने एक यक्षावेशरूप अने बीजो मोहनीयकर्मजन्म एम बे प्रकारनो उन्माद होय छे’ ? [उ०] हे गौतम ! देव ते नैरयिकना उपर अशुभ पुद्गलोने प्रक्षेप करे अने ते अशुभ पुद्गलोना प्रक्षेपथी ते नारक यक्षावेशरूप उन्मादने प्राप्त थाय; अने मोहनीय कर्मना उदयथी मोहनीयजन्म उन्मादने पामे; माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावत्-‘मोहनीयजन्म उन्माद कद्धो छे.’

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटला प्रकारनो उन्माद कद्धो छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकनी पेठे यावत् बे प्रकारनो उन्माद कद्धो छे. परन्तु विशेष ए छे के तेनाथी महर्दिक-महासामर्थ्यवाळो देव ते [असुरकुमारो उपर] अशुभ पुद्गलोने प्रक्षेप करे, अने ते अशुभ पुद्गलोना प्रक्षेप करवाथी ते यक्षावेशरूप उन्मादने प्राप्त थाय. अथवा मोहनीयकर्मना उदयथी मोहनीयजन्म उन्मादने प्राप्त थाय. बाकी बंधुं पूर्वप्रमाणे ति हेतुथी यावत्-‘मोहनीयजन्म उन्माद कद्धो छे’ स्यां सुची जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्-रू.नेतकुमार सुची जाणवुं. पृथिवीका-विकयी आरंभी यावत् मनुष्योने नैरयिकनी पेठे जाणवुं. जेम असुरकुमारोने कद्धुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण कहवुं.

१. उन्माद-एव चेतनानो (विवेकज्ञाननो) ग्रंथ, तेना बे प्रकार छे-१-यक्ष-देवविशेषना प्रवेश करवाथी चेतनानो ग्रंथ थाय ते यक्षावेशरूप उन्माद, अने मोहनीयकर्मना उदयथी आत्मा पारमार्थिक सद्-असद्वा विवेकनी ग्रंथ थाय ते मोहनीयजन्म उन्माद. २ मोहनीयजन्म उन्मादना बे मेद छे- १ शिष्यात्ममोहनीयजन्म अने २ चारित्रमोहनीय जन्म. शिष्यात्ममोहनीयना उदयथी प्राणी अतत्त्वने तत्त्व माने अने तत्त्वने अतत्त्व माने छे; चारित्रमोहनीयना उदयथी विचयावितुं स्वरूप जाणतां छतां वक्क तेमां अज्ञानीनी पेठे वतं छे. अथवा वेदमोहनीयना उदयथी हिताहिततुं भाग भूली उन्माद थाय छे. टीका.

उन्मादना प्रकार.

नारकोनो उन्माद.

नारकोने शा हे-
तुथी उन्माद
होथ ?

असुरकुमारोने
उन्माद.

४. [प्र०] अत्थि णं मंते ! पञ्जमे कालवासी बुद्धिकायं पकरेति ? [उ०] इंता अत्थि ।

५. [प्र०] जाहे णं मंते ! सक्के देविदे देवराया बुद्धिकायं काउकामे भवति से कहमियाणि पकरेति ? [उ०] गोयमा ! ताहे खेव णं से सक्के देविदे देवराया अम्भितरपरिसाप देवे सहावेति, तप णं ते अम्भितरपरिसगा देवा सहाविया समाणा मज्झिमपरिसप देवे सहावेति, तप णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सहाविया समाणा बाहिरपरिसप देवे सहावेति, तप णं ते बाहिरपरिसगा देवा सहाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सहावेति, तप णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सहाविया समाणा आम्भोगिय देवे सहावेति, तप णं ते जाव-सहाविया समाणा बुद्धिकाय देवे सहावेति, तप णं ते बुद्धिकाय देवा सहाविया समाणा बुद्धिकायं पकरेति, एवं खलु गोयमा ! सक्के देविदे देवराया बुद्धिकायं पकरेति ।

६. [प्र०] अत्थि णं मंते ! असुरकुमारा वि देवा बुद्धिकायं पकरेति ? [उ०] इंता अत्थि । [प्र०] किपत्तियं णं मंते ! असुरकुमारा देवा बुद्धिकायं पकरेति ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंता एपसि णं जम्मणमहिमासु वा निक्खमणमहिमासु वा णाणुप्पायमहिमासु वा परिनिष्ठाणमहिमासु वा एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा वि देवा बुद्धिकायं पकरेति, एवं नागकुमारा वि, एवं जाव-थणियकुमारा । बाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं खेव ।

७. [प्र०] जाहे णं मंते ! ईसाणे देविदे देवराया तमुक्कायं काउकामे भवति से कहमियाणि पकरेति ? [उ०] गोयमा ! ताहे खेव णं से ईसाणे देविदे देवराया अम्भितरपरिसाप देवे सहावेति, तप णं ते अम्भितरपरिसगा देवा सहाविया समाणा एवं जहेव सक्कस्स जाव-तप णं ते आम्भोगिया देवा सहाविया समाणा तमुक्काय देवे सहावेति, तप णं ते तमुक्काय देवा सहाविया समाणा तमुक्कायं पकरेति, एवं खलु गोयमा ! ईसाणे देविदे देवराया तमुक्कायं पकरेति ।

८. [प्र०] अत्थि णं मंते ! असुरकुमारा वि देवा तमुक्कायं पकरेति ? [उ०] इंता अत्थि । [प्र०] किं पत्तियं णं मंते ! असुरकुमारा देवा तमुक्कायं पकरेति ? [उ०] गोयमा ! किडा-रतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणद्वयाप वा गुत्तीसारक्कणहेउं वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणद्वयाप, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा वि देवा तमुक्कायं पकरेति, एवं जाव-वेमाणिया । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !' ति जाव-विहर ।

वीओ उद्देशो समचो.

इन्द्र वृष्टि करे ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के काले वरसनार पर्जन्य (मिष) वृष्टिकाय (जलसग्रह) ने वरसावे ? [अथवा जिन जन्ममहोत्सवादिकाले वृष्टि करनार पर्जन्य-इन्द्र वृष्टि करे ? [उ०] हा, गौतम ! वृष्टि करे.

इन्द्र वृष्टि केवी रीते करे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे देवेन्द्र अने देवनो राजा शक्र वृष्टि करवानी इच्छावाळो होय त्यारे ते वृष्टि केवी रीते करे ? [उ०] हे गौतम ! [ज्यारे ते वृष्टि करवानी इच्छावाळो होय] त्यारे देवेन्द्र अने देवनो राजा शक्र अभ्यन्तर परिपदना देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते अभ्यन्तर परिपदना देवो मध्यम परिपदना देवोने बोलावे छे, मध्यम परिपदना बोलावेला ते देवो बहारनी परिपदना देवोने बोलावे छे, त्यार पछी बहारनी परिपदना बोलावेला ते देवो बहारबहारना देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते बहार बहारना देवो आभियोगिक देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते आभियोगिक देवो वृष्टिकायिक (वृष्टि करनारा) देवोने बोलावे छे, पछी ते बोलावेला वृष्टिकायिक देवो वृष्टि करे छे. ए प्रमाणे हे गौतम ! देवेन्द्र देवनो राजा शक्र वृष्टिकाय करे छे.

शुं असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो पण शुं वृष्टि करे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो शा हेतुथी वृष्टि करे छे ? [उ०] हे गौतम ! जे आ अरिहंत भगवंतो छे, एओना जन्मोत्सवनिमित्ते, दीक्षोत्सवनिमित्ते, ज्ञानोत्पत्तिनिमित्ते अने निर्वाणना उत्सवनिमित्ते ए प्रमाणे असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे. ए प्रमाणे नागकुमारो अने यावत्-स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. वानव्यंतर ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण ए प्रमाणे जाणवुं.

ईशानेन्द्रादि तमस्काय करे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र जने देवना राजा ईशान ज्यारे तमस्कायने करवाने इच्छे त्यारे ते तेने केवी रीते करे ? [उ] हे गौतम ! त्यारे देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान अभ्यन्तर परिपदना देवोने बोलावे छे, त्यार बाद बोलावेला ते अभ्यन्तर परिपदना देवो-इत्यादि पूर्वोक्त वधुं शक्रनी पंटे यावत्-बोलावेला ते आभियोगिक देवो तमस्कायिक (तमस्काय करनार) देवोने बोलावे छे, अने त्यार पछी बोलावेला ते तमस्कायिक देवो तमस्काय करे छे. हे गौतम ! ए प्रमाणे देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान तमस्काय करे छे.

असुरकुमार तमस्काय करे ?
शा हेतुथी तमस्काय करे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के असुरकुमार देवो पण तमस्कायने करे ? [उ०] हे गौतम ! हा, करे छे [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो शा हेतुथी तमस्काय करे छे ? [उ०] हे गौतम ! क्रीडा के रतिनिमित्ते, शत्रुने मोहपमाडवा निमित्ते, छूपावेला द्रव्यने साक्ष्यवा निमित्ते अथवा पोताना शरीरने टांकी देवा निमित्ते हे गौतम ! ते असुरकुमार देवो पण तमस्काय करे छे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावत् [भगवान् गौतम] विहरे छे.

चतुर्दशशतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

तईओ उद्देशो ।

१. देवे णं भंते ! महाकाय महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्जेणं वीइवपज्जा ? [उ०] गोयमा ! अत्येगत्तिप वीइवपज्जा, अत्येगत्तिप नो वीइवपज्जा । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—'अत्येगत्तिप वीइवपज्जा, अत्येगत्तिप नो वीइवपज्जा' ? [उ०] गोयमा ! दुविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा—मायीमिच्छादिट्ठीउववज्जा य अमायीसम्मदिट्ठीउववज्जा य, तत्थ णं जे से मायीमिच्छादिट्ठीउववज्जा देवे से णं अणगारं भावियप्पणं पासइ, पासित्ता नो वंदति, नो नमंसति, नो सक्कारेति, नो सम्माणेइ, नो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं जाव—पज्जुवासति, से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्जेणं वीइवपज्जा । तत्थ णं जे से अमायीसम्मदिट्ठीउववज्जा देवे से णं अणगारं भावियप्पणं पासइ, पासित्ता वंदति, नमंसति, जाव—पज्जुवासति । से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्जेणं नो वीयीवपज्जा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जाव—नो वीइवपज्जा ।

२. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते ! महाकाये महासरीरे—? [उ०] एवं चेष, एवं देवदंडओ भाणियत्तो जाव—वेमाणिण ।

३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं सक्कारे ति वा, सम्माणे ति वा, किइकम्मे इ वा अब्भुट्टाणे इ वा, अंजलिपग्गहे ति वा, आसणाभिग्गहे ति वा, आसणाणुप्पदाणे ति वा, इंतस्स पच्चुग्गच्छणया, टियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया ? [उ०] नो तिणट्टे समट्टे ।

४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारे ति वा, सम्माणे ति वा, जाव—पडिसंसाहणया वा ? [उ०] इंता अत्थि, एवं जाव—यणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं जाव—चउरिइयाणं एएंसि जहा नेरइयाणं ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! महाकाय—मोटा परिवारवाळो अने मोटा शरीरवाळो देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! केटला एक देव जाय, अने केटला एक देव न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुथी कहो छो के, 'केटला एक देव जाय अने केटला एक न जाय' ? [उ०] हे गौतम ! देवो बे प्रकारना कल्ला छे, ते आ प्रमाणे—१ मायीमिध्यादृष्टिउपपन्न अने २ अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्न, तेमां जे मायीमिध्यादृष्टिउपपन्न देवो छे ते भावितात्मा अनगारने जुए छे अने जोइने वांदतो नथी, नमतो नथी, सक्कार करतो नथी, सन्मान करतो नथी, अने कल्याणरूप अने मंगलभूत देवचैत्यनी पेटे यावत्—तेनी पर्युपासना करतो नथी, तेथी ते देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय. तेमां जे अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्न देवो छे, ते भावितात्मा अनगारने जुए छे, जोइने वांदे छे, नमे छे, यावत्—तेनी पर्युपासना करे छे, तेथी ते भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने न जाय, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कल्लुं छे के, 'कोइ जाय अने कोइ न जाय.'

२. [प्र०] हे भगवन् ! घणा परिवारवाळा अने महाशरीरवाळा असुरकुमारो [भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय ?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे "देवदंडक यावत्—बैमानिको सुधी कहेवो.

३. [प्र०] हे भगवन् ! नारकोमां सक्कार (विनय करवाने योग्य व्यक्तिको आदर करवो), सन्मान (तथाविध सेवा करवी) कृति-कर्म (वंदन), अभ्युत्थान (गौरव करवाने लायक व्यक्तिके जोता आसननो त्याग करी उभा थवुं), अञ्जलिकरण (बने हाथ जोडवा), आसनाभिग्रह (आसन आपवुं), आसनानुप्रदान—गौरवने योग्य व्यक्तिके आसनने एक स्थानेथी बने स्थाने लाववुं, गौरव योग्य मनुष्यनी सामा जवुं, बेठेळनी सेवा करवी, अने जाय स्यारे तेनी पाळळ जवुं—इत्यादि विनय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ—युक्त नथी. अर्थात्—नैरयिकोने सक्कारादि विनय नथी.

४. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारोमां सक्कार, सन्मान यावत्—जनारनी पाळळ जवुं—वगैरे विनय छे ? [उ०] हे गौतम ! हा छे. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. जेम नैरयिकोने कल्लुं तेम पृथिवीकायिकथी आरंभी यावत्—चतुरिन्द्रिय जीवो संबन्धे पण जाणवुं.

महाकाय देव भा-
वितात्मा अनगारनी
वच्चे थईने जाय ?

महाकाय असुर-
कुमार भावितात्मा
अनगारनी वच्चे
थईने जाय ?
नारकोमां सक्कारादि
विनय होय छे ?

असुरकुमारोमां
सक्कारादि विनय-

१ * नारक अने पृथिवीकायिकथी जीवोने उपरना कर्षवो अर्धभव होवावी अने मात्र देवोने अर्धभव होवावी आ.प्रसंगे मात्र देवदंडक कहेवो छे—वी.प.

५. [प्र०] अस्थि णं भंते ! पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं सक्करे इ वा, जाव-पडिसंसाहणया वा ? [उ०] इंता अस्थि, जो खेव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा । मणुस्साणं जाव-वेमाणियाणं जहा असुरकुमारणं ।
६. [प्र०] अप्पहीए णं भंते ! देवे महद्धियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवएज्जा ? [उ०] नो तिण्ठे सम्भे ।
७. [प्र०] महद्धीए णं भंते ! देवे समद्धियस्स देवस्स मज्झमज्जेणं वीइवएज्जा ? [उ०] णो इण्ठे सम्भे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ।
८. [प्र०] से णं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू, अणक्कमित्ता पभू ? [उ०] गोयमा । अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू ।
९. [प्र०] से णं भंते ! किं पुंदिं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीयीवएज्जा, पुंदिं वीइवएज्जा पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा ? [उ०] एवं एएण अभिलावेणं जहा वसमसए आइहीउइसए तहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणियथा जाव-‘महद्धिया वेमाणिणी अप्पद्धियाए वेमाणिणीए०’ ।
१०. [प्र०] रथणप्पमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पक्खणुम्भवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! अणिट्ठं, जाव-अमणामं, एवं जाव-अहेसत्तमापुढविनेरइया, एवं वेदणापरिणामं, एवं जहा जीवाभिगमे वितिए नेरइयउइसए जाव-[प्र०] अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं परिग्गहसत्तापरिणामं पक्खणुम्भवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! अणिट्ठं, जाव-अमणामं । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

चौदसमसए तईओ उइसो समत्तो ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकोमां सत्कार, यावत्-जनारनी पाछळ वळवा जवुं-इत्यादि विनय होय छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, होय छे. परन्तु आसनाभिग्रह-आसन आपवुं, आसनानुप्रदान-आसनने एक स्थानथी बीजे स्थानके लाववुं-इत्यादि विनय होतो नथी. मनुष्यो अने यावद्-वैमानिकोने जेम असुरकुमारने कथुं तेम कहेवुं.
६. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पऋद्धिवाळो देव महाऋद्धिवाळो देवनी वच्चे थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नथी.
७. [प्र०] हे भगवन् ! समानऋद्धिवाळो देव समानऋद्धिवाळो देवनी वच्चे थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी. पण जो ते [समानऋद्धिवाळो देव] प्रमत्त होय तो तेनी वच्चे थईने जाय.
८. [प्र०] हे भगवन् ! (वच्चे थईने जनार ते देव) शुं शक्खथी प्रहार करीने जवा समर्थ थाय के प्रहार कर्या शिवाय जवा समर्थ थाय ? [उ०] हे गौतम ! शक्खप्रहार करीने जवा समर्थ थाय, पण प्रहार कर्या शिवाय जवा समर्थ न थाय.
९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [देव] प्रथम शक्खप्रहार करे अने पछी जाय के पहेलां जाय अने पछी शक्खप्रहार करे ? [उ०] इत्यादि आ प्रकारना अभिलापथी *दशम शतकना आइडिअनामे (आत्मर्दिक) उद्देशकमां कइया प्रमाणे समप्रपणं चार दंडको (इण्ण आलापक-सहित) कहेया, यावद् ‘भोटी ऋद्धिवाळी वैमानिक देवी अल्पऋद्धिवाळी वैमानिक देवीनी वच्चे थईने जाय.’
१०. [प्र०] हे भगवन् ! रत्तप्रभापृथिवीना नारको केवा प्रकारना पुद्दलपरिणामने अनुभवता विहरे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अनिष्ट, यावत्-मनने नहि गमता पुद्दलपरिणामने अनुभवता विहरे छे. ए प्रमाणे यावत्-सातमी नरकपृथिवीना नारको सुधी जाणवुं. ए रीते यावत्-वेदनापरिणामने पण अनुभवे छे-इत्यादि जेम जीवाभिगम सूत्रना बीजा नैरयिक उद्देशकमां कथुं छे ते प्रमाणे अहिं कहेवुं. यावत्-[प्र०] हे भगवन् ! सातमी नरकपृथिवीना नैरयिको केवा प्रकारना परिग्रहसंज्ञापरिणामने अनुभवे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अनिष्ट, यावत्-मनने नहि गमता परिग्रहसंज्ञापरिणामनो अनुभव करता विहरे छे. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’-एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

चतुर्दशशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

९ * भग० खं० ३ श० १० उ० ३ पृ० १९३.

† अल्पर्दिक अने महर्दिकनो प्रथम आलापक, समर्दिक अने समर्दिकनो बीजो आलापक, तथा महर्दिक अने अल्पर्दिकनो त्रीजो आलापक. तेमां अल्पर्दिक अने महर्दिकनो आलापक तथा समर्दिकालापक-ए वे आलापक साक्षात् कइया छे, केवल समर्दिकालापकने अन्ते बाकीना सूत्रनो अर्थ वा प्रमाथे जाणवो-“प्रथम शक्खथी हणीने जाय, पण पूर्वे जईने पछी न हणे. हे भगवन् ! महर्दिक देव अल्पर्दिक देवना मध्यमां थईने जाय ! हा जाव. ते महर्दिक देव शक्खथी हणीने जवा समर्थ होय के हण्या शिवाय जवा समर्थ होय ? हे गौतम ! हणीने पण जवा समर्थ होय अने हण्या शिवाय पण जवा समर्थ होय, हे भगवन् ! पूर्वे शक्खवचे हणीने पछी जाय के पूर्वे जईने पछी हणे ? हे गौतम ! पूर्वे शक्खवचे हणीने पछी जाय, अथवा पूर्वे जईने पछी शक्खवचे हणे.”

‡ १ देव अने देवनो प्रथमदंडक, २ देव अने देवी संबन्धे बीजो दंडक, ३ देवी अने देव संबन्धे त्रीजो दंडक, अने ४ देवी अने देवी संबन्धे चोबी दंडक-ए रीते चार दंडक जाणवा.

१० † नैरयिकसंबन्धे इकीकत जीवाभिगमसूत्र प्रति० ३ उ० १-२-३ प० ८९-१२९ सुधीयां छे, परन्तु उपरना सूत्रने कगतो थोको प्राक्क प्रति० ३ नैरयिक उ० ३ प० १२९ मां छे.

पंचेन्द्रिय तिर्य-
चोमां सत्कारादि
विनय होय छे ?
अल्पऋद्धिवाळो
देव महाऋद्धिवाळो
देवनी वच्चे थईने
जाय ?
समानऋद्धिवाळो
देव समानऋद्धि-
वाळो देवनी वच्चे
थईने जाय ?
वच्चे थईने जनार देव
शक्खप्रहार करीने
जाय के कर्मा शिवाय
जाय ?
प्रथम शक्खप्रहार
कर्या पछी जाय के
गया पछी शक्खप्र-
हार करे ?
नारको केवा प्रकार-
ना पुद्दलपरि-
णामने अनुभवे छे ?

चउत्थो उद्देशो ।

१. [प्र०] एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी, समयं अलुक्खी, समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुं णं करणेणं अणेगवणं अणेगरूवं परिणामं परिणमति ? अह से परिणामे निज्जिणे भवति, तओ पच्छा एगवणे एगरूवे सिया ? [उ०] इता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतं तं खेव जाव-एगरूवे सिया ।

२. [प्र०] एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पणं सासयं समयं ? [उ०] एवं खेव, एवं अणागयमणंतं पि ।

३. [प्र०] एस णं भंते ! खंधे तीतमणंतं ? [उ०] एवं खेव, खंधे वि जहा पोग्गले ।

४. [प्र०] एस णं भंते ! जीवे तीतमणंतं सासयं समयं दुक्खी, समयं अदुक्खी, समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुं णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूयं परिणामं परिणमद्द ? अह से वेयणिजे निज्जिणे भवति, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ? [उ०] इता गोयमा ! एस णं जीवे जाव-एगभूए सिया, एवं पडुप्पणं सासयं समयं, एवं अणागयमणंतं सासयं समयं ।

चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! आ पुद्गल [परमाणु के स्कन्ध] अनन्त-अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विषे एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, एक समय सुधी अरूक्ष-स्निग्धस्पर्शवाळो, तथा एक समय सुधी रूक्ष अने स्निग्ध-बन्ने प्रकारना स्पर्शवाळो हतो ? अने पूर्वे करण-प्रयोगकरण अने विस्त्रसाकरणथी अनेक वर्णवाळा अने [अनेक गन्ध, रस, स्पर्श अने संस्थानना मेदथी] अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? [परमाणुनो भिन्न भिन्न समये अनेक वर्णादिरूपे परिणाम थाय छे, अने स्कन्धनो एकसमये अनेक वर्णादिरूपे परिणाम थाय छे.] हवे ते अनेक वर्णादिपरिणाम क्षीण थाय स्यार पछी ते पुद्गल एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो हतो ? [उ०] हा, गौतम ! आ पुद्गल अतीतकालने विषे-इत्यादि यावत्-‘एकरूपवाळो हतो’-त्यां सुधी समग्र पाठ कहेवो.

पुद्गलपरिणाम-
अतीतकालने विषे
एक समयमां पुद्-
गलनो परिणाम.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आ पुद्गल (परमाणु के स्कन्ध) शाश्वत वर्तमान कालने विषे (एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, स्निग्ध-स्पर्शवाळो, तथा स्निग्ध अने रूक्ष-बन्ने स्पर्शवाळो होय ? अने प्रयोग अने विस्त्रसाथी अनेक वर्णादिरूपे परिणत थाय ? ते परिणामना क्षीण थया बाद एकरूपवाळो अने एकरूपवाळो होय ?) [उ०] पूर्वप्रमाणे उत्तर जाणवो, ए प्रमाणे अनागतकाल संबन्धे पण जाणवुं.

वर्तमानकाले
पुद्गलपरिणाम-
अनागतकाल.

३. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्त-अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विषे पुद्गलस्कन्ध (एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, स्निग्ध-स्पर्शवाळो तथा स्निग्ध अने रूक्ष-ए बन्ने स्पर्शवाळो हतो ? अने अनेकवर्ण अने अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? पछी ते परिणामना क्षीण थयाथी तेनो एकरूपवाळो अने एकरूपवाळो परिणाम थयो हतो ?) [उ०] ए प्रमाणे जेम पुद्गलसंबन्धे कछुं तेम स्कन्धसंबन्धे पण जाणवुं.

पुद्गलस्कन्ध.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव अनन्त-अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विषे एक समय (दुःखना हेतुथी) दुःखी, एक समय (सुखना हेतुथी) अदुःखी-सुखी, तथा *एक समय [सुख अने दुःखना हेतुथी] दुःखी के सुखी हतो ? अने पूर्वे करणथी-कालस्व-भावादि कारणवडे शुभाशुभकर्मबंधना हेतुभूत क्रियाथी-अनेक प्रकारना सुखिपणुं अने दुःखिपणुं-इत्यादि भाववाळा, अने अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? स्यारपछी वैदवा लायक ज्ञानावरणादि कर्मनी निर्जरा थया बाद जीव एकभाववाळो अने एकरूप-वाळो हतो ? [उ०] हा, गौतम ! आ जीव यावत्-एक रूपवाळो हतो. ए प्रमाणे शाश्वत एवा वर्तमानसमयसंबन्धे तथा अनन्त अने शाश्वत भविष्यकाल संबन्धे पण जाणवुं.

अतीत, वर्तमान
अने अनागतकाले
जीवपरिणाम.

* सुख अने दुःखना कारणो एकसमये विद्यमान होय छे, परन्तु सुख अने दुःखनं वेएन एकसमये होवुं नथी, कारण के जीवने एकसमये एकव-
रूपवाळो होय छे.

५. [प्र०] परमाणुयोगले णं भंते ! किं सासय, असासय ? [उ०] गोयमा ! सिय सासय, सिय असासय । [उ०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धइ—‘सिय सासय, सिय असासय’ ? [उ०] गोयमा ! दहट्टयाय सासय, वचपज्जवेहिं, जाव-फासपज्जवेहिं असासय, से तेणट्टेणं जाव—सिय सासय, सिय असासय ।

६. [प्र०] परमाणुयोगले णं भंते ! किं चरिमे, अचरिमे ? [उ०] गोयमा ! द्वादेसेणं नो चरिमे, अचरिमे, कोसादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, कालादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, भावादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।

७. [प्र०] कइविहे णं भंते ! परिणामे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! जुविहे परिणामे पण्णसे, तंजहा—जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य । एवं परिणामपयं निरवसेसं भाणियच्चं । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते !’ सि जाव—विहरति ।

चौदसमसए षडत्थो उद्देशो समसो ।

परमाणुपुद्गल शाश्वत के अशाश्वत ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! ते कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. [प्र०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुथी कहो छो के ‘कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे’ ? [उ०] हे गौतम ! द्रव्यार्थरूपे ते परमाणुपुद्गल शाश्वत छे, अने वर्णपर्यायवडे यावत्—स्पर्शपर्यायवडे अशाश्वत छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कथुं छे के ‘परमाणुपुद्गल कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे.’

परमाणु चरम के अचरम ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गल चरम छे के अचरम छे ? [उ०] हे गौतम ! (परमाणुपुद्गल) द्रव्यनी अपेक्षाए *चरम नथी, पण अचरम छे. क्षेत्रादेशथी कदाचित् चरम छे अने कदाचित् अचरम छे. कालादेशथी कदाचित् चरम छे अने कदाचित् अचरम छे. भावादेशथी कथंचित् चरम अने कथंचित् अचरम छे.

सामान्य परिणाम.

७. [प्र०] हे भगवन् ! परिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! परिणाम बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—जीवपरिणाम अने अजीवपरिणाम. ए प्रमाणे अहिं [प्रज्ञापना सूत्रनुं] परिणामपद संपूर्ण कहेवुं. ‘हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे’—एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

चतुर्दशशतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

६ * जे परमाणु विवक्षित परिणामथी रहित थईने पुनः ते परिणामने पामसे नहि ते परमाणु ते परिणामनी अपेक्षाए चरम कहेवाय छे, अने जे परमाणु पुनः ते परिणामने पामसे ते अपेक्षाए ते अचरम कहेवाय छे. द्रव्यनी अपेक्षाए परमाणु चरम नथी, पण अचरम छे, कारणके द्रव्यथी-परमाणुपरिणामथी रहित थयेलो परमाणु संघातपरिणामने पामी कालान्तरे पुनः परमाणुपरिणामने पामसे. क्षेत्रनी अपेक्षाए परमाणु कथंचित् चरम अने कथंचित् अचरम छे, ते आ प्रमाणे—जे क्षेत्रमा केवलज्ञानी समुद्घातने प्राप्त थयेला छे, अने त्यां जे परमाणु रहेलो छे, हवे समुद्घातने प्राप्त थयेला तेकेवलज्ञानीना संबन्धविशिष्ट ते परमाणु कोइ पण समये ते क्षेत्रनो आश्रय नहि करे, केमके ते केवलीनुं निर्वाण थवाथी ते क्षेत्रमां पुनः कदि आबधाना नथी, माटे ए प्रमाणे क्षेत्रथी परमाणु चरम कहेवाय छे, विशेषणरहित क्षेत्रनी अपेक्षाए परमाणु फरी ते क्षेत्रमां भवगाढ थसे, माटे ‘अचरम’ कहेवाय छे. कालनी अपेक्षाए कथंचित् चरम छे अने कथंचित् अचरम छे, ते आ प्रमाणे—जे पूर्वाहादि कालने विषे जे केवलीए समुद्घात कयों, ते कालने विषे जे परमाणु रहेलो छे ते परमाणु ते केवलिसमुद्घातविशिष्ट ते कालने कदि पण प्राप्त नहि करे, कारण के ते केवलज्ञानी मोक्षे जवाथी पुनः समुद्घात करवाना नथी, माटे तेनी अपेक्षाए कालथी चरम, अने विशेषणरहित कालनी अपेक्षाए परमाणु अचरम छे. भावनी अपेक्षाए परमाणु चरम अने अचरम छे. ते आ प्रमाणे—केवलिसमुद्घातने अवसरे जे परमाणु वर्णादिभावविशेषने प्राप्त थयो हतो ते परमाणु विवक्षित केवलिसमुद्घातविशिष्ट वर्णादिपरिणामनी अपेक्षाए चरम छे, कारण के केवलज्ञानीना निर्वाण थवाथी पुनः ते परमाणु विशिष्ट परिणामने प्राप्त नहि थाय. आ व्याख्यान पूर्णिकारना मतने अनुसरी करेछं छे.—टीका.

७ † द्रव्यनी अवस्थान्तरप्राप्ति ते परिणाम, कथुं छे के—‘परिणाम-अर्थांतरप्राप्ति, द्रव्यनुं सर्वथा एकरूपे अवस्थित रहेवुं, तेमज तेनो सर्वथा नाश थयो ते परिणाम नथी.’ तेमां जीवपरिणाम दस प्रकारनो छे—१ गति, २ इन्द्रिय, ३ कषाय, ४ लेइया, ५ योग, ६ उपयोग, ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र्य, अवे १० वेद. अजीवपरिणाम पण दस प्रकारनो छे—१ बन्धन, २ गति, ३ संस्थान, ४ मेद, ५ वर्ण, ६ गन्ध, ७ रस, ८ स्पर्श, ९ अनुचक्षण अने १० वाचपरिणाम.—टीका.

पंचमो उद्देशो ।

१. [प्र०] नेरइए णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवपज्जा ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवपज्जा, अत्थेग-
तिए नो वीइवपज्जा । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धा- 'अत्थेगइए वीइवपज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवपज्जा ?' [उ०] गोयमा !
नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य, तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए
नेरतिए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवपज्जा । [प्र०] से णं तत्थ श्रियाएज्जा ? [उ०] षो तिणट्टे समट्टे, नो खलु तत्थ
सत्थं कमइ । तत्थ णं जे से अविग्गहगइसमावन्नए नेरइए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं णो वीइवपज्जा, से तेणट्टेणं
जाव- 'नो वीइवपज्जा' ।

२. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते ! अगणिकायस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवपज्जा, अत्थेगतिए नो वीइव-
पज्जा । [प्र०] से केणट्टेणं जाव-नो वीइवपज्जा ? [उ०] गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-विग्गहगइसमावन्नगा
य अविग्गहगइसमावन्नगा य । तत्थ णं जे से विग्गहगइसमावन्नए असुरकुमारे से णं-एवं जहेव नेरतिए जाव- 'कमति' । तत्थ
णं जे से अविग्गहगइसमावन्नए असुरकुमारे से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवपज्जा, अत्थेगतिए नो वीइ-

पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! नारक अग्निकायना मध्यभागमां थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक नारक न
जाय. [प्र०] ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के, 'कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक नारक न जाय' ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको
बे प्रकारना कइया छे, ते आ प्रमाणे-विप्रहगतिने प्राप्त थयेला, अने अविप्रहगतिसमापन्न-उत्पत्तिकेने प्राप्त थयेला. तेमां जे
विप्रहगतिने प्राप्त थयेल नारक छे ते अग्निकायना मध्यमां थईने जाय. [प्र०] ते त्यां बळे ? [उ०] आ अर्थ यथार्थ नथी, केमके तेने *अग्नि-
रूप शस्त्र असर करतुं नथी, तेमां जे अविप्रहगतिने प्राप्त थयेल नारक छे ते अग्निकायनी मध्यमां थईने न जाय. माटे हे गौतम ! ते
हेतुथी एम कइथुं के, 'कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक न जाय'

नारक अग्निकायना
मध्यभागमां यमज
करे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो अग्निकायनी वच्चे थईने जाय ?-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोइ एक (असुरकुमार) जाय
अने कोइ एक न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम आप शा हेतुथी कहो छो के, 'कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय' ? [उ०] हे गौतम !
असुरकुमारो बे प्रकारना वइया छे, ते आ प्रमाणे-विप्रहगतिने प्राप्त थयेला अने अविप्रहगतिने प्राप्त थयेला. तेमां जे विप्रहगतिने प्राप्त
असुरकुमारो छे-इत्यादि बंधुं नारकनी पेठे जाणवुं. यावत्- 'तेने (अग्नि वगरे) शस्त्र असर करतुं नथी.' तेमां जे अविप्रहगति प्राप्त असुर-
कुमारो छे तेमांना कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] जे अग्नि वच्चे थईने जाय ते त्यां बळे ? [उ०] ए

असुरकुमारो.

१ * विप्रहगतिने प्राप्त थयेलो जीव कार्मणकारीरयुक्त होवाथी अने ते सूक्ष्म होवाथी तेने अग्निवगरे शस्त्र असर करतुं नथी.-टीका.

† अविप्रहगतिसमापन्न-उत्पत्ति क्षेत्रने प्राप्त थयेलो नारक समजवो, 'परन्तु ऋतुगतिने प्राप्त थयेलो'-ए अर्थ अहिं विवक्षित नथी, कारण के तेनो
अहिं अधिकार नथी, उत्पत्तिकेने प्राप्त थयेलो नारक अग्निकाय मध्ये थईने जतो नथी, केमके नारक क्षेत्रने विषे बादर अग्निकायनो अभाव छे, अने मनु-
ष्यक्षेत्रने विषेज बादर अग्निकायनो सद्भाव छे.-टीका.

२ † विप्रहगति प्राप्त असुरकुमार विप्रहगति प्राप्त नारकनी पेठे जाणवो, अविप्रहगति प्राप्त-उत्पत्तिकेने प्राप्त थयेल असुरकुमार, के जे मनुष्यलोकमां
आवे ते अग्निनी वच्चे थईने जाय, जे (मनुष्यलोकमां) न आवे ते अग्निकायनी वच्चे थईने न जाय, जे वच्चे थईने जाय छे ते पण बळे नहि, कारण के कै-
फिय वरीर सूक्ष्म छे अने तेनी गति अति सूक्ष्म छे.-टीका.

वपञ्जा । [प्र०] जे णं वीथीवपञ्जा से णं तत्थ शियापञ्जा ? [उ०] नो तिण्ढे सम्ढे, नो कल्लु तत्थ सत्थं कमत्ति, से तेण्ढेणं, एवं-जाव थणियकुमारे । एग्गिदिया जहा नेरइया ।

३. [प्र०] बेइदिया णं मंते ! अगणिकायस्स मज्झमज्जेणं ? [उ०] जहा असुरकुमारे तहा बेइदियवि, नवरं-[प्र०] जे णं वीथीवपञ्जा से णं तत्थ शियापञ्जा ? [उ०] इंता शियापञ्जा, सेसं तं चेष, एवं जाव-चउरिदिय ।

४. [प्र०] पंचिदियतिरिक्खजोणिय णं मंते ! अगणिकाय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्येगतिप वीइवपञ्जा, अत्येगतिप नो वीइवपञ्जा । [प्र०] से केण्ढेणं ? [उ०] गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-विग्गहगत्तिसमा-वन्नगा य अविग्गहगत्तिसमावन्नगा य । विग्गहगत्तिसमावन्नप जहेव नेरइय, जाव-'नो कल्लु तत्थ सत्थं कमत्ति' । अविग्गहगत्तिसमावन्नगा पंचिदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-इत्थिप्यत्ता य अणित्थिप्यत्ता य । तत्थ णं जे से इत्थिप्यत्ते पंचिदिय-तिरिक्खजोणिय से णं अत्येगत्तप अगणिकायस्स मज्झमज्जेणं वीथीवपञ्जा, अत्येगत्तप नो वीथीवपञ्जा । [प्र०] जे णं वीथीव-पञ्जा से णं तत्थ शियापञ्जा ? [उ०] नो तिण्ढे सम्ढे, नो कल्लु तत्थ सत्थं कमत्ति । तत्थ णं जे से अणित्थिप्यत्ते पंचिदिय-तिरिक्खजोणिय से णं अत्येगत्तप अगणिकायस्स मज्झमज्जेणं वीथीवपञ्जा, अत्येगत्तप नो वीइवपञ्जा । [प्र०] जे णं वीथी-वपञ्जा से णं तत्थ शियापञ्जा ? [उ०] इंता शियापञ्जा, से तेण्ढेणं जाव-'नो वीथीवपञ्जा' एवं मणुस्से वि । वाणमंतर-जो-इसिय-वेमाणिय जहा असुरकुमारे ।

५. नेरतिया व्स ठाणां पच्चणुम्मवमाणा विहरंति, तंजहा-१ अणिट्ठा सहा, २ अणिट्ठा रूवा, ३ अणिट्ठा गंधा, ४ अणिट्ठा रसा, ५ अणिट्ठा फासा, ६ अणिट्ठा गती, ७ अणिट्ठा ठिती, ८ अणिट्ठे लावणे, ९ अणिट्ठे जसो-किस्ती, १० अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकारपरकमे ।

एकेन्द्रियो.

अर्थ यथार्थ नथी. केमके तेने अग्नि वगरे शक्क असर करतुं नथी. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छे के 'कोइ एक [असुरकुमार] जाय अने कोइ एक न जाय.' ए प्रमाणे यावत्-स्तानितकुमारो सुधी जाणवुं. एकेन्द्रियो *संबन्धे नैरयिकनी पेटे जाणवुं.

बेइन्द्रिय.

३. [प्र०] हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीवो अग्निकायनी मध्यमां थईने जाय ? [उ०] जेम असुरकुमारो संबन्धे कहुं तेम बेइन्द्रिय संबन्धे कहेवुं. परन्तु विशेष ए छे के, [प्र०] 'जे बेइन्द्रिय अग्नि वच्चे थईने जाय, ते त्यां बळे ? [उ०] हा, ते त्यां बळे'-एम कहेवुं. अने बाकी बधुं पूर्वे कक्षा प्रमाणे यावत्-चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं.

पंचेन्द्रिय तिर्यच
अग्निनी वच्चे थईने
जाय ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव अग्निनी वच्चे थईने जाय ?-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के 'कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय' ? [उ०] हे गौतम ! पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको बे प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे-विग्रहगतिने प्राप्त थयेला अने अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला. तेमां जे विग्रहगतिने प्राप्त थयेला पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको छे ते नैरयिकनी पेटे जाणवा, यावत्-'तेने शक्क असर करतुं नथी.' जे पंचेन्द्रियतिर्यचो अविग्रहग-तिने प्राप्त थयेला छे ते बे प्रकारना कक्षा छे, ते आ प्रमाणे-ऋद्धिप्राप्त (वैक्रियलब्धियुक्त) अने ऋद्धिने अप्राप्त (वैक्रियलब्धिरहित). तेमां जे पंचेन्द्रियतिर्यचो ऋद्धिने प्राप्त थयेला छे, तेमांथी कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने न जाय. [प्र०] जे अग्निनी वच्चे थईने जाय छे ते त्यां बळे ? [उ०] ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नथी, केमके तेने शक्क असर करतुं नथी. तेमां जे पंचेन्द्रिय तिर्यचो ऋद्धिने प्राप्त थयेला नथी तेमांथी कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] जे जाय ते बळे ? [उ०] हा, बळे; माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहुं छे के, यावत्-'कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय' ए प्रमाणे मनुष्य संबन्धे पण जाणवुं. जेम असुरकुमारो संबन्धे कहुं, तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण कहेवुं.

नारको दश स्था-
नोनी अनुभव
करे छे.

५. नारको दश स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे-१ अनिष्ट शब्द, २ अनिष्ट रूप, ३ अनिष्ट गंध, ४ अनिष्ट रस, ५ अनिष्ट रपर्श; ६ अनिष्ट गति, ७ अनिष्ट स्थिति, ८ अनिष्ट लावण्य, ९ अनिष्ट यशःकीर्ति अने १० अनिष्ट उत्थान, कर्म, बल, वीर्य तथा पुरुषकारपराक्रम.

२ * विग्रहगतिप्राप्त एकेन्द्रिय जीवो अग्नि वच्चे थईने जाय, अने सूक्ष्म होवाथी ते बळे नहि. अविग्रहगतिप्राप्त एकेन्द्रियो अग्नि वच्चे थईने जता नथी, कारण के तेओ स्थावर छे. तेजः (अग्नि) अने वायु गतित्रय होवाथी तेजुं अग्निमध्यमां थईने जतुं संभवे छे, परन्तु ते अहिं विवक्षित नथी, अहिं तो स्थावरपणानी विवक्षा छे अने तेथी तेओमां गतिनो अभाव छे. तथा वायुवादिनी प्रेरणाथी पृथिव्यादितुं अग्निमध्यमां गमन संभवित छे, परन्तु अहिं क्षातकमकृत गमन विवक्षित होवाथी तेजुं स्वतंत्रपणे अग्निने विषे गमन संभवित नथी-टीका.

५ † अनिष्टगति-नारकोनी अग्रशस्त्रविहायोरगतिरूप के नरकरागतिरूप अनिष्ट गति, नरकमां रहेवास्व अथवा नरकायुकरूप अनिष्ट स्थिति, अनिष्ट कावच्य-शरीरनो बेबोळ आकारविशेष, अपयश अने अपकीर्तिरूप अनिष्ट यशःकीर्ति, वीर्यान्तरायना क्षयोपशमादिथी उत्पन्न थयेला उरवानादिथीविशेष अनिष्ट-निन्दित छे.

६. असुरकुमारा दश ठाणां पञ्चगुम्भवमाणा विहरन्ति, तंजहा—१ इडा सदा, २ इडा रूवा, जाव—इडे उट्टाण—कम्म—बल—वीरिय—पुरिसकारपरकमे, एवं जाव—धणियकुमारा ।

७. पुडविकाइया छ ट्टाणां पञ्चगुम्भवमाणा विहरन्ति, तं जहा—इट्टाणिट्टा फासा, इट्टाणिट्टा गती, एवं जाव—परकमे एवं जाव—वणस्सइकाइया ।

८. वेइदिया सत्त ट्टाणां पञ्चगुम्भवमाणा विहरन्ति, तंजहा—इट्टाणिट्टा रसा, सेसं जहा एगिदियाणं ।

९. तेंदिया अट्ट ट्टाणां पञ्चगुम्भवमाणा विहरन्ति, तं जहा—इट्टाणिट्टा गंधा, सेसं जहा तेंदियाणं ।

१०. चउरिदिया नव ट्टाणां पञ्चगुम्भवमाणा विहरन्ति, तंजहा—इट्टाणिट्टा रूवा, सेसं जहा तेंदियाणं ।

११. पंचेदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणां पञ्चगुम्भवमाणा विहरन्ति, तंजहा—इट्टाणिट्टा सदा, जाव—परकमे, एवं मणुस्सा वि, चाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।

१२. [प्र०] देवे णं भंते ! महिहीए जाव—महेसक्खे बाहिरए पोगगले अपरियाइत्ता पभू, तिरियपच्चयं वा तिरियभिषिं वा उल्लंघेत्तए वा पल्लंघेत्तए वा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे ।

१३. [प्र०] देवे णं भंते ! महिहीए जाव—महेसक्खे बाहिरए पोगगले परियाइत्ता पभू, तिरिय० जाव—पल्लंघेत्तए वा ? [उ०] इंता पभू । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'सि ।

चोइसमसए पंचमो उद्देशो समत्तो.

६. असुरकुमारो दश स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ इष्ट शब्द, २ इष्ट रूप, यावत्—१० इष्ट उत्थान, कर्म, बल, वीर्य अने पुरुषकार पराक्रम—ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. असुरकुमारो.

७. पृथिविकायिको छ स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ 'इष्टानिष्ट स्पर्श', २ इष्टानिष्ट गति, यावत्—६ 'इष्टानिष्ट पुरुषकार—पराक्रम'—ए प्रमाणे यावत्—वनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको.

८. बेइन्द्रिय जीवो सात स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ इष्टानिष्ट रस—इत्यादि समग्र एकेन्द्रियोनी पेटे अहिं कहेवुं. बेइन्द्रियो.

९. तेइन्द्रिय जीवो आठ स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ इष्टानिष्ट गन्ध—इत्यादि बाकी वधुं बेइन्द्रियोनी पेटे कहेवुं. तेइन्द्रियो.

१०. चउरिन्द्रिय जीवो नव स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ इष्टानिष्ट रूप—इत्यादि बाकी वधुं तेइन्द्रिय जीवोनी पेटे जाणवुं. चउरिन्द्रिय जीवो.

११. पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको दश स्थानकोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ इष्टानिष्ट शब्द—इत्यादि यावत्—पराक्रम सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे मनुष्यो पण जाणवा. जेम असुरकुमार संबन्धे कहुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे कहेवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यचो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्धिवालो यावत्—मोटा सुखवालो देव बहारना—भवधारणीय शरीर व्यतिरिक्त पुद्रलोने ग्रहण कर्या शिवाय तिर्छी पर्वतने के तिर्छी [प्राकारनी] भीतने उल्लंघवा के वारंवार उल्लंघवा समर्थ थाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नधी, [अर्थात् भवधारणीय शरीर व्यतिरिक्त बीजा बहारना पुद्रलोने ग्रहण कर्या शिवाय पर्वतादिने उल्लंघवानुं सामर्थ्य प्रवर्ततुं नधी.] महर्षिक देव ब-
हारना पुद्रलोने
ग्रहण कर्या शिवा-
य पर्वतादिने उ-
ल्लंघी शक्ते ?
बहारना पुद्रलोने
ग्रहण करी पर्वता-
दिने उल्लंघवा स-
मर्थ छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्धिवालो यावत्—मोटा सुखवालो देव बहारना पुद्रलोने ग्रहण करी तिर्छी [पर्वतने के तिर्छी प्राकारनी भीतने उल्लंघवा समर्थ छे ? [उ०] हा, गौतम ! समर्थ छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही [भगवान् गौतम यावत् विहरे छे.]

चतुर्दश शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

* एकेन्द्रियोनी शुभाशुभ क्षेत्रमा उत्पत्ति बचानो संभव होवाची वेने साता अने असाताना उदयनो संभव छे माटे तेने इष्टानिष्ट स्पर्शादि होय छे. यद्यपि तेवो स्पर्श छे तेवी तेने स्पर्शाची प्रभवरूप गतिनो संभव नधी तो पण तेवोमा परप्रेरित गति होय छे, अने ते शुभाशुभरूप होवाची 'इष्टानिष्ट' कहेवाय छे. इष्टानिष्ट कावच्य मति अने पत्थरने विचे जाणवुं. स्पर्श होवाची एकेन्द्रियने विचे उत्थानादि होता नधी, परन्तु पूर्वभवमा अनुभवेका उत्था-
नानिष्ट संस्कारनिमित्तो तेहुं इष्टानिष्टपणुं जाणवुं.—टीका.

छट्ठओ उद्देशो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-नेरइया णं भंते ! किमाहारा, किपरिणामा, किजोणीया, किठितीया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणिया, पोग्गलट्टितीया, कम्मोवगा, कम्मनिवाणा, कम्म-ट्टितीया, कम्मणामेव विपरियासमंति, एवं जाव-वेमाणिया ।

२. [प्र०] नेरइया णं भंते ! कि वीयीदद्दाहं आहारंति अवीचिदद्दाहं आहारंति ? [उ०] गोयमा ! नेरतिया वीचिदद्दाहं पि आहारंति, अवीचिदद्दाहं पि आहारंति । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘नेरतिया वीचि० तं चैव जाव-आहारंति’ ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया एगपएसणाहं पि दद्दाहं आहारंति, ते णं नेरतिया वीचिदद्दाहं आहारंति, जे णं नेरतिया पडि-पुन्नाहं दद्दाहं आहारंति ते णं नेरइया अवीचिदद्दाहं आहारंति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्ध-जाव-आहारंति, एवं जाव-वेमाणिया आहारंति ।

३. [प्र०] जाहे णं भंते ! सके देविदे देवराया दिद्दाहं भोगभोगाहं भुंजिउंकामे भवति से कहमियाणि पकरंति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चैव णं से सके देविदे देवराया एगं महं नेमिपडिरुवगं विउच्चति, एगं जोयणसयसहस्सं आत्थाम-विक्खंभेणं, तिप्पि जोयणसयसहस्साहं, जाव-अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिकखेवेणं । तस्स णं नेमिपडिरुवगस्स उच्चरि बहुसमरम-णिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते, जाव-मणीणं फासे, तस्स णं नेमिपडिरुवगस्स बहुमज्झदेसभागे तत्थ णं महं एगं पासायवडंसेणं विउच्चति पंच जोयणसयाहं उहं उच्चत्तेणं, अद्दाहज्जाहं जोयणसयाहं विक्खंभेणं, अब्भुग्गय-मूसिय० वन्नओ जाव-पडिरुवं ।

पष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृहमां [भगवान् गौतम] आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! नारको शो आहार करे, अने ते [आहारनो] शो परिणाम थाय, तेनी योनि (उत्पत्तिस्थानक) केवी होय, अने तेनी स्थिति-अवस्थानुं कारण शुं छे ? [उ०] हे गौतम ! नारको पुद्गलनो आहार करे, अने तेनो पुद्गलरूपे परिणाम थाय, [शीत अने उष्ण स्पर्शवाळा] पुद्गलो एज तेनी योनि-उत्पत्तिस्थानक छे, [आयुषकर्मना] पुद्गलो ए तेनी नरकमां स्थितिनुं कारण छे. तथा ते [बन्धद्वारा] कर्मने प्राप्त थयेला छे, ते नारकपणानुं निमित्तभूतकर्मवाळा छे, कर्म-पुद्गलथी तेओनी स्थिति छे, अने कर्मने लीघे अन्य पर्यायने प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

२. [प्र०] हे भगवन् ! नारको वीचिद्रव्योनो आहार करे छे के अवीचि द्रव्योनो आहार करे छे ? [उ०] हे गौतम नारको *वीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे अने अवीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुधी कहो छो के, ‘नारको वीचिद्रव्यो अने अवीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे’ ? [उ०] हे गौतम ! जे नारको एक प्रदेश पण न्यून द्रव्योनो आहार करे छे तेओ वीचिद्रव्योनो आहार करे छे, अने जे नैरयिको परिपूर्ण द्रव्योनो आहार करे छे तेओ अवीचि द्रव्योनो आहार करे छे, ते हेतुधी हे गौतम ! एम कहुं छे के, ‘नारको वीचि तथा अवीचि ए बन्ने प्रकारना द्रव्योनो आहार करे छे.’ ए प्रमाणे यावद्-‘वैमानिको आहार करे छे’ स्यां सुधी जाणवुं.

३. [प्र०] हे भगवन् ! देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा शक्र ज्यारे भोगववा योग्य दिव्य [मनोह्र स्पर्शादिक] भोगेने भोगववाने इच्छे स्यारे ते तेने ते वखते केवी रीते भोगवे ? [उ०] हे गौतम ! स्यारे ते देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा शक्र एक मोटुं चक्रना जेहुं (इच्छा-कार) स्थान विकुर्वे छे, तेनी लंबाइ अने पहोच्छाइ एक लाख योजननी अने तेनी परिधि त्रण लाख [सोळ हजार बसो सत्त्वावीश योजन त्रण कोश, एकसो अठ्यावीश धनुष अने कंडक अधिक साडातेर] आंगुल छे. ते चक्रना आकारवाळा स्थाननी उपर बरोबर सम अने इमणीय

२ * जेटला पुद्गलद्रव्यना समुदायधी संपूर्ण आहार थाय ते अवीचिद्रव्य, अने संपूर्ण आहारधी एकादिप्रदेश न्यून आहार से वीचिद्रव्य.

३ † अहिं सकने सुधर्मासभा भोगस्थान छे, तो पण ते चक्रना आकारवाहु स्थान विकुर्वे छे ते जिननी आवातनायो स्वाग करना माटे छे, कारण के सुधर्मा सभामां माणवक सम्मने विचे जाअहामां जिनना अस्थिओ छे, अने तेनी पासे (मैथुननिमित्त) विषयोपभोग करवामां जिनकी आवातना थाय, काहे मैथुन निमित्तक विषयोपभोगमाटे चक्रना आकारवाहुं वीजुं स्थान विकुर्वे छे.-टीका.

नारकोने आहार परिणाम, योनि, स्थिति वगेरे.

नारको वीचि अने अवीचिद्रव्योनो आहार करे छे.

क्यारे इन्द्र भोग भोगववा इच्छे स्यारे ते शुं करे ?

તસ્સ પાસાયવર્ણસગસ્ય ડહોય પડમલયામશિચિસે, જાવ-પડિરુવે । તસ્સ ણં પાસાયવર્ણસગસ્ય અંતો બહુસમરમણિએ ભૂમિભાગે, જાવ-મળીણં ફાસો, મણિપેદિયા અટ્ટુજોયણિયા જહા વેમાણિયાણં । તીસે ણં મણિપેદિયાય ઉવરિં મહં ઇમે દેવસ-યણિએ વિડહર, સયણિજવબ્બો, જાવ-પડિરુવે । તત્થ ણં સે સકે દેવિંદે દેવરાયા અટ્ટહિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિવારહિં, દોહિ ય મણિપિહિં નટ્ટાણિયણ ય ગંધઘ્ઘાણિયણ ય સહિં મહયાદયનટ્ટં જાવ-વિહારં મોગમોગાં મુંજમાણે વિહરહ ।

૪. [પ્ર૦] જાહે ઈસાણે દેવિંદે દેવરાયા વિહારં ? [ઉ૦] જહા સકે તહા ઈસાણે વિ નિરવસેસં, પવં સળંકુમારે વિ, નવરં પાસાયવર્ણસગસ્ય ડહોય જોયણસયાદં ઉહું ઉહ્ચ્ચેણં, તિત્થિ જોયણસયાદં વિક્કંભેણં, મણિપેદિયા તહેવ અટ્ટુજોયણિયા । તીસે ણં મણિપેદિયાય ઉવરિં પત્થ ણં મહેગં સીહાસણં વિડહર સપરિવારં માણિયહં । તત્થ ણં સળંકુમારે દેવિંદે દેવરાયા ઘાવત્તરીપ સામાણિયાસાહસ્સીહિં જાવ-વહિં ઘાવત્તરીહિં આયરક્ષદેવસાહસ્સીહિ ય બહુહિં સળંકુમારકપ્પવાસીહિં વેમાણિપિહિં દેવેહિ ય દેવીહિ ય સહિં સંપરિવુટે મહયાં જાવ-વિહરહ । પવં જહા સળંકુમારે તહા જાવ-પાણઓ અહુઓ, નવરં જો જસ્સ પરિવારો સો તસ્સ માણિયહો, પાસાયવર્ણસગસ્ય ડહોય ૨ કપ્પેસુ વિમાણાણં ઉહ્ચ્ચં, અહ્ચ્ચં વિત્થારો, જાવ-અહુયસ્સ નવજોયણસયાદં ઉહું ઉહ્ચ્ચેણં, અહ્ચ્ચંપંચમાદં જોયણસયાદં વિક્કંભેણં, તત્થ ણં ગોયમા ! અહુપ દેવિંદે દેવરાયા દસહિં સામાણિયાસાહસ્સીહિં જાવ-વિહરહ, સેસં તં ચેવ । 'સેવં મંતે ! સેવં મંતે !' સિ ।

ચોદસમસાઈ છટ્ટઓ ઉદ્દેસો સમત્તો ।

ભૂમિભાગ કહેલો છે. [તેનું વર્ણન] યાવત્-‘મનોહ સ્પર્શ હોય છે’ ત્યાં સુધી જાણવું. તે ચત્રાકારવાળા તે સ્થાનની બરોબર મધ્યભાગે એક મોટો પ્રાસાદાવતંસક-ભૂષણરૂપ સુન્દર પ્રાસાદ વિકુર્વે છે. તે ઉંચાઈમાં પાંચસે યોજન ઉંચો અને તેનો વિષ્કંભ-વિસ્તાર અઢીસો યોજનનો છે. તે પ્રાસાદ અમ્યુદ્ગત-અસ્યન્ત ઉંચો [અને પ્રમાણે પૂંજખડે વ્યાસ હોવાથી જાણે જસતો હોયની.]—ઈત્યાદિ પ્રાસાદવર્ણન જાણવું, યાવત્-તે પ્રતિરૂપ-સુંદર અને દર્શનીય છે. તથા તે પ્રાસાદાવતંસકનો ઉહોચ-ઉપરનો ભાગ પદ્મ અને લતાઓના ચિત્રામણથી વિચિત્ર અને યાવત્-દર્શનીય છે. ઘડી તે પ્રાસાદાવતંસકનો અંદરનો ભાગ બરાબર સમ અને રમણીય છે, યાવત્-‘ત્યાં મણિઓનો સ્પર્શ હોય છે’—ત્યાં સુધી વર્ણન જાણવું. ઘડી ત્યાં આઠ યોજન ઉંચી એક મણિપીઠિકા છે, અને તે વૈમાનિકોની મણિપીઠિકા જેવી જાણવી. તે મણિપીઠિકાની ઉપર એક મોટી દેવશય્યા વિકુર્વે છે, તે દેવશય્યાનું વર્ણન યાવત્ ‘પ્રતિરૂપ’ છે ત્યાં સુધી કહેવું. ત્યાં દેવનો ઇન્દ્ર અને દેવનો રાજા શક્ર પોતપોતાના પરિવારયુક્ત આઠ પટ્ટરાણીઓ સાથે ગન્ધર્વાનીક અને નાટ્યાનીક એ બે પ્રકારના અનીકની સાથે મોટેથી આહત-વગાડેલા નાટ્ય, ગીત અને વાદિત્રના શબ્દવડે યાવત્-મોગવવા યોગ્ય દિવ્ય મોગોને મોગવતો વિહરે છે.

૪. [પ્ર૦] હે ભગવન્ ! દેવેન્દ્ર અને દેવનો રાજા ઈશાન દિવ્ય મોગોને મોગવવા ઇચ્છે ત્યારે તે કેવી રીતે મોગવે ? [ઉ૦] જેમ શક્ર સંબન્ધે કહ્યું તેમ ઈશાન સંબન્ધે પણ સમગ્ર કહેવું. એ પ્રમાણે સનત્કુમારને વિષે પણ જાણવું, પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, એ પ્રાસાદાવતંસક ઉંચાઈમાં છસો યોજન અને પહોળાઈમાં ત્રણસો યોજન છે. તથા તે મણિપીઠિકાની ઉપર એક મોટું સિંહાસન સપરિવાર-પોતાના પરિવારને યોગ્ય આસનો સહિત વિકુર્વે છે—ઈત્યાદિ કહેવું. તેમાં દેવેન્દ્ર અને દેવનો રાજા સનત્કુમાર બહોંતેર હજાર સામાનિક દેવો સાથે, યાવત્-બે લાખ અઠ્યાશી હજાર આત્મરક્ષક દેવો સાથે, અને સનત્કુમાર કલ્પમાં રહેનારા ઘણા વૈમાનિક દેવો અને દેવીઓ સાથે પરિવૃત્ત થઈ [મોટા ગીત અને વાદિત્રના] શબ્દોવડે યાવત્-વિહરે છે. એ પ્રમાણે જેમ સનત્કુમાર સંબન્ધે કહ્યું, તેમ યાવત્-પ્રાણત તથા અચ્યુત દેવલોક સુધી જાણવું. પરન્તુ વિશેષ એ છે કે, જેનો જેટલો પરિવાર હોય તેનો તેટલો અહિં કહેવો. પોત પોતાના કલ્પના વિમાનોની ઉંચાઈના જેટલી પ્રાસાદની ઉંચાઈ જાણવી, અને ઉંચાઈના અઢવા ભાગ જેટલો તેનો વિસ્તાર જાણવો, યાવત્-અચ્યુત દેવલોકનો પ્રાસાદાવતંસક નવસો યોજન ઉંચો છે, અને સાઢા ચારસો યોજન પહોળો છે. તેમાં હે ગૌતમ ! દેવેન્દ્ર દેવરાજ અચ્યુત દશ હજાર સામાનિક દેવો સાથે યાવત્-વિહરે છે. યાકી બધું પૂર્વ પ્રમાણે જાણવું. ‘હે ભગવન્ ! તે એમજ છે, હે ભગવન્ ! તે એમજ છે’—એમ કહી યાવત્-‘[મોગવાનું ગૌતમ] વિહરે છે.

ચતુર્દશ શ્લોકેષુ ઉદ્દેશક સમાપ્ત.

૧ * પ્રાસાદવર્ણન સંબન્ધે જુઓ-મગ. સં. ૧ પૃ. ૩૦૦.

૪ † સનત્કુમારેન્દ્ર માત્ર સિંહાસન વિકુર્વે છે, પરન્તુ શક્ર અને ઈશાનની પેટે દેવશય્યા વિકુર્વતો નથી, કારણ કે તે સર્વમાત્રથી વિષયોપભોગ કરતો હોવાથી તેને શય્યાનું પ્રયોજન નથી.

‡ સનત્કુમારેન્દ્રનો પરિવાર કલ્પો છે, માહેન્દ્રને સીતેર હજાર સામાનિક દેવો અને બે લાખ એંશી હજાર અંગરક્ષક દેવો હોય છે, મહાદેવલોકને સાઢા હજાર, કાન્તકને પચાસ હજાર, હુક્કને ચાઠીશ હજાર, સહસ્રારને ત્રીશ હજાર, આણત-પ્રાણતને વીશ હજાર અને આરણ-અચ્યુતને દશ હજાર સામાનિક દેવો હોય છે, અને તેથી ચારણના આત્મરક્ષક દેવો જાણવા.

§ સનત્કુમાર અને માહેન્દ્ર દેવલોકના વિમાન છસો યોજન ઉંચા છે, માટે તેના પ્રાસાદની ઉંચાઈ પણ છસો યોજન જાણવી, ત્રણ અને કાન્તકને વિષે કાલકો યોજન, હુક્ક અને સહસ્રારને વિષે આઠસો યોજન, આણત-પ્રાણત અને આરણ-અચ્યુતેન્દ્રના પ્રાસાદો નવસો યોજન ઉંચા છે, અને તેનો વિસ્તાર તેથી અરધો છે. યાવત્-અચ્યુતનો નવસો યોજન પ્રાસાદ ઉંચો છે, અને તેનો વિસ્તાર સાઢા ચારસો યોજન છે. આ અચ્યુત દેવલોકને વિષે અચ્યુતેન્દ્ર દશ હજાર સામાનિક દેવોની સાથે યાવત્-વિહરે છે. અહિં પટલો વિશેષ છે કે સનત્કુમારાદિ ઇન્દ્રો સામાનિકાદિ દેવોના પરિવાર સહિત ચક્રના આકારવાળા સ્થાનને વિષે આજ છે, કારણ કે તેઓના સમક્ષ સ્પર્શાદિ વિષયોનો ઉપભોગ કરવો અવિરુદ્ધ છે, શક્ર અને ઈશાનેન્દ્ર પરિવાર સહિત ત્યાં જતા નથી, કારણ કે તે કાયસેથી હોવાથી તેઓના સમક્ષ કાંચપ્રતિચારણ (કાયદ્વારા વિષયોપભોગ) સેવથી ભજનીય અને અજુચિત છે.—ટીકા.

ઈશાનેન્દ્ર મોગ મોગવવા ઇચ્છે ત્યારે તે કેવી રીતે મોગવે ?

સત્તમો ઉદ્દેસો ।

૧. [પ્ર૦] રાયગિદ્દે જાવ-પરિસા પડિગયા । 'ગોયમા' ! દી સમણે મગવં મહાવીરે મગવં ગોયમં આમંતેસા એવં વયાસી-
'ચિર સંસિદ્ધોઽસિ મે ગોયમા ! ચિરસંથુઓઽસિ મે ગોયમા ! ચિરપરિચિઓઽસિ મે ગોયમા ! ચિરજુસિઓઽસિ મે ગોયમા !
ચિરાણુગઓઽસિ મે ગોયમા ! ચિરાણુવસી સિ મે ગોયમા ! અણંતરં દેવલોપ અણંતરં માણુસ્સપ મ્હે, કિં પરં ? મરણા કાયસ્સ
મેદા, ર્હઓ ચુસા દો વિ તુહા પગટ્ટા અવિસેસમણાણસા મ્હવિસ્સામો ।

૨. [પ્ર૦] જહા ણં મંતે ! ઘયં પ્યમટ્ટં જાણામો, પાસામો, તહા ણં અણુત્તરોવવાદયા વિ દેવા પ્યમટ્ટં જાણંતિ, પાસંતિ ?
[ઉ૦] હંતા ગોયમા ! જહા ણં ઘયં પ્યમટ્ટં જાણામો, પાસામો તહા અણુત્તરોવવાદયા વિ દેવા પ્યમટ્ટં જાણંતિ, પાસંતિ ।
[પ્ર૦] સે કેણટ્ટેણં જાવ-પાસંતિ ? [ઉ૦] ગોયમા ! અણુત્તરોવવાદયાણં અણંતાઓ મણોદ્ધવગ્ગણાઓ લહ્હાઓ, પચાઓ,
અમિસમજાગયાઓ મ્હવંતિ, સે તેણટ્ટેણં ગોયમા ! એવં હુહ્હ-જાવ-'પાસંતિ' ।

૩. [પ્ર૦] કહ્હવિદ્દે ણં મંતે ! તુહ્હપ પ્ણસે ? [ઉ૦] ગોયમા ! છવિદ્દે તુહ્હપ પ્ણસે, તંજહા-૧ દહ્હતુહ્હપ, ૨ ક્ષેત્ત-
તુહ્હપ, ૩ કાલતુહ્હપ, ૪ મ્હવતુહ્હપ, ૫ માવતુહ્હપ, ૬ સંઠાણતુહ્હપ ।

સત્તમ ઉદ્દેશક.

કેવલજ્ઞાનની અપ્રા-
પ્રાપ્તિથી લિખિત થયેલા
ગૌતમ સ્વામીને
આશ્વાસન.

૧. રાજગૃહમાં યાવત્-પરિપદ્ વાંદીને પાછી ગઈ. [મગવાન્ શ્રી મહાવીર સ્વામી કેવલજ્ઞાનની અપ્રાપ્તિથી લિખિત થયેલા ગૌતમ સ્વામીને
આશ્વાસન આપવા માટે પોતાનો તેમની સાથેનો લાંબા કાલનો પરિચય બતાવી મહિષ્યમાં પોતાની સાથે તેમની તુલ્યતા બતાવે છે-] શ્રમણ
મગવંત મહાવીરે 'હે ગૌતમ !' એમ મગવાન્ ગૌતમને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું-“હે ગૌતમ ! તું મારી સાથે ઘણાં કાલ સુધી એકબીજાની બંધાયેલ
છે, હે ગૌતમ ! તે ઘણા લાંબા કાલથી [એકબીજાની સાથે] મારી પ્રશંસા કરી છે, હે ગૌતમ ! તારો મારી સાથે ઘણા લાંબા કાલથી પરિચય
છે, હે ગૌતમ ! તે ઘણા લાંબા કાલથી મારી સેવા કરી છે, હે ગૌતમ ! તું ઘણા લાંબા કાલથી મને અનુસર્યો છે, હે ગૌતમ ! તું ઘણા લાંબા
કાલથી મારી સાથે અનુકૂળપણે વર્ત્યો છે, હે ગૌતમ ! અનન્તર (તુરતના) દેવમત્તમાં અને તુરતના મનુષ્યમત્તમાં [એ પ્રમાણે તારી સાથે
સંબંધ છે,] વધારે શું ? પણ મરણ પછી શરીરનો નાશ થયા બાદ અહીંથી ચ્યવી આપણે બન્ને સરખા, એકાર્થ-એકપ્રયોજનવાળા, (અથવા
એક સિદ્ધિક્ષેત્રમાં રહેવાવાળા) વિશેષતા અને મેદરહિત થઈશું.

અનુત્તરૌપપાતિક
દેવો જાણે છે અને
જુલુ છે ?

૨. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જેમ આપણે વન્ને આ (પૂર્વોક્ત) અર્થને *જાણીએ છીએ અને જોઈએ છીએ, તેમ અનુત્તરૌપપાતિક દેવો પણ
એ વાતને જાણે છે અને જુલુ છે ? [ઉ૦] હા, ગૌતમ ! જેમ આપણે બન્ને પૂર્વોક્ત વાતને જાણીએ છીએ અને જોઈએ છીએ તેમ અનુત્તરૌપપાતિક
દેવો પણ એ વાતને જાણે છે અને જુલુ છે. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! એ પ્રમાણે આપ શા હેતુથી કહો છો કે 'જેમ આપણે જાણીએ છીએ તેમ
અનુત્તરૌપપાતિક દેવો પણ જાણે છે અને જુલુ છે' ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! અનુત્તરૌપપાતિક દેવોએ મનોદ્રવ્યની અનંત વર્ણનાઓ (અધિજ્ઞાનની
લક્ષિણી) જ્ઞેયરૂપે મેલ્લી છે, પ્રાપ્ત કરી છે, અને [ગુણ-પર્યાયના જ્ઞાનથી] વ્યાપ્ત કરી છે, માટે હે ગૌતમ ! એમ કહેવાય છે કે તે
(અનુત્તરૌપપાતિક દેવો) જાણે છે અને જુલુ છે.

સુત્યજ્ઞા.

૩. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! કેટલા પ્રકારે તુલ્ય કહેલ છે ? [ઉ૦] હે ગૌતમ ! તુલ્ય છ પ્રકારે કહેલું છે, તે આ પ્રમાણે-૧ દ્રવ્યતુલ્ય,
૨ ક્ષેત્રતુલ્ય, ૩ કાલતુલ્ય, ૪ મ્હવતુલ્ય, ૫ માવતુલ્ય અને ૬ સંસ્થાનતુલ્ય.

૨ * ગૌતમસ્વામી મહાવીર મગવંતને કહે છે-“હું મહિષ્યકાલમાં આપના તુલ્ય થઈશ” એમ આપ કેવલજ્ઞાનથી જાણો છો, અને તે વાત હું આપના
ઉપદેશથી જાણું છું, તેમ અનુત્તરૌપપાતિક દેવો પણ આ વાત જાણે છે અને જુલુ છે !-એ પ્રશ્નનો આશ્વાસ છે-ટીકા.

४. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘द्वन्द्वतुल्य’ २ ? [उ०] गोयमा ! परमाणुपोगले परमाणुपोगलस्स द्वन्द्वो तुल्ले, परमाणुपोगले परमाणुपोगलवहरितस्स द्वन्द्वो णो तुल्ले, दुपपसिए कंधे दुपपसियस्स कंधस्स द्वन्द्वो तुल्ले, दुपपसिए कंधे दुपपसियवहरितस्स कंधस्स द्वन्द्वो णो तुल्ले, एवं जाव-दसपपसिए, तुल्लसंखेज्जपपसिए कंधे तुल्लसंखेज्जपपसियस्स कंधस्स द्वन्द्वो तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपपसिए कंधे तुल्लसंखेज्जपपसियवहरितस्स कंधस्स द्वन्द्वो णो तुल्ले, एवं तुल्लभसंखेज्जपपसिए वि, एवं तुल्लभणंतपपसिए वि, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्ध-‘द्वन्द्वतुल्य’ २ ।

५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘क्षेत्रतुल्य’ २ ? [उ०] गोयमा ! एगपपसोगाढे पोगले एगपपसोगाढस्स पोगलस्स क्षेत्रो तुल्ले, एगपपसोगाढे पोगले एगपपसोगाढवहरितस्स पोगलस्स क्षेत्रो णो तुल्ले, एवं जाव-दसपपसोगाढे, तुल्लसंखेज्जपपसोगाढे तुल्लसंखेज्ज०, एवं तुल्लभसंखेज्जपपसोगाढे वि, से तेणट्टेणं जाव-‘क्षेत्रतुल्य’ २ ।

६. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘कालतुल्य’ २ ? [उ०] गोयमा ! एगसमयठितीए पोगले एगसमयठिति-यस्स य पोगलस्स कालो तुल्ले, एगसमयठितीए पोगले एगसमयठितीयवहरितस्स पोगलस्स कालो णो तुल्ले, एवं जाव-दससमयठितीए, तुल्लसंखेज्जसमयठितीए एवं चेष, एवं तुल्लभसंखेज्जसमयठितीए वि, से तेणट्टेणं जाव-‘कालतुल्य’ २ ।

७. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘भवतुल्य’ २ ? [उ०] गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स भवट्टयाए तुल्ले, नेरइयवह-रितस्स भवट्टयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एवं चेष, एवं मणुस्से, एवं देवे वि, से तेणट्टेणं जाव-‘भवतुल्य’ २ ।

८. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध-‘भावतुल्य’ २ ? [उ०] गोयमा ! एगगुणकालए पोगले एगगुणकालस्स पोग-लस्स भावो तुल्ले, एगगुणकालए पोगले एगगुणकालवहरितस्स पोगलस्स भावो णो तुल्ले, एवं जाव-दसगुणकालए, एवं तुल्लसंखेज्जगुणकालए पोगले, एवं तुल्लभसंखेज्जगुणकालए वि, एवं तुल्लभणंतगुणकालए वि, जहा कालए एवं नीलए, लोहि-

४. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यतुल्य ए ‘द्रव्यतुल्य’ एम केम कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! एक परमाणुपुद्गल बीजा परमाणुपुद्गलनी साथे द्रव्ययी तुल्य छे, पण परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गल शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्ययी तुल्य नथी; ए प्रमाणे द्विप्रदेशिक स्कन्ध (बीजा) द्विप्रदेशिक स्कन्धनी साथे द्रव्ययी तुल्य छे, पण द्विप्रदेशिक स्कन्ध द्विप्रदेशिक स्कन्ध शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्ययी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्-दशप्रदेशिक स्कन्ध सुधी कहेवुं. तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध (तेना) तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी साथे द्रव्ययी तुल्य छे, पण तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्ययी तुल्य नथी, ए प्रमाणे तुल्यअसंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध तथा तुल्यअनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते कारणथी द्रव्यतुल्य ए ‘द्रव्य-तुल्य’ कहेवाय छे.

द्रव्यतुल्य.

५. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रतुल्य ए ‘क्षेत्रतुल्य’ शा कारणथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! आकाराना एक प्रदेशावगाढ-एक प्रदेशमां रहेल पुद्गल द्रव्य एक प्रदेशमां रहेल पुद्गलद्रव्यनी साथे क्षेत्रथी तुल्य कहेवाय छे; पण एक प्रदेशमां रहेल पुद्गलद्रव्य शिवायना द्रव्य साथे क्षेत्रथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्-दशप्रदेशावगाढ-दश प्रदेशमां रहेल पुद्गल द्रव्य संबन्धे पण जाणवुं. तथा तुल्यसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्धनी साथे तुल्यसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्ध तुल्य होय, ए प्रमाणे तुल्यअसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्ध संबन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी क्षेत्रतुल्य ए ‘क्षेत्रतुल्य’ कहेवाय छे.

क्षेत्रतुल्य.

६. [प्र०] हे भगवन् ! कालतुल्य ए ‘कालतुल्य’ शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! एक समयनी स्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलनी साथे कालथी तुल्य छे. एक समयनी स्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य एक समयनी स्थिति शिवायना पुद्गलद्रव्यनी साथे कालथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्-दशसमयनी स्थितिवाळा पुद्गलद्रव्य संबन्धे जाणवुं. तुल्यसंख्यातासमयनी स्थितिवाळा अने तुल्य-असंख्यात समयनी स्थितिवाळा पुद्गलद्रव्य संबन्धे पण ए प्रमाणे जाणवुं. ते हेतुथी ए प्रमाणे कालतुल्य ए ‘कालतुल्य’ कहेवाय छे.

कालतुल्य.

७. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के-भवतुल्य ए ‘भवतुल्य’ छे ? [उ०] हे गौतम ! नारक जीव नारकनी साथे भवरूपे तुल्य छे, नारक नारक शिवायना बीजा जीव साथे भवरूपे तुल्य नथी. ए प्रमाणे तिर्यचयोनिक, मनुष्य अने देवसंबन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावत्-‘भवतुल्य’ कहेवाय छे.

भवतुल्य.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के-भावतुल्य ए ‘भावतुल्य’ छे ? [उ०] हे गौतम ! एकगुण काळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य एकगुण काळावर्णवाळा पुद्गलद्रव्यनी साथे भावथी तुल्य छे, परन्तु एकगुण काळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य एकगुणकाळा वर्ण शिवायना बीजा पुद्गलद्रव्य साथे भावतुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत् दशगुण काळावर्णवाळा पुद्गल संबन्धे जाणवुं. तुल्यसंख्यातगुणकाळा, तुल्यअसं-

भावतुल्य.

યપ, હાલિદે, સુક્ષિણ્ય, ઇવં સુક્ષિમગંધે, ઇવં દુષ્મિગંધે, ઇવં તિષ્ઠે, જાથ-મધુરે, ઇવં કવચકે, જાથ-સુવચ્ચે, ઉદયપ માથે ઉદયસ્થાન માથસ્થ માથમો તુલ્લે, ઉદયપ માથે ઉદયસ્થાનમાથસ્થ માથસ્થ માથમો નો તુલ્લે, ઇવં ઉવસમિય, જાથ, જાઓ-વસમિય, પારિણમિય । સંનિવારપ માથે સંનિવારપસ્થ માથસ્થ, સે તેણટ્ટેણં ગોયમા ! ઇવં બુચ્ચ-‘માથતુલ્લપ’ ૨ ।

૯. [પ્ર૦] સે કેણટ્ટેણં મંતે ! ઇવં બુચ્ચ-‘સંઠાણતુલ્લપ’ ૨ ? [૩૦] ગોયમા ! પરિમંડલે સંઠાણે પરિમંડલસ્થ સંઠાણસ્થ સંઠાણમો તુલ્લે, પરિમંડલસંઠાણવરિત્તસ્થ સંઠાણમો નો તુલ્લે, ઇવં વટ્ટે, તંસે, ચડરંસે, આયપ, સમચડરંસસંઠાણે સમચડરં-સસ્થ સંઠાણસ્થ સંઠાણમો તુલ્લે, સમચડરંસે સંઠાણે સમચડરંસસંઠાણવરિત્તસ્થ સંઠાણસ્થ સંઠાણમો નો તુલ્લે, ઇવં જાથ-પરિમંડલે વિ, ઇવં જાથ-હુંડે, સે તેણટ્ટેણં જાથ-‘સંઠાણતુલ્લપ’ ૨ ।

૧૦. [પ્ર૦] મત્તપચ્ચક્ષાયપ ણં મંતે ! અણગારે મુચ્છિય જાથ-અજ્ઞોવચ્ચે આહારમાહારેતિ, અદ્દે ણં ઘીસસાય કાલં કરેતિ, તઓ પચ્છા અમુચ્છિય અગિચ્ચે જાથ-અણજ્ઞોવચ્ચે આહારમાહારેતિ ? [૩૦] હંતા ગોયમા ! મત્તપચ્ચક્ષાયપ ણં અણ-ગારે તં ચેવ । [પ્ર૦] સે કેણટ્ટેણં મંતે ! ઇવં બુચ્ચ-‘મત્તપચ્ચક્ષાયપ ણં તં ચેવ’ ? [૩૦] ગોયમા ! મત્તપચ્ચક્ષાયપ ણં અણગારે મુચ્છિય જાથ-અજ્ઞોવચ્ચે આહારે મવદ્, અદ્દે ણં ઘીસસાય કાલં કરેદ, તઓ પચ્છા અમુચ્છિય જાથ-આહારે મવદ્, સે તેણટ્ટેણં ગોયમા ! જાથ-આહારમાહારેતિ ।

ઔદયિકાદિ માથ-
વડે તુલ્ય.

હ્યાતગુણકાલ્યા અને તુલ્યઅનંતગુણકાલ્યા પુદ્ગલદ્રવ્ય સંબન્ધે પળ એ પ્રમાણે જાણવું. જેમ કાલ્યાણર્ણવાલ્યા પુદ્ગલદ્રવ્ય સંબન્ધે કહ્યું, તેમ નીલ (લીલા) રાતા, પીલ્યા અને શુક્લ પુદ્ગલદ્રવ્ય સંબન્ધે પળ જાણવું. એ પ્રમાણે સુગંધી, દુર્ગંધી, કટુક યાવદ્ મધુર દ્રવ્ય સંબન્ધે તથા કર્કશ (બરસઠ) યાવદ્-રુક્ષ પુદ્ગલદ્રવ્ય સંબન્ધે જાણવું. ઔદયિક માથ *ઔદયિક માથની સાથે માથથી તુલ્ય છે. ઔદયિક માથ સિવાયના બીજા માથ સાથે માથથી તુલ્ય નથી. એ પ્રમાણે ઔપશમિક, ક્ષાયિક, ક્ષાયોપશમિક તથા પારિણમિક માથસંબન્ધે જાણવું. સાંનિપાતિક (અનેક માથના મલ્લવાવડે થયેલા) માથ સાંનિપાતિક માથની સાથે માથથી તુલ્ય છે. તે હેતુથી હે ગૌતમ ! એમ કહેવાય છે કે માથતુલ્ય એ ‘માથતુલ્ય’ છે.

સંસ્થાનતુલ્ય.

૯. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જા હેતુથી એમ કહેવાય છે કે-સંસ્થાનતુલ્ય એ ‘સંસ્થાનતુલ્ય’ છે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! (૧) પરિમંડલ-સંસ્થાન પરિમંડલસંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનવડે તુલ્ય છે, પરિમંડલસંસ્થાન તે શિવાયના બીજા સંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનવડે તુલ્ય નથી. એ પ્રમાણે (૨) વૃત્ત (ગોલ) સંસ્થાન, (૩) ત્ર્યસ (ત્રિકોણ) સંસ્થાન, (૪) ચતુરસ્ર-ચોરસસંસ્થાન અને (૫) આયત-લાંબું સંસ્થાન પળ જાણવું. તથા સમચતુરસ્ર સંસ્થાન સમચતુરસ્ર સંસ્થાનની સાથે સંસ્થાનથી તુલ્ય છે, પળ સમચતુરસ્ર શિવાયના બીજા સંસ્થાનની સાથે સંસ્થાન-થી તુલ્ય નથી. એ પ્રમાણે ન્યપ્રોધપરિમંડલ, અને યાવત્-હુંડ સંસ્થાન સુધી જાણવું. માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી યાવત્-સંસ્થાનતુલ્ય એ ‘સંસ્થાનતુલ્ય’ કહેવાય છે.

આહારનો ત્યાગી
અનગાર મૂર્છિત થઈ
આહાર કરે અને
પછી મરણસમુદ-
યાગ કરી મનાસક
થઈ આહાર કરે ?
જા હેતુથી એમ કહે-
વાય છે ?

૧૦. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! મત્તપચ્ચક્ષાયપ કરનાર (આહારનો ત્યાગી) અનગાર મૂર્છિત, યાવત્-અલ્યન્ત આસક્ત થઈને આહાર કરે, અને પછી સ્વમાથથી કાલ-મારણાંતિક સમુદ્ઘાત કરે, ત્યાર પછી અમૂર્છિત-મૂર્છા વિના, અગૃહ્-લાલ્ચ વિના યાવત્-અનાસક્ત થઈ આહાર કરે ? [૩૦] હા, ગૌતમ ! મત્તપચ્ચક્ષાયપ કરનાર અનગાર-હ્યાદિ પૂર્વ પ્રમાણે આહાર કરે. [પ્ર૦] હે મગવન્ ! જા હેતુથી એમ કહેવાય છે કે મત્તપચ્ચક્ષાયપ કરનાર અનગાર-હ્યાદિ [પૂર્વ પ્રમાણે] આહાર કરે ? [૩૦] હે ગૌતમ ! મત્તપચ્ચક્ષાયપ કરનાર અનગાર (પ્રથમ) મૂર્છિત, યાવત્-આહારને વિષે આસક્ત હોય છે, ત્યાર પછી સ્વમાથથી તે કાલ-મારણાંતિક સમુદ્ઘાત કરે છે અને ત્યાર બાદ યાવત્-આહારને વિષે અમૂર્છિત-રાગરહિત થઈ આહાર કરે છે. માટે હે ગૌતમ ! તે હેતુથી મત્તપચ્ચક્ષાયપ કરનાર અનગાર પૂર્વ પ્રમાણે યાવત્-‘આહાર કરે છે.’

* ૧ કર્મનો ઉદય, અથવા કર્મના ઉદયથી થયેલો જીવનો પરિણામ તે ઔદયિક માથ, ૨ ઉદયપ્રાપ્ત કર્મનો ક્ષય અને ઉદયનો નહિ પ્રાપ્ત થઈને કર્મના ઉદયને અમુક કાલસુધી રોકવો તે ઔપશમિક માથ એટલે ઉપશમિક્યા, અથવા કર્મના ઉપશમ થઈ થયેલો આત્માનો પરિણામ તે ઔપશમિક માથ; ૩ કર્મનો ક્ષય અથવા કર્મના ક્ષય થવા વડે ઉત્પન્ન થયેલો માથ-પરિણામ તે ક્ષાયિક માથ. ૪ ક્ષય-ઉદય પ્રાપ્ત કર્મના કાલ સાથે ઉપશમ-ઉદયને રોકવો તે ક્ષાયોપશમિક માથ, અથવા ક્ષયોપશમવડે થયેલો જે આત્મપરિણામ તે ક્ષાયોપશમિકમાથ. અહિં ઔપશમિક અને ક્ષાયોપશમિક માથની વ્યાખ્યા એક પ્રકારની છે, તો પળ એટલો વિશેષ છે કે ક્ષાયોપશમિક માથને વિષે માત્ર વિપાકવેદન નથી, પળ પ્રદેશવેદન છે, અને ઔપશમિક માથને વિષે પ્રદેશવેદન પળ નથી. ૫ કર્મના ક્ષયાદિ શિવાય અનાદિ કાલનો સ્વામાથિક માથ તે પારિણમિક માથ. ૬ ઔદયિકાદિ એ ત્રણ માથોનો સંયોગ તે સાંનિપાતિક માથ કહેવાય છે-ટીકા.

૧ † સંસ્થાન-આકારવિશેષ, તેના બે પ્રકાર છે-૧ જીવસંસ્થાન અને ૨ અજીવસંસ્થાન. તેમાં અજીવસંસ્થાન પાંચ પ્રકાર છે-(૧) પરિમંડલસંસ્થાન પુઠીની પેટે બહારથી ગોલ અને મધ્યમાં પોકલ હોય છે. તેના ઘન અને પ્રતરના મેદથી બે પ્રકાર છે. (૨) વૃત્ત-કુંભારના ચક્રની પેટે બહારથી ગોલ અને અંદરથી પોલાણરહિત. તેના ઘન અને પ્રતર-એ બે મેદ છે, વલ્લી એક એકના થઈ મેદ છે-સમસંહ્યાવાલ્યા પ્રદેશયુક્ત અને વિષમસંહ્યાવાલ્યા પ્રદેશયુક્ત. એ પ્રમાણે (૩) ત્ર્યસ (ત્રિકોણાકાર), (૪) ચતુરસ્ર (ચતુષ્કોણ), (૫) આયત-દંડની પેટે લાંબું, તેના ત્રણ પ્રકાર છે-૧ શ્રેણ્યાયત, ૨ પ્રતરાયત અને ૩ ધનાયત. વલ્લી એક એકના બે પ્રકાર છે-સમસંહ્યાપ્રદેશવાલ્યા અને વિષમસંહ્યાપ્રદેશવાલ્યા. આ પાંચ પ્રકારના સંસ્થાન વિશ્રવા અને પ્રયોગથી ધાય છે. સંસ્થાનનામકર્મના ઉદયથી જીવોનો આકારવિશેષ ધાય તે જીવસંસ્થાન કહેવાય છે. તેના સમચતુરસ્રાદિ છ પ્રકાર છે.-ટીકા.

११. [प्र०] अत्थि णं भंते ! लवसत्तमा देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं भन्ते ! एवं बुद्ध--'लवस-
त्तमा देवा' २ ? [उ०] गोयमा ! से जहानामप-केह पुरिसे तरुणे जाव-निउणसिप्पोवगय सालीण वा, वीहीण वा, गोधू-
माण वा, जवाण वा, जवजवाण वा, पक्काणं, परियाताणं, हरियाणं, हरियकंडाणं तिक्खेणं णवपज्जणणं असिअणं पडिसाह-
रिया २ पडिसंखिविया २ जाव-इणामेव २ त्ति कट्टु सत्त लवप लुपज्जा, जति णं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवतियं कालं आउप
पहुप्पते तो णं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्जंता जाव अंतं करेता, से तेणट्टेणं जाव-'लवसत्तमा देवा' २ ।

१२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! 'अणुत्तरोववाइया देवा' २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्ध--
'अणुत्तरोववाइया देवा' २ ? [उ०] गोयमा ! अनुत्तरोववाइयाणं देवाणं अणुत्तरा सदा, जाव-अणुत्तरा फासा, से तेणट्टेणं
गोयमा ! एवं बुद्ध-जाव-'अणुत्तरोववाइया देवा' २ ।

१३. [प्र०] अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा णं केवतिपणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ? [उ०]
गोयमा ! जावतियं छट्ठमत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतिपणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइया देवा देवत्ताए उव-
वन्ना । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' त्ति ।

चोदसमसए सत्तमो उद्देशो समसो ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! शुं *लवसत्तम देवो ए लवसत्तम देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! लवसत्तम देवो ए
'लवसत्तम देवो' एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई जुवान पुरुष यावत्-निपुण शिल्पनो ज्ञाता होय, अने ते पा-
केला, लणवाने योग्य थयेला, पीळा थयेला अने पीळीनाळवाळा शालि, व्रीहि, गट्टं, जव अने जवजव (धान्यविशेष) ने [हाथथी]
एकठा करी, मुठिवडे ग्रहण करी 'आ काप्या' ए प्रमाणे शीघ्रतापूर्वक नवीन पाणी चडावेल तीक्ष्ण दातरडावडे सात लव (कोळी) जेटला
समयमां कापी नाखे, हे गौतम ! जो ते देवोलुं एटलुं (सात लव जेटलुं) आयुष्य वधारे होत तो ते देवो तेज भवमां सिद्ध थात, यावत्
सर्व दुःखोनो अन्त करत. माटे ते हेतुथी हे गौतम ! ते लवसत्तम देवो ए 'लवसत्तम' एम कहेवाय छे.

लवसत्तम देवो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरोपपातिक देवो २ छे ? [उ०] हा गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी अनुत्तरोपपातिक देवो
'अनुत्तरोपपातिक' एम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुत्तरोपपातिक देवोनी पासे अनुत्तर शब्दो, यावत्-अनुत्तर स्पर्शो होय छे,
माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावद् तेओने अनुत्तरोपपातिक देवो कहेवामां आवे छे.

अनुत्तरोपपातिक
देवो.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! केटलुं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तरोपपातिक देवो अनुत्तरोपपातिकदेवपणे उत्पन्न थाय ? [उ०] हे
गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ छट्ठ भक्तवडे जेटला कर्मनी निर्जरा करे तेटलुं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तरोपपातिक देवो अनुत्तरोपपातिकदेवपणे
उत्पन्न थाय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

केटलुं कर्म बाकी
रहेवाथी अनुत्तर
देवपणे उत्पन्न थाय ।

चतुर्दश शतके सप्तम उद्देशक समाप्त.

११ * शालि बगेरे धान्यनी एक कोळी लणता जेटलो काळ लगे तेने 'लव' कहे छे. तेवा सप्तम लव बुधीतुं आयुष ओलुं होवाथी जे विजुद्ध अप्यव-
सायवाळ अणुप्यो मोक्षे न गवा, पण सर्वाथैतिक विमानमां इत्यन्न थया ते लवसत्तम देवो कहेवाय छे.—टीका.

अट्टमो उद्देशो ।

१. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पमाप पुढवीप सक्करप्पमाप य पुढवीप केवतियं अवाहाप अंतरे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अवाहाप अंतरे पण्णसे ।

२. [प्र०] सक्करप्पमाप णं भंते ! पुढवीप वालुयप्पमाप य पुढवीप केवतियं० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-तमाप अहेसत्तमाप य ।

३. [प्र०] अहेसत्तमाप णं भंते ! पुढवीप अलोगस्स य केवतियं अवाहाप अंतरे पण्णसे ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अवाहाप अंतरे पण्णसे ।

४. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पमाप पुढवीप जोतीसस्स य केवतियं०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तनउप जोयणसप अवाहाप अंतरे पण्णसे ।

५. [प्र०] जोतिसस्स णं भंते ! सोहम्मी-साणाण य कप्पाणं केवतियं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणं जाव-अंतरे पण्णसे ।

६. [प्र०] सोहम्मी-साणाणं भंते ! सणकुमार-माहिंदाण य केवतियं० ? [उ०] एवं चेव ।

अष्टम उद्देशक.

रत्नप्रभा अने शर्करा-
प्रमाणं अन्तर.

१. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी अने शर्कराप्रभा पृथिवीनुं अबाधावडे-व्यवधानवडे केटलुं अन्तर कहेलुं छे ! [उ०] हे गौतम ! असंख्यलाख योजन [अवाधाए] अंतर कहेलुं छे.

शर्कराप्रभा अने
वालुकाप्रमाणं अन्तर.

२. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा पृथिवीनुं केटलुं अबाधावडे अंतर कहुं छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्ववत् जाणवुं-ए प्रमाणे यावत्-तमा-छट्टी नरकपृथिवी अने अधःसप्तम-सातमी नरक पृथिवी सुधी जाणवुं.

सप्तम नरक पृथिवी
अने अलोकनुं
अन्तर.

३. [प्र०] हे भगवन् ! सातमी नरक पृथिवी अने अलोकनुं केटलुं अबाधावडे अंतर कहुं छे ! [उ०] हे गौतम ! असंख्य लाख योजन अवाधाए अन्तर कहुं छे.

रत्नप्रभा अने ज्योति-
पिकनुं अन्तर.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी अने ज्योतिपिकनुं (सूर्य-चन्द्रादिनुं) केटलुं अबाधावडे अंतर कहुं छे-एम प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! सातसो ने नेवुं योजन अबाधावडे अंतर कहुं छे.

ज्योतिपिक अने
सौधर्म-ईशानदेव-
लोकनुं अन्तर.
सौधर्म-ईशान अने
सनकुमार-माहे-
न्द्रनुं अन्तर.

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिपिक अने सौधर्म-ईशानकल्पनुं केटलुं अन्तर कहुं छे ! [उ०] हे गौतम ! असंख्याता योजन यावत्-अन्तर कहुं छे.

६. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म-ईशान अने सनकुमार-माहेन्द्रनुं केटलुं अन्तर कहुं छे ! [उ०] पूर्वप्रमाणे जाणवुं.

૭. [પ્ર૦] સળકુમાર—માર્હિદાણં મંતે ! બંમલોગસ્સ કપ્પસ્સ ય કેવતિયં ? [૩૦] एवं चेव ।

૮. [પ્ર૦] બંમલોગસ્સ ણં મંતે ! લંતગસ્સ ય કપ્પસ્સ કેવતિયં ? [૩૦] एवं चेव ।

૯. [પ્ર૦] લંતયસ્સ ણં મંતે ! મહાસુક્કસ્સ ય કપ્પસ્સ કેવતિયં ? [૩૦] एवं चेव, एवं મહાસુક્કસ્સ કપ્પસ્સ સહસ્સારસ્સ ય, एवं સહસ્સારસ્સ આણય—પાણયકપ્પાણં, एवं આણય—પાણયાણ ય કપ્પાણં આરણ—હુયાણ ય કપ્પાણં, एवं આરણ—હુયાણં ગેવિજ્જવિમાણાણ ય, एवं ગેવિજ્જવિમાણાણં અણુત્તરવિમાણાણ ય ।

૧૦. [પ્ર૦] અણુત્તરવિમાણાણં મંતે ! હૈલિપમ્મારાય ય પુઢવીય કેવતિય ?—પુચ્છા [૩૦] ગોયમા ! ડુવાલસજોયणे अवाहाय अंतरे पण्णसे ।

૧૧. [પ્ર૦] હૈલિપમ્મારાય ણં મંતે ! પુઢવીય અલોગસ્સ ય કેવતિય અવાહાય ?—પુચ્છા । [૩૦] ગોયમા ! દેસુણં જોયણં अवाहाय अंतरे पण्णसे ।

૧૨. [પ્ર૦] एस णं मंते ! सालरुक्खे उण्हामिहए, तण्हामिहए, दवग्गिजालामिहए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छि-हिति, कहिं उववज्जिहिति ? [३०] गोयमा ! इहेव रायग्गिहे नगरे सालरुक्खत्ताप पच्चायाहिति, से णं तत्थ अच्चिय—वंदिय—पूय—सक्कारिय—सम्माणिय, दिच्चे, सच्चे, सच्चोवाय, सन्निरियपाडिहेरे, लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ, से णं मंते ! तओ-हितो अणंतरं उच्चट्टित्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? [३०] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिहिति, जाव—अंतं काहिति ।

૧૩. [પ્ર૦] एस णं मंते ! साललट्टिया उण्हामिहया, तण्हामिहया, दवग्गिजालामिहया कालमासे कालं किच्चा जाव—कहिं उववज्जिहिति ? [३०] गोयमा ! इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे विञ्जगिरिपायमूले महेसरिए नगरीए सामलिरुक्ख-त्ताप पच्चायाहिति, सा णं तत्थ अच्चिय—वंदिय—पूय० जाव लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ । से णं मंते ! तओहितो अणंतरं उच्चट्टित्ता० सेसं जहा सालरुक्खस्स, जाव—अंतं काहिति ।

૭. [પ્ર૦] हे भगवन् ! सनत्कुमार—माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पनुं केटलुं अन्तर होय छे ? [३०] पूर्ण प्रमाणे जाणवुं.

૮. [પ્ર૦] हे भगवन् ! ब्रह्मलोक अने लांतककल्प वच्चे केटलुं अंतर छे ? [३०] पूर्ववत् जाणवुं.

૯. [પ્ર૦] हे भगवन् ! लांतक अने महाशुक्र कल्पनुं केटलुं अंतर होय छे ? [३०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे महाशुक्र कल्प अने सहस्रारनुं अन्तर जाणवुं, तथा सहस्रार अने आनत—प्राणतकल्पोनुं, आनत—प्राणतकल्प अने आरण=अच्युतकल्पनुं, आरण=अच्युतकल्प अने प्रैवेयकनुं, अने प्रैवेयक अने अनुत्तरविमाननुं अन्तर पूर्ववत् जाणवुं.

૧૦. [પ્ર૦] हे भगवन् ! अनुत्तरविमान अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनुं केटलुं अन्तर होय छे ? [३०] हे गौतम ! वार योजननुं अ-वाधावडे अन्तर कवुं छे.

૧૧. [પ્ર૦] हे भगवन् ! ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अने अलोकनुं केटलुं अवाधावडे अंतर कवुं छे ? [३०] हे गौतम ! कंडक न्यून एक योजन अवाधाए अन्तर छे.

૧૨. [પ્ર૦] हे भगवन् ! [सूर्यनी] गरमीथी पीडित थयेलो, तृषाथी हणायेलो अने दावानळनी जाळथी बळेले आ शालवृक्ष कालमासे—मरणसमये काल करी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ? [३०] हे गौतम ! आज राजगृह नगरमां शालवृक्षपणे परीथी उत्पन्न थशे, अने ते त्यां अर्चित, वंदित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित अने दिव्य—प्रधानभूत थशे. तथा सत्यरूप—सत्यावपात—जेनी सेवा सफल थार्ये छे एवो, [पूर्वभवसंबन्धी देवोए] जेनुं प्रतिहारपणुं—सांनिध्य कर्युं छे एवो, तथा जेनी पीठ—चोतरो लीपेले अने धोळेले छे एवो ते (पूजनीय) थशे. [प્ર૦] हे भगवन् ! [ते शालवृक्ष] त्यांथी मरण पामी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ? [३०] हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रमां सिद्ध थशे, तथा यावत्—सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

૧૩. [પ્ર૦] हे भगवन् ! सूर्यनी गरमीथी हणायेले, तृषाथी पीडित थयेले तथा दावानळनी जाळथी बळेले आ शालवृक्ष—शालवृक्षनी न्हानी शाखाओ कालमासे—मरण समये काल करी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ? [३०] हे गौतम ! आ ज जंबूदीपना भारतवर्षमां विन्ध्याचलनी तळेटीमां 'माहेश्वरी' नगरीमां ते शाल्मली वृक्षरूपे उत्पन्न थशे, अने ते त्यां अर्चित, वंदित अने पूजित थशे, तथा यावत्—तेनो चोतरो लीपेले, धोळेले अने पूजित थशे. [प્ર૦] हे भगवन् ! ते त्यांथी मरण पामी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ?—इत्यादि बधुं शालवृक्षनी पेठे जाणवुं, यावत्—ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

सनत्कुमार—माहेन्द्र
अने ब्रह्मदेवलोकनुं
अन्तर.

ब्रह्मलोक अने आन्त
कनुं अन्तर.

आन्तक अने महा-
शुक्रनुं अन्तर.

अनुत्तरविमान अने
ईषत्प्राग्भारा पृथि-
वीनुं अन्तर.

ईषत्प्राग्भारा अने
अलोकनुं अन्तर.

शालवृक्ष मरीने
क्यां जशे ?

शालवृक्ष.

१४. [प्र०] एस णं मंते ! उंबरलद्विया उण्हामिहया ३ कालमासे कालं किञ्चा जाव-काहि उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! इहेव जंबुहीवे वीवे भारहे घासे पाटलिपुत्रे नगरे पाटलिपुत्रे पञ्चायाहिति । से णं तस्य अश्विय-वन्दिय-जाव-भविस्सति । से णं मंते ! अणतरं उवद्विजा-सेसं तं चेव जाव-मंतं काहिति ।

१५. तेणं कालेणं तेणं समयणं अम्मइस्स परिवायगस्स सत्त अंतेवासीसया गिम्हकालसमयंसि० एवं जहा उववाइए, जाव-आराहगा ।

१६. बहुजणे णं मंते ! अन्नमज्जस्स एवमारक्खइ, एवं जलु अम्मडे परिवायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए, एवं जहा उववाइए अम्मइस्स वसत्तया जाव-द्वहूपपरणो अंतं काहिति ।

१७. [प्र०] अत्थि णं मंते ! अन्नावाहा देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणद्वेणं मंते ! एवं बुद्धइ-‘अन्नावाहा देवा’ २ ? [उ०] गोयमा ! पभू णं एगमेगे अन्नावाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपसंसि दिव्वं देविहिं, दिव्वं देवज्जुतिं, दिव्वं देवाणुभागं, दिव्वं वसीसतिविव्वं नद्विहिं उवदंसेत्तए, णो चेव णं तस्स पुरिसस्स किञ्चि आवाहं वा पवाहं वा उप्पाएइ, छविच्छेयं वा करेति, एसुहुमं च णं उवदंसेज्जा, से तेणद्वेणं जाव-‘अन्नावाहा देवा’ २ ।

१८. [प्र०] पभू णं मंते ! सके देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं पाणिणा असिणो छिद्विजा कमंडलुमि पक्खिचित्तए ? [उ०] हंता पभू । [प्र०] से कहमिदाणि पकरेति ? [उ०] गोयमा ! छिद्विया छिद्विया च णं पक्खिचेज्जा, भिद्विया भिद्विया च णं पक्खिचेज्जा, कोद्विया कोद्विया च णं पक्खिचेज्जा, खुभिया खुभिया च णं पक्खिचेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, णो चेव णं तस्स पुरिसस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेति, एसुहुमं च णं पक्खिचेज्जा ।

उंबरलद्विया मरण
पामी क्यां जशे ?

१४. [प्र०] हे भगवन् ! [सूर्यनी] गरमीथी हृणायेल, तृपाथी पीडयेल अने दवाग्निजाळथी वळी गयेल आ उंबरवृक्षनी शाखा मरणसमये काल करी क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! ते आज जंबूद्वीपना भारतवर्षमां पाटलिपुत्र नामना नगरमां पाटलिपुत्रे उत्पन्न थशे. अने त्यां ते अर्चित, वंदित अने यावत्-पूजनीय थशे. [प्र०] ते त्यांथी मरण पामी क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] ए बहुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

अंबड परिव्राजक.

१५. ते काले, ते समये अंबड परिव्राजकना सातसो शिष्यो म्रीष्म कालना समयने विषे विहार करता-इत्यादि बहुं *औपपातिक सूत्रमां कद्या प्रमाणे अहिं कहेवुं. यावत्-‘तेओ आराधक थया’-त्यां सुधी जाणवुं.

१६. हे भगवन् ! षणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के, ‘अंबड परिव्राजक कापिल्यपुर नगरमां सो घेर जमे छे’-इत्यादि बहुं औपपातिक सूत्रमां कद्या प्रमाणे अंबडनी बधी वक्तव्यता कहेवी, यावत्-‘इदप्रतिज्ञनी पेठे यावत्-‘ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे.’

अव्याबाध देव.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के अव्याबाध देवो ए ‘अव्याबाध देवो’ (पीडा नहि करनारा) कहेवाय छे ? [उ०] हा गौतम ! एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के अव्याबाध देवो ए ‘अव्याबाध देवो’ छे ? [उ०] हे गौतम ! एक एक अव्याबाध देव एक एक पुरुषनी एक एक पांपण उपर दिव्य देवधिं, दिव्य देवज्जुति, दिव्य देवानुभाव अने बत्रीश प्रकारना दिव्य नाट्य-विधिने बतावी शकवा समर्थ छे, परन्तु ते पुरुषने स्वल्प के अधिक दुःख थवा देतो नथी, तेम तेना अवयवोनो छेद पण करतो नथी. एवी सूक्ष्मतापूर्वक (नाट्यविधि) बतावी शके छे, ते हेतुथी अव्याबाध देवो ए ‘अव्याबाध’ (पीडा नहि करनार देवो) एम कहेवामां आवे छे.

शक्र कोसला माथाने
तरवारथी कापी कमंडलुमां
नाखे तोपण
केने जरा पण दुःख
न थाय.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! देवना इन्द्र अने देवना राजा शक्र (कोइ) पुरुषना माथाने हाथवडे तरवारथी कापी नाखी कमंडलुमां नाखवा समर्थ छे ? [उ०] हा, समर्थ छे. [प्र०] ते ते वखते कमंडलुमां केवी रीते नाखे ? [उ०] ते शक्र माथाने छेदी छेदीने, भेदी भेदीने, कूटी कूटीने अने चूर्ण करी करीने कमंडलुमां नाखे, अने त्यार पछी तुरतज (ते माथाना अवयवोनो) मेळवे-एकठा करे, एटलुं सूक्ष्म करी कमंडलुमां नाखे, तेना अवयवोनो छेद करे तो पण ते पुरुषने जरा पण पीडा उत्पन्न न थाय.

१५ * जुओ औपपा० प० १३. ‘म्रीष्मकाले अंबडपरिव्राजकना सातसो शिष्योए गंगानदीना बजे कांठा उपर आवेला कापिल्यपुरथी पुरिसताळ नगर तरफ प्रयाण कर्युं. त्यार पछी तेओए उगारे अटवीमां प्रवेश कर्युं त्यारे पूर्व साथे लीधेले पाणी थइ रहुं. त्यार बाव तरसथी पीडयेला तेओ पाणीनो आपनार कोइ पण नहि मळवाथी अक्षणे नहि ग्रहण करतां अरिहंतने नमस्कारकरवापूर्वक अनशन लईने काल करीने ब्रह्मदेव लोकमां गया अने परलोकना आराधक थया.

१६ † अंबडपरिव्राजक वैक्रियलब्धिना सामर्थ्यथी मनुष्योनो विस्मय करवा माटे सो घेर जमे छे अने सो घेर पोते रहे छे. जुओ-औपपा० प० १६.
‡ इदप्रतिज्ञ संबन्धे जुओ राजप्र० प० १४९.

१७ ‡ जे परने पीडा न करे ते अव्याबाध. १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वहि, ४ बरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ अम्यर्षा अने ९ अ-रिष्ट-ए नव लोकान्तिक देवोमांनो सातमा अव्याबाध नामे लोकान्तिक देव छे. तत्पार्थसूत्रमां वरुणने बढे अक्षय अने अक्षयर्षाने बढे मरुद् ए नाम आपेले छे. ‘सारस्वता-दिस-वन्ध-रुण-गर्दतोय-तुषिता-व्याबाध-मरुतोऽरिष्टाश्च (तरवा० अ० ४ सू० २६.)

१९. [प्र०] अत्यि णं भंते ! जंभया देवा २ ? [उ०] हंता अन्धि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुद्धर—‘जंभया देवा’ २ ? [उ०] गोयमा ! जंभगा णं देवा निच्चं पसुइय—पक्कीलिया कंत्परतिमोद्धणसीला, जेणं ते देवे कुञ्जे पासेज्जा, से णं पुरिसे महंतं अयसं पाउणिज्जा, जे णं ते देवे तुट्टे पासेज्जा, से णं महंतं जसं पाउणेज्जा, से तेणट्टेणं गोयमा ! ‘जंभगा देवा’ २ ।

२०. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! जंभगा देवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! वसविहा पण्णत्ता, तंजहा—१ अन्नजंभगा, २ पाणजंभगा, ३ वत्थजंभगा, ४ लेणजंभगा, ५ सयणजंभगा, ६ पुप्फजंभगा, ७ फलजंभगा, ८ पुप्फ—फलजंभगा, ९ विज्जाजंभगा, १० अवियत्तजंभगा ।

२१. [प्र०] जंभगा णं भंते ! देवा कहिं वसहिं उव्वंति ? [उ०] गोयमा ! सधेसु सेव दीहवेयहेसु, विस—विचित्त—जमगपच्चएसु, कंचणपच्चएसु य, पत्थ णं जंभगा देवा वसहिं उव्वंति ।

२२. [प्र०] जंभगाणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं तिनी पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एणं पलिओवमं तिती पण्णत्ता । ‘सेवं भंते ! सेवं भंते !’ सि जाव—विहरति ।

चौदसमसए अट्टमो उद्देशो समचो ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जंभक देवो ते जंभक (स्वच्छन्दचारी) देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! क्या हेतुयी जंभकदेवो ए ‘जंभकदेवो’ (स्वच्छन्दचारी देवो) कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! जंभकदेवो हमेशा प्रमोदवाळ, अत्यन्त क्रीडाशील, कंदर्पने विषे रतिवाळा अने मैथुन सेववाना स्वभाववाळा होय छे, जे ते देवोने गुस्से थयेला जुए छे, ते पुरुषो घणो अपयश पामे छे, तथा जेओ ते देवोने तुष्ट थयेला जुए छे तेओ घणो यश पामे छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुयी जंभकदेवो ए ‘जंभकदेवो’ एम कहेवाय छे.

जंभक देवो.
जंभक देवो शायी
कहेवाय छे ?

२०. [प्र०] हे भगवन् ! जंभक देवो केटला प्रकारना कहा छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कहा छे—१* अन्नजंभक, २ पानजंभक, ३ वत्थजंभक, ४ गृहजंभक, ५ शयनजंभक, ६ पुष्पजंभक, ७ फलजंभक, ८ पुष्प—फलजंभक, ९ विद्याजंभक अने १० अव्यक्तजंभक.

जंभक देवोना प्रकार.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! जंभक देवो क्या वसे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ (जंभकदेवो) बधा दीर्घ वैताळोमां, चित्र, विचित्र, यमक अने समक पर्वतोमां तथा कांचनपर्वतोमां वसे छे.

जंभक देवो क्या
रहे छे ?

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जंभक देवोनी स्थिति केटला काळनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेनी एक पल्योपमनी स्थिति कही छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे—एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.

जंभक देवोनी स्थिति.

चतुर्दश शतके अष्टम उद्देशक समाप्त.

१० * भोजनविषे तेनो अभाव करवो के सद्भाव करवो, तेने अल्प करवुं के घणुं करवुं, सरस करवुं के नीरस करवुं—इत्यादि चेष्टा करे ते अन्नजंभक देवो कहेवाय छे. ए प्रमाणे पानादिजंभक देवो पण जाणवा. अन्नादिना विभाग विधाय सामान्यरूपे जे चेष्टा करे ते अव्यक्तजंभक कहेवाय छे.—टीका.

नवमो उद्देशो ।

१. [प्र०] अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण जीवं सरूविं सकम्मलेस्सं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो जाव-पासति ।

२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ? [उ०] हंता अत्थि ।

३. [प्र०] कयंरं णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति, जाव-पभासंति ? [उ०] गोयमा ! जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ व्हिया अभिनिस्सडाओ ताओ ओभासंति, पभासंति, एवं एपणं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ।

४. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला !

नवम उद्देशक.

जे भावितात्मा अन-
गार पोतानी कर्मले-
इयाने जाणतो नथी
ते शरीर जीवने
जाणे छे ?

१. [प्र०] हे भगवन् ! [संयमभावनावडे] * भावितात्मा अनगार जे पोतानी कर्मलेइयाने [विशेषरूपे] जाणतो नथी, अने [सामा-
न्यरूपे] जोतो नथी ते सरूपी-सशरीरी अने कर्म-लेइयासहित जीवने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम ! भावितात्मा अनगार जे पो-
ताना कर्मसंबन्धी लेइयाने जाणतो अने जोतो नथी ते शरीरसहित अने कर्म-लेइयावाळा पोताना आत्माने यावत्-जुए छे.

रूपी पुद्गलस्कन्धो
प्रकाशित थाय छे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! रूपी-वर्णादियुक्त सकर्मन्द्ध्य-कर्मने योग्य कृष्णादि लेइयाना पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे ? [उ०] हा,
गौतम ! तेवा पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे.

जे पुद्गलो प्रका-
शित थाय छे ते
केटला छे ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! रूपवाळा अने कर्मने योग्य अथवा कर्मसंबन्धी लेइयाना जे पुद्गलो प्रकाशित थाय छे, यावत् प्रभासित
थाय छे ते केटला छे ? [उ०] हे गौतम ! चंद्र अने सूर्यना विमानोथी जे आ बहार नीकलेली लेइयाओ (प्रकाशना पुद्गलो) छे तेओ
अवभासित थाय छे, प्रभासित थाय छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! ए वधा रूपयुक्त, कर्मने योग्य लेइयावाळा पुद्गलो प्रकाशित थाय छे.

नेरथिकोने आत्त-
सुखोत्पादक पुद्गलो
होता नथी.

४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरथिकोने आत्त-सुखकारक पुद्गलो होय छे के अनात्त-दुःखकारक पुद्गलो होय छे ? [उ०] हे
गौतम ! तेओने आत्त पुद्गलो नथी पण अनात्त पुद्गलो होय छे.

१ * भावितात्मा अनगार छद्यस्थ होवाथी ज्ञानावरणादि कर्मने योग्य अथवा कर्मसंबन्धी कृष्णादि लेइयाने जाणतो नथी, कारण के कर्मद्रव्य अने लेइयाद्रव्य अतिसूक्ष्म होवाथी छद्यस्थना ज्ञानने अगोचर छे, परन्तु ते कर्म अने लेइयावाळा तथा शरीरयुक्त आत्माने जाणे छे, कारण के शरीर चक्षुषी प्राण होवाथी अने आत्मानो शरीरनी साथे कथंचित् अनेइ होवाथी [तथा ते स्वसंविदित होवाथी] तेने जाणे छे—टीका.

३ † यद्यपि चंद्रादिविमानना पुद्गलो पृथिवीकांतिक होवाथी सचेतन छे अने तेथी ते कर्म-लेइयावाळा छे, पण तेथी नीकलेला प्रकाशना पुद्गलो कर्म-लेइयावाळा नथी, तोपण तेथी नीकलेला होवाथी प्रकाशना पुद्गलो उपचारथी कर्मलेइयावाळा कही सकाय छे.—टीका.

५. [प्र०] असुरकुमाराणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! अत्ता पोग्गला, णो अणत्ता पोग्गला, एवं जाव—यणियकुमाराणं ।

६. [प्र०] पुढविकाइयाणं—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एवं जाव—मणुस्साणं । वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

७. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला, जहा अत्ता मणिया, एवं इट्ठा वि, कंता वि, पिया वि, मणुत्ता वि माणियत्ता । एए पंच दंडगा ।

८. [प्र०] देवे णं भंते ! महद्धिप जाव—महेसक्खे रुवसहस्सं विउच्चिता पभू भासासहस्सं भासिसप ? [उ०] हंता पभू ।

९. [प्र०] सा णं भंते ! किं एगा भासा भासासहस्सं ? [उ०] गोयमा ! एगा णं सा भासा, णो खलु तं भासासहस्सं ।

१०. तेणं कालेणं, तेणं सभएणं भगवं गोयमे अच्चिरुगयं बालसूरियं जासुमणाकुसुमपुंजप्पकासं लोहितगं पासइ, पासिता जायसइ जाव—समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, जाव—नमंसिता जाव—एवं वयासी—
[प्र०] किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्टे ? [उ०] गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्टे ।

११. [प्र०] किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं भंते ! सूरियस्स पभा ? [उ०] एवं चेव, एवं छाया, एवं लेस्सा ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं असुरकुमारोने आत्त—सुखकारक पुद्गलो होय छे के अनात्त पुद्गलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्गलो होय छे, पण अनात्त पुद्गलो होता नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

असुरकुमारोने आत्त पुद्गलो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं पृथिवीकायिकोने आत्त पुद्गलो होय छे के अनात्त पुद्गलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्गलो पण होय छे, अने अनात्त पुद्गलो पण होय छे. ए प्रमाणे यावत्—मनुष्यो सुधी जाणवुं. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुरकुमारोनी पंठे जाणवुं.

पृथिवीकायिकोने आत्त अने अनात्त पुद्गलो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने इष्ट पुद्गलो होय छे के अनिष्ट पुद्गलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने इष्ट पुद्गलो होता नथी, पण अनिष्ट पुद्गलो होय छे. जेम आत्त पुद्गलो संबन्धे कहुं, तेम इष्ट, कांत, प्रिय तथा मनोज्ञ पुद्गलो संबन्धे पण कहेवुं. वळी ए प्रमाणे अहि पांच दंडक कहेवा.

नारकोने इष्ट के अनिष्ट पुद्गलो होय छे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! महर्द्धिक यावत्—मोटा सुखवाळो देव हजार रूपोने विकुर्वीने हजार भाषा बोलवा समर्थ छे ? [उ०] हा, गौतम ! तेम करवा समर्थ छे.

महर्द्धिक देवतुं हजार रूपी विकुर्वीने हजार भाषा बोलवतुं सामर्थ्य.

९. [प्र०] हे भगवन् ! ते एक भाषा छे के हजार भाषा छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक भाषा छे, पण हजार भाषा नथी.

एक भाषा के हजार भाषा ?

१०. ते काले, ते समये भगवंत गौतमे तुरतनो उगेले अने जासुमणाना पुष्पना पुंज जेवो रातो बाल्सूर्य जोयो, ते सूर्यने जोइने श्रद्धावाळ, अने यावत्—जेने प्रभनुं कुतहल उत्पन्न थयुं छे एवा भगवंत गौतम स्वामी ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आव्या, अने यावत्—नमीने यावत्—आ प्रमाणे बोल्या—[प्र०] हे भगवन् ! सूर्य ए शुं छे अने हे भगवन् ! सूर्यनो अर्थ शो छे ? [उ०] हे गौतम ! सूर्य ए शुभ पदार्थ छे, अने सूर्यनो अर्थ पण शुभ छे.

सूर्यनो अर्थ.

११. [प्र०] हे भगवन् ! सूर्य ए शुं छे अने सूर्यनी प्रभा ए शुं छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे छाया—प्रतिबिंब अने लेश्या—प्रकाशना समूह संबन्धे पण जाणवुं.

सूर्यनी प्रभा ए शुं छे ?

९ * एक समये बोकाती सखादि कोइ पण प्रहारनी भाषा एक जीवत्व अने एक उपयोग होवाची ते एक भाषा कहेवाच छे, पण हजार भाषा कहेवाती नथी—टीका.

१२. [प्र०] जे इमे मंते ! अञ्जसाय समणे निगंथे विहरंति, एते णं कस्स तेयलेस्सं वीतीवयंति ? [उ०] गोवमा ! मासपरियाय समणे निगंथे षणमंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयति, दुमासपरियाय समणे निगंथे असुरिद्वयजिन्याणं भवण-वासीणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयति, एवं एएणं अभिलाषेणं तिमासपरियाय समणे निगंथे असुरकुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयद्, अउम्मासपरियाय समणे निगंथे गहगण-नक्षत्र-ताराकूषाणं जोतिसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयद्, पंचमासपरियाय य समणे निगंथे चंदिम-सूरियाणं जोतिसिदाणं जोतिसरायाणं तेयलेस्सं वीतीवयद्, छमासपरियाय समणे निगंथे सोहम्मी-साणाणं देवाणं०, सप्तमासपरियाय समणे निगंथे सणकुमार-माहिंदाणं देवाणं०, अट्टमासपरियाय बंमलोग-लंतगाणं देवाणं तेय०, नवमासपरियाय समणे निगंथे महासुक-सहस्राराणं देवाणं तेय०, दसमासपरियाय आणय-पाणय-भारण-बुयाणं देवाणं०, एकारसमासपरियाय गेवेज्जगाणं देवाणं०, बारसमासपरियाय समणे निगंथे अणुसरोववाद्याणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयति, तेण परं सुक्के सुक्कामिजाय भविता तओ पच्छा सिज्जति, जाव-अंतं करेति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति जाव-विहरति ।

चौदसमस्य नवमो उद्देशो समप्तो ।

श्रमणोना सुखनी
पुण्यता.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! जे आ श्रमण निर्ग्रन्थो आर्यपणे-पापकर्मरहितपणे विहरे छे, तेओ कोनी तेजोलेश्याने-सुखने अतिक्रमे छे ? अर्थात्-तेमनुं सुख कोनाथी चर्डीयातुं छे ? [उ०] हे मातम ! एक मासना दीक्षा पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ वानव्यंतर देवोनी तेजो-लेश्याने-सुखने अतिक्रमे छे, (अर्थात्-वानव्यंतर देवो करतां अधिक सुखी छे.) बे मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ असुरेन्द्र सित्रायना भवनवासी देवोनी तेजोलेश्याने-सुखने अतिक्रमे छे. ए प्रमाणे ए पाठ वडे व्रण मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ असुरकुमार देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, चार मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ ग्रहगण, नक्षत्र अने तारारूप ज्योतिषिक देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, पांच मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ, ज्योतिषिकना इन्द्र, ज्योतिषिकना राजा चंद्र अने सूर्यनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, छ मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ सौधर्म अने इंशानवासी देवोनी [तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे], सात मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ सनकुमार अने माहेन्द्र देवोनी, आठ मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ ब्रह्मलोक अने लान्तक देवोनी, नव मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ महाशुक अने सहस्रार देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, दश मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, अगीपार मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ प्रैवेयक देवोनी अने बार मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ अनुत्त-रौपपातिक देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे. ल्यार बाद शुद्ध अने शुद्धतर परिणामवाळो धइने पछी सिद्ध थाय छे, यावत्-सर्वे दुःखोनी अन्त करे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावद् विहरे छे.

चतुर्दश शतके नवम उद्देशक समाप्त.

दसमो उद्देशो ।

१. [प्र०] केवली णं भंते ! छउमत्थं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।
२. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली छउमत्थं जाणइ, पासइ, तथा णं सिद्धे वि छउमत्थं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।
३. [प्र०] केवली णं भंते ! आहोहियं जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव । एवं परमाहोहियं, एवं केवल्लि, एवं सिद्धं, जाव-जहा णं भंते ! केवली सिद्धं जाणइ, पासइ, तथा णं सिद्धे वि सिद्धं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।
४. [प्र०] केवली णं भंते ! भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? [उ०] हंता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ।
५. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा तथा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? [उ०] णो तिण्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुब्बइ-‘जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा णो तथा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा’ ? [उ०] गोयमा ! केवली णं सउट्ठणे, सकम्मे, सबले, सबीरिण, सपुणिसकारपरकमे, सिद्धे णं अणुट्ठणे जाव-अपुरिसकारपरकमे, से तेणट्ठेणं जाव-वागरेज्ज वा ।
६. [प्र०] केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ? [उ०] हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, एवं चेव, एवं आउट्ठेज्ज वा पसारेज्ज वा, एवं ठाणं वा सेज्जं वा निस्सीहियं वा चेपज्जा ।

दशम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केवल्लज्ञानी छयस्थने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, जाणे अने जुए.
२. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवल्लज्ञानी छयस्थने जाणे अने जुए तेम सिद्ध पण छयस्थ जीवने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जुए.
३. [प्र०] हे भगवन् ! केवल्लज्ञानी आधोवधिकने-प्रतिनियतक्षेत्रधिपयक अवधिज्ञानवंतने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने जुए. एम परमावधिज्ञानीने पण जाणे अने जुए. ए प्रमाणे केवल्लज्ञानी अने सिद्धने पण जाणे, यावत्-[प्र०] जेम हे भगवन् ! केवल्लज्ञानी सिद्धने जाणे अने जुए तेम सिद्ध पण सिद्धने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, जाणे अने जुए.
४. [प्र०] हे भगवन् ! केवल्लज्ञानी बोले अथवा प्रश्नो उत्तर कहे ? [उ०] हा, गौतम ! केवली बोले अपवा प्रश्नो उत्तर कहे.
५. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवल्लज्ञानी बोले अथवा प्रश्नो उत्तर कहे तेम सिद्ध पण बोले अथवा प्रश्नो उत्तर आपे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-शुक नयी, अर्थात् सिद्ध बोले नहि. [प्र०] हे भगवन् ! क्या हेतुयी एम कहो छो के-‘जेम केवल्लज्ञानी बोले अथवा कहे तेम सिद्ध बोले नहि अथवा प्रश्नोत्तर न कहे’ ? [उ०] हे गौतम ! केवल्लज्ञानी उत्थान-उभा यवुं, कर्म-गमनादि क्रिया, बल, वीर्य अने पुरुषकार-पराक्रम सहित होय छे पण सिद्धो उत्थानरहित, यावत्-पुरुषकार-पराक्रमरहित होय छे, माटे हे गौतम ! सिद्धो केवलीनी पेटे यावत्-प्रश्नोत्तर कहेता नयी.
६. [प्र०] हे भगवन् ! केवल्लज्ञानी पोतानी आख उघाडे अने मीचे ? [उ०] हा, गौतम ! आख उघाडे अने मीचे, एउ प्रमाणे शरीरने संकुचित करे अने प्रसारे, उभा रहै, बेसे अने आडे पड्छे थाय, तथा शय्या (वसति) अने नैवेधिकी (थोडा काठ माटे वसति) करे.

केवल्लज्ञानी छयस्थने जाणे.

सिद्ध पण छयस्थने जाणे.

केवली अवधिज्ञानीने जाणे.

केवल्लज्ञानी बोले !

केवलीनी पेटे सिद्ध बोले के नहि ! केवल्लज्ञानीनी पेटे सिद्ध केम न बोले !

केवल्लज्ञानी आख उघाडे अने मीचे !

७. [प्र०] केवली णं भंते ! इमं रयणप्यमं पुढविं रयणप्यमापुढवीति जाणति, पासति ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।
८. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्यमं पुढविं रयणप्यमापुढवीति जाणइ, पासइ, तथा णं सिद्धे वि इमं रयणप्यमं पुढविं रयणप्यमापुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ ।
९. [प्र०] केवली णं भंते ! सक्करप्यमं पुढविं सक्करप्यमापुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं खेव, एवं जाव—अहेसत्तमा ।
१०. [प्र०] केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्यं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ एवं खेव, एवं ईसानं, एवं जाव—अच्युयं ।
११. [प्र०] केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणे गेवेज्जविमाणेति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं खेव, एवं अनुत्तरविमाणे वि ।
१२. [प्र०] केवली णं भंते ! ईसिपम्भारं पुढविं ईसीपम्भारपुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं खेव ।
१३. [प्र०] केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गलेति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं खेव, एवं दुपपसियं खंधं, एवं जाव—[प्र०] जहा णं भंते ! केवली अणंतपपसियं खंधं अणंतपपसिए खंधेति जाणइ, पासइ तथा णं सिद्धे वि अणंतपपसियं जाव—पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ । 'खेवं भंते ! खेवं भंते ! सि ।

चोदसमसए दसमो उद्देशो समत्तो ।

समत्तं चोदसमं सयं ।

केवलज्ञानी रत्नप्रभा
पृथिवीने जाणे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! केवली रत्नप्रभा पृथिवीने आ 'रत्नप्रभा पृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] हा गौतम ! जाणे अने देखे.

सिद्ध पण रत्नप्रभा
पृथिवीने जाणे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवलज्ञानी रत्नप्रभा पृथिवीने आ 'रत्नप्रभा' एम जाणे अने देखे तेम सिद्ध पण रत्नप्रभा पृथिवीने 'रत्नप्रभा'—एम जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे.

केवली शर्कराप्रभा
जाणे ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी शर्कराप्रभा पृथिवीने 'शर्कराप्रभापृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—सातमी नरकपृथिवी सुधी जाणवुं.

केवली सौधर्मकल्प
कल्पने जाणे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! केवली सौधर्मकल्पने 'सौधर्मकल्प' एम जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे. ए प्रमाणे ईशान अने यावत् अच्युतकल्प सुधी जाणवुं.

प्रैवेयकविमाने जाणे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी प्रैवेयकविमानने 'प्रैवेयकविमान' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—अनुत्तरविमान संबन्धे पण जाणवुं.

ईषत्प्राग्भारा पृथि-
वीने जाणे ?

१२. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी ईषत्प्राग्भारा पृथिवीने 'ईषत्प्राग्भारा पृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.

परमाणु पुद्गलने
जाणे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी परमाणुपुद्गलने 'परमाणुपुद्गल' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे. ए प्रमाणे द्विप्रदेशिक स्कन्ध, अने यावत्—जेम—[प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने 'अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध'—एम जाणे अने देखे तेम सिद्ध पण अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने यावत्—जुए ? [उ०] हा, जाणे अने जुए. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

चतुर्दश शतके दशम उद्देशक समाप्त.

चतुर्दश शतक समाप्त.

पन्नरसमं सयं ।

नमो सुयदेवयाए भगवईए ।

१. तेणं कालेणं तेणं समणं सावत्थी नामं नगरी होत्था, वन्नयो । तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे विसीभाए तत्थ णं कोट्टए नामं वेहए होत्था, वन्नयो । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हाहाहला नामं कुंभकारी आजीविओवा-सिया परिवसति, अह्वा जाघ-अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्टा गहियट्टा पुच्छियट्टा विणिच्छियट्टा अट्टिमिजपेम्माणुरा-गरत्ता, अयमाउसो ! 'आजीवियसमये अट्टे, अयं परमट्टे, सेसे अणट्टे'सि आजीवियसमणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउद्धीसवासपरियाए हाहाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरि-दुडे आजीवियसमणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अन्नदा कदायि इमे छ विसाचरा अंतियं पाउम्मवित्था, तंजहा-१ साणे, २ कलंदे, ३ कणियारे, ४ अच्छिहे, ५ अग्गिबेसायणे, ६ अज्जणे गोमायुपुत्ते । तए णं ते छ विसाचरा अट्टविहं पुच्चगयं मग्गदसमं सतेहिं २ मतिदंसणेहिं निज्जुहंति, स० २-हिंसा गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्टा

पंचदश शतक.

भगवती श्रुतदेवताने नमस्कार.

१. ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीनी उत्तर-पूर्व दिशाए (ईशानकोणमां) कोष्ठक नामे चैल हतुं. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमां आजीविक मतनी उपासिका हाहाहला नामे कुंभारण रहेती हती. ते ऋद्धिवाळी यावत्-कोइथी परामव न पामे तेवी हती. तेणे आजीविकना सिद्धांतनो अर्थ (रहस्य) ग्रहण कर्यो हतो, अर्थ पूछथो हतो अने अर्थनो निश्चय कर्यो हतो. तेना अस्थिनी मज्जा प्रेम अने अनुरागवडे रंगाएली हती. 'हे आयुष्मान्! आजीविकना सिद्धांतरूप अर्थ तेज खरो अर्थ छे अने तेज पर-मार्थ छे, बाकी सर्व अनर्थ छे'-ए प्रमाणे ते आजीविकना सिद्धांतवडे आत्माने भावित करती विहरती हती. ते काले अने ते समये चोवीश वर्षना दीक्षा पर्यायवाळो मंखलिपुत्र गोशालक हाहाहला नामे कुंभारणना कुंभकारापण-हाटमां आजीविकना संघवडे परिवृत थई आजीविकना सिद्धांतवडे आत्माने भावित करतो विहरे छे. ते वखते ते मंखलिपुत्र गोशालकनी पासे अन्य कोइ दिवसे आ छ *दिशाचरो आग्या. ते आ प्रमाणे-१ शान, २ कलंद, ३ कर्णिकार, ४ अछिद्र, ५ अग्निवेश्यायन अने ६ गोमायुपुत्र अर्जुन. ल्यार पछी ते छ दिशाचरोए पूर्व-श्रुतमां कहेला आठ प्रकारना विमिच्च, (नवमां) गीतमार्ग अने दशमां नृत्यमार्गने पोतपोतानी मतिना दर्शनवडे (पूर्वश्रुतमांथी) उद्धरी मंखलिपुत्र गोशालकनो (शिष्यमावे) आश्रय कर्यो. ल्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक ते †अष्टांग महानिमित्तना कइंक (स्वल्प) उपदेशवडे सर्व प्राणीओ, सर्व भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सज्जोने आ छ बाबतना अनतिक्रमणीय-अन्यथा न थाय तेवा उत्तर आपे छे, ते छ बाबत आ प्रमाणे-१ लाभ, २ अलाभ, ३ सुख, ४ दुःख, ५ जीवित अने ६ मरण. ल्यार पछी ते मंखलिपुत्र गोशालक अष्टांग

श्रावस्ती नगरी.
कोष्ठक चैल.
हाहाहला कुंभारण.

गोशालकनुं संघसहि-
त हाहाहला कुंभा-
रणे वेर आगवव,
गोशालकने छ दि-
शाचरोनुं बाकी
मज्जुं.

१ * आ छ दिशाचरो पासांवा (पतित) थयेका महावीर खापीना शिष्य हता-एन प्राचीन टीकाकार कहे छे अने पाश्चात्यनी परंपरामां थयेका छे-एन शिष्यकार कहे छे.-टीका.

† विमिच्चका आठ प्रकार छे-१ विष्य, २ औत्पात, ३ आंतरेय, ४ सोम, ५ आप, ६ सार, ७ उच्छ्रय अने ८ च्चंवन.

હું । તપ નં સે ગોસાલે મંચલિપુત્રે તેણં અટુંગસ્સ મહાનિમિત્તસ્સ કેણ્ણ ઉહોયમેણેણં સહોસિ પાપાણં, સહોસિ ભૂયાણં, સહોસિ ઝીવાણં, સહોસિ સસાણં હમાઈં છ અણરુકમણિજ્ઞાઈં વાગરણાઈં વાગરેતિ, તં જહા “૧-હામં ૨ મહામં ૩ સુઈં ૪ ડુક્કમં ૫ ઝીવિયં ૬ મરણં તહા” । તપ નં સે ગોસાલે મંચલિપુત્રે તેણં અટુંગસ્સ મહાનિમિત્તસ્સ કેણ્ણ ઉહોયમેણેણં સાવત્થીય નગરીય અજિણે જિણપ્પલાવી, અણરહા અરહપ્પલાવી, અકેવલી કેવલિપ્પલાવી, અસહ્ણ સહ્ણુપ્પલાવી, અજિણે જિણસહ્ પગા-સેમાણે વિહરહ ।

૨. તપ નં સાવત્થીય નગરીય સિંધાહગ-જાવ-પહેસુ વહુજણો અબ્બમ્મસ્સ યથમારુક્કહ, જાવ-એવં પરુવેતિ-‘એવં જલુ દેવાણુપ્પિયા ! ગોસાલે મંચલિપુત્રે જિણે જિણપ્પલાવી જાવ-પગાસેમાણે વિહરતિ, સે કહમેયં મહે એવં ? તેણં કાલેણં તેણં સમણં સામી સમોસહે, જાવ-પરિસા પહિગયા । તેણં કાલેણં તેણં સમણં સમણસ્સ ભગવ્વો મહાવીરસ્સ જેદ્દે અંતે-વાસી હંદમૂત્તી ધામં અણગારે ગોયમગોણેણં જાવ-હટ્ટહટ્ટેણં-એવં જહા વિતિયસય નિવંતુદ્દેસય જાવ-અહમાણે વહુજણસહ્ નિસામેતિ, વહુજણો અબ્બમ્મસ્સ યથમારુક્કહ ૪-‘એવં જલુ દેવાણુપ્પિયા ! ગોસાલે મંચલિપુત્રે જિણે જિણપ્પલાવી જાવ-પગાસેમાણે વિહરતિ, સે કહમેયં મહે એવં ? તપ નં ભગવં ગોયમે વહુજણસ્સ અંતિયં યયમટ્ટં સોઠ્ઠા નિસમ્મ જાવ-જાવસદ્દે જાવ-મત્તપાણં પહિવંસેતિ, જાવ-પહ્ણુધાસમાણે એવં ઘયાસી-‘એવં જલુ અહં મંતે ! હટ્ટં તં ચેવ જાવ-જિણસહ્ પગાસે-માણે વિહરતિ’; સે કહમેયં મંતે ! એવં ? તં હચ્છામિ ણં મંતે ! ગોસાલસ્સ મંચલિપુત્રસ્સ ઉટ્ટાણપરિયાણિયં પરિકહિયં । ‘ગોયમા’ ! હી સમણે ભગવં મહાવીરે ભગવં ગોયમં એવં ઘયાસી-જણં ગોયમા ! સે વહુજણે અબ્બમ્મસ્સ યથમારુક્કહ ૪-‘એવં જલુ ગોસાલે મંચલિપુત્રે જિણે જિણપ્પલાવી જાવ-પગાસેમાણે વિહરહ’ તણં મિચ્છા । અહં પુણ ગોયમા ! યથમારુક્કામિ જાવ-પરુવેમિ-‘એવં જલુ યયસ્સ ગોસાલસ્સ મંચલિપુત્રસ્સ મંચલિનામં મંહે પિતા હોત્થા । તસ્સ ણં મંચલિસ્સ મંચસ્સ મહાનામં મારિયા હોત્થા, સુકુમાલં જાવ-પહિરુવા । તપ નં સા મહા મારિયા અબ્બા કદાયિ સુઘિણી યાવિ હોત્થા । તેણં કાલેણં તેણં સમણં સરવણે નામં સન્નિવેસે હોત્થા, રિદ્ધ-ત્થિમિયં જાવ-સન્નિમપ્પગાસે, પાસાદીય ૪ । તત્થ ણં સરવણે સન્નિવેસે ગોવહુલે નામં માહણે પરિવસતિ, અદ્દે જાવ-અપરિભૂય, રિઝ્ઘેવં જાવ-સુપરિનિદ્દિય યાવિ હોત્થા । તસ્સ ણં ગો-

મહાનિમિત્તના કોઈક એવા ઉપદેશમાત્રવડે શ્રાવસ્તી નગરીમાં અજિન છતાં ‘હું જિન છું’ એમ પ્રલાપ કરતો, અર્હત્ નહિ છતાં ‘હું અર્હત્ છું’ એમ મિથ્યા વકવાદ કરતો, કેવલી નહિ છતાં ‘હું કેવલી છું’ એમ નિરર્થક બોલતો, સર્વજ્ઞ નહિ છતાં ‘હું સર્વજ્ઞ છું’ એમ મિથ્યા કથન કરતો અને અજિન છતાં જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો વિચરે છે.

શ્રાવસ્તી નગરીમાં
ઘણા માણસો કહે છે
કે-‘ગોશાલક પો-
તાને જિન કહેતો
વિચરે છે’ તે કેમ
માની શકાય ?

૨. સ્વાર બાદ શ્રાવસ્તી નગરીના શૃંગાટકના આકારવાળા ત્રિક અને યાવત્-રાજમાર્ગોને વિષે ઘણા માણસો પરસ્પર એ પ્રમાણે કહે છે, યાવત્-એમ પ્રરૂપે છે કે ‘હે દેવાનુપ્રિય ! એ પ્રમાણે સ્વરેશ્વર મંચલિપુત્ર ગોશાલક જિન ધર્મને પોતાને જિન કહેતો, યાવત્-જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો વિચરે છે, તો એ પ્રમાણે કેમ માની શકાય ? તે કાલે તે સમયે મહાવીર સ્વામી સમોસર્યા; યાવત્-પર્વદા (વાંદીને) પાછી ગઈ. તે કાલે-તે સમયે શ્રમણ ભગવંત મહાવીરના જ્યેષ્ઠ અંતેવાસી (કિંચ્ય) ગૌતમગોત્રીય ઇન્દ્રભૂતિ નામે અનગાર યાવત્-હટ્ટ હટ્ટને પારણે-હ્યાદિ ઘીજા શતકના *નિર્મન્ય ઉદ્દેશકર્તા કહ્યા પ્રમાણે યાવત્-ગોચરી માટે ફરતા ઘણા માણસોનો શબ્દ સાંભળે છે, ઘણા માણસો પર-સ્પર આ પ્રમાણે કહે છે કે, ‘હે દેવાનુપ્રિય ! સ્વરેશ્વર મંચલિપુત્ર ગોશાલક જિન ધર્મને પોતાને જિન કહેતો, યાવત્-જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો વિચરે છે, તો એ પ્રમાણે કેમ માની શકાય ? સ્વાર બાદ ભગવાન્ ગૌતમ ઘણા માણસો પાસેથી આ વાત સાંભળીને અને અવધારીને શ્રદ્ધાવાળા થઈ યાવત્-માતપાણી દેલાહી યાવત્-પર્યુપાસના કરતા આ પ્રમાણે બોલ્યા-‘એ પ્રમાણે સ્વરેશ્વર હે ભગવન્ ! હું હટ્ટ હટ્ટને પારણે હ્યાદિ પૂર્વોક્ત કહેતું, યાવત્-તે ગોશાલક જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો વિહરે છે, તો હે ભગવન્ ! એ પ્રમાણે કેમ હોય ? માટે હે ભગવન્ ! મંચલિપુત્ર ગોશાલકનો જન્મર્થા આરંભીને અન્ત સુધીનો આપનાથી કહેવાયેલો વૃત્તાન્ત સાંભળ્યા હચ્છું છું.’ ‘હે ગૌતમ’ ! એ પ્રમાણે કહી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે ભગવંત ગૌતમને આ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે ગૌતમ ! જે ઘણા માણસો પરસ્પર આ પ્રમાણે કહે છે કે એ પ્રમાણે સ્વરેશ્વર મંચલિપુત્ર ગોશાલક જિન ધર્મને અને પોતાને જિન કહેતો યાવત્-જિન શબ્દનો પ્રકાશ કરતો વિચરે છે, તે મિથ્યા-અસસ્સ છે.’ હે ગૌતમ ! હું આ પ્રમાણે કહું છું, યાવત્-પ્રરૂપું છું-‘એ પ્રમાણે સ્વરેશ્વર આ મંચલિપુત્ર ગોશાલકનો મંચલિનામે મંચજાતિનો પિતા હતો. તે મંચલિનામે મંચને મદ્રા નામે સ્ત્રી હતી. તે સુકુમાલ હાથપગવાળી, યાવત્-પ્રતિરૂપ-સુંદર હતી. સ્વાર બાદ તે મદ્રા નામે સ્ત્રી અન્ય કોઈ દિવસે ગર્ભિણી થઈ. તે કાલે અને તે સમયે સરવણ નામે ગામ હતું. તે ઋદ્ધિવાલું, ઉપદ્રવરહિત, યાવત્-દેવલોક સમાન પ્રકાશવાળું અને મનને પ્રસન્નતા આપનાર હતું. તે સરવણ નામે ગામને વિષે ગોવહુલ નામે શ્રામણ રહેતો હતો. તે ઘનિક, યાવત્-કોઈથી પરામર્થ ન પામે તેથી અને ઋગ્વેદ-હ્યાદિ યાવત્-શ્રામણના શાસ્ત્રોને વિષે નિપુણ હતો. તે ગોવહુલ શ્રામણને એક ગોશાલ હતી. તે વચ્ચે તે મંચલિ નામે મંચ-

ભગવંતે કહેલો ગો-
શાલકનો ઉત્પાન્ન.

મંચલિ પિતા.

મદ્રા સ્ત્રી.

સરવણગામ.

ગોવહુલ શ્રામણ.

गोशालक नाम गोशाला वासि होत्या । तप नं से मंजली मंके जजया कदापि महाय भारियाय गुणिणीय सदि चित्तफल-
 मंजलस्येणं अप्याणं भावेमाणे पुत्राणुपुत्रिं चरमाणे गामाणुगामं दूरजमाणे जेजेव सरवणे सन्निवेशे जेजेव गोबहुलस्स
 माहणस्स गोशाला तेजेव उवागच्छर, ते० २-च्छिता गोबहुलस्स माहणस्स गोशालाय पगदेसंसि मंडनिक्खेवं करेति, मंड०
 २ करेता सरवणे सन्निवेशे उच्च-नीय-मज्झिमारं कुलाहं घरसमुदाणस्स मिक्खायरियाय अडमाणे वसहीय सच्चओ समंता
 मगण-गवेसणं करेति, वसहीय सच्चओ समंता मगण-गवेसणं करेमाणे अन्नत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स
 माहणस्स गोशालाय पगदेसंसि वासावासं उवागय । तप नं सा भद्रा भारिया नवणं मासाणं बहुपडिपुत्राणं अज्जट्टमाण
 राहिय्याणं वीसिक्खंताणं सुकुमाल० जाव-पडिक्खवं दारगं पयाया । तप नं तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो पक्कारस्समे दिवसे
 वीसिक्खे जाव-वारसाहे दिवसे अयमेवारुवं गोणं गुणनिप्पन्नं नामधेज्जं करेति-“जम्हा णं अम्हं इमे दारय गोबहुलस्स
 माहणस्स गोशालाय जाय तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं ‘गोशाले’ ‘गोशाले’सि । तप नं तस्स दारगस्स
 अम्मा-पियरो नामधेज्जं करेति ‘गोशाले’सि । तप नं से गोशाले दारय उम्मुक्खवालमावे विण्णायपरिणयमेसे जोधणगमणुप्पत्ते
 सयमेव पाडियं चित्तफलं करेति, सयमेव० २ करेता चित्तफलगहत्थगय मंजलस्येणं अप्याणं भावेमाणे विहरति ।

३. तेणं कालेणं तेणं समयं अहं गोयमा ! तीसं वासाहं आगारवासमज्जे वसिता अम्मा-पिंहिं देवत्तगणहिं एवं जहा
 मावणाय जाव-एणं देवदूसमावाय मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगरियं पक्कसय । तप नं अहं गोयमा ! पढमं वासं अज्ज-
 मासंअज्जमासेणं जममाणे अट्टियगामं निस्साय पढमं अंतरावासं वासावासं उवागय । दोब्बं वासं मासंमासेणं जममाणे पुत्रा-
 णुपुत्रिं चरमाणे गामाणुगामं दूरजमाणे जेजेव रायगिहे नगरे, जेजेव नालंदा बाहिरिया, जेजेव तंतुवायसाला, तेजेव उवा-
 गच्छामि, ते० २-च्छिता अहापडिक्खं उग्गहं भोगिण्हामि, अहा० २-ग्घिता तंतुवायसालाय पगदेसंसि वासावासं उवा-
 गय । तप नं अहं गोयमा ! पढमं मासजमणं उवसंपज्जिता णं विहरामि । तप नं से गोशाले मंजलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगय
 मंजलस्येणं अप्याणं भावेमाणे पुत्राणुपुत्रिं चरमाणे जाव-दूरजमाणे जेजेव रायगिहे नगरे, जेजेव नालंदा बाहिरिया, जेजेव
 तंतुवायसाला तेजेव उवागच्छर, ते० २-च्छिता तंतुवायसालाय पगदेसंसि मंडनिक्खेवं करेति, मंड० २ करेता रायगिहे
 नगरे उच्च-नीय० जाव-अन्नत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाय पगदेसंसि वासावासं उवागय, जत्थेव णं

मिक्षाचर अन्य कोइ दिवसे गर्भिणी एवी भद्रा नामे ली साथे चित्रनुं पाटीउं हायमां लइ मिक्षाचरपणावडे आत्माने भावित करतो अनु-
 क्रमे विचरतो एक गामथी बीजे गाम जतो ज्यां शरवण नामे सन्निवेश-ग्राम छे अने ज्यां गोबहुल नामे ब्राह्मणनी गोशाला छे त्यां आव्यो;
 त्यां आवीने गोबहुल नामे ब्राह्मणनी गोशालाना एक भागमां पोतानुं राचरचीउं मूक्युं, मूकीने शरवण नामे गाममां उच्च, नीच अने मध्यम
 कुळना घर समुदायमां मिक्षाचर्यां माटे फरतो रहेवा माटे चोतरफ स्थाननी गवेवणा करवा लग्यो, चोतरफ गवेवणा करतां कोइ पण स्वळे
 रहेवानुं स्थान नहि मळतां तेणे गोबहुल ब्राह्मणनी गोशालाना एक भागमां वर्षाकृतु माटे आवास कर्यो. ते वखते ते भद्रानामे लीए पूरा
 नवमास अने साडा सात दिवस वीला पछी सुकुमालहायपगवाळ्य अने यावत्-सुन्दर एवा पुत्रने जन्म आप्यो. ल्यार बाद ते बाळकना
 मात-पिताए अगियारमो दिवस वीला पछी यावत्-वारमे दिवसे आ आवा प्रकारनुं गुणयुक्त अने गुणनिप्पन्न नाम पाळ्युं. कारण के ‘आ
 बाळक गोबहुलनामे ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थयो छे, ते माटे आ बाळकनुं नाम गोशालक हो’-एस विचारी मातापिताए ते बाळकनुं
 ‘गोशालक’ एतुं नाम पाळ्युं. ल्यार बाद ते गोशालक नामे बाळक बाल्यावस्थानो त्याग करी विज्ञानवडे परिणतमतिवाळो थइ यौवनने
 प्राप्त थयो अने पोतेज स्वतंत्र चित्रपट हायमां लइ मंजलपणावडे आत्माने भावित करतो विहरवा लग्यो.

३. ते काले अने ते समये हे गौतम ! में त्रीश वर्ष सुधी गृहवासमां रहीने मातापिता देवगत थया पछी ए प्रमाणे-(आचा-
 र्याना वीक्षा श्रुतस्कंधना पंदरमा) भावना अप्यपनने विषे कक्षा प्रमाणे ‘मातापिता जीवता वीक्षा नहि लउं’ आवो अमिग्रह पूर्ण थयो
 जस्यो सुवर्णनो त्याग करी, बळनो त्याग करी-इत्यादि यावत्-एक देवदूष्य वळने ग्रहण करी मुंड-दीक्षित थईने गृहस्थावासनो त्याग करी
 प्रव्रजानो लीकार कर्यो. ते वखते हे गौतम ! हुं पहेला वर्षने विषे अर्धमास अर्धमासक्षमण करतां अस्थिग्रामनी निश्राए प्रथम वर्षाकालमां रहेवा
 माटे आप्यो, बीजा वर्षे मास मासक्षमण करतां करतां अनुक्रमे विहार करतां, एक गामथी बीजे गाम जतां ज्यां राजगृह नगर छे, ज्यां
 नालंदानो बाह्य भाग छे अने ज्यां तंतुवाय-वणकरनी शाला छे त्यां आव्यो, आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी तंतुवायनी शालाना
 एक भागमां वर्षाकृतुमां रळो. ल्यार बाद हे गौतम ! हुं प्रथम मासक्षमणनो लीकार करी विहरवा लग्यो. ते समये मंजलिपुत्र गोशालक
 चित्रपट हायमां ग्रहण करी मंजलपणावडे-मिक्षाचरपणावडे आत्माने भावित करतो अनुक्रमे विचरतो, यावत्-एक गामथी बीजे गाम जतो
 ज्यां राजगृह नगर छे, ज्यां नालंदानो बाह्य भाग छे अने ज्यां वणकरनी शाला छे त्यां आव्यो, त्यां आवीने तंतुवायनी शालाना एक
 भागमां वर्षाकृतु मूक्युं. मूकीने राजगृह नगरमां उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां आहारने माटे जतो, यावत्- बीजे कथाइ पण वसति नहि

गोशालक नाम.

भगवान् महावीर
 मातापिता देवकोक
 गया पछी वीक्षा
 लीपी.

प्रथम वर्षे अस्थिग्राम
 कर्मा चातुर्वर्त्त
 बीजा वर्षे राजगृह
 नगर.

१. * आचार्याः हिं सुतं श्रुत्वा श्रुतस्कंधना पं० ५१३-३ ।
 ५५ म० ६०

અહં ગોયમા ! । તપ ણં અહં ગોયમા ! પદમમાસક્ષમણપારણગંસિ તંતુવાયસાલાઓ પદિનિક્ષમમામિ, તંતુ ૦ ૨-વચ્ચિસા
 ણાલંવાહિરિયં મજ્જમજ્જેણં જેણેવ રાયગિહે નગરે તેણેવ ઉવાગચ્છામિ, રાયગિહે નગરે ઉચ્ચ-નીચ ૦ જાવ-અહમાણે વિજયસ્સ
 ગાહાવસ્સ ગિહં અણુપચિટ્ટે । તપ ણં સે વિજય ગાહાવતી મમં પચ્ચમાણં પાસતિ, પાસિસા હટ્ટુતુટ્ટુ ૦ કિપ્પામેવ આસવાઓ
 અમ્મુટ્ટે, સિ ૦ ૨-ટ્ટેસા પાયપીઠાઓ પચ્ચોવહર, પા ૦ ૨-હિસા પાડયાઓ ઓમુપર, પા ૦ ૨ ઓમુપરસા વગલાહિયં ઉચ્ચરાસંઠં
 કરેતિ, કરેસા અંજલિમહલિયહત્થે મમં સત્તદુપયાઈં અણુગચ્છર, ૨ મમં તિક્કહુસો આયાહિણપયાહિણં કરેતિ, ૨ મમં વંદતિ
 નમંસતિ, ૨ મમં વિહલેણં અસણ-પાણ-આહમ-સારમેણં પહિલામેસ્સામિસિ કહુ તુટ્ટે, પહિલામેમાણે ચિ તુટ્ટે, પહિલામિતે ચિ
 તુટ્ટે । તપ ણં તસ્સ વિજયસ્સ ગાહાવસ્સ તેણં દહ્મસુજેણં ધાયગસુજેણં પહિગાહગસુજેણં તિવિહેણં તિકરણસુજેણં ધાણેણં મય
 પહિલામિપ સમાણે દેવાડપ નિબદ્ધે, સંસારે પરિસીકપ, ગિહંસિ ય સે રમાઈં પંચ વિદ્ધાઈં પાડમ્મૂયાઈં, તંજહા-૧વસુધારા
 ટુટ્ટા, ૨ દસસઘને કુસુમે નિવાતિપ, ૩ સેલુક્ષેવે કપ, ૪ આહયાઓ વેવદુંદુમીઓ, ૫ અંતરા ચિ ય ણં આગાસે 'અહો વાણે
 વાણે' સિ ટુટ્ટે । તપ ણં રાયગિહે નગરે સિંઘાહગ ૦ જાવ-પહેસુ વહુજણો અજ્જમજ્જસ્સ વચ્ચમાઈકલર, જાવ-વંચં પકવેઈ- 'ધણે ણં
 દેવાણુપ્પિયા ! વિજય ગાહાવતી, કયત્થે ણં દેવાણુપ્પિયા ! વિજયે ગાહાવર્ઈ, કયપુણે ણં દેવાણુપ્પિયા ! વિજય ગાહાવર્ઈ, કવ-
 લક્ષણે ણં દેવાણુપ્પિયા ! વિજયે ગાહાવર્ઈ, કયા ણં લોયા દેવાણુપ્પિયા ! વિજયસ્સ ગાહાવસ્સ, સુલજે ણં દેવાણુપ્પિયા !
 માણુસ્સપ જમ્મજીવિયફલે વિજયસ્સ ગાહાવસ્સ, જસ્સ ણં ગિહંસિ તદ્ધારુવે સાપુ સાપુરુવે પહિલામિપ સમાણે રમાઈં પંચ
 વિદ્ધાઈં પાડમ્મૂયાઈં, તંજહા-૧ વસુધારા ટુટ્ટા, જાવ-'અહો વાણે વાણે' સિ ટુટ્ટે, તં ધણે, કયત્થે, કયપુણે, કયલક્ષણે, કયા
 ણં લોયા, સુલજે માણુસ્સપ જમ્મજીવિયફલે વિજયસ્સ ગાહાવસ્સ, વિજ ૦' ૨ । તપ ણં સે ગોસાલે મંચલિપુત્તે વહુજણસ્સ
 અંતિપ વ્યમહં સોઘા નિસમ્મ સમુપ્પન્નસંસપ સમુપ્પન્નકોહહલ્લે જેણેવ વિજયસ્સ ગાહાવસ્સ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છર, તેણેવ
 ઉવાગચ્છિસા પાસર વિજયસ્સ ગાહાવસ્સ ગિહંસિ વસુહારં ટુટ્ટં, દસસઘણં કુસુમં નિવહિયં, મમં ષ ણં વિજયસ્સ ગાહાવ-
 ઇસ્સ ગિહાઓ પદિનિક્ષમમાણં પાસતિ, પાસિસા હટ્ટુટ્ટે જેણેવ મમં અંતિપ તેણેવ ઉવાગચ્છર, ઉવાગચ્છિસા મમં તિક્કહુસો

પ્રથમ માસક્ષમણના
 પારણાને દિવસે વિ-
 જયગાથાપતિના ઘેર
 ભગવંતનો પ્રવેશ.

વિજયગૃહપતિને ઘેર
 પાંચ દિવ્યું પ્રગટ
 થયું.

ગોશાલકુળું વિજય-
 ગૃહપતિને ઘેર
 ભાગમન.

મળતાં તે તંતુવાયની શાલાના એક ભાગમાં જ્યાં હું રહેલો હતો ત્યાં વર્ષાઋતુમાં રહેવા માટે આવ્યો. સ્વાર બાદ હે ગૌતમ ! હું પ્રથમ માસક્ષ-
 મણના પારણાને દિવસે તંતુવાયની શાલાયકીં બહાર નીકળી નાલંદાના બહારના ભાગના મધ્ય ભાગમાં ધઈ જ્યાં રાજગૃહ નગર છે ત્યાં આવ્યો.
 રાજગૃહ નગરમાં ઉચ્ચ, નીચ અને મધ્યમ કુલમાં યાવત્-આહાર માટે ફરતા મેં વિજયનામે ગાથાપતિના ઘરમાં પ્રવેશ કર્યો. તે વચ્ચે તે વિજયનામે
 ગાથાપતિને મને આવતાં જોયો, મને આવતાં જોઈને પ્રસન્ન અને સંતુષ્ટ થઈ તે તુરત આસનથી ઉઠ્યો, ઉઠીને જલદી સિંહાસનથી ઉતરી પાદુ-
 કાનો લ્યાગ કરી એક સાડીવાલું ઉચ્ચરાસંગ કરી, અંજલિવડે હાથ જોડી સાત આઠ પગલાં મારી સામો આવ્યો, મારી સામો આવીને મને
 ત્રણ વાર પ્રદક્ષિણા કરી, વંદન અને નમસ્કાર કર્યો, વંદન અને નમસ્કાર કરી 'મને પુષ્કલ અશન, પાન, શાદિમ અને શાદિમ આહારથી
 પ્રતિલામીશ-સત્કારીશ'-એમ વિચારી તે સંતુષ્ટ થયો, પ્રતિલામતાં પણ સંતુષ્ટ થયો, પ્રતિલામ્યા બાદ પણ સંતુષ્ટ થયો, અને સ્વાર પછી તે
 વિજયગાથાપતિને દ્રવ્યની શુદ્ધિથી, ધાયકની શુદ્ધિથી અને પાત્રની શુદ્ધિથી તથા ત્રિવિધ-મન, વચન, કાયાની શુદ્ધિથી અને ત્રિકરણ શુદ્ધિથી
 દાનવડે મને પ્રતિલામવાથી દેવતું આયુષ વાંધું, સંસાર અલ્પ કર્યો અને તેના ઘરમાં આ પાંચ દિવ્યો પ્રગટ થયાં, તે આ પ્રમાણે-૧વસુ-
 ધારાની વૃદ્ધિ, ૨ પાંચ વર્ણના પુણ્યોની વૃદ્ધિ, ૩ ધ્વજારૂપ વચ્ચની વૃદ્ધિ, ૪ દેવદુંદુભિનું વાગતું અને ૫ આકાશને વિષે 'આશ્ચર્યકારી દાન,
 આશ્ચર્યકારી દાન'-એવી ઉદ્ઘોષણા. સ્વાર બાદ રાજગૃહ નગરમાં શૃંગાટક-ત્રિકમાર્ગ, યાવત્-રાજમાર્ગમાં ઘણા માણસો પરસ્પર એમ કહે છે,
 યાવત્-એવી પ્રરૂપણા કરે છે કે 'હે દેવાનુપ્રિય ! વિજયગાથાપતિ ધન્ય છે, હે દેવાનુપ્રિય ! વિજયગાથાપતિ કૃતાર્થ છે, હે દેવાનુપ્રિય !
 વિજયગાથાપતિ પુણ્યશાળી છે, હે દેવાનુપ્રિય ! વિજયગાથાપતિ કૃતલક્ષણ છે, હે દેવાનુપ્રિય ! વિજયગાથાપતિના ઉભય લોક સાર્થક છે
 અને વિજયગાથાપતિનું મનુષ્યસંબન્ધી જન્મ અને જીવિતનું ફલ પ્રશંસનીય છે, જેના ઘરને વિષે તેવા પ્રકારના સાધુ-ઉત્તમ અને સૌમ્ય
 આકારવાળા-શ્રમણને પ્રતિલામવાથી આ પાંચ દિવ્યો પ્રગટ થયાં; તે પાંચ દિવ્યો આ પ્રમાણે-૧ વસુધારાની વૃદ્ધિ, યાવત્-૫ 'આશ્ચર્યકારી
 દાન, આશ્ચર્યકારી દાન'-એવી ઉદ્ઘોષણા. તે માટે તે ધન્ય છે, કૃતાર્થ છે, કૃતપુણ્ય છે, કૃતલક્ષણ છે, અને તેના ઘરને લોક સાર્થક છે, તેમજ
 વિજયગૃહપતિનું મનુષ્યસંબન્ધી જન્મ અને જીવિતનું ફલ પ્રશંસનીય છે.' સ્વાર બાદ તે મંચલિપુત્ર ગોશાલક ઘણા માણસો પાસેથી આ વાત
 સાંભળી, અવધારી જેને સંશય અને કુતહલ ઉત્પન્ન થયા છે એવો તે વિજયગૃહપતિના ઘેર આવ્યો. આવીને તેણે વિજયગૃહ-
 પતિના ઘરને વિષે વર્ષેલી વસુધારા, નીચે પહેલાં પાંચ વર્ણોના પુણ્યો, તથા ઘરથી બહાર નીકળતાં મને અને વિજયગૃહપતિને જોવા; જોઈને
 પ્રસન્ન અને સંતુષ્ટ થઈ તે ગોશાલક જ્યાં હું હતો ત્યાં આવ્યો, ત્યાં આવી મને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરી, વંદન અને નમસ્કાર કરી તેણે
 આ પ્રમાણે કહ્યું-'હે ભગવન્ ! તમે મારા ધર્માચાર્ય છો અને હું તમારો ધર્મશિષ્ય છું.' તે વચ્ચે હે ગૌતમ ! મેં મંચલિપુત્ર ગોશાલકની આ
 વાતનો આદર ન કર્યો, તેમ સ્વીકાર ન કર્યો; પરન્તુ હું મૌન રહ્યો. સ્વાર બાદ હે ગૌતમ ! હું રાજગૃહ નગર ધર્મી નીકળી નાલંદાના બહાર-
 રના મધ્ય ભાગમાં ધઈ જ્યાં તંતુવાયની શાલા છે ત્યાં આવ્યો, ત્યાં આવી ત્રીજા માસક્ષમણનો સ્વીકાર કરી વિદરના આવ્યો. સ્વાર બાદ હે

आचार्योपपादितं करे, करेता ममं वंद्य, नमंसह, वंदिता नमंसिता ममं एवं वयासी-‘तुज्जे णं भंते ! ममं धम्मयारिया, अहं तुज्जं धम्मतेवासी’ । तप णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एवमहुं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए खंषिट्ठामि । तप णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमिता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्जेणं जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छिता दोषं मासक्खमणं उवसंपज्जिता णं विहरामि । तप णं अहं गोयमा ! दोषंमासक्खमणपारणंगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तं० २-क्खमिता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्जेणं जेणेव रायगिहे नगरे जाव-अडमाणे भानंदस्स गाहावरस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । तप णं से आणंदे गाहावती ममं पज्जमाणं पासति-एवं जहेव विजयस्स, नवरं ममं विउलप खज्जगविहीए ‘पडिलाभेस्सामी’ति तुट्ठे, सेसं तं चेव, जाव-तच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जिता णं विहरामि । तप णं अहं गोयमा ! तच्चंमासक्खमणपारणंगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २-क्खमिता तहेव जाव-अडमाणे सुणंदस्स गाहावरस्स गिहं अणुपविट्ठे । तप णं से सुणंदे गाहावती एवं जहेव विजयगाहावती, नवरं ममं खज्जकामगुणियणं भोयणेणं पडिलाभेति, सेसं तं चेव जाव-चउत्थं मासक्खमणं उवसंपज्जिता णं विहरामि । तीसे णं नालं-वाए बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थ णं कोल्लाप नामं सन्निवेशे होत्था, सन्निवेशवओ । तत्थ णं कोल्लाप संनिवेशे बहुले नामं माहणे परिवसइ, अहे जाव-अपरिभूए, रिउत्थेय० जाव-सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तप णं से बहुले माहणे कत्तियचाउ-म्मासियपाडिबगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमणेणं माहणे आयामेत्था । तप णं अहं गोयमा ! चउत्थमासक्खमणपारण-गंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २-क्खमिता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्जेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छिता जेणेव कोल्लाप संनिवेशे तेणेव उवागच्छामि, ते० उवागच्छिता कोल्लाप सन्निवेशे उच्च-नीय० जाव-अडमाणस्स बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । तप णं से बहुले माहणे ममं पज्जमाणं तहेव जाव-ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमणेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे । सेसं जहा विजयस्स, जाव-बहुले माहणे बहु० २ ।

४. तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सध्मितरबाहिरियाए ममं सद्धओ समंता मग्गणगवेशणं करेति, ममं कत्थ वि सुत्ति वा खुत्ति वा पवसि वा अलममाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवा-गच्छर, ते० २ उवागच्छिता साडियाओ य पाडियाओ य कुंडियाओ य वाहणाओ य चित्तफलंगं च माहणे आयामेति, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठं मुंडं कारेति, स० २ कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमति, तं० २-क्खमिता णालंदं बाहिरियं

गीतम ! बीजा मासक्षमणना पारणाने विषे तंतुवायनी शालाथी नीकळी नालंदाना बहारना मध्य भागमां थई ज्यां राजगृह नगर छे त्यां यावत्-भिक्षा माटे जतां आनंदगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. स्यार बाद ते आनंदगृहपति मने आवतो जोई-इत्यादि बधो वृत्तांत विजय-गृहपतिनी पेठे (सू० ३.) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के ‘मने अनेक प्रकारनी भोजन विधिधी प्रतिलाभीश’-एम् विचारी ते आनंद-गृहपति संतुष्ट थयो-इत्यादि बाकीतुं वृत्तान्त पूर्वे कक्षा प्रमाणे जाणवुं, यावत्-हुं श्रीजा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. स्यार बाद हे गीतम ! मैं श्रीजा मासक्षमणना पारणाने विषे तंतुवायनी शालाथी बहार नीकळी यावत्-भिक्षाए जतां सुनन्दगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. स्यार बाद ते सुनन्दगृहपति-इत्यादि सर्व वृत्तान्त विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के तेणे मने सर्वकामना गुणयुक्त भोजनवडे प्रतिलाभ्यो. बाकीतुं बधुं पूर्वे प्रमाणे जाणवुं. स्यार पळी हुं चोया मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. हवे ते नालंदाना बहारना भागथी थोडे दूर एक कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो. अर्हा सन्निवेशतुं वर्णन जाणवुं, ते कोल्लाक सन्निवेशने विषे बहुल नामे ब्राह्मण वसतो हतो. ते धनिक, यावत्-कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. ते ऋग्वेद-इत्यादि ब्राह्मणोना शास्त्र तथा रीत-रीवा-जमां कुशळ हतो. स्यार बाद ते बहुल नामे ब्राह्मणे कार्तिक चातुर्मासनी प्रतिपदने विषे पुष्कळ मधु-खांड अने घी-संयुक्त परमान्न-क्षीरवडे ब्राह्मणोने जमाब्था. ते वखते हे गीतम ! हुं चोया मासक्षमणना पारणाने विषे तंतुवायनी शालाथी नीकळी नालंदाना बहारना मध्यभागमां थई ज्यां कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो त्यां आव्यो, त्यां आथी कोल्लाक संनिवेशने विषे उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्-भिक्षाचर्माए जतां मे बहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश कर्यो. स्यार पळी ते बहुल ब्राह्मणे मने आवतां जोयो-इत्यादि पूर्वे प्रमाणे कहेवुं, यावत्-‘मने मधु अने घृत संयुक्त परमान्नवडे प्रतिलाभीश’ एम् धारी ते संतुष्ट थयो-बाकी बधुं विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवुं, यावत्-‘बहुल ब्राह्मण धन्य छे’.

४. स्यारबाद मंखलिपुत्र गोसालके मने तन्तुवायनी शालाथी नहि जोवाथी राजगृह नगरनी बहार ने अंदर चोतरफ मारी गवेशणा-तपास करी, परंतु मारी न्याइ पण ऋत्ति, क्षुत्ति-शब्द के प्रवृत्ति नहि मळथाथी ज्यां तन्तुवायनी शाला हती त्यां ते गयो, त्यां जईने तेणे शाटिका-अंदरना बसो, पाटिका-उपरना बसो, कुंडीओ, उपानह-पगरखां अने चित्रपटने ब्राह्मणोने आपीने दाढी अने मुंछनुं मुंडन करवतुं. स्यारबाद तन्तुवायनी शाला थकी नीकळी नालंदाना बाहेरना मध्य भागमां थई ज्यां कोल्लाक नामे सन्निवेश छे त्यां आव्यो. स्यार पळी कोल्लाक सन्निवेशनां बहारना भागमां जणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे, यावत्-प्ररूपे छे के-‘हे देवानुप्रियो ! बहुल नामे

बीजुं मासक्षमण.

भगवततो बीजा मासक्षमणना पारणाने विषे आनंद-गृहपतिना घेर प्रवेश.

श्रीजुं मासक्षमण.

श्रीजा मासक्षमणना पारणाने विषे सुनन्दगृहपतिना घेर प्रवेश. कोल्लाक सन्निवेश. बहुल ब्राह्मण.

चतुर्वे मासक्षमण.

पना पारणाने विषे बहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश.

भगवते करीको

गोशाळकीने शिष्यवर्तीके स्वीकार.

सज्जमंज्जेणं निगच्छ, निगच्छिता जेणेव कोल्लागसन्निवेशे तेणेव उच्चागच्छ । तप णं तस्स कोल्लागस्स संनिवेशस्स अहिया बहुज्जेणो अन्नमसस्स एवमारक्खति, जाव-परक्खेति-‘धत्ते णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहये, यं वेव जाव-अहियापत्ते बहुज्जेण माहणस्स व०’ २ । तप णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुज्जेणस्स अंतियं एयमहुं लोक्का निस्समं भवमेवाक्खे अन्न-रिथए जाव-समुप्पञ्चित्था-‘आरिसिया णं ममं धम्मपरियस्स धम्मोवदेसणस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इही जुत्ती जसे बले धीरिय पुरिसकारपरकमे लडे पत्ते अमिसमन्नागए, नो बल्लु अत्थि तारिसिया णं अन्नस्स कस्सए तद्दाफनस्स समणस्स वा माहणस्स वा इही जुत्ती जाव-परकमे लडे पत्ते अमिसमन्नागए, तं निस्संदिद्धं च णं एत्थ ममं धम्मपरिय धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे ऋविस्सतीति कहु कोल्लागसन्निवेशे सन्निभतरवाहिरिय ममं सज्जओ समंता मग्गणगवेस्सं करे, ममं सज्जओ जाव-करेमाणे कोल्लागसंनिवेशस्स अहिया पणियभूमीए मए सज्जि अमिसमन्नागए । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते इहु-तुहे ममं तिकप्पुत्तो आथाहिणं पयाहिणं जाव-नमंसित्ता एवं वयासी-‘तुज्जे णं भंते ! मम धम्मपरिया, अहं णं तुज्जे भंतेवासी’ । तप णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमहुं पडिसुणेमि । तप णं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सज्जि पणियभूमीए छद्दासाहं लामं अलाभं सुखं दुक्खं सक्कारमसक्कारं पक्खणुभ्वमाणे अणिकवागरियं विहरित्था ।

५. तप णं अहं गोयमा ! अन्नया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पबुद्धिकार्यंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सज्जि सिद्ध-त्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगरं संपट्टीए विहाराए । तस्स णं सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतए एत्थ णं महुं एगे तिलथंमए पसिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिद्दु । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंमं पासए, पासित्ता ममं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-‘एस णं भंते ! तिलथंमए किं निप्पज्जिस्सए नो निप्पज्जस्सति ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उदाहत्ता २ कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? तप णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-‘गोसाला ! एस णं तिलथंमए निप्पज्जिस्सए, नो न निप्पज्जिस्सए, एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उदाहत्ता २ एयस्स वेव तिलथंमगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पक्खायास्संति’ । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमहुं नो सइहति, नो पसियति, नो रोए, एयमहुं असइहमाणे, अपसियमाणे, अरोएमाणे ममं पणिहाए ‘अयं णं मिच्छावादी भवउ’ पित कहु ममं अंतियाओ सणियं २ पक्खोसज्जए, पक्खोसज्जिता जेणेव से

ब्राह्मण धन्य छे’-इत्यादि पूर्वे कक्षा प्रमाणे कहेवुं, यावत्-‘बहुल ब्राह्मणनो जन्म अने जीवितव्यनुं फल प्रशंसनीय छे। ते वखते घणा माप्यसो पासेयी आ वात सांभळीने अने अवधारीने मंखलिपुत्र गोशालकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत्-उत्पन्न थयो-‘मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवान् महावीरने जेवी ऋद्धि, बुद्धि-तेज, यश, बल, वीर्य अने पुरुषकार-पराक्रम लब्ध छे, प्राप्त थएल छे, सम्मुख थयेल छे, तेवा प्रकारनी ऋद्धि, बुद्धि-तेज, यावत्-पुरुषकार-पराक्रम अन्य कोई तेवा प्रकारना श्रमण वा ब्राह्मणने लब्ध, प्राप्त के सम्मुख थएल नथी, ते माटे अवश्य अहिं मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवंत महावीर हशे’-एम विचारी ते कोल्लाक सन्निवेशनी बहार अने अंदर चोतरफ मारी मार्गणा अने गवेषणा करवा लाग्यो। चोतरफ मारी गवेषणा करतां कोल्लाक सन्निवेशना बहरना भागमां मनोन्न भूमिने विषे ते मने मळ्यो। स्यारबाद ते मंखलिपुत्र गोशालक प्रसन्न अने संतुष्ट थई मने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत्-नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्यो-‘हे भगवन् ! तमे मारा धर्माचार्य छो, अने हुं तमारो शिष्य छुं’। स्यारे हे गौतम ! में मंखलिपुत्र गोशालकनी ए वातने स्वीकारी। स्यारबाद हे गौतम ! हुं मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे प्रणीतभूमिने विषे छ वर्ष सुखी लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, सत्कार अने असत्कारनो अनुभव करतो अने तेनी अनिस्वतानो विचार करतो विहरवा लाग्यो।

५. स्यारबाद हे गौतम ! अन्य कोई दिवसे प्रथम शरद काळना समयमां ज्यारे वृष्टि थती न होती स्यारे में मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे सिद्धार्थ ग्रामनामे नगरथी कूर्मग्राम आमे नगर तरफ जवा माटे प्रयाण कर्युं, सिद्धार्थ ग्रामनामे नगर अने कूर्मग्राम नगरनी वषे अहिं एक मोटो तलनो छोड पत्रवाळो, पुष्पवाळो, हरितपणाथी अत्यंत शोभतो अने शोभावडे अत्यंत अभिक अधिक दीपतो हतो। हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके ते तलना छोडने जोयो, जोइने मने वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे कहुं के ‘हे भगवन् ! आ तलनो छोड नीपजशे के नहि नीपजे ? आ सात तलना पुष्पना जीवो मरी मरीने क्यां जशे अने क्यां उपजशे ?’ हे गौतम ! स्यारे मंखलिपुत्र गोशालकने में आ प्रमाणे कहुं-‘हे गोशालक ! आ तलनो छोड नीपजशे, नहि नीपजे एम नहि, आ सात तलना पुष्पना जीवो मरी मरीने आज तलना छोडनी एक तलफळीने विषे सात तलरूपे उपजशे’। स्यारे ए प्रमाणे कहेतां मारी आ वातनी मंखलिपुत्र गोशालके कहुं, प्रतीति तेम रुचि न करी, आ वातनी श्रद्धा नहि करतां, प्रतीति नहि करतां अने अरुचि करतां ‘मारा विमिते आ निष्पापनी थाओ’-एम समजी मारी पासेयी धीमे धीमे गयो, अने ज्यां ते तलनो छोड छे, स्यां आवीने तेणे से तलना छोडने मारीसहित पुष्पनी उखेडी नांस्यो, उखेडीने तेने एकान्ते मळ्यो। हे गौतम ! तत्काल ज आकाशमां दिव्य वादळ थयुं, अने ते दिव्य वादळ स्यां मारां ज

भगवंतनो गोशा-
क साधे सिद्धार्थ
ग्रामथी कूर्मग्राम
तरफ विहार अने
मार्गमां तलना
छोडनुं जोइ-
गोशालकनो भग-
वंत महावीरने
प्रश्न-तलनो छोड
नीपजशे के नहि ?
गोशालकनुं भग-
वंतनी वातने
श्रद्धा करवा माटे
तलना छोडने
उखेडी नांस्युं-

तिलयंभयं जेनेव उवागच्छामि, उवागच्छामि सं तिलयंभयं सलेदुपार्यं वेव उप्पाडेह, उप्पाडेता एमंते ददेति । तन्वचमनेसं
 वं नं गोयमा ! विवे मम्मवदुहण पाउम्भूय । तप नं से विवे मम्मवदुहण विप्पामेव पतणतणापति, विप्पामेव पविच्छुवाति,
 विप्पामेव जजोहं वातिमद्वियं पविरलपकुसियं द्यरेषुविणासणं विवं सलिलोदगं वासं वासति, जेवं से तिलयंभयं आसत्थे
 उवागच्छामि, उवागच्छामि, उवागच्छामि । ते य सत्त तिलपुष्कजीवा उवागच्छामि २ तस्सेव तिलयंभयंस्स एगाय तिलसंमलि-
 काय सत्त विहा पञ्जापावा ।

१. तप नं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सदिं जेनेव कुम्ममामे नगरे तेणेव उवागच्छामि, तप नं तस्स
 कुम्ममामेस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नामं बालतवस्सी छट्टुंछट्टेणं अणिक्खिसेणं तवोकम्भेणं उहुं वाहाओ पणिज्झिय २
 सुवमिमुहे आवावणभूमिप आवावेमाणे विहरर, आहत्तेयतवियाओ य से छप्पदीओ सत्तओ समंता अभिनिस्सवंति, पाण-
 भूय-जीव-सत्त-इयदुयाय व नं पवियाओ २ तत्थेव भुज्जो २ पञ्चोदभेति । तप नं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं
 बालतवस्सि पासति, पासिन्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पञ्चोसकर, ममं २ पञ्चोसकिन्ता जेनेव वेसियायणे बालतवस्सी
 तेणेव उवागच्छामि, ते २-विच्छता वेसियायणं बालतवस्सि एवं वयासी-किं भवं मुणी, मुणिए, उवाहु जूयासेआयरए ?
 तप नं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमहुं णो आहाति, नो परियाणति, तुसिणीय संधिद्विति ।
 तप नं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सि दोहं पि तच्चं पि एवं वयासी-किं भवं मुणी, मुणिए, जाव-सेआ-
 वरए ? तप नं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोहं पि तच्चं पि एवं तुसे समाणे आसुहसे जाव-मिसि-
 मिसेमामे आवावणभूमिओ पञ्चोदभति, आ २-हमिन्ता तेयासमुग्घाएणं समोहकर, तेया २ समोहणिन्ता सत्तदुपयां
 पञ्चोसकर, स २-सकिन्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहाय सरीरगंसि तेयं निसिरर । तप नं अहं गोयमा ! गोसालस्स
 मंखलिपुत्तस्स अनुकंपणदुयाय वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स तेयपविसाहरणदुयाय एत्थ णं अंतरा अहं सीयलियं तेयलेस्सं
 निसिरामि, जाय सा ममं सीयलियाय तेयलेस्साय वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सा उसिणा तेयलेस्सा पडिइया । तप नं
 से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाय तेयलेस्साय सीओसिणं तेयलेस्सं पडिइयं जाणिन्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स

गर्जना करवा लाग्युं, एकदम वीजळी चमकवा लागी, अने तुरतज अत्यंत पाणी अने अत्यंत कादव न थाय तेवी थोडा पाणीनां
 बिडवाळी, रज अने धूळने शांत करनार एवी दिव्य उदकनी वृष्टि थई. (अथवा सीतादिक महालदीओना पाणी जेवा पाणीनी वृष्टि थई.)
 जेवी करी ते तलनो छोड स्थिर थयो, विशेष स्थिर थयो, उग्यो अने बद्धमूल थई त्यां ज प्रतिष्ठित थयो. ते सात तल पुष्पना जीवो
 मरण पामी पामीने तेज तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न थया.

६. स्यार बाद हे गीतम ! हुं मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे ज्यां कूर्मप्राम नामे नगर छे त्यां आब्यो. ते वखते ते कूर्मप्राम नगरनी बहार
 वेश्यायन नामे बालतपस्वी निरंतर छह छट्टना तप करवावडे पोताना वने हाथ उंचा राखी राखीने सूर्यना सन्मुख उभो रही आतापनाभूमिने
 विषे आतापना लेतो विहरतो हतो. सूर्यना तेजवडे तपेली यूकाओ चोतरफयी नीकळती हती, अने ते सर्व प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वनी
 दयाने माटे पडी गयेली ते यूकाओने पाछी त्यां ने त्यां मूकतो हतो. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके वेश्यायन नामे बालतपस्वीने जोयो,
 जोईने मारी पासेयी ते वीमे वीमेपाछो गयो. पाछो जईने ज्यां वेश्यायन नामे बालतपस्वी छे त्यां आवी वेश्यायन नामे बालतपस्वीने ए प्रमाणे
 कहुं- 'हुं तमे मुनि छो के मुनिक-चसकेल छो, अथवा यूकाना शय्यातर छो' ? स्यारे ते वेश्यायन नामे बालतपस्वीए मंखलिपुत्र गोशाल-
 कना ए कथननो आदर अने स्वीकार कर्यो नहि, परन्तु मीन धारण कर्युं. स्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालके वेश्यायन नामे बालतपस्वीने
 बीजी वार अने श्रीजी वार पण ए प्रमाणे कहुं के 'तमे मुनि छो, चसकेल छो, के यूकाना शय्यातर छो' ? ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके
 बीजी वार अने श्रीजी वार ए प्रमाणे कहुं स्यारे ते वेश्यायन नामे बालतपस्वी एकदम कुपित थयो अने यावत्-क्रोधे धमधमायमान थई
 आतापनाभूमिपी नीचे उतर्यो. नीचे आवीने तेजःसमुदघात करी सात आठ पगला पाछो खसी मंखलिपुत्र गोशालकना वधने माटे तेणे
 शरीरमापी तेजोलेख्या बहार काटी. स्यारबाद हे गीतम ! मंखलिपुत्र गोशालकना उपर अनुकंपापी वेश्यायन बालतपस्वीनी तेजोलेख्यानुं
 प्रतिसंहरण करवा माटे आ प्रसंगे में शीत तेजोलेख्या बहार काटी, अने मारी शीत तेजोलेख्याए वेश्यायन बालतपस्वीनी उष्ण तेजोलेख्यानो
 प्रतिसंहरण कर्यो. स्यार पछी ते वेश्यायन बालतपस्वीए मारी शीततेजोलेख्यापी पोतानी उष्णतेजोलेख्यानो प्रा. वात थयेलो जाणीने अने मंख-
 लिपुत्र गोशालकना शरीरने कंठ पण थोडी के वधारे पीडा अथवा अवयवनो छेद नहि करायेलो जोईने पोतानी उष्ण तेजोलेख्याने पाछी
 खेची खेची, पोतानी उष्ण तेजोलेख्याने पाछी खेचीने ते आ प्रमाणे बोल्थो-हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् ! में जाण्युं. स्यार पछी
 मंखलिपुत्र गोशालके मने ए प्रमाणे कहुं के 'हे भगवन् ! आ यूकाना शय्यातर बालतपस्वीए आपने हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् !

गोशालकने वेश्या-
 यन बालतपस्वीनो
 समागम, तेमने
 गोशालकनुं उपहा-
 सपूर्वक कवच,
 तेमनुं गोशालक
 उपर तेजोलेख्यानुं
 चुकडं, शीतलेख्या
 मूली भगवते करेहुं
 गोशालकनुं रक्षण.

६ * अहि शीतकारे 'शुभी' उष्णते जोसिने तपस्वी अर्थ, अने मुनिक कवचनो तपस्वी अर्थ-एव बीजो अर्थ पण कर्यो छे.

सरीरगस्त किंचि आबाहं वा बाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासिता सीभोलिणं तेयलेस्सं पडिसाहरत्, सीभो २-
साहरिता मम एवं वयासी-‘से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं ! । तप णं गोसाले मंखलिपुत्ते मम एवं वयासी-‘किं भवं
भंते ! एस जूयासिजायरए तुम्मे एवं वयासी-‘से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं’ ? तप णं अहं गोयमा ! गोसालं मंख-
लिपुत्तं एवं वयासी-‘तुमं णं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि पाससि, पासिता मम अंतियाभो सजिणं २ पणोसकसि,
जेणव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, ते ० २-च्छिता वेसियायणं बालतवस्सि एवं वयासी-‘किं भवं मुणी,
मुणिए, उदाहु जूयासेजायरए’ ? तप णं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्टं नो आदाति, नो परिजाणति, तुसिणीए
संखिदुह । तप णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि दोहं पि तहं पि एवं वयासी-‘किं भवं मुणी, मुणिए, जाव-
सेजायरए’ ? तप णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं दोहं पि तहं पि एवं बुत्ते समणे आसुहत्ते जाव-पणोसकसि, पणो-
सकसिता तव वहाए सरीरगंसि तेयलेस्सं निस्सिरह । तप णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणदुयाए वेसियायणस्स बालतव-
स्सिस्स सीयतेयपडिसाहरणदुयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निस्सिरामि, जाव-पडिहयं जाणिसा तव य सरी-
रगस्त किंचि आबाहं वा बाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासेसा सीभोलिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, सी ० २-साह-
रिता मम एवं वयासी-‘से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं’ ! तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते मम अंतियाभो एयमट्टं सोळा,
निसम्म भीए जाव-संजायमये मम वंदति नमंसति; मम वंदिसा नमंसिसा एवं वयासी-‘कहं भंते ! संखितविउलते-
यलेस्से भवति’ ? तप णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-‘जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासापिडियाए
एणेण य वियडासएणं छट्टंछट्टेणं अनिक्खिसेणं तवोकम्मेणं उहुं बाहाभो पगिज्झिय २ जाव-विहरति, से णं अंतो छणं
मासाणं संखितविउलतेयलेस्से भवति’ । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते मम एयमट्टं सम्मं विणएणं पडिसुणेति ।

७. तप णं अहं गोयमा ! अद्ददा कदाह गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सखिं कुम्मागामाभो नगराभो सिद्धत्थण्णामं नगरं
संपट्टिए विहाराए, जाहे य मो तं देसं हत्तमागया जत्थ णं से तिलथंभए । तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते मम एवं वयासी-
‘तुज्जे णं भंते ! तदा मम एवं आहक्खह, जाव-परुवेह-गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सह, नो न निप्पज्जिस्सह, तं
वेव जाव-पण्णायाहस्संति’ तण्णं मिच्छा, इमं च णं पण्णक्खमेव दीसह-‘एस णं से तिलथंभए णो निप्फजे, अन्निप्फज्जमेव । ते य

में जाण्युं-‘एम शुं कहुं ? स्यारे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालकने में आ प्रमाणे कहुं के-हे गोशालक ! तें वेस्यायन बालतपस्वीने जोयो
अने जोईने मारी पासेथी धीमे धीमे तुं पाछो गयो, पाछो जईने ज्यां वेस्यायन बालतपस्वी हतो त्यां गयो, अने त्यां जईने तें वेस्यायन
बालतपस्वीने एम कहुं के-‘शुं तमे मुनि छो, चसकेल छो के यूकाना शय्यातर छो’ ? तो पण वेस्यायन बालतपस्वीए तारा ए कयननो
आदर-स्वीकार न कर्यो अने ते मौन रह्यो. स्यारबाद हे गोशालक ! तें वेस्यायन बालतपस्वीने बीजीवार अने त्रीजीवार पण ए
प्रमाणे कहुं के-‘तमे मुनि छो, चसकेल छो के यूकाना शय्यातर छो’ ? स्यारबाद ज्यारे तें बीजीवार अने त्रीजीवार ए प्रमाणे कहुं एटले
ते वेस्यायन बालतपस्वी गुस्से थयो, अने यावत्-पाछो जईने तारो वध करवा माटे तेणे शरीरमांथी तेजोलेस्या बहार कादी. स्यार पछी हे
गोशालक ! में तारी दयाथी वेस्यायन बालतपस्वीनी तेजोलेस्यातुं प्रतिसंहरण करवा माटे ए अवसरे में शीत तेजोलेस्या मूकी, यावत्-
तेणे तेनी उष्ण तेजोलेस्या प्रतिघात थएली जाणाने अने तारा शरीरने कंइ पण घोडी के वधारे पीडा अथवा अवयवने छेद नहि करा-
येळो जोईने पोतानी उष्ण तेजोलेस्या पाछी खेंची लीधी, अने पाछी खेंचीने मने ए प्रमाणे कहुं के-‘हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् !
में जाण्युं.’ स्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालक मारी पासेथी आ वात सांभळी, हृदयमां अवधारी भय पाम्यो, यावत्-भयभीत थई मने वंदत
अने नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्थो-‘हे भगवन् ! (अप्रयोगकाळे) संक्षित अने (प्रयोगकाळे) विपुल तेजोलेस्या केम प्राप्त थाय’ ?
स्यारे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालकने में ए प्रमाणे कहुं-‘हे गोशालक ! जे नखसहित वाळेळी अद्दना चाकळानी मुठीवडे अने एक
विकटाशय-एक चुलुक पाणी वडे निरन्तर छट्ट छट्टनो तप करी उंचा हाथ राखी राखीने यावत्-विहरे तो तेने छ मासने अन्ते (अप्र-
योगकाळे) संक्षित अने [प्रयोगकाळे] विस्तीर्ण एवी तेजोलेस्या प्राप्त थाय’. स्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके मारा आ कथननो विनयवडे
सारी रीते स्वीकार कर्यो.

अनभंते गोशालकने
वेजोलेस्यामासिनो
विधि वताम्यो.

भगवंतनुं गोशालक
कनी साथे सिद्धार्थ-
ग्राम तरफ प्रवाण
अने भगवंतना वच-
नने सिध्या करवा
माटे तळना छोडनी
गोशालकनी तपास.

७. स्यार बाद हे गौतम ! अन्य कोई दिवसे मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे कुर्मग्रामनगरथी सिद्धार्थग्रामनगर तरफ जवा माटे में
प्रयाण कर्युं. ज्यारे अमे ज्यां ते तळनो छोड हतो ते प्रदेश तरफ तुरत आष्या स्यारे मंखलिपुत्र गोशालके मने ए प्रमाणे कहुं-‘हे भगवन् !
तमे मने ते वखते ए प्रमाणे कहुं हतुं, यावत्-एम प्ररूप्युं हतुं के ‘हे गोशालक ! आ तळनो छोड नीपजशे, नहि नीपजे एम सखि-
इत्यादि यावत्-तळरूपे उपजशे’ ते सिध्या-असस्य थयुं. आ प्रत्यक्ष देखाव छे के आ पेळो तळनो छोड उण्यो नथी, अने तेथी उण्यो
शिवाय ते सात तळ पुष्पना जीवो मरण पामी पामीने आज तळना छोडनी एक तळफळीमां सात तळरूपे उण्यो वधा वथी. स्यार पछी
मंखलिपुत्र गोशालकने में ए प्रमाणे कहुं के ‘हे गोशालक ! ते वखते ए प्रमाणे कहेतां, यावत्-प्ररूपणा करता मारा ए कथननो में अहं

सत्त तिलपुष्पजीवा उदाहृता २ एयस्स चेष तिलथंभगस्स एगाय तिलसंगलियाय सत्त तिला पञ्चायाया' । तय णं अहं गोयमा । गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी- 'तुमं णं गोसाला । तदा ममं एवं आहक्कमाणस्स, जाव-परुवेमाणस्स एयमहुं नो सहहति, नो पत्थिसि, नो रोयसि, एयमहुं असहहमाणे, अपत्थिमाणे, अरोएमाणे ममं एणिहाय 'अयञ्चं मिच्छावादी अयञ्चि कहु ममं अंतियाभो सणियं २ पत्थोसकसि, पत्थोसकिसा जेणेव से तिलथंमय तेणेव उवागच्छ, ते० २-गच्छिता जाव-एयंतमंते पडेसि । तक्कणमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अम्मवइलए पाउम्भूए । तय णं से दिव्वे अम्मवइलए खिप्पामेव तं चेष जाव-तस्स चेष तिलथंभगस्स एगाय तिलसंगलियाय सत्त तिला पञ्चायाया; तं एस णं गोसाला ! से तिलथंमय निप्फणे, नो अनिप्फणमेव । ते य सत्त तिलपुष्पजीवा उदाहृता २ एयस्स चेष तिलथंभयस्स एगाय तिलसंगलियाय सत्त तिला पञ्चायाया । एवं कलु गोसाला ! वणस्सत्तकाहया पडहुपरिहारं परिहरंति । तय णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवमाहक्कमाणस्स, जाव-परुवेमाणस्स एयमहुं नो सहहति २, एयमहुं असहहमाणे जाव-अरोएमाणे जेणेव से तिलथंमय तेणेव उवागच्छति, ते० २-गच्छिता २ ताभो तिलथंभयाभो तं तिलसंगलियं खुडुति, खुडुत्ता करयलंसि सत्त तिले पफोडेह । तय णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयाकवे अम्मत्थिए जाव-समुप्पज्जित्था- 'एवं कलु सत्त जीवा वि पडहुपरिहारं परिहरंति'-एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पडहु, एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाभो आयाए अयक्कमणे पञ्चत्ते ।

८. तय णं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाय सणहाय कुम्मासपिडियाय य एगेण य वियडासएणं छट्टंछट्टेणं अनिक्खितेणं तत्थोकम्मोयं उहुं वाहाभो पगिज्झिय २ जाव-विहरइ । तय णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्डं मासाणं संक्खितविउल्लते-यलेसे आय ।

९. तय णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अन्नया कया वि इमे छ हिंसाचरा अंतियं पाउम्भवित्था, तंजहा १-साणे तं चेष, सत्तं जाव-अजिणे जिणसइं एगासेमाणे विहरति, तं नो कलु गोयमा ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्यलावी जाव-जिणसइं एगासेमाणे विहरइ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे, जिणप्यलावी जाव-एगासेमाणे विहरइ । तय णं सा

करतो न होतो, प्रतीति करतो न होतो, रुचि करतो नहोतो, ए कथननी श्रद्धा नहि करतां, प्रतीति नहि करतां अने रुचि नहि करतां मने आश्रयी-मारा निमित्ते आ मिथ्यावादी थाओ'-एम समजी मारी पासेथी धीमे धीमे तुं पाछो गयो, पाछो जईने ज्यां ते तलनो छोड हतो स्यां आवी यावत्-तेने माटीसहित उखाडीने एकांते मूक्यो. हे गोशालक ! ते वखते तत्क्षणमां आकाशमां दिव्य वादळ प्रगट थयुं, स्यार बाद ते दिव्य पाणीतुं वादळ एकदम गर्जना करवा लाग्युं-इत्यादि यावत्-ते तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न भया छे. ते माटे हे गोशालक ! ते तलनो छोड निष्पन्न थयो छे, अनिष्पन्न छे-एम नथी. ते सात तलना पुष्पना जीवो मरीने आज तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न थया छे. ए प्रमाणे हे गोशालक ! वनस्पतिकायिको मरीने प्रवृत्त परिहारनो परिहार-उपभोग करे छे. अर्थात्-मरीने तेज शरीरमां पुनः उपजे छे. स्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कहेतां यावत्-प्ररूपणा करतां मारा आ कथननी श्रद्धा, प्रतीति अने रुचि न करी, आ कथननी अश्रद्धा, यावत्-अरुचि करतां ज्यां ते तलनो छोड हतो स्यां जईने तेणे ते तलना छोडपी ते तलनी तलफळीने तोडीने हस्ततळमां मसळी सात तल बहार काळ्या. स्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालकने ते सात तलने गणतां आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्-उत्पन्न थयो के 'ए प्रमाणे खरेखर सर्व जीवो पण प्रवृत्त परिहार परिहरे छे.' अर्थात्-मरीने तेज शरीरमां उत्पन्न थाय छे. हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालकनो आ परिवर्तवाद छे. अने हे गौतम ! मारी पासेथी (तेजोलेख्यानो उपदेश) प्रहण करीने मंखलिपुत्र गोशालकनुं आ अपक्रमण (जूदा पडवुं) छे.

८. स्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालक नखसहित एक अडदना बाकुळ्यनी मुठीवडे अने एक विकटाशय-चुलुक पाणीवडे निरन्तर छट्ट छट्टनो तप करी उंचा हाथ राखी राखीने विचरे छे. स्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालकने छ मासने अन्ते संक्षित अने विपुल तेजोलेख्या उत्पन्न थई.

९. स्यार पछी ते मंखलिपुत्र गोशालकने अन्य कोई दिवसे आ छ दिशाचरो आवी मळ्या. तेना ना. आ प्रमाणे-१ शान-इत्यादि सर्व पूर्वोक्त यावत्-जिन नहि छतां जिन शब्दने प्रकाशित करतो ते विहरे छे' स्यां सुची कहेवुं. माटे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालक खरी रीते जिन नथी, परन्तु जिननो प्रकाश करवुं, यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे. मंखलिपुत्र गोशालक अजिन छे, तो पण पोताने जिन कहेतो यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करतो ते विहरे छे. स्यार बाद अखन्त मोटी पर्षदा *शिवराजर्षिना चरित्रने विषे कथुं

गोशालकनो परिह-
रैवापरणीकार अने
भगवत्तवी देवुं. बूदा
पडवुं.

गोशालकने तेजो-
लेखानी प्राप्ति.

गोशालकनो छ
दिशाचरो जिन
थया अने हे हे
जिन करीने विचरता
काय्यो.

महत्सिमहालय महाकपरिसा जहा सिवे जाव-पडिगवा । तय पं सावत्पीय नगरीय सिम्राडग० जाव-बहुजणो मणवणवण जाव-परुवेइ-‘जबं देवाणुपिया ! गोसाले मंखलिपुसे जिणे जिणप्पलावी जाव-विहरइ’ सं मिथ्या । समणे भगवं महावीर एवं आरुक्कइ-जाव-परुवेइ-‘एवं कलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिसा हीत्था । तय पं तस्स मंखलिस्स एवं खेव तं सच्चं भाणियच्चं, जाव-अजिणे जिणसइं पगासेमाणे विहरइ, तं नो कलु गोसाले मंखलिपुसे जिणे, जिणप्पलावी जाव-विहरइ, गोसाले मंखलिपुसे अजिणे जिणप्पलावी जाव-विहरइ, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव-जिणसइं पगासेमाणे विहरइ’ । तय पं से गोसाले मंखलिपुसे बहुजणस्स अंतियं एयमहुं सोक्का, जित्तम्म आरुक्कइ, जाव-मिसिमिसेमाणे आयावणभूमिओ पञ्चोदइइ, आया० २ पञ्चोदइइसा सावत्थि नगरिं मज्झिमज्जेणं जेजेव हालाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छिता हालाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणंसि आजीवियसंयसंपरिहणे महया अमरिसं वहमाणे एवं याचि विहरइ ।

१०. तेणं कालेणं तेणं समयणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी भाणंदे नामं थेरे पयइमइय, जाव-विणीय, छट्टेणं अणिकिसेणं तवोकम्मोणं संजमेणं तपसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तय पं से आणंदे थेरे छट्टकम्मजणपारवणंसि वडवायं पोरिसीय एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव-उच्च-नीय-मज्झिम० जाव-अडमाणे हालाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणस्स अवरसामंते वीरवयइ । तय पं से गोसाले मंखलिपुसे आणंदं थेरं हालाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणस्स अवरसामंतेणं वीरवयमाणं पासइ, पासिसा एवं वयासी-‘एहि ताव आणंदा ! इओ एणं महुं उवमियं निसामेहि’ । तय पं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुसेणं एवं बुसे समणे जेजेव हालाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणे, जेजेव गोसाले मंखलिपुसे तेणेव उवागच्छति । तय पं से गोसाले मंखलिपुसे आणंदं थेरं एवं वयासी-‘एवं कलु आणंदा ! इतो चिरासीयाव अडवां केइ उच्चावया वणिया अत्थत्थी, अत्थलुद्धा, अत्थगवेसी, अत्थकंकिया, अत्थपिवासा, अत्थगवेसणयाव जाणाविहविउत्तय-

गोशालक जिन नथी-एवं भगवंतनुं कथन.

छे तेम वांदिने पाछी गइ. त्थार पछी श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटक-त्रिक मार्ग, यावत्-राजमार्गमां घणा माणसो परत्पर यावत्-प्ररूपणा करे छे के हे ‘देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र गोशालक जिन थई जिननो प्रलाप करतो यावत् विहरे छे, ते मिथ्या-असत्थ छे. श्रमण भगवान् महावीर एम कहे छे, यावद्-प्ररूपे छे के ए प्रमाणे खरेखर ते मंखलिपुत्र गोशालकने मंखलिनाने मंख (भिक्षाचरविशेष) पिता हतो. हवे ते मंखलिने-इत्यादि सर्व यावत्-जिन नहि छतां जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे-त्यां सुधी कहेहुं. ते माटे मंखलिपुत्र गोशालक जिन नथी, परन्तु जिननो प्रलाप करतो यावद्-विहरे छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन छे, अने जिनप्रलापी, यावत्-जिन शब्दनो प्रकाश करता विहरे छे.’ त्थार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक घणा माणसो पासेयी आ कथन सांमळी, मिचारी, अख्यन्त गुस्से वयो, यावत्-अतिशय क्रोधे बळतो ते आतापना भूमिथी नांचे उतर्यो, आतापनाभूमिथी नांचे उतरी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमां धईने ज्वां हालाहला कुंभारणनो कुंभकारापण-हाट छे त्यां आव्यो, आर्विने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटमां आजीविक संववडे सहित अख्यन्त अमर्षने धारण करतो ए प्रमाणे विहरवा लाग्यो.

उपरनुं कथन सांभळी गोशालकने शुस्सो वयो. आनंदेने गोशालकनो समगम, अगंतवे वाळी धरम करवानी तेणे आ-पेली धमकी, ते माटे तेणे कहेहुं वणिकोनुं इच्छात्.

१०. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य आनन्द नामे स्वविर प्रकृतिना भद्र अने यावद्-विनीत हत्ता. ते छट्ट छट्टना निरन्तर तपकर्म करवावडे अने संयमवडे आत्माने भावित करता विहरता हता. हवे ते आनंद स्वविर छट्टकम्मजणना पारवणाने दिवसे प्रथम पौरुषीने विवे-इत्यादि गौतम स्वामीनी *पेटे रजा मागी, अने यावत्-ते उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्-नीचरीय जता हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटयी थोडे दूर गया. ते वखते मंखलिपुत्र गोशालके हालाहला कुंभारणना हाटयी थोडे दूर जतां आनन्द स्वविरने जोया, जोईने तेणे ए प्रमाणे कथुं के ‘हे आनन्द ! अहिं आव, अने एक माकं इच्छन्त सांमळ, ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कथुं एटले ते आनन्द स्वविर ज्यां हालाहला कुंभारणनुं कुंभकारापण छे, अने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक छे त्यां आव्या.’ हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके आनंद स्वविरने आ प्रमाणे कथुं-‘हे आनन्द ! ए प्रमाणे खरेखर आजयी घणा काळ पहेलां अनेक प्रकारना धनना अर्थी, धनना लोमी, धननी गवेषणा करनारा, धनना कांक्षी अने धननी तृष्णावाळ केटला एक वणिकोए धन मेळववा माटे अनेक प्रकारना पुष्कळ प्रणीत-सुन्दर भांड-वस्तुओ (अथवा करीयाणारूप भांडने) लईने तथा गाळी अने गाडाओना सभूहवडे पुष्कळ अनाय अने पाणीरूप पाधेय ग्रहण करीने एक मोटी गामरहित, पाणीना प्रवाहरहित, सार्पादिकना आगमनरहित अने लांबा मार्गवाळी अटवीनी प्रवेश कर्यो.’ त्थार पछी ते वणिकोनुं गामरहित, पाणीना प्रवाह रहित, सार्पादिकना आगमनरहित अने लांबा रस्तावाळी ते अटवीनी मार्ग भाग गया पछी पूर्वे लीचेहुं पाणी अनुक्रमे पीतां पीतां खूळुं. त्थारे पाणिरहित थयेला अने तृषापी पीवाता ते वणिकोए परत्पर जोखणी आ प्रमाणे कथुं-‘ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रियो ! आ गामरहित-इत्यादि यावत्-अटवीनां कांक्ष मग गया पछी पहेलां लोमी वावडे

मिथुनसमावाय सप्तमीसागडेणं सुवर्णं मत्तपानं पत्यवर्षं गहाय एवमं महं अगामियं, अजोहियं, छिन्नावायं, दीहमदं अडविं अणुप्यवित्तु । तप्यं वं लेखिं वणिवायं तीसे अगामियाय, अजोहियाय, छिन्नावायाय, दीहमदयाय अडवीय किचि देसं अणुप्यसायं अगामियं से पुत्रगहिय उदय अणुपुषेणं परिमुंजेमाणे परिमुंजेमाणे बीणे । तप्यं वं ते वणिया बीणोवगा समाणा तण्हाय परि-
 अणुप्यसायं अजमणे सहावेति, अज० २-सहावेसा एवं वयासी-एवं अलु देवाणुपिया ! अम्हं इमीसे अगामियाय जाव-अडवीयं किचि देसं अणुप्यसायं समाणानं से पुत्रगहिय उदय अणुपुषेणं परिमुंजेमाणे परिमुंजेमाणे बीणे, तं सेयं अलु देवाणुपिया ! अम्हं इमीसे अगामियाय जाव-अडवीयं उदगस्स सज्जो समंता मग्गणगवेसणं करेसय'त्तिं कट्टु अजममस्स अंतिय एयमट्टं पडि-
 सुवेति, अज० २-सुणेत्ता तीसे णं अगामियाय जाव-अडवीयं उदगस्स सज्जो समंता मग्गणगवेसणं करेति, उदगस्स सज्जो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणे एवमं महं वणसंडं आसावेति, किण्हं किण्होभासं जाव-निकुरंभभूयं पासादीवं जाव-पडिक्खं । तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्जदेसभाय एत्थ णं महेगं वस्मीयं आसावेति । तस्स णं वस्मियस्स अत्तारि वप्पुओ अम्भुग्गयाओ, अम्मिसड्ढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरुवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठिवाओ, पासादियाओ जाव-पडिक्खवाओ । तप्यं वं ते वणिया इट्टुट्टु० अजममं सहावेति, अ० २ सहावेसा एवं वयासी-एवं अलु देवाणुपिया ! अम्हे इमीसे अगामियाय जाव-सज्जो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणेहि इमे वणसंडे आसादिय, किण्हे, किण्होमासे, इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्जदे-
 सभाय इमे वस्मीय आसादिय, इमस्स णं वस्मीयस्स अत्तारि वप्पुओ अम्भुग्गयाओ, जाव-पडिक्खवाओ, तं सेयं अलु देवाणु-
 पिया ! अम्हं इमस्स वस्मीयस्स पढमं वणियं मिन्दित्तय, अवियाहं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो । तप्यं वं ते वणिया अजममस्स अंतियं एयमट्टं पडिसुवेति, अज० २-सुणेत्ता तस्स वस्मीयस्स पढमं वणियं मिंदति । ते णं तत्थ अक्खं पत्थं जअं तणुवं फालियवज्जाअं ओरालं उदगरयणं आसादेति । तप्यं वं ते वणिया इट्टुट्टु० पाणियं पिबंति, पा० २ पिबित्ता वाहणाहं पजेति, वा० २ पजेत्ता मायणाहं मरेति, मा० मरेत्ता दोषं पि अजममं एवं वयासी-एवं अलु देवाणुपिया ! अम्हेहि इमस्स वस्मी-
 यस्स पढमाय वप्पाय मिष्णाय ओराले उदगरयणे अस्सादिय, तं सेयं अलु देवाणुपिया ! अम्हं इमस्स वस्मीयस्स दोषं पि वण्यं मिदित्तय, अवियाहं एत्थ ओरालं सुवचरयणं आसादेस्सामो' । तप्यं वं ते वणिया अजममस्स अंतियं एयमट्टं पडिसु-
 वेति, अज० २-सुणेत्ता तस्स वस्मीयस्स दोषं पि वण्यं मिंदति, ते णं तत्थ अक्खं जअं तावणिअं महत्थं महत्थं महत्थं ओरालं सुवचरयणं अस्सादेति । तप्यं वं ते वणिया इट्टुट्टु० भायणाहं मरेति, पवहणाहं मरेति, मरेत्ता तअं पि अजममं एवं वयासी-
 -एवं अलु देवाणुपिया ! अम्हे इमस्स वस्मीयस्स पढमाय वप्पाय मिष्णाय ओराले उदगरयणे आसादिय, दोषाय वप्पाय मिष्णाय ओराले सुवचरयणे अस्सादिय, तं सेयं अलु देवाणुपिया ! अम्हं इमस्स वस्मीयस्स तअं पि वण्यं मिदित्तय । अवि-

पाणी अनुक्रमे पीतां पीतां खूटी गधुं छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! आ गामरहित, यावत्-अटवीने विषे आपणे पाणीनी चोतरफ गवेषणा करवी श्रेयस्कर छे'-एम विचार करी एक बीजानी पासेयी आ वात सांभळीने तेओए गामरहित यावत्-अटवीमां पाणीनी चोतरफ तपास करी. पाणीनी चोतरफ तपास करता तेओने एकमोट्टुं वनखंड प्राप्त थुं. जे वनखंड श्याम अने श्याम कान्तिवाळुं यावत्-महामेवना समूह जेवुं, प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने यावत्-सुन्दर हतुं. ते वनखंडना बरोबर मध्य भागमां तेओए एक मोटो वल्मिक-राफडो जोयो. ते वल्मिकने सिंहनी केशवाळी जेवां अवयवोवाळ्यां उंचां चार शिखरो हतां, ते तीर्छां-विस्तीर्ण, नीचे अर्ध सर्पना जेवां, अर्ध सर्पनी आकृति-वाळ्यां, प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने यावत्-सुन्दर हतां. ते वल्मिकने जोहने प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए एक बीजाने बोलावीने आ प्रमाणे कधुं के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आपणे आ गामरहित-एवी अटवीमां यावत्-चोतरफ तपास करतां आ श्याम अने श्याम कान्तिवाळुं वनखंड जोयुं, अने आ वनखंडना बराबर मध्य भागमां आ वल्मिक जोयो. आ वल्मिकने चार उंचां यावत्-प्रतिरूप-सुन्दर शिखरो छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! आ वल्मिकनुं पहेळुं शिखर फोडवुं ए श्रेयस्कर छे, के जेथी आपणे पुष्कळ उत्तम पाणी प्राप्त करीए'. खार पछी ते वणिकोए एक बीजा पासेयी आ कपन सांभळीने ते वल्मिकना प्रथम शिखरने फोडुं. तेथी तेओने झां खच्छ, हित-कारक, उत्तम, हलकुं अने स्फटिकना वर्ण जेवुं, पुष्कळ अने उत्तम पाणी प्राप्त थयुं. खार पछी प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पाणी पीवुं, अने (बळद बगेरे) वाहनोने पाणी पायुं, पाणी पाईने पात्रो भर्या, पात्रो भरीने बीजी वार तेओए परस्पर आ प्रमाणे कधुं-हे देवानुप्रियो ! आपणे ए प्रमाणे खरेखर आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदवावडे पुष्कळ उत्तम पाणी प्राप्त कर्युं, तो हे देवानुप्रियो ! हवे आपणे आ वल्मिकना बीजा शिखरने भेदुं श्रेयस्कर-योग्य छे, के जेथी आपणे अहि उदार अने उत्तम सुवर्ण प्राप्त करीए.' खार वाद ते वणिकोए एक बीजानी पासेयी आ कपन सांभळीने ते वल्मिकना बीजा शिखरने पण फोडुं. तेथी तेमां खच्छ, उत्तम, तापने सुन्न करनार महाअर्थवाळुं-महाप्रयोजनवाळुं-अने महामूल्यवाळुं पुष्कळ उत्तम सुवर्ण प्राप्त कर्युं. सुवर्णने प्राप्त करवाथी प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पात्रो भर्या, पात्रो भरीने वाहनो भर्या, वाहनो भरीने बीजी वार तेओ परस्पर ए प्रमाणे बोल्या-हे देवानुप्रियो ! आपणे आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदतां उदार थयुं उत्तम वज्र प्राप्त कर्युं, अने बीजुं शिखर भेदतां उदार थयुं उत्तम सुवर्ण प्राप्त

थाहं पत्य ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो' । तप णं ते वणिया अजममस्स अंतियं एयमहुं पडिसुपेत्ति, अज० २-सुपेत्ता तस्स वम्मीयस्स तथं पि वप्यं भिदंति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं निचलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेत्ति । तप णं ते वणिया इदुतुट्टु० आयणाहं भरेत्ति, मा० २ भरेत्ता पवइणाहं भरेत्ति, भरेत्ता चउत्थं पि अजममं वरं वयासी-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाप वप्पाय भिन्नाय ओराले उदगरयणे अस्सादिप, होत्थाय वप्पाय भिन्नाय ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिप, तन्नाय वप्पाय भिन्नाय ओराले मणिरयणे अस्सादिप, तं सेवं खलु देवाणु-प्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्यं भिदिचप, अवियाहं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं उदगरयणं अस्सादे-स्सामो' । तप णं तेसि वणियाणं एगे वणिए हियकामए, सुहकामए, पत्यकामए, आणुकंपिए, निस्सेसिए, हिय-सुह-निस्सेस-कामए ते वणिए एवं वयासी-‘एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाप वप्पाय भिन्नाय ओराले उदगरयणे जाव-तन्नाय वप्पाय भिन्नाय ओराले मणिरयणे अस्सादिप, तं होउ अलाहि पञ्चत्तं, एसा चउत्थी वप्पा मा भिन्नाउ, चउत्थी णं वप्पा सउवसग्गा यावि होत्था' । तप णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकाम० जाव-हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमारक्खमाणस्स, जाव-परुवेमाणस्स एयमहुं नो सहंति, जाव-नो रोयंति, एयमहुं असइहमाणा जाव-सरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्यं भिदंति । ते णं तत्थ उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायमहा-कायं मसिमूसाकालगयं नयणविसरोसपुञ्जं अंजणपुंजनिगरप्पगासं रसच्छं जमलजुयलच्चंचलच्चलंतजीहं धरणिताल्लवेणिभूयं उक्कडुडुकुडिलजडुलकक्खडविकडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमंतधोसं अणागलियचंडतिच्चरोसं समुहिं तुरियं चवलं धमंतं दिट्ठीविसं सप्यं संघट्टंति । तप णं से दिट्ठीविसे सप्ये तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुसे जाव-मिसिमि-सेमाणे सणियं २ उट्टेत्ति, उट्टेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं डुरुहेइ, सि० २ डुरुहेत्ता आइच्चं जिज्जाति, आ० २ जिज्जात्ता ते वणिए अणिसिआए दिट्ठीए सच्चओ समंता समभिलोपति । तप णं ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेणं सप्येणं अणि-मिसाए दिट्ठीए सच्चओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव समंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि होत्था । तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए, जाव- हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं अणुकंपयाए देवथाए समंडमत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं साहिए' । एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवपसएणं समणेणं नायपुत्तेणं

कर्युं. ते माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे हवे आ वल्मिकनुं त्रीजुं शिखर पण फोडवुं श्रेयस्कर छे, के जेथी अहिं उदार एवं मणिरत्न प्राप्त करीए.' त्थार पछी ते वणिकोए एक बीजानी पासेथी आ कथन सांभळीने ते वल्मिकनुं त्रीजुं शिखर पण मेचुं. तेथी तेओए त्यां विमल, निर्मळ, अत्यन्त गोळ, निष्कळ-त्रासादिदोषरहित, महाअर्थ-महाप्रयोजनवाळुं, महामृत्यवाळुं अने उदार एवं मणिरत्न प्राप्त कर्युं. मणि-रत्नने प्राप्त करवाथी हष्ट अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पात्रो भयां, पात्रो भरीने वाहनो भयां, वाहनो भरीने तेओए चोथी वार पण एक बीजाने कळुं के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदवाथी पुष्कळ अने उत्तम पाणी प्राप्त कर्युं, बीजुं शिखर भेदवाथी पुष्कळ सुवर्ण प्राप्त कर्युं, त्रीजुं शिखर भेदवाथी उदार मणिरत्न प्राप्त कर्युं, तो हे देवानुप्रियो ! आपणे हवे आ वल्मिकना चोथा शिखरने पण भेदवुं योग्य छे, के जेथी आपणे उत्तम, महामृत्य, महाप्रयोजनवाळुं, महापुरुषने योग्य अने उदार एवं वज्ररत्न प्राप्त करीए.' त्थार पछी ते वणिकोना हितनी इच्छावाळो, सुखनी इच्छावाळो, पथ्यनी इच्छावाळो, अनुकम्पावाळो, निश्रेयस-कल्याणनी इच्छा-वाळो, तेमज हित, सुख अने निःश्रेयसनी इच्छावाळो एक वणिक हतो, तेणे ते वणिकोने ए प्रमाणे कळुं-'हे देवानुप्रियो ! आपणे आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदवाथी उदार अने उत्तम जल प्राप्त कर्युं, यावत्-त्रीजुं शिखर भेदवाथी उदार मणिरत्न प्राप्त कर्युं, एटळं वणुं छे, हवे आपणे आ चोथुं शिखर भेदवुं योग्य नथी, कारण के चोथुं शिखर कदाच आपणने उपद्रव करनार थाय'. त्थारे ते वणिकोए हितनी इच्छावाळ्य, सुखनी इच्छावाळ्य यावत्-हित, सुख अने निःश्रेयसनी इच्छावाळ्य तथा उपर प्रमाणे कहेता, यावत्-प्ररूपणा करता एवा ते वणिकना कथनमां श्रद्धा न करी, यावत्-रुचि न करी, तेना कथननी श्रद्धा नहिं करता, यावत्-रुचि नहिं करता ते वणिकोए-ते वल्मिकना चोथा शिखरने पण मेचुं. तेथी तेओए त्यां उग्रविषवाळो, प्रचंडविषवाळो, घोरविषवाळो, महाविषवाळो, अतिकायवाळो, मोटा शरीरवाळो अने मर्षी तथा मूषाना समान काळावर्णवाळो, दृष्टिना विष अने रोषवडे पूर्ण, मर्षीना ढगलाना जेवी कान्तिवाळो, अल आ-खवाळो, जेने चपल अने साथे चालती बे जीमो छे एवो, पृथिवीतलमां वेणिसमान, उत्कट स्पष्ट वक्र जटिल-'केशवाळीयुक्त अने विस्तीर्ण फणानो आटोप करवामां दक्ष, आकर-खाणने विषे अग्निथी तपावेळा लोढाना जेवो धमधमायमान शब्द छे जेनो एवो, नहिं जाणी शकाय तेवो उग्र अने तीव्र रोषवाळो, खानना मुखपेटे त्वरित अने चपल शब्द करतो एवो दृष्टिविष सर्प स्पर्शो. त्थार बाद ते वणिकोए ते दृष्टिविष सर्पनो स्पर्श कर्यो एटळे अत्यन्त गुस्से थयेला, अने यावत्-क्रोधथी बळता तेणे धीमे धीमे उठी सरसराट करता वल्मिकना शिखर उपर चढीने सूर्यने जोडने ते वणिकोने अनिमिष दृष्टिवडे चोतरफ जोया. त्थार पछी ते दृष्टिविष सर्प चोतरफ जोई ते

गोशाले वणिक् भासाय, गोशाला किञ्चि-बन्ध-सह-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोय पुञ्जति, गुञ्जति, बुञ्जति इति खलु
 'समये भगवं महावीर' इति २ । तं अदि मे से अद्य किञ्चि वि बद्धति तो णं तवेणं तेपणं एगाह्वं कूडाह्वं भासरसि
 करेमि, जहा वा बालेणं ते वणिया । तुमं ष णं आणंदा ! सात्तकामि, संगोवामि, जहा वा से वणिप तेसि वणिप्याणं द्विय-
 कामय, जाव-निस्सेसकामय अनुकंपयाय देवयाय समंड० जाव-साहिय । तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स
 धम्मोवपसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स ययमहुं परिकहेहि । तप णं से आणंदा धेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं बुत्ते समाणे
 भीय, जाव-संजायमय गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंतिथाओ हाहाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडि-
 निक्खमिन्ता स्सिणं तुरियं सावत्थि नगरि मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिन्ता जेणेव कोट्टय वेइय, जेणेव समणे भगवं महा-
 वीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणे० २-गच्छिन्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमं-
 सति, वंदिन्ता नमंसिन्ता एवं बयासी-एवं खलु महं मंते ! छट्ठकमणपारणंगसि तुभ्भेहि धम्मणुआय समाणे सावत्थीप
 नगरीय उच्च-नीय० जाव-भइमाणे हाहाहलाय कुंभकारीय० जाव-वीथीवयामि, तप णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हाहाह-
 काय० जाव-पासिन्ता एवं बयासी-एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि । तप णं महं गोसालेणं मंख-
 लिपुत्तेणं एवं बुत्ते समाणे जेणेव हाहाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि ।
 तप णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं बयासी-एवं खलु आणंदा ! इओ चिरातीयाय अजाप केइ उच्चावया वणिया० एवं तं
 वेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव-'नियगनगरं साहिय' । तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! धम्मायरियस्स धम्मोवपसगस्स
 जाव-परिकहेहि ।

११. [प्र०] तं पभू णं मंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेपणं एगाह्वं कूडाह्वं भासरसि करेत्तप, विसप णं मंते !
 गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स जाव-करेत्तप, समत्थे णं मंते ! गोसाले जाव-करेत्तप ? [उ०] पभू णं आणंदा ! गोसाले मंख-
 लिपुत्ते तवेणं जाव-करेत्तप । विसप णं आणंदा ! गोसाल० जाव-करेत्तप । समत्थे णं आणंदा ! गोसाले जाव-करेत्तप,

वणिकोने पात्र विगेरे उपकरणसहित एक प्रहारबडे कूटाघात-पाषाणमययंत्रना आघातनी पेठे जल्दी भस्मराशिरूप कर्मा. ते वणिकोमां
 जे वणिक ते वणिकोना हितनी इच्छावाळो, यावत्-हित, सुख अने निःश्रेयस-कल्याणी इच्छावाळो हतो तेना उपर दयाथी ते देवे पात्र
 वगेरे उपकरण सहित तेने पोताना नगरे मूक्यो'. ए प्रमाणे हे आनन्द ! तारा पण धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्रे उदार
 पर्याय-भवस्था प्राप्त कर्यो छे, अने तेनी देवो, मनुष्यो अने असुरोसहित आ जीवलोकमां 'श्रमण भगवान् महावीर, श्रमण भगवान् महा-
 वीर'-एवी उदार कीर्ति, वर्ण, शब्द अने श्लोक-यश व्याप्त थया छे, व्याकुल थया छे, अने स्तवाया छे. तो जो मने ते आज कइ पण
 कहेशे तो मारा तपना तेजबडे एक घाए कूटाघात-पाषाणमययंत्रना आघातनी पेठे जेम सपे वणिकोने बाळ्या तेम बाळीने भस्म करीश.
 हे आनन्द ! जेम ते वणिकोनुं हित इच्छनार यावत्-निःश्रेयस-कल्याण इच्छनार ते वणिकने देवताए अनुकंपाथी पात्रो वगेरे उपकरण
 सहित पोताने नगरे मूक्यो तेम हुं तारु संरक्षण अने संगोपन करीश, ते माटे हे आनन्द ! तुं जा, अने तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक
 श्रमण ज्ञातपुत्रने आ वात कहे. ल्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालाए ते आनन्द स्थविरने आ प्रमाणे कहुं एटले ते मय पाम्या, अने यावत्-
 मयमीत थयेला ते मंखलिपुत्र गोशालानी पासेथी अने हाहाहला कुंभारणना कुंभकारापणथी पाछा वळीने शीघ्र अने त्वरित श्रावस्ती नगरीना
 मध्य भागमांथी नीकळीने ज्यां कोष्ठक चैत्य हतुं अने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर हता, त्यां आव्या. त्यां आवीने श्रमण भगवान् महा-
 वीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी बंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या-'हे भगवन् ! खरेखर ए प्रमाणे हुं छट्ट खमणना पारणाने विषे
 आपनी अनुजाथी श्रावस्ती नगरीमां उच्च, नीच अने मध्यमकुळमां गोचरीए जतां हाहाहला कुंभारणना घर पासेथी यावत्-जतो हतो, त्यां
 मंखलिपुत्र गोशालाए मने हाहाहला कुंभारणना घरथी थोडे दूर जतां यावत्-जोइने ए प्रमाणे कहुं-'हे आनन्द ! अहीं आव, अने मारुं
 एक इष्टान्त सांभळ.' ल्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कहुं एटले ज्यां हाहाहला कुंभारणनुं कुंभकारापण हतुं, अने ज्यां मंख-
 लिपुत्र गोशालक हतो, त्यां हुं आव्यो, ल्यारे मंखलिपुत्र गोशालके मने आ प्रमाणे कहुं-'हे आनन्द ! खरेखर आजथी घणा काल पूर्वे
 अनेक प्रकारना केटलाएक वणिको-इत्यादि पूर्वोक्त सर्व कहेंतुं, यावत्-देवताए पोताना नगरे मूक्यो.' ते माटे हे आनन्द ! तुं जा अने
 तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशकने यावत्-कहे.

गोचरीची पात्र
 करतां मानेवतुं
 गोशालके वारिणी
 धयकीतुं जयवंतने
 निवेदन.

११. [प्र०] हे भगवन् ! मंखलिपुत्र गोशालक पोताना तपना तेजबडे एक घाए कूटाघातनी पेठे भस्मराशि करवाने प्रभु-समर्थ छे,
 हे भगवन् ! मंखलिपुत्र गोशालकनो यावत्-तेम करवानो विषय छे, हे भगवन् ! गोशालक यावत्-तेम करवाने समर्थ छे ! [उ०] हे
 आनन्द ! मंखलिपुत्र गोशालक तपना तेजबडे यावत्-तेम करवाने प्रभु-समर्थ छे, हे आनन्द ! गोशालक मंखलिपुत्रनो तेम करवानो यावत्-

गोशालक तपोव्रत
 तेजोवैभवा वडे
 वासी मज्ज करवा
 समर्थ छे ते संवसे
 यकोपर.

११ * प्रभुके हे प्रकारे छे-विषयवाचनी अपेक्षाम् अने करवानी अपेक्षाम्. माटे पुनः प्रश्न करे छे के विषयनी अपेक्षाम् समर्थ छे के करवानी
 अपेक्षाम् समर्थ छे ।

नो खेव नं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा । जावत्तियं नं भाणंदा ! गोसालकस्स मंखलिपुत्तस्स तवत्तेण, वडो अणंत-
गुणविसिद्धयराप खेव तवत्तेण अणगाराणं भगवंताणं, खंतिक्कमा पुण अणगारा भगवंतो । जावत्तियं नं भाणंदा ! अणगाराणं भग-
वंताणं तवत्तेण एत्तो अणंतगुणविसिद्धयराप खेव तवत्तेण थेराणं भगवंताणं, खंतिक्कमा पुण थेरा भगवंतो । जावत्तियं नं भाणंदा !
थेराणं भगवंताणं तवत्तेण एत्तो अणंतगुणविसिद्धयतराप खेव तवत्तेण अरहंताणं भगवंताणं, खंतिक्कमा पुण अरहंता भगवंतो ।
तं पभू नं भाणंदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवत्तेणं तेएणं जाव-करेत्तए, विसए नं भाणंदा ! जाव-करेत्तए, छमत्थे नं भाणंदा !
जाव करेत्तए, नो खेव नं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा ।

१२. तं गच्छ नं तुमं भाणंदा ! गोयमार्हणं समणाणं निग्गंथाणं एवमट्टं परिकहेहि—'मा नं अज्जो ! तुष्मं केह गोसालं
मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिच्चोयणाए पडिच्चोएड, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेड, धम्मियाणं पडोयारेणं पडोयारेड, गोसालं
नं मंखलिपुत्ते समणेहि निग्गंथेहि मिच्छं विपडिवणे । तए नं से भाणंदा थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं डुत्ते समाणे
समणं भगवं महावीरं वदंति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादिसमणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, तेणे २-गच्छित्ता
गोयमादिसमणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी—'एवं अलु अज्जो ! छट्ठकम्मणचारणंसि समणेणं भगवया महा-
वीरेणं अम्मणुत्ताए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय ० तं खेव सव्वं जाव-नावपुत्तस्स एवमट्टं परिकहेहि, तं मा नं अज्जो !
तुष्मं केह गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिच्चोयणाए पडिच्चोएड, जाव-मिच्छं विपडिवणे ।

१३. जावं च नं भाणंदा थेरे गोयमार्हणं समणाणं निग्गंथाणं एवमट्टं परिकहेर, तावं च नं से गोसाले मंखलिपुत्ते
हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्कमति, पडिनिक्कमिक्का आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वडमाणे
सिग्गं नुरियं जाव-सावत्थि नगरि मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्टए खेइए, जेणेव समाणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ, ते २-गच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते टिक्का समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—

विषय छे, हे आनन्द ! तेम करवाने यावत्-गोशालक समर्थ छे, परन्तु अरिहंत भगवंतने बाळी भस्म करवा समर्थ नथी, तो पण तेमने
परिताप-दुःख उत्पन्न करवा समर्थ छे. हे आनन्द ! मंखलिपुत्र गोशालकतुं जेटलुं तपनुं तेज छे, तेथी अनगार भगवंतनुं अनन्तगुण विशिष्ट
तपतेज छे, कारण के अनगार भगवत क्षमा-क्रोधनो निग्रह-करवामां समर्थ छे. हे आनन्द ! अनगार भगवंतनुं जेटलुं तपोबल छे, तेथी
अनन्त गुण विशिष्ट तपोबल "स्वविर भगवंतनुं छे; केमके स्वविर भगवंतो क्षमा करवामां समर्थ होय छे. हे आनन्द ! स्वविर भगवंतनुं जेटलुं
तपोबल होय छे, तेथी अनन्तगुण विशिष्ट तपोबल अरिहंत भगवंतनुं होय छे, कारण के अरिहंत भगवंतो क्षमा करवामां समर्थ होय छे.
हे आनन्द ! मंखलिपुत्र गोशालक पोताना तप-तेजवडे यावत्-भस्मराशि करवाने समर्थ छे, हे आनन्द ! यावत्-तेम करवानो तेनो विषय
(शक्ति) छे, हे आनन्द ! तेम करवाने यावत्-समर्थ छे. परन्तु अरिहंत भगवंतने तेम करवाने समर्थ नथी, मात्र तेमने दुःख उत्पन्न कर-
वाने शक्तिमान् छे.

भगवंते आनन्दने
कहं के-तुं गीत-
मारि मुनिओने कहे
के गोशालकनी साथे
अन्यथा वार्तावाद न
करे.

१२. हे आनन्द ! ते माटे तुं जा, अने गीतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने आ वात कहे के-हे आर्यो ! तमे कोई मंखलिपुत्र गो-
शालकनी साथे धर्मसंबन्धी प्रतिचोदना-तेना मतथी प्रतिकूल वचन न कहेशो, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा-तेना मतथी प्रतिकूलपणे अर्थनुं
स्मरण न करावशो, अने धर्मसंबन्धी प्रत्युपचार-तिरस्कार वडे तेनो तिरस्कार न करशो. मंखलिपुत्र गोशालके श्रमण निर्ग्रन्थो साथे मि-
थ्यात्व-म्लेच्छपणुं अथवा अनार्यपणुं विशेषतः आदर्युं छे'. त्यार पछी श्रमण भगवान् महावीरे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते आनन्द स्वविर
श्रमण भगवंत महावीरने बांदी अने नमी ज्यां गीतमादि श्रमण निर्ग्रन्थो छे त्यां आवीने तेणे गीतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलाव्या, बोलावीने
आ प्रमाणे कह्युं के-हे आर्यो ! छट्ठ क्षणना पारणाने दिवसे श्रमण भगवंत महावीरे अनुज्ञा आपी एटले हुं श्रावस्ती नगरीमां उच्च, नीच
अने मध्यमकुलमां गोचरीए जतो हतो-इत्यादि सर्व यावत्-ज्ञातपुत्रने आ अर्थने कहे जे'-त्यांसुधी कहेवुं, ते माटे हे आर्यो ! तमे कोई
मंखलिपुत्र गोशालकने धर्मसंबन्धी तेना मतने प्रतिकूल वचन न कहेशो, यावत्-तेणे निर्ग्रन्थोनी साथे विशेषतः अनार्यपणुं आदर्युं छे.

भगवंत प्रति गोशा-
लकनो उपालम्भ.

१३. जेटलामां आनन्द स्वविर गीतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने आ वात कहे छे तेटलामां हालाहला कुंभारणना कुंभकारापथ-हाटथी
नीकळी आजीविकसंघसहित घणा अमर्षने धारण करतो मंखलिपुत्र गोशालक शीघ्र अने त्वरित गतिए यावत्-श्रावस्ती नगरीमा
मध्यभागमांथी नीकळी ज्यां कोष्ठक चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आव्यो. त्यां आवीने तेणे श्रमण भगवंत महावीरथी
थोडे दूर उभा रही श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कह्युं-हे आयुष्मान् कश्यपगोत्रीय ! मने ए प्रमाणे साकं कह्यो छो, हे आयुष्मान्
कश्यप ! तमे मने एम ठीक कह्यो छो के 'मंखलिपुत्र गोशालक भारो धर्मसंबन्धी शिष्य छे' २. जे मंखलिपुत्र गोशालक तमरो धर्म

गोशालकनो
गोशालकपणे
इत्तकार.

* ११ स्वविर-वृद्ध तेना अण प्रकार छे १ वयःस्वविर-उमरमां वृद्ध, २ क्षुत्स्वविर-शास्त्रज्ञानमां वृद्ध, अने ३ पर्वीयस्वविर-केनो वीर्यवानो भवति
वर्षथी अधिक होय ते.

अथर्ववेदसंहितासंस्कृतभाष्यटीका
 ममं एवं ववासी-गोसाळे मंखलिपुत्रे ममं चर्म-
 वेवासी, गोसाळे०' २, जे वं से मंखलिपुत्रे त्व चर्मतेवासी से वं सुके सुकामिजाय भविता कालमासे कालं किञ्च वच-
 वेवेदेवकोयसु देवसाय उवववे, अहं उदारनामं कुंडियायणीय, मञ्जुपुत्रस्य गोयमपुत्रस्य सरीरगं विप्यजहामि, अ० २ विप्य-
 जहिता गोसाळस्य मंखलिपुत्रस्य सरीरगं मञ्जुपुत्रस्यमि, गो० २ मञ्जुपुत्रसिचिता इमं सप्तमं पडहपरिहारं परिहरामि । जे वि-
 मारं भाउलो कासबा ! अहं समयंति केर सिज्जिहसु वा सिज्जंति वा सिज्जिहसंति वा सजे ते चउरासीति महाकप्यसयस-
 हस्सां, सप्त दिवे, सप्त संजूहे, सप्त सखिगमे, सप्त पडहपरिहारे, पंच कम्मणि सयसहस्सां सट्ठि च सहस्सां छव सप
 तिभि व कम्मंसे मञ्जुपुत्रेण चउरसा तमो पञ्चा सिज्जंति, बुज्जंति, मुचंति, परिनिहारंति, सच्चपुष्पाणमंतं करेसु वा करेति
 वा करिस्संति वा । से अहा वा गंगा महानदी जमो पवूढा, जहि वा पञ्चुवस्थिया, एस वं अहा पंचजोयणसयां आयामेणं, अह-
 जोयणं विक्कमेणं, पंच धनुसयां उवेहेणं, एणं गंगाप्रमाणेणं सप्त गंगाओ सा एगा महागंगा, सप्त महागंगाओ सा एगा
 सादीनगंगा, सप्त सादीनगंगाओ सा एगा मञ्जुगंगा, सप्त मञ्जुगंगाओ सा एगा लोहितगंगा, सप्त लोहितगंगाओ, सा एगा
 अवन्तीगंगा, सप्त अवन्तीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुद्गावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तर सहस्सा छव गुणपचं
 गंगासया मवन्तीति मक्खाया । तासि दुविहे उदारे पणसे, तंजहा-सुद्धमबौदिकलेवरे वेव, वायरबौदिकलेवरे वेव । तत्थ
 वं जे से सुद्धमबौदिकलेवरे से ठप्ये । तत्थ वं जे से वायरबौदिकलेवरे तमो वं वाससय २ गय २ एगमेणं गंगावालुयं अह-
 हाय जावतिपणं कालेणं से कोट्टे कीणे, पीरय, निह्लेवे, निट्टिय मवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे । एणं सरप्पमाणेणं तिभि सरस-
 वसाहस्सीओ से एगे महाकप्ये, चउरासीह महाकप्यसयसहस्सां से एगे महामाणसे । अणंताओ संजूहाओ जीवे वयं चउसा
 उवरिहे माणसे संजूहे वेवे उववज्जति १ । से वं तत्थ दिवाहं भोगमोगां भुंजमाणे विहरइ, विहरिता तामो देवलोगाओ भाउ-
 कणपणं, मवकणपणं, ठिइकणपणं अणंतरं वयं चउसा पडमे सखिगमे जीवे पञ्चायाति १ । से वं तमोहितो अणंतरं उवट्टिता
 मञ्जिह्ले माणसे संजूहे वेवे उववज्जइ २ । से वं तत्थ दिवाहं भोगमोगां जाव-विहरिता तामो देवलोगाओ भाउकणपणं

संबन्धी शिष्य हतो ते शुद्ध-पवित्र अने शुक्लामिजातिवाळो-पवित्रपरिणामवाळो* यईने मरणसमये काळ करी कोइपण देवलोकने विषे देवपणे
 उत्पन्न थयो छे, हुं कौंडिन्यायनगोत्रीय उदायी नामे छुं, अने में गौतम पुत्र अर्जुनना शरीरनो त्याग करी मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरमां प्रवेश
 करीने आ सातमो प्रवृत्तपरिहार-शरीरान्तर प्रवेश कर्यो छे. वळी हे आयुष्मन् काश्यप ! जे कोई अमारा सिद्धान्तने अनुसारे मोक्षे गयेला
 छे, जाय छे अने जसे तेां सभें चोराशी लाख महाकल्प (काळविशेष), सात देवभवो, सात संयूथ निकायो, सात संजीगर्भ-मनुष्यगर्भवास,
 सात प्रवृत्तपरिहार-शरीरान्तरप्रवेश अने पांच लाख, साठ हजार, छसो त्रण कर्मना मेदोनो अनुक्रमे क्षय कर्या पछी सिद्ध थाय छे, बुद्ध
 थाय छे, मूकाय छे, निर्वाण पाये छे, अने सर्व दुःखनो अन्त कर्यो छे, करे छे अने करशे. जेम गंगा महानदी ज्यांथी नीकळे छे अने
 ज्यां समाप्त थाय छे ते गंगाओ अद्दा-मार्ग आयाम-लंबाइवडे पांचसो पोजन छे, विक्कम-विस्तार अर्थ योजन छे, अने उंडाइसां पांचसो
 धनुष छे-ए रीते गंगाप्रमाणे सात गंगाओ मळीने एक महागंगा थाय छे, सात महागंगाओ मळीने एक सादीन गंगा थाय छे, सात सादीन
 गंगाओ मळीने एक मृत्युगंगा थाय छे, सात मृत्युगंगा मळीने एक लोहितगंगा थाय छे, सात लोहितगंगाओ मळीने एक अवन्तीगंगा थाय
 छे, सात अवन्ती गंगाओ मळीने एक परमावती गंगा थाय छे. ए प्रमाणे पूर्वापर मळीने एक लाख, सत्तर हजार, छसो अने ओगण पचास
 गंगा नदीओ थाय छे-एम कहुं छे. ते गंगानदीनी बालुकाकणनो वे प्रकारे उदार कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-१ सूक्ष्मबौदिकलेवररूप अने
 २ बादरबौदिकलेवररूप. [जेमां बालुकाकणना सूक्ष्मबौदि-सूक्ष्मआकारवाळा कलेवरो-असंख्यात खंडो कल्पेला छे ते सूक्ष्मबौदिकलेव-
 ररूप उदार कहेवाय छे, अने जेमां बादरबौदि-बादरआकारवाळा कलेवरो-बालुकाकणो छे ते बादरबौदिकलेवररूप उदार कहेवाय छे.]
 तेमां सूक्ष्म बौदिकलेवररूप उदार छे ते स्थापी राखवा योग्य छे. [अर्यात् निरूपयोगी होवाची तेना विचारनी आवश्यकता नथी.] तेमां जे
 बादरबौदिकलेवररूप उदार छे तेमांथी सो सो वर्षे एक एक बालुकाना कणनो अपहार करीए अने जेटळा काळे गंगांना समुदायरूप ते
 कोठे क्षीण-खाळी थाय, नीरज-बालुकारहित थाय, निर्लेप थाय, अने निष्ठित-समाप्त थाय ह्यारे सरप्रमाण काळ कहेवाय छे. एवा प्रक-
 रमां त्रण लाख सरप्रमाण काळवडे एक महाकल्प थाय छे, चोराशी लाख महाकल्पे एक महामानस थाय छे. अनन्त संयूथ-अनन्तजीवना
 समुदायरूप निकायथी जीव थ्यवी संयूथ-देवभवने विषे उपरना मानस-सरप्रमाण आयुषवडे उत्पन्न थाय छे १, अने ते लां दीव्य अने
 मोक्ष एवा भोगेने भोगवतो विहरे छे. इवे ते देवलोकथी आयुषनो क्षय थवाथी, भवना क्षयथी अने स्थितिना क्षयथी तुरतज थ्यवीने प्रथम
 संजी गर्भज पंचेन्द्रिय मनुष्यपणे उत्पन्न थाय छे १. स्वारवाद ते स्थापी थ्यवीने तुरतज मध्यम मानस-सरप्रमाण आयुषवडे संयूथ-देवनि-

गोशाळकनी पोदायें
 स्वल्प निवेदन
 अने ते द्वारा
 समतामवर्तन.

चोराशी काळ
 महाकल्पे ममान.

सात दिव्यभवान्तरित
 सात मनुष्य भवो.

११ * जेम देवना-परिणामना इच्छादि उ प्रकार छे. तेम तेका परिणामवाळा आत्मना एण इच्छा, इच्छाविज्ञातीय, नीक, नीकमिजातीय, वास्त-
 इच्छा, इच्छामिजातीय-ए उ प्रकारे होय एव अने छे.
 १ अहं सुनिवार कहे छे ते 'गोशाळकनी विद्याय वेदिय होवाची ते संवसे अने कांई कथा नथी.' एव अहं दीकाकारे मात्र प्रख्याय कर्णे छे.

३ जाव-वहसा, दोबे सखिगम्भे जीवे पञ्चायाति २ । से णं तभोहितो अणंतरं उच्चट्टिता हेड्डिहे माणसे संजूहे देवे उववज्जति ३ । से णं तत्थ दिव्वाहं जाव-वहसा तबे सखिगम्भे जीवे पञ्चायाति ३ । से णं तभोहितो जाव-उच्चट्टिता उच्चट्टिहे माणसे संजूहे देवे उववज्जति ४ । से णं तत्थ दिव्वाहं भोग० जाव-वहसा चउत्थे सखिगम्भे जीवे पञ्चायाति ४ । से णं तभोहितो अणंतरं उच्चट्टिता मज्झिहे माणसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जति ५ । से णं तत्थ दिव्वाहं भोग० जाव-वहसा पंचमे सखिगम्भे जीवे पञ्चायाति ५ । से णं तभोहितो अणंतरं उच्चट्टिता हिड्डिहे माणसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जति ६ । से णं तत्थ दिव्वाहं भोग० जाव-वहसा छट्ठे सखिगम्भे जीवे पञ्चायाति ६ । से णं तभोहितो अणंतरं उच्चट्टिता बंभलोगे नामं से कप्ये पञ्चमे, पारंभयवी-णायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने, जहा टाणपदे जाव-पंच वडेंसगा पञ्चसा, तंजहा-१ असोगवडेंसए, जाव-पडिक्का । से णं तत्थ देवे उववज्जति ७ । से णं तत्थ दस सागरोवमाहं दिव्वाहं भोग० जाव-वहसा सप्तमे सखिगम्भे जीवे पञ्चायाति ७ । से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुञ्जाणं अज्जट्टमाण० जाव-वीतिकंताणं सुकुमालगमदलए मिउकुंडलकुंभियकेसए मट्टुण्डसखाम-पीढए देवकुमारसप्यभए दारए ययाति । से णं अहं कासवा ! तए णं अहं भाउसो कासवा ! कोमारियपहजाए कोमाणाणं बंभचेरवासेणं अविद्धकणए सेव संखाणं पडिलमामि, सं० २-लभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तंजहा-१-मि-ल्लस्स, २ मल्लरामस्स, ३ मंडियस्स, ४ रोहस्स, ५ भारद्वाजस्स, ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स, ७ गोशालस्स मंभवि-पुत्तस्स । तत्थ णं जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडिकुच्छिसि चेइयंसि उदाइस्स कुंडिया-णस्स सरीरं विप्यज्जहामि, उदा० २-जहित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, एणे० २-प्पविसित्ता वावीसं वासाहं पउट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से दोबे पउट्टपरिहारे से णं उहंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयरणंसि चेइयंसि एणेज्जगस्स सरीरगं विप्यज्जहामि, एणे० २-जहित्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, मल्ल० २-विसित्ता एकवीसं वासाहं पउट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से तबे पउट्टपरिहारे से णं चंपाप नगरीए बहिया अंगमंदिंरमि चेइयंसि मल्ल-रामस्स सरीरगं विप्यज्जहामि, मल्ल० २-जहित्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, मंडि० २-प्पविसित्ता वीसं वासाहं पउट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं धाणारसीए नगरीए बहिया काममहावणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरगं विप्यज्जहामि, मंडि० २-जहित्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, रोह० २-प्पविसित्ता एकूणवीसं वासाहं

कायविषे उत्पन्न थाय छे. २. त्यां दिव्य भोगववा योग्य भोगोने भोगवी यावत्-विहरी ते देवलोकथी आयुषना क्षयथी ३ यावत्-च्यवीने बीजा संज्ञीगर्भ-गर्भज मनुष्यने विषे जन्मे छे. २. ल्यार पछी ल्यांथी नीकळी तुरत हेठेना भानस प्रमाण आयुष वडे संयूथ-देवनिकायने विषे उपजे छे. ३. त्यां दिव्य भोगोने भोगवी ल्यांथी च्यवी त्रीजा संज्ञीगर्भ-गर्भज मनुष्यने विषे जन्मे छे. ३. ल्यांथी यावत्-नीकळी उप-रना मानसोत्तर-महामानस आयुषवडे संयूथ-देवनिकायने विषे उपजे छे. ४. त्यां दिव्य भोगोने भोगवी यावत्-ल्यांथी च्यवी चोया संज्ञी-गर्भ-गर्भजमनुष्यने विषे उपजे छे. ४. ल्यांथी च्यवीने तुरत मध्यम मानसोत्तर आयुषवडे संयूथ-देवनिकायमां उपजे छे. ६. त्यां दिव्य भोगो भोगवी यावत्-ल्यांथी च्यवी पांचमां संज्ञीगर्भ-गर्भज मनुष्यमां उत्पन्न थाय छे. ५. ल्यांथी च्यवीने तुरत हेठेना मानसोत्तर आयुषसहित संयूथ-देवनिकायमां उपजे छे. ६. त्यां दिव्य भोगो भोगवी यावत्-च्यवी छट्ठा संज्ञी गर्भज मनुष्योमां उपजे छे. ६. ल्यांथी नीकळी तुरत ब्रह्मलोक नामे कल्प-देवलोक कह्यो छे, ते पूर्व तथा पश्चिम लांबो छे, अने उत्तर तथा दक्षिण विस्तारवाळो छे, जेस प्रज्ञापना सूत्रना *स्थानपदने विषे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं, यावत्-तेमां पांच अवतंसक विमानो कहां छे, ते आ प्रमाणे-१ अशोकावतंसक, यावत्-प्रतिरूप-सुन्दर छे; ते देवलोकमां उत्पन्न थाय छे. ७. त्यां दश सागरोपम सुधी दिव्य भोगो भोगवीने यावत्-ल्यांथी च्यवीने सातमा संज्ञीगर्भ-गर्भज मनुष्यमां उपजे छे. ७. त्यां नव मास बरोबर पूर्ण थया पछी अने साडासात दिवस व्यतीत थया बाद सुकुमाल, भद्र, मृदु अने दर्भना कुंडलनी पेटे संकुचित केशवाळो, कर्णना आभूषणवडे जेना गालने स्पर्श थयो छे एवो, देव कुमारसमान कान्ति-वाळो बाळक जन्म्यो; हे काश्यप ! ते हुं छुं. ल्यार पछी हे आयुष्मन् काश्यप ! कुमारावस्थामां प्रव्रज्यावडे, कुमारावस्थामां ब्रह्मचर्य-वडे अविद्धकर्ण-व्युत्पन्न बुद्धिवाळा एवा मने प्रव्रज्या प्रहण करवानी बुद्धि थई अने सात प्रवृत्त परिहार-शरीरान्तरने विषे संचार कर्यो, ते आ प्रमाणे-१ एणेयक, २ मल्लराम, ३ मंडिक, ४ रोह, ५ भारद्वाज, ६ गौतमपुत्र अर्जुन अने ७ मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरमां प्रवेश कर्यो. तेमां जे प्रथम प्रवृत्तपरिहार-शरीरान्तर प्रवेशमां राजगृहनगरनी बहार मंडिकुक्षिनामे चैत्यने विषे कुंडियायन गोत्रीय उदा-यनना शरीरनो त्याग करी एणेयकना शरीरमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करी बावीश वर्ष सुधी प्रथम शरीरान्तरमां परावर्तन कर्युं. बीजा शरीरान्तरप्रवेशमां उहंडपुर नगरनी बहार चन्द्रावतरण चैत्यने विषे एणेयकना शरीरनो त्याग करी मल्लरामना शरीरमां प्रवेश कर्यो, अने प्रवेश करीने एकवीश वरस सुधी बीजा शरीरान्तरमां परावर्तन कर्युं. त्रीजा शरीरान्तरप्रवेशमां चंपानगरीनी बहार अंगमंदिंरनामे चैत्यने विषे मल्लरामना शरीरनो त्याग करी मंडिकना शरीरमां प्रवेश कर्यो, अने त्यां वीश वर्ष सुधी त्रीजुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे चोडुं

सात शरीरान्तर-प्रवेश.

प्रथमशरीरप्रवेश.

द्वितीयशरीरप्रवेश.

तृतीयशरीरप्रवेश.

चतुर्थशरीरप्रवेश.

प्रथमं पञ्चपरिहारं परिहरामि । तस्य नं जे से पंचमे पञ्चपरिहारे से नं आलमियाप नगरीय बहिया पञ्चकालगंसि वेदपंथि रोहस करिणं विप्यजहामि, रोह० २-जहिचा भारद्वाजस सरीरगं अणुप्यविसामि, भा० २ प्यविसिचा अङ्गारस वासां पंचमं पञ्चपरिहारं परिहरामि । तस्य नं जे से छट्टे पञ्चपरिहारे से नं वेसालीय नगरीय बहिया कौडियायनंसि वेदपंथि भारद्वाजस सरीरं विप्यजहामि, भा० २-जहिचा अङ्गुणगस गोयमपुसस सरीरगं अणुप्यविसामि, भा० २-प्यविसिचा सत्तरस वासां छट्टं पञ्चपरिहारं परिहरामि । तस्य नं जे से सप्तमे पञ्चपरिहारे से नं इहेव सावथीय नगरीय हाळाहलाय कुंमकारीय कुंमकारावणंसि अङ्गुणगस गोयमपुसस सरीरगं विप्यजहामि, अङ्गुण० २ विप्यजहिचा । गोशालस मंखलिपुसस सरीरगं 'मलं थिरं पुवं धारणिजं सीयसहं उणहसहं खुहासहं विविहवंसमसगपरीसहोवसगसहं थिरसंघयणं' ति कहु तं अणुप्यविसामि, तं० २-प्यविसिचा सोलस वासां इमं सप्तमं पञ्चपरिहारं परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा ! एगेणं तेसीसेणं वाससएणं सप्त पञ्चपरिहारा परिहरिया मवंतीति मक्खाया, तं सुहु नं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी, साधु नं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी- 'गोसाले मंखलिपुसे ममं धम्मंतेवासि' ति गोसाले० २।

१४. तप नं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुसं एवं वयासी- 'गोसाला ! से जहानामप तेणप सिधा, गामेह्-वेहि परम्ममाणे ए० २ कथ व गहुं वा वरिं वा दुगं वा जिभं वा पच्चं वा विसमं वा अणस्सावेमाणे एगेणं महं उआलो-मेण वा सणलोमेण वा कप्पासपमहेण वा तणसएण वा अत्ताणं आवरेत्ता नं चिट्ठेजा, से नं अणावरिय आवरियमिति अप्पाणं मच्च, अप्पच्छण्णे व पच्छणमिति अप्पाणं मच्चति, अणिलुके णिलुकमिति अप्पाणं मच्चति, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मच्चति, एवामेव तुमं पि गोसाला ! अणञ्जे संते अच्चमिति अप्पाणं उपलभसि, तं मा एवं गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सव्वे ते सा छाया नो अच्चा' ।

१५. तप नं से गोसाले मंखलिपुसे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुसे समणे आसुरसे ५ समणं भगवं महावीरं उआवयाहि आउसणाहि आउसति, उआ० २ आउसिचा उआवयाहि उअंसणाहि उअंसेति, उअंसेत्ता उआवयाहि निम्मं-

शरीरान्तर परावर्तन छे ते वाराणसी नगरीनी बहार काममहावन नामे चैत्यने विषे मंडिकना शरीरनो त्याग करी रोहकना शरीरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्यां ओगणीश वर्ष सुधी चोथुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे पांचमुं शरीरान्तर परावर्तन छे ते आलभिका नगरीनी बहार प्राप्तकाल नामे चैत्यने विषे रोहना शरीरनो त्याग करी भारद्वाजना शरीरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने अठार वर्ष सुधी पांचमुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे छट्टुं शरीरान्तर परावर्तन छे ते वैशाळी नगरीनी बहार कुंडियायननामे चैत्यने विषे भारद्वाजना शरीरनो त्याग करी गौतमपुत्र अर्जुनना शरीरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्यां सत्तर वर्ष सुधी छट्टुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे सातमुं शरीरान्तर परावर्तन छे ते आज श्रावस्ती नगरीने विषे हाळाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटने विषे गौतमपुत्र अर्जुनना शरीरनो त्याग करी मंखलिपुत्र गोशालकनुं शरीर समर्थ, स्थिर, ध्रुव, धारण करवा योग्य, शीतने सहन करनार, उष्णताने सहन करनार, क्षुधाने सहन करनार, विविध डांस मच्छर बगोरे परिषह अने उपसर्गने सहन करनार, तथा स्थिरसंघयणवाळुं छे'- एम समजी तेमां में प्रवेश कर्यो, अने तेमां सोळ वरससुधी आ सातमुं शरीरान्तरपरावर्तन कर्युं छे. ए प्रमाणे हे आयुष्मन् काश्यप ! में एकसो तेजीश वर्षमां सात शरीरान्तर परावर्तन कर्यो छे- एम में कहुं छे. ते माटे हे आयुष्मन् काश्यप ! तमे मने ए प्रमाणे सारुं कहो छो, हे आयुष्मन् काश्यप ! तमे मने ए प्रमाणे ठीक कहो छो के 'मंखलिपुत्र गोशालक मारो धर्मान्तेवासी छे'. २.

पंचमशरीरपवेच.

षष्ठशरीरपवेच.

सप्तमशरीरपवेच.

१४. [उपर प्रमाणे गोशालके कहुं एटले] श्रमण भगवान् महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कहुं- 'हे गोशालक ! जेम कोइ चोर होय अने ते ग्रामवासी जनोथी परामव पामतो २ कोइ गर्ता-खाडो, गुफा, दुर्ग-दुःखे जवा योग्य स्थान, निम्न-नीचाण प्रदेश, पुवेत के निषम-साव्वा अने टेकरावाळ प्रदेशने नहि प्राप्त करतो एक मोटा ऊनना लोमथी, शणना लोमथी, कपासना लोमथी अने तृणना अप्रमाणथी पोताने टाकीने रहे, अने ते नहि टंकाया छतां हुं टंकायेळ छुं एम पोताने माने, अप्रच्छन्न-नहि छुपाया छतां पोताने प्रच्छन्न-छुपायेळ माने, नहि संतावा छतां पोताने संतायेळ माने, अपलापित-गुप्त नहि छतां पोताने गुप्त माने, ५ प्रमाणे हे गोशालक ! तुं एण अन्य नहि छतां हुं अन्य छुं- एम पोताने देखावे छे. ते माटे हे गोशालक ! एम नहि कर, हे गोशालक ! एम करवाने तुं योग्य नथी. तेज आ तारी प्रकृति छे, अन्य नथी.

भगवन्दी कर्त्त के हे गोशालक ! तुं तारा आत्माने छुपावे छे.

१५. श्रमण भगवान् महावीरे ए प्रमाणे कहुं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक एकदम गुस्ते घयो अने श्रमण भगवान् महावीरने अनेक प्रकारना अनुचित वचनोवडे आक्रोश करवा छाव्यो, आक्रोश करीने अनेक प्रकारनी उद्धर्षणा-पराभवना वचनोवडे तिरस्कार करवा छाव्यो, तिरस्कार करी अनेक प्रकारनी निर्भर्षणा वडे निर्भर्षित करवा छाव्यो, निर्भर्षणा करी अनेक प्रकारनी निमज्जोडना-सर्कश

गोशालकना कर्त्त तवे आक्रोशक वचनो कर्त्त.

કર્ણાદિ નિબ્ધંભેતિ, ૩૦ ૨ નિબ્ધંભેતા ઉચ્ચાવયાદિ નિબ્ધોદનાદિ નિબ્ધોદેતિ, ૩૦ ૨ નિબ્ધોદેતા વદં વયાસી-મદુ સિ કદાર, વિબ્ધે સિ કદાર, મદુ સિ કયાદ, નદુ-વિબ્ધુ-મદુ સિ કદાદિ, મજ્જ ન મવસિ, માદિ તે અમાદિલો સુવચસિ ।

૧૬. તેજં કાલેજં તેજં સમપણં સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતેવાસી પાર્વણજાણવપ સઘાણુભૂતી જામં અણગારે પગ્ગમહપ, જાવ-વિળીય, ધમ્માયરિયાણુરામેણં પ્યમહું અસદ્દમાણે ઉટ્ટાપ ઉટ્ટેતિ, ૩૦ ૨ ઉટ્ટેતા એણેવ ગોસાલે મંચલિપુત્તે તેણેવ ઉચાગચ્છદ, તે ૦ ૨-ગચ્છિત્તા ગોસાલં મંચલિપુત્તં એવં વયાસી-‘હે વિ તાવ ગોસાલા ! તદ્દારુવસ્સ સમવસ્સ વા માહણસ્સ વા અંતિયં ધમ્મવિ આયરિયં ધમ્મિયં સુવચણં નિસામેતિ, સે વિ તાવ વંદતિ નમંસસિ, જાવ-કટ્ટાણં મંગલં રેવણં એવં પજ્જુવાસદ, કિમંગ પુણ તુમં ગોસાલા ! મગવયા એવ પઠ્ઠાવિપ, મગવયા એવ મુંડાવિપ, મગવયા એવ સેઠાવિપ, મગવયા એવ સિષ્ઠાવિપ, મગવયા એવ વહુસ્સુતીકપ, મગવઓ એવ મિચ્છં વિપ્પહિવએ, તં મા એવં ગોસાલા !, નારિહિત્તિ ગોસાલા ! સએવ તે સા છાયા નો અઘા । તપ ણં સે ગોસાલે મંચલિપુત્તે સઘાણુભૂતિણામં અણગારેણં એવં કુપ્પે સમાણે આસુરુત્તે ૫ સઘાણુભૂતિ અણગારં તથેણં તેણં પગાહચં કૂડાહચં માસરાસિ કરેતિ । તપ ણં સે ગોસાલે મંચલિપુત્તે સઘાણુભૂતિ અણગારં તથેણં તેણં પગાહચં કૂડાહચં માસરાસિ કરેતા દોષં પિ સમણં મગવં મહાવીરં ઉચ્ચાવયાદિ આડસણાદિ આડસર, જાવ-સુહં નત્થિ ।

૧૭. તેજં કાલેજં તેજં સમપણં સમણસ્સ મગવઓ મહાવીરસ્સ અંતેવાસી કોસલજાણવપ સુણક્ષત્તે જામં અણગારે પગ્ગમહપ, જાવ-વિળીય, ધમ્માયરિયાણુરામેણં જઠ્ઠા સઘાણુભૂતી તદ્દેવ જાવ-સ એવ તે સા છાયા નો અઘા । તપ ણં સે ગોસાલે મંચલિપુત્તે સુણક્ષત્તેણં અણગારેણં એવં કુપ્પે સમાણે આસુરુત્તે ૫ સુણક્ષત્તં અણગારં તથેણં તેણં પરિતાવેદ । તપ ણં સે સુણક્ષત્તે અણગારે ગોસાલેણં મંચલિપુત્તેણં તથેણં તેણં પરિતાવિપ સમાણે એણેવ સમણે મગવં મહાવીરં તેણેવ ઉચાગચ્છદ, તે ૦ ૨-ગચ્છિત્તા સમણં મગવં મહાવીરં તિક્કુત્તો વંદદ નમંસદ, વંદિત્તા નમંસિત્તા સયમેવ પંચ મહઘયાદં આરુમેતિ, ૩૦ ૨ આરુમેતા સમણા ય સમણીઓ ય જ્ઞામેદ, સમ ૦ ૨ જ્ઞામેતા આલોહયપડિકંતે સમાહિપત્તે આણુપુહીય કાલગપ ।

વચનો વડે હલકા પાડવા પ્રયત્ન કરવા લાગ્યો, અને તેમ કરી તે ગોશાલક આ પ્રમાણે બોલ્યો-“કદાચિત્-હું એમ માનું છું કે તું નહ થયો હે, કદાચિત્ વિનષ્ટ થયો હે, કદાચિત્ અષ્ટ થયો હે, અને કદાચિત્ નષ્ટ, વિનષ્ટ અને અષ્ટ થયો હે, કદાચિત્ તું આજે હૃદય નહિ, તને મારાપી સુખ થવાનું નથી”.

સર્વાનુભૂતિ અનગારને ગોશાલકને સભા કરવા.

૧૬. તે કાલે અને તે તે સમયે શ્રમણ મગવંત મહાવીરના અન્તેવાસી-શિષ્ય પૂર્વે દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા સર્વાનુભૂતિ નામે અનગાર મદ્ પ્રકૃતિના અને યાવત્ વિનીત હતા. તે પોતાના ધર્માચાર્યના અનુરાગથી આ ગોશાલકની યાતની અશ્રદ્ધા કરતા ઉઠ્યા, ઉઠીને જ્યાં મંચલિપુત્ર ગોશાલક હતો ત્યાં આવી મંચલિપુત્ર ગોશાલકને આ પ્રમાણે કહ્યું-“હે ગોશાલક ! જે તેવા પ્રકારના શ્રમણ કે બ્રાહ્મણની પાસે એક પળ આર્ય-નિર્દોષ અને ધાર્મિક સુવચન સાંભળે છે તે પળ તેને વંદન અને નમસ્કાર કરે છે, યાવત્-તે કલ્યાણકર અને મંગલકર દેવના ચૈલ્યની પેટે તેની પર્યુપાસના કરે છે; પળ હે ગોશાલક ! તારે માટે તો શું કહેવું !!! મગવંતે તને દીક્ષા આપી, અર્થાત્ શિષ્યરૂપે સ્વીકાર કર્યો, મગવંતે તને મુંઢ્યો, મગવંતે તને વ્રતસમાચાર શીક્ષવ્યો, મગવંતે તને શિક્ષિત કર્યો અને મગવંતે તને બહુશ્રુત કર્યો, તો પળ તે મગવંતની સાથે અનાર્યપણું આદર્યું છે; તે માટે હે ગોશાલક ! એમ નહિ કર, હે ગોશાલક તું એમ કરવાને યોગ્ય નથી. આ તેજ તારી પ્રકૃતિ છે, અન્ય નથી.” એ પ્રમાણે સર્વાનુભૂતિ અનગારે કહ્યું એટલે તે મંચલિપુત્ર ગોશાલક ગુસ્તે થયો, અને સર્વાનુભૂતિ અનગારને પોતાના તપના તેજથી એક પ્રહારે કરી કૂટાઘાત-પાપાણમય યંત્રના આઘાતની પેટે બાહી ભસ્મ કર્યા. સ્વાર બાદ મંચલિપુત્ર ગોશાલકે સર્વાનુભૂતિ અનગારને પોતાના તપના તેજથી એક ઘાટ કૂટાઘાતની પેટે ભસ્મરાશિ કરીને બીજી વાર પણ શ્રમણ મગવંત મહાવીરને અનેક પ્રકારની આક્રોશના વડે આક્રોશ કર્યો, યાવત્-‘મારાપી તમને સુખ થવાનું નથી.’

ગોશાલકે સર્વાનુભૂતિ અનગારને બાહી ભસ્મ કર્યા.

સુનક્ષત્ર અનગારનું ગોશાલકને કથન.

૧૭. તે કાલે અને તે સમયે શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરના અન્તેવાસી કોસલદેશ-અયોધ્યાદેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા સુનક્ષત્ર નામે અનગાર મદ્ પ્રકૃતિના અને યાવત્-વિનીત હતા. તે ધર્માચાર્યના અનુરાગથી-હ્યાદિ જેમ સર્વાનુભૂતિ સંવન્ધે કહ્યું તેમ અહિ યાવત્-‘જા તારી પ્રકૃતિ છે અન્ય નથી’ ત્યાંસુધી કહેવું; સુનક્ષત્ર અનગારે એ પ્રમાણે કહ્યું એટલે તે મંચલિપુત્ર ગોશાલક અસંત ગુસ્તે થયો, અને સુનક્ષત્ર અનગારને તેણે તપના તેજથી બાહ્યા. મંચલિપુત્ર ગોશાલકવડે તપના તેજથી બહેલા સુનક્ષત્ર અનગારે જ્યાં શ્રમણ મગવંત મહાવીર છે ત્યાં આવી શ્રમણ મગવંત મહાવીરને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરી વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરી સ્વપ્નેવ પાંચ મહામત્તો ઉચ્ચાર કરી સાધુઓ અને સાધ્વીઓને યમાવ્યા, યમાવીને આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિને પ્રાપ્ત થઈ તે સુનક્ષત્રે સુનક્ષત્રે અનગારને

ગોશાલકે સુનક્ષત્ર અનગારને પણ વાક્યા.

१७. तत्र नो गोसाळे मंखलिपुत्रे सुनक्षत्रे भगवन्तं भगवन्तं तेषां तेषां चरितावेत्ता तत्रं पि समणं भगवं महावीरं उवा-
 चत्वासी-नो वि तस्य गोसाळा ! तदाभवत्स समणस्स वा माहकस्स वा तं चेव जाव-पञ्चवासति, किमंग पुण गोसाळा !
 तुमं मय चेव सज्जित्त, जाव-मय चेव बहुत्तुरत्तय, मयं चेव मिच्छं विप्पडियवे ? तं मा य्वं गोसाळा ! जाव-नो भन्ना,
 तय नं से गोसाळे मंखलिपुत्रे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं तुचे समाणे अत्तुत्तये ५ तेषासमुग्घापणं समोहत्तर, तेया०-
 इत्थित्ता सत्तद्द पयाहं पत्तोसत्तर, पत्तोसत्तित्ता समणस्स भगवन्तो महावीरस्स वहाय सरीरगंसि तेषं निसिरति । से जहा-
 वात्तय वाउत्तत्तिया इ वा वाचमंडलिया इ वा सेलंसि वा कुहुंसि वा थमंसि वा थूमंसि वा आवरिज्जमाणी वा निवारिज्जमाणी
 वा स्स नं तत्थ नो कमति, नो पक्कमति, एवामेव गोसाळस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेय समणस्स भगवन्तो महावीरस्स
 वहाय सरीरगंसि निसिद्धे समाणे से नं तत्थ नो कमति, नो पक्कमति, मंथियंथियं करेति, मंथि० २ करेत्ता आवाहिण-
 पवाहिणं करेति, आ० २ करेत्ता उहं वेहासं उप्पइय, से नं तन्नो पडिइय पडिनियसे समाणे तमेव गोसाळस्स मंखलिपुत्तस्स
 सरीरगं अणुत्तहमाणे २ मंतो अणुत्तपिद्धे । तय नं से गोसाळे मंखलिपुत्रे सणं तेषणं अत्तारुत्ते समाणे समणं भगवं
 महावीरं एवं वचासी-‘तुमं नं भाउत्तो कासवा ! ममं तवेणं तेषणं अत्तारुत्ते समाणे मंतो छण्हं मात्ताणं पित्तज्जरपरिगय-
 सरीरे दाहवत्तंतीय छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि’ । तय नं समणे भगवं महावीरे गोसाळं मंखलिपुत्तं एवं वचासी-‘नो
 क्खु म्हां गोसाळा ! तय तवेणं तेषणं अत्तारुत्ते समाणे मंतो छण्हं जाव-कालं करेस्सामि, म्हाअं अत्ताहं सोलस वासाहं
 जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तुमं नं गोसाळा ! अप्पणा चेव सणं तेषणं अत्तारुत्ते समाणे मंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगय-
 सरीरे जाव-छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि’ ।

१९. तय नं सावत्थीय नगरीय सिंघाउग- जाव-पदेसु बहुज्जणो भक्कमत्तस्स एवमाहत्तत्तर, जाव-एवं पद्देव-‘एवं क्खु
 देवात्तुत्तिया ! सावत्थीय नगरीय वट्ठिया कोट्टय वेहय तुवे जिणा संलभंसि, म्हे वयंसि-तुमं पुत्ति कालं करेस्ससि, एगे वदंसि
 तुमं पुत्ति कालं करेस्ससि, तत्थ नं के पुण सम्मावादी के पुण मिच्छावादी, ! तत्थ नं जे से म्हात्तह्हाणे जणे से वदंसि-‘समणे
 भगवं महावीरे सम्मावादी, गोसाळे मंखलिपुत्रे मिच्छावादी, ‘अज्जो’ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं

१८. द्वार बाद मंखलिपुत्र गोशालक सुनक्षत्र अनगरने तपना तेजथी बाळीने श्रीजीवार श्रमण भगवंत महावीरने अनेक प्रकारना
 अजुचित वचनोपी आक्रोश करवा लाग्यो-इत्यादि पूर्वोक्त सर्व कहेतुं, यावत्-‘तने मारपी सुख यवानुं नयी.’ स्वारे श्रमण भगवान्
 महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कहुं के ‘हे गोशालक ! जे तेवा प्रकारना श्रमण अने ब्राह्मणनुं-[आर्य अने धार्मिक सुवचन
 सांभळे छे-इत्यादि] पूर्वोक्त कहेतुं, ते तेनी यावत्-पर्युपासना करे छे, तो हे गोशालक ! तारे माटे तो तुं कहेतुं ! ! में तने प्रव्रज्या
 आपी, यावत्-में तने बहुश्रुत कर्यो, अने तें मारी साथे मिथ्यात्व-अनार्यपणं आदर्युं छे. ते माटे हे गोशालक ! एम नहि कर,
 यावत्-ते आ तारी ज प्रकृति छे, अन्य नयी.’ श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कहुं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक अत्यंत गुस्से थयो,
 अने तेजस समुद्रघात करी, सात आठ पगल पाछे खसी तेणे श्रमण भगवंत महावीरनो वध करवामाटे शरीरमांथी तेजोलेख्या बहार काडी.
 जेन कोह वातोत्कलिका (जे रक्षी रक्षीने वायु वाय ते) के वंटोळीओ होय ते पर्यंत, भीत, स्तंभ के स्तूपवडे आवरण करायेलो के निवा-
 रण करायेलो होय तो पण तेने विषे समर्थ थतो नयी, विशेष समर्थ थतो नयी, ए प्रमाणे मंखलिपुत्र गोशालकनी तपोजन्य तेजोलेख्या
 श्रमण भगवंत महावीरनो वध करवा माटे शरीरमांथी बहार काळ्या छतां तेने विषे समर्थ थती नयी, विशेष समर्थ थती नयी, पण गमना-
 गमन करे छे, गमनागमन करीने प्रदक्षिणा करे छे, प्रदक्षिणा करी उंचे आकाशमां उछळे छे, अने स्थायी स्थलित थईने पाछी फरती
 तपोजन्य तेजोलेख्या मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने बाळ्ती बाळ्ती तेना शरीरनी अंदर प्रविष्ट थाय छे. द्वार बाद पोतानी तेजोलेख्यावडे
 पराभवने प्राप्त थयेला मंखलिपुत्र गोशालके श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कहुं-‘हे आयुष्मन् काश्यप ! मारी तपोजन्य तेजोले-
 ख्यापी पराभवने प्राप्त थई छ मासने अन्ते पित्तज्जरयुक्त शरीर छे जेनुं एको तुं दाहनी पीत्ताथी छत्तस्थ अवस्थामां काळ करीश.’ स्वारे
 श्रमण भगवंत महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने ए प्रमाणे कहुं के ‘हे गोशालक ! तुं तारी तपोजन्य तेजोलेख्यायी पराभव पायी छ मासने
 अन्ते यावत्-काळ करीश नहि, पय बीजा सोळ वरस सुथी जिन-तीर्थकरपणे गन्धहस्तीनी पेटे विचरीश, परन्तु हे गोशालक ! तुं पोतेज
 सात वेवनी पराभव पायी सात रात्रिने अन्ते पित्तज्जरथी पीडित शरीरवाळो थई छत्तस्थावस्थामां काळ करीश.’

१९. द्वार पछी आवत्ती नगरीमां सुंगठकना आकारवाळ्य त्रिकोण मार्गमां यावत्-राजमार्गमां धणा माणस्तो परस्पर आ प्रमाणे
 करे छे, यावत्-आ प्रमाणे प्रक्ये छे-‘हे देवानुत्तियो ! ए प्रमाणे खरेखर आवत्ती नगरीनी बहार कोष्ठक चैखने जिणे वे जिनी परस्पर
 करे छे, तेमां एक आ प्रमाणे करे छे के ‘तुं प्रथम काळ करीश’ अने बीजा एम करे छे के ‘तुं प्रथम काळ करीश.’ तेमां कोण सुग्ग-
 सुग्ग-सम्मावादी छे, अने कोण मिच्छावादी छे ! तेमां जे जे प्रथम-सुग्ग माणसो छे ते मोले छे के श्रमण भगवान् महावीर सम्मावादी छे,
 १९. २०. २१.

गोशालकनो भगवंत
 प्रति श्रीभी वारवी
 आक्रोश.

गोशालके भगवंतनो
 वध करवामाटे शरी-
 रमांथी तेजोलेख्या
 बहार काडी.

तेजोलेख्या गोशा-
 लकना शरीरमां वेडी-
 हुं तारा तपना देव-
 की करवत्त अन्त
 मासने अन्ते काळ
 करीश नहि, पय
 तुं सात रात्रिने
 अन्ते पित्तज्जर-
 युक्त शरीरवाळो
 थई छत्तस्थावस्थामां
 काळ करीश.

श्रमणभगवतोवा प्र-
 कोणे सम्मावादी अने
 मिच्छावादी सम्मा-
 वादीय संकने
 भवत्.

कर्मणी-‘मज्जो’ ! से जहानामय तणरासी इ वा कट्टरासी इ वा पत्तरासी इ वा सपायासी इ वा मुसपासी इ वा मुसरासी इ वा गोमयपासी इ वा अयकररासी इ वा अगणिहामिय अगणिहामिय अगणिपरिणामिय इयतेय गयतेय मज्जोय मज्जोय मज्जोय मज्जोय विणट्टतेये जाव-पवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते मम वहाय सरीरगंस्सि तेयं निस्सिरेत्ता इयतेय गयतेय जाव-विणट्टतेये जाव, वं छंदेणं मज्जो ! तुष्णे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाय पडिचोयणाय पडिचोयणं, धम्मि० २ पडिचोयणा धम्मियाय पडिसारणाय पडिसारेणं, धम्मि० २ पडिसारेणा धम्मियाय पडिसारेणं पडोयारेणं पडोयारेणं, धम्मि० २ पडोयारेणा महेहि य हेऊहि य पडिचोयि य वागणेहि य कारणेहि य निप्पट्टपसिणवागरणं करेह ।

२०. तय णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं बुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंति नमं-संति, वंदिता नमंसिता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छिता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाय पडिचोयणाय पडिचोयंति, ध० २ पडिचोयणा धम्मियाय पडिसारणाय पडिसारंति, ध० २ पडिसारेणा धम्मियाय पडोयारेणं पडोयारंति, ध० २ पडोयारेणा महेहि य हेऊहि य कारणेहि य जाव-वागरणं करंति ।

२१. तय णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहि निग्गंथेहि धम्मियाय पडिचोयणाय पडिचोयिज्जमाणे जाव-निप्पट्टपसि-णवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते जाव-मिसिमिसेमाणे नो संवापति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा उप्पापत्तय, छविच्छेदं वा करेत्तय । तय णं ते आजीविया येरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहि निग्गंथेहि धम्मियाय पडि-चोयणाय पडिचोयिज्जमाणं, धम्मियाय पडिसारणाय पडिसारिज्जमाणं, धम्मियाय पडोयारेणं य पडोयारेज्जमाणं, महेहि य हेऊहि य जाव-करेमाणं, आसुरुत्तं जाव-मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासिता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियामो आयाय भवकमंति, आयाय भवकमिता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करंति, आ० २ करेत्ता, वंदंति नमंसंति, वंदिता नमंसिता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जिता णं विहरंति, मत्थेगाहया आजीविया येरा गोसालं सेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जिता णं विहरंति ।

अने मंखलिपुत्र गोशालक मिथ्यावादी छे.” श्रमण भगवान् महावीरे ‘हे आर्यो !’ ए प्रमाणे निर्मन्थोने बोलावी एम कथुं के ‘हे आर्यो ! जेम कोइ तृणनो राशि, काष्ठनो राशि, पांदडानो राशि, त्वचा-छालनो राशि, तुष-फोतरानो राशि, मुसानो राशि, छाणनो राशि अने कचरानो राशि अग्निथी दग्ध थयेले, अग्निथी युक्त अने अग्निथी परिणमेलो होय तो ते जेनुं तेज हणायुं छे, जेनुं तेज गयेछुं छे, जेनुं तेज नष्ट थयुं छे, जेनुं तेज भष्ट थयुं छे, जेनुं तेज लुप्त थयेछुं छे अने जेनुं तेज विनष्ट थयेछुं छे एवो यावत्-याय, ए प्रमाणे मंखलिपुत्र गोशालक मारो बध करवा माटे शरीरमांथी तेजोलेस्या बहार काढीने जेनुं तेज हणायुं छे एवो, तेजरहित अने यावत्-विनष्टतेजवाळो थयो छे, माटे हे आर्यो ! तमारी इच्छाथी तमे मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे धार्मिक प्रतिचोदना-तेना मतथी प्रतिकूल वचन कइो, धार्मिक प्रतिचोदना करी धार्मिक प्रतिसारणा-तेना मतथी प्रतिकूलपणे विस्मृत अर्थनुं संस्मरण करावो, धार्मिक प्रतिसारणा करी धार्मिक वचनना प्रत्युपचारबडे प्रत्युपचार करो, तेमज अर्थ-प्रयोजन, हेतु, प्रश्न, व्याकरण-उत्तर अने कारण बडे पूछेला प्रश्नो उत्तर न आपी शके तेम निरुत्तर करो’.

मंखलिपुत्र गोशालकने मज्जो पूछी निरुत्तर कर्वा.

२०. ज्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कथुं ल्यारे ते श्रमण निर्मन्थो श्रमण भगवंत महावीरने बदि छे, नमे छे. वंदन-नमस्कार करी ज्यां गोशालक मंखलिपुत्र छे त्यां आकी मंखलिपुत्र गोशालकने धर्मसंबन्धी प्रतिचोदना-तेना मतथी प्रतिकूल वचनो कहे छे, धर्मसंबन्धी प्रतिचोदना करी धार्मिक प्रतिसारणा-तेना मतने प्रतिकूलपणे अर्थनुं स्मरण करावे छे, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा करी धर्मसंबन्धी वचनना प्रत्युपचारबडे प्रत्युपचार करे छे अने अर्थ-प्रयोजन, हेतु अने कारणबडे यावत्-तेने निरुत्तर करे छे.

निरुत्तर बवाची गो-शालकनुं गुस्से थयुं अने तेना केटला ए-क शिष्योनुं भगवंत-ने आश्रयी छेवुं.

२१. ल्यार बाद श्रमण निर्मन्थोए धार्मिक प्रतिचोदना-तेना मतथी प्रतिकूल प्रश्नो करी अने यावत्-तेने निरुत्तर कर्वा एटले मंखलिपुत्र गोशालक अत्यन्त गुस्से थयो अने यावत्-क्रोधथी अत्यंत प्रज्वलित थयो, परन्तु श्रमण निर्मन्थोना शरीरने कंइपण पीडा के उपद्रव करवाने तथा तेना कोइ अवयवोना छेद करवाने समर्थ न थयो. ल्यार पछी आजीविक स्वबिरो श्रमण निर्मन्थो बडे धर्मसंबन्धी तेना मतथी प्रतिकूलपणे कहेचायेला, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा-तेना मतथी प्रतिकूलपणे स्मरण करावायेला, अने धर्मसंबन्धी प्रत्युपचार बडे प्रत्युपचार करायेला तथा अर्थ अने हेतुथी यावत्-निरुत्तर करायेला, अत्यन्त गुस्से करायेला, यावत्-क्रोधथी बळ्ळा, श्रमण अने निर्मन्थोना शरीरने कंइपण पीडा-उपद्रव के अवयवोना छेद नहि करता एवा मंखलिपुत्र गोशालकने जोईने तेनी पासेयी पोते नीकल्या, अने आजीविक नीकली ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आव्या, त्यां आजीविक श्रमण भगवंत महावीरने जण वार प्रदक्षिणा करी, वांछी अने मज्जोने श्रमण भगवान् महावीरने आश्रय करी विहरवा लाग्या, अने केटला एक आजीविक स्वबिरो मंखलिपुत्र गोशालकनोअ आश्रय करी विहरवा करावा.

२१. तत्र यं ते गोसाले मंखलिपुत्रे जस्सद्वय इवमागय तमदं अलाहेमणे, रंदां पलोयमाणे, वीहुण्हाइं नीससमाणे, दसिवाय कोमय कुंभमाणे, अचदुं कंहुयमाणे, पुवलिं पक्कोडेमाणे, इत्थे विण्णियमाणे, दोहि वि पायहिं भूमिं कोडेमाणे, 'हा हा' वदो ! इतोअमरिस'सि कहु समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियाओ कोहुवाओ वेदयाओ पडिनिक्कमति, पडिनिक्कमिआ जेणव सावत्थी नगरी, जेणव हाहाइलाय कुंभकारीय कुंभकारावणे तेणव उवागच्छ, तेणव उवागच्छिता हाहाइलाय कुंभकारीय कुंभकारावणंसि अंबकूणगइत्थगय, मज्जापाणं पियमाणे, अमिक्कणं गायमाणे, अमिक्कणं नवमाणे, अमिक्कणं हाहाइलाय कुंभकारीय अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलपणं मट्टियापाणपणं आयंअणिउदपणं गायारं परिसिचमाणे विहरति ।

२३. 'अज्जो'सि समणे भगवं महावीरे समणे निगंथे आमंतेसा एवं वयासी- 'जावतिय णं अज्जो ! गोसालेणं मंखलिपुत्रेणं ममं वहाय सखिरंगंसि तेथे निसुडे, से णं अलाहि पज्जे से लोसलणं जणवयाणं, तं जहा-१ अंगाणं, २ अंगाणं, ३ अंगाणं, ४ अलायणं, ५ मालवणाणं, ६ अच्छाणं, ७ अच्छाणं, ८ कोच्छाणं, ९ पादाणं, १० लाटाणं, ११ अजाणं, १२ मोलीणं, १३ काशीणं, १४ कोसलाणं, १५ अवाहाणं, १६ संमुत्तराणं धाताय, वहाय, उच्छादणयाय, मासीकरणयाय । अं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्रे हाहाइलाय कुंभकारीय कुंभकारावणंसि अंबकूणगइत्थगय, मज्जापाणं पियमाणे, अमिक्कणं जाव-अंजलिकम्मं करेमाणे विहर, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणदुयाय इमाइं अदु चरिमाइं पक्खेति । तंजहा-१ चरिमे पाणे, २ चरिमे गेये, ३ चरिमे नडे, ४ चरिमे अंजलिकम्मे, ५ चरिमे पोक्कलसंवहय महामेहे, ६ चरिमे सेयणय गंधइत्थी, ७ चरिमे महाशिलाकंटक संगामे, ८ अहं च णं इमीसे ओसप्पिणीय चउवीसाय तित्थंकराणं चरिमे तित्थंकरे सिज्जिस्सं, जाव-अंतं करेस्सं ति । अं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्रे सीयलपणं मट्टियापाणपणं आयंअणिउदपणं गायारं परिसिचमाणे विहर, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणदुयाय इमाइं अचारि पाणगाइं अचारिपाणगाइं पक्खेति ।

२४. [प्र०] से किं तं पाणय ? [उ०] पाणय चउच्छिडे पक्खे, तंजहा-१ गोपुट्टय, २ इत्थमदियय, ३ आयवतत्तय, ४ सिहापम्मदुय, सेचं पाणय ।

२२. त्वा बाद मंखलिपुत्र गोशाळक जेने माटे शीघ्र आव्यो हतो ते कार्येने नहि साधतो, दिशाओ तरफ लांबी दृष्टियी जोतो, दीर्घ अने उष्ण नीसासा नांखतो, दादिना बाळने खेंचतो, अबदु-डोकनी पाळळना भागने खजवाळतो, पुत्रप्रदेशने प्रस्फोटित करतो, हस्तने हलावतो अने क्खे पग वडे भूमिने कूटतो, 'हा हा ! अरे ! हुं हुणायो खुं'-एम विचारी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेयी अने कोष्ठक वैश्यायी नीकळी ज्यां आवस्ती नगरी छे, अने ज्यां हाहाइलानामे कुंभारणनुं कुंभकारापण-हाट छे त्यां आव्यो. त्यां आवीने हाहाइला कुंभारणना कुंभकारापणना जेना हायमां 'आम्रफल रहेळुं छे एवो, मधपान करतो, वारंवार गातो, वारंवार नाचतो, वारंवार हाहाइला कुंभारणने अंजलि करतो अने माटीना भाजनेमां रहेला शीतळ माटीना पाणी वाडे गात्रने सींचतो विहरे छे.

गोशाळकं कर्णव पासेयी हाहाइला कुंभारणने वेर वदुं.

२३. 'हे आर्यो ! एम कहीने श्रमण भगवान् महावीरे श्रमण निर्मन्थेने आमंत्रिने ए प्रमाणे कसुं के हे आर्यो ! मंखलिपुत्र गोशाळके माटो वध करवा माटे शरीरयकी तेजोलेख्या काठी इती, ते आ प्रमाणे-१ अंग, २ अंग, ३ अंग, ४ मलय, ५ मलय, ६ अच्छ, ७ वास, ८ कौत्स, ९ पाट, १० छाट, ११ वज्र, १२ मौली, १३ काशी, १४ कोशल, १५ अवाध अने १६ संमुत्तर-ए सोळ देशनो घात करवा माटे, वध करवा माटे, उच्छेदन करवा माटे, भस्म करवा माटे समर्थ इती. वळी हे आर्यो ! मंखलिपुत्र गोशाळक हाहाइला कुंभारणना कुंभकारापणना आम्रफल हायमां ग्रहण करी मधपान करतो, वारंवार यावत्-अंजलिकर्म करतो विहरे छे ते अवध-दोषने प्रच्छादन-टांकवामाटे आ आठ चरम-छेळीं कस्तु करे छे. ते आ प्रमाणे-१ चरम पान, २ चरम गान, ३ चरम माळव, ४ चरम अंजलिकर्म, ५ चरम पुक्कल संवर्त महामेध, ६ चरम सेचनक गन्धइत्थी, ७ चरम महाशिलाकंटक संग्राम अने ८ हुं आ अचरिणीमां 'चोवीश तीर्थकरोमां चरम तीर्थकरपणे सिद्ध थईश, अने यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करीश'. वळी हे आर्यो ! मंखलिपुत्र गोशाळक माटीना पात्रमां रहेला माटीमिश्रित शीत पाणीवाडे शरीरने सींचतो विचरे छे ते अवधने पण दां वाने माटे आ चार प्रकारा पाणक-पीणां वने चार नहि पीणा योग्य (शीतळ अने दाहोपशमक) अपानक जणावे छे-

तेजोलेखमां साधयं.

२४. [प्र०] पाणी केटला प्रकारे कसुं छे ? [उ०] पाणी चार प्रकारे कसुं छे, ते आ प्रमाणे-१ गायना पृष्ठयी पवेळुं, २ हा- चार प्रकारा कसक

१५ * गोशाळके तेजोलेखमां साधयं वधयं माटे वदुं माटे उचयं आम्रफल (चोवीश) पाणुं वदुं.

२५. [प्र०] से किं तं अयापाण्य ? [उ०] अयापाण्य चतुर्विधे पञ्चमे, तंजहा-१ याळपाण्य, २ तयापाण्य, ३ सिचलिपाण्य, ४ सुद्धपाण्य ।

२६. [प्र०] से किं तं थाळपाण्य ? [उ०] था० २ जणं दायाळगं वा दावारणं वा दाकुंभं वा दाळकळं वा जीमळं वळगं इत्येहि परामुसह, न य पाणियं पियह, सेचं थाळपाण्य ।

२७. [प्र०] से किं तं तयापाण्य ? [उ०] त० २ जणं अंबं वा अंबाडगं वा अहा पमोगपदे जाव-बोर वा तिरुवळ वा, तरुणं वा, आमगं वा आसगंसि आधीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियह, सेचं तयापाण्य ।

२८. [प्र०] से किं तं सिचलिपाण्य ? [उ०] सि० २ जणं कळसंगलियं वा, मुग्गसिगलियं, वा माससंगलियं वा सिचलिसंगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आधीलेति वा, पवीलेति वा, न य पाणियं पियह, सेचं सिचलिपाण्य ।

२९. [प्र०] से किं तं सुद्धपाण्य ? [उ०] सु० २ जणं उमासे सुद्धाहमं काहति, दो मासे पुढविसंयारोवणय व, दो मासे कडुसंयारोवणय, दो मासे इम्मसंयारोवणय, तस्स णं बहुपडिपुञ्जाणं उणं मासाणं अंतिमराईय इमे दो देवा महहिक्का जाव-महेसक्का अंतियं पाउम्मवंति, तंजहा-पुञ्जमहे य माणिमहे य । तय णं ते देवा सीयलपहि उडुपहि इत्येहि भावार्थ परामुसंति, जे णं ते देवे साहज्जति, से णं आसीविससाय कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो साहज्जति तस्स णं संसि कतिरगंसि अगणिकाय संभवति, से णं सपणं तेपणं सरीरणं ज्ञामेति, स० २ ज्ञामेत्ता तमो पच्छा सिज्जति, जाव-अंतं करेति, सेचं सुद्धपाण्य ।

३०. तत्थ णं सावत्थीय नयरीय अयंपुळे णामं आजीविभोवासय परिवसह, अहे, जाव-अपरिमूय, अहा हाळकळं, जाव-आजीवियसमणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तय णं तस्स अयंपुळस्स आजीविभोवासणस्स अक्कया कदापि पुढरंज-वरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयाकवे अम्मत्थिय जाव-समुप्यञ्जित्या-‘किसंठिया इहा पञ्जसा’ ?

अपानकना चार प्रकार

२५. [प्र०] अपानक केटळा प्रकारे छे ? [उ०] अपानक चार प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-१ स्वाळनुं पाणी, २ वृक्षादिनी जळनुं पाणी, ३ शींगोनुं पाणी अने ४ शुद्ध पाणी (देवहस्तना स्पर्शानुं पाणी) ।

स्वाळपाणी.

२६. [प्र०] स्वाळपाणी केवा प्रकारे कथुं छे ? [उ०] जे उदकथी मीजायेले स्वाळ, पाणीथी मीनो करक-करवडो, पाणीथी मीनो मोटो घट, पाणीथी मीनो न्हानो घट, अथवा पाणीथी मीना माटीना वासण, तेनो हाथथी स्पर्श करे पण पाणी न पीए ते स्वाळ पाणी, ए प्रमाणे स्वाळपाणी कथुं.

त्वचापाणी.

२७. [प्र०] त्वचापाणी केवा प्रकारनुं छे ? [उ०] जे आंबो, अंबाडग-इत्यादि प्रयोगपदमां कक्षा प्रमाणे यावत्-बोर, तिरुक्क सुची जाणवा, ते तरुण-अपक्व अने आम-काचा होय, तेने मुखमां नांखी योडुं चावे, विशेष चावे, पण पाणी न पीए ते त्वचापाणी. ए प्रमाणे त्वचापाणी कथुं.

शींगोनुं पाणी.

२८. [प्र०] शींगोनुं पाणी केवा प्रकारनुं छे ? [उ०] जे कळयसिबली-बटाणांनी शींग, मगनी शींग, अडदनी शींग के शिबलीनी शींग वगैरे तरुण-अपक्व अने आम-काची होय तेने मुखमां योडुं चावे के विशेष चावे, पण तेनुं पाणी न पीए ते शींगोनुं पाणी कहेवाय. ए प्रमाणे शींगोनुं पाणी कथुं.

शुद्ध पाणी.

२९. [प्र०] शुद्ध पाणी केवा प्रकारनुं छे ? [उ०] जे छ मास सुची शुद्ध खादिस आहारने जाय, तेमां बे मास सुची पृथिवीरूप संस्तारकने विषे रहे, बे मास सुची लाकडाना संस्तारकने विषे रहे, अने बे मास सुची दर्मना संस्तारकने विषे रहे, तेने बरोबर पूर्ण बवेछा छ मासनी छेळी रात्रीए महर्दिक अने यावत्-महासुखवाळा बे देवो तेनी पासे प्रगट थाय, ते आ प्रमाणे-पूर्णभद्र अने माणिभद्र; लार पछी ते देवो शीतल अने आर्द्र हस्त वडे शरीरना अवयवोनी स्पर्श करे, हवे जे ते देवोने अनुमोदे, एटळे तेना आ कार्यने साहं जावे ते आशीविषपणे कर्म करे, जे ते देवोने न अनुमोदे, तेना पोताना शरीरमां अग्निकाय उत्पन्न थाय, अने ते पोताना तेज वडे शरीरने बाळे, अने लार पछी ते सिद्ध थाय, यावत्-सर्व दुःखोनी अन्त करे, ते शुद्ध पानक कहेवाय. ए प्रमाणे शुद्ध पानक कथुं.

आजीविकोपासक अयंपुळको गोळा कनी पासे अपानो संकल्प.

३०. ते श्रावस्ती नगरीमां अयंपुळनामे आजीविकमतनो उपासक-धावक रहेतो हतो. ते धनिक, यावत्-कोरपी परामव न पावे तेवो अने हालाहला कुंभारणनी पेटे यावत्-आजीविकना सिद्धान्त वडे आत्माने भावित करतो विहरतो हतो. लार पछी ते अयंपुळ नावे आजीविकोपासकने अन्य कोइ दिवसे कुटुंबजागरण करता भय्यरात्रिना समवे आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्-उत्पन्न वडे के विषय

अथ-तव अयंपुत्रस्य आजीवियोवासस्य दोषं वि अयमेयाकवे अयमस्तिप जाव-समुप्यञ्जित्वा-एवं कतु ममं धम्मायरिप,
 अयमेयाकवे गोसाले मंखलिपुत्ते उण्णववापणंअण्णवरे जाव-सवत् सवत्सिरी इहेव सावत्वीय नगरीय हाहाहलाय कुंम-
 कारीय कुंमकारावणं आजीविसंघसंप्रिदुवे आजीविसमणं अण्णं भावेमाणे विहर, तं सेयं कतु मे कहुं जाव-
 कडते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता, जाव-पञ्जुवासेत्ता इमं एयाकवं वागरणं वागरिसयं सि कहु एवं संपेहेति, एवं संपेहेत्ता
 कहुं जाव-कडते वहाय, कय० जाव-अण्णमहण्णामरणाकियसरीरे, सामो गिहाओ पडिनिचमति, सा० २ पडिनिच-
 मित्ता पायविहारवारयेणं सावत्थि नगरिं मज्झंमज्जेणं जेवेव हाहाहलाय कुंमकारीय कुंमकारावणे तेजेव उवागच्छ, तेजेव
 ववागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं हाहाहलाय कुंमकारीय कुंमकारावणंसि अंबकूणगहत्थयणं जाव-अंजलिकम्मं करेमाणं
 सीयलणं मट्टिया० जाव-गायां परिसिचमाणं पासह, पासित्ता लज्जिय, विलिय, विदे, सणियं २ एवोसहर ।
 सय नं ते आजीविया येरा अयंपुत्तं आजीवियोवासं लज्जियं जाव-एवोसहरमाणं पासह, पासित्ता एवं वयासी-एहि ताव
 अयंपुत्ता ! एत्तमो । तय नं से अयंपुत्ते आजीवियोवासय आजीविययेरेहि एवं पुत्ते समाणे जेवेव आजीविया येरा तेजेव
 ववागच्छ, तेजेव उवागच्छित्ता आजीविय येरे वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नवासने जाव-पञ्जुवासह । 'अयंपुत्ता'
 आजीविया येरा अयंपुत्तं आजीवियोवासं एवं वयासी-से नूनं ते अयंपुत्ता ! पुत्तरसावरत्तकालसमयंसि जाव-किसंठिया
 हत्ता पण्णत्ता' ! तय नं तव अयंपुत्ता ! दोषं वि अयमेया० तं वेव सव्वं भाणियं, जाव-सावत्थि नगरिं मज्झंमज्जेणं जेवेव
 हाहाहलाय कुंमकारीय कुंमकारावणे, जेवेव इहं तेजेव इहमागय । से नूनं ते अयंपुत्ता ! अट्टे समट्टे ? इत्ता अत्थि । जं वि व
 अयंपुत्ता ! तव धम्मायरिप धम्मोवदेसय गोसाले मंखलिपुत्ते हाहाहलाय कुंमकारीय कुंमकारावणंसि अंबकूणगहत्थयण
 जाव-अंजलिं करेमाणे विहरति, तत्थ वि नं भगवं इमां अट्ट वरिमां पञ्चवेति, तंजहा-वरिमे पाणे, जाव-अंतं करेस्सति' ।
 जे वि य अयंपुत्ता ! तव धम्मायरिप धम्मोवदेसय गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलणं मट्टिया० जाव-विहरति, तत्थ वि नं
 भगवं इमां वत्तारि पाणगां, वत्तारि अपाणगां पञ्चवेति । से किं तं पाणय ? २ जाव-तमो पच्छा सिज्जति, जाव-अंतं
 करेति । तं गच्छ नं तुमं अयंपुत्ता ! एस वेव तव धम्मायरिप धम्मोवदेसय गोसाले मंखलिपुत्ते इमं एयाकवं वागरणं
 वागरिसयं'सि ।

आकारे हत्ता (कीटविशेष) कहेली हे" ! त्वा पछी ते अयंपुत्ताने आजीविकोपासकने बीजी वार आवां प्रकाराने आ संकल्प उत्पन्न
 ययो के " ए प्रमाणे खरेखर मारा धर्माचार्यं अने धर्मोपदेशकं मंखलिपुत्तं गोशाळक उत्पन्न यवेला ज्ञान-दर्शनने धारण करणारा, यावत्-
 सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी हे, तेओ आज आबस्ती नगरीना हाहाहला कुंमारणना कुंमकारावण-हाटमां आजीविकसंघसहित आजीविकना सिद्धान्त
 वदे आत्माने भावित करता विहरे हे. ते माटे मारे आबती काले यावत्-सूर्योदय यये मंखलिपुत्तं गोशाळकने वंदन करी, पर्युपासना करी
 आवा प्रकाराने आ प्रश्न पूछ्णो श्रेयरूप हे" - एम जिचारी कडले यावत्-सूर्योदय यये ज्ञान करी, बलिकर्म करी, अल्प अने महामूल्य आ-
 खरणवडे शरीरने अलंकृत करी, पोताना घर यकी बहार नीकळी, पणे चाळी, आबस्ती नगरीना मध्यभागमां यई, ज्यां हाहाहला नामे कुंमारणत्तं
 कुंमकारावण हे, त्यां आवा ते हाहाहला नामे कुंमारणना कुंमकारावणमां जेना हायमां आन्नफल रहेलुं हे एवा यावत्-हाहाहला कुंमारणने
 अंजलिकर्म करता अने शीतल माटीमिश्रित जळवडे यावत्-शरीरना अंबधवने सिचता मंखलिपुत्तं गोशाळकने जुर हे; जोडने ते लज्जित,
 विल्लो अने वीडित यई चीमे चीमे पाछो जाय हे. त्वा पछी ते आजीविक स्वविरोध लज्जित यावत्-पाछा जता आजीविकोपासक अयं-
 पुत्तने जोई ए प्रमाणे कहुं-हे अयंपुत्त ! अहिं जाव'. ज्यारे आजीविक स्वविरोध ए प्रमाणे कहुं त्वारे ते अयंपुत्त ज्यां आजीविक स्वविरो
 इतं त्यां आम्हो, अने त्यां आवा आजीविक स्वविरोधने वंदन-नमस्कार करी अत्यन्त पासे नहि तेम अत्यंत दूर नहि एम बेसी पर्युपासना
 करण ठायो. हे अयंपुत्त ! एम कही आजीविक स्वविरोध आजीविकोपासक अयंपुत्तने ए प्रमाणे कहुं-" हे अयंपुत्त ! खरेखर तने मध्य-
 राशिना समने यावत्-केवा आकारवाळी हत्ता कहेली हे ! [एवो संकल्प ययो हतो !] त्वा पछी तने बीजीवार आवा प्रकाराने आ
 संकल्प ययो हतो" - इत्ताहि पूर्वोक्त सर्व कहेलुं, यावत्-आबस्ती नगरीना मध्यभागमां ज्यां हाहाहला कुंमारणत्तं कुंमकारावण हे अने ज्यां
 आ स्थान हे, त्यां तुं शीतल आम्हो, हे अयंपुत्त ! खरेखर आ वात्त सत्य हे ? हा सत्य हे. हे अयंपुत्त ! वळी तारा धर्माचार्य अने धर्मोप-
 देशक मंखलिपुत्तं गोशाळक हाहाहला कुंमारणना कुंमकारावणमां आन्नफल हायमां कइ यावत्-अंजलि करता विहरे हे, तेमां पण ते
 आवात्त जाट चरमनी प्ररूपणा करे हे. ते आ प्रमाणे-१ चरमपानक०, यावत्-सर्व दुःखनो अन्त करशे, वळी हे अयंपुत्त ! त्वा
 पूर्वोक्त अने धर्मोपदेशक मंखलिपुत्तं गोशाळक शीतल माटीना पणो वदे यावत्-शरीरने अलंकृत यावत्-विहरे हे, तेमां पण ते भगवान्-
 चार पानक अने चार अपानक प्ररूपे हे. पानक केवा प्रमाणे हे ? यावत्-त्वा पछी ते सिद्ध याव हे, यावत्-सर्व दुःखनो अन्त
 करे हे. ते माटे हे अयंपुत्त ! तुं जा, अने आ तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक मंखलिपुत्तं गोशाळकने आवा प्रकाराने आ प्रश्न पूछ्णे !

अयंपुत्तं नामकं,
 गोशाळकी विधिं
 कथंसा जोइ पाहुं
 अहुं, स्वविरोध अयं-
 पुत्तने पाछा बीजीवार
 तेमां मयला संकल्प
 निवेदन अने तेमां
 मयलं समाधान.

३१. तप षं से अयंपुले आजीवियोवासप आजीवियहिं येरेहिं एवं पुसे समाने इहु-तुडे वहुए उडेति, व० २ उडेचा जेजेव गोसाले मंखलिपुसे तेजेव पहारेत्य गमणाय । तप षं से आजीविया येरा गोसालस्स मंखलिपुस्स अंबकूणय-अणदुयाय एगंतमंते संगारं कुंति । तप षं से गोसाले मंखलिपुसे आजीवियाणं येराणं संगारं पडिच्छु, वं० २ पडिच्छिआ अंबकूणयं एगंतमंते एडेह । तप षं से अयंपुले आजीवियोवासप जेजेव गोसाले मंखलिपुसे तेजेव उवागच्छ, तेजेव उवागच्छिआ गोसालं मंखलिपुसं तिक्खुसो० जाव-पञ्जुवासति । 'अयंपुला, ही गोसाले मंखलिपुसे अयंपुलं आजीवियोवासणं एवं वयासी-‘से नूनं अयंपुला ! पुद्धरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव-जेजेव ममं अंतियं तेजेव इहमगय । से नूनं अयंपुला ! अडे समडे ? इंता अत्थि, तं नो कल्लु एस अंबकूणय, अंबचोयय षं एसे । किंसंठिया इहा एवत्ता ? वंसीसुलसंठिया इहा एवत्ता । वीणं वायहि रे वीरगा वी० २ । तप षं से अयंपुले आजीवियोवासप गोसालेणं मंखलिपुसेणं इमं एयाकं वागरणं वागरिय समाने इहु-तुडे जाव-हियय गोसालं मंखलिपुसं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता पत्तिणारं पुच्छति, पत्तिणार पुच्छित्ता अट्टारं परियादियर, अ० २ परियादिहत्ता उट्टाय उडेति, उट्टाय उडेत्ता गोसालं मंखलिपुसं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जाव-पडिगय ।

३२. तप षं से गोसाले मंखलिपुसे अप्पणो मरणं आमोए, आमोएत्ता आजीविय येरे सहारेह, आ० २ सहारेत्ता एवं वयासी-‘तुम्हे षं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणेत्ता सुरमिणा गंधोदणं पहाणेह, सु० २ पहावित्ता पम्भल्लुकुमा-ल्लाय गंधकासाईय गायाइं लूहेह, गा० २ लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिपह, स० २ अणुलिपित्ता महहिं इंसलफणं पडसाडणं नियंसेह, मइ० २ नियंसित्ता सत्तालंकारविभूसियं करेह, स० २ करेत्ता पुरिससहस्सवाहिभिं सीयं डुकुहेह, पुरि० २ डुकुहित्ता सावत्थीयं नयरीय सिघाडण० जाव-पहेसु महया महया सहरेणं उग्घोसेमाणा एवं ववह-‘एवं कल्लु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुसे जिणे, जिणप्पलावी, जाव-जिणसहं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे भोसप्पिणीय चडवीसाय तित्थयरारणं चरिमे तित्थयरे, सिद्धे, जाव-सहदुक्खप्पहीणे’-इहिसहारेत्तमुदणं मम सरीरगस्स भीहरणं करेह । तप षं से आजीविया येरा गोसालस्स मंखलिपुस्स एयमडुं विणएणं पडिसुजेति ।

अयंपुलं गोशालक
कासे जायमन.

गोशालकने अयंपु-
कमा संकल्पतुं निवे-
दय अने तेना ममंतुं
समाधान.

३१. त्सार बाद ते अयंपुल आजीविक स्वविरोए ए प्रमाणे कथुं एटले इह अने संतुष्ट थई उठ्यो, उठीने ज्यां मंखलिपुत्र गोशा-
लक हतो त्यां जवा तेणे विचार कर्यो. त्सार ते आजीविक स्वविरोए मंखलिपुत्र गोशालकने आम्रफल एक स्थळे मूकाववा माटे संकेत कर्यो.
त्सार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक आजीविक स्वविरोनो संकेत जाणी आम्रफलने एक स्थळे मूके छे. त्सार पछी ते आजीविकोपासक अयं-
पुल ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक हतो त्यां आवी मंखलिपुत्र गोशालकने त्रण वार प्रदक्षिणा क्ती यावत्-पर्युपासना करे छे. 'हे अयंपुल !
ए प्रमाणे कही मंखलिपुत्र गोशालके आजीविकोपासक अयंपुलने आ प्रमाणे कथुं-‘अयंपुल ! खरेखर तने मच्यरात्रिना समये यावत्-
तने संकल्प थयो हतो, अने ज्यां हुं हूं त्यां मारी पासे तुं शीघ्र आव्यो, हे अयंपुल ! खरेखर आ वात सख छे’ ? हा सख छे. ते माटे
खरेखर आ आम्रनी गोटली नथी, परन्तु ते आम्रफलनी 'छाल छे. 'केवा आकारवाळी इहा होय छे' [आबो जे संकल्प थयो हतो
तेना उत्तरमां] वांसना मूलना आकार जेवी इहा होय छे. [वळी वखे गोशालक उन्मादमां कहे छे-] 'हे वीरा ! वीणा वगाड, हे वीरा !
वीणा वगाड.' त्सार बाद मंखलिपुत्र गोशालके आवा प्रकारनो आ प्रश्नो उत्तर आप्यो एटले प्रसन्न-संतुष्ट अने जेतुं चित्त आकर्षित थयुं
छे एवो आजीविकोपासक अयंपुल मंखलिपुत्र गोशालकने वंदन-नमस्कार करी प्रश्नो पूछे छे, प्रश्नो पूछीने अर्थ ग्रहण करे छे, अर्थ ग्रहण
करी उठी [पुनः] मंखलिपुत्र गोशालकने वंदन अने नमस्कार करी यावत्-ते [स्वस्थानके] पाछो जाय छे.

पोताना मरण बाद
देहने उत्सवपूर्वक व-
हा र काठवा संकल्पे-
गोशालकनी अला-
मण.

३२. त्सार बाद मंखलिपुत्र गोशालके पोतानुं मरण [नजीक] जाणीने आजीविक स्वविरोने बोलाव्या, अने बोलावी तेणे ए प्रमाणे
कथुं-‘हे देवानुप्रियो ! ज्यारे मने कालधर्म प्राप्त थयेलो जाणो त्सार सुगंधी गन्धोदक वडे ज्ञान करावजो, ज्ञान करावी छेडावाळ्य अने सुकुमाल
गन्धकाषाय (सुगंधी भगवा) वखवडे शरीरने साफ करजो, शरीरने साफ करी सरस गोशीर्षचन्दनवडे शरीरने मिलेपन करजो, मिलेपन
करी महामूल्य हंसना चिह्वाळ्य पटशाटकने पहेरावजो, पहेरावी सर्वालंकारथी विभूषित करजो, विभूषित करी हजार पुरुषोधी उपासवा
लायक शीविकामां बेसाडजो, शीविकामां बेसाडी श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळ्य यावत्-राजमार्गमां मोटा मोटा शब्दथी उद्घो-
षणा करता आ प्रमाणे कहेजो-‘ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र गोशालक जिन, जिनप्रछापी, यावत्-जिनशब्दने प्रकाश
करता विहरिने आ अवसर्पिणीना चोवीश तीर्थकरोमां छेळा तीर्थकर थईने सिद्ध थया, यावत्-सर्वदुःखरहित थया-आ प्रमाणे अहिं
अने सत्कारना समुदायथी मारा शरीरने बहार काढजो.’ त्सार ते आजीविक स्वविरोए मंखलिपुत्र गोशालकनी ए वातनो विनम्रपूर्वक
स्वीकार कर्यो.

३१ * गोशालक अयंपुलने कहे छे के तुं जे आम्रफलनी गोटली थारे छे ते नथी, वन आम्रफलनी छाल छे, अने तेहुं पावक विनम्रपूर्वक स्वी-
कार्यो छे. टीका—

३१. तत्र नं तत्र गोसाळस्य मंखलिपुत्रस्य संस्मरणं परिणममाणसि पण्डितसम्मत्तस्य अयमेयास्वे अयमिदं
 ज्ञान-समुत्पत्त्या-‘नो जलु अहं जिणे, जिणप्यलावी, जाव-जिणसहं पगासेमाणे विहरति (विहरिते), अहं नं गोसाळे वेव
 मंखलिपुत्रे समणवायय, समणमारय, समणपडिणीय, आयरिय-उवज्जायाणं अयसकारय, अयसकारय, अकित्तिकारय, बहुदि
 अयस्यपुग्गावयाहि मिच्छामिनिवेशेहि य भाव्याणं वा परं वा तदुभयं वा बुग्गाहेमाणे, बुप्यायमाणे विहरिता सपणं तेपयं
 मजाहे समणे अंतो सत्तरसस पित्तज्वरपरिणयसरीरे दाहवकंतीय छउमत्ये वेव कालं करेस्सं । समणे मगवं महावीरे
 जिणे जिणप्यलावी जाव-जिणसहं पगासेमाणे विहर-एवं संपेहेति, एवं संपेहिता, माजीविय धेरे सदावेद, आ० २ सदा-
 वेसा उवाचयसवहस्साविय पकरेति, उवा० २ पकरेसा एवं बयासी-‘नो जलु अहं जिणे, जिणप्यलावी, जाव-पगासेमाणे
 विहर (विहरिय), अहं गोसाळे मंखलिपुत्रे, समणवायय, जाव-छउमत्ये वेव कालं करेस्सं, समणे मगवं महावीरे जिणे,
 जिणप्यलावी, जाव-जिणसहं पगासेमाणे विहर, तं तुम्मं नं देवाणुपिया ! ममं कालगयं जाणेसा वामे पाय सुबेणं बंधद, वा०
 २ बंधिता तिक्खुत्तो मुहे उट्टुद, ति० २ उट्टुहिता सावत्थीय नगरीय सिंघाडग० जाव-पहेसु आकट्टधिकट्टिं करेमाणा महया
 महया सहेणं उग्गोसेमाणा २ एवं बवद-‘नो जलु देवाणुपिया ! गोसाळे मंखलिपुत्रे जिणे, जिणप्यलावी, जाव-विहरिय,
 यस नं गोसाळे वेव मंखलिपुत्रे, समणवायय, जाव-छउमत्ये वेव कालगय । समणे मगवं महावीरे जिणे, जिणप्यलावी,
 जाव-विहर-महया अणिही-असकारसमुदपणं ममं सरीरयसस नीहरणं करेसाह-एवं वदिता कालगय ।

३४. तत्र नं माजीविया धेरा गोसाळं मंखलिपुत्रं कालगयं जाणिता हाहाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणस्य दुचा-
 राहं पिहेति, दु० २ पिहेसा हाहाहलाय कुंभकारीय कुंभकारावणस्य बहुमज्जदेसमाय सावत्थिय नगरि आलिहंति, सा० २
 आलिहिता गोसाळस्य मंखलिपुत्रस्य सरीरयं वामे पादे सुबेणं बंधति, वा० २ बंधिता तिक्खुत्तो मुहे उट्टुमंति, उट्टुमिहा
 सावत्थीय नगरीय सिंघाडग० जाव-पहेसु आकट्टधिकट्टिं करेमाणा, णीयं २ सहेणं उग्गोसेमाणा २ एवं बयासी-‘नो जलु
 देवाणुपिया ! गोसाळे मंखलिपुत्रे जिणे, जिणप्यलावी, जाव-विहरिय, यस नं गोसाळे वेव मंखलिपुत्रे समणवायय, जाव-
 छउमत्ये वेव कालगय । समणे मगवं महावीरे जिणे, जिणप्यलावी जाव-विहर, सवहपडिमोक्खणणं करेति, स० २ करेसा
 दोषं पि पूया-सकार-विरीकरमहुपाय गोसाळस्य मंखलिपुत्रस्य वामाणे पावामो सुबं सुचंति, सुं० २ मुहसा हाहाहलाय

३३. हवे ते मंखलिपुत्र गोशाळकने सात रात्री परिणमता-अपतीत पतां सम्यक्त्व प्राप्त ययुं, अने तेने आवा प्रकारनो अयव-
 साय-संकल्प उत्पन्न ययो-‘हुं खरेखर जिन नथी, तो पण जिनप्रलापी, यावत् जिन शब्दने प्रकाशतो विहयो हूं. हुं श्रमणनो घात कर-
 नार, श्रमणने मारनार, श्रमणनो प्रखनीक-विरोधी, आचार्य अने उपाध्यायनो अपयश करनार, अवर्णवादकारक अने अपकीर्ति करनार
 मंखलिपुत्र गोशाळक हूं. तथा घणी असद्भावना वडे अने मिथ्यात्वामिनिवेश वडे पोताने, परने अने वनेने व्युद्प्राहित-भ्रान्त करतो,
 व्युत्प्राहित (मिथ्यात्वयुक्त) करतो विहरीने मारा पोतानी तेजोलेख्या वडे परामव पामी सात रात्रीना अन्ते पित्तज्वरथी व्याप्त शरीरवाळो यई
 दाहनी उत्पत्थी छप्रस्थावस्थामां ज काल करीश. श्रमण भगवान् महावीर जिन छे अने जिनप्रलापी यावत्-जिनशब्दने प्रकाशित करता
 विहरे छे-‘एम विचारी ते (गोशाळक) आजीविक स्वविरोने बोलावे छे, बोलावीने अनेक प्रकारना सोगन आपे छे, सोगन आपीने ते
 आ प्रमाणे बोल्पो-‘हुं खरेखर जिन नथी, पण जिनप्रलापी यावत्-जिनशब्दने प्रकाश करतो विहयो हूं, हुं श्रमणनो घात करनार
 मंखलिपुत्र गोशाळक हूं, यावत्-छप्रस्थावस्थामां काल करीश. श्रमण भगवान् महावीर जिन, जिनप्रलापी, यावत्-जिनशब्दने प्रकाश
 करता विहरे छे; ते माटे हे देवानुप्रियो ! तमे मने काळधर्म पामेळो जाणीने मारा डावा पगने दोरडावती बांधी त्रणवार मुखमां शूकजो,
 शूकीने आवस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळा, यावत्-राजमार्गने शिवे वसडता असन्त मोटे शब्दे उदूघोषणा करता करता एम
 कहेजो के हे देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र गोशाळक जिन नथी, पण जिनप्रलापी अने जिनशब्दने प्रकाशित करतो विहयो छे. आ श्रमणनो
 घात करनार मंखलिपुत्र गोशाळक यावत्-छप्रस्थावस्थामां ज काळधर्म पाम्यो छे; श्रमण भगवान् महावीर जिन अने जिनप्रलापी यई
 यावत्-विहरे छे, एम वडि अने संस्कारना समुदाय शिवाय मारा शरीरने बहार काढजो-‘एम कहीने ते (गोशाळक) काळधर्म पाम्यो.

३४. सार पछी आजीविक स्वविरो मंखलिपुत्र गोशाळकने काळधर्म पामेळ जाणीने हाहाहला कुंभकारण. कुंभकारावणना द्वार बन्ध
 कर्यो, करणा बन्ध करीने हाहाहला कुंभकारणना कुंभकारावणना बरोबर मध्य भागमां आवस्ती नगरीने आळेखीने मंखलिपुत्र गोशाळकना शरीरने
 वामे पामे दोरडा वडे बांधीने त्रणवार मुखमां शूकीने आवस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळा, यावत्-राजमार्गने शिवे वसडता धीमा धीमा
 शब्दथी उदूघोषणा करता करता आ प्रमाणे बोल्पो-‘हे देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र-गोशाळक जिन नथी, पण जिनप्रलापी यईने यावत्-
 विहयो छे, आ श्रमणनो मंखलिपुत्र गोशाळक यावत्-छप्रस्थावस्थामां ज काळधर्म पाम्यो छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन, अने जिन-
 प्रलापी यईने यावत्-विहरे छे.’ ए प्रमाणे तेजो शपथथी झटा याव छे, अने बीजी वार तेनी पूजा अने संस्कारने स्थिर करवाभाटे मंख-
 लिपुत्र गोशाळकना बाया पगने दोरडु जोडी माणे छे, जोडी नांथी हाहाहला कुंभकारणना कुंभकारावणना द्वार उवाडे छे, उवाडीने मंखलिपुत्र

गोशाळकने संस्कार
 वई, ‘हुं जिन नथी’
 एम पोतानी वास्त-
 विक स्थिति अस्ति
 करपी, तेनी पगासेमा
 अने महावीरजिन छे
 -एयुं तेजुं तिबेव-

यवे काळधर्म पामे
 को जाणी मारा काळ-
 पने दोरडावती नां-
 धी कसवने अने हुं-
 कमां शूकजो, एम हे
 जिन नथी’ एम उदू-
 घोषणा करता करता
 शरीरने विदापुकेक
 बहार काढने-नांथी
 गोशाळकनी पोता-
 नां तिबेवने क-
 काण-
 आजीविक स्वविरो
 शृंगाटकना कुंभकार-
 ना द्वार बन्ध करी जा-
 वहीने बाळेखी गो-
 शाळकना बाया पग-
 ने करई.

મુંબત્રાકારીય મુંબત્રાકારણસ્ય મુખારણ્યવાદં મહામુનિસિ, મહામુનિસા યોસાલકસ્ય મંબલિપુત્રસ્ય કરિમં મુખિયા મંબોવ્યવં
મહામંતિ, તં શેષ જાવ-મહયા દ્વિ-સહારણમુખ્યમં મોસાલકસ્ય મંબલિપુત્રસ્ય સરીરસ્ય મીહરનં કરંતિ ।

૩૫. તપ જં સમને મગવં મહાવીરે અથવા કદાચિ સાવત્થીઓ નગરીઓ કોટ્ટયાઓ શેરયાઓ વદિનિષ્કમતિ, વદિ-
નિષ્કમિસા શ્વિયા જળવયવિહારં વિહર । તેણં કાલેણં તેણં સમપણં મેંદિકગામે નામં નગરે હોત્યા, વજ્જો । તસ્ય જં
મેંદિકગામસ્ય નગરસ્ય શ્વિયા ઉત્તરપુરચ્છિમે વિસીમાય યત્ય જં સાળ(લ)કોટ્ટુય નામં શેરય હોત્યા, વજ્જો, જાવ-પુલ્લિચિ-
લાપટ્ટમો । તસ્ય જં સાળ(લ)કોટ્ટુગસ્ય જં શેરયસ્ય અરુસામંતે યત્ય જં મહેને માલુયાકચ્છય યાચિ હોત્યા, કિષ્કે કિષ્કે-
માસે, જાવ-નિકુરંબમૂય, પલિય, પુપ્ફિય, ફલિય, હરિયગેરેરિજમાણે, સિરીય અતીવ ૨ ઉવલોમેમાણે ચિદ્ધતિ । તસ્ય જં
મેંદિકગામે નગરે રેવતી નામં ગાહાવરણી પરિવસતિ, મહા, જાવ-અપરિમૂયા । તપ જં સમને મગવં મહાવીરે અથવા કદાચિ
પુલાણુપુલ્લિ ચરમાણે જાવ-જેષેવ મેંદિકગામે નગરે જેષેવ સાળ(લ)કોટ્ટુય શેરય જાવ-પરિસા પહિગયા । તપ જં સમણસ્ય મગ-
વઓ મહાવીરસ્ય સરીરગંસિ વિપુલે રોગાયંકે પાડમ્મૂય, ઉજ્જલે જાવ-હુરહિયાસે, પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે, દાહવકંતીય યાચિ
વિહરતિ, મવિયાદં લોહિયવચ્ચાદં પિ પકરે, જાડજ્જં વાગરેતિ-‘પવં જલુ સમને મગવં મહાવીરે મોસાલકસ્ય મંબલિપુત્રસ્ય
સવેણં તેણં મજ્જાદ્દુ સમાણે અંતો છપ્પં માસાણં પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે દાહવકંતીય છુમત્યે શેષ કાલં કરેસસતિ’ । તેણં
કાલેણં તેણં સમપણં સમણસ્ય મગવઓ મહાવીરસ્ય અંતેવાસી સીહે નામં અનગારે, પગમહય, જાવ-વિળીય માલુયાકચ્છ-
મસ્ય અપુરસામંતે છટ્ટંછટ્ટેણં અનિષ્કમણેણં ૨ તલોકમ્મેણં હુંવાહા જાવ-વિહરતિ । તપ જં તસ્ય સીહસ્ય અનગારસ્ય
જ્ઞાંતરિયાય શ્વમાણસ્ય અયમેયાકુવે જાવ-સમુપ્પજિત્યા-‘પવં જલુ મમં ધમ્માયરિયસ્ય ધમ્મોવદ્દેસમસ્ય સમણસ્ય મગવઓ
મહાવીરસ્ય સરીરગંસિ વિપુલે રોગાયંકે પાડમ્મૂય, ઉજ્જલે જાવ-છુમત્યે શેષ કાલં કરિસસતિ, શ્વિસસંતિ ય જં અસત્તિ-
સ્થિયા-‘છુમત્યે શેષ કાલગય’ । ઇમેણં યયાકુવેણં મહયા મળોમાણસિયણં મુખ્યેણં અભિમૂય સમાણે આયાવણમૂમીઓ પવોકમહ

મોસાલકના શરીરને મુખ્યથી ગન્વોદક વડે જ્ઞાન કરાવે છે-ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત કહેવું, યાવત્-અલ્પન્ત મોટી શ્વદિ અને સત્કારના સમુદાવરણી
મંબલિપુત્ર મોસાલકના શરીરને બહાર કાઢે છે.

૩૫. સ્વાર પછી શ્રમણ મગવાનુ મહાવીર અન્ય કોઈ દિવસે શ્રાવસ્તી નગરીથી અને કોષ્ઠક ચૈલ્યથી નીકળી બહારના દેશોમાં વિહરે છે.
તે કાલે તે સમયે મેંદિકગ્રામ નામે નગર હતું. વર્ણન. તે મેંદિકગ્રામ નામે નગરની બહાર ઉત્તર-પૂર્વ દિશાને વિષે અહિં સાળકોષ્ઠક
(જ્ઞાનકોષ્ઠક ?) નામે ચૈલ્ય હતું. વર્ણન. યાવત્-પૃથિવીશિલાપટ્ટ હતો. તે સાળકોષ્ઠક ચૈલ્યની યોડે દૂર અહિં મોટું એક માલુકા (એક
બીજવાલ્ય) વૃક્ષાનું વન હતું. તે શ્યામ, શ્યામકાન્તિવાલું, યાવત્-મહામેષના સમૂહના જેવું હતું. વળી તે પત્રવાલું, પુષ્પવાલું, ફલવાલું, હરિ-
તવર્ણવડે અલ્પન્ત દેદીપ્યમાન અને શ્રી-શોભાવડે અલ્પન્ત મુશોભિત હતું. તે મેંદિકગ્રામ નામે નગરમાં રેવતીનામે ગૃહપત્ની (શ્રવણિયાણી)
રહેતી હતી. તે શ્વદિવાળી અને કોશ્ચી પરામવ ન પામે તેવી હતી. તે સમયે શ્રમણ મગવાનુ મહાવીર અન્ય કોઈ દિવસે અનુક્રમે વિહાર
કરતા યાવત્-અ્યાં મેંદિકગ્રામ નામે નગર છે, અને અ્યાં સાળકોષ્ઠક નામે ચૈલ્ય છે સ્યાં આમ્યા, યાવત્-પર્ષદા વાંદીને પાછી ગઈ. તે વચ્ચે
શ્રમણ મગવંત મહાવીરના શરીરને વિષે મહાનુ પીડાકારી, ઉજ્જલ-અલ્પન્ત દાહ કરનાર, યાવત્-દુઃખે સહન કરવા યોગ્ય, યાવત્-જેષે
પિત્તજ્વર વડે શરીર વ્યાત કર્યું છે એવો અને જેમાં દાહ ઉત્પન્ન થાય છે એવો રોગ પેદા થયો, અને તેથી લોહીવાલ્ય શ્વાદા થવા અમ્યા.
આર વર્ણના મનુષ્યો કહે છે કે-‘એ પ્રમાણે શ્વેરશ્રમણ શ્રમણ મગવાનુ મહાવીર મંબલિપુત્ર મોસાલકના તપના તેજવડે પરામવ પામી છ માસને
અન્તે પિત્તજ્વરયુક્ત શરીરવાલ્ય યઈને દાહની ઉત્પત્તિથી છપ્પસ્યાવસ્થામાં કાલ કરશે.’ તે કાલે તે સમયે શ્રમણ મગવાનુ મહાવીરના અન્તે-
વાસી-શિષ્ય સિંહનામે અનગાર પ્રકૃતિ વડે મદ્ર, યાવત્-વિનીત હતા. તે માલુકાવનથી યોડે દૂર નિરન્તર છટ્ટનો તપ કરવાવડે વાહુ અંબા
રાણી યાવત્-વિહરે છે. તે વચ્ચે તે સિંહ અનગારને ‘ધ્યાનાન્તરિકાને વિષે વર્તતા આશા પ્રકારનો આ સંકલ્પ યાવત્-ઉત્પન્ન થયો-‘એ
પ્રમાણે શ્વેરશ્રમણ મારા ધર્માચાર્ય અને ધર્મોપદેશક શ્રમણ મગવંત મહાવીરના શરીરને વિષે અલ્પન્ત દાહ કરનાર, મહાનુ પીડાકારી રોગ પેદા
થયો છે-ઇત્યાદિ યાવત્-તે છપ્પસ્યાવસ્થામાં કાલધર્મ પામશે, અન્યતીર્થિકો કહેશે કે તે છપ્પસ્યાવસ્થામાં કાલધર્મ પામ્યા’-આશા પ્રકારના આ
મોટા માનસિક દુઃખવડે પીડિત થયેલ તે (સિંહ અનગાર) આતાપના મૂમિથી નીચે ઉતરી અ્યાં માલુકાવન છે સ્યાં અપીને માલુકાવનની અંદર
પ્રવેશ કરીને તેણે મોટા શબ્દથી કુહુકુહુ (ઠુઠુઓ મૂકી)-એ રીતે અલ્પન્ત રુદન કર્યું. શ્રમણ મગવાનુ મહાવીરે ‘હે આર્યો ! એ પ્રમાણે
શ્રમણ નિર્મન્યોને બોલાવી એ પ્રમાણે કહ્યું-‘હે આર્યો ! એ પ્રમાણે શ્વેરશ્રમણ મારા અન્તેવાસી સિંહનામે અનગાર પ્રકૃતિવડે મદ્ર છે-ઇત્યાદિ પૂર્વોક્ત
કહેવું, યાવત્-તેણે અલ્પન્ત રુદન કર્યું, તે માટે હે આર્યો ! જાઓ, અને તમે સિંહ અનગારને બોલાવો.’ અ્યારે શ્રમણ મગવંત મહાવીરે એ પ્રમાણે
કહ્યું પટ્ટલે તે શ્રમણ નિર્મન્યો શ્રમણ મગવંત મહાવીરને વંદન કરે છે, નમે છે, વંદન કરી નમીને શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસેથી અને સાળ-

મેંદિકગ્રામ.
સાળકોષ્ઠક ચૈલ્ય.
માલુકાવન.

મગવંત મહાવીરના
શરીરના પીડાકારી
રોગનું વર્ણન.

‘મગવંત રોગની પી-
ડાની છપ્પસ્યાવસ્થામાં
કાલ ધર્મ પામશે’-
પ્રતી સિંહ અનગારની
વાણી.

મગવંતનું સિંહ અન-
ગારને બોલાવવું.

અનગર ૨ કલેક્ટરિયા જેણે માલુયાકચ્છ તેણે ઉવાગચ્છ, તેણે ઉવાગચ્છ માલુયાકચ્છમાં મંડો અણુપલિસ, અણુપા ૨ અણુપલિસના અણુ ૨ કલેક્ટર કુલુકુલુસ પલે. 'અજોસિ સમને મગવં મહાવીરે સમને નિગંધે અનંતેતિ, અનંતેતિ એવં વયાલી-એવં અણુ અજો ! મમં મંતેવાલી સીદે નામં અજગારે પગમદ્ય તં એવં સમં માગિયમં, જાવ-પલે, એ વચ્છદ વં અજો ! તુજો સીદં અજગારં સદ્દ' । તપ ં તે સમજા નિગંધા સમનેએ મગવવા મહાવીરેએ એવં હુતા સમાવા સમને મગવં મહાવીરં વંદિતિ નમંસતિ, વંદિતિ નમંસિત્તા સમજસ મગવઓ મહાવીરસ અંતિયાઓ સાળ(ક)કોટ્ટુપાઓ વેદયાઓ પદિનિક્ષમતિ, સા ૨ પદિનિક્ષમિત્તા જેણે માલુયાકચ્છ જેણે વીદે અજગારે તેણે ઉવાગચ્છનિ, તેણે ઉવાગચ્છના સીદં અજગારં એવં વયાલી-સીદા ! અમાયરિયા સદાવંતિ' । તપ ં તે સીદે અજગારે સમનેદિ નિગંધેદિ અદિ માલુયાકચ્છગાઓ પદિનિક્ષમતિ, પદિનિક્ષમિત્તા જેણે સાળ(ક)કોટ્ટુપ વેદય, જેણે સમને મગવં મહાવીરે તેણે ઉવાગચ્છ, તે ૨ ઉવાગચ્છના સમને મગવં મહાવીરં તિક્ષુતો આયાહિજ-પયાહિજં જાવ-પજુવાસતિ । 'સીદા'દિ સમને મગવં મહાવીરે સીદં અજગારં એવં વયાલી-એ નૂયં તે સીદા ! જાણવરિયાવ વદમાપસસ અયમેયાદે જાવ-પલે, એ નૂયં તે સીદા ! અદુ સમદે' ? હંતા અતિય । તં નો અણુ અદં સીદા ! ગોસાલસ મંચલિપુતસસ તલેએ તેણે અજગારે સમને મંડો અણુ માસામં જાવ-કાલં કરેસસ, અણુ અજગારં સોલસ વાસાદં જિણે સુદરલી વિહરિસસામિ, તં અણુ અં મુજં સીદા ! મેંદિયગામે જગરં, રેવલીય નાદાવતિનીય નિદે, સત્ય ં રેવલીય નાદાવતિનીય મમં અજગાર કુલે અણુસસલિય ઉવચ્છવિયા, તેદિ નો અણુ, અતિય તે અણે પારિયાસિય મજારકચ્છ કુલુકુલુસ, તમાહરાદિ, પયણં અણુ' । તપ ં તે સીદે અજગારે સમનેએ મગવવા મહાવીરેએ એવં હુતે સમાને હદુ-તુદુ ૦ જાવ-દિયય સમને મગવં મહાવીરં વંદિતિ નમંસતિ, વંદિતિ નમંસિત્તા અતુરિયમચ્છલમસંમંતં મુદપોસિયં પદિલેદેતિ, મુ ૨ પદિલેદેતા અદા ગોયમસામી જાવ-જેણે સમને મગવં મહાવીરે તેણે ઉવાગચ્છ, તેણે ઉવાગચ્છના સમને મગવં મહાવીરં વંદિતિ નમંસદ, વંદિતિ નમંસિત્તા સમજસ મગવઓ મહાવીરસ અંતિયાઓ સાળ(ક)કોટ્ટુપાઓ વેદયાઓ પદિનિક્ષમતિ, પદિનિક્ષમિત્તા અતુરિય ૦ જાવ-જેણે મેંદિયગામે જગરે

કોલક ચૈલ્પી નીકઠી જ્યાં માલુકાવન છે અને જ્યાં સિંહ અનગાર છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવીને તેણે સિંહ અનગારને એ પ્રમાણે કહ્યું- 'હે સિંહ ! મર્માર્થ તમને બોલવે છે.' સારે તે સિંહ અનગાર શ્રમણ નિર્મળ્યોની સાથે માલુકાવનથી નીકઠી જ્યાં સાળકોટ્ટક ચૈલ્પ છે, અને જ્યાં શ્રમણ મગવંત મહાવીર છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવી શ્રમણ મગવંત મહાવીરને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરે છે, યાવત-પર્યુપાસના કરે છે, શ્રમણ મગવંત મહાવીરે 'હે સિંહ' । એ પ્રમાણે સિંહ અનગારને બોલાવી આ પ્રમાણે કહ્યું- 'હે સિંહ ! સરેસર ધ્યાનાન્તરિકામાં વર્તતા તને આવા પ્રકાર-તો આ સંકલ્પ થયો હતો, યાવત-તેં અલ્પત્ત રુદન કર્યું હતું ! હે સિંહ ! સરેસર આ વાત સત્ય છે ? હા, સત્ય છે. હે સિંહ ! હું નક્કી મંચલિપુત ગોશાલકના તપના તેજથી પરામવ પામી છમાસને અન્તે યાવત્ કાલ્ કરીશ નહિ, હું બીજા સોલ વરસ જિનપણે ગન્ધહસ્તિની પેઠે નિષ્ક્રીણ. તે માટે હે સિંહ ! તું મેંદિકગ્રામ નગરમાં રેવતી ગૃહપત્નીના ઘેર જા, ત્યાં રેવતી ગૃહપત્નીએ મારે માટે વે 'કોહલ્લના ફલો સંસ્કાર કરી તૈયાર કર્યાં છે, તેનું મારે પ્રયોજન નથી, પરન્તુ તેથી બીજો ગૃહકાલે કરેલો માર્જારકુત-માર્જારનાથે વાયુને શાન્ત કરનાર બીજોય. પ્રક છે, તેને જાવ, એનું મારે પ્રયોજન છે. સાર પછી શ્રમણ મગવંત મહાવીરે એ પ્રમાણે કહ્યું એટલે તે સિંહ અનગાર પ્રસન્ન અને સંતુષ્ટ, યાવત-પ્રકુલિતહૃદયવાચ્ય થઈ શ્રમણ મગવંત મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કરી ત્વરા, ચપલતા અને ઉતાવળરહિતપણે મુલવલિકાતું પ્રતિ-લેખન કરી ગૈતમ ત્વામીની પેઠે જ્યાં શ્રમણ મગવંત મહાવીર છે ત્યાં આવે છે. ત્યાં આવીને શ્રમણ મગવંત મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કરી શ્રમણ મગવંત મહાવીરની પાસેથી અને સાળકોટ્ટક ચૈલ્પથી નીકઠે છે, ત્યાંથી નીકઠી ત્વરાહિતપણે યાવત-જ્યાં મેંદિકગ્રામ ગામે નગર છે ત્યાં આવે છે, ત્યાં આવી મેંદિકગ્રામ નગરના મધ્યમાગમાં થઈ જ્યાં રેવતી ગૃહપત્નીનું ઘર છે, ત્યાં આવી તેણે રેવતી ગૃહપત્નીના ઘરમાં પ્રવેશ કર્યો. સારે તે રેવતી ગૃહપત્નીએ સિંહ અનગારને આવતા જોયા, જોઈને પ્રસન્ન અને સંતુષ્ટ થઈ જલ્દી આસનથી ઉભી થઈ, અંદે થઈને સિંહ અનગારની સામે સાત આઠ પગલં સામી ગઈ, સામી જઈને તેણે ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા કરી વંદન અને નમસ્કાર કરી એ પ્રમાણે કહ્યું- 'હે રેવતુપ્રિય ! આગમનનું પ્રયોજન કહ્યો.' સારે તે સિંહ અનગારે રેવતી ગૃહપત્નીને એ કહ્યું- 'એ પ્રમાણે સરેસર તમે શ્રમણ મગવંત મહાવીરને માટે વે કોહલ્લ સંસ્કાર કરી તૈયાર કર્યાં છે, તેનું પ્રયોજન નથી, પરન્તુ બીજો ગૃહ કાલે કરેલો માર્જારકુત (માર્જારવાયુને શાન્તકર) બીજોપાક છે તેને આપો, તેનું પ્રયોજન છે.' સારે તે રેવતી ગૃહપત્નીએ સિંહ અનગારને એ પ્રમાણે કહ્યું- 'હે સિંહ ! કોણ આ કામી કે તપસ્વી છે કે જેણે તને આ હસ્ત્ય (ગુસ્) અર્થ તુરત કહ્યો, અને જેથી તું જાણે છે ?'-એ પ્રમાણે સ્કન્દકના અધિકારમાં

મગવંતનું સિંહના મનોમત માર્યું, કલમ.
મગવંતનું રેવતીના નિકાપાસેથી બીજો પાસકનું મંગાર્યું.

૧૫. આ સ્ત્રોતે મુજબ "તુને કાલોમસતિર અનગચ્છિકા તેદિ નો અણુ, અતિય તે અણે પારિયાસિય મજારકચ્છ કુલુકુલુસ તમાહરાદિ" એવો પાઠ છે. તેનો સીકલો કરે અનગર વે અણેત પત્નીના ઘરો છે-એવો પ્રસિદ્ધ અર્થ કરે છે, અને માર્જારકુત કુલુકુલુસનો પણ પ્રસિદ્ધ અર્થ સીકારે છે, બીજા અનગર અણુએ મહાવીરના જેવો અર્થ હોવાથી કુલુકુ-કોટ્ટુ-એવો અર્થ કરે છે, અને વિરાલિકા નામે વનસ્પતિ વિશેષથી આમિત કુલુકુલુસ-બીજોપાકે અર્થ-હોવું અર્થ કરે છે.-સીકા.

तेणेव उवागच्छ, ते० २ उवागच्छिता मँडियगामं नगरं मज्झमज्जेणं जेणेव रेवतीय गाहावतिणीय गिहे तेणेव उवागच्छ, ते० २ उवागच्छिता रेवतीय गाहावतिणीय गिहं अणुप्यविट्ठे । तप णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं पञ्चमायं पावति, पाविसा इट्ठुत्तु० खिप्यामेव आसणाओ अभ्युट्ठे, अभ्युट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तु प्रयां अणुगच्छ, स० २ अणुगच्छिता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, आ० २ करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-‘वंदिसंतु वं देवाणुपिया ! किमागमणप्ययोयणं’ ? तप णं से सीहे अणगारे रेवति गाहावतिणि एवं वयासी-‘एवं खलु तुमे देवाणुपिय ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाप दुषे कवोयसरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अत्थे पारियासिप मञ्जारकडप कुक्कुडमंसप पयमाहराहि, तेणं अट्ठो’ । तप णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एवं वयासी-‘केस णं सीहा ! से णाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे इत्थमक्खाप, जओ णं तुमं जाणासि ? एवं जहा वंदप, जाव-जओ णं अहं जाणामि । तप णं सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं पयमट्ठं सोखा निसम्म इट्ठु-तुट्ठा जेणेव मत्त-प्रेरे तेणेव उवागच्छ, तेणेव उवागच्छिता पत्तगं मोपति, पत्तगं मोपत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छ, तेणेव उवा-गच्छिता सीहस्स अणगारस्स पडिगाहंसि तं सत्तं संमं निस्सिरति । तप णं तीय रेवतीय गाहावतिणीय तेणं इत्थुत्तेणं जाव-वाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिय समाणे देवाउय निवट्ठे, जहा विजयस्स, जाव-जम्मजीवियफले रेवतीय गाहाव-तिणीय रेवती० २ । तप णं से सीहे अणगारे रेवतीय गाहावतिणीय गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिसा मँडियगामं नगरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छति, निग्गच्छिता जहा गोयमसामी जाव-मत्तपाणं पडिदंसेति, पडिदंसेत्ता समणस्स भगवओ महा-वीरस्स पाणिसि तं सत्तं संमं निस्सिरति । तप णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिप जाव-अणज्जोववत्ते बिलमिष पन्नगभूपणं अप्याणेणं तमाहारं सरीरकोट्टुगंसि पक्खिवति । तप णं समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समणस्स से विपुले रोगायंके खिप्यामेव उवसमं पत्ते, इट्ठे जाप, आरोगे, बलियसरीरे, तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा साववा, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोप तुट्ठे ‘इट्ठे जाप समणे भगवं महावीरे’ इट्ठे २ ।

३६. ‘अंते’त्ति भगवं गोथमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-‘एवं खलु देवा-णुपियाणं अंतेवासी पारिणज्जाणवप सत्ताणुभूतीनामं अणगारे पगतिमइप जाव-विणीप, से णं अंते ! तदा गोसालेणं मंखलि-पुत्तेणं तवेणं तेपणं भासरासीकप समाणे कहिं गप, कहिं उववत्ते ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी पारिणज्जाणवप सत्ताणुभूतीनामं अणगारे पगमइप जाव-विणीप, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं भासरासीकप समाणे उट्ठं वंदिम-सूरिय० जाव-वंम-लंतक-महासुके कप्ये वीइवइत्ता सहस्सारे कप्ये देवत्ताप उववत्ते । तत्थ णं अत्थेगतिपाणं देवाणं अट्ठा-

कट्ठा प्रमाणे अहिं कहेतुं, यावत्-जेयी (भगवंतना कथनयी) हुं जाणुं हुं. ल्यारे ते रेवती गृहपती सिंह अनगारनी ए वात सांमळी, इदयमा अवधारी हृष्ट अने संतुष्ट थई ज्यां भक्तगृह-रसोहुं छे त्यां आवीने पात्र नीचे मूके छे, पात्र नीचे मूकीने ज्यां सिंह अनगार छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने सिंह अनगारना पात्रने विषे ते सर्व (बीजोरा पाक) आपे छे. ते समये ते रेवती गृहपतीए द्रव्यशुद्ध एवा यावत्-ते दानवडे सिंह अनगारने प्रतिलाभित करवायी देवायुप बांध्युं, यावत्-‘विजयनी पेठे रेवतीए ‘जन्म अने जीवितव्यनुं फल प्राप्त कर्युं २’-एवी उद्घोषणा थई. हवे ते सिंह अनगार रेवती गृहपतीना घरयी नीकळी मँडिकप्राम नगरना मध्यभागमा थईने नीकळे छे, नीकळी गौतमस्वामीनी पेठे भात-पाणी देखाडे छे. देखाडी श्रमण भगवंत महावीरना हाथमां ते सर्व सारी रीते मूके छे. ल्यार बाद श्रमण भग-वंत महावीर मूर्छा-आसक्तिरहित, यावत्-तृष्णारहितपणे सर्प जेम बिलमां पेसे तेम पोते ते आहारने शरीररूप कोष्ठमां नाखे छे. हवे ते आहारने खाधा पछी श्रमण भगवंत महावीरनो ते महान् पीडाकारी रोग तुरत ज शान्त थयो. ते हृष्ट, रोगरहित अने बलवानशरीरवाक्य थया. श्रमणो तुष्ट थया, श्रमणीओ तुष्ट थई, श्राविकाओ तुष्ट थई, देवो तुष्ट थया, देवीओ तुष्ट थई, अने देव, मनुष्य अने असुरो सहित समग्र विश्व संतुष्ट थयुं के ‘श्रमण भगवान् महावीर इष्ट-रोगरहित थया.’

सर्वानुभूतिनि मर-
ण पामी क्वां गणा-
ते संबन्धे प्रज्ञोत्तर.

३६. [प्र०] भगवान् गौतमे ‘भगवन्’ ! एम कही श्रमण भगवान् महावीरने वंदन अने नमस्कार करी ए प्रमाणे कर्हुं-ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपना अन्तेवासी पूर्वदेशमां उत्पन्न थयेला सर्वानुभूति नामे अनगार जे प्रकृतिना भद्र हता, यावत्-विनीत हता, हे भगवन् ! ज्यारे तेने मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजयी भस्मराशिरूप कर्या ल्यारे ते मरीने क्वां गवा, क्वां उत्पन्न थया ? [उ०] ‘ए प्रमाणे खरेखर हे गौतम ! मारा अन्तेवासी पूर्वदेशोत्पन्न सर्वानुभूतिनामे अनगार प्रकृतिना भद्र यावत्-विनीत हता, तेने ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके भस्मराशिरूप कर्या ल्यारे ते ऊर्ध्वलोकमा चन्द्र अने सूर्यने, यावत्-ब्रह्म, लान्तक अने महाशुक्र कल्पने ओळगीं सहस्रार कल्पमां देवरूपे उत्पन्न थया. त्यां केटला एक देवोनी अदार सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यां सर्वानुभूति देवनी पण अदार सागरोपमनी

प्रश्न सागरोपमां द्विती पञ्चत्ता, तत्त्वं नं सञ्जाणुभूतिस्त्व वि देवस्त्व अद्वारस सागरोपमां द्विती पञ्चत्ता । से नं सञ्जाणुभूती देवे तामो देवलोगाभो आउक्त्वयणं, ठिक्त्वयणं, जाव-महाविदेहे वासे सिञ्जिहिति, जाव-अंतं करेहिति ।

३७. [प्र०] एवं खलु देवाणुप्यियाणं अंतेवासी कोसलजाणव्य सुनक्त्वचे नामं अणगारे पगहमह्य जाव-विणीय, से नं मंते । तदा नं गोसालेणं मंखलिपुत्सेणं तवेणं तेयणं परिताविय समाणे कालमासे कालं किष्वा कर्हि गय, कर्हि उक्त्वचे ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुनक्त्वचे नामं अणगारे पगहमह्य जाव-विणीय, से नं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्सेणं तवेणं तेयणं परिताविय समाणे जेणेव ममं अंतिय तेणेव उवागच्छद्, ते० २ उवागच्छिता वंदति नमंसति, वंदिता मंसति सयमेव पंच महाह्ययारं आरुमेति, सयमेव० २ आरुमेत्ता समणा य समणीओ य कामेति, कामेत्ता आलो-इय-पदिहंते समाधिपत्ते कालमासे कालं किष्वा उहं चंदिम-सूरिय० जाव-आणय-पाणया-रणकप्ये वीर्धवत्ता अद्युय कप्ये देवत्ताय उक्त्वचे । तत्त्वं नं अत्येगतिवाणं देवाणं बावीसं सागरोपमां द्विती पञ्चत्ता । तत्त्वं नं सुनक्त्वत्तस्त्व वि देवस्त्व बावीसं सागरोपमां, सेचं जहा सञ्जाणुभूतिस्त्व, जाव-अंतं काहिति ।

३८. [प्र०] एवं खलु देवाणुप्यियाणं अंतेवासी कुसिस्त्वे गोसाले नामं मंखलिपुत्से से नं मंते ! गोसाले मंखलिपुत्से कालमासे कालं किष्वा कर्हि गय, कर्हि उक्त्वचे ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्त्वे गोसाले नामं मंखलिपुत्से समणयाय, जाव-उउमत्ये खेव कालमासे कालं किष्वा उहं चंदिम-सूरिय० जाव-अद्युय कप्ये देवत्ताय उक्त्वचे । तत्त्वं नं अत्येगतिवाणं देवाणं बावीसं सागरोपमां द्विती पञ्चत्ता । तत्त्वं नं गोसालस्त्व वि देवस्त्व बावीसं सागरोपमां द्विती पञ्चत्ता ।

३९. [प्र०] से नं मंते ! गोसाले देवे तामो देवलोगाभो आउक्त्वयणं ३ जाव-कर्हि उक्त्वच्चिहिति ? [उ०] गोयमा ! इदेव अंजुहीवे द्वीवे मारहे वासे विहगिरिपायमूले पुंडेसु जणवपसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्त्व रजो महाय भारियाय कु-चिहिति पुत्तयाय पञ्चायाहिति । से नं तत्त्वं नवणं मासाणं बहुपडिपुजाणं जाव-वीतिकंताणं जाव-सुकवे दारय पयाहिति ।

स्थिति छे. ते सर्वानुभूति देव ते देवलोकधी आयुषनो क्षय यवापी अने स्थितिनो क्षय यवापी यावत्-महाविदेह क्षेत्रमां सिद्ध यशे, यावत्-सर्वं दुःखोनो अन्त करशे.

३७. [प्र०] ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपना शिष्य कोशल देशमां उत्पन्न ययेला सुनक्षत्र नामे अनगार प्रकृतिना भद्र, यावत्-विनीत हत्ता, तेने अ्यारे मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजधी परिताप उत्पन्न कयो ल्यारे ते मरणसमये काळ करीने क्यां गया, क्यां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे खरेखर मारो शिष्य सुनक्षत्र नामे अनगार प्रकृतिनो भद्र यावत्-विनीत हतो, तेने अ्यारे मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजधी परिताप उत्पन्न कयो ल्यारे ते मारी पासे आव्यो, मारी पासे आवी बन्दन-नमस्कार करी खयमेव पांच महाव्रतोनो उच्चार करी श्रमण अने श्रमणीओने खमावी, आलोचना अने प्रतिक्रमण करी, समाधिने प्राप्त यई मरणसमये काळ करीने ऊर्ध्व लोकमां चन्द्र अने सूर्यने तथा यावत्-आणत, प्राणत अने आरण कल्पने ओळंगी अच्युत देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाएक देवोनी बावीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. तेमां सुनक्षत्र देवनी पण बावीश सागरोपमनी स्थिति छे. बाकी बंधुं सर्वानुभूति संबन्धे कथुं छे तेम अहि आणतुं; यावत्-सर्वं दुःखोनो अन्त करशे.

सुनक्षत्र कालमात्र काळ करी क्यां थया ?

३८. [प्र०] ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपनो अन्तेवासी कुशिष्य मंखलिपुत्र गोशालक छे, ते मंखलिपुत्र गोशालक मरण समये काळ करीने क्यां थयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] ए प्रमाणे खरेखर हे गौतम ! मारो अन्तेवासी कुशिष्य मंखलिपुत्र गोशालक जे श्रमणनो प्राप्तक अने यावत्-छषस्य हतो, ते मरणसमये काळ करीने ऊर्ध्वलोकमां चन्द्र अने सूर्यने ओळंगी यावत्-अच्युत कल्पने विवे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटला एक देवोनी बावीश सागरोपमनी स्थिति कही छे, त्यां गोशालक देवनी पण बावीश सागरोपमनी स्थिति छे.

गोशालक काळ करी क्यां थयो ?

३९. [प्र०] ते गोशालक देव ते देवलोकधी आयुषना क्षय यवापी ३ यावत्-क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! आ अंजु-द्वीपनामे द्वीपमां भरत क्षेत्रने विषे विन्ध्याचल पर्वतनी तळेटीमां पुंड्रनामे देशने विषे शतद्वारनामे नगरमां संमुति (सम्पूर्ति) नामे राजाने यदा नामे भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्ररूपे उत्पन्न थयो. ते त्यां नव मास वरोवर पूर्ण थया बाद अने साडा सात दिवस बीला पडी यावत्-सुन्दर बालकाने जन्म आपयो.

गोशालक देवलोकधी क्यां थया ?

૪૦. જં ત્યર્ષિ ચ જં સે વાર્ય આહિતિ, તં ત્યર્ષિ ચ જં સયદુવારે નગરે સમ્મિતરવાહિરિય નારગસો ય કુંમપ્રમાણે ચ પડમવાલે ય ત્યજવાલે ય વાલે વાલિહિતિ । ત્ય જં તસ્સ વારગસ્સ અમ્માપિયરો યજ્ઞારસમે દિવસે વીક્ષિતે જાત-સંપતે વારસાહદિવસે અયમેયાકુલં ગોણં ગુણનિષ્કલં નામધેજં કાર્હિતિ-‘અમ્હા જં અમ્હં હમંસિ વારગંસિ જાવંસિ સમાપ્તિ સયદુવારે નગરે સમ્મિતરવાહિરિય જાવ-રયજવાલે વુદ્ધે, તં હોડ જં અમ્હં હમસ્સ વારગસ્સ નામધેજં મહાપડમે મહા’ ૨ । ત્ય જં તસ્સ વારગસ્સ અમ્માપિયરો નામધેજં કરેહિતિ ‘મહાપડમે’તિ । ત્ય જં તં મહાપડમં વારગં અમ્માપિયરો સ્મિતિ-ગદુવાસજાયગં જાણિત્તા સોમણંસિ તિહિ-કરજ-વિવસ-નક્કસ-મુદુસંસિ મહયા ૨ રાયામિસેગેણં અમિલિષેહિતિ । સે જં તત્થ રાયા મવિસ્સતિ, મહયાહિમવંતં વચ્ચમો, જાવ-વિહરિસ્સર । ત્ય જં તસ્સ મહાપડમસ્સ રજો અચ્ચા કદાપિ દો દેવા મહહિયા જાવ-મહેસક્કા સેનાકમ્મં કાર્હિતિ । તંજહા-પુચ્ચમહે ય માણિમહે ય । ત્ય જં સયદુવારે નગરે વહવે રાર્-સર-તલ્લવરં જાવ-સત્થવાહપ્પમિર્મિઓ અચ્ચમં સહાવેહિતિ, અં ૨ સહાવેત્તા યવં વદેહિતિ-‘અમ્હા જં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં મહાપડમસ્સ રજો દો દેવા મહહિયા જાવ-સેનાકમ્મં કરેતિ, તંજહા-પુચ્ચમહે ય માણિમહે ય, તં હોડ જં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં મહાપડમસ્સ રજો દોષં વિ નામધેજે ‘દેવસેને દે’ ૨ । ત્ય જં તસ્સ મહાપડમસ્સ રજો દોષે વિ નામધેજે મવિ-સ્સતિ ‘દેવસેને’તિ ૨ ।

૪૧. ત્ય જં તસ્સ દેવસેણસ્સ રજો અચ્ચા કદાપિ સેતે સંજતલલ્લિમલ્લસખિગાસે ચડહંતે હત્થિરયથે સમુપ્પજિસ્સર । ત્ય જં સે દેવસેને રાયા તં સેયં સંજતલલ્લિમલ્લસખિગાસં ચડહંતં હત્થિરયણં વૂકહે સમાણે સયદુવારં નગરં મજ્ઞંમજ્ઞેયં અમિષ્કણં ૨ અમિજાહિતિ, નિચ્ચાહિતિ ય । ત્ય જં સયદુવારે નગરે વહવે રાર્સરં જાવ-પમિર્મિઓ અચ્ચમં સહાવેહિતિ, અં ૨ સહાવેત્તા વદેહિતિ-અમ્હા જં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં દેવસેણસ્સ રજો સેતે સંજતલલ્લસખિગાસે ચડહંતે હત્થિરયથે સમુપ્પજે, તં હોડ જં દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં દેવસેણસ્સ રજો તથે વિ નામધેજે ‘વિમલવાહણે વિ’ ૨ । ત્ય જં તસ્સ દેવસેણસ્સ રજો તથે વિ નામધેજે ‘વિમલવાહણે’તિ ।

૪૨. ત્ય જં સે વિમલવાહણે રાયા અચ્ચા કદાપિ સમણેહિં નિગંથેહિં મિષ્ઠં વિપ્પટ્ઠિવજ્જિહિતિ, અપ્પેગતિય આરસે-હિતિ, અપ્પેગતિય અવહસિહિતિ, અપ્પેગતિય નિષ્કોડેહિતિ, અપ્પેગતિય નિષ્મત્થેહિતિ, અપ્પેગતિય વંધેહિતિ, અપ્પેગતિય વિહં-

મહાપદ અને દેવસેન
નામ શાબ્દવાનું કારણ.

મહાપદ.

દેવસેન.

૪૦. જે રાત્રિને વિષે તે વાલકનો જન્મ થશે, તે રાત્રિને વિષે શતદ્વાર નામે નગરમાં અંદર અને બહાર અનેક *ભારપ્રમાણ અને અનેક કુંમપ્રમાણ વૃષ્ટિરૂપ પદ્મની વૃષ્ટિ અને રત્નની વૃષ્ટિ થશે. તે વચ્ચે તે વાલકના માત-પિતા અગીયારમો દિવસ વીસા પછી ચારમે દિવસે આવા પ્રકારનું ગુણયુક્ત અને ગુણનિષ્પન્ન નામ કરશે-“જે હેતુથી અમારા આ વાલકનો જન્મ થયો એટલે શતદ્વાર નગરને વિષે વાલ્લ અને અંદર યાવત્-રત્નની વૃષ્ટિ થઈ, તે માટે અમારા આ વાલકનું નામ ‘મહાપદ’ ૨ હો.” સ્વાર પછી તે વાલકના માત-પિતા ‘મહાપદ’ એવું નામ પાડશે. સ્વાર પછી તે મહાપદ વાલકને માતાપિતા કડક અધિક આઠ વર્ષનો થયેલો જાણીને સારા તિથિ, કરણ, દિવસ નક્ષત્ર અને મુહૂર્તને વિષે અલ્પનત મોટા રાજ્યાભિષેકવચ્ચે અભિષેક કરશે. હવે તે રાજા થશે, તે મહાહિમવાનુ આદિ પર્વતની જેમ બલવાલો થશે-હુલાદિ વર્ણન જાણવું, યાવત્-તે વિહરશે. હવે અન્ય કોઈ દિવસે તે મહાપદ રાજાનું મહદ્વિક યાવત્-મહાસુખવાલ્યે જે દેવો સેનાકર્મ કરશે. તે દેવોના નામ આ પ્રમાણે-પૂર્ણમદ્ર અને માણિમદ્ર. સ્વાર પછી શતદ્વાર નગરને વિષે ઘણા માંડલિક રાજાઓ, યુવરાજા, તલવર, યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુખ પરસ્પર બોલાવીને એ પ્રમાણે કહેશે કે-હે દેવાનુપ્રિયો ! ‘જે હેતુથી અમારા મહાપદ રાજાનું જે મહદ્વિક દેવો યાવત્-સેનાકર્મ કરે છે, તે દેવોના નામ આ પ્રમાણે-પૂર્ણમદ્ર અને માણિમદ્ર, તે માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા મહાપદ રાજાનું બીજું નામ ‘દેવસેન’ ૨ હો, તે વચ્ચે તે મહાપદ રાજાનું ‘દેવસેન’ એવું બીજું નામ થશે.

વિમલવાહન નામ
પાડવાનું કારણ.

૪૧. સ્વાર બાદ તે દેવસેન રાજાને અન્ય કોઈ દિવસે શ્વેત, નિર્મલ શંખના તલ્લીયાસમાન અને ચાર દન્તવાલું હસ્તિરત્ન ઉત્પન્ન થશે, સ્વારે તે દેવસેન રાજા શ્વેત, નિર્મલ શંખના તલ્લસમાન અને ચાર દન્તવાલ્ય હસ્તિરત્ન ઉપર ચઢીને શતદ્વાર નગરના મધ્યભાગમાં થઈને ચાર-ચાર જશે અને નીકળશે. તે વચ્ચે શતદ્વાર નગરને વિષે ઘણા માંડલિક રાજાઓ, યુવરાજા યાવત્-સાર્થવાહ પ્રમુખ એક બીજાને બોલાવશે, બોલાવીને કહેશે કે ‘હે દેવાનુપ્રિયો ! જેથી અમારા દેવસેન રાજાને શ્વેત, નિર્મલ શંખતલ્લના જેવો અને ચાર દંતવાલ્યો ઉત્પન્ન હશે ઉત્પન્ન થયો છે, તે માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા દેવસેન રાજાનું ત્રીજું નામ ‘વિમલવાહન’ હો. સ્વારે તે દેવસેન રાજાનું ‘વિમલવાહન’ એવું ત્રીજું નામ પડશે.

૪૨. સ્વાર બાદ તે વિમલવાહન રાજા અન્ય કોઈ દિવસે શ્રમણ નિર્મન્યોની સાથે મિધ્યાત્વ-અનાર્થપણું આપરશે, કેટલાકને શ્રમણ નિર્મન્યોનો આત્મોશ કરશે, કેટલાકની હાંસી કરશે, કેટલાકને ગૂંદા પાડશે, કેટલાકની નિર્મલ્સના કરશે, કેટલાકને વાંચશે,

૪૦ * સૌથી પહેલું અથવા સૌ પહેલું ચાર કહે છે, અને સાત આઠક પ્રમાણ, એવી આઠક પ્રમાણ અને સૌ આઠક પ્રમાણ માટે અપ્પેગ, અપ્પેગ અને ઉત્કૃષ્ટ કુંમ કહે છે.

केदिति, अग्नेगतिपापं कश्चिच्छेदं करेदिति, अग्नेगतिप पकारेदिति, अग्नेगतिपापं उद्देदिति, अग्नेगतिपापं वस्यं, वदित्वा, वस्यं, वासपुंल्लं वाचिच्छेदिति, विच्छेदिति, निच्छेदिति, अद्वारदिति, अग्नेगतिपापं मत्तपापं वोच्छेदिति, अग्ने-
गतिप विजयते करेदिति, अग्नेगतिप निच्छेद करेदिति । तप षं सयदुवारे नगरे बहये रारसर० जाव-वदिदिति-एवं
अनु देवाणुपिया । विमलवाहणे राया समणेहि निगंयेहि मिच्छं विष्पडिबने अग्नेगतिप आउस्तति, जाव-निच्छेद
करेति, तं नो अनु देवाणुपिया ! एवं अहं सेयं, नो अनु एवं विमलवाहणस्स रओ सेयं, नो अनु एवं रजस्स वा रदुस्स
वा कलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जणं विमलवाहणे राया समणेहि निगंयेहि
मिच्छं विष्पडिबने, तं सेयं अनु देवाणुपिया ! अहं विमलवाहणं रायं एयमहं विजयित्तप, तिकहु अन्नमन्नस्स अंतिपं एयमहं
वदित्तुवेति, अ० २ पडिसुभित्ता जेजेव विमलवाहणे राया तेजेव उवागच्छंति, तेजेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिचं विमल-
वाहणं रायं अयं विजयं वद्ववेति, अ० २ वद्ववेत्ता एवं वदिदिति-एवं अनु देवाणुपिया समणेहि निगंयेहि मिच्छं
विष्पडिबना अग्नेगतिप आउस्तंति, जाव-अग्नेगतिप निच्छेद करेति, तं नो अनु एवं देवाणुपियाणं सेयं, नो अनु एवं
अहं सेयं, नो अनु एवं रजस्स वा जाव-जणवयस्स वा सेयं, अं षं देवाणुपिया ! समणेहि निगंयेहि मिच्छं विष्पडिबना,
तं विरंत्तु षं देवाणुपिया ! एमस्स अदुस्स अकरणपप ।

४३. तप षं से विमलवाहणे राया तेहि बहदि रारसर० जाव-सत्थवाहप्पमिहिं एयमहं विजये समाणे 'नो
अन्नो'ति 'नो तवो'ति मिच्छा विजयं एयमहं पडिसुभेहि(हि)ति । तस्स षं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे
दिस्सिमाणे एत्थ षं सुभूमिमागे नाम उज्जाणे भविस्सह । सओउय० वज्जओ । तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ
एत्थएव सुमंगले नामं अणगारे जाइसंपणे० जहा धम्मओसस्स वज्जओ, जाव-संखिचिउलतेयलेस्से, तिच्चाणोवणप, सुभूमि-
मागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते उहुंछट्टेणं अणिकिच्छेणं जाव-आयावेमाणे विहरिस्सति ।

४४. तप षं से विमलवाहणे राया अथवा कदापि एहवरियं काउं निज्जादिति । तप षं से विमलवाहणे राया सुभू-
मिमागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते एहवरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं उहुंछट्टेणं जाव-आयावेमाणं पासिदिति । पासित्ता

केटलाएकने रोकशे, केटलाएकना अवयवोनो छेद करशे, केटलाएकने मारशे, केटलाएकने उपद्रव करशे, केटलाएकना वल्ल, पात्र,
काबल अने पादपुच्छन छेदशे, विशेष छेदशे, भेदशे, अपहरण करशे; केटलाएकना भात-पाणीनो विच्छेद करशे, केटलाएकने नगरयी
बहार कादशे अने केटलाएकने देशयी बहार कादशे. ते समये शतद्वार नगरने विषे घणा मांडलिक राजाओ अने युवराजाओ यावत् परस्पर-
कहेशे के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर विमलवाहन राजाए अमण निर्मन्थोनी साथे मिथ्या-अनार्यपणुं स्वीकार्युं छे, यावत्-केटला-
एकने देशयी बहार काडे छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! ए आपणने श्रेयरूप नथी, आ विमलवाहन राजाने श्रेयरूप नथी, तेमज आ
राज्यने, आ राष्ट्रने, बलने, वाहनने, पुरने, अन्तःपुरने के देशने श्रेयरूप नथी के जे विमलवाहन राजाए अमण निर्मन्थोनी
साथे मिथ्या-अनार्यपणुं स्वीकार्युं छे. ते माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे विमलवाहन राजाने आ बात जणाववी योग्य छे.'-एम विचारी एक
बीजानी पासे आ बातने स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने ज्यां विमलवाहन राजा छे त्यां आवेछे, त्यां आवीने करतल परिगृहीत करीने-
हाप जोडीने विमलवाहन राजाने जय अने विजययी वधावेछे. वधावीने एम कहेशे के 'हे देवानुप्रिय ! आप अमण निर्मन्थोनी साथे
मिथ्या-अनार्यपणाने आचरता केटलाएकनो आओश करो छो, यावत्-केटलाएकने देशयी बहार काडो छो, ते देवानुप्रिय एव
आपने श्रेयरूप नथी, ए अमने पण श्रेयरूप नथी, तेमज आ राज्यने, यावत्-देशने श्रेयरूप नथी के जे देवानुप्रिय एव आप अमण
निर्मन्थोनी साथे मिथ्याव-अनार्यपणुं आचरो छे, ते माटे हे देवानुप्रिय ! आप नहि करवा वडे आ कार्ययी अन्ध पडो'.

४५. अ्यारे ते घणा मांडलिक राजाओ, युवराजाओ यावत्-सार्ववाहप्रमुख आ बाबत विनति करशे स्यारे ते विमलवाहन राजा
'धर्म नथी, तप नथी'-एसी बुद्धिथी मिथ्या विनय वडे आ बात कबूल करशे. हवे ते शतद्वार नगरनी बहार उत्तर-पूर्व दिशाए अहिं
सुभूमिमाग नामे उचान हशे. ते सर्व अट्टना पुण्यादिकयुक्त-इत्यादि वर्णन जाणतुं. ते काले ते समये विमलनामे तीर्थकरना प्रपौत्र-शिष्य
परंपरानां थयेला सुमंगल नामे अनगार हशे. ते जातिसंपन्न-इत्यादि 'धर्मघोष अनगारना वर्णन प्रमाणे वर्णन त्त्तुं, यावत्-संक्षिप्त अने
विपुल तेजोल्लेसावाळ, अण ज्ञान वडे सहित ते सुमंगल नामे अनगार सुभूमिमाग नामे उचानथी थोडे दूर निरन्तर छट्टनो तप करवावडे
यावत्-आतापना लेता विहरशे.

४६. हवे ते विमलवाहन राजा अन्य कोई दिवसे रथचर्या करवा निकळसे स्यारे सुभूमिमाग नामे उचानथी थोडे दूर रथचर्या
करतो ते विमलवाहन राजा विरंतर छट्टनो तप करता यावत्-आतापना लेता सुमंगल अनगारने जोशे. जोशेने कोपाविष्ट थयेले यावत्-

विमलवाहन राजा
अथवा सुभूमिमाग
नाम उच्यते इति
आचर्य.

सुमंगल अनगार

આસુરુષ્ઠે જાણ-મિસિમિસેમાણે સુમંગલ અનગારં રહસિરેણં ણોહ્લાવેહિતિ । તથ ણં સે સુમંગલે અનગારે વિમલવાહનેણં રણં રહસિરેણં નોહ્લાવિય સમાણે સણિયં ૨ ઉટ્ટેહિતિ, ઉટ્ટેસા દોષં પિ ઉહં વાહામો પગિજિલ્લ ૨ જાણ-આવાવેમાણે વિહરિસ્સતિ । તથ ણં સે વિમલવાહને રાયા સુમંગલ અનગારં દોષં પિ રહસિરેણં ણોહ્લાવેહિતિ । તથ ણં સે સુમંગલે અનગારે વિમલવાહનેણં રણા દોષં પિ રહસિરેણં ણોહ્લાવિય સમાણે સણિયં ૨ ઉટ્ટેહિતિ, ઉટ્ટેસા મોહિં પડંજેહિતિ, ઓ ૨ પડંજિસા વિમલવાહનેણં રણો તીતકં મોહિણા આમોપહિતિ, આમોપસા વિમલવાહનેણં રાયં યં વદહિતિ-‘નો અલુ તુમં વિમલવાહને રાયા, નો અલુ તુમં દેવસેણે રાયા, નો અલુ તુમં મહાપડમે રાયા, તુમણં દમો તથે મહાગાહને ગોસાલે નામં મંજલિપુત્રે હોત્થા, સમણવાપય, જાણ-છંડમત્થે ચેવ કાલગય, તં જતિ તે તવા સદ્ધાણુમૂતિણા અનગારેણં પપુણા વિ હોહ્ણં સમ્મં સહિયં, અમિયં, તિતિવિચ્છં, અહિયાસિયં, જહ તે તવા સુનક્કસેણં અનગારેણં જાણ-અહિયાસિયં, જહ તે તવા સમણેણં મહાવીરેણં પપુણા વિ જાણ-અહિયાસિયં, તં નો અલુ તે અહં તદ્દા સમ્મં સહિસ્સં, જાણ-અહિયાસિસ્સં, અહં તે નવરં સહયં સપ્પં સસારહિયં તથેણં તેયણં યગાહણં કૂટાહણં માસરાસિ કરેજ્ઞામિ ।

૪૫. તથ ણં સે વિમલવાહને રાયા સુમંગલેણં અનગારેણં યં વદુષ્ઠે સમાણે આસુરુષ્ઠે જાણ-મિસિમિસેમાણે સુમંગલ અનગારં તથં પિ રહસિરેણં ણોહ્લાવેહિતિ । તથ ણં સે સુમંગલે અનગારે વિમલવાહનેણં રણા તથં પિ રહસિરેણં નોહ્લાવિય સમાણે આસુરુષ્ઠે જાણ-મિસિમિસેમાણે આયાવણમૂતિઓ પચ્છોરમહ, આ ૨ પચ્છોરમિસા તેયાસમુગ્ધાપણં સમોહધિહિતિ, તેયા ૨ સમોહણિસા સચ્છટ્ટ પચારં પચ્છોસક્કિહિતિ, સચ્છટ્ટ ૨ પચ્છોસક્કિસા વિમલવાહનેણં રાયં સહયં સપ્પં સસારહિયં તથેણં તેયણં જાણ-માસરાસિ કરેહિતિ ।

૪૬. [પ્ર ૦] સુમંગલે ણં મંતે ! અનગારે વિમલવાહનેણં રાયં સહયં જાણ-માસરાસિ કરેસા કહિં ગચ્છિહિતિ, કહિં ઉચ્ચચ્છિ-હિતિ ? [ઉ ૦] ગોયમા ! સુમંગલે અનગારે ણં વિમલવાહનેણં રાયં સહયં જાણ-માસરાસિ કરેસા વહ્હિં છટ્ટ-દુમ-વસમ-દુવા-લસ ૦ જાણ-વિચ્છિસેહિં તથોકમ્મેહિં અપ્પાણં માવેમાણે યહ્હં વાસાહં સામન્નપરિયાગં પાડણેહિતિ, પાડણિસા માસિયાય સંલે-હણાય સહિં મચ્છારં અણસણાય જાણ-હેદેસા આલોહય-પડિકંતે સમાહિપસે ઉહં ધંદિમ ૦ જાણ-ગેવિચ્છવિમાણાવાસસયં વીયી-

વિમલવાહન સુમંગલ અનગાર અવર રથ વાહી તેને પાડી નાંખશે.

ક્રોધથી અત્યંત બઢતો એવો તે રાજા રથના અગ્રભાગ વડે સુમંગલ અનગારને અભિઘાત કરી પાડી નાંખશે. જ્યારે વિમલવાહન રાજા રથના અગ્રભાગવડે તે સુમંગલ અનગારને પાડી નાંખશે ત્યારે તે સુમંગલ અનગાર ધીમે ધીમે ઉઠશે, ઉઠીને વીજીવાર જંચા હાથ કરી કરીને આ-તાપના લેતા વિહરશે; ત્યારે તે વિમલવાહન રાજા સુમંગલ અનગારને વીજીવાર રથના અગ્રભાગવડે અભિઘાત કરી પાડી નાંખશે. જ્યારે વિમલવાહન રાજા સુમંગલ અનગારને વીજીવાર રથના અગ્રભાગવડે અભિઘાત કરી પાડી નાંખશે ત્યારે તે સુમંગલ અનગાર ધીમે ધીમે ઉઠશે, ઉઠીને અવધિજ્ઞાન પ્રયુજશે, અવધિજ્ઞાન પ્રયુજીને વિમલવાહન રાજાને અતીતકાળે અવધિજ્ઞાન વડે જોશે, જોઈને વિમલવાહન રાજાને એમ કહેશે-“તું ખરેચ્છર વિમલવાહન રાજા નથી, તું ખરેચ્છર દેવસેન રાજા નથી, તું ખરેચ્છર મહાપદ્મ રાજા નથી, તું આ મવથી ત્રીજા મવમાં મંજલિપુત્ર ગોસાલકનામે હતો, અને શ્રમણનો ઘાત કરનાર તું છત્રસ્થાવસ્થામાં કાઢધર્મ પામ્યો હતો, જો કે તે વચ્ચે સર્વાનુમૂતિ અનગારે સમર્થ છતાં પણ તારો અપરાધ સમ્યક્ પ્રકારે સહન કર્યો, તેની ક્ષમા કરી, તિતિક્ષા કરી અને તેને અધ્યાસિત કર્યો; જો કે તે વચ્ચે સુનક્કર અનગારે પણ યાવત્-અધ્યાસિત-સહન કર્યો, જો કે તે સમયે શ્રમણ મહાવાન મહાવીરે સમર્થ છતાં પણ યાવત્-સહન કર્યો, પરન્તુ ખરેચ્છર હું તે પ્રમાણે સમ્યક્ સહન નહિં કરું, યાવત્-અધ્યાસિત નહિં, હું ઘોડા, રથ અને સારથિસહિત તને મારા તપના તેજથી એકથાપ કૂટાઘાત-પાશાણમય યંત્રના આઘાતની જેમ મસ્મરાશિરૂપ કરીશ.”

સુમંગલ અનગાર વિમલવાહનને તપના તેજથી મક્ક કરશે.

૪૫. જ્યારે તે સુમંગલ અનગારે એ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે અત્યંત ગુસ્સે યયેલો અને યાવત્-અત્યંત ક્રોધથી બઢતો તે વિમલવાહન રાજા સુમંગલ અનગારને ત્રીજી વાર પણ રથના અગ્રભાગ વડે અભિઘાત કરી પાડી નાંખશે. જ્યારે વિમલવાહન રાજા રથના અગ્રભાગવડે ત્રીજીવાર તે સુમંગલ અનગારને અભિઘાત કરી પાડી નાંખશે ત્યારે અત્યંત ગુસ્સે યયેલો અને યાવત્-ક્રોધથી બઢતા એવા તે સુમંગલ અનગાર આતાપના ભૂમિથી ઉતરી તૈજસ સમુદ્ઘાત કરશે, તૈજસ સમુદ્ઘાત કરીને, સાત આઠ પગલાં પાછા જઈ ઘોડા, રથ અને સારથિસહિત વિમલવાહન રાજાને મસ્મરાશિરૂપ કરશે.

સુમંગલ અનગાર કાઢ કરી ક્યાં અણે ?

૪૬. [પ્ર ૦] હે મહાવન ! સુમંગલ અનગાર ઘોડાસહિત, યાવત્-વિમલવાહન રાજાને મસ્મરાશિરૂપ કરીને [કાઢ કરી] ક્યાં અણે, ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ? [ઉ ૦] હે મોતમ ! સુમંગલ અનગાર વિમલવાહન રાજાને ઘોડાસહિત યાવત્-મસ્મરાશિરૂપ કરીને ઘણા પ્રકારના છટ્ટ, અટ્ટમ, દશમ (ચાર ઉપવાસ), દ્વાદશ મક્ક (પાંચ ઉપવાસ) યાવત્-વિચિત્ર તપકર્મ વડે આત્માને શ્વાબિત કરતા ઘણા વરસ સુધી અમળપણાના પર્યાપને પાઢશે. પાઢીને માસિક સંલેખના વડે સાઠ મક્ક અનશનપણે વીતાવીને આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કરી સમાધિને પ્રાપ્ત થઈ અણે

सर्वत्र सप्तदशदिग्दे महाविमाने देवताय उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजह्वमणुओसेणं तेसीसं सागरोवमाहं डिती पन्नता ।
 तत्थ णं सुमंगलसस वि देवसस अजह्वमणुओसेणं तेसीसं सागरोवमाहं डिती पन्नता । से णं भंते ! सुमंगले देवे ताओ देव-
 ओगण्णे जाव-महाविदेहे वासे सिद्धिहिति, जाव-भंतं काहिति ।

४७. [प्र०] विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहय जाव-भासरासीकय समाणे कहिं गच्छिहिति,
 कहिं उववज्जिहिति ! [उ०] गोयमा ! विमलवाहणे णं राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव-भासरासीकय समाणे अहेस-
 समाय पुडवीय उओसकालट्टिर्यंसि नरयंसि नेरयत्ताय उववज्जिहिति । से णं ततो अणंतरं उव्वट्टिता मच्छेसु उववज्जि-
 हिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवकंतीय कालमासे कालं किच्चा दोब्बं पि अहेससमाय पुडवीय उओसकालट्टितीयंसि नर-
 यंसि नेरयत्ताय उववज्जिहिति । से णं ततोऽणंतरं उव्वट्टिता दोब्बं पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-
 किच्चा छट्टीय तमाय पुडवीय उओसकालट्टिर्यंसि नरगंसि नेरयत्ताय उववज्जिहिति । से णं ततोऽहितो जाव-उव्वट्टिता
 इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे दाह० जाव-दोब्बं पि छट्टीय तमाय पुडवीय उओसकाल० जाव-उव्वट्टिता
 दोब्बं पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा पंचमाय धूमपमाय पुडवीय उओसकाल० जाव-उव्व-
 ट्टिता उरयसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा दोब्बं पि पंचमाय जाव-उव्वट्टिता दोब्बं पि उरयसु उवव-
 जिहिति, जाव-किच्चा चउत्थीय पंकपमाय पुडवीय उओसकालट्टितीयंसि जाव-उव्वट्टिता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ
 वि णं सत्थवज्जे तहेव जाव-किच्चा दोब्बं पि चउत्थीय पंक० जाव-उव्वट्टिता दोब्बं पि सीहेसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा
 वच्चाय वालुयपमाय पुडवीय उओसकाल० जाव-उव्वट्टिता पक्कीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा
 दोब्बं पि तच्चाय वालुय० जाव-उव्वट्टिता दोब्बं पि पक्कीसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा दोब्बाय सकरपमाय जाव-उव्वट्टिता
 सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ० जाव-किच्चा दोब्बं पि दोब्बाय सकरपमाय जाव-उव्वट्टिता दोब्बं पि सिरीसवेसु
 उववज्जिहिति, जाव-किच्चा इमीसे रयणपमाय पुडवीय उओसकालट्टितीयंसि नरगंसि नेरयत्ताय उववज्जिहिति । जाव-उव्व-
 ट्टिता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-किच्चा असक्कीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे जाव-

लोकमां चन्द्र अने सूर्य, यावत्-सो प्रैवेयक विमानावासने ओळंगी सर्वाथसिद्ध महाविमानमां देवपणे उपजशे. त्यां देवोनी जघन्य अने
 उत्कृष्टरहित एवी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यां सुमंगल देवनी पण जघन्य अने उत्कृष्टरहित एवी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति
 हशे. ते सुमंगल देव ते देवलोकथी यावत्-भवना क्षय थवाथी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्ध थशे, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे सुमंगल अनगार घोडासहित विमलवाहन राजाने यावत्-भस्मराशिरूप करशे त्यार वाद ते क्यां
 जशे, क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! सुमंगल अनगारे घोडासहित यावत्-भस्मराशिरूप कर्या पळी ते विमलवाहन राजा अधः-
 ससम पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळ नरकने विषे नारकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी भ्यवीने तुरत मत्त्योने विषे उत्पन्न थशे. त्यां पण
 शखवडे वध थवाथी दाहनी पीडावडे मरणसमये काळ करीने बीजीवार पण अधःससम नरकपृथिवीमां उत्कृष्टस्थितिवाळ नरकावासने
 विषे नारकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी अन्तररहितपणे भ्यवी बीजीवार पण मत्त्योमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शखवडे वध थवाथी यावत्-काळ
 करीने छट्टी तमा नामे नरकपृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळ नरकमां नैरयिकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी नीकळी तुरतज खीने विषे उत्पन्न
 थशे. त्यां पण शखद्वारा वध थतां दाहनी पीडाथी यावत्-बीजीवार छट्टी तमा पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळ नरकमां नारकपणे
 उत्पन्न थशे. यावत्-त्यांथी नीकळीने बीजीवार पण खीओमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शखवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने
 पांचमी धूपप्रमाने विषे उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळ नरकावासमां यावत्-उत्पन्न थशे. त्यांथी नीकळीने उरःपरिसर्पमां उत्पन्न
 थशे. त्यां पण शखवडे वध थवाथी काळ करीने बीजीवार पांचमी नरकपृथिवीमां उत्पन्न थई, त्यांथी नीकळी यावत्-बीजीवार
 उरःपरिसर्पमां उत्पन्न थशे. त्यांथी यावत्-काळ करीने चोथी पंकप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळ नरकने विषे
 नारकपणे उत्पन्न थई, यावत्-त्यांथी नीकळी सिहोमां उत्पन्न थशे, त्यां पण शखवडे वध थवाथी ते प्रमाणेज यावत्-काळ
 करीने बीजीवार चोथी पंकप्रभामां उत्पन्न थई, यावत्- त्यांथी नीकळी बीजीवार सिहोमां उत्पन्न थशे, त्यांथी यावत्-काळ करीने
 बीजी वालुकाप्रभामां उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळ नरकावासमां उत्पन्न थई, त्यांथी नीकळी पक्षीओमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शखवडे वध
 थवाथी यावत्-काळ करी बीजीवार बीजी वालुकाप्रभामां उत्पन्न थई यावत्-त्यांथी नीकळी बीजीवार पक्षीओमां उत्पन्न थशे. यावत्-काळ
 करी त्यांथी बीजी शर्कराप्रभामां उत्पन्न थई, यावत्-त्यांथी नीकळी सरीसृप (शीकारी पशुओ)ने विषे उपजशे. त्यां शखवडे वध
 थवाथी यावत्-काळ करी बीजीवार शर्कराप्रभाने विषे यावत्-उत्पन्न थशे. अने त्यांथी नीकळी बीजीवार सरीसृपमां उत्पन्न थशे. यावत्-
 काळ करीने आ रत्नप्रभापृथिवीने विषे उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळ नरकावासमां नैरयिकपणे उत्पन्न थशे. यावत्-त्यांथी नीकळीने संझीने
 विषे उपजशे. त्यां पण शखवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने असंझीमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शखवडे वध थतां यावत्-काळ करीने
 बीजीवार पण आ रत्नप्रभापृथिवीमां पत्थोवमना असंख्यातमा भंगनी स्थितिवाळ नरकावासमां नारकपणे उत्पन्न थशे. हे त्यांथी यावत्-

विमलवाहन नरक
 पळी क्यां कही ई.

કિષ્કા દોષં પિ દમીલે રચવપ્પસાય પુઠવીય પલિઓચમસ્સ અસંલેહાયાગણ્ણિવીરંસિ ધરંસિ વેપ્પવસાય વચ્ચવિહિતિ । તે
 ણં તમો આવ-ઉપ્પાહિતા જારં દમારં સહયરવિહાણારં મંવંતિ, તં જહા-અમાપ્પવીણં, હોમપ્પવીણં, સમુદ્રકપ્પવીણં, વિષ્ણ-
 વપ્પવીણં, તેસુ અપેગસયસહસ્સસુસો ઉદારસા ૨ તત્થેવ ૨ મુજો ૨ પચ્ચાયાહિતિ । સહત્થ વિ ણં સત્થવજ્ઞે વચ્ચવવિહિત
 કાલમાસે કાલં કિષ્કા જારં દમારં મુયપરિસપ્પવિહાણારં મંવંતિ, તંજહા-ગોહાણં, નડલાણં, જહા વચ્ચવપ્પાય આવ-જહાગાણં,
 ચડપ્પાહયાણં, તેસુ અપેગસયસહસ્સસુસો ૦ સેસં જહા સહચરાણં, આવ-કિષ્કા જારં દમારં ઉરપરિસપ્પવિહાણારં મંવંતિ, તે-
 જહા-મહીણં, અયગરાણં, માસાલિયાણં, મહોરગાણં, તેસુ અપેગસયસહ ૦ આવ-કિષ્કા જારં દમારં ચડપ્પવિહાણારં મંવંતિ,
 તંજહા-વગ્ગુરાણં, દુરુરાણં, ગંઢીપદાણં, સળહપદાણં, તેસુ અપેગસયસહસ્સ ૦ આવ-કિષ્કા જારં દમારં અલ્લચરવિહાણારં મંવંતિ, તે
 જહા-મચ્છાણં, કચ્છમાણં, આવ-સુસુમારાણં, તેસુ અપેગસયસહસ્સ ૦ આવ-કિષ્કા જારં દમારં ચડરિન્દિયવિહાણારં મંવંતિ,
 તે જહા-મંધિયાણં, પોતિયાણં, જહા વચ્ચવપ્પાપદે, આવ ગોમયકીડાણં, તેસુ અપેગસય ૦ આવ-કિષ્કા જારં દમારં વેરંદિયવિહાણારં
 મંવંતિ, તંજહા-ઉવચિયાણં, આવ-હત્થિસોંડાણં, તેસુ અપેગ ૦ આવ-કિષ્કા જારં દમારં વેરંદિયવિહાણારં મંવંતિ, તે જહા-પુલાકિ-
 મિયાણં, આવ-સમુદ્ધલિષ્કાણં, તેસુ અપેગસય ૦ આવ-કિષ્કા જારં દમારં વળસ્સહવિહાણારં મંવંતિ, તંજહા-વચ્ચાણં, ગુપ્પાણં,
 આવ-કુહપાણં, તેસુ અપેગસય ૦ આવ-પચ્ચાયાહસ્સર । ઉસ્સણં ચ ણં કહુયવપ્પેસુ, કહુયવહીસુ, સહત્થ વિ ણં સત્થવજ્ઞે
 આવ-કિષ્કા જારં દમારં વાડકાદયવિહાણારં મંવંતિ, તંજહા-પાર્ણવાયાણં, આવ-સુવવાયાણં, તેસુ અપેગસયસહસ્સ ૦ આવ-
 કિષ્કા જારં દમારં તેડકાદયવિહાણારં મંવંતિ, તંજહા-ઇંગાલાણં, આવ-સુરકંતમણિનિસ્સિયાણં, તેસુ અપેગસયસહસ્સ ૦ આવ-
 કિષ્કા જારં દમારં માડકાદયવિહાણારં મંવંતિ, તંજહા-ઉસ્સાણં, આવ-આતોદપ્પાણં, તેસુ અપેગસય ૦ આવ-પચ્ચાયાતિસ્સર ।
 ઉસ્સણં ચ ણં આરોદપ્પસુ, આતોદપ્પસુ, સહત્થ વિ ણં સત્થવજ્ઞે આવ-કિષ્કા જારં દમારં પુઠવિકાદયવિહાણારં મંવંતિ, તંજહા-
 પુઠવીણં, સક્કરાણં, આવ-સુરકંતાણં, તેસુ અપેગસય ૦ આવ-પચ્ચાયાહિતિ, ઉસ્સણં ચ ણં આરવાયરપુઠવિકાદયસુ, સહત્થ વિ ણં
 સત્થવજ્ઞે આવ-કિષ્કા-રાયગિહે નગરે વાર્હિ કરિયસાપ ઉવચ્ચિહિતિ । તત્થ વિ ણં સત્થવજ્ઞે આવ-કિષ્કા કુચં પિ રાયગિહે
 નગરે અંતો આરિયસાપ ઉવચ્ચિહિતિ । તત્થ વિ ણં સત્થવજ્ઞે આવ-કિષ્કા દ્વેવ જંઢુદીવે દીવે મારપે વાસે વિઠ્ઠિગિરિપાયસુઠે

નીકલીને જે લેચરના મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-ચર્મપક્ષીઓ (ચામડાની પાંચવાઝ), હોમપક્ષીઓ (પિંછાની પાંચવાઝ), સમુદ્રકપક્ષીઓ
 [જેની સર્વદા ઉડતાં પળ પાંચો બીડાયેલ હોય તે] અને વિતત પક્ષીઓમાં [જેની હમેશાં વિસ્તારેલી પાંચ હોય તેમાં] અનેક લાખ વાર
 મરણ પામી પામીને સ્ત્રી વારંવાર ઉત્પન્ન થશે. સર્વે શસ્ત્રવધ થવાથી દાહની ઉત્પત્તિવડે મરણસમયે કાઠ કરી જે આ મુજપરિસર્પના
 મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-ઘો, નોઢીઆ-ઇલાદિ પ્રજ્ઞાપના સૂત્રના પ્રથમ પ્રજ્ઞાપના પદને વિષે કહ્યું છે તે પ્રમાણે જાણવું, યાવત્-જાહક
 અને ચડપ્પાહયા જીવોમાં અનેક લાખવાર મરણ પામી પુનઃ સ્ત્રી વારંવાર ઉત્પન્ન થશે. વાકી વધું લેચરની પેઠે જાણવું. યાવત્-કાઠ
 કરી જે આ ઉર:પરિસર્પના મેદો હોય છે, તે આ પ્રમાણે-સાપ, અજગર, આશાલિકા અને મહોરગ; તેમાં અનેક લાખવાર મરણ પામી
 યાવત્-કાઠ કરી જે આ ચતુષ્પદના મેદો હોય છે; તે આ પ્રમાણે-૧ એકસરીવાઝ, ૨ બેસરીવાઝ, ૩ ગંઢીપદ અને ૪ નલસહિત
 પળવાઝ, તેમાં અનેક લાખવાર ઉત્પન્ન થશે, સ્ત્રીથી યાવત્-કાઠ કરી જે આ જલચરના મેદો હોય છે, તે આ પ્રમાણે-કચ્છપ
 (કાચબા), યાવત્-સુસુમાર, તેઓમાં અનેક લાખવાર ઉપજશે, યાવત્-કાઠ કરી જે આ ચડરિન્દિય જીવોના મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-
 અંધિક, પૌત્રિક-ઇલાદિ-જેમ પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રના પ્રથમ પ્રજ્ઞાપનાપદમાં કહ્યા પ્રમાણે યાવત્-ગોમયકીડાઓમાં અનેક લાખવાર ઉપજશે.
 સ્ત્રી ઉત્પન્ન થઈ કાઠ કરી જે આ તેરિન્દિય જીવોના મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-ઉપચિત, યાવત્-હસ્તિશૌંક, તેઓમાં ઉત્પન્ન થઈ યાવત્-
 કાઠ કરી જે આ વેરિન્દિયોના મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-પુલાકમિ યાવત્-સમુદ્ધલિકા, તેઓમાં અનેક લાખવાર ઉપજશે. ઉપજી યાવત્-
 કાઠ કરી જે આ વનસ્પતિના મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-વૃક્ષો, ગુચ્છક, યાવત્-કુહુના; તેઓમાં અનેક લાખવાર મરણ પામી ઉત્પન્ન થશે.
 વિષેવે કરીને કટુક વૃક્ષોમાં અને કટુક વેલીમાં ઉપજશે, અને સર્વે સ્વઠે શસ્ત્રવધે વધ થવાથી યાવત્-કાઠ કરીને જે આ વાયુકાયિકના
 મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-પૂર્વનો વાયુ, યાવત્-શુદ્ધ વાયુ, તેમાં અનેક લાખવાર ઉત્પન્ન થશે. યાવત્-કાઠ કરી જે આ તેડકાયિકના મેદો
 છે, તે આ પ્રમાણે-અંગારા, યાવત્-સૂર્યકાન્તમણિ નિશ્ચિત અગ્નિ, તેમાં અનેક લાખવાર ઉત્પન્ન થશે. ઉત્પન્ન થઈ જે આ આકાયિકના મેદો
 છે, તે આ પ્રમાણે-અવસ્થાય-શાકલ્લનું પાળી, યાવત્-સાઈનું પાળી; તેમાં અનેક લાખવાર યાવત્ ઉત્પન્ન થશે. વરુષા ધારા પાળીમાં વધે
 સાઈના પાળીમાં ઉત્પન્ન થશે; અને સર્વે સ્વઠે શસ્ત્રવધે વધ થવાથી યાવત્-કાઠ કરીને જે આ પૃથ્વીકાયિકના મેદો છે, તે આ પ્રમાણે-
 પૃથ્વી, શર્કરા-કાંકરા, યાવત્-સૂર્યકાન્તમણિ, તેઓમાં અનેક લાખવાર ઉત્પન્ન થશે. વિશેષતઃ સરવાદરપૃથ્વીકાયિકને વિષે, સર્વે
 શસ્ત્રવધે વધ થવાને લીધે યાવત્-કાઠ કરીને રાજગૃહ નગરની બાહર વેસ્થાપણે ઉત્પન્ન થશે. સ્ત્રી પળ શસ્ત્રવધે વધ થતાં યાવત્-કાઠ

૪૦ * પ્રજ્ઞાપનાસૂત્રમાં ઉપર કહેલો પાઠ મલ્લો નથી, પણ તેને વધે આનો પાઠ મલ્લે છે-“હે કિં તે મુજપરિસર્પના ! મુજપરિસર્પના અપેગવિહાણારં મંવંતિ તંજહા-નડલા, સેહા, સરહા, સહા, સરંહા, ધારા, જોરા, વરોહા, વિસ્સંમરા, મૂસા, મંડુલા, વપ્પાહયા, હીરવિરલિયા, જહા વચ્ચવપ્પાય, તે વચ્ચે સહચરા ।” પ્રજ્ઞા ૦ ૧ પ ૦ ૧ પ ૦ ૪૬.

† પ્રજ્ઞા ૦ ૫ ૦ ૧ પ ૦ ૪૨-૨.

‡ પ્રજ્ઞા ૦ ૫ ૦ ૧ પ ૦ ૪૨-૨.

काले तत्रोद्दिष्टे मनुस्मृत्यनुवर्तमानाभिहिते दारिद्र्यस्य पञ्चाशद्विंशतिः । तत्र न तं दारिद्र्यं मन्मापिबरो उन्मुह्यवालमार्यं ओषधमणुष्यसं
 त्रिंशत्तमस्य सुतेन, त्रिंशत्तमस्य विवश्वं, त्रिंशत्तमस्य अचारस्य भारियसाय दृष्टस्वति । सा न तस्स भारिया भवि-
 त्वति द्रुम, कंठा, जाव-अनुमता, अंडकरंडमसमाया तेल्लकेला इव सुसंगोविया, बेलपेडा इव सुसंपरिगहिया, रवणकरं-
 जयो विव सुसात्तिकाया, सुसंगोविया, मा नं सीर्षं, मा नं उगहं, जाव-परिस्वहोवसणा फुसंतु । तप नं सा दारिया भवता
 मयानि सुविधी ससुरकुमारो कुलवरं निजमायी अंतरा इवमिजालामिहया कालमासे कालं किञ्चा दाहिणिल्लेसु मणिकुमा-
 रेसु देवेसु देवसाय उववज्जिहिति ।

४८. से नं तत्रोद्दिष्टो मनुस्मृतं उववज्जिहिति माणुस्सं विग्गहं लमिहिति, माणुस्सं २ लमिहता केवलं बोहिं बुज्जि-
 हिति, के० २ बुज्जिहता सुंटे मविता जागरामो अणगरियं पव्वहिति । तस्य वि व नं विराहियसामभे कालमासे कालं किञ्चा
 दाहिणिल्लेसु मणुस्सं देवेसु देवसाय उववज्जिहिति । से नं तत्रोद्दिष्टो जाव-उववज्जिहता माणुस्सं विग्गहं तं केव जाव-
 तस्य वि नं विराहियसामभे कालमासे जाव-किञ्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवसाय उववज्जिहिति । से नं तत्रोद्दिष्टो
 अणंतरं० एवं यमं अमिलाकेण दाहिणिल्लेसु सुवन्नकुमारेसु, एवं विज्जुकुमारेसु, एवं मणिकुमारवज्जं जाव-दाहिणिल्लेसु यमि-
 ककुमारेसु, से नं तत्रो जाव-उववज्जिहता माणुस्सं विग्गहं लमिहिति । जाव-विराहियसामभे ओहसिपसु देवेसु उववज्जिहिति ।
 से नं तयो अणंतरं ययं चरता माणुस्सं विग्गहं लमिहिति । जाव-अविराहियसामभे कालमासे कालं किञ्चा सोहम्मो कप्ये
 देवसाय उववज्जिहिति । से नं तत्रोद्दिष्टो अणंतरं ययं चरता माणुस्सं विग्गहं लमिहिति, केवलं बोहिं बुज्जिहिति, तस्य-
 वि नं अविराहियसामभे कालमासे कालं किञ्चा ईसाभे कप्ये देवसाय उववज्जिहिति । से नं तत्रो चरता माणुस्सं विग्गहं
 लमिहिति । तस्य वि नं अविराहियसामभे कालमासे कालं किञ्चा सणकुमारे कप्ये देवसाय उववज्जिहिति । से नं तत्रोद्दिष्टो
 एवं जहा सणकुमारे तहा वंभलोय, महासुके, भाणय, भारणे । से नं तत्रो जाव-अविराहियसामभे कालमासे कालं किञ्चा
 सणकुमारे महाविमाने देवसाय उववज्जिहिति । से नं तत्रोद्दिष्टो अणंतरं ययं चरता महाविदेहे वासे जाहं इमाहं कुलाहं
 अवंति-महाहं जाव-अपरिभूयाहं, तहप्यगारेसु कुलेसु पुत्तसाय पञ्चायाहिति । एवं जहा उववाइय दृष्टप्यरत्तवचन्या सकेव
 वत्तव्या निरवसेसा भाणियवा, जाव-केवलवरनाजईसणे समुप्यज्जिहिति ।

करी बीजीवार राजगृह नगरी अंदर वेण्यापणे उत्पन्न यशे. त्या पण शकवडे वध यवापी यावत्-काळ करीने आज जंबूद्वीपमां भारत-
 वर्षने विषे विन्ध्याचलपर्वतनीं पासे विमेल नामे गाममां ब्राह्मणकुलने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न यशे. ते पुत्री ज्यारे बाल्यभावने ल्याग करी
 यौवनने प्राप्त यशे स्वारे तेना मातापिता उचित द्रव्य अने उचित विनयबडे योग्य मर्ताने भार्यापणे आपशे. ते पुत्री तेनी स्त्री यशे. ते
 इव, कान्त, यावत्-अनुमत, घरेणाना करंडीया जेवी, तेलनी कुल्लीनी पेठे अत्यंत सुरक्षित, वळनी पेटीनी पेठे सारी रीते (निरुपद्रव स्थाने)
 राखेकी अने रक्षना करंडीयानी पेठे सारी रीते रक्षण करायेकी हशे. ते शीत, उष्ण, यावत्-परिषह अने उपद्रवो न स्पशे माटे अत्यंत
 सौम्य-रक्षण करायेकी हशे. हवे अन्य कोई दिवसे ते ब्राह्मणपुत्री गर्भिणी यशे, अने असुरगृहथी पीयेर जतां रस्तामां दवाग्निनी ज्वाला-
 वडे वळी मरणसमये काळ करी दक्षिणदिशाना अग्निकुमार देवोमां देवपणे उत्पन्न यशे.

४८. त्यांची अन्तररहितपणे प्यवीने मनुष्यना देहने धारण करी मात्र बोधि-सम्यग्दर्शन पामशे. केवळ सम्यग्दर्शन पामी मुंड यह
 गृहवासने ल्याग करी अनगारिता-दीक्षा ग्रहण करशे. त्यां पण भ्रमण्य दीक्षाने विराधी दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवोमां देवपणे उत्पन्न
 यशे. स्नात पळी ते त्यांची यावत्-नीकळी मनुष्य शरीर प्राप्त करी-इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत्-त्यां पण भ्रमणपणुं विराधी मरणसमये
 काळ करी दक्षिण निकायना माणकुमार देवोमां देवपणे उत्पन्न यशे. हवे ते त्यां अन्तररहितपणे प्यवी-इत्यादि ए पाठ वडे दक्षिण निकायना
 सुवर्णकुमारने विषे, ए प्रमाणे विष्णुकुमारने विषे, एम यावत्-अग्निकुमार सिवाय दक्षिण निकायना स्नानित कुमारने विषे उत्पन्न यशे.
 यावत्-ते त्यांची निकळी मनुष्य शरीर प्राप्त करशे, यावत्-भ्रमणपणुं विराधी ज्योतिषिक देवमां उत्पन्न यशे. हवे ते त्यांची अन्तररहितपणे
 प्यवीने पुनः मनुष्यशरीर प्राप्त करशे, यावत्-भ्रमणपणुं विराध्या सिवाय मरणसमये काळ करी सौधर्म देवलोकने विषे देवपणे उत्पन्न
 यशे. ते त्यांची अन्तररहित प्यवीने मनुष्यशरीर प्राप्त करशे, अने केवळ सम्यग्दर्शननो अनुभव करशे. त्यां पण भ्रमणपणुं विराध्या सिवाय
 मरणसमये काळ करी ईशानदेवलोकनां देवपणे उत्पन्न यशे. त्यांची प्यवी मनुष्यशरीर प्राप्त करशे. त्यां पण भ्रमणपणुं विराध्या सिवाय
 मरणसमये काळ करी सनकुमार देवलोकनां देवपणे उत्पन्न यशे. त्यांची प्यवी जेम सनकुमारने विषे कहुं तेम ब्रह्मदेवलोक, महाशुक्र, जानत
 अने आरण देवलोकने विषे जाणवुं. हवे ते त्यांची प्यवी यावत्-भ्रमणपणाने विराध्या सिवाय मरणसमये काळ करीने सर्वाथसिद्ध महावि-
 द्याने विषे देवपणे उत्पन्न यशे. त्यांची अन्तररहित प्यवी महाविदेहलोकने विषे जे आ आवा प्रकारना धनिक, यावत्-कोइची पराभव
 नहिं याने तेव कुलो के, तेव कुलोमां पुत्ररूपे उत्पन्न यशे. ए प्रमाणे जेम औपपातिकसूत्रने विषे इष्टप्रतिष्ठनी वक्तव्यता काही के ते
 उच्यते वक्तव्यता वडे करी, यावत्-तेने सनम केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न यशे.

हवे त्यांची प्यवी
 मनुष्यदेह धारण
 करी सम्यग्दर्शन
 पामशे.

केवलज्ञान-दर्शन
 उत्पन्न यशे.

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

१२

सुधर्म

काल नं०

लेखक मगवतुष्यम स्वामी ।

शीर्षक श्री म सु मगवतीसुत्र ।

खण्ड ३

क्रम संख्या

७०६